अल्लाह का पैग़ाम
सारे इन्सानों के नाम

क़ुरआन
शरीफ़

हिन्दी तर्जुमा

قُرآن شَرِیف

हिन्दी लिपि और
अरबी मूलग्रंथ के साथ

अनुवादक:
मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ

मानव जाति के लिए अल्लाह का पैगाम
इस पवित्र ग्रन्थ को पाक-साफ और शुद्ध होकर पढ़ें।

आसान तरजुमा (हिन्दी रोमन)

क़ुरआन
शरीफ़

القرآن
شـريـف

मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

मक्तबा अल हसनात (नई दिल्ली)
UNIT OF AL HASANAT BOOKS (PVT) LTD

© Copyright 2013 Al Hasanat BooksPvt. Ltd. NewDelhi

No Part of this book can be reproduced or utilized in any
from or by any means, electronic or mechanical, including
photocopying and recording or by any information storage and
retrival system, without written prior permission of the publisher.

ISBN: 978-93-80352-61-9

आसान तरजुमा क़ुरआन शरीफ़ (हिन्दी रोमन)

मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ खाँ

संस्करण: 2021

प्रकाशक:

ए०एम०फ़हीम
अल हसनात बुक्स प्रा० लि०
3004/2, सर सय्यद अहमद रोड
दरिया गंज,नई दिल्ली-110002

TeL: 011-23271845,011-41563256

E-mail:alhasanatbooks@rediffmail.com
faisalfaheem@rediffmail.com
www.alhasanatbooks.com
www.abplbooks.com

मुद्रक
एच० एस० ऑफसेट प्रेस
दरिया गंज नई दिल्ली-2

अर्ज़-ए-नाशिर

ख़ुदा की इस ज़मीन पर इनसान की बुनियादी ज़रूरतें दो क़िस्म की हैं। एक वो जिनका तअल्लुक़ उसकी जिसमानी और माद्दी ज़िन्दगी से है। और दूसरी वो जो उसकी रूहानी, अखलाक़ी और समाजी ज़िन्दगी से मुतअल्लिक़ हैं। ख़ुदा के मालिक-ए-हक़ीक़ी होने का तक़ाज़ा था कि इनसान की ये दोनों ज़रूरतें पूरी की जाएं, ताकि वह ज़िन्दगी की आसाइश भी हासिल कर सके और उनको सही मक़ासिद के लिए सही तरीक़ों से इस्तेमाल भी कर सके।

अल्लाह तआला ने इनसान की इन दोनों ज़रूरतों को बहुसून व कमाल पूरा किया है। माद्दी और जिसमानी ज़रूरियात की तसकीन के लिए ज़मीन व आसमान में बेशुमार कारआमद चीज़ें पैदा कर दी हैं, जिनकी दरियाफ़्त और मुनासिब इस्तेमाल से इनसान की तमाम ज़रूरतें पूरी हो सकती हैं। इसी तरह इनसान की रूहानी, अख़लाक़ी और समाजी ज़रूरियात को पूरा करने के लिए अल्लाह तआला ने अपनी हिदायत नाज़िल फ़रमाई और अपने अम्बिया (अलैहि०) के ज़रिए इस हिदायत को इनसानों तक पहुंचाया। इस तरह इनसानियत ने अपना सफ़र तारीकी में नहीं, रौशनी में शुरू किया और हर दौर में ख़ुदा की हिदायत उसके लिए मशअले राह बनी रही। इस दुनिया में पहले इनसान आदम (अलैहि०) थे जो पहले नबी भी थे। ख़ुदा की यह हिदायत अपनी आख़िरी और मुकम्मल तरीन शक्ल में हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) पर नाज़िल की गई। यही हिदायत क़ुरआन की शक्ल में हमारे पास मौजूद है और क़ियामत तक इन्सानियत की रहनुमाई करती रहेगी। क़ुरआन का मौज़ू (विषय) इनसान है, इससे मालूम किया जा सकता है कि इनसान की फ़लाह और उसका नुक़सान किस चीज़ में है।

इस लिहाज़ से क़ुरआन पर ईमान लाना तमाम इनसानों पर लाज़िम है, ताकि वह इस दुनिया और इसके बाद वाली दुनिया में कामयाब हो सके। लेकिन इसपर ईमान उसी वक़्त मुफ़ीद हो सकता है, जब हम क़ुरआन के पैग़ाम को समझें और उसकी दावत पर लब्बैक कहें, क़ुरआन के बताए हुए तरीक़े पर चलें और उसकी हिदायत के मुताबिक़ अपने मुआमलात को तय करने की कोशिश करें। इसके लिए ज़रूरी है कि लोग क़ुरआन मजीद को समझ सकें। इसी एहसास के तहत उलमा ने इस किताब के दुनिया की तमाम ज़िन्दा ज़बानों में तरजुमें किए हैं।

इस वक़्त आपके हाथों में क़ुरआन करीम का एक आसान हिन्दी तरजुमा “आसान तरजुमा क़ुरआन शरीफ़ (हिन्दी रोमन)” है। इसके मुतर्जिम मौलाना मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ां साहब हैं, जो इल्म व तहक़ीक़ की दुनिया में मुहताजे तआरुफ़ नहीं। मौसूफ़ को मुख़्तलिफ़ उलूम के अलावा क़ुरआनियात से ख़ास लगाव रहा है। क़ुरआन के मुख़्तलिफ़ तरजुमों, तफ़सीरों का मुतालआ, तदब्बुर, ग़ौर व ख़ोज़ और इसके दुरूस व मुतालआ में ही उनके शब व रोज़ गुज़रते हैं। इससे पहले मौसूफ़ के क़ुरआन मजीद हिन्दी तरजुमा को ग़ैर मामूली मक़बूलियत हासिल हूई है। यह हिन्दी अदब या साहित्य का शाहकार है। लोगों की बहुत मांग हो रही थी कि आसान हिन्दी ज़बान में मौलाना का एक क़ुरआन मजीद का तरजुमा शाए किया जाए। इसी के पेशे नज़र काफ़ी दिनों की मेहनत के बाद हम यह

"आसान तरजुमा कुरआन शरीफ़ (हिन्दी रोमन)" क़ारिईन की ख़िदमत में पेश करने की सआदत हासिल कर रहे हैं।

इस तरजुमा की कुछ अहम ख़ुसूसियात हैं जो किसी दूसरे तरजुमे में नहीं मिलतीं। मसलन, यह किसी उर्दू तरजुमा का हिन्दी एडिशन न होकर असल अरबी मतन से बराहे रास्त तरजुमा किया गया है, जिसमें हत्तल-इमकान आम बोल-चाल की ज़बान के मिज़ाज को बाक़ी रखने की कोशिश की गई है। कुरआन का एक ख़ास उसलूब यह है कि वह किसी हिकमत के तहत अपने फ़िक़रों के बाज़ हिस्सों को हज़फ़ कर देता है। चुनांचे क़ारिईन को कुरआन के महज़ूफ़ात से बाख़बर करने के लिए महज़ूफ़ात को क़ौसैन में वाज़ेह किया गया है।

वो लोग जो अरबी ज़बान नहीं पढ़ सकते, लेकिन वो यह भी चाहते हैं कि उन्हें कुरआन की तिलावत और उसका मतलब जानने का मौक़ा मिले, ऐसे लोगों की उत्सुकता (तजस्सुस) और लगन को सामने रखते हुए हमने कुरआन मजीद को हिन्दी ज़बान और लिपि (रस्मुल-ख़त) में प्रकाशित किया है। लेकिन उन लोगों को अच्छी तरह यह बात ध्यान में रखनी चाहिए कि कुरआन की असल ज़बान अरबी है। अल्लाह की इस मुक़द्दस किताब को समझने, उसका पूरा फ़ायदा और सवाब हासिल करने के लिए अरबी ज़बान का सीखना बहुत ज़रूरी है। हिन्दी ज़बान में कुरआन मजीद को प्रकाशित करने का मक़सद हमारे सामने सिर्फ़ यह है कि जब तक लोग अरबी ज़बान से वाक़िफ़ नहीं हैं तो सिर्फ़ इससे उस वक़्त तक फ़ायदा उठाएं, और जल्द से जल्द कुरआन मजीद को उसकी असल ज़बान अरबी में ही पढ़ने के लिए अरबी सीखें।

हर ज़बान के कुछ उसूल होते हैं, जिसका उस ज़बान के बोलने वाले ध्यान में रखते हैं। कहीं ठहरते हैं, कहीं नहीं ठहरते। किसी बात का सही मतलब समझने के लिए ऐसा करना ज़रूरी है। इसी लिए ज़बान के जानने वालों ने इसके लिए कुछ चिन्ह (रुमूज़) तय कर दिए हैं, उसको 'रुमूज़े औक़ाफ़े कुरआन मजीद' कहते हैं। इन चिन्हों का ख़याल रखना कुरआन मजीद की तिलावत करने वाले पर फ़र्ज़ है। इसलिए कि तिलावत के दौरान कहाँ पर ठहरना है और कहाँ नहीं ठहरना है, या किस आयत को बादवाली आयत के साथ मिलाकर पढ़ना है, इसकी जानकारी होनी चाहिए। इन तमाम उसूलों पर पूरे ध्यान के साथ अमल करना बहुत ज़रूरी है, वरना माने व मतलब बदल जाने का अन्देशा है।

हमने इसके शायाने शान बेहतरीन काग़ज, तबाअत और बाइन्डिंग का एहतिमाम किया है।

पढ़नेवालो से गुज़ारिश है कि वो जहां अपने लिए अल्लाह से दुआ करेंगे, इसके साथ ही दुआ करें कि अल्लाह तआला इस तरजुमा को शरफ़-ए-क़बूलियत अता फ़रमाए और मुतर्जिम, नाशिर और इस काम में जिन हज़रात ने भी तआवुन फ़रमाया है, सबको बेहतरीन अजर अता फ़रमाए। आमीन।

9, जुमाद-अल-उला, 1434
22, मार्च, 2013

अब्दुल मालिक फहीम
चेयरमैन, अल-हसनात बुक्स प्रा॰ लि॰

रुमूज़े औक़ाफ़े क़ुरआन मजीद

हर एक ज़बान के अहले ज़बान जब गुफ़्तगू करते हैं तो कहीं ठहर जाते हैं, कहीं नहीं ठहरते, कहीं कम ठहरते, कहीं ज़्यादा। और इस ठहरने और न ठहरने को बात के सही बयान करने और उसका सही मतलब समझने में बहुत दख़ल है। क़ुरआन मजीद की इबारत भी गुफ़्तगू के अन्दाज़ में वाक़े हुई है। इसी लिए अहले इल्म ने इसके ठहरने, न ठहरने की अलामतें मुक़र्रर कर दी हैं, जिनको 'रुमूज़े औक़ाफ़े क़ुरआन मजीद' कहते हैं। ज़रूरी है कि क़ुरआन मजीद की तिलावत करने वाले इन रुमूज़ का ख़याल रखें। और वे ये हैं:

○ जहाँ बात पूरी हो जाती है वहाँ छोटा-सा दायरा लिख देते हैं, यह हक़ीक़त में गोल ت है जो बसूरते ة लिखी जाती है, और यह 'वक़्फ़े ताम' की अलामत है, यानी इसपर ठहरना चाहिए। अब ة तो नहीं लिखी जाती, छोटा-सा हल्का लिख दिया जाता है। इस अलामत को आयत कहते हैं।

م यह अलामत 'वक़्फ़े लाज़िम' की है। इसपर ज़रूर ठहरना चाहिए, अगर न ठहरा जाए तो एहतिमाल (आशंका) है कि मतलब कुछ का कुछ हो जाए। इसकी मिसाल हिन्दी में यूं समझनी चाहिए कि मसलन किसी को यह कहना हो कि उठो, मत बैठो। जिसमें उठने का हुक्म और बैठने से मना किया गया है। तो उठो पर ठहरना लाज़िम है। अगर ठहरा न जाए तो उठो मत बैठो, हो जाएगा। जिसमें उठने से मना और बैठने के हुक्म का एहतिमाल है। और यह कहनेवाले के मतलब के ख़िलाफ़ हो जाएगा।

ط वक़्फ़े मुतलक़ की अलामत है। इसपर ठहरना चाहिए, मगर यह अलामत वहाँ होती है जहाँ मतलब मुकम्मल नहीं होता, और बात कहने वाला अभी कुछ और कहना चाहता है।

ج वक़्फ़े जाइज़ की अलामत है। यहाँ ठहरना बेहतर और न ठहरना जाइज़ है।

ز वक़्फ़े मुजव्वज़ की अलामत है, यहाँ न ठहरना बेहतर है।

ص वक़्फ़े मुरख़्ख़स की अलामत है। यहाँ मिलाकर पढ़ना चाहिए। लेकिन अगर कोई थककर ठहर जाए तो रुख़सत है। मालूम रहे कि ص पर मिलाकर पढ़ना ز की निसबत ज़्यादा तरजीह रखता है।

صلی "अल-वस्लु ऊला" का इख़्तिसार है, यहाँ मिलाकर पढ़ना बेहतर है।

ق "क़ीला अलैहिल वक़्फ़" का ख़ुलासा है, यहाँ ठहरना नहीं चाहिए।

صل "कलयूसल" की अलामत है, यानी यहाँ कभी ठहरा भी जाता है, कभी नहीं। लेकिन ठहरना बेहतर है।

قف यह लफ़्ज़े "क़िफ़" है, जिसके मायने हैं ठहर जाओ, और यह अलामत वहाँ इस्तेमाल की जाती है, जहाँ पढ़नेवाले के मिलाकर पढ़ने का एहतिमाल हो।

س يا سكة सकते की अलामत है, यहाँ किसी क़दर ठहर जाना चाहिए, मगर साँस न टूटने पाए।

وقفه लम्बे सकते की अलामत है, यहाँ सकते की निसबत ज़्यादा ठहरना चाहिए। लेकिन साँस न तोड़ें। सकते और वक़्फ़े में यह फ़र्क़ है कि सकते में कम ठहरना होता है, वक़्फ़े में ज़्यादा।

لا "ला" के मायने नहीं के है। यह अलामत कहीं आयत के ऊपर इस्तेमाल की जाती है और कहीं इबारत के अन्दर। इबारत के अन्दर हो तो हरगिज़ नहीं ठहरना चाहिए, आयत के ऊपर हो तो इख़्तिलाफ़ है, बाज़ के नज़दीक ठहर जाना चाहिए, बाज़ के नज़दीक न ठहरना चाहिए। लेकिन ठहरा जाए या न ठहरा जाए, उससे मतलब में ख़लल वाक़े नहीं होता। वक़्फ़ उसी जगह नहीं चाहिए, जहाँ इबारत के अन्दर लिखा हो।

ك "कज़ालिका" की अलामत है यानी जो रम्ज़ (चिन्ह) पहले है वही समझी जाए।

السجده जिन आयतों पर "अस-सज्दा" का चिन्ह है उन आयतों के पढ़ने वाले और सुनने वाले दोनों पर सज्दा करना वाजिब (आवश्यक) है। अच्छा है उसी समय सज्दा कर लिया जाए, अगर उस समय न कर सकें तो जल्द से जल्द मौक़ा मिलते ही कर लें।

कुरआन मजीद को पढ़ते वक़्त जहाँ भी कोई हिदायत देनी ज़रूरी है उस जगह हमने एक निशान ● बना दिया है। पाठक उस आयत की अरबी में लगाए गए रुमूज़ (चिन्ह) के अनुसार ही तिलावत करें जो साथ-साथ आमने-सामने लिखी गई है।

दो शब्द

पाठकों के समक्ष क़ुरआन मजीद के हिन्दी अनुवाद प्रस्तुत करते हुए हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। इस अवसर पर क़ुरआन के सम्बंध में कुछ बातें करने को जी चाह रहा है।

क़ुरआन वास्तव में वह अंतिम ईश्वरीय ग्रन्थ है जिसे अल्लाह ने मानवों के मार्गदर्शन के लिए अवतरित किया है। क़ुरआन ईश-वाणी है, यह किसी मनुष्य की रचना या किसी कवि का काव्य कदापि नहीं है। क़ुरआन के ईश-वाणी होने के कारण उसमें अनुपम स्वर-सौंदर्य ही नहीं भाव-सौंदर्य का भी समावेश हो गया है। ज्ञान और सत्य की जो गहराइयाँ क़ुरआन में पाई जाती हैं वे स्वाभाविक ही हैं।

क़ुरआन मनुष्य के मार्गदर्शन के लिए उतरा है। वह बताता है कि अल्लाह ने मनुष्य को श्रेष्ठता प्रदान की है। जगत की सभी चीज़ें मानव की सेवा में रत हैं। सूर्य हो या चन्द्रमा, यह पृथ्वी सभी मनुष्य के लिए कार्यरत हैं। क़ुरआन से मालूम होता है कि मनुष्य की बड़ाई और श्रेष्ठता का रहस्य यह है कि अल्लाह ने उसे विशेष रूप से अपनी सेवा के लिए पैदा किया है। उसने मनुष्य को इसलिए पैदा किया है कि वह अल्लाह को पहचाने और अपने जीवन के सम्पूर्ण सौन्दर्य को (जिसकी अभिव्यक्ति उसके आचार और व्यवहार से होती है) उसके अर्पित कर दे। उसके समस्त कार्य ईश्वर की प्रसन्नता के लिए और उसके बताए हुए तरीक़े से सम्पन्न हों। वह अपने और ईश्वर के मध्य समरसता और अनुकूलता बनाए रखे। अल्लाह की प्रसन्नता के विपरीत उसका कोई कार्य न हो।

मनुष्य का जीवन अल्लाह के अर्पित हो, इसी में उसके जीवन की सार्थकता है। मानव अल्लाह की ओर अग्रसर हो, उसकी उड़ान उसी की ओर हो, न कि किसी निकृष्ट वस्तु की ओर। क़ुरआन में है –

تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ

> "फ़रिश्ते और रूह उसकी ओर चढ़ते हैं, एक ऐसे दिन में जो पचास हज़ार वर्ष के बराबर है।" (सूरह 70, आयत 4)

क़ुरआन की एक विशेषता यह भी है कि यह एक प्रामाणिक ग्रन्थ है। इसकी प्रामाणिकता में किसी प्रकार का सन्देह नहीं किया जा सकता। क़ुरआन उसी रूप में आज हमारे हाथों में है जिस रूप में वह अल्लाह की ओर से अवतरित हुआ था। क़ुरआन की एक विशेषता यह भी है कि उसकी भाषा एक जीवन्त भाषा है, जिसके बोलने और समझने वालों की संख्या करोड़ों में पाई जाती है।

फिर क़ुरआन जीवन के प्रत्येक क्षेत्र के लिए मार्गदर्शन है। वह हमारे लिए प्रकाश ही प्रकाश है। वह ज्ञान की दृष्टि से हमारा जो मार्गदर्शन करता है उसमें कहीं कोई कमी दिखाई नहीं देती। वह जीवन के उस पक्ष के सम्बन्ध में भी पूर्णरूप से हमारा मार्गदर्शन करता है जिसका सम्बन्ध सर्वथा परोक्ष (Unseen) से है। इसी के साथ वह व्यावहारिक जीवन में भी हमारा साथ देता है। घरेलू जीवन हो या सामाजिक जीवन हो या जीविकोपार्जन की समस्याएँ हों या राजनीति, क़ुरआन की शिक्षाएँ प्रत्येक विषय में हमारा साथ देती

हैं। फिर कुरआन की शिक्षाओं के पालन का परिणाम लोक और परलोक दोनों में सुखद है। कुरआन के शब्द हैं:

> قُلْ إِنَّمَا أَتَّبِعُ مَا يُوحَىٰ إِلَيَّ مِن رَّبِّي ج هَٰذَا بَصَائِرُ
> مِن رَّبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُؤْمِنُونَ
>
> "कह दोः मैं तो केवल उसपर चलता हूँ जो मेरे रब (प्रभु) की ओर से मेरी तरफ़ प्रकाशता (वह्य) की जाती है। ये तुम्हारे रब की ओर से अन्तर्दृष्टियों का प्रकाशपुंज है। और ईमान लाने वालों के लिए मार्गदर्शन और दयालुता है।" (सूरह 7, आयत 203)

कुरआन मुख्यतः ईश-मिलन की बात करता है। मिलन का उसने एक दिन निश्चित कर रखा है। उस दिन की प्रतीक्षा ही जीवन है। जिसने उस दिन को भुला दिया उसने जीवन की अवहेलना की, उसने अपना ही अनादर किया। उसके हिस्से में सन्ताप और यातना के सिवा और क्या आ सकता है। जिस व्यक्ति ने मिलन के दिन को महत्व दिया और उस दिन की तैयारी को अपना परम कर्तव्य जाना, वही विवेकशील और बुद्धिमान है। वही है सफलता, अपार सुख और आनन्द जिसका सौभाग्य बन चुके हैं। कुरआन में है,

> قَدْ خَسِرَ الَّذِينَ كَذَّبُوا بِلِقَاءِ اللَّهِ ط حَتَّىٰ إِذَا جَاءَتْهُمُ
> السَّاعَةُ بَغْتَةً قَالُوا يَٰحَسْرَتَنَا عَلَىٰ مَا فَرَّطْنَا فِيهَا لا وَهُمْ
> يَحْمِلُونَ أَوْزَارَهُمْ عَلَىٰ ظُهُورِهِمْ ط أَلَا سَاءَ مَا يَزِرُونَ
>
> "निश्चय ही वे लोग घाटे में पड़ गए जिन्होंने ईश-मिलन को झुठलाया। जब सहसा वह घड़ी उनपर आ जाएगी तो वे कहेंगेः हाय, अफ़सोस, हमसे इस विषय में कैसी भूल हुई! और वे अपनी पीठों पर अपने (गुनाहों के) बोझ उठाए होंगे! देखो कितना बुरा बोझ है जो ये उठा रहे हैं।" (सूरह 6, आयत 31)

पाठकगण से निवेदन है कि वे शुद्ध हृदयता और अच्छी भावनाओं के साथ इस पवित्र ग्रन्थ का अध्ययन करें। अल्लाह आपका सहायक हो।

भवदीय
मुहम्मद फ़ारूक़ ख़ाँ

सूरतों की फेहरिस्त

1. अल-फ़ातिहा 13
2. अल-बक़रा 14
3. आले-इमरान 64
4. अन-निसा 93
5. अल-माइदा 121
6. अल-अनआम 141
7. अल-आराफ़ 163
8. अल-अनफ़ाल 188
9. अत-तौबा 197
10. यूनुस 215
11. हूद 227
12. यूसुफ़ 241
13. अर-रअ्द 254
14. इबराहीम 260
15. अल-हिज्र 267
16. अन-नह्ल 272
17. बनी इसराईल 286
18. अल-कह्फ़ 298
19. मरयम 310
20. ता॰ हा॰ 318
21. अल-अंबिया 328
22. अल-हज्ज 338
23. अल-मोमिनून 347
24. अन-नूर 356
25. अल-फ़ुरक़ान 365
26. अश-शुअरा 372
27. अन-नम्ल 383
28. अल-क़सस 391
29. अल-अनकबूत 401
30. अर-रूम 409
31. लुक़मान 415
32. अस-सजदा 419
33. अल-अहज़ाब 422
34. सबा 431
35. फ़ातिर 437
36. या सीन॰ 443
37. अस-साफ़्फ़ात 449
38. सॉद॰ 456
39. अज़-ज़ुमर 462
40. अल-मोमिन 471
41. हा॰ मीम॰ अस-सजदा 480
42. अश-शूरा 486
43. अज़-ज़ुख़रूफ़ 492
44. अद-दुख़ान 499
45. अल-जासिया 502
46. अल-अहक़ाफ़ 505
47. मुहम्मद 510
48. अल-फ़त्ह 514
49. अल-हुजुरात 518
50. क़ाफ़॰ 521
51. अज़-ज़ारियात 524
52. अत-तूर 527
53. अन-नज्म 530
54. अल-क़मर 533

55. अर-रहमान 536
56. अल-वाक़िआ 539
57. अल-हदीद 543
58. अल-मुजादला 547
59. अल-हश्र 550
60. अस-मुम्तहना 553
61. अल-सफ़्फ़ 556
62. अल-जुमआ 558
63. अल-मुनाफ़िक़ून 559
64. अत-तग़ाबुन 560
65. अत-तलाक़ 562
66. अत-तहरीम 564
67. अल-मुल्क 566
68. अल-क़लम 569
69. अल-हाक़्क़ा 571
70. अल-मुआरिज 574
71. नूह 576
72. अल-जिन्न 578
73. अल-मुज़्ज़म्मिल 580
74. अल-मुद्दस्सिर 581
75. अल-क़ियामा 584
76. अद-दह्र 585
77. अल-मुरसलात 588
78. अन-नबा 590
79. अन-नाज़ियात 591
80. अ ब स 593
81. अत-तकवीर 595
82. अल-इनफ़ितार 596
83. अत-ततफ़ीफ़ 597
84. अल-इनशिक़ाक़ 598
85. अल-बुरूज 600
86. अत-तारिक़ 601
87. अल-आला 601
88. अल-ग़ाशिया 602
89. अल-फ़ज्र 603
90. अल-बलद 605
91. अश-शम्स 606
92. अल-लैल 606
93. अल-ज़ुहा 607
94. अल-इनशिराह 608
95. अत-तीन 608
96. अल-अलक़ 608
97. अल-क़द्र 609
98. अल-बय्यिना 610
99. अज़-ज़िलज़ाल 610
100. अल-आदियात 611
101. अल-क़ारिआ 611
102. अत-तकासुर 612
103. अल-अस्र 612
104. अल-हुमज़ा 612
105. अल-फ़ील 613
106. अल-क़ुरैश 613
107. अल-माऊन 613
108. अल-कौसर 614
109. अल-काफ़िरून 614
110. अन-नस्र 614
111. अल-लह्ब 614
112. अल-इख़लास 615
113. अल-फ़लक़ 615
114. अन-नास 615

आसान तरजुमा (हिन्दी रोमन)

क़ुरआन

शरीफ़

आयात-ए-सजदा की सूची

कुरआन में कुछ आयतें ऐसी हैं जिनको पढ़ने वाले और सुनने वाले दोनों पर सजदा करना वाजिब (ज़रूरी) होता है। अच्छा है उसी समय सजदा कर लिया जाए अगर उस समय न कर सकें तो जल्द से जल्द मौक़ा निकालते ही सजदा कर लें। उन आयतों की फ़ेहरिस्त इस तरह से है:

पारह	सूरह	पृष्ठ न०	आयत न०
9	आराफ़	188	206
13	अर-रअ़्द	256	15
14	अन-नहूल	277	50
15	बनी इस्राईल	298	109
16	मरयम	315	58
17	अल-हज	340	18
17	अल-हज	347	77
19	अल-फ़ुरक़ान	370	60
19	अन-नम्ल	385	28
21	अस-सज्दा	420	15
23	साद	458	24
24	हॉ-मीम अस-सज्दा	483	38
27	अन-नज्म	533	62
30	अल-इनशिक़ाक़	599	21
30	अल-अलक़	609	19

सूरह अल-फ़ातिहा मक्की
(आयात 7, रुकू 1)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का रब है,

2. बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है,

3. रोज़-ए-जज़ा का मालिक है।

4. हम तेरी ही इबादत करते हैं और तुझी से मदद मांगते हैं।

5. हमें सीधी राह चला।

6. उनकी राह पर जिन पर तूने नवाज़िश की, जो न मातूब हुए और न गुमराह।

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 123 अक्षर, 25 शब्द, 7 आयतें और 1 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल् आलमीन (1)

अर्रह्मानिर्रहीम (2)

मालिकि यौमिद्दीन (3)

इय्या-क नअ्बुदु व इय्या-क नस्तअ़ीन (4)

इह्दिनस्सिरातल्-मुस्तक़ीम (5)

सिरातल्लज़ी-न अन्अम्-त अ़लैहिम् (6)

ग़ैरिल्-मग़्ज़ूबि अ़लैहिम् व लज़्ज़ाल्लीन (7) ●

سُوْرَةُ الْفَاتِحَةِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝١

الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝٢

مٰلِكِ یَوْمِ الدِّیْنِ ۝٣

اِیَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِیَّاكَ نَسْتَعِیْنُ ۝٤

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِیْمَ ۝٥

صِرَاطَ الَّذِیْنَ اَنْعَمْتَ عَلَیْهِمْ ۝٦

غَیْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَیْهِمْ وَلَا الضَّآلِّیْنَ ۝٧ ع

सूरह अल-बक़रह मदनी

(आयात 286, रुकूआत 40)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-मीम।

2. वह किताब यही है, जिसमें कोई शक नहीं, हिदायत है डर रखने वालों के लिए।

3. जो ग़ाइबाना ईमान लाते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं;

4. और जो उसपर ईमान लाते हैं जो तुम्हारी तरफ़ उतरा और जो तुमसे पहले उतरा है और आख़िरत पर भी वो यक़ीन रखते हैं।

5. वही लोग हैं जो अपने रब की हिदायत पर हैं और वही हैं जो कामयाब रहेंगे।

6. जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनके लिए यकसां है तुमने उन्हें ख़बरदार किया हो या उन्हें ख़बरदार न किया हो, वो ईमान नहीं लाएंगे।

7. अल्लाह ने उनके दिलों पर और उनकी समाअत पर मुहर लगा दी है और उनकी निगाहों पर परदा पड़ा है और उनके लिए अज़ाबे अज़ीम है।

8. बाज़ लोग ऐसे हैं जो कहते हैं कि "हम अल्लाह और रोज़-ए-आख़िर पर ईमान रखते हैं;" हालांकि वो ईमान नहीं रखते।

9. वो अल्लाह से फ़रेबकारी करते हैं और मोमिनों से भी, हालांकि धोका वो अपने आपको ही दे रहे हैं, लेकिन उन्हें शऊर नहीं।

10. उनके दिलों में रोग था तो अल्लाह ने उनका रोग बढ़ा दिया और उनके झूट बोलते रहने की वजह से उनके लिए एक दर्दनाक अज़ाब है।

2 सूरतुल् ब-क़-रति 87
(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के
20000 अक्षर, 6021 शब्द 286
आयतें और 40 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1)
ज़ालिकल्- किताबु ला रै-ब फ़ीहि
हुदल्लिल्- मुत्तक़ीन (2)
अल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्-ग़ैबि
व युक़ीमूनस्सला-त व मिम्मा
र-ज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (3)
वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिमा
उन्ज़ि- ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल
मिन् क़ब्लि-क व बिल्-आख़ि-रति
हुम् यूक़िनून (4)
उलाइ-क अ़ला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व
उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (5)
इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू सवाउन्
अ़लैहिम् अ-अन्ज़र्-तहुम् अम् लम्
तुन्ज़िर्हुम ला युअ्मिनून (6)
ख़- तमल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् व
अ़ला सम्अ़िहिम् व अ़ला अब्सारिहिम्
ग़िशा-वतुंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम
(7) ●
व मिनन्नासि मंय्यक़ूलु आमन्ना
बिल्लाहि व बिल्यौमिल्-आख़िरि व
मा हुम् बिमुअ्मिनीन ● (8)
युख़ादिअूनल्ला-ह वल्लज़ी-न आमनू,
व मा यख़्दअू-न इल्ला अन्फ़ुसहुम्
व मा यश्अुरून (9)
फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन्
फ़ज़ा-दहुमुल्लाहु म-रज़न् व लहुम्
अ़ज़ाबुन् अलीमुम् बिमा कानू
यक्ज़िबून (10)

سُوْرَةُ الْبَقَرَةِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢٨٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓمّٓ ۚ ۝١ ذٰلِكَ الْكِتٰبُ لَا رَيْبَ ۛ
فِيْهِ ۛ هُدًى لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٢
الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْغَيْبِ
وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا
رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٣
وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ ۚ
وَبِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٤
اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ ۙ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ
ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٦
خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَعَلٰى
سَمْعِهِمْ ۙ وَعَلٰٓى اَبْصَارِهِمْ غِشَاوَةٌ ۡ
ع وَّلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝٧
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا
بِاللّٰهِ وَبِالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَمَا هُمْ
بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٨
يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ
وَمَا يَخْدَعُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ
وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩
فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ
مَرَضًا ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۢ بِمَا
كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝١٠

11. जब उनसे कहा जाता है कि “ज़मीन में बिगाड़ पैदा न करो,” कहते हैं, “हम तो महज़ इस्लाह करनेवाले हैं।”

12. आगाह रहो, वही हैं जो बिगाड़ पैदा करते हैं लेकिन उन्हें समझ नहीं।

13. और जब उनसे कहा जाता है, “ईमान लाओ जैसे लोग ईमान लाए हैं,” कहते हैं, “क्या हम ईमान लाएं जैसे बेवकूफ़ ईमान लाए हैं”? आगाह रहो, वही बेवकूफ़ हैं, मगर जानते नहीं।

14. और जब मोमिनों से मिलते हैं, कहते हैं कि “हम भी ईमान लाए हैं,” और जब अलाहिदगी में अपने शैतानों के पास जाते हैं, कहते हैं, “हम तो तुम्हारे साथ हैं, यह तो हम सिर्फ़ मज़ाक़ कर रहे हैं।”

15. अल्लाह उनसे मज़ाक़ कर रहा है, और उन्हें उनकी सरकशी में ढील दिए जाता है, वो भटके फिर रहे हैं।

16. ये ऐसे लोग हैं जिन्होंने हिदायत की क़ीमत पर गुमराही मोल ली, तो उनकी तिजारत ने कुछ भी नफ़ा न दिया और वो हिदायत पाने वाले न हुए।

17. उनकी मिसाल ऐसी है जैसे किसी शख़्स ने आग जलाई, फिर जब उसने उसके माहौल को रोशन कर दिया तो अल्लाह ने उनकी रोशनी ही छीन ली और उन्हें अंधेरों में छोड़ दिया जिससे उन्हें सुझाई नहीं दे रहा है।

18. बहरे हैं, गूंगे हैं, अंधे हैं, अब वो लौटने के नहीं।

19. या जैसे आसमान से बारिश हो रही हो जिसके साथ तारीकियां हों और गरज और चमक हो, वो बिजली की कड़क के सबब से मौत के डर से अपने कानों में उंगलियां दिए ले रहे

व इज़ा क़ी-ल लहुम् ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि क़ालू इन्नमा नह्नु मुस्लिहून (11)

अला इन्नहुम् हुमुल-मुफ़्सिदू-न व ला किल्ला यश्अुरून (12)

व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू कमा आ-मनन्नासु क़ालू अनुअ्मिनु कमा आ-मनस् सु-फ़हा-उ, अला इन्नहुम् हुमुस्-सु- फ़हा-उ व लाकिल्ला यअ्लमून (13)

व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न आमनू क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़लौ इला शयातीनिहिम् क़ालू इन्ना म-अ़कुम् इन्नमा नह्नु मुस्तह्ज़िऊन (14)

अल्लाहु यस्तह्ज़िउ बिहिम् व यमुद्दुहुम फ़ी तुग़यानिहिम् यअ्महून (15)

उलाइकल्लज़ीनश्त-रवुज़-ज़ला-ल-त बिल्हुदा फ़मा रबिहत्-तिजारतुहुम् व मा कानू मुह्तदीन (16)

म-सलुहुम् क-म-सलिल्-लज़िस्तौ-क़-द नारन् फ़-लम्मा अज़ा-अत् मा हौ-लहू ज़-हबल्लाहु बिनूरिहिम् व त-र- कहुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्ला युब्सिरून (17)

सुम्मुम्- बुक्मुन अुम्युन् फ़हुम् ला यर्जिअून (18)

औ क-सय्यिबिम्-मिनस्समा-इ फ़ीहि ज़ुलुमातुंव्-व रअ़्दुंव्-व बर्क़ुन, यज्अ़लू-न असाबि-अ़हुम् फ़ी आज़ानिहिम् मिनस्सवाअ़िक़िह-ज़रल्मौति वल्लाहु

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَا تُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ
قَالُوْٓا اِنَّمَا نَحْنُ مُصْلِحُوْنَ (١١)
اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْمُفْسِدُوْنَ وَلٰكِنْ
لَّا يَشْعُرُوْنَ (١٢)
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا كَمَآ اٰمَنَ
النَّاسُ قَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ كَمَآ اٰمَنَ
السُّفَهَآءُ ؕ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ السُّفَهَآءُ
وَلٰكِنْ لَّا يَعْلَمُوْنَ (١٣)
وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ
وَاِذَا خَلَوْا اِلٰى شَيٰطِيْنِهِمْ ۙ قَالُوْٓا
اِنَّا مَعَكُمْ ۙ اِنَّمَا نَحْنُ مُسْتَهْزِءُوْنَ (١٤)
اَللّٰهُ يَسْتَهْزِئُ بِهِمْ وَيَمُدُّهُمْ فِىْ
طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ (١٥)
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ
بِالْهُدٰى ۠ فَمَا رَبِحَتْ تِّجَارَتُهُمْ
وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ (١٦)
مَثَلُهُمْ كَمَثَلِ الَّذِى اسْتَوْقَدَ
نَارًا ۚ فَلَمَّآ اَضَآءَتْ مَا حَوْلَهٗ
ذَهَبَ اللّٰهُ بِنُوْرِهِمْ وَتَرَكَهُمْ
فِىْ ظُلُمٰتٍ لَّا يُبْصِرُوْنَ (١٧)
صُمٌّ ۢ بُكْمٌ عُمْىٌ فَهُمْ لَا
يَرْجِعُوْنَ ۙ (١٨)
اَوْ كَصَيِّبٍ مِّنَ السَّمَآءِ فِيْهِ
ظُلُمٰتٌ وَّرَعْدٌ وَّبَرْقٌ ۚ يَجْعَلُوْنَ
اَصَابِعَهُمْ فِىْٓ اٰذَانِهِمْ مِّنَ
الصَّوَاعِقِ حَذَرَ الْمَوْتِ ؕ وَاللّٰهُ

हों और अल्लाह ने तो अहले कुफ़्र को घेर रखा है।

20. गोया अनक़रीब बिजली उनकी आंखों की रौशनी उचक लेने को है; जब भी चमक जाती है उसमें वो चल पड़ते हों और जब उन पर अंधेरा छा जाता हो तो खड़े हो जाते हों, अगर अल्लाह चाहता, तो उनकी समाअत और उनकी निगाहों को बिल्कुल ही छीन लेता। बेशक अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

21. ऐ लोगो! बन्दगी करो अपने रब की जिसने तुम्हें और तुमसे पहले के लोगों को पैदा किया ताकि तुम बच सको;

22. जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श और आसमान को छत बनाया और आसमान से पानी उतारा फिर उसके ज़रिए से कितनी ही पैदावार और फल तुम्हारे रिज़्क़ के लिए निकाले; तो अल्लाह के हमसर (शरीक) न ठहराओ जबकि तुम जानते हो।

23. और अगर उसके बारे में जो हमने अपने बन्दे पर उतारा है तुम किसी शक में हो तो उसके जैसी कोई सूरह ले आओ और अल्लाह को छोड़ कर, अपने हिमायतियों को बुला लो, अगर तुम सच्चे हो।

24. फिर अगर तुम ऐसा न कर सको और हरगिज़ नहीं कर सकते तो डरो उस आग से जिसका ईंधन इनसान और पत्थर हैं, जो तैयार है काफ़िरों के लिए।

25. उन लोगों को जो ईमान लाए और जिन्होंने अच्छे काम किए खुशख़बरी दे दो कि उनके लिए बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; जब भी उनमें से कोई फल उन्हें बतौरे रिज़्क़ मिलेगा, कहेंगे, "यह तो वही है जो हमें पहले मिला था"; और उन्हें मिलता-जुलता ही मिलेगा; उनके लिए वहां पाकीज़ा जोड़े हैं और वो वहां हमेशा रहेंगे।

मुहीतुम्- बिल्काफ़िरीन (19)

यकादुल्-बर्क़ु यख़्तफ़ु अब्सा-रहुम्, कुल्लमा अज़ा- अ लहुम् मशौ फ़ीहि व इज़ा अज़्ल-म अलैहिम् क़ामू, व लौ शा-अल्लाहु ल-ज़-ह-ब बिसम्अिहिम् व अब्सारिहिम्, इन्नल्ला-ह अला कुल्लि शैइन् क़दीर (20) ●

या अय्युहन्नासुअ्बुदू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल- क़कुम् वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (21)

अल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुलअर्-ज़ फ़िराशंव्-वस्समा-अ बिनाअंव्-व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअन् फ़-अख़्र-ज बिही मिनस्स-मराति रिज़्क़ल् लकुम् फ़ला तज्अ़लू लिल्लाहि अन्दादंव्-व अन्तुम् तअ्लमून (22)

व इन कुन्तुम् फ़ी रैबिम्-मिम्मा नज़्ज़लना अ़ला अ़ब्दिना फ़अ्तू बिसू-रतिम् मिम् मिस्लिही वद्अू शु-हदाअकुम् मिन् दूनिल्लाहि इन कुन्तुम् सादिक़ीन (23)

फ़-इल्लम तफ़्अ़लू व लन् तफ़्अ़लू फ़त्तक़ुन्नारल्लती व क़ूदुहन्नासु वल्हिजा-रतु उअ़िद्दत् लिल्काफ़िरीन (24)

व बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति अन्-न लहुम् जन्नातिन तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, कुल्लमा रुज़िक़ू मिन्हा मिन् स-म-रतिर्- रिज़्क़न् क़ालू हाज़ल्लज़ी रुज़िक़्ना मिन् क़ब्लु व उतू बिहि मु-तशाबिहन्, व लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् मु-तह्ह- रतुव्ं - व हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (25)

مُحِيْطٌ بِالْكٰفِرِيْنَ (١٩)
يَكَادُ الْبَرْقُ يَخْطَفُ اَبْصَارَهُمْ ؕ كُلَّمَآ
اَضَآءَ لَهُمْ مَّشَوْا فِيْهِ ۙ وَاِذَآ اَظْلَمَ
عَلَيْهِمْ قَامُوْا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَذَهَبَ
بِسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى
ع كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ (٢٠)
يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوْا رَبَّكُمُ
الَّذِىْ خَلَقَكُمْ وَالَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ۙ (٢١)
الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ فِرَاشًا
وَّ السَّمَآءَ بِنَآءً ۪ وَّ اَنْزَلَ مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ
رِزْقًا لَّكُمْ ۚ فَلَا تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ
اَنْدَادًا وَّ اَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (٢٢)
وَ اِنْ كُنْتُمْ فِىْ رَيْبٍ مِّمَّا نَزَّلْنَا
عَلٰى عَبْدِنَا فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّنْ
مِّثْلِهٖ ۪ وَادْعُوْا شُهَدَآءَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٢٣)
فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَلَنْ تَفْعَلُوْا
فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِىْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ
وَالْحِجَارَةُ ۚۖ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ (٢٤)
وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
اَنَّ لَهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ؕ كُلَّمَا رُزِقُوْا مِنْهَا مِنْ ثَمَرَةٍ
رِّزْقًا ۙ قَالُوْا هٰذَا الَّذِىْ رُزِقْنَا مِنْ قَبْلُ ۙ
وَاُتُوْا بِهٖ مُتَشَابِهًا ؕ وَلَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ
مُّطَهَّرَةٌ ۙ وَّهُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٢٥)

26. बेशक अल्लाह नहीं शर्माता कि वह कोई मिसाल पेश करे मच्छर की बल्कि उससे भी बढ़कर किसी हक़ीर चीज़ की। फिर जो मोमिन हैं वो तो जानते हैं कि वह उनके रब की तरफ़ से हक़ है; रहे इनकार करने वाले तो वो कहते हैं, "इस मिसाल से अल्लाह क्या चाहता है?" इससे वह बहुतों को गुमराही में मुबतला करता है और बहुतों को हिदायत देता है, मगर इससे वह महज़ फ़ासिक़ों ही को गुमराही में मुबतला करता है।

27. जो अल्लाह के अहद को उसे पुख़्ता करने के बाद तोड़ देते हैं और जिसे अल्लाह ने जोड़ने का हुक्म दिया है उसे काट डालते हैं, और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं, वही हैं जो घाटा उठाने वाले हैं।

28. तुम अल्लाह के साथ कुफ़्र कैसे करते हो, जबकि तुम बेजान थे तो उसने तुम्हें ज़िन्दा किया, फिर वही तुम्हें मौत देता है, फिर वही तुम्हें ज़िन्दा करेगा, फिर उसी की तरफ़ तुम्हें लौटना है?

29. वही तो है जिसने तुम्हारे लिए वह सब कुछ पैदा फ़रमाया जो ज़मीन में है, फिर आसमान की तरफ़ रुख़ किया, तो सात आसमान उस्तुवार कर दिए; और वह हर चीज़ से वाक़िफ़ है।

30. और याद करो जब तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि "मैं ज़मीन में (इनसान को) ख़लीफ़ा बनाने वाला हूं," उन्होंने कहा, "क्या उसमें उसको रखेगा जो उसमें फ़साद मचाए और ख़ून बहाए और हम तेरी हम्द की तसबीह करते और तुझे पाक कहते हैं?" उसने कहा, "मैं जानता हूं जो तुम नहीं जानते!"

31. उसने आदम को सारे नाम सिखाए; फिर उन्हें फ़रिश्तों के सामने पेश किया और कहा, "अगर तुम सच्चे हो तो मुझे उनके नाम बताओ!"

32. बोले, "अज़ीम व बरतर है तू! तूने जो कुछ हमें बताया उसके

इन्नल्ला-ह ला यस्तह्यी अंय्यज़्रि-ब म-सलम्मा बअू-ज़तन् फ़मा फ़ौ-क़हा, फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़-यअ्लमू-न अन्नहुल्हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम्, व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-यक़ूलू-न माज़ा अरादल्लाहु बिहाज़ा म-सलन् ● *युज़िल्लु बिही कसीरंव्-व यह्दी बिही कसीरन्, व मा युज़िल्लु बिही इल्लल्- फ़ासिक़ीन* (26)

अल्लज़ी-न यन्क़ुज़ु-न अह्दल्लाहि मिम्-बअ्दि मीसाक़िही व यक़्तअू-न मा अ-मरल्लाहु बिही अंय्यू-स-ल व युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (27)

कै-फ़ तक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व कुन्तुम् अम्वातन् फ़- अह्याकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम् सुम्-म इलैहि तुर्जअून (28)

हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न्, सुम्मस्तवा इलस्समा-इ फ़-सव्वाहुन्-न सब्-अ समावातिन्, व हु-व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (29) ●

व इज़् क़ा-ल रब्बु-क लिल्मलाइ-कति इन्नी जाअ़िलुन् फ़िल्अर्ज़ि ख़ली-फ़तन्, क़ालू अ-तज्-अ़लु फ़ीहा मंय्युफ़्सिदु फ़ीहा व यस्फ़िकुद्दिमा-अ व नह्नु नुसब्बिहु बिहम्दि-क व नुक़द्दिसु ल-क, क़ा-ल इन्नी अअ्लमु मा ला तअ्लमून (30)

व अ़ल्ल-म आ-दमल्- अस्मा-अ कुल्लहा सुम्-म अ़-र-ज़हुम् अ़लल्-मलाइ-कति फ़क़ा-ल अम्बिऊनी बिअस्मा-इ हा-उला-इ इन कुन्तुम सादिक़ीन (31)

क़ालू सुब्हा-न-क ला अ़िल्-म लना इल्ला मा

إِنَّ اللّٰهَ لَا يَسْتَحْيٖۤ اَنْ يَّضْرِبَ
مَثَلًا مَّا بَعُوْضَةً فَمَا فَوْقَهَا ؕ فَاَمَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهُ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
فَيَقُوْلُوْنَ مَاذَآ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا مَثَلًا ۘ
يُضِلُّ بِهٖ كَثِيْرًا ۙ وَّيَهْدِيْ بِهٖ كَثِيْرًا ؕ
وَمَا يُضِلُّ بِهٖۤ اِلَّا الْفٰسِقِيْنَ (٢٦)
الَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ
مِيْثَاقِهٖ ۪ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖۤ
اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ؕ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (٢٧)
كَيْفَ تَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَكُنْتُمْ اَمْوَاتًا
فَاَحْيَاكُمْ ۚ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ
ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ (٢٨)
هُوَ الَّذِيْ خَلَقَ لَكُمْ مَّا فِي الْاَرْضِ
جَمِيْعًا ۗ ثُمَّ اسْتَوٰۤى اِلَى السَّمَآءِ
فَسَوّٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ ؕ وَهُوَ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيْمٌ (٢٩)
وَاِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ جَاعِلٌ
فِي الْاَرْضِ خَلِيْفَةً ؕ قَالُوْٓا اَتَجْعَلُ
فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا وَيَسْفِكُ الدِّمَآءَ ۚ
وَنَحْنُ نُسَبِّحُ بِحَمْدِكَ وَنُقَدِّسُ لَكَ ؕ
قَالَ اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٣٠)
وَعَلَّمَ اٰدَمَ الْاَسْمَآءَ كُلَّهَا ثُمَّ
عَرَضَهُمْ عَلَى الْمَلٰٓئِكَةِ ۙ فَقَالَ اَنْۢبِئُوْنِيْ
بِاَسْمَآءِ هٰٓؤُلَآءِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (٣١)
قَالُوْا سُبْحٰنَكَ لَا عِلْمَ لَنَآ اِلَّا مَا

सिवा हमें कोई इल्म नहीं। बेशक तू सब कुछ जानने वाला, साहिबे हिक्मत है।"

33. कहा, "ऐ आदम, उन्हें इन लोगों के नाम बताओ"। फिर जब उन्हें उनके नाम बता दिए, कहा, "क्या मैंने तुमसे कहा न था कि मैं आसमानों और ज़मीन के राज़ को जानता हूं? और मैं जानता हूं जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छुपाते हो।"

34. और याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि "आदम को सजदा करो", उन्होंने सजदा किया सिवाए इबलीस के; उसने इनकार कर दिया और लगा बड़ा बनने, और काफ़िर ही रहा।

35. और हमने कहा, "ऐ आदम! तुम और तुम्हारी बीवी जन्नत में रहो और वहां जी भर बे रोक-टोक, जहां से तुम दोनों का जी चाहे खाओ, लेकिन इस दरख़्त के पास न जाना, वरना ज़ालिम ठहरोगे।"

36. आख़िरकार शैतान ने उन्हें वहां से फिसला दिया, फिर उन्हें वहां से जहां वो थे निकलवा कर छोड़ा। हमने कहा कि उतरो, तुम एक दूसरे के दुश्मन होगे और तुम्हें एक वक़्त तक ज़मीन में ठहरना और बरतना है।"

37. फिर आदम ने अपने रब से कुछ कलिमात कहने की तौफ़ीक़ पा ली, तो अल्लाह ने उसकी तौबा क़बूल कर ली; बेशक वही तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम वाला है।

38. हमने कहा, "उतरो यहां से सब, फिर जो तुम्हारे पास मेरी तरफ़ से कोई हिदायत पहुंचे तो जिस किसी ने मेरी हिदायत की पैरवी की तो ऐसे लोगों को न कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।

39. और जिन्होंने इनकार किया और हमारी आयतों को झुटलाया, वही आग वाले हैं, वो उसमें हमेशा रहेंगे।"

40. ऐ बनी इसराईल, याद करो मेरी उस नवाजिश को जो मैंने तुमपर

अ़ल्लम्तना इन्न-क अन्तल्-अलीमुल्-हकीम (32)

क़ा-ल या आदमु अम्बिअ्हुम बिअस्मा-इहिम् फ़-लम्मा अम्ब-अहुम् बिअस्मा-इहिम् क़ा-ल अलम् अक़ुल्लकुम् इन्नी अअ़्लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि व अअ़्लमु मा तुब्दू-न व मा कुन्तुम् तक्तुमून (33)

व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआ-द-म फ़-स-जदू इल्ला इब्लीस्, अबा वस्तक्ब-र व का-न मिनल्काफ़िरीन (34)

व क़ुल्ना या आ-दमुस्कुन् अन्-त व ज़ौजुकल्-जन्न-त व कुला मिन्हा र-ग़दन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़रबा हाज़िहिश्- श-ज-र-त फ़- तकूना मिनज़् - ज़ालिमीन (35)

फ़- अज़ल्-लहुमश् -शैतानु अ़न्हा फ़-अख़्र-जहुमा मिम्मा काना फ़ीही व क़ुल्- नह्बितू बअ्ज़ुकुम् लिबअ्ज़िन् अ़दुव्वुन् व लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुस्तक़र्रूंव-व मताअुन् इलाहीन (36)

फ़-त लक़्क़ा आदमु मिर्रब्बिही कलिमातिन् फ़ता-ब अ़लैहि, इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम (37)

क़ुल्नह्बितू मिन्हा जमीअ़न् फ़-इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़-मन् तबि-अ़ हुदा-या फ़ला ख़ौफ़ुन अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (38)

वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुन्नारि! हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (39) ●

या बनी इस्राईलज़्कुरू निअ्मतियल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व औफ़ू

عَلَّمْتَنَا ۭ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ۝٣٢
قَالَ يٰٓاٰدَمُ اَنْۢبِئْهُمْ بِاَسْمَاۗىِٕهِمْ ۚ فَلَمَّآ
اَنْۢبَاَهُمْ بِاَسْمَاۗىِٕهِمْ ۙ قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ
اِنِّىْٓ اَعْلَمُ غَيْبَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۙ
وَاَعْلَمُ مَا تُبْدُوْنَ وَمَا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝٣٣
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ
فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰى وَاسْتَكْبَرَ ڒ
وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٣٤
وَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ
الْجَنَّةَ وَكُلَا مِنْهَا رَغَدًا حَيْثُ شِئْتُمَا ۠
وَلَا تَقْرَبَا هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا
مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٣٥
فَاَزَلَّهُمَا الشَّيْطٰنُ عَنْهَا فَاَخْرَجَهُمَا
مِمَّا كَانَا فِيْهِ ۠ وَقُلْنَا اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ
لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ فِى الْاَرْضِ
مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ۝٣٦
فَتَلَقّٰٓى اٰدَمُ مِنْ رَّبِّهٖ كَلِمٰتٍ فَتَابَ
عَلَيْهِ ۭ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝٣٧
قُلْنَا اهْبِطُوْا مِنْهَا جَمِيْعًا ۚ فَاِمَّا
يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّىْ هُدًى فَمَنْ تَبِعَ
هُدَاىَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُوْنَ ۝٣٨
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ
اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا
ع خٰلِدُوْنَ ۝٣٩
يٰبَنِىْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِىَ
الَّتِىْٓ اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَوْفُوْا

की थी और मेरे अहद को पूरा करो मैं तुम्हारे अहद को पूरा करूंगा और मुझी से डरो।

41. और ईमान लाओ उस चीज़ पर जो मैंने उतारी है, जो उस की तसदीक़ में है जो तुम्हारे पास है और सब से बढ़-चढ़ कर तुम ही उसके इनकार करनेवाले न बनो। और मेरी आयतों को थोड़ी क़ीमत हासिल करने का ज़रिया न बनाओ; मुझसे ही तुम डरो।

42. और हक़ में बातिल की आमेज़िश (मिलावट) न करो, और जानते-बूझते हक़ को मत छुपाओ।

43. और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और झुकने वालों के साथ झुको।

44. क्या तुम लोगों को तो नेकी और एहसान का हुक्म देते हो और अपने आपको भूल जाते हो हालांकि किताब भी पढ़ते हो? फिर क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?

45. सब्र और नमाज़ से मदद लो, और बेशक वह गिरां (दुशवार) है मगर उनके लिए नहीं जिनके दिल झुके हुए हों,

46. जो समझते हैं कि उन्हें अपने रब से मिलना है और उसी की तरफ़ उन्हें लौटना है।

47. ऐ बनी इसराईल, याद करो मेरी उस नवाज़िश को जो मैंने तुमपर की थी और उसे कि मैंने तुम्हें सारे जहान पर फ़ज़ीलत दी थी;

48. और डरो उस दिन से जब न कोई किसी की तरफ़ से कुछ तावान भरेगा और न किसी की तरफ़ से कोई सिफ़ारिश ही क़बूल की जाएगी, और न किसी की जानिब से कोई फ़िदया लिया जाएगा, और न वो मदद ही पा सकेंगे।

49. और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔनियों से छुटकारा दिलाया जो तुम्हें बदतरीन दुख पहुंचाते थे; तुम्हारे बेटों को ज़बह करते थे, और तुम्हारी

बि- अ़ह्दी ऊफ़ि बि-अ़ह्दिकुम् व इय्या-य फ़र्हबून (40)

व आमिनू बिमा अन्ज़ल्तु मुसद्दिक़ल्लिमा म- अ़कुम् व ला तकूनू अव्व-ल काफ़िरिम् बिहि व ला तश्तरू बिआयाती स़-मनन् क़लीलंव्-व इय्या-य फ़त्तक़ून (41)

व ला तल्बिसुल्-हक़्-क़ बिल्बातिलि व तक्तुमुल्हक़्-क़ व अन्तुम् तअ़्लमून (42)

व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त वर्-कअ़ू म-अ़र्राकिअ़ीन (43)

अ-तअ़्मुरूनन्ना-स बिल्बिर्रि व तन्सौ-न अन्फ़ुसकुम् व अन्तुम् तत्लूनल्-किता-ब, अ-फ़ला तअ़्क़िलून (44)

वस्तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति, व इन्नहा ल-कबी-रतुन् इल्ला अ़लल्-ख़ाशिअ़ीन (45)

अल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम्-मुलाक़ू रब्बिहिम् व अन्नहुम् इलैहि राजिअ़ून ● (46) ●

या बनी इस्राईलज़्कुरू निअ़्मतियल्लती अन्अ़म्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ़लल् आ़लमीन (47)

वत्तक़ू यौमल्ला तज्ज़ी नफ़्सुन् अ़न्नफ़्सिन् शैअंव्-व ला युक़्बलु मिन्हा शफ़ा-अ़तुंव-व ला युअ़्-ख़ज़ु मिन्हा अ़द्लुंव-व ला हुम् युन्सरून (48)

व इज़् नज्जैनाकुम मिन् आलि फ़िर्औ-न यसूमू-नकुम् सूअल्-अ़ज़ाबि युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम्

بِعَهْدِيْٓ اُوْفِ بِعَهْدِكُمْ ۚ وَاِيَّايَ
فَارْهَبُوْنِ ۝٤٠
وَاٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلْتُ مُصَدِّقًا لِّمَا
مَعَكُمْ وَلَا تَكُوْنُوْٓا اَوَّلَ كَافِرٍۢ بِهٖ
وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِيْ ثَمَنًا قَلِيْلًا ز
وَّاِيَّايَ فَاتَّقُوْنِ ۝٤١
وَلَا تَلْبِسُوا الْحَقَّ بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوا
الْحَقَّ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٤٢
وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
وَارْكَعُوْا مَعَ الرّٰكِعِيْنَ ۝٤٣
اَتَاْمُرُوْنَ النَّاسَ بِالْبِرِّ وَتَنْسَوْنَ
اَنْفُسَكُمْ وَاَنْتُمْ تَتْلُوْنَ الْكِتٰبَ ط
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٤٤
وَاسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ وَالصَّلٰوةِ ۭ وَاِنَّهَا
لَكَبِيْرَةٌ اِلَّا عَلَى الْخٰشِعِيْنَ ۝٤٥
الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ اَنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ
وَاَنَّهُمْ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝٤٦ ع
يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِيَ الَّتِيْٓ
اَنْعَمْتُ عَلَيْكُمْ وَاَنِّيْ فَضَّلْتُكُمْ
عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝٤٧
وَاتَّقُوْا يَوْمًا لَّا تَجْزِيْ نَفْسٌ عَنْ
نَّفْسٍ شَيْـًٔا وَّلَا يُقْبَلُ مِنْهَا شَفَاعَةٌ
وَّلَا يُؤْخَذُ مِنْهَا عَدْلٌ وَّلَا هُمْ
يُنْصَرُوْنَ ۝٤٨
وَاِذْ نَجَّيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْۗءَ الْعَذَابِ يُذَبِّحُوْنَ
اَبْنَاۗءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَاۗءَكُمْ ط

औरतों को ज़िन्दा रहने देते थे; और यह तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी आज़माइश हुई!

50. याद करो जब हमने तुम्हें समुंदर में अलग-अलग राह से ले जाकर नजात दी और फ़िरऔनियों को तुम्हारी नज़रों के सामने डुबो दिया।

51. और याद करो जब हमने मूसा से चालीस रातों का वादा ठहराया तो तुम उसके पीछे बछड़े को माबूद बना बैठे, तुम ज़ालिम थे;

52. फिर इसके बाद भी हमने तुम्हारे सिलसिले में दरगुज़र से काम लिया कि तुम शुक्रगुज़ार बनो।

53. और याद करो जब हमने मूसा को किताब और फ़ुरक़ान अता किया ताकि तुम राह पा सको।

54. और जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि "ऐ मेरे लोगो, बछड़े को माबूद बनाकर तुमने अपने ऊपर जुल्म किया है; तो तुम अपने पैदा करनेवाले की तरफ़ रुजू हो जाओ, पस अपने आदमियों को खुद क़त्ल करो, यही तुम्हारे पैदा करने वाले के नज़दीक तुम्हारे लिए बेहतर है, फिर उसने तुम्हारी तौबा क़बूल कर ली, बेशक वह बड़ा तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम करने वाला है।"

55. और याद करो जब तुमने कहा था, "ऐ मूसा, हम ईमान लाने के नहीं जब तक अल्लाह को अलानिया न देख लें;" फिर एक कड़क ने तुम्हें आ दबोचा, तुम देखते रहे।

56. फिर तुम्हारे बेजान हो जाने के बाद हमने तुम्हें जिला उठाया ताकि तुम शुक्रगुज़ार बनो।

57. और हमने तुमपर बादलों का साया किया, और तुम पर मन्न और सलवा उतारा: "खाओ जो अच्छी पाक चीज़ें हमने तुम्हें अता की"। उन्होंने हमारा तो कुछ नहीं बिगाड़ा बल्कि वो अपने ही ऊपर सितम ढाते रहे।

58. और जब हमने कहा था कि "इस बस्ती में दाख़िल हो फिर उसमें से जहां से चाहो जी भर खाओ और

व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम् मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम (49)

व इज़् फ़-रक़्ना बिकुमुल्-बह्-र फ़-अन्जैनाकुम् व अग़्रक़्ना आ-ल फ़िर्-औ़-न व अन्तुम् तन्ज़ुरून (50)

व इज़् वाअ़दना मूसा अर्बअ़ी-न लै-लतन् सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्- अ़िज्-ल मिम्-बअ़्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून (51)

सुम्-म अ़फ़ौना अ़न्कुम् मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (52)

व इज़् आतैना मूसल्-किता-ब वल्फ़ुरक़ा-न लअ़ल्लकुम् तह्तदून (53)

व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमि इन्नकुम् ज़-लम्तुम अन्फ़ु-सकुम् बित्तिख़ाज़िकुमुल्-अ़िज्- ल फ़तूबू इला बारिइकुम् फ़क़्तुलू अन्फ़ु-सकुम्, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् अ़िन्-द बारिइकुम्, फ़ता-ब अ़लैकुम इन्नहू हुवत्तव्वाबुर्रहीम (54)

व इज़् क़ुल्तुम् या मूसा लन्-नुअ्मि-न ल- क हत्ता नरल्ला-ह जह्-रतन् फ़-अ-ख़ज़त्कुमुस्साअ़ि-क़तु व अन्तुम् तन्ज़ुरून (55)

सुम्-म बअ़स्नाकुम् मिम्-बअ़्दि मौतिकुम् लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (56)

व ज़ल्लल्ना अ़लैकुमुल्- ग़मा-म व अन्ज़ल्ना अ़लैकुमुल्मन्-न वस्सल्वा, कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम्, व मा ज़-लमूना व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून (57)

व इज़् क़ुल्नद्ख़ुलू हाज़िहिल्-क़र्-य-त

وَفِيْ ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
عَظِيْمٌ ﴿٤٩﴾
وَاِذْ فَرَقْنَا بِكُمُ الْبَحْرَ فَاَنْجَيْنٰكُمْ
وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ وَاَنْتُمْ
تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٠﴾
وَاِذْ وٰعَدْنَا مُوْسٰٓى اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً
ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ
وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٥١﴾
ثُمَّ عَفَوْنَا عَنْكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٢﴾
وَاِذْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَالْفُرْقَانَ
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿٥٣﴾
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اِنَّكُمْ
ظَلَمْتُمْ اَنْفُسَكُمْ بِاتِّخَاذِكُمُ الْعِجْلَ
فَتُوْبُوْٓا اِلٰى بَارِئِكُمْ فَاقْتُلُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ عِنْدَ بَارِئِكُمْ ؕ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿٥٤﴾
وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ
حَتّٰى نَرَى اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْكُمُ
الصّٰعِقَةُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ﴿٥٥﴾
ثُمَّ بَعَثْنٰكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَوْتِكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ﴿٥٦﴾
وَظَلَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْغَمَامَ وَاَنْزَلْنَا
عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ؕ كُلُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ؕ وَمَا ظَلَمُوْنَا وَلٰكِنْ
كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٥٧﴾
وَاِذْ قُلْنَا ادْخُلُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ

दरवाज़े में सजदा गुज़ार बनकर दाख़िल हो, और कहो 'हित्ततुन', हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे ओर अच्छे से अच्छा काम करने वालों को हम मज़ीद नवाज़ेंगे।"

59. फिर जो बात उनसे कही गई थी ज़ालिमों ने उसे दूसरी बात से बदल दिया, आख़िरकार ज़ालिमों पर हमने, जो नाफ़रमानी वो कर रहे थे, उसके सबब से आसमान से अज़ाब उतारा।

60. और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम के लिए पानी की दुआ की तो हमने कहा, "चट्टान पर अपनी लाठी मारो" तो उससे बारह चश्मे फूट निकले; और हर गिरोह ने अपना-अपना घाट जान लियाः "खाओ और पियो अल्लाह का दिया और ज़मीन में मुफ़सिदीन बनकर रूसियाह मत हो।"

61. और याद करो जब तुमने कहा था, "ऐ मूसा! हम एक ही खाने पर सब्र नहीं कर सकते; पस हमारे लिए अपने रब से दुआ करो कि वह हमारे लिए ज़मीन की पैदावार से साग-पात ककड़ियां और लहसुन और मसूर और प्याज़ निकाले।" कहा, "क्या तुम जो अदना है उसे उससे बदल कर लेना चाहते हो जो बेहतर है? किसी शहर में उतरो; फिर जो कुछ तुमने मांगा तुम्हें मिलेगा।" — और उन पर ज़िल्लत और बदहाली थोप दी गई, और वो अल्लाह के ग़ज़ब के सज़ावार हुए; यह इसलिए कि वो अल्लाह की आयतों का इनकार करते रहे और नबियों को नाहक़ क़त्ल के दरपे होते थे, यह इसलिए कि उन्होंने नाफ़रमानी की, और वो हद से तजावुज़ करते रहे।

62. बेशक अहले ईमान और जो यहूदी हुए, और ईसाई, और साबिई,

फ़कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम र-ग़दंव्-वद्ख़ुलुल्-बा-ब सुज्जदंव्- व क़ूलू हित्ततुन् नग़फ़िर् लकुम ख़तायाकुम्, व स-नज़ीदुल् मुह्सिनीन (58)

फ़-बद्-द-लल्लज़ी-न-ज़-लमू क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़-अन्ज़ल्ना अ़लल्लज़ी-न ज़लमू रिज्ज़म्-मिनस्-समा-इ बिमा कानू यफ़्सुक़ून (59) ●

व इज़िस्तस्क़ा मूसा लिक़ौमिही फ़-क़ुल्नज़्रिब् बिअ़साकल् ह-ज-र, फ़न्फ़-जरत् मिन्हुस्-नता अ़श्र-त अ़ैनन्, क़द् अ़लि-म कुल्लु उनासिम् मश्र-बहुम्, कुलू वश्रबू मिर्रिज़्क़िल्लाहि व ला तअ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (60)

व इज़् क़ुल्तुम् या मूसा लन्-नस्बि-र अ़ला तआ़मिंव्वाहिदिन् फ़द्अु लना रब्ब-क युख़्रिज् लना मिम्मा तुम्बितुल् अर्ज़ु मिम्-बक़्लिहा व क़िस्सा-इहा व फ़ूमिहा व अ़-दसिहा व ब-सलिहा, क़ा-ल अ-तस्तब्दिलूनल्लज़ी हु-व अद्ना बिल्लज़ी हु-व ख़ैरुन्, इह्बितू मिस्रन् फ़-इन्-न लकुम मा सअल्तुम, व ज़ुरिबत् अ़लैहिमुज़्ज़िल्लतु वल्मस्क-नतु व बाऊ बि-ग़-ज़बिम्- मिनल्लाहि, ज़ालि-क बिअन्न-हुम् कानू यक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्- नबिय्यी-न बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, ज़ालि-क बिमा अ़सव्-व कानू यअ्तदून (61) ●

इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू

فَكُلُوْا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ رَغَدًا وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّ قُوْلُوْا حِطَّةٌ نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَسَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٨

فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا قَوْلًا غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَنْزَلْنَا عَلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا ع كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ۝٥٩

وَاِذِ اسْتَسْقٰى مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ فَقُلْنَا اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ؕ فَانْفَجَرَتْ مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ؕ قَدْ عَلِمَ كُلُّ اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ؕ كُلُوْا وَاشْرَبُوْا مِنْ رِّزْقِ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا فِى الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝٦٠

وَاِذْ قُلْتُمْ يٰمُوْسٰى لَنْ نَّصْبِرَ عَلٰى طَعَامٍ وَّاحِدٍ فَادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُخْرِجْ لَنَا مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ مِنْۢ بَقْلِهَا وَقِثَّآئِهَا وَفُوْمِهَا وَعَدَسِهَا وَبَصَلِهَا ؕ قَالَ اَتَسْتَبْدِلُوْنَ الَّذِيْ هُوَ اَدْنٰى بِالَّذِيْ هُوَ خَيْرٌ ؕ اِهْبِطُوْا مِصْرًا فَاِنَّ لَكُمْ مَّا سَاَلْتُمْ ؕ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ وَالْمَسْكَنَةُ ۚ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ الْحَقِّ ؕ ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا ع وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ۝٦١

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا

जो भी अल्लाह और रोज़-ए-आख़िरत पर ईमान लाए और अच्छा काम करे तो ऐसे लोगों का अपने रब के पास अजर है, न तो उनको कोई डर होगा, और न वो ग़मगीन होंगे।

63. और याद करो जब हमने इस हाल में कि तूर को तुम्हारे ऊपर बुलन्द कर रखा था तुमसे पुख़्ता अहद लिया था कि "वह चीज़ जो हमने तुम्हें दी है उसे मज़बूती से पकड़ो, और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो ताकि तुम बच सको।"

64. फिर उसके बाद भी तुम फिर गए, तो अगर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुमपर न होती तो तुम टोटे में पड़ गए होते।

65. और तुम उन्हें तो जानते ही हो जो तुममें से सब्त के दिन के मुआमले में हद से आगे बढ़ गए थे, तो हमने उन्हें कह दिया कि "बन्दर हो जाओ, ज़लील, फिटकारे हुए!"

66. फिर हमने उसे उनके सामने वालों और बाद के लोगों के लिए इबरत और डरने वालों के लिए नसीहत बनाकर छोड़ा।

67. और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि "बेशक अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि एक गाय ज़बह करो।" कहने लगे, "क्या तुम हमसे मज़ाक़ करते हो?" कहा, "मैं इससे अल्लाह की पनाह मांगता हूं कि जाहिल बनूं।"

68. बोले, "हमारे लिए अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हम पर वाज़ेह कर दे कि वह कैसी हो?" कहा, "वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो न बूढ़ी हो न बछिया, इनके बीच की रास हो; तो जो तुम्हें हुक्म दिया जा रहा है करो।"

69. कहने लगे, "हमारे लिए अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमें बता दे कि उसका रंग कैसा हो?" कहा, "वह फ़रमाता है कि वह गाय सुनहरी हो, रंग उसका शोख़ हो कि देखने

वन्नसारा वस्साबिईन मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्- आख़िरि व अमि-ल सालिहन् फ़-लहुम् अज्रुहुम अिन्-द रब्बिहिम व ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम वला हुम् यह्ज़नून (62)

व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़कुम् व र-फ़अ्ना फ़ौ- क़कुमुत्तू- र ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वातिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (63)

सुम्-म तवल्लैतुम् मिम्-बअ्दि ज़ालि-क फ़लौला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू लकुन्तुम् मिनल् ख़ासिरीन (64)

व लक़द् अ़लिम्तुमुल्लज़ीनअ्तदौ मिन्कुम् फ़िस्सब्ति फ़क़ुल्ना लहुम् कूनू क़ि-र-दतन् ख़ासिईन (65)

फ़-जअ़ल्नाहा नकालल्लिमा बै-न यदैहा व मा ख़ल्फ़हा व मौअि-ज़तल् लिल्मुत्तक़ीन (66)

व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही इन्नल्ला-ह यअ्मुरुकुम् अन् तज़्बहू ब-क़-रतन्, क़ालू अ-तत्तख़िज़ुना हुज़ुवन्, क़ा-ल अऊज़ु बिल्लाहि अन् अकू-न मिनल्जाहिलीन (67)

क़ालुद्अु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य, क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुल्ला-फ़ारिज़ुंव्- व ला बिक्रून्, अवानुम्, बै-न ज़ालि-क, फ़फ़्अ़लू मा तुअ्मरून (68)

क़ालुद्अु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा लौनुहा, क़ा-ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुन् सफ़रा-उ फ़ाक़िअुल् लौनुहा

وَالنَّصٰرٰى وَالصّٰبِـِٕيْنَ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُمْ
اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٦٢﴾
وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَ رَفَعْنَا
فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ
بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ لَعَلَّكُمْ
تَتَّقُوْنَ ﴿٦٣﴾
ثُمَّ تَوَلَّيْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ۚ فَلَوْلَا
فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ لَكُنْتُمْ
مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٦٤﴾
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ الَّذِيْنَ اعْتَدَوْا مِنْكُمْ
فِي السَّبْتِ فَقُلْنَا لَهُمْ كُوْنُوْا قِرَدَةً
خٰسِـِٕيْنَ ﴿٦٥﴾ ۚ
فَجَعَلْنٰهَا نَكَالًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهَا
وَمَا خَلْفَهَا وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ﴿٦٦﴾
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖۤ اِنَّ اللّٰهَ
يَاْمُرُكُمْ اَنْ تَذْبَحُوْا بَقَرَةً ؕ قَالُوْۤا
اَتَتَّخِذُنَا هُزُوًا ؕ قَالَ اَعُوْذُ بِاللّٰهِ
اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ﴿٦٧﴾
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ؕ
قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا
فَارِضٌ وَّلَا بِكْرٌ ؕ عَوَانٌۢ بَيْنَ
ذٰلِكَ ؕ فَافْعَلُوْا مَا تُؤْمَرُوْنَ ﴿٦٨﴾
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا
مَا لَوْنُهَا ؕ قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا
بَقَرَةٌ صَفْرَآءُ ۙ فَاقِعٌ لَّوْنُهَا

वालों को ख़ुश कर देती हो"।

70. बोले, "हमारे लिए अपने रब से दरख़्वास्त करो कि वह हमें बता दे कि वह कैसी हो; गायों के तअय्युन में हमें इश्तिबाह हो रहा है; और अगर अल्लाह ने चाहा, तो हम ज़रूर पता लगा लेंगे।"

71. कहा, "वह कहता है कि वह ऐसी गाय हो जो सधाई हुई न हो कि ज़मीन जोतती हो और न वह खेत को सेराब करती हो, सही सालिम हो, किसी रंग की आमेज़िश उसमें न हो।" बोले, "अब तुमने ठीक बात बताई है;" फिर उन्होंने उसे ज़बह किया हालांकि वो करना नहीं चाहते थे।

72. और याद करो जब तुमने एक शख़्स को क़त्ल किया, फिर उसके सिलसिले में तुमने टाल-मटोल से काम लिया—हालांकि जिसको तुम छुपा रहे थे अल्लाह उसे ज़ाहिर करने वाला था।

73. — तो हमने कहा कि " उसे उसी तरह मारो मक़तूल को काट डालने की वजह से;" इस तरह अल्लाह मुर्दों को ज़िन्दगी देता है और तुम्हारे सामने अपनी आयतें पेश करता है ताकि तुम समझो।

74. फिर इसके बाद भी तुम्हारे दिल सख़्त हो गए पस वो पत्थरों की तरह हो गए बल्कि उनसे भी ज़्यादा सख़्त, क्योंकि बाज़ पत्थर तो ऐसे भी होते हैं जिनसे नहरें फूट निकलती हैं, और बाज़ उन में से ऐसे भी होते हैं कि फट जाते हैं, तो उनमें से पानी निकलने लगता है और उनमें बाज़ ऐसे भी होते हैं जो ख़ुदा के ख़ौफ़ से गिर जाते हैं। और अल्लाह, जो कुछ तुम कर रहे हो, उससे ग़ाफ़िल नहीं है।

75. तो क्या तुम इस लालच में हो कि वो तुम्हारी बात मान लेंगे, जबकि उनमें कुछ लोग अल्लाह का कलाम सुनते रहे हैं, फिर उसे ख़ूब समझ लेने के बाद जान-बूझ कर उसमें तहरीफ़ करते रहे?

76. और जब वो अहले ईमान से मिलते हैं, तो कहते हैं कि "हम भी ईमान रखते हैं;" और जब आपस में एक-दूसरे से तनहाई में मिलते हैं तो कहते हैं, "क्या तुम उन्हें वो बातें जो अल्लाह ने तुमपर खोलीं बता देते हो

तसुर्रुन्नाज़िरीन (69)

क़ालुद्अु लना रब्ब-क युबय्यिल्लना मा हि-य इन्नल् ब-क़-र तशाब-ह अ़लैना, व इन्ना इन्श-अल्लाहु लमुह्तदून (70)

क़ा- ल इन्नहू यक़ूलु इन्नहा ब-क़-रतुल् ला ज़लूलुन् तुसीरुल्-अर्-ज़ व ला तस्क़िल्-हर्-स मुसल्ल-मतुल्लाशिय- त फ़ीहा, क़ालुल्आ- न जिअ्-त बिल्हक़्क़ि, फ़-ज़-बहूहा व मा कादू यफ़अ़लून (71) ●

व इज़् क़तल्तुम् नफ़्सन् फ़द्दारअ्तुम् फ़ीहा, वल्लाहु मुख़्रिजुम्-मा कुन्तुम् तक्तुमून (72)

फ़-क़ुल्नज़्रिबूहु बि-बअ्ज़िहा, कज़ालि-क युह़्यिल्लाहुल्- मौता व युरीकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून (73)

सुम्-म क़सत् क़ुलूबुकुम् मिम्-बअ्दि ज़ालि-क फ़हि-य कल्हिजा-रति औ अशद्दु क़स्वतन्, व इन्-न मिनल्-हिजारति लमा य- तफ़ज्जरु मिन्हुल्-अन्हारु, व इन्-न मिन्हा लमा यश्शक़्क़क़ु फ़-यख़्रुजु मिन्हुल्मा-उ, व इन्-न मिन्हा लमा यह्बितु मिन् ख़श्यतिल्लाहि, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून (74)

अ-फ़्ततमऊ-न अंय्युअ्मिनू लकुम् व क़द् का-न फ़रीक़ुम् मिन्हुम् यस्मऊ-न कलामल्लाहि सुम्-म युहर्रिफ़ूनहू मिम्-बअ्दि मा अ-क़लूहु व हुम् यअ्लमून (75)

व इज़ा लक़ुल्लज़ी-न आमनू क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़ला बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़िन् क़ालूं अतुहद्दिसू-नहुम् बिमा फ़-तहल्लाहु अ़लैकुम्

تَسُرُّ النّٰظِرِيْنَ ۝٦٩
قَالُوا ادْعُ لَنَا رَبَّكَ يُبَيِّنْ لَّنَا مَا هِيَ ۙ
اِنَّ الْبَقَرَ تَشٰبَهَ عَلَيْنَا ؕ وَ اِنَّآ اِنْ
شَآءَ اللّٰهُ لَمُهْتَدُوْنَ ۝٧٠
قَالَ اِنَّهٗ يَقُوْلُ اِنَّهَا بَقَرَةٌ لَّا ذَلُوْلٌ
تُثِيْرُ الْاَرْضَ وَلَا تَسْقِى الْحَرْثَ ۚ مُسَلَّمَةٌ
لَّا شِيَةَ فِيْهَا ؕ قَالُوا الْـٰٔنَ جِئْتَ بِالْحَقِّ ؕ
ع ١٠ ٨ فَذَبَحُوْهَا وَمَا كَادُوْا يَفْعَلُوْنَ ۝٧١
وَاِذْ قَتَلْتُمْ نَفْسًا فَادّٰرَءْتُمْ فِيْهَا ؕ وَاللّٰهُ
مُخْرِجٌ مَّا كُنْتُمْ تَكْتُمُوْنَ ۝٧٢
فَقُلْنَا اضْرِبُوْهُ بِبَعْضِهَا ؕ كَذٰلِكَ
يُحْىِ اللّٰهُ الْمَوْتٰى ۙ وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ
لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٧٣
ثُمَّ قَسَتْ قُلُوْبُكُمْ مِّنْ بَعْدِ ذٰلِكَ
فَهِىَ كَالْحِجَارَةِ اَوْ اَشَدُّ قَسْوَةً ؕ
وَ اِنَّ مِنَ الْحِجَارَةِ لَمَا يَتَفَجَّرُ
مِنْهُ الْاَنْهٰرُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا يَشَّقَّقُ
فَيَخْرُجُ مِنْهُ الْمَآءُ ؕ وَاِنَّ مِنْهَا لَمَا
يَهْبِطُ مِنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ؕ وَمَا اللّٰهُ
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝٧٤
اَفَتَطْمَعُوْنَ اَنْ يُّؤْمِنُوْا لَكُمْ وَقَدْ
كَانَ فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ يَسْمَعُوْنَ كَلٰمَ
اللّٰهِ ثُمَّ يُحَرِّفُوْنَهٗ مِنْ بَعْدِ مَا عَقَلُوْهُ
وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٧٥
وَاِذَا لَقُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ
وَاِذَا خَلَا بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضٍ قَالُوْٓا
اَتُحَدِّثُوْنَهُمْ بِمَا فَتَحَ اللّٰهُ عَلَيْكُمْ

कि वो उनके ज़रिए से तुम्हारे रब के नज़दीक हुज्जत (मरतबा व मक़ाम) में तुम्हारा मुक़ाबला करें? तो क्या तुम समझते नहीं?

77. क्या वो जानते नहीं कि अल्लाह सब कुछ जानता है जो कुछ वो छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं?

78. और उनमें आम बेपढ़े भी हैं जो किताब का इल्म नहीं रखते, बस चन्द तख़य्युलात व तवक़्क़ुआत को दीन जानते हैं, और वो तो बस अटकल से काम लेते हैं।

79. पस तबाही है उन लोगों की जो अपने हाथों से किताब लिखते हैं फिर कहते हैं कि "यह अल्लाह की तरफ़ से है; ताकि उसके ज़रिए से थोड़ी क़ीमत हासिल करें; पस तबाही है उनके लिए उसके सबब जो उनके हाथों ने लिखा, और तबाही है उनके लिए उसकी वजह से जो वो कमा रहे हैं।

80. वो कहते हैं "दोज़ख़ की आग हमें हरगिज़ नहीं छू सकती अलबत्ता चन्द गिनेचुने दिनों की बात और है!" कहो, "क्या तुमने अल्लाह से कोई अ़हद ले रखा है? फिर तो अल्लाह हरगिज़ अपने अ़हद को पीछे न डालेगा; या तुम अल्लाह के ज़िम्मे डाल कर ऐसी बात कहते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं?

81. क्यों नहीं, जिसने भी कोई बुरी सीरत कमाई और उसकी ख़ताकारी ने उसे अपने घेरे में ले लिया, तो ऐसे ही लोग आग में पड़ने वाले हैं; वो उसमें हमेशा रहेंगे।

82. रहे वो लोग जो ईमान लाए, और उन्होंने अच्छे काम किए, वही जन्नत वाले हैं; वो हमेशा उसमें रहेंगे!"

83. और याद करो जब बनी इसराईल से हमने अ़हद लिया कि "अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करोगे; और मां-बाप के साथ और रिश्तेदारों के साथ और यतीमों और मुहताजों के साथ नेक सुलूक करोगे; और यह कि लोगों से भली बात कहो और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो", तो तुम फिर गए बस तुममें बचे थोड़े ही, और तुम बेरुख़ी इख़्तियार किए रहे।

लियुहाज्जूकुम् बिही अ़िन्-द रब्बिकुम्, अ-फ़ला तअ़्क़िलून (76)

अ-वला यअ़्लमू-न अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ़्लिनून (77)

व मिन्हुम् उम्मिय्यू-न ला यअ़्लमूनल् किता-ब इल्ला अमानिय्-य व इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून ● (78)

फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न यक्तुबूनल्-किता-ब बिऐदीहिम्, सुम्-म यक़ूलू-न हाज़ा मिन् अ़िन्दिल्लाहि लियश्तरू बिही स-मनन् क़लीलन्, फ़वैलुल्लहुम् मिम्मा क-तबत् ऐदीहिम व वैलुल्लहुम् मिम्मा यक्सिबून (79)

व क़ालू लन् तमस्स-नन्नारु इल्ला अय्यामम् मअ़्दू-दतन्, क़ुल् अत्तख़ज़्तुम् अ़िन्दल्लाहि अ़ह्दन् फ़-लंय्-युख़्लिफ़ल्लाहु अ़ह्दहू अम् तक़ूलू-न अ़लल्लाहि मा ला तअ़्लमून (80)

बला मन् क-स-ब सय्यि-अतंव्-व अहातत् बिही ख़ती-अतुहू फ़-उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (81)

वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति उलाइ-क अस्हाबुल् - जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (82)●

व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़ बनी इस्राई-ल ला तअ़्बुदू-न इल्लल्ला-ह, व बिल्वालिदैनि इह्सानंव्-व ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि व क़ूलू लिन्नासि हुस्नंव्-व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त, सुम्-म तवल्लैतुम् इल्ला क़लीलम्-मिन्कुम् व अन्तुम् मुअ़्रिज़ून (83)

لِيُحَآجُّوْكُمْ بِهٖ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٧٦
اَوَلَا يَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا
يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝٧٧
وَمِنْهُمْ اُمِّيُّوْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ الْكِتٰبَ
النصف اِلَّآ اَمَانِيَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ۝٧٨
فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ يَكْتُبُوْنَ الْكِتٰبَ
بِاَيْدِيْهِمْ ۗ ثُمَّ يَقُوْلُوْنَ هٰذَا مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ لِيَشْتَرُوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ
فَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا كَتَبَتْ اَيْدِيْهِمْ
وَوَيْلٌ لَّهُمْ مِّمَّا يَكْسِبُوْنَ ۝٧٩
وَقَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا
مَّعْدُوْدَةً ؕ قُلْ اَتَّخَذْتُمْ عِنْدَ اللّٰهِ
عَهْدًا فَلَنْ يُّخْلِفَ اللّٰهُ عَهْدَهٗٓ اَمْ
تَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٨٠
بَلٰى مَنْ كَسَبَ سَيِّئَةً وَّاَحَاطَتْ بِهٖ
خَطِيْٓئَتُهٗ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٨١
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اُولٰٓئِكَ
ع ١١ ٩ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٨٢
وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ
لَا تَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ ۫ وَبِالْوَالِدَيْنِ
اِحْسَانًا وَّذِي الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى
وَالْمَسٰكِيْنِ وَقُوْلُوْا لِلنَّاسِ حُسْنًا
وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ؕ ثُمَّ
تَوَلَّيْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْكُمْ وَاَنْتُمْ
مُّعْرِضُوْنَ ۝٨٣

84. और याद करो जब हमने तुमसे अहद लिया कि "अपने ख़ून न बहाओगे और न अपने लोगों को अपनी बस्तियों से निकालोगे;" फिर तुमने सबात व क़रार हासिल किया और तुम ख़ुद गवाह हो।

85. फिर तुम वही हो कि अपने लोगों को क़त्ल करते हो, और अपने ही एक गिरोह के लोगों को उनकी बस्तियों से निकालते हो; तुम उनके ख़िलाफ़ गुनाह और ज़्यादती के साथ एक दूसरे के पुश्तीबान बन जाते हो; और अगर वो क़ैदी बनकर तुम्हारे पास आएं तो उनसे फ़िदया वसूल करो, हालांकि यह हराम है, तुमपर उन्हें रिहा करना लाज़िम है। तो क्या तुम किताब के एक हिस्से को मानते हो और एक को नहीं मानते? फिर तुममें जो ऐसा करे, उसका बदला इसके सिवा और क्या हो सकता है कि दुनिया की ज़िन्दगी में भी रुसवाई हो और क़ियामत के दिन ऐसे लोगों को सख़्त से सख़्त अज़ाब की तरफ़ फेर दिया जाएगा। अल्लाह उससे ग़ाफ़िल नहीं है जो कुछ तुम कर रहे हो।

86. यही वो लोग हैं जो आख़िरत के बदले हयात-ए-दुनिया के ख़रीदार हुए, तो न उनका अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें कोई मदद पहुंच सकेगी।

87. और हमने मूसा को किताब दी थी और उसके बाद आगे-पीछे बराबर रसूल भेजते रहे; और मरयम के बेटे ईसा को खुली निशानियां दी और रूहुलक़ुदुस के ज़रिए से उसे क़ुव्वत बख़्शी तो यही तो हुआ कि जब भी कोई रसूल तुम्हारे पास वह कुछ लेकर आया जो तुम्हारे जी को पसन्द न था तो तुम अकड़ बैठे, पस एक गिरोह को तो तुमने झुटलाया और एक गिरोह के क़त्ल के दरपे रहे?

88. वो कहतें हैं, "हमारे दिलों पर तो क़ुदरती ग़िलाफ़ चढ़े हैं।" नहीं बल्कि उनके इनकार की वजह से ख़ुदा ने उनपर लानत की है; पस वो ईमान थोड़े ही लाएंगे।

89. और जब उनके पास एक किताब अल्लाह की तरफ़ से आई है

व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़कुम् ला तस्फ़िकू-न दिमा- अकुम् व ला तुख़्रिजू-न अन्फु-सकुम् मिन् दियारिकुम् सुम्-म अक़्रर्तुम् व अन्तुम तश्हदून (84)

सुम्-म अन्तुम् हा-उला-इ तक़्तुलू-न अन्फु- सकुम् व तुख़्रिजू- न फ़रीक़म् मिन्कुम् मिन् दियारिहिम तज़ाहरू-न अ़लैहिम बिल्इस्मि वल्-अुद्वानि, व इंय्यअ्तूकुम् उसारा तुफ़ादूहुम व हु-व मुहर्रमुन् अ़लैकुम् इख़्राजुहुम, अ-फ़-तुअ्मिनू-न बिबअ्ज़िल् -किताबि व तक्फ़ुरू-न बिबअ्ज़िन् फ़मा जज़ा-उ मंय्यफ़अ़लु ज़ालि-क मिन्कुम् इल्ला ख़िज़्युन् फ़िल्हयातिद्दुन्या व यौमल्क़ियामति युरद्दू-न इला अशद्दिल्-अ़ज़ाबि, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून (85)

उला-इकल्लज़ीनश्-त-र-वुल्हयातद्दुन्या बिल्आख़िरति फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल् अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्सरून (86) ●

व लक़द् आतैना मूसल्-किता-ब व क़फ़्फ़ैना मिम्-बअ्दिही बिर्रुसुलि व आतैना ओ़सब्-न मर्यमल्बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बिरूहिल्क़ुदुसि, अ-फ़कुल्लमा जाअकुम् रसूलुम बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुकुमुस्तक्बर्तुम् फ़ - फ़रीक़न् कज़्ज़ब्तुम् व फ़रीक़न् तक़्तुलून (87)

व क़ालू क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन्, बल् ल-अ़-नहुमुल्लाहु बिकुफ़्रिहिम फ़-क़लीलम्मा युअ्मिनून (88)

व लम्मा जाअहुम् किताबुम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ لَا تَسْفِكُوْنَ
دِمَآءَكُمْ وَلَا تُخْرِجُوْنَ اَنْفُسَكُمْ مِّنْ
دِيَارِكُمْ ثُمَّ اَقْرَرْتُمْ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ (٨٤)
ثُمَّ اَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تَقْتُلُوْنَ اَنْفُسَكُمْ
وَتُخْرِجُوْنَ فَرِيْقًا مِّنْكُمْ مِّنْ دِيَارِهِمْ ز
تَظٰهَرُوْنَ عَلَيْهِمْ بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ؕ
وَاِنْ يَّاْتُوْكُمْ اُسٰرٰى تُفٰدُوْهُمْ وَهُوَ
مُحَرَّمٌ عَلَيْكُمْ اِخْرَاجُهُمْ ؕ اَفَتُؤْمِنُوْنَ
بِبَعْضِ الْكِتٰبِ وَتَكْفُرُوْنَ بِبَعْضٍ ۚ
فَمَا جَزَآءُ مَنْ يَّفْعَلُ ذٰلِكَ مِنْكُمْ
اِلَّا خِزْىٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ يُرَدُّوْنَ اِلٰٓى اَشَدِّ الْعَذَابِ ؕ
وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ (٨٥)
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ فَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ
ع الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ (٨٦)
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَقَفَّيْنَا
مِنْۢ بَعْدِهٖ بِالرُّسُلِ ز وَاٰتَيْنَا عِيْسَى
ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ وَاَيَّدْنٰهُ
بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ اَفَكُلَّمَا جَآءَكُمْ
رَسُوْلٌ ۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُكُمُ
اسْتَكْبَرْتُمْ ۚ فَفَرِيْقًا كَذَّبْتُمْ ز
وَفَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ (٨٧)
وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ
لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَقَلِيْلًا مَّا
يُؤْمِنُوْنَ (٨٨)
وَلَمَّا جَآءَهُمْ كِتٰبٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ

जो उसकी तसदीक़ में है जो उनके पास मौजूद है। — और इससे पहले तो वो अहले कुफ़्र पर फ़त्ह के तालिब रहे हैं — फिर जब वह चीज़ उनके पास आई जिसे वो पहचान भी गए हैं, तो उसका इनकार कर बैठे; तो अल्लाह की लानत इनकार करने वालों पर।

90. क्या ही बुरी चीज़ है जिसके बदले उन्होंने अपनी जानों का सौदा किया यानी जो कुछ अल्लाह ने उतारा है उसका इनकार सरकशी से करते हैं उस नागवारी की वजह से कि अल्लाह अपना फ़ज़्ल अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है क्यों उतारता है, पस वो ग़ज़ब पर ग़ज़ब के मुस्तहिक़ हो गए हैं; और ऐसे काफ़िरों के लिए ज़लील करने वाला अज़ाब है।

91. जब उनसे कहा जाता है कि "अल्लाह ने जो कुछ उतारा है उसपर ईमान लाओ", तो कहते हैं, "हम तो उसपर ईमान रखते हैं जो हमपर उतरा है"; और उसका वो इनकार करते हैं जो उसके पीछे है, हालांकि वह सरासर हक़ है, उसकी तसदीक़ में है जो उनके पास है। कहो, "अच्छा तो इससे पहले अल्लाह के पैग़म्बरों के क़त्ल के दरपे क्यों रहे हो अगर तुम मोमिन हो?"

92. तुम्हारे पास मूसा खुली-खुली निशानियां लेकर आया, फिर भी ज़ालिम बनकर तुम उसके पीछे बछड़े को माबूद बना बैठे।

93. और याद करो जब हमने तुमसे अ़हद लिया और तूर को तुम्हारे ऊपर उठाए रखा था कि "जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसे मज़बूती से पकड़ो और सुनो!" बोले, "हमने सुना लेकिन हमने माना नहीं"। उनके कुफ़्र व इनकार की वजह से उनके दिलों में बछड़ा रच-बस गया था। कहो, "कितना बुरा है वह काम जिसका तुम्हारा ईमान तुम्हें हुक्म देता है, अगर तुम मोमिन हो";

94. कहो, "अगर आख़िरत का घर तमाम इनसानों को छोड़ कर ख़ुदा के नज़दीक सिर्फ़ तुम्हारे ही लिए है,

मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अ़हुम् व कानू मिन् क़ब्लु यस्तफ़्तिहू-न अ़लल्लज़ी-न क-फ़रू, फ़-लम्मा जा-अहुम् मा अ़-रफ़ू क-फ़रू बिही फ़-लअ़्नतुल्लाहि अ़लल्-काफ़िरीन (89)

बिअ्-स-मश्तरौ बिही अन्फ़ु-सहुम् अंय्यक्फ़ुरू बिमा अन्ज़लल्लाहु बग़्यन् अंय्युनज़्ज़िलल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही अ़ला मंय्यशा-उ-मिन् अ़िबादिही फ़-बाऊ बि-ग़-ज़बिन् अ़ला ग़-ज़बिन्, व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुम् मुहीन (90)

व इज़ा क़ी-ल लहुम् आमिनू बिमा अन्ज़लल्लाहु क़ालू नुअ्मिनु बिमा उन्ज़ि-ल अ़लैना व यक्फ़ुरू-न बिमा वरा-अहू, व हुवल्-हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्-लिमा म-अ़हुम, क़ुल् फ़लि-म तक़्तुलू-न अम्बिया-अल्लाहि मिन् क़ब्लु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (91)

व ल-क़द् जाअकुम् मूसा बिल्-बय्यिनाति सुम्मत्तख़ज़्तुमुल्-अिज्-ल मिम्-बअ़्दिही व अन्तुम् ज़ालिमून (92)

व इज़् अख़ज़्ना मीसा-क़कुम् व र-फ़अ़्ना फ़ौ-क़कुमुत्-तू-र, ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्-वस्मअ़ू, क़ालू समिअ़्ना व अ़सैना व उश्रिबू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-अ़िज्-ल बिकुफ़्रिहिम, क़ुल् बिअ्समा यअ्मुरुकुम् बिही ईमानुकुम इन् कुनतुम् मुअ्मिनीन (93)

क़ुल इन् कानत् लकुमुद्-दारुल्-आख़िरतु अ़िन्दल्लाहि ख़ालि-सतम् मिन् दूनिन्नासि

مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ ۙ وَكَانُوْا مِنْ قَبْلُ
يَسْتَفْتِحُوْنَ عَلَى الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَلَمَّا
جَآءَهُمْ مَّا عَرَفُوْا كَفَرُوْا بِهٖ ۟ فَلَعْنَةُ اللّٰهِ
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٨٩﴾

بِئْسَمَا اشْتَرَوْا بِهٖٓ اَنْفُسَهُمْ اَنْ
يَّكْفُرُوْا بِمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بَغْيًا اَنْ
يُّنَزِّلَ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ
مِنْ عِبَادِهٖ ۚ فَبَآءُوْ بِغَضَبٍ عَلٰى
غَضَبٍ ؕ وَ لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ
مُّهِيْنٌ ﴿٩٠﴾

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اٰمِنُوْا بِمَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ قَالُوْا نُؤْمِنُ بِمَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا
وَيَكْفُرُوْنَ بِمَا وَرَآءَهٗ ۗ وَهُوَ الْحَقُّ
مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَهُمْ ؕ قُلْ فَلِمَ
تَقْتُلُوْنَ اَنْبِيَآءَ اللّٰهِ مِنْ قَبْلُ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩١﴾

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ مُّوْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ
ثُمَّ اتَّخَذْتُمُ الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِهٖ
وَاَنْتُمْ ظٰلِمُوْنَ ﴿٩٢﴾

وَاِذْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَكُمْ وَرَفَعْنَا
فَوْقَكُمُ الطُّوْرَ ؕ خُذُوْا مَآ اٰتَيْنٰكُمْ
بِقُوَّةٍ وَّاسْمَعُوْا ؕ قَالُوْا سَمِعْنَا
وَعَصَيْنَا ۗ وَاُشْرِبُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ
الْعِجْلَ بِكُفْرِهِمْ ؕ قُلْ بِئْسَمَا يَاْمُرُكُمْ بِهٖٓ
اِيْمَانُكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٩٣﴾

قُلْ اِنْ كَانَتْ لَكُمُ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ
عِنْدَ اللّٰهِ خَالِصَةً مِّنْ دُوْنِ النَّاسِ

फिर तो मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो।"

95. अपने हाथों उन्होंने जो कुछ आगे भेजा है उसकी वजह से वो हरगिज़ कभी इसकी तमन्ना न करेंगे; अल्लाह तो ज़ालिमों को खूब जानता है;

96. तुम उन्हें सब इंसानों से बढ़ कर जीने का हरीस (लालची) पाओगे, यहां तक कि अहले शिर्क से भी बढ़कर; उनका तो हर एक यह आरज़ू रखता है कि काश! उसे हज़ार साल की आयु मिले, हालांकि अगर उसे यह आयु मिल भी जाए तो भी वह खुद को अज़ाब से बचा नहीं सकता। अल्लाह देख रहा है जो कुछ वो कर रहे हैं।

97. कहो, "कि जो कोई जिबरील का दुश्मन हो, (तो वह अल्लाह का दुश्मन है), क्योंकि उसने तो उसे अल्लाह ही के हुक्म से तुम्हारे दिल पर उतारा है, जो उन (पेशगोइयों) के ऐन मुताबिक़ है जो उससे पहले से मौजूद हैं, और अहले ईमान के लिए हिदायत और बशारत है।

98. जो कोई अल्लाह का और उसके फ़रिश्तों का और उसके रसूलों का और जिबरील और मिकाईल का दुश्मन हो तो ऐसे अहले कुफ़्र का अल्लाह दुश्मन है।"

99. और हमने तुम्हारी तरफ़ खुली-खुली आयतें उतारी हैं उनका इनकार तो बस फ़ासिक़ ही करते हैं।

100. क्या यह उनकी तय करदा रविश है कि जब भी उन्होंने कोई अ़हद किया तो उनके एक गिरोह ने उसे उठा फेंका? बल्कि उनमें से अकसर ईमान ही नहीं रखते।

101. और जब उनके पास अल्लाह की तरफ़ से एक रसूल आया जिससे उस (पेशगोई) की तसदीक़ हो रही है जो उनके पास थी, तो उनके एक गिरोह ने जिन्हें किताब मिली थी अल्लाह की किताब को अपने पीठ पीछे डाल दिया, गोया वो कुछ जानते ही नहीं।

102. और उस चीज़ के पीछे पड़ गए जिसे शैतान सुलैमान की बादशाही पर इफ़्तिरा करके पढ़ते थे, हालांकि सुलैमान ने कोई कुफ़्र नहीं किया था — बल्कि शैतानों ने कुफ़्र किया था, वो लोगों को जादू सिखाते थे — और न

फ़-तमन्नवुल्मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (94)

व लंय्य- तमन्नौहु अ-बदम् बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम, वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़्ज़ालिमीन (95)

व ल-तजिदन्नहुम् अह्रसन्नासि अ़ला हयातिन्, व मिनल्लज़ी-न अश्रकू यवद्दु अ- हदुहुम् लौ युअ़म्मरू अल्-फ़ स-नतिन्, व मा हु-व बिमुज़ह्ज़िहिही मिनल्-अ़ज़ाबि अंय्युअ़म्म-र, वल्लाहु बसीरूम् बिमा यअ्मलून (96) ●

क़ुल मन् का-न अ़दुव्वल्लिजिब्री-ल फ़-इन्नहू नज़्ज़-लहू अ़ला क़ल्बि-क बि-इज़्निल्लाहि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि व हुदंव्-व बुश्रा लिल्-मुअ्मिनीन (97)

मन् का-न अ़दुव्वल्लिल्लाहि व मला-इ-कतिही व रूसुलिही व जिब्री-ल व मीका-ल फ़-इन्नल्ला-ह अ़दुव्वुल -लिल्काफ़िरीन (98)

व लक़द् अन्ज़ल्ना इलै-क आयातिम्-बय्यिनातिन् व मा यक्फ़ुरू बिहा इल्लल्-फ़ासिक़ून (99)

अ-व कुल्लमा आ़-हदू अ़ह्दन् न-ब-ज़हू फ़रीक़ुम् मिन्हुम, बल् अक्सरूहुम् ला युअ्मिनून (100)

व लम्मा जाअहुम् रसूलुम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुसद्दिक़ुललिमा म-अ़हुम् न-ब-ज़ फ़रीक़ुम मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब किताबल्लाहि वरा-अ ज़ुहूरिहिम् क-अन्नहुम् ला यअ्लमून (101)

वत्त-बअू मा तत्लुश्शयातीनु अ़ला मुल्कि सुलैमा-न वमा क-फ़-र सुलैमानु व लाकिन्नश्शयाती-न क-फ़रू युअ़ल्लिमूनन्नासस्सिह्-र, व मा उन्ज़ि-ल अ़लल्

فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٩٤﴾
وَلَنْ يَّتَمَنَّوْهُ اَبَدًاۢ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ﴿٩٥﴾
وَلَتَجِدَنَّهُمْ اَحْرَصَ النَّاسِ عَلٰى
حَيٰوةٍ ۚ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ
يَوَدُّ اَحَدُهُمْ لَوْ يُعَمَّرُ اَلْفَ سَنَةٍ ۚ
وَمَا هُوَ بِمُزَحْزِحِهٖ مِنَ الْعَذَابِ اَنْ
يُّعَمَّرَ ۭ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿٩٦﴾
قُلْ مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّجِبْرِيْلَ فَاِنَّهٗ
نَزَّلَهٗ عَلٰى قَلْبِكَ بِاِذْنِ اللّٰهِ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ وَهُدًى وَّبُشْرٰى
لِلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٩٧﴾
مَنْ كَانَ عَدُوًّا لِّلّٰهِ وَمَلٰۗىِٕكَتِهٖ
وَرُسُلِهٖ وَجِبْرِيْلَ وَمِيْكٰىلَ فَاِنَّ
اللّٰهَ عَدُوٌّ لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿٩٨﴾
وَلَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ ۚ
وَمَا يَكْفُرُ بِهَآ اِلَّا الْفٰسِقُوْنَ ﴿٩٩﴾
اَوَكُلَّمَا عٰهَدُوْا عَهْدًا نَّبَذَهٗ فَرِيْقٌ
مِّنْهُمْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١٠٠﴾
وَلَمَّا جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
مُصَدِّقٌ لِّمَا مَعَهُمْ نَبَذَ فَرِيْقٌ
مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ ۙ كِتٰبَ اللّٰهِ
وَرَاۗءَ ظُهُوْرِهِمْ كَاَنَّهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿١٠١﴾
وَاتَّبَعُوْا مَا تَتْلُوا الشَّيٰطِيْنُ عَلٰى
مُلْكِ سُلَيْمٰنَ ۚ وَمَا كَفَرَ سُلَيْمٰنُ
وَلٰكِنَّ الشَّيٰطِيْنَ كَفَرُوْا يُعَلِّمُوْنَ
النَّاسَ السِّحْرَ ۤ وَمَآ اُنْزِلَ عَلَى

ही बाबिल में दो फ़रिश्तों हारूत और मारूत पर जादू उतारा गया; और वो (शैतानों में से चालाक दो शख़्स) किसी को भी सिखाते न थे जब तक कि कह न देते थे कि "हम तो बस एक ज़रिया-ए-आज़माइश हैं, तो तुम कुफ़्र में न पड़ना"। तो लोग उन दोनों से वह कुछ सीखते जिसके ज़रिए से शोहर और बीवी में जुदाई डाल दें — हालांकि वो उससे किसी को भी नुक़सान नहीं पहुंचा सकते, अलबत्ता यह और बात है कि ख़ुदा के हुक्म से किसी को नुक़सान पहुचने वाला ही हो — और वह कुछ सीखते हैं जो उन्हें नुक़सान ही पहुंचाए, और उन्हें कोई फ़ायदा न पहुंचाए और उन्हें ख़ूब मालूम है कि जो उसका ख़रीदार हो उसका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं, कितनी बुरी चीज़ पर उन्होंने अपनी जानों का सौदा किया, अगर वो जानते (तो सही रास्ता इख़्तियार करते)।

103. और अगर वो ईमान लाते और डर रखते तो ख़ुदा के यहां से मिलने वाला बदला कहीं अच्छा था, अगर वो जानते (तो इसका उन्हें एहसास हो सकता)।

104. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, 'राइना' न कहा करो, बल्कि 'उनज़ुरना' कहा करो और सुना करो; और इनकार करने वालों के लिए तो दर्दनाक अज़ाब है!

105. कुफ़्फ़ार नहीं चाहते न अहले किताब न मुशरिकीन कि तुम्हारे रब की तरफ़ से तुमपर कोई भलाई उतरे, हालांकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत के लिए मख़सूस फ़रमाए; अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है।

106. हम जिस आयत (और निशान) को भी मिटा दें या उसे भुला दें उससे बेहतर लाते हैं या उस जैसी दूसरी ही; क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है?

107. क्या तुम्हें नहीं मालूम कि आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है, और अल्लाह के सिवा न तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार?

108. क्या तुम चाहते हो कि अपने रसूल से उसी तरह सवाल और बात

म-लकैनि बिबाबि-ल हारू-त व मारू-त, व मा युअ़ल्लिमानि मिन् अ-हदिन् हत्ता यक़ूला इन्नमा नह्नु फ़ित्नतुन् फ़ला तक्फ़ुर, फ़-य-तअ़ल्लमू-न मिन्हुमा मा युफ़र्रिक़ू-न बिही बैनल्-मर्इ व ज़ौजिही, व मा हुम् बिज़ार्री-न बिही मिन् अ-हदिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व य-तअ़ल्लमू-न मा यजुर्रुहुम् व ला यन्फ़अुहुम, व लक़द् अ़लिमू ल-मनिश्तराहु मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन् ख़लाक़िन्, व लबिअ्-स मा शरौ बिही अन्फ़ु-सहुम, लौ कानू यअ्लमून (102)

व लौ अन्नहुम् आमनू वत्तक़ौ ल-मसू-बतुम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि ख़ैरुन्, लौ कानू यअ्लमून (103)●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़ूलू राअ़िना व क़ूलुन्ज़ुर्ना वस्मअू, व लिल्काफ़िरी-न अज़ाबुन् अलीम (104)

मा यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि व लल्मुश्रिकी-न अंय्युनज़्ज़-ल अ़लैकुम् मिन् ख़ैरिम्-मिर्रब्बिकुम, वल्लाहु यख़्तस्सु बिरह्मतिहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुलफ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (105)

मा नन्सख़् मिन् आयतिन् औ नुन्सिहा नअ्ति बिख़ैरिम् मिन्हा औ मिस्लिहा, अलम् तअ्लम् अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (106)

अलम् तअ्लम् अन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व मा लकुम् मिन् दुनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (107)

अम् तुरीदू-न अन् तस्अलू रसूलकुम्

الْمَلَكَيْنِ بِبَابِلَ هَارُوْتَ وَمَارُوْتَ ؕ
وَمَا يُعَلِّمٰنِ مِنْ اَحَدٍ حَتّٰى يَقُوْلَاۤ
اِنَّمَا نَحْنُ فِتْنَةٌ فَلَا تَكْفُرْ ؕ
فَيَتَعَلَّمُوْنَ مِنْهُمَا مَا يُفَرِّقُوْنَ
بِهٖ بَيْنَ الْمَرْءِ وَزَوْجِهٖ ؕ وَمَا هُمْ
بِضَآرِّيْنَ بِهٖ مِنْ اَحَدٍ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ ؕ وَيَتَعَلَّمُوْنَ مَا يَضُرُّهُمْ وَلَا
يَنْفَعُهُمْ ؕ وَلَقَدْ عَلِمُوْا لَمَنِ اشْتَرٰىهُ
مَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۛ
وَلَبِئْسَ مَا شَرَوْا بِهٖۤ اَنْفُسَهُمْ ؕ لَوْ كَانُوْا
يَعْلَمُوْنَ ۝١٠٢
وَلَوْ اَنَّهُمْ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا لَمَثُوْبَةٌ مِّنْ
ع عِنْدِ اللّٰهِ خَيْرٌ ؕ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝١٠٣
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقُوْلُوْا رَاعِنَا
وَقُوْلُوا انْظُرْنَا وَاسْمَعُوْا ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١٠٤
مَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
وَلَا الْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ
خَيْرٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝١٠٥
مَا نَنْسَخْ مِنْ اٰيَةٍ اَوْ نُنْسِهَا نَاْتِ بِخَيْرٍ
مِّنْهَاۤ اَوْ مِثْلِهَا ؕ اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ
عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝١٠٦
اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِىٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝١٠٧
اَمْ تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَسْئَلُوْا رَسُوْلَكُمْ

करो जिस तरह इससे पहले मूसा से बात की गई है? हालांकि जिस किसी ने ईमान के बदले कुफ़्र इख़्तियार किया तो वह सीधे रास्ते से भटक गया।

109. बहुत से अहले किताब अपने अन्दर के हसद से चाहते हैं कि किसी तरह वो तुम्हारे साहिबे ईमान होने के बाद फेरकर तुम्हें काफ़िर बना दें, इसके बावजूद कि हक़ उनपर वाज़ेह हो चुका है; तो तुम दरगुज़र से काम लो और नज़रअन्दाज़ करो, यहां तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला सादिर फ़रमा दे; बेशक अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रखता है।

110. और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात दो और तुम अपने नफ़्सों के लिए जो भलाई भी पेश करोगे, उसे अल्लाह के हां मौजूद पाओगे; बेशक तुम जो कुछ भी कर रहे हो अल्लाह देख रहा है।

111. और उनका कहना है कि "कोई जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता सिवाए उसके जो यहूदी है या ईसाई है।" यह उनकी अपनी ख़्याली आरज़ुएं हैं, कहो, "अपनी दलील लाओ, अगर तुम सच्चे हो"।

112. क्यों नहीं, जिसने भी अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया और उसका काम भी अच्छे से अच्छा हो तो उसका अज्र उसके रब के पास है, और ऐसे लोगों को न तो कोई डर होगा और न वो ग़म में मुब्तला होंगे।

113. यहूदियों ने कहा, "ईसाइयों की कोई बुनियाद नहीं", और ईसाइयों ने कहा, "यहूदियों की कोई बुनियाद नहीं", हालांकि वो किताब की तिलावत करते हैं। इसी तरह की बात उन्होंने भी कही है जो इल्म से बेख़बर हैं। तो अल्लाह क़ियामत के दिन उनके दरमियान उस चीज़ के बारे में फ़ैसला फ़रमा देगा, जिसके मुताल्लिक़ वो

कमा सुइ-ल मूसा मिन् क़ब्लु, व मंय्-य-तबद्दलिल्-कुफ़्-र बिल्ईमानि फ़-क़द् ज़ल्-ल सवाअस्सबील (108)

वद्-द कसीरूम् मिन् अह्लिल्-किताबि लौ यरूद्दूनकुम् मिम्-बअ़्दि ईमानिकुम् कुफ़्फ़ारन् ह-सदम्- मिन् अ़िन्दि अन्फ़ुसिहिम् मिम्-बअ़्दि मा तबय्य-न लहुमुल-हक़्क़ु फ़अ़फ़ू वस्फ़हू हत्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर ●(109)

व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त, व मा तुक़द्दिमू लिअन्फ़ुसिकुम मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अ़िन्दल्लाहि, इन्नल्ला-ह बिमा तअ़्मलू-न बसीर (110)

व क़ालू लंय्यद्ख़ुलल जन्न-त इल्ला मन् का-न हूदन् औ नसारा, तिल्-क अमानिय्युहुम, क़ुल् हातू बुर्हानकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (111)

बला, मन् अस्ल-म वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुन् फ़-लहू अज्रूहू अ़िन्-द रब्बिही व ला ख़ौफ़ुन अ़लैहिम व ला हुम् यह्ज़नून (112) ●

व क़ालतिल् यहूदु लैसतिन्नसारा अ़ला शैइवं-व क़ालतिन्नसारा लैसतिल् यहूदु अ़ला शैइंव्-व हुम् यत्लूनल्किता-ब, कज़ालि-क क़ालल्लज़ी-न ला यअ़्लमू-न मिस्-ल क़ौलिहिम् फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा

كَمَا سُئِلَ مُوسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَنْ
يَّتَبَدَّلِ الْكُفْرَ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ
ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝١٠٨
وَدَّ كَثِيْرٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَوْ
يَرُدُّوْنَكُمْ مِّنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِكُمْ
كُفَّارًا ۚۖ حَسَدًا مِّنْ عِنْدِ اَنْفُسِهِمْ
مِّنْۢ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْحَقُّ ۚ
فَاعْفُوْا وَ اصْفَحُوْا حَتّٰى يَاْتِيَ اللّٰهُ
بِاَمْرِهٖ ۗ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ
قَدِيْرٌ ۝١٠٩
وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۗ وَمَا
تُقَدِّمُوْا لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ
عِنْدَ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ۝١١٠
وَقَالُوْا لَنْ يَّدْخُلَ الْجَنَّةَ اِلَّا
مَنْ كَانَ هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ۗ تِلْكَ
اَمَانِيُّهُمْ ۗ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝١١١
بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَلَهٗٓ اَجْرُهٗ عِنْدَ رَبِّهٖ ۠ وَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝١١٢
وَ قَالَتِ الْيَهُوْدُ لَيْسَتِ النَّصٰرٰى
عَلٰى شَيْءٍ ۠ وَّقَالَتِ النَّصٰرٰى لَيْسَتِ
الْيَهُوْدُ عَلٰى شَيْءٍ ۙ وَّهُمْ يَتْلُوْنَ
الْكِتٰبَ ۗ كَذٰلِكَ قَالَ الَّذِيْنَ لَا
يَعْلَمُوْنَ مِثْلَ قَوْلِهِمْ ۚ فَاللّٰهُ
يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا

इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं।

114. और उससे बढ़कर ज़ालिम और कौन होगा जिसने अल्लाह की मस्जिदों को उसके नाम की याद से महरूम रखा, और उनकी वीरानी के दरपे रहा? ऐसे लोगों को तो बस डरते हुए ही उनमें दाख़िल होना चाहिए था; उनके लिए दुनिया में रुसवाई और आख़िरत में उनके लिए अज़ाबे अज़ीम मुक़द्दर है।

115. पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं; पस जिस तरफ़ भी तुम मुड़ो वहीं अल्लाह का रुख़ है; बेशक अल्लाह बड़ी वुसअत वाला, सब कुछ जाननेवाला है।

116. कहते हैं, "ख़ुदा औलाद रखता है!" अरफ़ा है शान उस की! (मशरिक़ व मग़रिब ही) नहीं, बल्कि आसमानों और ज़मीनों में जो कुछ भी है उसी का है? सब ही उसके ताबे फ़रमान हैं।

117. वह आसमानों और ज़मीन का मूजिद है; वह तो जब किसी काम का फ़ैसला करता है, तो उसके मुतअल्लिक़ बस कह देता है कि "हो जा" और वह हो जाता है।

118. जो नहीं जानते वो कहते हैं कि "अल्लाह हमसे बात क्यों नहीं करता? या कोई निशानी हमारे पास आ जाए!" इसी तरह उनसे अगले भी कह चुके हैं; इन सब के दिल एक जैसे हैं। हम खोल-खोल कर निशानियां उन लोगों के लिए बयान कर चुके हैं जो यक़ीन करें।

119. यक़ीनन हमने तुम्हें हक़ के साथ ख़ुशख़बरी देनेवाला और ख़बरदार करनेवाला बना कर भेजा, भड़कती आग में पड़नेवालों के बारे में तुमसे कोई पूछताछ न होगी।

120. न यहूदी तुमसे कभी राज़ी होने के हैं, और न ईसाई, जब तक कि तुम उनकी मिल्लत की पैरवी न करने लग जाओ। कह दो, "अल्लाह की हिदायत ही असल हिदायत है;" और अगर उस इल्म के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, तुम उनकी ख़्वाहिशों पर चले, तो अल्लाह से बचाने को न

कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (113)

व मन् अज़्लमु मिम्मम्-म-न-अ मसाजिदल्लाहि अंय्युज़्क-र फ़ीहस्मुहू व सआ फ़ी ख़राबिहा, उलाइ-क मा का-न लहुम् अंय्यद्ख़ुलूहा इल्ला ख़ा-इफ़ी-न, लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव-व लहुम् फ़िल् आख़िरति अज़ाबुन् अज़ीम (114)

व लिल्लाहिल् मश्रिक़ु वल्-मग़्रिबु फ़-ऐनमा तुवल्लू फ़-सम्-म वज्हुल्लाहि, इन्नल्ला-ह वासिअुन् अलीम (115)

व क़ालुत्त-ख़ज़ल्लाहु व लदन् सुब्हानहू, बल्-लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, कुल्लुल्लहू क़ानितून (116)

बदीअुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून (117)

व क़ालल्लज़ी-न ला यअ्लमू-न लौ ला युकल्लिमुनल्लाहु औ तअ्तीना आयतुन्, कज़ालि-क क़ालल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिस्-ल क़ौलिहिम्, तशाब-हत् क़ुलूबुहुम, क़द् बय्यन्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्यूक़िनून (118)

इन्ना अर्सल्ना-क बिल्हक़्क़ि बशीरंव्-व नज़ीरंव्-व ला तुस्अलु अन् अस्हाबिल् जहीम (119)

व लन् तर्ज़ा अन्कल्-यहूदु व लन्-नसारा हत्ता तत्तबि-अ मिल्ल-तहुम, क़ुल् इन्-न हुदल्लाहि हुवल्-हुदा, व -ल-इनित्त-

كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝١١٣
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ مَّنَعَ مَسٰجِدَ
اللّٰهِ اَنْ يُّذْكَرَ فِيْهَا اسْمُهٗ وَسَعٰى
فِيْ خَرَابِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ مَا كَانَ لَهُمْ
اَنْ يَّدْخُلُوْهَآ اِلَّا خَآئِفِيْنَ ۬ؕ لَهُمْ
فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّلَهُمْ فِي الْاٰخِرَةِ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١١٤
وَلِلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ۗ فَاَيْنَمَا
تُوَلُّوْا فَثَمَّ وَجْهُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝١١٥
وَقَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ
بَلْ لَّهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۝١١٦
بَدِيْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِذَا
قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ
فَيَكُوْنُ ۝١١٧
وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ لَوْلَا
يُكَلِّمُنَا اللّٰهُ اَوْ تَاْتِيْنَآ اٰيَةٌ ؕ كَذٰلِكَ
قَالَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّثْلَ
قَوْلِهِمْ ؕ تَشَابَهَتْ قُلُوْبُهُمْ ؕ قَدْ
بَيَّنَّا الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝١١٨
اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّ
نَذِيْرًا ۙ وَّلَا تُسْئَلُ عَنْ اَصْحٰبِ
الْجَحِيْمِ ۝١١٩
وَلَنْ تَرْضٰى عَنْكَ الْيَهُوْدُ وَلَا
النَّصٰرٰى حَتّٰى تَتَّبِعَ مِلَّتَهُمْ ؕ قُلْ
اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ؕ وَلَئِنِ

तो तुम्हारा कोई दोस्त होगा न मददगार।

121. जिन्हें हमने किताब दी है उनमें वो लोग जो उसे उस तरह पढ़ते हैं जैसा कि उसके पढ़ने का हक़ है, वही उसपर ईमान ला रहे हैं; और जो इनकार करेंगे वही ख़सारे में रहेंगे।

122. ऐ बनी इसराईल, याद करो मेरी वह नवाज़िश जो मैंने तुमपर की थी, और यह कि मैंने तुम्हें सारे आलम पर फ़ज़ीलत अता की;

123. और डरो उस दिन से जब कोई किसी के कुछ काम न आएगा, न किसी की जानिब से फ़िदया कबूल किया जाएगा और न कोई सिफ़ारिश ही उसे फ़ायदा देगी, और न ऐसे लोगों को कोई मदद ही पहुंच सकेगी।

124. और याद करो जब इब्राहीम को उसके रब ने चन्द बातों में आज़माया, तो उसने उनको पूरा कर दिखाया। कहा, "मैं तुझे सारे इंसानों का पेशवा बनाने वाला हूं!" बोला, "और मेरी औलाद में भी!" कहा, "मेरा वादा ज़ालिमों को नहीं पहुंचेगा"।

125. और याद करो जब हमने इस घर को इंसानों के लिए मरजा व मर्कज़ और सरापा अमन बनाया। और तुम मक़ामे इब्राहीम को नमाज़ की जगह बना लो और इब्राहीम और इसमाईल को ज़िम्मेदार बनाया कि "तुम मेरे इस घर को तवाफ़ करने वालों और मुक़ीम के लिए और रुकू और सजदा करने वालों के लिए पाक-साफ़ रखो!"

126. और याद करो जब इब्राहीम ने कहा, "मेरे रब, इसे पुरअमन सरज़मीन बना दे और उसके बाशिन्दों को फलों की रोज़ी दे उनको जो उनमें से अल्लाह और रोज़-ए-आख़िरत पर ईमान लाएं!" कहा, "और जो इनकार

-बअ्-त अह्वा-अहुम् बअ्दल्लज़ी जाअ-क मिनल्-अिल्मि मा ल-क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (120)

अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यत्लूनहू हक़्-क तिलावतिही, उलाइ-क युअ्मिनू-न बिही, व मंय्यक्फ़ुर् बिही फ़-उलाइ-क हुमुल् ख़ासिरून (121) ●

या बनी इस्राईलज़्कुरू निअ्मतियल्लती अन्अम्तु अ़लैकुम् व अन्नी फ़ज़्ज़ल्तुकुम् अ़लल् आ़लमीन (122)

वत्तक़ू यौमल्ला-तज्ज़ी नफ़्सुन् अ़न्नफ़्सिन् शैअंव्-व ला युक़्बलु मिन्हा अ़द्लुंव्-व ला तन्फ़अुहा शफ़ाअ़तुंव्-व ला हुम् युन्सरून (123)

व इज़िब्तला इब्राही-म रब्बुहू बि-कलिमातिन् फ़-अ-तम्म-हुन्-न, क़ा-ल इन्नी जाअ़िलु-क लिन्नासि इमामन्, क़ा-ल व मिन् ज़ुर्रिय्यती, क़ा-ल ला यनालु अ़ह्दिज़्-ज़ालिमीन (124)

व इज़् जअ़ल्नल्बै-त मसा-बतल् लिन्नासि व अम्नन्, वत्तख़िज़ू मिम्-मक़ामि इब्राही-म मुसल्लन्, व अ़हिद्ना इला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल अन् तह्हिरा बैति-य लित्ता-इफ़ी-न वल्-आ़किफ़ी-न वर्रुक्कअ़िस्सुजूद (125)

व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बिज्अ़ल् हाज़ा ब-लदन् आमिनंव्वर्ज़ुक़् अह्लहू

اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَ الَّذِیْ جَآءَكَ
مِنَ الْعِلْمِ ۙ مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ
وَّلَا نَصِیْرٍ ۝١٢٠
اَلَّذِیْنَ اٰتَیْنٰهُمُ الْكِتٰبَ یَتْلُوْنَهٗ
حَقَّ تِلَاوَتِهٖ ؕ اُولٰٓىِٕكَ یُؤْمِنُوْنَ
بِهٖ ؕ وَمَنْ یَّكْفُرْ بِهٖ فَاُولٰٓىِٕكَ
هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝١٢١
یٰبَنِیْٓ اِسْرَآءِیْلَ اذْكُرُوْا نِعْمَتِیَ الَّتِیْٓ
اَنْعَمْتُ عَلَیْكُمْ وَاَنِّیْ فَضَّلْتُكُمْ عَلَی
الْعٰلَمِیْنَ ۝١٢٢
وَاتَّقُوْا یَوْمًا لَّا تَجْزِیْ نَفْسٌ
عَنْ نَّفْسٍ شَیْـًٔا وَّلَا یُقْبَلُ مِنْهَا
عَدْلٌ وَّلَا تَنْفَعُهَا شَفَاعَةٌ وَّلَا
هُمْ یُنْصَرُوْنَ ۝١٢٣
وَاِذِ ابْتَلٰٓی اِبْرٰهٖمَ رَبُّهٗ بِكَلِمٰتٍ
فَاَتَمَّهُنَّ ؕ قَالَ اِنِّیْ جَاعِلُكَ
لِلنَّاسِ اِمَامًا ؕ قَالَ وَمِنْ
ذُرِّیَّتِیْ ؕ قَالَ لَا یَنَالُ عَهْدِی
الظّٰلِمِیْنَ ۝١٢٤
وَاِذْ جَعَلْنَا الْبَیْتَ مَثَابَةً لِّلنَّاسِ
وَاَمْنًا ؕ وَاتَّخِذُوْا مِنْ مَّقَامِ
اِبْرٰهٖمَ مُصَلًّی ؕ وَعَهِدْنَآ اِلٰٓی
اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِیْلَ اَنْ طَهِّرَا بَیْتِیَ
لِلطَّآىِٕفِیْنَ وَالْعٰكِفِیْنَ وَالرُّكَّعِ
السُّجُوْدِ ۝١٢٥
وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اجْعَلْ
هٰذَا بَلَدًا اٰمِنًا وَّارْزُقْ اَهْلَهٗ

करेगा थोड़ा फ़ायदा तो उसे भी उठाने दूंगा, फिर उसे कशां-कशां आग के अज़ाब की तरफ़ पहुंचा दूंगा, और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।"

127. और याद करो जब इब्राहीम और इसमाईल इस घर की बुनियादें को बुलन्द कर रहे थे: "हमारे रब! हमारी तरफ़ से कबूल कर; बेशक तू खूब सुनता, जानता है;

128. हमारे रब! हम दोनों को अपना फ़रमांबरदार बना और हमारी औलाद में से अपनी एक फ़रमांबरदार उम्मत बना; और हमें हमारे मरासिमे बन्दगी के तअल्लुक़ तालीम दे और हमपर तवज्जुह कर; बेशक तू तवज्जुह करनेवाला, निहायत रहमवाला है।

129. हमारे रब! उनमें उन्हीं में से एक ऐसा रसूल उठा जो उन्हें तेरी आयतें सुनाए और उनको किताब और हिकमत की तालीम दे और उनका तज़किया करे; बेशक तू ग़ालिब, निहायत हिकमत वाला है।"

130. कौन है जो इब्राहीम की मिल्लत से एराज़ करे सिवाए उसके जिसने खुद को ज़लील कर लिया और उसे तो हमने दुनिया में मुंतख़ब कर लिया था और बेशक आख़िरत में भी वह लाइक़ लोगों में से होगा।

131. क्योंकि जब उससे उसके रब ने कहा, "मुस्लिम हो जाओ", उसने कहा "मैं सारे आलम के रब का मुस्लिम हो गया।"

132. और इसी की वसीयत इब्राहीम ने अपने बेटों को की और याक़ूब ने भी कि "ऐ मेरे बेटो! ख़ुदा ने तुम्हारे लिए यही दीन मुंतख़ब फ़रमाया है, तो इस्लाम के सिवा किसी और हालत पर तुम्हें मौत न आए।"

133. (क्या तुम इब्राहीम के वसीयत करने के वक़्त मौजूद थे) या तुम मौजूद थे जब याक़ूब को मौत

मिनस्स-मराति मन् आम-न मिन्हुम् बिल्लाहि वलयौमिल्-आख़िरि, क़ा-ल वमन् क-फ़-र फ़-उमत्तिउहू क़लीलन् सुम्-म अज़्तररुहू इला अज़ाबिन्नारि, व बिअ्सल्-मसीर (126)

व इज़् यर्फ़अु इब्राहीमुल् क़वाअि-द मिनल् बैति व इसमाअीलु, रब्बना त-क़ब्बल् मिन्ना, इन्न-क अन्तस्समीअुल्- अलीम (127)

रब्बना वज्अल्ना मुस्लिमैनि ल-क व मिन् ज़ुर्रिय्यतिना उम्म-तम् मुस्लि-मतल् ल-क व अरिना मनासि-कना व तुब् अलैना इन्न-क अन्तत्तव्वाबुर्-रहीम (128)

रब्बना वब्अस् फ़ीहिम् रसूलम् मिन्हुम् यत्लू अलैहिम् आयाति-क व युअल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्-हिक्म-त व युज़क्कीहिम, इन्न-क अन्तल् अज़ीज़ुल्-हकीम (129) ●

व मंय्यर्ग़बु अम्-मिल्लति इब्राही-म इल्ला मन् सफ़ि-ह नफ़्सहू, व ल-क़दिस्तफ़ैनाहु फ़िद्दुन्या व इन्नहू फ़िल-आख़िरति लमिनस्सालिहीन (130)

इज़् क़ा-ल लहू रब्बुहू अस्लिम् क़ा-ल अस्लम्तु लि-रब्बिल् आलमीन (131)

व वस्सा बिहा इब्राहीमु बनीहि व यअ्क़ूबु, या बनिय्-य इन्नल्लाहस्तफ़ा लकुमुद्दी-न फ़ला तमूतुन्-न इल्ला व अन्तुम्-मुस्लिमून (132)

अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ इज़् ह-ज़-र

مِنَ الثَّمَرٰتِ مَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ قَالَ وَمَنْ كَفَرَ فَاُمَتِّعُهٗ قَلِيْلًا ثُمَّ اَضْطَرُّهٗۤ اِلٰى عَذَابِ النَّارِ ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٢٦﴾

وَاِذْ يَرْفَعُ اِبْرٰهٖمُ الْقَوَاعِدَ مِنَ الْبَيْتِ وَاِسْمٰعِيْلُ ؕ رَبَّنَا تَقَبَّلْ مِنَّا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿١٢٧﴾

رَبَّنَا وَاجْعَلْنَا مُسْلِمَيْنِ لَكَ وَمِنْ ذُرِّيَّتِنَاۤ اُمَّةً مُّسْلِمَةً لَّكَ ۪ وَاَرِنَا مَنَاسِكَنَا وَتُبْ عَلَيْنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١٢٨﴾

رَبَّنَا وَابْعَثْ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِكَ وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَيُزَكِّيْهِمْ ؕ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿١٢٩﴾ ع ١٥

وَمَنْ يَّرْغَبُ عَنْ مِّلَّةِ اِبْرٰهٖمَ اِلَّا مَنْ سَفِهَ نَفْسَهٗ ؕ وَلَقَدِ اصْطَفَيْنٰهُ فِى الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِى الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿١٣٠﴾

اِذْ قَالَ لَهٗ رَبُّهٗۤ اَسْلِمْ ۙ قَالَ اَسْلَمْتُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٣١﴾

وَوَصّٰى بِهَاۤ اِبْرٰهٖمُ بَنِيْهِ وَيَعْقُوْبُ ؕ يٰبَنِىَّ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰى لَكُمُ الدِّيْنَ فَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٣٢﴾

اَمْ كُنْتُمْ شُهَدَآءَ اِذْ حَضَرَ

पहुंची? जब उसने अपने बेटों से कहा, "तुम मेरे बाद किस की इबादत करोगे?" उन्होंने कहा, "हम इबादत करेंगे आपके माबूद की और आपके बाप इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ के माबूद की, जो अकेला माबूद है; और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं।"

134. वह एक जमाअत थी जो गुज़र चुकी, जो कुछ उसने कमाया वह उसका है और जो कुछ तुमने कमाया वह तुम्हारा है; और तुमसे उसके बारे में न पूछा जाएगा जो कुछ वो करते रहे हैं।

135. कहते हैं, "यहूदी या ईसाई हो जाओ तो हिदायत पा लोगे।" कहो, "बल्कि इब्राहीम की मिल्लत की पैरवी करो जो एक तरफ़ का हो गया था; और वह अहले शिर्क में से न था।",

136. कहो, "हम ईमान लाए, खुदा पर और उस चीज़ पर जो हमारी तरफ़ उतरी और जो इब्राहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद की तरफ़ नाज़िल हुई और जो मूसा और ईसा को मिली और जो तमाम नबियों को उनके रब की तरफ़ से अता हुई; हम उनमें एक-दूसरे नबी के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते और हम सिर्फ़ उसी के फ़रमांबरदार हैं।"

137. फिर अगर वो उसी तरह मोमिन बन जाएं, जिस तरह तुम मोमिन बने हो तो वो हिदायतयाब हुए; और अगर वो मुंह मोड़ें तो फिर वही मुख़ालफ़त में मुबतला हैं, पस तुम्हारी जगह खुद अल्लाह उनसे निमटने के लिए काफ़ी है; वह सब कुछ सुनता, जानता है।

138. (कहो) "अल्लाह का रंग इख़्तियार करो और रंग में अल्लाह से

यअ़्कूबल्- मौतु इज़् क़ा-ल लि-बनीहि मा तअ़्बुदू-न मिम्-बअ़्दी, क़ालू नअ़्बुदु इलाह-क व इला-ह आबाइ-क इब्राही-म व इस्माओ़ी-ल व इस्हा-क़ इलाहंव्-वाहिदंव्-व नह्नु लहू मुस्लिमून (133)

तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़लत् लहा मा क-सबत् व लकुम् मा क-सब्तुम् व ला तुस्अलू-न अ़म्मा कानू यअ़्मलून (134)

व क़ालू कूनू हूदन् औ नसारा तह्तदू, कुल् बल् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, व मा का-न मिनल्- मुश्रिकीन (135)

कूलू आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना व मा उन्ज़ि-ल इला इब्राही-म व इस्माओ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ़्कू-ब वल्-अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व ओ़सा व मा ऊतियन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ला नुफ़र्रिकु बै-न अ-हदिम्-मिन्हुम् व नह्नु लहू मुस्लिमून (136)

फ़-इन् आमनू बिमिस्लि मा आमन्तुम् बिही फ़-क़दिह्तदौ व इन तवल्लौ फ़-इन्नमा हुम् फ़ी शिक़ाक़िन् फ़-सयक्फ़ी- कहुमुल्लाहु व हुवस्समीअ़ुल् अ़लीम (137)

सिब्ग़तल्लाहि व मन् अह्सनु

يَعْقُوْبَ الْمَوْتُ ۙ اِذْ قَالَ لِبَنِيْهِ مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ ۢ بَعْدِيْ ؕ قَالُوْا نَعْبُدُ اِلٰهَكَ وَاِلٰهَ اٰبَآئِكَ اِبْرٰهٖمَ وَ اِسْمٰعِيْلَ وَ اِسْحٰقَ اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚۖ وَّ نَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝١٣٣

تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٣٤

وَقَالُوْا كُوْنُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى تَهْتَدُوْا ؕ قُلْ بَلْ مِلَّةَ اِبْرٰهٖمَ حَنِيْفًا ؕ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٣٥

قُوْلُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ اِلٰٓى اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِيَ مُوْسٰى وَعِيْسٰى وَمَآ اُوْتِيَ النَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۫ وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ۝١٣٦

فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِيْ شِقَاقٍ ۚ فَسَيَكْفِيْكَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝١٣٧

صِبْغَةَ اللّٰهِ ۚ وَمَنْ اَحْسَنُ

مِنَ اللّٰهِ صِبْغَةً ۡ وَّ نَحْنُ لَهٗ
عٰبِدُوْنَ ۝١٣٨
قُلْ اَتُحَآجُّوْنَنَا فِى اللّٰهِ وَهُوَ
رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ ۚ وَلَنَآ اَعْمَالُنَا
وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۚ وَنَحْنُ لَهٗ
مُخْلِصُوْنَ ۝١٣٩
اَمْ تَقُوْلُوْنَ اِنَّ اِبْرٰهٖمَ وَاِسْمٰعِيْلَ
وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطَ
كَانُوْا هُوْدًا اَوْ نَصٰرٰى ؕ قُلْ ءَاَنْتُمْ
اَعْلَمُ اَمِ اللّٰهُ ؕ وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ
كَتَمَ شَهَادَةً عِنْدَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ
وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝١٤٠
تِلْكَ اُمَّةٌ قَدْ خَلَتْ ۚ لَهَا مَا
كَسَبَتْ وَلَكُمْ مَّا كَسَبْتُمْ ۚ وَلَا
تُسْـَٔلُوْنَ عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٤١
سَيَقُوْلُ السُّفَهَآءُ مِنَ النَّاسِ
مَا وَلّٰىهُمْ عَنْ قِبْلَتِهِمُ الَّتِىْ كَانُوْا
عَلَيْهَا ؕ قُلْ لِّلّٰهِ الْمَشْرِقُ وَالْمَغْرِبُ ؕ
يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝١٤٢
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنٰكُمْ اُمَّةً وَّسَطًا
لِّتَكُوْنُوْا شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ
وَيَكُوْنَ الرَّسُوْلُ عَلَيْكُمْ شَهِيْدًا ؕ
وَمَا جَعَلْنَا الْقِبْلَةَ الَّتِىْ كُنْتَ
عَلَيْهَآ اِلَّا لِنَعْلَمَ مَنْ يَّتَّبِعُ
الرَّسُوْلَ مِمَّنْ يَّنْقَلِبُ عَلٰى
عَقِبَيْهِ ؕ وَاِنْ كَانَتْ لَكَبِيْرَةً
اِلَّا عَلَى الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ ؕ

मिनल्लाहि सिब्-तंव्-व नह्नु लहू आबिदून (138)

कुल अतुहाज्जू-नना फ़िल्लाहि व हु-व रब्बुना व रब्बुकुम् व लना अअ्मालुना व लकुम् अअ्मालुकुम व नह्नु लहू मुख़्लिसून (139)

अम् तक़ूलू-न इन्-न इब्राही-म व इस्माओ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब वल्-अस्बा-त कानू हूदन् औ नसारा, क़ुल् अ-अन्तुम् अअ्लमु अमिल्लाहु व मन् अज़्लमु मिम्मन् क-त-म शहा-दतन् अ़िन्दहू मिनल्लाहि, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून (140)

तिल्-क उम्मतुन् क़द् ख़लत् लहा मा क-सबत् व लकुम् मा क-सब्तुम् व ला तुस्अलू-न अ़म्मा कानू यअ्मलून (141) ●

स-यक़ूलुस्सु-फ़हा-उ मिनन्नासि मा वल्लाहुम् अ़न् क़िब्लतिहिमुल्लती कानू अ़लैहा, क़ुल लिल्लाहिल्-मश्रिक़ु वल्मग़्रिबु, यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (142)

व कज़ालि-क जअ़ल्नाकुम् उम्मतंव्-व-स-तल्लितकूनू शु-हदा-अ अ़लन्-नासि व यकूनर्रसूलु अ़लैकुम् शहीदन्, व मा जअ़ल्नल्- क़िब्लतल्लती कुन्-त अ़लैहा इल्ला लिनअ्ल-म मंय्यत्तबिअुर्रसू-ल मिम्-मंय्यन्क़लिबु अ़ला अ़क़िबैहि, व इन् कानत् ल-कबी-रतन् इल्ला अ़लल्लज़ी-न हदल्लाहु,

बेहतर कौन हो सकता है? और हम तो उसी की बन्दगी करेंगे।"

139. कहो "क्या तुम झगड़ते हो हमसे अल्लाह के बारे में? हालांकि वही हमारा रब भी है और तुम्हारा रब भी। और हमारे लिए हमारे आमाल हैं और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल; और हम तो ख़ालिस उसी के हैं।"

140. या कहते हो कि "इबराहीम और इसमाईल और इसहाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद यहूदी या ईसाई थे?" कहो "तुम ज़्यादा जानते हो या अल्लाह? और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की तरफ़ से आई हुई किसी शहादत को जो उसके पास हो छुपाए? अल्लाह उससे ग़ाफ़िल नहीं है जो तुम कर रहे हो।"

141. वह एक जमाअत थी जो जा चुकी; जो कुछ उसने कमाया वह उसके लिए है और जो कुछ तुमने कमाया वह तुम्हारे लिए है; और तुमसे उसके बारे में न पूछा जाएगा जो कुछ वो करते रहे हैं।

142. बेवक़ूफ़ लोग कहेंगे, "उन्हें उनके इस क़िबले से जिसपर ये थे किस चीज़ ने फेर दिया?" कहो, "पूरब और पश्चिम अल्लाह ही के हैं; वह जिसे चाहता है सीधा रास्ता दिखाता है।"

143. और इसी तरह हमने तुम्हें एक दरमियानी उम्मत बनाई है ताकि तुम सारे इंसानों पर हक़ की गवाही क़ायम करने वाले बनो, और रसूल तुमपर गवाही क़ायम करने वाला हो; और जिसपर तुम रहे हो उसे तो हम ने सिर्फ़ इस लिए क़िबला बनाया कि जो लोग पीठ पीछे फिर जाने वाले हैं, उनसे हम उनको अलग कर दें जो रसूल की पैरवी करते हैं, और यह बात बहुत गिरां साबित हुई, मगर उन लोगों को नहीं जिन्हें अल्लाह ने हिदायत से नवाज़ा है; और अल्लाह ऐसा नहीं कि वह तुम्हारे ईमान को

अकारत कर दे, अल्लाह तो इंसानों पर बहुत शफ़ीक़, निहायत रहमवाला है।

144. हम आसमान में तुम्हारे मुंह की गर्दिश देख रहे हैं; तो हम लाज़िमन उसी क़िबले का तुम्हें वाली (अधिकारी) बना देंगे जिसे तुम पसन्द करते हो। पस मस्जिद-ए-हराम की तरफ़ अपना रुख़ करो; और जहां कहीं भी हो, अपने चेहरे उसी की तरफ़ करो। यक़ीनन जिन्हें किताब मिली थी वो ख़ूब जानते हैं कि वही उनके रब की जानिब से हक़ है, बावजूद इसके जो कुछ वो कर रहे हैं अल्लाह उससे ग़ाफ़िल नहीं।

145. ख़्वाह तुम उन लोगों के पास जिन्हें किताब अता हुई थी कोई भी निशानी ले आओ, फिर भी वो तुम्हारे क़िबले की पैरवी न करेंगे; और तुम भी हरगिज़ उनके क़िबले की पैरवी करनेवाले नहीं हो और वो ख़ुद आपस में एक-दूसरे के क़िबले की पैरवी करने वाले नहीं हैं। और अगर तुमने उस इल्म के बाद जो तुम्हारे पास आ चुका है, उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी की तो लाज़िमन ज़ालिम ठहरोगे।

146. जिन्हें हमने किताब दी है, वो उसे पहचानते हैं, जैसे अपने बेटों को पहचानते हैं, और उनमें से कुछ हक़ को जान-बूझ कर छुपा रहे हैं।

147. हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है; तो तुम हरगिज़ शक करने वालों में से न होना।

148. हर एक के लिए एक सिम्त है, वह उसी की तरफ़ रुख़ किए हुए है, तो तुम भलाइयों में सबक़त करो। जहां कहीं भी तुम होगे, ख़ुदा तुम सबको जमा करेगा; बेशक अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत हासिल है।

व मा कानल्लाहु लियुज़ी-अ ईमानकुम, इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल-रऊफ़ुर्रहीम (143)

क़द् नरा तक़ल्लु-ब वज्हि-क फ़िस्समा-इ फ़-लनुवल्लियन्न-क क़िब्लतन् तर्ज़ाहा फ़-वल्लि वज्ह-क शत्रल्- मस्जिदिल्-हरामि, व हैसु मा कुन्तुम् फ़-वल्लू वुजू-हकुम् शत्रहू, व इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब ल-यअ्लमू-न अन्नहुल्- हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ्मलून (144)

व लइन् अतैतल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब बिकुल्लि आयतिम्मा तबिऊ क़िब्ल-त-क व मा अन्-त बिता-बिइ़न् क़िब्ल-तहुम् व मा बअ्ज़ुहुम् बिताबिइ़न् क़िब्ल-त बअ्ज़िन, व ल- इनित्तबअ्-त अह्वा-अहुम् मिम्-बअ्दि मा जाअ-क मिनल्-इ़ल्मि इन्न क इज़ल्-लमिनज़्ज़ालिमीन ● (145)

अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यअ्रिफ़ूनहू कमा यअ्रिफ़ू-न अब्ना-अहुम, व इन्-न फ़रीक़म्-मिन्हुम् लं-यक्तुमूनल-हक़्-क़ व हुम् यअ्लमून (146)

अल्हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न मिनल्- मुम्तरीन (147) ●

व लिकुल्लिव्विज्हतुन् हु-व मुवल्लीहा फ़स्तबिक़ुल-ख़ैराति, ऐ-न मा तकूनू यअ्ति बिकुमुल्लाहु जमीअ़न्, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (148)

وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُضِيْعَ اِيْمَانَكُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝١٤٣
قَدْ نَرٰى تَقَلُّبَ وَجْهِكَ فِى
السَّمَآءِ ۚ فَلَنُوَلِّيَنَّكَ قِبْلَةً
تَرْضٰىهَا ۠ فَوَلِّ وَجْهَكَ شَطْرَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ؕ وَحَيْثُ مَا كُنْتُمْ
فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ؕ وَاِنَّ
الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَيَعْلَمُوْنَ
اَنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ؕ وَمَا اللّٰهُ
بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝١٤٤
وَلَئِنْ اَتَيْتَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
بِكُلِّ اٰيَةٍ مَّا تَبِعُوْا قِبْلَتَكَ ۚ وَمَآ
اَنْتَ بِتَابِعٍ قِبْلَتَهُمْ ۚ وَمَا بَعْضُهُمْ
بِتَابِعٍ قِبْلَةَ بَعْضٍ ؕ وَلَئِنِ اتَّبَعْتَ
اَهْوَآءَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ
مِنَ الْعِلْمِ ۙ اِنَّكَ اِذًا لَّمِنَ
الظّٰلِمِيْنَ ۝١٤٥
اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ
كَمَا يَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ؕ وَاِنَّ
فَرِيْقًا مِّنْهُمْ لَيَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ
وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝١٤٦
اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ
ع مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝١٤٧
وَلِكُلٍّ وِّجْهَةٌ هُوَ مُوَلِّيْهَا فَاسْتَبِقُوا
الْخَيْرٰتِ ؕ اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يَاْتِ بِكُمُ
اللّٰهُ جَمِيْعًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ
قَدِيْرٌ ۝١٤٨

149. और जहां से तुम निकले हो मस्जिद-ए-हराम की तरफ़ अपना मुंह करो; बेशक यही तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है, जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे ग़ाफ़िल नहीं है।

150. जहां से तुम निकले हो, मस्जिद-ए-हराम की तरफ़ अपना मुंह करो; और जहां कहीं भी तुम हो उसी की तरफ़ रुख़ करो, ताकि लोगों के पास तुम्हारे ख़िलाफ़ कोई हुज्जत बाक़ी न रहे — सिवाय उन लोगों के जो उनमें ज़ालिम हैं; तो उनसे न डरो, डरो मुझसे — और ताकि तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दूं। और ताकि तुम सीधी राह चलो;

151. जैसा कि हमने तुम में एक रसूल तुम्हीं में से भेजा, जो तुम्हें हमारी आयतें सुनाता है, तुम्हारा तज़किया करता है, और तुम्हें किताब और हिकमत की तालीम देता है, और तुम्हें वह कुछ सिखाता है जो तुम जानते न थे।

152. पस तुम मुझे याद रखो, मैं भी तुम्हें याद रखूंगा, और मेरा शुक्र अदा करते रहना, मेरी नाशुक्री न करना।

153. ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो, सब्र और नमाज़ से मदद हासिल करो; बेशक अल्लाह उनके साथ है जो सब्र व इस्तिक़लाल से काम लेते हैं।

154. और जो लोग अल्लाह के रास्ते में मारे जाएं उन्हें मुर्दा न कहो, बल्कि वो ज़िन्दा हैं, मगर तुम महसूस नहीं करते।

155. किसी क़दर ख़ौफ़ और भूक से, और कुछ माल और जान और पैदावार की कमी से हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे; सब्र से काम लेनेवालों को ख़ुशख़बरी दे दो।

156. जो उस वक़्त जब कि उनपर कोई मुसीबत आती है कहते हैं, "बेशक

व मिन् हैसु ख़रज्-त फ़-वल्लि वज्ह-क शत्रल् मस्जिदिल्-हरामि, व इन्नहू लल्हक़्क़ु मिर्रब्बि-क, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अम्मा तअ्मलून (149)

व मिन् हैसु ख़रज्-त फ़- वल्लि वज्ह-क शत्रल् मस्जिदिल्-हरामि, व हैसु मा कुन्तुम् फ़-वल्लू वुजूहकुम् शत्रहू लिअल्ला यकू-न लिन्नासि अ़लैकुम्, हुज्जतुन्, इल्लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् फ़ला तख़्शौहुम् वख़्शौनी, व लि-उतिम्-म निअ्मती अ़लैकुम् व लअ़ल्लकुम् तह्तदून (150)

कमा अर्सल्ना फ़ीकुम् रसूलम्-मिन्कुम् यत्लू अ़लैकुम् आयातिना व युज़क्कीकुम् व युअ़ल्लिमुकुमुल-किता-ब वल्हिक्म-त व युअ़ल्लिमुकुम् मा लम् तकूनू तअ्लमून (151)

फ़ज़्कुरूनी अज़्कुर्कुम् वश्कुरू ली व ला तक्फ़ुरून (152) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्तअ़ीनू बिस्सब्रि वस्सलाति, इन्नल्ला-ह मअ़स्साबिरीन (153)

व ला तक़ूलू लिमंय्युक़्तलु फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातुन्, बल् अह्याउंव्-व लाकिल्ला तश्अुरून (154)

व ल-नब्लुवन्नकुम् बिशैइम्-मिनल्ख़ौफ़ि वल्जूअ़ि व नक़्सिम् मिनल् अम्वालि वल्-अन्फ़ुसि वस्स-मराति, व बश्शिरिस्साबिरीन (155)

अल्लज़ी-न इज़ा असाबतहुम् मुसीबतुन्

وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَإِنَّهٗ
لَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ ۗ وَمَا اللّٰهُ بِغَافِلٍ
عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝١٤٩
وَمِنْ حَيْثُ خَرَجْتَ فَوَلِّ وَجْهَكَ
شَطْرَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۖ وَحَيْثُ مَا
كُنْتُمْ فَوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ شَطْرَهٗ ۙ
لِئَلَّا يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَيْكُمْ حُجَّةٌ ۙ
إِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ ۗ فَلَا
تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِيْ ۗ وَلِأُتِمَّ
نِعْمَتِيْ عَلَيْكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَهْتَدُوْنَ ۝١٥٠
كَمَآ أَرْسَلْنَا فِيْكُمْ رَسُوْلًا مِّنْكُمْ
يَتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِنَا وَيُزَكِّيْكُمْ
وَيُعَلِّمُكُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ
وَيُعَلِّمُكُمْ مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝١٥١
فَاذْكُرُوْنِيْٓ أَذْكُرْكُمْ وَاشْكُرُوْا لِيْ
ع وَلَا تَكْفُرُوْنِ ۝١٥٢
يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَعِيْنُوْا بِالصَّبْرِ
وَالصَّلٰوةِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝١٥٣
وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَنْ يُّقْتَلُ فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ أَمْوَاتٌ ۗ بَلْ أَحْيَآءٌ
وَّلٰكِنْ لَّا تَشْعُرُوْنَ ۝١٥٤
وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَيْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ
وَالْجُوْعِ وَنَقْصٍ مِّنَ الْأَمْوَالِ
وَالْأَنْفُسِ وَالثَّمَرٰتِ ۗ وَبَشِّرِ الصّٰبِرِيْنَ ۝١٥٥
الَّذِيْنَ إِذَآ أَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌ ۙ

قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَ اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ ۝١٥٦

اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ صَلَوٰتٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَ رَحْمَةٌ ۣ وَ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُهْتَدُوْنَ ۝١٥٧

اِنَّ الصَّفَا وَ الْمَرْوَةَ مِنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنْ حَجَّ الْبَيْتَ اَوِ اعْتَمَرَ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِ اَنْ يَّطَّوَّفَ بِهِمَا ۭ وَمَنْ تَطَوَّعَ خَيْرًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ شَاكِرٌ عَلِيْمٌ ۝١٥٨

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلْنَا مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالْهُدٰى مِنْۢ بَعْدِ مَا بَيَّنّٰهُ لِلنَّاسِ فِى الْكِتٰبِ ۙ اُولٰٓئِكَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰهُ وَ يَلْعَنُهُمُ اللّٰعِنُوْنَ ۝١٥٩

اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَبَيَّنُوْا فَاُولٰٓئِكَ اَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنَا التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝١٦٠

اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ اُولٰٓئِكَ عَلَيْهِمْ لَعْنَةُ اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝١٦١

خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝١٦٢

وَ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝١٦٣

اِنَّ فِىْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَالْفُلْكِ الَّتِىْ تَجْرِىْ فِى الْبَحْرِ بِمَا يَنْفَعُ

क़ालू इन्ना लिल्लाहि व इन्ना इलैहि राजिअून (156)

उलाइ-क अलैहिम स-लवातुम्-मिर्रब्बिहिम् व रह्मतुन्, व उलाइ-क हुमुल्- मुह्तदून (157)

इन्नस्सफ़ा वल्मर्-व-त मिन् शआ-इरिल्लाहि फ़-मन् हज्जल्बै-त अविअ्त-म-र फ़ला जुना-ह अ़लैहि अंय्यत्तव्व-फ़ बिहिमा, व मन् त-तव्व-अ ख़ैरन् फ़-इन्नल्ला-ह शाकिरुन् अ़लीम (158)

इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू-न मा अन्ज़ल्ना मिनल् बय्यिनाति वल्हुदा मिम्-बअ्दि मा बय्यन्नाहु लिन्नासि फ़िल्-किताबि उलाइ-क यल्अ़नुहुमुल्लाहु व यल्अ़नुहुमुल्- लाअ़िनून (159)

इल्लल्लज़ी- न ताबू व अस्लहू व बय्यनू फ़-उलाइ-क अतूबु अ़लैहिम् व अ-नत्तव्वाबुर्रहीम (160)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् उलाइ-क अ़लैहिम् लअ्नतुल्लाहि वल् मलाइ-कति वन्नासि अज्मअ़ीन (161)

ख़ालिदी-न फ़ीहा ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल्-अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून (162)

व इलाहुकुम् इलाहुंव्- वाहिदुन् ला इला-ह इल्ला हुवर्रह्मानुर्रहीम (163)●

इन्-न फ़ी ख़ल्क़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि वल्फ़ुल्किल्लती तज्री फ़िल्बह्रि बिमा यन्फ़अुन्ना

हम अल्लाह के हैं और हम उसी की तरफ़ लौटने वाले हैं।"

157. यही लोग हैं जिनपर उनके रब की ख़ास इनायतें हैं, और रहमत भी, और यही हैं जो हिदायतयाब हैं।

158. बेशक सफ़ा और मरवा अल्लाह की ख़ास निशानियों में से हैं; पस जो इस घर का हज या उमरा करे, उसके लिए इसमें कोई हर्ज नहीं कि वह इनका तवाफ़ करे; और जो कोई अपनी ख़ुशी और शौक़ से कोई भलाई करे तो अल्लाह भी क़द्र करनेवाला, ख़ूब जाननेवाला है।

159. जो लोग हमारी उतारी हुई, खुली निशानियों और हिदायतों को इसके बाद कि हम उन्हें इंसानों के लिए किताब में वाज़ेह कर चुके हैं छुपाते हैं, वही हैं जिनपर ख़ुदा लानत करता है — और तमाम लानत करनेवाले भी उनपर लानत करते हैं।

160. सिवाय उनके जिन्होंने तौबा और इसलाह कर ली, और साफ़-साफ़ बयान कर दिया, तो उनकी तौबा मैं क़बूल करूंगा, मैं बड़ा तौबा क़बूल करनेवाला, निहायत रहमवाला हूं।

161. जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और काफ़िर ही रहकर मरे, वही हैं जिनपर अल्लाह की, फ़रिश्तों की और इंसानों की, सब की लानत है।

162. इसी में वो हमेशा रहेंगे; न उनका अज़ाब हल्का किया जाएगा और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी।

163. तुम्हारा माबूद अकेला माबूद है; उस रहमान व रहीम के सिवा कोई माबूद नहीं।

164. बेशक आसमानों और ज़मीन की ख़िलक़त (बनावट) में, और रात और दिन की अदला-बदली में और उन कश्तियों में जो लोगों की नफ़ाबख़्श चीज़ें लेकर समुंदर (और दरिया) में चलती हैं, और उस पानी में जिसे अल्लाह ने आसमान से उतारा फिर उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दगी बख़्शी

और उसमें हर एक (क़िसम के) जानदार मख़्लूक़ को फैलाया और हवाओं को गर्दिश देने में, और उन बादलों में जो आसमान और ज़मीन के दरमियान मामूर होते हैं, उन लोगों के लिए कितनी ही निशानियां हैं जो अक़्ल से काम लें।

165. कुछ लोग ऐसे भी हैं जो अल्लाह से हटकर दूसरों को उसका हमसर ठहराते हैं। उनसे ऐसी मुहब्बत करते हैं जैसी अल्लाह से करनी चाहिए; और जो अहले ईमान हैं, उन्हें सबसे बढ़कर अल्लाह से मुहब्बत होती है। और यह ज़ालिम (मुश्रिकीन) जबकि अज़ाब से दो-चार होते हैं अगर इस हक़ीक़त को जान लेते कि ज़ोर सारा का सारा अल्लाह ही के हाथ में है, और यह कि अल्लाह बड़ा सख़्त अज़ाब देनेवाला है (तो उनका तर्ज़े अमल कुछ और होता)।

166. जब वो लोग जिनके पीछे वो चलते थे अज़ाब देखकर अपने पैरौओं से बेतअल्लुक़ी ज़ाहिर करेंगे और उनके तमाम बाहमी तअल्लुक़ात मुनक़तअ हो चुके होंगे,

167. वो लोग जो पैरौ थे कहेंगे, "काश हमें एक बार लौटना होता तो हम भी इनसे बेतअल्लुक़ी व बेज़ारी का इज़हार करते जिस तरह इन्होंने बेतअल्लुक़ी ज़ाहिर की है!" इस तरह अल्लाह उनके लिए हसरत बनाकर उन्हें उनके आमाल दिखाएगा और वो आग से निकल न सकेंगे।

168. ऐ लोगो! खाओ जो कुछ ज़मीन में हलाल, उमदा पाक है; और शैतान के क़दमों के पीछे न चलो; बेशक वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

169. वह तो बस तुम्हें बुराई और बेहयाई पर उसकाता है और इस पर कि तुम अल्लाह के ज़िम्मे डालकर वह बातें कहो जो तुम जानते नहीं हो।

170. उनसे जब कहा जाता है कि "उस चीज़ की पैरवी करो जो अल्लाह ने उतारी है", तो कहते हैं, "नहीं, बल्कि हम तो उसकी पैरवी करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है!" क्या इस सूरत में भी जबकि उनके

-स व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समा-इ मिम्मा-इन् फ़-अह्या बिहिल् अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन् व तस्रीफ़िर्रियाहि वस्सहाबिल् मुसख़्ख़रि बैनस्समा-इ वल् अर्ज़ि लआयातिल् लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (164)

व मिनन्नासि मंय्यत्तख़िज़ु मिन् दूनिल्लाहि अन्दादंय्युहिब्बू-नहुम् कहुब्बिल्लाहि, वल्लज़ी-न आमनू अशद्दु हुब्बल्-लिल्लाहि, व लौ यरल्लज़ी -न ज़-लमू इज़् यरौनल्-अज़ा - ब अन्नल्- क़ुव्व-त लिल्लाहि जमीअंव् -व अन्नल्ला-ह शदीदुल् अज़ाब (165)

इज़् त-बर्रअल्लज़ीनत्तुबिअू मिनल्लज़ीनत् त-बअू व र-अवुल्-अज़ा-ब व त-क़त्तअत् बिहिमुल् अस्बाब (166)

व क़ालल्लज़ीनत्त- बअू लौ अन्-न लना कर्रतन् फ़-न-तबर्र-अ मिन्हुम् कमा तबर्रअू मिन्ना, कज़ालि-क युरीहिमुल्लाहु अअ्मालहुम् ह-सरातिन् अ़लैहिम्, व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिनन्नार (167) ●

या अय्युहन्नासु कुलू मिम्मा फ़िल् अर्ज़ि हलालन् तय्यिबंव्-वला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि, इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम् मुबीन (168)

इन्नमा यअ्मुरुकुम् बिस्सू-इ वल्-फ़ह्शा-इ व अन् तक़ूलू अ़लल्लाहि मा ला तअ्लमून (169)

व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअू मा अन्ज़लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअु मा अल्फ़ैना अ़लैहि आबा-अना, अ-व लौ का-न आबाअुहुम्

النَّاسَ وَمَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ
مِنْ مَّآءٍ فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ
مَوْتِهَا وَبَثَّ فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ
وَّتَصْرِيْفِ الرِّيٰحِ وَالسَّحَابِ الْمُسَخَّرِ
بَيْنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝١٦٤

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّتَّخِذُ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ اَنْدَادًا يُّحِبُّوْنَهُمْ
كَحُبِّ اللّٰهِ ۭ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَشَدُّ
حُبًّا لِّلّٰهِ ۭ وَلَوْ يَرَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا
اِذْ يَرَوْنَ الْعَذَابَ ۙ اَنَّ الْقُوَّةَ لِلّٰهِ
جَمِيْعًا ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعَذَابِ ۝١٦٥

اِذْ تَبَرَّاَ الَّذِيْنَ اتُّبِعُوْا مِنَ
الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا وَرَاَوُا الْعَذَابَ
وَتَقَطَّعَتْ بِهِمُ الْاَسْبَابُ ۝١٦٦

وَقَالَ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْا لَوْ اَنَّ لَنَا كَرَّةً
فَنَتَبَرَّاَ مِنْهُمْ كَمَا تَبَرَّءُوْا مِنَّا ۭ
كَذٰلِكَ يُرِيْهِمُ اللّٰهُ اَعْمَالَهُمْ حَسَرٰتٍ
ع عَلَيْهِمْ ۭ وَمَا هُمْ بِخٰرِجِيْنَ مِنَ النَّارِ ۝١٦٧

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ كُلُوْا مِمَّا فِي الْاَرْضِ
حَلٰلًا طَيِّبًا ڮ وَّلَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ۭ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٦٨

اِنَّمَا يَاْمُرُكُمْ بِالسُّوْۗءِ وَالْفَحْشَاۗءِ
وَاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝١٦٩

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَآ اَلْفَيْنَا
عَلَيْهِ اٰبَاۗءَنَا ۭ اَوَلَوْ كَانَ اٰبَاۗؤُهُمْ

बाप-दादा कुछ भी अक़्ल से काम न लेते रहे हों, और न हिदायत पर रहे हों?

171. इन इनकार करने वालों की मिसाल ऐसी है जैसे कोई उस बात को चीख़कर कहे जिसे वह ख़ुद भी ठीक से सुनता न हो बजुज़ एक पुकार और आवाज़ के। बहरे, गूंगे, अंधे हैं, पस ये कुछ भी नहीं समझते।

172. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, खाओ पाक उमदा चीज़ों में से जो हमने तुम्हें अता की हैं और अल्लाह का शुक्र अदा करो अगर तुम उसी की बन्दगी करते हो।

173. उसने तो तुमपर सिर्फ़ मुर्दार, ख़ून और सुअर का गोश्त और जिसपर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, हराम किया है। इसपर भी जो बहुत मजबूर और लाचार हो जाए, वह नाफ़रमानी करने वाला न हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो उसपर कोई गुनाह नहीं; बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

174. जो लोग उस चीज़ को छुपाते हैं जो अल्लाह ने अपनी किताब में से उतारी है, और उसके बदले थोड़ी क़ीमत का सौदा करते हैं, वो तो बस आग खाकर अपने पेट भर रहे हैं; और उनसे अल्लाह न तो क़ियामत के दिन बात करेगा और न उन्हें उमदगी अता फ़रमाएगा; और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

175. यही लोग हैं जो हिदायत के बदले गुमराही के ख़रीदार हुए और बख़्शिश के बदले अज़ाब के गाहक बने; तो आग को बरदाश्त करने का हौसला उनका कितना बढ़ा हुआ है!

176. वह (अज़ाब) इसलिए होगा कि अल्लाह ने तो हक़ के साथ किताब उतारी, लेकिन जिन्होंने किताब के मुआमले में इख़्तिलाफ़ किया वो ज़िद और मुख़ालफ़त में बहुत दूर निकल गए।

177. वफ़ादारी और नेकी महज़ यह नहीं है कि तुम अपने मुंह पूरब

ला यअ़्क़िलू-न शैअंव्-व ला यह्तदून (170)

व म-सलुल्लज़ी-न क-फ़रू क-म-सलिल्लज़ी यन्अ़िक़ु बिमा ला यस्मअ़ु इल्ला दुआ़अंव्-व निदाअन्, सुम्मुम् बुक्मुन् अुम्युन् फ़हुम् ला यअ़्क़िलून (171)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम् वश्कुरू लिल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ़्बुदून (172)

इन्नमा हर्र-म अ़लैकुमुल-मै-त-त वद्द-म व लह्मल् ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल बिही लिग़ैरिल्लाहि फ़-मनिज़्तुर्-र ग़ै-र बाग़िंव् - व ला आ़दिन् फ़ला इस्-म अ़लैहि, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (173)

इन्नल्लज़ी-न यक्तुमू-न मा अन्ज़लल्लाहु मिनल्-किताबि व यश्तरू-न बिहि स-मनन् क़लीलन् उलाइ-क मा यअ्कुलू-न फ़ी बुतूनिहिम् इल्लन्ना-र व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु यौमल् क़ियामति व ला युज़क्कीहिम व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (174)

उला-इकल्लज़ीनश्त-रवुज़् ज़लाल-त बिल्हुदा वल्-अ़ज़ा-ब बिल् मग्फ़ि-रति फ़मा अस्ब-रहुम् अ़लन्नार (175)

ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह नज़्ज़लल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि, व इन्नल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फ़िल्-किताबि लफ़ी शिक़ाक़िम्-बअ़ीद • (176) •

लैसल्बिर्-र अन् तुवल्लू वुजू-हकुम्

لَا يَعْقِلُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝١٧٠
وَمَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا كَمَثَلِ
الَّذِيْ يَنْعِقُ بِمَا لَا يَسْمَعُ اِلَّا دُعَآءً
وَّنِدَآءً ۭ صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ
فَهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝١٧١
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُلُوْا مِنْ
طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ وَاشْكُرُوْا لِلّٰهِ
اِنْ كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝١٧٢
اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ
وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ بِهٖ
لِغَيْرِ اللّٰهِ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ
وَّلَا عَادٍ فَلَآ اِثْمَ عَلَيْهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٧٣
اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْتُمُوْنَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
مِنَ الْكِتٰبِ وَيَشْتَرُوْنَ بِهٖ ثَـمَنًا
قَلِيْلًا ۙ اُولٰۗىِٕكَ مَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ
بُطُوْنِهِمْ اِلَّا النَّارَ وَلَا يُكَلِّمُهُمُ
اللّٰهُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ښ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١٧٤
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الضَّلٰلَةَ
بِالْهُدٰى وَالْعَذَابَ بِالْمَغْفِرَةِ ۚ
فَمَآ اَصْبَرَھُمْ عَلَي النَّارِ ۝١٧٥
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ نَزَّلَ الْكِتٰبَ
بِالْحَقِّ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا
فِي الْكِتٰبِ لَفِيْ شِقَاقٍۢ بَعِيْدٍ ۝١٧٦
لَيْسَ الْبِرَّ اَنْ تُوَلُّوْا وُجُوْهَكُمْ

और पश्चिम की तरफ़ कर लो, बल्कि वफ़ादारी तो उसकी वफ़ादारी है जो अल्लाह, और रोज़-ए-आख़िर, और फरिश्तों, और किताब, और नबियों पर ईमान लाया और माल, उसकी मुहब्बत के बावजूद, रिश्तेदारों, और यतीमों, और मुहताजों और मुसाफ़िरों और मांगनेवालों को दिया और गर्दनें छुड़ाने में भी, और नमाज़ क़ायम की, और ज़कात दी, और अपने अ़हद को ऐसे ही लोग पूरा करनेवाले हैं जब अ़हद करें, और तंगी और ख़ासतौर से जिस्मानी तकालीफ़ में और लड़ाई के औक़ात में साबित क़दम रहने वाले हैं, वही लोग हैं जो सच्चे साबित हुए और वही लोग अ़हले तक़्वा हैं।

178. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, मारे जानेवालों के बारे में क़िसास तुमपर फ़र्ज़ किया गया; आज़ाद आज़ाद बराबर हैं और गुलाम गुलाम बराबर हैं और औरत औरत बराबर हैं। फिर अगर किसी को उसके भाई की तरफ़ से कुछ रिआयत मिल जाए तो दस्तूर की पैरवी करनी चाहिए। और ख़ूबी के साथ उसे अदा करना चाहिए। यह तुम्हारे रब की तरफ़ से एक तख़्फ़ीफ़ और रहमत है; फिर इसके बाद भी जो ज़्यादती करे तो उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

179. ऐ अक़्ल व फ़हम वालो, तुम्हारे लिए क़िसास में ज़िन्दगी है; शायद तुम बचो!

180. जब तुममें किसी की मौत आ पहुंचे अगर वह कुछ माल छोड़ रहा हो तो मां-बाप और रिश्तेदारों को मारूफ़ (भलाई) की वसीयत करना तुमपर फ़र्ज़ किया गया है, यह हक़ है अहले तक़्वा पर।

181. तो जो कोई उसके सुनने के बाद उसे बदल डाले तो उसका गुनाह

क़ि-बलल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि व लाकिन्नल्-बिर्-र मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि वल्मलाइ-कति वल्किताबि वन्नबिय्यी-न व आतल्मा-ल अ़ला हुब्बिही ज़विल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकी-न वब्नस्सबीलि वस्सा-इली-न व फ़िर्रिक़ाबि, व अक़ामस्सला-त व आतज़्ज़का-त वल्मूफ़ू-न बि-अ़ह्दिहिम इज़ा आ़-हदू वस्साबिरी-न फ़िल्-बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ व हीनल्-बअ्सि, उलाइ-कल्लज़ी-न स-दक़ू, व उलाइ-क हुमुल्-मुत्तक़ून (177)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुति- ब अ़लैकुमुल्-क़िसासु फ़िल्क़त्ला, अल्हुर्रु बिल्हुर्रि वल्अ़ब्दु बिल्अ़ब्दि वल्-उन्सा बिल्-उन्सा, फ़-मन् उ़फ़ि-य लहू मिन् अख़ीहि शैउन् फ़त्तिबाउ़म् बिल्मअ्रूफ़ि व अदाउन् इलैहि बि-इह्सानिन्, ज़ालि-क तख़्फ़ीफ़ुम्-मिर्रब्बिकुम् व रह्मतुन्, फ़- मनिअ़्तदा बअ्-द ज़ालि-क फ़-लहू अ़ज़ाबुन् अलीम (178)

व लकुम् फ़िल्क़िसासि हयातुंय्या उलिल्-अल्बाबि लअ़ल्लकुम तत्तक़ून (179)

कुति-ब अ़लैकुम् इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दकुमुल्मौतु इन् त-र-क ख़ै-रनिल् वसिय्यतु लिल्वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न बिल्मअ्रूफ़ि हक़्क़न् अ़लल्-मुत्तक़ीन (180)

फ़-मम् बद्-द लहू बअ्-द मा समि-अहू फ़-इन्नमा

قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلٰكِنَّ
الْبِرَّ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ
وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالْكِتٰبِ وَالنَّبِيّٖنَ ۚ
وَاٰتَى الْمَالَ عَلٰى حُبِّهٖ ذَوِى الْقُرْبٰى وَ
الْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَابْنَ
السَّبِيْلِ ۙ وَالسَّآئِلِيْنَ وَفِى الرِّقَابِ ۚ
وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى الزَّكٰوةَ ۚ
وَالْمُوْفُوْنَ بِعَهْدِهِمْ اِذَا عٰهَدُوْا ۚ
وَالصّٰبِرِيْنَ فِى الْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ
وَحِيْنَ الْبَاْسِ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا ؕ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿١٧٧﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الْقِصَاصُ فِى الْقَتْلٰى ؕ اَلْحُرُّ بِالْحُرِّ
وَالْعَبْدُ بِالْعَبْدِ وَالْاُنْثٰى بِالْاُنْثٰى ؕ
فَمَنْ عُفِىَ لَهٗ مِنْ اَخِيْهِ شَىْءٌ
فَاتِّبَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ وَاَدَآءٌ اِلَيْهِ
بِاِحْسَانٍ ؕ ذٰلِكَ تَخْفِيْفٌ مِّنْ
رَّبِّكُمْ وَرَحْمَةٌ ؕ فَمَنِ اعْتَدٰى
بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٨﴾
وَلَكُمْ فِى الْقِصَاصِ حَيٰوةٌ يّٰٓاُولِى
الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧٩﴾
كُتِبَ عَلَيْكُمْ اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ اِنْ تَرَكَ خَيْرَا ۖۚ اِلْوَصِيَّةُ
لِلْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ
حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٨٠﴾ ؕ
فَمَنْۢ بَدَّلَهٗ بَعْدَ مَا سَمِعَهٗ فَاِنَّمَآ

उन्हीं लोगों पर होगा जो उसे बदलेंगे; बेशक अल्लाह सब कुछ सुननेवाला, इल्म रखनेवाला है।

182. फिर अगर किसी को वसीयत करनेवाले की तरफ़ से किसी इनहिराफ़ या हक़ तलफ़ी का अन्देशा हो, इस वजह से उनके दरमियान सलाह और सुधार का नज़्म कर दे, तो उस पर कोई गुनाह नहीं; बेशक अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला है।

183. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुमपर रोज़े फ़र्ज़ कर दिए गए, जैसे तुमसे अगलों पर फ़र्ज़ किए गए थे, ताकि तुम तक़्वा हासिल करो,

184. गिनती के चन्द दिनों के लिए — उसपर भी तुममें कोई बीमार हो, या सफ़र में हो, तो दूसरे दिनों में तादाद पूरी कर ले; और जिन (बीमार और मुसाफ़िरों) को इसकी (मिसकीन को खिलाने की) ताक़त हो उनके ज़िम्मे फ़िदया में एक मुहताज का खाना है। फिर जो अपनी ख़ुशी से कुछ मज़ीद नेकी करे, तो यह उसी के लिए बेहतर है, और यह कि तुम रोज़ा रखो तो तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, अगर तुम जानो;

185. रमज़ान का महीना वह है जिसमें (या जिसकी शान में) कुरआन उतारा गया, लोगों की हिदायत के लिए और हिदायत और इमतियाज़े हक़ व बातिल की दलीलों के साथ। लिहाज़ा तुममें जो कोई इस महीने में मौजूद हो उसे चाहिए कि उसके रोज़े रखे; अल्लाह तुम्हारे साथ आसानी चाहता है, वह तुम्हारे साथ सख़्ती व दुश्वारी नहीं चाहता; (वह तुम्हें हिदायत दे रहा है) और चाहता है कि तुम तादाद पूरी कर लो, और जो हिदायत तुम्हें दी है उसके मुताबिक़ अल्लाह की बड़ाई का एतिराफ़ व इज़हार करो ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो।

186. और जब तुमसे मेरे बन्दे मेरे बारे में पूछें तो मैं पास हूं, पुकारनेवाले की पुकार का जवाब देता

इस्मुहू अलल्लज़ी-न युबद्दिलूनहू, इन्नल्ला-ह समीअुन अ़लीम (181) *फ़-मन् ख़ा-फ़ मिम्-मूसिन् ज-नफ़न् औ इस्मन् फ़-अस्ल-ह बैनहुम् फ़ला इस्-म अ़लैहि, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम* (182) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कुति-ब अ़लैकुमुस्- सियामु कमा कुति-ब अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (183) *अय्यामम्-मअ़्दूदातिन्, फ़-मन् का-न मिन्कुम् मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन् फ़-अिद्दतुम् मिन् अय्यामिन् उ-ख़-र, व अ़लल्लज़ी-न युतीक़ूनहू फ़िद्यतुन् तआ़मु मिस्कीनिन्, फ़-मन् त-तव्व- अ ख़ैरन फ़हु- व ख़ैरुल्लहू, व अन् तसूमू ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ़लमून* (184)

शहरु र- मज़ानल्लज़ी उन्ज़ि-ल फ़ीहिल्क़ुरआनु हुदल्लिन्नासि व बय्यिनातिम्- मिनल्हुदा वल्फ़ुरक़ानि फ़-मन् शहि-द मिन्कुमुश्शह्-र फ़ल्यसुम्हु, व मन् का-न मरीज़न् औ अ़ला स-फ़रिन् फ़अिद्दतुम् मिन् उ-ख़-र, युरीदुल्लाहु बिकुमुल युस्-र व ला युरीदु बिकुमुल्- अुस्-र व लितुक्मिलुल्- अिद्द-त व लितुकब्बिरुल्ला- ह अ़ला मा हदाकुम् व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (185)

व इज़ा स-अ-ल-क अ़िबादी अ़न्नी फ़-इन्नी क़रीबुन्, उजीबु दअ्-वतद्दाअि इज़ा

إِثْمُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يُبَدِّلُوْنَهٗ ۚ
إِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿١٨١﴾
فَمَنْ خَافَ مِنْ مُّوْصٍ جَنَفًا
أَوْ إِثْمًا فَأَصْلَحَ بَيْنَهُمْ فَلَآ إِثْمَ
عَلَيْهِ ۚ إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٨٢﴾
يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُتِبَ عَلَيْكُمُ
الصِّيَامُ كَمَا كُتِبَ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِكُمْ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٨٣﴾
أَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۚ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ
مَّرِيْضًا أَوْ عَلٰى سَفَرٍ فَعِدَّةٌ مِّنْ
أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ وَعَلَى الَّذِيْنَ يُطِيْقُوْنَهٗ
فِدْيَةٌ طَعَامُ مِسْكِيْنٍ ۚ فَمَنْ
تَطَوَّعَ خَيْرًا فَهُوَ خَيْرٌ لَّهٗ ۚ وَأَنْ
تَصُوْمُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ﴿١٨٤﴾

شَهْرُ رَمَضَانَ الَّذِيْٓ أُنْزِلَ فِيْهِ
الْقُرْاٰنُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَبَيِّنٰتٍ
مِّنَ الْهُدٰى وَالْفُرْقَانِ ۚ فَمَنْ
شَهِدَ مِنْكُمُ الشَّهْرَ فَلْيَصُمْهُ ۚ
وَمَنْ كَانَ مَرِيْضًا أَوْ عَلٰى سَفَرٍ
فَعِدَّةٌ مِّنْ أَيَّامٍ أُخَرَ ۚ يُرِيْدُ اللّٰهُ
بِكُمُ الْيُسْرَ وَلَا يُرِيْدُ بِكُمُ الْعُسْرَ ۚ
وَلِتُكْمِلُوا الْعِدَّةَ وَلِتُكَبِّرُوا
اللّٰهَ عَلٰى مَا هَدٰىكُمْ وَلَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُوْنَ ﴿١٨٥﴾
وَإِذَا سَأَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَإِنِّيْ
قَرِيْبٌ ۚ أُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ إِذَا

हूं जब वह मुझे पुकारता है, तो उन्हें चाहिए कि वो मेरा हुक्म मानें और मुझ पर ईमान रखें; ताकि वो रुश्द व हिदायत हासिल करें।

187. तुम्हारे लिए रोज़ों की रातों में अपनी औरतों से मिलना हलाल (जाइज़) किया गया; वो तुम्हारा लिबास हैं और तुम उनका लिबास हो। अल्लाह को मालूम हो गया कि तुम अपने आपसे ख़ियानत कर रहे थे, उसने तुमपर तवज्जुह फ़रमाई और तुम्हें माफ़ कर दिया। तो अब तुम उनसे मिलो-जुलो, और जो कुछ अल्लाह ने तुम्हारे लिए मुक़द्दर कर रखा है उसे तलब करो। और खाओ और पियो, यहां तक कि तुम्हें फ़ज्र की सफ़ेद धारी (शब की) सियाह (काली) धारी से नुमायां हो जाए; फिर रात तक रोज़ा पूरा करो और तुम उनसे न मिलो जबकि तुम मस्जिदों में एतिकाफ़ की हालत में हो। यह अल्लाह के हुदूद हैं; पस उनके क़रीब न जाओ। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान करता है, ताकि वो तक़्वा इख़्तियार करें।

188. और अपने माल आपस में ग़लत तरीक़े से न खाओ, और न उन्हें हाकिमों के आगे ले जाओ कि लोगों के कुछ माल हक़ तलफ़ी करके जानते-बूझते खा सको।

189. वो तुमसे (मुहतरम) महीनों के बारे में पूछते हैं। कहो, "यह लोगों के लिए वक़्त के तअय्युन का ज़रिया और हज के लिए मुक़र्रर है।" और यह कोई ख़ूबी व नेकी नहीं कि तुम घरों में उनके पीछे से आओ; बल्कि नेकी तो उसकी है जो तक़्वा इख़्तियार करे; तुम घरों में उनके दरवाज़ों से आओ और अल्लाह से डरते रहो कि तुम्हें

दआनि फ़ल्यस्तजीबू ली वल्युअ्मिनू बी लअ़ल्लहुम् यर्शुदून (186)

उहिल्-ल लकुम् लै-ल तस्सियामिर्र-फ़सु इला निसा-इकुम, हुन्-न लिबासुल्लकुम् व अन्तुम् लिबासुल्-लहुन्-न अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् कुन्तुम् तख़्तानू- न अन्फु-सकुम् फ़ता-ब अ़लैकुम् व अ़फ़ा अ़न्कुम् फ़ल्आ-न बाशिरूहुन्-न वब्तग़ू मा क-तबल्लाहु लकुम् व कुलू वश्रबू हत्ता य-तबय्य-न लकुमुल्ख़ैतुल्- अब्यजु मिनल्ख़ैतिल् अस्वदि मिनल्-फ़ज्रि सुम्-म अतिम्मुस् सिया-म इलल्लैलि व ला तुबाशिरूहुन्-न व अन्तुम् आ़किफ़ू-न फ़िल्-मसाजिदि, तिल्-क हुदूदुल्लाहि फ़ला तक़रबूहा, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु आयातिही लिन्नासि लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (187)

व ला तअ्कुलू अम्वा-लकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि व तुद्लू बिहा इलल्-हुक्कामि लितअ्कुलू फ़रीक़म् मिन् अम्वालिन्नासि बिल्इस्मि व अन्तुम् तअ्लमून (188) ●

यस्अलून-क अ़निल्-अहिल्लति, क़ुल् हि-य मवाक़ीतु लिन्नासि वल्-हज्जि, व लैसल्बिर्रु बि-अन्तअ्तुल्-बुयू-त मिन् ज़ुहूरिहा व ला किन्नल्बिर्-र मनित्तक़ा वअ्तुल्-बुयू-त मिन् अब्वाबिहा वत्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम्

دَعَانِ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَلْيُؤْمِنُوْا
بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ (١٨٦)
اُحِلَّ لَكُمْ لَيْلَةَ الصِّيَامِ الرَّفَثُ
اِلٰى نِسَآئِكُمْ ؕ هُنَّ لِبَاسٌ لَّكُمْ
وَاَنْتُمْ لِبَاسٌ لَّهُنَّ ؕ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ
كُنْتُمْ تَخْتَانُوْنَ اَنْفُسَكُمْ فَتَابَ
عَلَيْكُمْ وَعَفَا عَنْكُمْ ۚ فَالْئٰنَ
بَاشِرُوْهُنَّ وَابْتَغُوْا مَا كَتَبَ اللّٰهُ
لَكُمْ ۠ وَكُلُوْا وَاشْرَبُوْا حَتّٰى يَتَبَيَّنَ
لَكُمُ الْخَيْطُ الْاَبْيَضُ مِنَ الْخَيْطِ
الْاَسْوَدِ مِنَ الْفَجْرِ ۠ ثُمَّ اَتِمُّوا
الصِّيَامَ اِلَى الَّيْلِ ۚ وَلَا تُبَاشِرُوْهُنَّ
وَاَنْتُمْ عٰكِفُوْنَ ۙ فِي الْمَسٰجِدِ ؕ
تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ فَلَا تَقْرَبُوْهَا ؕ
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ (١٨٧)
وَلَا تَاْكُلُوْٓا اَمْوَالَكُمْ بَيْنَكُمْ
بِالْبَاطِلِ وَتُدْلُوْا بِهَآ اِلَى الْحُكَّامِ
لِتَاْكُلُوْا فَرِيْقًا مِّنْ اَمْوَالِ
ع النَّاسِ بِالْاِثْمِ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ (١٨٨)
يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَهِلَّةِ ؕ قُلْ هِيَ
مَوَاقِيْتُ لِلنَّاسِ وَالْحَجِّ ؕ وَلَيْسَ
الْبِرُّ بِاَنْ تَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ
ظُهُوْرِهَا وَلٰكِنَّ الْبِرَّ مَنِ
اتَّقٰى ۚ وَاْتُوا الْبُيُوْتَ مِنْ
اَبْوَابِهَا ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ

कामयाबी नसीब हो।

190. और अल्लाह की राह में उनसे लड़ो, जो तुमसे लड़ें, मगर ज़्यादती न करो; बेशक अल्लाह ज़्यादती करनेवालों को दोस्त नहीं रखता।

191. और उनको क़त्ल करो, जहां कहीं उनपर क़ाबू पाओ, और निकालो उन्हें जहां से उन्होंने तुम्हें निकाला है; और फ़ितना क़त्ल से भी बढ़कर भारी है। अलबत्ता मस्जिद-ए-हराम के पास तुम उनसे न लड़ो जब तक कि वो ख़ुद तुमसे वहां जंग न छेड़ें; पस अगर वो तुमसे जंग छेड़ें, तो उन्हें क़त्ल करो — ऐसे काफ़िरों का ऐसा ही बदला है

192. फिर अगर वो बाज़ आ जाएं तो अल्लाह भी बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

193. तुम उनसे लड़ो यहां तक कि फ़ितना बाक़ी रह न जाए और दीन अल्लाह के लिए हो जाए, पस अगर वो बाज़ आ जाएं तो ज़ालिमों के सिवा किसी के ख़िलाफ़ कोई इक़दाम रवा नहीं।

194. माह-ए-हराम बराबर है माह-ए-हराम के, और तमाम हुरमतों का भी क़िसास है। पस जो तुमपर ज़्यादती करे तो जैसी ज़्यादती वह तुमपर करे तुम भी उसी तरह से उससे ज़्यादती का बदला लो, और अल्लाह से डरते रहो, और जान लो कि अल्लाह अहले तक़्वा के साथ है।

195. और अल्लाह की राह में ख़र्च करो; और अपने ही हाथों से ख़ुद को तबाही में न डालो, और एहसान का तरीक़ा इख़्तियार करो; बेशक ख़ुदा मुहसिनों को महबूब रखता है।

196. और हज और उमरा जो कि अल्लाह के लिए हैं पूरा करो; फिर अगर तुम घिर जाओ तो जो क़ुरबानी मुयस्सर हो पेश कर दो। और अपने सर न मूंडो जब तक कि क़ुरबानी अपने ठिकाने न पहुंच जाए, मगर जो कोई तुम में बीमार हो या उसे सर की कोई तकलीफ़ हो तो रोज़े या सदक़ा या क़ुरबानी की शक्ल में फ़िदया देना होगा। फिर जब ख़तरा तुमसे टल

तुफ़्लिहून (189)

व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ी-न युक़ातिलू-नकुम् व ला तअ्तदू, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-मुअ्तदीन (190)

वक़्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम् व अख़्रिजूहुम मिन् हैसु अख़्रजूकुम वल्फ़ित्नतु अशद्दु मिनल्-क़त्ल व ला तुक़ातिलूहुम् अिन्दल्-मस्जिदिल्-हरामि हत्ता युक़ातिलूकुम् फ़ीहि, फ़-इन् क़ा-तलूकुम् फ़क़्तुलूहुम्, कज़ालि-क जज़ाउल्-काफ़िरीन (191)

फ़-इनिन्तहौ फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (192)

व क़ातिलूहुम् हत्ता ला तकू-न फ़ित्नतुंव्-व यकूनद्दीनु लिल्लाहि, फ़-इनिन्तहौ फ़ला अुद्वा-न इल्ला अ़लज़्ज़ालिमीन (193)

अश्शह्रुल्-हरामु बिश्शह्रिल्-हरामि वल्-हुरूमातु क़िसासुन्, फ़-मनिअ्तदा अ़लैकुम् फ़अ्तदू अ़लैहि बिमिस्लि मअ्तदा अ़लैकुम् वत्तक़ुल्ला-ह वअ्लमू अन्नल्ला-ह म-अ़ल्मुत्तक़ीन (194)

व अन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व ला तुल्क़ू बिऐदीकुम् इलत्तह्लु-कति, व अह्सिनू इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुह्सिनीन (195)

व अतिम्मुल्-हज्-ज वल्-अुम्र-त लिल्लाहि, फ़-इन् उह्सिर्तुम् फ़-मस्तै-स-र मिनल्-हद्यि व ला तह्लिक़ू रूऊ-सकुम् हत्ता यब्लुग़ल्-हद्यु महिल्लहू फ़-मन् का-न मिन्कुम्

تُفْلِحُوْنَ ۝١٨٩
وَ قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
يُقَاتِلُوْنَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ۭ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝١٩٠
وَ اقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ
وَاَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ حَيْثُ اَخْرَجُوْكُمْ
وَالْفِتْنَةُ اَشَدُّ مِنَ الْقَتْلِ ۚ وَلَا
تُقٰتِلُوْهُمْ عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ
حَتّٰى يُقٰتِلُوْكُمْ فِيْهِ ۚ فَاِنْ قٰتَلُوْكُمْ
فَاقْتُلُوْهُمْ ۭ كَذٰلِكَ جَزَاۗءُ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٩١
فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝١٩٢
وَ قٰتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ
وَّيَكُوْنَ الدِّيْنُ لِلّٰهِ ۭ فَاِنِ انْتَهَوْا
فَلَا عُدْوَانَ اِلَّا عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝١٩٣
اَلشَّهْرُ الْحَرَامُ بِالشَّهْرِ الْحَرَامِ
وَالْحُرُمٰتُ قِصَاصٌ ۭ فَمَنِ اعْتَدٰى
عَلَيْكُمْ فَاعْتَدُوْا عَلَيْهِ بِمِثْلِ
مَا اعْتَدٰى عَلَيْكُمْ ۠ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ۝١٩٤
وَاَنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا تُلْقُوْا
بِاَيْدِيْكُمْ اِلَى التَّهْلُكَةِ ڔ وَاَحْسِنُوْا ڔ
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٩٥
وَاَتِمُّوا الْحَجَّ وَالْعُمْرَةَ لِلّٰهِ ۭ فَاِنْ
اُحْصِرْتُمْ فَمَا اسْتَيْسَرَ مِنَ الْهَدْيِ ۚ
وَلَا تَحْلِقُوْا رُءُوْسَكُمْ حَتّٰى يَبْلُغَ
الْهَدْيُ مَحِلَّهٗ ۭ فَمَنْ كَانَ مِنْكُمْ

مَّرِيضًا أَوْ بِهِۦٓ أَذًى مِّن رَّأْسِهِۦ
فَفِدْيَةٌ مِّن صِيَامٍ أَوْ صَدَقَةٍ
أَوْ نُسُكٍ ۚ فَإِذَآ أَمِنتُمْ فَمَن تَمَتَّعَ
بِٱلْعُمْرَةِ إِلَى ٱلْحَجِّ فَمَا ٱسْتَيْسَرَ
مِنَ ٱلْهَدْىِ ۚ فَمَن لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
ثَلَٰثَةِ أَيَّامٍ فِى ٱلْحَجِّ وَسَبْعَةٍ إِذَا
رَجَعْتُمْ ۗ تِلْكَ عَشَرَةٌ كَامِلَةٌ ۗ
ذَٰلِكَ لِمَن لَّمْ يَكُنْ أَهْلُهُۥ حَاضِرِى
ٱلْمَسْجِدِ ٱلْحَرَامِ ۚ وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ وَٱعْلَمُوٓا۟
ع أَنَّ ٱللَّهَ شَدِيدُ ٱلْعِقَابِ ﴿١٩٦﴾
ٱلْحَجُّ أَشْهُرٌ مَّعْلُومَٰتٌ ۚ فَمَن
فَرَضَ فِيهِنَّ ٱلْحَجَّ فَلَا رَفَثَ وَلَا
فُسُوقَ وَلَا جِدَالَ فِى ٱلْحَجِّ ۗ
وَمَا تَفْعَلُوا۟ مِنْ خَيْرٍ يَعْلَمْهُ
ٱللَّهُ ۗ وَتَزَوَّدُوا۟ فَإِنَّ خَيْرَ
ٱلزَّادِ ٱلتَّقْوَىٰ ۚ وَٱتَّقُونِ يَٰٓأُو۟لِى
ٱلْأَلْبَٰبِ ﴿١٩٧﴾
لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَن تَبْتَغُوا۟
فَضْلًا مِّن رَّبِّكُمْ ۚ فَإِذَآ أَفَضْتُم
مِّنْ عَرَفَٰتٍ فَٱذْكُرُوا۟ ٱللَّهَ عِندَ
ٱلْمَشْعَرِ ٱلْحَرَامِ ۖ وَٱذْكُرُوهُ كَمَا هَدَىٰكُمْ
وَإِن كُنتُم مِّن قَبْلِهِۦ لَمِنَ ٱلضَّآلِّينَ ﴿١٩٨﴾
ثُمَّ أَفِيضُوا۟ مِنْ حَيْثُ أَفَاضَ ٱلنَّاسُ
وَٱسْتَغْفِرُوا۟ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿١٩٩﴾
فَإِذَا قَضَيْتُم مَّنَٰسِكَكُمْ فَٱذْكُرُوا۟
ٱللَّهَ كَذِكْرِكُمْ ءَابَآءَكُمْ أَوْ أَشَدَّ
ذِكْرًا ۗ فَمِنَ ٱلنَّاسِ مَن يَقُولُ

وقف النبی صلی اللہ علیہ وسلم

मरीज़न् औ बिही अज़म्-मिर्रअ्सिही फ-फ़िद्यतुम्-मिन् सियामिन् औ स-द-क़तिन् औ नुसुकिन् फ-इज़ा अमिन्तुम फ-मन् तमत्त-अ बिल्-उम्रति इलल्-हज्जि फ-मस्तै-स-र मिनल्-हद्यि फ-मल्लम् यजिद् फ़सियामु सलासति अय्यामिन् फ़िल्-हज्जि व सब्-अतिन् इज़ा रजअ्तुम, तिल्-क अ-श-रतुन् कामि-लतुन्, ज़ालि-क लिमल्-लम् यकुन् अह्लुहू हाज़िरिल्-मस्जिदिल्-हरामि, वत्तक़ुल्ला-ह वअ्लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अिक़ाब (196)

अल्हज्जु अश्हुरुम्-मअ्लूमातुन् फ-मन् फ-र-ज़ फ़ीहिन्नल्-हज्-ज फ़ला र-फ-स व ला फ़ु-सू-क़ व ला जिदा-ल फ़िल्-हज्जि, व मा तफ़्अलू मिन् ख़ैरिंय्- यअ्लम्हुल्लाहु, व तज़व्वदू फ-इन्-न ख़ैरज़्ज़ादित्तक़्वा वत्तक़ूनि या उलिल्-अल्बाब (197)

लै-स अलैकुम् जुनाहुन् अन् तब्तग़ू फ़ज़्लम्-मिर्रब्बिकुम्, फ-इज़ा अफ़ज़्तुम् मिन् अ-रफ़ातिन् फ़ज़्कुरुल्ला-ह अिन्दल्-मश्अरिल्- हरामि वज़्कुरूहु कमा हदाकुम् व इन् कुन्तुम् मिन् क़ब्लिही ल- मिनज़्ज़ाल्लीन (198)

सुम्-म अफ़ीज़ू मिन् हैसु अफ़ाज़न्नासु वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (199)

फ-इज़ा क़ज़ैतुम् मनासि-ककुम् फ़ज़्कुरुल्ला-ह क- ज़िक्रिकुम् आबा-अकुम् औ अशद्-द ज़िक्रन्, फ-मिनन्नासि मंय्यक़ूलु

जाए, तो जो कोई हज तक उमरा से बहरामन्द हो, तो जो कुरबानी मुयस्सर हो पेश करे। और जिसको मुयस्सर न हो, तो तीन दिन के रोज़े हज के ज़माने में रखे और सात दिन के रोज़े जब तुम वापस हो, ये पूरे दस हुए। यह उसके लिए है जिसके अहल व अयाल मस्जिद-ए-हराम के पास न रहते हों। अल्लाह का डर रखो, और खूब जान लो कि अल्लाह सख़्त सज़ा देने वाला है।

197. हज के महीने मालूम व मुतअय्यन हैं, पस जो इनमें हज करना तय कर ले तो हज में न तो जिन्सी बातें हो सकती हैं न फ़िस्क़ व फुजूर और न लड़ाई-झगड़े की कोई बात। और जो भलाई के काम भी तुम करोगे वह खुदा के इल्म में होगा। और तक़वा का ज़ाद-ए-राह लो क्योंकि बेहतरीन ज़ाद-ए-राह तक़वा है। और ऐ अक़्ल व ख़िरदवालो! मुझ से डरते रहो।

198. इसमें तुम्हारे लिए कोई गुनाह नहीं कि अपने रब का फ़ज़्ल तलब करो; फिर जब तुम अरफ़ात से चलो तो 'मशअर-ए-हराम' के पास ठहरकर अल्लाह को याद करो, और उसे याद करो जैसा कि उसने तुम्हें हिदायत से नवाज़ा है, और इससे पहले तुम गुमकरदा राह थे।

199. इसके बाद जहां से और सब लोग चलें, वहीं से तुम भी चलो, और अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करो, बेशक अल्लाह मग़फ़िरत फ़रमाने वाला, निहायत रहम वाला है।

200. फिर जब तुम अपने हज के मनासिक अदा कर चुको तो अल्लाह को याद करो जैसे अपने बाप-दादा को याद करते रहे हो, बल्कि उससे भी बढ़कर याद करो। फिर लोगों में कोई तो ऐसा है जो कहता है कि "हमारे रब! हमें दुनिया में दे दे," ऐसी हालत

में आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।

201. और उनमें कोई ऐसा है जो कहता है कि "हमारे रब! हमें अता फ़रमा दुनिया में भी अच्छी हालत और आख़िरत में भी अच्छी हालत, और हमें आग के अज़ाब से बचा ले;"

202. ऐसे ही लोग हैं कि उन्होंने जो कुछ कमाया है उसकी जिन्स का हिस्सा उनके लिए तय है; और अल्लाह जल्द हिसाब चुकाने वाला है

203. और अल्लाह की याद में यह गिनती के चन्द रोज़ बसर करो। फिर जो कोई जल्दी करके दो ही दिन में कूच करे तो इसमें उसपर कोई गुनाह नहीं; यह उसके लिए है जो तक़्वा को मलहूज़ रखे। और अल्लाह का तक़्वा इख़्तियार करो, और जान रखो कि उसी के पास तुम जमा होगे।

204. लोगों में कोई तो ऐसा है कि दुनियावी ज़िन्दगी के बारे में उसकी बात तुम्हें फ़रेफ़्ता करती है, बावजूद उस (खोट) के जो उसके दिल में होता है वह अल्लाह को गवाह ठहराता है, और झगड़े में वह ज़िद्दी है।

205. और जब लौटता है, तो ज़मीन में इसलिए दौड़-धूप करता है कि इसमें फ़साद फैलाए और खेती और नसल को तबाह करे; हालांकि खुदा फ़साद को पसन्द नहीं करता;

206. और जब उससे कहा जाता है कि "अल्लाह से डर", तो निख़वत (घमंड) उसे और गुनाह पर जमा देती है। पस उसके लिए तो जहन्नम ही काफ़ी है और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है!

207. और इंसानों में वह भी है जो अल्लाह की खुशनूदी के असबाब की तलब में अपनी जान खपा देता है; अल्लाह भी अपने ऐसे बन्दों पर बहुत शफ़क़त रखता है।

208. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो इस्लाम में पूरे के पूरे

रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या व मा लहू फ़िल्- आख़ि-रति मिन् ख़लाक़ (200)

व मिन्हुम् मंय्यक़ूलु रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह-स-नतंव्-व फ़िल्-आख़ि-रति ह-स- नतंव्- व क़िना अ़ज़ाबन्नार (201)

उलाइ-क लहुम् नसीबुम् मिम्मा क-सबू, वल्लाहु सरीअुल् हिसाब ●(202)

वज़्कुरूल्ला-ह फ़ी अय्यामिम्-मअ़दूदातिन् फ़-मन् त-अ़ज्ज-ल फ़ी यौमैनि फ़ला इस्-म अ़लैहि व मन् त-अख़्ख़-र फ़ला इस्-म अ़लैहि लि-मनित्तक़ा, वत्तक़ुल्ला-ह वअ्लमू अन्नकुम् इलैहि तुह्शरून (203)

व मिनन्नासि मंय्युअ्जिबु-क क़ौलुहू फ़िल्हयातिद्दुन्या व युश्हिदुल्ला-ह अ़ला मा फ़ी क़ल्बिही व हु-व अलद्दुल्-ख़िसाम (204)

व इज़ा तवल्ला सआ़ फ़िल्अर्ज़ि लियुफ़्सि-द फ़ीहा व युह्लिकल् हर्-स वन्नस्-ल वल्लाहु ला युहिब्बुल फ़साद (205)

व इज़ा क़ी-ल लहुत्तक़िल्ला- ह अ-ख़ज़त्हुल्-अ़िज़्ज़तु बिल्-इस्मि फ़-हस्बुहू जहन्नमु, व लबिअ्सल्-मिहाद (206)

व मिनन्नासि मंय्यश्री नफ़्सहुब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि, वल्लाहु रऊफ़ुम् बिल्-अ़िबाद (207)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुद्ख़ुलू

رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي الدُّنْيَا وَمَا لَهٗ فِي
الْاٰخِرَةِ مِنْ خَلَاقٍ ۝٢٠٠
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ رَبَّنَآ اٰتِنَا فِي
الدُّنْيَا حَسَنَةً وَّفِي الْاٰخِرَةِ حَسَنَةً
وَّقِنَا عَذَابَ النَّارِ ۝٢٠١
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ نَصِيْبٌ مِّمَّا كَسَبُوْا ۭ
وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٢٠٢
وَاذْكُرُوا اللّٰهَ فِيْٓ اَيَّامٍ مَّعْدُوْدٰتٍ ۭ
فَمَنْ تَعَجَّلَ فِيْ يَوْمَيْنِ فَلَآ
اِثْمَ عَلَيْهِ ۚ وَمَنْ تَاَخَّرَ فَلَآ
اِثْمَ عَلَيْهِ ۙ لِمَنِ اتَّقٰى ۭ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ اِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ۝٢٠٣
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّعْجِبُكَ قَوْلُهٗ
فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيُشْهِدُ اللّٰهَ
عَلٰي مَا فِيْ قَلْبِهٖ ۙ وَھُوَ اَلَدُّ
الْخِصَامِ ۝٢٠٤
وَاِذَا تَوَلّٰى سَعٰى فِي الْاَرْضِ
لِيُفْسِدَ فِيْهَا وَيُهْلِكَ الْحَرْثَ
وَالنَّسْلَ ۭ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الْفَسَادَ ۝٢٠٥
وَاِذَا قِيْلَ لَهُ اتَّقِ اللّٰهَ اَخَذَتْهُ
الْعِزَّةُ بِالْاِثْمِ فَحَسْبُهٗ جَهَنَّمُ ۭ
وَلَبِئْسَ الْمِهَادُ ۝٢٠٦
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِيْ نَفْسَهُ
ابْتِغَاۗءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ
رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ۝٢٠٧
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ادْخُلُوْا فِي

दाख़िल हो जाओ; और शैतान के क़दमों के पीछे न चलो; वह तुम्हारा खुला हुआ दुश्मन है।

209. फिर अगर तुमने उन खुली दलीलों के बाद भी जो तुम्हारे पास आ चुकी हैं, लग़ज़िश खाई, तो खूब जान रखो कि अल्लाह ज़बरदस्त, निहायत हिक्मत वाला है।

210. क्या वो बस इसका इंतिज़ार कर रहे हैं कि अल्लाह खुद बादलों के सायों में उनके सामने आ जाए और फरिश्ते भी, हालांकि बात तय कर दी गई है? मुआमलात तो अल्लाह ही की तरफ लौटते हैं।

211. बनी इसराईल से पूछो, कितनी खुली-खुली निशानियां हमने उन्हें दीं। और जो खुदा की नेमत को इसके बाद कि वह उसे पहुंच चुकी हो बदल डाले तो बेशक खुदा भी सख़्त सज़ा देने वाला है।

212. इनकार करने वाले दुनिया की ज़िन्दगी पर रीझे हुए हैं और अहले ईमान का मज़ाक उड़ाते हैं, हालांकि जो अहले तक़्वा हैं, वो क़ियामत के दिन उनसे बालातर होंगे; अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।

213. सारे इंसान एक ही उम्मत हैं; (उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया) तो अल्लाह ने नबियों को भेजा जो खुशख़बरी देनेवाले और डरानेवाले थे और उनके साथ हक़ पर मुश्तमिल किताब उतारी, ताकि लोगों में उन बातों का जिनमें वो इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं, फ़ैसला करे; इसमें इख़्तिलाफ़ तो बस उन्हीं लोगों ने, जिन्हें वह मिली थी आपस में ज़ुल्म व ज़्यादती करने के लिए इसके बाद किया जबकि खुली निशानियां उनके पास आ चुकी थीं; पस अहले ईमान को अल्लाह ने अपनी तौफ़ीक़ से उस हक़ के मुआमले में रहनुमाई फ़रमाई, जिसमें उन्होंने इख़्तिलाफ़ किया था; अल्लाह जिसे चाहता है सीधी राह चलाता है।

फ़िस्सिल्मि काफ़्फ़तंव् व ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि, इन्नहू लकुम अ़दुव्वुम्-मुबीन (208)

फ़-इन् ज़लल्तुम मिम्-बअ्दि मा जाअत्कुमुल्-बय्यिनातु फ़अ्लमू अन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम (209)

हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अंय्यअ्ति-यहुमुल्लाहु फ़ी ज़ु-ललिम् मिनल्- ग़मामि वल्-मलाइ-कतु व क़ुज़ियल्-अम्रु, व इलल्लाहि तुरजअुल-उमूर (210) ●

सल् बनी इस्राई-ल कम् आतैनाहुम् मिन् आयतिम् बय्यि-नतिन्, व मंय्युबद्दिल् निअ्-मतल्लाहि मिम्-बअ्दि मा जाअत्हु फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल् अ़िक़ाब (211)

ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी-न क-फ़रुल्-हयातुद्दुन्या व यस्ख़रू-न मिनल्लज़ी-न आमनू ● वल्लज़ीनत्तक़ौ फ़ौ-क़हुम् यौमल्-क़ियामति, वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब (212)

कानन्नासु उम्म- तंव्-वाहि-दतन्, फ़-ब अ़सल्लाहुन्नबिय्यी-न मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न व अन्ज़-ल म-अ़हुमुल किता-ब बिल्हक़्क़ि लियह्कु-म बैनन्नासि फ़ी मख़्त-लफ़ू फ़ीहि, व मख़्त-ल-फ़ फ़ीहि इल्लल्लज़ी-न ऊतूहु मिम्-बअ्दि मा जाअत्हुमुल् बय्यिनातु बग़्यम्- बैनहुम् फ़हदल्लाहुल्लज़ी-न आमनू लिमख़्त-लफ़ू फ़ीहि मिनल्-हक़्क़ि बि-इज़्निही, वल्लाहु यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (213)

السِّلْمِ كَآفَّةً ۖ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوٰتِ
الشَّيْطٰنِ ۗ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ۝٢٠٨
فَاِنْ زَلَلْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْكُمُ الْبَيِّنٰتُ
فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٢٠٩
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيَهُمُ اللّٰهُ
فِيْ ظُلَلٍ مِّنَ الْغَمَامِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
وَقُضِيَ الْاَمْرُ ۗ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ
ع الْاُمُوْرُ ۝٢١٠
سَلْ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ كَمْ اٰتَيْنٰهُمْ
مِّنْ اٰيَةٍۢ بَيِّنَةٍ ۗ وَمَنْ يُّبَدِّلْ
نِعْمَةَ اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُ
فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٢١١
زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوا الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَيَسْخَرُوْنَ مِنَ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ۘ وَالَّذِيْنَ اتَّقَوْا فَوْقَهُمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۗ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ
يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٢١٢
كَانَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۟ فَبَعَثَ
اللّٰهُ النَّبِيّٖنَ مُبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ ۪
وَاَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ
بَيْنَ النَّاسِ فِيْمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۗ
وَمَا اخْتَلَفَ فِيْهِ اِلَّا الَّذِيْنَ
اُوْتُوْهُ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ
بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ ۚ فَهَدَى اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا لِمَا اخْتَلَفُوْا فِيْهِ مِنَ الْحَقِّ
بِاِذْنِهٖ ۗ وَاللّٰهُ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٢١٣

214. क्या तुमने समझ रखा है कि जन्नत में दाख़िल हो जाओगे, हालांकि अभी तुम्हें उन जैसे हालात पेश ही नहीं आए जो तुम्हारे अगलों को पेश आ चुके हैं? उनपर तंगियां और तकलीफ़ें आईं, और उन्हें हिलाया और बेचैन किया जाता रहा यहां तक कि रसूल बोल उठे और उसके साथ अहले ईमान भी कि अल्लाह की मदद कब आएगी? आगाह रहो, अल्लाह की मदद क़रीब है।

215. वो तुमसे पूछते हैं "कितना ख़र्च करें?" कहो कि "जो माल भी तुमने ख़र्च किया है वह तो मां-बाप, रिश्तेदारों, और यतीमों, और मुहताजों और मुसाफ़िरों के लिए सर्फ़ (ख़र्च) हुआ है; और जो भलाई भी तुम करो बेशक अल्लाह उससे अच्छी तरह बाख़बर होगा।"

216. तुमपर जंग फ़र्ज़ किया गया, और वह तुम्हें नागवार है। और बहुत मुमकिन है कि किसी चीज़ को तुम नापसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बेहतर हो; और बहुत मुमकिन है कि किसी चीज़ को तुम पसन्द करो और वह तुम्हारे लिए बुरी हो, जानता अल्लाह है तुम नहीं जानते।

217. वो तुम से माह-ए-हराम में जंग के बारे में पूछते हैं। कहो, "उसमें लड़ना बड़ी संगीन बात है। लेकिन अल्लाह के रास्ते से रोकना और उसके साथ कुफ़्र करना और मस्जिद-ए-हराम से रोकना और उसके लोगों को उससे निकालना अल्लाह के नज़दीक इससे भी ज़्यादा संगीन है; और फ़ितना क़त्ल से भी शदीदतर है।" उनका बस चले तो वो तुमसे बराबर लड़ते रहें ताकि तुम्हें तुम्हारे दीन से फेर दें, और तुममें से जो कोई अपने दीन से फिर जाए, और काफ़िर ही रह कर मरे तो ऐसे ही

अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ्तिकुम् म- सलुल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिकुम, मस्सत्हुमुल्-बअ्सा-उ वज़्ज़र्रा-उ व ज़ुल्ज़िलू हत्ता यकूलर्-रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू मता नस्रुल्लाहि, अला इन्-न नस्रल्लाहि क़रीब (214)

यस्अलून-क माज़ा युन्फ़िक़ू-न, क़ुल् मा अन्फ़क़्तुम् मिन् ख़ैरिन् फ़-लिल्वालिदैनि वल्-अक़्रबी-न वल्-यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्सबीलि, व मा तफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़-इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम (215)

कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़ितालु व हु-व कुर्हुल्लकुम् व अ़सा अन् तक्रहू शैअंव्-व हु-व ख़ैरुल्लकुम् व अ़सा अन् तुहिब्बू शैअंव्-व हु-व शर्रुल्लकुम, वल्लाहु यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्लमून (216) ●

यस्अलून-क अ़निश्शह्रिल्-हरामि क़ितालिन् फ़ीहि, क़ुल् क़ितालुन् फ़ीहि कबीरुन्, व सद्दुन अ़न् सबीलिल्लाहि व कुफ़्रुम् बिही वल्मस्जिदिल्-हरामि, व इख़राजु अह्लिही मिन्हु अक्बरु अ़िन्दल्लाहि वल्-फ़ित्नतु अक्बरु मिनल्-क़त्लि, व ला यज़ालू-न युक़ातिलू-नकुम् हत्ता यरुद्दूकुम् अ़न् दीनिकुम्

أَمْ حَسِبْتُمْ أَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ
وَلَمَّا يَأْتِكُمْ مَّثَلُ الَّذِيْنَ خَلَوْا
مِنْ قَبْلِكُمْ ۚ مَسَّتْهُمُ الْبَأْسَآءُ
وَالضَّرَّآءُ وَزُلْزِلُوْا حَتّٰى يَقُوْلَ
الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
مَتٰى نَصْرُ اللّٰهِ ۚ اَلَآ اِنَّ نَصْرَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ ﴿٢١٤﴾
يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَا يُنْفِقُوْنَ ۚ قُلْ
مَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ خَيْرٍ فَلِلْوَالِدَيْنِ
وَالْاَقْرَبِيْنَ وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَابْنِ السَّبِيْلِ ۚ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ
خَيْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ﴿٢١٥﴾
كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ وَهُوَ
كُرْهٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا
شَيْـًٔا وَّهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَعَسٰٓى
اَنْ تُحِبُّوْا شَيْـًٔا وَّهُوَ شَرٌّ
لَّكُمْ ۗ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ
ع لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢١٦﴾
يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الشَّهْرِ الْحَرَامِ قِتَالٍ
فِيْهِ ۚ قُلْ قِتَالٌ فِيْهِ كَبِيْرٌ ۚ وَصَدٌّ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَكُفْرٌۢ بِهٖ
وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ وَاِخْرَاجُ
اَهْلِهٖ مِنْهُ اَكْبَرُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ
وَالْفِتْنَةُ اَكْبَرُ مِنَ الْقَتْلِ ۚ
وَلَا يَزَالُوْنَ يُقَاتِلُوْنَكُمْ حَتّٰى
يَرُدُّوْكُمْ عَنْ دِيْنِكُمْ اِنِ

लोग जिनके आमाल दुनिया और आख़िरत में बबाद जाते हैं; और वही आग में पड़ने वाले हैं, वो उसमें हमेशा रहेंगे।

218. रहे वो लोग जो साहिबे ईमान हुए, और जिन्होंने हिजरत की और ख़ुदा की राह में जिहाद किया, वही ख़ुदा की रहमत के उम्मीदवार हैं; ख़ुदा भी बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

219. तुमसे शराब और जुए के बारे में पूछते हैं। कहो, "उन दोनों चीज़ों में बड़ा गुनाह है, अगरचे लोगों के लिए कुछ फ़ायदे भी हैं, लेकिन उनका गुनाह उनके फ़ायदे से कहीं बढ़कर है।" और तुमसे पूछते हैं, "कितना ख़र्च करें?" कहो, "जो ज़रूरत से ज़्यादा हो।" इस तरह अल्लाह दुनिया के मुआमले में भी, और आख़िरत के बारे में भी तुम्हारे लिए आयतें खोल-खोलकर बयान करता है ताकि तुम ग़ौर व फ़िक्र करो।

220. और वो तुमसे यतीमों के बारे में पूछते हैं, "कहो, उनकी इसलाह की जो सूरत भी इख़्तियार की जाए अच्छी चीज़ है और अगर तुम अपने साथ उन्हें शामिल कर लो तो वो तुम्हारे भाई ही हैं। और अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वाले और बनाव पैदा करनेवाले को बाहम मुमय्यज़ कर देता है। और अगर अल्लाह चाहता तो तुमको ज़हमत में डाल देता, बेशक अल्लाह ग़ालिब, निहायत हिकमत वाला है।"

221. और मुशरिक औरतों से निकाह न करो, जब तक कि वो ईमान न लाएं, एक मोमिन बांदी मुशरिक औरत से कहीं बेहतर है, ख़्वाह वह तुम्हें कितनी ही पसन्द क्यों न आई हो। और न (मोमिन औरतों का) मुशरिक मर्दों से निकाह करो, जब तक कि वो ईमान न लाएं, एक मोमिन गुलाम, आज़ाद मुशरिक से कहीं बेहतर है, ख़्वाह वह तुम्हें कितना ही पसन्द क्यों न आया हो। ऐसे लोग आग की

इनिस्तताअू, व मंय्यर्-तदिद् मिन्कुम् अ़न् दीनिही फ़-यमुत् व हु-व काफ़िरून् फ़-उलाइ-क हबितत् अअ्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्-आख़ि-रति व उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (217)

इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि उलाइ-क यर्जू-न रह्मतल्लाहि, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (218)

यस्अलून-क अ़निल्-ख़म्रि वल्-मैसिरि कुल फ़ीहिमा इस्मुन् कबीरुंव्-व मनाफ़िअु लिन्नासि व इस्मुहुमा अक्बरु मिन्नफ़्अिहिमा, व यस्अलून-क माज़ा युन्फ़िकू-न, कुलिल्-अ़फ़-व कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति लअ़ल्लकुम् त- तफ़क्करून (219)

फ़िद्दुन्या वल्-आख़ि-रति व यस्अलून-क अ़निल्- यतामा, कुल इस्लाहुल्लहुम् ख़ैरुन्, व इन् तुख़ालितूहुम् फ़-इख़्वानुकुम, वल्लाहु यअ्लमुल मुफ़्सि-द मिनल्-मुस्लिहि, व लौ शाअल्लाहु ल-अअ्न-तकुम, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन हकीम (220)

व ला तन्किहुल् मुश्रिकाति हत्ता युअ्मिन्-न व ल-अ-मतुम् मुअ्मि-नतुन् ख़ैरुम्-मिम्-मुश्रि-कतिंव्- व लौ अअ्-जबत्कुम् व ला तुन्किहुल मुश्रिकी-न हत्ता युअ्मिनू, व ल-अ़ब्दुम- मुअ्मिनुन् ख़ैरुम् मिम्-मुश्रिकिंव्-व लौ अअ्ज- बकुम, उलाइ-क यदअू-न

اسْتَطَاعُوا ۚ وَمَنْ يَرْتَدِدْ مِنْكُمْ
عَنْ دِينِهِ فَيَمُتْ وَهُوَ كَافِرٌ
فَأُولَٰئِكَ حَبِطَتْ أَعْمَالُهُمْ فِي
الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۖ وَأُولَٰئِكَ أَصْحَابُ
النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ﴿٢١٧﴾
إِنَّ الَّذِينَ آمَنُوا وَالَّذِينَ هَاجَرُوا
وَجَاهَدُوا فِي سَبِيلِ اللَّهِ أُولَٰئِكَ يَرْجُونَ
رَحْمَتَ اللَّهِ ۚ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢١٨﴾
يَسْأَلُونَكَ عَنِ الْخَمْرِ وَالْمَيْسِرِ ۖ
قُلْ فِيهِمَا إِثْمٌ كَبِيرٌ وَمَنَافِعُ
لِلنَّاسِ وَإِثْمُهُمَا أَكْبَرُ مِنْ
نَفْعِهِمَا ۗ وَيَسْأَلُونَكَ مَاذَا
يُنْفِقُونَ قُلِ الْعَفْوَ ۗ كَذَٰلِكَ
يُبَيِّنُ اللَّهُ لَكُمُ الْآيَاتِ لَعَلَّكُمْ
تَتَفَكَّرُونَ ﴿٢١٩﴾
فِي الدُّنْيَا وَالْآخِرَةِ ۗ وَيَسْأَلُونَكَ
عَنِ الْيَتَامَىٰ ۖ قُلْ إِصْلَاحٌ لَهُمْ
خَيْرٌ ۖ وَإِنْ تُخَالِطُوهُمْ فَإِخْوَانُكُمْ ۚ
وَاللَّهُ يَعْلَمُ الْمُفْسِدَ مِنَ الْمُصْلِحِ ۚ
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَأَعْنَتَكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ
عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٢٢٠﴾
وَلَا تَنْكِحُوا الْمُشْرِكَاتِ حَتَّىٰ يُؤْمِنَّ ۚ
وَلَأَمَةٌ مُؤْمِنَةٌ خَيْرٌ مِنْ
مُشْرِكَةٍ وَلَوْ أَعْجَبَتْكُمْ ۗ وَلَا
تُنْكِحُوا الْمُشْرِكِينَ حَتَّىٰ يُؤْمِنُوا ۚ
وَلَعَبْدٌ مُؤْمِنٌ خَيْرٌ مِنْ مُشْرِكٍ
وَلَوْ أَعْجَبَكُمْ ۗ أُولَٰئِكَ يَدْعُونَ إِلَى

तरफ़ बुलाते हैं; और अल्लाह अपनी तौफ़ीक़ से जन्नत और मग़फ़िरत की तरफ़ दावत देता है, और वह अपनी आयतें लोगों के सामने खोल-खोल कर बयान करता है ताकि वो याददिहानी हासिल करें।

222. और वो तुमसे हैज़ के बारे में पूछते हैं। कहो, "वह एक आज़ार (तकलीफ़) और गन्दगी की चीज़ है; पस हैज़ में औरतों से अलग रहो और उनके पास न जाओ, जब तक कि वो पाक न हो जाएं, फिर जब वो अच्छी तरह पाक हो लें तो उनके पास आओ, जहां से अल्लाह ने तुम्हें बता दिया है।" बेशक अल्लाह बहुत तौबा करने वालों को महबूब रखता है, और वह उन्हें महबूब रखता है जो पाकीज़गी पसन्द करते हैं।

223. तुम्हारी औरतें तुम्हारी खेती हैं, पस जिस तरह चाहो अपनी खेती में आओ, और अपने लिए आगे भेजो; और अल्लाह से डरते रहो और खूब जान लो कि तुम्हें उससे मिलना है; और ईमानवालों को खुशख़बरी दे दो।

224. अपने नेक व मुत्तक़ी होने और लोगों के दरमियान मुसलेह होने के सिलसिले में अपनी क़समों के ज़रिए अल्लाह को आड़ और निशाना न बनाओ कि उन कामों से बाज़ रहो; अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, जानने वाला है,

225. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी ऐसी क़समों पर नहीं पकड़ेगा जो यूं ही मुंह से निकल गई हों, लेकिन उन क़समों पर वह ज़रूर तुम्हारी गिरफ़्त करेगा जो तुम ने दिल से खाई हों; यूं अल्लाह बख़्शने वाला, बुर्दबार है।

226. जो लोग अपनी औरतों से अलग रहने की क़सम खा बैठें उनके लिए चार महीने का इंतिज़ार है; फिर अगर रुजू कर लें, तो अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है,

227. और अगर वो तलाक़ ही की ठान लें तो अल्लाह भी सुनने वाला, खूब जानने वाला है।

228. और तलाक़ पाई हुई औरतें तीन हैज़ गुज़रने तक अपने आपको

इलन्नारि वल्लाहु यद्अू इलल्-जन्नति वल्-मग्फ़िरति बि-इज़्निही व युबय्यिनु आयातिही लिन्नासि लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (221) ●

व यस्अलून-क अ़निल्-महीज़ि कुल् हु-व अ-ज़न् फ़अ्तज़िलुन्निसा-अ फ़िल्-महीज़ि वला तक़्रबूहुन्-न हत्ता यत्हुर्-न फ़-इज़ा त-तह्हर्-न फ़अ्तूहुन्-न मिन् हैसु अ-म-रकुमुल्लाहु, इन्नल्ला-ह युहिब्बुत्तव्वाबी-न व युहिब्बुल् मु-त-तह्हिरीन (222)

निसाउकुम् हर्सुल्लकुम् फ़अ्तू हर्सकुम् अन्ना शिअ्तुम् व क़द्दिमू लि-अन्फ़ुसिकुम, वत्तक़ुल्ला-ह वअ्लमू अन्नकुम् मुलाक़ूहु, व बश्शिरिल्- मुअ्मिनीन (223)

व ला तज्अ़लुल्ला-ह अुर्-ज़तल् लिऐमानिकुम् अन् तबर्रू व तत्तक़ू व तुस्लिहू बैनन्नासि, वल्लाहु समीअुन अ़लीम (224)

ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिंय्युआख़िज़ुकुम् बिमा क-सबत् क़ुलूबुकुम, वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीम (225)

लिल्लज़ी-न युअ्लू-न मिन्निसा-इहिम् तरब्बुसु अर्-ब-अ़ति अश्हुरिन् फ़-इन् फ़ाऊ फ़- इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (226)

व इन् अ-ज़मुत्तला-क फ़-इन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम (227)

वल्मुतल्लक़ातु य- तरब्बस्-न बि-अन्फ़ुसिहिन्-न

النَّارِ ۖ وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا اِلَى الْجَنَّةِ
وَالْمَغْفِرَةِ بِاِذْنِهٖ ۚ وَيُبَيِّنُ اٰيٰتِهٖ
لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٢١﴾
وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْمَحِيْضِ ۖ قُلْ
هُوَ اَذًى ۙ فَاعْتَزِلُوا النِّسَآءَ فِي
الْمَحِيْضِ ۙ وَلَا تَقْرَبُوْهُنَّ حَتّٰى
يَطْهُرْنَ ۚ فَاِذَا تَطَهَّرْنَ فَاْتُوْهُنَّ
مِنْ حَيْثُ اَمَرَكُمُ اللّٰهُ ۚ اِنَّ
اللّٰهَ يُحِبُّ التَّوَّابِيْنَ وَيُحِبُّ
الْمُتَطَهِّرِيْنَ ﴿٢٢٢﴾
نِسَآؤُكُمْ حَرْثٌ لَّكُمْ ۠ فَاْتُوْا
حَرْثَكُمْ اَنّٰى شِئْتُمْ ۚ وَقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّكُمْ مُّلٰقُوْهُ ۚ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٢٣﴾
وَلَا تَجْعَلُوا اللّٰهَ عُرْضَةً لِّاَيْمَانِكُمْ
اَنْ تَبَرُّوْا وَتَتَّقُوْا وَتُصْلِحُوْا
بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٤﴾
لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْٓ اَيْمَانِكُمْ
وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا كَسَبَتْ قُلُوْبُكُمْ ۚ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٢٥﴾
لِلَّذِيْنَ يُؤْلُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ تَرَبُّصُ
اَرْبَعَةِ اَشْهُرٍ ۚ فَاِنْ فَآءُوْ فَاِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٢٦﴾
وَاِنْ عَزَمُوا الطَّلَاقَ فَاِنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٢٧﴾
وَالْمُطَلَّقٰتُ يَتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ

इंतिज़ार में रखें; अगर वो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखती हैं तो उनके लिए जाइज़ न होगा कि अल्लाह उनके रहमों में जो कुछ पैदा फ़रमाया हो उसे छुपाएं; इस दौरान में उनके शौहर, अगर वो तअल्लुक़ात सही कर लेने का इरादा रखते हों तो उन्हें लौटा लेने के ज़्यादा हक़दार हैं। और उन बीवियों के भी आम दस्तूर के मुताबिक़ इसी तरह हुक़ूक़ हैं जिस तरह उनपर ज़िम्मेदारियां आयद की गई हैं, और शौहरों को उन पर एक दर्जा हासिल है; अल्लाह ग़ालिब, निहायत हिकमतवाला है।

229. तलाक़-ए-रजई दो ही बार है; फिर दस्तूर के लिहाज़ से रोक लिया जाए या नेक तरीक़े से रुख़सत कर दिया जाए। और तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि जो कुछ तुम उन्हें दे चुके हो उसमें से कुछ ले लो, सिवाय इस सूरत के कि दोनों को अंदेशा हो कि वो अल्लाह के हुदूद पर क़ायम न रह सकेंगे; पस अगर तुमको यह अन्देशा हो कि वो अल्लाह के हुदूद पर क़ायम न रहेंगे तो औरत जो कुछ फ़िदया दे उसमें उनके लिए कोई गुनाह नहीं। यह अल्लाह के हुदूद हैं; पस उनसे तजावुज़ न करो। और जो अल्लाह के हुदूद से तजावुज़ करे तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।

230. (दो तलाक़ों के बाद) फिर अगर वह उसे तलाक़ दे दे, तो इसके बाद वह उसके लिए जाइज़ न होगी, जब तक कि वह उसके अलावा किसी दूसरे शौहर से हमबिस्तर न हो ले। पस अगर वह उसे तलाक़ दे दे तो फिर उन दोनों के लिए एक दूसरे की तरफ़ पलट आने में कोई गुनाह न होगा, अगर वो समझते हों कि अल्लाह के हुदूद पर क़ायम रह सकते हैं। और ये अल्लाह के मुक़र्रर किए हुए हुदूद हैं; जिन्हें वह उन लोगों के लिए बयान कर रहा है, जो जानना चाहते हों।

231. और जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो और उनकी इद्दत पूरी होने को आ जाए, तो दस्तूर के मुताबिक़ उन्हें रोक लो या दस्तूर के मुताबिक़ उन्हें रुख़सत कर दो; और

सलास-त क़ुरूइन्, व ला यहिल्लु लहुन्-न अंय्यक्तुम्-न मा ख़-लक़ल्लाहु फ़ी अर्हामिहिन्-न इन् कुन्-न युअ्मिन्-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, व बुअ़-लतुहुन्-न अहक़्क़ु बि-रद्दिहिन्- न फ़ी ज़ालि-क इन् अरादू इस्लाहन्, व लहुन्-न मिस्लुल्लज़ी अ़लैहिन्-न बिल्मअ्रूफ़ि व लिर्रिजालि अ़लैहिन्-न द-र-जतुन्, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (228)

अत्तलाक़ु मर्रतानि फ़-इम्साकुम्-बिमअ्रूफ़िन् औ तस्रीहुम् बि-इह्सानिन्, व ला यहिल्लु लकुम् अन् तअ्ख़ुज़ू मिम्मा आतैतुमूहुन्-न शैअन् इल्ला अंय्यख़ाफ़ा अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि, फ़-इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला युक़ीमा हुदूदल्लाहि फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा फ़ीमफ़्तदत् बिही, तिल्-क हुदूदुल्लाहि फ़ला तअ्तदूहा व मंय्य-तअ़द्-द हुदूदल्लाहि फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (229)

फ़-इन् तल्ल-क़हा फ़ला तहिल्लु लहू मिम्-बअ्दु हत्ता तन्कि-ह ज़ौजन् ग़ैरहू, फ़-इन् तल्ल-क़हा फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा अंय्य-तरा- जआ़ इन् ज़न्ना अंय्युक़ीमा हुदूदल्लाहि, व तिल्-क हुदूदुल्लाहि युबय्यिनुहा लिक़ौमिंय्यअ्लमून (230)

व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़-बलग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़-अम्सिकूहुन्- न बिमअ्रूफ़िन् औ सर्रिहूहुन्-न बिमअ्रूफ़िंव्-व ला

ثَلٰثَةَ قُرُوْٓءٍ ۭ وَلَا يَحِلُّ لَهُنَّ اَنْ
يَّكْتُمْنَ مَا خَلَقَ اللّٰهُ فِيْٓ اَرْحَامِهِنَّ
اِنْ كُنَّ يُؤْمِنَّ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۭ
وَبُعُوْلَتُهُنَّ اَحَقُّ بِرَدِّهِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
اِنْ اَرَادُوْٓا اِصْلَاحًا ۭ وَلَهُنَّ مِثْلُ
الَّذِيْ عَلَيْهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۠ وَلِلرِّجَالِ
عَلَيْهِنَّ دَرَجَةٌ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ
ع ٢٨ ١٢ حَكِيْمٌ ۝٢٢٨

اَلطَّلَاقُ مَرَّتٰنِ ۠ فَاِمْسَاكٌۢ بِمَعْرُوْفٍ
اَوْ تَسْرِيْحٌۢ بِاِحْسَانٍ ۭ وَلَا يَحِلُّ لَكُمْ
اَنْ تَاْخُذُوْا مِمَّآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ شَيْـــًٔا
اِلَّآ اَنْ يَّخَافَآ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۭ
فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا يُقِيْمَا حُدُوْدَ اللّٰهِ ۙ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا فِيْمَا
افْتَدَتْ بِهٖ ۭ تِلْكَ حُدُوْدُ
اللّٰهِ فَلَا تَعْتَدُوْهَا ۚ وَمَنْ
يَّتَعَدَّ حُدُوْدَ اللّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٢٢٩

فَاِنْ طَلَّقَهَا فَلَا تَحِلُّ لَهٗ مِنْۢ بَعْدُ
حَتّٰي تَنْكِحَ زَوْجًا غَيْرَهٗ ۭ فَاِنْ
طَلَّقَهَا فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَآ اَنْ
يَّتَرَاجَعَآ اِنْ ظَنَّآ اَنْ يُّقِيْمَا
حُدُوْدَ اللّٰهِ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ
اللّٰهِ يُبَيِّنُهَا لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٢٣٠

وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاۗءَ فَبَلَغْنَ
اَجَلَهُنَّ فَاَمْسِكُوْھُنَّ بِمَعْرُوْفٍ
اَوْ سَرِّحُوْھُنَّ بِمَعْرُوْفٍ ۠ وَلَا

تُمْسِكُوْهُنَّ ضِرَارًا لِّتَعْتَدُوْا ۚ وَمَنْ
يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۚ
وَلَا تَتَّخِذُوْٓا اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا ۚ
وَّاذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمَآ
اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنَ الْكِتٰبِ وَالْحِكْمَةِ
يَعِظُكُمْ بِهٖ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا
اَنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ﴿٢٣١﴾
وَاِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ فَبَلَغْنَ
اَجَلَهُنَّ فَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ اَنْ
يَّنْكِحْنَ اَزْوَاجَهُنَّ اِذَا تَرَاضَوْا
بَيْنَهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ ذٰلِكَ يُوْعَظُ
بِهٖ مَنْ كَانَ مِنْكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۗ ذٰلِكُمْ اَزْكٰى لَكُمْ وَاَطْهَرُ ۗ
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٣٢﴾
وَالْوَالِدٰتُ يُرْضِعْنَ اَوْلَادَهُنَّ
حَوْلَيْنِ كَامِلَيْنِ لِمَنْ اَرَادَ اَنْ
يُّتِمَّ الرَّضَاعَةَ ۗ وَعَلَى الْمَوْلُوْدِ لَهٗ
رِزْقُهُنَّ وَكِسْوَتُهُنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ
لَا تُكَلَّفُ نَفْسٌ اِلَّا وُسْعَهَا ۚ لَا تُضَآرَّ
وَالِدَةٌ ۢ بِوَلَدِهَا وَلَا مَوْلُوْدٌ لَّهٗ
بِوَلَدِهٖ ۚ وَعَلَى الْوَارِثِ مِثْلُ ذٰلِكَ ۚ
فَاِنْ اَرَادَا فِصَالًا عَنْ تَرَاضٍ مِّنْهُمَا
وَتَشَاوُرٍ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْهِمَا ۗ وَاِنْ
اَرَدْتُّمْ اَنْ تَسْتَرْضِعُوْٓا اَوْلَادَكُمْ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِذَا سَلَّمْتُمْ
مَّآ اٰتَيْتُمْ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ بِمَا

तुम्सिकूहुन्-न ज़िरारल् लितअ्-तदू-व मंय्यफ़्अल् ज़ालि-क फ़-क़द् ज़-ल-म नफ़्सहू, व ला तत्तख़िज़ू आयातिल्लाहि हुज़ुवंव्-वज़्कुरू निअ्- मतल्लाहि अ़लैकुम् व मा अन्ज़-ल अ़लैकुम् मिनल्- किताबि वल्हिक्मति यअिज़ुकुम् बिही, वत्तक़ुल्ला-ह वअ्लमू अन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम

● (231) ●

व इज़ा तल्लक़्तुमुन्निसा-अ फ़-बलग़्-न अ-ज लहुन्-न फ़ला तअ्ज़ुलूहुन्-न अंय्यन्किह्-न अज़्वाजहुन्-न इज़ा तराज़ौ बैनहुम् बिल्मअ्रूफ़ि, ज़ालि-क यू-अ़ज़ु बिही मन् का-न मिन्कुम् युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, ज़ालिकुम् अज़्का लकुम् व अत्हरू, वल्लाहु यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्लमून

(232)

वल्-वालिदातु युर्ज़िअ्-न औलादहुन्-न हौलैनि कामिलैनि लि-मन् अरा-द अंय्युतिम्मर्रज़ा-अ़-त, व अ़लल्-मौलूदि लहू रिज़्क़ुहुन्-न व किस्वतुहुन्-न बिल्मअ़रूफ़ि, ला तुकल्लफ़ु नफ़्सुन् इल्ला वुस्अ़हा ला तुज़ार्-र वालि-दतुम् बि-व-लदिहा व ला मौलूदुल्लहू बि-व-लदिही व अ़लल्- वारिसि मिस्लु ज़ालि-क फ़-इन् अरादा फ़िसालन् अ़न् तराज़िम् मिन्हुमा व तशावुरिन् फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा, व इन् अरत्तुम अन् तस्तर्ज़िअू औलादकुम् फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् इज़ा सल्लम्तुम् मा आतैतुम् बिल्मअ्रूफ़ि, वत्तक़ुल्ला-ह वअ्लमू अन्नल्ला-ह बिमा

तुम उन्हें नुक़सान पहुंचाने की ग़र्ज़ से न रोको कि हुदूद से तजावुज़ करो, और जो ऐसा करेगा उसने ख़ुद अपने ही ऊपर ज़ुल्म किया। और अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ न बनाओ और अल्लाह की नवाज़िश को जो तुमपर हुई है याद रखो, और उस किताब और हिक्मत को याद रखो जो उसने तुमपर उतारी है, जिसके ज़रिए से वह तुम्हें नसीहत करता है। और अल्लाह से डरते रहो, और ख़ूब जान लो कि अल्लाह को हर चीज़ का इल्म है।

232. और जब तुम औरतों को तलाक़ दे दो और वो अपनी इद्दत को पहुंच जाएं तो उन्हें अपने होने वाले दूसरे शौहरों से निकाह करने से न रोको, जबकि वो दस्तूर के मुताबिक़ आपसी रिज़ामन्दी से मुआमला तय करें। यह नसीहत तुममें से उसको की जा रही है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता है; यही तुम्हारे लिए ज़्यादा बरकत व क़ुव्वत और पाकीज़गी का ज़रिया है; और अल्लाह जानता है; तुम नहीं जानते।

233. और जो कोई पूरी मुद्दत तक दूध पिलवाना चाहे, तो माएं अपने बच्चों को पूरे दो साल तक दूध पिलाएं। और वह जिसका बच्चा है आम दस्तूर के मुताबिक़ उनके खाने और उनके कपड़े का ज़िम्मेदार है। किसी नफ़्स पर बस उसकी अपनी वुसअतभर ज़िम्मेदारी है; न तो किसी मां को उसके अपने बच्चे की वजह से नुक़सान पहुंचाया जाए और न बाप को उसके अपने बच्चे की वजह से (नुक़सान पहुंचाया जाए)। इसी तरह की ज़िम्मेदारी वारिस पर भी आइद होती है। फिर अगर दोनों आपसी रिज़ामन्दी और मशवरे से दूध छुड़ाना चाहें तो उनपर कोई गुनाह नहीं। और अगर तुम अपनी औलाद को किसी और औरत से दूध पिलवाते हो तो उसमें भी तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं, जबकि तुमने जो कुछ मुआवज़ा देने का वादा किया है दस्तूर के मुताबिक़ उसे अदा कर दो; और अल्लाह से डरते रहो और ख़ूब जान लो कि

जो कुछ तुम करते हो उसे अल्लाह देख रहा है।

234. और तुममें से जो लोग वफ़ात पा जाएं और अपने पीछे बीवियां छोड़ जाएं तो वो बीवियां अपने आपको चार महीने और दस दिन तक इंतिज़ार में रखें; फिर जब वो अपनी इद्दत को पहुंच जाएं तो जो कुछ वो दस्तूर के मुताबिक़ अपने लिए करें उसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं; जो कुछ तुम करते हो उससे ख़ुदा पूरी तरह बाख़बर है।

235. और इसमें भी तुमपर कोई गुनाह नहीं जो तुम उन औरतों पैग़ामे निकाह के मुतअल्लिक़ कोई बात इशारे में कहो या अपने जी में छुपाए रखो; अल्लाह को मालूम है कि तुम उन्हें याद करोगे; लेकिन छुपकर उनसे क़ौल व क़रार न करना सिवाय इसके कि दस्तूर के मुताबिक़ कोई बात कह दो। और जब तक इद्दत पूरी न हो जाए अक़्दे निकाह पुख़्ता न करना; जान रखो कि ख़ुदा तुम्हारे दिलों की बात भी जानता है, पस उससे होशियार रहो; और यह जान लो कि अल्लाह बख़्शने वाला, बहुत बुर्दबार है।

236. अगर तुम औरतों को इस सूरत में तलाक़ दे दो कि यह नौबत पेश न आई हो कि तुमने उन्हें हाथ लगाया हो और उनका कुछ हक़ मुक़र्रर किया हो तो तुमपर कोई बार (गुनाह) नहीं; अलबत्ता दस्तूर के मुताबिक़ उन्हें कुछ ख़र्च दो — वुसअत वाले पर उसकी अपनी हैसियत के मुताबिक़ और तंगदस्त पर उसकी अपनी हैसियत के मुताबिक़ लाज़िम है — यह अच्छे लोगों पर एक हक़ है।

237. और अगर तुम उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो, लेकिन उनका महर मुक़र्रर कर चुके हो तो जो महर मुक़र्रर किया है उसका आधा अदा करना होगा, यह और बात है कि वो ख़ुद छोड़ दें या मर्द जिसके हाथ में रिश्ता-ए-निकाह है वह नर्मी से काम ले; और यह कि तुम नर्मी से

तअ्मलू-न बसीर (233)

वल्लज़ी-न यु-तवफ़्फ़ौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज़्वाजंय्य-तरब्बस्-न बिअन्फ़ुसिहिन्-न अर्ब-अ-त अश्हुरिंव्-व अ़श्रन् फ़-इज़ा बलग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ीमा फ़-अ़ल्-न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्-न बिल्मअ्रूफ़ि, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर (234)

व ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ीमा अ़र्रज़्तुम् बिही मिन् ख़ित्बतिन्निसा-इ औ अक्नन्तुम् फ़ी अन्फ़ुसिकुम, अ़लिमल्लाहु अन्नकुम् स-तज़्कुरूनहुन्-न व लाकिल्ला तुवाअ़िदूहुन्-न सिर्रन् इल्ला अन् तक़ूलू क़ौलम्-मअ्रूफ़न्, व ला तअ्ज़िमू अुक़्दतन्निकाहि हत्ता यब्लुग़ल्-किताबु अ-ज लहू, वअ़लमू अन्नल्ला-ह यअ्लमु मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् फ़ह्-ज़रूहु वअ्लमू अन्नल्ला- ग़फ़ूरुन् हलीम (235)●

ला जुना-ह अ़लैकुम् इन् तल्लक़्तुमुन्निसा-अ मा लम् तमस्सूहुन्-न औ तफ़्रिज़ू लहुन्-न फ़री-ज़तंव्-व मत्तिअ़ूहुन्-न अ़लल्-मूसिअ़ि क़-दरूहू व अ़लल्-मुक़्तिरि क़-दरूहू मताअ़म्-बिल्मअ्रूफ़ि हक़्क़न् अ़लल्-मुह्सिनीन (236)

व इन् तल्लक़्तुमूहुन्-न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन्-न व क़द् फ़रज़्तुम् लहुन्-न फ़री-ज़तन् फ़-निस्फ़ु मा फ़रज़्तुम् इल्ला अंय्यअ्फ़ू-न औ यअ्फ़ुवल्लज़ी

تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿٢٣٣﴾

وَالَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ وَيَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا يَّتَرَبَّصْنَ بِاَنْفُسِهِنَّ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ وَّعَشْرًا ۚ فَاِذَا بَلَغْنَ اَجَلَهُنَّ فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا فَعَلْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِنَّ بِالْمَعْرُوْفِ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٢٣٤﴾

وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا عَرَّضْتُمْ بِهٖ مِنْ خِطْبَةِ النِّسَآءِ اَوْ اَكْنَنْتُمْ فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ ۚ عَلِمَ اللّٰهُ اَنَّكُمْ سَتَذْكُرُوْنَهُنَّ وَلٰكِنْ لَّا تُوَاعِدُوْهُنَّ سِرًّا اِلَّآ اَنْ تَقُوْلُوْا قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۚ وَلَا تَعْزِمُوْا عُقْدَةَ النِّكَاحِ حَتّٰى يَبْلُغَ الْكِتٰبُ اَجَلَهٗ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ فَاحْذَرُوْهُ ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿٢٣٥﴾ ع

لَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ اِنْ طَلَّقْتُمُ النِّسَآءَ مَا لَمْ تَمَسُّوْهُنَّ اَوْ تَفْرِضُوْا لَهُنَّ فَرِيْضَةً ۚ وَّمَتِّعُوْهُنَّ ۚ عَلَى الْمُوْسِعِ قَدَرُهٗ وَعَلَى الْمُقْتِرِ قَدَرُهٗ ۚ مَتَاعًا ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ حَقًّا عَلَى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿٢٣٦﴾

وَاِنْ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ وَقَدْ فَرَضْتُمْ لَهُنَّ فَرِيْضَةً فَنِصْفُ مَا فَرَضْتُمْ اِلَّآ اَنْ يَّعْفُوْنَ اَوْ يَعْفُوَا الَّذِيْ

काम लो तो यह तक़्वा से ज़्यादा क़रीब है; और तुम आपस में हक़ से बढ़ कर देना न भूलो। यक़ीनन अल्लाह उसे देख रहा है जो कुछ तुम करते हो।

238. हमेशा नमाज़ों की और बेहतरीन नमाज़ की पाबन्दी करो; और ख़ुदा के आगे नियाज़मन्दाना ख़ामोशी इख़्तियार किए हुए खड़े हुआ करो।

239. फिर अगर तुम्हें डर हो, तो पैदल या सवार जिस तरह मुमकिन हो नमाज़ अदा करो, फिर जब ख़तरा तुमसे टल जाए तो अल्लाह को उस तरह याद करो जैसा कि उसने तुम्हें सिखाया है जिसे तुम जानते न थे।

240. और तुममें से जो लोग मर जाएं और अपने पीछे बीवियां छोड़ जाएं, यानी अपनी बीवियों के हक़ में यह वसीयत छोड़ जाएं कि घर से निकाले बग़ैर एक साल तक उन्हें ख़र्च दिया जाए; तो अगर वो निकल जाएं तो अपने लिए दस्तूर के मुताबिक़ वो जो कुछ भी करें उसका तुम पर गुनाह नहीं; अल्लाह ग़ालिब, निहायत हिकमतवाला है।

241. और तलाक़ पाई हुई औरतों को दस्तूर के मुताबिक़ कुछ ख़र्च देकर रुख़सत करना चाहिए। यह अहले तक़्वा पर एक हक़ है।

242. इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोलकर बयान करता है ताकि तुम समझ से काम लो।

243. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो हज़ारों की तादाद में होने के बावजूद मौत के डर से घरबार छोड़कर निकले थे? तो अल्लाह ने उनसे कहा, "मौत से हमकिनार हो"। फिर उसने उन्हें ज़िन्दगी अता की। अल्लाह तो इंसानों के लिए साहिबे फ़ज़्ल है, मगर अक्सर लोग शुक्र अदा नहीं करते।

244. और अल्लाह की राह में जंग करो, और जान रखो कि अल्लाह सब

बि-यदिही उ़क़्दतुन्निकाहि, व अन् तअ़्फ़ू अक़्रबु लित्तक़्वा, व ला तन्सवुल्- फ़ज़्-ल बैनकुम, इन्नल्ला-ह बिमा तअ़्मलू-न बसीर (237)

हाफ़िज़ू अ़लस्स-लवाति वस्सलातिल्-वुस्ता व क़ूमू लिल्लाहि क़ानितीन (238)

फ़-इन् ख़िफ़्तुम् फ़-रिजालन् औ रुक्बानन् फ़-इज़ा अमिन्तुम् फ़ज़्कुरुल्ला-ह कमा अ़ल्ल-मकुम् मा लम् तकूनू तअ़्लमून (239)

वल्लज़ी-न यु-तवफ़्फ़ौ-न मिन्कुम् व य-ज़रू-न अज़्वाजंव्- वसिय्यतल् लि-अज़्वाजिहिम् मताअ़न् इलल्-हौलि ग़ै-र इख़्राजिन् फ़-इन् ख़रज्-न फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ी मा फ़-अ़ल्-न फ़ी अन्फ़ुसिहिन्-न मिम्-मअ़्रूफ़िन्, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (240)

व लिल्मुतल्लक़ाति मताअ़ुम्-बिल्मअ़्रूफ़ि, हक़्क़न् अ़लल् मुत्तक़ीन (241)

कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून (242) ●

अलम् त-र इलल्लज़ी-न ख़-रजू मिन् दियारिहिम् व हुम् उलूफ़ुन् ह-ज़रल्मौति फ़क़ा-ल लहुमुल्लाहु मूतू सुम्-म अह्याहुम, इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (243)

व क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि वअ़्लमू

بِيَدِهٖ عُقْدَةُ النِّكَاحِ ۚ وَ اَنْ
تَعْفُوْٓا اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۚ وَلَا تَنْسَوُا
الْفَضْلَ بَيْنَكُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٢٣٧

حٰفِظُوْا عَلَى الصَّلَوٰتِ وَالصَّلٰوةِ
الْوُسْطٰى ۚ وَقُوْمُوْا لِلّٰهِ قٰنِتِيْنَ ۝٢٣٨
فَاِنْ خِفْتُمْ فَرِجَالًا اَوْ رُكْبَانًا ۚ
فَاِذَآ اَمِنْتُمْ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَمَا عَلَّمَكُمْ
مَّا لَمْ تَكُوْنُوْا تَعْلَمُوْنَ ۝٢٣٩

وَ الَّذِيْنَ يُتَوَفَّوْنَ مِنْكُمْ
وَ يَذَرُوْنَ اَزْوَاجًا ۚ وَّصِيَّةً
لِّاَزْوَاجِهِمْ مَّتَاعًا اِلَى الْحَوْلِ
غَيْرَ اِخْرَاجٍ ۚ فَاِنْ خَرَجْنَ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْ مَا فَعَلْنَ فِيْٓ
اَنْفُسِهِنَّ مِنْ مَّعْرُوْفٍ ۚ وَاللّٰهُ
عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٢٤٠

وَلِلْمُطَلَّقٰتِ مَتَاعٌ ۢ بِالْمَعْرُوْفِ ۚ
حَقًّا عَلَى الْمُتَّقِيْنَ ۝٢٤١
كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ
ع لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٢٤٢

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ
دِيَارِهِمْ وَهُمْ اُلُوْفٌ حَذَرَ
الْمَوْتِ ۠ فَقَالَ لَهُمُ اللّٰهُ مُوْتُوْا ۣ
ثُمَّ اَحْيَاهُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ
عَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَشْكُرُوْنَ ۝٢٤٣

وَ قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَاعْلَمُوْٓا

कुछ सुनता, जानता है।

245. कौन है जो अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दे कि वह उसे उसके लिए कई गुना बढ़ा दे? और अल्लाह ही तंगदस्ती में भी मुबतला करता है, और कुशादगी भी वही अता करता है; और उसी की तरफ़ तुम्हें लौटना है।

246. क्या तुमने मूसा के बाद बनी इसराईल के सरदारों को नहीं देखा, जब उन्होंने अपने एक नबी से कहा, "हमारे लिए एक बादशाह मुक़र्रर कर दो कि हम अल्लाह के रास्ते में लड़ें।' उसने कहा, "अगर तुम्हें लड़ाई का हुक्म दिया जाए तो क्या तुम्हारे बारे में इसी का एहतिमाल (संभावना) नहीं है कि तुम न लड़ो;" बोले, "हम अल्लाह के रास्ते में क्यों न लड़ें जबकि हम अपने घरों और बाल-बच्चों से निकाले गए हैं?" — फिर जब उनपर जंग फ़र्ज़ हुई तो उनके कुछ थोड़े लोगों के सिवा सब फिर गए और अल्लाह ज़ालिमों से ख़ूब वाक़िफ़ है।

247. उनसे उनके नबी ने कहा, "अल्लाह ने तालूत को तुम्हारे लिए बादशाह मुक़र्रर किया है।" बोले, "उसकी बादशाही हमपर कैसे हो सकती है, जबकि हम उसके मुक़ाबले में बादशाही के ज़्यादा हक़दार हैं, और जबकि उसे माल की वुसअत भी हासिल नहीं?" उसने कहा, "ख़ुदा ने तुम्हारे मुक़ाबले में उसे ही मुंतख़ब किया है, और उसे इल्मी व जिसमानी सलाहियतों के एतिबार से ज़्यादा कुशादगी अता की है। अल्लाह जिसको चाहे अपनी सलतनत अता फ़रमाए; अल्लाह तो बड़ी वुसअत वाला; सब कुछ जानने वाला है।"

248. उनके नबी ने उनसे कहा कि "उस की बादशाही की निशानी यह है कि वह सन्दूक़ तुम्हारे पास आ जाएगा जिसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से सकीनत, और आले मूसा और आले हारून की छोड़ी हुई यादगारें हैं,

अन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम (244)

मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन् फ़-युज़ाअि-फ़हू लहू अज़्आफ़न् कसीर-तन्, वल्लाहु यक़्बिज़ु व यब्सुतु व इलैहि तुर्जअून (245)

अलम् त-र इलल्-म-लइ मिम्-बनी इस्राई-ल मिम्-बअ्दि मूसा ● इज़् क़ालू लि-नबिय्यिल्-लहुमुब्अ़स् लना मलिकन्नुक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि, क़ा-ल हल् अ़सैतुम् इन् कुति-ब अ़लैकुमुल्-क़ितालु अल्ला तुक़ातिलू, क़ालू व मा लना अल्ला नुक़ाति-ल फ़ी सबीलिल्लाहि व क़द् उख़्रिज्ना मिन् दियारिना व अब्ना-इना, फ़-लम्मा कुति-ब अ़लैहिमुल्-क़ितालु तवल्लौ इल्ला क़लीलम् मिन्हुम, वल्लाहु अ़लीमुम्- बिज़्ज़ालिमीन (246)

व क़ा-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्नल्ला-ह क़द् ब-अ़-स लकुम् तालू-त मलिकन्, क़ालू अन्ना यकूनु लहुल्मुल्कु अ़लैना व नह्नु अहक़्क़ु बिल्मुल्कि मिन्हु व लम् युअ्-त स- अ़तम् मिनल्-मालि, क़ा-ल इन्नल्लाहस्तफ़ाहु अ़लैकुम् व ज़ा-दहू बस्त-तन् फ़िल्-इ़ल्मि वल्-जिस्मि, वल्लाहु युअ्ती मुल्कहू मंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (247)

व क़ा-ल लहुम् नबिय्युहुम् इन्-न आय-त मुल्किही अंय्यअ्ति-यकुमुत्ताबूतु फ़ीहि सकीनतुम् मिर्रब्बिकुम् व बक़िय्यतुम् मिम्मा त-र-क आलु

اَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٢٤٤

مَنْ ذَا الَّذِىْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِيْرَةً ؕ وَاللّٰهُ يَقْبِضُ وَيَبْصُۜطُ ۪ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٢٤٥

اَلَمْ تَرَ اِلَى الْمَلَاِ مِنْۢ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ مِنْۢ بَعْدِ مُوْسٰى ۘ اِذْ قَالُوْا لِنَبِىٍّ لَّهُمُ ابْعَثْ لَنَا مَلِكًا نُّقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ قَالَ هَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ كُتِبَ عَلَيْكُمُ الْقِتَالُ اَلَّا تُقَاتِلُوْا ؕ قَالُوْا وَمَا لَنَاۤ اَلَّا نُقَاتِلَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَقَدْ اُخْرِجْنَا مِنْ دِيَارِنَا وَاَبْنَآئِنَا ؕ فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ تَوَلَّوْا اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٢٤٦

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اللّٰهَ قَدْ بَعَثَ لَكُمْ طَالُوْتَ مَلِكًا ؕ قَالُوْۤا اَنّٰى يَكُوْنُ لَهُ الْمُلْكُ عَلَيْنَا وَنَحْنُ اَحَقُّ بِالْمُلْكِ مِنْهُ وَلَمْ يُؤْتَ سَعَةً مِّنَ الْمَالِ ؕ قَالَ اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىهُ عَلَيْكُمْ وَزَادَهٗ بَسْطَةً فِى الْعِلْمِ وَالْجِسْمِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤْتِىْ مُلْكَهٗ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝٢٤٧

وَقَالَ لَهُمْ نَبِيُّهُمْ اِنَّ اٰيَةَ مُلْكِهٖۤ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ التَّابُوْتُ فِيْهِ سَكِيْنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ وَبَقِيَّةٌ مِّمَّا تَرَكَ اٰلُ

जिसको फ़रिश्ते उठाए हुए होंगे। बेशक इसमें तुम्हारे लिए एक बड़ी निशानी है, अगर तुम माननेवाले हो।"

249. फिर जब तालूत फ़ौजें लेकर चला, तो कहा, "अल्लाह लाज़िमन एक दरिया के ज़रिए से तुम्हारी आज़माइश करेगा, तो जिसने उसका पानी पी लिया वह मुझ में से नहीं है और जिसने उसको नहीं चखा वही मुझ में से है, यह और बात है कि कोई अपने हाथ से एक चुल्लू भर ले ले।" फिर उनके थोड़े लोगों के सिवा सब ही ने उसका पानी पी लिया; फिर जब तालूत और अहले ईमान जो उसके साथ थे दरिया पार कर गए, तो कहने लगे कि "आज हम में जालूत और उसकी फ़ौजों का मुक़ाबला करने की ताक़त नहीं है।" इसपर उन लोगों ने जो समझते थे कि उन्हें खुदा से मिलना है, कहा, "कितनी ही बार एक छोटी सी टुकड़ी अल्लाह की तौफ़ीक़ से बड़े गिरोह पर ग़ालिब आ गई है, खुदा तो साबित क़दम रहने वालों के साथ है।"

250. और जब वह जालूत और उसके लश्करों के मुक़ाबले पर आए तो कहा, "हमारे रब! हमपर सब्र उंडेल दे, और हमारे क़दम जमा दे, और काफ़िर क़ौम पर हमें ग़लबा अता कर।"

251. आख़िरकार खुदा के हुक्म और तौफ़ीक़ से उन्होंने उनको शिकस्त दे दी, और दाऊद ने जालूत को क़त्ल कर दिया; और अल्लाह ने उसे सलतनत और हिकमत दी, और जो कुछ वह (दाऊद) चाहे उससे उस को आगाही बख़्शी। और अगर अल्लाह इंसानों के एक गिरोह को दूसरे गिरोह के ज़रिए से दफ़ा न करता रहता तो ज़मीन तबाह व ख़राब हो जाती; लेकिन अल्लाह अहले आलम के हक़ मे साहिबे फ़ज़्ल व करम है।

252. ये अल्लाह की बरहक़ आयतें हैं जो हम बामक़सद तुम्हें सुना रहे हैं, और यक़ीनन तुम उन लोगों में से हो जो रसूल बनाकर भेजे गए।

मूसा व आलु हारू-न तह्मिलुहुल्-मलाइ-कतु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ- यतल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (248) ●

फ़-लम्मा फ़-स-ल- तालूतु बिल्जुनूदि क़ा-ल इन्नल्ला-ह मुब्तलीकुम बि-न हरिन् फ़-मन् शरि-ब मिन्हु फ़लै-स मिन्नी व मल्लम् यत्अमहु फ़-इन्नहू मिन्नी इल्ला मनिग्त-र-फ़ ग़ुर्-फ़तम् बि-यदिही फ़-शरिबू मिन्हु इल्ला क़लीलम् मिन्हुम, फ़-लम्मा जा-व-ज़हू हु-व वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू क़ालू ला ता-क़-त लनल्-यौ-म बिजालू-त व जुनूदिही, क़ालल्लज़ी-न यज़ुन्नू-न अन्नहुम् मुलाक़ुल्लाहि कम् मिन् फ़ि-अतिन् क़लीलतिन् ग़-लबत् फ़ि-अतन् कसी-रतम् बि-इज़्निल्लाहि, वल्लाहु म-अ़स्साबिरीन (249)

व लम्मा ब-रज़ू लिजालू-त व जुनूदिही क़ालू रब्बना अफ़्रिग़् अ़लैना सबरंव्-व सब्बित् अक़्दामना वन्सुरना अ़लल्-क़ौमिल् काफ़िरीन (250)

फ़-ह-ज़मूहुम् बि-इज़्निल्लाहि व क़-त-ल दावूदु जालू-त व आताहुल्लाहुल्-मुल्-क वल्-हिक्म-त व अ़ल्ल-महू मिम्मा यशा-उ, व लौ ला दफ़्अुल्लाहिन्ना-स बअ्-ज़हुम् बिबअ्ज़िल् ल-फ़-स-दतिल्-अर्ज़ु व लाकिन्नल्ला-ह ज़ू फ़ज़्लिन् अ़लल्-आ़लमीन (251)

तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्हक़्क़ि, व इन्न-क ल-मिनल्-मुर्सलीन (252)

مُوْسٰى وَاٰلُ هٰرُوْنَ تَحْمِلُهُ الْمَلٰٓئِكَةُ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝٢٤٨

فَلَمَّا فَصَلَ طَالُوْتُ بِالْجُنُوْدِ ۙ قَالَ
اِنَّ اللّٰهَ مُبْتَلِيْكُمْ بِنَهَرٍ ۚ فَمَنْ
شَرِبَ مِنْهُ فَلَيْسَ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ
لَّمْ يَطْعَمْهُ فَاِنَّهٗ مِنِّيْٓ اِلَّا مَنِ
اغْتَرَفَ غُرْفَةًۢ بِيَدِهٖ ۚ فَشَرِبُوْا
مِنْهُ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ ؕ فَلَمَّا
جَاوَزَهٗ هُوَ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۙ
قَالُوْا لَا طَاقَةَ لَنَا الْيَوْمَ بِجَالُوْتَ
وَجُنُوْدِهٖ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ يَظُنُّوْنَ
اَنَّهُمْ مُّلٰقُوا اللّٰهِ ۙ كَمْ مِّنْ
فِئَةٍ قَلِيْلَةٍ غَلَبَتْ فِئَةً كَثِيْرَةًۢ
بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝٢٤٩

وَلَمَّا بَرَزُوْا لِجَالُوْتَ وَجُنُوْدِهٖ قَالُوْا
رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا صَبْرًا وَّثَبِّتْ
اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
الْكٰفِرِيْنَ ۝٢٥٠

فَهَزَمُوْهُمْ بِاِذْنِ اللّٰهِ ۙ وَقَتَلَ
دَاوٗدُ جَالُوْتَ وَاٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ
وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَهٗ مِمَّا يَشَآءُ ؕ
وَلَوْلَا دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ
بِبَعْضٍ ۙ لَّفَسَدَتِ الْاَرْضُ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ ذُوْ فَضْلٍ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٥١

تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ
بِالْحَقِّ ؕ وَاِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٢٥٢

253. ये रसूल ऐसे हुए हैं कि उनमें हमने बाज़ को बाज़ पर फज़ीलत अता की; उनमें बाज़ से तो खुदा ने कलाम फ़रमाया और उनमें से बाज़ को बदरजहा बुलन्दी अता की और हमने ईसा इब्ने मरयम को खुली निशानियां दीं और रूहुलकुदुस से उसकी मदद की। और अगर अल्लाह चाहता तो वो लोग जो उनके बाद हुए खुली निशानियां आने के बाद आपस में न लड़ते; मगर वो तो तफ़रिक़ा में पड़ गए; पस उनमें से कोई तो ईमान ले आया और उनमें से किसी ने इनकार की रविश इख़्तियार की; और अगर अल्लाह चाहता तो वो आपस में न लड़ते मगर अल्लाह जो चाहता है करता है।

254. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो, इससे पहले कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई ख़रीद व फ़रोख़्त होगी और न कोई दोस्ती होगी और न सिफ़ारिश; ज़ालिम वही हैं जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया है।

255. अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा हस्ती है, सब कुछ संभालने और क़ायम रखने वाली है, न उसे ऊंघ पकड़ती है और न नींद; उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। कौन है जो उसके यहां उसकी इजाज़त के बग़ैर सिफ़ारिश कर सके? वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, वो उसके इल्म में से किसी चीज़ पर भी हावी नहीं हो सकते बजुज़ उसके जो उसने चाहा। उसकी कुर्सी (इक्तिदार) आसमानों और ज़मीन सब पर हावी है, और उनकी निगरानी और हिफ़ाज़त उसपर कुछ भी गिरां नहीं; और वह बुलन्द, साहिबे अज़मत है।

256. दीन के मुआमले में कोई ज़बरदस्ती नहीं। हिदायत गुमराही से

तिल्करुसुलु फ़ज़्ज़ल्ना बअ्-ज़हुम अ़ला बअ्ज़िन् ● मिन्हुम् मन् कल्लमल्लाहु व र-फ़-अ़ बअ्-ज़हुम द रजातिन्, व आतैना ईसब्-न मर्यमल्-बय्यिनाति व अय्यद्नाहु बिरूहिल्क़ुदुसि, व लौ शाअल्लाहु मक़्त-तलल्लज़ी-न मिम्-बअ्दिहिम् मिम्-बअ़दि मा जाअत्हुमुल-बय्यिनातु व लाकिनिख़्त-लफ़ू फ़-मिन्हुम् मन् आम-न व मिन्हुम् मन् क-फ़-र, व लौ शाअल्लाहु मक़्त-तलू, व लाकिन्नल्ला-ह यफ़अ़लु मा युरीद (253)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्ला बैअुन् फ़ीहि व ला ख़ुल्लतुंव्- व ला शफ़ाअ़तुन्, वल्-काफ़िरू-न हुमुज़्ज़ालिमून (254)

अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व अल्-हय्युल-क़य्यूमु ला तअ्ख़ुज़ुहू सि-नतुंव्-व ला नौमुन्, लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, मन् ज़ल्लज़ी यश्फ़अु अ़िन्दहू इल्ला बि-इज़्निही, यअ्लमु मा बै-न ऐदीहिम व मा ख़ल्फ़हुम व ला युहीतू-न बिशैइम् मिन् अ़िल्मिही इल्ला बिमा शा-अ वसि-अ़ कुर्सिय्युहुस्समावाति वल्अर्-ज़ व ला यऊदुहू हिफ़्ज़ुहुमा व हुवल् अ़लिय्युल अ़ज़ीम (255)

ला इक्रा-ह फ़िद्दीनि क़त्तबय्यन-

تِلْكَ الرُّسُلُ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ
عَلٰى بَعْضٍ ۘ مِنْهُمْ مَّنْ كَلَّمَ اللّٰهُ
وَرَفَعَ بَعْضَهُمْ دَرَجٰتٍ ؕ وَاٰتَيْنَا
عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ الْبَيِّنٰتِ
وَ اَيَّدْنٰهُ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ؕ وَلَوْ
شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلَ الَّذِيْنَ مِنْ
بَعْدِهِمْ مِّنْ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ
الْبَيِّنٰتُ وَلٰكِنِ اخْتَلَفُوْا فَمِنْهُمْ
مَّنْ اٰمَنَ وَ مِنْهُمْ مَّنْ كَفَرَ ؕ
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا اقْتَتَلُوْا ۟ وَلٰكِنَّ
ع اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْفِقُوْا
مِمَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ
يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خُلَّةٌ
وَّلَا شَفَاعَةٌ ؕ وَالْكٰفِرُوْنَ
هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْحَيُّ الْقَيُّوْمُ ۚ
لَا تَاْخُذُهٗ سِنَةٌ وَّلَا نَوْمٌ ؕ
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
مَنْ ذَا الَّذِيْ يَشْفَعُ عِنْدَهٗٓ اِلَّا
بِاِذْنِهٖ ؕ يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ
وَمَا خَلْفَهُمْ ۚ وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِشَيْءٍ
مِّنْ عِلْمِهٖٓ اِلَّا بِمَا شَآءَ ۚ وَسِعَ
كُرْسِيُّهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ ۚ
وَلَا يَئُوْدُهٗ حِفْظُهُمَا ۚ وَهُوَ الْعَلِيُّ
الْعَظِيْمُ ۝
لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۟ قَدْ تَّبَيَّنَ

अलग होकर वाज़ेह हो चुकी है। तो अब जो कोई बढ़े हुए सरकश को ठुकरा दे और अल्लाह पर ईमान लाए, उसने ऐसा मज़बूत सहारा थाम लिया जो टूटने का नहीं; अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

257. अल्लाह अहले ईमान का हिमायती दोस्त है। वह उन्हें तारीकियों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ ले जाता है। रहे अहले कुफ़्र तो उनके हिमायती बढ़े हुए सरकश है, वो उन्हें रोशनी से निकालकर तारीकियों की तरफ़ ले जाते हैं; वही आग में पड़नेवाले हैं, वो उसी में हमेशा रहेंगे।

258. क्या तुमने उसको नहीं देखा जो इब्राहीम से उसके रब के सिलसिले में झगड़ गया, इसलिए कि अल्लाह ने उसको हुकूमत दे रखी थी? जब इब्राहीम ने कहा कि "मेरा रब वह है जो जिलाता और मारता है।" बोला, "मैं भी जिलाता और मारता हूं", इब्राहीम ने कहा, "अच्छा तो अल्लाह सूरज को पूरब से लाता है; तू उसे पश्चिम से ले आ।" इसपर वह मुनकिर शशदर रह गया। अल्लाह उनको हिदायत नहीं देता जो ज़ालिम होते हैं।

259. या उस जैसे को नहीं देखा जिसका एक ऐसी बस्ती पर से गुज़र हुआ जो अपनी छतों के बल गिरी हुई थी; बोला, "अल्लाह इसे इसके मर जाने के बाद कैसे ज़िन्दा करेगा?" तो अल्लाह ने उसको सौ बरस की मौत दे दी, फिर उसे उठा खड़ा किया। कहा, "तू कितनी देर इस तरह रहा"। बोला, "मैं रहा एक दिन या दिन का कुछ हिस्सा"। कहा, "नहीं, बल्कि सौ बरस रहा है। अब अपने खाने और पीने की चीज़ों को देख ले, उनपर वक़्त का कोई असर नहीं; और अपने गधे पर भी नज़र डाल। और (यह इसलिए कह रहे हैं) ताकि तुझे हम लोगों के लिए एक निशानी बना दें। और हड्डियों को देख कि किस तरह हम उन्हें उभारते

रूश्दु मिनल्-ग़य्यि फ़-मंय्यक्फ़ुर् बित्तागूति व युअ्मिम्-बिल्लाहि फ़-क़दिस्तम्स-क बिल्-उ़र्वतिल्-वुस्क़ा लन्फ़िसा-म लहा, वल्लाहु समीअुन्, अ़लीम (256) *अल्लाहु वलिय्युल्लज़ी-न आमनू युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, वल्लज़ी-न क-फ़रू औलिया-उहुमुत्तागूतु युख़्रिजू-नहुम् मिनन्नूरि इलज़्ज़ुलुमाति, उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून* (257) ●

अलम् त-र इलल्लज़ी हाज्-ज इब्राही-म फ़ी रब्बिही अन् आताहुल्लाहुल्- मुल्क ● *इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बियल्लज़ी युह्यी व युमीतु क़ा-ल अ-न उह्यी व उमीतु, क़ा-ल इब्राहीमु फ़-इन्नल्ला-ह यअ्ती बिश्शम्सि मिनल्मश्रिक़ि फ़अ्ति बिहा मिनल्-मग़्रिबि फ़-बुहितल्लज़ी क-फ़-र, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन* (258)

औ कल्लज़ी मर्-र अ़ला क़र्यतिंव्-व हि-य ख़ावि-यतुन् अ़ला अ़ुरूशिहा क़ा-ल अन्ना युह्यी हाज़िहिल्लाहु बअ्-द मौतिहा फ़-अमातहुल्लाहु मि-अ-त आ़मिन् सुम्-म ब-अ़-सहू, क़ा-ल कम् लबिस्-त, क़ा-ल लबिस्तु यौमन् औ बअ्-ज़ यौमिन्, क़ा-ल बल्लबिस्-त मि-अ-त आ़मिन् फ़न्ज़ुर् इला तआ़मि-क व शराबि-क लम् य-तसन्नह् वन्ज़ुर् इला हिमारि-क व लि-नज्अ़-ल-क आयतल् लिन्नासि वन्ज़ुर् इलल्- अ़िज़ामि

الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ۚ فَمَنْ يَّكْفُرْ
بِالطَّاغُوْتِ وَيُؤْمِنْ ۢ بِاللّٰهِ فَقَدِ
اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ الْوُثْقٰى ۗ لَا انْفِصَامَ
لَهَا ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٥٦﴾
اَللّٰهُ وَلِيُّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۙ يُخْرِجُهُمْ
مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ڛ وَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَوْلِيٰۗـــُٔهُمُ الطَّاغُوْتُ ۙ
يُخْرِجُوْنَهُمْ مِّنَ النُّوْرِ اِلَى الظُّلُمٰتِ ۭ
اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٥٧﴾
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْ حَاۗجَّ اِبْرٰهٖمَ
فِيْ رَبِّهٖٓ اَنْ اٰتٰىهُ اللّٰهُ الْمُلْكَ ۘ اِذْ
قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّيَ الَّذِيْ يُحْيٖ
وَيُمِيْتُ ۙ قَالَ اَنَا اُحْيٖ وَاُمِيْتُ ۭ
قَالَ اِبْرٰهٖمُ فَاِنَّ اللّٰهَ يَاْتِيْ
بِالشَّمْسِ مِنَ الْمَشْرِقِ فَاْتِ بِهَا
مِنَ الْمَغْرِبِ فَبُهِتَ الَّذِيْ كَفَرَ ۭ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٢٥٨﴾
اَوْ كَالَّذِيْ مَرَّ عَلٰي قَرْيَةٍ وَّهِيَ
خَاوِيَةٌ عَلٰي عُرُوْشِهَا ۚ قَالَ
اَنّٰى يُحْيٖ هٰذِهِ اللّٰهُ بَعْدَ مَوْتِهَا ۚ
فَاَمَاتَهُ اللّٰهُ مِائَةَ عَامٍ ثُمَّ
بَعَثَهٗ ۭ قَالَ كَمْ لَبِثْتَ ۭ قَالَ
لَبِثْتُ يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ۭ
قَالَ بَلْ لَّبِثْتَ مِائَةَ عَامٍ فَانْظُرْ
اِلٰى طَعَامِكَ وَشَرَابِكَ لَمْ يَتَسَنَّهْ ۚ
وَانْظُرْ اِلٰى حِمَارِكَ وَلِنَجْعَلَكَ
اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَانْظُرْ اِلَى الْعِظَامِ

हैं, फिर उनपर गोश्त चढ़ाते हैं।" फिर जब हक़ीक़त उसपर ज़ाहिर हो गई तो वह पुकार उठा, "मैं जानता हूं कि अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत है।"

260. और याद करो कि जब इब्राहीम ने कहा कि "मेरे रब! मुझे दिखा तू मुर्दों को कैसे जिलाएगा।" कहा, "क्या तुझे यक़ीन नहीं?", कहा, "क्यों नहीं, लेकिन इसलिए यह दरख़्वास्त है ताकि मेरे दिल को इतमीनान हासिल हो"; कहा, "तो फिर चार परिन्दे ले ले, फिर उन्हें अपने से खूब हिला-मिला ले फिर उनमें से हर एक को एक-एक पहाड़ पर कर दे, फिर उन्हें बुला, वो तेरे पास लपककर आएंगे और जान ले कि अल्लाह ग़ालिब, निहायत हिकमत वाला है।"

261. जो लोग अपने माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं। उनकी हालत व मिसाल ऐसी है जैसे एक दाना हो जिसने सात ख़ोशे निकाले हों, हर ख़ोशे में सौ दाने हों। अल्लाह जिसे चाहे अफ़ज़ूनी अता फ़रमाए; अल्लाह बड़ी वुसअत वाला, जानने वाला है।

262. जो लोग अपने माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च करते हैं, फिर ख़र्च करके उसका न एहसान जताते हैं और न दिलआज़ारी करते हैं, उनका अज्र उनके अपने रब के पास है, और न तो उनके लिए कोई डर है और न वो कोई आज़ुरदा ख़ातिर (ग़मगीन) होंगे।

263. एक भली बात और मग़फ़िरत उस सदक़े से बेहतर है जिसके पीछे दिल आज़ारी हो; और अल्लाह बेनियाज़, निहायत बुर्दबार है।

264. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने सदक़ात एहसान जताकर और दिल आज़ारी करके उस शख़्स की तरह

कै-फ़ नुन्शिज़ुहा सुम्-म नक्सूहा लह्मन्, फ़-लम्मा तबय्य-न लहू क़ा-ल अअ्लमु अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (259)

व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बि अरिनी कै-फ़ तुह्यिल्मौता, क़ा-ल अ-व लम् तुअ्मिन्, क़ा-ल बला व लाकिल्लियत्-मइन्-न क़ल्बी, क़ा-ल फ़-ख़ुज़् अर्ब-अ़तम् मिनत्तैरि फ़सुर्हुन्-न इलै-क सुम्मज्अ़ल् अ़ला कुल्लि ज-बलिम् मिन्हुन्-न जुज़्अन् सुम्मद्अुहुन्-न यअ्ती-न-क सअ्यन्, वअ्लम् अन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम (260) ●

म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम फ़ी सबीलिल्लाहि क-म सलि हब्बतिन् अम्ब-तत् सब्-अ़ सनाबि-ल फ़ी कुल्लि सुम्बुलतिम् मि-अतु हब्बतिन्, वल्लाहु युज़ाअ़िफ़ु लिमंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअ़ुन् अ़लीम (261)

अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म ला युत्बिअ़ू-न मा अन्फ़क़ू मन्नंव्-व ला अ-ज़ल् लहुम् अज्रुहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (262)

क़ौलुम मअ्रूफ़ुंव्- व मग़्फ़ि-रतुन् ख़ैरुम् मिन् स-द-क़तिंय्-यत्बअ़ुहा अज़न्, वल्लाहु ग़निय्युन् हलीम (263)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुब्तिलू स-दक़ातिकुम् बिल्मन्नि वल्-अज़ा कल्लज़ी

كَيْفَ نُنْشِزُهَا ثُمَّ نَكْسُوْهَا
لَحْمًا ۚ فَلَمَّا تَبَيَّنَ لَهٗ ۙ قَالَ
اَعْلَمُ اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ
قَدِیْرٌ ۝٢٥٩
وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهٖمُ رَبِّ اَرِنِیْ كَیْفَ
تُحْیِ الْمَوْتٰی ۚ قَالَ اَوَلَمْ تُؤْمِنْ ۚ
قَالَ بَلٰی وَلٰكِنْ لِّیَطْمَئِنَّ قَلْبِیْ ۚ
قَالَ فَخُذْ اَرْبَعَةً مِّنَ الطَّیْرِ
فَصُرْهُنَّ اِلَیْكَ ثُمَّ اجْعَلْ عَلٰی
كُلِّ جَبَلٍ مِّنْهُنَّ جُزْءًا ثُمَّ
ادْعُهُنَّ یَاْتِیْنَكَ سَعْیًا ۚ وَاعْلَمْ
اَنَّ اللّٰهَ عَزِیْزٌ حَكِیْمٌ ۝٢٦٠ ع
مَثَلُ الَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ
فِیْ سَبِیْلِ اللّٰهِ كَمَثَلِ حَبَّةٍ اَنْۢبَتَتْ
سَبْعَ سَنَابِلَ فِیْ كُلِّ سُنْۢبُلَةٍ
مِّائَةُ حَبَّةٍ ۚ وَاللّٰهُ یُضٰعِفُ لِمَنْ
یَّشَآءُ ۚ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِیْمٌ ۝٢٦١
اَلَّذِیْنَ یُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ فِیْ
سَبِیْلِ اللّٰهِ ثُمَّ لَا یُتْبِعُوْنَ مَآ
اَنْفَقُوْا مَنًّا وَّلَآ اَذًی ۙ لَّهُمْ
اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ
عَلَیْهِمْ وَلَا هُمْ یَحْزَنُوْنَ ۝٢٦٢
قَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ وَّمَغْفِرَةٌ خَیْرٌ
مِّنْ صَدَقَةٍ یَّتْبَعُهَآ اَذًی ۚ
وَاللّٰهُ غَنِیٌّ حَلِیْمٌ ۝٢٦٣
یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُبْطِلُوْا
صَدَقٰتِكُمْ بِالْمَنِّ وَالْاَذٰی ۙ كَالَّذِیْ

बरबाद न करो जो लोगों को दिखाने के लिए अपना माल ख़र्च करता है और अल्लाह और रोज़-ए-आख़िर पर ईमान नही रखता। तो उसकी हालत उस चट्टान की तरह है जिसपर कुछ मिट्टी पड़ी हुई थी, फिर उस पर ज़ोर की बारिश हुई और उसे साफ़ चट्टान छोड़ गई। ऐसे लोग अपनी कमाई कुछ भी हासिल नहीं करते। और अल्लाह उन लोगों को राह नहीं दिखाता जिनकी रविश कुफ़्र व इनकार की हो।

265. और जो लोग अपने माल ख़ुदा की ख़ुशनूदी के असबाब की तलब में और अपने दिलों को सबात बख़्शने की वजह से ख़र्च करते हैं उनकी हालत उस बाग़ की तरह है जो किसी उमदा और ज़रख़ेज़ ज़मीन में हो; उसपर ज़ोर की बारिश हुई तो उसमें दुगुने फल आए, फिर अगर ज़ोर की बारिश उसपर नहीं हुई तो फुहार ही काफ़ी होगी; तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसपर नज़र रखता है।

266. क्या तुममें से कोई यह चाहेगा कि उसके पास खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, जिसके नीचे नहरें बह रही हों, वहां उसे हर एक क़िस्म के फल हासिल हों, और उसका बुढ़ापा आ गया हो, और उसके बच्चे अभी कमज़ोर व नातवां ही हों कि उस बाग़ पर एक आग भरा बगूला आ गया, और वह जलकर रह गया? इस तरह अल्लाह आयतें तुम्हारे सामने खोल-खोल कर बयान करता है ताकि तुम ग़ौर व फ़िक्र से काम लो।

267. ऐ लोगो जो इमान लाए हो, अपनी कमाई की पाक उमदा चीज़ों में से ख़र्च करो और उन चीज़ों में से भी जो हमने ज़मीन से तुम्हारे लिए निकाली हैं, और देने के लिए उसके ख़राब हिस्से की न सोचो जबकि तुम ख़ुद उसे कभी न लोगे सिवाय इसके कि उसकी क़ीमत कम कराओ; और जान लो कि अल्लाह बेनियाज़, क़ाबिले तारीफ़ है।

युन्फ़िक़ु मालहू रिआ-अन्नासि व ला युअ्मिनु बिल्लाहि वल्-यौमिल्-आख़िरि, फ़-म-सलुहू क-म-सलि सफ़्वानिन् अ़लैहि तुराबुन् फ़-असाबहू वाबिलुन् फ़-त-र-कहू सल्दन्, ला यक़्दिरू-न अ़ला शैइम् मिम्मा क-सबू, वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल् काफ़िरीन (264)

व म-सलुल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुमुब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि व तस्बीतम् मिन् अन्फ़ुसिहिम् क-म सलि जन्नतिम्-बिरब्वतिन् असाबहा वाबिलुन् फ़-आतत् उकु-लहा ज़िअ़्फ़ैनि फ़-इल्लम् युसिब्हा वाबिलुन् फ़-तल्लुन, वल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न बसीर (265)

अ-यवद्दु अ-हदुकुम अन् तकू-न लहू जन्नतुम्- मिन्नख़ीलिंव्-व अअ़्नाबिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारू लहू फ़ीहा मिन् कुल्लिस्स-मराति व असाबहुल्-कि-बरू व लहू ज़ुर्रिय्यतुन् ज़ु-अ़फ़ा-उ फ़-असाबहा इअ़्सारून, फ़ीहि नारून् फ़ह्त-रक़त्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति लअ़ल्लकुम त-तफ़क्करून (266) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अन्फ़िक़ू मिन् तय्यिबाति मा कसब्तुम व मिम्मा अख़रज्ना लकुम् मिनल्-अर्ज़ि व ला त-यम्म-मुल्-ख़बी-स मिन्हु तुन्फ़िक़ू-न व लस्तुम बि-आख़िज़ीहि इल्ला अन् तुग़्मिज़ू फ़ीहि, वअ़्लमू अन्नल्ला-ह ग़निय्युन् हमीद (267)

يُنۡفِقُ مَالَهٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَلَا
يُؤۡمِنُ بِاللّٰهِ وَالۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ ؕ
فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ صَفۡوَانٍ عَلَيۡهِ
تُرَابٌ فَاَصَابَهٗ وَابِلٌ فَتَرَكَهٗ
صَلۡدًا ؕ لَا يَقۡدِرُوۡنَ عَلٰى شَىۡءٍ
مِّمَّا كَسَبُوۡا ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهۡدِى
الۡقَوۡمَ الۡكٰفِرِيۡنَ ۝٢٦٤
وَمَثَلُ الَّذِيۡنَ يُنۡفِقُوۡنَ اَمۡوَالَهُمُ
ابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ اللّٰهِ وَتَثۡبِيۡتًا
مِّنۡ اَنۡفُسِهِمۡ كَمَثَلِ جَنَّةٍۢ بِرَبۡوَةٍ
اَصَابَهَا وَابِلٌ فَاٰتَتۡ اُكُلَهَا ضِعۡفَيۡنِۚ
فَاِنۡ لَّمۡ يُصِبۡهَا وَابِلٌ فَطَلٌّ ؕ وَاللّٰهُ
بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرٌ ۝٢٦٥
اَيَوَدُّ اَحَدُكُمۡ اَنۡ تَكُوۡنَ لَهٗ
جَنَّةٌ مِّنۡ نَّخِيۡلٍ وَّاَعۡنَابٍ
تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا الۡاَنۡهٰرُ ۙ لَهٗ
فِيۡهَا مِنۡ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۙ وَاَصَابَهُ
الۡكِبَرُ وَلَهٗ ذُرِّيَّةٌ ضُعَفَآءُ ۖۚ
فَاَصَابَهَآ اِعۡصَارٌ فِيۡهِ نَارٌ
فَاحۡتَرَقَتۡ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ
ع لَكُمُ الۡاٰيٰتِ لَعَلَّكُمۡ تَتَفَكَّرُوۡنَ ۝٢٦٦
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اَنۡفِقُوۡا
مِنۡ طَيِّبٰتِ مَا كَسَبۡتُمۡ وَمِمَّاۤ
اَخۡرَجۡنَا لَـكُمۡ مِّنَ الۡاَرۡضِ ۖ وَلَا
تَيَمَّمُوا الۡخَبِيۡثَ مِنۡهُ تُنۡفِقُوۡنَ
وَلَسۡتُمۡ بِاٰخِذِيۡهِ اِلَّاۤ اَنۡ تُغۡمِضُوۡا
فِيۡهِ ؕ وَاعۡلَمُوۡۤا اَنَّ اللّٰهَ غَنِىٌّ حَمِيۡدٌ ۝٢٦٧

268. शैतान तुमको इफ़लास से डराता है और वह तुम्हें शर्मनाक तर्ज़-ए-अमल की तरग़ीब देता है; जबकि अल्लाह अपनी मग़फ़िरत और फ़ज़ल का तुमसे वादा करता है; अल्लाह बड़ी वुसअतवाला, सब कुछ जानने वाला है।

269. वह जिसे चाहता है हिकमत अता फ़रमाता है, और जिसको हिकमत मिली उसे ख़ैर-ए-कसीर हाथ आया; लेकिन समझते वही हैं जो अक़ल व फ़हम रखते हैं।

270. और तुमने जो ख़ैरात भी दी और जो कुछ भी नज़्र (मन्नत) की हो, बेशक अल्लाह उसे खूब जानता है। और ज़ालिमों का मददगार कोई भी न होगा।

271. अगर तुम अलानिया सदक़ात दो तो यह भी अच्छा है; और अगर उनको छुपाकर मुहताजों को दो, तो यह तुम्हारे लिए बेहतर है, और वह तुम्हारे गुनाहों को दूर कर देगा, और अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर है जो कुछ तुम करते हो।

272. उन्हें रास्ते पर ला देना तुम्हारे ज़िम्मे नहीं, बल्कि अल्लाह ही जिसे चाहता है हिदायत देता है। और जो कुछ भी माल तुम ख़र्च करोगे वह तुम्हारे अपने ही भले के लिए होगा, और तुम अल्लाह की खुशनूदी के सिवा किसी और ग़र्ज़ से ख़र्च न करो और जो माल भी तुम ख़ैरात में ख़र्च करोगे वह पूरा-पूरा तुम्हें अदा कर दिया जाएगा, और तुम्हारी हक़ तलफ़ी न होगी।

273. यह उन तंगदस्त लोगों के लिए है जो अल्लाह के रास्ते में घिर गए हैं कि ज़मीन में (रोज़ी की तलाश के लिए) कोई दौड़-धूप नहीं कर सकते; उनकी खुद्दारी की वजह से बेख़बर उन्हें ग़नी समझता है, तुम उन्हें उनपर ज़ाहिर होने वाली अलामतों से पहचान सकते हो। वो लिपट कर लोगों से नहीं मांगते। जो माल भी तुम ख़र्च करोगे

अश्शैतानु यअिदुकुमुल् फ़क्-र व यअ्मुरुकुम बिल्फ़ह्शा-इ वल्लाहु यअिदुकुम् मग़्फ़ि-रतम् मिन्हु व फ़ज़्लन्, वल्लाहु वासिअुन् अलीम (268)

युअ्तिल्-हिक्म-त मंय्यशा-उ व मंय्युअ्तल्-हिक्म-त फ़-क़द् ऊति-य ख़ैरन् कसीरन्, व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल्-अल्बाब (269)

व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् न-फ़-क़तिन् औ नज़र्तुम् मिन्-नज़्रिन् फ़-इन्नल्ला-ह यअ्लमुहू, व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार (270)

इन् तुब्दुस्स-दक़ाति फ़-निअिम्मा हि-य व इन् तुख़्फ़ूहा व तुअ्तूहल्फ़ु-क़रा-अ फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम व युकफ़्फ़िरु अन्कुम् मिन् सय्यिआतिकुम, वल्लाहु बिमा तअ्मलूना ख़बीर (271)

लै-स अलै-क हुदाहुम् व लाकिन्नल्ला-ह यह्दी मंय्यशा-उ व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन् फ़-लिअन्फ़ुसिकुम, व मा तुन्फ़िक़ू-न इल्लब्तिग़ा-अ वज्हिल्लाहि, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिंय्युवफ़्-फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून (272)

लिल्फ़ु-क़रा-इल्लज़ी-न उह्सिरू फ़ी सबीलिल्लाहि ला यस्ततीअू-न ज़र्बन् फ़िल्अर्ज़ि यह्सबुहुमुल्-जाहिलु अग़्निया-अ मिनत्त-अफ़्फ़ुफ़ि तअ्रिफ़ुहुम बिसीमाहुम् ला यस्अलूनन्ना-स इल्हाफ़न्, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् ख़ैरिन्

اَلشَّيْطٰنُ يَعِدُكُمُ الْفَقْرَ وَيَاْمُرُكُمْ
بِالْفَحْشَآءِ ۚ وَاللّٰهُ يَعِدُكُمْ مَّغْفِرَةً
مِّنْهُ وَفَضْلًا ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ﴿٢٦٨﴾
يُّؤْتِى الْحِكْمَةَ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ
يُّؤْتَ الْحِكْمَةَ فَقَدْ اُوْتِىَ خَيْرًا
كَثِيْرًا ۗ وَمَا يَذَّكَّرُ اِلَّآ اُولُوا
الْاَلْبَابِ ﴿٢٦٩﴾
وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ نَّفَقَةٍ اَوْ
نَذَرْتُمْ مِّنْ نَّذْرٍ فَاِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُهٗ ۗ
وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿٢٧٠﴾
اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِىَ ۚ
وَاِنْ تُخْفُوْهَا وَتُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ
فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۗ وَيُكَفِّرُ عَنْكُمْ
مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ۗ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
خَبِيْرٌ ﴿٢٧١﴾
لَيْسَ عَلَيْكَ هُدٰىهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ
يَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا
مِنْ خَيْرٍ فَلِاَنْفُسِكُمْ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْنَ
اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ اللّٰهِ ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا
مِنْ خَيْرٍ يُّوَفَّ اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ
لَا تُظْلَمُوْنَ ﴿٢٧٢﴾
لِلْفُقَرَآءِ الَّذِيْنَ اُحْصِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ضَرْبًا فِى
الْاَرْضِ ۫ يَحْسَبُهُمُ الْجَاهِلُ
اَغْنِيَآءَ مِنَ التَّعَفُّفِ ۚ تَعْرِفُهُمْ
بِسِيْمٰهُمْ ۚ لَا يَسْـَٔلُوْنَ النَّاسَ
اِلْحَافًا ۗ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ خَيْرٍ

वह ख़ुदा के इल्म में होगा।

274. जो लोग अपने माल रात-दिन छुपे और खुले ख़र्च करें, उनका अजर तो उनके रब के पास है, और उनके लिए न कोई डर है और न वो ग़मगीन होंगे।

275. जो लोग सूद खाते हैं वो बस इस तरह उठते हैं जिस तरह वह शख़्स उठता है जिसे शैतान ने छूकर बावला कर दिया हो; और यह इसलिए कि वो इसके क़ायल हैं कि "बैअ (व्यापार) भी सूद ही की तरह है", हालांकि अल्लाह ने बैअ को जाइज़ और सूद को हराम क़रार दिया है। पस जिसको उसके रब की तरफ़ से नसीहत पहुंची और वह उससे बाज़ आ गया तो वह उसका है जो वह पहले ले चुका, और उसका मुआमला अल्लाह के हवाले है; और जिसने फिर यही हरकत की, तो ऐसे ही लोग आग में पड़नेवाले हैं; उसमें वो हमेशा रहेंगे।

276. अल्लाह सूद को घटाता और मिटाता, और सदक़ात को बढ़ाता है, और अल्लाह किसी शुक्र नाशनास, हक़तलफ़ी करने वाले को पसन्द नहीं करता।

277. बेशक जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए, और नमाज़ क़ायम रखी और ज़कात दी, उनका अजर उनके रब के पास है, और उन्हें न कोई ख़ौफ़ लाहिक़ होगा और न वो ग़मगीन होंगे।

278. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह का डर रखो; और जो कुछ सूद बाक़ी रह गया उसे छोड़ दो, अगर तुम मोमिन हो।

279. फिर अगर तुमने ऐसा न किया तो अल्लाह और उसके रसूल से लड़ने को ख़बरदार हो जाओ, और अगर तौबा कर लो तो अपना असल माल लेने का तुम्हें हक़ है, न तुम ज़ुल्म करो और न तुमपर ज़ुल्म किया जाए।

280. और अगर कोई तंगी में हो तो हाथ खुलने तक मुहलत देनी होगी;

फ़-इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम ● (273)●

अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् बिल्लैलि वन्नहारि सिर्रंव्-व अ़लानि-यतन् फ़-लहुम् अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (274)

अल्लज़ी-न यअ्कुलूनर्रिबा ला यक़ूमू-न इल्ला कमा यक़ूमुल्लज़ी य-तख़ब्बतुहुश्-शैतानु मिनल्मस्सि, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू इन्नमल्-बैअु मिस्लुर्रिबा ● *व अहल्लल्लाहुल्बै-अ व हर्रमारिबा फ़-मन् जा-अहू मौअि-ज़तुम् मिर्रब्बिही फ़न्तहा फ़-लहू मा स-ल-फ़, व अम्रुहू इलल्लाहि, व मन् आ-द फ़-उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून* (275)

यम्हक़ुल्लाहुर्रिबा व युर्बिस्सदक़ाति, वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल कफ़्फ़ारिन् असीम (276)

इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त लहुम् अज्रुहुम् अिन्-द रब्बिहिम् व ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (277)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व ज़रू मा बक़ि-य मिनर्रिबा इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (278)

फ़-इल्लम् तफ़्अलू फ़अ्-ज़नू बि-हर्बिम् मिनल्लाहि व रसूलिही व इन् तुब्तुम् फ़-लकुम् रुऊसु अम्वालिकुम् ला तज़्लिमू-न व ला तुज़्लमून (279)

व इन् का-न ज़ू अुस्रतिन् फ़-नज़ि-रतुन्

فَإِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝
اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ
وَالنَّهَارِ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً فَلَهُمْ
اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝
اَلَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ الرِّبٰوا لَا يَقُوْمُوْنَ
اِلَّا كَمَا يَقُوْمُ الَّذِيْ يَتَخَبَّطُهُ
الشَّيْطٰنُ مِنَ الْمَسِّ ۚ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ قَالُوْٓا اِنَّمَا الْبَيْعُ مِثْلُ
الرِّبٰوا ۘ وَاَحَلَّ اللّٰهُ الْبَيْعَ وَحَرَّمَ
الرِّبٰوا ۚ فَمَنْ جَآءَهٗ مَوْعِظَةٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ فَانْتَهٰى فَلَهٗ مَا سَلَفَ ۚ وَاَمْرُهٗٓ
اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَنْ عَادَ فَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝
يَمْحَقُ اللّٰهُ الرِّبٰوا وَيُرْبِي الصَّدَقٰتِ ۗ
وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ كُلَّ كَفَّارٍ اَثِيْمٍ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ
لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَلَا خَوْفٌ
عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَذَرُوْا
مَا بَقِيَ مِنَ الرِّبٰوٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝
فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا فَاْذَنُوْا بِحَرْبٍ
مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاِنْ تُبْتُمْ
فَلَكُمْ رُءُوْسُ اَمْوَالِكُمْ ۚ لَا تَظْلِمُوْنَ
وَلَا تُظْلَمُوْنَ ۝
وَاِنْ كَانَ ذُوْ عُسْرَةٍ فَنَظِرَةٌ

और सदक़ा कर दो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा बेहतर है, अगर तुम जान सको।

281. और उस दिन का डर रखो जबकि तुम अल्लाह की तरफ़ लौटाए जाओगे, फिर हर शख़्स को जो कुछ उसने कमाया पूरा-पूरा मिल जाएगा और उनपर कोई ज़ुल्म न होगा।

282. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जब किसी मुक़र्रर मुद्दत के लिए आपस में क़र्ज़ का लेन-देन करो तो उसे लिख लिया करो, और चाहिए कि कोई लिखनेवाला तुम्हारे दरमियान इंसाफ़ के साथ (दस्तावेज़) लिख दे, और लिखनेवाला लिखने से इनकार न करे; जिस तरह अल्लाह ने उसे सिखाया है, उसी तरह वह दूसरों के लिए लिखने के काम आए, और इमला वह कराए जिसपर हक़ आयद होता है, और उसे अल्लाह से जो उसका रब है डरना चाहिए और उसमें कोई कमी न करनी चाहिए। फिर अगर जिसपर हक़ आयद होता है नादान या नातवां है, या वह इमला न करवा सकता हो तो उसके वली को चाहिए कि इंसाफ़ के साथ इमला करा दे। और अपने मर्दों में से दो गवाहों की गवाही करा लो; और अगर दो मर्द न हों तो एक मर्द और दो औरतें जिन्हें तुम गवाह होने के लिए पसन्द करो गवाह हो जाएं, (दो औरतें इसलिए रखी गई हैं) ताकि अगर एक भूल जाए तो दूसरी उसे याद दिला दे।

और गवाह जब कि उन्हें बुलाया जाए हाज़िर होने से इनकार न करें। ख़्वाह मुआमला छोटा हो या बड़ा, एक मुक़र्ररह मुद्दत के लिए है तो उसे लिखने में तसाहुल से काम न लो; यह ख़ुदा के नज़दीक ज़्यादा मबनी बर इंसाफ़ है, और गवाही को ज़्यादा दुरुस्त रखने का मूजिब (कारण) है, और यह इसके ज़्यादा क़रीब है कि तुम किसी शक में भी न पड़ोगे। मगर यह कि कोई सौदा दस्त-बदस्त हो जिसका लेन-देन तुम आपस में कर रहे हो तो तुम्हारे उसके न लिखने में तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं। और जब आपस में ख़रीद व फ़रोख़्त का मुआमला करो तो उस वक़्त भी गवाह

इला मैस-रतिन्, व अन् तसद्दकू ख़ैरूलकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून (280)

वत्तक़ू यौमन् तुर्जअू-न फ़ीहि इलल्लाहि, सुम्-म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम् मा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून (281) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तदायन्तुम् बिदैनिन् इला अ-जलिम् मुसम्मन् फ़क्तुबूहु, वल्यक्तुब् बैनकुम् कातिबुम् बिल्अ़द्लि व ला यअ्-ब कातिबुन् अंय्यक्तु-ब कमा अ़ल्ल-महुल्लाहु फ़ल्यक्तुब् वल्युम्लिलि ल्लज़ी अ़लैहिल्-हक़्क़ु वल्यत्तक़िल्ला-ह रब्बहू व ला यब्ख़स् मिन्हु शैअन्, फ-इन् कानल्लज़ी अ़लैहिल्हक़्क़ु सफ़ीहन् औ ज़अ़ीफ़न् औ ला यस्ततीअु अंय्युमिल्-ल हु-व फ़ल्युम्लिल वलिय्युहू बिल्अ़द्लि, वस्तश्हिदू शहीदैनि मिर्रिजालिकुम् फ़-इल्लम् यकूना रजुलैनि फ़-रजुलुंव्वम्र अतानि मिम्मन् तर्ज़ौ-न मिनश्शु-हदा-इ अन् तज़िल्-ल इह्दाहुमा फ़तुज़क्कि-र इह्दाहुमल्-उख़्रा, व ला यअ्बश्-शु-हदा-उ इज़ा मा दुअू, व ला तस्अमू अन् तक्तुबूहु सग़ीरन् औ कबीरन् इला अ-जलिही, ज़ालिकुम् अक़्सतु अ़िन्दल्लाहि व अक़्वमु लिश्शहा-दति व अद्ना अल्ला तर्ताबू इल्ला अन् तकू-न तिजारतन् हाज़ि-रतन् तुदीरूनहा बैनकुम् फ़लै-स

إِلَىٰ مَيْسَرَةٍ ۚ وَأَن تَصَدَّقُوا خَيْرٌ لَّكُمْ ۖ
إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿٢٨٠﴾
وَاتَّقُوا يَوْمًا تُرْجَعُونَ فِيهِ
إِلَى اللَّهِ ۖ ثُمَّ تُوَفَّىٰ كُلُّ نَفْسٍ
مَّا كَسَبَتْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُونَ ﴿٢٨١﴾
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا إِذَا تَدَايَنتُم
بِدَيْنٍ إِلَىٰ أَجَلٍ مُّسَمًّى فَاكْتُبُوهُ ۚ
وَلْيَكْتُب بَّيْنَكُمْ كَاتِبٌ بِالْعَدْلِ ۚ
وَلَا يَأْبَ كَاتِبٌ أَن يَكْتُبَ كَمَا
عَلَّمَهُ اللَّهُ ۚ فَلْيَكْتُبْ وَلْيُمْلِلِ
الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ وَلْيَتَّقِ اللَّهَ
رَبَّهُ وَلَا يَبْخَسْ مِنْهُ شَيْئًا ۚ
فَإِن كَانَ الَّذِي عَلَيْهِ الْحَقُّ
سَفِيهًا أَوْ ضَعِيفًا أَوْ لَا يَسْتَطِيعُ
أَن يُمِلَّ هُوَ فَلْيُمْلِلْ وَلِيُّهُ
بِالْعَدْلِ ۚ وَاسْتَشْهِدُوا شَهِيدَيْنِ
مِن رِّجَالِكُمْ ۖ فَإِن لَّمْ يَكُونَا
رَجُلَيْنِ فَرَجُلٌ وَامْرَأَتَانِ مِمَّن
تَرْضَوْنَ مِنَ الشُّهَدَاءِ أَن تَضِلَّ
إِحْدَاهُمَا فَتُذَكِّرَ إِحْدَاهُمَا
الْأُخْرَىٰ ۚ وَلَا يَأْبَ الشُّهَدَاءُ إِذَا
مَا دُعُوا ۚ وَلَا تَسْأَمُوا أَن تَكْتُبُوهُ
صَغِيرًا أَوْ كَبِيرًا إِلَىٰ أَجَلِهِ ۚ
ذَٰلِكُمْ أَقْسَطُ عِندَ اللَّهِ وَأَقْوَمُ
لِلشَّهَادَةِ وَأَدْنَىٰ أَلَّا تَرْتَابُوا ۖ
إِلَّا أَن تَكُونَ تِجَارَةً حَاضِرَةً
تُدِيرُونَهَا بَيْنَكُمْ فَلَيْسَ

कर लिया करो। और न किसी कातिब को नुक़सान पुहंचाया जाए और न किसी गवाह को; और अगर ऐसा करोगे तो यह तुम्हारे लिए नाफरमानी की बात होगी। और अल्लाह से डरते रहो, अल्लाह तुम्हें तालीम दे रहा है और अल्लाह हर चीज़ जानता है।

283. और अगर तुम किसी सफ़र पर हो, और किसी लिखनेवाले को न पा सको, तो रह्न क़ब्ज़े में देकर मुआमला करो। फिर अगर तुममें से एक दूसरे पर एतिबार करे तो जिसपर एतिमाद किया है उसे चाहिए कि अपने अमीन होने को साबित कर दे, और अल्लाह से जो उसका रब है डरे। और शहादत को न छुपाओ; जो उसे छुपाता है तो वाक़िया यह है कि उसका दिल गुनाहगार है; और तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे बखूबी जानता है।

284. अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है, ख्वाह तुम ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ, खुदा उसका हिसाब तुम से लेगा। फिर वह जिसे चाहे बख़्श दे, और जिसे चाहे अज़ाब दे; अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

285. रसूल उसपर जो कुछ उसके रब की जानिब से उसकी तरफ़ उतरा ईमान लाया और अहले ईमान भी; हर एक, अल्लाह पर, उसके फ़रिश्तों पर, उसकी किताबों पर, और उसके रसूलों पर ईमान लाया; हम उसके रसूलों में से किसी को दूसरे रसूलों से अलग नहीं करते, और वो कहते हैं, "हमने सुना और इताअत की। हमारे रब, हम तेरी मग़फ़िरत के तालिब हैं; और तेरी ही तरफ़ लौटना है।"

286. अल्लाह किसी जान पर बस उसकी ताक़त व वुसअत के मुताबिक़ ज़िम्मेदारी का बोझ डालता है; उसका है जो उसने कमाया और उसी पर

अ़लैकुम् जुनाहुन् अल्ला तक्तुबूहा, व अश्हिदू इज़ा तबायअ़्तुम् व ला युज़ार्-र कातिबुंव्- व ला शहीदुन्, व इन् तफ़्अ़लू फ़-इन्नहू फ़ुसूक़ुम् बिकुम, वत्तक़ुल्ला-ह, व युअ़ल्लिमुकुमुल्लाहु, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (282)

व इन् कुन्तुम् अ़ला स-फ़रिंव्वलम् तजिदू कातिबन् फ़रिहानुम् मक़्बू-ज़तुन, फ़-इन अमि-न बअ़्ज़ुकुम बअ़्ज़न् फ़ल्युअद्दिदल्लज़िअ्तुमि-न अमान-तहू वल्यत्तक़िल्ला-ह रब्बहू, व ला तक्तुमुश्शहाद-त, व मंय्यक्तुम्हा फ़-इन्नहू आसिमुन् क़ल्बुहू, वल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न अ़लीम (283)●

लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व इन् तुब्दू मा फ़ी अन्फ़ुसिकुम् औ तुख़्फ़ूहु युहासिब्कुम् बिहिल्लाहु, फ़-यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (284)

आ-मनर्रसूलु बिमा उन्ज़ि-ल इलैहि मिर्रब्बिही वल्मुअ्मिनून, कुल्लुन् आम-न बिल्लाहि व मलाइ-कतिही व कुतुबिही व रूसुलिही, ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-हदिम् मिर्रूसुलिही, व क़ालू समिअ़ना व अ-तअ़्ना ग़ुफ़्रान-क रब्बना व इलैकल् मसीर (285)

ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा, लहा मा क-सबत् व अ़लैहा मक्त-सबत्,

عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ اَلَّا تَكْتُبُوْهَا ؕ
وَ اَشْهِدُوْٓا اِذَا تَبَايَعْتُمْ ۪ وَلَا
يُضَآرَّ كَاتِبٌ وَّلَا شَهِيْدٌ ؕ وَاِنْ
تَفْعَلُوْا فَاِنَّهٗ فُسُوْقٌۢ بِكُمْ ؕ وَاتَّقُوا
اللّٰهَ ؕ وَ يُعَلِّمُكُمُ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ
شَیْءٍ عَلِيْمٌ ۝٢٨٢

وَاِنْ كُنْتُمْ عَلٰى سَفَرٍ وَّلَمْ تَجِدُوْا
كَاتِبًا فَرِهٰنٌ مَّقْبُوْضَةٌ ؕ فَاِنْ
اَمِنَ بَعْضُكُمْ بَعْضًا فَلْيُؤَدِّ
الَّذِى اؤْتُمِنَ اَمَانَتَهٗ وَلْيَتَّقِ
اللّٰهَ رَبَّهٗ ؕ وَلَا تَكْتُمُوا الشَّهَادَةَ ؕ
وَمَنْ يَّكْتُمْهَا فَاِنَّهٗۤ اٰثِمٌ قَلْبُهٗ ؕ
ع وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ ۝٢٨٣

لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ
وَاِنْ تُبْدُوْا مَا فِىْۤ اَنْفُسِكُمْ اَوْ
تُخْفُوْهُ يُحَاسِبْكُمْ بِهِ اللّٰهُ ؕ فَيَغْفِرُ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢٨٤

اٰمَنَ الرَّسُوْلُ بِمَاۤ اُنْزِلَ اِلَيْهِ
مِنْ رَّبِّهٖ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ؕ كُلٌّ
اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ وَكُتُبِهٖ
وَرُسُلِهٖ ۟ لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ
مِّنْ رُّسُلِهٖ ۟ وَقَالُوْا سَمِعْنَا
وَاَطَعْنَا غُفْرَانَكَ رَبَّنَا وَاِلَيْكَ
الْمَصِيْرُ ۝٢٨٥

لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا ؕ
لَهَا مَا كَسَبَتْ وَعَلَيْهَا مَا اكْتَسَبَتْ ؕ

رَبَّنَا لَا تُؤَاخِذْنَآ اِنْ نَّسِيْنَآ اَوْ
اَخْطَاْنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تَحْمِلْ عَلَيْنَآ
اِصْرًا كَمَا حَمَلْتَهٗ عَلَى الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِنَا ۚ رَبَّنَا وَلَا تُحَمِّلْنَا
مَا لَا طَاقَةَ لَنَا بِهٖ ۚ وَاعْفُ عَنَّا
وَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا اَنْتَ
مَوْلٰىنَا فَانْصُرْنَا عَلَى الْقَوْمِ
ع الْكٰفِرِيْنَ ۝

سُوْرَةُ اٰلِ عِمْرٰنَ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢٠٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓمّٓ ۝ اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْحَيُّ
الْقَيُّوْمُ ۝
نَزَّلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ وَ اَنْزَلَ التَّوْرٰىةَ
وَالْاِنْجِيْلَ ۝
مِنْ قَبْلُ هُدًى لِّلنَّاسِ وَ
اَنْزَلَ الْفُرْقَانَ ۚ اِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۚ
وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ ۝
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَخْفٰى عَلَيْهِ شَيْءٌ فِي
الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ۝
هُوَ الَّذِيْ يُصَوِّرُكُمْ فِي الْاَرْحَامِ
كَيْفَ يَشَآءُ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۝
هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ
مِنْهُ اٰيٰتٌ مُّحْكَمٰتٌ هُنَّ اُمُّ

रब्बना ला तुआख़िज़्ना इन्-नसीना औ अख़्तअ्ना, रब्बना व ला तह्मिल् अ़लैना इस्रन् कमा हमल्तहू अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिना, रब्बना व ला तुहम्मिलना मा ला ताक़-त लना बिही वअ्फ़ु अ़न्ना, वग्फ़िर् लना, वर्हम्ना, अन्-त मौलाना फ़न्सुर्ना अ़लल् क़ौमिल् काफ़िरीन (286) ●

सूरतु आलि इमरान

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 15326 अक्षर, 3542शब्द, 200 आयतें और 20 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1) *अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हुवल् हय्युल्-क़य्यूम* (2)

नज़्ज़-ल अ़लैकल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि व अन्ज़लत्तौरा-त वल्-इंजील (3)

मिन् क़ब्लु हुदल्लिन्नासि व अन्ज़-लल् फ़ुर्क़ा-न, इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन्, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम (4)

इन्नल्ला-ह ला यख़्फ़ा अ़लैहि शैउन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ (5)

हुवल्लज़ी युसव्विरुकुम् फ़िल्अर्हामि कै-फ़ यशा-उ, ला इला-ह इल्ला हुवल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम (6)

हुवल्लज़ी अन्ज़-ल अ़लैकल्-किता-ब मिन्हु आयातुम् मुह्कमातुन् हुन्-न उम्मुल्-

है जो उसने कमाया और उसी पर उसका वबाल भी है जो उसने किया — "हमारे रब! अगर हम भूलें, या चूक जाएं तो हमारी गिरफ़्त न करना। हमारे रब! और हम पर ऐसा बोझ न डाल जैसा तूने हम से पहले लोगों पर डाला था। हमारे रब! और हम से वह बोझ न उठवा जिसकी हमें ताक़त नहीं। और हमें माफ़ कर, और हमें ढांक ले, और हमपर रहम कर; तू ही हमारा मौला है, लिहाज़ा हमारी मदद करके हमें काफ़िर लोगों पर ग़ालिब फ़रमा"।

सूरह आले इमरान मदनी

(आयतें 200, रुकूआत 20)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-मीम।

2. अल्लाह ही माबूद है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िन्दा हस्ती है, सबको संभालने और क़ायम रखनेवाली।

3. उसने तुमपर हक़ के साथ किताब उतारी जो अपने से पहले की (किताबों की) तसदीक़ करती है, और उसने तौरात और इंजील उतारी।

4. इससे पहले लोगों की हिदायत के लिए, नीज़ उसने फ़ुरक़ान उतारा। बेशक जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों का इनकार किया उनके लिए सख़्त अज़ाब है। और अल्लाह ग़ालिब भी है, इंतिक़ाम लेनेवाला भी।

5. बेशक अल्लाह से कोई चीज़ न ज़मीन में छुपी है और न आसमान में।

6. वही है जो रहमों में जैसी चाहता है तुम्हारी सूरत गिरी करता है। उस ग़ालिब, साहिबे हिकमत के सिवा कोई माबूद नहीं।

7. वही है जिसने तुमपर अपनी तरफ़ से किताब उतारी, वो मुहकम आयतें हैं जो किताबों की जामे व मर्कज़ हैं, और दूसरी किताबें मुतशाबेह

(हक़ व बातिल आमेज़) हैं, तो जिन लोगों के दिलों में कजी (टेढ़) है वो फ़ितना की तलाश और उस मुतशाबेह के मआल व अंजाम की तलब में उसकी पैरवी करते हैं जो मुश्तबह (हक़ व बातिल आमेज़) है। जबकि उसकी हक़ीक़त और अन्जाम बस अल्लाह जानता है और जो लोग इल्म में रासिख़ (पक्के) हैं, वो कहते हैं कि "हम उनपर ईमान लाए; हर एक हमारे रब ही की तरफ़ से है!" और याददिहानी तो वही हासिल करते हैं जो अक़्ल व ख़िरद रखते हैं।

8. हमारे रब, जबकि तूने हमें हिदायत बख़्शी है तो इसके बाद हमारे दिलों को कजी में मुबतला न करना; और हमें अपने यहां से रहमत अता कर; यक़ीनन तू बड़ा अता करने वाला है।

9. हमारे रब, तू लोगों को एक दिन जमा करेगा जिसके आने में कोई शुबह नहीं, बेशक अल्लाह वादा ख़िलाफ़ी नही करेगा।

10. जिन लोगों ने इनकार किया, अल्लाह के मुक़ाबले में न तो उनके माल उनके कुछ काम आएंगे और न उनकी औलाद ही; और वही हैं जो दोज़ख़ का ईन्धन बनकर रहेंग।

11. जैसे फ़िरऔनियों का हाल हुआ और उनका जो उनसे पहले थे, उन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, तो अल्लाह ने उन्हें उनके गुनाहों पर पकड़ लिया; अल्लाह है ही सख़्त सज़ा देनेवाला।

12. इनकार करने वालों से कह दो कि "जल्द ही तुम मग़लूब होगे, और दोज़ख़ की तरफ़ हांके जाओगे। और वह क्या ही बुरी आरामगाह है!"

13. तुम्हारे लिए उन दोनों गिरोहों में एक निशानी है जो एक दूसरे के मुक़ाबिल हुए, एक गिरोह अल्लाह के रास्ते में लड़ रहा था जबकि दूसरा काफ़िर था; ये अपनी आखों से देख

किताबि व उ-ख़रु मु-तशाबिहातुन्, फ़-अम्मल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् ज़ैग़ुन् फ़-यत्तबिऊ-न मा तशा-ब-ह मिन्हुब्तिग़ा-अल्- फ़ित्नति वब्तिग़ा-अ तअ्वीलिही, व मा यअ्लमु तअ्वी-लहू इल्लल्लाहु, ● *वर्रासिख़ू-न फ़िल्-अिल्मि यक़ूलू-न आमन्ना बिही कुल्लुम् मिन् अिन्दि रब्बिना व मा यज़्ज़क्करु इल्ला उलुल्अल्बाब* (7)

रब्बना ला तुज़िग़् क़ुलूबना बअ्-द इज़् हदैतना व हब् लना मिल्लदुन्-क रह्म-तन् इन्न-क अन्तल् वह्हाब (8)

रब्बना इन्न-क जामिअुन्नासि लियौमिल्-ला रै-ब फ़ीहि, इन्नल्ला-ह ला युख़्लिफ़ुल् मीआद (9)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लन् तुग़्नि-य अन्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन्, व उलाइ-क हुम् वक़ूदुन्नार (10)

क-दअ्बि आलि फ़िर्औ-न वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कज़्ज़बू बिआयातिना फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम, वल्लाहु शदीदुल् अिक़ाब (11)

क़ुल् लिल्लज़ी-न क-फ़रू सतुग़्लबू-न व तुह्शरू-न इला जहन्न-म, व बिअ्सल् मिहाद (12)

क़द् का-न लकुम् आ-यतुन् फ़ी फ़ि-अतैनिल् त-क़ता, फ़ि-अतुन् तुक़ातिलु फ़ी सबीलिल्लाहि व उख़रा काफ़ि-रतुंय्यरौ-नहुम् मिस्लैहिम्

الْكِتٰبِ وَ اُخَرُ مُتَشٰبِهٰتٌ ؕ
فَاَمَّا الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ زَيْغٌ
فَيَتَّبِعُوْنَ مَا تَشَابَهَ مِنْهُ ابْتِغَآءَ
الْفِتْنَةِ وَابْتِغَآءَ تَاْوِيْلِهٖ ۚ وَمَا
يَعْلَمُ تَاْوِيْلَهٗۤ اِلَّا اللّٰهُ ۘ وَالرّٰسِخُوْنَ
فِي الْعِلْمِ يَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِهٖ ۙ كُلٌّ
مِّنْ عِنْدِ رَبِّنَا ۚ وَمَا يَذَّكَّرُ
اِلَّاۤ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝
رَبَّنَا لَا تُزِغْ قُلُوْبَنَا بَعْدَ اِذْ
هَدَيْتَنَا وَهَبْ لَنَا مِنْ لَّدُنْكَ
رَحْمَةً ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْوَهَّابُ ۝
رَبَّنَاۤ اِنَّكَ جَامِعُ النَّاسِ لِيَوْمٍ
لَّا رَيْبَ فِيْهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُخْلِفُ
ع الْمِيْعَادَ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ
اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ
شَيْـًٔا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمْ وَقُوْدُ النَّارِ ۝
كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ
فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ
شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝
قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَتُغْلَبُوْنَ
وَتُحْشَرُوْنَ اِلٰى جَهَنَّمَ ؕ وَبِئْسَ
الْمِهَادُ ۝
قَدْ كَانَ لَكُمْ اٰيَةٌ فِيْ فِئَتَيْنِ
الْتَقَتَا ؕ فِئَةٌ تُقَاتِلُ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَ اُخْرٰى كَافِرَةٌ يَّرَوْنَهُمْ مِّثْلَيْهِمْ

रहे थे कि वो उनसे दुगुने हैं, अल्लाह अपनी नुसरत से जिसे चाहता है तक़वियत पहुंचाता है, दीदा-ए-बीना रखनेवालों के लिए इसमें बड़ी इबरत है।

14. लोगों के लिए मुज़य्यन कर दी गई है मरग़ूबात की मुहब्बत, जैसे औरतें, बेटे, सोने-चांदी के ढेर, निशान लगे चीदा (चुने हुए) घोड़े, चौपाए और खेती। ये दुनिया की ज़िन्दगी के सरोसामान हैं, रहा अल्लाह तो उसी के पास अच्छा ठिकाना है।

15. कहो, "क्या मैं तुम्हें इनसे बेहतर चीज़ की ख़बर दूं?" जो लोग तक़्वा इख़्तियार करेंगे, उनके लिए उनके रब के पास बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वो हमेशा रहेंगे, वहां पाक जोड़े होंगे और अल्लाह की रिज़ा हासिल होगी। अल्लाह तो बन्दों पर निगाह रखता है।

16. ये वो लोग हैं जो कहते हैं, "हमारे रब! हम ईमान ले आए हैं, पस हमारे गुनाहों को माफ़ कर दे और हमें आग के अज़ाब से बचा ले"।

17. ये लोग सब्र करने वाले, रास्तबाज़ और ग़ायत दर्जा फ़रमांबरदार हैं, ये ख़र्च करते और औक़ात-ए-सहर में बख़्शिश की दुआएं मांगा करते हैं।

18. अल्लाह ने गवाही दी कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं और फ़रिश्तों ने और उन लोगों ने भी जो अद्ल व तवाज़ुन क़ायम रखने वाली एक हस्ती को जानते हैं। उस ग़ालिब, हकीम के सिवा कोई माबूद नहीं।

19. दीन तो अल्लाह के नज़दीक इस्लाम ही है। जिन्हें किताब मिली थी उन्होंने तो इसमें इख़्तिलाफ़ आपस की ज़िद से इसके बाद किया जबकि

रअ्यल् ऐनि, वल्लाहु युअय्यिदु बिनस्रिही मंय्यशा-उ, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-अिब्रतल्-लिउलिल् अब्सार (13)

ज़ुय्यि-न लिन्नासि हुब्बुश्श-हवाति मिनन्निसा-इ वल्बनी-न वल्-क़नातीरिल्- मुक़न्त-रति मिनज़्ज़-हबि वल्फ़िज़्ज़ति वल्-ख़ैलिल्-मुसव्व-मति वल्-अन्आमि वल्हर्सि, ज़ालि-क मताअुल् हयातिद्दुन्या वल्लाहु अिन्दहू हुस्नुल् मआब (14)

क़ुल् अ-उनब्बिउकुम् बिख़ैरिम् मिन् ज़ालिकुम्, लिल्लज़ीनत्तक़ौ अिन्-द रब्बिहिम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व अज़्वाजुम्-मुतह्ह-रतुंव्-व रिज़्वानुम् मिनल्लाहि, वल्लाहु बसीरुम् बिल्अिबाद (15)

अल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना इन्नना आमन्ना फ़ग्फ़िर् लना ज़ुनूबना व क़िना अज़ाबन्नार (16)

अस्साबिरी-न वस्सादिक़ी-न वल्क़ानिती-न वल्मुन्फ़िक़ी-न वल्मुस्तग़्फ़िरी-न बिल्अस्हार (17)

शहिदल्लाहु अन्नहू ला इला-ह इल्ला हु-व वल्मलाइ-कतु व उलुल्-अिल्मि क़ा-इमम् बिल्क़िस्ति, ला इला-ह इल्ला हुवल्-अज़ीज़ुल् हकीम ●(18)

इन्नद्दी-न अिन्दल्लाहिल् इस्लामु, व मख़्त-लफ़ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब इल्ला मिम्-बअ्दि मा जा-अहुमुल् अिल्मु

رَاٰيَ الْعَيْنِ ؕ وَاللّٰهُ يُؤَيِّدُ بِنَصْرِهٖ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً
لِّاُولِي الْاَبْصَارِ ⑬
زُيِّنَ لِلنَّاسِ حُبُّ الشَّهَوٰتِ
مِنَ النِّسَآءِ وَالْبَنِيْنَ وَالْقَنَاطِيْرِ
الْمُقَنْطَرَةِ مِنَ الذَّهَبِ وَالْفِضَّةِ
وَالْخَيْلِ الْمُسَوَّمَةِ وَ الْاَنْعَامِ
وَالْحَرْثِ ؕ ذٰلِكَ مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الْمَاٰبِ ⑭
قُلْ اَؤُنَبِّئُكُمْ بِخَيْرٍ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ
لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا عِنْدَ رَبِّهِمْ
جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ
وَّرِضْوَانٌ مِّنَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ
بِالْعِبَادِ ⑮ ۚ
اَلَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ اِنَّنَآ اٰمَنَّا
فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَقِنَا عَذَابَ
النَّارِ ⑯ ۚ
اَلصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰدِقِيْنَ وَالْقٰنِتِيْنَ
وَالْمُنْفِقِيْنَ وَالْمُسْتَغْفِرِيْنَ بِالْاَسْحَارِ ⑰
شَهِدَ اللّٰهُ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۙ
وَالْمَلٰٓئِكَةُ وَاُولُوا الْعِلْمِ قَآئِمًا ۢ
بِالْقِسْطِ ؕ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ⑱ ۚ
اِنَّ الدِّيْنَ عِنْدَ اللّٰهِ الْاِسْلَامُ ۣ
وَمَا اخْتَلَفَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْعِلْمُ

इल्म उनके पास आ चुका था। जो अल्लाह की आयतों का इनकार करेगा, तो अल्लाह भी जल्द हिसाब करने वाला है।

20. अब अगर वो तुमसे झगड़ें तो कह दो कि "मैंने और मेरे पैरौओं (अनुयायिओं) ने तो अपने आपको अल्लाह के हवाले कर दिया है!" और जिन्हें किताब मिली थी और जिनके पास किताब नहीं उनसे कहो कि "क्या तुम भी इस्लाम को इख़्तियार करते हो?" फिर अगर वो इस्लाम को इख़्तियार कर लें तो हिदायतयाब हुए; अगर मुंह फेरें तो तुमपर ज़िम्मेदारी सिर्फ़ पहुंचा देने की है; आगे ख़ुदा ख़ुद अपने बन्दों को देखनेवाला है।

21. जो लोग अल्लाह की आयतों का इनकार करें और नबियों को नाहक़ जुल्म से क़त्ल करें, और लोगों में उन आदमियों को क़त्ल करें जो अद्ल को मलहूज़ रखने की दावत दें, उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दो;

22. यही लोग हैं जिनके आमाल दुनिया व आख़िरत में वबाल अंगेज़ हुए; और उनका मददगार कोई भी नहीं।

23. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें ख़ुशनसीबी यानी किताब बख़्शी गई है, उन्हें अल्लाह की किताब की तरफ़ बुलाया जाता है कि वह उनके दरमियान फ़ैसला करे, फिर भी उनका एक गिरोह बेएतिनाई करते हुए मुंह फेर लेता है?

24. यह इसलिए कि वो कहते हैं कि "आग हमें नहीं छू सकती अलबत्ता चन्द गिने-चुने दिनों की बात और है," उनकी मनघड़त बातों ने जो वो घड़ते रहे हैं उन्हें फ़रेब देकर उनकी अपनी इस रविश में मुबतला कर दिया।

25. फिर क्या हाल होगा, जब हम उन्हें उस रोज़ जिसके आने में कोई शुबह नहीं इकट्ठा करेंगे, और हर शख़्स को जो कुछ उसने कमाया होगा पूरा-पूरा मिल जाएगा, और उनके साथ कोई ज़ुल्म न होगा।

26. कहो, "ऐ अल्लाह! बादशाही के मालिक, तू जिसे चाहे बादशाही दे

बग़्यम् बैनहुम, व मंय्यक्फ़ुर बिआयातिल्लाहि फ़-इन्नल्ला-ह सरीउल् हिसाब (19)

फ़-इन् हाज्जू-क फ़कुल् अस्लम्तु वज्हि-य लिल्लाहि व मनित्त-ब अनि, व कुल् लिल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब वल्-उम्मिय्यी-न अ-अस्लम्तुम्, फ़-इन् अस्लमू फ़-क़दिह्तदौ व इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा अलैकल्-बलाग़ु, वल्लाहु बसीरुम् बिल्‌अिबाद (20)●

इन्नल्लज़ी-न यक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलूनन्नबिय्यी-न बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व यक़्तुलू-नल्लज़ी-न यअ्मुरू-न बिल्क़िस्ति मिनन्नासि फ़-बश्शिर्हुम् बि-अज़ाबिन् अलीम (21)

उलाइ-कल्लज़ी-न हबितत् अअ्मालुहुम फ़िद्दुन्या वल्-आख़ि-रति व मा लहुम् मिन्-नासिरीन (22)

अलम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम् मिनल्-किताबि युद्‌औ-न इला किताबिल्लाहि लि-यह्कु-म बैनहुम् सुम्-म य-तवल्ला फ़रीक़ुम् मिन्हुम व हुम् मुअ्रिज़ून (23)

ज़ालि-क-बि-अन्नहुम् क़ालू लन् तमस्स-नन्नारु इल्ला अय्यामम् मअ्दूदातिंव्-व ग़र्रहुम् फ़ी दीनिहिम् मा कानू यफ़्तरून (24)

फ़कै-फ इज़ा जमअ्नाहुम् लियौमिल् ला रै-ब फ़ीहि, व वुफ़्फ़ियत् कुल्लु नफ़्सिम् मा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून (25)

कुलिल्लाहुम्-म मालिकल्मुल्कि तुअ्तिल्-

بَغْيًا بَيْنَهُمْ ۭ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ⑲
فَاِنْ حَآجُّوْكَ فَقُلْ اَسْلَمْتُ وَجْهِيَ
لِلّٰهِ وَمَنِ اتَّبَعَنِ ۭ وَقُلْ لِّلَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَالْاُمِّيّٖنَ ءَاَسْلَمْتُمْ ۭ
فَاِنْ اَسْلَمُوْا فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ ۭ وَاللّٰهُ
ع بَصِيْرٌۢ بِالْعِبَادِ ⑳

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ
وَيَقْتُلُوْنَ النَّبِيّٖنَ بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ
وَّيَقْتُلُوْنَ الَّذِيْنَ يَاْمُرُوْنَ بِالْقِسْطِ
مِنَ النَّاسِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ㉑
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ
فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۡ وَمَا لَهُمْ
مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ㉒
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا
مِّنَ الْكِتٰبِ يُدْعَوْنَ اِلٰى كِتٰبِ اللّٰهِ
لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ
مِّنْهُمْ وَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ㉓
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَنْ تَمَسَّنَا
النَّارُ اِلَّآ اَيَّامًا مَّعْدُوْدٰتٍ ۠
وَّغَرَّهُمْ فِيْ دِيْنِهِمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ㉔
فَكَيْفَ اِذَا جَمَعْنٰهُمْ لِيَوْمٍ لَّا رَيْبَ
فِيْهِ ۣ وَوُفِّيَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ㉕
قُلِ اللّٰهُمَّ مٰلِكَ الْمُلْكِ تُؤْتِي

और जिससे चाहे बादशाही छीन ले, और जिसे चाहे इज़्ज़त दे, और जिसको चाहे ज़लील कर दे; तेरे ही हाथ में भलाई है; बेशक तुझे हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

27. तू रात को दिन में पिरोता है, और दिन को रात में पिरोता है। तू मुर्दा से ज़िन्दा निकालता है और ज़िन्दा से मुर्दा निकालता है, और जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।"

28. अहले ईमान को चाहिए कि अहले ईमान से हटकर अहले कुफ़्र को अपना दोस्त न बनाएं और जो ऐसा करेगा उसका अल्लाह से कोई तअल्लुक़ नहीं, क्योंकि उससे तअल्लुक़ उसी बात को है कि तुम उनसे बचो जिस तरह वो तुमसे बचते हैं। और अल्लाह तुम्हें अपना ख़ौफ़ दिलाता है और अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है

29. कह दो कि "ख़्वाह तुम अपने दिलों की बात छुपाओ या उसे ज़ाहिर करो, बेहरहाल अल्लाह उसे जान लेगा। और वह उसे भी जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है; और अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।"

30. जिस दिन हर शख़्स अपनी की हुई भलाई और अपनी की हुई बुराई को सामने मौजूद पाएगा; वह तमन्ना करेगा कि काश उसके और उस घड़ी के दरमियान बहुत दूर का फ़ासला होता। और अल्लाह तुम्हें अपना ख़ौफ़ दिलाता है, इसलिए कि अल्लाह अपने बन्दों पर बहुत शफ़क़त रखता है।

31. कहो, "अगर तुम अल्लाह से मुहब्बत करते हो, तो मेरी पैरवी करो, अल्लाह भी तुमसे मुहब्बत करेगा, और तुम्हारे गुनाह माफ़ कर देगा; अल्लाह तो बड़ा बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है।"

32. कहो, "अल्लाह और रसूल की इताअत करो।" फिर अगर वो मुंह मोड़ें,

मुल्-क मन् तशा-उ' व तन्ज़िअुल्मुल्-क मिम्मन् तशा-उ' व तुअिज़्ज़ु मन् तशा-उ व तुज़िल्लु मन् तशा-उ बि-यदिकल्-ख़ैरु, इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (26)

तूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व तूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व तुख़्रिजुल् हय्-य मिनल्-मय्यिति व तुख़्रिजुल मय्यि-त मिनल्हय्यि व तर्ज़ुक़ु मन् तशा-उ बिग़ैरि हिसाब (27)

ला यत्तख़िज़िल् मुअ्मिनूनल काफ़िरी-न औलिया-अ मिन दूनिल-मुअ्मिनी-न व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि-क फ़लै-स मिनल्लाहि फ़ी शैइन् इल्ला अन् तत्तक़ू मिन्हुम् तुक़ातन्, व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू, व इलल्लाहिल्-मसीर (28)

क़ुल इन् तुख़्फ़ू मा फ़ी सुदूरिकुम् औ तुब्दूहु यअ्लम्हुल्लाहु, व यअ्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (29)

यौ-म तजिदु कुल्लु नफ़्सिम् मा अ़मिलत् मिन् ख़ैरिम् मुह्ज़रंव्-व मा अ़मिलत् मिन् सूइन् त-वद्दु लौ अन्-न बैनहा व बैनहू अ-मदम् बअ़ीदन्, व युहज़्ज़िरुकुमुल्लाहु नफ़्सहू, वल्लाहु रऊफ़ुम् बिल्अ़िबाद (30) ●

क़ुल इन् कुन्तुम् तुहिब्बूनल्ला-ह फ़त्तबिअूनी युह्बिब्कुमुल्लाहु व यग्फ़िर् लकुम् ज़ुनूबकुम, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (31)

क़ुल अतीअुल्ला-ह वर्रसू-ल फ-इन्

الْمُلْكَ مَنْ تَشَآءُ وَتَنْزِعُ الْمُلْكَ
مِمَّنْ تَشَآءُ ز وَتُعِزُّ مَنْ تَشَآءُ
وَتُذِلُّ مَنْ تَشَآءُ ط بِيَدِكَ الْخَيْرُ ط
اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝٢٦
تُوْلِجُ الَّيْلَ فِی النَّهَارِ وَتُوْلِجُ
النَّهَارَ فِی الَّيْلِ ز وَتُخْرِجُ الْحَیَّ مِنَ
الْمَيِّتِ وَتُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَیِّ ز
وَتَرْزُقُ مَنْ تَشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝٢٧
لَا يَتَّخِذِ الْمُؤْمِنُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ
اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ج
وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَلَيْسَ مِنَ
اللّٰهِ فِیْ شَیْءٍ اِلَّآ اَنْ تَتَّقُوْا مِنْهُمْ
تُقٰىةً ط وَيُحَذِّرُكُمُ اللّٰهُ نَفْسَهٗ ط
وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝٢٨
قُلْ اِنْ تُخْفُوْا مَا فِیْ صُدُوْرِكُمْ
اَوْ تُبْدُوْهُ يَعْلَمْهُ اللّٰهُ ط وَيَعْلَمُ
مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ط
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝٢٩
يَوْمَ تَجِدُ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
مِنْ خَيْرٍ مُّحْضَرًا ۛ وَّمَا عَمِلَتْ
مِنْ سُوْٓءٍ ۛ تَوَدُّ لَوْ اَنَّ بَيْنَهَا
وَبَيْنَهٗٓ اَمَدًا بَعِيْدًا ط وَيُحَذِّرُكُمُ
ع اللّٰهُ نَفْسَهٗ ط وَاللّٰهُ رَءُوْفٌ بِالْعِبَادِ ۝٣٠
قُلْ اِنْ كُنْتُمْ تُحِبُّوْنَ اللّٰهَ فَاتَّبِعُوْنِیْ
يُحْبِبْكُمُ اللّٰهُ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ط
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣١
قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ ج فَاِنْ

تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٣٢﴾
اِنَّ اللّٰهَ اصْطَفٰىٓ اٰدَمَ وَنُوْحًا وَّاٰلَ
اِبْرٰهِيْمَ وَاٰلَ عِمْرٰنَ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٣﴾
ذُرِّيَّةً ۢ بَعْضُهَا مِنْ بَعْضٍ ۗ وَاللّٰهُ
سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿٣٤﴾
اِذْ قَالَتِ امْرَاَتُ عِمْرٰنَ رَبِّ اِنِّىْ
نَذَرْتُ لَكَ مَا فِىْ بَطْنِىْ مُحَرَّرًا فَتَقَبَّلْ
مِنِّىْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ﴿٣٥﴾
فَلَمَّا وَضَعَتْهَا قَالَتْ رَبِّ اِنِّىْ
وَضَعْتُهَآ اُنْثٰى ۗ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا
وَضَعَتْ ۗ وَلَيْسَ الذَّكَرُ كَالْاُنْثٰى ۚ
وَاِنِّىْ سَمَّيْتُهَا مَرْيَمَ وَاِنِّىْٓ
اُعِيْذُهَا بِكَ وَذُرِّيَّتَهَا مِنَ الشَّيْطٰنِ
الرَّجِيْمِ ﴿٣٦﴾
فَتَقَبَّلَهَا رَبُّهَا بِقَبُوْلٍ حَسَنٍ
وَّاَنْۢبَتَهَا نَبَاتًا حَسَنًا ۙ وَّكَفَّلَهَا
زَكَرِيَّا ۚ كُلَّمَا دَخَلَ عَلَيْهَا زَكَرِيَّا
الْمِحْرَابَ ۙ وَجَدَ عِنْدَهَا رِزْقًا ۚ
قَالَ يٰمَرْيَمُ اَنّٰى لَكِ هٰذَا ۗ قَالَتْ
هُوَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ يَرْزُقُ
مَنْ يَّشَآءُ بِغَيْرِ حِسَابٍ ﴿٣٧﴾
هُنَالِكَ دَعَا زَكَرِيَّا رَبَّهٗ ۚ قَالَ
رَبِّ هَبْ لِىْ مِنْ لَّدُنْكَ ذُرِّيَّةً
طَيِّبَةً ۚ اِنَّكَ سَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٨﴾
فَنَادَتْهُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَهُوَ قَآئِمٌ
يُّصَلِّىْ فِى الْمِحْرَابِ ۙ اَنَّ اللّٰهَ
يُبَشِّرُكَ بِيَحْيٰى مُصَدِّقًا ۢ بِكَلِمَةٍ

तवल्लौ फ़-इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल् काफ़िरीन (32)

इन्नल्लाहस्तफ़ा आद-म व नूहंव्-व आ-ल इब्राही-म व आ-ल अिम्रा-न अ़लल् आ़लमीन (33)

ज़ुर्रिय्यतम् बअ्ज़ुहा मिम्-बअ्ज़िन्, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (34)

इज़् क़ा-लतिम्र-अतु अिम्रा-न रब्बि इन्नी नज़र्तु ल-क मा फ़ी बत्नी मुहर्-रन् फ़-तक़ब्बल् मिन्नी इन्न-क अन्तस्-समीअुल् अ़लीम (35)

फ़-लम्मा व-ज़अत्हा क़ालत् रब्बि इन्नी वज़अ्तुहा उन्सा, वल्लाहु अअ्लमु बिमा व-ज़अ़त्, व लैसज़्ज़-करु कल्उन्सा व इन्नी सम्मैतुहा मर्य-म व इन्नी उअ़ीज़ुहा बि-क व ज़ुर्रिय्य-तहा मिनश्-शैतानिर् रजीम (36)

फ़-तक़ब्ब-लहा रब्बुहा बि-क़बूलिन् ह-सनिंव्-व अम्ब-तहा नबातन् ह-सनंव्-व कफ़्फ़-लहा ज़-करिय्या, कुल्लमा द-ख़-ल अ़लैहा ज़-करिय्यल्- मिह्रा-ब व-ज-द अ़िन्दहा रिज़्क़न् क़ा-ल या मर्यमु अन्ना लकि हाज़ा, क़ालत् हु-व मिन् अ़िन्दिल्लाहि, इन्नल्ला-ह यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब (37)

हुनालि-क दआ़ ज़-करिय्या रब्बहू क़ा-ल रब्बि हब् ली मिल्लदुन्-क ज़ुर्रिय्यतन् तय्यि-बतन् इन्न-क समीअुद्दुआ़-इ (38)

फ़नादत्हुल् मलाइ-कतु व हु-व क़ा-इमुंय्युसल्ली फ़िल्-मिह्राबि अन्नल्ला-ह युबश्शिरु-क बि-यह्या मुसद्दिक़म् बि-कलिमतिम्

तो ख़ुदा भी अहले कुफ़्र से मुहब्बत नहीं करता।

33. अल्लाह ने आदम, नूह, आले इब्राहीम और आले इमरान को तमाम अहले आलम पर तरजीह देकर मुंतख़ब फ़रमाया,

34. मुसलसल एक नस्ल की सूरत में, उसके बाज़ बाज़ से थे, अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

35. याद करो जब इमरान की औरत ने कहा, "मेरे रब, जो बच्चा मेरे पेट में है मैंने उसे हर चीज़ से छुड़ा कर तेरे लिए नज़्र किया है। पस तू उसे मेरी तरफ़ से क़बूल फ़रमा, बेशक तू सब कुछ सुनता, जानता है।"

36. फिर जब उसके यहां बच्ची पैदा हुई तो उसने कहा, "मेरे रब, मेरे यहां तो लड़की पैदा हुई है।" — अल्लाह तो जानता ही था जो कुछ उसके यहां पैदा हुआ था। और वह बेटा उस लड़की की तरह नहीं हो सकता — "और मैंने उसका नाम मरयम रखा है, और मैं उसे और उसकी औलाद को मरदूद शैतान से महफ़ूज़ रहने के लिए तेरी पनाह में देती हूं।"

37. पस उसके ख़ुदावन्द ने उसका अच्छी पज़ीराई के साथ इसतिक़्बाल किया, और उमदा तौर पर उसे परवान चढ़ाया, और ज़करिया को उसका सरपरस्त बनाया। जब कभी ज़करिया उसके पास मेहराब में जाता तो उसके पास कुछ रिज़्क़ पाता। उसने कहा, "ऐ मरयम, ये चीज़ें तुझे कहां से मिलती हैं"? बोली, "यह अल्लाह के पास से है।" बेशक अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।

38. इस मौक़े पर ज़करिया ने अपने रब को पुकारा, कहा, "मेरे रब, मुझे तू अपनी जनाब से पाकीज़ा औलाद दे। दुआ सुनने वाला तू ही है।"

39. फिर फ़रिश्तों ने उसे जबकि वह मेहराब में खड़ा नमाज़ पढ़ रहा था आवाज़ दी कि "अल्लाह तुझे यह्या की ख़ुशख़बरी देता है, जो अल्लाह के एक कलिमे का मिसदाक़, सरदार,

इंतिहाई ज़ब्त-ए-नफ़्स से काम लेनेवाला और सालेहीन में से एक नबी होगा।"

40. कहा, "मेरे रब! मेरे यहां लड़का कैसे होगा, जबकि मुझे बुढ़ापा आ गया और मेरी बीवी बांझ है ?" फ़रमाया, "इसी तरह अल्लाह जो चाहता है करता है"।

41. बोला, "मेरे रब! मेरे लिए कोई हुक्म तजवीज़ फ़रमा दे।" कहा, "तुम्हारे लिए हुक्म यह है कि तुम लोगों से तीन दिन तक सिवाय इशारे के कोई बातचीत न करो। अपने रब को बकसरत याद करो, और शाम व सहर उसकी तसबीह करते रहो।"

42. और जब फ़रिश्तों ने कहा, "ऐ मरयम! अल्लाह ने तुझे बरगुज़ीदा किया, और तुझे पाकीज़गी अता फ़रमाई; और दुनिया की औरतों के मुक़ाबले में तुझे मुंतख़ब किया।

43. ऐ मरयम, अपने ख़ुदावन्द की ग़ायत दर्जा इताअत में लगी रह, और सजदा कर और रुकू करनेवालों के साथ तू भी रुकू करती रह।"

44. यह ग़ैब की ख़बरों में से है जिसकी वही हम तुम्हारी तरफ़ कर रहे हैं। तुम तो उस वक़्त उनके पास नहीं थे जब वो उनके क़लम फेंक रहे थे कि उनमें कौन मरयम की कफ़ालत करता है; और न तुम उस वक़्त उनके पास मौजूद थे जब वो आपस में झगड़ रहे थे।

45. और याद करो जब फ़रिश्तों ने कहा, "ऐ मरयम! अल्लाह तुझे अपने एक कलिमे की ख़ुशख़बरी देता है जिसका नाम मसीह, ईसा इब्ने मरयम होगा; दुनिया और आख़िरत में ज़ी वजाहत और मुक़र्रब लोगों में से होगा।

46. वह लोगों से गहवारे में भी बात करेगा और बड़ी उम्र को पहुंच कर भी और वह सालेह होगा।"

47. बोली, "मेरे रब, मेरे लड़का कहां से होगा जबकि मुझे किसी

मिनल्लाहि व सय्यिदंव्-व हसूरंव-व नबिय्यम् मिनस्सालिहीन (39)

क़ा-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली गुलामुंव्-व क़द् ब-ल-ग़नियल् कि-बरू वम्र-अती आक़िरून्, क़ा-ल कज़ालिकल्लाहु यफ़अलु मा यशा-उ (40)

क़ा-ल रब्बिज्अल्ली आ-यतन्, क़ा-ल आ-यतु-क अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स-त अय्यामिन् इल्ला रम्ज़न्, वज़्कुर् रब्ब-क कसीरंव्-व सब्बिह् बिल्-अशिय्यि वल्-इब्कार (41) ●

व इज़् क़ालतिल् मलाइ-कतु या मर्यमु इन्नल्लाहस्तफ़ाकि व तह्ह-रकि वस्तफ़ाकि अ़ला निसा-इल् आ़लमीन (42)

या मर्यमुक़्नुती लिरब्बिकि वस्जुदी वर्कअ़ी मअ़र्राकिअ़ीन (43)

ज़ालि-क मिन् अम्बा-इल् ग़ैबि नूहीहि इलै-क, व मा कुन्-त लदैहिम इज़् युल्कू-न अक़्ला-महुम् अय्युहुम् यक्फ़ुलु मर्य-म व मा कुन्-त लदैहिम् इज़् यख़्तसिमून (44)

इज़् क़ालतिल् मलाइ-कतु या मर्यमु इन्नल्ला-ह युबश्शिरुकि बि-कलि-मतिम् मिन्हुस्मुहुल-मसीहु अ़ीसब्नु मर्य-म वजीहन् फ़िद्दुन्या वल्आख़ि-रति व मिनल् मुक़र्रबीन (45)

व युकल्लिमुन्ना-स फ़िल्मह्दि व कह्लंव्-व मिनस्सालिहीन (46)

क़ालत् रब्बि अन्ना यकूनु ली व-लदुंव्-व

مِّنَ اللّٰهِ وَسَیِّدًا وَّحَصُوْرًا وَّنَبِیًّا
مِّنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝٣٩
قَالَ رَبِّ اَنّٰی یَكُوْنُ لِیْ غُلٰمٌ وَّقَدْ
بَلَغَنِیَ الْكِبَرُ وَامْرَاَتِیْ عَاقِرٌ ؕ
قَالَ كَذٰلِكَ اللّٰهُ یَفْعَلُ مَا یَشَآءُ ۝٤٠
قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّیْۤ اٰیَةً ؕ قَالَ
اٰیَتُكَ اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَةَ
اَیَّامٍ اِلَّا رَمْزًا ؕ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
ع كَثِیْرًا وَّسَبِّحْ بِالْعَشِیِّ وَالْاِبْكَارِ ۝٤١
وَاِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ یٰمَرْیَمُ اِنَّ
اللّٰهَ اصْطَفٰىكِ وَطَهَّرَكِ وَاصْطَفٰىكِ
عَلٰی نِسَآءِ الْعٰلَمِیْنَ ۝٤٢
یٰمَرْیَمُ اقْنُتِیْ لِرَبِّكِ وَاسْجُدِیْ
وَارْكَعِیْ مَعَ الرّٰكِعِیْنَ ۝٤٣
ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَیْبِ نُوْحِیْهِ
اِلَیْكَ ؕ وَمَا كُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ
یُلْقُوْنَ اَقْلَامَهُمْ اَیُّهُمْ یَكْفُلُ
مَرْیَمَ ۪ وَمَا كُنْتَ لَدَیْهِمْ اِذْ
یَخْتَصِمُوْنَ ۝٤٤
اِذْ قَالَتِ الْمَلٰٓئِكَةُ یٰمَرْیَمُ اِنَّ
اللّٰهَ یُبَشِّرُكِ بِكَلِمَةٍ مِّنْهُ ۖۗ
اسْمُهُ الْمَسِیْحُ عِیْسَی ابْنُ مَرْیَمَ
وَجِیْهًا فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَةِ وَمِنَ
الْمُقَرَّبِیْنَ ۝٤٥
وَیُكَلِّمُ النَّاسَ فِی الْمَهْدِ وَكَهْلًا
وَّمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝٤٦
قَالَتْ رَبِّ اَنّٰی یَكُوْنُ لِیْ وَلَدٌ

आदमी ने छुवा तक नहीं"? कहा, "ऐसा ही होगा। अल्लाह पैदा करता है जो चाहता है। जब वह एक बात का फ़ैसला करता है तो उसको यही कहता है कि "हो जा," तो वह हो जाता है।

48. और उसको किताब व हिकमत और तौरात व इंजील की तालीम देगा।

49. और उसे बनी इसराईल की तरफ़ रसूल बनाकर भेजेगा कि "मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक निशानी लेकर आया हूं कि मैं तुम्हारे लिए मिट्टी के परिन्दे की सी सूरत का ख़ाका बनाता हूं; फिर उसमें फूंक मारता हूं, तो वह अल्लाह के हुक्म से परवाज़ करने वाला हो जाता है। और मैं अल्लाह के हुक्म से अन्धे और कोढ़ी को अच्छा कर देता हूं, और मुर्दे को ज़िन्दा करता हूं। और तुम्हें बताता हूं जो कुछ तुम खाते हो, और जो कुछ तुम अपने घरों में जमा करके रखते हो। बेशक इसमें तुम्हारे लिए एक निशानी है, बशर्ते कि तुम ईमान लाने को तैयार हो।

50. और तसदीक़ करता हुआ आया हूं तौरात की जो मेरे आगे है, और इसलिए आया हूं कि बाज़ उन चीज़ों को जो तुम्हारे लिए हराम थीं उन्हें तुम्हारे लिए हलाल कर दूं। और मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक निशानी लेकर आया हूं; लिहाज़ा अल्लाह से डरो, और मेरी इताअत करो।

51. बेशक अल्लाह मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब वही है; लिहाज़ा तुम उसी की बन्दगी करो। यही सीधा रास्ता है,"।

52. फिर जब ईसा ने उनके कुफ़्र व इनकार को महसूस कर लिया तो कहा "कौन अल्लाह की तरफ़ बढ़ने में मेरा मददगार होता है?" हवारियों ने कहा कि "हम अल्लाह के मददगार हैं; हम अल्लाह पर ईमान लाए; और गवाह रहिए कि हम मुस्लिम हैं।

53. हमारे रब, तूने जो कुछ उतारा हम उसपर ईमान लाए और हमने इस रसूल की पैरवी इख़्तियार की। पस तू हमें शहादत देनेवालों में लिख ले"।

लम् यम्सस्नी ब-शरून्, क़ा-ल कज़ालिकिल्लाहु यख़्लुक़ु मा यशा-उ, इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून (47)

व युअ़ल्लिमुहुल्-किता-ब वल्-हिक्म-त वत्तौरा-त वल्-इन्जील (48)

व रसूलन् इला बनी इस्राई-ल अन्नी क़द् जिअ्तुकुम् बिआ-यतिम् मिर्रब्बिकुम् अन्नी अख़्लुक़ु लकुम् मिनत्तीनि कहै-अतित्तैरि फ़-अन्फ़ुख़ु फ़ीहि फ़-यकूनु तैरम् बि-इज़्निल्लाहि व उब्रिउल्-अक्म-ह वल्-अब्र-स व उह्यिल्मौता बि-इज़्निल्लाहि व उनब्बिउकुम् बिमा तअ्कुलू-न व मा तद्दख़िरू-न फ़ी बुयूतिकुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (49)

व मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदय्-य मिनत्तौराति व लि-उहिल्-ल लकुम् बअ्ज़ल्लज़ी हुर्रि-म अलैकुम् व जिअ्तुकुम् बिआ-यतिम् मिर्रब्बिकुम्, फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (50)

इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ्बुदूहु, हाज़ा सिरातुम् मुस्तक़ीम (51)

फ़-लम्मा अ-हस्-स ईसा मिन्हुमुल् कुफ़्-र क़ा-ल मन् अन्सारी इलल्लाहि, क़ालल्-हवारिय्यू-न नह्नु अन्सारुल्लाहि आमन्ना बिल्लाहि वश्हद् बि-अन्ना मुस्लिमून (52)

रब्बना आमन्ना बिमा अन्ज़ल्-त वत्त-बअ्नर्-रसू-ल फ़क्तुब्ना म-अश्शाहिदीन (53)

وَلَمْ يَمْسَسْنِىْ بَشَرٌ ؕ قَالَ كَذٰلِكِ
اللّٰهُ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ اِذَا قَضٰٓى
اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿٤٧﴾
وَيُعَلِّمُهُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ
وَالْاِنْجِيْلَ ﴿٤٨﴾ ج

وَرَسُوْلًا اِلٰى بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ اَنِّىْ
قَدْ جِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۙ
اَنِّىْٓ اَخْلُقُ لَكُمْ مِّنَ الطِّيْنِ
كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ فَاَنْفُخُ فِيْهِ فَيَكُوْنُ
طَيْرًا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ وَاُبْرِئُ الْاَكْمَهَ
وَالْاَبْرَصَ وَاُحْىِ الْمَوْتٰى بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ
وَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا تَاْكُلُوْنَ وَمَا
تَدَّخِرُوْنَ ۙ فِىْ بُيُوْتِكُمْ ؕ اِنَّ
فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٤٩﴾ ج

وَمُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَىَّ مِنَ
التَّوْرٰىةِ وَلِاُحِلَّ لَكُمْ بَعْضَ الَّذِىْ
حُرِّمَ عَلَيْكُمْ وَجِئْتُكُمْ بِاٰيَةٍ مِّنْ
رَّبِّكُمْ ۟ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ ﴿٥٠﴾
اِنَّ اللّٰهَ رَبِّىْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ
هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ﴿٥١﴾

فَلَمَّآ اَحَسَّ عِيْسٰى مِنْهُمُ الْكُفْرَ
قَالَ مَنْ اَنْصَارِىْٓ اِلَى اللّٰهِ ؕ قَالَ
الْحَوَارِيُّوْنَ نَحْنُ اَنْصَارُ اللّٰهِ ۚ اٰمَنَّا
بِاللّٰهِ ۚ وَاشْهَدْ بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٥٢﴾
رَبَّنَآ اٰمَنَّا بِمَآ اَنْزَلْتَ وَاتَّبَعْنَا الرَّسُوْلَ
فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٥٣﴾

54. और वो चाल चले, तो अल्लाह ने भी उसका तोड़ किया, और अल्लाह बेहतरीन तोड़ करने वाला है।

55. जब अल्लाह ने कहा, "ऐ ईसा! मैं तुझे अपने कब्ज़े में ले लूंगा और तुझे अपनी तरफ़ उठा लूंगा, और अहले कुफ़्र से तुझे पाक कर दूंगा, और तेरे पैरौओं (अनुयायिओं) को क़ियामत के दिन तक उन लोगों पर ग़ालिब रखूंगा जिन्होंने कुफ़्र व इनकार किया। फिर मेरी तरफ़ तुम्हें लौटना है, पस तुम्हारे दरमियान उस चीज़ का फ़ैसला कर दूंगा जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ करते रहे हो।

56. तो जिन लोगों ने इनकार की रविश इख़्तियार की उन्हें दुनिया और आख़िरत में सख़्त अज़ाब दूंगा। उनका कोई मददगार न होगा।"

57. रहे वो लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए उन्हें वह उनके पूरा-पूरा बदला देगा; अल्लाह ज़ालिमों से मुहब्बत नही रखता।

58. ये आयतें हैं और हिकमत से लबरेज़ ज़िक्र जो हम तुम्हें सुना रहे हैं।

59. बेशक ईसा की मिसाल अल्लाह के नज़दीक आदम की सी है कि उसे मिट्टी से बनाया, फिर उसको कहा कि "हो जा", तो वह हो जाता है।

60. हक तुम्हारे रब की तरफ़ से है तो तुम शक में न पड़ना।

61. अब इसके बाद कि तुम्हारे पास इल्म आ चुका है, कोई तुमसे इस मुआमले मे हुज्जत करे तो कह दो, "आओ हम अपने बेटों को बुला लें और तुम अपने बेटों को बुला लो, और हम अपनी औरतों को बुला लें, और तुम अपनी औरतों को, और हम अपने आपको और तुम अपने आपको ले आओ, फिर मिलकर दुआ करें और

व म-करू व म-करल्लाहु, वल्लाहु ख़ैरूल् माकिरीन ● (54) ●

इज़् क़ालल्लाहु या ईसा इन्नी मु-तवफ़्फ़ी-क व राफ़िउ-क इलय्-य व मुतह्हिरु-क मिनल्लज़ी-न क-फ़रू व जाअिलुल्लज़ीनत् -त-बऊ-क फ़ौक़ल्लज़ी-न क-फ़रू इला यौमिल्-क़ियामति सुम्-म इलय्-य मर्जिअुकुम् फ़-अह्कुमु बैनकुम् फ़ीमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (55)

फ़-अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-उअ़ज़्ज़िबुहुम् अज़ाबन् शदीदन् फ़िद्दुन्या वल्- आख़ि-रति व मा लहुम् मिन्-नासिरीन (56)

व अम्मल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़-युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम्, वल्लाहु ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन (57)

ज़ालि-क नत्लूहु अलै-क मिनल्-आयाति वज़्ज़िक्रिल् हकीम (58)

इन्-न म-स-ल- ईसा अिन्दल्लाहि क-म- सलि आद-म ख़-ल-क़हू मिन् तुराबिन् सुम्-म क़ा-ल लहू कुन् फ़-यकून (59)

अल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ला तकुम् मिनल्-मुम्तरीन (60)

फ़-मन् हाज्ज-क फ़ीहि मिम्-बअ़दि मा जाअ-क मिनल् अ़िल्मि फ़क़ुल् तआ़लौ नद्अु अब्ना-अना व अब्ना-अकुम् व निसा-अना व निसा-अकुम् व अन्फ़ु-सना व अन्फ़ु-सकुम्, सुम्-म नब्तहिल् फ़-नज्अल्-

وَمَكَرُوْا وَمَكَرَ اللّٰهُ ؕ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ۝٥٤

اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسٰٓى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۚ ثُمَّ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ فَاَحْكُمُ بَيْنَكُمْ فِيْمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝٥٥

فَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَاُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؗ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٥٦

وَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٧

ذٰلِكَ نَتْلُوْهُ عَلَيْكَ مِنَ الْاٰيٰتِ وَالذِّكْرِ الْحَكِيْمِ ۝٥٨

اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝٥٩

اَلْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝٦٠

فَمَنْ حَآجَّكَ فِيْهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ فَقُلْ تَعَالَوْا نَدْعُ اَبْنَآءَنَا وَاَبْنَآءَكُمْ وَنِسَآءَنَا وَنِسَآءَكُمْ وَاَنْفُسَنَا وَاَنْفُسَكُمْ ۟ ثُمَّ نَبْتَهِلْ فَنَجْعَلْ

झूटों पर अल्लाह की लानत भेजें !"

62. बेशक यही सच्चा बयान है। और अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं; और अल्लाह ही ग़ालिब, निहायत हिकमत वाला है।

63. फिर अगर वो मुंह मोड़ें तो अल्लाह मुफ़सिदों को खूब जानता है।

64. कहो, "ऐ अहले किताब, हमारे और अपने दरमियान की एक सीधी यकसां बात की तरफ़ आओ; यह कि हम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करें, और न उसके साथ किसी चीज़ को शरीक ठहराएं और न आपस में हम में कोई एक-दूसरे को अल्लाह से हट कर रब बनाएं!" फिर अगर वो एराज़ करें (मुंह मोड़ें) तो कह दो, "गवाह रहो हम तो मुस्लिम हैं"।

65. ऐ अहले किताब, तुम इब्राहीम के बारे में हमसे क्यों झगड़ते हो? हालांकि तौरात और इंजील तो उसके बाद उतरी हैं। तो क्या तुम समझ से काम नही लेते?

66. ये तुम लोग हो कि उसके बारे में तो हुज्जत कर चुके जिसका तुम्हें कुछ इल्म था; अब उसके बारे में क्यों हुज्जत करते हो जिसके बारे में तुम्हें कुछ भी इल्म नहीं? जानता अल्लाह है तुम नहीं जानते।

67. इब्राहीम न यहूदी था और न ईसाई; वह तो एक तरफ़ का होकर रहनेवाला मुस्लिम था; वह मुशरिक हरगिज़ न था।

68. बेशक इब्राहीम से सबसे ज़्यादा निसबत उसके पैरौओं, और इस नबी और अहले ईमान को हासिल है; और अल्लाह ईमानवालों का हामी और दोस्त है।

69. अहले किताब के एक गिरोह के लोग आरज़ूमन्द हैं कि काश! वो तुम्हें गुमराह कर दें; हालांकि वो महज़ अपने आपको गुमराह कर रहे हैं, लेकिन उन्हें इसका शऊर नहीं।

लअ्-नतल्लाहि अ़लल्काज़िबीन (61)

इन्-न हाज़ा लहुवल् क़-ससुल्-हक़्क़ु व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहु, व इन्नल्ला-ह ल-हुवल्-अ़ज़ीज़ुल् हकीम (62)

फ़-इन् तवल्लौ फ़-इन्नल्ला-ह अ़लीमुम् बिल्मुफ़्सिदीन (63) ●

क़ुल् या अह्लल्-किताबि तआ़लौ इला कलि-मतिन् सवा-इम् बैनना व बैनकुम् अल्ला नअ़्बु-द इल्लल्ला-ह व ला नुश्रि-क बिही शैअंव्-व ला यत्तख़ि-ज़ बअ़्ज़ुना बअ़्ज़न् अर्बाबम् मिन् दूनिल्लाहि, फ़-इन् तवल्लौ फ़-क़ूलुश्-हदू बिअन्ना मुस्लिमून (64)

या अह्लल्-किताबि लि-म तुहाज्जू-न फ़ी इब्राही-म व मा उन्ज़ि-लतित्तौरातु वल्-इन्जीलु इल्ला मिम्-बअ़्दिही, अ-फ़ला तअ़्क़िलून (65)

हा-अन्तुम् हा-उला-इ हाजज्तुम् फ़ीमा लकुम् बिही अ़िल्मुन् फ़लि-म तुहाज्जू-न फ़ी मा लै-स लकुम् बिही अ़िल्मुन्, वल्लाहु यअ़्लमु व अन्तुम् ला तअ़्लमून (66)

मा-का-न इब्राहीमु यहूदिय्यंव्-व ला नस्रानिय्यंव्-व लाकिन् का-न हनीफ़म् मुस्लिमन्, व मा का-न मिनल् मुश्रिकीन (67)

इन्-न औलन्नासि बि-इब्राही-म लल्लज़ीनत्त- बअ़ूहु व हाज़न्नबिय्यु वल्लज़ी-न आमनू, वल्लाहु वलिय्युल् मुअ़्मिनीन (68)

वद्दत्ताइ-फ़तुम् मिन् अह़्लिल्-किताबि लौ युज़िल्लू-नकुम्, व मा युज़िल्लू-न इल्ला अन्फ़ु-सहुम व मा यश्अ़ुरून (69)

لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَى الْكٰذِبِيْنَ ﴿٦١﴾
اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْقَصَصُ الْحَقُّ ۚ
وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ ۭ وَ اِنَّ اللّٰهَ
لَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٦٢﴾
ع فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٦٣﴾
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ تَعَالَوْا اِلٰى
كَلِمَةٍ سَوَاۗءٍۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اَلَّا
نَعْبُدَ اِلَّا اللّٰهَ وَلَا نُشْرِكَ بِهٖ
شَيْـــًٔا وَّلَا يَتَّخِذَ بَعْضُنَا بَعْضًا
اَرْبَابًا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَقُوْلُوا اشْهَدُوْا بِاَنَّا مُسْلِمُوْنَ ﴿٦٤﴾
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تُحَاۗجُّوْنَ فِيْٓ
اِبْرٰهِيْمَ وَمَآ اُنْزِلَتِ التَّوْرٰىةُ وَالْاِنْجِيْلُ
اِلَّا مِنْۢ بَعْدِهٖ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٦٥﴾
هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَاۗءِ حَاجَجْتُمْ فِيْمَا لَكُمْ
بِهٖ عِلْمٌ فَلِمَ تُحَاۗجُّوْنَ فِيْمَا
لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٦﴾
مَا كَانَ اِبْرٰهِيْمُ يَهُوْدِيًّا وَّلَا
نَصْرَانِيًّا وَّلٰكِنْ كَانَ حَنِيْفًا مُّسْلِمًا ۭ
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿٦٧﴾
اِنَّ اَوْلَى النَّاسِ بِاِبْرٰهِيْمَ لَلَّذِيْنَ
اتَّبَعُوْهُ وَھٰذَا النَّبِيُّ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا ۭ وَاللّٰهُ وَلِيُّ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٨﴾
وَدَّتْ طَّاۗىِٕفَةٌ مِّنْ اَھْلِ الْكِتٰبِ
لَوْ يُضِلُّوْنَكُمْ ۭ وَمَا يُضِلُّوْنَ اِلَّآ
اَنْفُسَھُمْ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٦٩﴾

70. ऐ अहले किताब, तुम अल्लाह की आयतों का इनकार क्यों करते हो जबकि तुम खुद गवाह हो?

71. ऐ अहले किताब, हक़ को बातिल के साथ क्यों ख़लत-मलत करते और दानिस्ता हक़ को छुपाते हो?

72. अहले किताब का एक गिरोह कहता है कि "अहले ईमान पर जो कुछ उतरा है उसपर सुबह को ईमान लाओ, और शाम को इनकार कर दो; ताकि वो फिर जाएं;

73. और तुम अपने दीन के पैरौओं के सिवा किसी का यक़ीन न करो — कह दो, 'असल हिदायत तो अल्लाह की हिदायत है' — कि कहीं जो चीज़ तुम्हें हासिल है उसी जैसी चीज़ किसी और को हासिल हो जाए, या वो तुम्हारे रब के नज़दीक तुम्हारे हमपल्ला हो जाएं"। कह दो कि "फ़ज़्ल तो अल्लाह के हाथ में है, जिसको चाहता है अता करता है; और अल्लाह वुसअतवाला, सब कुछ जानने वाला है।

74. वह जिसे चाहता है अपनी रहमत के लिए मख़सूस कर लेता है; अल्लाह बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है।"

75. और अहले किताब में कोई तो ऐसा है कि अगर तुम उसके पास माल व दौलत का एक ढेर भी अमानत रख दो, तो वह उसे तुम्हें अदा कर देगा; और उनमें कोई ऐसा है कि अगर तुम एक दीनार भी उसकी अमानत में रखो तो जब तक कि तुम उसके सर पर सवार न हो, वह उसे तुम तक पहुंचने न देगा, यह इसलिए कि वो कहते हैं कि उन "ग़ैर अहले किताब के मुआमले में हम पर कोई गिरिफ़्त नहीं।" और वो दानिस्ता अल्लाह पर झूट मढ़ते हैं।

76. क्यों नहीं, जो कोई अपना अहद पूरा करेगा और डर रखेगा, तो अल्लाह भी डर रखनेवालों से मुहब्बत करता है।

77. रहे वो लोग जो अल्लाह के अहद व पैमान, और अपनी क़समों

या अह्लल्-किताबि लि-म तक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि व अन्तुम् तश्हदून (70)

या अह्लल् किताबि लि-म तल्बिसूनल् हक़्-क़ बिल् बातिलि व तक्तुमूनल् हक़्-क़ व अन्तुम् तअ्लमून (71)●

व क़ालत्ताइ-फ़तुम् मिन् अह्लिल्-किताबि आमिनू बिल्लज़ी उन्ज़ि-ल अ़लल्लज़ी-न आमनू वज्हन्नहारि वक्फ़ुरू आख़ि-रहू लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (72)

व ला तुअ्मिनू इल्ला लिमन् तबि-अ़ दीनकुम, क़ुल् इन्नल्हुदा हुदल्लाहि अंय्युअ्ता अ-हदुम् मिस्-ल मा ऊतीतुम् औ युहाज्जूकुम् अ़िन्-द रब्बिकुम्, क़ुल् इन्नल् फ़ज़्-ल बि-यदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (73)

यख़्तस्सु बिरह्मतिही मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल् अ़ज़ीम (74)

व मिन् अह्लिल्- किताबि मन् इन् तअ्मन्हु बिक़िन्तारिंय्युअद्दिही इलै-क व मिन्हुम् मन् इन् तअ्मन्हु बिदीनारिल् ला युअद्दिही इलै-क इल्ला मा दुम्-त अ़लैहि क़ा-इमन्, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू लै-स अ़लैना फ़िल्उम्मिय्यी-न सबीलुन् व यक़ूलू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब व हुम् यअ्लमून (75)

बला मन् औफ़ा बि-अ़ह्दिही वत्तक़ा फ़-इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुत्तक़ीन (76)

इन्नल्लज़ी-न यश्तरू-न बि-

يَاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ وَاَنْتُمْ تَشْهَدُوْنَ ۝٧٠
يَاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَلْبِسُوْنَ الْحَقَّ
بِالْبَاطِلِ وَتَكْتُمُوْنَ الْحَقَّ وَاَنْتُمْ
ع تَعْلَمُوْنَ ۝٧١
وَقَالَتْ طَّآئِفَةٌ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
اٰمِنُوْا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ عَلَى الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَجْهَ النَّهَارِ وَاكْفُرُوْٓا اٰخِرَهٗ
لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝٧٢
وَلَا تُؤْمِنُوْٓا اِلَّا لِمَنْ تَبِعَ دِيْنَكُمْ ؕ
قُلْ اِنَّ الْهُدٰى هُدَى اللّٰهِ ۙ اَنْ
يُّؤْتٰٓى اَحَدٌ مِّثْلَ مَآ اُوْتِيْتُمْ اَوْ
يُحَآجُّوْكُمْ عِنْدَ رَبِّكُمْ ؕ قُلْ اِنَّ الْفَضْلَ
بِيَدِ اللّٰهِ ۚ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
وَاسِعٌ عَلِيْمٌ ۝٧٣
يَّخْتَصُّ بِرَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ
ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٧٤
وَمِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ مَنْ اِنْ تَاْمَنْهُ
بِقِنْطَارٍ يُّؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
اِنْ تَاْمَنْهُ بِدِيْنَارٍ لَّا يُؤَدِّهٖٓ اِلَيْكَ
اِلَّا مَا دُمْتَ عَلَيْهِ قَآئِمًا ؕ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لَيْسَ عَلَيْنَا فِي
الْاُمِّيّٖنَ سَبِيْلٌ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٧٥
بَلٰى مَنْ اَوْفٰى بِعَهْدِهٖ وَاتَّقٰى فَاِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ الْمُتَّقِيْنَ ۝٧٦
اِنَّ الَّذِيْنَ يَشْتَرُوْنَ بِعَهْدِ

का थोड़ी क़ीमत पर सौदा करते हैं, उनका आख़िरत में कोई हिस्सा नहीं; अल्लाह न तो उनसे बात करेगा, और न क़ियामत के दिन उनकी तरफ़ देखेगा, और न ही उन्हें उमदगी और निखार अता फ़रमाएगा; उनके लिए तो दर्दनाक अज़ाब मुक़द्दर है।

78. उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो अपनी ज़बानों का उलट-फेर कर के किताब पढ़ते हैं कि तुम समझो कि वह किताब ही में से है, हालांकि वह किताब में से नहीं होता; और वो कहते हैं कि "वह अल्लाह की जानिब से है," जबकि वह अल्लाह की जानिब से नहीं होता, और वो दानिस्ता झूट घढ़कर ख़ुदा की तरफ़ मंसूब करते हैं।

79. किसी आदमी के लिए यह मुमकिन न था कि अल्लाह उसे किताब, और हिकमत और नुबूवत अता फ़रमाए, और वह लोगों से कहने लगे कि "तुम अल्लाह को छोड़कर मेरे इबादत गुज़ार बनो!" बल्कि वह तो यही कहेगा कि "तुम रब्बानी बनो, इसलिए कि तुम किताब की तालीम देते हो, और इसलिए कि तुम ख़ुद पढ़ते हो!"

80. और न वह तुम्हें इस बात का हुक्म देगा कि तुम फ़रिश्तों और नबियों को अपना रब बना लो, क्या वह तुम्हें कुफ़्र का हुक्म देगा, जबकि तुम मुस्लिम हो?

81. और याद करो जब अल्लाह ने नबियों के मुतअल्लिक अहद लिया कि "मैंने तुम्हें जो किताब और हिकमत अता की, इसके बाद तुम्हारे पास कोई रसूल उसकी तसदीक़ करता हुआ आए जो तुम्हारे पास मौजूद है, तो तुम ज़रूर उस पर ईमान लाओगे और लाज़िमन उसकी मदद करोगे"। कहा, "क्या तुमने इक़रार किया? और उसपर मेरी तरफ़ से डाली हुई ज़िम्मेदारी का बोझ उठाया?" बोले, "हमने इक़रार किया!" कहा, "अच्छा तो इसकी गवाही दो, और मैं भी तुम्हारे साथ गवाह हूं!"

अ़हि्दल्लाहि व ऐमानिहिम् स-मनन् क़लीलन् उलाइ-क ला ख़ला-क़ लहुम् फ़िल्-आख़ि-रति व ला युकल्लिमुहुमुल्लाहु व ला यन्ज़ुरू इलैहिम् यौमल्-क़ियामति व ला युज़क्कीहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (77)

व इन्-न मिन्हुम् ल-फ़रीक़ंय्यल्वू-न अल्सि-न-तहुम् बिल्किताबि लि-तह्सबूहु मिनल्-किताबि व मा हु-व मिनल्-किताबि व यक़ूलू-न हु-व मिन् अ़िन्दिल्लाहि व मा हु-व मिन् अ़िन्दिल्लाहि व यक़ूलू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब व हुम् यअ़्लमून (78)

मा का-न लि-ब-शरिन् अंय्युअ्ति-यहुल्लाहुल् किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त सुम्-म यक़ू-ल लिन्नासि कूनू अ़िबादल्ली मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् कूनू रब्बानिय्यी-न बिमा कुन्तुम् तुअ़ल्लिमूनल्-किता-ब व बिमा कुन्तुम् तद्रुसून (79)

व ला यअ्मु-रकुम् अन् तत्तख़िज़ुल् - मलाइ-क-त वन्नबिय्यी-न अर्बाबन्, अ-यअ्मुरुकुम् बिल्कुफ़्रि बअ्-द इज़् अन्तुम् मुस्लिमून (80)●

व इज़् अ-ख़ज़ल्लाहु मीसाक़न् नबिय्यी-न लमा आतैतुकुम् मिन् किताबिंव्-व हिक्मतिन् सुम्-म जा अकुम् रसूलुम् मुसद्दिक़ुल्लिमा म-अ़कुम् लतुअ्मिनुन्-न बिही व ल-तन्सुरुन्नहू, क़ा-ल अ-अक़्रर्तुम् व अ-ख़ज़्तुम् अ़ला ज़ालिकुम् इस्री, क़ालू अक़्रर्ना, क़ा-ल फ़श्हदू व अ-न म-अ़कुम् मिनश्शाहिदीन (81)

اللهِ وَاَيْمَانِهِمْ ثَمَنًا قَلِيْلًا اُولٰٓئِكَ
لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ وَلَا
يُكَلِّمُهُمُ اللهُ وَلَا يَنْظُرُ اِلَيْهِمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَلَا يُزَكِّيْهِمْ ۖ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٧٧
وَاِنَّ مِنْهُمْ لَفَرِيْقًا يَّلْوٗنَ
اَلْسِنَتَهُمْ بِالْكِتٰبِ لِتَحْسَبُوْهُ مِنَ
الْكِتٰبِ وَمَا هُوَ مِنَ الْكِتٰبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ
هُوَ مِنْ عِنْدِ اللهِ وَمَا هُوَ مِنْ عِنْدِ
اللهِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ عَلَى اللهِ الْكَذِبَ
وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٧٨
مَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّؤْتِيَهُ اللهُ الْكِتٰبَ
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ ثُمَّ يَقُوْلَ
لِلنَّاسِ كُوْنُوْا عِبَادًا لِّىْ مِنْ دُوْنِ
اللهِ وَلٰكِنْ كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ
تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ وَبِمَا كُنْتُمْ تَدْرُسُوْنَ ۝٧٩
وَلَا يَاْمُرَكُمْ اَنْ تَتَّخِذُوا الْمَلٰٓئِكَةَ
وَالنَّبِيّٖنَ اَرْبَابًا ۗ اَيَاْمُرُكُمْ بِالْكُفْرِ
ع بَعْدَ اِذْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝٨٠
وَاِذْ اَخَذَ اللهُ مِيْثَاقَ النَّبِيّٖنَ
لَمَآ اٰتَيْتُكُمْ مِّنْ كِتٰبٍ وَّحِكْمَةٍ
ثُمَّ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مُّصَدِّقٌ لِّمَا
مَعَكُمْ لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَلَتَنْصُرُنَّهٗ ۗ
قَالَ ءَاَقْرَرْتُمْ وَاَخَذْتُمْ عَلٰى
ذٰلِكُمْ اِصْرِىْ ۗ قَالُوْٓا اَقْرَرْنَا ۗ
قَالَ فَاشْهَدُوْا وَاَنَا مَعَكُمْ
مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝٨١

82. फिर इसके बाद जो फिरेगा, तो ऐसे ही लोग फ़ासिक़ हैं।

83. अब क्या ये लोग अल्लाह के दीन के सिवा किसी और दीन के तालिब हैं, हालांकि आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है खुशी से या मजबूर हो कर उसी के आगे झुका हुआ है, और उसी की तरफ़ सब को लौटना है?

84. कहो कि "हम तो अल्लाह पर और उस चीज़ पर ईमान लाए जो हम पर उतरी है और जो इब्राहीम, इसमाईल, इसहाक़ और याक़ूब और उनकी औलाद पर नाज़िल हुई उसपर भी, और जो मूसा और ईसा और दूसरे नबियों को उनके रब की जानिब से अता हुई उसपर भी हम ईमान रखते हैं; हम उनमें एक-दूसरे के दरमियान फ़र्क़ नहीं करते, और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं!"

85. जो इस्लाम के सिवा किसी और दीन का तालिब होगा, तो उसकी तरफ़ से कुछ भी क़बूल न किया जाएगा; और आख़िरत में वह घाटा उठाएगा।

86. अल्लाह उन लोगों को कैसे हिदायत देगा जो अपने ईमान के बाद कुफ़्र कर बैठे, हालांकि वो खुद इसकी गवाही दे चुके हैं कि यह रसूल सच्चा है, और उनके पास वाज़ेह निशानियां भी आ चुकी हैं? अल्लाह ज़ालिम क़ौम को हिदायत नहीं दिया करता।

87. ऐसे लोगों का सिला यही है कि उनपर अल्लाह और फ़रिश्तों और तमाम इनसानों की लानत होगी,

88. उसी में वो हमेशा रहेंगे, न उनका अज़ाब हल्का होगा; और न उन्हें मुहलत ही दी जाएगी।

89. अलबत्ता जिन लोगों ने इसके बाद तौबा कर ली और अपने तर्ज़-ए-अमल को दुरुस्त कर लिया तो बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है।

90. रहे वो लोग जिन्होंने अपने ईमान के बाद कुफ़्र किया और कुफ़्र में बढ़ते ही गए, उनकी तौबा हरगिज़

फ़-मन् तवल्ला बअ्-द ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल् फ़ासिक़ून (82)

अ-फ़ग़ै-र दीनिल्लाहि यब्ग़ू-न व लहू अस्ल-म मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअंव्-व करहंव्-व इलैहि युर्जअून (83)

क़ुल् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल अ़लैना व मा उन्ज़ि-ल अ़ला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब वल्अस्बाति व मा ऊति-य मूसा व अ़ीसा वन्नबिय्यू-न मिर्रब्बिहिम् ला नुफ़र्रिक़ु बै-न अ-हदिम् मिन्हुम् व नह्नु लहू मुस्लिमून (84)

व मंय्यब्तग़ि ग़ैरल्-इस्लामि दीनन् फ़-लंय्युक़्ब-ल मिन्हु व हु-व फ़िल्-आख़ि-रति मिनल् ख़ासिरीन (85)

कै-फ यह्दिल्लाहु क़ौमन् क-फ़रू बअ्-द ईमानिहिम् व शहिदू अन्नर्रसू-ल हक़्क़ुंव् - व जा-अहुमुल्बय्यिनातु, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन (86)

उलाइ-क जज़ाउहुम् अन्-न अ़लैहिम् लअ्-नतल्लाहि वल्मलाइ-कति वन्नासि अज्मअ़ीन (87)

ख़ालिदी-न फ़ीहा ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुमुल्-अ़ज़ाबु व ला हुम् युन्ज़रून (88)

इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क व अस्लहू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (89)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बअ्-द ईमानिहिम् सुम्मज़्दादू कुफ़्रल्-लन् तुक़्ब-ल

فَمَنْ تَوَلّٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٨٢﴾
اَفَغَيْرَ دِيْنِ اللّٰهِ يَبْغُوْنَ وَلَهٗٓ اَسْلَمَ
مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ طَوْعًا
وَّكَرْهًا وَّاِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ﴿٨٣﴾
قُلْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ
عَلَيْنَا وَمَآ اُنْزِلَ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ
وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ
وَالْاَسْبَاطِ وَمَآ اُوْتِىَ مُوْسٰى وَ
عِيْسٰى وَالنَّبِيُّوْنَ مِنْ رَّبِّهِمْ ۠
لَا نُفَرِّقُ بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ ۡ
وَنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٨٤﴾
وَمَنْ يَّبْتَغِ غَيْرَ الْاِسْلَامِ دِيْنًا
فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْهُ ۚ وَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ
مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٨٥﴾
كَيْفَ يَهْدِى اللّٰهُ قَوْمًا كَفَرُوْا
بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ وَشَهِدُوْٓا اَنَّ الرَّسُوْلَ
حَقٌّ وَّجَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى
الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٨٦﴾
اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ اَنَّ عَلَيْهِمْ لَعْنَةَ
اللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ﴿٨٧﴾
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ لَا يُخَفَّفُ عَنْهُمُ الْعَذَابُ
وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿٨٨﴾
اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ
وَاَصْلَحُوْا ۣ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٨٩﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بَعْدَ اِيْمَانِهِمْ
ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّنْ تُقْبَلَ

क़बूल न की जाएगी; हक़ीक़त में गुमराह वही हैं।

91. बेशक जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और काफ़िर ही रह कर मरे, तो उनमें किसी से ज़मीन भर सोना भी, अगर वह फ़िदया में दे क़बूल न किया जाएगा; ऐसे लोगों के लिए दर्दनाक अज़ाब है, और उनका कोई मददगार न होगा।

92. तुम नेकी और वफ़ादारी के दर्जे को नहीं पहुंच सकते जब तक कि उन चीज़ों को ख़र्च न करो जिनसे तुम्हें मुहब्बत है; और जो चीज़ भी तुम ख़र्च करोगे वह ख़ुदा के इल्म में होगी।

93. हर एक खाना बनी इसराईल के लिए हलाल था बजुज़ उन चीज़ों के जिन्हें तौरात के उतरने से पहले इसराईल ने ख़ुद अपने ऊपर हराम कर लिया था। कहो, "तौरात लाओ और पढ़ो उसे अगर तुम सच्चे हो!"

94. अब इसके बाद भी जो शख़्स अल्लाह से झूटी बातें मंसूब करे, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।

95. कहो, "अल्लाह ने सच फ़रमाया है; लिहाज़ा इब्राहीम के तरीक़े पर चलो, जो एक तरफ़ का हो गया था, मुशरिक न था"।

96. यक़ीनन (इबादत के लिए) पहला घर जो इंसानों के लिए बनाया गया वही है जो मक्का में है, बरकतवाला, सरापा हिदायत अहले आलम के लिए।

97. उसके मुताल्लिक़ खुली आयतें हैं, वह इब्राहीम का मक़ाम है, और जो उसके अन्दर आया वह मामून व महफ़ूज़ हो गया। इनसानों पर ख़ुदा का हक़ है कि जो वहां तक पहुंचने की इसतिताअत रखता हो इस घर का हज करे, और जो कुफ़्र करे तो ख़ुदा दुनियावालों से बेनियाज़ है।

98. कहो, "ऐ अहले किताब, तुम क्यों अल्लाह की आयतों का इनकार

तौबतुहुम् व उलाइ-क हुमुज़्ज़ाल्लून (90)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़-लंय्युक़्ब-ल मिन् अ-हदिहिम् मिल्उल्-अर्ज़ि ज़-हबंव्-व लविफ़्तदा बिही, उलाइ-क लहुम् अज़ाबुन् अलीमुंव्-व मा लहुम् मिन्नासिरीन (91) ●

लन् तनालुल्बिर्-र हत्ता तुन्फ़िक़ू मिम्मा तुहिब्बू-न, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़-इन्नल्ला-ह बिही अ़लीम (92)

कुल्लुत्तआमि का-न हिल्लल् लि-बनी इस्राई-ल इल्ला मा हर्र-म इस्राईलु अ़ला नफ़्सिही मिन् क़ब्लि अन् तुनज़्ज़लत्तौरातु, क़ुल् फ़अ्तू बित्तौराति फ़त्लूहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (93)

फ़-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल् कज़ि-ब मिम्-बअ्दि ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (94)

क़ुल् स-दक़ल्लाहु फ़त्तबिअू मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, व मा का-न मिनल् मुश्रिकीन (95)

इन्-न अव्व-ल बैतिंव्वुज़ि-अ लिन्नासि लल्लज़ी बि-बक्क-त मुबा-रकव्ं-व हुदल्-लिल्आलमीन (96)

फ़ीहि आयातुम् बय्यिनातुम् मक़ामु इब्राही-म, व मन् द-ख़-लहू का-न आमिनन्, व लिल्लाहि अ़लन्नासि हिज्जुल्बैति मनिस्तता-अ इलैहि सबीलन्, व मन् क-फ़-र फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अ़निल् आलमीन (97)

क़ुल् या अह्लल्-किताबि लि-म तक्फ़ुरू-न बिआयाति

تَوْبَتُهُمْ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الضَّآلُّوْنَ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَ مَاتُوْا وَهُمْ
كُفَّارٌ فَلَنْ يُّقْبَلَ مِنْ اَحَدِهِمْ
مِّلْءُ الْاَرْضِ ذَهَبًا وَّلَوِ افْتَدٰى
بِهٖ ۭ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ
ع وَّمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝
لَنْ تَنَالُوا الْبِرَّ حَتّٰى تُنْفِقُوْا مِمَّا
تُحِبُّوْنَ ۣ۬ وَمَا تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ
فَاِنَّ اللّٰهَ بِهٖ عَلِيْمٌ ۝
كُلُّ الطَّعَامِ كَانَ حِلًّا لِّبَنِيْٓ
اِسْرَآءِيْلَ اِلَّا مَا حَرَّمَ اِسْرَآءِيْلُ
عَلٰى نَفْسِهٖ مِنْ قَبْلِ اَنْ تُنَزَّلَ
التَّوْرٰىةُ ۭ قُلْ فَاْتُوْا بِالتَّوْرٰىةِ
فَاتْلُوْهَآ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝
فَمَنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ مِنْۢ
بَعْدِ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۝
قُلْ صَدَقَ اللّٰهُ ۣ فَاتَّبِعُوْا مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ
حَنِيْفًا ۭ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝
اِنَّ اَوَّلَ بَيْتٍ وُّضِعَ لِلنَّاسِ لَلَّذِيْ
بِبَكَّةَ مُبٰرَكًا وَّهُدًى لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝
فِيْهِ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ مَّقَامُ اِبْرٰهِيْمَ ۚ
وَمَنْ دَخَلَهٗ كَانَ اٰمِنًا ۭ وَلِلّٰهِ
عَلَى النَّاسِ حِجُّ الْبَيْتِ مَنِ
اسْتَطَاعَ اِلَيْهِ سَبِيْلًا ۭ وَمَنْ
كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنِ
الْعٰلَمِيْنَ ۝
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ

करते हो हालांकि तुम जो कुछ कर रहे हो सब अल्लाह की नज़र में है?"

99. कहो, "ऐ अहले किताब, तुम अहले ईमान को अल्लाह के रास्ते से क्यों रोकते हो उसमें कजी पैदा करने की ख़्वाहिश रखते हुए, हालांकि तुम ख़ूब आगाह हो? अल्लाह उससे बेख़बर नहीं है जो कुछ तुम कर रहे हो।"

100. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अगर तुमने जिन्हें किताब अता हुई थी उनके किसी गिरोह की बात मान ली, तो वो तुम्हारे ईमान के बाद फिर तुम्हें काफ़िर बना देंगे।

101. अब तुम कुफ़्र में कैसे पड़ सकते हो जबकि तुम्हें अल्लाह की आयतें सुनाई जा रही हैं, और उसका रसूल तुम्हारे दरमियान मौजूद है? जो कोई अल्लाह को मज़बूती से पकड़ ले, तो वह सीधे रास्ते पर आ गया।

102. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह का डर रखो जैसाकि उसका डर रखने का हक़ है, और मौत तुम्हें बस इस हालत में आए कि तुम मुस्लिम हो।

103. और सब मिलकर अल्लाह की रस्सी को मज़बूती से पकड़ लो और तफ़रिक़ा में न पड़ो और अल्लाह की उस नवाज़िश को याद करो जो तुम पर हुई जब तुम आपस में दुश्मन थे, तो उसने तुम्हारे दिल एक-दूसरे के साथ जोड़ दिए और तुम उसकी इनायत से भाई-भाई बन गए। तुम आग के एक गढ़े के किनारे आ लगे थे, तो उसने उससे तुम्हें बचा लिया; इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतें खोल-खोलकर बयान करता है ताकि तुम हिदायतयाब हो।

104. और तुम्हारे पैकर में एक ऐसी उम्मत ज़ाहिर होनी चाहिए जो नेकी की तरफ़ दावत दे, और भलाई का हुक्म दे और बुराई से रोके; यही फ़लाह पानेवाले हैं।

105. उन लोगों की तरह न हो जाना जो तफ़रिक़ा में पड़ गए और इसके बाद कि उनके पास वाज़ेह निशानियां आ चुकी थीं वो इख़्तिलाफ़ में पड़ गए; वही हैं जिनके लिए बड़ा अज़ाब है,

ल्लाहि वल्लाहु शहीदुन् अ़ला मा तअ्मलून (98)

कुल् या अह्लल्-किताबि लि-म तसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि मन् आम-न तब्ग़ूनहा अि-वजंव्-व अन्तुम् शु-हदा-उ, व मल्लाहु बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून (99)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तुतीअू फ़रीक़म् मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब यरुद्दूकुम् बअ्-द ईमानिकुम् काफ़िरीन (100)

व कै-फ़ तक्फ़ुरू-न व अन्तुम् तुत्ला अ़लैकुम् आयातुल्लाहि व फ़ीकुम् रसूलुहू, व मंय्यअ्तसिम् बिल्लाहि फ़-क़द् हुदि-य इला सिरातिम् मुस्तक़ीम (101) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह हक़्-क़ तुक़ातिही व ला तमूतुन्-न इल्ला व अन्तुम् मुस्लिमून (102)

वअ्तसिमू बि-हब्लिल्लाहि जमीअंव्-व ला तफ़र्रक़ू वज़्कुरू निअ्-मतल्लाहि अ़लैकुम् इज़् कुन्तुम् अअ्दा-अन् फ़-अल्ल-फ़ बै-न क़ुलूबिकुम् फ़-अस्बह्तुम् बिनिअ्मतिही इख़्वानन् व कुन्तुम् अ़ला शफ़ा हुफ़्रतिम् मिनन्नारि फ़-अन्क़-ज़कुम् मिन्हा, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तह्तदून (103)

वल्तकुम् मिन्कुम् उम्मतुंय्यद्अू-न इलल्ख़ैरि व यअ्मुरू-न बिल्मअ्रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि, व उलाइ-क हुमुल् मुफ़्लिहून (104)

व ला तकूनू कल्लज़ी-न तफ़र्रक़ू वख़्त-लफ़ू मिम्-बअ्दि मा जा-अहुमुल-बय्यिनातु व उलाइ-क लहुम-अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (105)

اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ شَهِيدٌ عَلٰى مَا تَعْمَلُونَ ﴿٩٨﴾
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لِمَ تَصُدُّونَ
عَنْ سَبِيلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ تَبْغُونَهَا
عِوَجًا وَّ اَنْتُمْ شُهَدَآءُ ۗ وَمَا اللّٰهُ
بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُونَ ﴿٩٩﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوٓا اِنْ تُطِيعُوا
فَرِيقًا مِّنَ الَّذِينَ اُوتُوا الْكِتٰبَ
يَرُدُّوكُمْ بَعْدَ اِيمَانِكُمْ كٰفِرِينَ ﴿١٠٠﴾
وَكَيْفَ تَكْفُرُونَ وَاَنْتُمْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ
اٰيٰتُ اللّٰهِ وَفِيكُمْ رَسُولُهٗ ۗ وَمَنْ يَّعْتَصِمْ
ع بِاللّٰهِ فَقَدْ هُدِيَ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيمٍ ﴿١٠١﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ
تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ﴿١٠٢﴾
وَاعْتَصِمُوا بِحَبْلِ اللّٰهِ جَمِيعًا وَّلَا
تَفَرَّقُوا ۪ وَاذْكُرُوا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
اِذْ كُنْتُمْ اَعْدَآءً فَاَلَّفَ بَيْنَ
قُلُوبِكُمْ فَاَصْبَحْتُمْ بِنِعْمَتِهٖٓ اِخْوَانًا ۚ
وَكُنْتُمْ عَلٰى شَفَا حُفْرَةٍ مِّنَ
النَّارِ فَاَنْقَذَكُمْ مِّنْهَا ۗ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿١٠٣﴾
وَلْتَكُنْ مِّنْكُمْ اُمَّةٌ يَّدْعُونَ
اِلَى الْخَيْرِ وَيَاْمُرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَيَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ ۗ وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُونَ ﴿١٠٤﴾
وَلَا تَكُونُوا كَالَّذِينَ تَفَرَّقُوا وَاخْتَلَفُوا
مِنْ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ الْبَيِّنٰتُ ۗ وَاُولٰٓئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿١٠٥﴾

106. (यह अज़ाब उस दिन होगा) जिस दिन कितने ही चेहरे रौशन होंगे और कितने ही चेहरे काले पड़ जाएंगे। तो जिनके चेहरे काले पड़ गए होंगे. (वो हमेशा अज़ाब में मुबतला रहेंगे। खुली निशानियां आने के बाद जो इख़्तिलाफ़ में पड़े उनसे कहा जाएगा) क्या तुमने अपने ईमान के बाद कुफ़्र इख़्तियार किया है? तो लो अब चखो अज़ाब उस कुफ़्र के बदले में जो तुम करते रहे हो।"

107. रहे वो लोग जिनके चेहरे रौशन होंगे, वो अल्लाह की रहमत में होंगे, वो उसी में हमेशा रहेंगे।

108. ये अल्लाह की आयतें हैं जिन्हें हम मक़्सद के तहत तुम्हें सुना रहे हैं। अल्लाह अहले आलम पर कोई ज़ुल्म नहीं करना चाहता।

109. अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और सारे मुआमलात अल्लाह ही के हुज़ूर पेश होते हैं।

110. तुम एक बेहतरीन उम्मत हो जो लोगों के सामने लाई गई, तुम भलाई का हुक्म देते हो, और बुराई से रोकते हो, और अल्लाह पर ईमान रखते हो। अगर अहले किताब भी ईमान लाते तो उनके लिए यह बेहतर होता; उनमें मोमिन भी हैं, लेकिन अकसर उनमें नाफ़रमान ही हैं।

111. बजुज़ थोड़ी अज़ीयतरसानी के वो तुम्हारा कुछ बिगाड़ नहीं सकते; और अगर तुमसे लड़ेंगे तो तुम्हें पीठ दिखा जाएंगे, फिर उन्हें कोई मदद भी नहीं मिलेगी।

112. वो जहां कहीं भी पाए गए उनपर ज़िल्लत थोप दी गई, अलबत्ता अल्लाह की रस्सी थामें यानी लोगों की रस्सी (तो इससे बच सकते हैं); वो ख़ुदा के ग़ज़ब के सज़ावार हुए, और उनपर पस्ती मुसल्लत कर दी गई; यह इसलिए कि वो अल्लाह की आयतों का इनकार, और नबियों को नाहक़ क़त्ल करने के दरपे रहे हैं; यह इसलिए कि उन्होंने नाफ़रमानी की और हद से तजावुज़ करते रहे।

113. ये सब यकसां (एक जैसे) नहीं हैं; अहले किताब में कुछ लोग

यौ-म तब्यज़्ज़ु वुजूहुंव्-व तस्वद्दु वुजूहुन् फ-अम्मल्लज़ीनस्- वद्दत् वुजूहुहुम्, अ-कफ़र्तुम् बअ्-द ईमानिकुम् फज़ूक़ुल्-अज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (106)

व अम्मल्लज़ीनब् - यज़्ज़त् वुजूहुहुम् फ़-फ़ी रह्मतिल्लाहि, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (107)

तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिल्हक़्क़ि, व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल् लिल्आ़लमीन (108)

व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व इलल्लाहि तुर्जअुल उमूर (109) ●

कुन्तुम् ख़ै-र उम्मतिन्-उख़्रिजत् लिन्नासि तअ्मुरू-न बिल्मअ्रूफ़ि व तन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व तुअ्मिनू-न बिल्लाहि, व लौ आम-न अह्लुल्-किताबि लका-न ख़ैरल्लहुम, मिन्हुमुल् मुअ्मिनू-न व अक्सरुहुमुल् फ़ासिकून (110)

लंय्यज़ुर्रूकुम् इल्ला अज़न्, व इंय्युक़ातिलूकुम् युवल्लूकुमुल अद्बा-र, सुम्-म ला युन्सरून (111)

ज़ुरिबत् अ़लैहिमुज़्ज़िल्लतु ऐनमा सुक़िफ़ू इल्ला बि-हब्लिम् मिनल्लाहि व हब्लिम्-मिनन्नासि व बाऊ बि-ग़-ज़बिम् मिनल्लाहि व ज़ुरिबत् अ़लैहिमुल्-मस्क-नतु, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कानू यक्फ़ुरू-न बिआयातिल्लाहि व यक़्तुलूनल्-अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िन्, ज़ालि-क बिमा अ़-सव्-व कानू यअ्तदून (112)

लैसू सवाअन्, मिन् अह्लिल्-किताबि

يَوْمَ تَبْيَضُّ وُجُوْهٌ وَّتَسْوَدُّ وُجُوْهٌ ۚ
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْوَدَّتْ وُجُوْهُهُمْ ۟
اَكَفَرْتُمْ بَعْدَ اِيْمَانِكُمْ فَذُوْقُوا
الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ﴿١٠٦﴾
وَاَمَّا الَّذِيْنَ ابْيَضَّتْ وُجُوْهُهُمْ فَفِيْ
رَحْمَةِ اللّٰهِ ؕ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٧﴾
تِلْكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتْلُوْهَا عَلَيْكَ بِالْحَقِّ ؕ
وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ ظُلْمًا لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٨﴾
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
ع وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ﴿١٠٩﴾
كُنْتُمْ خَيْرَ اُمَّةٍ اُخْرِجَتْ لِلنَّاسِ
تَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَتَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَتُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ؕ وَلَوْ
اٰمَنَ اَهْلُ الْكِتٰبِ لَكَانَ خَيْرًا
لَّهُمْ ؕ مِنْهُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ وَاَكْثَرُهُمُ
الْفٰسِقُوْنَ ﴿١١٠﴾
لَنْ يَّضُرُّوْكُمْ اِلَّاۤ اَذًى ؕ وَاِنْ
يُّقَاتِلُوْكُمْ يُوَلُّوْكُمُ الْاَدْبَارَ ۟
ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ ﴿١١١﴾
ضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الذِّلَّةُ اَيْنَ مَا
ثُقِفُوْۤا اِلَّا بِحَبْلٍ مِّنَ اللّٰهِ وَحَبْلٍ
مِّنَ النَّاسِ وَبَآءُوْ بِغَضَبٍ مِّنَ
اللّٰهِ وَضُرِبَتْ عَلَيْهِمُ الْمَسْكَنَةُ ؕ
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ وَيَقْتُلُوْنَ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ حَقٍّ ؕ
ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿١١٢﴾
لَيْسُوْا سَوَآءً ؕ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ

सीधे रास्ते पर हैं, वो औक़ात-ए-शब में अल्लाह की आयतें पढ़ते हैं और वो सजदा करते रहने वाले हैं।

114. वो अल्लाह और रोज़-ए-आख़िर पर ईमान रखते हैं, और भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं, और नेक कामों में सबक़त करते हैं; वो सालेहीन में से हैं।

115. जो नेकी भी वो करेंगे, उनकी नाक़दरी न होगी; ख़ुदा अहले तक़्वा से बख़ूबी वाक़िफ़ है।

116. रहे वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न उनके माल उनके कुछ काम आ सकेंगे, और न उनकी औलाद ही; ये तो आग में पड़नेवाले हैं, उसी में हमेशा रहेंगे।

117. इस दुनिया की ज़िन्दगी की ख़ातिर जो कुछ भी वो ख़र्च करते हैं उसकी मिसाल उस हवा की सी है जिसमें पाला हो और वह उन लोगों की खेती पर चल जाए जिन्होंने अपना बुरा किया और उसे तबाह करके रख दे; यह अल्लाह ने उनपर कोई ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि वो तो ख़ुद अपने ऊपर ज़ुल्म ढाए जा रहे हैं।

118. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने सिवा दूसरों को अपना महरम-ए-राज़ न बनाओ; वो तुम्हें नुक़सान पहुंचाने में कोई कसर न उठा रखते; जितनी भी तुम ज़हमत में पड़ो वही उन्हें महबूब है। उनका बुग़्ज़ तो उनके मुंह से ज़ाहिर हो चुका है, और जो कुछ उनके सीने छुपाए हुए हैं वह तो उससे भी बढ़कर है। अगर तुम अक़्ल से काम लो तो हमने तुम्हारे लिए निशानियां खोल कर बयान कर दी हैं।

119. यह तो तुम ही जो उनसे मुहब्बत रखते हो, और वो तुमसे मुहब्बत नहीं करते, हालांकि तुम पूरी किताब पर ईमान रखते हो, और जब वो तुमसे मिलते हैं तो कहने को तो कहते हैं कि "हम ईमान लाए हैं," लेकिन जब वो अलग होते हैं, तो तुम

उम्मतुन् क़ाइ-मतुंय्यत्लू-न आयातिल्लाहि आनाअल्लैलि व हुम् यस्जुदून (113)

युअ्मिनू-न बिल्लाहिवल्यौमिल्-आख़िरि व यअ्मुरू-न बिल्-मअ्रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व युसारिअू-न फ़िल्ख़ौराति, व उलाइ-क मिनस्सालिहीन (114)

व मा यफ़्अ़लू मिन् ख़ैरिन् फ़-लंय्युक्फ़रूहु, वल्लाहु अ़लीमुम् बिल्-मुत्तक़ीन (115)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लन् तुग़्नि-य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन्, व उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (116)

म-सलु मा युन्फ़िक़ू-न फ़ी हाज़िहिल् हयातिद्दुन्या क-म-सलि रीहिन् फ़ीहा सिर्रुन् असाबत् हर्-स क़ौमिन् ज़-लमू अन्फु-सहुम् फ-अह्ल-कत्हु, व मा ज़-ल-महुमुल्लाहु व लाकिन् अन्फु-सहुम् यज़्लिमून (117)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू बितान-तम् मिन् दूनिकुम् ला यअ्लूनकुम् ख़बालन्, वद्दू मा अ़नित्तुम् क़द् ब-दतिल्- बग़्ज़ा-उ मिन् अफ़्वाहिहिम् व मा तुख़फ़ी सुदूरुहुम् अक्बरु, क़द् बय्यन्ना लकुमुल-आयाति इन् कुन्तुम् तअ़्क़िलून (118)

हा-अन्तुम् उला-इ तुहिब्बूनहुम् व ला युहिब्बूनकुम् व तुअ्मिनू-न बिल्किताबि कुल्लिही व इज़ा लक़ूकुम् क़ालू आमन्ना व इज़ा ख़लौ अ़ज़्ज़ू अ़लैकुमुल-अनामि-ल

أُمَّةٌ قَآئِمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ
اٰنَآءَ الَّيْلِ وَهُمْ يَسْجُدُوْنَ ۝١١٣
يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ
يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ
وَاُولٰٓئِكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١١٤
وَمَا يَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ فَلَنْ يُّكْفَرُوْهُ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝١١٥
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ
اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ
وَاُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝١١٦
مَثَلُ مَا يُنْفِقُوْنَ فِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا كَمَثَلِ رِيْحٍ فِيْهَا صِرٌّ
اَصَابَتْ حَرْثَ قَوْمٍ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
فَاَهْلَكَتْهُ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ
وَلٰكِنْ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝١١٧
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا
بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ
خَبَالًا ؕ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ
بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۚۖ
وَمَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ؕ
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْقِلُوْنَ ۝١١٨
هٰٓاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَلَا
يُحِبُّوْنَكُمْ وَتُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ
كُلِّهٖ ۚ وَاِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ۚۖ
وَاِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ

पर मारे गुस्से के उंगलियां काटने लगते हैं। कह दो, "तुम अपने गुस्से में आप मरे जाओ; अल्लाह तो दिलों की बात जानता ही है!"

120. अगर तुम्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है तो उन्हें बुरी लगती है; लेकिन अगर तुम्हें कोई नागवार बात पेश आती है, तो उससे वो खुश हो जाते हैं। अगर तुमने सब्र व सबात से काम लिया और तक़्वा इख़्तियार किया, तो उनकी कोई चाल तुम्हें कुछ भी नुक़सान नहीं पहुंचा सकती; वो जो कुछ कर रहे हैं ख़ुदा ने उसे अपने घेरे में ले रखा है।

121. याद करो जब तुम सवेरे अपने घरवालों से रुख़्सत हो कर ईमान वालों को लड़ाई के मोर्चों पर लगा रहे थे — अल्लाह तो सब ही कुछ सुनता जानता है।

122. जब तुम्हारे दो गिरोहों ने हिम्मत हार जाने का इरादा किया, हालांकि अल्लाह उनका सरपरस्त मौजूद था और अहले ईमान का भरोसा तो अल्लाह ही पर होना चाहिए।

123. और बद्र में अल्लाह तुम्हारी मदद कर चुका था, जबकि तुम बहुत कमज़ोर हालत में थे। पस अल्लाह ही का डर रखो ताकि तुम शुक्रगुज़ार रहो।

124. जब तुम अहले ईमान से कह रहे थे कि "क्या यह तुम्हारे लिए काफ़ी नहीं है कि तुम्हारा रब तीन हज़ार फ़रिश्ते उतार कर तुम्हें मदद पहुंचाए?"

125. हां, क्यों नहीं। अगर तुम सब्र से काम लो और तक़्वा इख़्तियार करो, फिर दुश्मन दफ़अतन (अचानक) तुमपर चढ़ आए, तो तुम्हारा ख़ुदावन्द पांच हज़ार ग़ारतगर फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करेगा।

126. अल्लाह ने तो उसे तुम्हारे लिए बस एक ख़ुशख़बरी बनाया, और इसलिए कि तुम्हारे दिलों को इस से इत्मीनान हासिल हो — मदद तो बस अल्लाह ही के पास से आती है, जो ज़बरदस्त, निहायत हिकमतवाला है।

127. ताकि अहले कुफ़्र के एक

मिनल्-ग़ैज़ि, क़ुल मूतू बिग़ैज़िकुम्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर (119)

इन् तम्सस्कुम् ह-स-नतुन् तसुअ्हुम् व इन् तुसिब्कुम् सय्यि-अतुंय्यफ़्रहू बिहा, व इन् तस्बिरू व तत्तक़ू ला यज़ुर्रुकुम् कैदुहुम् शैअन्, इन्नल्ला-ह बिमा यअ्मलू-न मुहीत (120) ●

व इज़् ग़दौ-त मिन् अह्लि-क तुबव्विउल्-मुअ्मिनी-न मक़ाअि-द लिल्क़िताल, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (121)

इज़् हम्मत्ता-इ-फ़तानि मिन्कुम् अन् तफ़्शला वल्लाहु वलिय्युहुमा, व अ़लल्लाहि फ़ल्य- तवक्कलिल् मुअ्मिनून (122)

व लक़द् न-स-रकुमुल्लाह बि-बद्रिंव्-व अन्तुम् अज़िल्लतुन् फ़त्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (123)

इज़् तक़ूलु लिल्-मुअ्मिनी-न अलंय्यक्फ़ि-यकुम् अंय्युमिद्दकुम् रब्बुकुम् बि-सलासति आलाफ़िम् मिनल्-मलाइ-कति मुन्ज़लीन (124)

बला इन् तस्बिरू व तत्तक़ू व यअ्तूकुम् मिन् फ़ौरिहिम् हाज़ा युम्दिद्कुम् रब्बुकुम् बि-ख़म्सति आलाफ़िम् मिनल् मलाइ-कति मुसव्विमीन ● (125)

व मा ज-अ़-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा लकुम् व लि-तत्मइन्-न क़ुलूबुकुम् बिही, व मन्नस्रु इल्ला मिन् अ़िन्दिल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल् हकीम (126)

लि-यक़्त-अ़ त-रफ़म् मिनल्लज़ी-न

مِنَ الْغَيْظِ ۚ قُلْ مُوتُوا بِغَيْظِكُمْ ۗ
إِنَّ اللّٰهَ عَلِيمٌ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝١١٩
إِنْ تَمْسَسْكُمْ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۖ
وَإِنْ تُصِبْكُمْ سَيِّئَةٌ يَفْرَحُوا
بِهَا ۖ وَإِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا
لَا يَضُرُّكُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا ۗ
إِنَّ اللّٰهَ بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطٌ ۝١٢٠
وَإِذْ غَدَوْتَ مِنْ أَهْلِكَ تُبَوِّئُ
الْمُؤْمِنِينَ مَقَاعِدَ لِلْقِتَالِ ۗ وَاللّٰهُ
سَمِيعٌ عَلِيمٌ ۝١٢١
إِذْ هَمَّتْ طَائِفَتَانِ مِنْكُمْ أَنْ
تَفْشَلَا ۙ وَاللّٰهُ وَلِيُّهُمَا ۗ وَعَلَى
اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُونَ ۝١٢٢
وَلَقَدْ نَصَرَكُمُ اللّٰهُ بِبَدْرٍ
وَأَنْتُمْ أَذِلَّةٌ ۖ فَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تَشْكُرُونَ ۝١٢٣
إِذْ تَقُولُ لِلْمُؤْمِنِينَ أَلَنْ يَكْفِيَكُمْ
أَنْ يُمِدَّكُمْ رَبُّكُمْ بِثَلَاثَةِ آلَافٍ
مِنَ الْمَلَائِكَةِ مُنْزَلِينَ ۝١٢٤
بَلَىٰ ۙ إِنْ تَصْبِرُوا وَتَتَّقُوا وَ
يَأْتُوكُمْ مِنْ فَوْرِهِمْ هَٰذَا يُمْدِدْكُمْ
رَبُّكُمْ بِخَمْسَةِ آلَافٍ مِنَ الْمَلَائِكَةِ
مُسَوِّمِينَ ۝١٢٥
وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ إِلَّا بُشْرَىٰ لَكُمْ
وَلِتَطْمَئِنَّ قُلُوبُكُمْ بِهِ ۗ وَمَا النَّصْرُ
إِلَّا مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ الْعَزِيزِ الْحَكِيمِ ۝١٢٦
لِيَقْطَعَ طَرَفًا مِنَ الَّذِينَ

127. ताकि अहले कुफ़्र के एक हिस्से को काट ले या उन्हें बुरी तरह नीचा दिखाए कि वो नाकाम फिर जाएं।

128. तुम्हें इस मुआमले में कोई इख़्तियार नहीं — ख़्वाह वह उनकी तौबा क़बूल फ़रमाए, या उन्हें अज़ाब दे; क्योंकि उन्होंने ज़ुल्म किया है।

129. अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है; वह जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे अज़ाब दे; यूं तो अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

130. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, इज़ाफ़ा की ग़र्ज़ से सूद न खाओ जो कई गुना ज़ाइद हो सकता है, और अल्लाह से डरो ताकि तुम फ़लाहयाब हो सको,

131. और उस आग से बचो जो अहले कुफ़्र के लिए तैयार है।

132. और अल्लाह और रसूल की इताअत करो ताकि तुमपर रहम किया जाए।

133. और अपने रब की मग़फ़िरत और उस जन्नत की तरफ़ बढ़ो जिसकी वुसअत आसमानों और ज़मीन जैसी है, वो उन लोगों के लिए तैयार है जो डर रखते हैं।

134. वो जो ख़ुशहाली और तंगी हर हालत में ख़र्च करते रहते हैं, और गुस्से को ज़ब्त करते, और लोगों से दरगुज़र का मुआमला करते हैं — और अल्लाह भी अच्छे से अच्छा काम करने वालों को पसन्द करता है।

135. और जिनका हाल यह है कि जब वो कोई खुला गुनाह कर बैठते हैं या अपने आप पर सितम कर जाते हैं, तो फ़ौरन अल्लाह उन्हें याद आ जाता है, और वो अपने गुनाहों की बख़्शिश चाहने लगते हैं — और अल्लाह के सिवा कौन है, जो गुनाहों को बख़्श दे? और दानिस्ता वो अपने किए पर अड़े नहीं रहते।

136. उनका सिला उनके रब की मग़फ़िरत और ऐसे बाग़ात हैं जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वो

क-फ़रू औ यक्बि-तहुम् फ़-यन्क़लिबू ख़ा-इबीन (127)

लै-स ल-क मिनल् अम्रि शैउन् औ यतू-ब अ़लैहिम् औ युअ़ज़्ज़ि-बहुम् फ़-इन्नहुम् ज़ालिमून (128)

व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (129) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलुर्रिबा अज़्आ़फ़म् मुज़ा-अ़-फ़तन् वत्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (130)

वत्तक़ुन्-नारल्लती उअ़िद्दत् लिल्-काफ़िरीन (131)

व अतीअुल्ला-ह वर्रसू-ल लअ़ल्लकुम् तुर्हमून (132)

व सारिअू इला मग़्फ़ि-रतिम् मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्ज़ुहस् - समावातु वल्-अर्ज़ु उअ़िद्दत् लिल्मुत्तक़ीन (133)

अल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न फ़िस्सर्रा-इ वज़्ज़र्रा-इ वल्काज़िमीनल्-ग़ै-ज़ वल्आ़फ़ी-न अ़निन्नासि, वल्लाहु युहिब्बुल् मुह्सिनीन (134)

वल्लज़ी-न इज़ा फ़-अ़लू फ़ाहि-शतन् औ ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् ज़-करुल्ला-ह फ़स्तग़्फ़रू लिज़ुनूबिहिम्, व मंय्यग़्फ़िरुज़्ज़ुनू-ब इल्लल्लाहु व लम् युसिर्रू अ़ला मा फ़-अ़लू व हुम् यअ़्लमून (135)

उलाइ-क जज़ाउहुम् मग़्फ़ि-रतुम् मिर्रब्बिहिम् व जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-

كَفَرُوْٓا اَوْ يَكْبِتَهُمْ فَيَنْقَلِبُوْا
خَآئِبِيْنَ (١٢٧)
لَيْسَ لَكَ مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ اَوْ يَتُوْبَ
عَلَيْهِمْ اَوْ يُعَذِّبَهُمْ فَاِنَّهُمْ ظٰلِمُوْنَ (١٢٨)
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَ يُعَذِّبُ مَنْ
ع يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٢٩)
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوا
الرِّبٰوٓا اَضْعَافًا مُّضٰعَفَةً ۪ وَّاتَّقُوا
اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (١٣٠)
وَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِيْٓ اُعِدَّتْ لِلْكٰفِرِيْنَ (١٣١)
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ
تُرْحَمُوْنَ (١٣٢)
وَسَارِعُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ ۙ
اُعِدَّتْ لِلْمُتَّقِيْنَ (١٣٣)
الَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ فِي السَّرَّآءِ
وَ الضَّرَّآءِ وَ الْكٰظِمِيْنَ الْغَيْظَ
وَ الْعَافِيْنَ عَنِ النَّاسِ ؕ وَاللّٰهُ
يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (١٣٤)
وَ الَّذِيْنَ اِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً اَوْ
ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ ذَكَرُوا اللّٰهَ
فَاسْتَغْفَرُوْا لِذُنُوْبِهِمْ ۪ وَمَنْ يَّغْفِرُ
الذُّنُوْبَ اِلَّا اللّٰهُ ۫ وَلَمْ يُصِرُّوْا
عَلٰى مَا فَعَلُوْا وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ (١٣٥)
اُولٰٓئِكَ جَزَآؤُهُمْ مَّغْفِرَةٌ مِّنْ
رَّبِّهِمْ وَجَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا

हमेशा रहेंगे; और क्या ही अच्छा सिला है बाअमल लोगों का!

137. तुमसे पहले बहुत से वाक़िआत गुज़र चुके हैं; तो तुम ज़मीन में चल-फिरकर देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ है।

138. यह लोगों के लिए वाज़ेह बयान और डर रखनेवालों के लिए हिदायत और नसीहत है।

139. पस्त हिम्मत न हो, और न ग़म करो, अगर तुम मोमिन हो, जबकि हाल यह है कि तुम्हीं ग़ालिब हो।

140. अगर तुम्हें ज़ख़्म लगे तो उन लोगों को भी ऐसा ज़ख़्म लगा है, (जंग के) इन अय्याम (दिनों) को हम लोगों के दरमियान अदलते-बदलते रहते हैं, और ऐसा इसलिए हुआ कि अल्लाह अहले ईमान को जान ले, और तुम में कुछ लोगों को गवाह कर ले; — और अल्लाह उन लोगों को नहीं चाहता जो ज़ुल्म पेशा होते हैं।

141. और ताकि अल्लाह ईमान वालों को निखार दे, और अहले कुफ़्र को रफ़्ता-रफ़्ता ख़त्म कर दे।

142. क्या तुमने यह समझ रखा है कि जन्नत में यूंही जा दाख़िल होगे? जबकि अल्लाह ने अभी उन्हें परखा ही नहीं जो तुममें जिहाद करने वाले हैं, और ताकि साबित क़दम रहने वालों को मुमय्यज़ कर दे।

143. और तुम तो मौत की जब तक कि वह तुम्हारे सामने नहीं आई थी तमन्ना करते रहे हो; लो अब तो तुमने उसे अपनी आंखों के सामने देख लिया।

144. मुहम्मद तो बस एक रसूल हैं; उनसे पहले भी रसूल गुज़र चुके हैं। तो क्या अगर वह मर जाएं या क़त्ल कर दिए जाएं, तो तुम उलटे पांव फिर जाओगे? जो कोई उलटे पांव फिरेगा, वह अल्लाह का कुछ नहीं बिगाड़ेगा: और शुक्रगुज़ार लोगों को ख़ुदा अजर अता फ़रमाएगा।

अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व निअ्-म अज्रुल् आमिलीन (136)

क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिकुम् सु-ननुन् फ़सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल् मुकज़्ज़िबीन (१३७) *हाज़ा बयानुल्-लिन्नासि व हुदंव्-व मौअि-ज़तुल् लिल्मुत्तक़ीन* (138)

व ला तहिनू व ला तह्ज़नू व अन्तुमुल् अअ्लौ-न इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (139)

इंय्यम्सस्कुम् क़र्हुन् फ़-क़द् मस्सल्क़ौ-म क़र्हुम् मिस्लुहू, व तिल्कल्-अय्यामु नुदाविलुहा बैनन्नासि व लि-यअ्-लमल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व यत्तख़ि-ज़ मिन्कुम् शु-हदा-अ, वल्लाहु ला युहिब्बुज़्ज़ालिमीन (140)

व लियुमह्हिसल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व यम्हृ-क़ल् काफ़िरीन (141)

अम् हसिब्तुम् अन् तद्ख़ुलुल्-जन्न-त व लम्मा यअ्-लमिल्लाहुल्लज़ी-न जाहदू मिन्कुम् व यअ्-लमस्साबिरीन (142)

व ल-क़द् कुन्तुम् तमन्नौनल्मौ-त मिन् क़ब्लि अन् तल्क़ौहु फ़-क़द् रऐतुमूहु व अन्तुम् तन्ज़ुरून (143)●

व मा मुहम्मदुन् इल्ला रसूलुन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु, अ-फ़-इम्मा-त औ क़ुतिलन्-क़लब्तुम् अ़ला अअ्क़ाबिकुम्, व मंय्यन्क़लिब् अ़ला अ़क़िबैहि फ़-लंय्यजुर्रल्ला-ह शैअन्, व स-यज्ज़िल्लाहुश्शाकिरीन (144)

الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ وَنِعْمَ اَجْرُ
الْعٰمِلِيْنَ ۝١٣٦ۙ
قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِكُمْ سُنَنٌ ۙ
فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ۝١٣٧
هٰذَا بَيَانٌ لِّلنَّاسِ وَهُدًى وَّمَوْعِظَةٌ
لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝١٣٨
وَلَا تَهِنُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٣٩
اِنْ يَّمْسَسْكُمْ قَرْحٌ فَقَدْ مَسَّ الْقَوْمَ
قَرْحٌ مِّثْلُهٗ ؕ وَتِلْكَ الْاَيَّامُ نُدَاوِلُهَا
بَيْنَ النَّاسِ ۚ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَيَتَّخِذَ مِنْكُمْ شُهَدَآءَ ؕ وَاللّٰهُ
لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٤٠ۙ
وَلِيُمَحِّصَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَيَمْحَقَ
الْكٰفِرِيْنَ ۝١٤١
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تَدْخُلُوا الْجَنَّةَ
وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا
مِنْكُمْ وَيَعْلَمَ الصّٰبِرِيْنَ ۝١٤٢
وَلَقَدْ كُنْتُمْ تَمَنَّوْنَ الْمَوْتَ
مِنْ قَبْلِ اَنْ تَلْقَوْهُ ۠ فَقَدْ
ع رَاَيْتُمُوْهُ وَاَنْتُمْ تَنْظُرُوْنَ ۝١٤٣
وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَاۡئِنْ مَّاتَ
اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰٓى اَعْقَابِكُمْ ؕ
وَمَنْ يَّنْقَلِبْ عَلٰى عَقِبَيْهِ فَلَنْ يَّضُرَّ
اللّٰهَ شَيْـًٔا ؕ وَسَيَجْزِي اللّٰهُ الشّٰكِرِيْنَ ۝١٤٤

145. अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई शख़्स मर नहीं सकता, हर एक लिखे वक़्त का ताबे है। और जो कोई दुनिया का बदला चाहेगा, उसे हम इस दुनिया में से देंगे; और जो आख़िरत का बदला चाहेगा, उसे हम उसमें से देंगे; जो शुक्रगुज़ार हैं उन्हें तो हम लाज़िमन अज्र से नवाज़ेंगे।

146. कितने ही अंबिया ऐसे गुज़रे हैं जिनके साथ होकर बहुत से मर्दाने खुदा ने जंग की है, तो अल्लाह की राह में जो तकलीफ़ उन्हें पहुंची उससे वो पस्त हिम्मत नहीं हुए, और न उन्होंने कोई कमज़ोरी दिखाई, और न ऐसा हुआ कि वो दबे हों; और अल्लाह भी साबित क़दम रहने वालों को पसन्द फ़रमाता है।

147. उन्होंने कुछ नहीं कहा, बजुज़ इसके कि "हमारे रब, तू हमारे गुनाहों को और जो ज़्यादती हमारे अपने मुआमले में हमसे हुई हो उसे माफ़ कर दे, और हमारे क़दम जमाए रख, और काफ़िर क़ौम के मुक़ाबले में हमारी मदद कर।"

148. अल्लाह ने उन्हें दुनिया का सिला अता किया और आख़िरत का अच्छा सिला भी; खूबकार लोगों को अल्लाह पसन्द ही करता है।

149. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अगर तुम उन लोगों के कहने पर चले जिन्होंने कुफ़्र की रविश इख़्तियार कर रखी है, तो वो तुम्हें उलटे पांव फेर ले जाएंगे, फिर तुम घाटे में जा पड़ोगे।

150. बल्कि अल्लाह तुम्हारा सरपरस्त है, और वह बेहतरीन मददगार है।

151. हम जल्द ही कुफ़्र व इनकार करनेवालों के दिलों में रोब डाल देंगे, इसलिए कि उन्होंने ऐसी चीज़ों को अल्लाह का शरीक ठहराया है जिनके साथ उसने कोई कुव्वत व दलील नहीं नाज़िल फ़रमाई; उनका ठिकाना आग है; और क्या ही बुरा ठिकाना है ज़ुल्म करनेवालों का।

152. और अल्लाह ने तो तुम्हें अपना वादा सच्चा कर दिखाया, जबकि तुम उसके हुक्म से उन्हें क़त्ल कर रहे थे; यहां तक कि जब तुम खुद

व मा का-न लि-नफ़्सिन् अन् तमू-त इल्ला बि-इज़्निल्लाहि किताबम् मुअज्जलन्, व मंय्युरिद् सवाबद्दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मंय्युरिद् सवाबल्-आख़ि-रति नुअ्तिही मिन्हा, व स-नज्ज़िश्शाकिरीन (145)

व क-अय्यिम् मिन् नबिय्यिन् क़ा-त-ल म-अहू रिब्बिय्यू-न कसीरुन् फ़मा व हनू लिमा असाबहुम् फ़ी सबीलिल्लाहि व मा ज़अुफ़ू व मस्तकानू, वल्लाहु युहिब्बुस्साबिरीन (146)

व मा का-न क़ौलहुम् इल्ला अन् क़ालू रब्बनग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना व इस्राफ़ना फ़ी अम्रिना व सब्बित् अक़्दामना वन्सुर्ना अ़लल् क़ौमिल् काफ़िरीन (147)

फ़-आताहुमुल्लाहु सवाबद्दुन्या व हुस्-न सवाबिल-आख़ि-रति, वल्लाहु युहिब्बुल्-मुह्सिनीन (148) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तुतीअुल्लज़ी-न क-फ़रू यरुद्दूकुम् अ़ला अअ्क़ाबिकुम् फ़-तन्क़लिबू ख़ासिरीन (149)

बलिल्लाहु मौलाकुम् व हु-व ख़ैरुन्-नासिरीन (150)

सनुल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़रुर्रुअ्-ब बिमा अश्रकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानन् व मअ्वाहुमुन्नारु, व बिअ्-स मस्वज़्ज़ालिमीन (151)

व ल-क़द् स-द-क़कुमुल्लाहु वअ्दहू इज़् तहुस्सूनहुम् बि-इज़्निही हत्ता इज़ा फ़शिल्तुम्

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تَمُوْتَ اِلَّا
بِاِذْنِ اللّٰهِ كِتٰبًا مُّؤَجَّلًا ؕ وَمَنْ
يُّرِدْ ثَوَابَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۚ
وَمَنْ يُّرِدْ ثَوَابَ الْاٰخِرَةِ نُؤْتِهٖ
مِنْهَا ؕ وَسَنَجْزِى الشّٰكِرِيْنَ ۝۱۴۵
وَكَاَيِّنْ مِّنْ نَّبِيٍّ قٰتَلَ ۙ مَعَهٗ
رِبِّيُّوْنَ كَثِيْرٌ ۚ فَمَا وَهَنُوْا لِمَآ
اَصَابَهُمْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَمَا ضَعُفُوْا
وَمَا اسْتَكَانُوْا ؕ وَاللّٰهُ يُحِبُّ الصّٰبِرِيْنَ ۝۱۴۶
وَمَا كَانَ قَوْلَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا
رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَاِسْرَافَنَا
فِىْٓ اَمْرِنَا وَثَبِّتْ اَقْدَامَنَا وَانْصُرْنَا
عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝۱۴۷
فَاٰتٰىهُمُ اللّٰهُ ثَوَابَ الدُّنْيَا وَ
حُسْنَ ثَوَابِ الْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ
ع يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۱۴۸
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تُطِيْعُوا
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَرُدُّوْكُمْ عَلٰٓى
اَعْقَابِكُمْ فَتَنْقَلِبُوْا خٰسِرِيْنَ ۝۱۴۹
بَلِ اللّٰهُ مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ
النّٰصِرِيْنَ ۝۱۵۰
سَنُلْقِىْ فِىْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا
الرُّعْبَ بِمَآ اَشْرَكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا ۚ وَمَاْوٰىهُمُ
النَّارُ ؕ وَبِئْسَ مَثْوَى الظّٰلِمِيْنَ ۝۱۵۱
وَلَقَدْ صَدَقَكُمُ اللّٰهُ وَعْدَهٗٓ اِذْ
تَحُسُّوْنَهُمْ بِاِذْنِهٖ ۚ حَتّٰٓى اِذَا فَشِلْتُمْ

وَتَنَازَعْتُمْ فِي الْأَمْرِ وَعَصَيْتُمْ
مِّنۢ بَعْدِ مَآ اَرٰىكُمْ مَّا تُحِبُّوْنَ ۭ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الدُّنْيَا وَ
مِنْكُمْ مَّنْ يُّرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ۚ
ثُمَّ صَرَفَكُمْ عَنْهُمْ لِيَبْتَلِيَكُمْ ۚ
وَلَقَدْ عَفَا عَنْكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُوْ
فَضْلٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ ۝
اِذْ تُصْعِدُوْنَ وَلَا تَلْوٗنَ عَلٰٓى
اَحَدٍ وَّ الرَّسُوْلُ يَدْعُوْكُمْ
فِيْٓ اُخْرٰىكُمْ فَاَثَابَكُمْ غَمًّۢا
بِغَمٍّ لِّكَيْلَا تَحْزَنُوْا عَلٰى مَا
فَاتَكُمْ وَلَا مَآ اَصَابَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ
خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝
ثُمَّ اَنْزَلَ عَلَيْكُمْ مِّنۢ بَعْدِ
الْغَمِّ اَمَنَةً نُّعَاسًا يَّغْشٰى
طَاۗىِٕفَةً مِّنْكُمْ ۙ وَطَاۗىِٕفَةٌ قَدْ
اَهَمَّتْهُمْ اَنْفُسُهُمْ يَظُنُّوْنَ
بِاللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ ظَنَّ الْجَاهِلِيَّةِ ۭ
يَقُوْلُوْنَ هَلْ لَّنَا مِنَ الْاَمْرِ
مِنْ شَيْءٍ ۭ قُلْ اِنَّ الْاَمْرَ كُلَّهٗ
لِلّٰهِ ۭ يُخْفُوْنَ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ مَّا
لَا يُبْدُوْنَ لَكَ ۭ يَقُوْلُوْنَ لَوْ
كَانَ لَنَا مِنَ الْاَمْرِ شَيْءٌ مَّا قُتِلْنَا
هٰهُنَا ۭ قُلْ لَّوْ كُنْتُمْ فِيْ بُيُوْتِكُمْ
لَبَرَزَ الَّذِيْنَ كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقَتْلُ
اِلٰى مَضَاجِعِهِمْ ۚ وَلِيَبْتَلِيَ اللّٰهُ
مَا فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَلِيُمَحِّصَ مَا فِيْ

व तनाज़अ्तुम् फ़िल्अम्रि व अ़सैतुम् मिम्-बअ्दि मा अराकुम् मा तुहिब्बू-न, मिन्कुम् मंय्युरीदुद्दुन्या व मिन्कुम् मंय्युरीदुल्-आख़ि-र-त सुम्-म स-र-फ़कुम् अ़न्हुम् लि-यब्तलि-यकुम् व ल-क़द् अ़फ़ा अ़न्कुम्, वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अ़लल् मुअ्मिनीन (152)

इज़् तुस्अिदू-न व ला तल्वू-न अ़ला अ-हदिंव्-वर्रसूलु यद्अूकुम् फ़ी उख़्राकुम् फ़-असाबकुम् ग़म्मम्-बिग़म्मिल् लिकैला तह्ज़नू अ़ला मा फ़ातकुम् व ला मा असाबकुम्, वल्लाहु ख़बीरुम् बिमा तअ्मलून (153)

सुम्-म अन्ज़-ल अ़लैकुम् मिम्-बअ्दिल्-ग़म्मि अ-म-नतन् नुआ़संय्यग़्शा ता-इ-फ़तम् मिन्कुम् व ता-इ-फ़तुन् क़द् अहम्मत्हुम अन्फ़ुसुहुम् यज़ुन्नू-न बिल्लाहि ग़ैरल्-हक़्क़ि ज़न्नल्- जाहिलिय्यति, यक़ूलू-न हल्-लना मिनल्- अम्रि मिन् शैइन्, क़ुल् इन्नल् -अम्-र कुल्लहू लिल्लाहि, युख़्फ़ू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् मा ला युब्दू-न ल-क, यक़ूलू-न लौ का-न लना मिनल्-अम्रि शैउम् मा क़ुतिल्ना हाहुना, क़ुल् लौ कुन्तुम् फ़ी बुयूतिकुम् ल-ब-रज़ल्लज़ी-न कुति-ब अ़लैहिमुल्क़त्लु इला मज़ाजिअ़िहिम् व लि-यब्तलियल्लाहु मा फ़ी सुदूरिकुम् व लियु-मह्हि-स मा फ़ी

ढीले पड़ गए, और काम में झगड़ा डाल दिया, और नाफ़रमानी पर उतर आए, इसके बाद कि ख़ुदा ने तुम्हें वह कुछ दिखा दिया था जिसके तुम दिलदादा थे। तुममें कुछ लोग दुनिया चाहते थे, और कुछ आख़िरत के तालिब थे। तो फिर उसने तुम्हें उनके मुक़ाबले से हटा दिया, ताकि वह तुम्हें आज़माइश में डाल दे; फिर भी उसने तुम्हें माफ़ किया; क्योंकि अल्लाह मोमिनीन के हक़ में फ़ज़्लवाला है।

153. जब तुम लोग दूर भागे चले जा रहे थे, और मुड़कर किसी को देखते तक न थे, और रसूल तुम्हें जबकि वह तुम्हारी दूसरी टुकड़ी के साथ था (जो भागी नहीं), पुकारे जा रहा था; तो ख़ुदा ने तुम्हें ग़म पर ग़म दिया ताकि तुम्हारे हाथ से कोई चीज़ छिन जाए या तुमपर कोई मुसीबत आए तो तुम ग़मज़दा न हो; और अल्लाह को तो उसकी ख़ूब ख़बर रहती है जो कुछ तुम करते हो।

154. फिर इस ग़म के बाद उसने तुमपर एक इत्मीनान उतारा — एक नींद जो तुम में से कुछ लोगों को घेर रही थी; और कुछ लोग ऐसे भी थे जिन्हें अपनी जानों की पड़ी थी; वो अल्लाह के बारे में ऐसा ख़याल कर रहे थे जो सरासर ख़िलाफ़े हक़, जाहिली ख़याल था, वो कहते थे, "इन मुआमलात में क्या हमें भी कुछ इख़्तियार है?" कह दो, "हर मुआमला अल्लाह के हाथ में है।" वो तुमपर ज़ाहिर नहीं करते जो अपने दिलों में छुपाए रखते हैं, कहते हैं कि "अगर यह मुआमला कुछ हमारे हाथ में भी होता, तो हम यहां मारे न जाते।" कह दो, "अगर तुम अपने घरों में भी होते, तो भी जिन लोगों का क़त्ल होना मुक़द्दर था वो निकल कर अपनी आख़िरी ख़्वाबगाहों तक पहुंच कर रहते"; अल्लाह को तो उसे जो तुम्हारे सीनों में छुपा है परखना था, और जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे साफ़ करना

قُلُوْبِكُمْ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿١٥٤﴾
إِنَّ الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا مِنْكُمْ يَوْمَ الْتَقَى
الْجَمْعٰنِ إِنَّمَا اسْتَزَلَّهُمُ الشَّيْطٰنُ
بِبَعْضِ مَا كَسَبُوْا وَلَقَدْ عَفَا اللّٰهُ
ع عَنْهُمْ إِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ﴿١٥٥﴾
يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا
كَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَقَالُوْا لِإِخْوَانِهِمْ
إِذَا ضَرَبُوْا فِي الْأَرْضِ أَوْ كَانُوْا
غُزًّى لَّوْ كَانُوْا عِنْدَنَا مَا مَاتُوْا وَمَا
قُتِلُوْا لِيَجْعَلَ اللّٰهُ ذٰلِكَ حَسْرَةً فِيْ
قُلُوْبِهِمْ وَاللّٰهُ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ﴿١٥٦﴾
وَلَئِنْ قُتِلْتُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
أَوْ مُتُّمْ لَمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَحْمَةٌ
خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ﴿١٥٧﴾
وَلَئِنْ مُّتُّمْ أَوْ قُتِلْتُمْ لَإِلَى اللّٰهِ
تُحْشَرُوْنَ ﴿١٥٨﴾
فَبِمَا رَحْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ لِنْتَ لَهُمْ
وَلَوْ كُنْتَ فَظًّا غَلِيْظَ الْقَلْبِ
لَانْفَضُّوْا مِنْ حَوْلِكَ فَاعْفُ
عَنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمْ وَشَاوِرْهُمْ
فِي الْأَمْرِ فَإِذَا عَزَمْتَ فَتَوَكَّلْ عَلَى
اللّٰهِ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُتَوَكِّلِيْنَ ﴿١٥٩﴾
إِنْ يَّنْصُرْكُمُ اللّٰهُ فَلَا غَالِبَ لَكُمْ
وَإِنْ يَّخْذُلْكُمْ فَمَنْ ذَا الَّذِيْ يَنْصُرُكُمْ
مِّنْ بَعْدِهٖ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿١٦٠﴾
وَمَا كَانَ لِنَبِيٍّ أَنْ يَّغُلَّ وَمَنْ

कुलूबिकुम्, वल्लाहु अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर (154)

इन्नल्लज़ी-न तवल्लौ मिन्कुम् यौमल्-तक़ल् जम्आनि इन्नमस्तज़ल्लहुमुश्शैतानु बि-बअ्ज़ि मा क-सबू व ल-क़द् अ़फ़ल्लाहु अ़न्हुम, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् हलीम (155)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तकूनू कल्लज़ी-न क-फ़रू व क़ालू लि-इख़्वानिहिम् इज़ा ज़-रबू फ़िल्अर्ज़ि औ कानू ग़ुज़्ज़ल्-लौ कानू अ़िन्दना मा मातू व मा क़ुतिलू लि-यज्अ़लल्लाहु ज़ालि-क हस्र-तन् फ़ी क़ुलूबिहिम्, वल्लाहु युह्यी व युमीतु, वल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न बसीर (156)

व ल इन् क़ुतिल्तुम् फ़ी सबीलिल्लाहि औ मुत्तुम् ल-मग़्फ़ि-रतुम् मिनल्लाहि व रह्मतुन् ख़ैरुम् मिम्मा यज्मअ़ून (157)

व ल-इन्-मुत्तुम् औ क़ुतिल्तुम् ल-इलल्लाहि तुह्शरून (158)

फ़बिमा रह्मतिम् मिनल्लाहि लिन्-त लहुम् व लौ कुन्-त फ़ज़्ज़न् ग़लीज़ल्क़ल्बि लन्फ़ज़्ज़ू मिन् हौलि-क फ़अ़्फ़ु अ़न्हुम् वस्तग़्फ़िर् लहुम् व शाविर्हुम् फ़िल्-अम्रि फ़-इज़ा अ़ज़म्-त फ़-तवक्कल् अ़लल्लाहि, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मु-तवक्किलीन (159)

इंय्यन्सुर्कुमुल्लाहु फ़ला ग़ालि-ब लकुम् व इंय्यख़्ज़ुल्कुम फ़-मन् ज़ल्लज़ी यन्सुरुकुम् मिम्-बअ़्दिही, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मुअ्मिनून (160)

व मा का-न लि- नबिय्यिन् अंय्यग़ुल्-ल मंय्यग़्लुल्

उसे मंजूर था; और अल्लाह सीनों की बात बख़ूबी जानता है।

155. तुममें जो लोग दोनों गिरोहों के मुक़ाबिल होने के दिन पीठ दिखा गए उनसे तो शैतान ही ने उनकी कुछ कमाई की वजह से लगज़िश करा दी थी; मगर अल्लाह उन्हें माफ़ कर चुका; बिलाशुबह अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, बुर्दबार है।

156. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! उन लोगों की तरह न हो जाना, जिन्होंने कुफ़्र किया और अपने भाइयों के बारे में, जबकि वो सफ़र में गए हों या जंग में हों, (और उन्हें मौत आ जाए तो) कहते हैं, "अगर वो हमारे पास होते, तो न मरते और न क़त्ल होते।" (ऐसी बातें तो इसलिए होती हैं) ताकि अल्लाह उनको उनके दिलों में बाइसे हसरत बना दे। रही बात ज़िन्दगी और मौत की, तो वह अल्लाह के हाथ में है; और तुम जो कुछ भी कर रहे हो वह अल्लाह की निगाह में है।

157. और अगर तुम अल्लाह के रास्ते में मारे गए या मर गए, तो अल्लाह की बख़्शिश और उसकी रहमत तो उससे कहीं ज़्यादा बेहतर ही है जिसके जमा करने में वो लगे हुए हैं;

158. हां अगर तुम मर गए या क़त्ल हुए, तो बहरसूरत तुम्हें जमा होना अल्लाह ही के पास है।

159. तो यह अल्लाह की रहमत ही है कि तुम उनके लिए नर्म हो; अगर कहीं तुम तुर्श मिज़ाज और सख़्त दिल होते, तो ये सब तुम्हारे पास से मुन्तशिर हो जाते। पस उन्हें माफ़ कर दो, और उनके के लिए मग़फ़िरत की दुआ मांगो, और मुआमलात में उनसे मश्वरा लेते रहो; फिर जब तुम्हारा अज़्म किसी राए पर जम जाए, तो अल्लाह पर भरोसा करो; बेशक अल्लाह तवक्कुल करनेवालों को पसन्द फ़रमाता है।

160. अगर अल्लाह तुम्हारी मदद करता है, तो कोई तुम पर ग़ालिब नहीं आ सकता; अगर वह तुम्हें छोड़ दे, तो फिर कौन है जो उसके बाद तुम्हारी मदद कर सके? पस अल्लाह ही पर मोमिनीन को भरोसा रखना चाहिए।

161. यह किसी नबी के लिए मुमकिन नहीं कि वह ख़ियानत करे

يَغْلُلْ يَاْتِ بِمَا غَلَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۚ
ثُمَّ تُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦١﴾
اَفَمَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَ اللّٰهِ كَمَنْۢ
بَآءَ بِسَخَطٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿١٦٢﴾
هُمْ دَرَجٰتٌ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٦٣﴾
لَقَدْ مَنَّ اللّٰهُ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
اِذْ بَعَثَ فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْ
اَنْفُسِهِمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۚ
وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ
مُّبِيْنٍ ﴿١٦٤﴾
اَوَلَمَّآ اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَدْ اَصَبْتُمْ
مِّثْلَيْهَا ۙ قُلْتُمْ اَنّٰى هٰذَا ؕ قُلْ هُوَ
مِنْ عِنْدِ اَنْفُسِكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى
كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٦٥﴾
وَمَآ اَصَابَكُمْ يَوْمَ الْتَقَى
الْجَمْعٰنِ فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيَعْلَمَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٦٦﴾
وَلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ نَافَقُوْا ۚ وَقِيْلَ لَهُمْ
تَعَالَوْا قَاتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَوِ ادْفَعُوْا ؕ
قَالُوْا لَوْ نَعْلَمُ قِتَالًا لَّا اتَّبَعْنٰكُمْ ؕ
هُمْ لِلْكُفْرِ يَوْمَئِذٍ اَقْرَبُ مِنْهُمْ لِلْاِيْمَانِ ۚ
يَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ؕ
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يَكْتُمُوْنَ ﴿١٦٧﴾

यअ्ति बिमा ग़ल्-ल यौमल क़ियामति सुम्-म तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम् मा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून (161)

अ-फ़ मनित्त-ब-अ रिज़्वानल्लाहि क-मम्बा-अ बे-स-ख़तिम् मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु, व बिअ्सल्-मसीर (162)

हुम् द-रजातुन् अिन्दल्लाहि, वल्लाहु बसीरुम् बिमा यअ्मलून (163)

ल-क़द् मन्नल्लाहु अलल् मुअ्मिनी-न इज़् ब-अ-स फ़ीहिम् रसूलम्-मिन् अन्फ़ुसिहिम् यत्लू अलैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअल्लिमुहुमुल किता-ब वल्-हिक्म-त व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम् मुबीन ● (164)

अ-व-लम्मा असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़द् असब्तुम् मिस्लैहा कुल्तुम् अन्ना हाज़ा, क़ुल् हु-व मिन् अिन्दि अन्फ़ुसिकुम, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (165)

व मा असाबकुम् यौमल्-तक़ल् जम्आनि फ़बि-इज़्निल्लाहि व लि-यअ्-लमल् मुअ्मिनीन (166)

व लि-यअ्-लमल्लज़ी-न नाफ़क़ू व क़ी-ल लहुम् तआलौ क़ातिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अविद्फ़अू, क़ालू लौ नअ्लमु क़िताल्ल्-लत्त-बअ्नाकुम, हुम् लिल्कुफ़्रि यौमइज़िन् अक़्रबु मिन्हुम् लिल्-ईमानि यक़ूलू-न बिअफ़्वाहिहिम् मा लै-स फ़ी क़ुलूबिहिम्, वल्लाहु अअ्लमु बिमा यक्तुमून (167)

और जो कोई ख़ियानत करे तो क़ियामत के दिन वह अपनी ख़ियानत के साथ पेश होगा; और हर शख़्स अपना कमाया भरपूर पाएगा; और उनपर कुछ भी ज़ुल्म न होगा।

162. भला क्या जो शख़्स अल्लाह की रिज़ा पर चलता हो वह उस जैसा हो सकता है जो खुदा के ग़ज़ब का सज़ावार हुआ, और जिसका ठिकाना जहन्नम है? और वह क्या ही बुरा ठिकाना है!

163. अल्लाह के यहां उनके दरजात अलग-अलग हैं, जो कुछ वो कर रहे हैं खुदा की निगाह में है।

164. बेशक अल्लाह ने अहले ईमान पर बड़ा एहसान किया जबकि उनमें खुद उन्हीं में का एक ऐसा रसूल उठाया, जो उसकी आयतें उन्हें सुनाता है, और उनका तज़किया करता है, और उन्हें किताब और हिकमत की तालीम देता है। बेशक इससे पहले वो खुली गुमराही में पड़े हुए थे।

165. यह क्या कि जब तुम्हें एक मुसीबत पहुंची जिसकी दुगुनी तुमने पहुंचाई, तो तुम कहने लगे कि "यह कहां से आ गई?" कह दो "यह तो तुम्हारी अपनी तरफ़ से है; अल्लाह को तो हर चीज़ पर कुदरत हासिल है।"

166. और दोनों गिरोहों की मुठभेड़ के दिन जो कुछ तुम्हारे सामने आया वह अल्लाह ही के हुक्म से आया, और इसलिए कि वह जान ले कि अहले ईमान कौन हैं;

167. और इसलिए कि वह अहले निफ़ाक़ को भी मालूम कर ले। जब उनसे कहा गया कि "आओ अल्लाह के रास्ते में लड़ो, या उनको दफ़ा करो," बोले, "अगर हमें इल्म होता कि जंग होगी तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ हो लेते।" उस दिन वो ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र से ज़्यादा क़रीब थे, वो अपने मुंह से वो बातें कहते हैं, जो उनके दिलों में नहीं होतीं; और जो कुछ वो छुपाया करते हैं, खुदा उसे बख़ूबी जानता है;

168. ये वो लोग हैं जो खुद तो बैठे रहे और अपने भाइयों के बारे में कहने लगे कि "अगर वो हमारी बात मान लेते, तो मारे न जाते", कह दो, "अच्छा, अगर तुम सच्चे हो तो अब तुम अपने ऊपर से मौत को हटाना।"

169. तुम उन लोगों को जो अल्लाह के रास्ते में क़त्ल हुए हैं, मुर्दा न समझो, बल्कि वो अपने रब के पास ज़िन्दा हैं, रिज़्क़ पा रहे हैं,

170. अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें जो कुछ अता किया है वो उसपर शादां व फ़रहां हैं, और उन लोगों के लिए भी खुश हो रहे हैं जो उनके पीछे रह गए हैं अभी उनसे मिले नहीं हैं कि उन्हें भी न कोई ख़ौफ़ होगा, और न वो ग़म में मुबतला होंगे,

171. वो अल्लाह की नवाज़िश और उसके फ़ज़्ल व करम से खुश हो रहे हैं, और उन्हें मालूम हो चुका है कि अल्लाह मोमिनीन के अजर को ज़ाया नहीं करता।

172. जिन लोगों ने अल्लाह और रसूल की दावत क़बूल की, इसके बावजूद कि वो ज़ख़्मी हो चुके थे, उन सभी खूबकार और अहले तक़्वा के लिए बड़ा अज्र है;

173. ये वो लोग हैं जिनसे लोगों ने कहा कि "तुम्हारे ख़िलाफ़ लोग जमा हो गए हैं, लिहाज़ा उनसे डरो;" तो इस चीज़ ने उनके ईमान को और बढ़ा दिया, और वो बोले, "हमारे लिए तो बस अल्लाह काफ़ी है; और वह बेहतरीन कारसाज़ है।"

174. फिर वो अल्लाह की नेमत और फ़ज़्ल के साथ लौटे, उन्हें कोई तकलीफ़ छू न सकी; और वो अल्लाह की रिज़ा की पैरवी की; और अल्लाह बड़े फ़ज़्ल का मालिक है।

175. वह तो शैतान है जो अपने दोस्तों को डराता है, पस तुम उनसे न

अल्लज़ी-न क़ालू लि-इख़्वानिहिम् व क़-अदू लौ अताअूना मा क़ुतिलू, क़ुल् फ़द्रऊ अन् अन्फ़ुसिकुमुल्मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (168)

व ला तह्सबन्नल्लज़ी-न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि अम्वातन्, बल् अह्याउन् अिन्-द रब्बिहिम् युर्ज़क़ून् (169)

फ़रिही-न बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व यस्तब्शिरू-न बिल्लज़ी-न लम् यल्हक़ू बिहिम् मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून ● (170)

यस्तब्शिरू-न बिनिअ्मतिम् मिनल्लाहि व फ़ज़्लिंव्- व अन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्रल् मुअ्मिनीन

(171)●

अल्लज़ीनस्तजाबू लिल्लाहि वर्रसूलि मिम्-बअ्दि मा असाबहुमुल्क़र्हु, लिल्लज़ी-न अह्सनू मिन्हुम् वत्तक़ौ अज्रून् अज़ीम (172)

अल्लज़ी-न क़ा-ल लहुमुन्नासु इन्नन्ना-स क़द् ज-मअू लकुम् फ़ख़्शौहुम् फ़-ज़ादहुम् ईमानंव्-व क़ालू हस्बुनल्लाहु व निअ्मल् वकील (173)

फ़न्क़-लबू बिनिअ्मतिम्- मिनल्लाहि व फ़ज़्लिल्-लम् यम्सस्हुम् सूउंव्-वत्त-बअू रिज़्वानल्लाहि, वल्लाहु ज़ू फ़ज़्लिन् अज़ीम (174)

इन्नमा ज़ालिकुमुश्शैतानु युख़व्विफ़ु

اَلَّذِيْنَ قَالُوْا لِاِخْوَانِهِمْ وَقَعَدُوْا لَوْ اَطَاعُوْنَا مَا قُتِلُوْا ؕ قُلْ فَادْرَءُوْا عَنْ اَنْفُسِكُمُ الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿۱۶۸﴾

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ ﴿۱۶۹﴾

فَرِحِيْنَ بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۙ وَيَسْتَبْشِرُوْنَ بِالَّذِيْنَ لَمْ يَلْحَقُوْا بِهِمْ مِّنْ خَلْفِهِمْ ۙ اَلَّا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿۱۷۰﴾

يَسْتَبْشِرُوْنَ بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ ۙ وَّاَنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿۱۷۱﴾

اَلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ مِنْۢ بَعْدِ مَآ اَصَابَهُمُ الْقَرْحُ ۛؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا مِنْهُمْ وَاتَّقَوْا اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿۱۷۲﴾

اَلَّذِيْنَ قَالَ لَهُمُ النَّاسُ اِنَّ النَّاسَ قَدْ جَمَعُوْا لَكُمْ فَاخْشَوْهُمْ فَزَادَهُمْ اِيْمَانًا ۖ وَّ قَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْلُ ﴿۱۷۳﴾

فَانْقَلَبُوْا بِنِعْمَةٍ مِّنَ اللّٰهِ وَفَضْلٍ لَّمْ يَمْسَسْهُمْ سُوْٓءٌ ۙ وَّاتَّبَعُوْا رِضْوَانَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ ذُوْ فَضْلٍ عَظِيْمٍ ﴿۱۷۴﴾

اِنَّمَا ذٰلِكُمُ الشَّيْطٰنُ يُخَوِّفُ

اَوْلِيَآءَهٗ ۖ فَلَا تَخَافُوْهُمْ وَخَافُوْنِ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿١٧٥﴾
وَلَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ يُسَارِعُوْنَ
فِى الْكُفْرِ ۚ اِنَّهُمْ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ
شَيْـًٔا ؕ يُرِيْدُ اللّٰهُ اَلَّا يَجْعَلَ لَهُمْ حَظًّا
فِى الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٦﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اشْتَرَوُا الْكُفْرَ
بِالْاِيْمَانِ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿١٧٧﴾
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اَنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ خَيْرٌ لِّاَنْفُسِهِمْ ؕ
اِنَّمَا نُمْلِىْ لَهُمْ لِيَزْدَادُوْٓا اِثْمًا ۚ
وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿١٧٨﴾
مَا كَانَ اللّٰهُ لِيَذَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ
عَلٰى مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ حَتّٰى يَمِيْزَ
الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ ؕ وَمَا كَانَ
اللّٰهُ لِيُطْلِعَكُمْ عَلَى الْغَيْبِ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ يَجْتَبِىْ مِنْ رُّسُلِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۖ
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۚ وَاِنْ تُؤْمِنُوْا
وَتَتَّقُوْا فَلَكُمْ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ﴿١٧٩﴾
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ
بِمَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ هُوَ
خَيْرًا لَّهُمْ ؕ بَلْ هُوَ شَرٌّ لَّهُمْ ؕ
سَيُطَوَّقُوْنَ مَا بَخِلُوْا بِهٖ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
ع خَبِيْرٌ ﴿١٨٠﴾

औलिया-अहू फ़ला तख़ाफ़ूहुम् व ख़ाफ़ूनि इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (175)

व ला यह्ज़ुन्कल्लज़ी-न युसारिअू-न फ़िल्कुफ़्रि इन्नहुम् लंय्यजुर्रुल्ला-ह शैअन्, युरीदुल्लाहु अल्ला यज्अ-ल लहुम् हज़्ज़न् फ़िल्-आख़िरति व लहुम् अज़ाबुन् अज़ीम (176)

इन्नल्लज़ीनश्-त रवुल्-कुफ़्-र बिल्-ईमानि लंय्यजुर्रुल्ला-ह शैअन् व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (177)

व ला यह्सबन्नल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नमा नुम्ली लहुम् ख़ैरुल् लिअन्फ़ुसिहिम्, इन्नमा नुम्ली लहुम् लि-यज़्दादू इस्मन् व लहुम् अज़ाबुम् मुहीन (178)

मा कानल्लाहु लि-य-ज़रल् मुअ्मिनी-न अ़ला मा अन्तुम् अ़लैहि हत्ता यमीज़ल्-ख़बी-स मिनत्तय्यिबि, व मा कानल्लाहु लियुत्लि-अकुम् अ़लल्-ग़ैबि व लाकिन्नल्ला-ह यज्तबी मिर्रुसुलिही मंय्यशा-उ फ़-आमिनू बिल्लाहि व रुसुलिही व इन् तुअ्मिनू व तत्तकू फ़-लकुम् अज्रुन् अज़ीम (179)

व ला यह्सबन्नल्लज़ी-न यब्ख़लू-न बिमा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही हु-व ख़ैरल्लहुम्, बल् हु-व शर्रुल्लहुम्, सयुतव्वकू-न मा बख़िलू बिही यौमल्-क़ियामति, व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर (180)●

डरो, बल्कि मुझी से डरो अगर तुम मोमिन हो।

176. जो लोग कुफ़्र में जल्दी दिखाते हैं वो तुम्हारे लिए बाइसे ग़म न हों; वो अल्लाह का कुछ भी बिगाड़ नहीं सकते; अल्लाह चाहता है कि आख़िरत में उनका कोई हिस्सा न रखे, उनके लिए तो बड़ा अज़ाब है।

177. जो लोग ईमान की क़ीमत पर कुफ़्र के ख़रीदार हुए वो अल्लाह का कुछ भी नहीं बिगाड़ सकेंगे; उनके लिए तो दर्दनाक अज़ाब है।

178. और यह ढील जो हम उन्हें दिए जा रहे हैं उसे अहले कुफ़्र अपने हक़ में अच्छा न समझें; यह ढील तो हम उन्हें सिर्फ़ इसलिए दे रहे हैं कि वो गुनाह में और ज़्यादा बढ़ जाएं, उनके लिए तो सख़्त ज़लील करने वाला अज़ाब है।

179. अल्लाह मोमिनीन को इस हाल में जिसमें तुम हो, छोड़ने का नहीं, यह तो उस वक़्त तक की बात है, जब तक कि वह नापाक को पाक से अलग न कर देता, और अल्लाह ऐसा नहीं है कि वह तुम्हें ग़ैब की ख़बर दे दे; लेकिन अल्लाह इस काम के लिए जिनको चाहता है मुंतख़ब कर लेता है, और वो उसके रसूल होते हैं। पस अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाओ; और अगर तुम ईमान लाओगे और तक़्वा इख़्तियार करोगे तो तुम्हारा अजर बहुत बड़ा होगा।

180. जो लोग उस चीज़ में बुख़्ल करते हैं, जो अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से उन्हें दी है, वो यह न समझें कि यह उनके हक़ में बेहतर है, बल्कि यह उनके हक़ में बुरा है; आगे क़ियामत के दिन वही जिसमें उन्होंने बुख़्ल किया होगा उनके लिए गले का तौक़ बनेगा, और यह आसमान और ज़मीन आख़िर में अल्लाह ही के लिए रह जाएंगे, तुम जो कुछ करते-धरते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है।

181. अल्लाह उन लोगों की बात सुन चुका है जिनका कहना है कि "अल्लाह तो मुहताज है और हम मालदार हैं।" हम लिखेंगे उनकी बात, और नबियों को जो वो क़त्ल करने के दरपे रहे हैं उसे भी, वक़्त आएगा कि हम कहेंगे, "लो मज़ा चखो जलने के अज़ाब का।

182. यह तो उसका बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा, अल्लाह तो अपने बन्दों के लिए ज़रा भी ज़ुल्म का रवादार नहीं।"

183. ये वो लोग हैं जिनका कहना है कि "अल्लाह ने हमें ताकीद कर रखी है कि हम किसी रसूल पर ईमान न लाएं जब तक कि वह हमारे सामने ऐसी क़ुरबानी पेश न करे जिसे आग खा जाए"। कहो, "तुम्हारे पास मुझसे पहले कितने ही रसूल रौशन निशानियां और वह चीज़ भी जिसके लिए तुम कह रहे हो, लेकर आ चुके हैं; फिर अगर तुम सच्चे हो तो तुम उनके क़त्ल के दरपे क्यों हुए?"

184. फिर अगर ये तुम्हें झुटलाते ही रहें, तो तुमसे पहले भी कितने ही रसूल झुटलाए जा चुके हैं, जो रौशन निशानियां, और सहीफ़े और रौशन किताब लेकर आए थे।

185. हर जान को मौत का ज़ाइक़ा चखना है; और तुम्हें तो पूरा-पूरा अजर क़ियामत ही के दिन मिलेगा। पस जिसे आग से दूर रखकर जन्नत में दाख़िल कर दिया गया, वह कामयाब रहा, रही दुनिया की ज़िन्दगी तो यह तो सरमाया-ए-फ़रेब के सिवा कुछ नहीं।

186. तुम्हारे माल और तुम्हारी जानों में तुम्हारी आज़माइश हो कर रहेगी, और तुम्हें उन लोगों से जिन्हें तुमसे पहले किताब अता हुई थी, और अहले शिर्क से बहुत सी तकलीफ़देह बातें सुननी पड़ेंगी; लेकिन अगर तुम साबित क़दम रहो और तक़्वा पर क़ायम रहो तो (तुम ही ग़ालिब रहोगे), इसलिए कि ये उन उमूर में से हैं जो ज़रूरी क़रार दिए गए हैं।

187. याद करो जब ख़ुदा ने उन लोगों से जिन्हें किताब अता हुई थी, अहद लिया था कि "उसे लोगों के

ल-क़द् समिअल्लाहु क़ौलल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह फ़क़ीरुंव्-व नह्नु, अग़्निया-उ ● सनक्तुबु मा क़ालू व क़त्लहुमुल्-अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व नक़ूलु ज़ूक़ू अ़ज़ाबल् हरीक़ (181)

ज़ालि-क बिमा क़द्द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल् लिल्-अ़बीद (182)

अल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह अ़हि-द इलैना अल्ला नुअ्मि-न लि-रसूलिन् हत्ता यअ्ति-यना बिक़ुर्बानिन् तअ्कुलुहुन्नारु, क़ुल् क़द् जा-अकुम् रुसुलुम् मिन् क़ब्ली बिल्-बय्यिनाति व बिल्लज़ी क़ुल्तुम् फ़लि-म क़तल्तुमूहुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (183)

फ़-इन् कज़्ज़बू-क फ़-क़द् कुज़्ज़ि-ब रुसुलुम् मिन् क़ब्लि-क जाऊ बिल्बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि वल्-किताबिल् मुनीर (184)

कुल्लु नफ़्सिन् ज़ा-इ-क़तुल्मौति, व इन्नमा तुवफ़्फ़ौ-न उजू-रकुम् यौमल्-क़ियामति, फ़-मन् ज़ुह्ज़ि-ह अ़निन्नारि व उद्ख़िलल्-जन्न-त फ़-क़द् फ़ा-ज़, व मल्हयातुद्-दुन्या इल्ला मताअुल् ग़ुरूर (185)

लतुब्लवुन्-न फ़ी अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम्, व ल-तस्मअुन्-न मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व मिनल्लज़ी-न अश्रकू अज़न् कसीरन्, व इन् तस्बिरू व तत्तक़ू फ़-इन्-न ज़ालि-क मिन् अ़ज़्मिल् उमूर (186)

व इज़् अ-ख़ज़ल्लाहु मीसाक़ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब लतु-बय्यिनुन्नहू लिन्नासि

لَقَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا
اِنَّ اللّٰهَ فَقِيْرٌ وَّنَحْنُ اَغْنِيَآءُ ۘ
سَنَكْتُبُ مَا قَالُوْا وَقَتْلَهُمُ الْاَنْۢبِيَآءَ
بِغَيْرِ حَقٍّ ۙ وَّنَقُوْلُ ذُوْقُوْا عَذَابَ
الْحَرِيْقِ (181)
ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَ
اَنَّ اللّٰهَ لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ (182)
اَلَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ عَهِدَ
اِلَيْنَآ اَلَّا نُؤْمِنَ لِرَسُوْلٍ حَتّٰى
يَاْتِيَنَا بِقُرْبَانٍ تَاْكُلُهُ النَّارُ ۭ
قُلْ قَدْ جَآءَكُمْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِيْ
بِالْبَيِّنٰتِ وَبِالَّذِيْ قُلْتُمْ فَلِمَ
قَتَلْتُمُوْهُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ (183)
فَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَ رُسُلٌ
مِّنْ قَبْلِكَ جَآءُوْ بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ
وَالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ (184)
كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۭ وَ اِنَّمَا
تُوَفَّوْنَ اُجُوْرَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ فَمَنْ
زُحْزِحَ عَنِ النَّارِ وَاُدْخِلَ الْجَنَّةَ فَقَدْ
فَازَ ۭ وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ (185)
لَتُبْلَوُنَّ فِيْٓ اَمْوَالِكُمْ وَاَنْفُسِكُمْ ۣ
وَلَتَسْمَعُنَّ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَمِنَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا
اَذًى كَثِيْرًا ۭ وَاِنْ تَصْبِرُوْا وَتَتَّقُوْا
فَاِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ (186)
وَ اِذْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ لَتُبَيِّنُنَّهٗ لِلنَّاسِ

सामने खोल कर रखोगे, उसे छुपाओगे नहीं।" लेकिन उन्होंने उसे पसे पुश्त डाल दिया और थोड़ी कीमत पर उसका सौदा किया। कैसा बुरा सौदा है जो ये करते हैं!

188. तुम उन्हें हरगिज़ यह न समझना, जो अपने किए पर खुश हो रहे हैं, और जो काम उन्होंने नहीं किए, चाहते हैं कि उसपर भी उनकी तारीफ़ की जाए — तो तुम उन्हें यह न समझना कि वो अज़ाब से बच जाएंगे; उनके लिए तो दर्दनाक अज़ाब है।

189. आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है; और अल्लाह को हर चीज़ पर कुदरत हासिल है।

190. बेशक आसमानों और ज़मीन की ख़िलक़त में और रात और दिन के यके बाद दीगरे आने में अक्ल व फ़हम वालों के लिए निशानियां हैं,

191. जो खड़े, बैठे और अपने पहलुओं पर लेटे अल्लाह को याद करते रहते हैं, और आसमानों और ज़मीन की ख़िलक़त में ग़ौर व फ़िक्र से काम लेते हैं। (वो पुकार उठते हैं): "हमारे रब, तूने यह सब बेकार नहीं बनाया। अज़ीम व बरतर है तू! पस तू हमें आग के अज़ाब से बचा ले।

192. हमारे रब, तूने जिसे आग में डाला, उसे तो रुसवा कर दिया; और ऐसे ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

193. हमारे रब, हमने एक पुकारने वाले को ईमान की तरफ़ बुलाते सुना कि, अपने रब पर ईमान लाओ! तो हम ईमान ले आए। हमारे रब, तो अब तू हमारे गुनाहों को बख़्श दे और हमारी बुराइयों को हमसे दूर कर, और हमें वफ़ादारों के साथ (दुनिया से) उठा।

194. हमें अता कर 'हमारे रब' वह कुछ जिसका तूने अपने रसूलों के ज़रिए से हमसे वादा फ़रमाया है, और क़ियामत के दिन हमें रुसवा न कर; बेशक तू अपने वादे पीछे नहीं डालेगा।"

व ला तक्तुमूनहू फ़-न-बज़ूहु वरा-अ ज़ुहूरिहिम् वश्तरौ बिही स-मनन् क़लीलन्, फ़-बिअ्-स मा यश्तरून (187)

ला तह्सबन्नल्लज़ी-न यफ़्रहू-न बिमा अतव्-व युहिब्बू-न अंय्युह्मदू बिमा लम् यफ़्अलू फ़ला तह्सबन्नहुम् बि-मफ़ाज़तिम् मिनल्-अज़ाबि व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (188)

व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लाहु अला कुल्लि शैइन् क़दीर (189) ●

इन्-न फ़ी ख़ल्किस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि ल-आयातिल्-लिउलिल् अल्बाब(190)

अल्लज़ी-न यज़्कुरूनल्ला-ह क़ियामंव्-व क़ुअूदंव्-व अला जुनूबिहिम् व य-तफ़क्करू-न फ़ी ख़ल्किस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बना मा ख़लक्-त हाज़ा बातिलन् सुब्हान-क फ़क़िना अज़ाबन्नार (191)

रब्बना इन्न-क मन् तुद्ख़िलिन् ना-र फ़-क़द् अख़्ज़ैतहू व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार (192)

रब्बना इन्नना समिअ्ना मुनादियंय्युनादी लिल्ईमानि अन् आमिनू बि-रब्बिकुम् फ़-आमन्ना रब्बना फ़ग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना व कफ़्फ़िर् अन्ना सय्यिआतिना व तवफ़्फ़ना मअल् अब्रार (193)

रब्बना व आतिना मा व-अत्तना अला रुसुलि-क व ला तुख़्ज़िना यौमल्-क़ियामति, इन्न-क ला तुख़्लिफ़ुल् मीआद (194)

وَلَا تَكْتُمُوْنَهٗ ۡ فَنَبَذُوْهُ وَرَآءَ ظُهُوْرِهِمْ وَاشْتَرَوْا بِهٖ ثَمَنًا قَلِيْلًا ؕ فَبِئْسَ مَا يَشْتَرُوْنَ ﴿۱۸۷﴾

لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ اَتَوْا وَّيُحِبُّوْنَ اَنْ يُّحْمَدُوْا بِمَا لَمْ يَفْعَلُوْا فَلَا تَحْسَبَنَّهُمْ بِمَفَازَةٍ مِّنَ الْعَذَابِ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿۱۸۸﴾

وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۱۸۹﴾

اِنَّ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي الْاَلْبَابِ ﴿۱۹۰﴾

الَّذِيْنَ يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ قِيٰمًا وَّقُعُوْدًا وَّعَلٰى جُنُوْبِهِمْ وَيَتَفَكَّرُوْنَ فِيْ خَلْقِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ رَبَّنَا مَا خَلَقْتَ هٰذَا بَاطِلًا ۚ سُبْحٰنَكَ فَقِنَا عَذَابَ النَّارِ ﴿۱۹۱﴾

رَبَّنَآ اِنَّكَ مَنْ تُدْخِلِ النَّارَ فَقَدْ اَخْزَيْتَهٗ ؕ وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ﴿۱۹۲﴾

رَبَّنَآ اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ اَنْ اٰمِنُوْا بِرَبِّكُمْ فَاٰمَنَّا ۖ رَبَّنَا فَاغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَا وَكَفِّرْ عَنَّا سَيِّاٰتِنَا وَتَوَفَّنَا مَعَ الْاَبْرَارِ ﴿۱۹۳﴾

رَبَّنَا وَاٰتِنَا مَا وَعَدْتَّنَا عَلٰى رُسُلِكَ وَلَا تُخْزِنَا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّكَ لَا تُخْلِفُ الْمِيْعَادَ ﴿۱۹۴﴾

195. तो उनके रब ने उनकी पुकार सुन ली कि "मैं तुममें से किसी अमल करनेवाले के अमल अकारत नहीं करता, ख़्वाह वह मर्द हो या औरत। तुम सब आपस में एक-दूसरे से हो। पस जिन लोगों ने हिजरत की, और जो अपने घरों से निकाले गए, और मेरे रास्ते में सताए गए, और लड़े, और मारे गए, मैं उनसे उनकी बुराइयां दूर कर दूंगा, और उन्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी।" यह अल्लाह के यहां से उनका बदला होगा, और बेहतरीन बदला तो अल्लाह ही के पास है।

196. मुल्कों में अहले कुफ़्र की चलत-फिरत तुम्हें किसी धोके में न डाले;

197. यह तो ज़िन्दगी का थोड़ा सा लुत्फ़ है, फिर तो उनका ठिकाना जहन्नम है और वह निहायत बुरा ठिकाना है!

198. लेकिन जो लोग अपने रब से डरते रहे, उनके लिए ऐसे बाग़ात होंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वो उसमें हमेशा रहेंगे। यह अल्लाह की तरफ़ से पहली मेज़बानी होगी; और जो कुछ अल्लाह के पास है अहले वफ़ा के लिए कहीं अच्छा है।

199. और अहले किताब में से कुछ ऐसे भी हैं जो इस हाल में कि दिल उनके अल्लाह के आगे झुके हुए होते हैं, अल्लाह पर ईमान रखते हैं, और उस चीज़ पर भी जो ख़ुद उनकी तरफ़ नाज़िल हुई, वो अल्लाह की आयतों को थोड़ी क़ीमत वसूल करने के लिए क़ुर्बान नहीं करते; उनका अजर उनके रब के पास है; अल्लाह हिसाब भी जल्द ही कर देगा।

200. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, सब्र से काम लो, और मुक़ाबले में साबित क़दम रहो; और आपस में जुड़े और मुक़ाबले में डटे रहो; और अल्लाह से डरते रहो; ताकि तुम कामयाब हो सको।

फ़स्तजा-ब लहुम् रब्बुहुम् अन्नी ला उज़ीअु अ़-म-ल आ़मिलिम् मिन्कुम् मिन् ज़-करिन् औ उन्सा बअ़्जुकुम् मिम्-बअ़्ज़िन् फ़ल्लज़ी-न हाजरू व उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व ऊज़ू फ़ी सबीली व क़ातलू व क़ुतिलू ल-उकफ़्फ़िरन्-न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-उद्ख़िलन्नहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारू सवाबम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि, वल्लाहु अ़िन्दहू हुस्नुस्सवाब (195) *ला यग़ुर्रन्न-क त-क़ल्लुबुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़िल्बिलाद* (196)

मताअ़ुन् क़लीलुन्, सुम्-म मअ़्वाहुम् जहन्न-मु, व बिअ़्सल् मिहाद (197)

लाकिनिल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल् अन्हारू ख़ालिदी-न फ़ीहा नुज़ुलम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि, व मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरूल्-लिल् अब्रार (198) ●

व इन्-न मिन् अह्लिल्-किताबि ल-मंय्युअ्मिनु बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैकुन् व मा उन्ज़ि-ल इलैहिम् ख़ाशिअ़ी-न लिल्लाहि ला यश्तरू-न बिआयातिल्लाहि स-मनन क़लीलन्, उलाइ-क लहुम् अज्रूहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम्, इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल् हिसाब (199)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्बिरू व साबिरू व राबितू, वत्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (200) ●

فَاسْتَجَابَ لَهُمْ رَبُّهُمْ اَنِّيْ لَآ اُضِيْعُ
عَمَلَ عَامِلٍ مِّنْكُمْ مِّنْ ذَكَرٍ
اَوْ اُنْثٰى ۚ بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ
فَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا وَاُخْرِجُوْا مِنْ
دِيَارِهِمْ وَ اُوْذُوْا فِيْ سَبِيْلِيْ
وَقٰتَلُوْا وَقُتِلُوْا لَاُكَفِّرَنَّ عَنْهُمْ
سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاُدْخِلَنَّهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ ثَوَابًا مِّنْ عِنْدِ
اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ عِنْدَهٗ حُسْنُ الثَّوَابِ ﴿١٩٥﴾
لَا يَغُرَّنَّكَ تَقَلُّبُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
فِي الْبِلَادِ ﴿١٩٦﴾
مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۣ ثُمَّ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ
وَبِئْسَ الْمِهَادُ ﴿١٩٧﴾
لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ
جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا نُزُلًا مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ
وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّلْاَبْرَارِ ﴿١٩٨﴾
وَاِنَّ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ لَمَنْ
يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ
وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ خٰشِعِيْنَ لِلّٰهِ ۙ
لَا يَشْتَرُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ
اُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ﴿١٩٩﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اصْبِرُوْا وَصَابِرُوْا
وَرَابِطُوْا ۣ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ
تُفْلِحُوْنَ ﴿٢٠٠﴾

सूरह अन-निसा मदनी

(आयतें 176 - रुकूआत 24)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो, जिसने तुम्हें अकेली जान से बनाया, और उसी जिन्स का उसके लिए जोड़ा पैदा किया, और उन दोनों से बहुत से मर्द और औरतें फैला दीं; अल्लाह का डर रखो जिसका वास्ता देकर तुम एक-दूसरे के सामने अपने मुतालबात रखते हो, और नाते-रिश्तों का भी तुम्हें ख़याल रखना है; यक़ीनन अल्लाह तुमपर निगरां है।

2. यतीमों को उनका माल दे दो, और बुरी चीज़ को अच्छी चीज़ से न बदलना; और उनके माल को अपने माल के साथ मिलाकर खा न जाना; यह बहुत बड़ा गुनाह है।

3. और अगर तुम्हें अन्देशा हो कि यतीमों (यतीम औरतों) के मुआमले में इंसाफ़ न कर सकोगे, तो उन (यतीम) औरतों में से जो तुम्हें पसन्द हों दो-दो, या तीन-तीन, या चार-चार से निकाह कर लो; लेकिन अगर तुम्हें अन्देशा हो कि तुम समान व्यवहार न कर सकोगे, तो फिर एक ही पर बस करो, या उस औरत (लौन्डी) पर जो तुम्हारे क़ब्ज़े में आई हो; इसमें इंसाफ़ से तुम्हारे न हटने का ज़्यादा इमकान है।

4. और औरतों को उनके महर खुशदिली से दो, हां अगर वो अपनी खुशी से इसमें से कुछ तुम्हें छोड़ दें, तो उसे तुम बेझिझक खुशगवार और पाक समझ कर खाओ।

5. और अपने माल जिसे अल्लाह ने तुम्हारे लिए क़ियाम का ज़रिया बनाया, बद अक़लों को न दो; हां उन्हें उसमें से खिलाते और पहनाते रहो, और उन्हें भली बात कहो।

6. और यतीमों को जांचते रहो यहां तक कि जब वो शादी की उम्र को पहुंच जाएं; तो फिर अगर तुम

4 सूरतुन्निसा--इ 92
(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 16667
अक्षर, 3720 शब्द 176 आयतें और
24 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिंव्-व ख़-ल-क़ मिन्हा ज़ौजहा व बस़्-स मिन्हुमा रिजालन् कसीरंव्-व निसाअन्, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी तसाअलू-न बिही वल्अर्हा-म, इन्नल्ला-ह का-न अ़लैकुम् रक़ीबा(1)

व आतुल्-यतामा अम्वालहुम् व ला त-तबद्दलुल्ख़बी-स बित्तय्यिबि व ला तअ्कुलू अम्वालहुम् इला अम्वालिकुम्, इन्नहू का-न हूबन् कबीरा (2)

व इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तुक़्सितू फ़िल्यतामा फ़न्किहू मा ता-ब लकुम् मिनन्निसा-इ मस़्ना व सुला-स व रूबा,अ़ फ़-इन् ख़िफ़्तुम् अल्ला तअ्दिलू फ़वाहि-दतन् औ मा म-लकत् ऐमानुकुम्, ज़ालि-क अद्ना अल्ला तअूलू (3)

व आतुन्निसा-अ सदुक़ातिहिन्-न निह्ल-तन्, फ़-इन् तिब्-न लकुम् अ़न् शैइम् मिन्हु नफ़्सन् फ़कुलूहु हनीअम्-मरीआ (4)

व ला तुअ्तुस्सु-फ़हा-अ अम्वालकुमुल्लती ज-अ़लल्लाहु लकुम् क़ियामंव्-वर्ज़ुक़ूहुम् फ़ीहा वक्सूहुम् व क़ूलू लहुम् क़ौलम् मअ़रूफ़ा (5)

वब्तलुल्-यतामा हत्ता इज़ा ब-लग़ुन्निका-ह फ़-इन् आनस्तुम् मिन्हुम् रुश्दन्

سُوْرَةُ النِّسَآءِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٧٦ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِیْ
خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ وَّ
خَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا
رِجَالًا كَثِیْرًا وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ
تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلَیْكُمْ رَقِیْبًا ①
وَاٰتُوا الْیَتٰمٰۤی اَمْوَالَهُمْ وَلَا تَتَبَدَّلُوا
الْخَبِیْثَ بِالطَّیِّبِ ۪ وَلَا تَاْكُلُوْۤا
اَمْوَالَهُمْ اِلٰۤی اَمْوَالِكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ
حُوْبًا كَبِیْرًا ②
وَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تُقْسِطُوْا فِی الْیَتٰمٰی
فَانْكِحُوْا مَا طَابَ لَكُمْ مِّنَ
النِّسَآءِ مَثْنٰی وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۚ
فَاِنْ خِفْتُمْ اَلَّا تَعْدِلُوْا فَوَاحِدَةً
اَوْ مَا مَلَكَتْ اَیْمَانُكُمْ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤی
اَلَّا تَعُوْلُوْا ③
وَاٰتُوا النِّسَآءَ صَدُقٰتِهِنَّ نِحْلَةً ؕ
فَاِنْ طِبْنَ لَكُمْ عَنْ شَیْءٍ مِّنْهُ
نَفْسًا فَكُلُوْهُ هَنِیْٓـًٔا مَّرِیْٓـًٔا ④
وَلَا تُؤْتُوا السُّفَهَآءَ اَمْوَالَكُمُ الَّتِیْ
جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ قِیٰمًا وَّارْزُقُوْهُمْ
فِیْهَا وَاكْسُوْهُمْ وَقُوْلُوْا لَهُمْ
قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ⑤
وَابْتَلُوا الْیَتٰمٰی حَتّٰۤی اِذَا بَلَغُوا
النِّكَاحَ ۚ فَاِنْ اٰنَسْتُمْ مِّنْهُمْ رُشْدًا

فَادْفَعُوْٓا اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ ۚ وَلَا
تَاْكُلُوْهَآ اِسْرَافًا وَّ بِدَارًا اَنْ
يَّكْبَرُوْا ۭ وَمَنْ كَانَ غَنِيًّا
فَلْيَسْتَعْفِفْ ۚ وَمَنْ كَانَ فَقِيْرًا
فَلْيَاْكُلْ بِالْمَعْرُوْفِ ۭ فَاِذَا دَفَعْتُمْ
اِلَيْهِمْ اَمْوَالَهُمْ فَاَشْهِدُوْا عَلَيْهِمْ ۭ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝
لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ
وَالْاَقْرَبُوْنَ ۠ وَلِلنِّسَاۗءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا تَرَكَ
الْوَالِدٰنِ وَالْاَقْرَبُوْنَ مِمَّا قَلَّ مِنْهُ
اَوْ كَثُرَ ۭ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ۝
وَاِذَا حَضَرَ الْقِسْمَةَ اُولُوا الْقُرْبٰى
وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنُ فَارْزُقُوْهُمْ
مِّنْهُ وَقُوْلُوْا لَهُمْ قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝
وَلْيَخْشَ الَّذِيْنَ لَوْ تَرَكُوْا مِنْ
خَلْفِهِمْ ذُرِّيَّةً ضِعٰفًا خَافُوْا
عَلَيْهِمْ ۠ فَلْيَتَّقُوا اللّٰهَ وَلْيَقُوْلُوْا قَوْلًا
سَدِيْدًا ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ يَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ الْيَتٰمٰى
ظُلْمًا اِنَّمَا يَاْكُلُوْنَ فِيْ بُطُوْنِهِمْ
ع نَارًا ۭ وَسَيَصْلَوْنَ سَعِيْرًا ۝
يُوْصِيْكُمُ اللّٰهُ فِيْٓ اَوْلَادِكُمْ ۤ
لِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ۚ
فَاِنْ كُنَّ نِسَاۗءً فَوْقَ اثْنَتَيْنِ
فَلَهُنَّ ثُلُثَا مَا تَرَكَ ۚ وَاِنْ كَانَتْ
وَاحِدَةً فَلَهَا النِّصْفُ ۭ وَلِاَبَوَيْهِ

फ़द्फ़अू इलैहिम् अम्वालहुम् व ला तअ्कुलूहा इस्राफ़ंव्-व बिदारन् अंय्यक्बरू, व मन् का-न ग़निय्यन् फ़ल्यस्तअ्फ़िफ़् व मन् का-न फ़क़ीरन् फ़ल्यअ्कुल् बिल्मअ्रूफ़ि, फ़-इज़ा द-फ़अ्तुम इलैहिम् अम्वालहुम् फ़-अश्हिदू अ़लैहिम्, व कफ़ा बिल्लाहि हसीबा (6)

लिर्रिजालि नसीबुम्-मिम्मा त-रकल्-वालिदानि वल्-अक़रबू-न व लिन्निसा-इ नसीबुम्-मिम्मा त-रकल्-वालिदानि वल्-अक़्रबू-न मिम्मा क़ल्-ल मिन्हु औ कसु-र, नसीबम् मफ़्रूज़ा (7)

व इज़ा ह-ज़रल् क़िस्म-त उलुल्क़ुर्बा वल्-यतामा वल्मसाकीनु फ़र्ज़ुक़ूहुम् मिन्हु व क़ूलू लहुम क़ौलम् मअ्रूफ़ा (8)

वल्यख़्शल्लज़ी-न लौ त-रकू मिन् ख़ल्फ़िहिम् ज़ुर्रिय्यतन् ज़िआफ़न् ख़ाफ़ू अ़लैहिम् फ़ल्यत्तक़ुल्ला-ह वल्-यक़ूलू क़ौलन् सदीदा (9)

इन्नल्लज़ी-न यअ्कुलू-न अम्वालल्-यतामा ज़ुल्मन् इन्नमा यअ्कुलू-न फ़ी बुतूनिहिम् नारन्, व स-यस्लौ-न सअ़ीरा (10) ●

यूसीकुमुल्लाहु फ़ी औलादिकुम्, लिज़्ज़-करि मिस्लु हज़्ज़िल्-उन्सयैनि फ़-इन् कुन्-न निसाअन् फ़ौक़स्-नतैनि फ़-लहुन्-न सुलुसा मा त-र-क व इन् कानत् वाहि-दतन् फ़-लहन्निस्फ़ु, व लि-अ-बवैहि

देखो कि उनमें समझ-बूझ आ गई है तो उनके माल उनके हवाले कर दो; और इस डर से कि कहीं वो बड़े न हो जाएं तुम उनके माल बेजा उड़ाकर और जल्दी करके खा न जाओ। और जो ख़ुशहाल हो उसे तो इससे बचना ही चाहिए; अलबत्ता जो ग़रीब हो वह मुनासिब तौर पर कुछ खा सकता है। तो जब उनके माल उनके हवाले करने लगो, तो उनकी मौजूदगी में गवाह बना लो; रहा हिसाब लेना तो इसके लिए अल्लाह काफ़ी है।

7. मर्दों का उसमें एक हिस्सा है जो मां-बाप और क़रीबी रिश्तेदार छोड़ जाएं, और औरतों का भी उसमें एक हिस्सा है जो मां-बाप और क़रीबी रिश्तेदारों ने छोड़ा हो — ख़्वाह वह थोड़ा हो या ज़्यादा — यह हिस्सा मुक़र्रर है;

8. और जब तक़सीम के वक़्त रिश्तेदार और यतीम और मुहताज (रिश्तेदार) आ मौजूद हों, तो उन्हें भी उसमें से कुछ (उनका हिस्सा) दे दो, और उन्हें भली बात कहो।

9. और लोगों को डरना चाहिए कि जो ऐसे हैं कि अगर अपने पीछे कमज़ोर बच्चे छोड़ते, तो उन्हें उन बच्चों के बारे में क्या कुछ अंदेशा होता, तो फिर उन्हें अल्लाह से डरना चाहिए, और बात सीधी कहनी चाहिए।

10. जो लोग यतीमों का माल ज़ुल्म के साथ खाते हैं, वो तो आग खाकर अपने पेट भरते हैं, और वो लाज़िमन भड़कती हुई आग में पड़कर रहेंगे।

11. अल्लाह तुम्हारी औलाद के बारे में तुम्हें ताकीद करता है कि दो बेटियों के हिस्से के बराबर एक बेटे का हिस्सा होगा, और अगर दो से ज़्यादा बेटियां ही हों, तो उनका हिस्सा उस तरके का दो तिहाई होगा जो माल छोड़ा गया हो, और अगर वह अकेली हो तो उसका आधा है; और मरने वाले के मां-बाप में से हर एक

لِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ مِمَّا تَرَكَ إِنْ كَانَ لَهٗ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلَدٌ وَّوَرِثَهٗٓ أَبَوٰهُ فَلِأُمِّهِ الثُّلُثُ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهٗٓ إِخْوَةٌ فَلِأُمِّهِ السُّدُسُ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۗ اٰبَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ لَا تَدْرُوْنَ أَيُّهُمْ أَقْرَبُ لَكُمْ نَفْعًا ۚ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ⑪ وَلَكُمْ نِصْفُ مَا تَرَكَ أَزْوَاجُكُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهُنَّ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَهُنَّ وَلَدٌ فَلَكُمُ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْنَ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصِيْنَ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۚ وَلَهُنَّ الرُّبُعُ مِمَّا تَرَكْتُمْ إِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّكُمْ وَلَدٌ ۚ فَإِنْ كَانَ لَكُمْ وَلَدٌ فَلَهُنَّ الثُّمُنُ مِمَّا تَرَكْتُمْ مِّنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ تُوْصُوْنَ بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۗ وَإِنْ كَانَ رَجُلٌ يُّوْرَثُ كَلٰلَةً أَوِ امْرَأَةٌ وَّلَهٗٓ أَخٌ أَوْ أُخْتٌ فَلِكُلِّ وَاحِدٍ مِّنْهُمَا السُّدُسُ ۚ فَإِنْ كَانُوْٓا أَكْثَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَهُمْ شُرَكَآءُ فِي الثُّلُثِ مِنْۢ بَعْدِ وَصِيَّةٍ يُّوْصٰى بِهَآ أَوْ دَيْنٍ ۙ غَيْرَ مُضَآرٍّ ۚ وَصِيَّةً مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ⑫ تِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۗ وَمَنْ يُّطِعِ

लिकुल्लि वाहिदिम्-मिन्हुमस्सुदुसु मिम्मा त-र-क इन् का-न लहू व-लदुन् फ़-इल्लम् यकुल्लहू व-लदुंव्-व वरि-सहू अ-बवाहू फ़-लिउम्मिहिस्सुलुसु फ़-इन् का-न लहू इख़्वतुन् फ़- लिउम्मिहिस्सुदुसु मिम्-बअ्दि वसिय्यतिंय्-यूसी बिहा औ दैनिन्, आबाउकुम् व अब्नाउकुम् ला तद्रू-न अय्युहुम् अक़्रबु लकुम् नफ़्अन्, फ़री-ज़तम् मिनल्लाहि, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् हकीमा (11)

व लकुम् निस्फ़ु मा त-र-क अज़्वाजुकुम् इल्लम् युकुल्लहुन्-न व लदुन् फ़-इन् का-न लहुन्-न व-लदुन् फ़-लकुमुर्रुबुअु मिम्मा तरक्-न मिम्-बअ्दि वसिय्यतिंय्यूसी-न बिहा औ दैनिन्, व लहुन्नर्रुबुअु मिम्मा तरक्तुम् इल्लम् यकुल्लकुम् व-लदुन् फ़-इन् का-न लकुम व-लदुन् फ़-लहुन्नस्सुमुनु मिम्मा तरक्तुम् मिम्-बअ्दि वसिय्यतिन् तूसू-न बिहा औ दैनिन्, व इन् का-न रजुलुंय्यू-रसु कलाल-तन् अविम्र-अतुंव्-व लहू अख़ुन् औ उख़्तुन् फ़-लिकुल्लि वाहिदिम् मिन्हुमस्सुदुसु फ़-इन् कानू अक्स-र मिन् ज़ालि-क फ़हुम् शु-रका-उ फ़िस्सुलुसि मिम्-बअ्दि वसिय्यतिंय्यूसा बिहा औ दैनिन् ग़ै-र मुज़ार्रिन् वसिय्यतम् मिनल्लाहि, वल्लाहु अ़लीमुन् हलीम (12)

तिल्-क हुदूदुल्लाहि, व मंय्युतिअिल्ला

का इसके छोड़े हुए माल का छटा हिस्सा होगा, अगर मरने वाले के औलाद हो; और अगर उसके औलाद न हो और उसके मां-बाप ही उसके वारिस हों, तो उसकी मां का हिस्सा तिहाई रहेगा, और अगर उसके भाई भी हो, तो उसकी मां का हिस्सा छटा रह जाएगा, ये हिस्से, वसीयत जो वह कर जाए पूरी करने, या क़र्ज़ चुकाने के बाद के हैं। यूं तो तुम्हारे बाप भी हैं और तुम्हारे बेटे भी, लेकिन तुम नहीं जानते कि उनमें से कौन नफ़ा के लिहाज़ से तुम से क़रीबतर है। यह हिस्सा अल्लाह का मुक़र्रर किया हुआ है, अल्लाह सब कुछ जानता, समझता है।

12. और तुम्हारी बीवियों ने जो कुछ छोड़ा हो उसमें तुम्हारा आधा है, जबकि उनके औलाद न हो; लेकिन अगर उनके औलाद हों, तो वो जो छोड़ें उसमें तुम्हारा चौथाई होगा, इसके बाद कि जो वसीयत वो कर जाएं वह पूरी कर दी जाए, या जो क़र्ज़ हो वह चुका दिया जाए, और जो कुछ तुम छोड़ो उसमें उनका चौथाई हिस्सा होगा, जबकि तुम्हारे कोई औलाद न हो; लेकिन अगर तुम्हारे औलाद है, तो जो तुम छोड़ोगे उसमें उनका हिस्सा आठवां होगा, इसके बाद कि जो वसीयत तुम कर जाओ पूरी कर दी जाए, या जो क़र्ज़ हो वह अदा कर दिया जाए, और अगर किसी मर्द या औरत का बराहे रास्त कोई वारिस न हो, और उसके एक भाई या बहन हो, तो उन दोनों में से हर एक का छटा हिस्सा होगा; लेकिन अगर वो इससे ज़्यादा हों तो फिर एक तिहाई में वो सब शरीक होंगे, इसके बाद कि जो वसीयत उसने की हो वह पूरी कर दी जाए, या जो क़र्ज़ हो वह चुका दिया जाए बशर्ते कि वह ज़रर रसां (नुक़सानदह) न हो। यह ताकीदी हुक्म अल्लाह की तरफ़ से है। और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, बहुत बुर्दबार है।

13. यह अल्लाह के मुक़र्रर किए हुए हुदूद हैं। जो कोई अल्लाह और

उसके रसूल की इताअत करेगा, उसे अल्लाह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वो हमेशा रहेंगे; और यही बड़ी कामयाबी है।

14. लेकिन जो अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा, और उसके हुदूद से तजावुज़ करेगा, उसे अल्लाह आग में दाख़िल करेगा जिसमें वह हमेशा रहेगा, और उसके लिए रुसवाकुन अज़ाब है।

15. और तुम्हारी औरतों में से जो बदकारी करें तो उनपर चार आदमियों की गवाही कर लो; फिर अगर वो गवाही दें तो उन्हें घरों में बन्द रखो यहां तक कि मौत उन्हें उठा ले या अल्लाह उनके लिए कोई राह निकाले।

16. और तुममें से जो दो बदकारी करें, उन्हें तकलीफ़े दो; फिर अगर वो तौबा कर लें और अपनी इसलाह कर लें तो उन्हें छोड़ दो। अल्लाह तौबा क़बूल करनेवाला, निहायत रहम करनेवाला है।

17. अल्लाह के नज़दीक तौबा उन्ही लोगों के लिए है जो जज़बात में बहकर कोई बुराई कर बैठते हैं, फिर जल्द तौबा करते हैं; ऐसे ही लोग हैं जिनपर अल्लाह तवज्जुह फ़रमाता है; अल्लाह सब कुछ जानता, समझता है।

18. तौबा ऐसे लोगों की नहीं जो बुरे काम किए चले जाते हैं, यहां तक कि जब उनमें से किसी की मौत सामने आ खड़ी होती है, तो वह कहने लगता है कि "मैं अब तौबा करता हूं", और न उनकी जो काफ़िर रह कर मरते हैं; उनके लिए तो हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

19. ऐ ईमान लाने वालों! तुम्हारे लिए जाइज़ नहीं कि औरतों के (माल के) ज़बरदस्ती वारिस बन बैठो; और न यही जाइज़ है कि उन्हें इसलिए रोको और तंग करो कि जो कुछ तुमने उन्हें दिया है उसमें से कुछ ले उड़ो,

-ह व रसूलहू युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व ज़ालिकल् फ़ौज़ुल अज़ीम (13)

व मंय्यअ़सिल्ला-ह व रसूलहू व य-तअ़द्-द हुदू-दहू युद्ख़िल्हु नारन् ख़ालिदन् फ़ीहा व लहू अ़ज़ाबुम् मुहीन (14) ●

वल्लाती यअ्तीनल्-फ़ाहि-श-त मिन्निसा-इकुम् फ़स्तश्हिदू अ़लैहिन्-न अर्ब-अ़तम् मिन्कुम् फ़-इन् शहिदू फ़-अम्सिकूहुन्-न फ़िल्बुयूति हत्ता य-तवफ़्फ़ाहुन्नल्मौतु औ यज्अ़लल्लाहु लहुन्-न सबीला (15)

वल्लज़ानि यअ्तियानिहा मिन्कुम् फ़-आज़ूहुमा फ़-इन् ताबा व अस्लहा फ़-अअ्रिज़ू अ़न्हुमा, इन्नल्ला-ह का-न तव्वाबर्रहीमा (16)

इन्नमत्तौबतु अ़लल्लाहि लिल्लज़ी-न यअ्मलूनस्सू-अ बि-जहालतिन् सुम्-म यतूबू-न मिन् क़रीबिन् फ़-उलाइ-क यतूबुल्लाहु अ़लैहिम्, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा (17)

व लैसतित्तौबतु लिल्लज़ी-न यअ्मलूनस्सय्यिआति हत्ता इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दहुमुल्मौतु क़ा-ल इन्नी तुब्तुल्-आ-न व लल्लज़ी-न यमूतू-न व हुम् कुफ़्फ़ारुन्, उलाइ-क अअ्तद्ना लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (18)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला यहिल्लु लकुम् अन् तरिसुन्निसा-अ करहन्, व ला तअ्ज़ुलूहुन्-न लि-तज़्हबू बि-बअ़ज़ि

اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝۱۳
وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَ رَسُوْلَهٗ وَ
يَتَعَدَّ حُدُوْدَهٗ يُدْخِلْهُ نَارًا
خَالِدًا فِيْهَا ۪ وَلَهٗ عَذَابٌ
ع مُّهِيْنٌ ۝۱۴
وَالّٰتِيْ يَاْتِيْنَ الْفَاحِشَةَ مِنْ
نِّسَآئِكُمْ فَاسْتَشْهِدُوْا عَلَيْهِنَّ اَرْبَعَةً
مِّنْكُمْ ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَاَمْسِكُوْهُنَّ
فِي الْبُيُوْتِ حَتّٰى يَتَوَفّٰهُنَّ الْمَوْتُ
اَوْ يَجْعَلَ اللّٰهُ لَهُنَّ سَبِيْلًا ۝۱۵
وَالَّذٰنِ يَاْتِيٰنِهَا مِنْكُمْ فَاٰذُوْهُمَا ۚ
فَاِنْ تَابَا وَاَصْلَحَا فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمَا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ تَوَّابًا رَّحِيْمًا ۝۱۶
اِنَّمَا التَّوْبَةُ عَلَى اللّٰهِ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ
السُّوْٓءَ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ يَتُوْبُوْنَ مِنْ
قَرِيْبٍ فَاُولٰٓئِكَ يَتُوْبُ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝۱۷
وَلَيْسَتِ التَّوْبَةُ لِلَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ
السَّيِّاٰتِ ۚ حَتّٰٓى اِذَا حَضَرَ اَحَدَهُمُ
الْمَوْتُ قَالَ اِنِّيْ تُبْتُ الْـٰٔنَ
وَلَا الَّذِيْنَ يَمُوْتُوْنَ وَهُمْ كُفَّارٌ ؕ
اُولٰٓئِكَ اَعْتَدْنَا لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝۱۸
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَحِلُّ
لَكُمْ اَنْ تَرِثُوا النِّسَآءَ كَرْهًا ؕ
وَلَا تَعْضُلُوْهُنَّ لِتَذْهَبُوْا بِبَعْضِ

مَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ
بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ ۚ وَعَاشِرُوْهُنَّ
بِالْمَعْرُوْفِ ۚ فَاِنْ كَرِهْتُمُوْهُنَّ
فَعَسٰٓى اَنْ تَكْرَهُوْا شَيْـًٔا وَّيَجْعَلَ
اللّٰهُ فِيْهِ خَيْرًا كَثِيْرًا ⑲
وَاِنْ اَرَدْتُّمُ اسْتِبْدَالَ زَوْجٍ مَّكَانَ
زَوْجٍ ۙ وَّاٰتَيْتُمْ اِحْدٰىهُنَّ قِنْطَارًا فَلَا
تَاْخُذُوْا مِنْهُ شَيْـًٔا ۭ اَتَاْخُذُوْنَهٗ بُهْتَانًا
وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ⑳
وَكَيْفَ تَاْخُذُوْنَهٗ وَقَدْ اَفْضٰى
بَعْضُكُمْ اِلٰى بَعْضٍ وَّاَخَذْنَ مِنْكُمْ
مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ㉑
وَلَا تَنْكِحُوْا مَا نَكَحَ اٰبَاۗؤُكُمْ مِّنَ
النِّسَاۗءِ اِلَّا مَا قَدْ سَلَفَ ۭ اِنَّهٗ كَانَ
ع ٨ ١٤ فَاحِشَةً وَّمَقْتًا ۭ وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ㉒ۧ
حُرِّمَتْ عَلَيْكُمْ اُمَّهٰتُكُمْ وَبَنٰتُكُمْ
وَاَخَوٰتُكُمْ وَعَمّٰتُكُمْ وَخٰلٰتُكُمْ وَبَنٰتُ
الْاَخِ وَبَنٰتُ الْاُخْتِ وَاُمَّهٰتُكُمُ الّٰتِيْٓ
اَرْضَعْنَكُمْ وَاَخَوٰتُكُمْ مِّنَ الرَّضَاعَةِ
وَاُمَّهٰتُ نِسَاۗىِٕكُمْ وَرَبَاۗىِٕبُكُمُ الّٰتِيْ فِيْ
حُجُوْرِكُمْ مِّنْ نِّسَاۗىِٕكُمُ الّٰتِيْ دَخَلْتُمْ
بِهِنَّ ۡ فَاِنْ لَّمْ تَكُوْنُوْا دَخَلْتُمْ بِهِنَّ فَلَا
جُنَاحَ عَلَيْكُمْ ۡ وَحَلَاۗىِٕلُ اَبْنَاۗىِٕكُمُ
الَّذِيْنَ مِنْ اَصْلَابِكُمْ ۙ وَاَنْ
تَجْمَعُوْا بَيْنَ الْاُخْتَيْنِ اِلَّا مَا قَدْ
سَلَفَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ㉓ۙ

मा आतैतुमूहुन्-न इल्ला अंय्यअ्ती-न बिफ़ाहि-शतिम् मुबय्यिनतिन् व आशिरूहुन्-न बिल्-मअ्रूफ़ि फ़-इन् करिह्तुमूहुन्-न फ़-असा अन् तक्रहू शैअंव्-व यज्अलल्लाहु फ़ीहि ख़ैरन् कसीरा (19)

व इन् अरत्तुमुस्तिब्दा-ल ज़ौजिम् मका-न ज़ौजिंव्-व आतैतुम् इह्दाहुन्-न क़िन्तारन् फ़ला तअ्ख़ुज़ु मिन्हु शैअन्, अ-तअ्ख़ुज़ूनहू बुह्तानंव्-व इस्मम् मुबीना (20)

व कै-फ़ तअ्ख़ुज़ूनहू व क़द् अफ़्ज़ा बअ्ज़ुकुम् इला बअ्ज़िंव्-व अख़ज़्-न मिन्कुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा (21)

व ला तन्किहू मा न-क-ह आबाउकुम् मिनन्निसा-इ इल्ला मा क़द् स-ल-फ़, इन्नहू का-न फ़ाहि-शतंव् व मक़्तन्, व सा-अ सबीला (22) ●

हुर्रिमत् अलैकुम् उम्महातुकुम् व बनातुकुम् व अ-ख़वातुकुम् व अ़म्मातुकुम् व ख़ालातुकुम् व बनातुल्-अख़ि व बनातुल्-उख़्ति व उम्महातु-कुमुल्लाती अर्ज़अ्नकुम् व अ-ख़वातुकुम् मिनर्रज़ा-अति व उम्महातु निसा-इकुम् व रबा-इबुकुमुल्लाती फ़ी हुजूरिकुम् मिन्निसा-इकुमुल्लाती दख़ल्तुम् बिहिन्-न फ़-इल्लम् तकूनू दख़ल्तुम बिहिन्-न फ़ला जुना-ह अ़लैकुम् व हला-इलु अब्ना-इकुमुल्लज़ी-न मिन् अस्लाबिकुम् व अन् तज्मअू बैनल्-उख़्तैनि इल्ला मा क़द् स-ल-फ़, इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूर्रहीमा (23)

लेकिन अगर वो खुली बेहयाई का काम कर बैठें तो दूसरी बात है। और उनके साथ भले तरीक़े से रहो-सहो। फिर अगर वो तुम्हें पसन्द न आएं, तो मुमकिन है कि एक चीज़ तुम्हें पसन्द न हो, और अल्लाह उसमें बहुत कुछ भलाई रख दे।

20. और अगर तुम एक बीवी की जगह दूसरी बीवी लाना चाहो, तो ख़्वाह तुमने उनमें किसी को ढेरों माल दे दिया हो, उसमें से कुछ मत लेना। क्या तुम उसपर झूटा इलज़ाम लगाकर और खुले तौरपर हक़ मार कर उसे लोगे?

21. और तुम उसे कैसे ले सकते हो, जबकि तुम एक-दूसरे से मिल चुके हो, और वो तुम से पुख़्ता अहद भी ले चुकी हैं?

22. और उन औरतों से शादी न करो जिनसे तुम्हारे बाप शादी कर चुके हैं, मगर जो पहले हो चुका सो हो चुका। बेशक यह तो एक बेहयाई और निहायत नापसन्दीदा काम है, और बुरी राह है।

23. तुमपर हराम हैं तुम्हारी माएं, बेटियां, बहनें, फूफियां, ख़ालाएं, भतीजियां, भांजियां और तुम्हारी वो माएं जिन्होंने तुम्हें दूध पिलाया हो, और तुम्हारी दूध शरीक बहनें और तुम्हारी ख़ुशदामनें, और तुम्हारी बीवियों की बेटियां जो दूसरे शौहरों से हों, और तुम्हारी परवरिश में हों — तुम्हारी उन बीवियों की बेटियां जिनसे तुम हमबिस्तर हो चुके हो, लेकिन अगर तुम उनसे हमबिस्तर नहीं हुए तो इसमें तुमपर कोई गुनाह नहीं — और तुम्हारे उन बेटों की बीवियां जो तुम से पैदा हों, और यह भी कि तुम दो बहनों को इकट्ठा करो, मगर जो पहले हो चुका सो हो चुका; यक़ीनन अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला है।

24. और शौहर वाली औरतें, सिवाय उनके जो तुम्हारी बांदियां हों। यह अल्लाह ने तुम्हारे लिए लाज़िम कर दिया है। इनके अलावा बाक़ी औरतें तुम्हारे लिए जाइज़ हैं कि तुम अपने माल के ज़रिए से उन्हें तलब करो, इफ़्फ़त की हिफ़ाज़त के लिए न कि यह काम शहवतरानी के लिए हो। फिर उनसे तुम निकाह का लुत्फ़ उठाओ तो उनका मुक़र्रर हक़ भी अदा करो; और अगर हक़ मुक़र्रर हो जाने के बाद तुम आपस में अपनी खुशी से कोई समझोता कर लो तो इसमें तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं। अल्लाह तो सब कुछ जानता, समझता है।

25. और तुममें से जिस किसी की इतनी हैसियत न हो कि पाकदामन आज़ाद मोमिन औरतों से निकाह कर सके, तो तुम्हारी वो मोमिन बांदी जवान लड़कियां ही सही जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों; और अल्लाह तुम्हारे ईमान के मुतअल्लिक़ बेहतर जानता है; तुम सब आपस में एक ही हो। तो उनके मालिकों की इजाज़त हासिल कर के तुम उनसे शादी कर लो, और आम दस्तूर के मुताबिक़ उन्हें उनका हक़ भी दो। वो इफ़्फ़त व इसमत की हिफ़ाज़त करनेवाली हों, महज़ शहवतरानी करने वाली न हों और न दो चोरी-छुपे याराना करती हों। फिर जब वो निकाह में आ जाएं, और उसके बाद बेहयाई का काम करें, तो जो सज़ा आज़ाद औरतों के लिए है उसकी आधी उनके लिए होगी। यह तुममें से उस शख़्स के लिए है जिसे ख़राबी में पड़ जाने का ख़ौफ़ हो; और यह कि तुम सब्र करो तो यह तुम्हारे लिए ज़्यादा अच्छा है। अल्लाह तो बहुत बख़्शनेवाला, निहायत रहमवाला है।

26. अल्लाह चाहता है कि तुमसे खोलकर बयान करे, और तुम्हें उन लोगों के तरीक़ों पर चलाए जो तुमसे पहले हुए हैं। और तुमपर तवज्जुह फ़रमाए; अल्लाह तो सब कुछ जाननेवाला हिकमतवाला है;

27. और अल्लाह चाहता है कि तुम्हारी तरफ़ तवज्जुह फ़रमाए, लेकिन जो लोग अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी करते हैं वो चाहते हैं कि तुम राह से हटकर बहुत दूर जा पड़ो।

वल्-मुह्सनातु मिनन्निसा-इ इल्ला मा म-लकत् ऐमानुकुम् किताबल्लाहि अ़लैकुम् व उहिल्-ल लकुम् मा वरा-अ ज़ालिकुम् अन् तब्तग़ू बिअम्वालिकुम् मुह्सिनी-न ग़ै-र मुसाफ़िही-न, फ़मस्तम्तअ्तुम् बिही मिन्हुन्-न फ़आतूहुन्-न उजूरहुन्-न फ़री-ज़तन्, व ला जुना-ह अ़लैकुम् फ़ीमा-तराज़ैतुम् बिही मिम्-बअ्दिल् फ़री-ज़ति, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् हकीमा (24)

व मल्लम् यस्ततिअ् मिन्कुम् तौलन् अंय्यन्किहल् मुह्सनातिल्-मुअ्मिनाति फ़-मिम्मा म-लकत् ऐमानुकुम् मिन् फ़-तयातिकुमुल्-मुअ्मिनाति, वल्लाहु अअ्लमु बिईमानिकुम, बअ्जुकुम् मिम्-बअ्ज़िन फ़न्किहूहुन्-न बि-इज़्नि अह्लिहिन्-न व आतूहुन्-न उजूरहुन्-न बिल्मअ़रूफ़ि मुह्सनातिन् ग़ै-र मुसाफ़िहातिंव्वला मुत्तख़िज़ाति अख़्दानिन् फ़-इज़ा उह्सिन्-न फ़-इन् अतै-न बिफ़ाहि-शतिन् फ़-अ़लैहिन्-न निस्फ़ु मा अ़लल् मुह्सनाति मिनल्-अ़ज़ाबि, ज़ालि-क लिमन् ख़शियल् अ़-न-त मिन्कुम्, व अन् तस्बिरू ख़ैरुल्लकुम्. वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (25)●

युरीदुल्लाहु लि-युबय्यि-न लकुम् व यह्दि-यकुम् सु-ननल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् व यतू-ब अ़लैकुम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (26)

वल्लाहु युरीदु अंय्यतू-ब अ़लैकुम्, वयुरीदुल्लज़ी-न यत्तबिअूनश्श-हवाति अन् तमीलू मैलन् अ़ज़ीमा (27)

وَّالْمُحْصَنٰتُ مِنَ النِّسَآءِ اِلَّا مَا
مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۚ كِتٰبَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۚ
وَاُحِلَّ لَكُمْ مَّا وَرَآءَ ذٰلِكُمْ اَنْ
تَبْتَغُوْا بِاَمْوَالِكُمْ مُّحْصِنِيْنَ غَيْرَ
مُسٰفِحِيْنَ ؕ فَمَا اسْتَمْتَعْتُمْ بِهٖ
مِنْهُنَّ فَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ فَرِيْضَةً ؕ
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ فِيْمَا تَرٰضَيْتُمْ
بِهٖ مِنْۢ بَعْدِ الْفَرِيْضَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۝۲۴
وَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ مِنْكُمْ طَوْلًا اَنْ
يَّنْكِحَ الْمُحْصَنٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ فَمِنْ
مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ فَتَيٰتِكُمُ
الْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِكُمْ ؕ
بَعْضُكُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۚ فَانْكِحُوْهُنَّ
بِاِذْنِ اَهْلِهِنَّ وَاٰتُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ
بِالْمَعْرُوْفِ مُحْصَنٰتٍ غَيْرَ مُسٰفِحٰتٍ
وَّلَا مُتَّخِذٰتِ اَخْدَانٍ ۚ فَاِذَآ اُحْصِنَّ
فَاِنْ اَتَيْنَ بِفَاحِشَةٍ فَعَلَيْهِنَّ نِصْفُ
مَا عَلَى الْمُحْصَنٰتِ مِنَ الْعَذَابِ ؕ
ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ الْعَنَتَ مِنْكُمْ ؕ وَاَنْ
ع تَصْبِرُوْا خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝۲۵
يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُبَيِّنَ لَكُمْ وَيَهْدِيَكُمْ
سُنَنَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَيَتُوْبَ
عَلَيْكُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝۲۶
وَاللّٰهُ يُرِيْدُ اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْكُمْ ۟
وَيُرِيْدُ الَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الشَّهَوٰتِ
اَنْ تَمِيْلُوْا مَيْلًا عَظِيْمًا ۝۲۷

28. अल्लाह चाहता है कि तुमपर से बोझ हलका कर दे, इसलिए कि इंसान कमज़ोर पैदा हुआ है।

29. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, न आपस में एक-दूसरे के माल बातिल तरीक़े से खाओ — यह और बात है कि तुम्हारी आपस की रिज़ामन्दी से कोई सौदा हो — और न आपस में खून करो। बेशक अल्लाह तुमपर बहुत मेहरबान है।

30. और जो कोई ज़्यादती और ज़ुल्म से ऐसा करेगा, तो उसे हम जल्द ही आग में झोंक देंगे; और यह अल्लाह के लिए आसान है।

31. अगर तुम बड़े गुनाहों से जिनसे तुम्हें रोका जा रहा है बचते रहो, तो हम तुम्हारी बुराइयों को तुमसे दूर कर देंगे, और तुम्हें इज़्ज़त की जगह दाख़िल करेंगे।

32. और उसकी तमन्ना तुम न करो जिसमें अल्लाह ने तुम में बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत अता की है। मर्दों का उनकी अपनी कमाई के मुताबिक़ हिस्सा है और औरतों का उनकी अपनी कमाई के मुताबिक़ हिस्सा है। और अल्लाह से उसका फ़ज़्ल तलब करो; यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है।

33. और हर एक माल के लिए हमने उस माल में वारिस मुकर्रर कर दिए हैं, जो मां-बाप और क़रीबी रिश्तेदार छोड़ जाएं, और वो जिनसे अपनी क़समों के ज़रिए से तुम्हारा अहद हो चुका हो, पस उन्हें उनका हिस्सा दो; इसमें शक नहीं कि हर चीज़ अल्लाह के सामने है।

34. मर्द औरतों के निगरां और ज़िम्मेदार हैं। इसलिए कि अल्लाह ने उनमें बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत अता की है, और इस वजह से भी कि मर्दों ने अपने माल ख़र्च किए हैं। तो नेक औरतें तो हुक्म मानने वाली होती हैं, अल्लाह की हिफ़ाज़त की हुई चीज़ के ज़रिए से निगाहों से ओझल चीज़ों की हिफ़ाज़त करती हैं। और वो औरतें

युरीदुल्लाहु अंय्युख़फ़्फ़ि-फ अन्कुम् व ख़ुलिक़ल्-इन्सानु ज़ओफ़ा (28)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तअ्कुलू अम्वालकुम् बैनकुम् बिल्बातिलि इल्ला अन् तकू-न तिजा-रतन् अन् तराज़िम् मिन्कुम्, व ला तक़्तुलू अन्फु-सकुम्, इन्नल्ला-ह का-न बिकुम् रहीमा(29)

व मंय्यफ़्अल् ज़ालि-क अुद्वानंव्-व ज़ुल्मन् फ़सौ-फ नुस्लीहि नारन्, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा (30)

इन् तज्तनिबू कबा-इ-र मा तुन्हौ-न अ़न्हु नुकफ़्फ़िर् अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व नुद्ख़िल्कुम् मुद्-ख़लन् करीमा (31)

व ला त-तमन्नौ मा फ़ज़्ज़लल्लाहु बिही बअ्ज़कुम् अ़ला बअ्ज़िन्, लिर्रिजालि नसीबुम् मिम्-मक्त-सबू-व लिन्निसा-इ नसीबुम् मिम्-मक्त-सब्-न, वस्अलुल्ला-ह मिन् फ़ज़्लिही, इन्नल्ला-ह का-न बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा (32)

व लिकुल्लिन् जअ़ल्ना मवालि-य मिम्मा त-रकल्- वालिदानि वल्-अक़्रबू-न, वल्लज़ी,-न अ़-क़दत् ऐमानुकुम् फ़-आतूहुम् नसीबहुम्, इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन् शहीदा (33) ●

अर्रिजालु क़व्वामू-न अ़लन्निसा-इ बिमा फ़ज़्ज़लल्लाहु बअ्ज़हुम् अ़ला बअ्ज़िंव्-व बिमा अन्फ़क़ू मिन् अम्वालिहिम्, फ़स्सालिहातु क़ानितातुन् हाफ़िज़ातुल्- लिल्ग़ैबि बिमा हफ़िज़ल्लाहु, वल्लाती तख़ाफ़ू-न नुशूज़हुन्-न

يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّخَفِّفَ عَنْكُمْ ۚ
وَخُلِقَ الْاِنْسَانُ ضَعِيْفًا ﴿۲۸﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَاْكُلُوْۤا اَمْوَالَكُمْ
بَيْنَكُمْ بِالْبَاطِلِ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ
تِجَارَةً عَنْ تَرَاضٍ مِّنْكُمْ ۟ وَلَا
تَقْتُلُوْۤا اَنْفُسَكُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
بِكُمْ رَحِيْمًا ﴿۲۹﴾
وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ عُدْوَانًا وَّظُلْمًا
فَسَوْفَ نُصْلِيْهِ نَارًا ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ
عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ﴿۳۰﴾
اِنْ تَجْتَنِبُوْا كَبَآئِرَ مَا تُنْهَوْنَ عَنْهُ
نُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَنُدْخِلْكُمْ مُّدْخَلًا
كَرِيْمًا ﴿۳۱﴾
وَلَا تَتَمَنَّوْا مَا فَضَّلَ اللّٰهُ بِهٖ بَعْضَكُمْ
عَلٰى بَعْضٍ ؕ لِلرِّجَالِ نَصِيْبٌ مِّمَّا
اكْتَسَبُوْا ؕ وَلِلنِّسَآءِ نَصِيْبٌ مِّمَّا
اكْتَسَبْنَ ؕ وَسْئَلُوا اللّٰهَ مِنْ فَضْلِهٖ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿۳۲﴾
وَلِكُلٍّ جَعَلْنَا مَوَالِيَ مِمَّا تَرَكَ الْوَالِدٰنِ
وَالْاَقْرَبُوْنَ ؕ وَالَّذِيْنَ عَقَدَتْ اَيْمَانُكُمْ
فَاٰتُوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى
ع كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿۳۳﴾
اَلرِّجَالُ قَوّٰمُوْنَ عَلَى النِّسَآءِ بِمَا
فَضَّلَ اللّٰهُ بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ
وَّبِمَاۤ اَنْفَقُوْا مِنْ اَمْوَالِهِمْ ؕ فَالصّٰلِحٰتُ
قٰنِتٰتٌ حٰفِظٰتٌ لِّلْغَيْبِ بِمَا حَفِظَ
اللّٰهُ ؕ وَالّٰتِيْ تَخَافُوْنَ نُشُوْزَهُنَّ

जिनकी सरकशी का तुम्हें अन्देशा हो उन्हें समझाओ; और बिस्तरों में उन्हें तनहा छोड़ दो, और उन्हें मारो। फिर अगर वो तुम्हारी बात मानने लगें, तो उनके ख़िलाफ़ कोई रास्ता तलाश मत करना; अल्लाह सबसे बुलन्द, सबसे बड़ा है।

35. और अगर तुम्हें उन दोनों के दरमियान इफ्तिराक़ का अन्देशा हो, तो एक सालिस (पंच) मर्द के लोगों में से और एक सालिस औरत के लोगों में से मुकर्रर करो, अगर वो दोनों बनाव चाहेंगे तो अल्लाह उनमें मुवाफ़क़त की सूरत पैदा कर देगा; बेशक अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, ख़बर रखनेवाला है।

36. अल्लाह की बन्दगी करो, उसके साथ किसी चीज़ को शरीक न करो। और बर्ताव अच्छा रखो मां-बाप के साथ, रिश्तेदारों, यतीमों, और मुहताजों के साथ, क़रीबी पड़ोसियों के साथ और अजनबी पड़ोसियों के साथ और साथ रहनेवाले साथी के साथ और मुसाफ़िर के साथ और उनके साथ भी जो तुम्हारे क़ब्ज़े में हों। अल्लाह ऐसे शख़्स को नहीं चाहता जो इतराता और डींगें मारता हो,

37. वो जो ख़ुद कंजूसी करते हैं और लोगों को भी कंजूसी पर उभारते हैं, और अल्लाह ने अपने फ़ज़्ल से जो कुछ (इल्म) उन्हें दे रखा है उसे छुपाते हैं। हमने तो न माननेवालों के लिए रुसवाकुन अज़ाब तैयार कर रखा है।

38. वो जो अपने माल लोगों को दिखाने के लिए ख़र्च करते हैं, न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न रोज़-ए-आख़िर पर। जिस किसी का साथी शैतान हुआ, तो वह तो बहुत ही बुरा साथी है।

39. उनका क्या बिगड़ जाता अगर वो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाते, और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया उसमें से ख़र्च

फ़-अिज़ूहुन्-न वह्जुरूहुन्-न फ़िल्मज़ाजिअि वज़्रिबूहुन्-न फ़-इन् अ-तअ्नकुम् फ़ला तब्ग़ू अ़लैहिन्-न सबीलन्, इन्नल्ला-ह का-न अ़लिय्यन् कबीरा (34)

व इन् ख़िफ़्तुम् शिक़ा-क़ बैनिहिमा फ़ब्अ़सू ह-कमम् मिन् अह्लिही व ह-कमम् मिन् अह्लिहा इंय्युरीदा इस्लाहंय्युवफ़्फ़िक़िल्लाहु बैनहुमा, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् ख़बीरा (35)

वअ्बुदुल्ला-ह व ला तुश्रिकू बिही शैअंव्-व बिल्-वालिदैनि इह्सानंव्-व बि-ज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वल्जारि ज़िल्क़ुर्बा वल्जारिल्-जुनुबि वस्साहिबि बिल् जम्बि वब्निस्सबीलि व मा म-लकत् ऐमानुकुम्, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का-न मुख़्तालन् फ़ख़ूरा (36)

अल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरूनन्-ना-स बिल्-बुख़्लि व यक्तुमू-न मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही, व अअ्तद्ना लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम्-मुहीना (37)

वल्लज़ी-न युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् रिआअन्नासि व ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व ला बिल् यौमिल्-आख़िरि व मंय्यकुनिश्शैतानु लहू क़रीनन् फ़सा-अ क़रीना (38)

व माज़ा अ़लैहिम् लौ आमनू बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व अन्फ़क़ू मिम्मा र-ज़-क़-हुमुल्लाहु,

فَعِظُوْهُنَّ وَاهْجُرُوْهُنَّ فِي
الْمَضَاجِعِ وَاضْرِبُوْهُنَّ ۚ فَاِنْ
اَطَعْنَكُمْ فَلَا تَبْغُوْا عَلَيْهِنَّ
سَبِيْلًا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيًّا
كَبِيْرًا ۝٣٤
وَاِنْ خِفْتُمْ شِقَاقَ بَيْنِهِمَا فَابْعَثُوْا
حَكَمًا مِّنْ اَهْلِهٖ وَحَكَمًا مِّنْ
اَهْلِهَا ۚ اِنْ يُّرِيْدَآ اِصْلَاحًا يُّوَفِّقِ
اللّٰهُ بَيْنَهُمَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا
خَبِيْرًا ۝٣٥
وَاعْبُدُوا اللّٰهَ وَلَا تُشْرِكُوْا بِهٖ
شَيْـًٔا وَّبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّبِذِي
الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ
وَالْجَارِ ذِي الْقُرْبٰى وَالْجَارِ الْجُنُبِ
وَالصَّاحِبِ بِالْجَنْۢبِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ
وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ ۗ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ
مَنْ كَانَ مُخْتَالًا فَخُوْرَا ۙ ۝٣٦
الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ
بِالْبُخْلِ وَيَكْتُمُوْنَ مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ
مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابًا مُّهِيْنًا ۚ ۝٣٧
وَالَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ رِئَآءَ
النَّاسِ وَلَا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَلَا بِالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ۗ وَمَنْ يَّكُنِ الشَّيْطٰنُ لَهٗ قَرِيْنًا
فَسَآءَ قَرِيْنًا ۝٣٨
وَمَاذَا عَلَيْهِمْ لَوْ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ ۗ

करते? अल्लाह तो उन्हें पूरी तरह जानता है।

40. अल्लाह किसी के साथ ज़र्रा भर भी जुल्म नहीं करता; और अगर कोई एक नेकी हो तो वह उसे कई गुना बढ़ा देगा, और अपने पास से बड़ा अजर अता करेगा।

41. फिर क्या हाल होगा, जब हम हर उम्मत में से एक गवाह लाएंगे, और खुद तुम्हें उन लोगों के मुक़ाबले में गवाह बना कर पेश करेंगे?

42. उस दिन वो लोग जिन्होंने इनकार किया होगा, और रसूल की नाफ़रमानी की होगी, यही आरज़ू करेंगे कि किसी तरह उन्हें ज़मीन में मिलाकर उसे बराबर कर दिया जाए; वो अल्लाह से कोई एक बात भी न छुपा सकेंगे।

43. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, मदहोशी की हालत में नमाज़ में मसरूफ़ न हो जब तक कि तुम यह न जानने लगो कि क्या कह रहे हो, और इसी तरह जनाबत की हालत में भी जब तक कि तुम गुस्ल न कर लो, सिवाय यह कि रास्ता पार कर रहे हो; लेकिन अगर तुम बीमार हो या सफ़र में हो, या तुममें से कोई जाए ज़रूर (बैतुलख़ला) से आया हो, या तुमने औरतों को हाथ लगाया हो, फिर तुम्हें पानी न मिले, तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो, पस उससे अपने चेहरों और अपने हाथों का मसह कर लो; अल्लाह तो बड़ा माफ़ करने वाला, बहुत बख़्शने वाला है।

44. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें खुशनसीबी यानी किताब मिली थी, वो गुमराही मोल लेते हैं और चाहते हैं कि तुम भी रास्ते से भटक जाओ;

45. अल्लाह तुम्हारे दुश्मनों को खूब जानता है; अल्लाह एक सरपरस्त की हैसियत से काफी है और अल्लाह एक मददगार की हैसियत से भी काफ़ी है।

46. वो लोग जो यहूदी बन गए वो लफ़्ज़ों को उनके मक़ामात से दूसरी तरफ़ फेर देते हैं और कहते हैं, "समिअना व असैना" (हमने सुना लेकिन हम मानते नहीं), और "इसमअ ग़ैर मुसमइन" (सुनो हालांकि तुम सुनने के लायक़ नहीं) और "राइना" (हमारी तरफ़ तवज्जुह दो)" — यह वो अपनी

व कानल्लाहु बिहिम् अ़लीमा (39)

इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमु मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् व इन् तकु ह-स-नतंय्युज़ाअ़िफ़्हा व युअ्ति मिल्लदुन्हु अज्रन् अ़ज़ीमा (40)

फ़कै-फ़ इज़ा जिअ्ना मिन् कुल्लि उम्मतिम् बि-शहीदिंव्-व जिअ्ना बि-क अ़ला हा-उला-इ शहीदा (41)

यौमइज़िंय्- यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू व अ़-सवुर्-रसू-ल लौ तुसव्वा बिहिमुल्-अर्ज़ु, व ला यक्तुमूनल्ला-ह हदीसा (42) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़्रबुस्सला-त व अन्तुम् सुकारा हत्ता तअ्लमू मा तक़ूलू-न व ला जुनुबन् इल्ला आ़बिरी सबीलिन् हत्ता तग़्तसिलू, व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अ़ला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम् मिन्कुम् मिनल्ग़ा-इति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ़-लम् तजिदू माअन् फ़-तयम्ममू सअ़ीदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बिवुजूहिकुम् व ऐदीकुम्, इन्नल्ला-ह का-न अ़फ़ुव्वन् ग़फ़ूरा (43)

अलम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम् मिनल् किताबि यश्तरूनज़्ज़ला-ल-त व युरीदू-न अन् तज़िल्लुस्सबील (44)

वल्लाहु अअ्लमु बि-अअ्दा-इकुम्, व कफ़ा बिल्लाहि वलिय्यंव्-व कफ़ा बिल्लाहि नसीरा (45)

मिनल्लज़ी-न हादू युहर्रिफ़ूनल् कलि-म अ़म्मवाज़िअ़िही व यक़ूलू-न समिअ्ना व अ़सैना वस्मअ् ग़ै-र मुस्मअ़िंव्-व राअ़िना लय्यम् बि-अल्सिनतिहिम् व तअ्नन् फ़िद्दीनि, व लौ

وَكَانَ اللّٰهُ بِهِمْ عَلِيْمًا (٣٩)
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ ۚ
وَاِنْ تَكُ حَسَنَةً يُّضٰعِفْهَا وَ يُؤْتِ
مِنْ لَّدُنْهُ اَجْرًا عَظِيْمًا (٤٠)
فَكَيْفَ اِذَا جِئْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ ۢ بِشَهِيْدٍ
وَّجِئْنَا بِكَ عَلٰى هٰٓؤُلَآءِ شَهِيْدًا (٤١)
يَوْمَىِٕذٍ يَّوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَعَصَوُا
الرَّسُوْلَ لَوْ تُسَوّٰى بِهِمُ الْاَرْضُ ؕ
ع وَلَا يَكْتُمُوْنَ اللّٰهَ حَدِيْثًا (٤٢)
وقف النبي صلى الله عليه وآله وسلم
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْرَبُوا الصَّلٰوةَ
وَاَنْتُمْ سُكٰرٰى حَتّٰى تَعْلَمُوْا مَا
تَقُوْلُوْنَ وَلَا جُنُبًا اِلَّا عَابِرِيْ
سَبِيْلٍ حَتّٰى تَغْتَسِلُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ
مَّرْضٰٓى اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ
مِّنْكُمْ مِّنَ الْغَآىِٕطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ
فَلَمْ تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا
طَيِّبًا فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا غَفُوْرًا (٤٣)
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ اُوْتُوْا نَصِيْبًا مِّنَ
الْكِتٰبِ يَشْتَرُوْنَ الضَّلٰلَةَ وَيُرِيْدُوْنَ
اَنْ تَضِلُّوا السَّبِيْلَ (٤٤)
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِاَعْدَآىِٕكُمْ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ
وَلِيًّا ۙ وَّكَفٰى بِاللّٰهِ نَصِيْرًا (٤٥)
مِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ
عَنْ مَّوَاضِعِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ سَمِعْنَا
وَعَصَيْنَا وَاسْمَعْ غَيْرَ مُسْمَعٍ وَّرَاعِنَا
لَيًّا بِاَلْسِنَتِهِمْ وَطَعْنًا فِي الدِّيْنِ ؕ وَلَوْ

पर चोटें करते हुए कहते हैं। और अगर वो कहते "समि'अना व अत'अना" (हमने सुना और माना) और "इसम'अ" (सुनो) और "उनज़ुरना" (हमारी तरफ़ निगाह करो) तो यह उनके लिए बेहतर और ज़्यादा ठीक होता; लेकिन उन पर तो उनके इनकार की वजह से अल्लाह ने लानत की है, फिर वो ईमान थोड़े ही लाते हैं।

47. ऐ लोगो जिन्हें किताब मिली थी, उस चीज़ को मानो जो हमने उतारी है, जो उसकी तसदीक़ में भी है जो खुद तुम्हारे पास है, इससे पहले कि हम चेहरों के नुक़ूश को मिटा कर रख दें, और उन्हें उनके पीछे की तरफ़ उलट दें, या उनपर लानत करें जिस तरह हमने सब्त वालों पर लानत की थी और अल्लाह का हुक्म तो नाफ़िज़ होकर ही रहता है।

48. अल्लाह इसको माफ़ नहीं करेगा कि उसका शरीक क़रार दिया जाए; लेकिन इससे कमतर दर्जे के गुनाह को जिसके लिए मंजूर होगा माफ़ कर देगा। और जिसने अल्लाह का शरीक ठहराया, उसने तो बहुत बड़ा गुनाह घड़ लिया।

49. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो अपने नफ़्स की उमदगी व बालीदगी का दावा करते हैं? बल्कि अल्लाह जिसे चाहता है बालीदगी अता करता है; अलबत्ता ज़ुल्म तो उनके साथ ज़रा भी न होगा।

50. देखो तो सही वो अल्लाह पर कैसा झूट मंढते हैं; गुनाहे सरीह के लिए तो यही काफ़ी है।

51. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्हें खुशनसीबी यानी किताब मिली है वो जिब्त (बुतों) और तागूत पर ईमान रखते हैं, और अहले कुफ़्र के बारे में कहते हैं कि "ये अहले ईमान से कहीं बढ़कर सही रास्ते पर हैं?"

52. वही हैं जिनपर अल्लाह ने लानत की; और जिस पर अल्लाह की लानत हो, उसका हरगिज़ कोई मददगार तुम न पाओगे।

53. या उनका बादशाही में कोई हिस्सा है; फिर तो ये लोगों को फूटी कौड़ी तक देने के रवादार न होते।

54. या ये लोगों से जो अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अता फ़रमाया है

अन्नहुम क़ालू समिअ्ना व अ-तअ्ना वस्मअ् वन्ज़ुर्ना लका-न ख़ैरल्लहुम् व अक़्व-म व लाकिल्-ल-अ-नहुमुल्लाहु बिकुफ़्रिहिम् फ़ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला (46)

या अय्युहल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब आमिनू बिमा नज़्ज़ल्ना मुसद्दिक़ल्लिमा म-अकुम् मिन् क़ब्लि अन्नत्मि-स वुजूहन् फ़-नरुद्दहा अला अद्बारिहा औ नल्अ-नहुम् कमा ल-अन्ना अस्हाबस्सब्ति, व का-न अम्रुल्लाहि मफ़्अूला (47)

इन्नल्ला-ह ला यग्फ़िरू अंय्युश्र-क बिही व यग्फ़िरू मा दू-न ज़ालि-क लिमंय्यशा-उ व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-क़दिफ़्तरा इस्मन् अज़ीमा (48)

अलम् त-र इलल्लज़ी-न युज़क्कू-न अन्फ़ुसहुम, बलिल्लाहु युज़क्की मंय्यशा-उ व ला युज़्लमू-न फ़तीला (49)

उन्ज़ुर् कै-फ़ यफ़्तरू-न अलल्लाहिल्-कज़ि-ब, व कफ़ा बिही इस्मम् मुबीना (50) ●

अलम् त-र इलल्लज़ी-न ऊतू नसीबम् मिनल्-किताबि युअ्मिनू-न बिल्-जिब्ति वत्तागूति व यक़ूलू-न लिल्लज़ी-न क-फ़रू हा-उला-इ अह्दा मिनल्लज़ी-न आमनू सबीला (51)

उला-इकल्लज़ी-न ल-अ-नहुमुल्लाहु, व मंय्यल्अनिल्लाहु फ़-लन् तजि-द लहू नसीरा (52)

अम् लहुम् नसीबुम् मिनल्-मुल्कि फ़-इज़ल्ला युअ्तूनन्ना-स नक़ीरा (53)

अम् यह्सुदूनन्ना-स अला मा आताहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही फ़-क़द् आतैना आ-ल

أَنَّهُمْ قَالُوا سَمِعْنَا وَأَطَعْنَا وَاسْمَعْ
وَانْظُرْنَا لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ وَأَقْوَمَ
وَلٰكِنْ لَّعَنَهُمُ اللّٰهُ بِكُفْرِهِمْ فَلَا
يُؤْمِنُونَ إِلَّا قَلِيلًا ﴿٤٦﴾
يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ أُوتُوا الْكِتٰبَ اٰمِنُوا بِمَا
نَزَّلْنَا مُصَدِّقًا لِّمَا مَعَكُمْ مِّنْ قَبْلِ
أَنْ نَّطْمِسَ وُجُوهًا فَنَرُدَّهَا عَلٰٓى
أَدْبَارِهَآ أَوْ نَلْعَنَهُمْ كَمَا لَعَنَّآ أَصْحٰبَ
السَّبْتِ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُولًا ﴿٤٧﴾
إِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ
مَا دُونَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَنْ يُّشْرِكْ
بِاللّٰهِ فَقَدِ افْتَرٰٓى إِثْمًا عَظِيمًا ﴿٤٨﴾
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ يُزَكُّونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ
بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّي مَنْ يَّشَآءُ وَلَا يُظْلَمُونَ
فَتِيلًا ﴿٤٩﴾
اُنْظُرْ كَيْفَ يَفْتَرُونَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۚ
ع وَكَفٰى بِهٖٓ إِثْمًا مُّبِينًا ﴿٥٠﴾
أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ أُوتُوا نَصِيبًا مِّنَ
الْكِتٰبِ يُؤْمِنُونَ بِالْجِبْتِ وَالطَّاغُوتِ
وَيَقُولُونَ لِلَّذِينَ كَفَرُوا هٰٓؤُلَآءِ
أَهْدٰى مِنَ الَّذِينَ اٰمَنُوا سَبِيلًا ﴿٥١﴾
أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَمَنْ
يَّلْعَنِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ نَصِيرًا ﴿٥٢﴾
أَمْ لَهُمْ نَصِيبٌ مِّنَ الْمُلْكِ فَإِذًا لَّا
يُؤْتُونَ النَّاسَ نَقِيرًا ﴿٥٣﴾
أَمْ يَحْسُدُونَ النَّاسَ عَلٰى مَآ اٰتٰىهُمُ
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَقَدْ اٰتَيْنَآ اٰلَ

उसपर हसद करते हैं? हमने तो इब्राहीम के लोगों को किताब और हिकमत दी और उन्हें बड़ी सलतनत अता कर दी।

55. फिर उनमें से कोई उसपर ईमान लाया, और उनमें से किसी ने उससे किनारा कशी ही इख़्तियार की; और भड़कती आग की हैसियत से जहन्नम काफ़ी है।

56. जिन लोगों ने हमारी आयतों का इनकार किया उन्हें हम जल्द ही आग में झोंकेंगे; हर बार जब भी उनकी खालें पक जाएंगी, उन्हें हम दूसरी खालों से बदल देंगे, ताकि वो अज़ाब का मज़ा चखते ही रहें। बेशक अल्लाह ग़ालिब, निहायत हिकमतवाला है।

57. रहे वो लोग जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए, उन्हें हम ऐसे बागों में दाख़िल करेंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जहां वो हमेशा रहेंगे; उनके लिए वहां पाक जोड़े होंगे, और हम उन्हें घनी छांव में दाख़िल करेंगे;

58. अल्लाह तुम्हें हुक्म देता है कि अमानतें उनके मुस्तहिक़ीन तक पहुंचाना और जब लोगों के बीच फ़ैसला करो, फ़ैसला इंसाफ़ के साथ करो। अल्लाह यह कितनी अच्छी नसीहत तुम्हें करता है; बेशक अल्लाह सब कुछ सुनता देखता है।

59. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो और उनकी भी जो तुममें साहिबे इख़्तियार हैं। फिर अगर किसी चीज़ में तुम्हारा झगड़ा हो जाए तो अगर तुम अल्लाह और रोज़-ए-आख़िर पर ईमान रखते हो, तो उसे अल्लाह और रसूल की तरफ़ लौटाओ, यही बेहतर है और अंजाम के लिहाज़ से भी अच्छा है।

60. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जो दावा तो यह करते हैं कि वो उसपर जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल हुआ है और जो तुमसे पहले नाज़िल हुआ है, ईमान ले आए, और चाहते यह हैं कि अपना मुआमला ताग़ूत के पास ले जाकर फ़ैसला कराएं जबकि उन्हें हुक्म दिया गया है कि वो उसका

इब्राहीमल्-किता-ब वल्हिक्म-त व आतैनाहुम् मुल्कन् अज़ीमा (54)

फ़-मिन्हुम मन् आम-न बिही व मिन्हुम् मन् सद्-द अन्हु, व कफ़ा बि-जहन्न-म सअ़ीरा (55)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिना सौ-फ़ नुस्लीहिम् नारन्, कुल्लमा नज़िजत् जुलूदुहुम् बद्दल्नाहुम् जुलूदन् ग़ैरहा लि-यज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब, इन्नल्ला-ह का-न अ़ज़ीज़न् हकीमा • (56)

वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, लहुम् फ़ीहा अज़्वाजुम् मुतह्ह-रतुंव-व नुद्ख़िलुहुम् ज़िल्लन् ज़लीला (57)

इन्नल्ला-ह यअ्मुरुकुम् अन् तु-अद्दुल् अमानाति इला अह्लिहा व इज़ा हकम्तुम् बैनन्नासि अन् तह्कुमू बिल्-अ़द्लि, इन्नल्ला-ह निअ़िम्मा यअ़िज़ुकुम् बिही, इन्नल्ला-ह का-न समीअ़म् बसीरा (58)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल व उलिल्-अम्रि मिन्कुम् फ़-इन् तनाज़अ्तुम् फ़ी शैइन् फ़रुद्दूहु इलल्लाहि वर्रसूलि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि ज़ालि-क ख़ैरुंव्-व अह्सनु तअ्वीला (59) •

अलम् त-र इलल्लज़ी-न यज़्अुमू-न अन्नहुम् आमनू बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क युरीदू-न अंय्य-तहाकमू इलत्ताग़ूति व क़द् उमिरू अंय्यक्फ़ुरू बिही, व युरीदुश्शैतानु

إِبْرٰهِيْمَ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَاٰتَيْنٰهُمْ
مُّلْكًا عَظِيْمًا (٥٤)
فَمِنْهُمْ مَّنْ اٰمَنَ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ
صَدَّ عَنْهُ ؕ وَكَفٰى بِجَهَنَّمَ سَعِيْرًا (٥٥)
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا سَوْفَ
نُصْلِيْهِمْ نَارًا ؕ كُلَّمَا نَضِجَتْ جُلُوْدُهُمْ
بَدَّلْنٰهُمْ جُلُوْدًا غَيْرَهَا لِيَذُوْقُوا
الْعَذَابَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَزِيْزًا حَكِيْمًا (٥٦)
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ
لَهُمْ فِيْهَآ اَزْوَاجٌ مُّطَهَّرَةٌ ۫ وَّنُدْخِلُهُمْ
ظِلًّا ظَلِيْلًا (٥٧)
اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ
اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَاِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ
اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا
يَعِظُكُمْ بِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًا بَصِيْرًا (٥٨)
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا
الرَّسُوْلَ وَاُولِي الْاَمْرِ مِنْكُمْ ۚ فَاِنْ
تَنَازَعْتُمْ فِيْ شَيْءٍ فَرُدُّوْهُ اِلَى اللّٰهِ
وَالرَّسُوْلِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا (٥٩)
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يَزْعُمُوْنَ اَنَّهُمْ
اٰمَنُوْا بِمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمَآ اُنْزِلَ
مِنْ قَبْلِكَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَحَاكَمُوْٓا
اِلَى الطَّاغُوْتِ وَقَدْ اُمِرُوْٓا اَنْ
يَّكْفُرُوْا بِهٖ ؕ وَيُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ

इनकार करें। लेकिन शैतान तो उन्हें भटका कर बहुत दूर डाल देना चाहता है।

61. और जब उनसे कहा जाता है कि "जो कुछ अल्लाह ने नाज़िल किया है उसकी तरफ़ आओ और रसूल की तरफ़ आओ," तो तुम अहले निफ़ाक़ को देखते हो कि वो तुमसे कतराकर रह जाते हैं।

62. फिर यह कैसी बात होगी कि जब उनके अपने ही करतूतों की वजह से उनपर कोई बड़ी मुसीबत आ पड़ेगी — फिर वो तुम्हारे पास अल्लाह की क़समें खाते हुए आते हैं कि हम तो सिर्फ़ भलाई और मुवाफ़क़त चाहते थे।

63. ये वो लोग हैं जिनके दिलों की बात अल्लाह खूब जानता है; तो उनसे सर्फ़े नज़र करो, और उन्हें नसीहत करो, और उनसे उनके बारे में वह बात कहो जो असर कर सके।

64. हमने जो रसूल भी भेजा इसीलिए भेजा कि अल्लाह के हुक्म से उसकी इताअत की जाए और अगर वो उस वक़्त जबकि उन्होंने खुद अपने ऊपर ज़ुल्म किया था, तुम्हारे पास आ जाते, और अल्लाह से बख़्शिश की दुआ मांगते, और रसूल भी उनके लिए बख़्शिश की दरख़्वास्त करता, तो लाज़िमन वो अल्लाह को तौबा क़बूल करने वाला, निहायत मेहरबान पाते।

65. पस तुम्हें तुम्हारे रब की क़सम! ये मोमिन नहीं हो सकते जब तक कि उनके दरमियान जो झगड़ा उठे, उसमें ये तुमसे फ़ैसला न कराएं, फिर तुम जो फ़ैसला कर दो उसपर ये अपने दिल में कोई तंगी भी न पाएं, और पूरी तरह तसलीम कर लें।

66. और अगर कहीं हमने उन्हें हुक्म दिया होता कि "अपनों को (राह-ए-ख़ुदा में) क़त्ल करो," या "अपने घरों से निकलो," तो उनमें से थोड़े ही ऐसा करते; और अगर ये वही करते जिसकी उन्हें नसीहत की जाती है तो उनके लिए बेहतर और ज़्यादा साबित क़दमी का मूजिब होता,

67. और तब तो हम लाज़िमन उन्हें अपनी तरफ़ से बड़ा अज्र अता करते,

68. और उन्हें सीधे रास्ते पर लगा देते।

अंय्युज़िल्लहुम् ज़लालम् बअ़ीदा (60)

व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआलौ इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि रऐतल्-मुनाफ़िक़ी-न यसुद्दू-न अ़न्-क सुदूदा (61)

फ़कै-फ़ इज़ा असाबत्हुम् मुसीबतुम् बिमा क़द्दमत् ऐदीहिम् सुम्-म जाऊ-क यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि इन् अरद्ना इल्ला इह्सानंव्-व तौफ़ीक़ा (62)

उलाइ-कल्लज़ी-न यअ्लमुल्लाहु मा फ़ी क़ुलूबिहिम्, फ़-अअ्रिज़् अ़न्हुम् व अ़िज़्हुम् व क़ुल्-लहुम् फ़ी अन्फ़ुसिहिम् क़ौलम्-बलीग़ा (63)

व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला लियुता-अ़ बि-इज़्निल्लाहि, व लौ अन्नहुम् इज़्-ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् जाऊ-क फ़स्तग़्फ़रुल्ला-ह वस्तग़्फ़-र लहुमुर्रसूलु ल-व-जदुल्ला-ह तव्वाबर्रहीमा (64)

फ़ला व रब्बि-क ला युअ्मिनू-न हत्ता युहक्किमू-क फ़ीमा श-ज-र बैनहुम् सुम्-म ला यजिदू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् ह-रजम्-मिम्मा क़ज़ै-त व युसल्लिमू तस्लीमा (65)

व लौ अन्ना कतब्ना अ़लैहिम् अनिक़्तुलू अन्फ़ु-सकुम् अविख़्रुजू मिन् दियारिकुम् मा फ़-अ़लूहु इल्ला क़लीलुम्-मिन्हुम, व लौ अन्नहुम् फ़-अ़लू मा यू-अ़ज़ू-न बिही लका-न ख़ैरल्लहुम् व अशद्-द तस्बीता (66)

व इज़ल्-लआतैनाहुम् मिल्लदुन्ना अज्रन् अ़ज़ीमा (67)

व ल-हदैनाहुम् सिरातम् मुस्तक़ीमा (68)

يُضِلَّهُمْ ضَلٰلًا بَعِيْدًا (60)
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ رَاَيْتَ الْمُنٰفِقِيْنَ
يَصُدُّوْنَ عَنْكَ صُدُوْدًا (61)
فَكَيْفَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا
قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ثُمَّ جَآءُوْكَ
يَحْلِفُوْنَ ۖ بِاللّٰهِ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّآ
اِحْسَانًا وَّتَوْفِيْقًا (62)
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يَعْلَمُ اللّٰهُ مَا فِيْ
قُلُوْبِهِمْ فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَعِظْهُمْ وَقُلْ
لَّهُمْ فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ قَوْلًا بَلِيْغًا (63)
وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا لِيُطَاعَ
بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ وَلَوْ اَنَّهُمْ اِذْ ظَّلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ جَآءُوْكَ فَاسْتَغْفَرُوا اللّٰهَ
وَاسْتَغْفَرَ لَهُمُ الرَّسُوْلُ لَوَجَدُوا اللّٰهَ
تَوَّابًا رَّحِيْمًا (64)
فَلَا وَرَبِّكَ لَا يُؤْمِنُوْنَ حَتّٰى يُحَكِّمُوْكَ
فِيْمَا شَجَرَ بَيْنَهُمْ ثُمَّ لَا يَجِدُوْا فِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ حَرَجًا مِّمَّا قَضَيْتَ وَيُسَلِّمُوْا
تَسْلِيْمًا (65)
وَلَوْ اَنَّا كَتَبْنَا عَلَيْهِمْ اَنِ اقْتُلُوْٓا
اَنْفُسَكُمْ اَوِ اخْرُجُوْا مِنْ دِيَارِكُمْ
مَّا فَعَلُوْهُ اِلَّا قَلِيْلٌ مِّنْهُمْ ۭ وَلَوْ
اَنَّهُمْ فَعَلُوْا مَا يُوْعَظُوْنَ بِهٖ لَكَانَ
خَيْرًا لَّهُمْ وَاَشَدَّ تَثْبِيْتًا (66)
وَّاِذًا لَّاٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ لَّدُنَّآ اَجْرًا عَظِيْمًا (67)
وَّلَهَدَيْنٰهُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا (68)

69. जो कोई अल्लाह और रसूल की इताअत करता है तो ऐसे ही लोग उन लोगों के साथ है जिनपर अल्लाह ने नवाज़िश फ़रमाई है — वो अंबिया, सिद्दीक़ीन, शुहदा, और सालेहीन हैं; और वो क्या ही अच्छे रफ़ीक़ हैं।

70. — यह अल्लाह का फ़ज़्ल है; काफ़ी है अल्लाह इस हाल में कि वह बख़ूबी जानता है।

71. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने बचाव का सामान कर लो; फिर या तो अलग-अलग टुकड़ियों में निकलो, या इकट्ठे होकर निकलो।

72. तुममें कोई ऐसा भी है जो ढीला पड़ जाता है; फिर अगर तुमपर कोई मुसीबत आ पड़े, तो कहने लगता है कि "अल्लाह की मुझपर नवाज़िश हुई कि मैं उन लोगों के साथ न हुआ"।

73. लेकिन अगर अल्लाह की तरफ़ से तुमपर कोई फ़ज़्ल हो तो वह इस तरह से जैसे तुम्हारे और उसके दरमियान मुहब्बत का कोई तअल्लुक़ नहीं, कहता है: "काश मैं भी उनके साथ होता, फिर तो मैं बड़ी कामयाबी हासिल कर सकता"।

74. पस जो लोग दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के बदले बेच दें उन्हें चाहिए कि अल्लाह की राह में लड़ें, जो कोई अल्लाह की राह में लड़ेगा तो चाहे वह मारा जाए, या ग़ालिब रहे, उसे तो हम जल्द ही बड़ा अजर अता करेंगे।

75. तुम्हें क्या हुआ है कि अल्लाह के रास्ते में, और उन कमज़ोर मर्दों, औरतों और बच्चों के लिए न लड़ो जो कहते हैं कि "हमारे रब, तू हमें इस बस्ती से जिसके लोग जुल्म पेशा हैं निकाल ले, और हमारे लिए अपनी तरफ़ से तू कोई हिमायती मुक़र्रर कर, और हमारे लिए अपनी तरफ़ से तू कोई मददगार बना"।

76. अहले ईमान तो अल्लाह की राह में लड़ते हैं, और अहले कुफ़्र ताग़ूत की राह में जंग करते हैं। पस तुम शैतान के साथियों से लड़ो; यक़ीनन शैतान की चाल तो बहुत कमज़ोर होती है।

व मंय्युतिअ़िल्ला-ह वर्रसू-ल फ़-उलाइ-क मअ़ल्लज़ी-न अन्अ़-मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन्-नबिय्यी-न वस्सिद्दीक़ी-न वश्शु-हदा-इ वस्सालिही-न व हसु-न उलाइ-क रफ़ीक़ा (69)

ज़ालिकल्-फ़ज़्लु मिनल्लाहि, व कफ़ा बिल्लाहि अ़लीमा (70) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ख़ुज़ू हिज़्रकुम् फ़न्फ़िरू सुबातिन् अविन्फ़िरू जमीअ़ा (71)

व इन्-न मिन्कुम् ल-मल्लयुबत्तिअन्-न फ़-इन् असाबत्कुम् मुसीबतुन् क़ा-ल क़द् अन्अ़-मल्लाहु अ़लय्-य इज़् लम् अकुम् म-अ़हुम् शहीदा (72)

व ल-इन असाबकुम् फ़ज़्लुम मिनल्लाहि ल-यक़ूलन्-न क-अल्लम् तकुम् बैनकुम् व बैनहू मवद्दतुंय्-यालैतनी कुन्तु म-अ़हुम् फ़-अफ़ू-ज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमा (73)

फ़ल्युक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहिल्लज़ी-न यश्रूनल्-हयातद्दुन्या बिल्आख़ि-रति व मंय्युक़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-युक़्तल् औ यग़्लिब् फ़सौ-फ़ नुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा (74)

व मा लकुम् ला तुक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्-मुस्तज़्अ़फ़ी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्-विल्दानिल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना अख़्रिज्ना मिन् हाज़िहिल् क़र्यतिज़्ज़ालिमि अह्लुहा वज्अ़ल्लना मिल्लदुन्-क वलिय्यंव्-वज्अ़ल्लना मिल्लदुन्-क नसीरा (75)

अल्लज़ी-न आमनू युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न क-फ़रू युक़ातिलू-न फ़ी सबीलित्ताग़ूति फ़क़ातिलू औलिया-अश्शैतानि इन्-न कैदश्शैतानि का-न ज़अ़ीफ़ा (76) ●

وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَالرَّسُوْلَ فَاُولٰٓئِكَ
مَعَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنَ النَّبِيّٖنَ
وَالصِّدِّيْقِيْنَ وَالشُّهَدَآءِ وَالصّٰلِحِيْنَ ۚ
وَحَسُنَ اُولٰٓئِكَ رَفِيْقًا (٦٩)
ع ذٰلِكَ الْفَضْلُ مِنَ اللّٰهِ ۗ وَكَفٰى بِاللّٰهِ عَلِيْمًا (٧٠)
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا خُذُوْا حِذْرَكُمْ
فَانْفِرُوْا ثُبَاتٍ اَوِ انْفِرُوْا جَمِيْعًا (٧١)
وَاِنَّ مِنْكُمْ لَمَنْ لَّيُبَطِّئَنَّ ۚ فَاِنْ
اَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةٌ قَالَ قَدْ اَنْعَمَ اللّٰهُ
عَلَيَّ اِذْ لَمْ اَكُنْ مَّعَهُمْ شَهِيْدًا (٧٢)
وَلَئِنْ اَصَابَكُمْ فَضْلٌ مِّنَ اللّٰهِ لَيَقُوْلَنَّ
كَاَنْ لَّمْ تَكُنْ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهٗ مَوَدَّةٌ
يّٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ مَعَهُمْ فَاَفُوْزَ فَوْزًا عَظِيْمًا (٧٣)
فَلْيُقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
يَشْرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا بِالْاٰخِرَةِ ۗ
وَمَنْ يُّقَاتِلْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَيُقْتَلْ
اَوْ يَغْلِبْ فَسَوْفَ نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا (٧٤)
وَمَا لَكُمْ لَا تُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ مِنَ الرِّجَالِ وَالنِّسَآءِ
وَالْوِلْدَانِ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَآ
اَخْرِجْنَا مِنْ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ الظَّالِمِ
اَهْلُهَا ۚ وَاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ۚ
وَّاجْعَلْ لَّنَا مِنْ لَّدُنْكَ نَصِيْرًا (٧٥)
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُقَاتِلُوْنَ فِيْ سَبِيْلِ
الطَّاغُوْتِ فَقَاتِلُوْٓا اَوْلِيَآءَ الشَّيْطٰنِ ۚ
اِنَّ كَيْدَ الشَّيْطٰنِ كَانَ ضَعِيْفًا (٧٦)

77. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिनसे कहा गया था कि "अपने हाथ रोके रखो, और नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात दो", फिर जब उन्हें लड़ाई का हुक्म दिया गया, तो क्या देखते हैं कि उनके कुछ लोगों का यह हाल हुआ कि वो लोगों से ऐसा डरने लगे जैसे अल्लाह का डर हो, या यह डर उससे भी बढ़कर हो, कहने लगे कि "हमारे रब, तूने हमपर लड़ाई क्यों फर्ज़ कर दी? क्यों न थोड़ी मुहलत हमें और दे दी?" कह दो: "दुनिया का सरमाया बहुत थोड़ा है, जबकि आख़िरत उसके लिए बेहतर है जो डर रखे; और तुम्हारी हक़तलफ़ी ज़रा भी न होगी"।

78. तुम जहां कहीं भी होगे, मौत तो तुम्हें पकड़ ही लेगी, चाहे तुम मज़बूत बुर्जों के अन्दर ही क्यों न हो। अगर उन्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है, तो कहते हैं, "यह अल्लाह के यहां से है"; लेकिन अगर उन्हें कोई बुरी हालत पेश आ जाती है, तो कहते हैं, "यह तुम्हारी वजह से है!" कह दो कि "हर एक चीज़ अल्लाह ही की तरफ़ से है"। आख़िर उन लोगों को क्या हो गया कि ये ऐसे नहीं लगते कि कोई बात समझ सकें।

79. जो अच्छी हालत भी तुम्हें पेश आती है वह अल्लाह की तरफ़ से होती है: और जो बुरी हालत तुम्हें पेश आ जाती है वह तो तुम्हारी अपनी ही वजह से पेश आती है। हमने तुम्हें लोगों के लिए रसूल बनाकर भेजा है। और अल्लाह गवाह की हैसियत से काफ़ी है।

80. जिसने रसूल की इताअत की, उसने अल्लाह की इताअत की; और जिसने पीठ फेरी तो हमने तुम्हें ऐसे लोगों पर कोई पासबान बना कर नहीं भेजा है।

81. और वो दावा तो इताअत का करते हैं; लेकिन जब तुम्हारे पास से बाहर निकलते हैं, तो उनमें से एक गिरोह अपने क़ौल के बरख़िलाफ़ रात में साज़िशें करता है। जो कुछ वो साज़िश करते हैं उसे तो अल्लाह लिख ही रहा है; तो तुम उनसे सर्फ़े नज़र करो, और अल्लाह पर भरोसा रखो; अल्लाह का कारसाज़ होना काफ़ी है।

82. क्या वो क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते? अगर वह अल्लाह के सिवा किसी और का होता, तो यक़ीनन वो इसमें बहुत सी बेमेल बातें पाते।

अलम् त-र इलल्लज़ी-न क़ी-ल लहुम् कुफ़्फ़ू ऐदी-यकुम् व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त फ़-लम्मा कुति-ब अलैहिमुल्-क़ितालु इज़ा फ़रीक़ुम् मिन्हुम् यख़्शौनन्ना-स क-ख़श्यतिल्लाहि औ अशद्-द ख़श्य-तन् व क़ालू रब्बना लि-म कतब्-त अलैनल्-क़िता-ल लौ ला अख़्ख़र्तना इला अ-जलिन् क़रीबिन्, क़ुल् मताअुद्दुन्या क़लीलुन् वल् आख़ि-रतु ख़ैरुल्-लि-मनित्तक़ा, व ला तुज़्लमू-न फ़तीला (77)

ऐ-न मा तकूनू युद्रिक्कुमुल्-मौतु व लौ कुन्तुम् फ़ी बुरूजिम् मुशय्य-दतिन्, व इन् तुसिब्हुम् ह-स-नतुंय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अिन्दिल्लाहि व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुंय्यक़ूलू हाज़िही मिन् अिन्दि-क, क़ुल् कुल्लुम् मिन् अिन्दिल्लाहि, फ़मालि हा-उला-इल्क़ौमि ला यकादू-न यफ़्क़हू-न हदीसा (78)

मा असाब-क मिन् ह-स-नतिन् फ़मिनल्लाहि व मा असाब-क मिन् सय्यि-अतिन् फ़-मिन्नफ़्सि-क, व अर्सल्ना-क लिन्नासि रसूलन्, व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा (79)

मंय्युतिअिर्-रसू-ल फ़-क़द् अताअल्ला-ह व मन् तवल्ला फ़मा अर्सल्ना-क अलैहिम् हफ़ीज़ा (80)

व यक़ूलू-न ताअतुन् फ़-इज़ा ब-रज़ू मिन् अिन्दि-क बय्य-त ता-इ-फ़तुम् मिन्हुम् ग़ैरल्लज़ी तक़ूलु, वल्लाहु यक्तुबु मा युबय्यितू-न फ़-अअ्रिज़् अन्हुम् व तवक्कल् अलल्लाहि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (81)

अ-फ़ला य-तदब्बरूनल् क़ुर्आ-न, व लौ का-न मिन् अिन्दि ग़ैरिल्लाहि ल-व जदू फ़ीहिख़्तिलाफ़न् कसीरा (82)

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ قِيْلَ لَهُمْ كُفُّوْٓا
اَيْدِيَكُمْ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ ۚ
فَلَمَّا كُتِبَ عَلَيْهِمُ الْقِتَالُ اِذَا فَرِيْقٌ
مِّنْهُمْ يَخْشَوْنَ النَّاسَ كَخَشْيَةِ اللّٰهِ
اَوْ اَشَدَّ خَشْيَةً ۚ وَقَالُوْا رَبَّنَا
لِمَ كَتَبْتَ عَلَيْنَا الْقِتَالَ ۚ لَوْلَآ اَخَّرْتَنَآ
اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۭ قُلْ مَتَاعُ الدُّنْيَا
قَلِيْلٌ ۚ وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّمَنِ اتَّقٰى ۣ
وَلَا تُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ۝٧٧
اَيْنَ مَا تَكُوْنُوْا يُدْرِكْكُّمُ الْمَوْتُ وَلَوْ كُنْتُمْ
فِيْ بُرُوْجٍ مُّشَيَّدَةٍ ۭ وَاِنْ تُصِبْهُمْ حَسَنَةٌ
يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۚ وَاِنْ تُصِبْهُمْ
سَيِّئَةٌ يَّقُوْلُوْا هٰذِهٖ مِنْ عِنْدِكَ ۭ
قُلْ كُلٌّ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ ۭ فَمَالِ هٰٓؤُلَاۗءِ
الْقَوْمِ لَا يَكَادُوْنَ يَفْقَهُوْنَ حَدِيْثًا ۝٧٨
مَآ اَصَابَكَ مِنْ حَسَنَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ ۡ وَمَآ
اَصَابَكَ مِنْ سَيِّئَةٍ فَمِنْ نَّفْسِكَ ۭ وَ
اَرْسَلْنٰكَ لِلنَّاسِ رَسُوْلًا ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۝٧٩
مَنْ يُّطِعِ الرَّسُوْلَ فَقَدْ اَطَاعَ اللّٰهَ ۚ
وَمَنْ تَوَلّٰى فَمَآ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۝٨٠
وَيَقُوْلُوْنَ طَاعَةٌ ۡ فَاِذَا بَرَزُوْا مِنْ
عِنْدِكَ بَيَّتَ طَاۗىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ غَيْرَ الَّذِيْ
تَقُوْلُ ۭ وَاللّٰهُ يَكْتُبُ مَا يُبَيِّتُوْنَ ۚ فَاَعْرِضْ
عَنْهُمْ وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ وَكَفٰى
بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝٨١
اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ ۭ وَلَوْ كَانَ مِنْ عِنْدِ
غَيْرِ اللّٰهِ لَوَجَدُوْا فِيْهِ اخْتِلَافًا كَثِيْرًا ۝٨٢

83. जब उनके पास बेख़ौफ़ी या ख़ौफ़ की कोई बात पहुंचती है, तो उसे फैला देते हैं; हालांकि अगर वो उसे रसूल और अपने ज़िम्मेदारों तक पहुंचाते, तो वह ऐसे लोगों के इल्म में आती जो उनके दरमियान उसकी तहक़ीक़ कर सकते हैं। और अगर तुमपर अल्लाह का फ़ज़्ल, और उसकी रहमत न होती तो थोड़े लोगों के सिवा तुम शैतान की पैरवी में लग जाते।

84. पस अल्लाह के रास्ते में लड़ो — तुमपर असल ज़िम्मेदारी तो अपनी ही है — और मोमिन की कमज़ोरियों को दूर करो और उन्हें (क़िताल पर) उभारो; बहुत मुमकिन है अल्लाह अहले कुफ़्र के ज़ोर को रोक लगा दे; अल्लाह तो ज़ोर में सब से बढ़कर है और सज़ा देने में भी सब से सख़्त है।

85. जो कोई अच्छी सिफ़ारिश करेगा वह उसकी वजह से अजर से बहरामन्द होगा; और जो बुरी सिफ़ारिश करेगा, तो उसकी वजह से उसका बोझ उसपर भी पड़कर रहेगा; अल्लाह को तो हर चीज़ पर क़ाबू हासिल है।

86. और तुम्हें जब सलामती की कोई दुआ दी जाए तो तुम उससे अच्छी दुआ या उसी को लौटा दो; यक़ीनन अल्लाह एक-एक चीज़ का हिसाब रखता है।

87. अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं। वह तुम्हें क़ियामत के दिन की तरफ़ ले जा कर जमा करके रहेगा जिसमें कोई शुबह नहीं और अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा कौन हो सकता है?

88. फिर तुम्हें क्या हो गया है कि मुनाफ़िक़ीन के बारे में तुम दो गिरोह हो रहे हो? हालांकि अल्लाह ने तो उनके करतूतों की वजह से उन्हें उल्टा फेर दिया है। क्या तुम उसे रास्ते पर लाना चाहते हो जिसे अल्लाह ने गुमराह छोड़ दिया है? हालांकि जिसे अल्लाह रास्ता न दे, उसके लिए तुम हरगिज़ कोई राह नहीं पा सकते।

89. वो तो चाहते हैं कि जैसे उन्होंने कुफ़्र किया किसी तरह तुम भी कुफ़्र करके उनके बराबर हो जाओ; तो तुम

व इज़ा जा-अहुम् अम्रुम् मिनल्-अम्नि अविल्ख़ौफ़ि अज़ाअू बिही, व लौ रद्दूहु इलर्रसूलि व इला उलिल्-अम्रि मिन्हुम् ल-अलि-महुल्लज़ी-न यस्तम्बितूनहू मिन्हुम्, व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू लत्त-बअ्तुमुश्शैता-न इल्ला क़लीला (83)

फ़क़ातिल् फ़ी सबीलिल्लाहि ला तुकल्लफ़ु इल्ला नफ़्स-क व हर्रिज़िल्-मुअ्मिनी-न अ़सल्लाहु अंय्यकुफ़्-फ़ बअ्सल्लज़ी-न क-फ़रू, वल्लाहु अशद्दु बअ्संव्-व अशद्दु तन्कीला (84)

मंय्यश्फ़अ् शफ़ा-अ़तन् ह-स-नतंय्यकुल्लहू नसीबुम् मिन्हा व मंय्यश्फ़अ् शफ़ा-अ़तन् सय्यि-अतंय्यकुल्लहू किफ़्लुम् मिन्हा, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम्-मुक़ीता (85)

व इज़ा हुय्यीतुम बि-तहिय्यतिन् फ़हय्यू बि-अह्स-न मिन्हा औ रुद्दूहा, इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन् हसीबा ● (86)

अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, ल-यज्मअ़न्नकुम् इला यौमिल्-क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि, व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि हदीसा (87) ●

फ़मा लकुम् फ़िल्मुनाफ़िक़ी-न फ़ि-अतैनि वल्लाहु अर्क-सहुम् बिमा क-सबू, अतुरीदू-न अन् तह्दू मन् अज़ल्लल्लाहु, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़-लन् तजि-द लहू सबीला (88)

वद्दू लौ तक्फ़ुरू-न कमा क-फ़रू फ़-तकूनू-न सवा-अन् फ़ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् औलिया-अ हत्ता युहाजिरू

وَاِذَا جَآءَهُمْ اَمْرٌ مِّنَ الْاَمْنِ اَوِ الْخَوْفِ
اَذَاعُوْا بِهٖ ۚ وَلَوْ رَدُّوْهُ اِلَى الرَّسُوْلِ وَاِلٰٓى
اُولِى الْاَمْرِ مِنْهُمْ لَعَلِمَهُ الَّذِيْنَ يَسْتَنْۢبِطُوْنَهٗ
مِنْهُمْ ۗ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ
وَرَحْمَتُهٗ لَاتَّبَعْتُمُ الشَّيْطٰنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٨٣﴾
فَقَاتِلْ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ لَا تُكَلَّفُ
اِلَّا نَفْسَكَ وَحَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ
عَسَى اللّٰهُ اَنْ يَّكُفَّ بَاْسَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ۗ وَاللّٰهُ اَشَدُّ بَاْسًا وَّاَشَدُّ
تَنْكِيْلًا ﴿٨٤﴾
مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ
لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَمَنْ يَّشْفَعْ
شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ۗ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ مُّقِيْتًا ﴿٨٥﴾
وَاِذَا حُيِّيْتُمْ بِتَحِيَّةٍ فَحَيُّوْا بِاَحْسَنَ
مِنْهَآ اَوْ رُدُّوْهَا ۗ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلٰى
كُلِّ شَىْءٍ حَسِيْبًا ﴿٨٦﴾
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۗ لَيَجْمَعَنَّكُمْ اِلٰى
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ ۗ وَمَنْ
اَصْدَقُ مِنَ اللّٰهِ حَدِيْثًا ﴿٨٧﴾
فَمَا لَكُمْ فِى الْمُنٰفِقِيْنَ فِئَتَيْنِ
وَاللّٰهُ اَرْكَسَهُمْ بِمَا كَسَبُوْا ۗ اَتُرِيْدُوْنَ
اَنْ تَهْدُوْا مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۗ
وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ
سَبِيْلًا ﴿٨٨﴾
وَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ كَمَا كَفَرُوْا فَتَكُوْنُوْنَ
سَوَآءً فَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ اَوْلِيَآءَ حَتّٰى

उनमें से अपने दोस्त न बनाओ जब तक कि वो अल्लाह की राह में हिजरत इख़्तियार न करें; फिर अगर वो इससे पीठ फेरें, तो उन्हें पकड़ो, और उन्हें क़त्ल करो जहां कहीं भी उन्हें पाओ — तो उनमें से न अपना दोस्त बनाना और न मददगार,

90. सिवाय उनके जो ऐसे लोगों से तअल्लुक़ रखते हों कि तुम्हारे और उनके दरमियान कोई मुआहदा हो, या वो तुम्हारे पास इस हालत में आएं कि उनके दिल इससे तंग हो रहे हों कि वो तुमसे लड़ें या अपने लोगों से लड़ाई करें। अल्लाह अगर चाहता, तो उन्हें तुमपर क़ाबू दे देता, फिर तो वो तुमसे ज़रूर लड़ते। तो वो अगर तुमसे अलग रहें, और तुमसे न लड़ें, और सुल्ह के लिए तुम्हारी तरफ़ हाथ बढ़ाएं, तो उनके ख़िलाफ़ अल्लाह ने तुम्हारे लिए किसी इक़दाम का जवाज़ नहीं रखा है।

91. अब तुम कुछ ऐसे लोगों को भी पाओगे जो चाहते हैं कि तुम्हारी तरफ़ से भी बेख़ौफ़ होकर रहें, और अपने लोगों की तरफ़ से भी बेख़ौफ़ हों, लेकिन जब भी उन्हें फ़साद की तरफ़ फेरा गया तो वो उसी में औंधे जा पड़े। तो अगर वो तुमसे अलग-थलग न रहें, और तुम्हारी तरफ़ सुल्ह का हाथ न बढ़ाएं, और अपने हाथ न रोकें, तो तुम उन्हें पकड़ो, और उन्हें क़त्ल करो जहां कहीं भी तुम उन्हें पाओ; उनके ख़िलाफ़ तो हमने तुम्हें खुला इख़्तियार दे रखा है।

92. यह किसी मोमिन का काम नहीं कि वह किसी मोमिन को क़त्ल करे, भूल-चूक की बात और है। और जो ग़लती से किसी मोमिन को क़त्ल कर दे, तो एक मोमिन गुलाम को आज़ाद करना होगा, और ख़ून बहा उसके घर वालों को पूरे तौरपर अदा करना होगा, सिवाय यह कि वो अपनी ख़ुशी से छोड़ दें। और अगर वह उन लोगों में से हो जो तुम्हारे दुश्मन हों और वह ख़ुद मोमिन रहा हो, तो एक मोमिन को गुलामी से आज़ाद करना होगा। और अगर वह उन लोगों में से हो कि तुम्हारे और उनके दरमियान कोई मुआहदा हो, तो ख़ून बहा उसके घर वालों को अदा करना होगा और एक मोमिन को गुलामी से आज़ादी दिलानी होगी।

फ़ी सबीलिल्लाहि, फ़-इन् तवल्लौ फ़ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु वजत्तुमूहुम् व ला तत्तख़िज़ू मिन्हुम् वलिय्यंव्-व ला नसीरा (89)

इल्लल्लज़ी-न यसिलू-न इला क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन् औ जाऊकुम् हसिरत् सुदूरुहुम् अंय्युक़ातिलूकुम् औ युक़ातिलू क़ौमहुम्, व लौ शा-अल्लाहु ल-सल्ल-तहुम् अ़लैकुम् फ़-लक़ातलूकुम् फ़-इनिअ्-त ज़लूकुम् फ़-लम् युक़ातिलूकुम् व अल्क़ौ इलैकुमुस्स-ल-म फ़मा ज-अ़लल्लाहु लकुम् अ़लैहिम् सबीला (90) *स-तजिदू-न आ-ख़री-न युरीदू-न अंय्यअ्मनूकुम् व यअ्मनू क़ौमहुम, कुल्लमा रुद्दू इलल्-फ़ित्नति उर्किसू फ़ीहा फ़-इल्लम् यअ्-तज़िलूकुम् व युल्क़ू इलैकुमुस्स-ल-म व यकुफ़्फ़ू ऐदि-यहुम् फ़ख़ुज़ूहुम् वक़्तुलूहुम् हैसु सक़िफ़्तुमूहुम, व उला-इकुम् जअ़ल्ना लकुम् अ़लैहिम् सुल्तानम् मुबीना* (91) ●

व मा का-न लिमुअ्मिनिन् अंय्यक़्तु-ल मुअ्मिनन् इल्ला ख़-तअन् व मन् क़-त-ल मुअ्मिनन् ख़-तअन् फ़-तह्रीरु र-क़-बतिम् मुअ्मिनतिंव्-व दि-यतुम् मुसल्ल-मतुन् इला अह्लिही इल्ला अंय्यस्सद्दक़ू, फ़-इन् का-न मिन् क़ौमिन् अ़दुव्विल्लकुम् व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-तह्रीरु र-क़-बतिम् मुअ्मि-नतिन्, व इन् का-न मिन् क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मिसाक़ुन् फ़-दि-यतुम् मुसल्ल-मतुन् इला अह्लिही व तह्रीरु र-क़-बतिम् मुअ्मि-नतिन् फ़-मल्लम् यजिद् फ़सियामु शह्रैनि मु-तताबिअ़ैनि तौब-तम् मिनल्लाहि,

يُهَاجِرُوْا فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا
فَخُذُوْهُمْ وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ ۪
وَلَا تَتَّخِذُوْا مِنْهُمْ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۙ۝٨٩
اِلَّا الَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ اِلٰى قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ
وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ اَوْ جَآءُوْكُمْ حَصِرَتْ
صُدُوْرُهُمْ اَنْ يُّقَاتِلُوْكُمْ اَوْ يُقَاتِلُوْا
قَوْمَهُمْ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَسَلَّطَهُمْ
عَلَيْكُمْ فَلَقٰتَلُوْكُمْ ۚ فَاِنِ اعْتَزَلُوْكُمْ
فَلَمْ يُقَاتِلُوْكُمْ وَاَلْقَوْا اِلَيْكُمُ السَّلَمَ ۙ
فَمَا جَعَلَ اللّٰهُ لَكُمْ عَلَيْهِمْ سَبِيْلًا ۝٩٠
سَتَجِدُوْنَ اٰخَرِيْنَ يُرِيْدُوْنَ اَنْ
يَّاْمَنُوْكُمْ وَيَاْمَنُوْا قَوْمَهُمْ ؕ كُلَّمَا
رُدُّوْٓا اِلَى الْفِتْنَةِ اُرْكِسُوْا فِيْهَا ۚ
فَاِنْ لَّمْ يَعْتَزِلُوْكُمْ وَيُلْقُوْٓا اِلَيْكُمُ
السَّلَمَ وَيَكُفُّوْٓا اَيْدِيَهُمْ فَخُذُوْهُمْ
وَاقْتُلُوْهُمْ حَيْثُ ثَقِفْتُمُوْهُمْ ؕ
ع وَاُولٰٓئِكُمْ جَعَلْنَا لَكُمْ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝٩١
وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ اَنْ يَّقْتُلَ مُؤْمِنًا
اِلَّا خَطَـًٔا ۚ وَمَنْ قَتَلَ مُؤْمِنًا خَطَـًٔا
فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ وَّدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ
اِلٰٓى اَهْلِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّصَّدَّقُوْا ؕ فَاِنْ
كَانَ مِنْ قَوْمٍ عَدُوٍّ لَّكُمْ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ؕ وَاِنْ كَانَ
مِنْ قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ وَبَيْنَهُمْ مِّيْثَاقٌ
فَدِيَةٌ مُّسَلَّمَةٌ اِلٰٓى اَهْلِهٖ وَتَحْرِيْرُ
رَقَبَةٍ مُّؤْمِنَةٍ ۚ فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ
شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ ۫ تَوْبَةً مِّنَ اللّٰهِ ؕ

लेकिन जिसे यह हासिल न हो, तो यह अल्लाह की तरफ़ से ठहराई हुई तौबा है कि वह दो महीने के लगातार रोज़े रखे; अल्लाह सब कुछ जानने वाला, निहायत हिकमत वाला है।

93. और जो शख़्स जानते बूझते किसी मोमिन को क़त्ल करे, तो उसका बदला जहन्नम है, जहां वह मुद्दतों पड़ा रहेगा, उसपर अल्लाह का ग़ज़ब हो, और उसकी लानत भी उस पर पड़ी, और उसके लिए बड़ा अज़ाब तैयार रखा है।

94. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जब तुम अल्लाह के रास्ते में निकलो, तो अच्छी तरह पता लगा लिया करो, ऐसे आदमी को जो तुम्हें सलाम करे इस ख़्वाहिश में कि तुम दुनियावी ज़िन्दगी का माल हासिल करो, यह न कहो कि "तुम ईमान नहीं रखते"। अल्लाह के पास तो बहुत सामाने ग़नीमत है। पहले तुम भी ऐसे ही थे; फ़िर अल्लाह ने तुमपर एहसान किया। तो अच्छी तरह पता लगा लिया करो; अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर रहती है जो कुछ तुम करते हो।

95. जो अहले ईमान बग़ैर किसी उज़र के बैठे रहते हैं और वो जो अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह की राह में जिहाद करते हैं, बराबर नहीं हो सकते। अल्लाह ने बैठे रहनेवालों के मुक़ाबले में उन लोगों को जो अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करते हैं दर्जे में फ़ज़ीलत दी है; यूं तो हर एक से अल्लाह का वादा अच्छे बदले का है; लेकिन जो लोग बैठे रहते हैं उनके मुक़ाबले में मुजाहिदीन को ख़ुदा ने अजर-ए-अज़ीम के लिहाज़ से फ़ज़ीलत अता फ़रमाई है।

96. उसकी तरफ़ से दरजात हैं और मग़फ़िरत और रहमत; अल्लाह है भी तो बड़ा मग़फ़िरत फ़रमाने वाला, निहायत मेहरबान।

97. जो लोग अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे होते हैं, फ़रिश्ते जब उस हालत में उनकी जान क़ब्ज़ करते हैं तो कहते हैं, "तुम किस हाल में पड़े रहे?" वो कहते हैं, "हम ज़मीन में बेबस थे।" फ़रिश्ते कहते हैं, "क्या अल्लाह की ज़मीन कुशादा न थी कि तुम उसमें कहीं हिजरत कर जाते?" पस ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है — और वह बदतरीन जगह है पहुंचने की!

व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा (92)

व मंय्यक़्तुल् मुअ्मिनम् मु-तअ़म्मिदन् फ़-जज़ा-उहू जहन्नमु ख़ालिदन् फ़ीहा व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहि व ल-अ़-नहू व अ-अ़द्-द लहू अ़ज़ाबन् अ़ज़ीमा (93)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा ज़रब्तुम फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-तबय्यनू व ला तक़ूलू लिमन् अल्क़ा इलैकुमुस्सला-म लस्-त मुअ्मिनन् तब्तग़ू-न अ़-रज़ल् हयातिद्दुन्या फ़-अ़िन्दल्लाहि मग़ानिमु कसीरतुन्, कज़ालि-क कुन्तुम् मिन् क़ब्लु फ़-मन्नल्लाहु अ़लैकुम् फ़-तबय्यनू, इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ्मलू-न ख़बीरा (94)

ला यस्तविल् क़ाअ़िदू-न मिनल् मुअ्मिनी-न ग़ैरु उलिज़्ज़-रति वल्मुजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्, फ़ज़्ज़-लल्लाहुल् मुजाहिदी-न बि-अम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अ़लल्-क़ाअ़िदी-न द-र-जतन्, व कुल्लंव्-व-अ़दल्लाहुल्-हुस्ना, व फ़ज़्ज़-लल्लाहुल् मुजाहिदी-न अ़लल्-क़ाअ़िदी-न अज्रन् अ़ज़ीमा (95)

द-रजातिम् मिन्हु व मग़्फ़ि-रतंव्-व रह्म-तन्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा (96) ●

इन्नल्लज़ी-न तवफ़्फ़ाहुमुल् मलाइ-कतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् क़ालू फ़ी-म कुन्तुम, क़ालू कुन्ना मुस्तज़्अफ़ी-न फ़िल्अर्ज़ि, क़ालू अलम् तकुन् अर्ज़ुल्लाहि वासि-अ़तन् फ़तुहाजिरू फ़ीहा, फ़-उलाइ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु, व साअत् मसीरा (97)

وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (٩٢)
وَمَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ
جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَغَضِبَ اللّٰهُ
عَلَيْهِ وَلَعَنَهٗ وَاَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيْمًا (٩٣)
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا ضَرَبْتُمْ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ فَتَبَيَّنُوْا وَلَا تَقُوْلُوْا
لِمَنْ اَلْقٰۤى اِلَيْكُمُ السَّلٰمَ لَسْتَ مُؤْمِنًا ۚ
تَبْتَغُوْنَ عَرَضَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۡ
فَعِنْدَ اللّٰهِ مَغَانِمُ كَثِيْرَةٌ ؕ كَذٰلِكَ
كُنْتُمْ مِّنْ قَبْلُ فَمَنَّ اللّٰهُ
عَلَيْكُمْ فَتَبَيَّنُوْا ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا (٩٤)
لَا يَسْتَوِى الْقٰعِدُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
غَيْرُ اُولِى الضَّرَرِ وَالْمُجٰهِدُوْنَ
فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ؕ
فَضَّلَ اللّٰهُ الْمُجٰهِدِيْنَ بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ دَرَجَةً ؕ
وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ الْحُسْنٰى ؕ وَفَضَّلَ اللّٰهُ
الْمُجٰهِدِيْنَ عَلَى الْقٰعِدِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا (٩٥)
دَرَجٰتٍ مِّنْهُ وَمَغْفِرَةً وَّرَحْمَةً ؕ
ع وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا (٩٦)
اِنَّ الَّذِيْنَ تَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْۤ
اَنْفُسِهِمْ قَالُوْا فِيْمَ كُنْتُمْ ؕ قَالُوْا كُنَّا
مُسْتَضْعَفِيْنَ فِى الْاَرْضِ ؕ قَالُوْۤا اَلَمْ
تَكُنْ اَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةً فَتُهَاجِرُوْا
فِيْهَا ؕ فَاُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ
وَسَآءَتْ مَصِيْرًا (٩٧)

98. सिवाय उन बेबस मर्दों, औरतों और बच्चों के जो कोई तदबीर नहीं कर सकते और न कोई रास्ता पाते हैं;

99. पस उम्मीद है ऐसे लोगों को अल्लाह माफ़ कर दे, इसलिए कि अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बख़्शने वाला है।

100. जो अल्लाह की राह में हिजरत करेगा वह ज़मीन में बहुत सी जाए पनाह और गुंजाइश पाएगा; और जो कोई अपने घर से अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ घर-बार छोड़ कर निकले, और मौत उसे आ ले, उसका अजर तो अल्लाह के ज़िम्मे हो ही गया, अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, रहम फ़रमाने वाला है।

101. और जब तुम ज़मीन में सफ़र करो तो अगर तुम्हें इस बात का डर हो कि इनकार करनेवाले तुम्हें तकलीफ़ व तशवीश में डाल देंगे, तो इसमें तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं कि नमाज़ को कुछ मुख़्तसर कर दो; यक़ीनन अहले कुफ़्र तुम्हारे खुले दुश्मन हैं।

102. और जब तुम उनके दरमियान हो, और उनके लिए नमाज़ क़ायम करो तो चाहिए कि उनमें से एक गिरोह के लोग तुम्हारे साथ खड़े हो जाएं, और वो अपने हथियार साथ लिए रहें। फिर जब वो सजदा कर लें, तो उन्हें चाहिए कि वो हटकर तुम्हारे पीछे हो जाएं; और दूसरे गिरोह के लोग जिन्होंने अभी नमाज़ नहीं पढ़ी है आएं और तुम्हारे साथ नमाज़ पढ़ लें, और उनको भी चाहिए कि वो भी अपने बचाव का सामान और अपने हथियार लिए रहें। कुफ़्फ़ार तो चाहते ही हैं कि अगर तुम अपने हथियारों और सामान से ग़ाफ़िल हो जाओ, तो वो तुमपर यक्बारगी टूट पड़ें। अगर बारिश की वजह से तुम्हें तकलीफ़ हो, या तुम बीमार हो, तो इसमें तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं कि अपने हथियार अलग रख दो, फिर भी अपनी हिफ़ाज़त का सामान किए रहो। अल्लाह ने कुफ़्फ़ार के लिए रुसवाकुन अज़ाब तैयार कर रखा है।

इल्लल्-मुस्तज़्अफ़ी-न मिनर्रिजालि वन्निसा-इ वल्विल्दानि ला यस्ततीअू-न ही-लतंव्-व ला यह्तदू-न सबीला (98)

फ़-उलाइ-क असल्लाहु अंय्यअ्फु-व अ़न्हुम्, व कानल्लाहु अफुव्वन् ग़फ़ूरा (99)

व मंय्युहाजिर् फ़ी सबीलिल्लाहि यजिद् फ़िल्अर्ज़ि मुरा-ग़मन् कसीरंव्-व स-अ़तन्, व मंय्यख़्रुज् मिम्-बैतिही मुहाजिरन् इलल्लाहि व रसूलिही सुम्-म युद्रिक्हुल्-मौतु फ़-क़द् व-क़-अ अज्रुहू अ़लल्लाहि, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा (100) ●

व इज़ा ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तक़्सुरू मिनस्सलाति इन् ख़िफ़्तुम् अंय्यफ़्ति-नकुमुल्लज़ी-न क-फ़रू, इन्नल्-काफ़िरी-न कानू लकुम अ़दुव्वम-मुबीना (101)

व इज़ा कुन्-त फ़ीहिम् फ़-अक़म्-त लहुमुस्सला-त फ़ल्तक़ुम् ताइ-फ़तुम् मिन्हुम् म-अ़-क वल्यअ्ख़ुज़ू अस्लि-ह-तहुम्, फ़-इज़ा स-जदू फ़ल्यकूनू मिंव्वरा-इकुम् वल्तअ्ति ताइ-फ़तुन् उख़्रा लम् युसल्लू फ़ल्युसल्लू म-अ़-क वल्यअ्ख़ुज़ू हिज़्रहुम् व अस्लि-ह-तहुम् वद्दल्लज़ी-न क-फ़रू लौ तग़्फ़ुलू-न अ़न् अस्लि-हतिकुम् व अम्ति-अ़तिकुम् फ़-यमीलू-न अ़लैकुम् मै-लतंव्वाहि-दतन्, व ला जुना-ह अ़लैकुम् इन् का-न बिकुम् अज़म्-मिम्-म-तरिन् औ कुन्तुम मर्ज़ा अन् त-ज़अू अस्लि-ह-तकुम् व ख़ुज़ू हिज़्रकुम्, इन्नल्ला-ह अ-अ़द्-द लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम् मुहीना (102)

إِلَّا الْمُسْتَضْعَفِينَ مِنَ الرِّجَالِ
وَالنِّسَاءِ وَالْوِلْدَانِ لَا يَسْتَطِيعُونَ
حِيلَةً وَلَا يَهْتَدُونَ سَبِيلًا (٩٨)
فَأُولَٰئِكَ عَسَى اللَّهُ أَنْ يَعْفُوَ عَنْهُمْ
وَكَانَ اللَّهُ عَفُوًّا غَفُورًا (٩٩)
وَمَنْ يُهَاجِرْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ يَجِدْ
فِي الْأَرْضِ مُرَاغَمًا كَثِيرًا وَسَعَةً
وَمَنْ يَخْرُجْ مِنْ بَيْتِهِ مُهَاجِرًا إِلَى
اللَّهِ وَرَسُولِهِ ثُمَّ يُدْرِكْهُ الْمَوْتُ
فَقَدْ وَقَعَ أَجْرُهُ عَلَى اللَّهِ وَكَانَ
اللَّهُ غَفُورًا رَحِيمًا (١٠٠)
وَإِذَا ضَرَبْتُمْ فِي الْأَرْضِ فَلَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ أَنْ تَقْصُرُوا مِنَ الصَّلَاةِ
إِنْ خِفْتُمْ أَنْ يَفْتِنَكُمُ الَّذِينَ كَفَرُوا
إِنَّ الْكَافِرِينَ كَانُوا لَكُمْ عَدُوًّا مُبِينًا (١٠١)
وَإِذَا كُنْتَ فِيهِمْ فَأَقَمْتَ لَهُمُ الصَّلَاةَ
فَلْتَقُمْ طَائِفَةٌ مِنْهُمْ مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا
أَسْلِحَتَهُمْ فَإِذَا سَجَدُوا فَلْيَكُونُوا مِنْ
وَرَائِكُمْ وَلْتَأْتِ طَائِفَةٌ أُخْرَىٰ لَمْ
يُصَلُّوا فَلْيُصَلُّوا مَعَكَ وَلْيَأْخُذُوا
حِذْرَهُمْ وَأَسْلِحَتَهُمْ وَدَّ الَّذِينَ كَفَرُوا
لَوْ تَغْفُلُونَ عَنْ أَسْلِحَتِكُمْ وَأَمْتِعَتِكُمْ
فَيَمِيلُونَ عَلَيْكُمْ مَيْلَةً وَاحِدَةً
وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ إِنْ كَانَ بِكُمْ أَذًى
مِنْ مَطَرٍ أَوْ كُنْتُمْ مَرْضَىٰ أَنْ تَضَعُوا
أَسْلِحَتَكُمْ وَخُذُوا حِذْرَكُمْ إِنَّ اللَّهَ
أَعَدَّ لِلْكَافِرِينَ عَذَابًا مُهِينًا (١٠٢)

103. फिर जब तुम अपनी नमाज़ पूरी कर चुको तो, खड़े, बैठे और लेटे अल्लाह को याद करते रहो। फिर जब तुम्हें इतमिनान हासिल हो जाए तो पूरी नमाज़ क़ायम करो, बेशक मोमिनीन पर मुक़र्रर वक़्त के साथ नमाज़ फ़र्ज़ है।

104. और उन लोगों का पीछा करने में सुस्ती न दिखाओ; अगर तुम बेआराम होते हो, तो वो भी बेआराम होते हैं, जिस तरह तुम बेआराम होते हो, और तुम्हें तो अल्लाह से उसकी उम्मीद भी है जो उन्हें नहीं है; अल्लाह तो सबकुछ जाननेवाला, निहायत हिकमतवाला है।

105. बेशक हमने यह किताब हक़ के साथ तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की है, ताकि अल्लाह ने जो कुछ तुमपर ज़ाहिर किया है तुम उसी के मुताबिक़ लोगों के दरमियान फ़ैसला करो। और देखो ऐसा न हो कि बददियानत लोगों की तरफ़दारी में तुम झगड़ने लगो;

106. अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करते रहो; बेशक अल्लाह बहुत मग़फ़िरत फ़रमानेवाला, निहायत मेहरबान है।

107. और तुम उन लोगों की तरफ़ से न झगड़ना जो ख़ुद अपनों के साथ ख़ियानत करते हैं; अल्लाह तो किसी ऐसे शख़्स को पसन्द नहीं करता जो ख़ियानतकार, हक़ मारनेवाला हो।

108. वो लोगों से तो छुपते हैं, लेकिन अल्लाह से नहीं छुपते; वह तो उनके साथ होता है जब वो रातों में ऐसी बात की साज़िश करते हैं जो उसकी मर्ज़ी के ख़िलाफ़ होती है; जो कुछ भी वो करते हैं अल्लाह उसका इहाता किए हुए होता है।

109. हां यह तुम ही लोग तो हो, जिन्होंने दुनिया की ज़िन्दगी में उनकी तरफ़ से झगड़ लिया; लेकिन क़ियामत के दिन उनकी तरफ़ से अल्लाह से कौन झगड़ेगा, या कौन उनका वकील होगा?

110. जो कोई बुराई कर बैठे, या अपने आप पर ज़ुल्म करे, फिर अल्लाह से बख़्शिश चाहे, तो वह अल्लाह को बख़्शनेवाला, निहायत मेहरबान पाएगा।

111. और जो गुनाह कमाता है, वह तो उसे अपने ही हक़ में कमाता है; अल्लाह तो अलीम, हकीम है।

112. और जो शख़्स कोई ख़ता करे या गुनाह कमाए फिर उसे किसी

फ़-इज़ा क़ज़ैतुमुस्सला-त फ़ज़्कुरुल्ला-ह क़ियामंव्-व क़ुऊदंव्-व अ़ला जुनूबिकुम् फ़-इज़त्मअ्नन्तुम् फ़-अक़ीमुस्सला-त इन्नस्सला-त कानत् अ़लल् मुअ्मिनी-न किताबम् मौक़ूता (103)

व ला तहिनू फ़िब्तिग़ा-इल्-क़ौमि, इन् तकूनू तअ्लमू-न फ़-इन्नहुम् यअ्लमू-न कमा तअ्लमू-न व तर्जू-न मिनल्लाहि मा ला यर्जू-न, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा (104)●

इन्ना अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्-हक़्क़ि लि-तह्कु-म बैनन्नासि बिमा अराकल्लाहु, व ला तकुल् लिल्-ख़ाइनी-न ख़सीमा (105)

वस्तग़्फ़िरिल्ला-ह, इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा (106)

व ला तुजादिल् अ़निल्लज़ी-न यख़्तानू-न अन्फ़ु-सहुम, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु मन् का-न ख़व्वानन् असीमा (107)

यस्तख़्फ़ू-न मिनन्नासि व ला यस्तख़्फ़ू-न मिनल्लाहि व हु-व म-अहुम् इज़् युबय्यितू-न मा ला यर्ज़ा मिनल्क़ौलि, व कानल्लाहु बिमा यअ्मलू-न मुहीता (108)

हा-अन्तुम् हा-उला-इ जादल्तुम अ़न्हुम् फ़िल्हयातिद्दुन्या, फ़-मंय्युजादिलुल्ला-ह अ़न्हुम् यौमल्-क़ियामति अम्-मंय्यकूनु अ़लैहिम् वकीला (109)

व मंय्यअ्मल् सूअन् औ यज़्लिम् नफ़्सहू सुम्-म यस्तग़्फ़िरिल्ला-ह यजिदिल्ला-ह ग़फ़ूरर्रहीमा (110)

व मंय्यक्सिब् इस्मन् फ़-इन्नमा यक्सिबुहू अ़ला नफ़्सिही, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा (111)

व मंय्यक्सिब ख़ती-अतन् औ इस्मन् सुम्-म् यर्मि

فَإِذَا قَضَيْتُمُ الصَّلٰوةَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ
قِيٰمًا وَّقُعُودًا وَّعَلٰى جُنُوبِكُمْ ۚ فَإِذَا
اطْمَأْنَنْتُمْ فَأَقِيمُوا الصَّلٰوةَ ۚ إِنَّ الصَّلٰوةَ
كَانَتْ عَلَى الْمُؤْمِنِينَ كِتٰبًا مَّوْقُوتًا ﴿١٠٣﴾
وَلَا تَهِنُوا فِي ابْتِغَاءِ الْقَوْمِ ۖ إِنْ تَكُونُوا
تَأْلَمُونَ فَإِنَّهُمْ يَأْلَمُونَ كَمَا تَأْلَمُونَ ۚ
وَتَرْجُونَ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا يَرْجُونَ ۗ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١٠٤﴾
إِنَّا أَنْزَلْنَا إِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ لِتَحْكُمَ
بَيْنَ النَّاسِ بِمَا أَرٰىكَ اللّٰهُ ۚ وَلَا تَكُنْ
لِلْخَائِنِينَ خَصِيمًا ﴿١٠٥﴾
وَاسْتَغْفِرِ اللّٰهَ ۖ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ
غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١٠٦﴾
وَلَا تُجَادِلْ عَنِ الَّذِينَ يَخْتَانُونَ أَنْفُسَهُمْ ۚ
إِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ مَنْ كَانَ خَوَّانًا أَثِيمًا ﴿١٠٧﴾
يَسْتَخْفُونَ مِنَ النَّاسِ وَلَا يَسْتَخْفُونَ
مِنَ اللّٰهِ وَهُوَ مَعَهُمْ إِذْ يُبَيِّتُونَ
مَا لَا يَرْضٰى مِنَ الْقَوْلِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ
بِمَا يَعْمَلُونَ مُحِيطًا ﴿١٠٨﴾
هٰأَنْتُمْ هٰؤُلَاءِ جٰدَلْتُمْ عَنْهُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ فَمَنْ يُجٰدِلُ اللّٰهَ عَنْهُمْ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ أَمْ مَّنْ يَكُونُ عَلَيْهِمْ وَكِيلًا ﴿١٠٩﴾
وَمَنْ يَعْمَلْ سُوٓءًا أَوْ يَظْلِمْ نَفْسَهُ ثُمَّ
يَسْتَغْفِرِ اللّٰهَ يَجِدِ اللّٰهَ غَفُورًا رَّحِيمًا ﴿١١٠﴾
وَمَنْ يَكْسِبْ إِثْمًا فَإِنَّمَا يَكْسِبُهُ
عَلٰى نَفْسِهِ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيمًا حَكِيمًا ﴿١١١﴾
وَمَنْ يَكْسِبْ خَطِيٓئَةً أَوْ إِثْمًا ثُمَّ يَرْمِ

بِهٖ بَرِيْٓـًٔا فَقَدِ احْتَمَلَ بُهْتَانًا وَّاِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿١١٢﴾
وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ وَرَحْمَتُهٗ
لَهَمَّتْ طَّآىِٕفَةٌ مِّنْهُمْ اَنْ يُّضِلُّوْكَ ؕ وَمَا
يُضِلُّوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا يَضُرُّوْنَكَ
مِنْ شَيْءٍ ؕ وَاَنْزَلَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْكِتٰبَ
وَالْحِكْمَةَ وَعَلَّمَكَ مَا لَمْ تَكُنْ تَعْلَمُ ؕ
وَكَانَ فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكَ عَظِيْمًا ﴿١١٣﴾
لَا خَيْرَ فِيْ كَثِيْرٍ مِّنْ نَّجْوٰىهُمْ اِلَّا
مَنْ اَمَرَ بِصَدَقَةٍ اَوْ مَعْرُوْفٍ
اَوْ اِصْلَاحٍۢ بَيْنَ النَّاسِ ؕ وَمَنْ يَّفْعَلْ
ذٰلِكَ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ فَسَوْفَ
نُؤْتِيْهِ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿١١٤﴾
وَمَنْ يُّشَاقِقِ الرَّسُوْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا
تَبَيَّنَ لَهُ الْهُدٰى وَيَتَّبِعْ غَيْرَ سَبِيْلِ
الْمُؤْمِنِيْنَ نُوَلِّهٖ مَا تَوَلّٰى وَنُصْلِهٖ
جَهَنَّمَ ؕ وَسَآءَتْ مَصِيْرًا ﴿١١٥﴾
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَغْفِرُ اَنْ يُّشْرَكَ بِهٖ وَيَغْفِرُ
مَا دُوْنَ ذٰلِكَ لِمَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ
يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًاۢ بَعِيْدًا ﴿١١٦﴾
اِنْ يَّدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اِنٰثًا ۚ
وَاِنْ يَّدْعُوْنَ اِلَّا شَيْطٰنًا مَّرِيْدًا ﴿١١٧﴾
لَّعَنَهُ اللّٰهُ ۘ وَقَالَ لَاَتَّخِذَنَّ مِنْ
عِبَادِكَ نَصِيْبًا مَّفْرُوْضًا ﴿١١٨﴾
وَّلَاُضِلَّنَّهُمْ وَلَاُمَنِّيَنَّهُمْ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ
فَلَيُبَتِّكُنَّ اٰذَانَ الْاَنْعَامِ وَلَاٰمُرَنَّهُمْ
فَلَيُغَيِّرُنَّ خَلْقَ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّتَّخِذِ
الشَّيْطٰنَ وَلِيًّا مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَقَدْ

बिही बरीअन् फ़-क़दिह्त-म-ल बुह्तानंव्-व इस्मम्-मुबीना (112)●

व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै-क व रह्मतुहू ल-हम्मत्ता-इ-फ़तुम् मिन्हुम् अंय्युज़िल्लू-क, व मा युज़िल्लू-न इल्ला अन्फ़ु-सहुम् व मा यज़ुर्रून-क मिन् शैइन्, व अन्ज़लल्लाहु अ़लैकल्-किता-ब वल्हिक्म-त व अ़ल्ल-म-क मा लम् तकुन् तअ्लमु, व का-न फ़ज़्लुल्लाहि अ़लै-क अ़ज़ीमा ● (113)

ला ख़ै-र फ़ी कसीरिम् मिन्नज्वाहुम् इल्ला मन् अ-म-र बि-स-द-क़तिन् औ मअ्रूफ़िन् औ इस्लाहिम् बैनन्नासि, व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालिकब्तिग़ा-अ मर्ज़ातिल्लाहि फ़सौ-फ़ नुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा (114)

व मंय्युशाक़िक़िर्रसू-ल मिम्-बअ़्दि मा तबय्य-न लहुल्हुदा व यत्तबिअ् ग़ै-र सबीलिल् मुअ्मिनी-न नुवल्लिही मा तवल्ला व नुस्लिही जहन्न-म, व साअत् मसीरा (115) ●

इन्नल्ला-ह ला यग़्फ़िरु अंय्युश्र-क बिही व यग़्फ़िरु मा दू-न ज़ालि-क लि-मंय्यशा-उ, व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम् बअ़ीदा (116)

इंय्यद्अू-न मिन् दूनिही इल्ला इनासन् व इंय्यद्अू-न इल्ला शैतानम् मरीदा (117)

ल-अ़-नहुल्लाहु,● व क़ा-ल ल-अत्तख़िज़न्-न मिन् अ़िबादि-क नसीबम् मफ़्रूज़ा (118)

व ल-उज़िल्लन्नहुम् व ल-उमन्नियन्नहुम् व ल-आमुरन्नहुम फ़-लयुबत्तिकुन्-न आज़ानल्-अन्आ़मि व ला-आमुरन्नहुम् फ़-लयुग़य्यिरुन्-न ख़ल्क़ल्लाहि, व मंय्यत्तख़िज़िश्शैता-न वलिय्यम् मिन् दूनिल्लाहि फ़-क़द्

बेगुनाह के सर थोप दे, तो उसने एक बड़े बुहतान और सरीह गुनाह का बार अपने ऊपर ले लिया।

113. अगर तुमपर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती तो उनमें से कुछ लोग तो यह इरादा कर ही चुके थे कि तुम्हें राह से भटका कर रहें; हालांकि वो अपने आप ही को गुमराह कर रहे हैं; तुम्हारा वो कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते। अल्लाह ने तुमपर किताब और हिक्मत उतारी है, और उसने तुम्हें वह कुछ सिखाया जो तुम जानते न थे, तुमपर अल्लाह का बड़ा फ़ज़्ल है।

114. उनकी अक्सर सरगोशियों में कोई भलाई नहीं होती, हां जो शख़्स सदक़ा व ख़ैरात, या भलाई, या लोगों के दरमियान इसलाह के लिए कुछ कहे तो उसकी बात और है। और जो कोई अल्लाह की ख़ुशनूदी के असबाब की तलब में ऐसा करेगा, उसे तो हम लाज़िमन बड़ा अज्र अता करेंगे।

115. लेकिन जो शख़्स इसके बाद भी कि हिदायत उसपर वाज़ेह हो चुकी है रसूल की मुख़ालफ़त करेगा, और अहले ईमान की राह के सिवा किसी और राह पर चलेगा, उसे हम उसपर चलने देंगे जिसको उसने इख़्तियार किया होगा और जहन्नम में उसे झोंक देंगे, जो बदतरीन मंज़िल है।

116. बेशक अल्लाह इसको माफ़ नहीं करेगा कि उसके साथ किसी को शरीक किया जाए; अलबत्ता इसके सिवा जो कुछ है उसे जिस शख़्स के लिए मंजूर होगा माफ़ कर देगा। जो अल्लाह के साथ शिर्क करता है, वह तो भटककर बहुत ही दूर जा पड़ा।

117. वो उससे हटकर बस देवियों को पुकारते हैं; और वो तो बस सरकश शैतान को पुकारते हैं।

118. जिसपर अल्लाह ने लानत की है। उसने कहा था कि "मैं तेरे बन्दों में से एक मुक़र्रर हिस्सा लेकर रहूंगा।

119. उन्हें बहकाऊंगा, और उन्हें तमन्नाओं में उलझाऊंगा, और उन्हें हुक्म दूंगा तो वो चौपायों के कान कतरेंगे; और उन्हें कहूंगा तो वो ख़ुदाई साख़्त में तबदीली पैदा करेंगे।" हां तो जिस किसी ने अल्लाह से हट कर

शैतान को अपना वली और सरपरस्त बनाया, वह सरीह ख़सारे में पड़ गया।

120. वह उनसे वादे करता है और उन्हें तमन्नाओं में उलझाए रखता है, हालांकि शैतान उनसे जो कुछ वादा करता है वह एक फ़रेब के सिवा कुछ भी नहीं होता।

121. ऐसे लोगों का ठिकाना जहन्नम है, और वो उससे अलग न हो सकेंगे।

122. रहे वो लोग जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए, उन्हें हम जल्द ही ऐसे बाग़ात में दाख़िल करेंगे, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जहां वो हमेशा रहेंगे; अल्लाह का वादा सच्चा है; अल्लाह से बढ़कर बात का सच्चा होगा भी कौन?

123. बात न तुम्हारी तमन्नाओं की है, और न किताब वालों की आरज़ुओं की। जो भी बुरा करेगा उसका फल पाएगा, और अल्लाह से हटकर अपना न तो कोई यार पाएगा और न मददगार।

124. लेकिन जो कोई मर्द हो या औरत, नेक आमाल इख़्तियार करे, मगर हो मोमिन, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, और उनका हक़ खजूर के शिगाफ़ के बराबर भी मारा न जाएगा।

125. दीन के एतिबार से उस शख़्स से अच्छा और कौन हो सकता है जो अपने आपको अल्लाह के आगे डाल दे और हो वह निहायत खूबकार, और इब्राहीम के तरीक़े की पैरवी करे, जो सबसे कटकर एक का हो गया था? और अल्लाह ने भी इब्राहीम को अपना गहरा दोस्त बनाया था।

126. जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है वह अल्लाह ही का है, और अल्लाह हर चीज़ का इहाता किए हुए है।

127. लोग तुमसे औरतों के मुआमले में दरयाफ़्त करते हैं। कहो "अल्लाह तुम्हें उनके मुआमले में हुक्म देता है, और जो आयतें तुम को इस किताब में पढ़कर सुनाई जाती हैं वो उन औरतों के यतीमों के बारे में भी हैं, जिनका हक़, जो उनके लिए मुक़र्रर है, तुम अदा नहीं करते, और चाहते हो कि उनके साथ शादी कर लो, और उन बच्चों के बारे में भी जो कमज़ोर

ख़सि-र ख़ुस्रानम् मुबीना (119)

यअ़िदुहुम् व युमन्नीहिम्, व मा यअ़िदुहुमुश्शैतानु इल्ला ग़ुरूरा (120)

उलाइ-क मअ्वाहुम् जहन्नमु व ला यजिदू-न अ़न्हा महीसा (121)

वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति सनुद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, वअ्दल्लाहि हक़्क़न्, व मन् अस्दक़ु मिनल्लाहि क़ीला (122)

लै-स बि-अमानिय्यिकुम् व ला अमानिय्यि अह्लिल्-किताबि, मंय्यअ्मल् सूअंय्युज्-ज़ बिही व ला यजिद् लहू मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा (123)

व मंय्यअ्मल् मिनस्सालिहाति मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-उलाइ-क यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त व ला युज़्लमू-न नक़ीरा (124)

व मन् अह्सनु दीनम् मिम्-मन् अस्ल-म वज्हहू लिल्लाहि व हु-व मुह्सिनुंव्-वत्त-ब-अ़ मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, वत्त-ख़ज़ल्लाहु इब्राही-म ख़लीला (125)

व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइम् मुहीता (126) ●

व यस्तफ़्तून-क फ़िन्निसा-इ, क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम् फ़ीहिन्-न व मा युत्ला अ़लैकुम् फ़िल्-किताबि फ़ी यतामन्निसा-इल्लाती ला तुअ्तूनहुन्-न मा कुति-ब लहुन्-न व तर्ग़बू-न अन् तन्किहूहुन्-न वल्-मुस्तज़्अफ़ी-न

خَسِرَ خُسْرَانًا مُّبِيْنًا ۝١١٩
يَعِدُهُمْ وَ يُمَنِّيْهِمْ ؕ وَمَا يَعِدُهُمُ
الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ۝١٢٠
اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۙ وَلَا يَجِدُوْنَ
عَنْهَا مَحِيْصًا ۝١٢١
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَ عَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
سَنُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ وَمَنْ اَصْدَقُ مِنَ
اللّٰهِ قِيْلًا ۝١٢٢
لَيْسَ بِاَمَانِيِّكُمْ وَلَآ اَمَانِيِّ اَهْلِ
الْكِتٰبِ ؕ مَنْ يَّعْمَلْ سُوْٓءًا يُّجْزَ بِهٖ ۙ
وَلَا يَجِدْ لَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝١٢٣
وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ مِنْ ذَكَرٍ اَوْ
اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ
الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ نَقِيْرًا ۝١٢٤
وَمَنْ اَحْسَنُ دِيْنًا مِّمَّنْ اَسْلَمَ
وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ وَّاتَّبَعَ
مِلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ حَنِيْفًا ؕ وَاتَّخَذَ اللّٰهُ
اِبْرٰهِيْمَ خَلِيْلًا ۝١٢٥
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
ع وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطًا ۝١٢٦
وَيَسْتَفْتُوْنَكَ فِي النِّسَآءِ ؕ قُلِ اللّٰهُ
يُفْتِيْكُمْ فِيْهِنَّ ۙ وَمَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ
فِي الْكِتٰبِ فِيْ يَتٰمَى النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا
تُؤْتُوْنَهُنَّ مَا كُتِبَ لَهُنَّ وَتَرْغَبُوْنَ
اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ وَالْمُسْتَضْعَفِيْنَ

व मातवां हैं और इस हिदायत के बारे में भी कि तुम यतीमों के बारे में इनसाफ़ पर क़ायम रहो। जो भलाई भी तुम करोगे, यक़ीनन अल्लाह को उसकी ख़बर रहेगी।

128. अगर किसी औरत को अपने शौहर की तरफ़ से बेज़ारी या बेरुख़ी का डर हो, तो इसमें उनके लिए कोई हर्ज नहीं कि वो दोनों आपस में सुलह की कोई सूरत पैदा कर लें; सुलह बेहरहाल बेहतर है; और नुफ़ूस तो हिर्स व बुख़्ल के लिए आमादा रहते हैं। लेकिन अगर तुम हुस्ने सुलूक और तक़्वा से काम लो, तो अल्लाह को यक़ीनन जो कुछ तुम करोगे उसकी ख़बर रहेगी।

129. और ख़्वाह तुम कितना ही चाहो तुमसे यह न हो सकेगा कि औरतों के दरमियान कामिल तौर पर बराबरी का बरताव कर सको, तो ऐसा भी न करना कि एक ही तरफ़ बिल्कुल ढुलक जाओ; और एक को इस तरह छोड़ दो कि जैसे वह अधर में लटकी हो। लेकिन अगर तुम अपना सुलूक ठीक रखो, और डरते रहो, तो बेशक अल्लाह भी बख़्शनेवाला, निहायत मेहरबान है।

130. और अगर दोनों अलग ही हो जाएं, तो अल्लाह अपनी वुसअत से हर एक को बेनियाज़ कर देगा; अल्लाह है भी बड़ा कुशादा दामन, निहायत हिक्मतवाला।

131. अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। तुमसे पहले जिन्हें किताब अता हुई थी, उन्हें और तुम्हें हमने यही ताकीद की है कि "अल्लाह का डर रखो"। और अगर तुम कुफ़्र व इनकार करोगे, तो इससे क्या होने का? जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है वह तो फिर भी अल्लाह ही का रहेगा; अल्लाह तो बेनियाज़ और अपनी ज़ात में आप लाइक़े हम्द है।

132. हां अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है; और अल्लाह कारसाज़ की हैसियत से काफ़ी है।

133. अगर वह चाहे तो ऐ लोगो, तुम्हें हटाके रहे और दूसरों को ले आए; अल्लाह को इस पर पूरी क़ुदरत हासिल है।

134. जो कोई दुनिया का सिला चाहे, तो अल्लाह के पास तो दुनिया

मिनल्-विल्दानि व अन् तक़ूमू लिल्यतामा बिल्क़िस्ति, व मा तफ़अलू मिन् ख़ैरिन् फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिही अ़लीमा (127)

व इनिम्-र-अतुन् ख़ाफ़त् मिम्-बअ्लिहा नुशूज़न् औ इअ्राज़न् फ़ला जुना-ह अ़लैहिमा अंय्युस्लिहा बैनाहुमा सुल्हन्, वस्सुल्हु ख़ैरुन्, व उह्ज़ि-रतिल् अन्फ़ुसुश्शुह्-ह, व इन् तुह्सिनू व तत्तक़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ्मलू-न ख़बीरा(128)

व लन् तस्ततीअू अन् तअ्दिलू बैनन्निसा-इ व लौ हरस्तुम् फ़ला तमीलू कुल्लल्-मैलि फ़-त-ज़रूहा कल्-मुअ़ल्ल-क़ति, व इन् तुस्लिहू व तत्तक़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा (129)

व इंय्य-तफ़र्रक़ा युग़्निल्लाहु कुल्लम्-मिन् स-अ़तिही, व कानल्लाहु वासिअ़न् हकीमा (130)

व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व ल-क़द् वस्सैनल्लज़ी-न ऊतुल-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् व इय्याकुम् अनित्तक़ुल्ला-ह, व इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु ग़निय्यन् हमीदा (131)

व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (132)

इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् अय्युहन्नासु व यअ्ति बिआ-ख़री-न, व कानल्लाहु अ़ला ज़ालि-क क़दीरा (133)

मन् का-न युरीदु सवाबद्दुन्या फ़-अ़िन्दल्लाहि सवाबुद्दुन्या

مِنَ الْوِلْدَانِ ۙ وَاَنْ تَقُوْمُوْا لِلْيَتٰمٰى
بِالْقِسْطِ ؕ وَمَا تَفْعَلُوْا مِنْ خَيْرٍ
فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِهٖ عَلِيْمًا ۝١٢٧
وَاِنِ امْرَاَةٌ خَافَتْ مِنْۢ بَعْلِهَا
نُشُوْزًا اَوْ اِعْرَاضًا فَلَا جُنَاحَ
عَلَيْهِمَآ اَنْ يُّصْلِحَا بَيْنَهُمَا صُلْحًا ؕ
وَالصُّلْحُ خَيْرٌ ؕ وَاُحْضِرَتِ الْاَنْفُسُ
الشُّحَّ ؕ وَاِنْ تُحْسِنُوْا وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ
اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۝١٢٨
وَلَنْ تَسْتَطِيْعُوْٓا اَنْ تَعْدِلُوْا بَيْنَ النِّسَآءِ
وَلَوْ حَرَصْتُمْ فَلَا تَمِيْلُوْا كُلَّ الْمَيْلِ
فَتَذَرُوْهَا كَالْمُعَلَّقَةِ ؕ وَاِنْ تُصْلِحُوْا
وَتَتَّقُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝١٢٩
وَاِنْ يَّتَفَرَّقَا يُغْنِ اللّٰهُ كُلًّا
مِّنْ سَعَتِهٖ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ وَاسِعًا
حَكِيْمًا ۝١٣٠
وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ
وَلَقَدْ وَصَّيْنَا الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ
مِنْ قَبْلِكُمْ وَاِيَّاكُمْ اَنِ اتَّقُوا اللّٰهَ ؕ
وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَنِيًّا
حَمِيْدًا ۝١٣١
وَلِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ؕ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝١٣٢
اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ اَيُّهَا النَّاسُ وَيَاْتِ
بِاٰخَرِيْنَ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى ذٰلِكَ قَدِيْرًا ۝١٣٣
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ ثَوَابَ الدُّنْيَا

فَعِنْدَ اللّٰهِ ثَوَابُ الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ﴿١٣٤﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ
بِالْقِسْطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَلَوْ عَلٰۤى
اَنْفُسِكُمْ اَوِ الْوَالِدَيْنِ وَالْاَقْرَبِيْنَ ۚ
اِنْ يَّكُنْ غَنِيًّا اَوْ فَقِيْرًا فَاللّٰهُ اَوْلٰى
بِهِمَا ۫ فَلَا تَتَّبِعُوا الْهَوٰۤى اَنْ
تَعْدِلُوْا ۚ وَاِنْ تَلْوٗۤا اَوْ تُعْرِضُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ﴿١٣٥﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْ نَزَّلَ عَلٰى
رَسُوْلِهٖ وَالْكِتٰبِ الَّذِيْۤ اَنْزَلَ مِنْ
قَبْلُ ؕ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِاللّٰهِ وَمَلٰٓئِكَتِهٖ
وَكُتُبِهٖ وَرُسُلِهٖ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ فَقَدْ
ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيْدًا ﴿١٣٦﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ اٰمَنُوْا
ثُمَّ كَفَرُوْا ثُمَّ ازْدَادُوْا كُفْرًا لَّمْ يَكُنِ
اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ سَبِيْلًا ﴿١٣٧﴾

بَشِّرِ الْمُنٰفِقِيْنَ بِاَنَّ لَهُمْ عَذَابًا
اَلِيْمَا ﴿١٣٨﴾

الَّذِيْنَ يَتَّخِذُوْنَ الْكٰفِرِيْنَ اَوْلِيَآءَ
مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ اَيَبْتَغُوْنَ عِنْدَهُمُ
الْعِزَّةَ فَاِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ جَمِيْعًا ﴿١٣٩﴾

وَقَدْ نَزَّلَ عَلَيْكُمْ فِي الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا
سَمِعْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ يُكْفَرُ بِهَا وَيُسْتَهْزَاُ بِهَا
فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ حَتّٰى يَخُوْضُوْا فِيْ حَدِيْثٍ
غَيْرِهٖۤ ۖ اِنَّكُمْ اِذًا مِّثْلُهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ جَامِعُ

वल्आख़ि-रति, व कानल्लाहु समीअम्-बसीरा (134) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न बिल्क़िस्ति शु-हदा-अ लिल्लाहि व लौ अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अविल्-वालिदैनि वल् अक़्रबी-न इंय्यकुन् ग़निय्यन् औ फ़क़ीरन् फ़ल्लाहु औला बिहिमा, फ़ला तत्तबिअुल्-हवा अन् तअ्दिलू व इन् तल्वू औ तुअ्‌रिज़ू फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिमा तअ्‌मलू-न ख़बीरा (135)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वल्-किताबिल्लज़ी नज़्ज़-ल अ़ला रसूलिही वल्-किताबिल्-लज़ी अन्ज़-ल मिन् क़ब्लु, व मंय्यक्फ़ुर् बिल्लाहि व मलाइ-कतिही व कुतुबिही व रूसुलिही वल्यौमिल्-आख़िरी फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम्-बअ़ीदा (136)

इन्नल्लज़ी-न आमनू सुम्-म क-फ़रू सुम्-म आमनू सुम्-म क-फ़रू सुम्मज़्-दादू कुफ़्रल्लम् यकुनिल्लाहु लि-यग़्फ़ि-र लहुम् व ला लि-यह्दि-यहुम् सबीला (137)

बश्शिरिल्-मुनाफ़िक़ी-न बिअन्-न लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (138)

अल्लज़ी-न यत्तख़िज़ूनल्-काफ़िरी-न औलिया-अ मिन् दूनिल्-मुअ्मिनी-न, अ-यब्तग़ू-न अिन्दहुमुल्-अिज़्ज़-त फ़-इन्नल्-अिज़्ज़-त लिल्लाहि जमीआ (139)

व क़द् नज़्ज़-ल अ़लैकुम् फ़िल्किताबि अन् इज़ा समिअ्‌तुम् आयातिल्लाहि युक्फ़रू बिहा व युस्तह्ज़उ बिहा फ़ला तक़्अुदू म-अ़हुम् हत्ता यख़ूज़ू फ़ी हदीसिन् ग़ैरिही इन्नकुम् इज़म्-मिस्लुहुम, इन्नल्ला-ह जामिअुल्

का सिला भी है, और आख़िरत का भी; अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।

135. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! अल्लाह के लिए गवाही देते हुए मज़बूती से इनसाफ़ पर जमे रहो, ख़्वाह वह ख़ुद तुम्हारे अपने, या मां-बाप और रिश्तेदारों के ख़िलाफ़ ही क्यों न पड़े, कोई मालदार हो या मुहताज, अल्लाह तो उन दोनों ही से ज़्यादा क़रीब है। तो तुम ख़्वाहिश-ए-नफ़्स की पैरवी में इंसाफ़ से न हटो; क्योंकि अगर तुम (शहादत के अदा करने में) कज बयानी से काम लोगे या (शहादत से) रूगरदानी करोगे, तो अल्लाह को तो जो कुछ भी तुम करोगे उसकी ख़बर रहेगी।

136. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह पर ईमान लाओ, और उसके रसूल पर और उस किताब पर जो उसने अपने रसूल पर नाज़िल की है और उस किताब पर भी जिसको वह इससे पहले नाज़िल फ़रमा चुका है। जिस किसी ने भी अल्लाह और उसके फ़रिश्तों और उसकी किताबों, और उसके रसूलों का, और आख़िरत के दिन का इनकार किया, वह तो भटककर बहुत दूर जा पड़ा।

137. रहे वो लोग जो ईमान लाए, फिर कुफ़्र किया, फिर ईमान लाए, और फिर कुफ़्र किया, फिर कुफ़्र में बढ़ते चले गए, अल्लाह उन्हें कभी नहीं बख़्शेगा, और न उन्हें कोई रास्ता दिखाएगा।

138. मुनाफ़िक़ीन को ख़ुशख़बरी दे दो कि उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है,

139. जो अहले ईमान को छोड़कर कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त और रफ़ीक़ बनाते हैं, क्या उन्हें उनके पास इज़्ज़त और क़ुव्वत की तलाश है? इज़्ज़त और क़ुव्वत तो सब अल्लाह ही के लिए है।

140. वह किताब में तुमपर यह हुक्म उतार चुका है कि "जब तुम सुनो कि अल्लाह की आयतों के साथ कुफ़्र किया जा रहा है और उनका मज़ाक़ उड़ाया जा रहा है, तो जब तक वो किसी दूसरी बात में न लग जाएं उनके साथ न बैठो, वरना तुम भी उन्हीं जैसे होगे।" अल्लाह

मुनाफ़िक़ीन और कुफ़्फ़ार सबको जहन्नम में इकट्ठा करके रहेगा,

141. जो तुम्हारे मुआमले में इंतिज़ार में रहते हैं। फिर अगर अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारी फ़तह हुई, तो कहते हैं कि "क्या हम तुम्हारे साथ न थे"? और अगर अहले कुफ़्र के नसीब में कुछ आ गया, तो कहते हैं कि "क्या हमने तुम्हें घेर नहीं लिया था, और तुम्हें अहले ईमान से बचाया नहीं"? पस अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे दरमियान फ़ैसला कर देगा, और अल्लाह कभी कुफ़्फ़ार को अहले ईमान के मुक़ाबले में कोई राह नहीं देगा।

142. मुनाफ़िक़ीन अल्लाह के साथ धोकाबाज़ी करते हैं, हालांकि उसी ने उन्हें धोके में डाल रखा है। जब वो नमाज़ के लिए खड़े होते हैं तो कसमसाते हुए, लोगों को दिखाने के लिए खड़े होते हैं और वो अल्लाह को याद थोड़े ही करते हैं;

143. इसी के दरमियान डांवांडोल हो रहे हैं, न उनकी तरफ़ के हैं और न इनकी तरफ़ के, जिसे अल्लाह ही भटका दे, उसके लिए तो तुम कोई रास्ता नहीं पा सकते।

144. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, मोमिनों को छोड़कर काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाना; क्या तुम अपने ख़िलाफ़ अल्लाह को सरीह हुज्जत फ़राहम करना चाहते हो?

145. कुछ शक नहीं कि मुनाफ़िक़ीन आग के सबसे नीचे के तबक़े में होंगे; और तुम हरगिज़ उनका कोई मददगार न पाओगे;

146. उन लोगों की बात और है जो ताइब हो जाएं और इसलाह कर लें, और अल्लाह को मज़बूती के साथ पकड़ लें; और अपने दीन को अल्लाह के लिए ख़ालिस कर लें; ऐसे लोग मोमिनों के साथ होंगे, और अल्लाह मोमिनों को जल्द ही बड़ा अजर अता फ़रमाएगा।

147. अल्लाह को तुम्हें अज़ाब देकर क्या करना है अगर तुम शुक्रगुज़ार रहो और ईमान लाओ? अल्लाह तो क़द्रदां, सब कुछ जानने वाला है।

-मुनाफ़िक़ी-न वल्काफ़िरी-न फ़ी जहन्नम जमीआ (140)

अल्लज़ी-न य-तरब्बसू-न बिकुम् फ़-इन् का-न लकुम् फ़त्हुम् मिनल्लाहि क़ालू अलम् नकुम् म-अकुम् व इन् का-न लिल्काफ़िरी-न नसीबुन् क़ालू अलम् नस्तह्विज़् अलैकुम् व नम्नअ्कुम् मिनल्-मुअ्मिनी-न, फ़ल्लाहु यह्कुमु बैनकुम् यौमल्-क़ियामति, व लंय्यज्-अलल्लाहु लिल्काफ़िरी-न अलल्-मुअ्मिनी-न सबीला (141) ●

इन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न युख़ादिअूनल्ला-ह व हु-व ख़ादिअुहुम् व इज़ा क़ामू इलस्-सलाति क़ामू कुसाला युराऊनन्ना-स व ला यज़्कुरूनल्ला-ह इल्ला क़लीला (142)

मुज़ब्ज़बी-न बै-न ज़ालि-क ला इला-हा-उला-इ व ला इला ह-उला-इ, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़-लन् तजि-द लहू सबीला (143)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्-काफ़िरी-न औलिया-अ मिन् दूनिल् मुअ्मिनी-न, अतुरीदू-न अन् तज्अलू लिल्लाहि अलैकुम् सुल्तानम् मुबीना (144)

इन्नल् मुनाफ़िक़ी-न फ़िद्दर्किल्-अस्फ़लि मिनन्नारि व लन् तजि-द लहुम् नसीरा (145)

इल्लल्लज़ी-न ताबू व अस्लहू वअ्त-समू बिल्लाहि व अख़्लसू दीनहुम् लिल्लाहि फ़-उलाइ-क मअल्-मुअ्मिनी-न, व सौ-फ़ युअ्तिल्लाहुल् मुअ्मिनी-न अज्रन् अज़ीमा (146)

मा यफ़्अलुल्लाहु बि-अज़ाबिकुम् इन् शकर्तुम् व आमन्तुम्, व कानल्लाहु शाकिरन् अलीमा (147)

الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْكٰفِرِيْنَ فِيْ جَهَنَّمَ جَمِيْعَا ۝١٤٠
الَّذِيْنَ يَتَرَبَّصُوْنَ بِكُمْ ۚ فَاِنْ
كَانَ لَكُمْ فَتْحٌ مِّنَ اللّٰهِ قَالُوْٓا اَلَمْ
نَكُنْ مَّعَكُمْ ۖ وَاِنْ كَانَ لِلْكٰفِرِيْنَ
نَصِيْبٌ ۙ قَالُوْٓا اَلَمْ نَسْتَحْوِذْ عَلَيْكُمْ
وَنَمْنَعْكُمْ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ فَاللّٰهُ يَحْكُمُ
بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَلَنْ يَّجْعَلَ اللّٰهُ
لِلْكٰفِرِيْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ سَبِيْلًا ۝١٤١
اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ يُخٰدِعُوْنَ اللّٰهَ وَهُوَ
خَادِعُهُمْ ۚ وَاِذَا قَامُوْٓا اِلَى الصَّلٰوةِ
قَامُوْا كُسَالٰى ۙ يُرَاۗءُوْنَ النَّاسَ وَلَا
يَذْكُرُوْنَ اللّٰهَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝١٤٢
مُّذَبْذَبِيْنَ بَيْنَ ذٰلِكَ ۖ لَآ اِلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ
وَلَآ اِلٰى هٰٓؤُلَاۗءِ ۭ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ سَبِيْلًا ۝١٤٣
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْكٰفِرِيْنَ
اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ اَتُرِيْدُوْنَ
اَنْ تَجْعَلُوْا لِلّٰهِ عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ۝١٤٤
اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ فِي الدَّرْكِ الْاَسْفَلِ
مِنَ النَّارِ ۚ وَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ نَصِيْرًا ۝١٤٥
اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا وَاَصْلَحُوْا وَاعْتَصَمُوْا
بِاللّٰهِ وَاَخْلَصُوْا دِيْنَهُمْ لِلّٰهِ فَاُولٰۗىِٕكَ
مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۭ وَسَوْفَ يُؤْتِ اللّٰهُ
الْمُؤْمِنِيْنَ اَجْرًا عَظِيْمًا ۝١٤٦
مَا يَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ
شَكَرْتُمْ وَاٰمَنْتُمْ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ
شَاكِرًا عَلِيْمًا ۝١٤٧

148. अल्लाह बुरी बात के अलानिया कहने को पसन्द नहीं करता मगर वह जो मज़लूम हो। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

149. ख़्वाह तुम नेकी को ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ या किसी बुराई से दरगुज़र करो, तो अल्लाह भी दरगुज़र करनेवाला, क़ादिरे मुतलक़ है।

150. जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों के साथ कुफ़्र की रविश इख़्तियार करते हैं और अल्लाह और उसके रसूलों के दरमियान तफ़रीक़ करना चाहते हैं, और इस ख़्वाहिश में कि दरमियान की कोई राह इख़्तियार करें कहते हैं कि "हम बाज़ को मानते हैं और बाज़ को नहीं मानते"।

151. यही लोग पक्के काफ़िर हैं; और ऐसे काफ़िरों के लिए हमने रुसवाकुन अज़ाब तैयार कर रखा है।

152. रहे वो लोग जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान रखते हैं और उन्होंने उनमें से एक रसूल और दूसरे रसूल के दरमियान फ़र्क़ नहीं किया ऐसे लोगों को जल्द ही अल्लाह उनका अजर अता फ़रमाएगा; अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला, रहम फ़रमाने वाला है।

153. तुमसे अहले किताब का मुतालबा है कि तुम उन पर कोई किताब आसमान से उतार लाओ; तो वो तो मूसा से इससे भी बड़ा मुतालबा कर चुके हैं, उन्होंने कहा था, "हमें अल्लाह को अलानिया दिखा दो," तो उनके इस सितम पर बिजली के कड़के ने उन्हें आ दबोचा। फिर वो बछड़े को अपना माबूद बना बैठे, हालांकि उनके पास सरीह निशानियां आ चुकी थीं; फिर हमने उसे भी माफ़ कर दिया, और मूसा को वाज़ेह हुज्जत अता की।

154. और उन लोगों से अहद के साथ हमने तूर को उन पर उठा दिया; और उनसे कहा कि "दरवाज़े में सजदा करते हुए दाख़िल हो;" और उनसे कहा सब्त के मुआमले में ज़्यादती न करना

ला युहिब्बुल्लाहुल्-जह्-र बिस्सू-इ मिनल्-क़ौलि इल्ला मन् ज़ुलि-म, व कानल्लाहु समीअ़न् अ़लीमा (148)

इन् तुब्दू ख़ैरन् औ तुख़्फ़ूहु औ तअ़्फ़ू अन् सूइन् फ़-इन्नल्ला-ह का-न अ़फ़ुव्वन् क़दीरा (149)

इन्नल्लज़ी-न यक्फ़ुरू-न बिल्लाहि व रूसुलिही व युरीदू-न अंय्युफ़र्रिक़ू बैनल्लाहि व रूसुलिही व यक़ूलू-न नुअ्मिनु बि-बअ्ज़िंव्-व नक्फ़ुरु बि-बअ्ज़िंव्-व युरीदू-न अंय्यत्तख़िज़ू बै-न ज़ालि-क सबीला (150)

उलाइ-क हुमुल् काफ़िरू-न हक़्क़न् व अअ्तद्ना लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबम् मुहीना (151)

वल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रूसुलिही व लम् युफ़र्रिक़ू बै-न अ-हदिम् मिन्हुम् उलाइ-क सौ-फ़ युअ्तीहिम् उजूरहुम्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्रहीमा (152) ●

यस्अलु-क अह्लुल्-किताबि अन् तुनज़्ज़ि-ल अ़लैहिम् किताबम् मिनस्-समा-इ फ़-क़द् स-अलू मूसा अक्ब-र मिन् ज़ालि-क फ़क़ालू अरिनल्ला-ह जह्-रतन् फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्साअि-क़तु बिज़ुल्मिहिम् सुम्मत्त-ख़ज़ुल्-अिज्-ल मिम्-बअ्दि मा जाअत्हुमुल् बय्यिनातु फ़-अ़फ़ौना अन् ज़ालि-क व आतैना मूसा सुल्तानम् मुबीना (153)

व रफ़अ्ना फ़ौक़हुमुत्तू-र बिमीसाक़िहिम् व क़ुल्ना लहुमुद्ख़ुलुल्बा-ब सुज्जदंव्-व क़ुल्ना लहुम् ला तअ्दू फ़िस्सब्ति व अख़ज़्ना मिन्हुम मीसाक़न् ग़लीज़ा (154)

لَا يُحِبُّ اللّٰهُ الْجَهْرَ بِالسُّوْٓءِ مِنَ الْقَوْلِ اِلَّا مَنْ ظُلِمَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ سَمِيْعًا عَلِيْمًا ﴿١٤٨﴾

اِنْ تُبْدُوْا خَيْرًا اَوْ تُخْفُوْهُ اَوْ تَعْفُوْا عَنْ سُوْٓءٍ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَفُوًّا قَدِيْرًا ﴿١٤٩﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّفَرِّقُوْا بَيْنَ اللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَيَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّنَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّيُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّتَّخِذُوْا بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿١٥٠﴾

اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿١٥١﴾

وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ وَلَمْ يُفَرِّقُوْا بَيْنَ اَحَدٍ مِّنْهُمْ اُولٰٓئِكَ سَوْفَ يُؤْتِيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ ۗ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿١٥٢﴾

يَسْـَٔلُكَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَنْ تُنَزِّلَ عَلَيْهِمْ كِتٰبًا مِّنَ السَّمَآءِ فَقَدْ سَاَلُوْا مُوْسٰٓى اَكْبَرَ مِنْ ذٰلِكَ فَقَالُوْٓا اَرِنَا اللّٰهَ جَهْرَةً فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ بِظُلْمِهِمْ ۚ ثُمَّ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنٰتُ فَعَفَوْنَا عَنْ ذٰلِكَ ۚ وَاٰتَيْنَا مُوْسٰى سُلْطٰنًا مُّبِيْنًا ﴿١٥٣﴾

وَرَفَعْنَا فَوْقَهُمُ الطُّوْرَ بِمِيْثَاقِهِمْ وَقُلْنَا لَهُمُ ادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا وَّقُلْنَا لَهُمْ لَا تَعْدُوْا فِى السَّبْتِ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ﴿١٥٤﴾

155. ग़र्ज़ हमने उनसे बहुत ही मज़बूत अ़हद लिया। फिर उनके अपने अहद तोड़ने, और अल्लाह की आयतों का इनकार कर देने की वजह से, और नबियों को नाहक़ क़त्ल करने के दरपे होने, और उनके इस क़ौल की वजह से कि "हमारे दिल ग़िलाफ़ों में महफ़ूज़ हैं" — नहीं बल्कि हक़ीक़त में उनके कुफ़्र व इनकार की वजह से अल्लाह ने उनके दिलों पर ठप्पा लगा दिया है, तो ये ईमान थोड़े ही लाते हैं।

156. — और उनके कुफ़्र व इनकार की वजह से और मरयम के ख़िलाफ़ ऐसी बात कहने पर जो एक भारी बुहतान था,

157. और उनके इस क़ौल की वजह से कि "हमने ईसा इब्ने मरयम, अल्लाह के रसूल को क़त्ल कर डाला" — हालांकि न तो उन्होंने उसे क़त्ल किया, और न उसे सूली पर चढ़ाया, बल्कि असल मुआमला उनके लिए मुश्तबह हो गया। और जिन लोगों का उसके सिलसिले में आना-जाना था वो तो इसके बारे में शक में पड़े हुए थे; गुमान की पैरवी के सिवा उनके पास इसका कोई इल्म नहीं है; यक़ीनन उन्होंने उसे क़त्ल नहीं किया,

158. बल्कि उसे अल्लाह ने अपनी तरफ़ उठा लिया; और अल्लाह ज़बरदस्त, निहायत हिक्मतवाला है।

159. अहले किताब में से ऐसा कोई भी न होगा जो उसकी मौत से पहले उसपर ईमान न लाए, और वह क़ियामत के दिन उनपर गवाह होगा।

160. ग़र्ज़ यहूदियों के ज़ुल्म की वजह से, हमने कितनी ही अच्छी पाक चीज़ों से उन्हें महरूम कर दिया जो उनके लिए हलाल थीं और उनके अकसर अल्लाह के रास्ते से रोकने की वजह से,

161. और उनके सूद लेने के सबब से, जबकि उन्हें इससे रोका गया था, और उनके ग़लत तौर पर लोगों के माल खाने की वजह से ऐसा किया गया; और हमने उनमें से कुफ़्र करने वालों के लिए दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

162. लेकिन उनमें जो लोग इल्म में पुख़्ता, और मोमिन हैं वो उसपर ईमान रखते हैं जो तुमपर नाज़िल

फ़बिमा नक़्ज़िहिम् मीसाक़हुम् व कुफ़्रिहिम् बिआयातिल्लाहि व क़त्लिहिमुल् अम्बिया-अ बिग़ैरि हक़्क़िंव्-व क़ौलिहिम् क़ुलूबुना ग़ुल्फ़ुन्, बल् त-बअ़ल्लाहु अ़लैहा बिकुफ़्रिहिम् फ़ला युअ्मिनू-न इल्ला क़लीला (155)

व बिकुफ़्रिहिम् व क़ौलिहिम् अ़ला मर्-य-म बुह्तानन् अ़ज़ीमा (156)

व क़ौलिहिम् इन्ना क़तल्नल्-मसी-ह ईसब्-न मर्-य-म रसूलल्लाहि व मा क़-तलूहु व मा स-लबूहु व लाकिन् शुब्बि-ह लहुम, व इन्नल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फ़ीहि लफ़ी शक्किम् मिन्हु, मा लहुम् बिही मिन् अ़िल्मिन् इल्लत्तिबाअ़ज़्ज़न्नि व मा क़-तलूहु यक़ीना (157)

बर्-र-फ़-अ़हुल्लाहु इलैहि, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा (158)

व इम्-मिन् अह्लिल्-किताबि इल्ला ल-युअ्मिनन्-न बिही क़ब्-ल मौतिही व यौमल्-क़ियामति यकूनु अ़लैहिम् शहीदा (159)

फ़-बिज़ुल्मिम्-मिनल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना अ़लैहिम् तय्यिबातिन् उहिल्लत् लहुम् व बि-सद्दिहिम् अ़न् सबीलिल्लाहि कसीरा (160)

व अख़्ज़िहिमुर्रिबा व क़द् नुहू अ़न्हु व अक्लिहिम् अम्वालन्नासि बिल्बातिलि, व अअ्-तद्ना लिल्काफ़िरी-न मिन्हुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (161)

लाकिनिर्रासिख़ू-न फ़िल्अ़िल्मि मिन्हुम् वल्मुअ्मिनू-न युअ्मिनू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लि-क

فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ وَكُفْرِهِمْ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَقَتْلِهِمُ الْاَنْۢبِيَآءَ بِغَيْرِ
حَقٍّ وَّقَوْلِهِمْ قُلُوْبُنَا غُلْفٌ ؕ بَلْ
طَبَعَ اللّٰهُ عَلَيْهَا بِكُفْرِهِمْ فَلَا
يُؤْمِنُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿١٥٥﴾
وَّبِكُفْرِهِمْ وَقَوْلِهِمْ عَلٰى مَرْيَمَ
بُهْتَانًا عَظِيْمًا ﴿١٥٦﴾
وَّقَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى
ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ
وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ
وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ
شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ
اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ
يَقِيْنًا ﴿١٥٧﴾
بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
عَزِيْزًا حَكِيْمًا ﴿١٥٨﴾
وَاِنْ مِّنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤْمِنَنَّ بِهٖ
قَبْلَ مَوْتِهٖ ۚ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكُوْنُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا ﴿١٥٩﴾
فَبِظُلْمٍ مِّنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ
طَيِّبٰتٍ اُحِلَّتْ لَهُمْ وَبِصَدِّهِمْ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ كَثِيْرًا ﴿١٦٠﴾
وَّاَخْذِهِمُ الرِّبٰوا وَقَدْ نُهُوْا عَنْهُ
وَاَكْلِهِمْ اَمْوَالَ النَّاسِ بِالْبَاطِلِ ؕ
وَاَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٦١﴾
لٰكِنِ الرّٰسِخُوْنَ فِي الْعِلْمِ مِنْهُمْ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِمَاۤ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ وَمَاۤ اُنْزِلَ مِنْ قَبْلِكَ

हुआ है, और जो तुमसे पहले नाज़िल हुआ, और जो ख़ासतौर से नमाज़ क़ायम करते, ज़कात देते, और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं, यही लोग हैं जिन्हें हम जल्द ही अजरे अज़ीम अता करेंगे।

163. हमने तुम्हारी तरफ़ वही भेजी जिस तरह नूह और उसके बाद के नबियों की तरफ़ वही की, और हमने इब्राहीम, इसमाईल, इसहाक़, और याकूब और उसकी औलाद और ईसा और अय्यूब, यूनुस और हारून और सुलैमान की तरफ़ भी वही की और हमने दाऊद को ज़बूर अता की,

164. कितने ही रसूल भेजे जिनके क़िस्से पहले हम तुमसे बयान कर चुके हैं, और कितने ही रसूल ऐसे भेजे जिनके हालात हमने तुमसे बयान नहीं किए; और मूसा से अल्लाह ने गुफ़्तगू की जिस तरह गुफ़्तगू की जाती है।

165. रसूल बशारत देनेवाले, और ख़बरदार करनेवाले बनाकर भेजे गए, ताकि रसूलों के बाद लोगों के पास अल्लाह के मुक़ाबले में कोई हुज्जत बाक़ी न रहे; अल्लाह ग़ालिब, निहायत हिकमतवाला है।

166. लेकिन अल्लाह गवाही देता है उसके ज़रिए से जो उसने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया है, उसे उसने अपने इल्म के साथ नाज़िल किया है; और फ़रिश्ते भी गवाही देते हैं; अगरचे अल्लाह गवाह की हैसियत से ख़ुद काफ़ी है।

167. यक़ीनन जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और अल्लाह के रास्ते से रोका, वो तो भटक कर दूर जा पड़े हैं।

168. जिन लोगों ने कुफ़्र व इनकार किया, और ज़ुल्म पर उतर आए उन्हें अल्लाह हरगिज़ न बख़्शेगा, और न उन्हें कोई (सुकूनबख़्श) रास्ता दिखाएगा।

169. सिवाय जहन्नम के रास्ते के, जिसमें वो हमेशा पड़े रहेंगे; और यह अल्लाह के लिए बहुत ही आसान बात है।

170. ऐ लोगो! रसूल तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ लेकर आ गया है, पस तुम मानो उस भलाई को जो तुम्हारे लिए फ़राहम की गई है। और अगर तुम इनकार करते हो, तो आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह तो फिर भी अल्लाह ही का रहेगा;

वल्मुक़ीमीनस्सला-त वल्मुअ्तूनज़्ज़का-त वल्मुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, उलाइ-क सनुअ्तीहिम् अज्रन् अज़ीमा (162) ●

इन्ना औहैना इलै-क कमा औहैना इला नूहिंव्वन्नबिय्यी-न मिम्-बअ्दिही व औहैना इला इब्राही-म व इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब वल्अस्बाति व अ़ीसा व अय्यू-ब व यूनु-स व हारू-न व सुलैमा-न व आतैना दावू-द ज़बूरा (163)

व रुसुलन् क़द् क़सस्नाहुम् अ़लै-क मिन् क़ब्लु व रुसुलल्लम नक़्सुस्हुम् अ़लै-क, व कल्लमल्लाहु मूसा तक्लीमा (164)

रुसुलम् मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न लिअल्ला यकू-न लिन्नासि अ़लल्लाहि हुज्जतुम्-बअ्दर्रुसुलि, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा (165)

लाकिनिल्लाहु यश्हदु बिमा अन्ज़-ल इलै-क अन्ज़-लहू बिअ़िल्मिही वल्मलाइ-कतु यश्हदू-न व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा (166)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि क़द् ज़ल्लू ज़लालम् बअ़ीदा (167)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व ज़-लमू लम् यकुनिल्लाहु लियग़्फ़ि-र लहुम् व ला लियह्दि-यहुम् तरीक़ा (168)

इल्ला तरी-क़ जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा (169)

या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुमुर्रसूलु बिल्हक़्क़ि मिर्रब्बिकुम् फ़आमिनू ख़ैरल्लकुम्, व इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति

وَالْمُقِيْمِيْنَ الصَّلٰوةَ وَالْمُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ؕ
ع اُولٰٓئِكَ سَنُؤْتِيْهِمْ اَجْرًا عَظِيْمًا (١٦٢)
اِنَّآ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ كَمَآ اَوْحَيْنَآ اِلٰى
نُوْحٍ وَّالنَّبِيّٖنَ مِنْۢ بَعْدِهٖ ۚ وَاَوْحَيْنَآ
اِلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ وَالْاَسْبَاطِ وَعِيْسٰى وَاَيُّوْبَ
وَيُوْنُسَ وَهٰرُوْنَ وَسُلَيْمٰنَ ۚ وَاٰتَيْنَا
دَاوٗدَ زَبُوْرًا ۚ (١٦٣)
وَرُسُلًا قَدْ قَصَصْنٰهُمْ عَلَيْكَ
مِنْ قَبْلُ وَرُسُلًا لَّمْ نَقْصُصْهُمْ عَلَيْكَ ؕ
وَكَلَّمَ اللّٰهُ مُوْسٰى تَكْلِيْمًا ۚ (١٦٤)
رُسُلًا مُّبَشِّرِيْنَ وَمُنْذِرِيْنَ لِئَلَّا
يَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌ ۢ بَعْدَ
الرُّسُلِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا (١٦٥)
لٰكِنِ اللّٰهُ يَشْهَدُ بِمَآ اَنْزَلَ اِلَيْكَ
اَنْزَلَهٗ بِعِلْمِهٖ ۚ وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَشْهَدُوْنَ ؕ
وَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ؕ (١٦٦)
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ قَدْ ضَلُّوْا ضَلٰلًا ۢ بَعِيْدًا (١٦٧)
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَظَلَمُوْا لَمْ يَكُنِ
اللّٰهُ لِيَغْفِرَ لَهُمْ وَلَا لِيَهْدِيَهُمْ طَرِيْقًا ۙ (١٦٨)
اِلَّا طَرِيْقَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ
وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا (١٦٩)
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الرَّسُوْلُ
بِالْحَقِّ مِنْ رَّبِّكُمْ فَاٰمِنُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ؕ
وَاِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ

और अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, हिकमतवाला है।

171. ऐ अहले किताब, अपने दीन में हद से न गुज़रो और अल्लाह से मंसूब करके हक़ के सिवा और कुछ न कहो। मसीह, ईसा इब्ने मरयम इसके सिवा और कुछ नहीं कि अल्लाह का एक रसूल और उसका एक कलिमा है जिसे उसने मरयम की तरफ़ डाल दिया, और उसकी तरफ़ से एक रूह है। पस तुम अल्लाह पर और उसके रसूलों पर ईमान लाओ और "तीन" न कहो — बाज़ आ जाओ यही तुम्हारे लिए बेहतर होगा — अल्लाह तो सिर्फ़ अकेला माबूद है। उसकी शान के ख़िलाफ़ है कि उसका कोई बेटा हो! उसी का है जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है; और कारसाज़ की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है।

172. मसीह को अल्लाह का बन्दा होने से हरगिज़ आर (शर्म) नहीं, और न मुक़र्रब फ़रिश्तों ही को आर है। जो कोई उसकी बन्दगी को अपने लिए नंग (शर्म) समझेगा और तकब्बुर करेगा तो उन सभी लोगों को वह अपने पास जमा करके रहेगा।

173. पस जो ईमान लाए, और उन्होंने नेक आमाल इख़्तियार किए, तो उन्हें वह उनके पूरे अजर देगा, और अपने फ़ज़्ल से उन्हें मज़ीद अता फ़रमाएगा; और जिन लोगों ने आर समझा और तकब्बुर किया, तो उन्हें वह दर्दनाक अज़ाब देगा, और वे अल्लाह से बच सकने के लिए न अपना कोई क़रीबी हिमायती पाएंगे और न मददगार।

174. ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से खुली दलील पहुंच चुकी है; और हमने तुम्हारी तरफ़ एक वाज़ेह रौशनी नाज़िल की है।

175. तो जो लोग अल्लाह पर ईमान लाए, और उसे वो मज़बूती से पकड़े रहे, उन्हें वह जल्द ही अपनी रहमत और फ़ज़्ल में दाख़िल करेगा, और उन्हें अपनी तरफ़ का सीधा रास्ता [illegible] देगा।

176. वो तुमसे फ़तवा पूछते हैं। [illegible], "अल्लाह तुम्हें ऐसे शख़्स के

वलअर्ज़ि, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा (170)

या अह्लल्-किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् व ला तक़ूलू अ़लल्लाहि इल्लल्-हक़्-क़, इन्नमल्-मसीहु ओ़ीसब्नु मर्य-म रसूलुल्लाहि व कलि-मतुहू अल्क़ाहा इला मर्य-म व रूहुम्-मिन्हु फ़आमिनू बिल्लाहि व रूसुलिही, व ला तक़ूलू सलासतुन, इन्तहू ख़ैरल्लकुम, इन्नमल्लाहु इलाहुंव्वाहिदुन्, सुब्हानहू अंय्यकू-न लहू व-लदुन् ● लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (171) ●

लंय्यस्तन्किफ़ल्-मसीहु अंय्यकू-न अ़ब्दल्-लिल्लाहि व लल्मला-इ-कतुल् मुक़र्रबू-न, व मंय्यस्तन्किफ़् अ़न् अ़िबादतिही व यस्तक्बिर् फ़-सयह्शुरूहुम् इलैहि जमीअ़ा (172)

फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति फ़-युवफ़्फ़ीहिम् उजूरहुम् व यज़ीदुहुम् मिन् फ़ज़्लिही व अम्मल्लज़ीनस्-तनकफ़ू वस्तक्बरू फ़-युअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा व ला यजिदू-न लहुम मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा (173)

या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुम् बुर्हानुम् मिर्रब्बिकुम् व अन्ज़ल्ना इलैकुम् नूरम् मुबीना (174)

फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि वअ़्त-समू बिही फ़-सयुद्ख़िलुहुम् फ़ी रह्मतिम् मिन्हु व फ़ज़्लिंव्-व यह्दीहिम् इलैहि सिरातम् मुस्तक़ीमा (175)

यस्तफ़्तून-क, क़ुलिल्लाहु युफ़्तीकुम्

وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا (١٧٠)
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ
وَلَا تَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ ۭ اِنَّمَا
الْمَسِيْحُ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ
وَكَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰىهَآ اِلٰى مَرْيَمَ وَرُوْحٌ
مِّنْهُ ۡ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ۣ وَلَا
تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ۭ اِنْتَهُوْا خَيْرًا لَّكُمْ ۭ
اِنَّمَا اللّٰهُ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۭ سُبْحٰنَهٗٓ اَنْ
يَّكُوْنَ لَهٗ وَلَدٌ ۘ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا (١٧١)
لَنْ يَّسْتَنْكِفَ الْمَسِيْحُ اَنْ يَّكُوْنَ
عَبْدًا لِّلّٰهِ وَلَا الْمَلٰۗىِٕكَةُ الْمُقَرَّبُوْنَ ۭ
وَمَنْ يَّسْتَنْكِفْ عَنْ عِبَادَتِهٖ
وَيَسْتَكْبِرْ فَسَيَحْشُرُهُمْ اِلَيْهِ جَمِيْعًا (١٧٢)
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَيُوَفِّيْهِمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدُهُمْ
مِّنْ فَضْلِهٖ ۚ وَاَمَّا الَّذِيْنَ اسْتَنْكَفُوْا
وَاسْتَكْبَرُوْا فَيُعَذِّبُهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ڏ
وَّلَا يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا (١٧٣)
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَاۗءَكُمْ بُرْهَانٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكُمْ نُوْرًا
مُّبِيْنًا (١٧٤)
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَاعْتَصَمُوْا بِهٖ
فَسَيُدْخِلُهُمْ فِيْ رَحْمَةٍ مِّنْهُ وَفَضْلٍ ۙ
وَّيَهْدِيْهِمْ اِلَيْهِ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا (١٧٥)
يَسْتَفْتُوْنَكَ ۭ قُلِ اللّٰهُ يُفْتِيْكُمْ فِي

الْكَلٰلَةِ ؕ اِنِ امْرُؤٌا هَلَكَ لَيْسَ لَهٗ وَلَدٌ وَّلَهٗۤ اُخْتٌ فَلَهَا نِصْفُ مَا تَرَكَ ۚ وَهُوَ يَرِثُهَاۤ اِنْ لَّمْ يَكُنْ لَّهَا وَلَدٌ ؕ فَاِنْ كَانَتَا اثْنَتَيْنِ فَلَهُمَا الثُّلُثٰنِ مِمَّا تَرَكَ ؕ وَاِنْ كَانُوْۤا اِخْوَةً رِّجَالًا وَّنِسَآءً فَلِلذَّكَرِ مِثْلُ حَظِّ الْاُنْثَيَيْنِ ؕ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اَنْ تَضِلُّوْا ؕ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝

سُوْرَةُ الْمَآئِدَةِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٢٠ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَوْفُوْا بِالْعُقُوْدِ ؕ اُحِلَّتْ لَكُمْ بَهِيْمَةُ الْاَنْعَامِ اِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ غَيْرَ مُحِلِّى الصَّيْدِ وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ مَا يُرِيْدُ ۝١

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحِلُّوْا شَعَآئِرَ اللّٰهِ وَلَا الشَّهْرَ الْحَرَامَ وَلَا الْهَدْيَ وَلَا الْقَلَآئِدَ وَلَاۤ اٰمِّيْنَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنْ رَّبِّهِمْ وَرِضْوَانًا ؕ وَاِذَا حَلَلْتُمْ فَاصْطَادُوْا ؕ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ شَنَاٰنُ قَوْمٍ اَنْ صَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اَنْ تَعْتَدُوْا ۘ وَتَعَاوَنُوْا عَلَى الْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ۪ وَلَا تَعَاوَنُوْا عَلَى الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٢

फ़िल्-कलालति, इनिम्रूउन् ह-ल-क लै-स लहू व लदुंव्-व लहू उख़्तुन् फ़-लहा निस्फ़ु मा त-र-क व हु-व यरिसुहा इल्लम् यकुल्लहा व-लदुन्, फ़-इन् का-नतस्नतैनि फ़-लहुमस्-सुलुसानि मिम्मा त-र-क, व इन् कानू इख़्वतर्रिजालंव्-व निसाअन् फ़-लिज़्ज़-करि मिस्लु हज़्ज़िल् उन्सयैनि, युबय्यिनुल्लाहु लकुम् अन् तज़िल्लू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (176) ●

5 सूरतुल्माइ-दति 112
(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 13464 अक्षर, 2842 शब्द, 120 आयतें और 16 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू औफ़ू बिल्-उ़क़ूदि, उहिल्लत् लकुम् बहीमतुल्-अन्आमि इल्ला मा युत्ला अ़लैकुम् ग़ै-र मुहिल्लिस्-सैदि व अन्तुम् हुरुमुन्, इन्नल्लाह-ह यह्कुमु मा युरीद (1)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुहिल्लू शआ़-इरल्लाहि व लश्शह्रल्-हरा-म व लल्-हद्-य व लल्क़लाइ-द व ला आम्मीनल् बैतल्-हरा-म यब्तग़ू-न फ़ज़्लम् मिर्रब्बिहिम् व रिज़्वानन्, व इज़ा हलल्तुम् फ़स्तादू व ला यज्रिमन्नकुम् श-नआनु क़ौमिन् अन् सद्दूकुम् अ़निल् मस्जिदिल्-हरामि अन् तअ़्तदू ● व तआ़वनू अ़लल्-बिर्रि वत्तक़्वा व ला तआ़वनू अ़लल्-इस्मि वल्-उ़द्वानि वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब ● (2)

बारे में फ़तवा देता है जिसके बराहे रास्त वारिस न हों। अगर कोई मर्द मर जाए जिसके औलाद न हो, लेकिन उसके एक बहन हो, तो जो कुछ उसने छोड़ा है उसका आधा हिस्सा उसका होगा, और वह उस बहन का वारिस होगा अगर उसके कोई औलाद न हो। अगर दो बहनें हों, तो जो कुछ उसने छोड़ा है उसमें उनके लिए दो तिहाई होगा; और अगर कई भाई-बहन हैं, तो एक मर्द का हिस्सा दो औरतों के बराबर होगा।

अल्लाह तुम्हारे लिए वज़ाहत फ़रमाता है कि मबादा तुम गुमराही में पड़ जाओ, और अल्लाह को हर चीज़ का पूरा इल्म है।

सूरह अल-माइदा मदनी

(आयतें 120 - रुकूआत 16)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, बन्दिशों और मुआहदों की पूरी पाबन्दी करो। तुम्हारे लिए चौपाये यानी मवेशी हलाल किए गए, सिवाय उनके जो तुम्हें बताए जा रहे हैं, मगर जब तुम एहराम की हालत में हो तो शिकार को जायज़ न समझना। बेशक अल्लाह जो चाहता है हुक्म देता है।

2. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह के नाम लगी चीज़ों की बेहुरमती न करो न हराम महीनों की, न क़ुरबानी के जानवरों की, और न उनकी जिनकी गर्दनों में पट्टे पड़े हों, और न उन लोगों की जो अपने रब के फ़ज़्ल और उसकी रिज़ा की तलाश में मकाने मुहतरम को जाते हों। और जब एहराम की हालत से बाहर हो जाओ तो शिकार करो। और ऐसा न हो कि एक क़ौम की दुश्मनी, कि उन्होंने तुम्हें मस्जिदे हराम से रोका था, तुम्हें इस बात पर उभारे कि तुम ज़्यादती करने लगो। हक़ के अदा करने और तक़्वा में तुम एक-दूसरे से तआवुन करो; अलबत्ता हक़तलफ़ी और ज़्यादती के काम में एक-दूसरे से तआवुन न करना। अल्लाह का डर रखो; यक़ीनन अल्लाह सज़ा देने में निहायत सख़्त है।

3. तुमपर हराम किया गया मुरदार, खून, सुअर का गोश्त, और वह जानवर जिसपर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो, और जो घुट कर, जो चोट खाकर, जो ऊंचाई से गिरकर और जो सींग लगने से मरा हो और जिसे किसी दरिन्दे ने फाड़ खाया हो — बजुज़ उसके जिसे तुमने ज़बह कर लिया हो — और जो किसी थान पर ज़बह किया गया हो, और यह भी कि तीरों के ज़रिए से क़िसमत मालूम करो; यह फ़िस्क़ है — आज तुम्हारे दीन की तरफ़ से काफ़िरों की आस टूट गई, तो तुम उनसे न डरो, बल्कि मुझी से डरो। आज मैंने तुम्हारे लिए तुम्हारे दीन को मुकम्मल कर दिया, और तुमपर अपनी नेमत पूरी कर दी और मैंने तुम्हारे लिए बहैसियते दीन इस्लाम को पसन्द किया — तो जो कोई भूक में मजबूर हो जाए लेकिन गुनाह की तरफ़ उसका झुकाव न हो, तो अल्लाह भी बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला है।

4. तुमसे पूछते हैं कि "उनके लिए क्या हलाल है"। कह दो, "तुम्हारे लिए सारी अच्छी पाक चीज़ें हलाल हैं; और जिन शिकारी जानवरों को तुमने सधे हुए शिकारी जानवर की शक्ल में सधा रखा हो, जिनको जैसा कि तुम्हें खुदा ने सिखाया है, सिखाते हो, वो जिसको तुम्हारे लिए पकड़ रखें, उसे खाओ, और उसपर अल्लाह का नाम लो, अल्लाह से डरते रहो; यक़ीनन अल्लाह तो जल्द हिसाब लेनेवाला है।"

5. आज तुम्हारे लिए अच्छी पाक चीज़ें हलाल कर दी गईं, और अहले किताब का खाना भी तुम्हारे लिए हलाल है। और तुम्हारा खाना उनके लिए हलाल है। इसी तरह शरीफ़ व आज़ाद मोमिन औरतें भी, और शरीफ़ व आज़ाद वो औरतें भी जो तुमसे पहले के अहले किताब में से हों जबकि तुम उन्हें उनका हक़ अदा कर दो। हाल यह हो कि तुम पारसा (परहेज़गार) हो, बदकारी करनेवाले न हो, और न चोरी-छुपे याराना करने वाले।

हुर्रिमत् अ़लैकुमुल्मैततु वद्दमु व लह्मुल्-ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही वल्मुन्ख़नि-क़तु वल्मौकूज़तु वल्मु-तरद्दियतु वन्नती-हतु व मा अ-कलस्सबुअु इल्ला मा ज़क्कैतुम्, व मा ज़ुबि-ह अ़लन्नुसुबि व अन् तस्तक़्सिमू बिल्अज़्लामि, ज़ालिकुम् फ़िस्कुन्, अल्यौ-म य-इसल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् दीनिकुम् फ़ला तख़्शौहुम् वख़्शौनि, अल्यौ-म अक्मल्तु लकुम् दीनकुम् व अत्मम्तु अ़लैकुम् निअ्मती व रज़ीतु लकुमुल्-इस्ला-म दीनन्, फ़-मनिज़्तुर्-र फ़ी मख़्म-सतिन् ग़ै-र मु-तजानिफ़िल्-लिइस्मिन् फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (3) यस्अलून-क माज़ा उहिल्-ल लहुम् कुल् उहिल्-ल लकुमुत्तय्यिबातु व मा अ़ल्लम्तुम् मिनल्-जवारिहि मुकल्लिबी-न तुअ़ल्लिमूनहुन्-न मिम्मा अ़ल्ल-मकुमुल्लाहु फ़कुलू मिम्मा अम्-सक्-न अ़लैकुम् वज़्कुरूस्मल्लाहि अ़लैहि वत्तकुल्ला-ह इन्नल्ला-ह सरीअुल्-हिसाब (4) अल्यौ-म उहिल्-ल लकुमुत्तय्यिबातु, व तआमुल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब हिल्लुल्लकुम् व तआमुकुम् हिल्लुल्लहुम् वल्मुह्सनातु मिनल्-मुअ्मिनाति वल्मुह्सनातु मिनल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् इज़ा आतैतुमूहुन्-न उजूरहुन्-न मुह्सिनी-न ग़ै-र मुसाफ़िही-न व ला मुत्तख़िज़ी अख़्दानिन्,

حُرِّمَتْ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةُ وَالدَّمُ وَلَحْمُ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ اللّٰهِ بِهٖ وَالْمُنْخَنِقَةُ وَالْمَوْقُوْذَةُ وَالْمُتَرَدِّيَةُ وَالنَّطِيْحَةُ وَمَآ اَكَلَ السَّبُعُ اِلَّا مَا ذَكَّيْتُمْ ۟ وَمَا ذُبِحَ عَلَى النُّصُبِ وَاَنْ تَسْتَقْسِمُوْا بِالْاَزْلَامِ ؕ ذٰلِكُمْ فِسْقٌ ؕ اَلْيَوْمَ يَئِسَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ دِيْنِكُمْ فَلَا تَخْشَوْهُمْ وَاخْشَوْنِ ؕ اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَاَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ وَرَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا ؕ فَمَنِ اضْطُرَّ فِيْ مَخْمَصَةٍ غَيْرَ مُتَجَانِفٍ لِّاِثْمٍ ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٣

يَسْـَٔلُوْنَكَ مَاذَآ اُحِلَّ لَهُمْ ؕ قُلْ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ۙ وَمَا عَلَّمْتُمْ مِّنَ الْجَوَارِحِ مُكَلِّبِيْنَ تُعَلِّمُوْنَهُنَّ مِمَّا عَلَّمَكُمُ اللّٰهُ فَكُلُوْا مِمَّآ اَمْسَكْنَ عَلَيْكُمْ وَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهِ ۪ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝٤

اَلْيَوْمَ اُحِلَّ لَكُمُ الطَّيِّبٰتُ ؕ وَطَعَامُ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ حِلٌّ لَّكُمْ ۪ وَطَعَامُكُمْ حِلٌّ لَّهُمْ ۫ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الْمُؤْمِنٰتِ وَالْمُحْصَنٰتُ مِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ اُجُوْرَهُنَّ مُحْصِنِيْنَ غَيْرَ مُسٰفِحِيْنَ وَلَا مُتَّخِذِيْٓ اَخْدَانٍ ؕ

और जिस किसी ने ईमान की रविश इख़्तियार करने से इनकार किया, उसका सारा किया-धरा अकारत गया और वह आख़िरत में भी ख़सारे में रहेगा।

6. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जब तुम नमाज़ के लिए उठो तो अपने चेहरों को और हाथों को कुहनियों तक धो लिया करो, और अपने सरों पर हाथ फेर लो, और अपने पैरों को भी टख़नों तक धो लो। और अगर जनाबत की हालत में हो तो अच्छी तरह पाक हो लो। लेकिन अगर बीमार हो या सफ़र में हो, या तुममें कोई जाए ज़रूरत (बैतुलख़ला) होकर आया हो, या तुमने औरतों को हाथ लगाया हो, फिर पानी न पाओ, तो पाक मिट्टी से तयम्मुम कर लो, इस तरह कि उससे अपने चेहरों और हाथों पर मसह कर लो। अल्लाह तुम्हें किसी तंगी में डालना नहीं चाहता, बल्कि वह चाहता है कि तुम्हें पाक करे, और तुमपर अपनी नेमत पूरी करे; ताकि तुम शुक्र करो।

7. और अल्लाह की उस नवाज़िश को याद करो जो तुमपर हुई, और उसके उस अह्द को भी जो उसने तुमसे किया है जबकि तुमने कहा था, "हमने सुना और माना" और अल्लाह का डर रखो; अल्लाह जो कुछ सीनों में है उसे भी जानता है।

8. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह के लिए गवाह होकर इनसाफ़ की बख़ूबी हिफ़ाज़त करनेवाले बनो। ऐसा न हो कि किसी क़ौम की दुश्मनी तुम्हें इस बात पर उभारे कि तुम इनसाफ़ करना छोड़ दो; इनसाफ़ करो, यही तक़वा से ज़्यादा क़रीब है। अल्लाह का डर रखो; यक़ीनन अल्लाह को जो कुछ भी तुम करते हो उसकी ख़बर रहती है।

9. जो लोग ईमान लाए, और नेक आमाल इख़्तियार किए; उनसे अल्लाह का वादा है कि उनके लिए मग़फ़िरत और बड़ा अजर है।

10. रहे वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, और हमारी आयतों को झुठलाया वही भड़कती आग में पड़नेवाले हैं।

11. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह की उस नवाज़िश को याद

व मंय्यक्फ़ुर बिल्ईमानि फ़-क़द् हबि-त अ़-मलुहू व हु-व फ़िल्-आख़ि-रति मिनल्-ख़ासिरीन (5) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा क़ुम्तुम् इलस्सलाति फ़ग्सिलू वुजूहकुम् व ऐदि-यकुम् इलल्-मराफ़िक़ि वम्सहू बिरूऊसिकुम् व अर्जु-लकुम् इलल्कअ़्बैनि, व इन् कुन्तुम् जुनुबन् फ़त्तह्हरू, व इन् कुन्तुम् मर्ज़ा औ अ़ला स-फ़रिन् औ जा-अ अ-हदुम् मिन्कुम् मिनल्ग़ाइति औ लामस्तुमुन्निसा-अ फ़-लम् तजिदू माअन् फ़-तयम्म-मू सअ़ीदन् तय्यिबन् फ़म्सहू बिवुजूहिकुम् व ऐदीकुम् मिन्हु, मा युरीदुल्लाहु लि-यज्अ़-ल अ़लैकुम् मिन् ह-रजिंव्-व लाकिंय्युरीदु लियुतह्हि-रकुम् व लियुतिम्-म निअ़्म-तहू अ़लैकुम् लअ़ल्लकुम तश्कुरून (6)

वज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि अ़लैकुम् व मीसाक़हुल्लज़ी वास-क़कुम् बिही इज़् क़ुल्तुम् समिअ़्ना व अतअ़्ना वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर (7)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू क़व्वामी-न लिल्लाहि शु-हदा-अ बिल्क़िस्ति व ला यज्रिमन्नकुम् श-नआनु क़ौमिन् अ़ला अल्ला तअ़्दिलू इअ़्दिलू, हु-व अक़्रबु लित्तक़्वा वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून (8)

व-अ़दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् अ़ज़ीम (9)

वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम (10)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि

وَمَنْ يَّكْفُرْ بِالْاِيْمَانِ فَقَدْ حَبِطَ عَمَلُهٗ ۫
ع وَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٥
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قُمْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ
فَاغْسِلُوْا وُجُوْهَكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ اِلَى الْمَرَافِقِ
وَامْسَحُوْا بِرُءُوْسِكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ اِلَى الْكَعْبَيْنِ ؕ
وَاِنْ كُنْتُمْ جُنُبًا فَاطَّهَّرُوْا ؕ وَاِنْ كُنْتُمْ مَّرْضٰۤى
اَوْ عَلٰى سَفَرٍ اَوْ جَآءَ اَحَدٌ مِّنْكُمْ مِّنَ
الْغَآئِطِ اَوْ لٰمَسْتُمُ النِّسَآءَ فَلَمْ
تَجِدُوْا مَآءً فَتَيَمَّمُوْا صَعِيْدًا طَيِّبًا
فَامْسَحُوْا بِوُجُوْهِكُمْ وَاَيْدِيْكُمْ مِّنْهُ ؕ
مَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيَجْعَلَ عَلَيْكُمْ مِّنْ حَرَجٍ
وَّلٰكِنْ يُّرِيْدُ لِيُطَهِّرَكُمْ وَلِيُتِمَّ
نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٦
وَاذْكُرُوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَمِيْثَاقَهُ
الَّذِيْ وَاثَقَكُمْ بِهٖۤ ۙ اِذْ قُلْتُمْ سَمِعْنَا
وَاَطَعْنَا ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كُوْنُوْا قَوّٰمِيْنَ
لِلّٰهِ شُهَدَآءَ بِالْقِسْطِ ۫ وَلَا يَجْرِمَنَّكُمْ
شَنَاٰنُ قَوْمٍ عَلٰۤى اَلَّا تَعْدِلُوْا ؕ اِعْدِلُوْا ۫
هُوَ اَقْرَبُ لِلتَّقْوٰى ۫ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٨
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ عَظِيْمٌ ۝٩
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝١٠
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ

करो जो तुमपर हुई है, जबकि कुछ लोगों ने तुमपर हाथ बढ़ाने का इरादा कर लिया था तो उनके हाथ उसने तुमसे रोक दिए; अल्लाह का डर रखो; और ईमानवालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए।

12. अल्लाह ने बनी इसराईल से अ़हद लिया था, और उनमें हमने बारह नक़ीब मुक़र्रर किए थे और अल्लाह ने कहा था, "मैं तुम्हारे साथ हूं, अगर तुमने नमाज़ क़ायम की, और ज़कात देते रहे, और मेरे रसूलों पर ईमान लाए और उनकी मदद की, और अल्लाह को अच्छा क़र्ज़ दिया, तो मैं ज़रूर तुम्हारी बदहालियां तुमसे दूर कर दूंगा, और लाज़िमन तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करूंगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। फिर इसके बाद जिसने तुममें से कुफ़्र किया, तो हक़ीक़त में वही ठीक रास्ते से भटक कर रहा"।

13. फिर उनके बार-बार अपने अ़हद को तोड़ देने की वजह से हमने उनपर लानत की और उनके दिलों को सख़्त कर दिया, वो लफ़्ज़ों को उनके मक़ामात से दूसरी तरफ़ फेर कर कुछ का कुछ कर देते हैं; और जिसके ज़रिए से उन्हें याददिहानी कराई गई थी उसका एक बड़ा हिस्सा वो भुला बैठे; और तुम्हें बजुज़ उनके थोड़े लोगों के उनकी किसी न किसी ख़ियानत का बराबर पता चलता रहेगा, पस उन्हें माफ़ करो, और उनसे दरगुज़र करो; यक़ीनन अल्लाह उन लोगों को पसन्द करता है जिनकी रविश एहसान की होती है।

14. और हमने उन लोगों से भी पुख़्ता मज़बूत अ़हद लिया था जिन्होंने कहा था कि "हम नसारा हैं"; लेकिन जिसके ज़रिए से उन्हें याददिहानी कराई गई थी वो उसके एक बड़े हिस्से को फ़रामोश कर बैठे। फिर हमने उनके दरमियान क़ियामत के दिन तक के लिए दुश्मनी और नफ़रत की आग भड़का दी; और अल्लाह जल्द उन्हें बता देगा जो कुछ वो करते रहे।

15. ऐ अहले किताब, तुम्हारे पास हमारा रसूल आ गया है, किताब की जो कुछ बातें तुम छुपाते थे उसमें बहुत सी बातें वह तुम्हारे सामने खोल रहा है, और बहुत सी बातों को नज़रअन्दाज़

अ़लैकुम् इज़् हम्-म क़ौमुन् अंय्यब्सुतू इलैकुम् ऐदि-यहुम् फ़-कफ़्-फ़ ऐदि-यहुम् अ़न्कुम् वत्तक़ुल्ला-ह, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मुअ्मिनून (11) ●

व ल-क़द् अ-ख़ज़ल्लाहु मीसा-क़ बनी इस्राई-ल व बअ़स्ना मिन्हुमुस्नै अ़-श-र नक़ीबन्, व क़ालल्लाहु इन्नी म-अ़कुम्, ल-इन् अक़म्तुमुस्सला-त व आतैतुमुज़्ज़का-त व आमन्तुम् बिरूसुली व अ़ज़्ज़र्तुमूहुम् व अक़्रज़्तुमुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनल् ल-उकफ़्फ़िरन्-न अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व ल-उद्ख़िलन्नकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारू फ़-मन् क-फ़-र बअ्-द ज़ालि-क मिन्कुम् फ़-क़द् ज़ल्-ल सवाअस्सबील (12)

फ़बिमा नक़्ज़िहिम मीसाक़हुम् लअ़न्नाहुम् व जअ़ल्ना क़ुलूबहुम् क़ासि-यतन् युहर्रिफ़ूनल्कलि-म अ़म्-मवाज़िअ़िही व नसू हज़्ज़म् मिम्मा ज़ुक्किरू बिही व ला तज़ालु तत्तलिअु अ़ला ख़ाइ-नतिम् मिन्हुम इल्ला क़लीलम् मिन्हुम् फ़अ्फ़ु अ़न्हुम् वस्फ़ह्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुह्सिनीन (13)

व मिनल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा अख़ज़्ना मीसाक़हुम् फ़-नसू हज़्ज़म् मिम्मा ज़ुक्किरू बिही फ़-अग़्रैना बैनहुमुल् अ़दा-व-त वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल्-क़ियामति, व सौ-फ़ युनब्बिउहुमुल्लाहु बिमा कानू यस्नअून (14)

या अह्लल्-किताबि क़द् जाअकुम् रसूलु युबय्यिनु लकुम् कसीरम्-मिम्मा कुन्तुम् तुख़्फ़ू-न मिनल्-किताबि व यअ्फ़ू अ़न् कसीरिन्, क़द्

عَلَيْكُمْ اِذْ هَمَّ قَوْمٌ اَنْ يَّبْسُطُوْٓا اِلَيْكُمْ
اَيْدِيَهُمْ فَكَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا
ع اللّٰهَ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١١
وَلَقَدْ اَخَذَ اللّٰهُ مِيْثَاقَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۚ
وَبَعَثْنَا مِنْهُمُ اثْنَيْ عَشَرَ نَقِيْبًا ؕ وَقَالَ
اللّٰهُ اِنِّيْ مَعَكُمْ ؕ لَئِنْ اَقَمْتُمُ الصَّلٰوةَ
وَاٰتَيْتُمُ الزَّكٰوةَ وَاٰمَنْتُمْ بِرُسُلِيْ
وَعَزَّرْتُمُوْهُمْ وَاَقْرَضْتُمُ اللّٰهَ قَرْضًا
حَسَنًا لَّاُكَفِّرَنَّ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ
وَلَاُدْخِلَنَّكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۚ فَمَنْ كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ مِنْكُمْ
فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِيْلِ ۝١٢
فَبِمَا نَقْضِهِمْ مِّيْثَاقَهُمْ لَعَنّٰهُمْ وَجَعَلْنَا
قُلُوْبَهُمْ قٰسِيَةً ۚ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ
مَّوَاضِعِهٖ ۙ وَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۚ
وَلَا تَزَالُ تَطَّلِعُ عَلٰى خَآئِنَةٍ
مِّنْهُمْ اِلَّا قَلِيْلًا مِّنْهُمْ فَاعْفُ
عَنْهُمْ وَاصْفَحْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٣
وَمِنَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّا نَصٰرٰٓى اَخَذْنَا
مِيْثَاقَهُمْ فَنَسُوْا حَظًّا مِّمَّا ذُكِّرُوْا بِهٖ ۪
فَاَغْرَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ
اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ وَسَوْفَ يُنَبِّئُهُمُ اللّٰهُ
بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ۝١٤
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا
يُبَيِّنُ لَكُمْ كَثِيْرًا مِّمَّا كُنْتُمْ تُخْفُوْنَ
مِنَ الْكِتٰبِ وَيَعْفُوْا عَنْ كَثِيْرٍ ؕ قَدْ

कर जाता है। अल्लाह की तरफ़ से तुम्हारे पास रोशनी, और एक वाज़ेह करनेवाली किताब आ चुकी है।

16. इसके ज़रिए से अल्लाह उस शख़्स को जो उसकी रिज़ा का पैरौ है, सलामती के रास्ते दिखाता है, और अपनी तौफ़ीक़ से ऐसे लोगों को तारीकियों से निकाल कर रोशनी में लाता है; और उन्हें सीधे रास्ते पर चलाता है।

17. वो तो कुफ़्र के मुरतकिब हो चुके जिन्होंने कहा, "अल्लाह तो वही मसीह इब्ने मरियम है!" कहो, "अल्लाह के आगे किसका कुछ बस चल सकता है अगर वह मसीह इब्ने मरयम को, और उसकी मां को, और उन सबको जो ज़मीन पर हैं हलाक करना चाहे"? आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दरमियान है उसपर बादशाही अल्लाह ही की है, वह जो चाहता है पैदा करता है। और अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत हासिल है।

18. यहूदी और नसारा कहते हैं कि "हम तो अल्लाह के बेटे और उसके चहीते हैं"। कहो "फिर वह तुम्हें तुम्हारे गुनाहों पर सज़ा क्यों देता है? बात यह नहीं है, बल्कि तुम भी उसकी मख़्लूक़ में से एक आम इंसान हो; वह जिसे चाहे बख़्श दे और जिसे चाहे सज़ा दे!" आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान है सब पर बादशाही अल्लाह ही की है; और जाना भी उसी की तरफ़ है।

19. ऐ अहले किताब, हमारा रसूल तुमसे बातें खोलकर बयान करता हुआ तुम्हारे पास ऐसे वक़्त आ गया है जबकि रसूलों का सिलसिला एक मुद्दत से रुक गया था कि मबादा तुम कहो कि हमारे पास कोई बशारत देने वाला, और ख़बरदार करने वाला आया ही नहीं"। तो अब तुम्हारे पास एक बशारत देने वाला और ख़बरदार करने वाला आ गया है; अल्लाह को तो हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत हासिल है।

20. और याद करो जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा था, "ऐ मेरे लोगो! अल्लाह की उस नवाज़िश को याद करो जो तुमपर रही है, जबकि उसने तुम में नबी मुक़र्रर किए, और तुम्हें बादशाह बनाया और तुम्हें वह कुछ दिया जो दुनिया में किसी को न दिया था।

21. ऐ मेरे लोगो! इस मुक़द्दस सरज़मीन में दाख़िल हो जाओ जो

जाअकुम् मिनल्लाहि नूरुंव्-व किताबुम् मुबीन (15)

यह्दी बिहिल्लाहु मनित्त-ब-अ रिज़्वानहू सुबुलस्सलामि व युख़्रिजुहुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि बि-इज़्निही व यह्दीहिम् इला सिरातिम् मुस्तक़ीम (16)

ल-क़द् क-फ़रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह हुवल्-मसीहुब्नु मर्य-म, क़ुल् फ़-मंय्यम्लिकु मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द अंय्युह्लिकल्-मसीहब्-न मर्य-म व उम्म-हू व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअन्, व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा, यख़्लुक़ु मा यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (17)

व क़ालतिल्-यहूदु वन्नसारा नह्नु अब्नाउल्लाहि व अहिब्बाउहू, क़ुल् फ़लि-म युअ़ज़्ज़िबुकुम् बिज़ुनूबिकुम्, बल् अन्तुम ब-शरुम् मिम्-मन् ख़-ल-क़, यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व इलैहिल्-मसीर (18)

या अह्लल्-किताबि क़द् जाअकुम् रसूलुना युबय्यिनु लकुम् अ़ला फ़त्रतिम् मिनर्रुसुलि अन् तक़ूलू मा जाअना मिम्-बशीरिंव्-व ला नज़ीरिन् फ़-क़द् जा-अकुम् बशीरुंव्-व नज़ीरुन्, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (19) ●

व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमिज़्कुरू निअ़्-मतल्लाहि अ़लैकुम् इज़् ज-अ़-ल फ़ीकुम् अम्बिया-अ व ज-अ़-लकुम् मुलूकंव्-व आताकुम् मा लम् युअ्ति अ-हदम् मिनल्-आ़लमीन (20)

या क़ौमिद्ख़ुलुल् अर्ज़ल् मुक़द्द-सतल्लती

جَآءَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ نُوْرٌ وَّكِتٰبٌ مُّبِيْنٌ ﴿١٥﴾
يَّهْدِيْ بِهِ اللّٰهُ مَنِ اتَّبَعَ رِضْوَانَهٗ
سُبُلَ السَّلٰمِ وَيُخْرِجُهُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى
النُّوْرِ بِاِذْنِهٖ وَيَهْدِيْهِمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿١٦﴾
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ
مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا اِنْ اَرَادَ اَنْ يُّهْلِكَ
الْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗ وَمَنْ فِى
الْاَرْضِ جَمِيْعًا ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؕ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٧﴾
وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ وَالنَّصٰرٰى نَحْنُ اَبْنٰٓؤُا
اللّٰهِ وَاَحِبَّآؤُهٗ ؕ قُلْ فَلِمَ يُعَذِّبُكُمْ
بِذُنُوْبِكُمْ ؕ بَلْ اَنْتُمْ بَشَرٌ مِّمَّنْ
خَلَقَ ؕ يَغْفِرُ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيُعَذِّبُ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ؗ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ﴿١٨﴾
يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ قَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلُنَا
يُبَيِّنُ لَكُمْ عَلٰى فَتْرَةٍ مِّنَ الرُّسُلِ
اَنْ تَقُوْلُوْا مَا جَآءَنَا مِنْۢ بَشِيْرٍ وَّلَا
نَذِيْرٍ ؗ فَقَدْ جَآءَكُمْ بَشِيْرٌ وَّنَذِيْرٌ ؕ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿١٩﴾
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ اذْكُرُوْا
نِعْمَةَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ جَعَلَ فِيْكُمْ
اَنْۢبِيَآءَ وَجَعَلَكُمْ مُّلُوْكًا ۖۗ وَّاٰتٰىكُمْ
مَّا لَمْ يُؤْتِ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٠﴾
يٰقَوْمِ ادْخُلُوا الْاَرْضَ الْمُقَدَّسَةَ

अल्लाह ने तुम्हारे लिए लिख दी है, और पीठ न फेरना वरना ख़सारे में पड़कर रहोगे।"

22. उन्होंने कहा, "ऐ मूसा, उसमें तो बड़े ज़बरदस्त लोग रहते हैं; हम तो वहां हरगिज़ नहीं जा सकते जब तक कि वो वहां से निकल नहीं जाते। हां अगर वो वहां से निकल जाएं तो हम ज़रूर दाख़िल हो जाएंगे।"

23. इन डरे हुए लोगों ही में से दो आदमियों ने जिनपर अल्लाह की नवाज़िश थी कहा, "उनके मुक़ाबले में दरवाज़े से घुस चलो, जब तुम उसमें दाख़िल हो जाओगे, तो तुम ही ग़ालिब होगे। अगर तुम मोमिन हो, तो अल्लाह पर भरोसा रखो।"

24. बोले, "ऐ मूसा, जब तक वो लोग वहां हैं हम तो हरगिज़ कभी वहां नहीं जा सकते। तो जाओ तुम और तुम्हारा रब, और दोनों लड़ो; हम तो यहीं बैठे रहेंगे"।

25. उसने कहा, "मेरे रब, मेरा ख़ुद अपने और अपने भाई के सिवा किसी पर इख़्तियार नहीं है। पस तू हमारे और उन नाफ़रमान लोगों के दरमियान अलाहिदगी कर दे"।

26. फ़रमाया, "अच्छा तो अब यह सरज़मीन चालीस साल के लिए उनपर हराम हुई, यह ज़मीन में मारे-मारे फिरेंगे; तो तुम उन नाफ़रमान लोगों पर ग़म न खाओ।"

27. और उन्हें आदम के दो बेटों का सच्चा हाल सुना दो, जबकि दोनों ने क़ुरबानी पेश की, तो उनमें से एक की क़बूल हुई, और दूसरे की क़बूल न हुई। उसने कहा, "मैं तुझे मार डालूंगा।" दूसरे ने कहा, "अल्लाह तो उन्हीं की क़बूल करता है जो मुत्तक़ी होते हैं।

28. अगर तुम मुझे क़त्ल करने को मेरी तरफ़ अपना हाथ बढ़ाओगे, तो मैं तुम्हें क़त्ल करने को तुम्हारी तरफ़ अपना हाथ बढ़ाने का नहीं, मैं तो अल्लाह से डरता हूं, जो सारे जहां का रब है।

क-तबल्लाहु लकुम् व ला तर्तद्दू अ़ला अद्बारिकुम् फ़-तन्क़लिबू ख़ासिरीन (21)

क़ालू या मूसा इन्-न फ़ीहा क़ौमन् जब्बारी-न व इन्ना लन् नद्ख़ु-लहा हत्ता यख़्रुजू मिन्हा फ़-इंय्यख़्रुजू मिन्हा फ़-इन्ना दाख़िलून (22)

क़ा-ल रजुलानि मिनल्लज़ी-न यख़ाफ़ू-न अन् अ़मल्लाहु अ़लैहिमद्ख़ुलू अ़लैहिमुल्बा-ब फ़-इज़ा दख़ल्तुमूहु फ़-इन्नकुम् ग़ालिबू-न, व अ़लल्लाहि फ़-तवक्कलू इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (23)

क़ालू या मूसा इन्ना लन् नद्ख़ु-लहा अ-बदम् मा दामू फ़ीहा फ़ज़्हब् अन्-त व रब्बु-क फ़क़ातिला इन्ना हाहुना क़ाअि़दून (24)

क़ा-ल रब्बि इन्नी ला अम्लिकु इल्ला नफ़्सी व अख़ी फ़फ़्रुक़् बैनना व बैनल् क़ौमिल् फ़ासिक़ीन (25)

क़ा-ल फ़-इन्नहा मुहर्र-मतुन् अ़लैहिम् अर्बअ़ी-न स-नतन् यतीहू-न फ़िल्अर्ज़ि, फ़ला तअ्-स अ़लल् क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन (26) ●

वत्लु अ़लैहिम् न-बअब्नै आद-म बिल्हक़्क़ि ● इज़् क़र्रबा क़ुर्बानन् फ़तुक़ुब्बि-ल मिन् अ-हदिहिमा व लम् यु-तक़ब्बल मिनल् आख़र क़ाल ल-अक़्तुलन्नक क़ाल इन्नमा यतक़ब्बलुल्लाहु मिनल मुत्तक़ीन ●(27)

ल-इम् बसत्-त इलय्-य य-द-क लितक़्तु-लनी मा अ-न बिबासितिंय् यदि-य इलै-क लिअक़्तु-ल-क इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह रब्बल्-आ़लमीन (28)

الَّتِي كَتَبَ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَرْتَدُّوا عَلَىٰ
أَدْبَارِكُمْ فَتَنْقَلِبُوا خٰسِرِينَ ۝٢١
قَالُوا يٰمُوسَىٰ إِنَّ فِيهَا قَوْمًا جَبَّارِينَ
وَإِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا حَتّٰى يَخْرُجُوا مِنْهَا ۚ
فَإِنْ يَخْرُجُوا مِنْهَا فَإِنَّا دٰخِلُونَ ۝٢٢
قَالَ رَجُلَانِ مِنَ الَّذِينَ يَخَافُونَ أَنْعَمَ
اللّٰهُ عَلَيْهِمَا ادْخُلُوا عَلَيْهِمُ الْبَابَ ۚ
فَإِذَا دَخَلْتُمُوهُ فَإِنَّكُمْ غٰلِبُونَ ۚ
وَعَلَى اللّٰهِ فَتَوَكَّلُوا إِنْ كُنْتُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝٢٣
قَالُوا يٰمُوسَىٰ إِنَّا لَنْ نَدْخُلَهَا أَبَدًا
مَا دَامُوا فِيهَا فَاذْهَبْ أَنْتَ وَرَبُّكَ
فَقَاتِلَا إِنَّا هٰهُنَا قٰعِدُونَ ۝٢٤
قَالَ رَبِّ إِنِّي لَا أَمْلِكُ إِلَّا نَفْسِي
وَأَخِي فَافْرُقْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ الْقَوْمِ
الْفٰسِقِينَ ۝٢٥
قَالَ فَإِنَّهَا مُحَرَّمَةٌ عَلَيْهِمْ أَرْبَعِينَ
سَنَةً يَتِيهُونَ فِي الْأَرْضِ ۚ فَلَا تَأْسَ
عَلَى الْقَوْمِ الْفٰسِقِينَ ۝٢٦
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَأَ ابْنَيْ آدَمَ بِالْحَقِّ ۘ
إِذْ قَرَّبَا قُرْبَانًا فَتُقُبِّلَ مِنْ أَحَدِهِمَا
وَلَمْ يُتَقَبَّلْ مِنَ الْآخَرِ ۖ قَالَ
لَأَقْتُلَنَّكَ ۖ قَالَ إِنَّمَا يَتَقَبَّلُ اللّٰهُ
مِنَ الْمُتَّقِينَ ۝٢٧
لَئِنْ بَسَطْتَ إِلَيَّ يَدَكَ لِتَقْتُلَنِي مَا
أَنَا بِبَاسِطٍ يَدِيَ إِلَيْكَ لِأَقْتُلَكَ ۚ
إِنِّي أَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِينَ ۝٢٨

29. मैं तो चाहता हूं कि मेरा गुनाह और अपना गुनाह तुमही अपने सर ले लो, फिर आग में पड़नेवाले हो जाओ, और वही ज़ालिमों का बदला है।"

30. आख़िर कार उसके नफ़्स ने उसे अपने भाई के क़त्ल पर आमादा कर दिया, तो उसने क़त्ल कर डाला, और ख़सारे में जा पड़ा।

31. तब अल्लाह ने एक कौआ भेजा, जो ज़मीन कुरेदता था कि उसे दिखा दे कि वह अपने भाई की लाश कैसे छुपाए। कहने लगा, "हाय! क्या मैं इस कौए जैसा भी न हो सका कि अपने भाई की लाश छुपा देता"? फिर वह पशेमान होकर रहा।

32. इसी वजह से हमने बनी इसराईल पर यह फ़रमान लिख दिया था कि जिसने किसी शख़्स को किसी के ख़ून का बदला लेने या ज़मीन में फ़साद बरपा करने के सिवा किसी और वजह से क़त्ल किया, तो गोया उसने सारे इंसानों को क़त्ल कर डाला; और जिसने उसे ज़िन्दगी बख़्शी, उसने गोया सारे इंसानों को ज़िन्दगी बख़्श दी। उनके पास हमारे रसूल खुली दलीलें ला चुके हैं; फिर भी उनमें से बहुत से लोग ज़मीन में ज़्यादतियां ही करते रहे।

33. जो लोग अल्लाह और उसके रसूल से लड़ते हैं, और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करने के लिए तगो दौ (दौड़-धूप) करते हैं, उनका सिला बस यही है कि बुरी तरह क़त्ल किए जाएं, या सूली पर चढ़ाए जाएं, या उनके हाथ और उनके पांव मुख़ालिफ़ सिमतों से काट डाले जाएं, या उन्हें मुल्क से निकाल दिया जाए। यह तो रुसवाई उनकी दुनिया की है, आख़िरत में तो उनके लिए बड़ा अज़ाब है,

34. सिवाय उन लोगों के जिन्होंने तुम्हारे हाथ पड़ने से पहले तौबा कर ली, तो ऐसी हालत में तुम्हें मालूम होना चाहिए कि अल्लाह बड़ा माफ़ करने वाला, निहायत मेहरबान है।

35. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह का डर रखो, उसके क़ुर्ब के

इन्नी उरीदु अन् तबू-अ बि-इस्मी व इस्मि-क फ़-तकू-न मिन् अस्हाबिन्नारि व ज़ालि-क जज़ाउज़्ज़ालिमीन (29)

फ़तव्व-अत् लहू नफ़्सुहू क़त्-ल अख़ीहि फ़-क़-त-लहू फ़-अस्ब-ह मिनल् ख़ासिरीन (30)

फ़-ब-अ़सल्लाहु ग़ुराबंय्यब्हसु फ़िल्अर्ज़ि लियुरि-यहू कै-फ़ युवारी सौअ-त अख़ीहि, क़ा-ल या वै-लता अ-अ़जज़्तु अन् अकू-न मिस्-ल हाज़ल्ग़ुराबि फ़-उवारि-य सौअ-त अख़ी फ़-अस्ब-ह मिनन्नादिमीन (31)

मिन् अज्लि ज़ालि-क कतब्ना अ़ला बनी इस्राई-ल अन्नहू मन् क़-त-ल नफ़्सम् बिग़ैरि नफ़्सिन् औ फ़सादिन् फ़िल्अर्ज़ि फ़-कअन्नमा क़-तलन्ना-स जमीअ़न् व मन् अह्याहा फ़-कअन्नमा अह्यन्ना-स जमीअ़न्, व ल-क़द् जाअत्हुम् रूसुलुना बिल्बय्यिनाति सुम्-म इन्-न कसीरम् मिन्हुम् बअ्-द ज़ालि-क फ़िल्अर्ज़ि ल-मुस्रिफ़ून (32)

इन्नमा जज़ा-उल्लज़ी-न युहारिबूनल्ला-ह व रसूलहू व यस्औ-न फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन् अंय्युक़त्तलू औ युसल्लबू औ तुक़त्त-अ़ ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम मिन् ख़िलाफ़िन् औ युन्फ़ौ मिनल्-अर्ज़ि, ज़ालि-क लहुम् ख़िज़्युन् फ़िद्दुन्या व लहुम् फ़िल्-आख़ि-रति अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (33)

इल्लल्लज़ी-न ताबू मिन् क़ब्लि अन् तक़्दिरू अ़लैहिम् फ़अ्लमू अन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (34) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह वब्तग़ू

إِنِّيٓ أُرِيدُ أَنۡ تَبُوٓأَ بِإِثۡمِي وَإِثۡمِكَ
فَتَكُونَ مِنۡ أَصۡحٰبِ النَّارِۚ وَذٰلِكَ
جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِينَ ٢٩
فَطَوَّعَتۡ لَهٗ نَفۡسُهٗ قَتۡلَ أَخِيهِ فَقَتَلَهٗ
فَأَصۡبَحَ مِنَ الۡخٰسِرِينَ ٣٠
فَبَعَثَ اللّٰهُ غُرَابًا يَبۡحَثُ فِي الۡأَرۡضِ
لِيُرِيَهٗ كَيۡفَ يُوَارِي سَوۡءَةَ أَخِيهِؕ
قَالَ يٰوَيۡلَتٰٓى أَعَجَزۡتُ أَنۡ أَكُونَ مِثۡلَ
هٰذَا الۡغُرَابِ فَأُوَارِيَ سَوۡءَةَ أَخِيۚ
فَأَصۡبَحَ مِنَ النّٰدِمِينَ ٣١
مِنۡ أَجۡلِ ذٰلِكَ ۛ كَتَبۡنَا عَلٰى بَنِيٓ
إِسۡرَآءِيلَ أَنَّهٗ مَنۡ قَتَلَ نَفۡسًا بِغَيۡرِ
نَفۡسٍ أَوۡ فَسَادٍ فِي الۡأَرۡضِ فَكَأَنَّمَا
قَتَلَ النَّاسَ جَمِيعًاؕ وَمَنۡ أَحۡيَاهَا
فَكَأَنَّمَآ أَحۡيَا النَّاسَ جَمِيعًاؕ وَلَقَدۡ
جَآءَتۡهُمۡ رُسُلُنَا بِالۡبَيِّنٰتِ ثُمَّ إِنَّ
كَثِيرًا مِّنۡهُمۡ بَعۡدَ ذٰلِكَ فِي
الۡأَرۡضِ لَمُسۡرِفُونَ ٣٢
إِنَّمَا جَزٰٓؤُا الَّذِينَ يُحَارِبُونَ اللّٰهَ
وَرَسُولَهٗ وَيَسۡعَوۡنَ فِي الۡأَرۡضِ فَسَادًا
أَنۡ يُقَتَّلُوٓا أَوۡ يُصَلَّبُوٓا أَوۡ تُقَطَّعَ أَيۡدِيهِمۡ
وَأَرۡجُلُهُمۡ مِّنۡ خِلَافٍ أَوۡ يُنۡفَوۡا
مِنَ الۡأَرۡضِؕ ذٰلِكَ لَهُمۡ خِزۡيٌ فِي الدُّنۡيَا
وَلَهُمۡ فِي الۡاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيمٌ ٣٣
إِلَّا الَّذِينَ تَابُوا مِنۡ قَبۡلِ أَنۡ تَقۡدِرُوا
عَلَيۡهِمۡۚ فَاعۡلَمُوٓا أَنَّ اللّٰهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ٣٤
يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَابۡتَغُوٓا

तालिब बनो, और उसकी राह में जिहाद करो, ताकि तुम्हें कामयाबी हासिल हो।

36. जिन लोगों ने कुफ़्र किया, अगर उनके पास जितना कुछ सारा ज़मीन में है सब हो, और उतना ही उसके साथ और भी हो कि वह क़ियामत के दिन के अज़ाब से बचने के लिए फ़िदया में उसे दें, तब भी उनका यह सब क़बूल न होगा; उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

37. वो चाहेंगे कि आग से निकल जाएं, मगर वो उससे न निकल सकेंगे, उनके लिए तो बरक़रार रहने वाला अज़ाब है।

38. और चोर मर्द और चोर औरत जो भी हो उनकी कमाई के बदले में अल्लाह की तरफ़ से एक इबरतनाक सज़ा के तौरपर उन दोनों ही के हाथ काटो। अल्लाह ग़ालिब, निहायत हिकमत वाला है।

39. फिर जो अपने ज़ुल्म के बाद तौबा कर ले, और अपनी इसलाह कर ले, यक़ीनन अल्लाह उसपर मेहरबान होगा; बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है।

40. क्या तुम नहीं जानते कि अल्लाह ही मालिक है आसमानों और ज़मीन की बादशाही का? वह जिसे चाहे अज़ाब दे, और जिसको चाहे बख़्श दे; अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

41. ऐ रसूल, जो लोग कुफ़्र इख़्तियार करने में जल्दी दिखाते हैं वो तुम्हारे लिए बाइसे रंज न हों, वो जिन्होंने अपने मुंह से कहा कि "हम ईमान ले आए," हालांकि दिल उनके ईमान नहीं लाए; और वो जो यहूदी हैं वो झूट के लिए कान लगाते हैं, और उन दूसरे लोगों की ख़ूब सुनते हैं, जो तुम्हारे पास नहीं आए, अल्फ़ाज़ को इसके बाद कि वह अपने मौक़े पर होते हैं बदल देते हैं, कहते हैं, "अगर तुम्हें यह मिले, तो उसे लेना; और अगर यह तुम्हें न मिले, तो बचना!" जिसे अल्लाह ही फ़ितना में डालना

इलैहिल् वसी-ल-त व जाहिदू फ़ी सबीलिही लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (35)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू लौ अन्-न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़ंव्-व मिस्लहू म-अ़हू लियफ़्तदू बिही मिन् अ़ज़ाबि यौमिल्-क़ियामति मा तुक़ुब्बि-ल मिन्हुम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (36)

युरीदू-न अंय्यख़्रुजू मिनन्नारि व मा हुम् बिख़ारिजी-न मिन्हा व लहुम् अ़ज़ाबुम् मुक़ीम (37)

वस्सारिक़ु वस्सारि-क़तु फ़क़्तअ़ू ऐदि-यहुमा जज़ाअम् बिमा क-सबा नकालम् मिनल्लाहि, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन हकीम (38)

फ़-मन् ता-ब मिम्-बअ़्दि ज़ुल्मिही व अस्ल-ह फ़-इन्नल्ला-ह यतूबु अ़लैहि, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (39)

अलम् तअ़्लम् अन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ व यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (40)

या अय्युहर्रसूलु ला यह्ज़ुनकल्लज़ी-न युसारिअ़ू-न फ़िल्कुफ़्रि मिनल्लज़ी-न क़ालू आमन्ना बिअफ़्वाहिहिम् व लम् तुअ़्मिन् क़ुलूबुहुम् व मिनल्लज़ी-न हादू सम्माअ़ू-न लिल्कज़िबि सम्माअ़ू-न लिक़ौमिन् आख़री-न लम् यअ़्तू-क, युहर्रिफ़ूनल्-कलि- म मिम्-बअ़्दि मवाज़िअ़िही यक़ूलू-न इन् ऊतीतुम् हाज़ा फ़ख़ुज़ूहु व इल्लम् तुअ़्तौहु फ़ह्ज़रू, व मंय्युरिदिल्लाहु

اِلَيْهِ الْوَسِيْلَةَ وَجَاهِدُوْا فِيْ سَبِيْلِهٖ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ (٣٥)
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ اَنَّ لَهُمْ مَّا
فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ
لِيَفْتَدُوْا بِهٖ مِنْ عَذَابِ يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ مَا تُقُبِّلَ مِنْهُمْ ۚ وَلَهُمْ
عَذَابٌ اَلِيْمٌ (٣٦)
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنَ النَّارِ وَمَا هُمْ
بِخٰرِجِيْنَ مِنْهَا ۘ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ (٣٧)
وَالسَّارِقُ وَالسَّارِقَةُ فَاقْطَعُوْٓا
اَيْدِيَهُمَا جَزَآءًۢ بِمَا كَسَبَا نَكَالًا
مِّنَ اللّٰهِ ۗ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ (٣٨)
فَمَنْ تَابَ مِنْۢ بَعْدِ ظُلْمِهٖ وَاَصْلَحَ
فَاِنَّ اللّٰهَ يَتُوْبُ عَلَيْهِ ۗ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٣٩)
اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَغْفِرُ
لِمَنْ يَّشَآءُ ۭ وَاللّٰهُ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (٤٠)
يٰٓاَيُّهَا الرَّسُوْلُ لَا يَحْزُنْكَ الَّذِيْنَ
يُسَارِعُوْنَ فِي الْكُفْرِ مِنَ الَّذِيْنَ
مع قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاَفْوَاهِهِمْ وَلَمْ تُؤْمِنْ
قُلُوْبُهُمْ ۛ وَمِنَ الَّذِيْنَ هَادُوْا ۛ
سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ سَمّٰعُوْنَ لِقَوْمٍ
اٰخَرِيْنَ ۙ لَمْ يَاْتُوْكَ ۭ يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ
مِنْۢ بَعْدِ مَوَاضِعِهٖ ۚ يَقُوْلُوْنَ اِنْ
اُوْتِيْتُمْ هٰذَا فَخُذُوْهُ وَاِنْ لَّمْ
تُؤْتَوْهُ فَاحْذَرُوْا ۭ وَمَنْ يُّرِدِ اللّٰهُ

فِتْنَتَهٗ فَلَنْ تَمْلِكَ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ؕ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَمْ يُرِدِ اللّٰهُ اَنْ يُّطَهِّرَ
قُلُوْبَهُمْ ؕ لَهُمْ فِى الدُّنْيَا خِزْىٌ ۚۖ
وَّلَهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ﴿٤١﴾
سَمّٰعُوْنَ لِلْكَذِبِ اَكّٰلُوْنَ لِلسُّحْتِ ؕ
فَاِنْ جَآءُوْكَ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ اَوْ اَعْرِضْ
عَنْهُمْ ۚ وَاِنْ تُعْرِضْ عَنْهُمْ فَلَنْ
يَّضُرُّوْكَ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ حَكَمْتَ فَاحْكُمْ
بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُقْسِطِيْنَ ﴿٤٢﴾
وَكَيْفَ يُحَكِّمُوْنَكَ وَعِنْدَهُمُ التَّوْرٰىةُ
فِيْهَا حُكْمُ اللّٰهِ ثُمَّ يَتَوَلَّوْنَ مِنْۢ بَعْدِ
ع ذٰلِكَ ؕ وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٣﴾
اِنَّاۤ اَنْزَلْنَا التَّوْرٰىةَ فِيْهَا هُدًى وَّنُوْرٌ ۚ
يَحْكُمُ بِهَا النَّبِيُّوْنَ الَّذِيْنَ اَسْلَمُوْا
لِلَّذِيْنَ هَادُوْا وَالرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ
بِمَا اسْتُحْفِظُوْا مِنْ كِتٰبِ اللّٰهِ وَكَانُوْا
عَلَيْهِ شُهَدَآءَ ۚ فَلَا تَخْشَوُا النَّاسَ
وَاخْشَوْنِ وَلَا تَشْتَرُوْا بِاٰيٰتِىْ ثَمَنًا
قَلِيْلًا ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٤﴾
وَكَتَبْنَا عَلَيْهِمْ فِيْهَاۤ اَنَّ النَّفْسَ
بِالنَّفْسِ ۙ وَالْعَيْنَ بِالْعَيْنِ وَالْاَنْفَ
بِالْاَنْفِ وَالْاُذُنَ بِالْاُذُنِ وَالسِّنَّ
بِالسِّنِّ ۙ وَالْجُرُوْحَ قِصَاصٌ ؕ فَمَنْ
تَصَدَّقَ بِهٖ فَهُوَ كَفَّارَةٌ لَّهٗ ؕ وَمَنْ لَّمْ
يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٥﴾

फ़ित्न-तहू फ़-लन् तम्लि-क लहू मिनल्लाहि शैअन्, उला-इकल्लज़ी-न लम् युरिदिल्लाहु अंय्युतह्हि-र कुलूबहुम्, लहुम् फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्-व लहुम् फ़िल्-आख़ि-रति अज़ाबुन् अज़ीम (41)

सम्माअू-न लिल्कज़िबि अक्कालू-न लिस्सुह्ति, फ़-इन् जाऊ-क फ़ह्कुम् बैनहुम् औ अअ्‌रिज़् अन्हुम् व इन् तुअ्‌रिज़् अन्हुम् फ़-लंय्यजुर्रू-क शैअन्, व इन् हकम्-त फ़ह्कुम् बैनहुम् बिल्क़िस्ति, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल् मुक़्सितीन (42)

व कै-फ़ युहक्किमू न-क व अिन्दहुमुत्तौरातु फ़ीहा हुक्मुल्लाहि सुम्-म य-तवल्लौ-न मिम्-बअ्‌दि ज़ालि-क, व मा उलाइ-क बिल्-मुअ्‌मिनीन (43) ●

इन्ना अन्ज़ल्नत्तौरा-त फ़ीहा हुदंव्-व नूरुन् यह्कुमु बिहन्नबिय्यूनल्लज़ी-न अस्लमू लिल्लज़ी-न हादू वर्रब्बानिय्यू-न वल्-अह्बारु बिमस्तुह्फ़िज़ू मिन् किताबिल्लाहि व कानू अलैहि शु-हदा-अ फ़ला तख़्शवुन्ना-स वख़्शौनि व ला तश्तरू बिआयाती स-मनन् क़लीलन्, व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़-उलाइ-क हुमुल्काफ़िरून (44)

व कतब्ना अलैहिम् फ़ीहा अन्नन्नफ़्-स बिन्नफ़्सि वल्औ-न बिल्औनि वल्अन्-फ़ बिल्अन्फ़ि वल्उज़ु-न बिल्-उज़ुनि वस्सिन्-न बिस्सिन्नि वल्-जुरू-ह क़िसासुन, फ़-मन् तसद्द-क़ बिही फ़हु-व कफ़्फ़ारतुल्लहू, व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (45)

चाहे, उसके लिए तो अल्लाह के यहां तुम्हारा कुछ भी बस नहीं चल सकता। वही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने पाक करना नहीं चाहा; उनके लिए दुनिया में भी रुसवाई है; और उनके लिए आख़िरत में भी बड़ा अज़ाब है;

42. वो झूट के लिए बहुत कान लगानेवाले, हराम के बड़े खानेवाले हैं। लिहाज़ा अगर वो तुम्हारे पास आएं, तो ख़्वाह तुम उनके दरमियान फ़ैसला कर दो, या उन्हें टाल जाओ; अगर तुम उन्हें टाल गए तो वो तुम्हारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते; लेकिन अगर फ़ैसला करो तो उनके दरमियान इनसाफ़ के साथ फ़ैसला करो; यक़ीनन अल्लाह इंसाफ़ करनेवालों को पसन्द करता है।

43. वो तुमसे फ़ैसला कराएंगे भी कैसे जबकि उनके पास तौरात है, जिसमें अल्लाह का हुक्म मौजूद है, फिर उसके बाद भी वो मुंह मोड़ते हैं? वो तो ईमान ही नहीं रखते।

44. बेशक हमने तौरात उतारी, जिसमें हिदायत और रौशनी थी; अंबिया जो फ़रमांबरदार थे उसको यहूदियों के लिए वाजिबुल अमल क़रार देते थे; और दरवेश और उलमा भी, इस किताबुल्लाह को जिसकी हिफ़ाज़त का उनको हुक्म था और जिसके वो निगरां थे। तुम लोगों से न डरो, बल्कि मुझी से डरो; और मेरी आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत लेने का मुआमला न करना। जो उसको वाजिबुल अमल क़रार न दे जो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया है, तो ऐसे ही लोग काफ़िर हैं।

45. और हमने उसमें उनके लिए लिख दिया था कि जान जान के बराबर है आंख आंख के बराबर है, नाक नाक के बराबर, कान कान के बराबर है, दांत दांत के बराबर; और सब ज़ख़्मों का इसी तरह बराबर का बदला है, तो जो कोई माफ़ कर दे, तो वह उसी के लिए कफ़्फ़ारा है। और जो उस चीज़ को वाजिबुल अमल क़रार न दे जिसे अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया है तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।

46. और पीछे उन्हीं के निशाने क़दम पर हमने ईसा इब्ने मरयम को भेजा, जो तौरात की जो उससे पेशतर से थी तसदीक़ करने वाला था; और हमने उसे इंजील दी जिसमें हिदायत और रोशनी थी, और वह तौरात की जो उससे पेशतर से थी तसदीक़ में थी; और वह डर रखनेवालों के लिए हिदायत और नसीहत थी।

47. पस अहले इंजील को चाहिए कि उसे वाजिबुल अमल क़रार दें जो अल्लाह ने उसमें नाज़िल फ़रमाया है और जो उसे वाजिबुल अमल क़रार न दे जो अल्लाह ने नाज़िल किया है, तो ऐसे ही लोग हैं जिन्हें पाबन्दियों का कोई पास व लिहाज़ नहीं।

48. और हमने तुम्हारी तरफ़ किताब हक़ के साथ नाज़िल की है, जो उस किताब की तसदीक़ में है जो उससे पेशतर की है, और उसे अपने में समोकर उसे अपनी हिफ़ाज़त में लिए हुए है। पस लोगों के दरमियान तुम उसके मुताबिक़ फ़ैसला करो जो अल्लाह ने नाज़िल किया है, और जो हक़ तुम्हारे पास आ चुका है, उसे छोड़ कर उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी न करना। हमने तुममें से हर एक के लिए एक शरीअत और एक रास्ता मुक़र्रर किया। अगर अल्लाह चाहता, तो तुम सब को एक उम्मत बना देता; लेकिन जो कुछ उसने तुम्हें दिया है उसमें वह तुम्हारी आज़माइश करनी चाहता है। पस भलाई के कामों में आगे बढ़ो; तुम सबको अल्लाह ही की तरफ़ लौटना है, फिर वह तुम्हें उससे आगाह कर देगा जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ करते रहे हो।

49. और यह कि तुम उनके दरमियान वही फ़ैसला करो जो अल्लाह ने नाज़िल किया है, और उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी न करना, और उनसे बचते रहो कि मबादा तुम्हें फ़रेब में डालकर उसके किसी हिस्से से मुनहरिफ़ न कर दें जो ख़ुदा ने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया है। फिर अगर वो मुंह मोड़ें, तो जान लो कि अल्लाह ही उनके कुछ गुनाहों की वजह से उन पर मुसीबत लाना चाहता है; यक़ीनन बहुत से लोग फ़ासिक़ ही हैं।

50. अब क्या ये जाहिलियत का फ़ैसला चाहते हैं? तो यक़ीन करनेवाले लोगों के लिए अल्लाह से बेहतर फ़ैसला करनेवाला कौन हो सकता है?

व क़फ़्फ़ैना 'अ़ला आसारिहिम् बिअ़ीसब्नि मर्‌य-म मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति व आतैनाहुल् इन्जी-ल फ़ीहि हुदंव्-व नूरुंव्-व मुसद्दिक़ल्-लिमा बै-न यदैहि मिनत्तौराति व हुदंव्-व मौअ़ि-ज़तल् लिल्मुत्तक़ीन (46)

वल्यह्कुम् अह्लुल्-इन्जीलि बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़ीहि व मल्लम् यह्कुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु फ़-उलाइ-क हुमुल् फ़ासिक़ून (47)

व अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि मिनल्-किताबि व मुहैमिनन् अ़लैहि फ़ह्कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु व ला तत्तबिअ् अह्वा-अहुम् अ़म्मा जाअ-क मिनल्-हक़्क़ि, लिकुल्लिन् जअ़ल्ना मिन्कुम् शिर्-अ़तंव्-व मिन्हाजन्, व लौ शाअल्लाहु ल-ज-अ़-लकुम् उम्मतंव्-वाहि-दतंव्-व लाकिल्लियब्लु-वकुम् फ़ी मा आताकुम् फ़स्तबिक़ुल्-ख़ैराति, इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (48)

व अनिह्कुम् बैनहुम् बिमा अन्ज़लल्लाहु व ला तत्तबिअ् अह्वा-अहुम् वह्ज़र्हुम् अंय्यफ़्तिनू-क अ़म्बअ्ज़ि मा अन्ज़लल्लाहु इलै-क, फ़-इन् तवल्लौ फ़अ्लम् अन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्युसीबहुम् बि-बअ्ज़ि ज़ुनूबिहिम्, व इन्-न कसीरम् मिनन्नासि लफ़ासिक़ून (49)

अ-फ़हुक्मल् जाहिलिय्यति यब्ग़ू-न, व मन् अह्सनु मिनल्लाहि हुक्मल् लिक़ौमिंय्यूक़िनून (50) ●

وَقَفَّيْنَا عَلٰۤى اٰثَارِهِمْ بِعِيْسَى ابْنِ
مَرْيَمَ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ
مِنَ التَّوْرٰىةِ ۪ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ
فِيْهِ هُدًى وَّنُوْرٌ ۙ وَّمُصَدِّقًا لِّمَا
بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَهُدًى
وَّمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٦
وَلْيَحْكُمْ اَهْلُ الْاِنْجِيْلِ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
فِيْهِ ؕ وَمَنْ لَّمْ يَحْكُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٤٧
وَاَنْزَلْنَاۤ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ مُصَدِّقًا
لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ مِنَ الْكِتٰبِ وَمُهَيْمِنًا
عَلَيْهِ فَاحْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ عَمَّا جَآءَكَ
مِنَ الْحَقِّ ؕ لِكُلٍّ جَعَلْنَا مِنْكُمْ شِرْعَةً
وَّمِنْهَاجًا ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَكُمْ
اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّلٰكِنْ لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ
مَاۤ اٰتٰىكُمْ فَاسْتَبِقُوا الْخَيْرٰتِ ؕ اِلَى
اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا
كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝٤٨ ۙ
وَاَنِ احْكُمْ بَيْنَهُمْ بِمَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَهُمْ وَاحْذَرْهُمْ اَنْ
يَّفْتِنُوْكَ عَنْ بَعْضِ مَاۤ اَنْزَلَ اللّٰهُ
اِلَيْكَ ؕ فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمْ اَنَّمَا يُرِيْدُ
اللّٰهُ اَنْ يُّصِيْبَهُمْ بِبَعْضِ ذُنُوْبِهِمْ ؕ
وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ لَفٰسِقُوْنَ ۝٤٩
اَفَحُكْمَ الْجَاهِلِيَّةِ يَبْغُوْنَ ؕ وَمَنْ
ع اَحْسَنُ مِنَ اللّٰهِ حُكْمًا لِّقَوْمٍ يُّوْقِنُوْنَ ۝٥٠

51. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम यहूदियों और ईसाइयों को दोस्त न बनाओ; वो (तुम्हारे ख़िलाफ़) आपस में एक-दूसरे के दोस्त हैं। जो कोई तुममें से उनको दोस्त बनाएगा तो वह उन्हीं में का है। अल्लाह तो उन लोगों को रास्ता नहीं दिखाता जो ज़ुल्म पेशा हैं।

52. तो तुम देखते हो कि जिन लोगों के दिलों में रोग है वो उनके यहां जाकर उनके दरमियान दौड़-धूप कर रहे हैं, कहते हैं कि "हमें अंदेशा है कि मबादा हमपर कोई गर्दिश आ पड़े।" तो हो सकता है कि जल्द ही अल्लाह फ़तह लाए, या उसकी तरफ़ से कोई और बात ज़ाहिर हो, फिर तो वो लोग जो कुछ अपने जी में छुपाए हुए हैं, उसपर पशेमान हो कर रहेंगे,

53. उस वक़्त मोमिनीन कहेंगे, "क्या ये वही लोग हैं जो अल्लाह की सख़्त क़समें खाकर यक़ीन दिलाते थे कि वो तुम्हारे साथ हैं? उनका किया-धरा वबाल-ए-जान साबित हुआ और वो घाटे में पड़कर रहे।"

54. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जो कोई तुममें से अपने दीन से फिरेगा, तो अल्लाह जल्द ही ऐसे लोगों को लाएगा जिनसे उसे मुहब्बत होगी, और जो उससे मुहब्बत करेंगे, वो मोमिनों के लिए नर्म और कुफ़्फ़ार के लिए सख़्त होंगे, अल्लाह के रास्ते में जान तोड़ कोशिश करेंगे, और किसी मलामत करने वाले की मलामत का उन्हें डर न होगा। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसे चाहता है अता फ़रमाता है; अल्लाह है बड़ा कुशादा दामन, सब कुछ जानने वाला।

55. तुम्हारे दोस्त तो सिर्फ़ अल्लाह, और उसका रसूल, और वो अहले ईमान हैं जो फ़िरोतनी के साथ नमाज़ क़ायम करते और ज़कात देते हैं।

56. अब जो कोई अल्लाह, और उसके रसूल, और मोमिनों को अपना दोस्त बनाए, तो यक़ीनन अल्लाह ही की जमाअत ग़ालिब रहने वाली है।

57. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुमसे पहले जिनको किताब मिली थी, जिन्होंने तुम्हारे दीन को मज़ाक़ और

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल् यहू-द वन्नसारा औलिया-अ ● बअ्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्ज़िन्, व मंय्य-तवल्लहुम् मिन्कुम् फ़-इन्नहू मिन्हुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमज़्-ज़ालिमीन (51)

फ़-तरल्लज़ी- न फ़ी क़ुलूबिहिम् मरज़ुय्युसारिअू-न फ़ीहिम् यक़ूलू-न नख़्शा अन् तुसीबना दा-इ-रतुन्, फ़-असल्लाहु अंय्यअ्ति-य बिल्फ़त्हि औ अम्रिम् मिन् अिन्दिही फ़युस्बिहू अ़ला मा असर्रू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् नादिमीन (52)

व यक़ूलुल्लज़ी-न आमनू अ-हाउलाइल्लज़ी-न अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् इन्नहुम् ल-म-अ़कुम्, हबितत् अअ्मालुहुम् फ़अस्बहू ख़ासिरीन ● (53)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू मंय्यर्तद्-द मिन्कुम् अ़न् दीनिही फ़सौ-फ़ यअ्तिल्लाहु बिक़ौमिंय् -युहिब्बुहुम् व युहिब्बूनहू अज़िल्लतिन् अ़लल्-मुअ्मिनी-न अअिज़्ज़तिन् अ़लल्काफ़िरी-न युजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि व ला यख़ाफ़ू-न लौम-त ला-इमिन्, ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (54)

इन्नमा वलिय्युकुमुल्लाहु व रसूलुहू वल्लज़ी-न आमनुल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त व हुम् राकिअून (55)

व मंय्य-तवल्लल्ला-ह व रसूलहू वल्लज़ी-न आमनू फ़-इन्-न हिज़्बल्लाहि हुमुल्-ग़ालिबून (56) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ुल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनकुम् हुज़ुवंव्-व लअिबम् मिन

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الْيَهُوْدَ
وَالنَّصٰرٰۤى اَوْلِيَآءَ ۘ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ
بَعْضٍ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ مِّنْكُمْ فَاِنَّهٗ
مِنْهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ (٥١)
فَتَرَى الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
يُّسَارِعُوْنَ فِيْهِمْ يَقُوْلُوْنَ نَخْشٰۤى
اَنْ تُصِيْبَنَا دَآئِرَةٌ ؕ فَعَسَى اللّٰهُ اَنْ
يَّاْتِىَ بِالْفَتْحِ اَوْ اَمْرٍ مِّنْ عِنْدِهٖ فَيُصْبِحُوْا
عَلٰى مَاۤ اَسَرُّوْا فِىْۤ اَنْفُسِهِمْ نٰدِمِيْنَ (٥٢)
وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اَهٰۤؤُلَآءِ
الَّذِيْنَ اَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ
اِنَّهُمْ لَمَعَكُمْ ؕ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ
فَاَصْبَحُوْا خٰسِرِيْنَ (٥٣)
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَنْ يَّرْتَدَّ مِنْكُمْ
عَنْ دِيْنِهٖ فَسَوْفَ يَاْتِى اللّٰهُ بِقَوْمٍ
يُّحِبُّهُمْ وَيُحِبُّوْنَهٗۤ ۙ اَذِلَّةٍ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ
اَعِزَّةٍ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۫ يُجَاهِدُوْنَ فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَخَافُوْنَ لَوْمَةَ لَآئِمٍ ؕ
ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ؕ
وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيْمٌ (٥٤)
اِنَّمَا وَلِيُّكُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوا الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ رٰكِعُوْنَ (٥٥)
وَمَنْ يَّتَوَلَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا فَاِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْغٰلِبُوْنَ (٥٦)
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ
اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ

खेल बना लिया है, उन्हें और काफ़िरों को अपना दोस्त न बनाओ — अल्लाह का डर रखो, अगर तुम मोमिन हो।

58. जब तुम नमाज़ के लिए मुनादी करते हो तो वो उसे मज़ाक़ और खेल बना लेते हैं; यह इसलिए कि वो नासमझ लोग हैं।

59. कहो "ऐ अहले किताब, तुम्हें इसके सिवा हमारी और क्या चीज़ बुरी लगती है कि हम अल्लाह और उस चीज़ पर ईमान लाए जो हमारी तरफ़ नाज़िल हुई, और जो पहले नाज़िल हुई है, और यह कि तुममें अक्सर फ़ासिक़ ही हैं"।

60. कहो, "क्या मैं तुम्हें बताऊं कि अंजाम के लिहाज़ से इससे भी बुरी रविश अल्लाह के नज़दीक किसकी है? वो जिनपर अल्लाह ने लानत की, और जिनपर उसका ग़ज़ब हुआ, और जिनमें से उसने बंदर और सुअर बनाए, और जिस किसी ने तागूत की बन्दगी की, ऐसे ही लोग मरतबे के लिहाज़ से बदतर हैं, और (तुमसे भी ज़्यादा) सीधे रास्ते से हद दर्जा भटके हुए हैं।"

61. जब वो (यहूद) तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं, "हम ईमान ले आए"; हालांकि वो कुफ़्र के साथ आए थे, और उसी के साथ चले गए; अल्लाह तो जानता ही है जो कुछ वो छुपाते हैं।

62. तुम देखते हो कि उनमें से अक्सर हक़तलफ़ी और ज़्यादती, और हरामख़ोरी में बड़ी तेज़ी दिखाते हैं; यक़ीनन बहुत ही बुरा है जो वो कर रहे हैं।

63. उन के दरवेश और उलमा उन्हें गुनाह की बात बकने और हराम खाने से क्यों नहीं रोकते? यक़ीनन बहुत बुरा है वह काम जो वो कर रहे हैं।

64. और यहूदी कहते हैं, "अल्लाह का हाथ बंध गया है" उन्हीं के हाथ बंधे हैं, और लानत है उनपर उस बकवास की वजह से जो वो करते हैं। नहीं, बल्कि उसके तो दोनों हाथ खुले हुए हैं; वह जिस तरह चाहता है ख़र्च करता है। जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी तरफ़ नाज़िल हुआ है उससे लाज़िमन उनके अक्सर लोगों की सरकशी और कुफ़्र ही में इज़ाफ़ा होगा;

ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिकुम् वल्कुफ़्फ़ा-र औलिया-अ वत्तक़ुल्ला-ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (57)

व इज़ा नादैतुम् इलस्सलातित्-त-ख़ज़ूहा हुज़ुवंव्-व लअिबन्, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ्क़िलून (58)

क़ुल् या अह्लल्-किताबि हल् तन्क़िमू-न मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिल्लाहि व मा उन्ज़ि-ल इलैना व मा उन्ज़ि-ल मिन् क़ब्लु व अन्-न अक्स-रकुम् फ़ासिक़ून (59)

क़ुल हल् उनब्बिउकुम् बि-शर्रिम् मिन् ज़ालि-क मसू-बतन् अिन्दल्लाहि, मल्ल-अ नहुल्लाहु व ग़ज़ि-ब अलैहि व ज-अ-ल मिन्हुमुल् क़ि-र-द-त वल्ख़नाज़ी-र व अ-बदत्तागू-त उलाइ-क शर्रुम् मकानंव्-व अज़ल्लु अन् सवा-इस्सबील (60)

व इज़ा जाऊकुम् क़ालू आमन्ना व क़द् द-ख़लू बिल्कुफ़्रि व हुम् क़द् ख़-रजू बिही, वल्लाहु अअ्लमु बिमा कानू यक्तुमून (61)

व तरा कसीरम् मिन्हुम् युसारिअू-न फ़िल्इस्मि वल्-अुद्वानि व अक्लिहिमुस्सुह्-त, लबिअ्-स मा कानू यअ्मलून (62)

लौ ला यन्हाहुमुर्रब्बानिय्यू-न वल्-अह्बारु अन् क़ौलिहिमुल्-इस्-म व अक्लिहिमुस्सुह्-त, लबिअ्-स मा कानू यस्नअून (63)

व क़ालतिल्-यहूदु यदुल्लाहि मग़्लूलतुन्, ग़ुल्लत् ऐदीहिम् व लुअिनू बिमा क़ालू• बल् यदाहु मब्सूततानि युन्फ़िक़ु कै-फ़ यशा-उ, व ल-यज़ीदन्-न कसीरम् मिन्हुम् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क तुग़्यानंव्-व कुफ़्रन्, व अल्क़ैना बैनहुमुल्-अदाव-त

الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ
اَوْلِيَآءَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ﴿٥٧﴾
وَاِذَا نَادَيْتُمْ اِلَى الصَّلٰوةِ اتَّخَذُوْهَا
هُزُوًا وَّلَعِبًا ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ ﴿٥٨﴾
قُلْ يٰٓاَهْلَ الْكِتٰبِ هَلْ تَنْقِمُوْنَ مِنَّآ اِلَّآ
اَنْ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَمَآ
اُنْزِلَ مِنْ قَبْلُ ۙ وَاَنَّ اَكْثَرَكُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٥٩﴾
قُلْ هَلْ اُنَبِّئُكُمْ بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكَ
مَثُوْبَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ مَنْ لَّعَنَهُ اللّٰهُ
وَغَضِبَ عَلَيْهِ وَجَعَلَ مِنْهُمُ الْقِرَدَةَ
وَالْخَنَازِيْرَ وَعَبَدَ الطَّاغُوْتَ ؕ اُولٰٓئِكَ
شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضَلُّ عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٦٠﴾
وَاِذَا جَآءُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَقَدْ دَّخَلُوْا
بِالْكُفْرِ وَهُمْ قَدْ خَرَجُوْا بِهٖ ؕ
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا كَانُوْا يَكْتُمُوْنَ ﴿٦١﴾
وَتَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يُسَارِعُوْنَ فِى
الْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ
لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٦٢﴾
لَوْلَا يَنْهٰىهُمُ الرَّبّٰنِيُّوْنَ وَالْاَحْبَارُ
عَنْ قَوْلِهِمُ الْاِثْمَ وَاَكْلِهِمُ السُّحْتَ ؕ
لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ ﴿٦٣﴾
وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ يَدُ اللّٰهِ مَغْلُوْلَةٌ ؕ
غُلَّتْ اَيْدِيْهِمْ وَلُعِنُوْا بِمَا قَالُوْا ۘ
بَلْ يَدٰهُ مَبْسُوْطَتٰنِ ۙ يُنْفِقُ كَيْفَ
يَشَآءُ ؕ وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا
وَّكُفْرًا ؕ وَاَلْقَيْنَا بَيْنَهُمُ الْعَدَاوَةَ

और हमने उनके दरमियान क़ियामत के दिन तक के लिए दुश्मनी और नफ़रत डाल दी है, वो जब भी जंग की आग भड़काते हैं अल्लाह उसे बुझा देता है। वो तो ज़मीन में फ़साद बरपा करने के लिए तगो दौ (दौड़-धूप) करते हैं, हालांकि अल्लाह फ़साद बरपा करने वालों को पसन्द नहीं करता।

65. अगर अहले किताब ईमान लाते और डर रखते, तो हम उनकी बुराइयां उनसे दूर कर देते, और उन्हें नेमत भरी जन्नतों में दाख़िल कर देते।

66. और अगर वो तौरात और इंजील को, और जो कुछ उनके रब की तरफ़ से उनपर नाज़िल हुआ है, उसे क़ायम रखते, तो वो अपने ऊपर से भी खाते, और अपने पांव के नीचे से भी। इनमें से एक जमाअत रास्त रौ भी है, लेकिन उनमें से अक्सर ऐसे हैं कि जो भी करते हैं बुरा होता है।

67. ऐ रसूल, तुम्हारे रब की तरफ़ से तुमपर जो कुछ नाज़िल हुआ है उसे पहुंचा दो; अगर ऐसा न किया, तो तुमने उसका पैग़ाम नहीं पहुंचाया। लोगों से अल्लाह तुम्हें बचाएगा। यक़ीनन अल्लाह तो उन लोगों को राह नहीं दिखाता जो कुफ़्र व इनकार करते हैं।

68. कह दो, "ऐ अहले किताब, तुम किसी चीज़ पर भी नहीं हो, जब तक तौरात और इंजील को, और जो कुछ तुम्हारे रब की जानिब से तुम्हारी तरफ़ नाज़िल हुआ है उसे क़ायम न करो।" लेकिन (ऐ नबी) तुम्हारे रब की तरफ़ से तुमपर जो कुछ नाज़िल हुआ है वह लाज़िमन उनमें से अक्सर की सरकशी और कुफ़्र में इज़ाफ़े का बाइस होगा; तो तुम इनकार करनेवाले लोगों पर ग़म न करो।

69. बेशक अहले ईमान, और यहूदी, और साबई और ईसाई, उनमें से जो कोई भी अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाए, और नेक काम करे, तो ऐसे लोगों को न तो कोई डर होगा, और न वो ग़मगीन होंगे।

70. हमने बनी इसराईल से पुख़्ता अहद लिया, और उन की तरफ़ रसूल

वल्बग़्ज़ा-अ इला यौमिल्-क़ियामति, कुल्लमा औक़दू नारल्-लिल्-हर्बि अत्-फ़-अहल्लाहु व यस्औ-न फ़िल्अर्ज़ि फ़सादन्, वल्लाहु ला युहिब्बुल् मुफ़्सिदीन (64)

व लौ अन्-न अह्लल्-किताबि आमनू वत्तक़ौ ल-कफ़्फ़र्ना अन्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-अद्ख़ल्नाहुम् जन्नातिन्नअीम (65)

व लौ अन्नहुम् अक़ामुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैहिम् मिर्रब्बिहिम् ल-अ-कलू मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम्, मिन्हुम् उम्मतुम् मुक़्तसि-दतुन्, व कसीरुम् मिन्हुम् सा-अ मा यअ्मलून (66)●

या अय्युहर्रसूलु बल्लिग़् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क व इल्लम् तफ़्अल् फ़मा बल्लग़्-त रिसाल-तहू, वल्लाहु यअ्सिमु-क मिनन्नासि, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमल्-काफ़िरीन (67)

क़ुल् या अह्लल्-किताबि लस्तुम् अ़ला शैइन् हत्ता तुक़ीमुत्तौरा-त वल्-इन्जी-ल व मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम्, व ल-यज़ीदन्-न कसीरम्-मिन्हुम् मा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क तुग़्यानंव्-व कुफ़्रन् फ़ला तअ्-स अ़लल् क़ौमिल्-काफ़िरीन (68)

इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वस्साबिऊ-न वन्नसारा मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व अ़मि-ल सालिहन् फ़ला ख़ौफ़ुन अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (69)

ल-क़द् अख़ज़्ना मीसा-क़ बनी इस्राई-ल

وَالْبَغْضَآءَ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ ؕ كُلَّمَآ
اَوْقَدُوْا نَارًا لِّلْحَرْبِ اَطْفَاَهَا اللّٰهُ ۙ
وَيَسْعَوْنَ فِى الْاَرْضِ فَسَادًا ؕ وَاللّٰهُ
لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٦٤
وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْكِتٰبِ اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا
لَكَفَّرْنَا عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَاَدْخَلْنٰهُمْ
جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٦٥
لَوْ اَنَّهُمْ اَقَامُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ
وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْهِمْ مِّنْ رَّبِّهِمْ لَاَكَلُوْا
مِنْ فَوْقِهِمْ وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ ؕ
مِنْهُمْ اُمَّةٌ مُّقْتَصِدَةٌ ؕ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ
ع سَآءَ مَا يَعْمَلُوْنَ ۝٦٦
يٰۤاَيُّهَا الرَّسُوْلُ بَلِّغْ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ
مِنْ رَّبِّكَ ؕ وَاِنْ لَّمْ تَفْعَلْ فَمَا بَلَّغْتَ
رِسَالَتَهٗ ؕ وَاللّٰهُ يَعْصِمُكَ مِنَ النَّاسِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٦٧
قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَسْتُمْ عَلٰى شَىْءٍ
حَتّٰى تُقِيْمُوا التَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ
وَمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ ؕ
وَلَيَزِيْدَنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ مَّآ اُنْزِلَ
اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۚ
فَلَا تَاْسَ عَلَى الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝٦٨
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا
وَالصّٰبِئُوْنَ وَالنَّصٰرٰى مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَا
خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٦٩
لَقَدْ اَخَذْنَا مِيْثَاقَ بَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ

भेजे। उनके पास जब भी कोई रसूल वह कुछ लेकर आया जो उन्हें पसन्द न था, तो कितनों को तो उन्होंने झुटलाया, और कितनों को क़त्ल करने के दरपे हुए।

71. और उन्होंने समझा कि कोई फ़ितना रूनुमा न होगा, इसलिए वो अन्धे और बहरे बन गए। फिर अल्लाह उनपर मेहरबान हुआ; फिर भी उनमें से बहुत से अंधे और बहरे हो गए; जो कुछ भी वो करते हैं वह तो अल्लाह की निगाह में होता है।

72. यक़ीनन उन्होंने कुफ़्र किया जिन्होंने कहा कि "अल्लाह वही मसीह इब्ने मरयम ही है!" हालांकि मसीह ने कहा था, "ऐ बनी इसराईल, अल्लाह की बन्दगी करो, जो मेरा भी रब है, और तुम्हारा भी रब है! जो कोई अल्लाह का शरीक ठहराएगा, उसपर तो अल्लाह ने जन्नत हराम कर दी है, और उसका ठिकाना आग है; ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं"।

73. यक़ीनन उन्होंने कुफ़्र का इरतिकाब किया जिन्होंने कहा, "अल्लाह तीन में का एक है!" हालांकि अकेले माबूद के सिवा कोई माबूद नहीं। जो कुछ भी वो कहते हैं अगर वो उससे बाज़ न आएं, तो उनमें से कुफ़्र व इनकार करनेवालों को दर्दनाक अज़ाब पहुंच कर रहेगा।

74. फिर क्या ये लोग अल्लाह के आगे तौबा नहीं करेंगे और उससे बख़्शिश के तलबगार न होंगे? जबकि अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला, निहायत मेहरबान है।

75. मसीह इब्ने मरयम एक रसूल के सिवा और कुछ नहीं; उससे पहले भी कितने ही रसूल गुज़र चुके हैं; उसकी मां निहायत रास्तबाज़ थी, दोनों ही खाना खाते थे। देखो, हम किस तरह उनके सामने निशानियां खोल कर बयान करते हैं; फिर देखो, वो किस तरह उलटे फिरे जा रहे हैं!

76. कह दो, "क्या तुम अल्लाह से हटकर उसकी परसतिश करते हो जिसको न तुम्हारे नुक़सान का इख़्तियार हासिल है और न नफ़ा का? जबकि सुननेवाला, इल्म रखनेवाला अल्लाह ही है"।

व अर्सल्ना इलैहिम् रूसुलन्, कुल्लमा जाअहुम् रसूलुम् बिमा ला तह्वा अन्फ़ुसुहुम् फ़रीक़न् कज़्ज़बू व फ़रीक़ंय्यक़्तुलून (70)

व हसिबू'अल्ला तकू-न फ़ित्नतुन् फ़-अ़मू व सम्मू सुम्-म ताबल्लाहु अ़लैहिम् सुम्-म अ़मू व सम्मू कसीरुम्-मिन्हुम् वल्लाहु बसीरुम् बिमा यअ्मलून (71)

ल-क़द् क-फ़रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह हुवल्-मसीहुब्नु मर्य-म, व क़ालल्मसीहु या बनी इस्राईलअ्बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम, इन्नहू मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-क़द् हर्रमल्लाहु अ़लैहिल्- जन्न-त व मअ्वाहुन्नारु, व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् अन्सार (72)

ल-क़द क-फ़रल्लज़ी-न क़ालू इन्नल्ला-ह सालिसु सलासतिन्● व मा मिन् इलाहिन् इल्ला इलाहुंव्वाहिदुन्, व इल्लम् यन्तहू अ़म्मा यक़ूलू-न ल-यमस्सन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (73)

अ-फ़ला यतूबू-न इलल्लाहि व यस्तग़्फ़िरूनहू, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (74)

मल्मसीहुब्नु मर्य-म इल्ला रसूलुन् क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिर्रुसुलु, व उम्मुहू सिद्दीक़तुन्, काना यअ्कुलानित्तआ़-म उन्ज़ुर् कै-फ़ नुबय्यिनु लहुमुल्-आयाति सुम्मन्ज़ुर् अन्ना युअ्फ़कून (75)

क़ुल अ-तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व ला नफ़अन्, वल्लाहु हुवस्समीअुल अ़लीम (76)

وَاَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ رُسُلًا ؕ كُلَّمَا جَآءَهُمْ
رَسُوْلٌ ۢ بِمَا لَا تَهْوٰٓى اَنْفُسُهُمْ ۙ فَرِيْقًا
كَذَّبُوْا وَفَرِيْقًا يَّقْتُلُوْنَ ۝٧٠
وَحَسِبُوْٓا اَلَّا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ فَعَمُوْا
وَصَمُّوْا ثُمَّ تَابَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ثُمَّ
عَمُوْا وَصَمُّوْا كَثِيْرٌ مِّنْهُمْ ؕ وَاللّٰهُ
بَصِيْرٌ ۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ ۝٧١
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ هُوَ
الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ ؕ وَقَالَ الْمَسِيْحُ
يٰبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ
وَرَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ مَنْ يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَقَدْ
حَرَّمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ الْجَنَّةَ وَمَاْوٰىهُ النَّارُ ؕ
وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ اَنْصَارٍ ۝٧٢
لَقَدْ كَفَرَ الَّذِيْنَ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ
ثَالِثُ ثَلٰثَةٍ ۘ وَمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّآ اِلٰهٌ
وَّاحِدٌ ؕ وَاِنْ لَّمْ يَنْتَهُوْا عَمَّا يَقُوْلُوْنَ
لَيَمَسَّنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابٌ
اَلِيْمٌ ۝٧٣
اَفَلَا يَتُوْبُوْنَ اِلَى اللّٰهِ وَيَسْتَغْفِرُوْنَهٗ ؕ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٧٤
مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ
خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَاُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ
كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُبَيِّنُ
لَهُمُ الْاٰيٰتِ ثُمَّ انْظُرْ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝٧٥
قُلْ اَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا
يَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا ؕ وَاللّٰهُ
هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٧٦

77. कह दो, "ऐ अहले किताब, अपने दीन में नाहक़ हद से तजावुज़ इख़्तियार न करो, और उन लोगों की ख़्वाहिशात की पैरवी न करो जो इससे पहले ख़ुद गुमराह हुए, और बहुतों को गुमराह किया, सीधे रास्ते से भटक कर रहे।"

78. बनी इसराईल में से जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनपर दाऊद, और ईसा इब्ने मरयम की ज़बानी लानत पड़ी; इसलिए कि उन्होंने नाफ़रमानी की और वो हद से आगे बढ़े जा रहे थे।

79. बुरा काम जो वो करते थे, उससे वो एक-दूसरे को रोकते नहीं थे; यक़ीनन बहुत ही बुरा था जो वो कर रहे थे।

80. तुम उनमें से अक्सर को देखते हो कि वो काफ़िरों से दोस्ती रखते हैं। यक़ीनन बहुत ही बुरा है जो उन्होंने अपने आगे रखा यह कि अल्लाह का उनपर ग़ज़ब हुआ, और अज़ाब में वो हमेशा रहेंगे।

81. और अगर वो अल्लाह और नबी पर और जो कुछ उसकी तरफ़ नाज़िल हुआ उसपर ईमान लाते, तो वो उन को दोस्त न बनाते, लेकिन उनमें तो बेशतर फ़ासिक़ हैं।

82. तुम अहले ईमान की अदावत में सब लोगों से बढ़कर यहूद और मुशरिकीन को पाओगे; और ईमान लानेवालों के लिए मुहब्बत में क़रीबतर उन लोगों को पाओगे जिन्होंने कहा, "हम नसारा हैं"; ऐसा इसलिए है कि उनमें बहुत से आलिम और राहिब पाए जाते हैं, और यह इसलिए कि वो गुरूर व तकब्बुर से काम नहीं लेते।

83. जब वो उसको सुनते हैं जो रसूल पर नाज़िल हुआ है, तो तुम देखते हो कि उनकी आंखें आंसुओं से छलकने लगती हैं, इसलिए कि उन्होंने हक़ को पहचान लिया। वो कहते हैं, "हमारे ख़ुदावन्द, हम ईमान ले आए; लिहाज़ा तू हमें गवाही देने वालों में लिख ले।

84. और हमें क्या हुआ कि हम अल्लाह पर और जो हक़ हम तक पहुंचा है उसपर ईमान न लाएं जबकि

क़ुल या अह़्लल्-किताबि ला तग़्लू फ़ी दीनिकुम् ग़ैरल्-ह़क़्क़ि व ला तत्तबिऊ अह़्वा-अ क़ौमिन् क़द् ज़ल्लू मिन् क़ब्लु व अज़ल्लू कसीरंव्-व ज़ल्लू अ़न् सवा-इस्सबील (77)●

लुअ़िनल्लज़ी-न क-फ़रू मिम्-बनी इस्राई-ल अ़ला लिसानि दावू-द व ईसब्नि मर्-य-म, ज़ालि-क बिमा अ़सौ-व कानू यअ्तदून (78)

कानू ला य-तनाहौ-न अ़म्-मुन्करिन् फ़-अ़लूहु, लबिअ्-स मा कानू यफ़्अ़लून (79)

तरा कसीरम्-मिन्हुम् य-तवल्लौनल्लज़ी-न क-फ़रू, लबिअ्-स मा क़द्द-मत् लहुम् अन्फ़ुसुहुम् अन् सख़ितल्लाहु अ़लैहिम् व फ़िल्-अ़ज़ाबि हुम् ख़ालिदून (80)

व लौ कानू युअ्मिनू-न बिल्लाहि वन्नबिय्यि व मा उन्ज़ि-ल इलैहि मत्त-ख़ज़ूहुम् औलिया-अ व लाकिन्-न कसीरम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (81)

ल-तजिदन्-न अशद्दन्नासि अ़दा-वतल्-लिल्लज़ी-न आमनुल्-यहू-द वल्लज़ी-न अश्रकू व ल-तजिदन्-न अक़्र-बहुम् मवद्दतल्-लिल्लज़ी-न आमनुल्लज़ी-न क़ालू इन्ना नसारा, ज़ालि-क बिअन्-न मिन्हुम् क़िस्सीसी-न व रुह्बानंव्-व अन्नहुम् ला यस्तक्बिरून (82)

व इज़ा समिऊ मा उन्ज़ि-ल इलर्रसूलि तरा अअ्युनहुम् तफ़ीज़ु मिनद्दम्अ़ि मिम्मा अ़-रफ़ू मिनल्-ह़क़्क़ि यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़क्तुब्ना मअ़श्शाहिदीन (83)

व मा लना ला नुअ्मिनु बिल्लाहि व मा जा-अना मिनल्-ह़क़्क़ि व नत्मअ़ु अंय्युद्ख़ि-लना रब्बुना

قُلْ يٰۤاَهْلَ الْكِتٰبِ لَا تَغْلُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ
غَيْرَ الْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعُوْۤا اَهْوَآءَ قَوْمٍ
قَدْ ضَلُّوْا مِنْ قَبْلُ وَاَضَلُّوْا كَثِيْرًا
وَّضَلُّوْا عَنْ سَوَآءِ السَّبِيْلِ ﴿٧٧﴾
لُعِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ بَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ
عَلٰى لِسَانِ دَاوٗدَ وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ؕ
ذٰلِكَ بِمَا عَصَوْا وَّكَانُوْا يَعْتَدُوْنَ ﴿٧٨﴾
كَانُوْا لَا يَتَنَاهَوْنَ عَنْ مُّنْكَرٍ
فَعَلُوْهُ ؕ لَبِئْسَ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٩﴾
تَرٰى كَثِيْرًا مِّنْهُمْ يَتَوَلَّوْنَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا ؕ لَبِئْسَ مَا قَدَّمَتْ لَهُمْ اَنْفُسُهُمْ
اَنْ سَخِطَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَفِي الْعَذَابِ
هُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿٨٠﴾
وَلَوْ كَانُوْا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالنَّبِيِّ وَمَاۤ
اُنْزِلَ اِلَيْهِ مَا اتَّخَذُوْهُمْ اَوْلِيَآءَ
وَلٰكِنَّ كَثِيْرًا مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٨١﴾
لَتَجِدَنَّ اَشَدَّ النَّاسِ عَدَاوَةً لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوا الْيَهُوْدَ وَالَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا ۚ وَلَتَجِدَنَّ
اَقْرَبَهُمْ مَّوَدَّةً لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا الَّذِيْنَ
قَالُوْۤا اِنَّا نَصٰرٰى ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّ مِنْهُمْ
قِسِّيْسِيْنَ وَرُهْبَانًا وَّاَنَّهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٨٢﴾
وَاِذَا سَمِعُوْا مَاۤ اُنْزِلَ اِلَى الرَّسُوْلِ
تَرٰۤى اَعْيُنَهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ
مِمَّا عَرَفُوْا مِنَ الْحَقِّ ۚ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ
اٰمَنَّا فَاكْتُبْنَا مَعَ الشّٰهِدِيْنَ ﴿٨٣﴾
وَمَا لَنَا لَا نُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَمَا جَآءَنَا
مِنَ الْحَقِّ ۙ وَنَطْمَعُ اَنْ يُّدْخِلَنَا رَبُّنَا

हमें उम्मीद है कि हमें हमारा रब सालेह लोगों के साथ दाख़िल करेगा।

85. फिर अल्लाह ने उनके इस क़ौल के सिले में उन्हें ऐसे बाग़ दिए जिनके नीचे नहरें बहती हैं, जिनमें वो हमेशा रहेंगे; यही अजर है निहायत खूबकार लोगों का।

86. रहे वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, और हमारी आयतों को झुटलाया वो तो भड़कती आग वाले हैं।

87. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जो उमदा पाक चीज़ें अल्लाह ने तुम्हारे लिए हलाल की हैं उन्हें हराम न कर लो; और हद से आगे न बढ़ो; यक़ीनन अल्लाह हद से तजावुज़ करने वालों को पसन्द नहीं करता।

88. जो कुछ अल्लाह ने हलाल व तय्यिब रिज़्क़ तुम्हें दिया है उसे खाओ; और अल्लाह का डर रखो जिसपर तुम ईमान लाए हो।

89. अल्लाह तुम्हें तुम्हारी उन क़समों पर नहीं पकड़ता जो यूंही ज़बान से निकल जाती हैं; अलबत्ता जो क़समें तुमने पुख़्ता तरीक़े से खाई हों उनपर वह तुम्हारी गिरफ़्त करेगा, तो उसका कफ़्फ़ारा दस मुहताजों को औसत दर्जे का वह खाना खिला देना है जो तुम अपने अहल व अयाल को खिलाते हो, या फिर उन्हें कपड़ा पहनाना, या एक गुलाम आज़ाद करना होगा; और जिस किसी को उसकी इस्तिताअत न हो तो तीन दिन के रोज़े रखने होंगे! यह तुम्हारी क़समों का कफ़्फ़ारा है जबकि तुम क़सम खा बैठो; तुम अपनी क़समों की हिफ़ाज़त किया करो। इस तरह अल्लाह अपनी आयतें तुम्हारे सामने वाज़ेह फ़रमाता है ताकि तुम एहसान मानो।

90. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, यह शराब और जुआ और आस्ताने और पांसे तो गंदे शैतानी काम हैं; पस तुम उनसे परहेज़ करो ताकि तुम्हें फ़लाह नसीब हो।

91. शैतान तो बस यही चाहता है कि शराब और जुए के ज़रिए से तुम्हारे दरमियान दुश्मनी और नफ़रत पैदा कर दे, और तुम्हें अल्लाह की

मअ़ल्-क़ौमिस्सालिहीन (84)

फ-असाबहुमुल्लाहु बिमा क़ालू जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व ज़ालि-क जज़ाउल् मुह्सिनीन (85)

वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल् जहीम (86) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुहर्रिमू तय्यिबाति मा अ-हल्लल्लाहु लकुम् व ला तअ्तदू, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल् मुअ्तदीन (87)

व कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु हलालन् तय्यिबंव्-वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून (88)

ला युआख़िज़ुकुमुल्लाहु बिल्लग़्वि फ़ी ऐमानिकुम् व लाकिंय्युआख़िज़ुकुम् बिमा अ़क़्क़त्तुमुल्-ऐमा-न फ़-कफ़्फ़ारतुहू इत्आमु अ़-श-रति मसाकी-न मिन् औ-सति मा तुत्अ़िमू-न अह्लीकुम् औ किस्वतुहुम् औ तह्रीरु र-क़-बतिन्, फ़-मल्लम् यजिद् फ़सियामु सलासति अय्यामिन्, ज़ालि-क कफ़्फ़ारतु ऐमानिकुम् इज़ा हलफ़्तुम् वह्फ़ज़ू ऐमानकुम्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (89)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्नमल्-ख़म्रु वल्मैसिरु वल्अन्साबु वल्अज़्लामु रिज्सुम्-मिन् अ़-मलिश्शैतानि फ़ज्तनिबूहु लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (90)

इन्नमा युरीदुश्शैतानु अंय्यूक़ि-अ बैनकुमुल् अ़दा-व-त वल-बग़्ज़ा-अ फ़िल्ख़म्रि वल्मैसिरि व यसुद्दकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व अ़नि

مَعَ الْقَوْمِ الصّٰلِحِيْنَ ۝٨٤
فَاَثَابَهُمُ اللّٰهُ بِمَا قَالُوْا جَنّٰتٍ تَجْرِيْ
مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
وَ ذٰلِكَ جَزَآءُ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٨٥
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَاۤ اُولٰٓئِكَ
ع اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ۝٨٦
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُحَرِّمُوْا طَيِّبٰتِ
مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكُمْ وَلَا تَعْتَدُوْا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝٨٧
وَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا طَيِّبًا ۖ
وَّاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝٨٨
لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللّٰهُ بِاللَّغْوِ فِيْۤ اَيْمَانِكُمْ
وَلٰكِنْ يُّؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُّمُ
الْاَيْمَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهٗۤ اِطْعَامُ عَشَرَةِ
مَسٰكِيْنَ مِنْ اَوْسَطِ مَا تُطْعِمُوْنَ
اَهْلِيْكُمْ اَوْ كِسْوَتُهُمْ اَوْ تَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ ؕ
فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ ثَلٰثَةِ اَيَّامٍ ؕ
ذٰلِكَ كَفَّارَةُ اَيْمَانِكُمْ اِذَا حَلَفْتُمْ ؕ
وَاحْفَظُوْۤا اَيْمَانَكُمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ
اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٨٩
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّمَا الْخَمْرُ
وَالْمَيْسِرُ وَالْاَنْصَابُ وَالْاَزْلَامُ
رِجْسٌ مِّنْ عَمَلِ الشَّيْطٰنِ فَاجْتَنِبُوْهُ
لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝٩٠
اِنَّمَا يُرِيْدُ الشَّيْطٰنُ اَنْ يُّوْقِعَ
بَيْنَكُمُ الْعَدَاوَةَ وَالْبَغْضَآءَ فِي الْخَمْرِ
وَالْمَيْسِرِ وَيَصُدَّكُمْ عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَعَنِ

याद और नमाज़ से रोक दे। तो क्या तुम बाज़ आ जाओगे?

92. अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो; और बचते रहो; लेकिन अगर तमने मुंह मोड़ा तो जान लो कि हमारे रसूल पर तो बस वाज़ेह तौर पर पहुंचा देने ही की ज़िम्मेदारी है।

93. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने अच्छे काम किए वो जो कुछ खा-पी चुके उसके लिए उनपर कोई गुनाह नहीं, जबकि वो डर रखें, और ईमान पर क़ायम रहें, और अच्छे काम करें, फिर डर रखें और ईमान पर क़ायम रहें, फिर डर रखें और अच्छे से अच्छा करके दें; अल्लाह खूबकार लोगों को पसन्द करता है।

94. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह उस शिकार के ज़रिए से तुम्हें ज़रूर आज़माएगा जिस तक तुम्हारे हाथ और तुम्हारे नेज़े पहुंच सकें, ताकि अल्लाह यह जान ले कि कौन उससे ग़ायबाना तौर से डरता है। फिर जिस किसी ने इसके बाद ज़्यादती की, उसके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

95. ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो, जब तुम एहराम में हो तो शिकार न मारो; जो कोई तुममें जान-बूझ कर उसे मारे, तो उसने जो मारा हो चौपायों में से उसी जैसा एक जानवर — जिसका फ़ैसला तुम्हारे दो इंसाफ़ पसन्द आदमी कर दें — काबा पहुंचाकर क़ुरबान किया जाए; या कफ़्फ़ारा के तौरपर मुहताजों का खाना देना होगा, या उसी के बक़द्र रोज़े रखने होंगे; ताकि वो अपने किए का मज़ा चख ले, जो पहले हो चुका उसे अल्लाह ने माफ़ कर दिया, लेकिन जिस किसी ने फिर ऐसा किया, तो अल्लाह उससे इंतिक़ाम लेगा, अल्लाह ज़बरदस्त भी है, इंतिक़ाम लेनेवाला भी।

96. तुम्हारे लिए दरियाई शिकार और उसका खाना हलाल है कि तुम उससे फ़ायदा उठाओ और मुसाफ़िर भी; लेकिन खुश्की का शिकार जबतक तुम एहराम में हो तुम पर हराम है; और अल्लाह से डरते रहो जिसके हुज़ूर तुम जमा होगे।

97. अल्लाह ने मकाने मुहतरम, काबा को लोगों के लिए क़ायम रहने का ज़रिया बनाया, और माहे हराम,

स्सलाति फ़-हल् अन्तुम् मुन्तहून (91)

व अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल वह्ज़रू फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़अ्लमू अन्नमा अ़ला रसूलिनल् बलाग़ुल् मुबीन (92)

लै-स अ़लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जुनाहुन् फ़ीमा तअ़िमू इज़ा मत्तक़ौ व आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति सुम्मत्तक़ौ व आमनू सुम्मत्तक़ौ व अह्सनू, वल्लाहु युहिब्बुल् मुह्सिनीन (93) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ल-यब्लुवन्न- कुमुल्लाहु बिशैइम् मिनस्सैदि तनालुहू ऐदीकुम् व रिमाहुकुम् लि-यअ्-लमल्लाहु मंय्यख़ाफ़ुहू बिल्ग़ैबि फ़-मनिअ्तदा बअ्-द ज़ालि-क फ़-लहू अ़ज़ाबुन् अलीम (94)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तक़्तुलुस्सै-द व अन्तुम् हुरुमुन्, व मन् क़-त-लहू मिन्कुम् मु-तअ़म्मिदन् फ़-जज़ाउम्-मिस्लु मा क़-त-ल मिनन्न-अ़मि यह्कुमु बिही ज़वा अ़द्लिम्-मिन्कुम् हद्यम् बालिग़ल्-कअ्-बति औ कफ़्फ़ारतुन् तआ़मु मसाकी-न औ अ़द्लु ज़ालि-क सियामल्-लियज़ू-क़ व बा-ल अम्रिही, अ़फ़ल्लाहु अ़म्मा स-लफ़, व मन् आ़-द फ़-यन्तक़िमुल्लाहु मिन्हु, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम (95)

उहिल्-ल लकुम् सैदुल्बह्रि व तआ़मुहू मताअ़ल्लकुम् व लिस्सय्या-रति व हुर्रि-म अ़लैकुम् सैदुल्बर्रि मा दुम्तुम् हुरुमन्, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी इलैहि तुह्शरून (96)

ज-अ़लल्लाहुल् कअ्-बतल् बैतल्-हरा-म क़ियामल् लिन्नासि वश्शहरल्-हरा-म वल्हद्-य

الصَّلٰوةِ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّنْتَهُوْنَ (٩١)
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ
وَاحْذَرُوْا ۚ فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا
اَنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ (٩٢)
لَيْسَ عَلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جُنَاحٌ فِيْمَا طَعِمُوْٓا اِذَا مَا اتَّقَوْا
وَّاٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ثُمَّ اتَّقَوْا
وَّاٰمَنُوْا ثُمَّ اتَّقَوْا وَّاَحْسَنُوْا ۭ وَاللّٰهُ
ع يُحِبُّ الْمُحْسِنِيْنَ (٩٣)
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَيَبْلُوَنَّكُمُ اللّٰهُ بِشَيْءٍ
مِّنَ الصَّيْدِ تَنَالُهٗٓ اَيْدِيْكُمْ وَرِمَاحُكُمْ
لِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّخَافُهٗ بِالْغَيْبِ ۚ فَمَنِ
اعْتَدٰى بَعْدَ ذٰلِكَ فَلَهٗ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (٩٤)
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَقْتُلُوا الصَّيْدَ
وَاَنْتُمْ حُرُمٌ ۭ وَمَنْ قَتَلَهٗ مِنْكُمْ مُّتَعَمِّدًا
فَجَزَاۗءٌ مِّثْلُ مَا قَتَلَ مِنَ النَّعَمِ
يَحْكُمُ بِهٖ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ هَدْيًۢا
بٰلِغَ الْكَعْبَةِ اَوْ كَفَّارَةٌ طَعَامُ مَسٰكِيْنَ
اَوْ عَدْلُ ذٰلِكَ صِيَامًا لِّيَذُوْقَ وَبَالَ
اَمْرِهٖ ۭ عَفَا اللّٰهُ عَمَّا سَلَفَ ۭ وَمَنْ عَادَ
فَيَنْتَقِمُ اللّٰهُ مِنْهُ ۭ وَاللّٰهُ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍ (٩٥)
اُحِلَّ لَكُمْ صَيْدُ الْبَحْرِ وَطَعَامُهٗ
مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِلسَّيَّارَةِ ۚ وَحُرِّمَ عَلَيْكُمْ
صَيْدُ الْبَرِّ مَا دُمْتُمْ حُرُمًا ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ (٩٦)
جَعَلَ اللّٰهُ الْكَعْبَةَ الْبَيْتَ الْحَرَامَ
قِيٰمًا لِّلنَّاسِ وَالشَّهْرَ الْحَرَامَ وَالْهَدْيَ

और क़ुरबानी के जानवरों, और उन जानवरों को भी, जिनके गले में पट्टे बंधे हों, यह इसलिए कि तुम जान लो कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है, और यह कि अल्लाह हर एक चीज़ से वाक़िफ़ है।

98. जान लो कि अल्लाह सख़्त सज़ा देनेवाला है, और यह कि अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला, निहायत रहमवाला भी है।

99. रसूल पर पहुंचा देने के सिवा और कोई ज़िम्मेदारी नहीं; अल्लाह तो जानता ही है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ तुम छुपाते हो।

100. कह दो कि "नापाक और पाक बराबर नहीं होते, अगरचे नापाक की बुहतात तुम्हें फ़रेफ़्ता ही करे।" पस ऐ अक़्ल व ख़िरदवालो, अल्लाह का डर रखो ताकि तुम कामयाब हो सको।

101. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, ऐसी चीज़ों के बारे में न पूछो कि वो अगर तुमपर ज़ाहिर कर दी जाएं तो तुम्हें बुरी लगें; अगर तुम उन्हें ऐसे ज़माने में पूछोगे जबकि क़ुरआन उतर रहा है, तो वो तुमपर ज़ाहिर कर दी जाएंगी। अल्लाह ने उसे माफ़ कर दिया; अल्लाह बहुत माफ़ करने वाला, बुर्दबार है।

102. तुमसे पहले एक क़ौम पूछ चुकी है फिर उसके लोग उसके सबब से काफ़िर बन गए।

103. अल्लाह ने न तो कोई बहीरा ठहराया है, और न सायबा, न वसीला, और न हाम; लेकिन काफ़िर अल्लाह पर इफ़्तिरा करके झूट घड़ते हैं, और उनमें अकसर अक़्ल से काम नहीं लेते।

104. और जब उनसे कहा जाता है कि उसकी तरफ़ आओ जो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया है, और रसूल की तरफ़, तो वो कहते हैं, "हमारे लिए तो वही काफ़ी है जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है।" क्या इस सूरत में भी जबकि उनके बाप-दादा कुछ भी न जानते रहे हों और न सीधे रास्ते पर हों?

105. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुमपर अपनी फ़िक्र लाज़िम है। जब तुम रास्ते पर हो, तो जो कोई भटक जाए वह तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ सकता। अल्लाह की तरफ़ तुम सबको

वल्क़लाइ-द, ज़ालि-क लितअ्लमू अन्नल्ला-ह यअ्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (97)

इअ्लमू अन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाबि व अन्नल्लाहा-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (98)

मा अ़लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ु, वल्लाहु यअ्लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून (99)

क़ुल् ला यस्तविल्-ख़बीसु वत्तय्यिबु व लौ अअ्ज-ब-क कस्रतुल्-ख़बीसि फ़त्तक़ुल्ला-ह या उलिल्-अल्बाबि लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (100) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तस्अलू अ़न् अश्या-अ इन् तुब्-द लकुम् तसुअ्कुम् व इन् तस्अलू अ़न्हा ही-न युनज़्ज़लुल्-क़ुर्आनु तुब्-द लकुम्, अ़फ़ल्लाहु अ़न्हा, वल्लाहु ग़फ़ूरुन् हलीम (101)

क़द् स-अ-लहा क़ौमुम् मिन् क़ब्लिकुम् सुम्-म अस्बहू बिहा काफ़िरीन (102)

मा ज-अ़लल्लाहु मिम्-बही- रतिंव्-व ला साइ-बतिंव्-व ला वसीलतिंव्-व ला हामिंव्-व लाकिन्नल्लज़ी-न क-फ़रू यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब, व अक्सरुहुम् ल यअ्क़िलून (103)

व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआ़लौ इला मा अन्ज़लल्लाहु व इलर्रसूलि क़ालू हस्बुना मा वजद्ना अ़लैहि आबा-अना, अ-व लौ का-न आबाउहुम् ला यअ्लमू-न शैअंव्-व ला यह्तदून (104)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अ़लैकुम् अन्फ़ु-सकुम् ला यज़ुर्रुकुम् मन् ज़ल्-ल इज़ह्तदैतुम्,

وَالْقَلَآئِدَ ذٰلِكَ لِتَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ
مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَاَنَّ
اللّٰهَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ ۝٩٧
اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ وَاَنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٩٨
مَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ
مَا تُبْدُوْنَ وَمَا تَكْتُمُوْنَ ۝٩٩
قُلْ لَّا يَسْتَوِى الْخَبِيْثُ وَالطَّيِّبُ وَلَوْ
اَعْجَبَكَ كَثْرَةُ الْخَبِيْثِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ
ع يٰٓاُولِى الْاَلْبَابِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠٠
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَسْـَٔلُوْا عَنْ
اَشْيَآءَ اِنْ تُبْدَ لَكُمْ تَسُؤْكُمْ ۚ وَاِنْ
تَسْـَٔلُوْا عَنْهَا حِيْنَ يُنَزَّلُ الْقُرْاٰنُ
تُبْدَ لَكُمْ ؕ عَفَا اللّٰهُ عَنْهَا ؕ وَاللّٰهُ
غَفُوْرٌ حَلِيْمٌ ۝١٠١
قَدْ سَاَلَهَا قَوْمٌ مِّنْ قَبْلِكُمْ ثُمَّ
اَصْبَحُوْا بِهَا كٰفِرِيْنَ ۝١٠٢
مَا جَعَلَ اللّٰهُ مِنْۢ بَحِيْرَةٍ وَّلَا سَآئِبَةٍ
وَّلَا وَصِيْلَةٍ وَّلَا حَامٍ ۙ وَّلٰكِنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ؕ
وَاَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝١٠٣
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا اِلٰى مَآ اَنْزَلَ
اللّٰهُ وَاِلَى الرَّسُوْلِ قَالُوْا حَسْبُنَا مَا
وَجَدْنَا عَلَيْهِ اٰبَآءَنَا ؕ اَوَلَوْ كَانَ
اٰبَآؤُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَهْتَدُوْنَ ۝١٠٤
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا عَلَيْكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۚ
لَا يَضُرُّكُمْ مَّنْ ضَلَّ اِذَا اهْتَدَيْتُمْ ؕ

लौटकर जाना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।

106. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो! जब तुम में किसी की मौत का वक़्त आ जाए, तो वसीयत के वक़्त तुममें से दो इनसाफ़ पसन्द शख़्स गवाह हों; या तुम्हारे ग़ैरों में से दो दूसरे शख़्स गवाह हो जाएं, यह उस वक़्त कि तुम कहीं सफ़र में गए हो और मौत की मुसीबत तुम्हें आ पहुंचे। अगर तुम्हें कोई शक व शुबहा हो, तो नमाज़ के बाद उन दोनों को रोक लो, फिर वो दोनों अल्लाह की क़समें खाएं कि "हम इसके बदले कोई क़ीमत क़बूल करने वाले नहीं हैं, ख़्वाह वो कोई रिश्तेदार ही क्यों न हों, और न हम अल्लाह की गवाही छुपाते हैं, बेशक फिर तो हम गुनहगार ठहरेंगे!"

107. फिर अगर पता चल जाए कि वो दोनों हक़ दबाकर गुनाह में पड़े, तो उनकी जगह दूसरे दो शख़्स उन लोगों में से खड़े हो जाएं, जिनका हक़ पिछले दोनों 'शख़्सों ने मारना चाहा था, फिर वो दोनों अल्लाह की क़सम खाएं कि "हम दोनों की गवाही उन दोनों की गवाही से ज़्यादा बरहक़ है, और हमने कोई ज़्यादती नहीं की है, बेशक फिर तो हम ज़ालिम ठहरेंगे!"

108. इसमें इसका ज़्यादा इमकान है कि वो ठीक-ठीक गवाही देंगे, या डरेंगे कि उनकी क़समों के बाद फिर क़समें ली जाएंगी, अल्लाह का डर रखो और सुनो। अल्लाह उन लोगों को राह नहीं दिखाता जो पाबंदियों का पास व लिहाज़ नहीं रखते।

109. जिस दिन अल्लाह रसूलों को इकट्ठा करेगा, फिर कहेगा, "तुम्हारी क्या पज़ीराई हुई?" वो कहेंगे, "हमें नहीं मालूम; ग़ैब की बातों का जानने वाला तू ही है!"

110. जब अल्लाह कहेगा, "ऐ ईसा इब्ने मरयम! मेरी उस नवाज़िश को याद करो जो तुमपर और तुम्हारी मां पर हुई है, जबकि मैंने रूहुलक़ुदुस से तुम्हारी मदद की, तुम गहवारे में भी लोगों से बात करते थे, और बड़ी उम्र को पहुंच कर भी; और याद करो जबकि मैंने तुम्हें किताब व हिकमत

इलल्लाहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न् फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (105)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू शहादतु बैनिकुम् इज़ा ह-ज़-र अ-ह-दकुमुल्मौतु हीनल्-वसिय्यतिस्नानि ज़वा अ़द्लिम् मिन्कुम् औ आख़रानि मिन् ग़ैरिकुम् इन अन्तुम् ज़रब्तुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-असाबत्कुम् मुसीबतुल्मौति, तह्बिसूनहुमा मिम्-बअ़्दिस्सलाति फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि इनिर्तब्तुम् ला नश्तरी बिही स-मनंव्-व लौ का-न ज़ा क़ुर्बा व ला नक्तुमु शहा-दतल्लाहि इन्ना इज़ल् लमिनल्-आसिमीन (106)

फ़-इन् अ़ुसि-र अ़ला अन्नहुमस्तहक़्क़ा इस्मन् फ़-आख़रानि यक़ूमानि मक़ा-महुमा मिनल्लज़ीनस्-तहक़्-क़ अ़लैहिमुल्-औलयानि फ़युक़्सिमानि बिल्लाहि ल-शहादतुना अहक़्क़ु मिन् शहादतिहिमा व मअ़्तदैना इन्ना इज़ल् लमिनज़्ज़ालिमीन (107)

ज़ालि-क अद्ना अंय्यअ्तू बिश्शहा-दति अ़ला वज्हिहा औ यख़ाफ़ू अन् तुरद्-द ऐमानुम् बअ़्-द ऐमानिहिम्, वत्तक़ुल्ला-ह वस्मअ़ू, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल् फ़ासिक़ीन (108) ●

यौ-म यज्मअ़ुल्लाहुर्रुसु-ल फ़-यक़ूलु माज़ा उजिब्तुम्, क़ालू ला अ़िल्-म लना, इन्न-क अन्-त अ़ल्लामुल्-ग़ुयूब (109)

इज़् क़ालल्लाहु या अ़ीसब्-न मर्यमज़्कुर् निअ़्मती अ़लै-क व अ़ला वालिदति-क ● इज़् अय्यत्तु-क बिरूहिल्क़ुदुसि, तुकल्लिमुन्ना-स फ़िल्महिद व कह्लन् व इज़् अ़ल्लम्तुकल्-

إِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٠٥
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا شَهَادَةُ بَيْنِكُمْ
اِذَا حَضَرَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ حِيْنَ
الْوَصِيَّةِ اثْنٰنِ ذَوَا عَدْلٍ مِّنْكُمْ اَوْ
اٰخَرٰنِ مِنْ غَيْرِكُمْ اِنْ اَنْتُمْ ضَرَبْتُمْ
فِي الْاَرْضِ فَاَصَابَتْكُمْ مُّصِيْبَةُ الْمَوْتِ ؕ
تَحْبِسُوْنَهُمَا مِنْۢ بَعْدِ الصَّلٰوةِ فَيُقْسِمٰنِ
بِاللّٰهِ اِنِ ارْتَبْتُمْ لَا نَشْتَرِيْ بِهٖ ثَمَنًا
وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۙ وَلَا نَكْتُمُ شَهَادَةَ
اللّٰهِ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الْاٰثِمِيْنَ ۝١٠٦
فَاِنْ عُثِرَ عَلٰٓى اَنَّهُمَا اسْتَحَقَّآ اِثْمًا
فَاٰخَرٰنِ يَقُوْمٰنِ مَقَامَهُمَا مِنَ الَّذِيْنَ
اسْتَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْاَوْلَيٰنِ فَيُقْسِمٰنِ بِاللّٰهِ
لَشَهَادَتُنَآ اَحَقُّ مِنْ شَهَادَتِهِمَا وَمَا
اعْتَدَيْنَآ ۖ اِنَّآ اِذًا لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠٧
ذٰلِكَ اَدْنٰٓى اَنْ يَّاْتُوْا بِالشَّهَادَةِ عَلٰى
وَجْهِهَآ اَوْ يَخَافُوْٓا اَنْ تُرَدَّ اَيْمَانٌۢ بَعْدَ
اَيْمَانِهِمْ ؕ وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاسْمَعُوْا ؕ وَاللّٰهُ
ع لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝١٠٨
يَوْمَ يَجْمَعُ اللّٰهُ الرُّسُلَ فَيَقُوْلُ مَاذَآ
اُجِبْتُمْ ؕ قَالُوْا لَا عِلْمَ لَنَا ؕ اِنَّكَ اَنْتَ
عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝١٠٩
اِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ اذْكُرْ
نِعْمَتِيْ عَلَيْكَ وَعَلٰى وَالِدَتِكَ ۘ اِذْ
اَيَّدْتُّكَ بِرُوْحِ الْقُدُسِ ۣ تُكَلِّمُ
النَّاسَ فِي الْمَهْدِ وَكَهْلًا ۚ وَاِذْ عَلَّمْتُكَ

الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ وَالتَّوْرٰىةَ وَالْاِنْجِيْلَ ۚ
وَاِذْ تَخْلُقُ مِنَ الطِّيْنِ كَهَيْـَٔةِ الطَّيْرِ
بِاِذْنِيْ فَتَنْفُخُ فِيْهَا فَتَكُوْنُ طَيْرًاۢ بِاِذْنِيْ
وَتُبْرِئُ الْاَكْمَهَ وَالْاَبْرَصَ بِاِذْنِيْ ۚ
وَاِذْ تُخْرِجُ الْمَوْتٰى بِاِذْنِيْ ۚ وَاِذْ كَفَفْتُ
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ عَنْكَ اِذْ جِئْتَهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ
اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١١٠
وَاِذْ اَوْحَيْتُ اِلَى الْحَوَارِيّٖنَ اَنْ اٰمِنُوْا
بِيْ وَبِرَسُوْلِيْ ۚ قَالُوْٓا اٰمَنَّا وَاشْهَدْ
بِاَنَّنَا مُسْلِمُوْنَ ۝١١١
اِذْ قَالَ الْحَوَارِيُّوْنَ يٰعِيْسَى ابْنَ
مَرْيَمَ هَلْ يَسْتَطِيْعُ رَبُّكَ اَنْ يُّنَزِّلَ
عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ ۗ قَالَ اتَّقُوا اللّٰهَ
اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١١٢
قَالُوْا نُرِيْدُ اَنْ نَّاْكُلَ مِنْهَا وَتَطْمَىِٕنَّ
قُلُوْبُنَا وَنَعْلَمَ اَنْ قَدْ صَدَقْتَنَا
وَنَكُوْنَ عَلَيْهَا مِنَ الشّٰهِدِيْنَ ۝١١٣
قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ اللّٰهُمَّ رَبَّنَآ
اَنْزِلْ عَلَيْنَا مَآئِدَةً مِّنَ السَّمَآءِ تَكُوْنُ
لَنَا عِيْدًا لِّاَوَّلِنَا وَاٰخِرِنَا وَاٰيَةً مِّنْكَ ۚ
وَارْزُقْنَا وَاَنْتَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١٤
قَالَ اللّٰهُ اِنِّيْ مُنَزِّلُهَا عَلَيْكُمْ ۚ فَمَنْ
يَّكْفُرْ بَعْدُ مِنْكُمْ فَاِنِّيْٓ اُعَذِّبُهٗ عَذَابًا
لَّآ اُعَذِّبُهٗٓ اَحَدًا مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝١١٥
وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ
ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَاُمِّيَ

किता-ब वल्हिक्म-त वत्तौरा-त वल्इन्जी-ल व इज़् तख़्लुक़ु मिनत्तीनि कहै-अतित्तैरि बि-इज़्नी फ़तन्फ़ुख़ु फ़ीहा फ़-तकूनु तैरम् बि-इज़्नी व तुब्रिउल्-अक्म-ह वल्अब्र-स बि-इज़्नी व इज़् तुख़्रिजुल्मौता बि-इज़्नी व इज़् कफ़फ़्तु बनी इस्राई-ल अ़न्-क इज़् जिअ्तहुम् बिल्बय्यिनाति फ़क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम् मुबीन (110)

व इज़् औहैतु इलल्-हवारिय्यी-न अन् आमिनू बी व बि-रसूली क़ालू आमन्ना वश्हद् बिअन्नना मुस्लिमून (111)

इज़् क़ालल्-हवारिय्यू-न या ईसब्-न मर्य-म हल् यस्ततीअु रब्बु-क अंय्युनज़्ज़ि-ल अ़लैना माइ-दतम् मिनस्समा-इ, क़ालत्तक़ुल्ला-ह इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (112)

क़ालू नुरीदु अन् नअ्कु-ल मिन्हा व तत्मइन्-न क़ुलूबुना व नअ्ल-म अन् क़द् सदक़्तना व नकू-न अ़लैहा मिनश्शाहिदीन ● (113)

क़ा-ल ईसब्नु मर्यमल्लाहुम्-म रब्बना अन्ज़िल् अ़लै माइ-दतम् मिनस्समा-इ तकूनु लना ईदल् लि-अव्वलिना व आख़िरिना व आयतम्-मिन्-क वर्ज़ुक़्ना व अन्-त ख़ैरुर्राज़िक़ीन (114)

क़ालल्लाहु इन्नी मुनज़्ज़िलुहा अ़लैकुम् फ़-मंय्यक्फ़ुर् बअ्दु मिन्कुम् फ़-इन्नी उअ़ज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबल्-ला उअ़ज़्ज़िबुहू अ-हदम् मिनल्-आलमीन (115) ●

व इज़् क़ालल्लाहु या ईसब्-न मर्य-म अ-अन्-त क़ुल्-त लिन्नासित्तख़िज़ूनी व उम्मि-य

और तौरात व इंजील की तालीम दी थी; और याद करो जब तुम मेरे हुक्म से मिट्टी के परिन्दे का ख़ाका बनाते थे, फिर उसमें फूंक मारते थे, तो वह मेरे हुक्म से परवाज़ करनेवाला हो जाता था; और तुम मेरे हुक्म से अंधे और कोढ़ी को अच्छा कर देते थे, और जबकि तुम मेरे हुक्म से मुर्दों को ज़िन्दा निकाल खड़ा करते थे, और याद करो जबकि मैंने तुमसे इसराइलियों को रोके रखा जबकि तुम उनके पास खुली निशानियां लेकर पहुंचे थे, तो उनमें से जो काफ़िर थे उन्होंने कहा, "यह तो बस खुला जादू है!"

111. और याद करो जबकि मैंने हवारियों के दिल में डाला कि "मुझ पर और मेरे रसूल पर ईमान लाओ" तो उन्होंने कहा, "हम ईमान ले आए और तुम गवाह रहो कि हम मुस्लिम हैं।"

112. और याद करो जब हवारियों ने कहा, "ऐ ईसा इब्ने मरयम, क्या तुम्हारा ख़ुदावन्द आसमान से खाने से भरा ख़्वान (थाल) हमपर उतार सकता है?" कहा, "अल्लाह से डरो, अगर तुम मोमिन हो"।

113. वो बोले, "हम चाहते हैं कि उसमें से खाएं और हमारे दिल मुतमइन हों; और हम जान लें कि तुमने हमसे सच कहा; और हम उसपर गवाह रहें।"

114. ईसा इब्ने मरयम ने कहा, "ऐ अल्लाह हमारे रब, हमपर आसमान से खाने से भरा हुआ ख़्वान (थाल) उतार कि यह हमारे लिए और हमारे अगलों और हमारे पिछलों के लिए ईद और तेरी तरफ़ से एक निशानी हो। और हमें रिज़्क़ दे, तू बेहतरीन राज़िक़ है।"

115. अल्लाह ने कहा, "मैं उसे तुमपर उतार दूंगा; फिर उसके बाद तुममें से जो कुफ़्र करेगा, तो मैं ज़रूर उसे वह अज़ाब दूंगा जो सारे जहां में किसी को न दूंगा।"

116. और याद करो जब अल्लाह कहेगा, "ऐ ईसा इब्ने मरयम, क्या तुमने लोगों से कहा था कि अल्लाह

के सिवा दो और माबूद मुझे और मेरी मां को बना लो?" वह कहेगा, "अज़मत है तेरी! मुझसे यह नहीं हो सकता कि मैं ऐसी बात कहूं जिसका मुझे कुछ भी हक़ नहीं पहुंचता। अगर मैंने यह कहा होता तो तुझे तो मालूम ही होता, जो कुछ मेरे जी में है तुझे उसकी भी ख़बर है, मगर मैं नहीं जानता जो तेरे जी में है; यक़ीनन तू ही है जो ग़ैब की बातों को ख़ूब जानता है।

117. मैंने उनसे उसके सिवा और कुछ नहीं कहा जिसका तूने मुझे हुक्म दिया था 'यह कि अल्लाह की बन्दगी करो जो मेरा भी रब है और तुम्हारा भी रब है'। और जब तक मैं उनमें रहा, उनकी ख़बर रखता था; फिर जब तूने मुझे उठा लिया, तो फिर तू ही उन पर निगरां रहा; तू तो हर चीज का गवाह है।

118. अगर तू उन्हें अज़ाब दे, तो वो तेरे ही बन्दे हैं; और अगर तू उन्हें बख़्श दे, तो बेशक तू ग़ालिब, निहायत हिकमत वाला है।

119. अल्लाह कहेगा, "यह वह दिन है कि सच्चों को उनकी सच्चाई नफ़ा देगी। उनके लिए ऐसे बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उनमें वो हमेशा रहेंगे, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ और वो उससे राज़ी हुए; यही सबसे बड़ी कामयाबी है।"

120. आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान है सब पर अल्लाह ही की बादशाही है, और उसे हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

सूरह अल-अनआम मक्की

(आयतें 165, रुकूआत 20)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और तारीकियां और रौशनी रखी; फिर भी अहले कुफ़्र दूसरों को अपने रब के बराबर ठहराते हैं।

2. वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर एक मुद्दत ठहरा दी और एक और मुद्दत-ए-मुक़र्ररा उसके

इलाहैनि मिन् दूनिल्लाहि, क़ा-ल सुब्हान-क मा यकूनु ली अन् अक़ू-ल मा लै-स ली बिहक़्क़िन्, इन् कुन्तु क़ुल्तुहू फ़-क़द् अलिम्तहू तअ्लमु मा फ़ी नफ़्सी व ला अअ्लमु मा फ़ी नफ़्सि-क, इन्न-क अन्-त अल्लामुल-ग़ुयूब (116)

मा क़ुल्तु लहुम् इल्ला मा अमर्तनी बिही अनिअ्बुदुल्ला-ह रब्बी व रब्बकुम् व कुन्तु अलैहिम् शहीदम् मा दुम्तु फ़ीहिम् फ़-लम्मा तवफ़्फ़ैतनी कुन्-त अन्तर्रक़ी-ब अलैहिम्, व अन्-त अला कुल्लि शैइन् शहीद (117)

इन् तुअ़ज़्ज़िब्हुम् फ़-इन्नहुम् अ़िबादु-क व इन् तग़्फ़िर् लहुम् फ़-इन्न-क अन्तल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (118)

क़ालल्लाहु हाज़ा यौमु यन्फ़अुस्सादिक़ी-न सिद्क़ुहुम्, लहुम् जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल् अ़ज़ीम (119)

लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा फ़ीहिन्-न, व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (120) ●

6 सूरतुल अन्आमि 55
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 12935
अक्षर, 3100 शब्द 165 आयतें और
20 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व ज-अ़लज़्-ज़ुलुमाति वन्नू-र, सुम्मल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् यअ्दिलून (1)

हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् तीनिन् सुम्-म क़ज़ा अ-जलन्, व अ-जलुम् मुसम्मन् अ़िन्दहू सुम्-म

إِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۚ قَالَ سُبْحٰنَكَ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ اَنْ اَقُوْلَ مَا لَيْسَ لِيْ ۚ بِحَقٍّ ۚ اِنْ كُنْتُ قُلْتُهٗ فَقَدْ عَلِمْتَهٗ ۚ تَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِيْ وَلَآ اَعْلَمُ مَا فِيْ نَفْسِكَ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ (١١٦)

مَا قُلْتُ لَهُمْ اِلَّا مَآ اَمَرْتَنِيْ بِهٖٓ اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبَّكُمْ ۚ وَكُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ ۚ وَاَنْتَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ (١١٧)

اِنْ تُعَذِّبْهُمْ فَاِنَّهُمْ عِبَادُكَ ۚ وَاِنْ تَغْفِرْ لَهُمْ فَاِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (١١٨)

قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ ۚ لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۚ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (١١٩)

لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا فِيْهِنَّ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١٢٠)

سُوْرَةُ الْاَنْعَامِ مَكِّيَّةٌ رُكُوْعَاتُهَا ٢٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَجَعَلَ الظُّلُمٰتِ وَالنُّوْرَ ۚ ثُمَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ (١)

هُوَ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ طِيْنٍ ثُمَّ قَضٰٓى اَجَلًا ۚ وَاَجَلٌ مُّسَمًّى عِنْدَهٗ ثُمَّ

यहां तयशुदा है; फिर भी तुम शक करते हो।

3. वही अल्लाह है आसमानों में भी और ज़मीन में भी; वह तुम्हारे छुपे को भी जानता है और तुम्हारे खुले को भी, और वह उसको भी जानता है जो कुछ तुम कमाते हो।

4. हाल यह है कि उनके रब की निशानियों में से कोई निशानी भी उनके पास ऐसी नहीं आई जिससे उन्होंने मुंह न मोड़ा हो।

5. उन्होंने तो हक़ को झुटला दिया जबकि वह उनके पास आया, पस जल्द ही उसके बारे में उन्हें ख़बरें मिल जाएंगी जिसका वो मज़ाक़ उड़ाते रहे हैं।

6. क्या उन्होंने नहीं देखा कि उनसे पहले कितनी ही नसलों को हम हलाक कर चुके हैं, उन्हें हमने ज़मीन में ऐसा जमाव बख़्शा था, जो जमाव तुम्हें नहीं बख़्शा, और उन पर हमने आसमान को ख़ूब बरसता छोड़ा था, और उनके नीचे नहरें जारी कीं, तो हमने उन्हें उनके गुनाहों के सबब हलाक किया और उनके बाद दूसरी नसलों को उठाया?

7. और अगर हम तुम्हारे ऊपर काग़ज़ में लिखी किताब भी उतार देते कि वो उसे अपने हाथों से छू भी लेते, तब भी जिन्हें इनकार है वो यही कहते कि "यह तो बस एक खुला हुआ जादू है!"

8. वो तो कहते हैं कि "इस पर कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं उतरा?" हालांकि अगर हम फ़रिश्ता उतारते तो काम ही तमाम हो जाता, फिर उन्हें कोई मुहलत ही न मिलती।

9. यह बात भी है कि अगर हम उसे फ़रिश्ता बनाते, तो उसे आदमी ही बनाते, इस तरह उन्हें उसी शुबहा में डाल देते जिस शुबहा में वो इस वक़्त मुबतला हैं।

10. तुमसे पहले कितने ही रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया जा चुका है; आख़िरकार जिन लोगों ने उनका मज़ाक़ उड़ाया था उन्हें उसी ने आ घेरा जिसपर वो मज़ाक़ उड़ाते थे।

11. कह दो कि "ज़मीन में चल-फिर कर देखो कि झुटलाने वालों का क्या अंजाम हुआ"।

अन्तुम् तम्तरून (2)

व हुवल्लाहु फ़िस्समावाति व फ़िल्अर्ज़ि, यअ्लमु सिर्रकुम् व जह्रकुम् व यअ्लमु मा तक्सिबून (3)

व मा तअ्तीहिम् मिन् आयतिम् मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अ़न्हा मुअ्रिज़ीन (4)

फ़-क़द् कज़्ज़बू बिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् फ़सौ-फ़ यअ्तीहिम् अम्बा-उ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (5)

अलम् यरौ कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निम् मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि मा लम् नुमक्किल्लकुम् व अर्सल्नस्समा-अ अ़लैहिम् मिद्रारंव्-व जअ़ल्नल्-अन्हा-र तज्री मिन् तह्तिहिम् फ़-अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अन्शअ्ना मिम्-बअ्दिहिम् क़र्नन् आख़रीन (6)

व लौ नज़्ज़ल्ना अ़लै-क किताबन् फ़ी क़िर्तासिन् फ़-ल-मसूहु बिऐदीहिम् लक़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम् मुबीन (7)

व क़ालू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि म-लकुन्, व लौ अन्ज़ल्ना म-लकल् लक़ुज़ियल्-अम्रु सुम्-म ला युन्ज़रून (8)

व लौ जअ़ल्नाहु म-लकल् ल-जअ़ल्नाहु रजुलंव्-व ल-लबस्ना अ़लैहिम् मा यल्बिसून (9)

व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरुसुलिम्-मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (10) ●

क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि सुम्मन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल् मुकज़्ज़िबीन (11)

اَنْتُمْ تَمْتَرُوْنَ ۝٢

وَهُوَ اللّٰهُ فِی السَّمٰوٰتِ وَفِی الْاَرْضِ ۭ
یَعْلَمُ سِرَّكُمْ وَ جَهْرَكُمْ وَ یَعْلَمُ
مَا تَكْسِبُوْنَ ۝٣

وَمَا تَاْتِیْهِمْ مِّنْ اٰیَةٍ مِّنْ اٰیٰتِ رَبِّهِمْ
اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِیْنَ ۝٤

فَقَدْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۭ
فَسَوْفَ یَاْتِیْهِمْ اَنْۢبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ
یَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٥

اَلَمْ یَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ
قَرْنٍ مَّكَّنّٰهُمْ فِی الْاَرْضِ مَا لَمْ نُمَكِّنْ
لَّكُمْ وَاَرْسَلْنَا السَّمَآءَ عَلَیْهِمْ مِّدْرَارًا ۠
وَّجَعَلْنَا الْاَنْهٰرَ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهِمْ
فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ وَاَنْشَاْنَا مِنْۢ
بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِیْنَ ۝٦

وَلَوْ نَزَّلْنَا عَلَیْكَ كِتٰبًا فِیْ قِرْطَاسٍ
فَلَمَسُوْهُ بِاَیْدِیْهِمْ لَقَالَ الَّذِیْنَ
كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِیْنٌ ۝٧

وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَیْهِ مَلَكٌ ۭ وَلَوْ
اَنْزَلْنَا مَلَكًا لَّقُضِیَ الْاَمْرُ ثُمَّ
لَا یُنْظَرُوْنَ ۝٨

وَلَوْ جَعَلْنٰهُ مَلَكًا لَّجَعَلْنٰهُ رَجُلًا
وَّلَلَبَسْنَا عَلَیْهِمْ مَّا یَلْبِسُوْنَ ۝٩

وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ فَحَاقَ بِالَّذِیْنَ
ع سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠

قُلْ سِیْرُوْا فِی الْاَرْضِ ثُمَّ انْظُرُوْا
كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِیْنَ ۝١١

12. कहोः "आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है वह किसका है?" कह दोः "अल्लाह ही का है!" उसने रहमत को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है। यक़ीनन वह तुम्हें क़ियामत के दिन इकट्ठा करेगा जिसमें कोई शक नहीं है। जिन लोगों ने अपने आपको ख़सारे में डाला है, वही हैं जो ईमान नहीं लाते।

13. उसी का है जो भी रात में ठहरता है और दिन में (मुतहर्रिक रहता है); और वह सब सुनता, जानता है।

14. कहोः "क्या मैं अल्लाह के सिवा जो आसमानों और ज़मीन का ख़ालिक़ है, किसी और को सरपरस्त बना लूं, उसका हाल यह है कि वह खिलाता है और ख़ुद नहीं खाता?" कह दोः "मुझे हुक्म है कि सब से पहले मैं सरे तसलीम ख़म करूं और तुम हरगिज़ मुशरिक न होना।"

15. कहोः "अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूं, तो उस सूरत में मुझे एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है!"

16. उस दिन वह जिसपर से टल गया उसपर उसने रहम किया; और यही नुमायां कामयाबी है।

17. और अगर अल्लाह तुम्हें कोई तकलीफ़ पहुंचाए तो उसके सिवा कोई दूर करनेवाला नहीं; और अगर वह तुम्हें कोई भलाई पहुंचाए, तो उसे तो हर चीज़ पर क़ुदरत है।

18. उसे अपने बन्दों पर पूरा ज़ोर हासिल है, और वह साहिबे हिकमत, बाख़बर है।

19. कहोः "कौनसी चीज़ गवाही में सबसे बड़ी है?" कहोः "मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह है, और यह क़ुरआन मेरी तरफ़ वही किया गया है ताकि मैं इसके ज़रिए से तुम्हें ख़बरदार कर दूं और जिस किसी को यह पहुंचे (वह भी यह काम अन्जाम दे)। क्या तुम वाक़ई गवाही देते हो कि अल्लाह के साथ दूसरे माबूद भी हैं"? तुम कह दोः "मैं तो गवाही नहीं देता!" कहोः "वह तो बस अकेला माबूद है, और तुम जो शरीक ठहराते हो उससे मेरा कोई तअल्लुक़ नहीं"।

20. जिन लोगों को हमने किताब दी है वो उसे ऐसा पहचानते हैं जैसे

क़ुल-लिमम्-मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि क़ुल्-लिल्लाहि, क-त-ब अ़ला नफ़्सिहिर्रह्म-त, ल-यज्मअ़न्नकुम् इला यौमिल्-क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि, अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (12)

व लहू मा-स-क-न फ़िल्लैलि वन्नहारि, व हुवस्समीअुल् अ़लीम (13)

क़ुल् अग़ैरल्लाहि अत्तख़िज़ु वलिय्यन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि व हु-व युत्अिमु व ला युत्अमु, क़ुल् इन्नी उमिर्तु अन् अकू-न अव्व-ल मन् अस्ल-म व ला तकूनन्-न मिनल्मुश्रिकीन (14)

क़ुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (15)

मंय्युस्रफ़् अ़न्हु यौमइज़िन् फ़-क़द् रहि-महू, व ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्मुबीन (16)

व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि-फ़ लहू इल्ला हु-व, व इंय्यम्सस्-क बिख़ैरिन् फ़हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (17)

व हुवल्क़ाहिरु फ़ौ-क़ अ़िबादिही, व हुवल् हकीमुल्-ख़बीर (18)

क़ुल् अय्यु शैइन् अक्बरु शहा-दतन्, क़ुलिल्लाहु, शहीदुम् बैनी व बैनकुम्, व ऊहि-य इलय्-य हाज़ल् क़ुर्आनु लिउन्ज़ि-रकुम् बिही व मम्-ब-ल-ग़, अइन्नकुम् लतश्हदू-न अन्-न मअ़ल्लाहि आलि-हतन् उख़्रा, क़ुल् ला अश्हदु क़ुल् इन्नमा हु-व इलाहुंव्-वाहिदुंव्-व इन्ननी बरीउम् मिम्मा तुश्रिकून ● (19)

अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल् किता-ब यअ्रिफ़ूनहू

قُلْ لِّمَنْ مَّا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ قُلْ
لِّلّٰهِ كَتَبَ عَلٰى نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ لَيَجْمَعَنَّكُمْ
اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ اَلَّذِيْنَ
خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٢
وَلَهٗ مَا سَكَنَ فِى الَّيْلِ وَالنَّهَارِ
وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝١٣
قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَتَّخِذُ وَلِيًّا فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَهُوَ يُطْعِمُ وَلَا يُطْعَمُ قُلْ
اِنِّىْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَسْلَمَ
وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٤
قُلْ اِنِّىْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّىْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٥
مَنْ يُّصْرَفْ عَنْهُ يَوْمَئِذٍ فَقَدْ
رَحِمَهٗ وَذٰلِكَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝١٦
وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ
لَهٗٓ اِلَّا هُوَ وَاِنْ يَّمْسَسْكَ بِخَيْرٍ
فَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝١٧
وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَهُوَ
الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝١٨
قُلْ اَىُّ شَىْءٍ اَكْبَرُ شَهَادَةً قُلِ اللّٰهُ
شَهِيْدٌۢ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ وَاُوْحِىَ اِلَىَّ
هٰذَا الْقُرْاٰنُ لِاُنْذِرَكُمْ بِهٖ وَمَنْۢ
بَلَغَ اَئِنَّكُمْ لَتَشْهَدُوْنَ اَنَّ مَعَ
اللّٰهِ اٰلِهَةً اُخْرٰى قُلْ لَّآ اَشْهَدُ
قُلْ اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّاِنَّنِىْ
بَرِىْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝١٩
اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْرِفُوْنَهٗ

अपने बेटों को पहचानते हैं। जिन्होंने अपने आपको ख़सारे में डाला है, वही ईमान नहीं लाते।

21. और उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर इफ़्तिरा करके झूट घड़े, या उसकी आयतों को झुटलाए? बेशक ज़ालिम कामयाब होने के नहीं।

22. और उस दिन को याद करो जब हम उन सबको जमा करेंगे, फिर मुशरिकों से कहेंगे, "कहां हैं तुम्हारे ठहराए हुए शरीक जिनका तुम दावा किया करते थे"?

23. फिर उनका कोई फ़ितना बाक़ी न रहेगा, मगर यह कि वो कहेंगे, "अपने रब, अल्लाह की क़सम, हम मुश्रिक न थे"।

24. देखो ये कैसा अपने बारे में झूट बोले, और वह गुम होकर रह गया जो वो घड़ा करते थे।

25. और उनमें कुछ ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं, हालांकि हमने तो उनके दिलों पर परदे डाल रखे हैं कि वो उसे समझ न सकें, और उनके कानों में गिरानी कर दी है, और वो ख़्वाह हर एक निशानी देख लें, उसको मानेंगे नहीं, यहां तक कि जब तुम्हारे पास आ कर तुमसे झगड़ते हैं, तो कुफ़्र की रविश इख़्तियार करनेवाले कहते हैं, "यह तो बस अगले लोगों के अफ़साने हैं"।

26. और वो उससे दूसरों को रोकते हैं और ख़ुद भी उससे गुरेज़ करते हैं, वो तो बस अपने आपको हलाक कर रहे हैं, मगर उन्हें इसका शऊर नहीं।

27. और अगर तुम उस वक़्त देख सकते जब वो आग के पास खड़े किए जाएंगे, और कहेंगे, "ऐ काश! हम फिर लौटा दिए जाएं (कि मानें) और अपने रब की आयतों को न झुटलाएं, और मोमिन होकर रहें!"

28. (हरगिज़ नहीं;) बल्कि जो कुछ वो पहले छुपाया करते थे वह उनके सामने आ गया; अगर वो लौटा भी दिए जाएं, तो फिर वही कुछ करने

कमा यअ्रिफ़ू-न अब्ना-अहुम्, अल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (20) ●

व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्-ज़ालिमून (21)

व यौ-म नह्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्-म नक़ूलु लिल्लज़ी-न अश्रकू ऐ-न शु-रकाउ- कुमुल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अुमून (22)

सुम्-म लम् तकुन् फ़ित्नतुहुम् इल्ला अन् क़ालू वल्लाहि रब्बिना मा कुन्ना मुश्रिकीन (23)

उन्ज़ुर् कै-फ क-ज़बू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (24)

व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअु इलै-क व जअ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन्. व इंय्यरौ कुल्-ल आयतिल् ला युअ्मिनू बिहा, हत्ता इज़ा जाऊ-क युजादिलून-क यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल् अव्वलीन (25)

व हुम् यन्हौ-न अ़न्हु व यन्औ-न अ़न्हु व इंय्युह्लिकू-न इल्ला अन्फ़ु-सहुम् व मा यश्अुरून (26)

व लौ तरा इज़् वुक़िफ़ू अ़लन्नारि फ़क़ालू या-लैतना नुरद्दु व ला नुकज़्ज़ि-ब बिआयाति रब्बिना व नकू-न मिनल् मुअ्मिनीन (27)

बल् बदा लहुम् मा कानू युख़्फ़ू-न मिन् क़ब्लु, व लौ रुद्दू लआ़दू लिमा नुहू

كَمَايَعْرِفُوْنَ اَبْنَآءَهُمْ ۘ اَلَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٠﴾
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا اَوْكَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۗ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ
الظّٰلِمُوْنَ ﴿٢١﴾
وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ
لِلَّذِيْنَ اَشْرَكُوْٓا اَيْنَ شُرَكَآؤُكُمُ
الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٢٢﴾
ثُمَّ لَمْ تَكُنْ فِتْنَتُهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوْا
وَاللّٰهِ رَبِّنَا مَا كُنَّا مُشْرِكِيْنَ ﴿٢٣﴾
اُنْظُرْ كَيْفَ كَذَبُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَفْتَرُوْنَ ﴿٢٤﴾
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ وَجَعَلْنَا
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ وَفِيْٓ
اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۗ وَاِنْ يَّرَوْا كُلَّ اٰيَةٍ
لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۗ حَتّٰٓى اِذَا جَآءُوْكَ
يُجَادِلُوْنَكَ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ
هٰذَآ اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٢٥﴾
وَهُمْ يَنْهَوْنَ عَنْهُ وَيَنْـَٔوْنَ عَنْهُ ۚ
وَاِنْ يُّهْلِكُوْنَ اِلَّآ اَنْفُسَهُمْ وَمَا
يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾
وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ فَقَالُوْا
يٰلَيْتَنَا نُرَدُّ وَلَا نُكَذِّبَ بِاٰيٰتِ رَبِّنَا
وَنَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢٧﴾
بَلْ بَدَا لَهُمْ مَّا كَانُوْا يُخْفُوْنَ مِنْ
قَبْلُ ۗ وَلَوْ رُدُّوْا لَعَادُوْا لِمَا نُهُوْا

लगेंगे जिससे उन्हें रोका गया था; वो यक़ीनन झूटे हैं।

29. और वो कहते हैं, "जो कुछ है बस यही हमारी दुनिया की ज़िन्दगी है; हम फिर उठाए जाने वाले नहीं हैं।"

30. और अगर तुम देख सकते जब वो अपने रब के सामने खड़े किए जाएंगे! वह कहेगा, "क्या यह अमरे वाक़िया नहीं है"? कहेंगे, "क्यों नहीं, हमारे अपने रब की क़सम!" वह कहेगा, "अच्छा तो अब उस कुफ़्र व इनकार के बदले जो तुम करते रहे हो अज़ाब का मज़ा चखो"।

31. वो लोग ख़सारे में पड़ गए जिन्होंने अल्लाह की मुलाक़ात को झुटलाया, यहां तक कि जब अचानक उनपर वह घड़ी आ जाएगी तो वो कहेंगे "हाय! हमारी हसरत, उस तक़सीर (कोताही) पर जो इसके बारे में हमसे हुई!" और हाल यह होगा कि वो अपने बोझ अपनी पीठों पर उठाए होंगे; देखो कितना बुरा बार (बोझ) है जो ये उठाए हुए हैं।

32. दुनिया की ज़िन्दगी तो एक खेल और तमाशे के सिवा कुछ भी नहीं; अलबत्ता दार-ए आख़िरत उन लोगों के लिए बेहतर है जो डर रखते हैं। तो क्या तुम समझ से काम नहीं लेते?

33. हमें मालूम है कि जो कुछ वो कहते हैं वो तुम्हें रंजीदा कर जाता है; तो वो हक़ीक़त में तुम्हें नहीं झुटलाते बल्कि उन ज़ालिमों को तो अल्लाह की आयतों से इनकार है।

34. तुमसे पहले भी कितने ही रसूल झुटलाए जा चुके हैं, तो वो अपने झुटलाए जाने पर, और तकलीफ़ पहुंचाए जाने पर सब्र करते रहे, यहां तक कि उन्हें हमारी मदद पहुंच गई। कोई भी नहीं जो अल्लाह की बातों को बदल सके; तुम्हारे पास तो रसूलों की कुछ ख़बरें पहुंच ही चुकी हैं।

35. और अगर उनकी बेरुख़ी तुम पर गिरां गुज़रती है, तो अगर तुमसे हो सके कि ज़मीन में कोई सुरंग, या आसमान में कोई ज़ीना ढूंढ सको और उनके पास कोई निशानी ला दो, तो (ऐसा कर देखो), अगर अल्लाह चाहता तो उन्हें हिदायत पर जमा कर

अ़न्हु व इन्नहुम् लकाज़िबून (28)

व क़ालू इन् हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या व मा नह्नु बिमब्अूसीन (29)

व लौ तरा इज़् वुक़िफ़ू अ़ला रब्बिहिम्, क़ा-ल अलै-स हाज़ा बिल्हक़्क़ि, क़ालू बला व रब्बिना, क़ा-ल फ़ज़ूक़ुल-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (30) ●

क़द् ख़सिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिक़ा-इल्लाहि, हत्ता इज़ा जाअत्हुमुस्-सा-अ़तु बग़्-ततन् क़ालू या-हस्र-तना अ़ला मा फ़र्रत्ना फ़ीहा व हुम् यह्मिलू-न औज़ारहुम् अ़ला ज़ुहूरिहिम्, अला सा-अ मा यज़िरून (31)

व मल्हयातुद्दुन्या इल्ला लअ़िबुंव्-व लह्वुन्, व लद्दारुल्-आख़ि-रतु ख़ैरुल् लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न अ-फ़ला तअ्क़िलून (32)

क़द् नअ्लमु इन्नहू ल-यह्ज़ुनुकल्लज़ी यक़ूलू-न फ़-इन्नहुम् ला युकज़्ज़िबू-न-क व लाकिन्नज़्ज़ालिमी-न बिआयातिल्लाहि यज्हदून (33)

व ल-क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलुम् मिन् क़ब्लि-क फ़-स-बरू अ़ला मा कुज़्ज़िबू व ऊज़ू हत्ता अताहुम् नस्रुना व ला मुबद्दि-ल लि-कलिमातिल्लाहि व ल-क़द् जाअ-क मिन् न-बइल् मुर्सलीन (34)

व इन् का-न कबु-र अ़लै-क इअ्राज़ुहुम् फ़-इनिस्-ततअ्-त अन् तब्तग़ि-य न-फ़क़न् फ़िल्अर्ज़ि औ सुल्लमन् फ़िस्समा-इ फ़-तअ्तियहुम् बिआयतिन्, व लौ शाअल्लाहु ल-ज-म-अ़हुम् अ़लल्हुदा फ़ला तकूनन्-न मिनल्

عَنْهُ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ﴿٢٨﴾
وَقَالُوْٓا اِنْ هِيَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا
وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٢٩﴾
وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ ؕ قَالَ
اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ؕ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ؕ
قَالَ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ
ع تَكْفُرُوْنَ ﴿٣٠﴾
قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ ؕ
حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً
قَالُوْا يٰحَسْرَتَنَا عَلٰى مَا فَرَّطْنَا فِيْهَا ۙ وَهُمْ
يَحْمِلُوْنَ اَوْزَارَهُمْ عَلٰى ظُهُوْرِهِمْ ؕ
اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ ﴿٣١﴾
وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ؕ
وَلَلدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ
اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿٣٢﴾
قَدْ نَعْلَمُ اِنَّهٗ لَيَحْزُنُكَ الَّذِيْ يَقُوْلُوْنَ
فَاِنَّهُمْ لَا يُكَذِّبُوْنَكَ وَلٰكِنَّ الظّٰلِمِيْنَ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ ﴿٣٣﴾
وَلَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ قَبْلِكَ فَصَبَرُوْا
عَلٰى مَا كُذِّبُوْا وَاُوْذُوْا حَتّٰٓى اَتٰىهُمْ
نَصْرُنَا ۚ وَلَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ۚ وَلَقَدْ
جَآءَكَ مِنْ نَّبَاِى الْمُرْسَلِيْنَ ﴿٣٤﴾
وَاِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكَ اِعْرَاضُهُمْ
فَاِنِ اسْتَطَعْتَ اَنْ تَبْتَغِيَ نَفَقًا فِى
الْاَرْضِ اَوْ سُلَّمًا فِى السَّمَآءِ فَتَاْتِيَهُمْ
بِاٰيَةٍ ؕ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَمَعَهُمْ
عَلَى الْهُدٰى فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ

देता, लिहाज़ा तुम जज़बात से मग़लूब न हो।

36. मानते तो वही हैं जो सुनते हैं, रहे मुर्दे, तो अल्लाह उन्हें उठा खड़ा करेगा, फिर वो उसी की तरफ़ पलटेंगे।

37. वो यह भी कहते हैं कि "उसपर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी?" कह दो कि "अल्लाह को तो इसकी क़ुदरत हासिल है कि कोई निशानी उतार दे, लेकिन उनमें से अकसर जानते नहीं"।

38. ज़मीन में चलने-फिरनेवाली कोई भी मख़्लूक़ हो, या अपने दो बाज़ुओं से (आसमान में) उड़नेवाला कोई परिन्द, सब तुम्हारी ही जैसी उम्मतें हैं। हमने किताब में कोई भी चीज़ नहीं छोड़ी, फिर वो अपने रब ही की तरफ़ जमा किए जाएंगे।

39. जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया वो बहरे और गूंगे हैं, तारीकियों में पड़े हुए हैं। जिसे चाहे अल्लाह गुमराही में पड़ा रहने दे, और जिसे चाहे सीधे रास्ते पर लगा दे।

40. कहो: "क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर अल्लाह का अज़ाब तुमपर आ पड़े, या वह घड़ी तुम्हारे सामने आ जाए, तो क्या अल्लाह के सिवा किसी और को पुकारोगे, बोलो अगर तुम सच्चे हो?"

41. बल्कि पुकारते उसी को हो — फिर जिसके लिए तुम उसे पुकारते हो वह चाहता है तो उसे दूर भी कर देता है — और उन्हें भूल जाते हो जिन्हें शरीक ठहरा रहे होते हो।

42. तुमसे पहले कितनी ही उम्मतों की तरफ़ हम रसूल भेज चुके हैं, फिर हमने उन्हें तंगियों और मुसीबतों में डाला कि शायद वो आजिज़ी इख़्तियार करें;

43. जब हमारी तरफ़ से उनपर सख़्ती आई, तो फिर क्यों न उन्होंने आजिज़ी इख़्तियार की! लेकिन उनके दिल सख़्त हो गए, और जो कुछ वो कर रहे थे शैतान ने उसी को उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिया।

44. फिर जब वो उसको फ़रामोश कर बैठे जिसकी याददिहानी उन्हें कराई गई थी तो हमने उनपर हर चीज़ के दरवाज़े खोल दिए, यहां तक कि जो

जाहिलीन ● (35)

इन्नमा यस्तजीबुल्लज़ी-न यस्मअू-न, वल्मौता यब्‌असुहुमुल्लाहु सुम्-म इलैहि युर्जअून (36)

व क़ालू लौ ला नुज़्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम् मिर्रब्बिही, क़ुल् इन्नल्ला-ह क़ादिरुन् अ़ला अंय्युनज़्ज़ि-ल आयतंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (37)

व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला ताइरिंय्यतीरु बि-जनाहैहि इल्ला उ-ममुन् अम्सालुकुम्, मा फ़र्रत्ना फ़िल्किताबि मिन् शैइन् सुम्-म इला रब्बिहिम् युह्शरून (38)

वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना सुम्मुंव्-व बुक्मुन् फ़िज़्ज़ुलुमाति, मंय्य-शइल्लाहु युज़्लिल्हु, व मंय्यशअ् यज्अ़ल्हु अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम (39)

क़ुल् अ-रऐतकुम् इन् अताकुम् अ़ज़ाबुल्लाहि औ अतत्कुमुस्-सा-अ़तु अग़ैरल्लाहि तद्‌अू-न इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (40)

बल् इय्याहु तद्‌अू-न फ़-यक्शिफ़ु मा तद्‌अू-न इलैहि इन् शा-अ व तन्सौ-न मा तुश्रिकून (41) ●

व ल-क़द् अर्सल्ना इला उ-ममिम् मिन् क़ब्लि-क फ़-अख़ज़्नाहुम् बिल्बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ लअ़ल्लहुम् य-तज़र्रअून (42)

फ़लौ ला इज़् जाअहुम् बअ्सुना तज़र्रअू व लाकिन् क़-सत् क़ुलूबुहुम् व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु मा कानू यअ्मलून (43)

फ़-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही फ़तह्ना अ़लैहिम् अब्वा-ब कुल्लि शैइन्, हत्ता इज़ा

الْجٰهِلِيْنَ ۝٣٥
اِنَّمَا يَسْتَجِيْبُ الَّذِيْنَ يَسْمَعُوْنَ ؕ
وَالْمَوْتٰى يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ ثُمَّ اِلَيْهِ يُرْجَعُوْنَ ۝٣٦
وَقَالُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ قَادِرٌ عَلٰٓى اَنْ يُّنَزِّلَ
اٰيَةً وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٧
وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا طٰٓئِرٍ
يَّطِيْرُ بِجَنَاحَيْهِ اِلَّآ اُمَمٌ اَمْثَالُكُمْ ؕ
مَا فَرَّطْنَا فِى الْكِتٰبِ مِنْ شَىْءٍ ثُمَّ
اِلٰى رَبِّهِمْ يُحْشَرُوْنَ ۝٣٨
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا صُمٌّ وَّبُكْمٌ
فِى الظُّلُمٰتِ ؕ مَنْ يَّشَاِ اللّٰهُ يُضْلِلْهُ ؕ
وَمَنْ يَّشَاْ يَجْعَلْهُ عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٣٩
قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ
اَوْ اَتَتْكُمُ السَّاعَةُ اَغَيْرَ اللّٰهِ تَدْعُوْنَ ۚ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤٠
بَلْ اِيَّاهُ تَدْعُوْنَ فَيَكْشِفُ
مَا تَدْعُوْنَ اِلَيْهِ اِنْ شَآءَ وَتَنْسَوْنَ
مَا تُشْرِكُوْنَ ۝٤١
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ قَبْلِكَ
فَاَخَذْنٰهُمْ بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ
يَتَضَرَّعُوْنَ ۝٤٢
فَلَوْلَآ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَا تَضَرَّعُوْا
وَلٰكِنْ قَسَتْ قُلُوْبُهُمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ
الشَّيْطٰنُ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٤٣
فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖ فَتَحْنَا
عَلَيْهِمْ اَبْوَابَ كُلِّ شَىْءٍ ؕ حَتّٰٓى اِذَآ

कुछ उन्हें मिला था जब वो उसमें खूब मगन हो गए, तो अचानक हमने उन्हें पकड़ लिया तो क्या देखते हैं कि वो बिल्कुल मायूस हो कर रह गए।

45. इस तरह जड़ काट कर रख दी गई ज़ालिम लोगों की। तारीफ़ तो अल्लाह ही के लिए है जो सारे जहां का रब है।

46. कहो: "क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर अल्लाह तुम्हारी समाअत, और तुम्हारी आंखें छीन ले, और तुम्हारे दिलों पर मुहर लगा दे, तो अल्लाह के सिवा कौन माबूद है जो तुम्हें ये चीज़ें लाकर दे?" देखो कैसे हम निशानियां तरह-तरह से बयान करते हैं! फिर भी वो पहलू बचाएं जाते हैं।

47. कहो: "क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर अचानक या अलानिया तुमपर अल्लाह का अज़ाब आ जाए तो क्या ज़ालिम लोगों के सिवा कोई और हलाक होगा"?

48. हम तो रसूलों को महज़ बशारत देनेवाला, और ख़बरदार करनेवाले ही बनाकर भेजते रहे हैं; फिर जो ईमान लाए और इसलाह कर ले तो ऐसे लोगों के लिए न कोई ख़ौफ़ है और न वो रंजीदा होंगे।

49. रहे वो लोग जिन्होंने हमारी आयतों को झुठलाया, उन्हें अज़ाब पहुंचकर रहेगा, इसलिए कि वो नाफ़रमानी करते रहे हैं।

50. कह दो कि "मैं तुमसे यह नहीं कहता कि मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं, और न मैं ग़ैब को जानता हूं और न मैं तुमसे यह कहता हूं कि मैं कोई फ़रिश्ता हूं; मैं तो बस उसकी पैरवी करता हूं जो मेरी तरफ़ वह्यी की जाती है!" कहो: "क्या अंधा और आंखों वाला बराबर हो जाएंगे? तो क्या तुम ग़ौर व फ़िक्र से काम नहीं लेते?"

51. और तुम इसके ज़रिए से उन लोगों को इस बात से ख़बरदार कर दो, जो डरते हैं कि वो अपने रब के पास इस हाल में जमा होंगे कि उसके सिवा न तो उनका कोई हिमायती होगा और न कोई सिफ़ारिश करनेवाला; ताकि वो तक़वा इख़्तियार करें।

52. और जो लोग अपने रब को उसकी ख़ुशनूदी चाहते हुए सुबह व शाम पुकारते रहते हैं, ऐसे लोगों को न हटाना; उनके हिसाब की तुमपर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं है, और न तुम्हारे हिसाब की कोई ज़िम्मेदारी उनपर हैं,

फ़रिहू बिमा ऊतू अख़ज़्नाहुम् बग़्-ततन् फ़-इज़ा हुम् मुब्लिसून (44)

फ़क़ुति-अ दाबिरुल् क़ौमिल्लज़ी-न ज़-लमू, वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (45)

क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अ-ख़ज़ल्लाहु सम्अकुम् व अब्सारकुम् व ख़-त-म अला क़ुलूबिकुम् मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिही, उन्ज़ुर् कै-फ़ नुसर्रिफ़ुल्-आयाति सुम्-म हुम् यस्दिफ़ून (46)

क़ुल् अ-रऐतकुम् इन् अताकुम् अज़ाबुल्लाहि बग़्-ततन् औ जह्-रतन् हल् युह्लकु इल्लल् क़ौमुज़्ज़ालिमून (47)

व मा नुर्सिलुल्-मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न फ़-मन् आम-न व अस्ल-ह फ़ला ख़ौफ़ुन् अलैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (48)

वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना यमस्सुहुमुल्-अज़ाबु बिमा कानू यफ़्सुक़ून (49)

क़ुल् ला अक़ूलु लकुम् अिन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ्लमुल्ग़ै-ब व ला अक़ूलु लकुम् इन्नी म-लकुन् इन् अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्-य, क़ुल् हल् यस्तविल्-अअ्मा वल्बसीरु, अ-फ़ला त-तफ़क्करून (50) ●

व अन्ज़िर् बिहिल्लज़ी-न यख़ाफ़ू-न अंय्युह्शरू इला रब्बिहिम् लै-स लहुम् मिन् दूनिही वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअुल् लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (51)

व ला तत्रुदिल्लज़ी-न यद्अू-न रब्बहुम् बिल्ग़दाति वल्अशिय्यि युरीदू-न वज्हहू, मा अलै-क मिन् हिसाबिहिम् मिन् शैइंव्-व मा मिन् हिसाबि-क अलैहिम् मिन् शैइन्

فَرِحُوْا بِمَآ اُوْتُوْٓا اَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً
فَاِذَا هُمْ مُّبْلِسُوْنَ ﴿٤٤﴾
فَقُطِعَ دَابِرُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ؕ
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٤٥﴾
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَخَذَ اللّٰهُ سَمْعَكُمْ
وَاَبْصَارَكُمْ وَخَتَمَ عَلٰى قُلُوْبِكُمْ مَّنْ اِلٰهٌ
غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِهٖ ؕ اُنْظُرْ كَيْفَ نُصَرِّفُ
الْاٰيٰتِ ثُمَّ هُمْ يَصْدِفُوْنَ ﴿٤٦﴾
قُلْ اَرَءَيْتَكُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُ اللّٰهِ بَغْتَةً
اَوْ جَهْرَةً هَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٤٧﴾
وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ
وَمُنْذِرِيْنَ ۚ فَمَنْ اٰمَنَ وَاَصْلَحَ
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ﴿٤٨﴾
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا يَمَسُّهُمُ الْعَذَابُ
بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿٤٩﴾
قُلْ لَّآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَآئِنُ اللّٰهِ
وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ اِنِّيْ
مَلَكٌ ۚ اِنْ اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ؕ
قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ؕ
ع اَفَلَا تَتَفَكَّرُوْنَ ﴿٥٠﴾
وَاَنْذِرْ بِهِ الَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ اَنْ يُّحْشَرُوْٓا
اِلٰى رَبِّهِمْ لَيْسَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ وَلِيٌّ
وَّلَا شَفِيْعٌ لَّعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿٥١﴾
وَلَا تَطْرُدِ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ
بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِيِّ يُرِيْدُوْنَ وَجْهَهٗ ؕ
مَا عَلَيْكَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ شَيْءٍ وَّمَا
مِنْ حِسَابِكَ عَلَيْهِمْ مِّنْ شَيْءٍ

कि तुम उन्हें दूर करो फिर ज़ालिमों में से हो जाओ।

53. और इसी तरह हमने उनमें एक को दूसरे के ज़रिए से आज़माया कि वो कहें, "क्या यही वो लोग हैं जिनपर अल्लाह ने हम में से चुन कर एहसान फ़रमाया है?" क्या अल्लाह शुक्रगुज़ार लोगों से बख़ूबी वाक़िफ़ नहीं है?

54. और जब तुम्हारे पास वो लोग आएं जो हमारी आयतों पर ईमान रखते हैं, तो कहो, "सलाम हो तुमपर। तुम्हारे रब ने रहमत को अपने ऊपर लाज़िम कर लिया है कि तुममें जो कोई नादानी से कोई बुराई कर बैठे, फिर उसके बाद तौबा कर ले और इसलाह कर ले, तो वह बड़ा बख़्शने वाल, निहायत मेहरबान है।"

55. इसी तरह हम अपनी आयतें खोल-खोल कर बयान करते हैं, (ताकि तुम्हें मोमिनों की राह मालूम हो जाए) और इसलिए कि मुजरिमों की राह वाज़ेह हो जाए।

56. कह दो: "मुझे इससे रोका गया है कि मैं उनकी बन्दगी करूं जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो।" कहो: "मैं तुम्हारी ख़्वाहिशात की पैरवी नहीं करता, क्योंकि उस सूरत में तो मैं रास्ते से भटक जाऊंगा और हिदायतयाब लोगों में से न रहूंगा।"

57. कह दो: "मैं अपने रब की तरफ़ से एक रौशन दलील पर क़ायम हूं, और तुमने उसे झुटला दिया है। जिसके लिए तुम जल्दी मचा रहे हो वह मेरे पास नहीं है; फ़ैसले का इख़्तियार तो बस अल्लाह ही को है। वह हक़ बात बयान करता है और वही सबसे अच्छा फ़ैसला करने वाला है"।

58. कहो, "जिसकी तुम्हें जल्दी पड़ी हुई है वह कहीं अगर मेरे पास होती तो मेरे और तुम्हारे दरमियान कभी का फ़ैसला हो चुका होता; अल्लाह तो ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।

59. उसी के पास ग़ैब की कुंजियां हैं जिनकी उसके सिवा किसी को ख़बर नहीं। और वह जानता है जो कुछ ख़ुश्की और तरी में है; जो पत्ता भी गिरता है, उसे उसकी ख़बर रहती है। और ज़मीन की तारीकियों में कोई भी दाना और कोई भी ख़ुश्की और तर चीज़ ऐसी नहीं जो एक वाज़ेह किताब में मौजूद न हो।

फ़-तत्रु-दहुम् फ़-तकू-न मिनज़्ज़ालिमीन (52)

व कज़ालि-क फ़तन्ना बअ्ज़हुम् बिबअ्ज़िल्-लियक़ूलू अ-हाउला-इ मन्नल्लाहु अ़लैहिम् मिम्-बैनिना, अलैसल्लाहु बिअअ्-ल-म बिश्शाकिरीन (53)

व इज़ा जा-अकल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिआयातिना फ़कुल् सलामुन् अ़लैकुम् क-त-ब रब्बुकुम् अ़ला नफ़्सिहिर्रह्म-त अन्नहू मन् अ़मि-ल मिन्कुम् सूअम् बि-जहालतिन् सुम्-म ता-ब मिम्-बअ्दिही व अस्ल-ह फ़-अन्नहू ग़फ़ूरुर्रहीम (54)

व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व लितस्तबी-न सबीलुल्-मुज्रिमीन (55) ●

कुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्बुदल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि, कुल् ला अत्तबिअु अह्वा-अकुम् क़द् ज़लल्तु इज़ंव्-व मा अ-न मिनल् मुह्तदीन (56)

कुल् इन्नी अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बी व कज़्ज़ब्तुम् बिही, मा अिन्दी मा तस्तअ्जिलू-न बिही, इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि, यक़ुस्सुल्हक़्-क़ व हु-व ख़ैरुल्-फ़ासिलीन (57)

कुल् लौ अन्-न अिन्दी मा तस्तअ्जिलू-न बिही लक़ुज़ियल्-अम्रु बैनी व बैनकुम्, वल्लाहु अअ्लमु बिज़्ज़ालिमीन (58)

व अिन्दहू मफ़ातिहुल्ग़ैबि ला यअ्लमुहा इल्ला हु-व, व यअ्लमु मा फ़िल्बर्रि वल्बहरि, व मा तस्क़ुतु मिंव्-व र-क़तिन् इल्ला यअ्लमुहा व ला हब्बतिन् फ़ी ज़ुलुमातिल्-अर्ज़ि व ला रत्बिंव्-व ला याबिसिन् इल्ला फ़ी किताबिम् मुबीन (59)

فَتَطْرُدَهُمْ فَتَكُوْنَ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
وَكَذٰلِكَ فَتَنَّا بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ لِّيَقُوْلُوْٓا
اَهٰٓؤُلَآءِ مَنَّ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ مِّنْۢ بَيْنِنَا ؕ
اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِالشّٰكِرِيْنَ ۝
وَاِذَا جَآءَكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِنَا
فَقُلْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ كَتَبَ رَبُّكُمْ عَلٰى
نَفْسِهِ الرَّحْمَةَ ۙ اَنَّهٗ مَنْ عَمِلَ مِنْكُمْ
سُوْٓءًا ۢ بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابَ مِنْۢ بَعْدِهٖ
وَاَصْلَحَ فَاَنَّهٗ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝
وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلِتَسْتَبِيْنَ
سَبِيْلُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝ ع
قُلْ اِنِّيْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ
تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قُلْ لَّآ اَتَّبِعُ
اَهْوَآءَكُمْ ۙ قَدْ ضَلَلْتُ اِذًا وَّمَآ اَنَا
مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ۝
قُلْ اِنِّيْ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَكَذَّبْتُمْ
بِهٖ ؕ مَا عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ ؕ
اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ يَقُصُّ الْحَقَّ وَهُوَ
خَيْرُ الْفٰصِلِيْنَ ۝
قُلْ لَّوْ اَنَّ عِنْدِيْ مَا تَسْتَعْجِلُوْنَ بِهٖ
لَقُضِيَ الْاَمْرُ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ
اَعْلَمُ بِالظّٰلِمِيْنَ ۝
وَعِنْدَهٗ مَفَاتِحُ الْغَيْبِ لَا يَعْلَمُهَآ
اِلَّا هُوَ ؕ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ
وَمَا تَسْقُطُ مِنْ وَّرَقَةٍ اِلَّا يَعْلَمُهَا
وَلَا حَبَّةٍ فِيْ ظُلُمٰتِ الْاَرْضِ وَلَا رَطْبٍ
وَّلَا يَابِسٍ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝

60. और वही है जो रात को तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ करता है, और दिन में जो कुछ तुमने किया उसकी ख़बर रखता है; फिर उसमें तुम्हें उठाता है, ताकि मुक़र्रर मुद्दत पूरी हो जाए, फिर उसी की तरफ़ तुम्हें लौट कर जाना है, फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे हो।

61. और वह ग़ालिब, अपने बन्दों पर बालादस्त है। और वह तुमपर निगेहबान मुक़र्रर करके भेजता है, यहां तक कि जब तुम में से किसी की मौत आ जाती है, तो हमारे भेजे हुए कारिन्दे उसे अपने क़ब्ज़े में कर लेते हैं और वो कोई कोताही नहीं करते।

62. फिर सब अल्लाह की तरफ़ जो उनका हक़ीक़ी आक़ा है लौट जाएंगे। जान लो फ़ैसला का इख़्तियार उसी को है; और वह बहुत जल्द हिसाब करने वाला है।

63. कहो: "कौन है जो ख़ुश्की और तरी की तारीकियों से तुम्हें नजात देता है, जिसे तुम गिड़गिड़ाते हुए चुपके-चुपके पुकारने लगते हो कि अगर हमें इससे बचा लिया तो हम ज़रूर शुक्रगुज़ार हो जाएंगे"।

64. कहो "ख़ुदा तुम्हें उनसे और हर कर्ब व ग़म से नजात देता है; लेकिन फिर तुम शिर्क करने लगते हो!"

65. कहो: "वह इसकी क़ुदरत रखता है कि तुमपर तुम्हारे ऊपर से, या तुम्हारे पांव के नीचे से कोई अज़ाब भेज दे, या तुम्हें टोलियों में बांट कर आपस में भिड़ा दे, और एक को दूसरे के तशद्दुद का मज़ा चखाए!" देखो हम अपनी आयतों को कैसे तरह-तरह से बयान करते हैं; ताकि वो समझें।

66. तुम्हारी क़ौम ने तो उसे झुटला ही दिया हालांकि वह हक़ है। कह दो कि "मैं तुमपर कोई हवालदार नहीं हूं।

67. हर ख़बर का एक मुक़र्रर वक़्त है; और तुम्हें अनक़रीब मालूम हो जाएगा!"

68. और जब तुम उन लोगों को देखो जो हमारी आयतों पर नुक्ताचीनी करते हैं तो उनसे किनाराकश हो जाओ ताकि वो किसी दूसरी बात में लग जाएं; और अगर कभी शैतान तुम्हें भुलावे में डाल दे तो

व हुवल्लज़ी य-तवफ़्फ़ाकुम् बिल्लैलि व यअ्लमु मा जरह्तुम् बिन्नहारि सुम्-म यब्असुकुम् फ़ीहि लियुक़्ज़ा अ-जलुम् मुसम्मन् सुम्-म इलैहि मर्जिअुकुम् सुम्-म युनब्बिअुकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (60) ●

व हुवलक़ाहिरू फ़ौ-क़ अ़िबादिही व युर्सिलु अ़लैकुम ह-फ़-ज़तन्, हत्ता इज़ा जा-अ अ-ह-दकुमुल्मौतु तवफ़्फ़त्हु रूसुलुना व हुम् ला युफ़र्रितून (61)

सुम्-म रूद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि, अला लहुल्हुक्मु, व हु-व अस्रअुल्-हासिबीन (62)

क़ुल् मंय्युनज्जीकुम् मिन् ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्रि तद्अूनहू तज़र्रूअ़ंव्-व ख़ुफ़्यतन् ल-इन् अन्जाना मिन् हाज़िही ल-नकूनन्ना-न मिनश्शाकिरीन (63)

क़ुलिल्लाहु युनज्जीकुम् मिन्हा व मिन् कुल्लि कर्बिन् सुम्-म अन्तुम् तुश्रिकून (64)

क़ुल् हुवल्क़ादिरू अ़ला अंय्यब्अ़-स अ़लैकुम् अ़ज़ाबम् मिन् फ़ौक़िकुम् औ मिन् तह्ति अर्जुलिकुम् औ यल्बि-सकुम् शि-यअंव्-व युज़ी-क़ बअ्ज़कुम् बअ्-स बअ्ज़िन्, उन्ज़ुर् कै-फ़ नुसर्रिफ़ुल्-आयाति लअ़ल्लहुम् यफ़्क़हून (65)

व कज़्ज़-ब बिही क़ौमु-क व हुवल्हक़्क़ु, क़ुल् लस्तु अ़लैकुम् बि-वकील (66)

लिकुल्लि न-बइम् मुस्तक़र्रूंव्-व सौ-फ़ तअ्लमून (67)

व इज़ा रऐतल्लज़ी-न यख़ूज़ू-न फ़ी आयातिना फ़-अअ्रिज़् अ़न्हुम् हत्ता यख़ूज़ू फ़ी हदीसिन् ग़ैरिही, व इम्मा युन्सियन्न-कश्शैतानु फ़ला

وَهُوَ الَّذِیْ یَتَوَفّٰىكُمْ بِالَّیْلِ وَیَعْلَمُ
مَا جَرَحْتُمْ بِالنَّهَارِ ثُمَّ یَبْعَثُكُمْ
فِیْهِ لِیُقْضٰۤى اَجَلٌ مُّسَمًّى ۚ ثُمَّ اِلَیْهِ
مَرْجِعُكُمْ ثُمَّ یُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
ع تَعْمَلُوْنَ ۠ ﴿٦٠﴾
وَهُوَ الْقَاهِرُ فَوْقَ عِبَادِهٖ وَیُرْسِلُ
عَلَیْكُمْ حَفَظَةً ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَحَدَكُمُ
الْمَوْتُ تَوَفَّتْهُ رُسُلُنَا وَهُمْ لَا یُفَرِّطُوْنَ ﴿٦١﴾
ثُمَّ رُدُّوْۤا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ ؕ اَلَا
لَهُ الْحُكْمُ ۟ وَهُوَ اَسْرَعُ الْحٰسِبِیْنَ ﴿٦٢﴾
قُلْ مَنْ یُّنَجِّیْكُمْ مِّنْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ تَدْعُوْنَهٗ تَضَرُّعًا وَّخُفْیَةً ۚ
لَىِٕنْ اَنْجٰىنَا مِنْ هٰذِهٖ لَنَكُوْنَنَّ مِنَ
الشّٰكِرِیْنَ ﴿٦٣﴾
قُلِ اللّٰهُ یُنَجِّیْكُمْ مِّنْهَا وَمِنْ كُلِّ كَرْبٍ
ثُمَّ اَنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ﴿٦٤﴾
قُلْ هُوَ الْقَادِرُ عَلٰۤى اَنْ یَّبْعَثَ عَلَیْكُمْ عَذَابًا
مِّنْ فَوْقِكُمْ اَوْ مِنْ تَحْتِ اَرْجُلِكُمْ
اَوْ یَلْبِسَكُمْ شِیَعًا وَّیُذِیْقَ بَعْضَكُمْ
بَاْسَ بَعْضٍ ؕ اُنْظُرْ كَیْفَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ
لَعَلَّهُمْ یَفْقَهُوْنَ ﴿٦٥﴾
وَكَذَّبَ بِهٖ قَوْمُكَ وَهُوَ الْحَقُّ ؕ
قُلْ لَّسْتُ عَلَیْكُمْ بِوَكِیْلٍ ۠ ﴿٦٦﴾
لِكُلِّ نَبَاٍ مُّسْتَقَرٌّ ۫ وَّسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٧﴾
وَاِذَا رَاَیْتَ الَّذِیْنَ یَخُوْضُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا
فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ حَتّٰى یَخُوْضُوْا فِیْ حَدِیْثٍ
غَیْرِهٖ ؕ وَاِمَّا یُنْسِیَنَّكَ الشَّیْطٰنُ فَلَا

याद आ जाने के बाद ऐसे ज़ालिमों के पास हरगिज़ न बैठो।

69. उनके हिसाब के बारे में तो उन लोगों पर कुछ भी ज़िम्मेदारी नहीं जो डर रखते हैं; अगर है तो बस याददिहानी की; शायद वो डरें।

70. छोड़ो उनको जिन्होंने अपने दीन को खेल और तमाशा बना लिया है, और उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने धोके में डाल रखा है। और इसके ज़रिए से उन्हें नसीहत करते रहो कि कहीं कोई अपनी कमाई की वजह से हलाकत में न पड़ जाए; अल्लाह से हटकर कोई भी नहीं जो उसका हिमायती और सिफ़ारिश करने वाला हो सके; और अगर वह नजात के लिए हर मुमकिन फ़िदया देने लगे, तो भी वह उससे न लिया जाएगा। ऐसे ही लोग हैं जो अपनी कमाई की वजह से हलाकत में पड़ गए; उनके लिए पीने को खौलता हुआ पानी है और दर्दनाक अज़ाब भी, इसलिए कि वो कुफ़्र करते रहे थे।

71. कहो: "क्या हम अल्लाह के सिवा उसे पुकारने लग जाएं जो न तो हमें नफ़ा पहुंचा सके और न हमें नुक़सान पहुंचा सके, और हम उलटे पांव फिर जाएं जबकि अल्लाह ने हमें रास्ते से लगा दिया है? — उस शख़्स की तरह जिसे शैतानों ने ज़मीन में रास्ता भुला दिया हो, और वह हैरान होकर रह गया हो, उसके कुछ साथी हों जो उसे रास्ते की तरफ़ बुला रहे हों कि "हमारे पास चला आ!" कह दो "हिदायत तो वही है जो अल्लाह की हिदायत है, और हमें इसी बात का हुक्म हुआ है कि हम सारे जहां के सामने सरे तसलीम ख़म कर दें!"

72. और यह कि "नमाज़ क़ायम रखो, और उसका डर रखो; वही है जिसके पास तुम इकट्ठे होगे!"

73. और वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को बरहक़ पैदा किया; और जिस वक़्त वह किसी चीज़ को कहे "हो जा" तो उसी वक़्त हो जाती है। उसका इरशाद ऐन हक़ है, और जिस दिन सूर फूंका जाएगा, बादशाही उसी की होगी; वह छुपे का भी जाननेवाला है और खुले का भी; और वही साहिबे हिकमत, बाख़बर है।

74. और याद करो जब इब्राहीम ने अपने बाप आज़र से कहा था, "क्या तुम बुतों को माबूद बनाते हो? मैं तो तुम्हें और तुम्हारी क़ौम को खुली गुमराही में देख रहा हूं!"

तक़्अुद् बअ्दज़्ज़िक्रा मअ़ल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (68)

व मा अ़लल्लज़ी-न यत्तक़ू-न मिन् हिसाबिहिम् मिन् शैइंव्-व लाकिन् ज़िक्रा लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (69)

व ज़रिल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनहुम् लअ़िबंव्-व लह्वंव्-व ग़र्रत्हुमुल् हयातुद्दुन्या व ज़क्किर् बिही अन् तुब्स-ल नफ़्सुम्-बिमा क-सबत् लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि वलिय्युंव्-व ला शफ़ीअुन् व इन् तअ्दिल् कुल्-ल अ़द्लिल्-ला युअ्ख़ज़् मिन्हा, उला-इकल्लज़ी-न उब्सिलू बिमा क-सबू लहुम् शराबुम् मिन् हमीमिंव्-व अज़ाबुन् अलीमुम् बिमा कानू यक्फ़ुरून (70) ●

क़ुल् अ-नद्अू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अु-ना व ला यज़ुर्रुना व नुरद्दु अ़ला अअ्क़ाबिना बअ्-द इज़् हदानल्लाहु कल्लज़िस्-तह्वत्हुश्शयातीनु फ़िल्अर्ज़ि हैरा-न लहू अस्हाबुंय्-यद्अूनहू इलल्-हुदअ्तिना, क़ुल् इन्-न हुदल्लाहि हुवल्हुदा, व उमिर्ना लिनुस्लि-म लिरब्बिल् आ़लमीन (71)

व अन् अक़ीमुस्सला-त वत्तक़ूहु, व हुवल्लज़ी इलैहि तुह्शरून (72)

व हुवल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि, व यौ-म यक़ूलु कुन् फ़-यकून ●

क़ौलुहुल्- हक़्क़ु, व लहुल्मुल्कु यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि, आ़लिमुल्ग़ैबि वश्शहा-दति, व हुवल् हकीमुल्-ख़बीर (73)

व इज़् का-ल इब्राहीमु लि-अबीहि आज़-र अ-तत्तख़िज़ु अस्नामन् आलि-हतन् इन्नी अरा-क व क़ौम-क फ़ी ज़लालिम् मुबीन (74)

تَقْعُدْ بَعْدَ الذِّكْرٰى مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٦٨
وَمَا عَلَى الَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ مِنْ حِسَابِهِمْ مِّنْ
شَيْءٍ وَّلٰكِنْ ذِكْرٰى لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ۝٦٩
وَذَرِ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَعِبًا
وَّلَهْوًا وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا
وَذَكِّرْ بِهٖٓ اَنْ تُبْسَلَ نَفْسٌۢ بِمَا كَسَبَتْ ۖ
لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيٌّ وَّلَا شَفِيْعٌ ۚ
وَاِنْ تَعْدِلْ كُلَّ عَدْلٍ لَّا يُؤْخَذْ مِنْهَا ۗ اُولٰٓئِكَ
الَّذِيْنَ اُبْسِلُوْا بِمَا كَسَبُوْا ۚ لَهُمْ شَرَابٌ
مِّنْ حَمِيْمٍ وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٧٠
قُلْ اَنَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا
يَنْفَعُنَا وَلَا يَضُرُّنَا وَنُرَدُّ عَلٰٓى اَعْقَابِنَا
بَعْدَ اِذْ هَدٰىنَا اللّٰهُ كَالَّذِى اسْتَهْوَتْهُ
الشَّيٰطِيْنُ فِى الْاَرْضِ حَيْرَانَ ۖ لَهٗٓ
اَصْحٰبٌ يَّدْعُوْنَهٗٓ اِلَى الْهُدَى ائْتِنَا ۗ
قُلْ اِنَّ هُدَى اللّٰهِ هُوَ الْهُدٰى ۗ
وَاُمِرْنَا لِنُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٧١
وَاَنْ اَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاتَّقُوْهُ ۗ وَهُوَ
الَّذِيْٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝٧٢
وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
بِالْحَقِّ ۗ وَيَوْمَ يَقُوْلُ كُنْ فَيَكُوْنُ ۚ
قَوْلُهُ الْحَقُّ ۗ وَلَهُ الْمُلْكُ يَوْمَ يُنْفَخُ
فِى الصُّوْرِ ۗ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ ۗ
وَهُوَ الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ۝٧٣
وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ لِاَبِيْهِ اٰزَرَ اَتَتَّخِذُ
اَصْنَامًا اٰلِهَةً ۚ اِنِّيْٓ اَرٰىكَ وَقَوْمَكَ
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٧٤

75. और इसी तरह हम इब्राहीम को आसमानों और ज़मीन की बादशाही दिखाने लगे, और ताकि उसे यक़ीन हो।

76. चुनांचे जब रात उसपर छा गई तो उसने एक तारा देखा, कहा, "इसे मेरा रब ठहराते हो"। फिर जब वह छुप गया, तो वह बोला, "छुप जानेवालों से मैं मुहब्बत नहीं करता"।

77. फिर जब उसने चांद को चमकता हुआ देखा, तो कहा, "उसको मेरा रब बताते हो"। फिर जब वह छुप गया, कहा "अगर मुझे मेरा रब रास्ता न दिखाता तो मैं गुमराह लोगों में शामिल होता"।

78. जब उसने-सूरज को चमकता हुआ देखा तो कहा, "उसे मेरा रब बताते हो; यह तो सबसे बड़ा है!" फिर जब वह भी डूब गया, तो कहा, "ऐ मेरे लोगो, मैं उनसे बेज़ार हूं जिन्हें तुम शरीक ठहराते हो।

89. मैंने तो यकसू होकर अपना मुंह उसकी तरफ़ कर लिया है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, मैं तो शिर्क नहीं करता!"

80. उसकी क़ौम ने उससे झगड़ा किया। उसने कहा, "क्या तुम मुझसे अल्लाह के बारे में झगड़ते हो, जबकि उसने मेरी रहनुमाई फ़रमाई है? मैं उनसे नहीं डरता जिन्हें तुम उसका शरीक ठहराते हो, बल्कि मेरे रब की मशीयत ही सब कुछ है। इल्म के एतिबार से मेरा रब हर चीज़ को मुहीत है; तो क्या तुम होश में न आओगे?

81. और मैं तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों से कैसे डरूं, जबकि तुम उससे नहीं डरते कि तुमने अल्लाह का शरीक ठहरा रखा है जिसकी उसने तुमपर कोई दलील नहीं उतारी? अब दोनों फ़रीक़ों में किसको बेख़ौफ़ रहने का ज़्यादा हक़ हासिल है, बोलो अगर तुम जानते हो?

82. जो लोग ईमान लाए और अपने ईमान को ज़ुल्म से आलूदा नहीं किया, वही हैं जो हर तरह के ख़तरे से बाहर हैं; और वही हिदायत पर हैं।

83. यह है हमारी वह हुज्जत जो हमने इब्राहीम को उसकी क़ौम के मुक़ाबले में बख़्शी थी। हम जिसे चाहते हैं दरजात के लिहाज़ से बुलन्द कर देते हैं; बेशक तुम्हारा रब हिकमत वाला, जानने वाला है।

84. और हमने उसे इसहाक़ और याकूब दिए, हर एक को हिदायत बख़्शी

व कज़ालि-क नुरी इब्राही-म म-लकूतस्समावाति वल्अर्ज़ि व लियकू-न मिनल् मूक़िनीन (75)

फ़-लम्मा जन्-न अ़लैहिल्लैलु रआ कौ-कबन् क़ा-ल हाज़ा रब्बी फ़-लम्मा अ-फ़-ल क़ा-ल ला उहिब्बुल् आफ़िलीन (76)

फ़-लम्मा रअल्-क़-म-र बाज़िग़न् क़ा-ल हाज़ा रब्बी फ़-लम्मा अ-फ़-ल क़ा-ल ल-इल्लम् यह्दिनी रब्बी ल-अकूनन्-न मिनल् क़ौमिज़्ज़ाल्लीन (77)

फ़-लम्मा रअश्शम्-स बाज़ि-ग़तन् क़ा-ल हाज़ा रब्बी हाज़ा अक्बरू फ़-लम्मा अ-फ़लत् क़ा-ल याक़ौमि इन्नी बरीउम् मिम्मा तुश्रिकून (78)

इन्नी वज्जह्तु वज्हि-य लिल्लज़ी फ़-तरस्समावाति वल्अर्-ज़ हनीफ़ंव्-व मा अ-न मिनल्-मुश्रिकीन (79)

व हाज्जहू क़ौमुहू, क़ा-ल अतुहाज्जून्नी फ़िल्लाहि व क़द् हदानि, व ला अख़ाफ़ु मा तुश्रिकू-न बिही इल्ला अंय्यशा-अ रब्बी शैअन्, वसि-अ़ रब्बी कुल्-ल शैइन् अ़िल्मन्, अ-फ़ला त-तज़क्करून (80)

व कै-फ़ अख़ाफ़ु मा अश्रक्तुम् व ला तख़ाफ़ू-न अन्नकुम् अश्रक्तुम् बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही अ़लैकुम् सुल्तानन्, फ़-अय्युल् फ़रीक़ैनि अहक़्क़ु बिल्-अम्नि इन् कुन्तुम् तअ्लमून ● (81)

अल्लज़ी-न आमनू व लम् यल्बिसू ईमानहुम् बिज़ुल्मिन् उलाइ-क लहुमुल्-अम्नु व हुम् मुह्तदून (82)●

व तिल्-क हुज्जतुना आतैनाहा इब्राही-म अ़ला क़ौमिही, नर्फ़अु द-रजातिम् मन्-नशा-उ, इन्-न रब्ब-क हकीमुन् अ़लीम (83)

व वहब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ्कू-ब, कुल्लन् हदैना

وَكَذٰلِكَ نُرِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ مَلَكُوْتَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَلِيَكُوْنَ مِنَ الْمُوْقِنِيْنَ ۝٧٥
فَلَمَّا جَنَّ عَلَيْهِ الَّيْلُ رَاٰ كَوْكَبًا ۚ قَالَ
هٰذَا رَبِّيْ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَآ اُحِبُّ
الْاٰفِلِيْنَ ۝٧٦
فَلَمَّا رَاَ الْقَمَرَ بَازِغًا قَالَ هٰذَا رَبِّيْ ۚ
فَلَمَّآ اَفَلَ قَالَ لَئِنْ لَّمْ يَهْدِنِيْ رَبِّيْ
لَاَكُوْنَنَّ مِنَ الْقَوْمِ الضَّآلِّيْنَ ۝٧٧
فَلَمَّا رَاَ الشَّمْسَ بَازِغَةً قَالَ هٰذَا
رَبِّيْ هٰذَآ اَكْبَرُ ۚ فَلَمَّآ اَفَلَتْ قَالَ
يٰقَوْمِ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝٧٨
اِنِّيْ وَجَّهْتُ وَجْهِيَ لِلَّذِيْ فَطَرَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ حَنِيْفًا وَّمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝٧٩
وَحَآجَّهٗ قَوْمُهٗ ۚ قَالَ اَتُحَآجُّوْٓنِّيْ فِي
اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنِ ۚ وَلَآ اَخَافُ مَا تُشْرِكُوْنَ
بِهٖٓ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ رَبِّيْ شَيْـًٔا ۚ وَسِعَ رَبِّيْ
كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝٨٠
وَكَيْفَ اَخَافُ مَآ اَشْرَكْتُمْ وَلَا تَخَافُوْنَ
اَنَّكُمْ اَشْرَكْتُمْ بِاللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ بِهٖ
عَلَيْكُمْ سُلْطٰنًا ۚ فَاَيُّ الْفَرِيْقَيْنِ
اَحَقُّ بِالْاَمْنِ ۚ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٨١
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَمْ يَلْبِسُوْٓا اِيْمَانَهُمْ بِظُلْمٍ
اُولٰٓئِكَ لَهُمُ الْاَمْنُ وَهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝٨٢
وَتِلْكَ حُجَّتُنَآ اٰتَيْنٰهَآ اِبْرٰهِيْمَ عَلٰى قَوْمِهٖ ۚ
نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ۚ اِنَّ رَبَّكَ
حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝٨٣
وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۚ كُلًّا هَدَيْنَا ۚ

और नूह को हमने उससे पहले हिदायत अता की थी — और उसकी औलाद में दाऊद सुलैमान, अय्यूब, यूसुफ़, मूसा और हारून को भी और इसी तरह हम खूबकार लोगों को सिला दिया करते हैं।

85. — और ज़करिया, यह्या, ईसा और इलयास को भी; उनमें हर एक लायक़ और नेक था;

86. और इसमाईल, अलयसअ, यूनुस और लूत को भी, उनमें हर एक को हमने दुनियावालों पर फ़ज़ीलत अता की;

87. और उनके बाप-दादा और उनकी औलाद और उनके भाई बन्दों में भी कितने ही लोगों को; और हमने उन्हें मुन्तख़ब किया, और सीधे रास्ते की तरफ़ उनकी रहनुमाई की।

88. यह अल्लाह की हिदायत है, जिसके ज़रिए से वह अपने बन्दों में से जिसको चाहता है रहनुमाई फरमाता है; और अगर इन लोगों ने कहीं शिर्क का इरतिकाब किया होता, तो इनका सब किया-धरा अकारत वबाले जान होकर रह जाता।

99. ये वो लोग थे जिन्हें हमने किताब, और कुव्वते फ़ैसला और नुबूवत अता की थी, फिर अगर ये लोग उसे मानने से इनकार करें, तो अब हमने इसको ऐसे लोगों के सुपुर्द किया है जो इसका इनकार नहीं करते।

90. वो ऐसे लोग थे जिन्हें अल्लाह ने हिदायत अता की: तो तुम उन्हीं के तरीक़े की पैरवी करो। कह दो "मैं तुमसे इसका कोई अजर नहीं मांगता; यह तो सारे जहां के लिए बस एक याददिहानी है।"

91. वो अल्लाह का अन्दाज़ा न कर सके जैसा उसका अन्दाज़ा करना चाहिए था, जबकि उन्होंने कहा, "अल्लाह ने किसी बशर पर कुछ नाज़िल ही नहीं किया है।" कहो "फिर वह किताब किसने नाज़िल की जो मूसा लोगों के लिए रोशनी और हिदायत की शक्ल में लाया था? जिसे तुम वर्क़-वर्क़ करके रखते हो, उन्हें दिखाते भी हो, लेकिन बहुत सा छुपा जाते हो; और तुम्हें वह इल्म दिया गया जिसे न तुम जानते थे, और न तुम्हारे बाप-दादा ही"। कह दो "अल्लाह ही ने" फिर उन्हें छोड़ो कि वो अपनी नुक्ताचीनियों से खेलते रहें।

92. यह एक किताब है जो हमने नाज़िल की है, बाबरकत है अपने से पहले की तसदीक़ में है, और ताकि तुम मर्कज़ी बस्ती और उसके अतराफ़ के

व नूहन् हदैना मिन् क़ब्लु व मिन् ज़ुर्रिय्यतिही दावू-द व सुलैमा-न व अय्यू-ब व यूसु-फ़ व मूसा व हारू-न, व कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन (84)

व ज़-करिय्या व यह्या व ईसा व इल्या-स कुल्लुम् मिनस्सालिहीन (85)

व इस्माई-ल वल्य-स-अ व यूनु-स व लूतन्, व कुल्लन् फ़ज़्ज़ल्ना अलल् आलमीन (86)

व मिन् आबाइहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् व इख़्वानिहिम् वज्तबैनाहुम् व हदैनाहुम् इला सिरातिम् मुस्तक़ीम (87)

ज़ालि-क हुदल्लाहि यह्दी बिही मंय्यशा-उ मिन् अिबादिही, व लौ अश्रकू ल-हबि-त अन्हुम् मा कानू यअ्मलून (88)

उला-इकल्लज़ी-न आतैनाहुमुल-किता-ब वल्हुक्-म वन्नुबुव्व-त फ-इंय्यक्फुर् बिहा हा-उला-इ फ-क़द् वक्कल्ना बिहा क़ौमल्लैसू बिहा बिकाफ़िरीन (89)

उला-इकल्लज़ी-न हदल्लाहु फ़बिहुदाहुमुक़्तदिह, क़ुल् ला अस्अलुकुम् अलैहि अज्रन्, इन् हु-व इल्ला ज़िक्रा लिल्-आलमीन (90)●

व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क क़द्रिही इज़् क़ालू मा अन्ज़लल्लाहु अला ब-शरिम् मिन् शैइन्, क़ुल् मन् अन्ज़लल्-किताबल्लज़ी जा-अ बिही मूसा नूरंव्-व हुदल्-लिन्नासि तज्अलूनहू क़राती-स तुब्दूनहा व तुख़्फ़ू-न कसीरन् व अुल्लिम्तुम् मा लम् तअ्लमू अन्तुम् व ला आबाउकुम्, क़ुलिल्लाहु सुम्-म ज़रहुम् फ़ी ख़ौज़िहिम् यल्अबून (91)

व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुम्-मुसद्दिक़ुल्लज़ी बै-न यदैहि व लितुन्ज़ि-र उम्मल्क़ुरा

وَنُوْحًا هَدَيْنَا مِنْ قَبْلُ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهٖ
دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ وَاَيُّوْبَ وَيُوْسُفَ وَمُوْسٰى
وَهٰرُوْنَ ۭ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِيْنَ ۝٨٤
وَزَكَرِيَّا وَيَحْيٰى وَعِيْسٰى وَاِلْيَاسَ ۭ
كُلٌّ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٨٥
وَاِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَيُوْنُسَ وَلُوْطًا ۭ
وَكُلًّا فَضَّلْنَا عَلَي الْعٰلَمِيْنَ ۝٨٦
وَمِنْ اٰبَاۗىِٕهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ وَاِخْوَانِهِمْ ۚ
وَاجْتَبَيْنٰهُمْ وَهَدَيْنٰهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٨٧
ذٰلِكَ هُدَى اللّٰهِ يَهْدِيْ بِهٖ مَنْ يَّشَاۗءُ
مِنْ عِبَادِهٖ ۭ وَلَوْ اَشْرَكُوْا لَحَبِطَ عَنْهُمْ
مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٨٨
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحُكْمَ
وَالنُّبُوَّةَ ۚ فَاِنْ يَّكْفُرْ بِهَا هٰٓؤُلَاۗءِ فَقَدْ
وَكَّلْنَا بِهَا قَوْمًا لَّيْسُوْا بِهَا بِكٰفِرِيْنَ ۝٨٩
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ هَدَى اللّٰهُ فَبِهُدٰىهُمُ
اقْتَدِهْ ۭ قُلْ لَّآ اَسْـَٔــلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۭ
اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٰي لِلْعٰلَمِيْنَ ۝٩٠
وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖٓ اِذْ قَالُوْا
مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰي بَشَرٍ مِّنْ شَيْءٍ ۭ قُلْ
مَنْ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ الَّذِيْ جَاۗءَ بِهٖ
مُوْسٰي نُوْرًا وَّهُدًى لِّلنَّاسِ تَجْعَلُوْنَهٗ
قَرَاطِيْسَ تُبْدُوْنَهَا وَتُخْفُوْنَ كَثِيْرًا ۚ
وَعُلِّمْتُمْ مَّا لَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنْتُمْ وَلَآ اٰبَاۗؤُكُمْ ۭ
قُلِ اللّٰهُ ۙ ثُمَّ ذَرْهُمْ فِيْ خَوْضِهِمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٩١
وَهٰذَا كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ مُبٰرَكٌ مُّصَدِّقُ
الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ وَلِتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰى

وَمَنْ حَوْلَهَا ۚ وَالَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَهُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٩٢﴾
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
اَوْ قَالَ اُوْحِيَ اِلَيَّ وَلَمْ يُوْحَ اِلَيْهِ شَيْءٌ وَّمَنْ
قَالَ سَاُنْزِلُ مِثْلَ مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ تَرٰٓى
اِذِ الظّٰلِمُوْنَ فِيْ غَمَرٰتِ الْمَوْتِ وَالْمَلٰٓئِكَةُ
بَاسِطُوْٓا اَيْدِيْهِمْ ۚ اَخْرِجُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ اَلْيَوْمَ
تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَقُوْلُوْنَ
عَلَى اللّٰهِ غَيْرَ الْحَقِّ وَكُنْتُمْ عَنْ اٰيٰتِهٖ تَسْتَكْبِرُوْنَ ﴿٩٣﴾
وَلَقَدْ جِئْتُمُوْنَا فُرَادٰى كَمَا خَلَقْنٰكُمْ
اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّتَرَكْتُمْ مَّا خَوَّلْنٰكُمْ
وَرَآءَ ظُهُوْرِكُمْ ۚ وَمَا نَرٰى مَعَكُمْ
شُفَعَآءَكُمُ الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ اَنَّهُمْ فِيْكُمْ
شُرَكٰٓؤُا ؕ لَقَدْ تَّقَطَّعَ بَيْنَكُمْ وَضَلَّ عَنْكُمْ
ع مَّا كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ﴿٩٤﴾
اِنَّ اللّٰهَ فَالِقُ الْحَبِّ وَالنَّوٰى ؕ يُخْرِجُ
الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَمُخْرِجُ الْمَيِّتِ
مِنَ الْحَيِّ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ﴿٩٥﴾
فَالِقُ الْاِصْبَاحِ ۚ وَجَعَلَ الَّيْلَ سَكَنًا
وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ حُسْبَانًا ؕ ذٰلِكَ
تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ﴿٩٦﴾
وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ النُّجُوْمَ لِتَهْتَدُوْا
بِهَا فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ﴿٩٧﴾
وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ
وَّاحِدَةٍ فَمُسْتَقَرٌّ وَّمُسْتَوْدَعٌ ؕ قَدْ فَصَّلْنَا
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّفْقَهُوْنَ ﴿٩٨﴾

व मन् हौलहा, वल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्आख़ि-रति युअ्मिनू-न बिही व हुम् अ़ला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून (92)

व मन् अ़ज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ क़ा-ल ऊहि-य इलय्-य व लम् यू-ह इलैहि शैउंव्-व मन् क़ा-ल स-उन्ज़िलु मिस्-ल मा अन्ज़लल्लाहु, व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न फ़ी ग़-मरातिल्-मौति वल्मलाइ-कतु बासितू ऐदीहिम् अख़्रिजू अन्फु-सकुम्, अल्यौ-म तुज्ज़ौ-न अ़ज़ाबल्हूनि बिमा कुन्तुम् तक़ूलू-न अ़लल्लाहि ग़ैरल्हक़्क़ि व कुन्तुम् अ़न् आयातिही तस्तक्बिरून (93)

व ल-क़द् जिअ्तुमूना फ़ुरादा कमा ख़लक़्नाकुम् अव्व-ल मर्रतिंव्-व तरक्तुम् मा ख़व्वल्नाकुम् वरा-अ ज़ुहूरिकुम् व मा नरा-म-अ़कुम् शु-फ़आ़-अकुमुल्लज़ी-न ज़अ़म्तुम् अन्नहुम् फ़ीकुम् शु-रका-उ, लक़त्त-क़त्त-अ़ बैनकुम् व ज़ल्-ल अ़न्कुम् मा कुन्तुम् तज़्अुमून (94)●

इन्नल्ला-ह फ़ालिकुल्-हब्बि वन्नवा, युख़्रिजुल् हय्-य मिनल्मय्यिति व मुख़्रिजुल्मय्यिति मिनल्-हय्यि, ज़ालिकुमुल्लाहु फ़-अन्ना तुअ्फ़कून (95)

फ़ालिक़ुल-इस्बाहि व ज-अ़लल्लै-ल स-कनंव्-वश्शम्-स वल्क़-म-र हुस्बानन्, ज़ालि-क तक़्दीरुल् अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (96)

व हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुन्नुजू-म लितह्तदू बिहा फ़ी ज़ुलुमातिल्बर्रि वल्बह्रि, क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यअ्लमून (97)

व हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिन् फ़मुस्त-क़र्रुंव्-व मुस्तौदअुन्, क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यफ़्क़हून (98)

लोगों को ख़बरदार करो; और जो लोग आख़िरत पर ईमान रखते हैं वो इस पर ईमान लाते हैं और वो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं।

93. और उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर इफ़्तिरा करके झूट घड़े, या यह कहे कि "मुझपर वही आई है," हालांकि उसपर कोई वही न आई हो, और उस शख़्स से बढ़कर जो यह कहे कि "मैं भी ऐसी चीज़ नाज़िल कर दूंगा जैसी अल्लाह ने नाज़िल की है?" और अगर तुम देख सकते जबकि ज़ालिम सकराते मौत के आलम में होते हैं, और फ़रिश्ते अपने हाथ बढ़ा रहे होते हैं कि "निकालो अपनी रूहें! आज तुम्हें ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा, इसलिए कि तुम अल्लाह से मंसूब करके झूट बका करते थे, और उसकी आयतों के मुक़ाबले में अकड़ते रहते थे।"

94. और बेशक तुम उसी तरह एक-एक करके हमारे पास आ गए, जैसे हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था, और जो कुछ हमने तम्हें दे रखा था उसे अपने पीछे छोड़ आए। और हम तुम्हारे साथ उन सिफ़ारिशियों को भी नहीं देख रहे हैं जिनके बारे में तुम दावे से कहते थे कि वो तुम्हारे मुआमले में शरीक हैं; तुम्हारे आपसी तअल्लुक़ात टूट चुके हैं; और वो सब तुमसे गुम होकर रह गए जिनका तुम दावा करते थे"।

95. यक़ीनन अल्लाह ही दाने और गुठली को फाड़ निकालता है, ज़िन्दा को बेजान से निकालता है, और बेजान को ज़िन्दा से निकालने वाला है। वही अल्लाह — फिर तुम कहां औंधे हुए जाते हो?

96. — पौ फाड़ता है। और उसी ने रात को आराम व सुकून के लिए बनाया, और सूरज और चांद को (वक़्त के) हिसाब का ज़रिया ठहराया। यह बड़े ज़बरदस्त, बड़े इल्मवाले का ठहराया हुआ अन्दाज़ा है।

97. और वही है जिसने तुम्हारे लिए तारे बनाए, ताकि तुम उनसे ख़ुश्की और तरी की तारीकियों में रहनुमाई हासिल कर सको। जो लोग जानना चाहें उनके लिए हमने निशानियां खोल-खोल कर बयान कर दी हैं।

98. और वही तो है जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया, पस एक मुद्दत तक ठहरना है और फिर सौंप देना है। उन लोगों के लिए जो समझें निशानियां हम खोल-खोलकर बयान कर चुके।

99. और वही है जिसने आसमान से पानी बरसाया, फिर हमने उसके ज़रिए से हर किस्म की रोईदगी बरआमद की, फिर उससे हमने सर सब्ज़ पत्तियां और शाखें निकालीं जिससे हम तह ब तह दाने निकालते हैं — और खजूर के खोशों में से झुके पड़ते गुच्छे भी — और अंगूर, ज़ैतून और अनार के बाग़ लगाए, जो एक-दूसरे से मिलते-जुलते भी हैं, और एक-दूसरे से मुख़्तलिफ़ भी होते हैं। उसके फल को देखो जब वह फलता है और उसका पकना भी देखो! बेशक इसमें ईमान लाने वाले लोगों के लिए बड़ी निशानियां हैं।

100. और लोगों ने जिन्नों को अल्लाह का शरीक ठहरा रखा है, हालांकि उन्हें उसी ने पैदा किया है; और बे जाने-बूझे उसके लिए बेटे और बेटियां घड़ ली हैं। यह उसकी शान के ख़िलाफ़ है! ओर वह उससे कहीं बुलन्द व बरतर है जो वो बयान करते हैं!

101. वह आसमानों और ज़मीन का मूजिद (नमूने के बग़ैर पहली बार बनाने वाला) है, उसके कोई बेटा कैसे हो सकता है, जबकि उसके बीवी ही नहीं है। और उसी ने हर चीज़ पैदा की है, और उसे हर चीज़ का इल्म है।

102. वही अल्लाह तुम्हारा रब है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, हर चीज़ का ख़ालिक़ वही है। तो तुम उसी की इबादत करो, वही हर चीज़ का ज़िम्मेदार है।

103. निगाहें उसे पा नहीं सकतीं बल्कि वह निगाहों को पा लेता है, वह लतीफ़ बाख़बर है।

104. तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से आंख खोल देनेवाली दलीलें आ गई हैं, तो जिसने देखा अपना ही भला किया, और जो अंधा बना रहा, तो उसका वबाल भी उसी पर पड़ेगा; और मैं तुमपर कोई मुकर्रर मुहाफ़िज़ नहीं हूं।

105. और इसी तरह हम अपनी आयतें मुख़्तलिफ़ तरीक़ों से बयान करते हैं (ताकि वो सुनें) और इसलिए कि वो कह लें कि "(ऐ मुहम्मद) तुमने कहीं से पढ़-पढ़ा लिया है!" और इसलिए भी कि हम उन लोगों के लिए हक़ीक़त खूब वाज़ेह कर दें जो जानना चाहें।

106. तुम्हारी तरफ़ जो वही तुम्हारे रब की तरफ़ से आई है तुम उसी की

व हुवल्लज़ी अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअन् फ़-अख़्रज्ना बिही नबा-त कुल्लि शैइन फ़-अख़्रज्ना मिन्हु ख़ज़िरन् नुख़्रिजु मिन्हु हब्बम् मु-तराकिबन् व मिनन्नख़्लि मिन् तल्अिहा क़िन्वानुन् दानियतुंव्-व जन्नातिम् मिन् अअ्नाबिंव्-वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मुश्तबिहंव्-व ग़ै-र मु-तशाबिहिन्, उन्ज़ुरू इला स-मरिही इज़ा अस्म-र व यन्अिही, इन्-न फ़ी ज़ालिकुम् लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (99)

व ज-अ़लू लिल्लाहि शु-रकाअल्-जिन्-न व ख़-ल-क़हुम् व ख़-रक़ू लहू बनी-न व बनातिम् बिग़ैरि अ़िल्मिन्, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा यसिफ़ून (100) ●

बदीअुस्समावाति वल्अर्ज़ि, अन्ना यकूनु लहू व-लदुंव-व लम् तकुल्लहू साहि-बतुन्, व ख़-ल-क़ कुल्-ल शैइन् व हु-व बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (101)

ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ला इला-ह इल्ला हु-व ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् फ़अ्बुदूहु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइंव्-वकील (102)

ला तुद्रिकुहुल्-अब्सारु व हु-व युद्रिकुल्-अब्सा-र व हुवल् लतीफ़ुल्-ख़बीर (103)

क़द् जा-अकुम बसा-इरु मिर्रब्बिकुम् फ़-मन् अब्स-र फ़लिनफ़्सिही व मन् अ़मि-य फ़-अ़लैहा, व मा अ-न अ़लैकुम् बिहफ़ीज़ (104)

व कज़ालि-क नुसर्रिफ़ुल्-आयाति व लियक़ूलू दरस्-त व लिनुबय्यि-नहू लिक़ौमिंय्-यअ्लमून (105)

इत्तबिअ् मा ऊहि-य इलै-क मिर्रब्बि-क ला

وَهُوَ الَّذِیْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ
فَاَخْرَجْنَا بِهٖ نَبَاتَ كُلِّ شَیْءٍ فَاَخْرَجْنَا
مِنْهُ خَضِرًا نُّخْرِجُ مِنْهُ حَبًّا مُّتَرَاكِبًا ۚ
وَمِنَ النَّخْلِ مِنْ طَلْعِهَا قِنْوَانٌ دَانِيَةٌ
وَّ جَنّٰتٍ مِّنْ اَعْنَابٍ وَّ الزَّیْتُوْنَ
وَ الرُّمَّانَ مُشْتَبِهًا وَّغَیْرَ مُتَشَابِهٍ ؕ
اُنْظُرُوْٓا اِلٰى ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَیَنْعِهٖ ؕ
اِنَّ فِیْ ذٰلِكُمْ لَاٰیٰتٍ لِّقَوْمٍ
یُّؤْمِنُوْنَ ﴿٩٩﴾
وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ الْجِنَّ وَخَلَقَهُمْ
وَخَرَقُوْا لَهٗ بَنِیْنَ وَبَنٰتٍۢ بِغَیْرِ عِلْمٍ ؕ
ع ١٢ ٦ ١٨ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا یَصِفُوْنَ ﴿١٠٠﴾
بَدِیْعُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ اَنّٰى یَكُوْنُ
لَهٗ وَلَدٌ وَّلَمْ تَكُنْ لَّهٗ صَاحِبَةٌ ؕ وَخَلَقَ
كُلَّ شَیْءٍ ۚ وَهُوَ بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿١٠١﴾
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ ۚ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ فَاعْبُدُوْهُ ۚ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ وَّكِیْلٌ ﴿١٠٢﴾
لَا تُدْرِكُهُ الْاَبْصَارُ ۫ وَهُوَ یُدْرِكُ الْاَبْصَارَ ۚ
وَهُوَ اللَّطِیْفُ الْخَبِیْرُ ﴿١٠٣﴾
قَدْ جَآءَكُمْ بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنْ
اَبْصَرَ فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ عَمِیَ فَعَلَیْهَا ؕ
وَمَآ اَنَا عَلَیْكُمْ بِحَفِیْظٍ ﴿١٠٤﴾
وَ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰیٰتِ وَ
لِیَقُوْلُوْا دَرَسْتَ وَلِنُبَیِّنَهٗ لِقَوْمٍ
یَّعْلَمُوْنَ ﴿١٠٥﴾
اِتَّبِعْ مَآ اُوْحِیَ اِلَیْكَ مِنْ رَّبِّكَ ۚ لَآ

पैरवी किए जाओ; उसके सिवा कोई माबूद नहीं; और अहले शिर्क से एराज़ करो।

107. अगर अल्लाह चाहता तो वो शिर्क न करते; तुम्हें हमने उनपर कोई मुक़र्रर मुहाफ़िज़ तो बनाया नहीं है, और न तुम कोई उनके हवाला दार ही हो।

108. अल्लाह को छोड़ कर वो जिनको पुकारते हैं तुम लोग उनके लिए नाज़ेबा अलफ़ाज़ इस्तेमाल न करो कि वो लोग हद से तजावुज़ करके बेइल्मी की वजह से खुद अल्लाह के लिए नाज़ेबा अलफ़ाज़ इस्तेमाल करने लगें। इसी तरह हमने हर गिरोह के लिए उसके अमल को ख़ुशनुमा बना दिया है, फिर उन्हें अपने रब ही की तरफ़ लौटना है, उस वक़्त वह उन्हें बता देगा जो कुछ वो करते रहे होंगे।

109. वे तो अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़स्में खाते हैं, अगर उनके पास कोई निशानी आ जाए तो वो ज़रूर उसपर ईमान लाएंगे। कह दो "निशानियां तो अल्लाह ही के पास हैं।" और तुम्हें क्या पता कि जब वो आ जाएंगी तो भी वो ईमान लाने के नहीं?

110. और हम उनके दिलों और निगाहों को फेर देंगे, जिस तरह वो उसपर पहली बार ईमान नहीं लाए थे; और हम उन्हें छोड़ देंगे कि वो अपनी सरकशी में भटकते रहें।

111. अगर हम उनकी तरफ़ फ़रिश्ते भी उतार देते, और मुर्दे भी उनसे बातें करने लगते, और हर एक चीज़ उनके सामने लाकर जमा कर देते, तो भी वो ईमान न लाते बल्कि अल्लाह की मशीयत ही जारी व सारी है; लेकिन उनमें से अकसर जहालत से काम लेते हैं।

112. और इसी तरह हमने इंसानों और जिन्नों में से शैतानों को हर नबी का दुश्मन बनाया, जो चिकनी-चुपड़ी बात एक-दूसरे के दिल में डालकर फ़रेब देते थे, — अगर तुम्हारा रब चाहता तो वो ऐसा न कर सकते। अब छोड़ो उन्हें और उनकी इफ़्तिरा परदाज़ी को,

113. और ताकि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके

इला-ह इल्ला हु-व व अअ़्‌रिज़ अ़निल् मुश्रिकीन (106)

व लौ शाअल्लाहु मा अश्रकू, व मा जअ़ल्ना-क अ़लैहिम् हफ़ीज़न् व मा अन्-त अ़लैहिम् बि-वकील (107)

व ला तसुब्बुल्लज़ी-न यद्‌अू-न मिन् दूनिल्लाहि फ़-यसुब्बुल्ला-ह अ़द्‌वम्-बिग़ैरि ग़िल्मिन्, कज़ालि-क ज़य्यन्ना लिकुल्लि उम्मतिन् अ़-म-लहुम् सुम्-म इला रब्बिहिम् मर्जिअ़ुहुम् फ़-युनब्बिउहुम् बिमा कानू यअ़्‌मलून (108)

व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् जाअत्हुम् आयतुल् लयुअ़्‌मिनुन्-न बिहा, क़ुल् इन्नमल्-आयातु अ़िन्दल्लाहि व मा युश्अ़िरूकुम् अन्नहा इज़ा जाअत् ला युअ़्‌मिनून (109)

व नुक़ल्लिबु अफ़्इ-द-तहुम् व अब्सारहुम् कमा लम् युअ़्‌मिनू बिही अव्व-ल मर्रतिंव्-व न-ज़रूहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ़्‌महून (110) ●

व लौ अन्नना नज़्ज़ल्ना इलैहिमुल्-मलाइ-क-त व कल्ल-महुमुल्-मौता व हशर्ना अ़लैहिम् कुल्-ल शैइन् क़ुबुलम् मा कानू लियुअ़्‌मिनू इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु व लाकिन्-न अक्स-रहुम् यज्हलून (111)

व कज़ालि-क जअ़ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अ़दुव्वन् शयातीनल्-इन्सि वल्जिन्नि यूही बअ़्‌ज़ुहुम् इला बअ़्‌ज़िन् ज़ुख़्रुफ़ल्क़ौलि ग़ुरूरन्, व लौ शा-अ रब्बु-क मा फ़-अ़लूहु फ़-ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून (112)

व लितस्ग़ा इलैहि अफ़्इ-दतुल्लज़ी-न ला

اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ وَاَعْرِضْ عَنِ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٠٦
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ اَشْرَكُوْا ۗ وَمَا جَعَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝١٠٧
وَلَا تَسُبُّوا الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ فَيَسُبُّوا اللّٰهَ عَدْوًا ۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ
كَذٰلِكَ زَيَّنَّا لِكُلِّ اُمَّةٍ عَمَلَهُمْ ۠
ثُمَّ اِلٰى رَبِّهِمْ مَّرْجِعُهُمْ فَيُنَبِّئُهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٠٨
وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ
جَآءَتْهُمْ اٰيَةٌ لَّيُؤْمِنُنَّ بِهَا ۗ
قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ وَمَا
يُشْعِرُكُمْ ۙ اَنَّهَآ اِذَا جَآءَتْ لَا
يُؤْمِنُوْنَ ۝١٠٩
وَنُقَلِّبُ اَفْـِٕدَتَهُمْ وَاَبْصَارَهُمْ كَمَا لَمْ
يُؤْمِنُوْا بِهٖٓ اَوَّلَ مَرَّةٍ وَّنَذَرُهُمْ
فِيْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝١١٠
وَلَوْ اَنَّنَا نَزَّلْنَآ اِلَيْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةَ
وَكَلَّمَهُمُ الْمَوْتٰى وَحَشَرْنَا عَلَيْهِمْ
كُلَّ شَيْءٍ قُبُلًا مَّا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْٓا
اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
يَجْهَلُوْنَ ۝١١١
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا
شَيٰطِيْنَ الْاِنْسِ وَالْجِنِّ يُوْحِيْ بَعْضُهُمْ
اِلٰى بَعْضٍ زُخْرُفَ الْقَوْلِ غُرُوْرًا ۗ
وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ
وَمَا يَفْتَرُوْنَ ۝١١٢
وَلِتَصْغٰٓى اِلَيْهِ اَفْـِٕدَةُ الَّذِيْنَ لَا

दिल इसकी तरफ़ माईल हों और ताकि उसे पसन्द कर लें, और जो कमाई उन्हें करनी है कर लें।

114. अब क्या मैं अल्लाह के सिवा कोई और फ़ैसला करनेवाला तलाश करूं? हालांकि वही है जिसने तुम्हारी तरफ़ मुफ़स्सल किताब नाज़िल की है; और जिन लोगों को हमने किताब अता की थी वो भी जानते हैं कि यह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ के साथ नाज़िल हुई; लिहाज़ा तुम हरगिज़ शक में न पड़ना।

115. तुम्हारे रब की बात सच्चाई और इनसाफ़ के साथ पूरी हुई; कोई नहीं जो उसकी बातों को बदल सकें; और वह सुनता, जानता है।

116. और अगर तुम उन लोगों की अकसरियत के कहने पर चलो जो ज़मीन में बसते हैं तो वो अल्लाह के रास्ते से तुम्हें भटका देंगे; वो तो बस अटकल और गुमान के पैरौ हैं, और वो महज़ अटकलें ही दौड़ाते हैं।

117. बेशक तुम्हारा रब उसे ख़ूब जानता है जो उसके रास्ते से भटकता है; और वह उन्हें भी जानता है जो हिदायत पर हैं।

118. पस जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया हो उसे ख़ाओ, अगर तुम उसकी आयतों पर ईमान रखते हो।

119. और तुम्हें क्या उज़र है कि उसे न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम लिया गया हो, जबकि जो कुछ चीज़ें उसने तुम्हारे लिए हराम की हैं वह उसने तफ़सील से तुम्हें बता दी हैं, मगर जबकि उसके लिए तुम हालते इज़्तिरार (मजबूरी) में हो। लेकिन अकसर तो इल्म के बग़ैर महज़ अपनी ख़्वाहिशात की बिना पर गुमराह करते हैं; बेशक तुम्हारा रब हद से गुज़रने वालों को बख़ूबी जानता है।

120. छोड़ो खुले गुनाह को भी और छुपे को भी। यक़ीनन गुनाह कमानेवालों को उसका बदला दिया जाएगा जिस कमाई में वो लोग रहे होंगे।

121. और उसे न खाओ जिसपर अल्लाह का नाम न लिया गया हो। यक़ीनन वह तो नाफ़रमानी है। शैतान तो अपने दोस्तों के दिलों में डालते हैं

युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति व लियर्ज़ौहु व लियक़्तरिफ़ू मा हुम् मुक़्तरिफ़ून (113)

अ-फ़ग़ैरल्लाहि अब्तग़ी ह-कमंव्-व हुवल्लज़ी अन्ज़-ल इलैकुमुल्-किता-ब मुफ़स्सलन्, वल्लज़ी-न आतैनाहुमुल किता-ब यअ्लमू-न अन्नहू मुनज़्ज़लुम्-मिर्रब्बि-क बिल्हक़्क़ि फ़ला तकूनन्-न मिनल्-मुम्तरीन (114)

व तम्मत् कलि-मतु रब्बि-क सिद्क़ंव्-व अद्लन्, ला मुबद्दि-ल लि-कलिमातिही व हुवस्समीअुल्-अ़लीम (115)

व इन् तुतिअ् अक्स-र मन् फ़िल्अर्ज़ि युज़िल्लू-क अ़न् सबीलिल्लाहि, इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून (116)

इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्लमु मंय्यज़िल्लु अ़न् सबीलिही व हु-व अअ्लमु बिल्मुह्तदीन (117)

फ़-कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ़लैहि इन् कुन्तुम् बिआयातिही मुअ्मिनीन (118)

व मा लकुम् अल्ला तअ्कुलू मिम्मा ज़ुकिरस्मुल्लाहि अ़लैहि व क़द् फ़स्स-ल लकुम् मा हर्र-म अ़लैकुम् इल्ला मज़्तुरिर्तुम् इलैहि, व इन्-न कसीरल्-लयुज़िल्लू-न बिअह्वाइहिम् बिग़ैरि अ़िल्मिन्, इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्लमु बिल्मुअ्तदीन (119)

व ज़रू ज़ाहिरल्-इस्मि व बाति-नहू, इन्नल्लज़ी-न यक्सिबूनल्-इस्-म सयुज्ज़ौ-न बिमा कानू यक़्तरिफ़ून (120)

व ला तअ्कुलू मिम्मा लम् युज़्करिस्मुल्लाहि अ़लैहि व इन्नहू लफ़िस्क़ुन्, व इन्नश्शयाती-न

يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ وَلِيَرْضَوْهُ وَ
لِيَقْتَرِفُوْا مَا هُمْ مُّقْتَرِفُوْنَ ۝١١٣
اَفَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْتَغِيْ حَكَمًا وَّهُوَ الَّذِيْٓ
اَنْزَلَ اِلَيْكُمُ الْكِتٰبَ مُفَصَّلًا ؕ
وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَعْلَمُوْنَ
اَنَّهٗ مُنَزَّلٌ مِّنْ رَّبِّكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُوْنَنَّ
مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝١١٤
وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ صِدْقًا وَّعَدْلًا ؕ
لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ۚ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝١١٥
وَاِنْ تُطِعْ اَكْثَرَ مَنْ فِي الْاَرْضِ يُضِلُّوْكَ
عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا
الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ۝١١٦
اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ مَنْ يَّضِلُّ عَنْ
سَبِيْلِهٖ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝١١٧
فَكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ عَلَيْهِ
اِنْ كُنْتُمْ بِاٰيٰتِهٖ مُؤْمِنِيْنَ ۝١١٨
وَمَا لَكُمْ اَلَّا تَاْكُلُوْا مِمَّا ذُكِرَ اسْمُ اللّٰهِ
عَلَيْهِ وَقَدْ فَصَّلَ لَكُمْ مَّا حَرَّمَ عَلَيْكُمْ
اِلَّا مَا اضْطُرِرْتُمْ اِلَيْهِ ؕ وَاِنَّ
كَثِيْرًا لَّيُضِلُّوْنَ بِاَهْوَآئِهِمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ؕ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ
بِالْمُعْتَدِيْنَ ۝١١٩
وَذَرُوْا ظَاهِرَ الْاِثْمِ وَبَاطِنَهٗ ؕ
اِنَّ الَّذِيْنَ يَكْسِبُوْنَ الْاِثْمَ سَيُجْزَوْنَ
بِمَا كَانُوْا يَقْتَرِفُوْنَ ۝١٢٠
وَلَا تَاْكُلُوْا مِمَّا لَمْ يُذْكَرِ اسْمُ اللّٰهِ
عَلَيْهِ وَاِنَّهٗ لَفِسْقٌ ؕ وَاِنَّ الشَّيٰطِيْنَ

कि वो तुमसे झगड़ें। अगर तुमने उनकी बात मान ली तो यक़ीनन तुम मुशरिक होगे।

122. क्या वह शख़्स जो पहले मुर्दा था, फिर हमने उसे ज़िन्दा किया और उसके लिए एक रौशनी फ़राहम की जिसको लिए वह लोगों के दरमियान चलता-फिरता है, उस शख़्स की तरह हो सकता है जो अंधेरों में पड़ा हुआ हो, उससे हरगिज़ निकलने वाला न हो? इसी तरह अहले कुफ़्र के आमाल उनके लिए ख़ुशनुमा बना दिए गए हैं।

123. और इसी तरह हमने हर एक बस्ती में उसके बड़े-बड़े मुजरिमों को लगा दिया है कि वो वहां चालें चलें। वो अपने ही ख़िलाफ़ चालें चलते हैं, लेकिन उन्हें इसका शऊर नहीं।

124. और जब उनके पास कोई आयत (निशानी) आती है तो वो कहते हैं: "हम हरगिज़ नहीं मानेंगे, जब तक कि उसी जैसी चीज़ हमें न दी जाए जो अल्लाह के रसूलों को दी गई है।" अल्लाह (उसके मुनासिब होने को) ख़ूब जानता है, जिसमें वह अपनी रिसालत रखता है। मुजरिमों को जल्द ही अल्लाह के यहां बड़ी ज़िल्लत और सख़्त अज़ाब से दो-चार होना पड़ेगा, उस चाल के सबब से जो वो चलते रहे हैं।

125. पस (हक़ीक़त यह है कि) जिसे अल्लाह सीधे रास्ते पर लगाना चाहता है उसका सीना इस्लाम के लिए खोल देता है। और जिसे गुमराह कर देना चाहता है, उसके सीने को तंग कर देता है; गोया वह आसमान में चढ़ रहा है। इस तरह अल्लाह उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है जो ईमान नहीं लाते।

126. और यह तुम्हारे रब का रास्ता है, बिल्कुल सीधा। हम ने निशानियां ध्यान देने वालों के लिए खोल-खोलकर बयान कर दी हैं।

127. उनके लिए उनके रब के यहां सलामती का घर है और वह उनका हिमायती है, उन आमाल की वजह से जो वो करते रहे हैं।

128. और उस दिन को याद करो जब वह उन सबको घेरकर इकट्ठा करेगा, (कहेगा): "ऐ जिन्नों के गिरोह,

लयूहू-न इला औलिया-इहिम् लियुजादिलूकुम् व इन् अतअ्तुमूहुम् इन्नकुम् लमुश्रिकून (121) ●

अ-व मन् का-न मैतन् फ़-अह्यैनाहु व जअ़ल्ना लहू नूरंय्यम्शी बिही फ़िन्नासि कमम् म-सलुहू फ़िज़्ज़ुलुमाति लै-स बिख़ारिजिम् मिन्हा, कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिल्काफ़िरी-न मा कानू यअ्मलून (122)

व कज़ालि-क जअ़ल्ना फ़ी कुल्लि क़र्यतिन् अकाबि-र मुज्रिमीहा लियम्कुरू फ़ीहा, व मा यम्कुरू-न इल्ला बिअन्फ़ुसिहिम् व मा यश्अुरून (123)

व इज़ा जाअत्हुम् आयतुन् क़ालू लन्-नुअ्मि-न हत्ता नुअ्ता मिस्-ल मा ऊति-य रूसुलुल्लाहि ● *अल्लाहु अअ्लमु हैसु यज्अलु रिसाल-तहू, सयुसीबुल्लज़ी-न अज्रमू सग़ारुन् अिन्दल्लाहि व अ़ज़ाबुन् शदीदुम् बिमा कानू यम्कुरून* (124)

फ़मंय्युरिदिल्लाहु अंय्यह्दि-यहू यश्रह् सद्-रहू लिल्इस्लामि व मंय्युरिद् अंय्युज़िल्लहू यज्अल् सद्-रहू ज़य्यिक़न् ह-रजन् कअन्नमा यस्सअ़्-अ़दु फ़िस्समा-इ, कज़ालि-क यज्अलुल्लाहुर्रिज्-स अ़लल्लज़ी-न ला युअ्मिनून (125)

व हाज़ा सिरातु रब्बि-क मुस्तक़ीमन्, क़द् फ़स्सल्नल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यज़्ज़क्करून (126)

लहुम् दारुस्सलामि अिन्-द रब्बिहिम् व हु-व वलिय्युहुम् बिमा कानू यअ्मलून (127)

व यौ-म यह्शुरुहुम् जमीअन् या मअ्शरल्-जिन्नि क़दिस्तक्सर्तुम् मिनल्-इन्सि व क़ा-ल

لَيُوحُونَ إِلَىٰ أَوْلِيَائِهِمْ لِيُجَادِلُوكُمْ
وَإِنْ أَطَعْتُمُوهُمْ إِنَّكُمْ لَمُشْرِكُونَ ﴿١٢١﴾
أَوَمَنْ كَانَ مَيْتًا فَأَحْيَيْنَاهُ وَجَعَلْنَا
لَهُ نُورًا يَمْشِي بِهِ فِي النَّاسِ كَمَنْ
مَثَلُهُ فِي الظُّلُمَاتِ لَيْسَ بِخَارِجٍ
مِنْهَا ۚ كَذَٰلِكَ زُيِّنَ لِلْكَافِرِينَ مَا
كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٢﴾
وَكَذَٰلِكَ جَعَلْنَا فِي كُلِّ قَرْيَةٍ أَكَابِرَ
مُجْرِمِيهَا لِيَمْكُرُوا فِيهَا ۖ وَمَا يَمْكُرُونَ
إِلَّا بِأَنْفُسِهِمْ وَمَا يَشْعُرُونَ ﴿١٢٣﴾
وَإِذَا جَاءَتْهُمْ آيَةٌ قَالُوا لَنْ نُؤْمِنَ
حَتَّىٰ نُؤْتَىٰ مِثْلَ مَا أُوتِيَ رُسُلُ
اللَّهِ ۘ اللَّهُ أَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ
رِسَالَتَهُ ۗ سَيُصِيبُ الَّذِينَ أَجْرَمُوا
صَغَارٌ عِنْدَ اللَّهِ وَعَذَابٌ شَدِيدٌ
بِمَا كَانُوا يَمْكُرُونَ ﴿١٢٤﴾
فَمَنْ يُرِدِ اللَّهُ أَنْ يَهْدِيَهُ يَشْرَحْ
صَدْرَهُ لِلْإِسْلَامِ ۖ وَمَنْ يُرِدْ أَنْ
يُضِلَّهُ يَجْعَلْ صَدْرَهُ ضَيِّقًا حَرَجًا
كَأَنَّمَا يَصَّعَّدُ فِي السَّمَاءِ ۚ كَذَٰلِكَ يَجْعَلُ
اللَّهُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ ﴿١٢٥﴾
وَهَٰذَا صِرَاطُ رَبِّكَ مُسْتَقِيمًا ۗ قَدْ
فَصَّلْنَا الْآيَاتِ لِقَوْمٍ يَذَّكَّرُونَ ﴿١٢٦﴾
لَهُمْ دَارُ السَّلَامِ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۖ وَهُوَ وَلِيُّهُمْ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١٢٧﴾
وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيعًا يَا مَعْشَرَ الْجِنِّ
قَدِ اسْتَكْثَرْتُمْ مِنَ الْإِنْسِ ۖ وَقَالَ

तुमने इनसानों पर खूब हाथ साफ़ किया।"। और इंसानों में से जो उनके साथी रहे होंगे कहेंगेः "ऐ हमारे रब, हमने बाहम एक-दूसरे से फ़ायदा उठाया और अपने उस वक़्ते मुक़र्रर पर पहुंच गए जो तूने हमारे लिए मुक़र्रर किया था।" वह कहेगाः "आग (जहन्नम) तुम्हारा ठिकाना है, उसमें तुम्हें हमेशा रहना है। बात यह है कि अल्लाह की मशीयत ही नाफ़िज़ होगी। यक़ीनन तुम्हारा रब हिकमत वाला, बख़ूबी इल्म रखने वाला है।"

139. इसी तरह हम ज़ालिमों को एक-दूसरे के लिए साथी बना देते हैं, उस कमाई की वजह से जो वो करते थे।

130. "ऐ जिन्नों और इनसानों के गिरोह, क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे जो तुम्हें मेरी आयतें सुनाते और उस दिनके पेश आने से तुम्हें डराते रहे हो"? वो कहेंगे, "हम तो ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाह हैं।" उन्हें तो दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया, मगर अब वो ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देने लगे कि वो काफ़िर थे।

131. यह (रसूलों को भेजने का काम) इस लिए हुआ कि तुम्हारा रब ज़ुल्म करके बस्तियों को हलाक करनेवाला न था जबकि वहां के लोग बेख़बर रहे हों।

132. सब ही के उनके आमाल के लिहाज़ से दरजात हैं; और जो कुछ वो करते हैं उससे तुम्हारा रब बेख़बर नहीं है।

133. तुम्हारा रब बेनियाज़, रहमत वाला है। अगर वह चाहे, तो तुम्हें ले जाए, और तुम्हारी जगह जिसको चाहे तुम्हारे बाद ले आए, जिस तरह उसने तुम्हें कुछ और लोगों की नस्ल से उठाया है।

134. जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है, उसे तो आना ही है; और तुम उसे मात देने की ताक़त नहीं रखते।

135. कह दोः "ऐ मेरी क़ौम के लोगो, तुम अपनी जगह अमल करते रहो; मैं भी अपनी जगह अमल कर रहा हूं। अनक़रीब तुम्हें मालूम हो जाएगा कि उस घर का अंजाम किसके हक़ में बेहतर होता है। यक़ीनन ज़ालिम कामयाब होने के नहीं।"

136. उन्होंने अल्लाह का उनमें एक हिस्सा मुक़र्रर किया है जो खेती और मवेशी ख़ुद उसने पैदा किए, और

औलियाउहुम् मिनल्-इन्सि रब्बनस्तम्त-अ बअ़्ज़ुना बिबअ़्ज़िंव्-व बलग़्ना अ-ज-लनल्लज़ी अज्जल्-त लना, क़ालन्नारु मस्वाकुम् ख़ालिदी-न फ़ीहा इल्ला मा शाअल्लाहु, इन्-न रब्ब-क हकीमुन् अ़लीम (128)

व कज़ालि-क नुवल्ली बअ़्ज़ज़्ज़ालिमी-न बअ़्ज़म् बिमा कानू यक्सिबून (129) ●

या मअ़्शरल्-जिन्नि वल्-इन्सि अलम् यअ्तिकुम् रुसुलुम् मिन्कुम् यकुस्सू-न अ़लैकुम् आयाती व युन्ज़िरूनकुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा, क़ालू शहिद्ना अ़ला अन्फुसिना व ग़र्रत्हुमुल्-हयातुद्दुन्या व शहिदू अ़ला अन्फुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन (130)

ज़ालि-क अल्लम् यकुर्रब्बु-क मुह्लिकल्कुरा बिज़ुल्मिंव्-व अह्लुहा ग़ाफ़िलून (131)

व लिकुल्लिन् द-रजातुम्-मिम्मा अ़मिलू, व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा यअ़्मलून (132)

व रब्बुकल्-ग़निय्यु ज़ुर्रह्मति, इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यस्तख़्लिफ़् मिम्-बअ़्दिकुम् मा यशा-उ कमा अन्श-अकुम् मिन् ज़ुर्रिय्यति क़ौमिन् आख़रीन (133)

इन्-न मा तू-अ़दू-न लआतिंव्-व मा अन्तुम् बिमुअ़्जिज़ीन (134)

कुल या क़ौमिअ़्मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आ़मिलुन् फ़सौ-फ़ तअ़्लमू-न मन् तकूनु लहू आ़क़ि-बतुद्दारि, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (135)

व ज-अ़लू लिल्लाहि मिम्मा ज़-र-अ मिनल्-हर्सि वल्-अन्आ़मि नसीबन् फ़क़ालू हाज़ा लिल्लाहि बिज़अ़्मिहिम्

أَوْلِيٰٓـؤُهُمْ مِّنَ الْاِنْسِ رَبَّنَا اسْتَمْتَعَ
بَعْضُنَا بِبَعْضٍ وَّبَلَغْنَآ اَجَلَنَا الَّذِيْٓ
اَجَّلْتَ لَنَا ؕ قَالَ النَّارُ مَثْوٰىكُمْ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ اِنَّ
رَبَّكَ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ۝١٢٨
وَكَذٰلِكَ نُوَلِّيْ بَعْضَ الظّٰلِمِيْنَ بَعْضًاۢ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝١٢٩ ع
يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اَلَمْ يَاْتِكُمْ
رُسُلٌ مِّنْكُمْ يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ
وَيُنْذِرُوْنَكُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا
شَهِدْنَا عَلٰٓى اَنْفُسِنَا وَغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ
الدُّنْيَا وَشَهِدُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ
كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ۝١٣٠
ذٰلِكَ اَنْ لَّمْ يَكُنْ رَّبُّكَ مُهْلِكَ
الْقُرٰى بِظُلْمٍ وَّاَهْلُهَا غٰفِلُوْنَ ۝١٣١
وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ؕ وَمَا
رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا يَعْمَلُوْنَ ۝١٣٢
وَرَبُّكَ الْغَنِيُّ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ اِنْ يَّشَاْ
يُذْهِبْكُمْ وَيَسْتَخْلِفْ مِنْۢ بَعْدِكُمْ مَّا يَشَآءُ
كَمَآ اَنْشَاَكُمْ مِّنْ ذُرِّيَّةِ قَوْمٍ اٰخَرِيْنَ ۝١٣٣
اِنَّ مَا تُوْعَدُوْنَ لَاٰتٍ ۙ وَّمَآ اَنْتُمْ
بِمُعْجِزِيْنَ ۝١٣٤
قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ
عَامِلٌ ۚ فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ تَكُوْنُ
لَهٗ عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝١٣٥
وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ مِمَّا ذَرَاَ مِنَ الْحَرْثِ
وَالْاَنْعَامِ نَصِيْبًا فَقَالُوْا هٰذَا لِلّٰهِ بِزَعْمِهِمْ

अपने ख़याल से कहते हैं कि "यह हिस्सा अल्लाह का है, और यह हमारे ठहराए हुए शुरका का है।" फिर जो उनके शुरका का है वह तो अल्लाह को नहीं पहुंचता; लेकिन जो अल्लाह का है वह उनके शुरका को पहुंच जाता है। कैसा बुरा है जो फ़ैसला वो करते हैं।

137. इसी तरह अक्सर मुशरिकों के लिए उनके शुरका ने उनकी अपनी औलाद के क़त्ल को खुशनुमा बना रखा है, ताकि उन्हें तबाह कर दें, और उन पर उनके दीन को मुश्तबह बना दें। अगर अल्लाह चाहता तो वो ऐसा न करते; तो छोड़ो उन्हें और उनकी इफ़्तिरा परदाज़ियों को।

138. और वो अपने ख़याल से कहते हैं कि "यह जानवर और खेती ममनूअ व महफ़ूज़ हैं; उन्हें तो बस वही खा सकता है जिसे हम चाहें," और कुछ चौपाए ऐसे हैं जिनकी पीठों को हराम ठहरा लिया है, और कुछ जानवर ऐसे हैं जिन पर अल्लाह का नाम नहीं लेते। यह सब उसपर इफ़्तिरा है; और वह जल्द उन्हें इन इफ़्तिरा परदाज़ियों का बदला देकर रहेगा।

139. वो कहते हैं कि "जो कुछ इन जानवरों के पेट में है वह बिल्कुल हमारे मर्दों के लिए है और वह हमारी बीवियों पर हराम है; लेकिन वह अगर मुर्दा हो तो वो सब उसमें शरीक हैं।" अनक़रीब वह उन्हें उनके ऐसा कहने का बदला देगा; बेशक वह हिकमतवाला, सब कुछ जाननेवाला है।

140. वो लोग कुछ जाने-बूझे बग़ैर ख़सारे में रहे जिन्होंने बेवक़ूफ़ी से अपनी औलाद को क़त्ल किया, और जो कुछ अल्लाह ने उन्हें दिया था उसे अल्लाह पर इफ़्तिरा करके हराम ठहरा लिया; हक़ीक़त में वो भटक कर रह गए और वो हिदायतयाब न हुए।

141. और वही है जिसने बाग़ पैदा किए, कुछ टट्टियों पर चढ़ाए जाते हैं और कुछ नहीं चढ़ाए जाते, और खजूर और खेती भी जिनकी पैदावार और कई तरह की होती है, और ज़ैतून और अनार, जो एक-दूसरे के मुशाबेह भी हैं, और ग़ैर मुशाबेह भी। जब वह फल दे तो उसका फल खाओ; और उसका हक़ अदा करो जो उस (फ़सल) की कटाई के दिन वाजिब होता है;

व हाज़ा लिशु-रकाइना फ़मा का-न लिशु-रकाइहिम् फ़ला यसिलु इलल्लाहि व मा का-न लिल्लाहि फ़हु-व यसिलु इला शु-रकाइहिम्, सा-अ मा यह्कुमून (136)

व कज़ालि-क ज़य्य-न लि-कसीरिम्-मिनल्-मुशिरकी-न क़त्-ल औलादिहिम् शु-रकाउहुम् लियुर्दूहुम् व लियल्बिसू अ़लैहिम् दीनहुम्, व लौ शाअल्लाहु मा फ़-अ़लूहु फ़-ज़र्हुम् व मा यफ़्तरून (137)

व क़ालू हाज़िही अन्आमुंव्-व हर्सुन् हिज्रुल्ला यत्अ़मुहा इल्ला मन्-नशा-उ बिज़अ्मिहिम् व अन्आमुन् हुर्रिमत् ज़ुहूरुहा व अन्आमुल्ला यज़्कुरूनस्मल्लाहि अ़लैहफ़्तिराअन् अ़लैहि, सयज्ज़ीहिम् बिमा कानू यफ़्तरून (138)

व क़ालू मा फ़ी बुतूनि हाज़िहिल्-अन्आमि ख़ालि-सतुल् लिज़ुकूरिना व मुहर्रमुन् अ़ला अज़्वाजिना व इंय्यकुम् मै-ततन् फ़हुम् फ़ीहि शु-रका-उ, सयज्ज़ीहिम् वस्फ़हुम्, इन्नहू हकीमुन् अ़लीम (139)

क़द् ख़सिरल्लज़ी-न क़-तलू औलादहुम् स-फ़हम् बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व हर्रमू मा र-ज़-क़हुमुल्लाहुफ़्तिरा-अन् अ़लल्लाहि, क़द् ज़ल्लू व मा कानू मुह्तदीन ●(140) ●

व हुवल्लज़ी अन्श-अ जन्नातिम् मअ्रूशातिंव्- व ग़ै-र मअ्रूशातिंव्-वन्नख़्- ल वज़्ज़र्-अ़ मुख़्तलिफ़न् उकुलुहू वज़्ज़ैतू-न वर्रुम्मा-न मु-तशाबिहंव्-व ग़ै-र मु-तशाबिहिन्, कुलू मिन् स-मरिही इज़ा अस्म-र व आतू हक़्क़हू यौ-म हसादिही व ला तुस्रिफ़ू इन्नहू ला युहिब्बुल्-

وَهٰذَا لِشُرَكَآئِنَا ۚ فَمَا كَانَ لِشُرَكَآئِهِمْ
فَلَا يَصِلُ اِلَى اللّٰهِ ۚ وَمَا كَانَ لِلّٰهِ
فَهُوَ يَصِلُ اِلٰى شُرَكَآئِهِمْ ۗ سَآءَ
مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿١٣٦﴾
وَكَذٰلِكَ زَيَّنَ لِكَثِيْرٍ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ
قَتْلَ اَوْلَادِهِمْ شُرَكَآؤُهُمْ لِيُرْدُوْهُمْ
وَلِيَلْبِسُوْا عَلَيْهِمْ دِيْنَهُمْ ۗ وَلَوْ شَآءَ
اللّٰهُ مَا فَعَلُوْهُ فَذَرْهُمْ وَمَا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٧﴾
وَقَالُوْا هٰذِهٖٓ اَنْعَامٌ وَّحَرْثٌ حِجْرٌ ۖ
لَّا يَطْعَمُهَآ اِلَّا مَنْ نَّشَآءُ بِزَعْمِهِمْ
وَاَنْعَامٌ حُرِّمَتْ ظُهُوْرُهَا وَاَنْعَامٌ
لَّا يَذْكُرُوْنَ اسْمَ اللّٰهِ عَلَيْهَا افْتِرَآءً
عَلَيْهِ ۗ سَيَجْزِيْهِمْ بِمَا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ﴿١٣٨﴾
وَقَالُوْا مَا فِيْ بُطُوْنِ هٰذِهِ الْاَنْعَامِ
خَالِصَةٌ لِّذُكُوْرِنَا وَمُحَرَّمٌ عَلٰٓى
اَزْوَاجِنَا ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مَّيْتَةً فَهُمْ
فِيْهِ شُرَكَآءُ ۗ سَيَجْزِيْهِمْ وَصْفَهُمْ ۗ
اِنَّهٗ حَكِيْمٌ عَلِيْمٌ ﴿١٣٩﴾
قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ قَتَلُوْٓا اَوْلَادَهُمْ سَفَهًۢا
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّحَرَّمُوْا مَا رَزَقَهُمُ اللّٰهُ افْتِرَآءً
عَلَى اللّٰهِ ۗ قَدْ ضَلُّوْا وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿١٤٠﴾
وَهُوَ الَّذِيْٓ اَنْشَاَ جَنّٰتٍ مَّعْرُوْشٰتٍ
وَّغَيْرَ مَعْرُوْشٰتٍ وَّالنَّخْلَ وَالزَّرْعَ
مُخْتَلِفًا اُكُلُهٗ وَالزَّيْتُوْنَ وَالرُّمَّانَ
مُتَشَابِهًا وَّغَيْرَ مُتَشَابِهٍ ۗ كُلُوْا مِنْ
ثَمَرِهٖٓ اِذَآ اَثْمَرَ وَاٰتُوْا حَقَّهٗ يَوْمَ
حَصَادِهٖ ۖ وَلَا تُسْرِفُوْا ۗ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ

और हद से आगे न बढ़ो; क्योंकि वह हद से आगे बढ़नेवालों को पसन्द नहीं करता।

142. और चौपायों में से कुछ जो बोझ उठाते हैं बड़े-बड़े, और कुछ ज़मीन से लगे हुए छोटे जानवर पैदा किए, अल्लाह ने जो कुछ तुम्हें दिया उसमें से खाओ और शैतान के क़दम ब क़दम न चलो; यक़ीनन वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

143. आठ नर-मादा पैदा किए; दो भेड़ की क़िस्म से, और दो बकरी की क़िस्म से — कहो: "क्या उसने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या उसको जो इन दोनों मादा के पेट में हो? किसी इल्म की बुनियाद पर मुझे बताओ अगर तुम सच्चे हो!"

144. — और दो ऊंट की क़िस्म से, और दो गाय की क़िस्म से। कहो "क्या उसने दोनों नर हराम किए हैं या दोनों मादा? या उसको जो इन दोनों मादा के पेट में हो? या तुम हाज़िर थे जब अल्लाह ने तुम्हें उसके बारे में हुक्म दिया था? फिर उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो लोगों को गुमराह करने के लिए बग़ैर इल्म के अल्लाह पर झूट घड़े? यक़ीनन अल्लाह ज़ुल्मपेशा लोगों की रहनुमाई नहीं करता"।

145. कह दो "जो कुछ मेरी तरफ़ वह्यी की गई है, उसमें तो मैं नहीं पाता कि किसी खानेवाले पर उसका कोई खाना हराम किया गया हो सिवाए इसके कि वह मुर्दार हो, या बहाया हुआ खून हो, या सुअर का गोश्त हो कि वह यक़ीनन नापाक है। या वह फ़िस्क़ हो जिसपर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो; उस पर भी जो बहुत मजबूर व लाचार हो जाए; वह नाफ़रमानी करनेवाला न हो और न हद से आगे बढ़ने वाला हो, तो यक़ीनन तुम्हारा रब बड़ा बख़्शनेवाला, निहायत रहम वाला है"।

146. और उन लोगों के लिए जो यहूदी हुए हमने हर नाख़ून वाला जानवर हराम किया था, और गाय और बकरी में से इन दोनों की चरबियां उनके लिए हराम कर दी थीं, सिवाय उसके जो इन दोनों की पीठों या आंतों से लगी हुई या हड्डी से मिली हुई हों; यह बात ध्यान में रखो हमने उन्हें उनकी सरकशी का सिला दिया था; और हम सच ही कहते हैं।

मुस्रिफ़ीन (141)

व मिनल्-अन्आमि हमूलतंव्-व फ़र्शन्, कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु व ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि, इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम् मुबीन (142)

समानि-य-त अज़्वाजिन् मिनज़्ज़अ्निस्नैनि व मिनल्-मअ्ज़िस्नैनि, कुल् आज़्ज़-करैनि हर्र-म अमिल्-उन्सयैनि अम्मश्त-मलत् अ़लैहि अर्हामुल्-उन्सयैनि, नब्बिऊनी बिअ़िल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (143)

व मिनल् इबिलिस्नैनि व मिनल् ब-क़रिस्नैनि, क़ुल आज़्ज़-करैनि हर्र-म अमिल्-उन्सयैनि, अम्मश्त-मलत् अ़लैहि अर्हामुल्-उन्सयैमि, अम् कुन्तुम् शु-हदा-अ इज़् वस्साकुमुल्लाहु बिहाज़ा फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि क़ज़िबल्-लियुज़िल्लन्ना-स बिग़ैरि अ़िल्मिन्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन (144) ●

क़ुल् ला अजिदु फ़ी मा ऊहि-य इलय्-य मुहर्रमन् अ़ला ताअ़िमिंय्यत्-अ़मुहू इल्ला अंय्यकू-न मै-ततन् औ दमम्-मस्फ़ूहन् औ लह्-म ख़िन्ज़ीरिन् फ़-इन्नहू रिज्सुन् औ फ़िस्क़न् उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही फ़-मनिज़्तुर्-र ग़ै-र बाग़िंव्-व ला आ़दिन् फ़-इन्-न रब्ब-क ग़फ़ूरुर्रहीम (145)

व अ़लल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना कुल्-ल ज़ी ज़ुफ़ुरिन् व मिनल् ब-क़रि वल्-ग़नमि हर्रम्ना अ़लैहिम् शुहू-महुमा इल्ला मा ह-मलत् ज़ुहूरुहुमा अविल्हवाया औ मख़्त-ल-त बिअ़ज़्मिन्, ज़ालि-क जज़ैनाहुम् बिबग़्यिहिम् व इन्ना लसादिक़ून (146)

الْمُسْرِفِينَ ﴿١٤١﴾
وَمِنَ الْأَنْعَامِ حَمُولَةً وَفَرْشًا ۚ كُلُوا
مِمَّا رَزَقَكُمُ اللَّهُ وَلَا تَتَّبِعُوا خُطُوَاتِ
الشَّيْطَانِ ۚ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿١٤٢﴾
ثَمَانِيَةَ أَزْوَاجٍ ۖ مِنَ الضَّأْنِ اثْنَيْنِ
وَمِنَ الْمَعْزِ اثْنَيْنِ ۗ قُلْ آلذَّكَرَيْنِ
حَرَّمَ أَمِ الْأُنْثَيَيْنِ أَمَّا اشْتَمَلَتْ
عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنْثَيَيْنِ ۖ نَبِّئُونِي بِعِلْمٍ
إِنْ كُنْتُمْ صَادِقِينَ ﴿١٤٣﴾
وَمِنَ الْإِبِلِ اثْنَيْنِ وَمِنَ الْبَقَرِ اثْنَيْنِ ۗ
قُلْ آلذَّكَرَيْنِ حَرَّمَ أَمِ الْأُنْثَيَيْنِ
أَمَّا اشْتَمَلَتْ عَلَيْهِ أَرْحَامُ الْأُنْثَيَيْنِ ۖ
أَمْ كُنْتُمْ شُهَدَاءَ إِذْ وَصَّاكُمُ اللَّهُ
بِهَٰذَا ۚ فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرَىٰ عَلَى
اللَّهِ كَذِبًا لِيُضِلَّ النَّاسَ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ
إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ ﴿١٤٤﴾
قُلْ لَا أَجِدُ فِي مَا أُوحِيَ إِلَيَّ مُحَرَّمًا
عَلَىٰ طَاعِمٍ يَطْعَمُهُ إِلَّا أَنْ يَكُونَ
مَيْتَةً أَوْ دَمًا مَسْفُوحًا أَوْ لَحْمَ خِنْزِيرٍ
فَإِنَّهُ رِجْسٌ أَوْ فِسْقًا أُهِلَّ لِغَيْرِ اللَّهِ بِهِ ۚ
فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَلَا عَادٍ
فَإِنَّ رَبَّكَ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿١٤٥﴾
وَعَلَى الَّذِينَ هَادُوا حَرَّمْنَا كُلَّ ذِي
ظُفُرٍ ۖ وَمِنَ الْبَقَرِ وَالْغَنَمِ حَرَّمْنَا عَلَيْهِمْ
شُحُومَهُمَا إِلَّا مَا حَمَلَتْ ظُهُورُهُمَا
أَوِ الْحَوَايَا أَوْ مَا اخْتَلَطَ بِعَظْمٍ ۚ ذَٰلِكَ
جَزَيْنَاهُمْ بِبَغْيِهِمْ ۖ وَإِنَّا لَصَادِقُونَ ﴿١٤٦﴾

147. फिर अगर वो तुम्हें झुटलाएं, तो कह दो "तुम्हारा रब वसीअ रहमत वाला है, और उसका अज़ाब मुजरिम लोगों से फिरता नहीं"।

148. मुशरिकीन कहेंगे कि "अगर अल्लाह चाहता तो न हम शिर्क करते और न हमारे बाप-दादा ही, और न हम किसी चीज़ को हराम ठहराते"। ऐसे ही उनसे पहले के लोगों ने भी झुटलाया था यहां तक कि उन्हें हमारे अज़ाब का मज़ा चखना पड़ा। कहो "क्या तुम्हारे पास कोई इल्म है कि उसे हमारे सामने पेश करो?" तुम लोग तो सिर्फ़ गुमान पर चलते हो, और महज़ क़ियास से काम लेते हो।

149. कह दो "कामिल हुज्जत तो अल्लाह ही की है; पस अगर वह चाहता तो तुम सबको हिदायत दे देता"।

150. कहो "अपने उन गवाहों को लाओ जो इसकी गवाही दें कि अल्लाह ने उसे हराम किया है"। फिर अगर वो शहादत दें तो तुम उनके साथ शहादत न देना; और उन लोगों की ख़्वाहिशात की पैरवी न करना जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, और जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, और हाल यह है कि वो दूसरों को अपने रब का हमसर ठहराते हैं।

151. कह दो "आओ में तुम्हें सुनाऊं जो पाबंदियां तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए आइद की हैं: यह कि किसी चीज़ को उसका शरीक न ठहराओ, और वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक से पेश आओ, और इफ़्लास की वजह से अपनी औलाद को क़त्ल न करो; हम तुम्हें भी रिज़्क़ देते हैं और उन्हें भी और शर्मनाक बातों में मुब्तला न हो ख़्वाह वो खुली हुई हों या छुपी हुई, और किसी जान को जिसे अल्लाह ने मुहतरम ठहराया है क़त्ल न करो, यह और बात है कि हक़ व इनसाफ़ का तक़ाज़ा यही हो। ये बातें हैं जिनकी तुम्हें उसने ताकिद की है शायद तुम अक़्ल से काम लो?

152. और यतीम के माल में हाथ न लगाओ, मगर ऐसे तरीक़े से जो बेहतर से बेहतर हो, यहां तक कि वो अपने सिन्न-ए-बुलूग़ को पहुंचे जाएं। और इनसाफ़ के साथ पूरा-पूरा नापो और तौलो। हम किसी शख़्स पर सिर्फ़

फ़-इन् कज़्ज़बू-क फ़-क़ुर्रब्बुकुम् ज़ू रह्मतिंव्-वासि-अतिन् व ला युरद्दु बअ्सुहू अनिल क़ौमिल्-मुज्रिमीन (147)

स-यक़ूलुल्लज़ी-न अश्रकू लौ शाअल्लाहु मा अश्रक्ना व ला आबाउना व ला हर्रम्ना मिन् शैइन्, कज़ालि-क कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् हत्ता ज़ाक़ू बअ्सना, क़ुल हल् अिन्दकुम् मिन् अिल्मिन् फ़-तुख़्रिजू हु लना इन् तत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन् अन्तुम् इल्ला तख़्रुसून (148)

क़ुल फ़लिल्लाहिल्-हुज्जतुल्-बालि-ग़तु फ़लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्मअीन (149)

क़ुल हलुम्-म शु-हदा-अकुमुल्लज़ी-न यश्हदू-न अन्नल्ला-ह हर्र-म हाज़ा फ़-इन् शहिदू फ़ला तश्हद् म-अहुम् व ला तत्तबिअ् अह्वा-अल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़ि-रति व हुम् बिरब्बिहिम् यअ्दिलून (150) ●

क़ुल तआलौ अत्लु मा हर्र-म रब्बुकुम् अलैकुम् अल्ला तुश्रिकू बिही शैअंव्-व बिल्वालिदैनि इह्सानन् व ला तक़्तुलू औलादकुम् मिन् इम्लाक़िन्, नह्नु नर्ज़ुक़ुकुम् व इय्याहुम् व ला तक़्रबुल्-फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा व मा ब-त-न व ला तक़्तुलुन्नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि, ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही लअल्लकुम् तअ्क़िलून (151)

व ला तक़्रबू मालल्-यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु हत्ता यब्लु-ग़ अशुद्दहू व औफ़ुल्कै-ल वल्मीज़ा-न बिल्क़िस्ति ला नुकल्लिफ़ु

فَإِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ رَّبُّكُمْ ذُوْ رَحْمَةٍ
وَّاسِعَةٍ ۚ وَلَا يُرَدُّ بَأْسُهٗ عَنِ الْقَوْمِ
الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٤٧﴾
سَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ مَآ
اَشْرَكْنَا وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ
شَيْءٍ ۭ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
حَتّٰى ذَاقُوْا بَاْسَنَا ۭ قُلْ هَلْ عِنْدَكُمْ
مِّنْ عِلْمٍ فَتُخْرِجُوْهُ لَنَا ۭ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ
اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ اَنْتُمْ اِلَّا تَخْرُصُوْنَ ﴿١٤٨﴾
قُلْ فَلِلّٰهِ الْحُجَّةُ الْبَالِغَةُ ۚ فَلَوْ شَآءَ
لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٤٩﴾
قُلْ هَلُمَّ شُهَدَآءَكُمُ الَّذِيْنَ يَشْهَدُوْنَ
اَنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ هٰذَا ۚ فَاِنْ شَهِدُوْا فَلَا
تَشْهَدْ مَعَهُمْ ۚ وَلَا تَتَّبِعْ اَهْوَآءَ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَالَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
ع بِالْاٰخِرَةِ وَهُمْ بِرَبِّهِمْ يَعْدِلُوْنَ ﴿١٥٠﴾
قُلْ تَعَالَوْا اَتْلُ مَا حَرَّمَ رَبُّكُمْ
عَلَيْكُمْ اَلَّا تُشْرِكُوْا بِهٖ شَيْـًٔا وَّ
بِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ۚ وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ
مِّنْ اِمْلَاقٍ ۭ نَحْنُ نَرْزُقُكُمْ وَاِيَّاهُمْ ۚ
وَلَا تَقْرَبُوا الْفَوَاحِشَ مَا ظَهَرَ مِنْهَا
وَمَا بَطَنَ ۚ وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ
حَرَّمَ اللّٰهُ اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ ذٰلِكُمْ وَصّٰىكُمْ
بِهٖ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿١٥١﴾
وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ
هِيَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۚ وَاَوْفُوا
الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ بِالْقِسْطِ ۚ لَا نُكَلِّفُ

نَفْسًا إِلَّا وُسْعَهَا ۖ وَإِذَا قُلْتُمْ فَاعْدِلُوا
وَلَوْ كَانَ ذَا قُرْبَىٰ ۖ وَبِعَهْدِ اللَّهِ أَوْفُوا ۚ
ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿١٥٢﴾
وَأَنَّ هَٰذَا صِرَاطِي مُسْتَقِيمًا فَاتَّبِعُوهُ ۖ
وَلَا تَتَّبِعُوا السُّبُلَ فَتَفَرَّقَ بِكُمْ عَنْ
سَبِيلِهِ ۚ ذَٰلِكُمْ وَصَّاكُمْ بِهِ لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٥٣﴾
ثُمَّ آتَيْنَا مُوسَى الْكِتَابَ تَمَامًا عَلَى
الَّذِي أَحْسَنَ وَتَفْصِيلًا لِكُلِّ شَيْءٍ
وَهُدًى وَرَحْمَةً لَعَلَّهُمْ بِلِقَاءِ رَبِّهِمْ
يُؤْمِنُونَ ﴿١٥٤﴾
وَهَٰذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبَارَكٌ فَاتَّبِعُوهُ
وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿١٥٥﴾
أَنْ تَقُولُوا إِنَّمَا أُنْزِلَ الْكِتَابُ عَلَىٰ
طَائِفَتَيْنِ مِنْ قَبْلِنَا وَإِنْ كُنَّا
عَنْ دِرَاسَتِهِمْ لَغَافِلِينَ ﴿١٥٦﴾
أَوْ تَقُولُوا لَوْ أَنَّا أُنْزِلَ عَلَيْنَا الْكِتَابُ
لَكُنَّا أَهْدَىٰ مِنْهُمْ ۚ فَقَدْ جَاءَكُمْ
بَيِّنَةٌ مِنْ رَبِّكُمْ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ ۚ
فَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَّبَ بِآيَاتِ اللَّهِ
وَصَدَفَ عَنْهَا ۗ سَنَجْزِي الَّذِينَ
يَصْدِفُونَ عَنْ آيَاتِنَا سُوءَ الْعَذَابِ
بِمَا كَانُوا يَصْدِفُونَ ﴿١٥٧﴾
هَلْ يَنْظُرُونَ إِلَّا أَنْ تَأْتِيَهُمُ الْمَلَائِكَةُ
أَوْ يَأْتِيَ رَبُّكَ أَوْ يَأْتِيَ بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ ۗ
يَوْمَ يَأْتِي بَعْضُ آيَاتِ رَبِّكَ لَا يَنْفَعُ
نَفْسًا إِيمَانُهَا لَمْ تَكُنْ آمَنَتْ مِنْ
قَبْلُ أَوْ كَسَبَتْ فِي إِيمَانِهَا خَيْرًا ۗ

नफ़्सन इल्ला वुस्अहा व इज़ा क़ुल्तुम् फ़अ़दिलू व लौ का-न ज़ा क़ुर्बा व बि-अ़हिदल्लाहि औफ़ू ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (152)

व अन्-न हाज़ा सिराती मुस्तक़ीमन् फ़त्तबिअूहु व ला तत्तबिअुस्सुबु-ल फ़-तफ़र्र-क़ बिकुम् अ़न् सबीलिही, ज़ालिकुम् वस्साकुम् बिही लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (153)

सुम्-म आतैना मूसल्-किता-ब तमामन् अ़लल्लज़ी अह्स-न व तफ़्सीलल्-लिकुल्लि शैइंव्-व हुदंव्-व रह्म-तल् लअ़ल्लहुम् बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् युअ्मिनून (154) ●

व हाज़ा किताबुन् अन्ज़ल्नाहु मुबारकुन् फ़त्तबिअूहु वत्तक़ू लअ़ल्लकुम् तुर्हमून (155)

अन् तक़ूलू इन्नमा उन्ज़िलल्-किताबु अ़ला ताइ-फ़तैनि मिन् क़ब्लिना व इन् कुन्ना अ़न् दिरा-सतिहिम् लग़ाफ़िलीन (156)

औ तक़ूलू लौ अन्ना उन्ज़ि-ल अ़लैनल्-किताबु लकुन्ना अह्दा मिन्हुम् फ़-क़द् जाअकुम् बय्यि-नतुम् मिर्रब्बिकुम् व हुदंव्-व रह्मतुन् फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन् कज़्ज़-ब बिआयातिल्लाहि व स-द-फ़ अ़न्हा, स-नज्ज़िल्लज़ी-न यस्दिफ़ू-न अ़न् आयातिना सूअल्-अ़ज़ाबि बिमा कानू यस्दिफ़ून (157)

हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अन् तअ्ति-यहुमुल्मलाइ-कतु औ यअ्ति-य रब्बु-क औ यअ्ति-य बअ्ज़ु आयाति रब्बि-क, यौ-म यअ्ती बअ्ज़ु आयाति रब्बि-क ला यन्फ़अु नफ़्सन् ईमानुहा लम् तकुन् आम-नत् मिन् क़ब्लु औ क-सबत् फ़ी ईमानिहा ख़ैरन्,

उसी काम की ज़िम्मेदारी का बोझ डालते हैं जो उसके बस में हो। और जब बात कहो, तो इंसाफ़ की कहो, ख़्वाह मुआमला क़रीबी रिश्तेदार ही का क्यों न हो। और अल्लाह के अ़हद को पूरा करो। ये बातें हैं जिनकी उसने तुम्हें ताकीद की है, ताकि तुम याददिहानी हासिल करो।

153. और यह कि यही मेरा सीधा रास्ता है, तो तुम इसी पर चलो, और दूसरे रास्तों पर न चलो कि वो तुम्हें उसके रास्ते से हटाकर इधर-उधर कर देंगे। यह वो बात है जिसकी उसने तुम्हें ताकीद की है; ताकि तुम पास व लिहाज़ रखो"।

154. फिर देखो हमने मूसा को किताब दी थी, नेमत की तकमील के लिए जिसको उसने बहुस्न व ख़ूबी इख़्तियार किया था, और हर चीज़ को वाज़ेह तौर पर बयान करने और रहनुमाई करने और रहमत से नवाज़ने की ग़र्ज़ से; ताकि उन्हें अपने रब से मिलने का यक़ीन व एतिमाद हो।

155. और यह किताब भी हमने उतारी है, जो बाबरकत है; तुम इसकी पैरवी करो, और डर रखो; ताकि तुमपर रहम किया जाए;

156. कि कहीं ऐसा न हो कि तुम कहने लगो कि "किताब तो बस हमसे पहले के दो गिरोहों ही पर नाज़िल हुई थी, और हमें तो उनके पढ़ने-पढ़ाने की ख़बर तक न थी;"

157. या यह कहने लगो कि "अगर हम पर किताब नाज़िल होती, तो हम उनसे बढ़कर हिदायत पर होते"। तो अब तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक दलील-ए-रौशन, और हिदायत और रहमत आ चुकी है; अब उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह की आयतों को झुटलाए, और दूसरों को उनसे फेरे? जो लोग हमारी आयतों से रोकते हैं उन्हें हम उनके इस रोकने की पादाश में अनक़रीब बदतरीन अज़ाब देंगे।

158. क्या ये लोग बस इसी का इंतिज़ार कर रहे हैं कि उनके पास फ़रिश्ते आ जाएं, या ख़ुद तुम्हारा रब आ जाए, या तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाए? जिस दिन तुम्हारे रब की कोई निशानी आ जाएगी फिर तो किसी ऐसे शख़्स को उसका ईमान कुछ नफ़ा न देगा जो पहले ईमान न लाया हो, या जिसने अपने ईमान में

कोई भलाई न कमाई हो। कह दो "तुम भी इंतिज़ार करो; हम भी इंतिज़ार करते हैं"।

159. जिन लोगों ने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर दिया और खुद गिरोहों में बट गए, तुम्हारा उनसे कोई सरोकार नहीं; उनका मुआमला तो बस अल्लाह के हवाले है, फिर वह उन्हें बता देगा जो कुछ वो किया करते थे।

160. जो कोई नेक रवी लेकर आएगा उसे उसका दस गुना मिलेगा: और जो शख़्स बुरी सीरत के साथ आएगा उसे उसका बस उतना ही बदला मिलेगा; और ऐसे लोगों पर कोई ज़ुल्म न होगा।

161. कहो "मेरे रब ने सीधे रास्ते की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमा दी है, बिल्कुल ठीक दीन, इब्राहीम की मिल्लत की तरफ़ जो यकसू था; और वह मुशरिक न था"।

162. कहो "मेरी नमाज़ और मेरी क़ुरबानी, और मेरा जीना, और मेरा मरना, सब अल्लाह, सारे जहां के रब के लिए है।

163. उसका कोई शरीक नहीं है। मुझे तो इसी का हुक्म हुआ है, और सबसे पहला सरे तसलीम ख़म करनेवाला मैं हूं"।

164. कहो, "क्या मैं अल्लाह से हटकर कोई और रब तलाश करूं, जबकि हर चीज़ का रब वही है!" और यह कि हर शख़्स जो कुछ कमाता है वह खुद उसका ज़िम्मेदार है; कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाएगा। फिर तुम्हें अपने रब की तरफ़ लौट कर जाना है, उस वक़्त वह तुम्हें उसकी ख़बर देगा जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ किया करते थे।

165. वही तो है जिसने तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया, और तुममें से बाज़ को बाज़ पर दरजात के लिहाज से बुलन्द किया, ताकि जो कुछ उसने तुम्हें दे रखा है उसमें वह तुम्हारी आज़माइश करे। बेशक तुम्हारा रब जल्द सज़ा देने वाला है; और यक़ीनन वह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान भी है।

सूरह अल-आराफ़ मक्की

(आयतें 206, रुकूआत 24)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-मीम-साद।

2. यह एक किताब है जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल हुई है — पस इससे तुम्हारे सीने में कोई तंगी न हो — ताकि तुम इसके ज़रिए से ख़बरदार करो, और यह

क़ुलिन्तज़िरू इन्ना मुन्तज़िरून (158)

इन्नल्लज़ी-न फ़र्रकू दीनहुम् व कानू शि-यअल्लस्-त मिन्हुम् फ़ी शैइन्, इन्नमा अम्रुहुम् इलल्लाहि सुम्-म युनब्बिउहुम् बिमा कानू यफ़अलून (159)

मन् जा-अ बिल्ह-स नति फ़-लहू अश्रु अम्सालिहा व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा व हुम् ला युज़्लमून (160)

कुल इन्ननी हदानी रब्बी इला सिरातिम् मुस्तक़ीम, दीनन् कि-य-मम् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न् व मा का-न मिनल् मुश्रिकीन (161)

कुल इन्-न सलाती व नुसुकी व मह्या-य व ममाती लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (162)

ला शरी-क लहू व बिज़ालि-क उमिरतु व अ-न अव्वलुल् मुस्लिमीन (163)

कुल अग़ैरल्लाहि अब्ग़ी रब्बंव्-व हु-व रब्बु कुल्लि शैइन्, व ला तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन् इल्ला अलैहा व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्विज़्-र उख़रा सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअुकुम् फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (164)

व हुवल्लज़ी ज-अ-लकुम् ख़ला-इफ़ल्-अर्ज़ि व र-फ़-अ बअ्ज़कुम् फ़ौ-क़ बअ्ज़िन् द-रजातिल् लियब्लु-वकुम् फ़ी मा आताकुम्, इन्-न रब्ब-क सरीअुल्-अिक़ाबि व इन्नहू ल-ग़फ़ूरुर्रहीम ● (165) ●

7 सूरतुल-अअ्राफ़ि 39
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 14635 अक्षर, 3387 शब्द, 206 आयतें और 24 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़-लाम्-मीम्-सॉद् (1)

किताबुन् उन्ज़ि-ल इलै-क फ़ला यकुन् फ़ी सद्रि-क ह-रजुम् मिन्हु लितुन्ज़ि-र

قُلِ انْتَظِرُوْٓا اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ﴿١٥٨﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا
لَّسْتَ مِنْهُمْ فِيْ شَيْءٍ ؕ اِنَّمَآ اَمْرُهُمْ
اِلَى اللّٰهِ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿١٥٩﴾
مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ عَشْرُ اَمْثَالِهَا ۚ
وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا
مِثْلَهَا وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿١٦٠﴾
قُلْ اِنَّنِيْ هَدٰىنِيْ رَبِّيْٓ اِلٰى صِرَاطٍ
مُّسْتَقِيْمٍ ۚ دِيْنًا قِيَمًا مِّلَّةَ اِبْرٰهِيْمَ
حَنِيْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٦١﴾
قُلْ اِنَّ صَلَاتِيْ وَنُسُكِيْ وَمَحْيَايَ
وَمَمَاتِيْ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٦٢﴾
لَا شَرِيْكَ لَهٗ ۚ وَبِذٰلِكَ اُمِرْتُ وَاَنَا
اَوَّلُ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿١٦٣﴾
قُلْ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْ رَبًّا وَّهُوَ رَبُّ
كُلِّ شَيْءٍ ؕ وَلَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ
اِلَّا عَلَيْهَا ۚ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۚ
ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ﴿١٦٤﴾
وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ الْاَرْضِ
وَرَفَعَ بَعْضَكُمْ فَوْقَ بَعْضٍ دَرَجٰتٍ
لِّيَبْلُوَكُمْ فِيْ مَآ اٰتٰىكُمْ ؕ اِنَّ رَبَّكَ سَرِيْعُ
ع الْعِقَابِ ۖ وَاِنَّهٗ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٥﴾

سُوْرَةُ الْاَعْرَافِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢٠٦ رُكُوْعَاتُهَا ٢٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
الٓمّٓصٓ ﴿١﴾ كِتٰبٌ اُنْزِلَ اِلَيْكَ فَلَا
يَكُنْ فِيْ صَدْرِكَ حَرَجٌ مِّنْهُ لِتُنْذِرَ بِهٖ

मोमिनीन के लिए एक याददिहानी है।

3. जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी जानिब नाज़िल हुआ है उसकी पैरवी करो, और उसे छोड़ कर दूसरे सरपरस्तों की पैरवी इख़्तियार न करो; तुम लोग नसीहत थोड़े ही मानते हो।

4. कितनी ही बस्तियां थीं जिन्हें हमने तबाह कर के रख दिया! उनपर हमारा अज़ाब रात को सोते में आ पहुंचा, या (दिनदहाड़े आया) जबकि वो दोपहर में आराम कर रहे थे,

5. जब उनपर हमारा अज़ाब आ गया, तो इसके सिवा उनके मुंह से और कुछ न निकला कि वो पुकार उठे, "वाक़ई हम ज़ालिम थे!"

6. तो हम उन लोगों से ज़रूर पूछेंगे जिनके पास रसूल भेजे गए थे, और हमें रसूलों से भी लाज़िमन पूछना है,

7. फिर हम पूरे इल्म के साथ उनके सामने सब बयान कर देंगे; हम कोई ग़ाइब नहीं थे।

8. और वज़न उस दिन सच्चा होगा, पस जिनके आमाल वज़न में भारी होंगे वही कामयाब होंगे,

9. और वो लोग जिनके आमाल वज़न में हलके होंगे, तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको ख़सारे में डाला, इसलिए कि वो हमारी आयतों का इनकार और अपने ऊपर ज़ुल्म करते रहे।

10. और हमने ज़मीन में तुम्हें इक्तिदार व इख़्तियार बख़्शा और उसमें तुम्हारे लिए सामाने रिज़्क़ रखे; तुम शुक्र थोड़े ही करते हो।

11. हमने तुम्हें पैदा करना तय किया, फिर तुम्हारी सूरत गिरी का इरादा किया (और आदम को पैदा किया); फिर हमने फरिश्तों से कहा: "आदम को सजदा करो", तो उन्होंने सजदा किया सिवाय इबलीस के, वह सजदा करनेवाला न हुआ।

12. कहा, "तुझे किसने सजदा करने से रोका, जब कि मैंने तुझे हुक्म दिया था?" बोला: "मैं उससे बेहतर हूं, तूने मुझे आग से पैदा किया, और उसे मिट्टी से पैदा किया है।"

13. फरमाया, "उतर यहां से; तुझे कोई हक़ नहीं है कि यहां तकब्बुर करे, तू अब निकल जा, यक़ीनन तू ज़लील है।"

बिही व ज़िक्रा लिल्मुअ्मिनीन (2)

इत्तबिअू मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् व ला तत्तबिअू मिन् दूनिही औलिया-अ, क़लीलम् मा तज़क्करून (3)

व कम् मिन् क़र्यतिन् अह्लक्नाहा फ़जा-अहा बअ्सुना बयातन् औ हुम् क़ा-इलून (4)

फ़मा का-न दअ्वाहुम् इज़् जा-अहुम् बअ्सुना इल्ला अन् क़ालू इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (5)

फ़-लनस्-अलन्नल्लज़ी-न उर्सि-ल इलैहिम् व ल-नस्-अलन्नल् मुर्सलीन (6)

फ़-ल-नक़ुस्सन्-न अ़लैहिम् बिअ़िल्मिंव्-व मा कुन्ना ग़ा-इबीन (7)

वल्वज़्नु यौमइज़ि-निल्हक़्क़ु फ़-मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (8)

व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़-उला-इकल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् बिमा कानू बिआयातिना यज़्लिमून (9)

व ल-क़द् मक्कन्नाकुम् फ़िल्अर्ज़ि व जअ़ल्ना लकुम् फ़ीहा मआ़यि-श, क़लीलम् मा तश्कुरून (10) ●

व ल-क़द् ख़लक़्नाकुम् सुम्-म सव्वर्नाकुम् सुम्-म क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स, लम् यकुम् मिनस्साजिदीन (11)

क़ा-ल मा म-न-अ़-क अल्ला तस्जु-द इज़् अमर्तु-क, क़ा-ल अ-न ख़ैरुम्-मिन्हु ख़लक़्तनी मिन् नारिंव्-व ख़लक़्तहू मिन् तीन (12)

क़ा-ल फ़ह्बित् मिन्हा फ़मा यकूनु ल-क अन् त-तकब्ब-र फ़ीहा फ़ख़्रुज् इन्न-क मिनस्साग़िरीन (13)

وَذِكْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢
اِتَّبِعُوْا مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَلَا تَتَّبِعُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَآءَ ۭ
قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣
وَكَمْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا فَجَآءَهَا بَاْسُنَا
بَيَاتًا اَوْ هُمْ قَآىِٕلُوْنَ ۝٤
فَمَا كَانَ دَعْوٰىهُمْ اِذْ جَآءَهُمْ بَاْسُنَآ
اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٥
فَلَنَسْــَٔلَنَّ الَّذِيْنَ اُرْسِلَ اِلَيْهِمْ وَلَنَسْــَٔلَنَّ
الْمُرْسَلِيْنَ ۝٦
فَلَنَقُصَّنَّ عَلَيْهِمْ بِعِلْمٍ وَّمَا كُنَّا
غَآىِٕبِيْنَ ۝٧
وَالْوَزْنُ يَوْمَىِٕذِ ِالْحَقُّ ۚ فَمَنْ ثَقُلَتْ
مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٨
وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰۗىِٕكَ
الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ بِمَا كَانُوْا
بِاٰيٰتِنَا يَظْلِمُوْنَ ۝٩
وَلَقَدْ مَكَّنّٰكُمْ فِي الْاَرْضِ وَجَعَلْنَا
ع لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝١٠
وَلَقَدْ خَلَقْنٰكُمْ ثُمَّ صَوَّرْنٰكُمْ ثُمَّ
قُلْنَا لِلْمَلٰۗىِٕكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ ڰ فَسَجَدُوْٓا
اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ لَمْ يَكُنْ مِّنَ السّٰجِدِيْنَ ۝١١
قَالَ مَا مَنَعَكَ اَلَّا تَسْجُدَ اِذْ اَمَرْتُكَ ۭ
قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ
وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ ۝١٢
قَالَ فَاهْبِطْ مِنْهَا فَمَا يَكُوْنُ لَكَ اَنْ
تَتَكَبَّرَ فِيْهَا فَاخْرُجْ اِنَّكَ مِنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝١٣

14. बोलाः "मुझे उस दिन तक मुहलत दे जबकि लोग उठाए जाएंगे।"

15. कहा, "बेशक तुझे मुहलत है"।

16. बोलाः "अच्छा इस वजह से कि तूने मुझे गुमराही में डाला है, मैं भी तेरी सीधी राह पर उनके लिए घात में ज़रूर बैठूंगा;

17. फिर उनके आगे और उनके पीछे, उनके दाएं और उनके बाएं से उनके पास आऊंगाः और तू उनमें से अक्सर को शुक्रगुज़ार न पाएगा।"

18. फ़रमाया, "निकल जा यहां से, मज़मूम, ठुकराया हुआ। उनमें से जिस किसी ने भी तेरी पैरवी की, मैं ज़रूर तुम सबसे जहन्नम को भर दूंगा।"

19. और "ऐ आदम तुम और तुम्हारी बीवी दोनों जन्नत में रहो-बसो, फिर जहां से चाहो खाओ, लेकिन इस दरख़्त को न लिपटना, वरना ज़ालिम होगे।"

20. फिर शैतान ने दोनों के अन्दर वसवसा डाला, ताकि उनकी शर्मगाहों को जो उन दोनों से छुपी थीं उन दोनों के सामने खोल दे। और उसने कहा, "तुम्हारे रब ने तुम दोनों को जो इस दरख़्त से रोका है तो महज़ इसलिए कि ऐसा न हो कि तुम कहीं फ़रिश्ते हो जाओ, या मबादा तुम्हें दवाम हासिल हो जाए।"

21. और उसने उन दोनों के आगे क़समें खाई कि "यक़ीनन मैं तुम दोनों का ख़ैर ख़्वाह हूं"।

22. इस तरह फ़रेब देकर उसने उन दोनों को माइल किया, आख़िरकार जब उन्होंने उस दरख़्त का मज़ा चखा, उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खुल गईं, और वो अपने ऊपर बाग़ के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे तब उनके रब ने उन्हें आवाज़ दी कि "क्या मैंने तुम दोनों को इस दरख़्त से रोका नहीं था, और तुमसे कहा नहीं था कि शैतान तुम्हारा खुला दुश्मन है?"

23. दोनों बोले, "हमारे रब, हमने अपने आप पर सितम किया, अब अगर तूने हमें माफ़ न किया, और हमपर रहम न फ़रमाया तो फिर तो हम ख़ासिर व ज़ियांकार (घाटे में) होंगे"।

24. फ़रमाया "उतरो, तुम आपस में एक-दूसरे के दुश्मन हो। और एक मुद्दत तक ज़मीन में तुम्हारे लिए जाए क़रार और ज़िन्दगी का सामान है"।

क़ा-ल अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्अ़सून (14)

क़ा-ल इन्न-क मिनल् मुन्ज़रीन (15)

क़ा-ल फ़बिमा अ़ग्वैतनी ल-अक़्अुदन्-न लहुम् सिरा-तकल् मुस्तक़ीम (16)

सुम्-म लआतियन्नहुम् मिम्-बैनि ऐदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् व अ़न् ऐमानिहिम् व अ़न् शमा-इलिहिम्, व ला तजिदु अक्स-रहुम् शाकिरीन (17)

क़ालख़्रुज मिन्हा मज़्ऊमम-मद्हूरन्, ल-मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् लअम्-लअन्-न जहन्न-म मिन्कुम अज्मअ़ीन (18)

व या आदमुस्कुन् अन्-त व ज़ौजुकल्जन्न-त फ़-कुला मिन् हैसु शिअ्तुमा व ला तक़्रबा हाज़िहिश्-श-ज-र-त फ़-तकूना मिनज़्-ज़ालिमीन (19)

फ़-वस्व-स लहुमश्-शैतानु लियुब्दि-य लहुमा मा वूरि-य अ़न्हुमा मिन् सौआतिहिमा व क़ा-ल मा नहाकुमा रब्बुकुमा अ़न् हाज़िहिश्श-ज-रति इल्ला अन् तकूना म-लकैनि औ तकूना मिनलख़ालिदीन (20)

व क़ा-स-महुमा इन्नी लकुमा लमिनन्नासिहीन (21)

फ़दल्लाहुमा बिग़ुरूरिन् फ़-लम्मा ज़ाक़श्श-ज-र-त बदत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिंव्व-रक़िल्-जन्नति, व नादाहुमा रब्बुहुमा अलम् अन्हकुमा अ़न् तिल्कुमश्श-ज-रति व अक़ुल्-लकुमा इन्नश्शैता-न लकुमा अ़दुव्वुम् मुबीन (22)

क़ाला रब्बना ज़लम्ना अन्फ़ु-सना व इल्लम् तग़्फ़िर् लना व तर्हम्ना ल-नकूनन्-न मिनल् ख़ासिरीन (23)

क़ालह्बितू बअ़्ज़ुकुम् लि-बअ़्ज़िन् अ़दुव्वुन् व लकुम् फ़िलअर्ज़ि मुस्तक़र्रुंव्-व मताअुन् इला हीन (24)

قَالَ اَنْظِرْنِيْۤ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ⑭
قَالَ اِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ ⑮
قَالَ فَبِمَاۤ اَغْوَيْتَنِيْ لَاَقْعُدَنَّ لَهُمْ
صِرَاطَكَ الْمُسْتَقِيْمَ ⑯ۙ
ثُمَّ لَاٰتِيَنَّهُمْ مِّنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ
خَلْفِهِمْ وَعَنْ اَيْمَانِهِمْ وَعَنْ شَمَآئِلِهِمْ ؕ
وَلَا تَجِدُ اَكْثَرَهُمْ شٰكِرِيْنَ ⑰
قَالَ اخْرُجْ مِنْهَا مَذْءُوْمًا مَّدْحُوْرًا ؕ لَمَنْ
تَبِعَكَ مِنْهُمْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ⑱
وَيٰۤاٰدَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَزَوْجُكَ الْجَنَّةَ
فَكُلَا مِنْ حَيْثُ شِئْتُمَا وَلَا تَقْرَبَا
هٰذِهِ الشَّجَرَةَ فَتَكُوْنَا مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ⑲
فَوَسْوَسَ لَهُمَا الشَّيْطٰنُ لِيُبْدِيَ لَهُمَا
مَا وٗرِيَ عَنْهُمَا مِنْ سَوْاٰتِهِمَا وَقَالَ
مَا نَهٰىكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هٰذِهِ الشَّجَرَةِ اِلَّاۤ
اَنْ تَكُوْنَا مَلَكَيْنِ اَوْ تَكُوْنَا مِنَ الْخٰلِدِيْنَ ⑳
وَقَاسَمَهُمَاۤ اِنِّيْ لَكُمَا لَمِنَ النّٰصِحِيْنَ ㉑ۙ
فَدَلّٰىهُمَا بِغُرُوْرٍ ۚ فَلَمَّا ذَاقَا الشَّجَرَةَ
بَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ
عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ؕ وَنَادٰىهُمَا
رَبُّهُمَاۤ اَلَمْ اَنْهَكُمَا عَنْ تِلْكُمَا الشَّجَرَةِ
وَاَقُلْ لَّكُمَاۤ اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمَا عَدُوٌّ مُّبِيْنٌ ㉒
قَالَا رَبَّنَا ظَلَمْنَاۤ اَنْفُسَنَا ٚ وَاِنْ لَّمْ
تَغْفِرْ لَنَا وَتَرْحَمْنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ㉓
قَالَ اهْبِطُوْا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ وَلَكُمْ
فِي الْاَرْضِ مُسْتَقَرٌّ وَّمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ㉔

25. फ़रमाया कि "वहीं तुम्हें जीना, और तुम्हें मरना है, और उसी में से तुमको निकाला जाएगा।"

26. ऐ बनी आदम, हमने तुम्हारे लिए लिबास (का हुक्म) उतारा है कि तुम्हारी शर्मगाहों को छुपाए और हिफ़ाज़त और आराइश का ज़रिया हो, और तक़वा का लिबास — वह तो सबसे बेहतर है; यह अल्लाह की निशानियों में से है; ताकि वो याददिहानी हासिल करें।

27. ऐ बनी आदम, शैतान तुम्हें फ़ित्ने में मुबतला न कर दे जिस तरह उसने तुम्हारे वालिदैन को जन्नत से बाहर निकलवा दिया था, उनके लिबास उनसे उतरवा दिए थे ताकि उनकी शर्मगाहें एक-दूसरे के सामने खोल दे। बेशक वह तुम्हें देखता है, वह भी उसका गिरोह भी, उस जगह से कि तुम उन्हें नहीं देखते। हमने तो शैतानों को उन लोगों के रफ़ीक़ बना दिए हैं जो ईमान नहीं रखते।

28. और उनका हाल यह है कि जब वो लोग कोई शर्मनाक काम करते हैं तो कहते हैं, "हमने तो अपने बाप-दादा को इसी तरीक़े पर पाया है और अल्लाह ने भी हमें इसी का हुक्म दिया है।" कह दो, "अल्लाह कभी शर्मनाक कामों का हुक्म नहीं दिया करता; क्या अल्लाह से मनसूब कर के ऐसी बात कहते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं?"

29. कहो: "मेरे रब ने तो इनसाफ़ का हुक्म दिया है और यह कि इबादत के हर मौक़े व महल पर अपना रुख़ ठीक रखो और दीन को उसी के लिए ख़ालिस करके उसे पुकारो। जैसे उसने तुम्हारा आग़ाज़ फ़रमाया उसी तरह तुम पलटोगे;"

30. — एक गिरोह को उसने राह दिखाई, लेकिन दूसरा गिरोह ऐसा है जिसके लोगों पर गुमराही चसपां होकर रही, यक़ीनन उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर शैतानों को अपने रफ़ीक़ बनाए, और समझते यह हैं कि वो हिदायत पर हैं"।

31. ऐ बनी आदम! इबादत के हर मौक़े पर अपनी ज़ीनत इख़्तियार करो; खाओ और पियो, अलबत्ता हद से आगे न बढ़ो; यक़ीनन वह हद से बढ़ने वालों को पसन्द नहीं करता!

32. कहो: "अल्लाह की उस ज़ीनत को जिसे वह अपने बन्दों के लिए वुजूद में लाया है, और रिज़्क़ की पाकीज़ा अच्छी चीज़ों को किसने हराम कर दिया?" कह दो: "ये दुनिया की

क़ा-ल फ़ीहा तह्यौ-न व फ़ीहा तमूतू-न व मिन्हा तुख़रजून (25)●

या बनी आद-म क़द् अन्ज़ल्ना अ़लैकुम् लिबासंय्युवारी सौआतिकुम् वरीशन्, व लिबासुत्तक़्वा ज़ालि-क ख़ैरुन, ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि लअ़ल्लहुम यज़्ज़क्करून (26)

या बनी आद-म ला यफ़्तिनन्नकुमुश्शैतानु कमा अख़्र-ज अ-बवैकुम् मिनल्जन्नति यन्ज़िअु अ़न्हुमा लिबा-सहुमा लियुरि-यहुमा सौआतिहिमा, इन्नहू यराकुम् हु-व व क़बीलुहू मिन्हैसु ला तरौनहुम्,इन्ना जअ़ल्नश्शयाती-न औलिया-अ लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनून (27)

व इज़ा फ़-अ़लू फ़ाहि-शतन् क़ालू वजद्ना अ़लैहा आबा-अना वल्लाहु अ-म-रना बिहा, क़ुल् इन्नल्ला-ह ला यअ्मुरू बिल्फ़ह़्शा-इ, अ-तक़ूलू-न अ़लल्लाहि मा ला तअ्लमून (28)

क़ुल् अ-म-र रब्बी बिल्क़िस्ति, व अक़ीमू वुजूहकुम् अ़िन्-द कुल्लि मस्जिदिंव्-वद्अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, कमा ब-द-अकुम् तअूदून (29)

फ़रीक़न् हदा व फ़रीक़न् हक़्-क़ अ़लैहिमुज़्ज़लालतु, इन्नहुमुत्त-ख़ज़ुश्शयाती-न औलिया-अ मिन् दूनिल्लाहि व यह़्सबू-न अन्नहुम् मुह्तदून (30)

या बनी आद-म ख़ुज़ू ज़ीन-तकुम् अ़िन्-द कुल्लि मस्जिदिंव् व कुलू वश्रबू व ला तुस्रिफ़ू, इन्नहू ला युहिब्बुल् मुस्रिफ़ीन (31) ●

क़ुल् मन् हर्र-म ज़ी-नतल्लाहिल्लती अख़्र-ज लिअ़िबादिही वत्तय्यिबाति मिनर्रिज़्क़ि, क़ुल् हि-य लिल्लज़ी-न आमनू फ़िल्हयातिद्दुन्या

قَالَ فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَفِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَمِنْهَا تُخْرَجُوْنَ ﴿٢٥﴾

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ قَدْ اَنْزَلْنَا عَلَيْكُمْ لِبَاسًا يُّوَارِيْ سَوْاٰتِكُمْ وَرِيْشًا ۭ وَلِبَاسُ التَّقْوٰى ۙ ذٰلِكَ خَيْرٌ ۭ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿٢٦﴾

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ لَا يَفْتِنَنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ كَمَآ اَخْرَجَ اَبَوَيْكُمْ مِّنَ الْجَنَّةِ يَنْزِعُ عَنْهُمَا لِبَاسَهُمَا لِيُرِيَهُمَا سَوْاٰتِهِمَا ۭ اِنَّهٗ يَرٰىكُمْ هُوَ وَقَبِيْلُهٗ مِنْ حَيْثُ لَا تَرَوْنَهُمْ ۭ اِنَّا جَعَلْنَا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٢٧﴾

وَاِذَا فَعَلُوْا فَاحِشَةً قَالُوْا وَجَدْنَا عَلَيْهَآ اٰبَاۗءَنَا وَاللّٰهُ اَمَرَنَا بِهَا ۭ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَاْمُرُ بِالْفَحْشَاۗءِ ۭ اَتَقُوْلُوْنَ عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٢٨﴾

قُلْ اَمَرَ رَبِّيْ بِالْقِسْطِ ۣ وَاَقِيْمُوْا وُجُوْهَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّادْعُوْهُ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ڛ كَمَا بَدَاَكُمْ تَعُوْدُوْنَ ﴿٢٩﴾

فَرِيْقًا هَدٰى وَفَرِيْقًا حَقَّ عَلَيْهِمُ الضَّلٰلَةُ ۭ اِنَّهُمُ اتَّخَذُوا الشَّيٰطِيْنَ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ﴿٣٠﴾

يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ خُذُوْا زِيْنَتَكُمْ عِنْدَ كُلِّ مَسْجِدٍ وَّكُلُوْا وَاشْرَبُوْا وَلَا تُسْرِفُوْا ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْرِفِيْنَ ﴿٣١﴾

قُلْ مَنْ حَرَّمَ زِيْنَةَ اللّٰهِ الَّتِيْٓ اَخْرَجَ لِعِبَادِهٖ وَالطَّيِّبٰتِ مِنَ الرِّزْقِ ۭ قُلْ هِىَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا

ज़िन्दगी में भी अहले ईमान के लिए हैं, क़ियामत के रोज़ तो ख़ालिसतन इन्हीं के लिए होंगी"। इसी तरह हम आयतों को उन लोगों के लिए तफ़सील से बयान करते हैं, जो जानना चाहें।

33. कहो: "मेरे रब ने तो हराम किया है सिर्फ़ शर्मनाक कामों को — जो उनमें से ज़ाहिर हो उसे भी और जो पोशीदा हुआ हो उसे भी — और हक़तलफ़ी; नाहक़ ज़्यादती, और उस बात को कि तुम अल्लाह के साथ शरीक ठहराओ जिसके लिए उसने कोई दलील नहीं नाज़िल फ़रमाई, और इसको भी कि तुम अल्लाह से मन्सूब कर के वह कुछ कहो जिसका तुम इल्म नहीं रखते"।

34. हर एक उम्मत की एक मुक़र्रर मुद्दत है; फिर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ जाता है, तो एक घड़ी भर की न उनसे ताख़ीर मुमकिन है और न तक़्दीम।

35. ऐ बनी आदम! अगर तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल आएं, तुम्हें मेरी आयतें सुनाएं, तो जिसने डर रखा और इसलाह कर ली, तो ऐसे लोगों को न तो कोई ख़ौफ़ होगा और न वो ग़मगीन ही होंगे।

36. रहे वो लोग जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया, और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई, वही आग वाले हैं, जिसमें वो मुस्तक़िल तौरपर रहेंगे।

37. अब उससे बढ़कर ज़ालिम कौन है जिसने अल्लाह पर इफ़्तिरा करके झूट घड़ा, या उसकी आयतों को झुटलाया? ऐसे लोगों को उनके नविश्ता का हिस्सा पहुंचता रहेगा, यहां तक कि जब हमारे भेजे हुए उनकी रूह क़ब्ज़ करने के लिए उनके पास आएंगे तो कहेंगे, "कहां हैं वो जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते थे"? कहेंगे, "वो तो खो गए हमसे", और वो ख़ुद अपने ख़िलाफ़ गवाही देंगे हक़ीक़त में वो वाक़ई काफ़िर थे।

38. वह कहेगा, "जिन्नों व इन्स के जो गिरोह तुमसे पहले गुज़रे हैं उन्हीं के साथ शामिल होकर तुम भी आग में दाख़िल हो जाओ"। जब भी कोई जमाअत दाख़िल होगी, तो वह अपनी बहन दूसरी जमाअत पर लानत करेगी, यहां तक कि जब सब उसमें रल-मिल चुकेंगे तो उनमें से बाद में आने वाले अपने से पहले वालों के बारे में कहेंगे, "हमारे रब, हमको इन्हीं

ख़ालि-सतंय्यौमल्-क़ियामति, कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ्लमून (32)

कुल् इन्नमा हर्र-म रब्बियल्-फ़वाहि-श मा ज़-ह-र मिन्हा व मा ब-त-न वल्इस्-म वल्बग्-य बिग़ैरिल्हक़्क़ि व अन् तुश्रिकू बिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव्-व अन् तक़ूलू अ़लल्लाहि मा ला तअ्लमून (33)

व लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन् फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अ़तंव्-व ला यस्तक़्दिमून (34)

या बनी आद-म इम्मा यअ्तियन्नकुम् रूसुलुम्-मिन्कुम् यक़ुस्सू-न अ़लैकुम् आयाती फ़-मनित्तक़ा व अस्ल-ह फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (35)

वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (36)

फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही, उलाइ-क यनालुहुम् नसीबुहुम् मिनल्-किताबि, हत्ता इज़ा जाअत्हुम् रूसुलुना य-तवफ़्फ़ौनहुम् क़ालू ऐ-न मा कुन्तुम् तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि, क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना व शहिदू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अन्नहुम् कानू काफ़िरीन (37)

क़ालद्ख़ुलू फ़ी उ-ममिन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिकुम् मिनल्-जिन्नि वल्इन्सि फ़िन्नारि, कुल्लमा द-ख़लत् उम्मतुल्ल-अ़नत् उख़्तहा, हत्ता इज़द्दा-रकू फ़ीहा जमीअ़न् क़ालत् उख़राहुम् लिऊलाहुम् रब्बना हा-उला-इ अज़ल्लूना फ़आतिहिम् अ़ज़ाबन् ज़िअ़्फ़म्-मिनन्नारि, क़ा-ल लिकुल्लिन्

خَالِصَةً يَّوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ كَذٰلِكَ نُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٣٢
قُلْ اِنَّمَا حَرَّمَ رَبِّيَ الْفَوَاحِشَ مَا
ظَهَرَ مِنْهَا وَمَا بَطَنَ وَالْاِثْمَ وَالْبَغْيَ
بِغَيْرِ الْحَقِّ وَاَنْ تُشْرِكُوْا بِاللّٰهِ مَا لَمْ
يُنَزِّلْ بِهٖ سُلْطٰنًا وَّاَنْ تَقُوْلُوْا عَلَى
اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٣٣
وَلِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ
لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝٣٤
يٰبَنِيْٓ اٰدَمَ اِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ
يَقُصُّوْنَ عَلَيْكُمْ اٰيٰتِيْ ۙ فَمَنِ اتَّقٰى
وَاَصْلَحَ فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ
يَحْزَنُوْنَ ۝٣٥
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا عَنْهَآ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٣٦
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ يَنَالُهُمْ نَصِيْبُهُمْ
مِّنَ الْكِتٰبِ ؕ حَتّٰٓى اِذَا جَآءَتْهُمْ رُسُلُنَا
يَتَوَفَّوْنَهُمْ ۙ قَالُوْٓا اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا وَشَهِدُوْا
عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰفِرِيْنَ ۝٣٧
قَالَ ادْخُلُوْا فِيْٓ اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ
قَبْلِكُمْ مِّنَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ فِي النَّارِ ؕ
كُلَّمَا دَخَلَتْ اُمَّةٌ لَّعَنَتْ اُخْتَهَا ؕ حَتّٰٓى
اِذَا ادَّارَكُوْا فِيْهَا جَمِيْعًا ۙ قَالَتْ اُخْرٰىهُمْ
لِاُوْلٰىهُمْ رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ اَضَلُّوْنَا فَاٰتِهِمْ
عَذَابًا ضِعْفًا مِّنَ النَّارِ ؕ قَالَ لِكُلٍّ

लोगों ने गुमराह किया था, तो तू, उन्हें आग का दोहरा अज़ाब दे"। वह इरशाद फ़रमाएगा, "दोहरा तो हर एक के लिए है, लेकिन तुम जानते नहीं"।

39. और उनमें से पहले आने वाले अपने से बाद में आने वालों से कहेंगे, "फिर हमारे मुक़ाबले में तुम्हारी कोई फ़ज़ीलत न हुई; तो जैसी कुछ कमाई तुम करते रहे हो उसके बदले में अब अज़ाब का मज़ा चखो"।

40. जिन लोगों ने हमारी आयतों को झुटलाया और उनके मुक़ाबले में अकड़ दिखाई, उनके लिए आसमान के दरवाज़े नहीं खोले जाएंगे, और न वो जन्नत में दाख़िल होंगे जब तक कि ऊंट सूई के नाके में से न गुज़र जाए। हम तो मुजरिमों को ऐसा ही बदला देते हैं;

41. उनके लिए बिछौना भी जहन्नम का होगा और उनके ऊपर से ओढ़ना भी (उसी की)। ज़ुल्म करनेवालों को तो हम ऐसा ही बदला देते हैं।

42. बख़िलाफ़ इसके वो लोग जो ईमान लाए, और उन्होंने नेक आमाल इख़्तियार किए — हम किसी पर उसकी वुसअत से बढ़कर कोई बोझ नहीं डालते — वही लोग जन्नतवाले हैं, वो उसमें हमेशा रहेंगे।

43. उनके सीनों में एक-दूसरे के लिए जो कदूरत होगी उसे हम दूर कर देंगे; उनके नीचे नहरें बह रही होंगी; और वो कहेंगे, "तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जिसने इसकी तरफ़ हमारी रहनुमाई फ़रमाई, और अगर अल्लाह हमारी रहनुमाई न फ़रमाता, तो हम हरगिज़ राह नहीं पा सकते थे। हमारे रब के रसूल बेशक हक़ लेकर आए थे"। और उन्हें आवाज़ दी जाएगी कि "यह है जन्नत, जिसके तुम वारिस हुए उन आमाल की बदौलत जो तुम ख़ुद करते रहे थे"।

44. अहले जन्नत अहले जहन्नम को पुकारेंगे कि "हमसे हमारे रब ने जो वादा किया था उसे तो हमने सच पाया, तो क्या तुमसे जो तुम्हारे रब ने वादा कर रखा था तुमने भी उसे सच पाया?" वो कहेंगे, "हां"। इतने में एक एलान करनेवाला उनके दरमियान एलान करेगा कि "अल्लाह की लानत है ज़ालिमों पर"।

45. जो अल्लाह के रास्ते से रोकते और उसे टेढ़ा करना चाहते हैं, और जो आख़िरत के मुनकिर हैं।

46. और दोनों के दरमियान एक ओट होगी, और बुलंदियों पर कुछ लोग होंगे जो उनकी अलामतों से हर एक

ज़िअ्फ़ुंव्-व लाकिल्ला तअ्लमून (38)

व क़ालत् ऊलाहुम् लिउख़्राहुम् फ़मा का-न लकुम् अ़लैना मिन् फ़ज़्लिन् फ़ज़ूक़ुल्-अज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्सिबून (39) ●

इन्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना वस्तक्बरू अ़न्हा ला तुफ़त्तहु लहुम् अब्वाबुस्समा-इ व ला यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त हत्ता यलिजल्-ज-मलु फ़ी सम्मिल्-ख़ियाति, व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुज्रिमीन (40)

लहुम् मिन् जहन्न-म मिहादुंव्-व मिन् फ़ौक़िहिम् ग़वाशिन्, व कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन (41)

वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति ला नुकल्लिफ़ु नफ़्सन् इल्ला वुस्अ़हा उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (42)

व नज़अ्ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु व क़ालुल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी हदाना लिहाज़ा, व मा कुन्ना लिनह्तदि-य लौ ला अन् हदानल्लाहु ल-क़द् जाअत् रूसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ि, व नूदू अन् तिल्कुमुल्-जन्नतु ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्मलून ● (43)

व नादा अस्हाबुल्-जन्नति अस्हाबन्नारि अन् क़द् वजद्ना मा व-अ़-दना रब्बुना हक़्क़न् फ़-हल् वजत्तुम् मा व-अ़-द रब्बुकुम् हक़्क़न्, क़ालू न-अ़म् फ़-अज़्ज़-न मुअज़्ज़िनुम् बैनहुम् अल्लअ्-नतुल्लाहि अ़लज़्ज़ालिमीन (44)

अल्लज़ी-न यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अ़ि-वजन् व हुम् बिल्आख़ि-रति काफ़िरून● (45)

व बैनहुमा हिजाबुन् व अ़लल्-अअ्राफ़ि रिजालुंय्यअ्रिफ़ू-न कुल्लम्-बिसीमाहुम् व नादौ अस्हाबल्-जन्नति

ضِعْفٌ وَّلٰكِنْ لَّا تَعْلَمُوْنَ ۝٣٨
وَقَالَتْ اُوْلٰىهُمْ لِاُخْرٰىهُمْ فَمَا كَانَ
لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ فَضْلٍ فَذُوْقُوا الْعَذَابَ
ع بِمَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝٣٩
اِنَّ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَاسْتَكْبَرُوْا
عَنْهَا لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ وَلَا
يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ حَتّٰى يَلِجَ الْجَمَلُ فِيْ
سَمِّ الْخِيَاطِ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُجْرِمِيْنَ ۝٤٠
لَهُمْ مِّنْ جَهَنَّمَ مِهَادٌ وَّمِنْ فَوْقِهِمْ
غَوَاشٍ ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝٤١
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَآ ز اُولٰٓئِكَ
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ۝٤٢
وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ ۚ وَقَالُوا الْحَمْدُ
لِلّٰهِ الَّذِيْ هَدٰىنَا لِهٰذَا ۣ وَمَا كُنَّا لِنَهْتَدِيَ
لَوْلَآ اَنْ هَدٰىنَا اللّٰهُ ۚ لَقَدْ جَآءَتْ
رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ؕ وَنُوْدُوْٓا اَنْ تِلْكُمُ
الْجَنَّةُ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٤٣
وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ
قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ
مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا ؕ قَالُوْا نَعَمْ ۚ فَاَذَّنَ مُؤَذِّنٌۢ
بَيْنَهُمْ اَنْ لَّعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٤
الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَ
يَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ كٰفِرُوْنَ ۝٤٥
وَبَيْنَهُمَا حِجَابٌ ۚ وَعَلَى الْاَعْرَافِ رِجَالٌ
يَّعْرِفُوْنَ كُلًّا بِسِيْمٰىهُمْ ۚ وَنَادَوْا اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ

को पहचानते हैं और अहले जन्नत को पुकार कर कहेंगे कि "तुमपर सलाम है"। अभी वो जन्नत में दाख़िल तो नहीं हुए होंगे, अगरचे वो आस लगाए हुए होंगे।

47. और जब उनकी निगाहें अहले जहन्नम की तरफ़ फिरेंगी तो कहेंगे, "हमारे रब, हमें ज़ालिम लोगों में शामिल न करना"।

48. और ये बुलन्दियों वाले कुछ ऐसे लोगों से जिन्हें ये उनकी अलामतों से पहचानते होंगे कहेंगे, "तुम्हारे जत्थे तो तुम्हारे कुछ काम न आए, और न तुम्हारा अकड़ते रहना ही।

49. क्या ये वही हैं ना जिनके बारे में तुम क़समें खाते थे कि अल्लाह उनपर अपनी कुछ रहमत न करेगा?" "जन्नत में दाख़िल हो जाओ; तुम्हारे लिए न कोई ख़ौफ़ है, और न तुम्हें कोई ग़म लाहिक़ होगा"।

50. अहले जहन्नम अहले जन्नत को पुकारेंगे कि "थोड़ा पानी हमपर बहा दो, या उन चीज़ों में से कुछ जो अल्लाह ने तुम्हें दी हैं!" वो कहेंगे: "अल्लाह ने तो ये दोनों चीज़ें काफ़िरों पर हराम कर दी हैं"।

51. उनके लिए जिन्होंने अपना दीन खेल और तमाशा ठहराया, और जिन्हें दुनिया की ज़िन्दगी ने फ़रेब दिया तो आज हम भी उन्हें भुला देंगे जैसे ये अपने इस दिन की मुलाक़ात को भूले रहे, और जैसे ये हमारी आयतों का इनकार करते रहे।

52. हम उनके पास एक ऐसी किताब ले आए हैं जिसे हमने इल्म की बिना पर मुफ़स्सल किया है, जो ईमान लानेवालों के लिए हिदायत और रहमत है।

53. क्या ये लोग बस इसी के इंतिज़ार में हैं कि उसकी हक़ीक़त और अंजाम सूरत पज़ीर हो? जिस दिन उसकी हक़ीक़त सामने आएगी, तो वो लोग जो इससे पहले उसे फ़रामोश किए हुए थे बोल उठेंगे, "वाक़ई हमारे रब के रसूल हक़ लेकर आए थे; फिर क्या हमारे कुछ सिफ़ारिशी हैं जो हमारी सिफ़ारिश कर दें, या हमें वापस भेज दिया जाए कि हम जो कुछ करते थे उससे मुख़्तलिफ़ अमल करें?" उन्होंने अपने आपको ख़सारे में डाला,

अन् सलामुन् अलैकुम्, लम् यद्ख़ुलूहा व हुम् यत्मऊ-न (46)

व इज़ा सुरिफ़त् अब्सारुहुम् तिल्क़ा-अ अस्हाबिन्नारि क़ालू रब्बना ला तज्अल्ना मअल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (47) ●

व नादा अस्हाबुल्-अअ्राफ़ि रिजालंय्-यअ्रिफ़ूनहुम् बिसीमाहुम् क़ालू मा अग़्ना अन्कुम् जम्अुकुम् व मा कुन्तुम् तस्तक्बिरून (48)

अहा-उला-इल्लज़ी-न अक़्सम्तुम् ला यनालुहुमुल्लाहु बिरह्मतिन्, उद्ख़ुलुल्-जन्न-त ला ख़ौफ़ुन् अलैकुम् व ला अन्तुम तह्ज़नून (49)

व नादा अस्हाबुन्नारि अस्हाबल्-जन्नति अन् अफ़ीज़ू अलैना मिनल्मा-इ औ मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु, क़ालू इन्नल्ला-ह हर्र-महुमा अलल्-काफ़िरीन (50)

अल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू दीनहुम् लह्वंव्-व लअिबंव्-व ग़र्रत्हुमुल्-हयातुद्दुन्या फ़ल्यौ-म नन्साहुम् कमा नसू लिक़ा-अ यौमिहिम् हाज़ा व मा कानू बिआयातिना यज्हदून (51)

व ल-क़द् जिअ्नाहुम् बिकिताबिन् फ़स्सल्नाहु अला अिल्मिन् हुदंव्-व रह्मतल्-लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून (52)

हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला तअ्वी-लहू, यौ-म यअ्ती तअ्वीलुहू यक़ूलुल्लज़ी-न नसूहु मिन् क़ब्लु क़द् जाअत् रुसुलु रब्बिना बिल्हक़्क़ि फ़हल्-लना मिन् शु-फ़आ-अ फ़यश्फ़अू लना औ नुरद्दु फ़नअ्-म-ल ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्-मलु, क़द् ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व ज़ल्-ल अन्हुम् मा

اَنْ سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ ۣ لَمْ يَدْخُلُوْهَا
وَهُمْ يَطْمَعُوْنَ ۝٤٦
وَاِذَا صُرِفَتْ اَبْصَارُهُمْ تِلْقَآءَ اَصْحٰبِ
النَّارِ ۙ قَالُوْا رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا مَعَ
ع الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٧
وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْاَعْرَافِ رِجَالًا يَّعْرِفُوْنَهُمْ
بِسِيْمٰىهُمْ قَالُوْا مَآ اَغْنٰى عَنْكُمْ
جَمْعُكُمْ وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ ۝٤٨
اَهٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَقْسَمْتُمْ لَا يَنَالُهُمُ اللّٰهُ
بِرَحْمَةٍ ۭ اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمْ
وَلَآ اَنْتُمْ تَحْزَنُوْنَ ۝٤٩
وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ النَّارِ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ
اَنْ اَفِيْضُوْا عَلَيْنَا مِنَ الْمَآءِ اَوْ مِمَّا
رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۭ قَالُوْٓا اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَهُمَا
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ۝٥٠
الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَهُمْ لَهْوًا وَّلَعِبًا
وَّغَرَّتْهُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ
نَنْسٰىهُمْ كَمَا نَسُوْا لِقَآءَ يَوْمِهِمْ هٰذَا ۙ
وَمَا كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝٥١
وَلَقَدْ جِئْنٰهُمْ بِكِتٰبٍ فَصَّلْنٰهُ عَلٰى
عِلْمٍ هُدًى وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥٢
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا تَاْوِيْلَهٗ ۭ يَوْمَ يَاْتِيْ
تَاْوِيْلُهٗ يَقُوْلُ الَّذِيْنَ نَسُوْهُ مِنْ قَبْلُ
قَدْ جَآءَتْ رُسُلُ رَبِّنَا بِالْحَقِّ ۚ فَهَلْ
لَّنَا مِنْ شُفَعَآءَ فَيَشْفَعُوْا لَنَآ اَوْ نُرَدُّ
فَنَعْمَلَ غَيْرَ الَّذِيْ كُنَّا نَعْمَلُ ۭ
قَدْ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا

और जो कुछ वो झूट घड़ते थे वो सब उनसे गुम होकर रह गए।

54. बेशक तुम्हारा रब वही अल्लाह है, जिसने आसमानों और ज़मीन को छह दिनों में पैदा किया — फिर अर्श पर जलवागर हुआ, वह रात को दिन पर ढांकता है जो तेज़ी से उसका पीछा करने में सरगर्म है — और सूरज, चांद और तारे भी बनाए, इस तौरपर कि वो उसके हुक्म से काम में लगे हुए हैं। ख़बरदार हो, ख़ल्क़ और अम्र उसी के लिए है। अल्लाह सारे जहां का रब, अज़ीम व बाफ़ैज़ है।

55. अपने रब को गिड़गिड़ा कर और चुपके-चुपके पुकारो; यक़ीनन वह हद से गुज़रनेवालों को पसन्द नहीं करता।

56. और ज़मीन में उसकी इसलाह के बाद बिगाड़ न पैदा करो; ख़ौफ़ व तमअ के साथ उसे पुकारो, यक़ीनन अल्लाह की रहमत ख़ूबकार लोगों से क़रीब है।

57. और वही है जो अपनी रहमत के आगे ख़ुशख़बरी देने को हवाएं भेजता है, यहां तक कि जब वो बोझल बादल को उठा लेती हैं तो हम उसे किसी मुर्दा ज़मीन की तरफ़ चला देते हैं, फिर उससे पानी बरसाते हैं, फिर उससे हर तरह के फल निकालते हैं। इसी तरह हम मुर्दों को हालते मौत से निकालेंगे — ताकि तुम याददिहानी हासिल करो।

58. और अच्छी ज़मीन के पेड़-पौधे उसके रब के हुक्म से निकलते हैं, और जो ज़मीन ख़राब हो गई तो उससे नाक़िस पैदावार के सिवा कुछ भी नहीं निकलता। इस तरह हम निशानियों को उन लोगों के लिए तरह-तरह से बयान करते हैं जो शुक्र अदा करने वाले हैं।

59. हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा तो उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई और माबूद नहीं; मैं तुम्हारे लिए एक बड़े दिन के अज़ाब से डरता हूं"।

60. उसकी क़ौम के सरदार बोले "हम तो तुम्हें खुली गुमराही में देख रहे हैं"।

कानू यफ़्तरून (53) ●

इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, युग़्शिल्लैलन्नहा-र यत्लुबुहू हसीसंव् वश्शम्-स वल्क़-म-र वन्नुजू-म मुसख़्ख़रातिम्-बिअम्रिही, अला लहुल-ख़ल्क़ु वल्अम्रू, तबा-रकल्लाहु रब्बुल-आ़लमीन (54)

उद्अू रब्बकुम् त-ज़र्रूअ़ंव्-व ख़ुफ़्य-तन्, इन्नहू ला युहिब्बुल् मुअ्तदीन (55)

व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्-द इस्लाहिहा वद्अूहु ख़ौफ़ंव्-व त-मअ़न्, इन्-न रह्मतल्लाहि क़रीबुम् मिनल् मुह्सिनीन (56)

व हुवल्लज़ी युर्सिलुर्रिया-ह बुश्रम् बै-न यदै रह्मतिही, हत्ता इज़ा अक़ल्लत् सहाबन् सिक़ालन् सुक़्नाहु लि-ब-लदिम् मय्यितिन् फ़-अन्ज़ल्ना बिहिल्-मा-अ फ़अख़रज्ना बिही मिन् कुल्लिस्स-मराति, कज़ालि-क नुख़्रिजुल्मौता लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (57)

वल्ब-लदुत्तय्यिबु यख़्रूजु नबातुहू बि-इज़्नि रब्बिही वल्लज़ी ख़बु-स ला यख़्रूजु इल्ला नकिदन्, कज़ालि-क नुसर्रिफ़ुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यश्कुरून (58) ●

ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़क़ा-ल या-क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (59)

क़ालल्म-लउ मिन् क़ौमिही इन्ना ल-नरा-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (60)

كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٥٣

اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي الَّيْلَ النَّهَارَ
يَطْلُبُهٗ حَثِيْثًا ۙ وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
وَالنُّجُوْمَ مُسَخَّرٰتٍ بِاَمْرِهٖ ۭ اَلَا لَهُ الْخَلْقُ
وَالْاَمْرُ ۭ تَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٥٤

اُدْعُوْا رَبَّكُمْ تَضَرُّعًا وَّخُفْيَةً ۭ
اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُعْتَدِيْنَ ۝٥٥

وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا
وَادْعُوْهُ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۭ اِنَّ رَحْمَتَ اللّٰهِ
قَرِيْبٌ مِّنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٦

وَهُوَ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًۢا بَيْنَ
يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۭ حَتّٰٓي اِذَآ اَقَلَّتْ سَحَابًا
ثِقَالًا سُقْنٰهُ لِبَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَنْزَلْنَا بِهِ
الْمَاۗءَ فَاَخْرَجْنَا بِهٖ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ۭ
كَذٰلِكَ نُخْرِجُ الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝٥٧

وَالْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ
رَبِّهٖ ۚ وَالَّذِيْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا
نَكِدًا ۭ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ
لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ۝٥٨

لَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَيْرُهٗ ۭ اِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٥٩

قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهٖٓ اِنَّا لَنَرٰىكَ
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٦٠

61. उसने कहा, "ऐ बरादराने क़ौम, किसी गुमराही का मुझसे तअल्लुक़ नहीं, बल्कि मैं सारे जहां के रब का एक रसूल हूं।

62. अपने रब के पैग़ाम तुम्हें पहुंचाता हूं, और तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही करता हूं; और मैं अल्लाह की तरफ़ से वह कुछ जानता हूं जो तुम नहीं जानते।

63. और क्या तुम्हें इस पर तअज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक आदमी के ज़रिए से तुम्हारे रब की याददिहानी आई? ताकि वह तुम्हें ख़बरदार कर दे, और ताकि तुम डर रखो, और तुमपर रहम किया जाए।"

64. मगर उन्होंने झुटला दिया; आख़िरकार हमने उसे और उन लोगों को जो उसके साथ थे एक कश्ती में नजात दी, और जिन लोगों ने हमारी आयतों को ग़लत समझा उन्हें हमने डुबो दिया; यक़ीनन वो तो अंधे लोग थे।

65. और आद की तरफ़ उनके भाई हूद को भेजा, उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगों! अल्लाह की बन्दगी करो, उसके सिवा तुम्हारा कोई और माबूद नहीं है; तो क्या तुम डरते नहीं?"

66. उसकी क़ौम के काफ़िर सरदारों ने कहा, "हक़ीक़त में हम तो तुम्हें सबुकसरी (हिमाक़त) में मुबतला देखते हैं, और हम तो तुम्हें झूटा समझते हैं।"

67. उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं सबुकसरी में हरगिज़ मुबतला नहीं हूं, लेकिन मैं सारे जहां के रब का रसूल हूं।

68. तुम्हें अपने रब के पैग़ाम पहुंचाता हूं, और मैं तुम्हारा क़ाबिले एतिमाद ख़ैर ख़्वाह हूं।

69. और क्या तुम्हें इसपर तअज्जुब हुआ कि तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक आदमी के ज़रिए से तुम्हारे रब की याददिहानी आई? ताकि वह तुम्हें ख़बरदार कर दे; और याद करो जब उसने नूह की क़ौम के बाद तुम्हें उसका जानशीन किया, और जिसमानी एतिबार से भी तुम्हें ज़्यादा कुशादगी अता की, पस अल्लाह की क़ुदरत के करिश्मों को याद करो, ताकि तुम्हें फ़लाह नसीब हो।"

70. वो बोले, "क्या तुम हमारे पास इसलिए आए हो कि अकेले अल्लाह की हम बन्दगी करें, और जिनको हमारे बाप-दादा पूजते रहे हैं उन्हें छोड़ दें? अच्छा तो जिसकी तुम हमें धमकी देते हो, उसे हमपर ले आओ, अगर तुम सच्चे हो"।

क़ा-ल या क़ौमि लै-स बी ज़लालतुंव-व लाकिन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल्-आलमीन (61)

उबल्लिग़ुकुम् रिसालाति रब्बी व अन्सहु लकुम् व अअ्लमु मिनल्लाहि मा ला तअ्लमून (62)

अ-व अजिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम-मिर्रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम् व लि-तत्तकू व लअ़ल्लकुम् तुर्हमून (63)

फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अ़हू फ़िल्फ़ुल्कि व अग़्रक़्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना, इन्नहुम् कानू क़ौमन् अ़मीन (64) ●

व इला आ़दिन् अख़ाहुम् हूदन्, क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, अ-फ़ला तत्तकून (65)

क़ालल्-म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही इन्ना ल-नरा-क-फ़ी सफ़ाहतिंव्-व इन्ना ल-नज़ुन्नु-क मिनल्-काज़िबीन (66)

क़ा-ल या क़ौमि लै-स बी सफ़ाहतुंव्-व लाकिन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल्-आ़लमीन (67)

उबल्लिग़ुकुम् रिसालाति रब्बी व अ-न लकुम् नासिहुन् अमीन (68)

अ-व अ़जिब्तुम् अन् जा-अकुम् ज़िक्रुम्- मिर्रब्बिकुम् अ़ला रजुलिम्-मिन्कुम् लियुन्ज़ि-रकुम्, वज़्कुरू इज़् ज-अ़-लकुम् ख़ु-लफ़ा-अ मिम् बअ्दि क़ौमि नूहिंव्-व ज़ादकुम् फ़िल्ख़ल्क़ि बस्त-तन् फ़ज़्कुरू आला-अल्लाहि लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (69)

क़ालू अजिअ्तना लिनअ्बुदल्ला-ह वह्दहू व न-ज़-र मा का-न यअ्बुदु आबाउना फ़अ्तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त मिनस्-सादिक़ीन (70)

قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ ضَلٰلَةٌ وَّلٰكِنِّيْ
رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦١
اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنْصَحُ لَكُمْ
وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٦٢
اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ وَلِتَتَّقُوْا
وَلَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٦٣
فَكَذَّبُوْهُ فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ
فِي الْفُلْكِ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
ع بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا عَمِيْنَ ۝٦٤
وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٦٥
قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖۤ اِنَّا لَنَرٰىكَ
فِيْ سَفَاهَةٍ وَّاِنَّا لَنَظُنُّكَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٦٦
قَالَ يٰقَوْمِ لَيْسَ بِيْ سَفَاهَةٌ وَّلٰكِنِّيْ
رَسُوْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦٧
اُبَلِّغُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَاَنَا لَكُمْ
نَاصِحٌ اَمِيْنٌ ۝٦٨
اَوَعَجِبْتُمْ اَنْ جَآءَكُمْ ذِكْرٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ
عَلٰى رَجُلٍ مِّنْكُمْ لِيُنْذِرَكُمْ ؕ
وَاذْكُرُوْۤا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَآءَ مِنْۢ بَعْدِ
قَوْمِ نُوْحٍ وَّزَادَكُمْ فِي الْخَلْقِ بَصْۜطَةً ۚ
فَاذْكُرُوْۤا اٰلَآءَ اللّٰهِ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝٦٩
قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِنَعْبُدَ اللّٰهَ وَحْدَهٗ
وَنَذَرَ مَا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُنَا ۚ فَاْتِنَا
بِمَا تَعِدُنَاۤ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٧٠

71. उसने कहा, "तुमपर तो तुम्हारे रब की जानिब से नापाकी मुसल्लत हो चुकी है और ग़ज़ब टूट चुका है। क्या तुम मुझसे उन नामों के लिए झगड़ते हो जो तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख छोड़े हैं, जिनके लिए अल्लाह ने कोई दलील नहीं नाज़िल फ़रमाई? अच्छा तो इंतिज़ार करो; मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार कर रहा हूं"।

72. फिर हमने अपनी रहमत से उसको और जो लोग उसके साथ थे उन्हें बचा लिया; और उन लोगों की जड़ काट दी जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया था और मोमिन न थे।

73. और समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा, उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो! उसके सिवा तुम्हारा कोई और माबूद नहीं; तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक दलील-ए-रौशन आ चुकी है। यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। लिहाज़ा इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए, और गज़न्द पहुंचाने के लिए इसे हाथ न लगाना, वरना तुम्हें एक दर्दनाक अज़ाब आ लेगा।

74. और याद करो जब अल्लाह ने आद के बाद तुम्हें उसका जानशीन किया, और ज़मीन में तुम्हें तमक्कुन अता फ़रमाया, तुम उसके हमवार मैदानों में महल बनाते हो, और पहाड़ों को मकानात की शक्ल में तराशते हो। पस अल्लाह की क़ुदरत के करिश्मों को याद करो, और ज़मीन में मुफ़सिद बनकर रूसियाह मत हो!"

75. उसकी क़ौम के सरदार जो बड़े बने हुए थे, उन कमज़ोर लोगों से जो उनमें ईमान लाए थे कहने लगे, "क्या तुम जानते हो कि सालेह अपने रब का फ़िरस्तादा है?" उन्होंने कहा, "बेशक जिस चीज़ के साथ वह भेजा गया है हम उसपर ईमान रखते हैं"।

76. उन मुतकब्बिरों ने कहा, "जिस चीज़ पर तुम ईमान लाए हो हम तो उसके मुनकिर हैं!"

77. फिर उन्होंने उस ऊंटनी की कूचें काट दीं और अपने रब के हुक्म के सिलसिले में सरताबी इख़्तियार की, और बोले, "ऐ सालेह, जिस चीज़ की

का-ल क़द् व-क़-अ अ़लैकुम् मिर्रब्बिकुम् रिज्सुंव्-व ग़-ज़बुन्, अतुजादिलू-ननी फ़ी अस्माइन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा नज़्ज़लल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन्, फ़न्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल् मुन्तज़िरीन (71)

फ़-अन्जैनाहु वल्लज़ी-न म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व क़तअ़्ना दाबिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व मा कानू मुअ़्मिनीन (72) ●

व इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन्● *क़ा-ल या क़ौमिअ़्बुदुल्ला-ह मा लकुम मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, क़द् जाअत्कुम् बय्यि-नतुम् मिर्रब्बिकुम्, हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आ-यतन् फ़-ज़रूहा तअ़्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला तमस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ़्ख़ु-ज़कुम् अ़ज़ाबुन् अलीम* (73)

वज़्कुरू इज़् ज-अ-लकुम् ख़ु-लफ़ा-अ मिम्-बअ़्दि आ़दिंव्-व बव्व-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि तत्तख़िज़ू-न मिन् सुहूलिहा क़ुसूरंव-व तन्हितूनल् जिबा-ल बुयूतन् फ़ज़्कुरू आलाअल्लाहि व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (74)

क़ालल्-म-लउल्लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लिल्लज़ीनस्-तुज़्अिफ़ू लिमन् आम-न मिन्हुम् अ-तअ़्लमू-न अन्-न सालिहम् मुर्सलुम्-मिर्रब्बिही, क़ालू इन्ना बिमा उर्सि-ल बिही मुअ़्मिनून (75)

क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना बिल्लज़ी आमन्तुम् बिही काफ़िरून (76)

फ़-अ-क़रुन्नाक़-त व अ़तौ अ़न् अम्रि रब्बिहिम् व क़ालू या सालिहुअ़्तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त

قَالَ قَدْ وَقَعَ عَلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ رِجْسٌ
وَّغَضَبٌ ۭ اَتُجَادِلُوْنَنِيْ فِيْٓ اَسْمَاۗءٍ
سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَاۗؤُكُمْ مَّا نَزَّلَ
اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ۭ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّىْ
مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝
فَاَنْجَيْنٰهُ وَالَّذِيْنَ مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا
وَقَطَعْنَا دَابِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَمَا كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝
وَاِلٰى ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ
غَيْرُهٗ ۭ قَدْ جَاۗءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ ۭ
هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً فَذَرُوْهَا
تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا تَمَسُّوْهَا
بِسُوْۗءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
وَاذْكُرُوْٓا اِذْ جَعَلَكُمْ خُلَفَاۗءَ مِنْۢ بَعْدِ
عَادٍ وَّبَوَّاَكُمْ فِي الْاَرْضِ تَتَّخِذُوْنَ مِنْ
سُهُوْلِهَا قُصُوْرًا وَّتَنْحِتُوْنَ الْجِبَالَ
بُيُوْتًا ۚ فَاذْكُرُوْٓا اٰلَاۗءَ اللّٰهِ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْاَرْضِ مُفْسِدِيْنَ ۝
قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ
لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِمَنْ اٰمَنَ مِنْهُمْ
اَتَعْلَمُوْنَ اَنَّ صٰلِحًا مُّرْسَلٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ
قَالُوْٓا اِنَّا بِمَآ اُرْسِلَ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۝
قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا بِالَّذِيْٓ اٰمَنْتُمْ
بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝
فَعَقَرُوا النَّاقَةَ وَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ
وَقَالُوْا يٰصٰلِحُ ائْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ

مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧٧
فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ
دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝٧٨
فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ
اَبْلَغْتُكُمْ رِسَالَةَ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ
وَلٰكِنْ لَّا تُحِبُّوْنَ النّٰصِحِيْنَ ۝٧٩
وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ
الْفَاحِشَةَ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ
مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨٠
اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ
دُوْنِ النِّسَآءِ ؕ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝٨١
وَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا
اَخْرِجُوْهُمْ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ
يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝٨٢
فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۖ كَانَتْ
مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٨٣
وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ؕ فَانْظُرْ كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٨٤
وَاِلٰى مَدْيَنَ اَخَاهُمْ شُعَيْبًا ؕ قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ
قَدْ جَآءَتْكُمْ بَيِّنَةٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَوْفُوا
الْكَيْلَ وَالْمِيْزَانَ وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ اَشْيَآءَهُمْ
وَلَا تُفْسِدُوْا فِي الْاَرْضِ بَعْدَ اِصْلَاحِهَا ؕ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨٥
وَلَا تَقْعُدُوْا بِكُلِّ صِرَاطٍ تُوْعِدُوْنَ
وَتَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ
بِهٖ وَتَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ وَاذْكُرُوْٓا اِذْ

मिनल्-मुर्सलीन (77)
फ़-अ-ख़ज़त्हुमुर्रज्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन (78)
फ़-तवल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसाल-त रब्बी व नसह्तु लकुम् व लाकिल्ला तुहिब्बूनन्नासिहीन (79)
व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्तूनल्-फ़ाहि-श-त मा स-ब-क़कुम् बिहा मिन् अ-हदिम् मिनल्-आ़लमीन (80)
इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्रिजा-ल शह्व-तम् मिन् दूनिन्निसा-इ, बल् अन्तुम् क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून (81)
व मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजूहुम् मिन् क़र्यतिकुम् इन्नहुम् उनासुंय्य-ततहह्हरून (82)
फ़-अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लम्र-अ-तहू कानत् मिनल्-ग़ाबिरीन (83)
व अम्तर्ना अ़लैहिम् म-तरन्, फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुज्रिमीन (84) ●
व इला मद्य-न अख़ाहुम् शुऐबन्, क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, क़द् जाअत्कुम् बय्यि-नतुम् मिर्रब्बिकुम् फ़-औफ़ुल्कै-ल वल्मीज़ा-न व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि बअ्-द इस्लाहिहा, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (85)
व ला तक़अुदू बिकुल्लि सिरातिन् तूअिदू-न व तसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाही मन् आम-न बिही व तब्ग़ूनहा अि-वजन् वज़्कुरू इज़्

तू हमें धमकी देता है, उसे हम पर ले आ, अगर तू वाक़ई रसूलों में से है!"

78. आख़िरकार एक हिला मारनेवाली आफ़त ने उन्हें आ लिया, और वो अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।

79. फिर वह यह कहता हुआ उनके यहां से फिरा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं तो तुम्हे अपने रब का पैग़ाम पहुंचा चुका, और मैंने तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की; लेकिन तुम्हें तो अपने ख़ैर ख़्वाह पसन्द ही नही आते"।

80. और हमने लूत को भेजा, जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "क्या तुम खुली बेहयाई का इरतिकाब करते हो, जिसका इरतिकाब दुनिया में तुमसे पहले किसी ने भी नहीं किया?

81. तुम औरतों को छोड़ कर मर्दों से ख़्वाहिश पूरी करते हो; बल्कि तुम बिल्कुल हद से गुज़र जानेवाले लोग हो"।

82. उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा और कुछ न था कि वो लोग बोले कि, "निकालो उन्हें अपनी बस्ती से; ये ऐसे लोग हैं जो बड़े पाक व साफ़ हैं!"

83. फिर हमने उसे और उसके लोगों को नजात दी, बजुज़ उसकी औरत के कि वह पीछे रह जानेवालों में से थी।

84. और हमने उनपर एक बरसात बरसाई तो देखो मुजरिमों का कैसा अंजाम हुआ;

85. और अहले मदयन की तरफ़ हमने उनके भाई शुऐब को भेजा; उसने कहा "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो! उसके सिवा तुम्हारा कोई और माबूद नहीं; तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से एक दलीले रौशन आ चुकी है। तो तुम नाप और तौल पूरी करो, और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो; और ज़मीन में उसकी इसलाह के बाद बिगाड़ पैदा न करो; यही तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम ईमान लाने वाले हो।

86. और हर राह पर इसलिए न बैठो कि धमकियां दो, और उस शख़्स को अल्लाह के रास्ते से रोकने लगो जो उसपर ईमान लाए और उस राह को टेढ़ी करने के दरपे हो जाओ। याद

करो वह ज़माना जबकि तुम थोड़े थे फिर उसने तुम्हें ज़्यादा कर दिया, और देखो फ़साद बरपा करनेवालों का कैसा अंजाम हुआ।

87. और अगर तुममें से एक गिरोह ऐसा है जो उसपर ईमान लाया है जिसके साथ मैं भेजा गया हूं, और एक गिरोह ईमान नहीं लाया, तो सब्र से काम लेते रहो यहां तक कि अल्लाह हमारे दरमियान फ़ैसला फ़रमा दे; और वह सब से बेहतर फ़ैसला करनेवाला है।"

88. उसकी क़ौम के सरदारों ने जो घमंड में मुबतला थे कहा, "ऐ शुऐब, हम तुझे और तेरे साथ उन लोगों को जो ईमान लाए हैं अपनी बस्ती से निकाल कर रहेंगे, या फिर तुम हमारी मिल्लत में लौट आओ"। उसने कहा, "क्या (तुम यही चाहोगे) अगरचे यह हमें नागवार हो जब भी?

89. हम अल्लाह पर झूट घड़ने वाले ठहरेंगे अगर तुम्हारी मिल्लत में लौट आएं, इसके बाद कि अल्लाह ने हमें उससे नजात दी है। यह हमसे तो होने का नहीं कि हम उसमें पलट कर जाएं, बल्कि हमारे रब अल्लाह की मशीयत ही नाफ़िज़ है। इल्म के एतिबार से हमारा रब हर चीज़ पर हावी है। हमने अल्लाह ही पर भरोसा किया है। हमारे रब, हमारे और हमारी क़ौम के दरमियान क़तई अटल फ़ैसला कर दे। और तू सब से बेहतर फ़ैसला करनेवाला है"।

90. उसकी क़ौम के सरदार जिन्हें इनकार था बोले, "अगर तुमने शुऐब की पैरवी की, तो घाटे में पड़ जाओगे"।

91. आख़िरकार एक हिला मारनेवाली आफ़त ने उन्हें आ लिया, फिर वो अपने घर में औंधे पड़े रह गए,

92. शुऐब को झुटलाने वाले, जैसे कभी वहां बसे ही न थे; शुऐब को झुटलाने वाले ही घाटे में रहे।

93. तब वह उनके यहां से यह कहता हुआ फिरा कि "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैंने अपने रब के पैग़ामात तुम्हें पहुंचा दिए; और मैंने तो तुम्हारी ख़ैर ख़्वाही की; अब मैं काफ़िर क़ौम पर कैसे अफ़सोस करूं!"

कुन्तुम् क़लीलन् फ़-कस्स-रकुम् वन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल् मुफ़्सिदीन (86)

व इन् का-न ताइ-फ़तुम् मिन्कुम् आमनू बिल्लज़ी उर्सिल्तु बिही व ताइ-फ़तुल्-लम् युअ्मिनू फ़स्बिरू हत्ता यह्कुमल्लाहु बैनना व हु-व ख़ैरुल् हाकिमीन (87)

क़ालल् म-लउल्लज़ीनस्तक्बरू मिन् क़ौमिही लनुख़्रिजन्न-क या शुऐबु वल्लज़ी-न आमनू म-अ-क मिन् क़र्यतिना औ ल-तअूदुन्-न फ़ी मिल्लतिना, क़ा-ल अ-व लौ कुन्ना कारिहीन (88)

क़दिफ़्तरैना अलल्लाहि कज़िबन् इन् अुद्ना फ़ी मिल्लतिकुम् बअ्-द इज़् नज्जानल्लाहु मिन्हा, व मा यकूनु लना अन्-नअू-द फ़ीहा इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु रब्बुना, वसि-अ रब्बुना कुल्-ल शैइन् अिल्मन्, अलल्लाहि तवक्कल्ना रब्बनफ़्तह् बैनना व बै-न क़ौमिना बिल्-हक़्क़ि व अन्-त ख़ैरुल्-फ़ातिहीन (89)

व क़ालल् म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही ल-इनित्तबअ्तुम् शुऐबन् इन्नकुम् इज़ल्-लख़ासिरून (90)

फ़-अ-ख़ज़त्हुमुर्रज्फ़तु फ़अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन (91)

अल्लज़ी-न कज़्ज़बू शुऐबन् कअल्लम् यग्नौ फ़ीहा, अल्लज़ी-न कज़्ज़बू शुऐबन् कानू हुमुल् ख़ासिरीन (92)

फ़-तवल्ला अन्हुम् व क़ा-ल या क़ौमि ल-क़द् अब्लग़्तुकुम् रिसालाति रब्बी व नसह्तु लकुम् फ़कै-फ़ आसा अला क़ौमिन् काफ़िरीन (93) ●

كُنْتُمْ قَلِيْلًا فَكَثَّرَكُمْ وَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ﴿٨٦﴾ وَاِنْ كَانَ طَآئِفَةٌ مِّنْكُمْ اٰمَنُوْا بِالَّذِيْٓ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَطَآئِفَةٌ لَّمْ يُؤْمِنُوْا فَاصْبِرُوْا حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ بَيْنَنَا ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ﴿٨٧﴾

قَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَنُخْرِجَنَّكَ يٰشُعَيْبُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَكَ مِنْ قَرْيَتِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ فِيْ مِلَّتِنَا ۚ قَالَ اَوَلَوْ كُنَّا كٰرِهِيْنَ ﴿٨٨﴾ قَدِ افْتَرَيْنَا عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اِنْ عُدْنَا فِيْ مِلَّتِكُمْ بَعْدَ اِذْ نَجّٰىنَا اللّٰهُ مِنْهَا ۚ وَمَا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّعُوْدَ فِيْهَآ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّنَا ۚ وَسِعَ رَبُّنَا كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا ۚ عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا افْتَحْ بَيْنَنَا وَبَيْنَ قَوْمِنَا بِالْحَقِّ وَاَنْتَ خَيْرُ الْفٰتِحِيْنَ ﴿٨٩﴾

وَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ لَئِنِ اتَّبَعْتُمْ شُعَيْبًا اِنَّكُمْ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٩٠﴾ فَاَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ دَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ﴿٩١﴾

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ۚ اَلَّذِيْنَ كَذَّبُوْا شُعَيْبًا كَانُوْا هُمُ الْخٰسِرِيْنَ ﴿٩٢﴾

فَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰقَوْمِ لَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ رِسٰلٰتِ رَبِّيْ وَنَصَحْتُ لَكُمْ ۚ فَكَيْفَ اٰسٰى عَلٰى قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ﴿٩٣﴾

94. हमने जिस बस्ती में भी कोई नबी भेजा तो वहां के लोगों को तंगी और मुसीबत में डाला कि शायद वो आजिज़ी इख़्तियार करें;

95. फिर हमने बुरी हालत को अच्छी हालत से बदल दिया, यहां तक कि वो ख़ूब फले-फूले, और कहने लगे कि "यह दुख और सुख तो हमारे बाप-दादा को भी पहुंचे है"। आख़िरकार जबकि वो बेख़बर थे हमने अचानक उन्हें पकड़ लिया।

96. अगर बस्तियों के लोग ईमान लाते और डर रखते तो लाज़िमन हम उनपर आसमान और ज़मीन की बरकतें खोल देते; मगर उन्होंने तो झुटलाया, तो जो कुछ कमाई वो करते थे उसके बदले में हमने उन्हें पकड़ लिया।

97. फिर क्या बस्तियों के लोगों को इस जानिब से बेख़ौफ़ रहने का मोक़ा मुयस्सर आ गया था कि रात में उनपर हमारा अज़ाब आ जाए जब कि वो सोए हुए हों;

98. और क्या बस्तियों के लोगों को इस जानिब से बेख़ौफ़ रहने का मौक़ा मुयस्सर आ गया था कि दिन चढ़े उनपर हमारा अज़ाब आ जाए जबकि वो खेल रहे हों?

99. आख़िर किया वो अल्लाह की चाल से बेख़ौफ़ हो गए थे? तो (समझ लो कि उन्हें ख़सारे में पड़ना ही था क्योंकि) अल्लाह की चाल से तो वही लोग बेख़ौफ़ होते हैं जो टोटे में पड़नेवाले हैं।

100. क्या जो ज़मीन के उसके साबिक़ लोगों के बाद वारिस हुए हैं उनपर इससे मुनकशिफ़ न हुआ कि अगर हम चाहें तो उनके गुनाहों पर उन्हें आ पकड़ें, और हम उनके दिलों पर मुहर लगा देते हैं, क्योंकि वो कुछ भी नहीं सुनते।

101. यह हैं वो बस्तियां जिनकी कुछ सरगुज़श्त हम तुमको सुना रहे हैं; उनके पास उनके रसूल खुली-खुली निशानियां लेकर आए, मगर वो ऐसे न हुए कि ईमान लाते; वजह इसकी यह थी कि वो पहले से झुटला रहे थे; इसी तरह काफ़िरों के दिलों पर अल्लाह मुहर लगा दिया करता है।

102. हमने उनके अकसर में कोई पासे अ़हद (अ़हद का लिहाज़) न पाया;

व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम् मिन् नबिय्यिन् इल्ला अख़ज़्ना अह्लहा बिल्बअ्सा-इ वज़्ज़र्रा-इ लअ़ल्लहुम् यज़्ज़र्रअून (94)

सुम्-म बद्दल्ना मकानस्सय्यि-अतिल् ह-स-न-त हत्ता अ़फ़ौ व क़ालू क़द् मस्-स आबा-अनज़्ज़र्रा-उ वस्सर्रा-उ फ़-अख़ज़्नाहुम् बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (95)

व लौ अन्-न अह्लल्क़ुरा आमनू वत्तक़ौ ल-फ़तह्ना अ़लैहिम् ब-रकातिम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि व लाकिन् कज़्ज़बू फ़-अख़ज़्नाहुम् बिमा कानू यक्सिबून (96)

अ-फ़अमि-न अह्लुल्क़ुरा अंय्यअ्ति-यहुम् बअ्सुना बयातंव्-व हुम् ना-इमून (97)

अ-व अमि-न अह्लुल्क़ुरा अंय्यअ्ति-यहुम् बअ्सुना ज़ुहंव्वहुम् यल्अ़बून (98)

अ-फ़अमिनू मक्रल्लाहि फ़ला यअ्मनु मक्रल्लाहि इल्लल् क़ौमुल्-ख़ासिरून (99) ●

अ-व लम् यह्दि लिल्लज़ी-न यरिसूनल्-अर्-ज़ मिम्-बअ्दि अह्लिहा अल्लौ नशा-उ असब्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व नत्बअु अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यस्मअून (100)

तिल्कल्क़ुरा नक़ुस्सु अ़लै-क मिन् अम्बा-इहा व ल-क़द् जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू मिन् क़ब्लु, कज़ालि-क यत्बअुल्लाहु अ़ला क़ुलूबिल् काफ़िरीन (101)

व मा वजद्ना लिअक्सरिहिम् मिन् अ़ह्दिन

وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّآ
اَخَذْنَآ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَالضَّرَّآءِ
لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ ۝٩٤
ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ
حَتّٰى عَفَوْا وَّقَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا
الضَّرَّآءُ وَالسَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً
وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩٥
وَلَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰٓى اٰمَنُوْا وَاتَّقَوْا
لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ وَلٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ
بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٩٦
اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا
بَيَاتًا وَّهُمْ نَآئِمُوْنَ ۝٩٧
اَوَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰٓى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا
ضُحًى وَّهُمْ يَلْعَبُوْنَ ۝٩٨
اَفَاَمِنُوْا مَكْرَ اللّٰهِ ۚ فَلَا يَاْمَنُ مَكْرَ اللّٰهِ
ع اِلَّا الْقَوْمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٩٩
اَوَلَمْ يَهْدِ لِلَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْاَرْضَ
مِنْۢ بَعْدِ اَهْلِهَآ اَنْ لَّوْ نَشَآءُ اَصَبْنٰهُمْ
بِذُنُوْبِهِمْ ۚ وَنَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ
لَا يَسْمَعُوْنَ ۝١٠٠
تِلْكَ الْقُرٰى نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَآئِهَا ۚ
وَلَقَدْ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ
فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا بِمَا كَذَّبُوْا مِنْ
قَبْلُ ۚ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ
الْكٰفِرِيْنَ ۝١٠١
وَمَا وَجَدْنَا لِاَكْثَرِهِمْ مِّنْ عَهْدٍ ۚ

बल्कि उनके अकसर को हमने फ़ासिक़ ही पाया।

103. फिर उनके बाद हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, मगर उन्होंने निशानियों को झुटलाकर (अपने ऊपर) ज़ुल्म किया, पस देख लो, इन मुफसिदों का कैसा अंजाम हुआ।

104. मूसा ने कहा, "ऐ फ़िरऔन, मैं सारे जहां के रब का फ़िरस्तादा हूं।

105. इसका अहल और हरीस हूं कि अल्लाह से मंसूब करके हक़ के सिवा कोई और बात न कहूं। मैं तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलील लेकर आ गया हूं; पस तुम बनी इसराईल को मेरे साथ जाने दो।"

106. बोला, "तुम कोई निशानी लेकर आए हो, तो उसे पेश करो, अगर तुम सच्चे हो"।

107. तब उसने अपना असा (लाठी) डाल दिया, तो क्या देखते हैं कि वह साफ़ अज़दहा है।

108. और उसने अपना हाथ निकाला, तो क्या देखते हैं कि वह सब देखनेवालों के सामने चमक रहा है।

109. फ़िरऔन की क़ौम के सरदार कहने लगे, "अरे यह तो बड़ा वाक़िफ़कार जादूगर है,

110. तुम्हें तुम्हारी ज़मीन से निकाल देने का इरादा रखता है; तो अब क्या कहते हो?"

111. उन्होंने कहा, "इसे और इसके भाई को इंतिज़ार में रखो, और शहरों को हरकारे भेज दो,

112. कि वो हर वाक़िफ़कार जादूगर को तुम्हारे पास ले आएं"।

113. चुनांचे जादूगर फ़िरऔन के पास आ गए, कहने लगे, "अगर हम ग़ालिब रहे तो लाज़िमन हमें बड़ा सिला मिलेगा?"

114. उसने कहा, "हां, और तुम मुक़र्रिबीन में शामिल होगे"।

115. उन्होंने कहा, "ऐ मूसा या तो तुम डालो, या फिर हम डालते हैं?"

116. उसने कहा, "तुम ही डालो"। फिर उन्होंने डाला तो लोगों की आंखों पर जादू कर दिया और उन्हें ख़ौफ़ज़दा कर दिया;

व इंव्-वजद्ना अक्स-रहुम् लफ़ासिक़ीन (102)

सुम्-म बअ़स्ना मिम्-बअ़्दिहिम् मूसा बिआयातिना इला फ़िर्औ-न व म-लइही फ़-ज़-लमू बिहा फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल् मुफ़्सिदीन (103)

व क़ा-ल मूसा या फ़िर्औनु इन्नी रसूलुम् मिर्रब्बिल्-आ़लमीन (104)

हक़ीक़ुन् अ़ला अल्ला अक़ू-ल अ़लल्लाहि इल्लल्हक़्-क़, क़द् जिअ्तुकुम् बिबय्यि-नतिम् मिर्रब्बिकुम् फ़-अर्सिल् मअ़ि-य बनी इस्राईल (105)

क़ा-ल इन् कुन्-त जिअ्-त बिआयतिन् फ़अ्ति बिहा इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (106)

फ़अल्क़ा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य सुअ्बानुम् मुबीन (107)

व न-ज़-अ़ य-दहू फ़-इज़ा हि-य बैज़ा-उ लिन्नाज़िरीन (108)●

क़ालल्म-लउ मिन् क़ौमि फ़िर्औ-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुन् अ़लीम (109)

युरीदु अंय्युख़्रि-जकुम् मिन् अर्ज़िकुम् फ़-माज़ा तअ्मुरून (110)

क़ालू अर्जिह् व अख़ाहु व अर्सिल् फ़िल्मदाइनि हाशिरीन (111)

यअ्तू-क बिकुल्लि साहिरिन् अ़लीम (112)

व जाअस्स-ह-रतु फ़िर्औ-न क़ालू इन्-न लना लअज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल् ग़ालिबीन (113)

क़ा-ल न-अ़म् व इन्नकुम् लमिनल् मुक़र्रबीन (114)

क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्क़ि-य व इम्मा अन्नकू-न नह्नुल्-मुल्क़ीन (115)

क़ा-ल अल्क़ू फ़-लम्मा अल्क़ौ स-हरू अअ्युनन्नासि वस्तर्हबूहुम् व जाऊ

وَاِنْ وَّجَدْنَآ اَكْثَرَهُمْ لَفٰسِقِيْنَ ۝١٠٢
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَظَلَمُوْا بِهَا ۚ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝١٠٣
وَقَالَ مُوْسٰى يٰفِرْعَوْنُ اِنِّيْ رَسُوْلٌ مِّنْ
رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠٤
حَقِيْقٌ عَلٰٓى اَنْ لَّآ اَقُوْلَ عَلَى اللّٰهِ اِلَّا
الْحَقَّ ؕ قَدْ جِئْتُكُمْ بِبَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ
فَاَرْسِلْ مَعِيَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝١٠٥
قَالَ اِنْ كُنْتَ جِئْتَ بِاٰيَةٍ فَاْتِ بِهَآ
اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝١٠٦
فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝١٠٧
ع وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝١٠٨
قَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اِنَّ هٰذَا
لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝١٠٩
يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ ۚ
فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝١١٠
قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَاَرْسِلْ فِي
الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝١١١
يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝١١٢
وَجَآءَ السَّحَرَةُ فِرْعَوْنَ قَالُوْٓا اِنَّ لَنَا
لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝١١٣
قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ لَمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝١١٤
قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ اَنْ
نَّكُوْنَ نَحْنُ الْمُلْقِيْنَ ۝١١٥
قَالَ اَلْقُوْا ۚ فَلَمَّآ اَلْقَوْا سَحَرُوْٓا اَعْيُنَ
النَّاسِ وَاسْتَرْهَبُوْهُمْ وَجَآءُوْ

उन्होंने एक बहुत ही बड़े जादू का मुज़ाहरा किया।

117. हमने मूसा की तरफ़ वही की कि "अपना असा (लाठी) डाल दे", फिर क्या देखते हैं कि वह उनके उस झूटे तिलिस्म (जादू) को निगलता जा रहा है।

118. इस तरह हक़ ज़ाहिर हो गया और जो कुछ वो कर रहे थे ग़लत होकर रहा।

119. पस वो मग़लूब हो गए, और ज़लील होकर रहे।

120. और जादूगर बेइख़्तियार सजदे में गिर पड़े।

121. बोले, "हम सारे जहां के रब पर ईमान ले आए,

122. मूसा और हारून के रब पर।"

123. फ़िरऔन बोला, "इससे पहले कि मैं तुम्हें इजाज़त दूं तुम उसपर ईमान ले आए। यह तो एक चाल है जो तुम लोग शहर में चले हो ताकि उसके बाशिन्दों को उससे निकाल दो। अच्छा तो अब तुम्हें जल्द ही मालूम हुआ जाता है!

124. मैं तुम्हारे हाथ और तुम्हारे पांव मुख़ालिफ़ सिम्तों से काट दूंगा, फिर तुम सबको सूली पर चढ़ा कर रहूंगा"।

125. उन्होंने कहा, "हम तो अपने रब ही की तरफ़ लौटेंगे।

126. और तू महज़ इस गुस्से से हमारे आज़ार के दरपे हो रहा है कि हम अपने रब की निशानियों पर जबकि वो हमारे पास आ गईं ईमान ले आए। हमारे रब, हम पर सब्र उंडेल दे, और हमें इस हाल में उठा कि हम मुस्लिम हों।"

127. फ़िरऔन की क़ौम के सरदार कहने लगे कि "क्या तुम मूसा और उसकी क़ौम को ऐसे ही छोड़ दोगे कि वो ज़मीन में बिगाड़ पैदा करें और वो तुम्हें और तुम्हारे माबूदों को छोड़ बैठें?" उसने कहा, "हम उनके बेटों को बुरी तरह क़त्ल करेंगे और उनकी औरतों को ज़िन्दा रखेंगे, यक़ीनन हमें उनपर पूरा ज़ोर हासिल है।"

128. मूसा ने अपनी क़ौम से कहा कि "अल्लाह से मुतअल्लिक़ होकर मदद हासिल करो और सब्र करो; ज़मीन अल्लाह की है, वह अपने बन्दों में से जिसे चाहता है उसका वारिस बनाता है। अंजामकार तो डर रखनेवालों ही कि लिए है।"

बिसिह्रिन् अ़ज़ीम (116)

व औहैना इला मूसा अन् अल्क़ि अ़सा-क फ़-इज़ा हि-य तल्क़फ़ु मा यअ्फ़िकून (117)

फ़-व-क़अ़ल्-हक़्क़ु व ब-त-ल मा कानू यअ्मलून (118)

फ़ग़ुलिबू हुनालि-क वन्क़-लबू साग़िरीन (119)

व उल्क़ियस्स-ह-रतु साजिदीन (120)

क़ालू आमन्ना बिरब्बिल्-आ़लमीन (121)

रब्बि मूसा व हारून (122)

क़ा-ल फ़िर्औ़नु आमन्तुम् बिही क़ब्-ल अन् आज़-न लकुम् इन्-न हाज़ा लमक्रुम्-मकर्तुमूहु फ़िल्मदीनति लितुख़्रिजू मिन्हा अह्लहा फ़सौ-फ़ तअ्लमून (123)

ल-उक़त्तिअ़न्-न ऐदियकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िन् सुम्-म ल-उसल्लिबन्नकुम् अज्मओ़न (124)

क़ालू इन्ना इला रब्बिना मुन्क़लिबून (125)

व मा तन्क़िमु मिन्ना इल्ला अन् आमन्ना बिआयाति रब्बिना लम्मा जाअत्ना, रब्बना अफ़्रिग़ अ़लैना सब्रंव्-व तवफ़्फ़ना मुस्लिमीन (126)●

व क़ालल्म-लउ मिन् क़ौमि फ़िर्औ़-न अ-त-ज़रु मूसा व क़ौमहू लियुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व य-ज़-र-क व आलि-ह-त-क, क़ा-ल सनुक़त्तिलु अब्ना-अहुम् व नस्तह्यी निसा-अहुम् व इन्ना फ़ौक़हुम् क़ाहिरून (127)

क़ा-ल मूसा लिक़ौमिहिस्तअ़ीनू बिल्लाहि वस्बिरू इन्नल्-अर्-ज़ लिल्लाहि यूरिसुहा मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही, वल्आ़क़ि-बतु लिल्मुत्तक़ीन (128)

بِسِحْرٍ عَظِيْمٍ ﴿١١٦﴾
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ۚ
فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ مَا يَاْفِكُوْنَ ﴿١١٧﴾ ۚ
فَوَقَعَ الْحَقُّ وَبَطَلَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿١١٨﴾ ۚ
فَغُلِبُوْا هُنَالِكَ وَانْقَلَبُوْا صٰغِرِيْنَ ﴿١١٩﴾ ۚ
وَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ﴿١٢٠﴾ ۚ
قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿١٢١﴾ ۙ
رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٢﴾
قَالَ فِرْعَوْنُ اٰمَنْتُمْ بِهٖ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ
لَكُمْ ۚ اِنَّ هٰذَا لَمَكْرٌ مَّكَرْتُمُوْهُ فِى
الْمَدِيْنَةِ لِتُخْرِجُوْا مِنْهَآ اَهْلَهَا ۚ فَسَوْفَ
تَعْلَمُوْنَ ﴿١٢٣﴾
لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ
خِلَافٍ ثُمَّ لَاُصَلِّبَنَّكُمْ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٢٤﴾
قَالُوْٓا اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ﴿١٢٥﴾ ۚ
وَمَا تَنْقِمُ مِنَّآ اِلَّآ اَنْ اٰمَنَّا بِاٰيٰتِ
رَبِّنَا لَمَّا جَآءَتْنَا ۗ رَبَّنَآ اَفْرِغْ عَلَيْنَا
ع صَبْرًا وَّتَوَفَّنَا مُسْلِمِيْنَ ﴿١٢٦﴾ ۚ
وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِ فِرْعَوْنَ اَتَذَرُ
مُوْسٰى وَقَوْمَهٗ لِيُفْسِدُوْا فِى الْاَرْضِ
وَيَذَرَكَ وَاٰلِهَتَكَ ۗ قَالَ سَنُقَتِّلُ اَبْنَآءَهُمْ
وَنَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْ ۚ وَاِنَّا فَوْقَهُمْ
قٰهِرُوْنَ ﴿١٢٧﴾
قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اسْتَعِيْنُوْا بِاللّٰهِ
وَاصْبِرُوْا ۚ اِنَّ الْاَرْضَ لِلّٰهِ ۙ يُوْرِثُهَا مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ۗ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٨﴾

129. उन्होंने कहा, "तुम्हारे आने से पहले भी हम सताए गए, और तुम्हारे आने के बाद भी!" उसने कहा, "क़रीब है कि तुम्हारा रब तुम्हारे दुश्मन को हलाक कर दे, और ज़मीन में तुम्हें ख़लीफ़ा बनाए फिर यह देखे कि तुम कैसे अमल करते हो!"

130. और हमने फ़िरऔनियों को (कई साल तक) क़हत (ख़ुश्क साली), और पैदावार की कमी में मुबतला रखा कि शायद उनको होश आए।

131. फिर जब उन्हें अच्छी हालत पेश आती है तो कहते हैं, "यह तो है ही हमारे लिए," और अगर उन्हें कोई बुरी हालत पेश आए, तो वो उसे मूसा और उसके साथियों की नहूसत क़रार दें। सुन लो, उनका नसीबा अल्लाह ही के पास है; मगर उनमें से अक्सर जानते नहीं।

132. वो बोले, "तू हम पर जादू करने के लिए ख़्वाह कोई भी निशानी हमारे पास ले आए, हम तुझ पर ईमान लाने के नहीं"

133. आख़िरकार हमने उनपर तूफ़ान और टिड्डियां और छोटे कीड़े, और मेंडक, और ख़ून, कितनी ही निशानियां अलग-अलग भेजीं, मगर वो ग़ुरूर ही करते रहे, वो थे ही मुजरिम लोग।

134. जब कभी उनपर अज़ाब आ पड़ता है कहते, "ऐ मूसा! हमारे लिए अपने रब से दुआ करो उस अ़हद के वास्ते से जो उसने तुमसे कर रखा है। तुमने अगर हम पर से यह अज़ाब हटा दिया, तो लाज़िमन हम तुमपर ईमान ले आएंगे, और बनी इसराईल को तुम्हारे साथ जाने देंगे"।

135. मगर जब हम उनपर से एक मुक़र्रर वक़्त के लिए जिसको वो बहरहाल पहुंचने वाले थे, अज़ाब हटा लेते, तो क्या देखते कि वो अ़हद शिकनी करने लग गए।

136. फिर हमने उनसे इंतिक़ाम लिए, और उन्हें गहरे पानी में ग़र्क़ कर दिया, क्योंकि उन्होंने हमारी निशानियों को ग़लत समझा और उनसे ग़ाफ़िल हो गए।

137. और जो लोग कमज़ोर पाए जाते थे उन्हें हमने उस सर ज़मीन के पूरब के अतराफ़ और पश्चिम के अतराफ़ का वारिस बना दिया जिसे हमने बरकत दी थी; और तुम्हारे रब का अच्छा वादा बनी इसराईल के हक़ में पूरा हुआ, क्योंकि उन्होंने सब्र किया, और फ़िरऔन और उसकी क़ौम का वह सब कुछ हमने

क़ालू ऊज़ीना मिन् क़ब्लि अन् तअ्ति-यना व मिम्-बअ्दि मा जिअ्तना, क़ा-ल अ़सा रब्बुकुम् अंय्युह्लि-क अ़दुव्वकुम् व यस्तख़्लि-फ़कुम् फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्मलून (129) ●

व ल-क़द् अख़ज़्ना आ-ल फ़िरऔ-न बिस्सिनी-न व नक़्सिम् मिनस्स-मराति लअ़ल्लहुम् यज़्ज़क्करून (130)

फ़-इज़ा जाअत्हुमुल् ह-स-नतु क़ालू लना हाज़िही व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुंय्यत्तय्यरू बिमूसा व मम्-म-अ़हू, अला इन्नमा ताइरूहुम् अ़िन्दल्लाहि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (131)

व क़ालू मह्मा तअ्तिना बिही मिन् आयतिल्-लितस्ह-रना बिहा फ़मा नह्नु ल-क बिमुअ्मिनीन (132)

फ़-अर्सल्ना अ़लैहिमुत्तूफ़ा-न वल्जरा-द वल्क़ुम्म-ल वज़्ज़फ़ादि-अ़ वद्द-म आयातिम् मुफ़स्सलातिन्, फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम् मुज्रिमीन (133)

व लम्मा व-क़-अ़ अ़लैहिमुर्रिज़्ज़ु क़ालू या मूसद्अु लना रब्ब-क बिमा अ़हि-द अ़िन्द-क ल-इन् कशफ़्-त अ़न्नर्रिज़्-ज़ लनुअ्मिनन्-न ल-क व लनुर्सिलन्-न म-अ़-क बनी इस्राईल (134)

फ़-लम्मा कशफ़्ना अ़न्हुमुर्रिज़्-ज़ इला अ-जलिन् हुम् बालिग़ूहु इज़ा हुम् यन्कुसून (135)

फ़न्तक़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़्रक़्नाहुम् फ़िल्यम्मि बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन (136)

व औरस्नल् क़ौमल्लज़ी-न कानू युस्तज़्-अ़फ़ू-न मशारिक़ल्-अर्ज़ि व मग़ारि-बहल्लती बारक्ना फ़ीहा, व तम्मत् कलि-मतु रब्बिकल्हुस्ना अ़ला बनी इस्राई-ल बिमा स-बरू, व दम्मर्ना

قَالُوْٓا اُوْذِيْنَا مِنْ قَبْلِ اَنْ تَاْتِيَنَا وَمِنْۢ
بَعْدِ مَا جِئْتَنَا ؕ قَالَ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ
يُّهْلِكَ عَدُوَّكُمْ وَيَسْتَخْلِفَكُمْ فِى الْاَرْضِ
ع فَيَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ (١٢٩)
وَلَقَدْ اَخَذْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ بِالسِّنِيْنَ
وَنَقْصٍ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ (١٣٠)
فَاِذَا جَآءَتْهُمُ الْحَسَنَةُ قَالُوْا لَنَا هٰذِهٖ ۚ
وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌ يَّطَّيَّرُوْا بِمُوْسٰى
وَمَنْ مَّعَهٗ ؕ اَلَآ اِنَّمَا طٰٓئِرُهُمْ عِنْدَ
اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ (١٣١)
وَقَالُوْا مَهْمَا تَاْتِنَا بِهٖ مِنْ اٰيَةٍ لِّتَسْحَرَنَا
بِهَا ۙ فَمَا نَحْنُ لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ (١٣٢)
فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمُ الطُّوْفَانَ وَالْجَرَادَ
وَالْقُمَّلَ وَالضَّفَادِعَ وَالدَّمَ اٰيٰتٍ مُّفَصَّلٰتٍ ۫
فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ (١٣٣)
وَلَمَّا وَقَعَ عَلَيْهِمُ الرِّجْزُ قَالُوْا يٰمُوْسَى
ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ عِنْدَكَ ۚ لَئِنْ
كَشَفْتَ عَنَّا الرِّجْزَ لَنُؤْمِنَنَّ لَكَ
وَلَنُرْسِلَنَّ مَعَكَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ (١٣٤)
فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الرِّجْزَ اِلٰٓى اَجَلٍ هُمْ
بٰلِغُوْهُ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ (١٣٥)
فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ بِاَنَّهُمْ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ (١٣٦)
وَاَوْرَثْنَا الْقَوْمَ الَّذِيْنَ كَانُوْا يُسْتَضْعَفُوْنَ
مَشَارِقَ الْاَرْضِ وَمَغَارِبَهَا الَّتِيْ بٰرَكْنَا
فِيْهَا ؕ وَتَمَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ الْحُسْنٰى عَلٰى
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۙ بِمَا صَبَرُوْا ؕ وَدَمَّرْنَا

مَا كَانَ يَصْنَعُ فِرْعَوْنُ وَقَوْمُهٗ وَمَا
كَانُوْا يَعْرِشُوْنَ ۝١٣٧
وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتَوْا
عَلٰى قَوْمٍ يَّعْكُفُوْنَ عَلٰٓى اَصْنَامٍ لَّهُمْ ۚ
قَالُوْا يٰمُوْسَى اجْعَلْ لَّنَآ اِلٰهًا كَمَا لَهُمْ
اٰلِهَةٌ ۗ قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝١٣٨
اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ مُتَبَّرٌ مَّا هُمْ فِيْهِ وَبٰطِلٌ
مَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٣٩
قَالَ اَغَيْرَ اللّٰهِ اَبْغِيْكُمْ اِلٰهًا وَّهُوَ
فَضَّلَكُمْ عَلَى الْعٰلَمِيْنَ ۝١٤٠
وَاِذْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ ۚ يُقَتِّلُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ۗ وَفِيْ
ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ۝١٤١
وَوٰعَدْنَا مُوْسٰى ثَلٰثِيْنَ لَيْلَةً وَّاَتْمَمْنٰهَا
بِعَشْرٍ فَتَمَّ مِيْقَاتُ رَبِّهٖٓ اَرْبَعِيْنَ لَيْلَةً ۚ
وَقَالَ مُوْسٰى لِاَخِيْهِ هٰرُوْنَ اخْلُفْنِيْ
فِيْ قَوْمِيْ وَاَصْلِحْ وَلَا تَتَّبِعْ سَبِيْلَ
الْمُفْسِدِيْنَ ۝١٤٢
وَلَمَّا جَآءَ مُوْسٰى لِمِيْقَاتِنَا وَكَلَّمَهٗ
رَبُّهٗ ۙ قَالَ رَبِّ اَرِنِيْٓ اَنْظُرْ اِلَيْكَ ۗ
قَالَ لَنْ تَرٰىنِيْ وَلٰكِنِ انْظُرْ اِلَى
الْجَبَلِ فَاِنِ اسْتَقَرَّ مَكَانَهٗ فَسَوْفَ
تَرٰىنِيْ ۚ فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ
دَكًّا وَّخَرَّ مُوْسٰى صَعِقًا ۚ فَلَمَّآ اَفَاقَ
قَالَ سُبْحٰنَكَ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاَنَا اَوَّلُ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٤٣

मा का-न यस्नअु फ़िर्औनु व क़ौमुहू व मा कानू यअ्रिशून ● (137)

व जावज़्ना बि-बनी इस्राईलल्-बह्-र फ़-अतौ अ़ला क़ौमिंय्यअ्कुफ़ू-न अ़ला अस्नामिल्लहुम् क़ालू या मूसज्अ़ल्-लना इलाहन् कमा लहुम् आलि-हतुन्, क़ा-ल इन्नकुम् क़ौमुन् तज्हलून (138)

इन्-न हाउला-इ मुतब्बरुम् मा हुम् फ़ीहि व बातिलुम् मा कानू यअ्मलून (139)

क़ा-ल अग़ैरल्लाहि अब्ग़ीकुम् इलाहंव्-व हु-व फ़ज़्ज़-लकुम् अ़लल्-आ़लमीन (140)

व इज़् अन्जैनाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ़-न यसूमूनकुम् सूअल्-अ़ज़ाबि युक़त्तिलू-न अब्ना-अकुम् व यस्तह्यू-न निसा-अकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम् मिर्रब्बिकुम् अ़ज़ीम (141) ●

व वाअ़द्ना मूसा सलासी-न लै-लतंव्-व अत्मम्नाहा बिअ़श्रिन् फ़-तम्-म मीक़ातु रब्बिही अर्बअ़ी-न लै-लतन् व क़ा-ल मूसा लिअख़ीहि हारूनख़्लुफ़्नी फ़ी क़ौमी व अस्लिह् व ला तत्तबिअ् सबीलल्-मुफ़्सिदीन (142)

व लम्मा जा-अ मूसा लिमीक़ातिना व कल्ल-महू रब्बुहू क़ा-ल रब्बि अरिनी अन्ज़ुर् इलै-क, क़ा-ल लन् तरानी व लाकिनिन्ज़ुर् इलल्-ज-बलि फ़-इनिस्त-क़र्-र मकानहू फ़सौ-फ़ तरानी फ़-लम्मा तजल्ला रब्बुहू लिल्ज-बलि ज-अ़-लहू दक्कंव्-व ख़र्-र मूसा सअ़िक़न् फ़-लम्मा अफ़ा-क़ क़ा-ल सुब्हान-क तुब्तु इलै-क व अ-न अव्वलुल्-मुअ्मिनीन (143)

तबाह कर दिया जिसे वो बनाते और ऊंचा उठाते थे।

138. और बनी इसराईल को हमने बहर (समुंदर) से गुज़ार दिया, फिर वो ऐसे लोगों के पास पहुंचे जो अपने कुछ बुतों के गिरवीदा बने हुए थे, कहने लगे, "ऐ मूसा हमारे लिए भी कोई ऐसा माबूद बना दे, जैसे उनके माबूद हैं"। उसने कहा, "यक़ीनन तुम बड़े जाहिल लोग हो।

139. यक़ीनन वह सब कुछ जिसमें ये लोग लगे हुए हैं बरबाद होकर रहेगा, और जो कुछ ये कर रहे हैं सरासर बातिल है"।

140. उसने कहा, "क्या मैं अल्लाह के सिवा तुम्हारे लिए कोई और माबूद तलाश करूं, हालांकि उसी ने तुम्हें सारे जहां पर फ़ज़ीलत बख़्शी?"

141. और याद करो जब हमने तुम्हें फ़िरऔनियों से नजात दी जो तुम्हें बुरे अज़ाब में मुबतला रखते थे, तुम्हारे बेटों को मार डालते थे और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रहने देते थे और वह (नजात दिलाना) तुम्हारे रब की तरफ़ से अज़ीम एहसान है।

142. और हमने मूसा से तीस रातों का वादा ठहराया फिर हमने दस और बढ़ाकर उसे पूरा किया, इस तरह उसके रब की ठहराई हुई मुद्दत चालीस रातों में पूरी हुई; मूसा ने अपने भाई हारून से कहा कि "मेरी क़ौम में तुम मेरी जानशीनी करना, काम को दुरुस्त रखना, और मुफ़सिदों के तरीक़े की पैरवी न करना"।

143. जब मूसा हमारे मुक़र्रर किए हुए वक़्त पर पहुचा और उसके रब ने उससे कलाम फ़रमाया तो वह कहने लगा, "मेरे रब, मुझे यारा-ए-दीद अता कर कि मैं तुझे देखूं!" फ़रमाया "तू मुझे हरगिज़ न देख सकेगा, अलबत्ता पहाड़ की तरफ़ देख अगर वह अपनी जगह क़ायम रह जाए तो फिर तू मुझे देख लेगा"। चुनांचे उस के रब ने जब पहाड़ पर तजल्ली फ़रमाई तो उसे रेज़ा-रेज़ा कर दिया, और मूसा बेहोश होकर गिर पड़ा। फिर जब वह होश में आया, तो कहा, "शान व अज़मत है तेरी! मैं तेरे हुज़ूर में तौबा करता हूं, और सबसे पहला ईमान लानेवाला मैं हूं"।

144. उसने कहा कि "ऐ मूसा दूसरे लोगों के मुक़ाबले में मैंने तुझे बरगुज़ीदा करके अपने पैग़ामात और अपने कलाम से नवाज़ा है। पस जो कुछ मैं तुझे दूं उसे ले, और शुक्रगुज़ार हो"।

145. और हमने उसके लिए तख़्तियों पर नसीहत की शक्ल में हर चीज़, और हर चीज़ का वाज़ेह बयान लिख दियाः "पस उनको मज़बूती से पकड़, उनमें बेहतरीन बातें हैं अपनी क़ौम के लोगों को हुक्म दे कि वो उनको इख़्तियार करें। अनक़रीब मैं तुम्हें फ़ासिक़ों का घर दिखाऊंगा।

146. जो लोग ज़मीन में नाहक़ बड़े बनते हैं मैं अपनी निशानियों की तरफ़ से उन्हें फेर दूंगा, अगर वो हर एक निशानी देख लें, वो उस पर ईमान न लाएंगे, और अगर वो हिदायत की राह देख लें, तो भी वो उसे अपनी राह क़रार न देंगे, लेकिन अगर वो गुमराही की राह देख लें तो उसे अपनी राह क़रार दे लेंगे। ऐसा इसलिए है कि उन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया और उनसे ग़ाफ़िल व बेपरवाह रहे"।

147. जिन लोगों ने हमारी आयतों को और आख़िरत की मुलाक़ात को झूटा जाना, उनका तो सारा किया-धरा वबाले जान हुआ; जो कुछ वो करते रहे हैं, क्या उसके सिवा कोई और चीज़ बदले में पाएंगे?

148. और मूसा की क़ौम ने उसके पीछे एक बछड़े को माबूद बना लिया जो उनकी आराइशी चीज़ों से बना हुआ था, जिसमें से बैल की सी आवाज़ निकलती थी। क्या उन्होंने देखा नहीं कि न तो वह उनसे बातें करता है, और न उन्हें कोई राह दिखाता है? उन्होंने उसे अपना माबूद बना लिया, और वो बड़े ज़ालिम थे।

149. और जब (तम्बीह से) उन्हें पशेमानी हुई और उन्होंने देख लिया कि हक़ीक़त में वो भटक गए हैं, तो कहने लगे, "अगर हमारे रब ने हम पर रहम न फ़रमाया और उसने हमें माफ़ न किया, तो हम ख़सारे में पड़ जाएंगे।"

150. और जब मूसा गुस्से और रंज में भरा हुआ अपनी क़ौम की तरफ़ लौटा, तो उसने कहा, "तुम लोगों ने मेरे बाद मेरी बहुत बुरी जांनशीनी की, तुम अपने रब के हुक्म से पहले ही जल्दी कर बैठे!" फिर उसने तख़्तियां डाल दी, और अपने भाई का सर पकड़ कर उसे अपनी तरफ़ खींचने लगा। वह बोला,

क़ा-ल या मूसा इन्निस्तफ़ैतु-क अ़लन्नासि बिरिसालाती व बि-कलामी फ़ख़ुज़् मा आतैतु-क व कुम् मिनश्शाकिरीन (144)

व कतब्ना लहू फ़िल्-अल्वाहि मिन् कुल्लि शैइम् मौअ़ि-ज़तंव्-व तफ़्सीलल्-लिकुल्लि शैइन् फ़ख़ुज़्हा बिक़ुव्वतिंव्वअ्मुर् क़ौम-क यअ्ख़ुज़ू बिअह्सनिहा, सउरीकुम् दारल्फ़ासिक़ीन (145)

सअस्रिफ़ु अ़न् आयातियल्लज़ी-न य-तकब्बरू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, व इंय्यरौ कुल्-ल आयतिल् ला युअ्मिनू बिहा व इंय्यरौ सबीलर्रुश्दि ला यत्तख़िज़ूहु सबीलन् व इंय्यरौ सबीलल्-ग़य्यि यत्तख़िज़ूहु सबीलन्, ज़ालि-क बिअन्नहुम् कज़्ज़बू बिआयातिना व कानू अ़न्हा ग़ाफ़िलीन (146)

वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल आख़ि-रति हबितत् अअ्मालुहुम्, हल युज्ज़ौ-न इल्ला मा कानू यअ्मलून (147) ●

वत्त-ख़-ज़ क़ौमु मूसा मिम्-बअ्दिही मिन् हुलिय्यिहिम् अ़िज्लन् ज-सदल्लहू ख़ुवारुन्, अलम् यरौ अन्नहू ला युकल्लिमुहुम् व ला यह्दीहिम् सबीला● इत्त-ख़ज़ूहु व कानू ज़ालिमीन (148)

व लम्मा सुक़ि-त फ़ी ऐदीहिम् व रऔ अन्नहुम् क़द् ज़ल्लू क़ालू ल-इल्लम् यर्हम्ना रब्बुना व यग़्फ़िर् लना ल-नकूनन्-न मिनल्ख़ासिरीन (149)

व लम्मा र-ज-अ़ मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बा-न असिफ़न् क़ा-ल बिअ्-समा ख़लफ़्तुमूनी मिम्-बअ्दी अ-अ़जिल्तुम् अम्-र रब्बिकुम् व अल्क़ल्-अल्वा-ह व अ-ख़-ज़ बिरअ्सि अख़ीहि यजुर्रुहू इलैहि, क़ालब्-

قَالَ يٰمُوْسٰٓى اِنِّى اصْطَفَيْتُكَ عَلَى
النَّاسِ بِرِسٰلٰتِىْ وَبِكَلَامِىْ ۖ فَخُذْ
مَآ اٰتَيْتُكَ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝١٤٤
وَكَتَبْنَا لَهٗ فِى الْاَلْوَاحِ مِنْ كُلِّ شَىْءٍ
مَّوْعِظَةً وَّتَفْصِيْلًا لِّكُلِّ شَىْءٍ ۚ
فَخُذْهَا بِقُوَّةٍ وَّاْمُرْ قَوْمَكَ يَاْخُذُوْا
بِاَحْسَنِهَا ۗ سَاُورِيْكُمْ دَارَ الْفٰسِقِيْنَ ۝١٤٥
سَاَصْرِفُ عَنْ اٰيٰتِىَ الَّذِيْنَ يَتَكَبَّرُوْنَ
فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ وَاِنْ يَّرَوْا
كُلَّ اٰيَةٍ لَّا يُؤْمِنُوْا بِهَا ۚ وَاِنْ يَّرَوْا
سَبِيْلَ الرُّشْدِ لَا يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ وَاِنْ
يَّرَوْا سَبِيْلَ الْغَىِّ يَتَّخِذُوْهُ سَبِيْلًا ۚ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا عَنْهَا غٰفِلِيْنَ ۝١٤٦
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ
حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۗ هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا
مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٤٧
وَاتَّخَذَ قَوْمُ مُوْسٰى مِنْۢ بَعْدِهٖ مِنْ
حُلِيِّهِمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ ۗ اَلَمْ
يَرَوْا اَنَّهٗ لَا يُكَلِّمُهُمْ وَلَا يَهْدِيْهِمْ
سَبِيْلًا ۘ اِتَّخَذُوْهُ وَكَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝١٤٨
وَلَمَّا سُقِطَ فِىْٓ اَيْدِيْهِمْ وَرَاَوْا اَنَّهُمْ
قَدْ ضَلُّوْا ۙ قَالُوْا لَئِنْ لَّمْ يَرْحَمْنَا رَبُّنَا
وَيَغْفِرْ لَنَا لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝١٤٩
وَلَمَّا رَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ
اَسِفًا ۙ قَالَ بِئْسَمَا خَلَفْتُمُوْنِىْ مِنْۢ بَعْدِىْ ۚ
اَعَجِلْتُمْ اَمْرَ رَبِّكُمْ ۚ وَاَلْقَى الْاَلْوَاحَ
وَاَخَذَ بِرَاْسِ اَخِيْهِ يَجُرُّهٗٓ اِلَيْهِ ۗ قَالَ

"ऐ मेरी मां के बेटे, लोगों ने मुझे कमज़ोर समझ लिया, क़रीब था कि मुझे मार डालते, पस दुश्मनों को मेरे मुतअल्लिक़ खुश न कर, और ज़ालिम लोगों में मुझे शामिल न कर"।

151. उसने कहा, "मेरे रब, मुझे और मेरे भाई को बख़्श दे और हमें अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमा; तू तो सबसे बढ़कर रहीम है"।

152. जिन लोगों ने बछड़े को माबूद बनाया उन्हें उनके रब की तरफ़ से नाराज़ी और दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत पहुंच कर रहेगी और इफ़्तिरा परदाज़ों को हम ऐसा ही बदला देते हैं।

153. रहे वो लोग जिन्होंने बुरे काम किए फिर उसके बाद तौबा कर ली और ईमान ले आए, तो उसके बाद तो तुम्हारा रब बड़ा ही बख़्शनेवाला, निहायत मेहरबान है।

154. और जब मूसा का गुस्सा थमा, तो उसने तख़्तियों को उठाया; उनकी तहरीर में उन लोगों के लिए हिदायत और रहमत थी जो अपने रब से डरते हैं।

155. मूसा ने अपनी क़ौम के सत्तर आदमियों को हमारे मुक़र्रर किए हुए वक़्त के लिए चुना। फिर जब उन लोगों को एक ज़लज़ले ने आ पकड़ा तो उसने कहा "मेरे रब, अगर तू चाहता तो पहले ही उनको और मुझे हलाक कर देता। जो कुछ हमारे नादानों ने किया है, क्या उसकी वजह से तू हमें हलाक करेगा? यह तो बस तेरी तरफ़ से एक आज़माइश है, इसके ज़रिए से तू जिसको चाहे गुमराही में डाल दे, और जिसे चाहे हिदायत दे। तू ही हमारा सरपरस्त है; पस तू हमें बख़्श दे, और हमपर रहम फ़रमा, और तू ही सब से अच्छा बख़्शनेवाला है।

156. और हमारे लिए इस दुनिया में भी भलाई लिख दे, और आख़िरत में भी; हम तेरी ही तरफ़ रुजू हुए"। उसने कहा, "अपने अज़ाब में तो मैं उसी को मुबतला करता हूं जिसे चाहता हूं; मगर मेरी रहमत हर चीज़ पर छाई हुई है, उसे तो मैं उन लोगों के हक़ में लिखूंगा जो डर रखते और

न उम्-म इन्नल् क़ौमस्तज़्अफ़ूनी व कादू यक़्तुलू-ननी फ़ला तुश्मित् बियल्-अअ्दा-अ व ला तज्अल्नी मअ़ल् क़ौमिज़्-ज़ालिमीन (150)

क़ा-ल रब्बिग़्फ़िर् ली व लि-अख़ी व अद्ख़िल्ना फ़ी रह्मति-क व अन्-त अर्हमुर्-राहिमीन ● (151)

इन्नल्लज़ीनत्त-ख़ज़ुल्-अ़िज्-ल स-यनालुहुम् ग़-ज़बुम् मिर्रब्बिहिम् व ज़िल्लतुन् फ़िल्-हयातिद्दुन्या, व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुफ़्तरीन (152)

वल्लज़ी-न अ़मिलुस्सय्यिआति सुम्-म ताबू मिम्-बअ्दिहा व आमनू इन्-न रब्ब-क मिम्-बअ्दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रहीम (153)

व लम्मा स-क-त अ़म्मूसल्-ग़-ज़बु अ-ख़ज़ल्-अल्वा-ह व फ़ी नुस्ख़तिहा हुदंव्-व रह्मतुल्लिल्लज़ी-न हुम् लिरब्बिहिम् यर्हबून (154)

वख़्ता-र मूसा क़ौमहू सब्अ़ी-न रजुलल् लिमीक़ातिना फ़-लम्मा अ-ख़ज़त्हुमुर्रज्-फ़तु क़ा-ल रब्बि लौ शिअ्-त अह्लक्तहुम् मिन् क़ब्लु व इय्या-य, अतुह्लिकुना बिमा फ़-अ़लस्सु-फ़हा-उ मिन्ना इन् हि-य इल्ला फ़ित्नतु-क, तुज़िल्लु बिहा मन् तशा-उ व तह्दी मन् तशा-उ, अन्-त वलिय्युना फ़ग़्फ़िर् लना वर्हम्ना व अन्-त ख़ैरुल्ग़ाफ़िरीन (155)

वक्तुब् लना फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह-स-नतंव्-व फ़िल्आख़ि-रति इन्ना हुद्ना इलै-क, क़ा-ल अ़ज़ाबी उसीबु बिही मन् अशा-उ व रह्मती वसिअ़त् कुल्-ल शैइन्, फ़-सअक्तुबुहा लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न व युअ्तूनज़्ज़का-त वल्लज़ी-न

ابْنَ اُمَّ اِنَّ الْقَوْمَ اسْتَضْعَفُوْنِىْ وَكَادُوْا
يَقْتُلُوْنَنِىْ ۖ فَلَا تُشْمِتْ بِىَ الْاَعْدَآءَ وَلَا
تَجْعَلْنِىْ مَعَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١٥٠
قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِىْ وَلِاَخِىْ وَاَدْخِلْنَا
ع فِىْ رَحْمَتِكَ ۖ وَاَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۝١٥١
اِنَّ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوا الْعِجْلَ سَيَنَالُهُمْ
غَضَبٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ وَذِلَّةٌ فِى الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُفْتَرِيْنَ ۝١٥٢
وَالَّذِيْنَ عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ ثُمَّ تَابُوْا مِنْۢ
بَعْدِهَا وَاٰمَنُوْٓا ۟ اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا
لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٥٣
وَلَمَّا سَكَتَ عَنْ مُّوْسَى الْغَضَبُ اَخَذَ
الْاَلْوَاحَ ۖۚ وَفِىْ نُسْخَتِهَا هُدًى وَّرَحْمَةٌ
لِّلَّذِيْنَ هُمْ لِرَبِّهِمْ يَرْهَبُوْنَ ۝١٥٤
وَاخْتَارَ مُوْسٰى قَوْمَهٗ سَبْعِيْنَ رَجُلًا
لِّمِيْقَاتِنَا ۚ فَلَمَّآ اَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ قَالَ
رَبِّ لَوْ شِئْتَ اَهْلَكْتَهُمْ مِّنْ قَبْلُ
وَاِيَّاىَ ؕ اَتُهْلِكُنَا بِمَا فَعَلَ السُّفَهَآءُ
مِنَّا ۚ اِنْ هِىَ اِلَّا فِتْنَتُكَ ؕ تُضِلُّ بِهَا
مَنْ تَشَآءُ وَتَهْدِىْ مَنْ تَشَآءُ ؕ اَنْتَ
وَلِيُّنَا فَاغْفِرْ لَنَا وَارْحَمْنَا وَاَنْتَ
خَيْرُ الْغٰفِرِيْنَ ۝١٥٥
وَاكْتُبْ لَنَا فِىْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةً
وَّفِى الْاٰخِرَةِ اِنَّا هُدْنَآ اِلَيْكَ ؕ قَالَ
عَذَابِىْٓ اُصِيْبُ بِهٖ مَنْ اَشَآءُ ۚ وَرَحْمَتِىْ
وَسِعَتْ كُلَّ شَىْءٍ ؕ فَسَاَكْتُبُهَا لِلَّذِيْنَ
يَتَّقُوْنَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَالَّذِيْنَ

هُمْ بِاٰيٰتِنَا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٥٦
اَلَّذِيْنَ يَتَّبِعُوْنَ الرَّسُوْلَ النَّبِيَّ الْاُمِّيَّ
الَّذِيْ يَجِدُوْنَهٗ مَكْتُوْبًا عِنْدَهُمْ فِي
التَّوْرٰىةِ وَالْاِنْجِيْلِ يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ
وَيَنْهٰىهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ
وَيُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَيَضَعُ عَنْهُمْ
اِصْرَهُمْ وَالْاَغْلٰلَ الَّتِيْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ۭ
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَعَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ
وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ
ع اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝١٥٧
قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ
جَمِيْعَا ۨ الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۠
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهِ النَّبِيِّ الْاُمِّيِّ
الَّذِيْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَكَلِمٰتِهٖ وَاتَّبِعُوْهُ
لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ۝١٥٨
وَمِنْ قَوْمِ مُوْسٰٓى اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ
وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝١٥٩
وَقَطَّعْنٰهُمُ اثْنَتَيْ عَشْرَةَ اَسْبَاطًا اُمَمًا ۭ
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اِذِ اسْتَسْقٰىهُ قَوْمُهٗٓ
اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ الْحَجَرَ ۚ فَانْۢبَجَسَتْ
مِنْهُ اثْنَتَا عَشْرَةَ عَيْنًا ۭ قَدْ عَلِمَ كُلُّ
اُنَاسٍ مَّشْرَبَهُمْ ۭ وَظَلَّلْنَا عَلَيْهِمُ الْغَمَامَ
وَاَنْزَلْنَا عَلَيْهِمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۭ كُلُوْا
مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ ۭ وَمَا ظَلَمُوْنَا
وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝١٦٠
وَاِذْ قِيْلَ لَهُمُ اسْكُنُوْا هٰذِهِ الْقَرْيَةَ

हुम् बिआयातिना युअ्मिनून (156)
अल्लज़ी-न यत्तबिऊनर्रसूलन्नबिय्यल् उम्मिय्यल्लज़ी यजिदूनहू मक्तूबन् अ़िन्दहुम् फ़ित्तौराति वल्-इन्जीलि यअ्मुरुहुम् बिल्-मअ्रूफ़ि व यन्हाहुम् अ़निल्-मुन्करि व युहिल्लु लहुमुत्तय्यिबाति व युहर्रिमु अ़लैहिमुल् ख़बाइ-स व य-ज़अु अ़न्हुम् इस्रहुम् वल्अग्लालल्लती कानत् अ़लैहिम्, फ़ल्लज़ी-न आमनू बिही व अ़ज़्ज़रूहु व न-सरूहु वत्त-बअुन्-नूरल्लज़ी उन्ज़ि-ल म-अ़हू उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (157) ●
क़ुल् या अय्युहन्नासु इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् जमी-अ़निल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि ला इला-ह इल्ला हु-व युह्यी व युमीतु फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिहिन्-नबिय्यिल् उम्मिय्यिल्लज़ी युअ्मिनु बिल्लाहि व कलिमातिही वत्तबिअूहु लअ़ल्लकुम् तह्तदून (158)
व मिन् क़ौमि मूसा उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्हक़्क़ि व बिही यअ्दिलून (159)
व क़त्तअ्नाहुमुस्नतै अ़श्र-त अस्बातन् उ-ममन्, व औहैना इला मूसा इज़िस्तस्क़ाहु क़ौमुहू अनिज़्रिब् बिअ़साकल् ह-ज-र फ़म्ब-जसत् मिन्हुस्नता अ़श्र-त अ़ैनन्, क़द् अ़लि-म कुल्लु उनासिम् मश्र-बहुम्, व ज़ल्लल्ना अ़लैहिमुल् ग़मा-म व अन्ज़ल्ना अ़लैहिमुल् मन्-न वस्सल्वा, कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम्, व मा ज़-लमूना व लाकिन् कानू अन्फु-सहुम् यज़्लिमून (160)
व इज़् क़ी-ल लहुमुस्कुनू हाज़िहिल्क़र्य-त

ज़कात देते हैं, और जो हमारी आयतों पर ईमान लाते हैं"।

157. (पस आज इस रहमत के हक़दार वो लोग हैं) जो उस रसूले उम्मी नबी की पैरवी करते हैं जिसे वो अपने यहां तौरात और इंजील में लिखा पाते हैं, और जो उन्हें भलाई का हुक्म देता, और बुराई से रोकता है, उनके लिए अच्छी पाकीज़ा चीज़ों को हलाल और बुरी नापाक चीज़ों को उनके लिए हराम ठहराता है, और उनपर से उनके वह बोझ उतारता है जो अब तक उनपर लदे हुए थे और वो बंदिशें खोलता है जिनमें वो जकड़े हुए थे, पस जो लोग उसपर ईमान लाए, उसकी इज़्ज़त की और उसकी मदद की, और उस रौशनी के ताबे हुए जो उसके साथ उतरी है, वही फ़लाह पाने वाले है"।

158. कहो, "ऐ लोगो! मैं तुम सब की तरफ़ उस अल्लाह का रसूल हूं, जो आसमानों और ज़मीन की बादशाही का मालिक है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही ज़िन्दा करता, और वही मौत देता है। पस अल्लाह, और उसके रसूल, उस उम्मी नबी पर ईमान लाओ जो खुद अल्लाह पर और उसके कलिमात पर ईमान रखता है, और उसकी पैरवी करो ताकि तुम हिदायत पाओ"।

159. मूसा की क़ौम में एक गिरोह ऐसे लोगों का भी हुआ जो हक़ के मुताबिक़ रहनुमाई करते, और उसी के मुताबिक़ इनसाफ़ करते।

160. और हमने उन्हें जो मुख़्तलिफ़ ख़ानदान, बड़े-बड़े गिरोह थे बारह टुकड़ों में तक़सीम कर दिया। हमने मूसा की तरफ़ जब उसकी क़ौम ने उससे पानी मांगा, वही की कि "अपनी लाठी फ़लां चट्टान पर मारो", चुनांचे उससे बारह चश्मे फूट निकले; हर गिरोह ने अपना-अपना घाट मालूम कर लिया। और हमने उनपर बादल का साया किया, और उनपर मन्न व सलवा उतारा: "हमने तुम्हें जो अच्छी पाकीज़ा चीज़ें दी हैं खाओ!" उन्होंने कुछ हमपर ज़ुल्म नहीं किया बल्कि असल में वो ख़ुद अपनी ही जानों पर ज़ुल्म करते रहे।

161. याद करो, जब उनसे कहा गया कि "इस बस्ती में रहो बसो और

उसमें जहां से चाहो खाओ; और कहो 'हित्ततुन' और दरवाज़े में सजदा करते हुए दाख़िल हो, हम तुम्हारी ख़ताएं बख़्श देंगे, और ख़ूबकार लोगों को हम मज़ीद नवाज़ेंगे"।

162. मगर उनमें से जो ज़ालिम थे उन्होंने जो कुछ उनसे कहा गया था उसको उससे मुख़्तलिफ़ बात से बदल दिया; पस जो ज़ुल्म वो कर रहे थे उसके सबब हमने आसमान से उनपर अज़ाब भेजा।

163. उनसे उस बस्ती के बारे में पूछो जो दरिया के किनारे थी, जब वो सब्त के मुआमले में हद से तजावुज़ करते थे, जब उनके सब्त के दिन उनकी मछलियां नुमायां तौर पर सतहे आब पर उनके सामने आ जाती थीं, और जो दिन उनके सब्त का न होता, तो वो उनके पास न आती थीं, इस तरह उनके फ़ासिक़ होने की वजह से हम उनको मुबतला कर रहे थे।

164. और जब उनके एक गिरोह ने कहा, "तुम ऐसे लोगों को क्यों नसीहत किए जा रहे हो जिन्हें अल्लाह हलाक करने वाला या जिन्हें वह सख़्त अज़ाब देने वाला है"? उन्होंने कहा, "तुम्हारे रब के हुज़ूर अपनी मुआज़रत पेश करने की ग़र्ज़ से; और शायद वो बचें!"

165. फिर जब वो उसे भूल गए जो याददिहानी उन्हें की गई थी, तो हमने उन लोगों को नजात दी जो बुराई से रोकते थे और ज़ालिमों को उनकी नाफ़रमानी की वजह से बुरे अज़ाब में पकड़ लिया।

166. फिर जब वो सरकशी इख़्तियार करके उस चीज़ से बाज़ न आए जिससे उन्हें रोका गया था तो हमने उन्हें कहा, "बन्दर होकर रहो, ज़लील व ख़्वार!"

167. और याद करो जब तुम्हारे रब ने ख़बर दी थी कि वह उनके ख़िलाफ़ क़ियामत के दिन तक ऐसे लोगों को उठाता रहेगा जो उन्हें बदतरीन अज़ाब देंगे। यक़ीनन तुम्हारा रब सज़ा जल्द देता है; और वह बहुत बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान भी है।

168. और हमने उन्हें टुकड़े-टुकड़े करके ज़मीन में कितने ही गिरोहों में मुंतशिर कर दिया, कुछ उनमें से नेक हैं,

व कुलू मिन्हा हैसु शिअ्तुम् व कूलू हित्ततुंव्-वद्ख़ुलुल्-बा- ब सुज्जदन् नग़्फ़िर् लकुम् ख़तिआतिकुम्, स-नज़ीदुल्-मुह्सिनीन (161)

फ़-बद्दलल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् क़ौलन् ग़ैरल्लज़ी क़ी-ल लहुम् फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रिज्ज़म्-मिनस्-समा-इ बिमा कानू यज़्लिमून (162) ●

वस्अल्हुम् अनिल्क़र्यतिल्लती कानत् हाज़ि-रतल्- बह्रि ● *इज़् यअ्दू-न फ़िस्सब्ति इज़् तअ्तीहिम् हीतानुहुम् यौ-म सब्तिहिम् शुर्रअंव्-व यौ-म ला यस्बितू-न ला तअ्तीहिम् कज़ालि-क नब्लूहुम् बिमा कानू यफ़्सुक़ून* ● (163)

व इज़् क़ालत् उम्मतुम्-मिन्हुम् लि-म तअिज़ू-न क़ौ-मनिल्लाहु मुह्लिकुहुम् औ मुअ़ज़्ज़िबुहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन्, क़ालू मअ्ज़ि-रतन् इला रब्बिकुम् व लअ़ल्लहुम् यत्तक़ून (164)

फ़-लम्मा नसू मा ज़ुक्किरू बिही अन्जैनल्लज़ी-न यन्हौ-न अनिस्सू-इ व अख़ज़्नल्लज़ी-न ज़-लमू बिअ़ज़ाबिम् बईसिम्-बिमा कानू यफ़्सुक़ून (165)

फ़-लम्मा अ़तौ अ़म्मा नुहू अ़न्हु क़ुल्ना लहुम् कूनू क़ि-र-दतन् ख़ासिईन (166)

व इज़् त-अज़्ज़-न रब्बु-क लयब्अ़-सन्-न अ़लैहिम् इला यौमिल्-क़ियामति मंय्यसूमुहुम् सूअल्-अ़ज़ाबि, इन्-न रब्ब-क ल-सरीअुल्-अिक़ाबि व इन्नहू ल-ग़फ़ूरुर्रहीम (167)

व क़त्तअ्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि उ-ममन् मिन्हुमुस्सालिहू-न व मिन्हुम् दू-न ज़ालि-क

وَكُلُوا مِنْهَا حَيْثُ شِئْتُمْ وَقُولُوا حِطَّةٌ
وَّادْخُلُوا الْبَابَ سُجَّدًا نَّغْفِرْ لَكُمْ خَطِيْٓـٰٔتِكُمْ
سَنَزِيْدُ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٦١﴾
فَبَدَّلَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ قَوْلًا
غَيْرَ الَّذِيْ قِيْلَ لَهُمْ فَاَرْسَلْنَا
عَلَيْهِمْ رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوْا
يَظْلِمُوْنَ ﴿١٦٢﴾
وَسْـَٔلْهُمْ عَنِ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ
حَاضِرَةَ الْبَحْرِ اِذْ يَعْدُوْنَ فِي السَّبْتِ
اِذْ تَاْتِيْهِمْ حِيْتَانُهُمْ يَوْمَ سَبْتِهِمْ شُرَّعًا
وَّيَوْمَ لَا يَسْبِتُوْنَ لَا تَاْتِيْهِمْ كَذٰلِكَ
نَبْلُوْهُمْ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٣﴾
وَاِذْ قَالَتْ اُمَّةٌ مِّنْهُمْ لِمَ تَعِظُوْنَ
قَوْمًا اللّٰهُ مُهْلِكُهُمْ اَوْ مُعَذِّبُهُمْ
عَذَابًا شَدِيْدًا قَالُوْا مَعْذِرَةً اِلٰى رَبِّكُمْ
وَلَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ ﴿١٦٤﴾
فَلَمَّا نَسُوْا مَا ذُكِّرُوْا بِهٖٓ اَنْجَيْنَا الَّذِيْنَ
يَنْهَوْنَ عَنِ السُّوْٓءِ وَاَخَذْنَا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
بِعَذَابٍ بَـِٔيْسٍ بِمَا كَانُوْا يَفْسُقُوْنَ ﴿١٦٥﴾
فَلَمَّا عَتَوْا عَنْ مَّا نُهُوْا عَنْهُ قُلْنَا لَهُمْ
كُوْنُوْا قِرَدَةً خٰسِـِٔيْنَ ﴿١٦٦﴾
وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكَ لَيَبْعَثَنَّ عَلَيْهِمْ اِلٰى
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ يَّسُوْمُهُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ
اِنَّ رَبَّكَ لَسَرِيْعُ الْعِقَابِ وَاِنَّهٗ
لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٦٧﴾
وَقَطَّعْنٰهُمْ فِي الْاَرْضِ اُمَمًا
مِنْهُمُ الصّٰلِحُوْنَ وَمِنْهُمْ دُوْنَ ذٰلِكَ

और कुछ उनमें इससे मुख़्तलिफ़ हैं; और हमने उन्हें अच्छी और बुरी हालतों में डालकर उनकी आज़माइश की कि शायद वो पलट आएं।

169. फिर उनके बाद ऐसे नाख़लफ़ उनके जानशीन हुए जो किताब के वारिस होकर इसी हक़ीर ज़िन्दगी का सामान समेटते हैं, और कहते हैं, "हमें तो माफ़ ही कर दिया जाएगा;" और अगर उस जैसा और सामान भी उनके पास आ जाए, तो वो उसे भी ले लेंगे। क्या उनसे किताब का यह अ़हद नहीं लिया गया था कि अल्लाह की तरफ़ मंसूब करके हक़ के सिवा वो कोई और बात न कहें? और जो उसमें है उसे वो ख़ुद पढ़ भी चुके हैं, और आख़िरत का घर तो उन लोगों के लिए बेहतर है जो डर रखते हैं। तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?

170. और वो लोग जो किताब को मज़बूती से थामते हैं, और जिन्होंने नमाज़ क़ायम कर रखी है, तो काम को दुरुस्त रखनेवालों का अजर हम अकारत नहीं करते।

171. और याद करो जब हमने पहाड़ को हिलाया जो उनके ऊपर था, गोया वह कोई साइबान हो और वो समझे कि बस वह उनपर गिरा ही चाहता है — "थामो मज़बूती से जो कुछ हमने तुम्हें दिया है, और जो कुछ उसमें है उसे याद रखो, ताकि तुम बच सको!"

172. और याद करो जब तुम्हारे रब ने बनी आदम की पुश्तों से उनकी नस्ल निकाली, और उन्हें ख़ुद उनके ऊपर गवाह बनाया कि "क्या मैं तुम्हारा रब नहीं हूं"? बोले, "क्यों नहीं, हम गवाह हैं!" ऐसा इसलिए किया कि मबादा क़ियामत के दिन तुम यह कहने लगो कि "हमें तो इसकी ख़बर ही न थी!"

173. या कहो कि "शिर्क तो पहले हमारे बाप-दादा ने किया, हम तो उनके बाद उनकी नस्ल में हुए हैं। तो क्या जो कुछ ग़लतकार लोगों ने किया है उसपर तू हमें हलाक करेगा"?

174. इसी तरह हम आयतें खोल-खोलकर बयान करते हैं; और क्या अजब कि वो पलट आएं।

175. और उन्हें उस शख़्स का हाल सुनाओ जिसे हमने अपनी आयतें इनायत कीं, मगर वह उनसे निकल भागा, फिर शैतान ने उसे अपने पीछे लगा लिया। आख़िरकार वह गुमराह व तबाह होकर रहा।

व बलौनाहुम् बिल्ह-सनाति वस्सय्यिआति लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (168)

फ़-ख़-ल-फ़ मिम्-बअ्दिहिम् ख़ल्फुंव्वरिसुल्-किता-ब यअ्ख़ुज़ू-न अ़-र-ज़ हाज़ल्-अद्ना व यक़ूलू-न सयुग्फ़रु लना व इंय्यअ्तिहिम् अ़-रज़ुम् मिस्लुहू यअ्ख़ुज़ूहु, अलम् युअ्ख़ज़् अ़लैहिम् मीसाक़ुल्-किताबि अल्ला यक़ूलू अ़लल्लाहि इल्लल्हक़्-क़ व द-रसू मा फ़ीहि, वद्दारुल् आख़िरतु ख़ैरुल्लिल्लज़ी-न यत्तक़ू-न, अ-फ़ला तअ्क़िलून (169)

वल्लज़ी-न युमस्सिकू-न बिल्किताबि व अक़ामुस्सला-त, इन्ना ला नुज़ीअु अज्रल् मुस्लिहीन (170)

व इज़् न-तक़्नल् ज-ब-ल फ़ौक़हुम् क-अन्नहू ज़ुल्लतुंव्-व ज़न्नू अन्नहू वाक़िअुम् बिहिम् ख़ुज़ू मा आतैनाकुम् बिक़ुव्वतिंव्वज़्कुरू मा फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तत्तक़ून (171) ●

व इज़् अ-ख़-ज़ रब्बु-क मिम्-बनी आद-म मिन् ज़ुहूरिहिम् ज़ुर्रिय्य-तहुम् व अश्ह-दहुम् अ़ला अन्फ़ुसिहिम् अलस्तु बिरब्बिकुम् क़ालू बला, शहिद्ना अन् तक़ूलू यौमल्-क़ियामति इन्ना कुन्ना अ़न् हाज़ा ग़ाफ़िलीन (172)

औ तक़ूलू इन्नमा अश्र-क आबाउना मिन् क़ब्लु व कुन्ना ज़ुर्रिय्यतम्-मिम्-बअ्दिहिम् अ-फ़तुह्लिकुना बिमा फ़-अ़लल्-मुब्तिलून (173)

व कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति व लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (174)

वत्लु अ़लैहिम् न-बअल्लज़ी आतैनाहु आयातिना फ़न्स-ल-ख़ मिन्हा फ़-अत्ब-अ़हुश्शैतानु फ़का-न मिनल्-ग़ावीन (175)

وَبَلَوْنٰهُمْ بِالْحَسَنٰتِ وَالسَّيِّاٰتِ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُوْنَ ﴿١٦٨﴾
فَخَلَفَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ وَّرِثُوا الْكِتٰبَ
يَاْخُذُوْنَ عَرَضَ هٰذَا الْاَدْنٰى وَيَقُوْلُوْنَ
سَيُغْفَرُ لَنَا ۚ وَاِنْ يَّاْتِهِمْ عَرَضٌ مِّثْلُهٗ
يَاْخُذُوْهُ ؕ اَلَمْ يُؤْخَذْ عَلَيْهِمْ مِّيْثَاقُ
الْكِتٰبِ اَنْ لَّا يَقُوْلُوْا عَلَى اللّٰهِ اِلَّا الْحَقَّ
وَدَرَسُوْا مَا فِيْهِ ؕ وَالدَّارُ الْاٰخِرَةُ خَيْرٌ
لِّلَّذِيْنَ يَتَّقُوْنَ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٦٩﴾
وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ ﴿١٧٠﴾
وَاِذْ نَتَقْنَا الْجَبَلَ فَوْقَهُمْ كَاَنَّهٗ ظُلَّةٌ
وَّظَنُّوْۤا اَنَّهٗ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ۚ خُذُوْا مَاۤ
اٰتَيْنٰكُمْ بِقُوَّةٍ وَّاذْكُرُوْا مَا فِيْهِ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُوْنَ ﴿١٧١﴾
وَاِذْ اَخَذَ رَبُّكَ مِنْۢ بَنِيْۤ اٰدَمَ مِنْ
ظُهُوْرِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَاَشْهَدَهُمْ عَلٰۤى
اَنْفُسِهِمْ ۚ اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى ۛۚ
شَهِدْنَا ۛۚ اَنْ تَقُوْلُوْا يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اِنَّا كُنَّا
عَنْ هٰذَا غٰفِلِيْنَ ﴿١٧٢﴾
اَوْ تَقُوْلُوْۤا اِنَّمَاۤ اَشْرَكَ اٰبَآؤُنَا مِنْ قَبْلُ
وَكُنَّا ذُرِّيَّةً مِّنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ اَفَتُهْلِكُنَا
بِمَا فَعَلَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿١٧٣﴾
وَكَذٰلِكَ نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ وَلَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿١٧٤﴾
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ الَّذِيْۤ اٰتَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا
فَانْسَلَخَ مِنْهَا فَاَتْبَعَهُ الشَّيْطٰنُ
فَكَانَ مِنَ الْغٰوِيْنَ ﴿١٧٥﴾

176. अगर हम चाहते तो इन आयतों के ज़रिए से उसे बुलन्दी अता करते; मगर वह तो ज़मीन के साथ लग गया और अपनी ख़्वाहिशे नफ्स की पैरवी इख़्तियार की। पस उसकी मिसाल कुत्ते की सी है कि अगर तुम उसपर हमला करो तब भी वह ज़बान लटकाए रहे या अगर तुम उसे छोड़ दो तब भी वह ज़बान लटकाए ही रहे। यही मिसाल उन लोगों की है जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया। पस तुम हालात सुनाते रहो शायद वो ग़ौर कर सकें।

177. बुरे हैं मिसाल के लिहाज़ से वो लोग जिन्होंने हमारी आयतों की तकज़ीब की, और वो खुद अपने ही ऊपर ज़ुल्म करते रहे।

178. जिसे ख़ुदा हिदायत बख़्शे, वही हिदायत याफ़ता है; और जिसे वह राह से महरूम कर रखे; तो ऐसे ही लोग ख़सारे में पड़ने वाले हैं।

179. यक़ीनन हमने बहुत-से जिन्न व इन्स को जहन्नम ही के लिए पैदा किया है; उनके पास दिल हैं, जिनसे वो समझते नहीं; उनके पासे आंखें हैं, जिनसे वो देखते नहीं; और उनके पास कान हैं, जिनसे वो सुनते नहीं। वो जानवरों की तरह हैं; बल्कि उनसे भी ज़्यादा गुमराह हैं। वही लोग हैं जो ग़फ़लत में खोए हुए हैं।

180. अल्लाह ही के लिए अच्छे नाम हैं, तो तुम उसे उन्हीं के ज़रिए से पुकारो, और उन लोगों को छोड़ो जो उसके नामों के सिलसिले में रास्ती से इनहिराफ़ करते हैं, जो कुछ वो करते हैं उसका बदला वो पाकर रहेंगे।

181. हमारी मख़्लूक़ में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो हक़ के मुताबिक़ रहनुमाई करते हैं, और उसी के मुताबिक़ इनसाफ़ करते हैं।

182. रहे वो लोग जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया हम उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता इस तरह पकड़ लेंगे कि उन्हें ख़बर भी न होगी कि यह तबाही कहा से आ गई।

183. मैं तो उन्हें ढील दिए जा रहा हूं, यक़ीनन मेरी चाल निहायत मुहकम है।

184. क्या उन लोगों ने ग़ौर नहीं किया? उनके रफ़ीक़ को कोई जुनून नहीं; वह तो बस एक साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला है।

185. या क्या उन्होंने आसमानों और ज़मीन की बादशाही पर और जो चीज भी अल्लाह ने पैदा की है उसपर निगाह नहीं डाली, और इस बात पर कि शायद उन की मुद्दत

व लौ शिअ्ना ल-रफ़अ्नाहु बिहा व लाकिन्नहू अख़्ल-द इलल्‌अर्ज़ि वत्त-ब-अ़ हवाहु फ़-म-सलुहू क-म-सलिल्कल्बि इन् तह्मिल् अ़लैहि यल्हस् औ तत्रुक्हु यल्हस्, ज़ालि-क म-सलुल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना फ़क़्सुसिल् क़-स-स लअ़ल्लहुम् य-तफ़क्करून (176)

सा-अ म-स-ल-निल्क़ौमुल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना व अन्फ़ु-सहुम् कानू यज़्लिमून (177)

मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्-मुह्तदी व मंय्युज़्लिल् फ़उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (178)

व ल-क़द् ज़रअ्ना लि-जहन्न-म कसीरम् मिनल्-जिन्नि वल्इन्सि लहुम् कुलूबुल्-ला यफ़्क़हू-न बिहा व लहुम् अअ्युनुल्-ला युब्सिरू-न बिहा व लहुम् आज़ानुल्-ला यस्मअू-न बिहा, उलाइ-क कल्अन्आ़मि बल् हुम् अज़ल्लु, उलाइ-क हुमुल्-ग़ाफ़िलून (179)

व लिल्लाहिल्-अस्माउल्-हुस्ना फ़द्‌अूहु बिहा व ज़रुल्लज़ी-न युल्हिदू-न फ़ी अस्माइही, सयुज्ज़ौ-न मा कानू यअ्मलून (180)

व मिम्-मन् ख़लक़्ना उम्मतुंय्यह्दू-न बिल्हक़्क़ि व बिही यअ्दिलून (181)●

वल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना सनस्तद्‌रिजुहुम् मिन् हैसु ला यअ्लमून (182)

व उम्ली लहुम् इन्-न कैदी मतीन (183)

अ-व लम् य-तफ़क्करू मा बिसाहिबिहिम् मिन् जिन्नतिन्, इन् हु-व इल्ला नज़ीरुम्-मुबीन (184)

अ-व लम् यन्ज़ुरू फ़ी म-लकूतिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा ख़-लक़ल्लाहु मिन् शैइंव्-व अन् अ़सा अंय्यकू-न क़दिक़्त-र-ब

وَلَوْ شِئْنَا لَرَفَعْنٰهُ بِهَا وَلٰكِنَّهٗٓ اَخْلَدَ اِلَى
الْاَرْضِ وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ ۚ فَمَثَلُهٗ كَمَثَلِ الْكَلْبِ ۚ
اِنْ تَحْمِلْ عَلَيْهِ يَلْهَثْ اَوْ تَتْرُكْهُ يَلْهَثْ ؕ
ذٰلِكَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ
فَاقْصُصِ الْقَصَصَ لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝١٧٦
سَآءَ مَثَلَاۨ الْقَوْمُ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا وَاَنْفُسَهُمْ كَانُوْا يَظْلِمُوْنَ ۝١٧٧
مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِيْ ۚ وَمَنْ
يُّضْلِلْ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝١٧٨
وَلَقَدْ ذَرَاْنَا لِجَهَنَّمَ كَثِيْرًا مِّنَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ ۖ لَهُمْ قُلُوْبٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ بِهَا ؗ
وَلَهُمْ اَعْيُنٌ لَّا يُبْصِرُوْنَ بِهَا ؗ وَلَهُمْ
اٰذَانٌ لَّا يَسْمَعُوْنَ بِهَا ؕ اُولٰٓئِكَ كَالْاَنْعَامِ
بَلْ هُمْ اَضَلُّ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝١٧٩
وَلِلّٰهِ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى فَادْعُوْهُ بِهَا ۪
وَذَرُوا الَّذِيْنَ يُلْحِدُوْنَ فِيْٓ اَسْمَآئِهٖ ؕ
سَيُجْزَوْنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٨٠
وَمِمَّنْ خَلَقْنَآ اُمَّةٌ يَّهْدُوْنَ بِالْحَقِّ
ع وَبِهٖ يَعْدِلُوْنَ ۝١٨١
وَالَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا سَنَسْتَدْرِجُهُمْ
مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٨٢
وَاُمْلِيْ لَهُمْ ۚ اِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ ۝١٨٣
اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا ٜ مَا بِصَاحِبِهِمْ مِّنْ
جِنَّةٍ ؕ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٨٤
اَوَلَمْ يَنْظُرُوْا فِيْ مَلَكُوْتِ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَمَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۙ
وَّاَنْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَدِ اقْتَرَبَ

اَجَلُهُمْ ۚ فَبِاَیِّ حَدِیْثٍۢ بَعْدَهٗ
یُؤْمِنُوْنَ ۝١٨٥
مَنْ یُّضْلِلِ اللّٰهُ فَلَا هَادِیَ لَهٗ ؕ
وَیَذَرُهُمْ فِیْ طُغْیَانِهِمْ یَعْمَهُوْنَ ۝١٨٦
یَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَیَّانَ مُرْسٰىهَا ؕ
قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّیْ ۚ لَا یُجَلِّیْهَا
لِوَقْتِهَاۤ اِلَّا هُوَ ؔۚ ثَقُلَتْ فِی السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ؕ لَا تَاْتِیْكُمْ اِلَّا بَغْتَةً ؕ یَسْـَٔلُوْنَكَ
كَاَنَّكَ حَفِیٌّ عَنْهَا ؕ قُلْ اِنَّمَا عِلْمُهَا عِنْدَ
اللّٰهِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝١٨٧
قُلْ لَّاۤ اَمْلِكُ لِنَفْسِیْ نَفْعًا وَّلَا ضَرًّا اِلَّا
مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ وَلَوْ كُنْتُ اَعْلَمُ الْغَیْبَ
لَاسْتَكْثَرْتُ مِنَ الْخَیْرِ ۛۚ وَمَا مَسَّنِیَ
السُّوْٓءُ ۛۚ اِنْ اَنَا اِلَّا نَذِیْرٌ وَّبَشِیْرٌ
لِّقَوْمٍ یُّؤْمِنُوْنَ ۝١٨٨ ع
هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ
وَّجَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا لِیَسْكُنَ اِلَیْهَا ۚ
فَلَمَّا تَغَشّٰىهَا حَمَلَتْ حَمْلًا خَفِیْفًا فَمَرَّتْ
بِهٖ ۚ فَلَمَّاۤ اَثْقَلَتْ دَّعَوَا اللّٰهَ رَبَّهُمَا لَئِنْ
اٰتَیْتَنَا صَالِحًا لَّنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِیْنَ ۝١٨٩
فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمَا صَالِحًا جَعَلَا لَهٗ شُرَكَآءَ
فِیْمَاۤ اٰتٰىهُمَا ۚ فَتَعٰلَی اللّٰهُ عَمَّا یُشْرِكُوْنَ ۝١٩٠
اَیُشْرِكُوْنَ مَا لَا یَخْلُقُ شَیْـًٔا وَّهُمْ یُخْلَقُوْنَ ۝١٩١
وَلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ لَهُمْ نَصْرًا وَّلَاۤ اَنْفُسَهُمْ
یَنْصُرُوْنَ ۝١٩٢
وَاِنْ تَدْعُوْهُمْ اِلَی الْهُدٰی لَا یَتَّبِعُوْكُمْ ؕ
سَوَآءٌ عَلَیْكُمْ اَدَعَوْتُمُوْهُمْ اَمْ اَنْتُمْ صَامِتُوْنَ ۝١٩٣

अ-जलुहुम् फ़बिअय्यि हदीसिम्-बअ्दहू युअ्मिनून (185)
मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़ला हादि-य लहू, व य-ज़रूहुम् फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून (186)
यस्अलून-क अ़निस्सा-अ़ति अय्या-न मुर्साहा, क़ुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्-द रब्बी ला युजल्लीहा लिवक़्तिहा इल्ला हु-व ● सक़ुलत् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, ला तअ्तीकुम् इल्ला बग़्त-तन्, यस्अलून-क कअन्न-क हफ़िय्युन् अ़न्हा, क़ुल् इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (187)
क़ुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी नफ़्अ़ंव्-व ला ज़र्रन् इल्ला मा शाअल्लाहु, वलौ कुन्तु अअ्-लमुल्-ग़ै-ब लस्तक्सर्तु मिनल्-ख़ैरि, व मा मस्सनियस्-सू-उ इन् अ-न इल्ला नज़ीरुंव्-व बशीरुल्- लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (188)●
हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिंव्-व ज-अ़-ल मिन्हा ज़ौजहा लियस्कु-न इलैहा फ़-लम्मा तग़श्शाहा ह-मलत् हम्लन् ख़फ़ीफ़न् फ़-मर्रत् बिही फ़-लम्मा अस्-क़लद्-दअ़वल्ला-ह रब्बहुमा ल-इन् आतैतना सालिहल् ल-नकूनन्-न मिनश्-शाकिरीन (189)
फ़-लम्मा आताहुमा सालिहन् ज-अ़ला लहू शु-रका-अ फ़ीमा आताहुमा फ़-तआ़लल्लाहु अ़म्मा युश्रिकून (190)
अयुश्रिकू-न मा ला यख़्लुक़ु शैअंव्-व हुम् युख़्लक़ून (191)
व ला यस्ततीअू-न लहुम् नस्रंव्-व ला अन्फ़ु-सहुम् यन्सुरून (192)
व इन् तद्अूहुम् इलल्हुदा ला यत्तबिअूकुम्, सवाउन् अ़लैकुम् अ-दऔतुमूहुम् अम् अन्तुम् सामितून (193)

क़रीब आ लगी हो? फिर आख़िर इसके बाद अब कौन सी बात हो सकती है जिसपर वो ईमान लाएंगे?

186. जिसे अल्लाह राह से महरूम कर रखे, उसके लिए कोई रहनुमा नहीं; वह तो उन्हें उनकी सरकशी ही में भटकता छोड़ देता है।

187. तुम से उस घड़ी के बारे में पूछते हैं कि उसका वुक़ूअ (ज़ुहूर) कब होगा? कह दो "उसका इल्म मेरे रब ही के पास है; बस वही उसे उसके वक़्त पर ज़ाहिर करेगा। वह आसमानों और ज़मीन में बोझल हो गई है; बस अचानक ही वह तुमपर आएगी!" वो तुमसे पूछते हैं गोया तुम उसके बारे में बख़ूबी वाक़फ़ियत रखते हो। कह दो, "उसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है—मगर अक्सर लोग नहीं जानते"।

188. कहो, "मैं अपनी ज़ात के लिए किसी नफ़ा का इख़्तियार रखता हूं न नुक़्सान का, बल्कि अल्लाह की मशीयत ही जारी व सारी है; अगर मुझे ग़ैब का इल्म होता तो बहुत सी भलाई समेट लेता, और मुझे कभी कोई मज़र्रत न पहुंचता। मैं तो बस ख़बरदार करने वाला, और ख़ुशख़बरी देने वाला हूं उन लोगों के लिए जो ईमान लाए"।

189. वही है जिसने तुम्हें एक जान से पैदा किया, और उसी से उसका जोड़ा बनाया ताकि उसकी तरफ़ मुतवज्जेह होकर सुकून व आराम हासिल करे। फिर जब उसने उसको ढांक लिया तो उसने एक ख़फ़ीफ़ सा बोझ उठा लिया, फिर वह उसे लिए चलती-फिरती रही; फिर जब वह बोझल हो गई तो दोनों ने अल्लाह अपने रब को पुकारा कि "अगर तूने हमें भला-चंगा बच्चा दिया, तो हम यक़ीनन शुक्रगुज़ार होंगे"।

190. मगर उसने जब उन्हें भला-चंगा अता किया, तो जो उन्हें अता किया उसमें वो दोनों उसका शरीक ठहराने लगे; मगर अल्लाह तो बुलन्द व बरतर है उससे जो शरीक वो ठहराते हैं।

191. क्या वो उसको शरीक ठहराते हैं जो कोई चीज़ भी पैदा नहीं करता बल्कि ऐसे (उनके ठहराए हुए शुरका) तो ख़ुद मख़्लूक़ होते हैं,

192. और वो न तो उनकी मदद करने की क़ुदरत रखते हैं, और न ख़ुद अपनी ही मदद कर सकते हैं?

193. अगर तुम उन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो वो तुम्हारे साथ न लगेंगे; तुम्हारे लिए यकसां है उन्हें पुकारो, या तुम ख़ामोश रहो।

194. तुम अल्लाह को छोड़कर जिन्हें पुकारते हो, वो तो तुम्हारे ही जैसे बन्दे हैं; पस पुकार लो उनको, अगर तुम सच्चे हो, तो उन्हें चाहिए कि वो तुम्हारी पुकार को पहुंचें।

195. क्या उनके पांव हैं जिनसे वो चलते हों, या उनके हाथ हैं जिनसे वो पकड़ते हों या उनके पास आंखें हैं जिनसे वो देखते हों, या उनके कान हैं जिनसे वो सुनते हों? कहोः "तुम अपने ठहराए हुए शुरका को बुला लो, फिर मेरे ख़िलाफ़ चालें चलो इस तरह कि मुझे मुहलत न दो।

196. यक़ीनन मेरा हिमायती अल्लाह है जिसने यह किताब नाज़िल फ़रमाई और वह अच्छे लोगों की हिमायत करता है।

197. रहे वो जिन्हें तुम उसको छोड़ कर पुकारते हो, वो न तो तुम्हारी मदद करने की इसतिताअत रखते हैं, और न ख़ुद अपनी ही मदद कर सकते हैं"।

198. और अगर तुम उन्हें रहनुमाई के लिए पुकारो तो वो न सुनेंगे; वो तुम्हें बज़ाहिर ऐसे नज़र आते हैं जैसे वो तुम्हारी तरफ़ ताक रहे हैं, हालांकि वो कुछ भी नहीं देखते।

199. अफ़ू व दरगुज़र का तरीक़ा इख़्तियार करो, और भलाई का हुक्म देते रहो, और जाहिलों से एराज़ करो।

200. और अगर शैतान की तरफ़ से कोई ख़याल तुम्हारे दिल में चुभे तो अल्लाह की पनाह लो; यक़ीनन वह सब कुछ सुनता, जानता है।

201. जो डर रखते हैं, उन्हें तो जब शैतान की तरफ़ से कोई ख़याल छू जाता है, तो वो चौंक उठते हैं, फिर वो साफ़ देखने लगते हैं;

202. और उन (जाहिलों) के भाई उन्हें गुमराही में खींचे लिए जाते हैं; फिर वो कोई कसर नहीं उठा रखते।

203. और जब तुम उनके सामने कोई निशानी नहीं लाते, तो वो कहते हैं कि "तुम ख़ुद कोई निशानी क्यों न छांट लाए"? कह दोः "मैं तो बस उसी की पैरवी करता हूं जो मेरे रब की तरफ़ से मेरी तरफ़ वह्यी की जाती है; यह तुम्हारे रब की तरफ़ से बसीरतों

इन्नल्लज़ी-न तद्ऊ-न मिन् दूनिल्लाहि अ़िबादुन् अम्सालुकुम् फ़द्ऊहुम् फ़ल्यस्तजीबू लकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (194)

अ-लहुम् अर्जुलुंय्यम्शू-न बिहा अम् लहुम् ऐदिंय्यब्तिशू-न बिहा अम् लहुम् अअ्युनुंय्युब्सिरू-न बिहा, अम् लहुम् आज़ानुंय्यस्मअू-न बिहा क़ुलिद्अू शु-रका-अकुम् सुम्-म कीदूनि फ़ला तुन्ज़िरून (195)

इन्-न वलिय्यि-यल्लाहुल्लज़ी नज़्ज़लल्-किता-ब व हु-व य-तवल्लस्सालिहीन (196)

वल्लज़ी-न तद्ऊ-न मिन् दूनिही ला यस्ततीअू-न नस्रकुम् व ला अन्फ़ु-सहुम् यन्सुरून (197)

व इन् तद्ऊहुम् इलल्हुदा ला यस्मअू, व तराहुम् यन्ज़ुरू-न इलै-क व हुम् ला युब्सिरून (198)

ख़ुज़िल्-अ़फ़्-व वअ्मुर् बिल्उ़र्फ़ि व अअ्रिज़् अ़निल्-जाहिलीन (199)

व इम्मा यन्ज़ग़न्न-क मिनश्शैतानि नज़्ग़ुन् फ़स्तअ़िज़् बिल्लाहि, इन्नहू समीअ़ुन् अ़लीम (200)

इन्नल्लज़ीनत्तक़ौ इज़ा मस्सहुम् ताइ-फ़ुम-मिनश्शैतानि तज़क्करू फ़-इज़ा हुम् मुब्सिरून (201)

व इख़्वानुहुम् यमुद्दूनहुम् फ़िल्-ग़य्यि सुम्-म ला युक़्सिरून (202)

व इज़ा लम् तअ्तिहिम् बिआयतिन् क़ालू लौलज्तबै-तहा, क़ुल् इन्नमा अत्तबिअ़ु मा यूहा इलय्-य मिर्रब्बी हाज़ा बसा-इरु मिर्रब्बिकुम् व हुदंव्-व

اِنَّ الَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰہِ عِبَادٌ اَمْثَالُکُمْ فَادْعُوْھُمْ فَلْیَسْتَجِیْبُوْا لَکُمْ اِنْ کُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝١٩٤

اَلَھُمْ اَرْجُلٌ یَّمْشُوْنَ بِھَآ ز اَمْ لَھُمْ اَیْدٍ یَّبْطِشُوْنَ بِھَآ ز اَمْ لَھُمْ اَعْیُنٌ یُّبْصِرُوْنَ بِھَآ ز اَمْ لَھُمْ اٰذَانٌ یَّسْمَعُوْنَ بِھَا ط قُلِ ادْعُوْا شُرَکَآءَکُمْ ثُمَّ کِیْدُوْنِ فَلَا تُنْظِرُوْنِ ۝١٩٥

اِنَّ وَلِیِّ ےَ اللّٰہُ الَّذِیْ نَزَّلَ الْکِتٰبَ ۖ وَھُوَ یَتَوَلَّی الصّٰلِحِیْنَ ۝١٩٦

وَالَّذِیْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِہٖ لَا یَسْتَطِیْعُوْنَ نَصْرَکُمْ وَلَآ اَنْفُسَھُمْ یَنْصُرُوْنَ ۝١٩٧

وَاِنْ تَدْعُوْھُمْ اِلَی الْھُدٰی لَا یَسْمَعُوْا ط وَتَرٰىھُمْ یَنْظُرُوْنَ اِلَیْکَ وَھُمْ لَا یُبْصِرُوْنَ ۝١٩٨

خُذِ الْعَفْوَ وَاْمُرْ بِالْعُرْفِ وَاَعْرِضْ عَنِ الْجٰھِلِیْنَ ۝١٩٩

وَاِمَّا یَنْزَغَنَّکَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰہِ ط اِنَّہٗ سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۝٢٠٠

اِنَّ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا اِذَا مَسَّھُمْ طٰٓئِفٌ مِّنَ الشَّیْطٰنِ تَذَکَّرُوْا فَاِذَا ھُمْ مُّبْصِرُوْنَ ۝٢٠١

وَاِخْوَانُھُمْ یَمُدُّوْنَھُمْ فِی الْغَیِّ ثُمَّ لَا یُقْصِرُوْنَ ۝٢٠٢

وَاِذَا لَمْ تَاْتِھِمْ بِاٰیَۃٍ قَالُوْا لَوْلَا اجْتَبَیْتَھَا ط قُلْ اِنَّمَآ اَتَّبِعُ مَا یُوْحٰٓی اِلَیَّ مِنْ رَّبِّیْ ج ھٰذَا بَصَآئِرُ مِنْ رَّبِّکُمْ وَھُدًی وَّ

का मजमूआ है और ईमान लाने वाले लोगों के लिए हिदायत और रहमत है"।

204. जब कुरआन पढ़ा जाए तो उसे तवज्जुह से सुनो और ख़ामोश रहो; ताकि तुमपर रहम फ़रमाया जाए।

205. अपने रब को सुबह और शाम दिल में, आजिज़ी और ख़ौफ़ के साथ, और हलकी आवाज़ के साथ याद करो और अहले गफ़लत में से न हो।

206. बेशक जो तुम्हारे रब के पास हैं वो उसकी बन्दगी के मुक़ाबले में गुरूर की रविश नहीं इख़्तियार करते; वो तो उसकी तसबीह करते हैं और उसी को सजदा करते हैं।

सूरह अल–अनफ़ाल मदनी

(आयतें 75, रुकूआत 10)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. वो तुमसे ग़नीमतों के बारे में पूछते हैं। कहो: "ग़नीमतें अल्लाह और रसूल की हैं, पस अल्लाह का डर रखो और अपने माबैन तअल्लुक़ात दुरुस्त करो, और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो, अगर मोमिन हो"।

2. मोमिन तो वही लोग हैं जिनके दिल उस वक़्त जबकि अल्लाह का ज़िक्र किया जाए लरज़ जाएं, और जब उनके सामने उसकी आयतें पढ़ी जाएं तो वो उनके ईमान को मज़ीद बढ़ा दें, और वो अपने रब पर भरोसा रखते हों,

3. जो नमाज़ क़ायम करते और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं,

4. यही लोग हक़ीक़ी मोमिन हैं; उनके लिए उनके रब के पास बड़े दरजात हैं और मग़फ़िरत और बा इज़्ज़त बेहतरीन रिज़्क़।

5. (ऐ नबी) जैसा कि तुम्हारे रब ने तुम्हें तुम्हारे घर से हुक्मे क़तई के साथ निकाला, मगर मोमिनों में से एक गिरोह को यह नागवार हुआ था,

6. वो उस हुक्मे क़तई के मुआमले में इसके बाद कि वह बिल्कुल वाज़ेह हो चुका था तुमसे झगड़ रहे थे, गोया वो आंखों देखते मौत की तरफ़ हांके जा रहे हों।

7. और याद करो जब अल्लाह तुमसे वादा कर रहा था कि दो गिरोहों में से एक तुम्हारे हाथ आएगा, और

रह्मतुल्- लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (203)

व इज़ा कुरिअल् कुर्आनु फ़स्तमिअू लहू व अन्सितू लअ़ल्लकुम् तुर्हमून (204)

वज़्कुर् रब्ब-क फ़ी नफ़्सि-क तज़र्रूअंव्-व ख़ी-फ़तंव्-व दूनल्जह्रि मिनल्क़ौलि बिल्ग़ुदुव्वि वल्-आसालि व ला तकुम् मिनल्-ग़ाफ़िलीन (205)

इन्नल्लज़ी-न अ़िन्-द रब्बि-क ला यस्तक्बिरू-न अ़न् अ़िबा-दतिही व युसब्बिहूनहू व लहू यस्जुदून ●(206)

●

8 सूरतुल–अन्फ़ालि 88
(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 5522
अक्षर, 1253 शब्द, 75 आयतें और
10 रुकू हैं।
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

यस्अलून-क अ़निल्-अन्फ़ालि, कुलिल्-अन्फ़ालु लिल्लाहि वर्रसूलि फ़त्तक़ुल्ला-ह व अस्लिहू ज़ा-त बैनिकुम् व अतीअुल्ला-ह व रसूलहू इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (1)

इन्नमल् मुअ्मिनूनल्लज़ी-न इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वजिलत् क़ुलूबुहुम् व इज़ा तुलियत् अ़लैहिम् आयातुहू ज़ादत्हुम् ईमानंव्-व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून (2)

अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (3)

उलाइ-क हुमुल्-मुअ्मिनू-न हक़्क़न्, लहुम् द-रजातुन् अ़िन्-द रब्बिहिम् व मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम (4)

कमा अख़्र-ज-क रब्बु-क मिम्-बैति-क बिल्हक़्क़ि व इन्-न फ़रीक़म् मिनल्-मुअ्मिनी-न लकारिहून (5)

युजादिलून-क फ़िल्हक़्क़ि बअ्-द मा तबय्य-न कअन्नमा युसाक़ू-न इलल्मौति व हुम् यन्ज़ुरून (6)

व इज़् यअ़िदुकुमुल्लाहु इह्दत्ताइ-फ़तैनि अन्नहा लकुम् व तवद्दू-न अन्-न ग़ै-र ज़ाति

رَحْمَةٌ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٢٠٣
وَاِذَا قُرِئَ الْقُرْاٰنُ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ
وَاَنْصِتُوْا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٢٠٤
وَاذْكُرْ رَّبَّكَ فِيْ نَفْسِكَ تَضَرُّعًا وَّخِيْفَةً
وَّدُوْنَ الْجَهْرِ مِنَ الْقَوْلِ بِالْغُدُوِّ
وَالْاٰصَالِ وَلَا تَكُنْ مِّنَ الْغٰفِلِيْنَ ۝٢٠٥
اِنَّ الَّذِيْنَ عِنْدَ رَبِّكَ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ
عَنْ عِبَادَتِهٖ وَيُسَبِّحُوْنَهٗ وَلَهٗ يَسْجُدُوْنَ ۝٢٠٦

سُوْرَةُ الْاَنْفَالِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٧٥ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الْاَنْفَالِ ؕ قُلِ الْاَنْفَالُ
لِلّٰهِ وَالرَّسُوْلِ ۚ فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَاَصْلِحُوْا ذَاتَ
بَيْنِكُمْ ۪ وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗۤ اِنْ
كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝١
اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ
قُلُوْبُهُمْ وَاِذَا تُلِيَتْ عَلَيْهِمْ اٰيٰتُهٗ زَادَتْهُمْ
اِيْمَانًا وَّعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝٢
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
يُنْفِقُوْنَ ۝٣
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُؤْمِنُوْنَ حَقًّا ؕ لَهُمْ
دَرَجٰتٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَمَغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٤
كَمَآ اَخْرَجَكَ رَبُّكَ مِنْ بَيْتِكَ بِالْحَقِّ ۪
وَاِنَّ فَرِيْقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ لَكٰرِهُوْنَ ۝٥
يُجَادِلُوْنَكَ فِي الْحَقِّ بَعْدَ مَا تَبَيَّنَ كَاَنَّمَا
يُسَاقُوْنَ اِلَى الْمَوْتِ وَهُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝٦
وَاِذْ يَعِدُكُمُ اللّٰهُ اِحْدَى الطَّآئِفَتَيْنِ
اَنَّهَا لَكُمْ وَتَوَدُّوْنَ اَنَّ غَيْرَ ذَاتِ

तुम चाहते थे कि तुम्हें वह हाथ आए जो ग़ैर मुसल्लह था; हालांकि अल्लाह चाहता था कि अपने कलिमात से हक़ को हक़ कर दिखाए, और अहले कुफ़्र की जड़ काट दे,

8. ताकि हक़ को हक़ कर दिखाए और बातिल को बातिल, ख़्वाह मुजरिमों को कितना ही नागवार हो।

9. याद करो जब तुम अपने रब से फ़रियाद कर रहे थे, तो उसने तुम्हारी पुकार सुनी कि "मैं आगे चलनेवाले एक हज़ार फ़रिश्तों से तुम्हारी मदद करूंगा"।

10. अल्लाह ने यह सिर्फ़ इसलिए किया कि यह एक ख़ुशख़बरी हो और ताकि इससे तुम्हारे दिल मुतमइन हों; मदद अल्लाह ही के यहां से होती है; बेशक अल्लाह ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है।

11. याद करो जबकि वह अपनी तरफ़ से बेख़ौफ़ी देकर तुमपर ऊंघ तारी कर रहा था, और वह आसमान से तुम पर पानी बरसा रहा था, ताकि उसके ज़रिए से तुम्हें अच्छी तरह पाक करे, और शैतानी नजासत तुमसे दूर करे, और तुम्हारे दिलों को मज़बूत कर दे, और उसके ज़रिए तुम्हारे क़दमों को जमा दे;

12. याद करो जब तुम्हारा रब फ़रिश्तों की तरफ़ वही कर रहा था कि "मैं तुम्हारे साथ हूं; पस तुम अहले ईमान को साबित क़दम रखो।" "मैं काफ़िरों के दिलों में रोब डाले देता हूं; पस तुम उनकी गरदनें मारो, और उनके पोर-पोर पर चोटें लगाओ"।

13. यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की; और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करे, तो यक़ीनन अल्लाह सख़्त अज़ाब देने वाला है।

14. यह तो तुम चखो; और यह कि काफ़िरों के लिए आग का अज़ाब है।

15. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, एक लश्कर की सूरत में अहले कुफ़्र से जब तुम्हारा मुक़ाबला हो, तो उनसे पीठ न फेरो।

श्शौ-कति तकूनु लकुम् व युरीदुल्लाहु अंय्युहिक़्क़ल्-हक़्-क़ बिकलिमातिही व यक़्त-अ़ दाबिरल-काफ़िरीन (7)

लियुहिक़्क़ल्-हक़्-क़ व युब्तिलल्-बाति-ल व लौ करिहल्-मुज्रिमून (8)

इज़् तस्तग़ीसू-न रब्बकुम् फ़स्तजा-ब लकुम् अन्नी मुमिद्दुकुम् बिअल्फ़िम् मिनल्-मलाइ-कति मुर्दिफ़ीन (9)

व मा ज-अ़-लहुल्लाहु इल्ला बुश्रा व लितत्मइन्-न बिही क़ुलूबुकुम्, व मन्नस्रु इल्ला मिन् अि़न्दिल्लाहि, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन हकीम (10)●

इज़् युग़श्शीकुमुन्नुआ़-स अ-म-नतम् मिन्हु व युनज़्ज़िलु अ़लैकुम् मिनस्समा-इ माअल्-लियुतह्हि-रकुम बिही व युज़्हि-ब अ़न्कुम् रिज्ज़श्शैतानि व लियर्बि-त अ़ला क़ुलूबिकुम् व युसब्बि-त बिहिल्अक़्दाम (11)

इज़् यूही रब्बु-क इलल्मलाइ-कति अन्नी म-अ़कुम् फ़-सब्बितुल्लज़ी-न आमनू, सउल्क़ी फ़ी क़ुलूबिल्लज़ी-न क-फ़रूर्रुअ़्-ब फ़ज़्रिबू फ़ौक़ल् अअ़्नाक़ि वज़्रिबू मिन्हुम् कुल्-ल बनान (12)

ज़ालि-क बिअन्नहुम् शाक़्क़ुल्ला-ह व रसूलहू व मंय्युशाक़िक़िल्ला-ह व रसूलहू फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अि़क़ाब (13)

ज़ालिकुम् फ़ज़ूक़ूहु व अन्-न लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबन्नार (14)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ज़ह्फ़न् फ़ला तुवल्लूहुमुल-अद्बार (15)

الشَّوْكَةِ تَكُوْنُ لَكُمْ وَيُرِيْدُ اللّٰهُ
اَنْ يُّحِقَّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَيَقْطَعَ
دَابِرَ الْكٰفِرِيْنَ ۙ۝
لِيُحِقَّ الْحَقَّ وَيُبْطِلَ الْبَاطِلَ وَلَوْ
كَرِهَ الْمُجْرِمُوْنَ ۚ۝
اِذْ تَسْتَغِيْثُوْنَ رَبَّكُمْ فَاسْتَجَابَ
لَكُمْ اَنِّيْ مُمِدُّكُمْ بِاَلْفٍ مِّنَ
الْمَلٰٓئِكَةِ مُرْدِفِيْنَ ۝
وَمَا جَعَلَهُ اللّٰهُ اِلَّا بُشْرٰى وَلِتَطْمَئِنَّ
بِهٖ قُلُوْبُكُمْ ۚ وَمَا النَّصْرُ اِلَّا مِنْ
عِنْدِ اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝ۧ
اِذْ يُغَشِّيْكُمُ النُّعَاسَ اَمَنَةً مِّنْهُ
وَيُنَزِّلُ عَلَيْكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءً لِّيُطَهِّرَكُمْ
بِهٖ وَيُذْهِبَ عَنْكُمْ رِجْزَ الشَّيْطٰنِ
وَلِيَرْبِطَ عَلٰي قُلُوْبِكُمْ وَيُثَبِّتَ
بِهِ الْاَقْدَامَ ۝
اِذْ يُوْحِيْ رَبُّكَ اِلَى الْمَلٰۗئِكَةِ اَنِّىْ مَعَكُمْ
فَثَبِّتُوا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ سَاُلْقِيْ فِيْ قُلُوْبِ
الَّذِيْنَ كَفَرُوا الرُّعْبَ فَاضْرِبُوْا فَوْقَ
الْاَعْنَاقِ وَاضْرِبُوْا مِنْهُمْ كُلَّ بَنَانٍ ۝
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَاۗقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ
وَمَنْ يُّشَاقِقِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ
اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝
ذٰلِكُمْ فَذُوْقُوْهُ وَاَنَّ لِلْكٰفِرِيْنَ
عَذَابَ النَّارِ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا زَحْفًا فَلَا تُوَلُّوْهُمُ الْاَدْبَارَ ۝

16. जिसने भी उस दिन उनसे अपनी पीठ फेरी — यह और बात है कि जंगी चाल के तौर पर या दूसरी टुकड़ी से मिलने के लिए ऐसा करे — उसके हिस्से में अल्लाह का ग़ज़ब आया, और उसका ठिकाना जहन्नम है और वह बदतरीन मंज़िल है।

17. तुमने उन्हें क़त्ल नहीं किया, बल्कि अल्लाह ही ने उन्हें क़त्ल किया; और जब तुमने फेंका, तो तुमने नहीं फेंका बल्कि अल्लाह ने फेंका, (कि अल्लाह अपनी शान दिखाए) और ताकि अपनी जानिब से अहले ईमान के जौहर नुमायां करे, बेशक अल्लाह सुनता, जानता है।

18. यह तो हुआ; और यह कि खुदा काफ़िरों की चाल को कमज़ोर कर देनेवाला है।

19. अगर तुम फ़ैसला चाहते हो, तो फ़ैसला तुम्हारे सामने आ चुका; और अगर बाज़ आ जाओ तो यह तुम्हारे ही लिए बेहतर है। लेकिन अगर तुमने पलट कर फिर वही हरकत की तो हम भी पलटेंगे, और तुम्हारा जत्था ख़्वाह वह कितना ही ज़्यादा हो तुम्हारे कुछ काम न आ सकेगा; और यह कि खुदा मोमिनों के साथ होता है।

20. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो, उससे मुंह न फेरो जबकि तुम सुन रहे हो।

21. और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने कहा था कि "हमने सुना," हालांकि वो सुनते नहीं।

22. अल्लाह के नज़दीक तो बदतरीन जानवर वो बहरे गुंगे लोग हैं जो अक्ल से काम नहीं लेते।

23. अगर अल्लाह के इल्म में ऐसी भलाई आती जो उनमें होती तो वह उन्हें ज़रूर सुनने की तौफ़ीक़ अता करता; और अगर वह उन्हें सुना देता तो भी वो एराज़ करते हुए मुंह ही फेरते।

24. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह और रसूल की दावत पर लब्बेक कहो जब रसूल तुम्हें उस चीज़ की दावत दे जो तुम्हें ज़िन्दगी अता करनेवाली है; और जान रखो अल्लाह आदमी और उसके दिल के बीच हाइल हो जाता है, और यह कि वही है जिसकी तरफ़ तुम जमा होगे।

25. बचो उस फ़ितने से जो अपनी लपेट में मख़सूस तौरपर सिर्फ़ ज़ालिमों

व मंय्युवल्लिहिम् यौमइज़िन् दुबु-रहू इल्ला मु-तहर्रिफ़ल् लिक़ितालिन् औ मु-तहय्यिज़न् इला फ़ि-अतिन् फ़-क़द् बा-अ बि-ग़-ज़बिम् मिनल्लाहि व मअ्वाहु जहन्नमु, व बिअ्सल्मसीर (16)

फ़-लम् तक़्तुलूहुम् व लाकिन्नल्ला-ह क़-त-लहुम् व मा रमै-त इज़् रमै-त व लाकिन्नल्ला-ह रमा व लियुब्लियल्-मुअ्मिनी-न मिन्हु बलाअन् ह-सनन्, इन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम (17)

ज़ालिकुम् व अन्नल्ला-ह मूहिनु कैदिल्-काफ़िरीन (18)

इन् तस्तफ़्तिहू फ़-क़द् जा-अकुमुल्-फ़त्हू व इन् तन्तहू फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम् व इन् तअूदू नअुद् व लन् तुग़्नि-य अ़न्कुम् फ़ि-अतुकुम् शैअंव्-व लौ कसुरत् व अन्नल्ला-ह मअ़ल्-मुअ्मिनीन (19)●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व रसूलहू व ला तवल्लौ अ़न्हु व अन्तुम् तस्मअून (20)

व ला तकूनू कल्लज़ी-न क़ालू समिअ्ना व हुम् ला यस्मअून (21)

इन्-न शर्रद्दवाब्बि अ़िन्दल्लाहिस्सुम्मुल्- बुक्मुल्लज़ी-न ला यअ्क़िलून (22)

व लौ अ़लिमल्लाहु फ़ीहिम् ख़ैरल् ल-अस्म-अ़हुम्, व लौ अस्म-अ़हुम् ल-तवल्लौ व हुम् मुअ्रिज़ून (23)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुस्तजीबू लिल्लाहि व लिर्रसूलि इज़ा दआकुम् लिमा युह्यीकुम् वअ्लमू अन्नल्ला-ह यहूलु बैनल्-मरइ व क़ल्बिही व अन्नहू इलैहि तुह्शरून (24)

वत्तक़ू फ़ित्नतल्-ला तुसीबन्नल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्कुम् ख़ास्स-तन् वअ्लमू अन्नल्ला-ह शदीदु

وَمَنْ يُّوَلِّهِمْ يَوْمَئِذٍ دُبُرَهٗٓ اِلَّا مُتَحَرِّفًا
لِّقِتَالٍ اَوْ مُتَحَيِّزًا اِلٰى فِئَةٍ فَقَدْ بَآءَ
بِغَضَبٍ مِّنَ اللّٰهِ وَمَاْوٰىهُ جَهَنَّمُ ؕ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑯

فَلَمْ تَقْتُلُوْهُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ قَتَلَهُمْ ۪
وَمَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى ۚ
وَلِيُبْلِيَ الْمُؤْمِنِيْنَ مِنْهُ بَلَآءً حَسَنًا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ⑰

ذٰلِكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ مُوْهِنُ كَيْدِ الْكٰفِرِيْنَ ⑱

اِنْ تَسْتَفْتِحُوْا فَقَدْ جَآءَكُمُ الْفَتْحُ ۚ وَاِنْ
تَنْتَهُوْا فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَعُوْدُوْا نَعُدْ ۚ
وَلَنْ تُغْنِيَ عَنْكُمْ فِئَتُكُمْ شَيْئًا وَّلَوْ
كَثُرَتْ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُؤْمِنِيْنَ ⑲

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
وَلَا تَوَلَّوْا عَنْهُ وَاَنْتُمْ تَسْمَعُوْنَ ⑳ ۖ
وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ قَالُوْا سَمِعْنَا
وَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ㉑

اِنَّ شَرَّ الدَّوَآبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الصُّمُّ الْبُكْمُ
الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ㉒

وَلَوْ عَلِمَ اللّٰهُ فِيْهِمْ خَيْرًا لَّاَسْمَعَهُمْ ؕ
وَلَوْ اَسْمَعَهُمْ لَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ㉓

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اسْتَجِيْبُوْا لِلّٰهِ
وَلِلرَّسُوْلِ اِذَا دَعَاكُمْ لِمَا يُحْيِيْكُمْ ۚ
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَحُوْلُ بَيْنَ الْمَرْءِ
وَقَلْبِهٖ وَاَنَّهٗٓ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ㉔

وَاتَّقُوْا فِتْنَةً لَّا تُصِيْبَنَّ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا
مِنْكُمْ خَآصَّةً ۚ وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ

ही को नहीं लेगा; और जान लो कि अल्लाह सज़ा देने में बहुत सख़्त है।

26. और याद करो जब तुम थोड़े थे, ज़मीन में कमज़ोर थे, डरे सहमे रहते थे कि लोग कहीं तुम्हें उचक न ले जाएं; फिर उसने तुम्हें ठिकाना दिया, और अपनी नुसरत से तुम्हें ताक़त बख़्शी, और अच्छी पाकीज़ा चीज़ों की तुम्हें रोज़ी दी ताकि तुम शुक्र अदा करो।

27. ऐ लोगो! जो ईमान लाए हो, जानते-बूझते तुम अल्लाह और उसके रसूल के साथ ख़ियानत न करना और न अपनी अमानतों में ख़ियानत करना;

28. और जान रखो कि तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद सामाने आज़माइश हैं और यह कि अल्लाह के पास बड़ा अजर है।

29. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अगर तुम ख़ुदातरसी इख़्तियार करो, तो वह तुम्हें एक इम्तियाज़ अता करेगा, और तुमसे तुम्हारी बुराइयां दूर कर देगा, और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाएगा; अल्लाह बड़ा फ़ज़्लवाला है।

30. और याद करो जब कुफ़्फ़ार तुम्हारे साथ चालें चल रहे थे कि तुम्हें क़ैद कर दें, या तुम्हें क़त्ल कर दें, या तुम्हें निकाल बाहर करें। वो अपनी चालें चल रहे थे, और अल्लाह भी अपनी चाल चल रहा था, अल्लाह सब से बेहतर चाल चलता है।

31. जब उनके सामने हमारी आयतें पढ़ी जाती हैं, तो वो कहते हैं, "हम सुन चुके; अगर हम चाहें तो ऐसा हम भी कह लें; यह तो बस अगलों की कहानियां हैं"।

32. और याद करो जब उन्होंने कहा था, "ऐ अल्लाह, अगर यही तेरे यहां से हक़ हो, तो हमपर आसमान से पत्थर बरसा दे, या हमपर कोई दर्दनाक अज़ाब ही ला दे"।

33. और अल्लाह ऐसा नहीं था कि तुम उनके दरमियान मौजूद हो और वह उन्हें अज़ाब देने लग जाए; और न अल्लाह ऐसा है कि वो बख़्शिश मांग रहे हों और वह उन्हें अज़ाब में मुबतला कर दे।

34. लेकिन अब किया है उनके पास कि अल्लाह उन्हें अज़ाब न दे, जबकि वो मस्जिद-ए-हराम से रोकते हैं, हालांकि वो उसके कोई मुतवल्ली नहीं? उसके मुतवल्ली तो बस परहेज़गार ही हैं, लेकिन उनके अक्सर जानते नहीं।

ल्-अ़िक़ाब (25)

वज़्कुरू इज़् अन्तुम् क़लीलुम् मुस्तज़्अफ़ू-न फ़िल्अर्ज़ि तख़ाफ़ू-न अंय्य-तख़त्त-फ़कुमुन्नासु फ़आवाकुम् व अय्य-दकुम् बिनस्रिही व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (26)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तख़ूनुल्ला-ह वर्रसू-ल व तख़ूनुल्ला-ह वर्रसू-ल व तख़ूनू अमानातिकुम व अन्तुम् तअ़्लमून (27)

वअ़्लमू अन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्नतुंव्-व अन्नल्ला-ह अ़िन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम (28) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तत्तक़ुल्ला-ह यज्अ़ल्लकुम् फ़ुर्क़ानंव्-व युकफ़्फ़िर् अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ज़ुल्फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (29)

व इज़् यम्कुरु बिकल्लज़ी-न क-फ़रू लियुस्बितू-क औ यक़्तुलू-क औ युख़्रिजू-क, व यम्कुरू-न व यम्कुरुल्लाहु, वल्लाहु ख़ैरुल् माकिरीन (30)

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना क़ालू क़द् समिअ़्ना लौ नशा-उ लक़ुल्ना मिस्-ल हाज़ा इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (31)

व इज़् क़ालुल्लाहुम्-म इन् का-न हाज़ा हुवल्-हक़्-क़ मिन् अ़िन्दि-क फ़अम्तिर् अ़लैना हिजा-रतम् मिनस्समा-इ अविअ्तिना बिअ़ज़ाबिन् अलीम (32)

व मा कानल्लाहु लियुअ़ज़्ज़ि-बहुम् व अन्-त फ़ीहिम्, व मा कानल्लाहु मुअ़ज़्ज़ि-बहुम् व हुम् यस्तग़्फ़िरून (33)

व मा लहुम् अल्-ला युअ़ज़्ज़ि-बहुमुल्लाहु व हुम् यसुद्दू-न अ़निल् मस्जिदिल्-हरामि व मा कानू औलिया-अहू, इन् औलिया-उहू इल्लल्-मुत्तक़ू-न व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ़्लमून (34)

الْعِقَابِ ㉕
وَاذْكُرُوْٓا اِذْ اَنْتُمْ قَلِيْلٌ مُّسْتَضْعَفُوْنَ
فِى الْاَرْضِ تَخَافُوْنَ اَنْ يَّتَخَطَّفَكُمُ
النَّاسُ فَاٰوٰىكُمْ وَاَيَّدَكُمْ بِنَصْرِهٖ
وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ㉖
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَخُوْنُوا اللّٰهَ وَ
الرَّسُوْلَ وَتَخُوْنُوْٓا اَمٰنٰتِكُمْ وَاَنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ㉗
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۙ
وَّاَنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ㉘
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ
لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّيُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ
يَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ㉙
وَاِذْ يَمْكُرُ بِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِيُثْبِتُوْكَ
اَوْ يَقْتُلُوْكَ اَوْ يُخْرِجُوْكَ ۭ وَيَمْكُرُوْنَ
وَيَمْكُرُ اللّٰهُ ۭ وَاللّٰهُ خَيْرُ الْمٰكِرِيْنَ ㉚
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا قَالُوْا قَدْ سَمِعْنَا
لَوْ نَشَاۗءُ لَقُلْنَا مِثْلَ هٰذَآ ۙ اِنْ هٰذَآ
اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ㉛
وَاِذْ قَالُوا اللّٰهُمَّ اِنْ كَانَ هٰذَا هُوَ
الْحَقَّ مِنْ عِنْدِكَ فَاَمْطِرْ عَلَيْنَا حِجَارَةً
مِّنَ السَّمَاۗءِ اَوِ ائْتِنَا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ㉜
وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ وَاَنْتَ فِيْهِمْ ۭ وَمَا
كَانَ اللّٰهُ مُعَذِّبَهُمْ وَهُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ ㉝
وَمَا لَهُمْ اَلَّا يُعَذِّبَهُمُ اللّٰهُ وَهُمْ يَصُدُّوْنَ
عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَمَا كَانُوْٓا اَوْلِيَاۗءَهٗ ۭ
اِنْ اَوْلِيَاۗؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ㉞

35. उनकी नमाज़ इस घर के पास सीटियां बजाने और तालियां पीटने के अलावा कुछ भी नहीं होती। पस अब अज़ाब का मज़ा चखो उस कुफ़्र की पादाश में जो तुम करते रहे हो।

36. यक़ीनन कुफ़्फ़ार अपने माल अल्लाह के रास्ते से रोकने के लिए ख़र्च करते हैं, वो तो उनको ख़र्च करेंगे, फिर यही उनके लिए सरमाया-ए-हसरत बनेगा, फिर वो मग़लूब होंगे, और कुफ़्फ़ार जहन्नम की तरफ़ समेट लाए जाएंगे।

37. ताकि अल्लाह नापाक को पाक से छांटकर अलग करे, और नापाकों को आपस में एक-दूसरे पर रखकर ढेर करे, फिर उसे जहन्नम में डाल दे, यही लोग ख़सारे में पढ़ने वाले हैं।

38. उन काफ़िरों से कह दो कि अगर वो बाज़ आते हैं तो जो कुछ हो चुका वह माफ़ हो जाएगा; लेकिन अगर वो फिर वही करेंगे तो अगले लोगों के सिलसिले में दस्तूर गुज़र चुका है।

39. उनसे जंग करो यहां तक कि फ़ितना बाक़ी न रहे और दीन पूरा का पूरा अल्लाह ही के लिए हो जाए; फिर अगर वो बाज़ आ जाएं तो अल्लाह तो उनके काम को देख रहा है,

40. लेकिन अगर वो मुंह मोड़ें, तो जान रखो कि अल्लाह तुम्हारा सरपरस्त है। क्या ही अच्छा सरपरस्त है वह, और किया ही अच्छा मददगार!

41. और तुम्हें मालूम हो कि जो कुछ माले ग़नीमत तुमने हासिल किया उसका पांचवां हिस्सा अल्लाह का, रसूल का, रिश्तेदारों का, यतीमों का, मुहताजों और मुसाफ़िरों का है, अगर तुम अल्लाह पर और उस चीज़ पर ईमान रखते हो जो हमने अपने बन्दे पर फ़ैसले के रोज़ उतारी, जिस रोज़ दोनों फ़ौजों में मुठभेड़ हुई; और अल्लाह को हर चीज़ पर पूरी क़ुदरत हासिल है।

42. याद करो जब तुम वादी के क़रीबी किनारे पर थे और वो वादी से दूर के किनारे पर थे, और क़ाफ़िला तुमसे नीचे की तरफ़ था; अगर तुम (जंग के लिए) बाहम मीआद ठहराए होते तो यक़ीनन उसके तअय्युन में तुम मुख़्तलिफ़ हो जाते, लेकिन जो हुआ वह इसलिए कि अल्लाह उस बात

व मा का-न सलातुहुम् अ़िन्दल्-बैति इल्ला मुकाअंव्-व तस्दि-यतन्, फ़ज़ूक़ुल्-अ़ज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (35)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू युन्फ़िक़ू-न अम्वालहुम् लि-यसुद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि, फ़-सयुन्फ़िक़ूनहा सुम्-म तकूनु अ़लैहिम् हस्-रतन् सुम्-म युग़्लबू-न, वल्लज़ी-न क-फ़रू इला जहन्न-म युह्शरून (36)

लि-यमीज़ल्लाहुल्-ख़बी-स मिनत्तय्यिबि व यज्अ़लल् ख़बी-स बअ़्ज़हू अ़ला बअ़्ज़िन् फ़-यर्कु-महू जमीअ़न् फ़-यज्अ़-लहू फ़ी जहन्न-म, उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (37) ●

क़ुल लिल्लज़ी-न क-फ़रू इंय्यन्तहू युग़्फ़र् लहुम् मा क़द् स-ल-फ़, व इंय्यअ़ूदू फ़-क़द् मज़त् सुन्नतुल्-अव्वलीन (38)

व क़ातिलूहुम् हत्ता ला तकू-न फ़ित्नतुंव्-व यकूनद्दीनु कुल्लुहू लिल्लाहि फ़-इनिन्तहौ फ़-इन्नल्ला-ह बिमा यअ़्मलू-न बसीर (39)

व इन् तवल्लौ फ़अ़्लमू अन्नल्ला-ह मौलाकुम्, निअ़्मल्-मौला व निअ़्मन्-नसीर (40)

वअ़्लमू अन्नमा ग़निम्तुम् मिन् शैइन् फ़-अन्-न लिल्लाहि ख़ुमु-सहू व-लिर्रसूलि व लिज़िल्क़ुर्बा वल्यतामा वल्मसाकीनि वब्निस्-सबीलि इन् कुन्तुम् आमन्तुम् बिल्लाहि व मा अन्ज़ल्ना अ़ला अ़ब्दिना यौमल्फ़ुर्क़ानि यौमल्-तक़ल्जम्आनि, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (41)

इज़् अन्तुम् बिल्अ़ुद्वतिद्दुन्या व हुम् बिल्अ़ुद्वतिल्-क़ुस्वा वर्रक्बु अस्फ़-ल मिन्कुम्, व लौ तवाअ़त्तुम् लख़्त-लफ़्तुम् फ़िल्मीआ़दि व लाकिल्-लियक़्ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्अ़ूलल्-

وَمَا كَانَ صَلَاتُهُمْ عِنْدَ الْبَيْتِ اِلَّا مُكَآءً وَّتَصْدِيَةً ۚ
فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝٣٥
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ
لِيَصُدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ فَسَيُنْفِقُوْنَهَا
ثُمَّ تَكُوْنُ عَلَيْهِمْ حَسْرَةً ثُمَّ يُغْلَبُوْنَ ؕ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰى جَهَنَّمَ يُحْشَرُوْنَ ۝٣٦ۙ
لِيَمِيْزَ اللّٰهُ الْخَبِيْثَ مِنَ الطَّيِّبِ وَيَجْعَلَ
الْخَبِيْثَ بَعْضَهٗ عَلٰى بَعْضٍ فَيَرْكُمَهٗ جَمِيْعًا
ع ٩/١٨ فَيَجْعَلَهٗ فِىْ جَهَنَّمَ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٣٧ۧ
قُلْ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ يَّنْتَهُوْا يُغْفَرْ لَهُمْ
مَّا قَدْ سَلَفَ ۚ وَاِنْ يَّعُوْدُوْا فَقَدْ
مَضَتْ سُنَّتُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٣٨
وَقَاتِلُوْهُمْ حَتّٰى لَا تَكُوْنَ فِتْنَةٌ وَّيَكُوْنَ
الدِّيْنُ كُلُّهٗ لِلّٰهِ ۚ فَاِنِ انْتَهَوْا فَاِنَّ اللّٰهَ
بِمَا يَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٣٩
وَاِنْ تَوَلَّوْا فَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَوْلٰىكُمْ ؕ
نِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝٤٠
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّمَا غَنِمْتُمْ مِّنْ شَىْءٍ فَاَنَّ
لِلّٰهِ خُمُسَهٗ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِى الْقُرْبٰى
وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ
اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ بِاللّٰهِ وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلٰى
عَبْدِنَا يَوْمَ الْفُرْقَانِ يَوْمَ الْتَقَى
الْجَمْعٰنِ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۝٤١
اِذْ اَنْتُمْ بِالْعُدْوَةِ الدُّنْيَا وَهُمْ بِالْعُدْوَةِ
الْقُصْوٰى وَالرَّكْبُ اَسْفَلَ مِنْكُمْ ؕ وَلَوْ
تَوَاعَدْتُّمْ لَاخْتَلَفْتُمْ فِى الْمِيْعٰدِ ۙ وَلٰكِنْ
لِّيَقْضِىَ اللّٰهُ اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ۙ

का फ़ैसला फ़रमा दे जिसका अंजाम पाना तय था, ताकि जिसे हलाक होना हो वह रौशन दलील देखकर हलाक हो, और जिसे ज़िन्दा रहना हो वह रौशन दलील देखकर ज़िन्दा रहे, यक़ीनन अल्लाह ख़ूब जानता, सुनता है।

43. याद करो जब ख़ुदा उनको तुम्हारे ख़्वाब में थोड़ा करके तुम्हें दिखा रहा था; और अगर वह उन्हें ज़्यादा कर के तुम्हें दिखा देता तो यक़ीनन तुम हिम्मत हार बैठते, और असल मुआमले में झगड़ने लगते; लेकिन ख़ुदा ने इससे बचा लिया, यक़ीनन वह तो जो कुछ सीनों में होता है उसे भी जानता है।

44. और याद करो जब तुम एक-दूसरे के मुक़ाबिल हुए तो वह तुम्हारी निगाहों में उन्हें कम करके, और तुम्हें उनकी निगाहों में कम करके दिखा रहा था ताकि अल्लाह उस बात का फ़ैसला फ़रमा दे जिसका अंजाम पाना तय था; और सारे मुआमलात अल्लाह ही की तरफ़ लौटते हैं।

45. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जब तुम्हारा मुक़ाबला किसी गिरोह से हो जाए, तो साबित क़दम रहो, और अल्लाह को ज़्यादा याद करो, ताकि तुम कामयाबी हासिल करो।

46. और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो, और आपस में न झगड़ो वरना हिम्मत हार जाओगे, और तुम्हारी हवा उखड़ जाएगी; और सब्र से काम लो; यक़ीनन अल्लाह सब्र करनेवालों के साथ है।

47. और उन लोगों की तरह न हो जाना जो अपने घरों से इतराते और लोगों को दिखाते निकले थे और वो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं; हालांकि वो जो कुछ भी करते हैं अल्लाह उसका इहाता किए हुए है।

48. और याद करो जब शैतान ने उनके लिए उनके आमाल ख़ुशनुमा बना दिए और कहा कि "आज लोगों में से कोई भी तुमपर ग़ालिब नहीं आ सकता, मैं तुम्हारे साथ हुं"। लेकिन जब दोनों गिरोह आमने-सामने हुए, तो वह उल्टे पांव फिर गया, और कहने लगा, "मेरा तुमसे कोई तअल्लुक़ नहीं; मैं वह कुछ देख रहा हूं जो तुम्हें नज़र नहीं आता। मैं अल्लाह से डरता हूं; और अल्लाह अज़ाब देने में निहायत सख़्त है।"

49. याद करो जब मुनाफ़िक़ीन और वो लोग जिनके दिलों में रोग है, कह रहे थे, "इन लोगों को तो इनके दीन ने धोके में डाल रखा है;" हालांकि जो अल्लाह पर भरोसा रखता है, तो यक़ीनन अल्लाह ज़बरदस्त, निहायत हिक्मत वाला है।

लियह्लि-क मन् ह-ल-क अ़म्बय्यि-नतिंव्-व यह्या मन् हय्-य अ़म्बय्यि नतिन्, व इन्नल्ला-ह ल-समीअुन् अ़लीम (42)

इज़् युरीकहुमुल्लाहु फ़ी मनामि-क क़लीलन्, व लौ अराकहुम् कसीरल् ल-फ़शिल्तुम् व ल-तनाज़अ़्तुम् फ़िल्-अम्रि व लाकिन्नल्ला-ह सल्ल-म, इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (43)

व इज़् युरीकुमूहुम् इज़िल्तक़ैतुम् फ़ी अअ़्युनिकुम् क़लीलंव्-व युक़ल्लिलुकुम् फ़ी अअ़्युनिहिम् लि-यक़्ज़ियल्लाहु अम्रन् का-न मफ़्अ़ूलन्, व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर (44) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा लक़ीतुम् फ़ि-अतन् फ़स्बुतू वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्-लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (45)

व अतीअुल्ला-ह व रसूलहू व ला तनाज़अ़ू फ़-तफ़्शलू व तज़्ह-ब रीहुकुम् वस्बिरू, इन्नल्ला-ह मअ़स्साबिरीन (46)

व ला तकूनू कल्लज़ी-न ख़-रजू मिन् दियारिहिम् ब-तरंव्-व रिआअन्नासि व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि, वल्लाहु बिमा यअ़्मलू-न मुहीत (47)

व इज़् ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ़्मालहुम् व क़ा-ल ला ग़ालि-ब लकुमुल्यौ-म मिनन्नासि व इन्नी जारुल्लकुम् फ़-लम्मा तरा-अतिल्-फ़ि-अतानि न-क-स अ़ला अ़क़िबैहि व क़ा-ल इन्नी बरीउम् मिन्कुम् इन्नी अरा मा ला तरौ-न इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह, वल्लाहु शदीदुल्-अ़िक़ाब (48) ●

इज़् यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् ग़र्-र हा-उला-इ दीनुहुम्, व मंय्य-तवक्कल् अ़लल्लाहि फ़-इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम (49)

لِّيَهْلِكَ مَنْ هَلَكَ عَنْۢ بَيِّنَةٍ وَّيَحْيٰى
مَنْ حَيَّ عَنْۢ بَيِّنَةٍ ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَسَمِيْعٌ
عَلِيْمٌ ۝٤٢
اِذْ يُرِيْكَهُمُ اللّٰهُ فِىْ مَنَامِكَ قَلِيْلًا ؕ وَلَوْ
اَرٰىكَهُمْ كَثِيْرًا لَّفَشِلْتُمْ وَلَتَنَازَعْتُمْ
فِى الْاَمْرِ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ سَلَّمَ ؕ اِنَّهٗ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤٣
وَاِذْ يُرِيْكُمُوْهُمْ اِذِ الْتَقَيْتُمْ فِىْٓ اَعْيُنِكُمْ
قَلِيْلًا وَّيُقَلِّلُكُمْ فِىْٓ اَعْيُنِهِمْ لِيَقْضِىَ اللّٰهُ
ع اَمْرًا كَانَ مَفْعُوْلًا ؕ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٤٤
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا لَقِيْتُمْ فِئَةً فَاثْبُتُوْا
وَاذْكُرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝٤٥
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَا تَنَازَعُوْا
فَتَفْشَلُوْا وَتَذْهَبَ رِيْحُكُمْ وَاصْبِرُوْا ؕ
اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝٤٦
وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ خَرَجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ
بَطَرًا وَّرِئَآءَ النَّاسِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا يَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝٤٧
وَاِذْ زَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ
وَقَالَ لَا غَالِبَ لَكُمُ الْيَوْمَ مِنَ النَّاسِ
وَاِنِّىْ جَارٌ لَّكُمْ ۚ فَلَمَّا تَرَآءَتِ الْفِئَتٰنِ
نَكَصَ عَلٰى عَقِبَيْهِ وَقَالَ اِنِّىْ بَرِىْٓءٌ
مِّنْكُمْ اِنِّىْٓ اَرٰى مَا لَا تَرَوْنَ اِنِّىْٓ اَخَافُ
ع اللّٰهَ ؕ وَاللّٰهُ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٤٨
اِذْ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ غَرَّ هٰٓؤُلَآءِ دِيْنُهُمْ ؕ وَمَنْ يَّتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ فَاِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٤٩

50. और अगर तुम देखते जब फ़रिश्ते कुफ़्फ़ार की जानें निकालते हैं, वो उनके चेहरों पर और उनकी पीठों पर मारते जाते हैं कि "लो अब जलने के अज़ाब का मज़ा चखो।

51. यह तो उसी का बदला है जो तुम्हारे हाथों ने आगे भेजा, और यह कि अल्लाह अपने बन्दों पर ज़रा भी जुल्म करने वाला नहीं"।

52. उनके साथ वैसा ही मुआमला पेश आया जैसा फ़िरऔनियों, और उनसे पहले के लोगों के साथ पेश आया, उन्होंने अल्लाह की आयतों का इनकार किया, तो अल्लाह ने उनके गुनाहों के सबब उन्हें पकड़ लिया, बेशक अल्लाह ताक़तवर, अज़ाब देने में निहायत सख़्त है।

53. यह इस वजह से हुआ कि अल्लाह उस नवाज़िश को जो उसने किसी क़ौम पर की हो बदलने का नहीं जब तक कि लोग ख़ुद अपने (तर्ज़-ए-अमल) को न बदल दें; और यह कि अल्लाह सब कुछ सुनता जानता है।

54. उनके साथ वैसा ही मुआमला पेश आया, जैसा फ़िरऔनियों और उनसे पहले के लोगों के साथ पेश आया, उन्होंने अपने रब की आयतों को झुटलाया, तो हम ने उन्हें उनके गुनाहों की पादाश में हलाक कर दिया, और फ़िरऔनियों को ग़र्क़ कर दिया, यह तो सभी ज़ालिम थे।

55. यक़ीनन बदतरीन जानवर अल्लाह के नज़दीक वो लोग हैं जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया, फिर वो ईमान नहीं लाते,

56. जिनसे तुमने अ़हद किया वो फिर हर बार अपने अ़हद को तोड़ देते हैं, और वो डर नहीं रखते।

57. पस अगर जंग में तुम उनपर क़ाबू पाओ, तो उनके साथ ऐसा पेश आओ कि उनके पीछे वाले भी भाग खड़े हों; ताकि उन्हें सबक़ हासिल हो।

58. और अगर किसी क़ौम से तुम्हें ख़ियानत का अन्देशा हो, तो तुम भी उसी तरह ऐसे लोगों के मुआहदा को एलानिया उनके आगे फेंक दो; यक़ीनन अल्लाह उनको पसन्द नहीं करता जो ख़ियानत करते हैं।

59. कुफ़्फ़ार यह न समझें कि वो आगे निकल गए; वो क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते।

60. और जो भी तुमसे हो सके उनके लिए ताक़त और बंधे घोड़े तैयार

व लौ तरा इज़् य-तवफ़्फ़ल्लज़ी-न क-फ़रुल्मलाइ-कतु यज़्रिबू-न वुजू-हहुम् व अद्बारहुम् व ज़ूक़ू अ़ज़ाबल्-हरीक़ (50)

ज़ालि-क बिमा क़द्द-मत् ऐदीकुम् व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल्-लिल्अ़बीद (51)

कदअ्बि आलि फ़िर्औ-न वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, क-फ़रू बिआयातिल्लाहि फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम्, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् शदीदुल्-अ़िक़ाब (52)

ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह लम् यकु मुग़य्यिरन् निअ्-मतन् अन्अ़-महा अ़ला क़ौमिन् हत्ता युग़य्यिरू मा बिअन्फ़ुसिहिम् व अन्नल्ला-ह समीअुन् अ़लीम (53)

कदअ्बि आलि फ़िर्औ-न वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् कज़्ज़बू बिआयाति रब्बिहिम् फ़-अह्लक्नाहुम् बिज़ुनूबिहिम् व अग़्रक़्ना आ-ल फ़िर्औ-न व कुल्लुन् कानू ज़ालिमीन (54)

इन्-न शर्रद्दवाब्बि अ़िन्दल्लाहिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़हुम् ला युअ्मिनून (55)

अल्लज़ी-न आ़हत्-त मिन्हुम् सुम्-म यन्क़ुज़ू-न अ़ह्-दहुम् फ़ी कुल्लि मर्रतिंव्-व हुम् ला यत्तक़ून (56)

फ़-इम्मा तस्क़फ़न्नहुम् फ़िल्हर्बि फ़-शर्रिद् बिहिम् मन् ख़ल्फ़हुम् लअ़ल्लहुम यज़्ज़क्करून (57)

व इम्मा तख़ाफ़न्-न मिन् क़ौमिन् ख़िया-नतन् फ़म्बिज़् इलैहिम् अ़ला सवाइन्, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-ख़ाइनीन (58) ●

व ला यह्स-बन्नल्लज़ी-न क-फ़रू स-बक़ू, इन्नहुम् ला युअ्जिज़ून (59)

व अअ़िद्दू लहुम् मस्त-तअ्तुम् मिन् क़ुव्वतिंव्-व मिर्रिबातिल्ख़ैलि तुर्हिबू-न बिही अ़दुव्व

وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ يَتَوَفَّى الَّذِيْنَ كَفَرُوا ۙ
الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ ۚ
وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْحَرِيْقِ (50)
ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْكُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ
لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۙ (51)
كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ
كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ (52)
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ لَمْ يَكُ مُغَيِّرًا نِّعْمَةً
اَنْعَمَهَا عَلٰى قَوْمٍ حَتّٰى يُغَيِّرُوْا مَا بِاَنْفُسِهِمْ ۙ
وَاَنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۙ (53)
كَدَاْبِ اٰلِ فِرْعَوْنَ ۙ وَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ فَاَهْلَكْنٰهُمْ بِذُنُوْبِهِمْ
وَاَغْرَقْنَآ اٰلَ فِرْعَوْنَ ۚ وَكُلٌّ كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ (54)
اِنَّ شَرَّ الدَّوَاۗبِّ عِنْدَ اللّٰهِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۖ (55)
اَلَّذِيْنَ عٰهَدْتَّ مِنْهُمْ ثُمَّ يَنْقُضُوْنَ
عَهْدَهُمْ فِيْ كُلِّ مَرَّةٍ وَّهُمْ لَا يَتَّقُوْنَ (56)
فَاِمَّا تَثْقَفَنَّهُمْ فِي الْحَرْبِ فَشَرِّدْ بِهِمْ
مَّنْ خَلْفَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَذَّكَّرُوْنَ (57)
وَاِمَّا تَخَافَنَّ مِنْ قَوْمٍ خِيَانَةً فَانْۢبِذْ
اِلَيْهِمْ عَلٰى سَوَاۗءٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ
ع الْخَاۗىِٕنِيْنَ (58)
وَلَا يَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا سَبَقُوْا ۭ
اِنَّهُمْ لَا يُعْجِزُوْنَ (59)
وَاَعِدُّوْا لَهُمْ مَّا اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ قُوَّةٍ
وَّمِنْ رِّبَاطِ الْخَيْلِ تُرْهِبُوْنَ بِهٖ عَدُوَّ

रखो, ताकि इससे अल्लाह के दुश्मनों और अपने दुश्मनों, और इनके अलावा उन दूसरों पर भी अपनी हैबत कायम कर सको जिन्हें तुम नहीं जानते; अल्लाह उनको जानता है। और अल्लाह के रास्ते में तुम जो कुछ भी ख़र्च करोगे वह तुम्हें पूरा-पूरा अदा कर दिया जाएगा और तुम्हारे साथ हरगिज़ ज़ुल्म न होगा।

61. और अगर वो सुलह और सलामती की तरफ़ झुकें, तो तुम भी इसके लिए झुक जाओ; और अल्लाह पर भरोसा रखो; बेशक वह सब कुछ सुनता, जानता है।

62. और अगर उनका इरादा हो कि तुम्हें धोका दें, तो तुम्हारे लिए अल्लाह काफ़ी है; वही तो है जिसने तुम्हें अपनी मदद से, और मोमिनों के ज़रिए से ताक़त बख़्शी,

63. और उनके दिल आपस में एक-दूसरे के साथ जोड़ दिए। अगर तुम ज़मीन में जो कुछ है सब ख़र्च कर डालते, तो भी तुम उनके दिलों को बाहम जोड़ न सकते; मगर अल्लाह ने उन्हें बाहम जोड़ दिया, यक़ीनन वह ज़बरदस्त, निहायत हिकमतवाला है।

64. ऐ नबी, तुम्हारे लिए अल्लाह, और तुम्हारे पैरौ अहले ईमान काफ़ी हैं।

65. ऐ नबी, मोमिनों की कमज़ोरियों को दूर करो और जंग पर उभारो। अगर तुम्हारे बीस आदमी साबित क़दम होंगे, तो वो दो सौ पर ग़ालिब आएंगे; और अगर तुममें ऐसे सौ होंगे तो वो काफ़िरों में से एक हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे, इसलिए कि वो नासमझ लोग हैं।

66. अब अल्लाह ने तुम्हारा बोझ हल्का कर दिया, और उसे मालूम हुआ कि तुममें कुछ कमज़ोरी है। पस अगर तुम्हारे सौ आदमी साबित क़दम होंगे तो वो दो सौ पर ग़लबा पा लेंगे; और अगर तुममें ऐसे हज़ार होंगे, तो अल्लाह के हुक्म से वो दो हज़ार पर ग़ालिब रहेंगे; अल्लाह तो उन्हीं लोगों के साथ है जो साबित क़दम रहते हैं।

67. किसी नबी के लिए ज़ेबा नहीं कि उसके पास क़ैदी हों यहां तक कि वह ज़मीन में ख़ूंरेज़ी करे, तुम लोग तो दुनिया का सरोसामान

ल्लाहि व अ़दुव्वकुम् व आख़री-न मिन् दूनिहिम् ला तअ्लमूनहुम् अल्लाहु यअ्लमुहुम्, व मा तुन्फ़िक़ू मिन् शैइन् फ़ी सबीलिल्लाहि युवफ़्-फ़ इलैकुम् व अन्तुम् ला तुज़्लमून (60)

व इन् ज-नहू लिस्सल्मि फ़ज्नह् लहा व तवक्कल् अ़लल्लाहि, इन्नहू हुवस्समीअुल्-अ़लीम (61)

व इंय्युरीदू अंय्यख़्दअू-क फ़-इन्-न हस्ब-कल्लाहु हुवल्लज़ी अय्य-द-क बिनस्रिही व बिल्मुअ्मिनीन (62)

व अल्ल-फ़ बै-न क़ुलूबिहिम्, लौ अन्फ़क़्-त मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़म्-मा अल्लफ़्-त बै-न क़ुलूबिहिम् व लाकिन्नल्ला-ह अल्ल-फ़ बैनहुम्, इन्नहू अ़ज़ीज़ुन् हकीम (63)

या अय्युहन्नबिय्यु हस्बुकल्लाहु व मनित्त-ब-अ़-क मिनल् मुअ्मिनीन (64) ●

या अय्युहन्नबिय्यु हर्रिज़िल्-मुअ्मिनी-न अ़लल्-क़िताल, इंय्यकुम्-मिन्कुम् अ़िश्रू-न साबिरू-न यग़्लिबू मि-अतैनि व इंय्यकुम्-मिन्कुम् मि-अतुंय्यग़्लिबू अल्फ़म्-मिनल्लज़ी-न क-फ़रू बिअन्नहुम् क़ौमुल्-ला यफ़्क़हून (65)

अल्आ-न ख़फ़्फ़-फ़ल्लाहु अ़न्कुम् व अ़लि-म अन्-न फ़ीकुम् ज़अ़फ़न्, फ़-इंय्यकुम्-मिन्कुम् मि-अतुन् साबि-रतुंय्यग़्लिबू मि-अतैनि व इंय्यकुम्-मिन्कुम् अल्फ़ुंय्-यग़्लिबू अल्फ़ैनि बि-इज़्निल्लाहि, वल्लाहु मअ़स्-साबिरीन (66)

मा का-न लि-नबिय्यिन् अंय्यकू-न लहू अस्रा हत्ता युस्ख़ि-न फ़िल्अर्ज़ि, तुरीदू-न अ़-रज़द्दुन्या वल्लाहु युरीदुल् आख़ि-र-त, वल्लाहु

اللّٰهِ وَعَدُوَّكُمْ وَاٰخَرِيْنَ مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ
لَا تَعْلَمُوْنَهُمْ ۚ اَللّٰهُ يَعْلَمُهُمْ ؕ وَمَا
تُنْفِقُوْا مِنْ شَيْءٍ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ يُوَفَّ
اِلَيْكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تُظْلَمُوْنَ ۝٦٠
وَاِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَتَوَكَّلْ
عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦١
وَاِنْ يُّرِيْدُوْۤا اَنْ يَّخْدَعُوْكَ فَاِنَّ حَسْبَكَ
اللّٰهُ ؕ هُوَ الَّذِيْۤ اَيَّدَكَ بِنَصْرِهٖ وَبِالْمُؤْمِنِيْنَ ۝٦٢ ۙ
وَاَلَّفَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ ؕ لَوْ اَنْفَقْتَ مَا فِي
الْاَرْضِ جَمِيْعًا مَّاۤ اَلَّفْتَ بَيْنَ قُلُوْبِهِمْ
وَلٰكِنَّ اللّٰهَ اَلَّفَ بَيْنَهُمْ ؕ اِنَّهٗ عَزِيْزٌ
حَكِيْمٌ ۝٦٣
يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَسْبُكَ اللّٰهُ وَمَنِ
ع اتَّبَعَكَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٦٤
يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ حَرِّضِ الْمُؤْمِنِيْنَ عَلَى
الْقِتَالِ ؕ اِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ عِشْرُوْنَ صٰبِرُوْنَ
يَغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ
مِّائَةٌ يَّغْلِبُوْۤا اَلْفًا مِّنَ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ۝٦٥
اَلْـٰٔنَ خَفَّفَ اللّٰهُ عَنْكُمْ وَعَلِمَ اَنَّ فِيْكُمْ
ضَعْفًا ؕ فَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ مِّائَةٌ صَابِرَةٌ
يَّغْلِبُوْا مِائَتَيْنِ ۚ وَاِنْ يَّكُنْ مِّنْكُمْ
اَلْفٌ يَّغْلِبُوْۤا اَلْفَيْنِ بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ
وَاللّٰهُ مَعَ الصّٰبِرِيْنَ ۝٦٦
مَا كَانَ لِنَبِيٍّ اَنْ يَّكُوْنَ لَهٗۤ اَسْرٰى
حَتّٰى يُثْخِنَ فِي الْاَرْضِ ؕ تُرِيْدُوْنَ عَرَضَ
الدُّنْيَا ۖ وَاللّٰهُ يُرِيْدُ الْاٰخِرَةَ ؕ وَاللّٰهُ

चाहते हो, जबकि अल्लाह आख़िरत चाहता है; अल्लाह ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है।

68. अगर अल्लाह का नविश्ता पहले से मौजूद न होता, तो जो कुछ रविश तुमने इख़्तियार किया है उसपर तुम्हें कोई बड़ा अज़ाब आ लेता।

69. तो जो माल-ए-ग़नीमत तुमने हासिल किया है उसे हलाल और तय्यिब समझकर खाओ और अल्लाह का डर रखो; यक़ीनन अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहम फ़रमाने वाला है।

70. ऐ नबी, जो क़ैदी तुम्हारे क़ब्ज़े में हैं उनसे कह दो "अगर अल्लाह ने यह जान लिया कि तुम्हारे दिलों में कुछ भलाई है तो वह तुम्हें इससे कहीं बेहतर अता करेगा जो तुमसे छिन गया है, और तुम्हें बख़्श देगा; और अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है।"

71. लेकिन अगर वो तुम्हारे साथ ख़ियानत करना चाहेंगे, तो इससे पहले वो अल्लाह के साथ ख़ियानत कर चुके हैं; पस उसने तुम्हें उनपर इख़्तियार दे दिया; अल्लाह सब कुछ जानने वाला, बड़ी हिकमतवाला है।

72. जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद किया, और जिन लोगों ने उन्हें पनाह दी और मदद की, वही लोग बाहम एक-दूसरे के वली हैं। रहे वो लोग जो ईमान लाए मगर उन्होंने हिजरत नहीं की, उनसे तुम्हारी विलायत का कोई तअल्लुक़ नहीं यहां तक कि वो हिजरत करें; लेकिन अगर वो दीन के मुआमले में तुमसे मदद चाहें, तो तुमपर मदद वाजिब है, सिवाय यह कि यह मदद किसी ऐसी क़ौम के मुक़ाबले में हो जिससे तुम्हारा कोई मुआहदा हो; तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देखता है।

73. जो अहले कुफ़्र हैं, वो आपस में एक-दूसरे के दोस्त और मददगार हैं। अगर तुम ऐसा न करोगे, तो ज़मीन में फ़ितना और बड़ा फ़साद वाक़े होगा।

74. और जो लोग ईमान लाए और उन्होंने हिजरत की, और अल्लाह की राह में जिहाद किया, और जिन लोगों ने उन्हें पनाह दी, और मदद की, वही सच्चे मोमिन हैं, उनके लिए बख़्शिश और बा इज़्ज़त बेहतरीन रिज़्क़ है।

75. और जो लोग बाद में ईमान

अ़ज़ीज़ुन् हकीम (67)

लौ ला किताबुम्-मिनल्लाहि स-ब-क़ लमस्सकुम् फ़ीमा अख़ज़्तुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (68)

फ़कुलू मिम्मा ग़निम्तुम् हलालन् तय्यिबंव्-वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (69) ●

या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लिमन् फ़ी ऐदीकुम् मिनल्-अस्रा इंय्यअ्-लमिल्लाहु फ़ी क़ुलूबिकुम् ख़ैरंय्युअ्तिकुम् ख़ैरम् मिम्मा उख़ि-ज़ मिन्कुम् व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (70)

व इंय्युरीदू ख़ियान-त-क फ़-क़द् ख़ानुल्ला-ह मिन् क़ब्लु फ़-अम्क-न मिन्हुम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (71)

इन्नल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न आवव्-व न-सरू उलाइ-क बअ्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्ज़िन्, वल्लज़ी-न आमनू व लम् युहाजिरू मा लकुम् मिंव्वला-यतिहिम् मिन् शैइन् हत्ता युहाजिरू व इनिस्तन्सरूकुम् फ़िद्दीनी फ़-अ़लैकुमुन्नस्रु इल्ला अ़ला क़ौमिम् बैनकुम् व बैनहुम् मीसाक़ुन्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर (72)

वल्लज़ी-न क-फ़रू बअ्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्ज़िन्, इल्ला तफ़अ़लूहु तकुन् फ़ित्नतुन् फ़िल्अर्ज़ि व फ़सादुन् कबीर (73)

वल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि वल्लज़ी-न आवव्-व न-सरू उलाइ-क हुमुल्-मुअ्मिनू-न हक़्क़न्, लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम (74)

वल्लज़ी-न आमनू मिम्-बअ्दु व हाजरू

عَزِيزٌ حَكِيمٌ ﴿٦٧﴾
لَوْلَا كِتَٰبٌ مِّنَ ٱللَّهِ سَبَقَ لَمَسَّكُمْ
فِيمَآ أَخَذْتُمْ عَذَابٌ عَظِيمٌ ﴿٦٨﴾
فَكُلُوا۟ مِمَّا غَنِمْتُمْ حَلَٰلًا طَيِّبًا ۚ
ع وَٱتَّقُوا۟ ٱللَّهَ ۚ إِنَّ ٱللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٦٩﴾
يَٰٓأَيُّهَا ٱلنَّبِىُّ قُل لِّمَن فِىٓ أَيْدِيكُم
مِّنَ ٱلْأَسْرَىٰٓ إِن يَعْلَمِ ٱللَّهُ فِى قُلُوبِكُمْ
خَيْرًا يُؤْتِكُمْ خَيْرًا مِّمَّآ أُخِذَ مِنكُمْ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۗ وَٱللَّهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ﴿٧٠﴾
وَإِن يُرِيدُوا۟ خِيَانَتَكَ فَقَدْ خَانُوا۟
ٱللَّهَ مِن قَبْلُ فَأَمْكَنَ مِنْهُمْ ۗ
وَٱللَّهُ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٧١﴾
إِنَّ ٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَهَاجَرُوا۟ وَجَٰهَدُوا۟
بِأَمْوَٰلِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ
وَٱلَّذِينَ ءَاوَوا۟ وَّنَصَرُوٓا۟ أُو۟لَٰٓئِكَ بَعْضُهُمْ
أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَلَمْ
يُهَاجِرُوا۟ مَا لَكُم مِّن وَلَٰيَتِهِم مِّن شَىْءٍ
حَتَّىٰ يُهَاجِرُوا۟ ۚ وَإِنِ ٱسْتَنصَرُوكُمْ فِى
ٱلدِّينِ فَعَلَيْكُمُ ٱلنَّصْرُ إِلَّا عَلَىٰ قَوْمٍۭ بَيْنَكُمْ
وَبَيْنَهُم مِّيثَٰقٌ ۗ وَٱللَّهُ بِمَا تَعْمَلُونَ بَصِيرٌ ﴿٧٢﴾
وَٱلَّذِينَ كَفَرُوا۟ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَآءُ بَعْضٍ ۚ إِلَّا
تَفْعَلُوهُ تَكُن فِتْنَةٌ فِى ٱلْأَرْضِ وَفَسَادٌ كَبِيرٌ ﴿٧٣﴾
وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ وَهَاجَرُوا۟ وَجَٰهَدُوا۟
فِى سَبِيلِ ٱللَّهِ وَٱلَّذِينَ ءَاوَوا۟ وَّنَصَرُوٓا۟
أُو۟لَٰٓئِكَ هُمُ ٱلْمُؤْمِنُونَ حَقًّا ۚ لَّهُم مَّغْفِرَةٌ
وَرِزْقٌ كَرِيمٌ ﴿٧٤﴾
وَٱلَّذِينَ ءَامَنُوا۟ مِنۢ بَعْدُ وَهَاجَرُوا۟

وَجٰهَدُوْا مَعَكُمْ فَاُولٰٓئِكَ مِنْكُمْ ۚ وَاُولُوا
الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ
ع اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٧٥

سُوْرَةُ التَّوْبَةِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٢٩ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

بَرَآءَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى الَّذِيْنَ
عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١
فَسِيْحُوْا فِي الْاَرْضِ اَرْبَعَةَ اَشْهُرٍ
وَّاعْلَمُوْٓا اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۙ
وَاَنَّ اللّٰهَ مُخْزِي الْكٰفِرِيْنَ ۝٢
وَاَذَانٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖٓ اِلَى النَّاسِ
يَوْمَ الْحَجِّ الْاَكْبَرِ اَنَّ اللّٰهَ بَرِيْٓءٌ مِّنَ
الْمُشْرِكِيْنَ ۙ وَرَسُوْلُهٗ ۭ فَاِنْ تُبْتُمْ
فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۚ وَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاعْلَمُوْٓا
اَنَّكُمْ غَيْرُ مُعْجِزِي اللّٰهِ ۭ وَبَشِّرِ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٣
اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ
ثُمَّ لَمْ يَنْقُصُوْكُمْ شَيْــًٔا وَّلَمْ يُظَاهِرُوْا
عَلَيْكُمْ اَحَدًا فَاَتِمُّوْٓا اِلَيْهِمْ عَهْدَهُمْ
اِلٰى مُدَّتِهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُتَّقِيْنَ ۝٤
فَاِذَا انْسَلَخَ الْاَشْهُرُ الْحُرُمُ فَاقْتُلُوا
الْمُشْرِكِيْنَ حَيْثُ وَجَدْتُّمُوْهُمْ
وَخُذُوْهُمْ وَاحْصُرُوْهُمْ وَاقْعُدُوْا لَهُمْ
كُلَّ مَرْصَدٍ ۚ فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ فَخَلُّوْا
سَبِيْلَهُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝٥
وَاِنْ اَحَدٌ مِّنَ الْمُشْرِكِيْنَ اسْتَجَارَكَ

व जाहदू म-अ़कुम् फ़-उलाइ-क मिन्कुम्, व उलुल्-अऱ्हामि बअ्जुहुम्, औला बिबअ़्ज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम ●(75) ●

9 सूरतुत्तौबह 113

(मदनी) इस सूरः में अरबी के 11360 अक्षर, 2537 शब्द, 129 आयतें और 16 रुकू हैं।

बराअतुम्-मिनल्लाहि व रसूलिहि इलल्लज़ी-न आ़हत्तुम् मिनल् मुश्रिकीन (1)

फ़सीहू फ़िल्अर्ज़ि अर्ब-अ़-त अश्हुरिंव्वअ्लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ्जिज़िल्लाहि व अन्नल्ला-ह मुख़्ज़िल्-काफ़िरीन (2)

व अज़ानुम् मिनल्लाहि व रसूलिही इलन्नासि यौमल्-हज्जिल्-अक्बरि अन्नल्ला-ह बरीउम् मिनल्-मुश्रिकी-न व रसूलुहू, फ़-इन् तुब्तुम् फ़हु-व ख़ैरुल्लकुम् व इन् तवल्लैतुम् फ़अ्लमू अन्नकुम् ग़ैरु मुअ्जिज़िल्लाहि, व बश्शिरिल्लज़ी-न क-फ़रू बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (3)

इल्लल्लज़ी-न आ़हत्तुम् मिनल्-मुश्रिकी-न सुम्-म लम् यन्कुसूकुम् शैअंव्-व लम् युज़ाहिरू अ़लैकुम् अ-हदन् फ़-अतिम्मू इलैहिम् अ़ह्-दहुम् इला मुद्दतिहिम्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुत्तक़ीन (4)

फ़-इज़न्स-लख़ल् अश्हुरुल्-हुरुमु फ़क़्तुलुल्-मुश्रिकी-न हैसु वजत्तुमूहुम् व ख़ुज़ूहुम् वह्सुरूहुम् वक़्अुदू लहुम् कुल्-ल मर्सदिन् फ़-इन् ताबू व अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त फ़-ख़ल्लू सबीलहुम्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (5)

व इन् अ-हदुम् मिनल् मुश्रिकीनस्तजार-क

लाए और उन्होंने हिजरत की, और तुम्हारे साथ मिलकर जिहाद किया, तो ऐसे लोग भी तुम्हीं में से हैं; मगर खुदा की किताब में खून के रिश्तेदार एक-दूसरे के ज़्यादा हक़दार हैं, यक़ीनन अल्लाह को हर चीज़ का इल्म है।

सूरह अत्-तौबा मदनी

(आयतें 129, रुकूआत 16)

1. एलान-ए-बराअत है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से मुशरिकीन को जिनसे तुमने मुआहदे किए थे;

2. "पस चार महीने इस सरज़मीन पर और चल-फिर लो; और यह बात जान लो कि तुम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते, और यह कि अल्लाह काफ़िरों को रुसवा करता है"।

3. एलान-ए-आम है अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ से बड़े हज के दिन लोगों के लिए कि अल्लाह मुशरिकीन से बरि-उज़्-ज़िम्मा है और उसका रसूल भी। अब अगर तुम तौबा करो, तो तुम्हारे ही लिए बेहतर है; लेकिन अगर तुम मुंह मोड़ते हो, तो जान रखो कि तुम अल्लाह के क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते!" और काफ़िरों को एक दर्दनाक अज़ाब की खुशख़बरी दे दो;

4. सिवाय उन मुशरिकीन के जिनसे तुमने मुआहदे किए, फिर उन्होंने तुम्हारे साथ मुआहदे की तकमील में कोई कमी नहीं की और न तुम्हारे ख़िलाफ़ किसी की मदद की। तो उनके साथ उनके मुआहदे की तकमील उनकी मुक़र्ररह मुद्दत तक करो; यक़ीनन ख़ुदा मुत्तक़ियों को पसन्द करता है।

5. फिर जब हराम महीने गुज़र जाएं, तो मुशरिकीन को जहां कहीं पाओ क़त्ल करो, उन्हें पकड़ो, और उन्हें घेरो, और हर घात की जगह उनकी ताक में बैठो। फिर अगर वो तौबा करें, और नमाज़ क़ायम करें, और ज़कात दें तो तुम उनका रास्ता छोड़ दो; यक़ीनन अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला, निहायत रहमवाला है।

6. और अगर मुशरिकीन में से कोई तुमसे पनाह का तालिब हो, तो

उसे पनाह दे दो, यहां तक कि वह अल्लाह का कलाम सुन ले; फिर उसे उसके महफ़ूज़ मक़ाम पर पहुंचा दो, इसलिए कि वो ऐसे लोग हैं जो इल्म नहीं रखते।

7. इन मुशरिकीन के किसी अ़हद की ज़िम्मेदारी अल्लाह और उसके रसूल पर कैसे बाक़ी रह सकती है? — उन लोगों का मुआमला इससे अलग है जिनसे मस्जिदे हराम के पास तुमने अ़हद व पैमान किया था; तो जब तक वो तुम्हारे साथ सीधे रहें, तब तक तुम भी उनके साथ सीधे रहो; यक़ीनन अल्लाह मुत्तक़ियों को पसन्द फ़रमाता है।

8. — कैसे बाक़ी रह सकती है? जबकि उनका हाल यह है कि अगर वो तुम्हें दबा पाएं तो वो न तुम्हारे बारे में किसी क़राबत का ख़याल रखें और न किसी अ़हद व पैमान का, वो अपने मुंह से तुम्हें राज़ी करते हैं मगर दिल उनके इनकार करते हैं और उनमें अकसर फ़ासिक़ हैं।

9. उन्होंने अल्लाह की आयतों के बदले थोड़ी क़ीमत क़बूल की, और इस तरह वो उसकी राह इख़्तियार करने से रुक गए, यक़ीनन बहुत बुरा है जो वो कर रहे हैं,

10. किसी मोमिन के मुआमले में न तो क़राबत का ख़याल रखते हैं और न किसी अ़हद व पैमान का; वही हैं जिन्होंने हद से तजावुज़ किया।

11. पस अगर वो तौबा कर लें, और नमाज़ क़ायम करें, और ज़कात दें, तो वो तुम्हारे दीनी भाई हैं; और हम उन लोगों के लिए आयतों की तफ़सील करते हैं जो जानना चाहें।

12. और अगर अपने अ़हद व पैमान के बाद वो अपनी क़स्मों को तोड़ डालें और तुम्हारे दीन पर चोटें करने लगें, तो फिर कुफ़्र के सरदारों से जंग करो; उनकी क़स्में कुछ नहीं, ताकि वो बाज़ आ जाएं।

13. क्या तुम ऐसे लोगों से नहीं लड़ोगे जिन्होंने अपनी क़समें तोड़ी और रसूल को निकाल देने का क़सद किया और वही हैं जिन्होंने तुमसे छेड़ की इब्तिदा की? क्या तुम उनसे डरते हो? अगर तुम मोमिन हो तो इसका ज़्यादा मुस्तहिक़ अल्लाह है कि उससे डरो।

फ़-अजिर्हु हत्ता यस्म-अ़ कलामल्लाहि सुम्-म अब्लिग़्हु मअ्-म-नहू, ज़ालि-क बिअन्नहुम् क़ौमुल्ला यअ्लमून (6) ●

कै-फ़ यकूनु लिल्मुशिरकी-न अ़ह्दुन् अ़िन्दल्लाहि व अ़िन्-द रसूलिही इल्लल्लज़ी-न आ़हत्तुम् अ़िन्दल् मस्जिदिल्-हरामि फ़मस्तक़ामू लकुम् फ़स्तक़ीमू लहुम्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल मुत्तक़ीन (7)

कै-फ़ व इंय्यज़्हरू अ़लैकुम् ला यर्क़ुबू फ़ीकुम् इल्लंव्-व ला ज़िम्म-तन्, युर्ज़ूनकुम् बिअफ़्वाहिहिम् व तअ्बा क़ुलूबुहुम् व अक्सरुहुम् फ़ासिक़ून (8)

इश्तरौ बिआयातिल्लाहि स-मनन् क़लीलन् फ़-सद्दू अ़न् सबीलिही, इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ्मलून (9)

ला यर्क़ुबू-न फ़ी मुअ्मिनिन् इल्लंव्-व ला ज़िम्म-तन्, व उलाइ-क हुमुल मुअ्तदून (10)

फ़-इन् ताबू व अक़ामुस्सला-त व आतवुज़्ज़का-त फ़-इख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि, व नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ्लमून (11)

व इन्न-कसू ऐमानहुम् मिम्-बअ्दि अ़ह्दिहिम् व त-अ़नू फ़ी दीनिकुम् फ़क़ातिलू अ-इम्मतल्-कुफ़्रि इन्नहुम् ला ऐमा-न लहुम् लअ़ल्लहुम् यन्तहून (12)

अला तुक़ातिलू-न क़ौमन् न-कसू ऐमानहुम् व हम्मू बि-इख़्राजिर्रसूलि व हुम् ब-दऊकुम् अव्व-ल मर्रतिन्, अतख़्शौनहुम् फ़ल्लाहु अहक़्क़ु अन् तख़्शौहु इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (13)

فَاَجِرْهُ حَتّٰى يَسْمَعَ كَلٰمَ اللّٰهِ
ثُمَّ اَبْلِغْهُ مَاْمَنَهٗ ؕ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ
ع قَوْمٌ لَّا يَعْلَمُوْنَ ۝٦
كَيْفَ يَكُوْنُ لِلْمُشْرِكِيْنَ عَهْدٌ عِنْدَ
اللّٰهِ وَعِنْدَ رَسُوْلِهٖٓ اِلَّا الَّذِيْنَ عٰهَدْتُّمْ
عِنْدَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ ۚ فَمَا اسْتَقَامُوْا لَكُمْ
فَاسْتَقِيْمُوْا لَهُمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ
الْمُتَّقِيْنَ ۝٧
كَيْفَ وَاِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ لَا يَرْقُبُوْا
فِيْكُمْ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ يُرْضُوْنَكُمْ
بِاَفْوَاهِهِمْ وَتَاْبٰى قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاَكْثَرُهُمْ
فٰسِقُوْنَ ۝٨
اِشْتَرَوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا فَصَدُّوْا
عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٩
لَا يَرْقُبُوْنَ فِيْ مُؤْمِنٍ اِلًّا وَّلَا ذِمَّةً ؕ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُعْتَدُوْنَ ۝١٠
فَاِنْ تَابُوْا وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا
الزَّكٰوةَ فَاِخْوَانُكُمْ فِي الدِّيْنِ ؕ
وَنُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝١١
وَاِنْ نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ مِّنْ بَعْدِ عَهْدِهِمْ
وَطَعَنُوْا فِيْ دِيْنِكُمْ فَقَاتِلُوْٓا اَئِمَّةَ الْكُفْرِ ۙ
اِنَّهُمْ لَآ اَيْمَانَ لَهُمْ لَعَلَّهُمْ يَنْتَهُوْنَ ۝١٢
اَلَا تُقَاتِلُوْنَ قَوْمًا نَّكَثُوْٓا اَيْمَانَهُمْ
وَهَمُّوْا بِاِخْرَاجِ الرَّسُوْلِ وَهُمْ
بَدَءُوْكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ؕ اَتَخْشَوْنَهُمْ ۚ
فَاللّٰهُ اَحَقُّ اَنْ تَخْشَوْهُ اِنْ كُنْتُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝١٣

14. उनसे लड़ो, अल्लाह तुम्हारे हाथों से उन्हें अज़ाब देगा और उन्हें रुसवा करेगा और उनके मुक़ाबले में वह तुम्हारी मदद करेगा, और उन लोगों के सीनों को जो ईमान रखते हैं शिफ़ा बख़्शेगा,

15. और उनके दिलों का गुस्सा मिटाएगा; अल्लाह जिसे चाहेगा उसपर तवज्जुह फ़रमाएगा, अल्लाह तो सब कुछ जाननेवाला, हिकमत वाला है।

16. क्या तुमने यह समझ रखा है कि तुम यूं ही छोड़ दिए जाओगे, हालांकि अल्लाह ने अभी उन लोगों को मुमय्यज़ ही नहीं किया जिन्होंने तुममें से जिहाद किया और अल्लाह, उसके रसूल और मोमिनों को छोड़कर किसी को जिगरी दोस्त नहीं बनाया। तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है।

17. यह मुशरिकीन का काम नहीं कि वो अल्लाह की मस्जिदों को आबाद करें और उसका इंतिज़ाम संभालें, जबकि वो खुद अपने ऊपर कुफ़्र के गवाह हैं, उन लोगों के सारे आमाल वबाले जान साबित हुए, और आग में वो हमेशा रहेंगे।

18. अल्लाह की मस्जिदों का मुंतज़िम और आबादकार वही हो सकता है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया, नमाज़ क़ायम की और ज़कात दी और अल्लाह के सिवा किसी से न डरा, पस ऐसे ही लोग तवक़्क़ो है कि हिदायतयाब होंगे।

19. क्या तुमने हाजियों को पानी पिलाने और मस्जिद-ए-हराम के इंतिज़ाम को उस शख़्स के काम के बराबर ठहरा लिया है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान लाया और उसने अल्लाह की राह में जिद्दो जहद की? अल्लाह के नज़दीक वो बराबर नहीं; और अल्लाह उन लोगों की रहनुमाई नहीं करता जो ज़ुल्म पेशा हों।

20. जो लोग ईमान लाए और हिजरत की और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद किया अल्लाह के नज़दीक दर्जा में वो बहुत बड़े हैं; और वही कामयाब हैं।

21. उन्हें उनका रब अपनी रहमत और खुशनूदी, और ऐसे बाग़ात की बशारत देता है जिनमें उनके लिए दाइमी नेमत है,

22. उनमें वो हमेशा रहेंगे; बेशक

क़ातिलूहुम् युअ़ज़्ज़िब्हुमुल्लाहु बिऐदीकुम व युख़्ज़िहिम् व यन्सुर्कुम् अ़लैहिम् व यश्फ़ि सुदू-र क़ौमिम्-मुअ्मिनीन (14)

व युज़्हिब् ग़ै-ज़ क़ुलूबिहिम्, व यतूबुल्लाहु अ़ला मंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (15)

अम् हसिब्तुम् अन् तुत्रकू व लम्मा यअ्-लमिल्लाहुल्लज़ी-न जाहदू मिन्कुम् व लम् यत्तख़िज़ू मिन् दूनिल्लाहि व ला रसूलिही व लल्मुअ्मिनी-न वली-जतन्, वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ्मलून (16) ●

मा का-न लिल्मुश्रिकी-न अंय्यअ्मुरू मसाजिदल्लाहि शाहिदी-न अ़ला अन्फ़ुसिहिम् बिल्कुफ़्रि, उलाइ-क हबितत् अअ्मालुहुम् व फ़िन्नारि हुम् ख़ालिदून (17)

इन्नमा यअ्मुरू मसाजिदल्लाहि मन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व अक़ामस्सला-त व आतज़्ज़का-त व लम् यख़्-श इल्लल्ला-ह, फ़-अ़सा उलाइ-क अंय्यकूनू मिनल् मुह्तदीन (18)

अ-जअ़ल्तुम् सिक़ा-यतल्-हाज्जि व अ़िमा-रतल् मस्जिदिल्-हरामि कमन् आम-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि व जाह-द फ़ी सबीलिल्लाहि, ला यस्तवू-न अ़िन्दल्लाहि, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन ● (19)

अल्लज़ी-न आमनू व हाजरू व जाहदू फ़ी सबीलिल्लाहि बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् अअ्-ज़मु द-र-जतन् अ़िन्दल्लाहि, व उलाइ-क हुमुल् फ़ाइज़ून (20)

युबश्शिरुहुम् रब्बुहुम् बिरह्मतिम् मिन्हु व रिज़्वानिंव्-व जन्नातिल्-लहुम् फ़ीहा नअ़ीमुम्-मुक़ीम (21)

ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, इन्नल्ला-ह अ़िन्दहू

قَاتِلُوْهُمْ يُعَذِّبْهُمُ اللّٰهُ بِاَيْدِيْكُمْ
وَيُخْزِهِمْ وَيَنْصُرْكُمْ عَلَيْهِمْ وَيَشْفِ
صُدُوْرَ قَوْمٍ مُّؤْمِنِيْنَ ⑭
وَيُذْهِبْ غَيْظَ قُلُوْبِهِمْ ؕ وَيَتُوْبُ اللّٰهُ
عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ⑮
اَمْ حَسِبْتُمْ اَنْ تُتْرَكُوْا وَلَمَّا يَعْلَمِ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ جٰهَدُوْا مِنْكُمْ وَلَمْ يَتَّخِذُوْا
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلَا رَسُوْلِهٖ وَلَا الْمُؤْمِنِيْنَ
وَلِيْجَةً ؕ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑯ ع
مَا كَانَ لِلْمُشْرِكِيْنَ اَنْ يَّعْمُرُوْا مَسٰجِدَ
اللّٰهِ شٰهِدِيْنَ عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ بِالْكُفْرِ ؕ
اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ ۚۖ وَفِى النَّارِ
هُمْ خٰلِدُوْنَ ⑰
اِنَّمَا يَعْمُرُ مَسٰجِدَ اللّٰهِ مَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَاَقَامَ الصَّلٰوةَ وَاٰتَى
الزَّكٰوةَ وَلَمْ يَخْشَ اِلَّا اللّٰهَ فَعَسٰٓى
اُولٰٓئِكَ اَنْ يَّكُوْنُوْا مِنَ الْمُهْتَدِيْنَ ⑱
اَجَعَلْتُمْ سِقَايَةَ الْحَآجِّ وَعِمَارَةَ
الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ كَمَنْ اٰمَنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَجَاهَدَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ لَا يَسْتَوٗنَ
عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ⑲
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهَاجَرُوْا وَجَاهَدُوْا فِىْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۙ اَعْظَمُ
دَرَجَةً عِنْدَ اللّٰهِ ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ⑳
يُبَشِّرُهُمْ رَبُّهُمْ بِرَحْمَةٍ مِّنْهُ وَرِضْوَانٍ
وَّجَنّٰتٍ لَّهُمْ فِيْهَا نَعِيْمٌ مُّقِيْمٌ ㉑
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗٓ

अल्लाह के पास बड़ा अजर है।

23. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने बाप और भाइयों को अपने रफ़ीक़ न बनाओ, अगर वो ईमान के मुक़ाबले में कुफ़्र को पसन्द करें; तुममें से जो कोई उन्हें अपना रफ़ीक़ बनाएगा, तो ऐसे ही लोग ज़ालिम होंगे।

24. कह दोः "अगर तुम्हारे बाप, तुम्हारे बेटे, तुम्हारे भाई, तुम्हारी बीवियां, और तुम्हारे अज़ीज़ व अक़ारिब, और माल जो तुमने कमाए हैं, और कारोबार जिसके मांद पड़ने का तुम्हें अन्देशा है, और रिहाइश गाहें जिन्हें तुम पसन्द करते हो, तुम्हें अल्लाह और उसके रसूल, और उसकी राह में जिहाद करने से ज़्यादा अज़ीज़ हैं, तो इंतिज़ार करो यहां तक कि अल्लाह अपना फ़ैसला ले आएः और अल्लाह तो उन लोगों की रहनुमाई नहीं फ़रमाता जो फ़ासिक़ हों।"

25. अल्लाह बहुत-से मौक़े पर तुम्हारी मदद कर चुका है, और हुनैन के दिन भी, जब तुम्हारी कसरत ने तुम्हें ग़र्रा (गुरूर) में मुबतला कर दिया, तो वह तुम्हारे कुछ काम न आई, और ज़मीन अपनी वुसअत के बावजूद तुमपर तंग हो गई, फिर तुम पीठ फेरकर भाग खड़े हुए।

26. बिलआख़िर अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनीन पर अपनी सकीनत नाज़िल फ़रमाई, और ऐसी फ़ौजें उतारीं जिन्हें तुमने नहीं देखा, और काफ़िरों को अज़ाब दिया; और यही बदला है काफ़िरों का।

27. फिर इसके बाद अल्लाह जिसको चाहता है उसे तौबा की तौफ़ीक़ देता है; अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला, निहायत मेहरबान है।

28. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, मुशरिकीन तो महज़ नापाक हैं; लिहाज़ा इस साल के बाद वो मस्जिद-ए-हराम में दाख़िल न हों। और अगर तुम्हें इफ़लास का ख़ौफ़ हो, तो बईद नहीं कि अल्लाह अगर चाहेगा तो तुम्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर देगा; यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जानने वाला, निहायत हिकमतवाला है।

29. वो अहले किताब जो न अल्लाह पर ईमान रखते हैं और न

अज्रुन् अज़ीम (22)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू आबा-अकुम् व इख़्वानकुम् औलिया-अ इनिस्त-हब्बुल्-कुफ़्-र अ़लल्-ईमानि, व मंय्य-तवल्लहुम् मिन्कुम् फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (23)

कुल् इन् का-न आबाउकुम् व अब्नाउकुम् व इख़्वानुकुम् व अज़्वाजुकुम् व अ़शीरतुकुम् व अम्वालु-निक़्त-रफ़्तुमूहा व तिजारतुन् तख़्शौ-न कसादहा व मसाकिनु तर्ज़ौनहा अहब्-ब इलैकुम् मिनल्लाहि व रसूलिही व जिहादिन् फ़ी सबीलिही फ़-तरब्बसू हत्ता यअ्तियल्लाहु बिअम्रिही, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल्-फ़ासिक़ीन (24) ●

ल-क़द् न-स-रकुमुल्लाहु फ़ी मवाति-न कसीरतिंव्-व यौ-म हुनैनिन् इज़् अअ्-जबत्कुम् कस्-रतुकुम् फ़-लम् तुग़्नि अ़न्कुम् शैअंव्-व ज़ाक़त् अ़लैकुमुल् अर्ज़ु बिमा रहुबत् सुम्-म वल्लैतुम् मुद्बिरीन (25)

सुम्-म अन्ज़लल्लाहु सकीन-तहू अ़ला रसूलिही व अ़लल्-मुअ्मिनी-न व अन्ज़-ल जुनूदल्लम् तरौहा व अ़ज़्ज़बल्लज़ी-न क-फ़रू, व ज़ालि-क जज़ाउल्-काफ़िरीन (26)

सुम्-म यतूबुल्लाहु मिम्-बअ्दि ज़ालि-क अ़ला मंय्यशा-उ, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (27)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्नमल्-मुश्रिकू-न न-जसुन् फ़ला यक़रबुल् मस्जिदल्-हरा-म बअ्-द आ़मिहिम् हाज़ा व इन् ख़िफ़्तुम् अ़ैल-तन् फ़सौ-फ़ युग़्नीकुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही इन् शा-अ, इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् हकीम (28)

क़ातिलुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व ला बिल्यौमिल्-आख़िरि व ला युहर्रिमू-न मा हर्रमल्लाहु व रसूलुहू

أَجْرٌ عَظِيمٌ ﴿٢٢﴾
يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا لَا تَتَّخِذُوٓا آبَآءَكُمْ
وَإِخْوَانَكُمْ أَوْلِيَآءَ إِنِ اسْتَحَبُّوا الْكُفْرَ
عَلَى الْإِيمَانِ ۚ وَمَنْ يَتَوَلَّهُمْ مِنْكُمْ
فَأُولَٰٓئِكَ هُمُ الظَّٰلِمُونَ ﴿٢٣﴾
قُلْ إِنْ كَانَ آبَآؤُكُمْ وَأَبْنَآؤُكُمْ وَإِخْوَانُكُمْ
وَأَزْوَاجُكُمْ وَعَشِيرَتُكُمْ وَأَمْوَالٌ اقْتَرَفْتُمُوهَا
وَتِجَارَةٌ تَخْشَوْنَ كَسَادَهَا وَمَسَٰكِنُ تَرْضَوْنَهَآ
أَحَبَّ إِلَيْكُمْ مِنَ اللَّهِ وَرَسُولِهِ وَجِهَادٍ
فِي سَبِيلِهِ فَتَرَبَّصُوا حَتَّىٰ يَأْتِيَ اللَّهُ بِأَمْرِهِ ۗ
وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفَٰسِقِينَ ﴿٢٤﴾
لَقَدْ نَصَرَكُمُ اللَّهُ فِي مَوَاطِنَ كَثِيرَةٍ ۙ
وَيَوْمَ حُنَيْنٍ ۙ إِذْ أَعْجَبَتْكُمْ كَثْرَتُكُمْ فَلَمْ
تُغْنِ عَنْكُمْ شَيْـًٔا وَضَاقَتْ عَلَيْكُمُ الْأَرْضُ
بِمَا رَحُبَتْ ثُمَّ وَلَّيْتُمْ مُدْبِرِينَ ﴿٢٥﴾
ثُمَّ أَنْزَلَ اللَّهُ سَكِينَتَهُ عَلَىٰ رَسُولِهِ وَعَلَى
الْمُؤْمِنِينَ وَأَنْزَلَ جُنُودًا لَمْ تَرَوْهَا وَعَذَّبَ
الَّذِينَ كَفَرُوا ۚ وَذَٰلِكَ جَزَآءُ الْكَٰفِرِينَ ﴿٢٦﴾
ثُمَّ يَتُوبُ اللَّهُ مِنْ بَعْدِ ذَٰلِكَ عَلَىٰ
مَنْ يَشَآءُ ۗ وَاللَّهُ غَفُورٌ رَحِيمٌ ﴿٢٧﴾
يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوٓا إِنَّمَا الْمُشْرِكُونَ
نَجَسٌ فَلَا يَقْرَبُوا الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ بَعْدَ
عَامِهِمْ هَٰذَا ۚ وَإِنْ خِفْتُمْ عَيْلَةً فَسَوْفَ
يُغْنِيكُمُ اللَّهُ مِنْ فَضْلِهِ إِنْ شَآءَ ۚ
إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ حَكِيمٌ ﴿٢٨﴾
قَٰتِلُوا الَّذِينَ لَا يُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَلَا بِالْيَوْمِ
الْآخِرِ وَلَا يُحَرِّمُونَ مَا حَرَّمَ اللَّهُ وَرَسُولُهُ

وَلَا يَدِيْنُوْنَ دِيْنَ الْحَقِّ مِنَ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْكِتٰبَ حَتّٰى يُعْطُوا الْجِزْيَةَ عَنْ
ع يَّدٍ وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝٢٩
وَقَالَتِ الْيَهُوْدُ عُزَيْرُ ابْنُ اللّٰهِ وَقَالَتِ
النَّصٰرَى الْمَسِيْحُ ابْنُ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ قَوْلُهُمْ
بِاَفْوَاهِهِمْ ۚ يُضَاهِـُٔوْنَ قَوْلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
مِنْ قَبْلُ ؕ قٰتَلَهُمُ اللّٰهُ ۚ اَنّٰى
يُؤْفَكُوْنَ ۝٣٠
اِتَّخَذُوْٓا اَحْبَارَهُمْ وَرُهْبَانَهُمْ اَرْبَابًا
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَالْمَسِيْحَ ابْنَ مَرْيَمَ ۚ
وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوْٓا اِلٰهًا وَّاحِدًا ۚ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ سُبْحٰنَهٗ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٣١
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّطْفِـُٔوْا نُوْرَ اللّٰهِ بِاَفْوَاهِهِمْ
وَيَاْبَى اللّٰهُ اِلَّآ اَنْ يُّتِمَّ نُوْرَهٗ وَلَوْ كَرِهَ
الْكٰفِرُوْنَ ۝٣٢
هُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰى
وَدِيْنِ الْحَقِّ لِيُظْهِرَهٗ عَلَى الدِّيْنِ كُلِّهٖ ۙ
النصف وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُوْنَ ۝٣٣
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ
الْاَحْبَارِ وَالرُّهْبَانِ لَيَاْكُلُوْنَ اَمْوَالَ
النَّاسِ بِالْبَاطِلِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ
وَالَّذِيْنَ يَكْنِزُوْنَ الذَّهَبَ وَالْفِضَّةَ وَلَا
يُنْفِقُوْنَهَا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۙ فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٣٤ۙ
يَّوْمَ يُحْمٰى عَلَيْهَا فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ فَتُكْوٰى بِهَا
جِبَاهُهُمْ وَجُنُوْبُهُمْ وَظُهُوْرُهُمْ ؕ هٰذَا
مَا كَنَزْتُمْ لِاَنْفُسِكُمْ فَذُوْقُوْا مَا
كُنْتُمْ تَكْنِزُوْنَ ۝٣٥

व ला यदीनू-न दीनल्-हक़्क़ि मिनल्लज़ी-न ऊतुल्किता-ब हत्ता युअ्तुल् जिज़्य-त अंय्यदिंव्-व हुम् साग़िरून (29) ●

व क़ालतिल्-यहूदु अुज़ैरु-निब्नुल्लाहि व क़ालतिन्नसारल्-मसीहुब्नुल्लाहि, ज़ालि-क क़ौलुहुम् बिअफ़्वाहिहिम् युज़ाहिऊ-न क़ौलल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ब्लु, क़ात-लहुमुल्लाहु अन्ना युअ्फ़कून (30)

इत्त-ख़ज़ू अह्बारहुम् व रुह्बानहुम् अर्बाबम् मिन् दूनिल्लाहि वल्मसीहब्-न मर्य-म व मा उमिरू इल्ला लियअ्बुदू इलाहंव्वाहिदन् ला इला-ह इल्ला हु-व, सुब्हानहू अ़म्मा युश्रिकून (31)

युरीदू-न अंय्युत्फ़िऊ नूरल्लाहि बिअफ़्वाहिहिम् व यअ्बल्लाहु इल्ला अंय्युतिम्-म नूरहु व लौ करिहल् काफ़िरून (32)

हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल् मुश्रिकून ●(33)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्-न कसीरम् मिनल् अह्बारि वर्रुह्बानि ल-यअ्कुलू-न अम्वालन्नासि बिल्बातिलि व यसुद्दू-न अ़न् सबीलिल्लाहि, वल्लज़ी-न यक्निज़ूनज़्ज़-ह-ब वल्-फ़िज़्ज़-त व ला युन्फ़िक़ूनहा फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-बश्शिर्हुम् बिअ़ज़ाबिन् अलीम (34)

यौ-म युह्मा अ़लैहा फ़ी नारि जहन्न-म फ़तुक्वा बिहा जिबाहुहुम् व जुनूबुहुम् व ज़ुहूरुहुम्, हाज़ा मा कनज़्तुम् लिअन्फ़ुसिकुम् फ़ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्निज़ून (35)

रोज़-ए-आख़िर पर और न अल्लाह और उसके रसूल के हराम ठहराए हुए को हराम क़रार देते हैं और न दीने हक़ की पैरवी करते हैं, उनसे लड़ो, यहां तक कि वो इक़्तिदार से दस्त बरदार होकर और छोटे (मातहत) बन कर जिज़्या देने लगें।

30. यहूदी कहते हैं कि "उज़ैर अल्लाह का बेटा है" और ईसाई कहते हैं कि "मसीह अल्लाह का बेटा है!" ये उनकी अपने मुंह की बातें हैं, ये उन लोगों की बात की नक़्ल कर रहे हैं जो इससे पहले कुफ़्र में मुबतला हुए। अल्लाह की मार उनपर! ये कहां से औंधे हुए जा रहे हैं।

31. उन्होंने अल्लाह से हटकर अपने फ़ुक़हा ओर राहिबों को अपने रब बना लिए और मसीह इब्ने मरयम को (इससे बढ़कर अल्लाह का बेटा) — हालांकि उन्हें इसके सिवा और कोई हुक्म नहीं दिया गया था कि वो अकेले माबूद की बन्दगी करें जिसके सिवा कोई माबूद नहीं; जो शिर्क ये करते हैं उससे वह बुलन्द व बरतर है,

32. — चाहते हैं अल्लाह की रौशनी को अपने मुंह से बुझा दें; मगर अल्लाह सिवाय इसके कि अपनी रौशनी को मुकम्मल करे और सब बातों से इनकार करता है, ख़्वाह काफ़िरों को नागवार ही हो।

33. वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीन-ए-हक़ के साथ भेजा ताकि उसे सारे दीन पर ग़ालिब कर दे, ख़्वाह मुश्रिकीन को नागवार हो।

34. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, यक़ीनन बहुत से फ़ुक़हा और राहिब लोगों के माल बातिल तरीक़ों से खाते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और जो लोग सोना और चांदी जमा करके रखते हैं और उन्हें अल्लाह की राह में ख़र्च नहीं करते, उन्हें दर्दनाक अज़ाब की ख़ुश ख़बरी दे दो।

35. जिस दिन उनको जहन्नम की आग में तपाया जाएगा फिर उससे उनकी पेशानियों और उनके पहलुओं और उनकी पीठों को दाग़ा जाएगा: "यही है जो तुमने अपने लिए ज़ख़ीरा किया; तो जो कुछ तुम ज़ख़ीरा करते रहे हो उसका मज़ा चखो!"

36. यक़ीनन महीनों की तादाद अल्लाह के नविश्ता में अल्लाह के अपने नज़दीक उस दिन से जबकि उसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया बारह महीने हैं; उनमें चार हुरमत के हैं, यही दीन-ए-क़य्यिम है। पस तुम उनमें अपने ऊपर ज़ुल्म न करो और मुशरिकीन से जंग करो तुम सबके सब जिस तरह वो सबके सब तुमसे जंग करते हैं; और जान रखो कि अल्लाह मुत्तक़ियों के साथ है।

37. नसी (महीने को आगे-पीछे कर देना) तो बस कुफ़्र में एक इज़ाफ़ा है जिससे काफ़िर गुमराही में मुबतला होते हैं; किसी साल वो उसे हलाल ठहरा लेते हैं, और किसी साल उसको हराम कर लेते हैं ताकि अल्लाह के हराम किए हुए (महीनों) की तादाद पूरी कर लें, और इस तरह अल्लाह के हराम किए हुए को हलाल ठहरा लें। उनके अपने बुरे आमाल उनके लिए खुशनुमा कर दिए गए हैं? और अल्लाह कुफ़्र इख़्तियार करने वाले लोगों को हिदायत नहीं देता।

38. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम्हें क्या हो गया है कि जब तुमसे कहा जाता है कि "अल्लाह की राह में निकलो", तो तुम ज़मीन पर ढहे जाते हो? क्या तुम आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया ही की ज़िन्दगी पर राज़ी हो गए? दुनिया की ज़िन्दगी का सामान-ए-लुत्फ़ तो आख़िरत के हिसाब में कुछ थोड़ा ही है।

39. अगर तुम न निकलोगे, तो वह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा, और वह तुम्हारी जगह दूसरी क़ौम को ले आएगा; और तुम उसका कुछ न बिगाड़ सकोगे, और अल्लाह हर एक चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

40. अगर तुम उसकी मदद न भी करो, तो अल्लाह उसकी मदद उस वक़्त कर चुका है जबकि काफ़िरों ने उसे इस हालत में निकाला कि वह दो में का दूसरा था, जब वो दोनों ग़ार में थे, जबकि वह अपने साथी से कह रहा था, "ग़म न करो; यक़ीनन अल्लाह हमारे साथ है!" फिर अल्लाह ने उसपर अपनी सकीनत उतारी, और ऐसी फ़ौजों से उसकी मदद की जिन्हें तुम देख न सके; और काफ़िरों का बोल नीचा कर दिया, बोल तो अल्लाह ही का ऊंचा रहता है; अल्लाह ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है।

इन्-न अ़िद्द-तश्शुहूरि अ़िन्दल्लाहिस्ना अ़-श-र शहरन् फ़ी किताबिल्लाहि यौ-म ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ मिन्हा अर्-ब-अ़तुन् हुरूमुन्, ज़ालिकद्दीनुल-क़य्यिमु फ़ला तज़्लिमू फ़ीहिन्-न अन्फ़ु-सकुम्, व क़ातिलुल्, मुश्रिकी-न काफ़्फ़-तन् कमा युक़ातिलूनकुम् काफ़्फ़-तन्, वअ़्लमू अन्नल्ला-ह मअ़ल्मुत्तक़ीन (36)

इन्नमन्नसी-उ ज़ियादतुन् फ़िल्कुफ़्रि युज़ल्लु बिहिल्लज़ी-न क-फ़रू युहिल्लूनहू आ़मंव्-व युहर्रिमूनहू आ़मल्-लियुवातिऊ अ़िद्द-त मा हर्रमल्लाहु फ़युहिल्लू मा हर्रमल्लाहु, ज़ुय्यि-न लहुम् सू-उ अअ़्मालिहिम्, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल्-काफ़िरीन (37) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू मा लकुम् इज़ा क़ी-ल लकुमुन्फ़िरू फ़ी सबीलिल्लाहिस्साक़ल्तुम् इलल्-अर्ज़ि, अ-रज़ीतुम् बिल्हयातिद्दुन्या मिनल्-आख़िरति फ़मा मताअुल्-हयातिद्दुन्या फ़िल्आख़िरति इल्ला क़लील (38)

इल्ला तन्फ़िरू युअ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमंव्-व यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ैरकुम् व ला तज़ुर्रूहु शैअन्, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (39)

इल्ला तन्सुरूहु फ़-क़द् न-सरहुल्लाहु इज़् अख़्र-जहुल्लज़ी-न क-फ़रू सानियस्नैनी इज़् हुमा फ़िल्ग़ारि इज़् यक़ूलु लिसाहिबिही ला तह्ज़न् इन्नल्ला-ह म-अ़ना फ़-अन्ज़-लल्लाहु सकीन-तहू अ़लैहि व अय्य-दहू बिजुनूदिल्लम् तरौहा व ज-अ़-ल कलि-मतल्लज़ी-न क-फ़रूस्सुफ़्ला, व कलि-मतुल्लाहि हियल्-अ़ुल्या, वल्लाहु अ़ज़ीज़ुन् हकीम (40)

إِنَّ عِدَّةَ الشُّهُورِ عِنْدَ اللّٰهِ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا
فِي كِتٰبِ اللّٰهِ يَوْمَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ
مِنْهَآ أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ۚ ذٰلِكَ الدِّينُ الْقَيِّمُ ۙ
فَلَا تَظْلِمُوا فِيهِنَّ أَنْفُسَكُمْ وَقَاتِلُوا
الْمُشْرِكِينَ كَآفَّةً كَمَا يُقَاتِلُونَكُمْ كَآفَّةً ۚ
وَاعْلَمُوٓا أَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِينَ ۝
إِنَّمَا النَّسِيٓءُ زِيَادَةٌ فِي الْكُفْرِ يُضَلُّ بِهِ
الَّذِينَ كَفَرُوا يُحِلُّونَهُ عَامًا وَّيُحَرِّمُونَهُ
عَامًا لِّيُوَاطِئُوا عِدَّةَ مَا حَرَّمَ اللّٰهُ فَيُحِلُّوا
مَا حَرَّمَ اللّٰهُ ۚ زُيِّنَ لَهُمْ سُوٓءُ أَعْمَالِهِمْ ۗ
ع وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْكٰفِرِينَ ۝
يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا مَا لَكُمْ إِذَا قِيلَ
لَكُمُ انْفِرُوا فِي سَبِيلِ اللّٰهِ اثَّاقَلْتُمْ
إِلَى الْأَرْضِ ۚ أَرَضِيتُمْ بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
مِنَ الْآخِرَةِ ۚ فَمَا مَتَاعُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
فِي الْآخِرَةِ إِلَّا قَلِيلٌ ۝
إِلَّا تَنْفِرُوا يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا أَلِيمًا ۙ
وَّيَسْتَبْدِلْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ وَلَا تَضُرُّوهُ
شَيْـًٔا ۗ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۝
إِلَّا تَنْصُرُوهُ فَقَدْ نَصَرَهُ اللّٰهُ إِذْ أَخْرَجَهُ
الَّذِينَ كَفَرُوا ثَانِيَ اثْنَيْنِ إِذْ هُمَا
فِي الْغَارِ إِذْ يَقُولُ لِصَاحِبِهِ لَا تَحْزَنْ
إِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا ۚ فَأَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِينَتَهُ
عَلَيْهِ وَأَيَّدَهُ بِجُنُودٍ لَّمْ تَرَوْهَا وَجَعَلَ
كَلِمَةَ الَّذِينَ كَفَرُوا السُّفْلٰى ۗ
وَكَلِمَةُ اللّٰهِ هِيَ الْعُلْيَا ۗ وَاللّٰهُ
عَزِيزٌ حَكِيمٌ ۝

41. हलके और बोझल निकल पड़ो! और अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करो; यही तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।

42. अगर क़रीब (मुस्तक़बिल में) ही कुछ मिलने वाला होता, और सफ़र भी हलका होता, तो वो ज़रूर तुम्हारे पीछे चल पड़ते, मगर मसाफ़त उन्हें कठिन और बहुत दूर दराज़ की नज़र आई। अब वो अल्लाह की क़समें खाएंगे कि "अगर हमें इसकी इस्तिताअत होती तो हम ज़रूर तुम्हारे साथ निकलते"। वो अपने आपको हलाकत में डाल रहे हैं; और अल्लाह ख़ूब जानता है कि यक़ीनन वो झूटे हैं।

43. अल्लाह ने तुम्हें माफ़ किया! तुमने उन्हें इजाज़त क्यों दे दी, यहां तक कि जो सच्चे हैं वो तुमपर ज़ाहिर हो जाते, और झूटों को भी तुम जान लेते?

44. जो लोग अल्लाह और यौम-ए-आख़िर पर ईमान रखते हैं वो कभी तुमसे यह नहीं चाहेंगे कि उन्हें अपने मालों और अपनी जानों के साथ जिहाद करने से माफ़ रखा जाए; और अल्लाह उन्हें ख़ूब जानता है जो डर रखते हैं।

45. तुम से रुख़सत तो बस वही लोग मांगते हैं जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान नहीं रखते, और जिनके दिल शक में पड़े हैं, पस वो अपने शक में डांवांडोल हो रहे हैं।

46. अगर वो निकलने का इरादा करते तो इसके लिए कुछ सामान मुहय्या करते, लेकिन अल्लाह ने उनके उठने को नापसन्द किया, तो उसने उन्हें रोक दिया, उनसे कह दिया, "बैठने वालों के साथ बैठ रहो"।

47. अगर वो तुममें शामिल होकर निकलते भी तो ख़राबी के सिवा तुम्हारे अन्दर वो किसी और चीज़ का इज़ाफ़ा न करते, और वो तुममें तुम्हारे दरमियान फ़ितना परदाज़ी के लिए दौड़-धूप करते, और तुममें उनकी सुनने वाले हैं; और अल्लाह ज़ालिमों को ख़ूब जानता है।

48. उन्होंने तो इससे पहले भी फ़साद डालना चाहा था, और वो तुम्हारे ख़िलाफ़ वाक़िआत व उमूर के पलटने में लगे रहे; यहां तक कि हक़ आ गया, और अल्लाह का अमर (हुक्म) ज़ाहिर होकर रहा, अगरचे वो नापसन्द ही करते रहे।

इन्फ़िरू ख़िफ़ाफ़ंव्-व सिक़ालंव्-व जाहिदू बिअम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम् फ़ी सबीलिल्लाहि, ज़ालिकुम् ख़ैरूल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून (41)

लौ का-न अ़-रज़न् क़रीबंव्-व स-फ़रन् क़ासिदल्लत्तबअू-क व लाकिम्-बअुदत् अ़लैहिमुश्शुक़्क़तु, व स-यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लविस्त-तअ्ना ल-ख़रज्ना म-अ़कुम् युह्लिकू-न अन्फ़ु-सहुम् वल्लाहु यअ्लमु इन्नहुम् लकाज़िबून (42)●

अ़फ़ल्लाहु अ़न्-क लि-म अज़िन्-त लहुम् हत्ता य-तबय्य-न लकल्लज़ी-न स-द-क़ू व तअ्-लमल् काज़िबीन (43)

ला यस्तअ्ज़िनुकल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि अंय्युजाहिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्, वल्लाहु अ़लीमुम् बिल्मुत्तक़ीन (44)

इन्नमा यस्तअ्ज़िनुकल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि वलयौमिल्-आख़िरि वर्ताबत् क़ुलूबुहुम् फ़हुम् फ़ी रैबिहिम् य-तरद्दून (45)

व लौ अरादुल्-ख़ुरू-ज ल-अअ़द्दू लहू अ़ुद्दतंव्-व लाकिन् करिहल्लाहुम्बिआ़-सहुम् फ़-सब्ब-तहुम् व क़ीलक़्अुदू मअ़ल् क़ाअ़िदीन (46)

लौ ख़-रजू फ़ीकुम् मा ज़ादूकुम इल्ला ख़बालंव्-व ल-औज़अू ख़िलालकुम् यब्ग़ूनकुमुल् फ़ित्न-त व फ़ीकुम् सम्माअू-न लहुम्, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (47)

ल-क़दिब्त-ग़वुल् फ़ित्न-त मिन् क़ब्लु व क़ल्लबू ल-कल् उमू-र हत्ता जाअल्-हक़्क़ु व ज़-ह-र अम्रूल्लाहि व हुम् कारिहून (48)

اِنْفِرُوْا خِفَافًا وَّثِقَالًا وَّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِكُمْ
وَاَنْفُسِكُمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٤١
لَوْ كَانَ عَرَضًا قَرِيْبًا وَّسَفَرًا قَاصِدًا
لَّاتَّبَعُوْكَ وَلٰكِنْۢ بَعُدَتْ عَلَيْهِمُ
الشُّقَّةُ ؕ وَسَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَوِ اسْتَطَعْنَا
لَخَرَجْنَا مَعَكُمْ ۚ يُهْلِكُوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۚ
ع وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝٤٢
عَفَا اللّٰهُ عَنْكَ ۚ لِمَ اَذِنْتَ لَهُمْ حَتّٰى
يَتَبَيَّنَ لَكَ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا وَتَعْلَمَ
الْكٰذِبِيْنَ ۝٤٣
لَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ اَنْ يُّجَاهِدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ
وَاَنْفُسِهِمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالْمُتَّقِيْنَ ۝٤٤
اِنَّمَا يَسْتَاْذِنُكَ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَارْتَابَتْ قُلُوْبُهُمْ
فَهُمْ فِيْ رَيْبِهِمْ يَتَرَدَّدُوْنَ ۝٤٥
وَلَوْ اَرَادُوا الْخُرُوْجَ لَاَعَدُّوْا لَهٗ عُدَّةً
وَّلٰكِنْ كَرِهَ اللّٰهُ انْۢبِعَاثَهُمْ فَثَبَّطَهُمْ
وَقِيْلَ اقْعُدُوْا مَعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝٤٦
لَوْ خَرَجُوْا فِيْكُمْ مَّا زَادُوْكُمْ اِلَّا خَبَالًا
وَّلَاْاَوْضَعُوْا خِلٰلَكُمْ يَبْغُوْنَكُمُ الْفِتْنَةَ ۚ
وَفِيْكُمْ سَمّٰعُوْنَ لَهُمْ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِالظّٰلِمِيْنَ ۝٤٧
لَقَدِ ابْتَغَوُا الْفِتْنَةَ مِنْ قَبْلُ وَقَلَّبُوْا لَكَ
الْاُمُوْرَ حَتّٰى جَآءَ الْحَقُّ وَظَهَرَ اَمْرُ اللّٰهِ
وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ۝٤٨

49. उनमें कोई है जो कहता है कि "मुझे इजाज़त दे दीजिए। मुझे फ़ितने में न डालिए"। जान लो कि वो फ़ितने में तो पड़ ही चुके हैं और यक़ीनन जहन्नम काफ़िरों को घेर रही है।

50. अगर तुम्हें कोई अच्छी हालत पेश आती है, तो उन्हें बुरा लगता है। और अगर तुमपर कोई मुसीबत आ जाती है तो वो कहते हैं "हमने तो अपना काम पहले ही संभाल लिया था," और वो खुश-खुश पलटते हैं।

51. कह दो, "जो कुछ अल्लाह ने हमारे लिए लिख दिया है उसके सिवा हमें कुछ भी पेश नहीं आ सकता; वही हमारा आक़ा है, और अहले ईमान को अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए!"

52. कहोः "तुम हमारे लिए दो भलाइयों में से किसी एक भलाई के सिवा किसका इंतिज़ार कर सकते हो? जब कि हमें तुम्हारे हक़ में इसी का इंतिज़ार है कि अल्लाह अपनी तरफ़ से या हमारे हाथों तुमपर कोई अज़ाब लाता है; अच्छा तो इंतिज़ार करो तुम्हारे साथ हम भी इंतिज़ार कर रहे हैं"।

53. कह दोः "चाहे तुम बखुशी ख़र्च करो, या नागवारी के साथ, तुम्हारा कुछ क़बूल न होगा; बिलाशुबह तुम फ़ासिक़ लोग हो"।

54. उनके ख़र्च के क़बूल होने में इसके सिवा और कोई चीज़ माने (रोकनेवाला) नहीं कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र की रविश इख़्तियार की, नमाज़ को आते हैं तो बस हारे जी आते हैं, और ख़र्च करते हैं तो बादिले नाख़्वास्ता ही।

55. पस उनके माल तुम्हें फ़रेफ़्ता न करें और न उनकी औलाद ही; अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनके ज़रिए से उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में अज़ाब दे, और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वो कुफ़्र ही पर क़ायम हों।

56. वो अल्लाह की क़समें खाते हैं कि वो तुम्हीं में से हैं, हालांकि वो तुममें से नहीं हैं, बल्कि वो ऐसे लोग हैं जो ख़ौफ़ज़दा रहते हैं।

57. अगर वो कोई जाए पनाह पा लें, या कोई ग़ार, या घुस बैठने की जगह, तो लाज़िमन वो बगटुट उसकी तरफ़ उल्टे भाग जाएं।

58. और उनमें से बाज़ लोग सदक़ात के सिलसिले में तुमपर चोटें करते हैं; लेकिन अगर उन्हें उसमें से दे दिया जाए

व मिन्हुम् मंय्यक़ूलुअ्ज़ल्ली व ला तफ़्तिन्नी, अला फ़िल्-फ़ित्नति स-क़तू, व इन्-न जहन्न-म लमुही-ततुम् बिल्काफ़िरीन (49)

इन् तुसिब्-क ह-स-नतुन् तसुअ्हुम् व इन् तुसिब्-क मुसीबतुंय्यक़ूलू क़द् अख़ज़्ना अम्-रना मिन् क़ब्लु व य-तवल्लौ व हुम् फ़रिहून (50)

क़ुल् लंय्युसीबना इल्ला मा क-तबल्लाहु लना हु-व मौलाना व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मुअ्मिनून (51)

क़ुल् हल् तरब्बसू-न बिना इल्ला इह्दल् हुस्-नयैनि, व नह्नु न-तरब्बसु बिकुम् अंय्युसी-बकुमुल्लाहु बिअ़ज़ाबिम् मिन् अ़िन्दिही औ बिऐदीना फ़-तरब्बसू इन्ना म-अ़कुम् मु-तरब्बिसून (52)

क़ुल् अन्फ़िक़ू तौअ़न् औ करहल्-लंय्यु-तक़ब्ब-ल मिन्कुम्, इन्नकुम् कुन्तुम् क़ौमन् फ़ासिक़ीन (53)

व मा म-न अ़हुम् अन् तुक़्ब-ल मिन्हुम् न-फ़क़ातुहुम् इल्ला अन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व बि-रसूलिही व ला यअ्तूनस्सला-त इल्ला व हुम् कुसाला व ला युन्फ़िक़ू-न इल्ला व हुम् कारिहून (54)

फ़ला तुअ्जिब्-क अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम्, इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुअ़ज़्ज़ि-बहुम् बिहा फ़िल्हयातिद्दुन्या व तज़्ह-क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (55)

व यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि इन्नहुम् लमिन्कुम्, व मा हुम् मिन्कुम् व लाकिन्नहुम् क़ौमुंय्यफ़्रक़ून (56)

लौ यजिदू-न मल्ज-अन् औ मग़ारातिन् औ मुद्द-ख़लल्-लवल्लौ इलैहि व हुम् यज्महून (57)

व मिन्हुम् मंय्यल्मिज़ु-क फ़िस्स-दक़ाति फ़-इन्

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ ائْذَنْ لِّيْ وَلَا تَفْتِنِّيْ ۭ
اَلَا فِي الْفِتْنَةِ سَقَطُوْا ۭ وَاِنَّ جَهَنَّمَ
لَمُحِيْطَةٌۢ بِالْكٰفِرِيْنَ ﴿٤٩﴾
اِنْ تُصِبْكَ حَسَنَةٌ تَسُؤْهُمْ ۚ وَاِنْ
تُصِبْكَ مُصِيْبَةٌ يَّقُوْلُوْا قَدْ اَخَذْنَآ
اَمْرَنَا مِنْ قَبْلُ وَيَتَوَلَّوْا وَّهُمْ فَرِحُوْنَ ﴿٥٠﴾
قُلْ لَّنْ يُّصِيْبَنَآ اِلَّا مَا كَتَبَ اللّٰهُ لَنَا ۚ هُوَ
مَوْلٰىنَا ۚ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ﴿٥١﴾
قُلْ هَلْ تَرَبَّصُوْنَ بِنَآ اِلَّآ اِحْدَى
الْحُسْنَيَيْنِ ۭ وَنَحْنُ نَتَرَبَّصُ بِكُمْ اَنْ
يُّصِيْبَكُمُ اللّٰهُ بِعَذَابٍ مِّنْ عِنْدِهٖٓ
اَوْ بِاَيْدِيْنَا ڮ فَتَرَبَّصُوْٓا اِنَّا مَعَكُمْ
مُّتَرَبِّصُوْنَ ﴿٥٢﴾
قُلْ اَنْفِقُوْا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا لَّنْ يُّتَقَبَّلَ
مِنْكُمْ ۭ اِنَّكُمْ كُنْتُمْ قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ﴿٥٣﴾
وَمَا مَنَعَهُمْ اَنْ تُقْبَلَ مِنْهُمْ نَفَقٰتُهُمْ اِلَّآ
اَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ وَبِرَسُوْلِهٖ وَلَا يَاْتُوْنَ
الصَّلٰوةَ اِلَّا وَهُمْ كُسَالٰى وَلَا يُنْفِقُوْنَ
اِلَّا وَهُمْ كٰرِهُوْنَ ﴿٥٤﴾
فَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَلَآ اَوْلَادُهُمْ ۭ اِنَّمَا
يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ﴿٥٥﴾
وَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ اِنَّهُمْ لَمِنْكُمْ ۭ وَمَا هُمْ
مِّنْكُمْ وَلٰكِنَّهُمْ قَوْمٌ يَّفْرَقُوْنَ ﴿٥٦﴾
لَوْ يَجِدُوْنَ مَلْجَاً اَوْ مَغٰرٰتٍ اَوْ مُدَّخَلًا
لَّوَلَّوْا اِلَيْهِ وَهُمْ يَجْمَحُوْنَ ﴿٥٧﴾
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّلْمِزُكَ فِي الصَّدَقٰتِ ۚ فَاِنْ

तो राज़ी हो जाएं, और अगर उन्हें उसमें से न दिया गया तो किया देखोगे कि वो बरहम होकर रह गए।

59. अगर अल्लाह और उसके रसूल ने जो कुछ उन्हें दिया था उसपर वो राज़ी रहते, और कहते कि "हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है; अल्लाह हमें जल्द ही अपने फ़ज़्ल से देगा, और उसका रसूल भी; हम तो अल्लाह ही के तमन्नाई हैं (तो यह उनके लिए बेहतर होता)।"

60. सदक़ात तो बस गरीबों, मुहताजों, और उन लोगों के लिए है जो इस काम पर मामूर हों, और उनके लिए जिनके दिलों को माइल व मानूस करना मतलूब हो और गर्दनों को छुड़ाने और क़र्ज़दारों और तावानज़दा लोगों के संभालने में, अल्लाह के रास्ते में और मुसाफ़िरों की मदद करने में सर्फ़ (ख़र्च) करने के लिए हैं; यह एक फ़रीज़ा है अल्लाह की तरफ़ से; अल्लाह सब कुछ जानने वाला, निहायत हिकमतवाला है।

61. और उनमें से कुछ लोग ऐसे हैं जो नबी को ईज़ा (तकलीफ़) पहुंचाते हैं और कहते हैं कि "वह तो निरा कान है!" कह दो, "वह सरापा गोश तुम्हारे भले के लिए है; वह अल्लाह पर ईमान रखता है और अहले ईमान पर भी एतिमाद करता है, और तुममें से जो ईमान लाए हैं उनके लिए सरापा रहमत है। रहे वो लोग जो अल्लाह के रसूल को ईज़ा (तकलीफ़) पहुंचा रहे हैं, उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।"

62. वो तुम लोगों के सामने अल्लाह की क़समें खाते हैं कि तुम्हें राज़ी कर लें; हालांकि अगर वो मोमिन हैं तो अल्लाह और उसका रसूल इसके ज़्यादा हक़दार हैं कि उसे राज़ी करें।

63. क्या उन्हें मालूम नहीं कि जो अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करता है उसके लिए जहन्नम की आग है, जिसमें वह हमेशा रहेगा? यह बहुत बड़ी रुसवाई है।

64. मुनाफ़िक़ीन डर रहे हैं कि कहीं उनके मुतअल्लिक़ कोई ऐसी सूरह न उतर आए जो वह सब कुछ उनपर ज़ाहिर कर दे जो उनके दिलों में छुपा हुआ है। कह दो, "मज़ाक़ उड़ा लो, अल्लाह तो उसे ज़ाहिर करके रहेगा जिससे तुम डरते हो!"

65. और अगर उनसे पूछो, तो कह देंगे, "हम तो महज़ बातें और हंसी खेल कर रहे थे," कहो, "क्या अल्लाह, उसकी आयतों और उसके रसूल के साथ हंसी मज़ाक़ करते थे?

66. उज़रात न तराशो, तुम अपने ईमान के इज़हार के बाद कुफ़्र के

उअ़्तू मिन्हा रज़ू व इल्लम् युअ़्तौ मिन्हा इज़ा हुम् यस्-ख़तून (58)

व लौ अन्नहुम् रज़ू मा आताहुमुल्लाहु व रसूलुहू व क़ालू हस्बुनल्लाहु सयुअ़्तीनल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही व रसूलुहू इन्ना इलल्लाहि राग़िबून (59)●

इन्नमस्स-दक़ातु लिल्फ़ु-क़रा-इ वल्मसाकीनि वल्आ़मिली-न अ़लैहा वल्मुअल्ल-फ़ति क़ुलूबुहुम् व फ़िर्रिक़ाबि वल्ग़ारिमी-न व फ़ी सबीलिल्लाहि वब्निस्सबीलि, फ़री-ज़तम् मिनल्लाहि, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (60)

व मिन्हुमुल्लज़ी-न युअ़्ज़ूनन्नबिय्-य व यक़ूलू-न हु-व उज़ुनुन्, क़ुल् उज़ुनु ख़ैरिल्लकुम्, युअ़्मिनु बिल्लाहि व युअ़्मिनु लिल्मुअ़्मिनी-न व रह़्मतुल् लिल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम्, वल्लज़ी-न युअ़्ज़ू-न रसूलल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (61)

यह़्लिफ़ू-न बिल्लाहि लकुम् लियुर्ज़ूकुम् वल्लाहु व रसूलुहू अहक़्क़ु अंय्युर्ज़ूहु इन् कानू मुअ़्मिनीन ● (62)

अलम् यअ़्लमू अन्नहू मंय्युहादिदिल्ला-ह व रसूलहू फ़-अन्-न लहू ना-र जहन्न-म ख़ालिदन् फ़ीहा, ज़ालिकल् ख़िज़्युल्-अ़ज़ीम (63)

यह़्ज़रुल् मुनाफ़िक़ू-न अन् तुनज़्ज़-ल अ़लैहिम् सूरतुन् तुनब्बिउहुम् बिमा फ़ी क़ुलूबिहिम्, क़ुलिस्तह्ज़िऊ इन्नल्ला-ह मुख़्रिजुम् मा तह़्ज़रून (64)

व ल-इन् सअल्तहुम् ल-यक़ूलुन्-न इन्नमा कुन्ना नख़ूज़ु व नल्अ़बु, क़ुल् अबिल्लाहि व आयातिही व रसूलिही कुन्तुम् तस्तह्ज़िऊन (65)

ला तअ़्तज़िरू क़द् कफ़र्तुम् बअ़्-द ईमानिकुम्,

أُعْطُوْا مِنْهَا رَضُوْا وَإِنْ لَّمْ يُعْطَوْا مِنْهَآ
إِذَا هُمْ يَسْخَطُوْنَ ﴿٥٨﴾
وَلَوْ أَنَّهُمْ رَضُوْا مَآ اٰتٰىهُمُ اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ۙ
وَقَالُوْا حَسْبُنَا اللّٰهُ سَيُؤْتِيْنَا اللّٰهُ مِنْ
فَضْلِهٖ وَرَسُوْلُهٗٓ ۙ إِنَّآ إِلَى اللّٰهِ رٰغِبُوْنَ ﴿٥٩﴾
إِنَّمَا الصَّدَقٰتُ لِلْفُقَرَآءِ وَالْمَسٰكِيْنِ
وَالْعٰمِلِيْنَ عَلَيْهَا وَالْمُؤَلَّفَةِ قُلُوْبُهُمْ
وَفِي الرِّقَابِ وَالْغٰرِمِيْنَ وَفِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۭ فَرِيْضَةً مِّنَ اللّٰهِ ۭ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٦٠﴾
وَمِنْهُمُ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ النَّبِيَّ وَيَقُوْلُوْنَ
هُوَ أُذُنٌ ۭ قُلْ أُذُنُ خَيْرٍ لَّكُمْ يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ
وَيُؤْمِنُ لِلْمُؤْمِنِيْنَ وَرَحْمَةٌ لِّلَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ
رَسُوْلَ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ أَلِيْمٌ ﴿٦١﴾
يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ لِيُرْضُوْكُمْ ۚ وَاللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ
أَحَقُّ أَنْ يُّرْضُوْهُ إِنْ كَانُوْا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٦٢﴾
أَلَمْ يَعْلَمُوْٓا أَنَّهٗ مَنْ يُّحَادِدِ اللّٰهَ
وَرَسُوْلَهٗ فَأَنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خَالِدًا
فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ الْخِزْيُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٣﴾
يَحْذَرُ الْمُنٰفِقُوْنَ أَنْ تُنَزَّلَ عَلَيْهِمْ
سُوْرَةٌ تُنَبِّئُهُمْ بِمَا فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ قُلِ
اسْتَهْزِءُوْا ۚ إِنَّ اللّٰهَ مُخْرِجٌ مَّا تَحْذَرُوْنَ ﴿٦٤﴾
وَلَئِنْ سَأَلْتَهُمْ لَيَقُوْلُنَّ إِنَّمَا كُنَّا نَخُوْضُ
وَنَلْعَبُ ۭ قُلْ أَبِاللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ وَرَسُوْلِهٖ
كُنْتُمْ تَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٦٥﴾
لَا تَعْتَذِرُوْا قَدْ كَفَرْتُمْ بَعْدَ إِيْمَانِكُمْ ۭ

मुरतकिब हुए हो। अगर हम तुम्हारे कुछ लोगों से दरगुज़र भी करें तो भी कुछ लोगों को अज़ाब देकर ही रहेंगे क्योंकि वो मुजरिम हैं।"

67. मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें सब एक थैली के चट्टे-बट्टे हैं; नापसन्दीदा बात का हुक्म देते और पसन्दीदा बात से रोकते हैं; और हाथों को बन्द किए रहते हैं; वो अल्लाह को भूल बैठे, तो उसने भी उन्हें भुला दिया। यक़ीनन मुनाफ़िक़ ही नाफ़रमान और बद अहद हैं।

68. अल्लाह का मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों, और कुफ़्फ़ार से जहन्नम की आग का वादा है, जिसमें वो मुस्तक़िल तौरपर रहेंगे। वही उनके लिए काफ़ी है, और अल्लाह ने उनपर लानत की, और उनके लिए क़ायम रहनेवाला अज़ाब है।

69. उन लोगों की तरह जो तुमसे पहले गुज़र चुके हैं, वो तुमसे ज़ोर आवर थे और माल और औलाद में भी बढ़े हुए थे; पस उन्होंने अपने हिस्से का लुत्फ़ उठाना चाहा और तुमने भी अपने हिस्से से लुत्फ़ उठाना चाहा जिस तरह कि तुमसे पहले के लोगों ने अपने हिस्से का लुत्फ़ उठाना चाहा, वो बहसों में पड़े थे, तुम भी बहसों में पड़ गए। वही लोग हैं जिनका किया-धरा दुनिया और आख़िरत में उनके लिए वबाले जान हुआ; और वही ख़सारे में हैं।

70. क्या उन्हें उन लोगों की सरगुज़िश्त नहीं पहुंची जो उनसे पहले गुज़रे हैं। क़ौमे नूह की, आद और समूद की और क़ौमे इब्राहीम की और मदयन वालों की और उनकी बस्तियों की जिन्हें उलट दिया गया? उनके रसूल उनके पास वाज़ेह दलीलें लेकर आए थे; फिर अल्लाह ऐसा न था कि उनपर ज़ुल्म ढाता, मगर वो ख़ुद ही अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे थे।

71. रहे मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, वो सब बाहम एक-दूसरे के रफ़ीक़ हैं; भलाई का हुक्म देते हैं, और बुराई से रोकते हैं, नमाज़ क़ायम करते हैं, ज़कात देते हैं, और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करते हैं। ये वो लोग हैं जिनपर जल्द ही अल्लाह रहमत फ़रमाएगा; बेशक अल्लाह ज़बरदस्त, निहायत हिकमतवाला है।

72. मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों से अल्लाह ने ऐसे बाग़ात का वादा किया है जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी।

इन्नअ्फ़ु अन् ताइ-फ़तिम् मिन्कुम् नुअ़ज़्ज़िब् ताइ-फ़तम् बिअन्नहुम् कानू मुज्रिमीन (66) ●

अल्मुनाफ़िक़ू-न वल्मुनाफ़िक़ातु बअ्ज़ुहुम् मिम्-बअ्ज़िन् ● *यअ्मुरू-न बिल्मुन्करि व यन्हौ-न अ़निल्-मअ्रूफ़ि व यक़्बिज़ू-न ऐदि-यहुम्, नसुल्ला-ह फ़-नसि-यहुम्, इन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न हुमुल्-फ़ासिक़ून* (67)

व-अ़दल्लाहुल् मुनाफ़िक़ी-न वल्मुनाफ़िक़ाति वल्कुफ़्फ़ा-र ना-र जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा, हि-य हस्बुहुम् व ल-अ़-नहुमुल्लाहु व लहुम् अ़ज़ाबुम् मुक़ीम (68)

कल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् कानू अशद्-द मिन्कुम् क़ुव्वतंव्-व अक्स-र अम्वालंव्-व औलादन्, फ़स्तम्तअू बि-ख़लाक़िहिम् फ़स्तम्तअ्तुम् बि-ख़लाक़िकुम कमस्तम्त-अ़ल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् बि-ख़लाक़िहिम् व ख़ुज़्तुम् कल्लज़ी ख़ाज़ू, उलाइ-क हबितत् अअ्मालुहुम् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (69)

अलम् यअ्तिहिम् न-बउल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् क़ौमि नूहिंव्-व आ़दिंव्-व समू-द व क़ौमि इब्राही-म व अस्हाबि मद्य-न वल्मुअ्तफ़िकाति, अततहुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानल्लाहु लि-यज़्लि-महुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून (70)

वल्मुअ्मिनू-न वल्मुअ्मिनातु बअ्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ्ज़िन्● *यअ्मुरू-न बिल्-मअ्रूफ़ि व यन्हौ-न अ़निल्मुन्करि व युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त व युतीअूनल्ला-ह व रसूलहू, उलाइ-क स-यर्हमुहुमुल्लाहु, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन हकीम* (71)

व-अ़दल्लाहुल् मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व

إِنْ نَّعْفُ عَنْ طَآئِفَةٍ مِّنْكُمْ نُعَذِّبْ
ع طَآئِفَةًۢ بِاَنَّهُمْ كَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝٦٦
اَلْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ بَعْضُهُمْ مِّنْۢ بَعْضٍ ۘ
يَاْمُرُوْنَ بِالْمُنْكَرِ وَيَنْهَوْنَ عَنِ
الْمَعْرُوْفِ وَيَقْبِضُوْنَ اَيْدِيَهُمْ ؕ نَسُوا اللّٰهَ
فَنَسِيَهُمْ ؕ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٦٧
وَعَدَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ وَالْكُفَّارَ
نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ هِيَ حَسْبُهُمْ ۚ
وَلَعَنَهُمُ اللّٰهُ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝٦٨ۙ
كَالَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ كَانُوْۤا اَشَدَّ مِنْكُمْ
قُوَّةً وَّاَكْثَرَ اَمْوَالًا وَّاَوْلَادًا ؕ فَاسْتَمْتَعُوْا
بِخَلَاقِهِمْ فَاسْتَمْتَعْتُمْ بِخَلَاقِكُمْ كَمَا اسْتَمْتَعَ
الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ بِخَلَاقِهِمْ وَخُضْتُمْ
كَالَّذِيْ خَاضُوْا ؕ اُولٰٓئِكَ حَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ
فِی الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٦٩
اَلَمْ يَاْتِهِمْ نَبَاُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَوْمِ
نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۙ وَقَوْمِ اِبْرٰهِيْمَ
وَاَصْحٰبِ مَدْيَنَ وَالْمُؤْتَفِكٰتِ ؕ اَتَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۚ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلٰكِنْ كَانُوْۤا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٧٠
وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بَعْضُهُمْ اَوْلِيَآءُ
بَعْضٍ ۘ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَيَنْهَوْنَ
عَنِ الْمُنْكَرِ وَيُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَيُطِيْعُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ
سَيَرْحَمُهُمُ اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٧١
وَعَدَ اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا وَ

مَسٰكِنَ طَيِّبَةً فِيْ جَنّٰتِ عَدْنٍ ؕ وَرِضْوَانٌ
ع مِّنَ اللّٰهِ اَكْبَرُ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٧٢
يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ
وَاغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٧٣

يَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ مَا قَالُوْا ؕ وَلَقَدْ قَالُوْا كَلِمَةَ
الْكُفْرِ وَكَفَرُوْا بَعْدَ اِسْلَامِهِمْ وَهَمُّوْا
بِمَا لَمْ يَنَالُوْا ۚ وَمَا نَقَمُوْۤا اِلَّاۤ اَنْ اَغْنٰىهُمُ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ مِنْ فَضْلِهٖ ۚ فَاِنْ يَّتُوْبُوْا
يَكُ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاِنْ يَّتَوَلَّوْا يُعَذِّبْهُمُ
اللّٰهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۙ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۚ وَمَا
لَهُمْ فِي الْاَرْضِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٧٤
وَمِنْهُمْ مَّنْ عٰهَدَ اللّٰهَ لَئِنْ اٰتٰىنَا مِنْ فَضْلِهٖ
لَنَصَّدَّقَنَّ وَلَنَكُوْنَنَّ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٧٥
فَلَمَّاۤ اٰتٰىهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ بَخِلُوْا بِهٖ
وَتَوَلَّوْا وَّهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٧٦
فَاَعْقَبَهُمْ نِفَاقًا فِيْ قُلُوْبِهِمْ اِلٰى
يَوْمِ يَلْقَوْنَهٗ بِمَاۤ اَخْلَفُوا اللّٰهَ مَا
وَعَدُوْهُ وَبِمَا كَانُوْا يَكْذِبُوْنَ ۝٧٧
اَلَمْ يَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ سِرَّهُمْ
وَنَجْوٰىهُمْ وَاَنَّ اللّٰهَ عَلَّامُ الْغُيُوْبِ ۝٧٨
اَلَّذِيْنَ يَلْمِزُوْنَ الْمُطَّوِّعِيْنَ مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ فِي الصَّدَقٰتِ وَالَّذِيْنَ لَا
يَجِدُوْنَ اِلَّا جُهْدَهُمْ فَيَسْخَرُوْنَ مِنْهُمْ ؕ
سَخِرَ اللّٰهُ مِنْهُمْ ۫ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٧٩
اِسْتَغْفِرْ لَهُمْ اَوْ لَا تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ اِنْ
تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ سَبْعِيْنَ مَرَّةً فَلَنْ يَّغْفِرَ

मसाकि-न तय्यि-बतन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन्, व रिज़्वानुम् मिनल्लाहि अक्बरु, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (72) ●

या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ़्फ़ा-र वल्मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़् अ़लैहिम्, व मअ्वाहुम् जहन्नमु, व बिअ्सल् मसीर (73)

यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि मा क़ालू, व ल-क़द् क़ालू कलि-मतल्कुफ़्रि व क-फ़रू बअ्-द इस्लामिहिम् व हम्मू बिमा लम् यनालू व मा न-क़मू इल्ला अन् अग़्नाहुमुल्लाहु व रसूलुहू मिन् फ़ज़्लिही फ़-इंय्यतूबू यकु ख़ैरल्लहुम् व इंय्य-तवल्लौ युअ़ज़्ज़िब्हुमुल्लाहु अ़ज़ाबन् अलीमन् फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति व मा लहुम् फ़िल्अर्ज़ि मिंव्वलिय्यिंव्वला नसीर (74)

व मिन्हुम् मन् आ़-हदल्ला-ह ल-इन् आताना मिन् फ़ज़्लिही लनस्सद्-द-क़न्-न व ल-नकूनन्-न मिनस्सालिहीन (75)

फ़-लम्मा आताहुम् मिन् फ़ज़्लिही बख़िलू बिही व त-वल्लौ व हुम् मुअ्रिज़ून (76)

फ़-अअ्क़-बहुम् निफ़ाक़न् फ़ी क़ुलूबिहिम् इला यौमि यल्क़ौनहू बिमा अख़्लफ़ुल्ला-ह मा व-अ़दूहु व बिमा कानू यक्ज़िबून (77)

अलम् यअ्लमू अन्नल्ला-ह यअ्लमु सिर्रहुम् व नज्वाहुम् व अन्नल्ला-ह अ़ल्लामुल् ग़ुयूब (78)

अल्लज़ी-न यल्मिज़ूनल् मुत्तव्विअ़ी-न मिनल् मुअ्मिनी-न फ़िस्स-दक़ाति वल्लज़ी-न ला यजिदू-न इल्ला जुह्दहुम् फ़-यस्ख़रू-न मिन्हुम्, सख़िरल्लाहु मिन्हुम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (79)

इस्तग़्फ़िर् लहुम् औ ला तस्तग़्फ़िर् लहुम्, इन् तस्तग़्फ़िर् लहुम् सब्अ़ी-न मर्रतन् फ़-लंय्यग़्फ़िर-ल्लाहु लहुम्, ज़ालि-क बिअन्नहुम्

जिनमें वो हमेशा रहेंगे, और अदन की जन्नतों में पाकीज़ा क़ियामगाहों का; और अल्लाह की ख़ुशनूदी और रिज़ामन्दी सब से बढ़कर है। यही सबसे बड़ी कामयाबी है।

73. ऐ नबी, कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन से जिहाद करो, और उनके साथ सख़्ती से पेश आओ; आख़िरकार उनका ठिकाना जहन्नम है। और वह बदतरीन ठिकाना है!

74. वो अल्लाह की क़समें खाते हैं कि उन्होंने नहीं कहा, हालांकि उन्होंने काफ़िराना बात कही और अपने इस्लाम के इज़हार के बाद कुफ़्र के मुरतकिब हुए। और वह चाहा जो वो न पा सके, उनका इनाद (दुश्मनी) तो बस इसका बदला है कि अल्लाह और उसके रसूल ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से ग़नी कर दिया। अब अगर ये तौबा करें तो उन्हीं के लिए बेहतर है; और अगर उन्होंने मुंह मोड़ा तो अल्लाह उन्हें दुनिया और आख़िरत में दर्दनाक अज़ाब देगा; और ज़मीन में उनका न कोई हिमायती होगा और न मददगार।

75. और उनमें से कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन्होंने अल्लाह से अहद किया था कि "अगर उसने हमें अपने फ़ज़्ल से अता फ़रमाया, तो हम लाज़िमन सदक़ा करेंगे और नेक होकर रहेंगे!"

76. लेकिन जब अल्लाह ने उन्हें अपने फ़ज़्ल से अता किया तो वो उसमें बुख़्ल करने लगे, और पहलू बचाकर फिर गए।

77. फिर नतीजा यह हुआ कि उसने उनके दिलों में उस दिन तक के लिए निफ़ाक़ बिठा दिया जब वो उससे मिलेंगे, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह से वादा ख़िलाफ़ी की और इसलिए कि वो झूट बोलते रहे।

78. क्या उन्हें ख़बर नहीं कि अल्लाह उनके राज़ को और उनकी सरगोशी को ख़ूब जानता है, और यह कि अल्लाह तमाम ग़ैब की बातों को बख़ूबी जानता है।

79. जो लोग बरिज़ा व रग़बत देने वाले मोमिनों पर उनके सदक़ात के बाब में तान करते हैं, और उन लोगों का मज़ाक़ उड़ाते हैं जिनके पास सिवाय इसके कुछ नहीं जो वो अपने ऊपर मशक़्क़त बरदाश्त करके देते हैं, उनका अल्लाह ने मज़ाक़ उड़ाया; और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

80. तुम उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ करो, या उनके लिए मग़फ़िरत की

اللّٰهُ لَهُمْ ۚ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ
ع ١٦ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٨٠
فَرِحَ الْمُخَلَّفُوْنَ بِمَقْعَدِهِمْ خِلٰفَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ وَكَرِهُوْٓا اَنْ يُّجَاهِدُوْا
بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَقَالُوْا لَا تَنْفِرُوْا فِي الْحَرِّ ۗ قُلْ نَارُ
جَهَنَّمَ اَشَدُّ حَرًّا ۗ لَوْ كَانُوْا يَفْقَهُوْنَ ۝٨١
فَلْيَضْحَكُوْا قَلِيْلًا وَّلْيَبْكُوْا كَثِيْرًا ۚ
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨٢
فَاِنْ رَّجَعَكَ اللّٰهُ اِلٰى طَآئِفَةٍ مِّنْهُمْ
فَاسْتَاْذَنُوْكَ لِلْخُرُوْجِ فَقُلْ لَّنْ تَخْرُجُوْا
مَعِيَ اَبَدًا وَّلَنْ تُقَاتِلُوْا مَعِيَ عَدُوًّا ۭ
اِنَّكُمْ رَضِيْتُمْ بِالْقُعُوْدِ اَوَّلَ مَرَّةٍ
فَاقْعُدُوْا مَعَ الْخٰلِفِيْنَ ۝٨٣
وَلَا تُصَلِّ عَلٰٓى اَحَدٍ مِّنْهُمْ مَّاتَ اَبَدًا
وَّلَا تَقُمْ عَلٰى قَبْرِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَمَاتُوْا وَهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٨٤
وَلَا تُعْجِبْكَ اَمْوَالُهُمْ وَاَوْلَادُهُمْ ۭ
اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ اَنْ يُّعَذِّبَهُمْ بِهَا فِي
الدُّنْيَا وَتَزْهَقَ اَنْفُسُهُمْ وَهُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٨٥
وَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ اَنْ اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ
وَجَاهِدُوْا مَعَ رَسُوْلِهِ اسْتَاْذَنَكَ اُولُوا
الطَّوْلِ مِنْهُمْ وَقَالُوْا ذَرْنَا نَكُنْ مَّعَ الْقٰعِدِيْنَ ۝٨٦
رَضُوْا بِاَنْ يَّكُوْنُوْا مَعَ الْخَوَالِفِ وَطُبِعَ
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٨٧
لٰكِنِ الرَّسُوْلُ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
جٰهَدُوْا بِاَمْوَالِهِمْ وَاَنْفُسِهِمْ ۭ وَاُولٰۗئِكَ

क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमल्-फ़ासिक़ीन (80)●

फ़रिहल् मुख़ल्लफ़ू-न बिमक़्अदिहिम् ख़िला-फ़ रसूलिल्लाहि व करिहू अंय्युजाहिदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि व क़ालू ला तन्फ़िरू फ़िल्हर्रि, क़ुल नारू जहन्न-म अशद्दु हर्रन्, लौ कानू यफ़्क़हून (81)

फ़ल्यज़्हकू क़लीलंव् वल्यब्कू कसीरन् जज़ाअम्-बिमा कानू यक्सिबून (82)

फ़-इर्र-ज-अ़कल्लाहु इला ताइ-फ़तिम् मिन्हुम् फ़स्तअ्ज़नू-क लिल्ख़ुरूजि फ़क़ुल्-लन् तख़्रुजू मअि़-य अ-बदंव्-व लन् तुक़ातिलू मअि़-य अ़दुव्वन्, इन्नकुम् रज़ीतुम् बिल्क़ुअूदि अव्व-ल मर्रतिन् फ़क़्अुदू मअ़ल् ख़ालिफ़ीन (83)

व ला तुसल्लि अ़ला अ-हदिम् मिन्हुम् मा-त अ-बदंव्-व ला तक़ुम् अ़ला क़ब्रिही, इन्नहुम् क-फ़रू बिल्लाहि व रसूलिही व मातू व हुम् फ़ासिक़ून (84)

व ला तुअ्जिब्-क अम्वालुहुम् व औलादुहुम्, इन्नमा युरीदुल्लाहु अंय्युअ़ज़्ज़ि-बहुम् बिहा फ़िद्दुन्या व तज़्ह-क़ अन्फ़ुसुहुम् व हुम् काफ़िरून (85)

व इज़ा उन्ज़िलत् सूरतुन् अन् आमिनू बिल्लाहि व जाहिदू म-अ़ रसूलिहिस्तअ्ज़-न-क उलुत्तौलि मिन्हुम् व क़ालू ज़र्ना नकुम् मअ़ल् क़ाअि़दीन (86)

रज़ू बिअंय्यकूनू मअ़ल् ख़्वालिफ़ि व तुबि-अ़ अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून (87)

लाकिनिर्रसूलु वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू जाहदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम्, व उलाइ-क

दुआ न करो, अगर तुम सत्तर बार भी उनके लिए मग़फ़िरत तलब करोगे, तो भी अल्लाह उनकी मग़फ़िरत फ़रमाने का नहीं, यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया; और अल्लाह फ़ासिक़ लोगों को राह नहीं दिखाता।

81. पीछे रह जाने वाले अल्लाह के रसूल के पीछे अपने बैठे रहने पर ख़ुश हुए, और उन्हें यह नागवार हुआ कि अल्लाह के रास्ते में अपने मालों और अपनी जानों से जिहाद करें। और उन्होंने कहा, "इस गर्मी में न निकलो"। कह दो "जहन्नम की आग इससे कहीं ज़्यादा गर्म है, अगर वो समझ पाते"।

82. अब चाहिए कि जो कुछ वो कमाते रहे हैं उसके बदले में हंसें कम और रोएं ज़्यादा।

83. अब अगर अल्लाह तुम्हें उनके किसी गिरोह की तरफ़ रुजू कर दे और आइंदा वो तुमसे निकलने की इजाज़त चाहें, तो कह देना: "तुम मेरे साथ कभी भी नहीं निकल सकते, और न मेरे साथ होकर किसी दुश्मन से लड़ सकते हो। तुम पहली दफ़ा बैठे रहने पर राज़ी हुए, तो अब पीछे रहनेवालों के साथ बैठे रहो।"

84. और किसी ऐसे शख़्स की जो उनमें से मरे उसके लिए रहमत की दुआ न करना और न उसकी क़ब्र पर खड़े होना; उन्होंने तो अल्लाह और उसके रसूल के साथ कुफ़्र किया, और फ़ासिक़ ही रह कर मरे।

85. और उनके माल और उनकी औलाद तुम्हें फ़रेफ़्ता न करें; अल्लाह तो बस यह चाहता है कि उनके ज़रिए से उन्हें दुनिया में अज़ाब दे, और उनकी जानें इस हाल में निकलें कि वो कुफ़्र ही पर क़ायम हों।

86. और जब कोई सूरह उतरती है कि "अल्लाह पर ईमान लाओ और उसके रसूल के साथ होकर जिहाद करो", तो उनके साहिबे मक़दिरत लोग तुमसे इजाज़त चाहने लगते हैं और कहते हैं कि "हमें छोड़ दो कि हम बैठनेवालों के साथ रह जाएं।"

87. वो इसी पर राज़ी हो गए कि पीछे रह जाने वाली औरतों के साथ रह जाएं, और उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई है, इसलिए वो समझते नहीं।

88. लेकिन रसूल, और उसके अहले ईमान साथियों ने अपने मालों और

अपनी जानों से जिहाद किया, और वही लोग हैं जिनके लिए भलाइयां हैं; और यही लोग हैं जो कामयाब हैं।

89. अल्लाह ने उनके लिए ऐसे बाग़ तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, वो उनमें हमेशा रहेंगे। यही अज़ीम कामयाबी है।

90. उज़रात तराशनेवाले बदवी भी आए कि उन्हें इजाज़त मिल जाए और जो अल्लाह और उसके रसूल से झूट बोले वो भी बैठे रहे; उनमें से जिन्होंने कुफ़्र किया उन्हें जल्द ही एक दर्दनाक अज़ाब पहुंच कर रहेगा।

91. न तो कमज़ोरों के लिए कोई हर्ज की बात है और न बीमारों के लिए और न उन लोगों के लिए जो ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते, जबकि वो अल्लाह और उसके रसूल की ख़ैर ख़्वाही करते रहें। मुहसीनीन पर इलज़ाम की कोई गुंजाइश नहीं है। अल्लाह तो बड़ा बख़्शनेवाला, निहायत मेहरबान है।

92. और न उन लोगों पर एतिराज़ का कोई मौक़ा है जिनका हाल यह है कि जब वो तुम्हारे पास आते हैं कि तुम उनके लिए सवारी का इंतिज़ाम कर दो, तुम कहते हो, "मैं ऐसा कुछ नहीं पाता जिसपर तुम्हें सवार करूं;" वो इस हाल में लौटते हैं कि उनकी आंखें इस ग़म में आंसू बहा रही होती हैं कि वो ख़र्च करने को कुछ नहीं पाते।

93. इलज़ाम तो बस उनपर है जो मालदार होते हुए तुमसे इजाज़त तलब करते हैं; वो इसी पर राज़ी हुए कि पीछे डाले गए लोगों के साथ रह जाएं; अल्लाह ने तो उनके दिलों पर मुहर लगा दी है, इसलिए वो जानते नहीं।

94. जब तुम पलटकर उनके पास पहुंचोगे, तो वो तुम्हारे सामने उज़र पेश करेंगे। तुम कहना: "बहाने न बनाओ; हम तुम्हारी बात मानने के नहीं। अल्लाह ने हमें तुम्हारे हालात बता दिए हैं। अभी अल्लाह तुम्हारे काम को देखेगा और उसका रसूल भी, फिर तुम उसकी तरफ़ लौटोगे जो छुपे और खुले को जानता है। फिर जो कुछ तुम करते रहे हो वह तुम्हें बता देगा।"

लहुमुल्-ख़ैरातु व उलाइ-क हुमुल् मुफ़्लिहून (88)

अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारू ख़ालिदी-न फ़ीहा, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (89)●

व जाअल् मुअ़ज़्ज़िरू-न मिनल्-अअ्राबि लियुअ्ज़-न लहुम् व क़-अ़दल्लज़ी-न क-ज़बुल्ला-ह व रसूलहू, सयुसीबुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (90)

लै-स अ़लज़्ज़ु-अ़फ़ा-इ व ला अ़लल्-मर्ज़ा व ला अ़लल्लज़ी-न ला यजिदू-न मा युन्फ़िक़ू-न ह-रजुन् इज़ा न-सहू लिल्लाहि व रसूलिही, मा अ़लल् मुह्सिनी-न मिन् सबीलिन्, वल्लाहु ग़फ़ूरूर्रहीम (91)

व ला अ़लल्लज़ी-न इज़ा मा अतौ-क लितह्मि-लहुम् क़ुल्-त ला अजिदु मा अह्मिलुकुम् अ़लैहि तवल्लौ व अअ्युनुहुम् तफ़ीज़ु मिनद्-दम्अि ह-ज़नन् अल्ला यजिदू मा युन्फ़िक़ून (92)

इन्नमस्सबीलु अ़लल्लज़ी-न यस्तअ्ज़िनून-क व हुम् अग़्निया-उ रज़ू बिअंय्यकूनू मअ़ल् ख़्वालिफ़ि व त-बअ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यअ्लमून (93)

यअ्तज़िरू-न इलैकुम् इज़ा र-जअ्तुम् इलैहिम्, क़ुल्-ला तअ्तज़िरू लन्नुअ्मि-न लकुम् क़द् नब्ब-अनल्लाहु मिन् अख़्बारिकुम्, व स-यरल्लाहु अ़-म-लकुम् व रसूलुहू सुम्-म तुरद्दू-न इला अ़ालिमिल्ग़ैबि वश्शहादति फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (94)

لَهُمُ الۡخَيۡرٰتُ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الۡمُفۡلِحُوۡنَ ۝٨٨
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمۡ جَنّٰتٍ تَجۡرِىۡ مِنۡ تَحۡتِهَا
الۡاَنۡهٰرُ خٰلِدِيۡنَ فِيۡهَا ؕ ذٰلِكَ الۡفَوۡزُ
ع الۡعَظِيۡمُ ۝٨٩
وَجَآءَ الۡمُعَذِّرُوۡنَ مِنَ الۡاَعۡرَابِ لِيُؤۡذَنَ
لَهُمۡ وَقَعَدَ الَّذِيۡنَ كَذَبُوا اللّٰهَ وَرَسُوۡلَهٗ ؕ
سَيُصِيۡبُ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا مِنۡهُمۡ
عَذَابٌ اَلِيۡمٌ ۝٩٠
لَيۡسَ عَلَى الضُّعَفَآءِ وَلَا عَلَى الۡمَرۡضٰى
وَلَا عَلَى الَّذِيۡنَ لَا يَجِدُوۡنَ مَا يُنۡفِقُوۡنَ
حَرَجٌ اِذَا نَصَحُوۡا لِلّٰهِ وَرَسُوۡلِهٖ ؕ
مَا عَلَى الۡمُحۡسِنِيۡنَ مِنۡ سَبِيۡلٍ ؕ وَاللّٰهُ
غَفُوۡرٌ رَّحِيۡمٌ ۝٩١ ۙ
وَّلَا عَلَى الَّذِيۡنَ اِذَا مَاۤ اَتَوۡكَ لِتَحۡمِلَهُمۡ
قُلۡتَ لَاۤ اَجِدُ مَاۤ اَحۡمِلُكُمۡ عَلَيۡهِ ۖ
تَوَلَّوْا وَّاَعۡيُنُهُمۡ تَفِيۡضُ مِنَ الدَّمۡعِ
حَزَنًا اَلَّا يَجِدُوۡا مَا يُنۡفِقُوۡنَ ۝٩٢ ؕ
اِنَّمَا السَّبِيۡلُ عَلَى الَّذِيۡنَ
يَسۡتَاۡذِنُوۡنَكَ وَهُمۡ اَغۡنِيَآءُ ۚ رَضُوۡا
بِاَنۡ يَّكُوۡنُوۡا مَعَ الۡخَوَالِفِ ۙ وَطَبَعَ
اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ فَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝٩٣
يَعۡتَذِرُوۡنَ اِلَيۡكُمۡ اِذَا رَجَعۡتُمۡ اِلَيۡهِمۡ ؕ
قُلۡ لَّا تَعۡتَذِرُوۡا لَنۡ نُّؤۡمِنَ لَكُمۡ قَدۡ
نَبَّاَنَا اللّٰهُ مِنۡ اَخۡبَارِكُمۡ ؕ وَسَيَرَى
اللّٰهُ عَمَلَكُمۡ وَرَسُوۡلُهٗ ثُمَّ تُرَدُّوۡنَ اِلٰى
عٰلِمِ الۡغَيۡبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمۡ بِمَا
كُنۡتُمۡ تَعۡمَلُوۡنَ ۝٩٤

الجزء الحادي عشر (١١)

95. जब तुम उनके पास पलटकर जाओगे, तो वो तुम्हारे सामने अल्लाह की क़समें खाएंगे ताकि तुम उनसे सरफ़े नज़र करो। तो तुम उनसे सरफ़े नज़र ही करो, यक़ीनन वो गंदगी हैं, और उनका ठिकाना जहन्नम है। जो कुछ वो कमाते रहे हैं यह उसका बदला है।

96. वो तुम्हारे सामने क़समें खाएंगे ताकि तुम उनसे राज़ी हो जाओ, लेकिन अगर तुम उनसे राज़ी भी हो गए तो अल्लाह तो ऐसे लोगों से राज़ी होने का नहीं जो बद अ़हद हैं।

97. ये बदवी कुफ़्र और निफ़ाक़ में बहुत ही सख़्त हैं, और ये इसी बात के ज़्यादा लायक़ हैं कि उसके हुदूद को न जान सकें जो अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल किया है; अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, हिकमतवाला है।

98. और कुछ बदवी ऐसे हैं कि वो जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे तावान समझते हैं और तुम्हारे हक़ में गर्दिशों के इंतिज़ार में हैं। बुरे चक्कर में तो यही हैं; अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

99. और बदवियों में ऐसे भी हैं जो अल्लाह और रोज़े आख़िर को मानते हैं, और जो कुछ ख़र्च करते हैं उसे ख़ुदा के यहां क़ुरबतों का और रसूल की दुआएं हासिल करने का ज़रिया बनाते हैं। हां बेशक वह उनके लिए क़ुरबत ही है। अल्लाह उन्हें जल्द ही अपनी रहमत में दाख़िल करनेवाला है। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला है।

100. सबसे पहले सबक़त करने वाले, मुहाजिर और अंसार, और जिन्होंने अच्छे तरीक़े से उनकी पैरवी की, अल्लाह उनसे राज़ी हुआ, और वो उससे राज़ी हुए, और उसने उनके लिए ऐसे बाग़ात तैयार कर रखे हैं जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, वो उनमें हमेशा रहेंगे; यही बड़ी कामयाबी है।

101. और तुम्हारे आस-पास के बदवियों में और मदीने वालों में कुछ ऐसे मुनाफ़िक़ हैं जो निफ़ाक़ पर जमे हुए हैं। उनको तुम नहीं जानते, हम उन्हें ख़ूब जानते हैं, जल्द हम उन्हें दो

स-यह्लिफ़ू-न बिल्लाहि लकुम् इज़न्क़लब्तुम् इलैहिम् लितुअ्‌रिज़ू अ़न्हुम्, फ़-अअ्‌रिज़ू अ़न्हुम्, इन्नहुम् रिज्सुंव्-व मअ्‌वाहुम् जहन्नमु जज़ाअम् बिमा कानू यक्सिबून (95)

यह्लिफ़ू-न लकुम् लितर्ज़ौ अ़न्हुम् फ़-इन् तर्ज़ौ अ़न्हुम् फ़-इन्नल्ला-ह ला यर्ज़ा अ़निल् क़ौमिल्-फ़ासिक़ीन (96)

अल्अअ्‌राबु अशद्दु कुफ़्रंव्-व निफ़ाक़ंव-व अज्दरू अल्ला यअ्‌लमू हुदू-द मा अन्ज़लल्लाहु अ़ला रसूलिही, वल्लाहु अ़लीमुन्, हकीम (97)

व मिनल्-अअ्‌राबि मंय्यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु मग़्रमंव्-व य-तरब्बसु बिकुमुद्दवाइ-र, अ़लैहिम् दाइ-रतुस्सौ-इ, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (98)

व मिनल्-अअ्‌राबि मंय्युअ्‌मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल् आख़िरि व यत्तख़िज़ु मा युन्फ़िक़ु क़ुरुबातिन् अ़िन्दल्लाहि व स-लवातिर्रसूलि, अला इन्नहा क़ुर्-बतुल्लहुम् सयुद्ख़िलुहुमुल्लाहु फ़ी रह्मतिही, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (99)●

वस्साबिक़ूनल् अव्वलू-न मिनल्मुहाजिरी-न वल्अन्सारि वल्लज़ीनत्त-बअ़ूहुम् बि-इह्सानिर्-रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु व अ-अ़द्-द लहुम् जन्नातिन् तज्री तह्-तहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (100)

व मिम्-मन् हौलकुम् मिनल्-अअ्‌राबि मुनाफ़िक़ू-न, व मिन् अह्लिल्-मदीनति म-रदू अ़लन्निफ़ाक़ि, ला तअ्‌लमुहुम्, नह्नु नअ्‌लमुहुम्, सनुअ़ज़्ज़िबुहुम्

سَيَحْلِفُوْنَ بِاللّٰهِ لَكُمْ اِذَا انْقَلَبْتُمْ
اِلَيْهِمْ لِتُعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ فَاَعْرِضُوْا عَنْهُمْ ؕ
اِنَّهُمْ رِجْسٌ ۙ وَّمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ جَزَآءًۢ بِمَا
كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ (٩٥)

يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ لِتَرْضَوْا عَنْهُمْ ۚ فَاِنْ
تَرْضَوْا عَنْهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا يَرْضٰى عَنِ
الْقَوْمِ الْفٰسِقِيْنَ (٩٦)

اَلْاَعْرَابُ اَشَدُّ كُفْرًا وَّ نِفَاقًا
وَّ اَجْدَرُ اَلَّا يَعْلَمُوْا حُدُوْدَ مَاۤ
اَنْزَلَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ ؕ وَ اللّٰهُ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (٩٧)

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يَّتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ
مَغْرَمًا وَّيَتَرَبَّصُ بِكُمُ الدَّوَآئِرَ ؕ عَلَيْهِمْ
دَآئِرَةُ السَّوْءِ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ (٩٨)

وَمِنَ الْاَعْرَابِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ
الْاٰخِرِ وَيَتَّخِذُ مَا يُنْفِقُ قُرُبٰتٍ عِنْدَ اللّٰهِ
وَصَلَوٰتِ الرَّسُوْلِ ؕ اَلَاۤ اِنَّهَا قُرْبَةٌ
لَّهُمْ ؕ سَيُدْخِلُهُمُ اللّٰهُ فِىْ رَحْمَتِهٖ ؕ
ع اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٩٩)

وَالسّٰبِقُوْنَ الْاَوَّلُوْنَ مِنَ الْمُهٰجِرِيْنَ
وَالْاَنْصَارِ وَالَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُمْ بِاِحْسَانٍ ۙ
رَّضِىَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ وَاَعَدَّ لَهُمْ
جَنّٰتٍ تَجْرِىْ تَحْتَهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ (١٠٠)

مع وَمِمَّنْ حَوْلَكُمْ مِّنَ الْاَعْرَابِ مُنٰفِقُوْنَ ۛؕ
وَمِنْ اَهْلِ الْمَدِيْنَةِ ؔۛ مَرَدُوْا عَلَى النِّفَاقِ ۫
لَا تَعْلَمُهُمْ ؕ نَحْنُ نَعْلَمُهُمْ ؕ سَنُعَذِّبُهُمْ

मरतबा अज़ाब देंगे, फिर वो एक बड़े अज़ाब की तरफ़ लौटाए जाएंगे।

102. कुछ और हैं जिन्होंने अपने गुनाहों का इक़रार कर लिया; उन्होंने मिले-जुले अमल किए, कुछ अच्छे और कुछ बुरे। उम्मीद है कि अल्लाह उनपर तवज्जुह फ़रमाए; बेशक अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम फ़रमानेवाला है।

103. तुम उनके माल में से सदक़ा लेकर उनको पाक-साफ़ करो और उनके लिए दुआ करो, बेशक तुम्हारी दुआ उनके लिए तसकीन का बाइस है। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

104. क्या वो जानते नहीं कि अल्लाह ही अपने बन्दों की तौबा क़बूल फ़रमाता है, और सदके क़बुल करता है, और यह कि अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम फ़रमानेवाला है।

105. कह दो: "अमल किए जाओ; अभी अल्लाह और उसका रसूल और मोमिनीन तुम्हारे अमल को देखेंगे, फिर तुम उसकी तरफ़ पलटोगे जो छुपे और खुले को जानता है, फिर वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे हो"।

106. और कुछ दूसरे लोग भी हैं जिनका मुआमला अल्लाह का हुक्म आने तक मुलतवी है, ख़्वाह वह उन्हें अज़ाब दे या उनकी तौबा क़बूल फ़रमाए; अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, हिकमत वाला है।

107. और कुछ ऐसे हैं जिन्होंने नुक़सान पहुंचाने और कुफ़्र के लिए और इसलिए कि अहले ईमान के दरमियान फूट डालें, और उस शख़्स के घात लगाने को जो इससे पहले अल्लाह और उसके रसूल से लड़ चुका है, एक मस्जिद बनाई है। वो यक़ीनन क़समें खाएंगे कि "हमने तो बस अच्छा ही चाहा था"। लेकिन अल्लाह गवाही देता है कि वो बिल्कुल झूटे हैं।

108. तुम कभी भी उसमें खड़े न होना। वह मस्जिद जिसकी बुनियाद पहले दिन से परहेज़गारी पर रखी गई है वह इसकी ज़्यादा हक़दार है कि तुम उसमें खड़े हो; उसमें ऐसे लोग पाए जाते हैं जो खूब पाक रहना पसन्द करते हैं; और अल्लाह भी पाक-साफ़ रहनेवालों को पसन्द करता है।

109. फिर क्या वह अच्छा है जिसने अपनी इमारत की बुनियाद

मर्रतैनि सुम्-म युरद्दू-न इला अज़ाबिन् अज़ीम (101)

व आख़रूनअ्-त-रफ़ू बिज़ुनूबिहिम् ख़-लतू अ-मलन् सालिहंव्-व आख़-र सय्यिअन्, अ़सल्लाहु अंय्यतू-ब अ़लैहिम्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (102)

ख़ुज़् मिन् अम्वालिहिम् स-द-क़तन् तुतह्हिरुहुम् व तुज़क्कीहिम् बिहा व सल्लि अ़लैहिम्, इन्-न सलात-क स-कनुल्लहुम्, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (103)

अलम् यअ्लमू अन्नल्ला-ह हु-व यक़्बलुत्तौब-त अ़न् अ़िबादिही व यअ्ख़ुज़ुस्स-दक़ाति व अन्नल्ला-ह हुवत्-तव्वाबुर्रहीम (104)

व क़ुलिअ्मलू फ़-स-यरल्लाहु अ़-म-लकुम् व रसूलुहू वल्-मुअ्मिनू-न, व सतुरद्दू-न इला आ़लिमिल्-ग़ैबि वश्शहा-दति फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (105)

व आख़रू-न मुर्जौ-न लिअम्रिल्लाहि इम्मा युअ़ज़्ज़िबुहुम् व इम्मा यतूबु अ़लैहिम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (106)

वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मस्जिदन् ज़िरारंव्-व कुफ़्रंव्-व तफ़्रीक़म्-बैनल्मुअ्मिनी-न व इर्सादल्-लिमन् हा-रबल्ला-ह व रसूलहू मिन् क़ब्लु, व ल-यह्लिफ़ुन्-न इन् अरद्ना इल्लल्-हुस्ना, वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् लकाज़िबून (107)

ला तक़ुम् फ़ीहि अ-बदन्, ल-मस्जिदुन् उस्सि-स अ़लत्तक़्वा मिन् अव्वलि यौमिन् अ-हक़्क़ु अन् तक़ू-म फ़ीहि, फ़ीहि रिजालुंय्युहिब्बू-न अंय्यत-तह्हरू, वल्लाहु युहिब्बुल् मुत्तह्हिरीन (108)

अ-फ़-मन् अस्स-स बुन्यानहू अ़ला तक़्वा मिनल्लाहि

مَرَّتَيْنِ ثُمَّ يُرَدُّوْنَ اِلٰى عَذَابٍ عَظِيْمٍ ۝١٠١

وَاٰخَرُوْنَ اعْتَرَفُوْا بِذُنُوْبِهِمْ خَلَطُوْا
عَمَلًا صَالِحًا وَّاٰخَرَ سَيِّئًا ۭ عَسَى اللّٰهُ
اَنْ يَّتُوْبَ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ
رَّحِيْمٌ ۝١٠٢

خُذْ مِنْ اَمْوَالِهِمْ صَدَقَةً تُطَهِّرُهُمْ
وَتُزَكِّيْهِمْ بِهَا وَصَلِّ عَلَيْهِمْ ۭ اِنَّ صَلٰوتَكَ
سَكَنٌ لَّهُمْ ۭ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝١٠٣

اَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ هُوَ يَقْبَلُ التَّوْبَةَ
عَنْ عِبَادِهٖ وَيَاْخُذُ الصَّدَقٰتِ وَاَنَّ
اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ۝١٠٤

وَقُلِ اعْمَلُوْا فَسَيَرَى اللّٰهُ عَمَلَكُمْ
وَرَسُوْلُهٗ وَالْمُؤْمِنُوْنَ ۭ وَسَتُرَدُّوْنَ اِلٰى
عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٠٥

وَاٰخَرُوْنَ مُرْجَوْنَ لِاَمْرِ اللّٰهِ اِمَّا يُعَذِّبُهُمْ
وَاِمَّا يَتُوْبُ عَلَيْهِمْ ۭ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝١٠٦

وَالَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مَسْجِدًا ضِرَارًا وَّكُفْرًا
وَّتَفْرِيْقًۢا بَيْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَاِرْصَادًا
لِّمَنْ حَارَبَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ مِنْ قَبْلُ ۭ
وَلَيَحْلِفُنَّ اِنْ اَرَدْنَآ اِلَّا الْحُسْنٰى ۭ
وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝١٠٧

لَا تَقُمْ فِيْهِ اَبَدًا ۭ لَمَسْجِدٌ اُسِّسَ عَلَى
التَّقْوٰى مِنْ اَوَّلِ يَوْمٍ اَحَقُّ اَنْ تَقُوْمَ
فِيْهِ ۭ فِيْهِ رِجَالٌ يُّحِبُّوْنَ اَنْ يَّتَطَهَّرُوْا ۭ
وَاللّٰهُ يُحِبُّ الْمُطَّهِّرِيْنَ ۝١٠٨

اَفَمَنْ اَسَّسَ بُنْيَانَهٗ عَلٰى تَقْوٰى مِنَ اللّٰهِ

وَرِضْوَانٍ خَيْرٌ أَمْ مَّنْ أَسَّسَ بُنْيَانَهُ
عَلَىٰ شَفَا جُرُفٍ هَارٍ فَانْهَارَ بِهِ فِي نَارِ
جَهَنَّمَ ۗ وَاللَّهُ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظَّالِمِينَ (109)
لَا يَزَالُ بُنْيَانُهُمُ الَّذِي بَنَوْا رِيبَةً فِي
قُلُوبِهِمْ إِلَّا أَنْ تَقَطَّعَ قُلُوبُهُمْ ۗ وَاللَّهُ
عَلِيمٌ حَكِيمٌ (110)
إِنَّ اللَّهَ اشْتَرَىٰ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ أَنْفُسَهُمْ
وَأَمْوَالَهُمْ بِأَنَّ لَهُمُ الْجَنَّةَ ۚ يُقَاتِلُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ فَيَقْتُلُونَ وَيُقْتَلُونَ ۖ
وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا فِي التَّوْرَاةِ وَالْإِنْجِيلِ
وَالْقُرْآنِ ۚ وَمَنْ أَوْفَىٰ بِعَهْدِهِ مِنَ اللَّهِ ۚ
فَاسْتَبْشِرُوا بِبَيْعِكُمُ الَّذِي بَايَعْتُمْ بِهِ ۚ
وَذَٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيمُ (111)
التَّائِبُونَ الْعَابِدُونَ الْحَامِدُونَ السَّائِحُونَ
الرَّاكِعُونَ السَّاجِدُونَ الْآمِرُونَ بِالْمَعْرُوفِ
وَالنَّاهُونَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَالْحَافِظُونَ لِحُدُودِ
اللَّهِ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ (112)
مَا كَانَ لِلنَّبِيِّ وَالَّذِينَ آمَنُوا أَنْ يَسْتَغْفِرُوا
لِلْمُشْرِكِينَ وَلَوْ كَانُوا أُولِي قُرْبَىٰ مِنْ بَعْدِ
مَا تَبَيَّنَ لَهُمْ أَنَّهُمْ أَصْحَابُ الْجَحِيمِ (113)
وَمَا كَانَ اسْتِغْفَارُ إِبْرَاهِيمَ لِأَبِيهِ إِلَّا
عَنْ مَوْعِدَةٍ وَعَدَهَا إِيَّاهُ فَلَمَّا تَبَيَّنَ
لَهُ أَنَّهُ عَدُوٌّ لِلَّهِ تَبَرَّأَ مِنْهُ ۚ إِنَّ
إِبْرَاهِيمَ لَأَوَّاهٌ حَلِيمٌ (114)
وَمَا كَانَ اللَّهُ لِيُضِلَّ قَوْمًا بَعْدَ إِذْ
هَدَاهُمْ حَتَّىٰ يُبَيِّنَ لَهُمْ مَا يَتَّقُونَ ۚ
إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ (115)

व रिज़्वानिन् ख़ैरुन् अम्-मन् अस्स-स बुन्यानहू अ़ला शफ़ा जुरुफ़िन् हारिन् फन्हा-र बिही फ़ी नारि जहन्न-म, वल्लाहु ला यह्दिल् क़ौमज़्-ज़ालिमीन (109)

ला यज़ालु बुन्यानु-हुमुल्लज़ी बनौ री-बतन् फ़ी कुलूबिहिम् इल्ला अन् त-क़त्त-अ़ कुलूबुहुम्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (110) ●

इन्नल्लाहश्तरा मिनल्मुअ्मिनी-न अन्फु-सहुम् व अम्वालहुम् बिअन्-न लहुमुल्जन्न-त, युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-यक़्तुलू-न व युक़्तलू-न, वअ्दन् अ़लैहि हक़्क़न् फ़ित्तौराति वल्इन्जीलि वल्कुर्आनि, व मन् औफ़ा बि-अ़ह्दिही मिनल्लाहि फ़स्तब्शिरू बिबैअ़िकुमुल्लज़ी बायअ्तुम् बिही, व ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (111)

अत्ता-इबूनल्-आ़बिदूनल-हामिदूनस्-सा-इहूनर्-राकिअूनस्-साजिदूनल्-आमिरू-न बिल्मअ्रूफ़ि वन्नाहू-न अ़निल्मुन्करि वल्हाफ़िज़ू-न लिहुदूदिल्लाहि, व बश्शिरिल् मुअ्मिनीन (112)

मा का-न लिन्नबिय्यि वल्लज़ी-न आमनू अंय्यस्तग़्फ़िरू लिल्मुश्रिकी-न व लौ कानू उली क़ुर्बा मिम्-बअ्दि मा तबय्य-न लहुम् अन्नहुम् अस्हाबुल्-जहीम (113)

व मा कानस्तिग़्फ़ारु इब्राही-म लिअबीहि इल्ला अ़म्-मौअ़ि-दतिंव् व-अ़-दहा इय्याहु फ़-लम्मा तबय्य-न लहू अन्नहू अ़दुव्वुल्-लिल्लाहि त-बर्र-अ मिन्हु, इन्-न इब्राही-म ल-अव्वाहुन् हलीम (114)

व मा कानल्लाहु लियुज़िल्-ल क़ौमम् बअ्-द इज़् हदाहुम् हत्ता युबय्यि-न लहुम् मा यत्तक़ू-न, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (115)

अल्लाह के ख़ौफ़ और उसकी रिज़ा पर रखी है, या वह जिसने अपनी इमारत की बुनियाद किसी खाई के खोखले कगर पर रखी जो गिरने को है फिर वह उसे लेकर जहन्नम की आग में जा गिरी? अल्लाह तो ज़ालिम लोगों को राह नहीं दिखाया करता।

110. उनकी यह इमारत जो उन्होंने बनाई है हमेशा उनके दिलों में खटक बन कर रहेगी, हां अगर उनके दिल ही टुकड़े-टुकड़े हो जाएं तो दूसरी बात है; अल्लाह तो सब कुछ जाननेवाला, निहायत हिकमतवाला है।

111. बेशक अल्लाह ने ईमान वालों से उनकी जानें और उनके माल इसके बदले में ख़रीद लिए हैं कि उनके लिए जन्नत है; वो अल्लाह के रास्ते में लड़ते हैं तो वो मारते भी हैं और मारे भी जाते हैं; यह उसके ज़िम्मे तौरात, इंजील, और क़ुरआन में (किया गया) एक पुख़्ता वादा है; और अल्लाह से बढ़कर अपने वादे का पूरा करनेवाला हो भी कौन सकता है? पस अपने उस सौदे पर ख़ुशियां मनाओ जो सौदा तुमने उससे किया है, यही तो सबसे बड़ी कामयाबी है।

112. वो ऐसे हैं जो तौबा करते हैं, बन्दगी करते हैं, हम्द करते हैं, रियाज़ करते हैं, झुकते हैं, सजदा करते हैं, भलाई का हुक्म देते हैं और बुराई से रोकते हैं, और अल्लाह के हुदूद की निगरानी रखते हैं — और उन मोमिनों को ख़ुशख़बरी दे दो।

113. नबी और उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हैं मुनासिब नहीं कि वो मुशरिकीन के हक़ में बख़्शिश की दुआ मांगें, अगरचे वो उनके रिश्तेदार ही क्यों न हों, जबकि यह बात उनपर खुल चुकी है कि वो भड़कती आग वाले हैं।

114. इब्राहीम ने अपने बाप के लिए जो बख़्शिश की दुआएं मांगी थी वह तो सिर्फ़ एक वादे की वजह से थी जो वह उससे कर चुका था; फिर जब उसपर यह खुल गया कि वह अल्लाह का दुश्मन है, तो उसने उससे साफ़ बे तअल्लुक़ी का इज़हार कर दिया; हक़ीक़त में इब्राहीम बड़ा ही नर्म दिल, बड़ा ही बुर्दबार था।

115. अल्लाह ऐसा नहीं कि लोगों को गुमराह कर दे जबकि वह उनको राह दिखा चुका हो जब तक उन्हें साफ़-साफ़ वह कुछ बता न दे जिससे उन्हें बचना है। बेशक अल्लाह को हर चीज़ का पूरा इल्म है।

116. अल्लाह ही है जिसके लिए आसमानों और ज़मीन की बादशाही है, वही जिलाता है और वही मारता है; अल्लाह से हटकर न तुम्हारा कोई हिमायती है और न मददगार।

117. अल्लाह नबी पर मेहरबान हो गया और मुहाजिरीन और अंसार पर भी जिन्होंने तंगी की घड़ी में उसका साथ दिया इसके बाद कि उनमें से एक गिरोह के दिल कजी की तरफ़ माइल हो चुके थे। फिर उसने उनपर तवज्जुह फ़रमाई; इसमें शक नहीं कि वह उनके लिए बड़ा शफ़ीक़, निहायत रहमवाला है।

118. और उन तीनों पर भी जो पीछे छोड़ दिए गए थे, यहां तक कि जब ज़मीन अपनी कुशादगी के बावजूद उनपर तंग हो गई और उनकी जानें उनपर दूभर हो गईं और उन्होंने समझा कि अल्लाह से बचने के लिए कोई पनाह नहीं मिल सकती है, मिल सकती है तो उसी के यहां, फिर वह उनकी तरफ़ मुतवज्जेह हुआ, ताकि वो भी पलट आएं, बेशक अल्लाह ही तौबा क़बूल करनेवाला, निहायत रहमवाला है।

119. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो अल्लाह का डर रखो और सच्चे लोगों के साथ हो जाओ।

120. मदीनेवालों और उनके आस-पास के बदवियों को ऐसा नहीं चाहिए था कि अल्लाह के रसूल को छोड़कर पीछे रह जाएं, और न यह कि उसकी जान के मुक़ाबले में उन्हें अपनी जान ज़्यादा अज़ीज़ हो; यह इसलिए कि वो अल्लाह के रास्ते में प्यासा या थकन या भूक की कोई भी तकलीफ़ उठाएं, या किसी ऐसी जगह क़दम रखें जिससे अहले कुफ़्र का गुस्सा भड़के, या जो चरका भी वो दुश्मन को लगाएं उसपर उनके हक़ में लाज़िमन एक नेक अमल लिख लिया जाता है; बेशक ख़ुदा ख़ूबकारों का अजर अकारत नहीं करता।

121. और वो थोड़ा या ज़्यादा जो कुछ भी ख़र्च करें, या कोई वादी तय करें उनके हक़ में लाज़िमन लिख लिया जाता है, ताकि अल्लाह उन्हें उनके अच्छे कामों का अजर अता करे।

122. ऐसा तो मुनासिब नहीं कि अहले ईमान सबके सब निकल खड़े

इन्नल्ला-ह लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, युह्यी व युमीतु, व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (116)

ल-क़त्ताबल्लाहु अ़लन्नबिय्यि वल्मुहाजिरी-न वल्अन्सारिल्लज़ीनत्-त-बअूहु फ़ी सा-अ़तिल्-अुस्रति मिम्-बअ़्दि मा का-द यज़ीग़ु क़ुलूबु फ़रीक़िम् मिन्हुम् सुम्-म ता-ब अ़लैहिम्, इन्नहू बिहिम् रऊफ़ुर्रहीम (117)

व अ़लस्-सला-सतिल्लज़ी-न ख़ुल्लिफ़ू हत्ता इज़ा ज़ाक़त् अ़लैहिमुल्-अर्ज़ु बिमा रहुबत् व ज़ाक़त् अ़लैहिम् अन्फ़ुसुहुम् व ज़न्नू अल्ला मल्ज-अ मिनल्लाहि इल्ला इलैहि, सुम्-म ता-ब अ़लैहिम् लि-यतूबू, इन्नल्ला-ह हुवत्तव्वाबुर्रहीम (118) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व कूनू मअ़स्सादिक़ीन (119)

मा का-न लिअह्लिल्-मदीनति व मन् हौ-लहुम् मिनल्-अअ़्राबि अंय्य-तख़ल्लफ़ू अ़र्रसूलिल्लाहि व ला यर्ग़बू बिअन्फ़ुसिहिम् अ़न् नफ़्सिही, ज़ालि-क बिअन्नहुम् ला युसीबुहुम् ज़-मउंव्-व ला न-सबुंव्-व ला मख़्म-सतुन् फ़ी सबीलिल्लाहि व ला य-तऊ-न मौतिअंय्यग़ीज़ुल्-कुफ़्फ़ा-र व ला यनालू-न मिन् अ़दुव्विन्-नैलन् इल्ला कुति-ब लहुम् बिही अ़-मलुन् सालिहुन्, इन्नल्ला-ह ला युज़ीअ़ु अज्रल्-मुह्सिनीन (120)

व ला युन्फ़िक़ू-न न-फ़-क़तन् सग़ी-रतंव्-व ला कबी-रतंव्-व ला यक़्तअ़ू-न वादियन् इल्ला कुति-ब लहुम् लियज्ज़ि-यहुमुल्लाहु अह्स-न मा कानू यअ़्मलून (121)

व मा कानल्-मुअ्मिनू-न लियन्फ़िरू काफ़्फ़-तन्,

اِنَّ اللّٰهَ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِؕ
يُحْيٖ وَيُمِيْتُؕ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ﴿١١٦﴾
لَقَدْ تَّابَ اللّٰهُ عَلَى النَّبِيِّ وَالْمُهٰجِرِيْنَ
وَالْاَنْصَارِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ فِيْ سَاعَةِ
الْعُسْرَةِ مِنْۢ بَعْدِ مَا كَادَ يَزِيْغُ قُلُوْبُ
فَرِيْقٍ مِّنْهُمْ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْؕ اِنَّهٗ
بِهِمْ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١١٧﴾
وَّعَلَى الثَّلٰثَةِ الَّذِيْنَ خُلِّفُوْاؕ حَتّٰۤى اِذَا
ضَاقَتْ عَلَيْهِمُ الْاَرْضُ بِمَا رَحُبَتْ
وَضَاقَتْ عَلَيْهِمْ اَنْفُسُهُمْ وَظَنُّوْۤا اَنْ لَّا
مَلْجَاَ مِنَ اللّٰهِ اِلَّاۤ اِلَيْهِؕ ثُمَّ تَابَ عَلَيْهِمْ
ع لِيَتُوْبُوْاؕ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ التَّوَّابُ الرَّحِيْمُ ﴿١١٨﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَكُوْنُوْا
مَعَ الصّٰدِقِيْنَ ﴿١١٩﴾
مَا كَانَ لِاَهْلِ الْمَدِيْنَةِ وَمَنْ حَوْلَهُمْ
مِّنَ الْاَعْرَابِ اَنْ يَّتَخَلَّفُوْا عَنْ رَّسُوْلِ
اللّٰهِ وَلَا يَرْغَبُوْا بِاَنْفُسِهِمْ عَنْ نَّفْسِهٖؕ
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ لَا يُصِيْبُهُمْ ظَمَاٌ وَّلَا نَصَبٌ
وَّلَا مَخْمَصَةٌ فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ وَلَا يَطَـُٔوْنَ
مَوْطِئًا يَّغِيْظُ الْكُفَّارَ وَلَا يَنَالُوْنَ مِنْ
عَدُوٍّ نَّيْلًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ بِهٖ عَمَلٌ صَالِحٌؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢٠﴾
وَلَا يُنْفِقُوْنَ نَفَقَةً صَغِيْرَةً وَّلَا كَبِيْرَةً
وَّلَا يَقْطَعُوْنَ وَادِيًا اِلَّا كُتِبَ لَهُمْ
لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿١٢١﴾
وَمَا كَانَ الْمُؤْمِنُوْنَ لِيَنْفِرُوْا كَآفَّةًؕ

हों; फिर ऐसा क्यों नहीं हुआ कि उनके हर गिरोह में से कुछ लोग निकलते ताकि वो दीन में समझ हासिल करते, और ताकि वो अपने लोगों को ख़बरदार करते, जबकि वो उनकी तरफ़ लौटते, ताकि वो बचते?

123. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, उन काफ़िरों से लड़ो जो तुम्हारे क़रीब हैं, और चाहिए कि वो तुममें सख़्ती पाएं; और जान रखो कि अल्लाह डर रखनेवालों के साथ है।

124. जब भी कोई सूरह नाज़िल की जाती है तो उनमें से कुछ लोग कहते हैं, "इसने तुममें से किसके ईमान में इज़ाफ़ा किया"? हां जो लोग ईमान लाए हैं, उसने उनके ईमान में इज़ाफ़ा किया है, और वो ख़ुशी से भर गए हैं।

125. रहे वो लोग जिनके दिलों में रोग है, उनकी गंदगी में इज़ाफ़ा करते हुए उसने उन्हें उनकी अपनी गंदगी में और आगे बढ़ा दिया, और वो मरे तो हालते कुफ़्र ही में।

126. क्या वो देखते नहीं कि हर साल वो एक या दो बार आज़माइश में डाले जाते हैं? फिर भी न तो वो तौबा करते हैं और न उन्हें होश होता है।

127. और जब कोई सूरह नाज़िल होती है तो उनमें एक दूसरे को देखने लगता है कि "कोई तुम्हें देखा तो नहीं है?" फिर पलट जाते हैं। अल्लाह ने उनके दिल फेर दिए हैं, क्योंकि वो ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं।

128. तुम्हारे पास तुम्हीं में से एक रसूल आ गया है; तुम्हारा ज़हमत में पड़ना उसको गिरां गुज़रती है; वह तुम्हारा (तुम्हारे ईमान का) हरीस है, मोमिनीन के लिए वह इंतिहाई शफ़ीक़, निहायत रहमवाला है।

129. अब अगर वो मुंह मोड़ें, तो कह दो: "अल्लाह मेरे लिए काफ़ी है। उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मैंने भरोसा किया। और वही अ़र्श-ए-अज़ीम का रब है।"

फ़लौ ला न-फ़-र मिन् कुल्लि फ़िर्क़तिम् मिन्हुम् ताइ-फ़तुल् लि-य तफ़क़्क़हू फ़िद्दीनि व लियुन्ज़िरू क़ौमहुम् इज़ा र-जअू इलैहिम् लअ़ल्लहुम् यह्ज़रून (122) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू क़ातिलुल्लज़ी-न यलूनकुम् मिनल्कुफ़्फ़ारि वल्यजिदू फ़ीकुम् ग़िल्ज़-तन्, वअ़्लमू अन्नल्ला-ह मअ़ल्मुत्तक़ीन (123)

व इज़ा मा उन्ज़िलत् सूरतुन् फ़-मिन्हुम् मंय्यक़ूलु अय्युकुम् ज़ादत्हु हाज़िही ईमानन् फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू फ़ज़ादत्हुम् ईमानंव्-व हुम् यस्तब्शिरून (124)

व अम्मल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् फ़ज़ादत्हुम् रिज्सन् इला रिज्सिहिम् व मातू व हुम् काफ़िरून (125)

अ-वला यरौ-न अन्नहुम् युफ़्तनू-न फ़ी कुल्लि आ़मिम्-मर्र-तन् औ मर्रतैनि सुम्-म ला यतूबू-न व ला हुम् यज़्ज़क्करून (126)

व इज़ा मा उन्ज़िलत् सूरतुन् न-ज़-र बअ़्ज़ुहुम् इला बअ़्ज़िन्, हल् यराकुम् मिन् अ-हदिन् सुम्मन्स-रफ़ू, स-रफ़ल्लाहु क़ुलूबहुम् बिअन्नहुम् क़ौमुल् ला यफ़्क़हून (127)

ल-क़द् जा-अकुम् रसूलुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अ़ज़ीज़ुन् अ़लैहि मा अ़नित्तुम् हरीसुन् अ़लैकुम् बिल्मुअ्मिनी-न रऊफ़ुर्रहीम (128)

फ़-इन् तवल्लौ फ़क़ुल् हस्बियल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, अ़लैहि तवक्कल्तु व हु-व रब्बुल् अ़र्शिल्-अ़ज़ीम (129) ●

فَلَوْلَا نَفَرَ مِنْ كُلِّ فِرْقَةٍ مِّنْهُمْ
طَآئِفَةٌ لِّيَتَفَقَّهُوْا فِى الدِّيْنِ وَلِيُنْذِرُوْا
قَوْمَهُمْ اِذَا رَجَعُوْٓا اِلَيْهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَحْذَرُوْنَ ﴿١٢٢﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قَاتِلُوا الَّذِيْنَ يَلُوْنَكُمْ
مِّنَ الْكُفَّارِ وَلْيَجِدُوْا فِيْكُمْ غِلْظَةً ؕ
وَاعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ مَعَ الْمُتَّقِيْنَ ﴿١٢٣﴾
وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ فَمِنْهُمْ مَّنْ يَّقُوْلُ
اَيُّكُمْ زَادَتْهُ هٰذِهٖٓ اِيْمَانًا ۚ فَاَمَّا
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فَزَادَتْهُمْ اِيْمَانًا وَّهُمْ
يَسْتَبْشِرُوْنَ ﴿١٢٤﴾
وَاَمَّا الَّذِيْنَ فِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ فَزَادَتْهُمْ
رِجْسًا اِلٰى رِجْسِهِمْ وَمَاتُوْا وَهُمْ
كٰفِرُوْنَ ﴿١٢٥﴾
اَوَلَا يَرَوْنَ اَنَّهُمْ يُفْتَنُوْنَ فِىْ كُلِّ
عَامٍ مَّرَّةً اَوْ مَرَّتَيْنِ ثُمَّ لَا يَتُوْبُوْنَ
وَلَا هُمْ يَذَّكَّرُوْنَ ﴿١٢٦﴾
وَاِذَا مَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ نَّظَرَ بَعْضُهُمْ
اِلٰى بَعْضٍ ؕ هَلْ يَرٰىكُمْ مِّنْ اَحَدٍ ثُمَّ
انْصَرَفُوْا ؕ صَرَفَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ بِاَنَّهُمْ
قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ ﴿١٢٧﴾
لَقَدْ جَآءَكُمْ رَسُوْلٌ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ عَزِيْزٌ
عَلَيْهِ مَا عَنِتُّمْ حَرِيْصٌ عَلَيْكُمْ بِالْمُؤْمِنِيْنَ
رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿١٢٨﴾
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ حَسْبِىَ اللّٰهُ ۖ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ؕ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَهُوَ رَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿١٢٩﴾

सूरह यूनुस मक्की

(आयतें 109, रुकूआत 11)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-रा। यह हिकमत से भरी किताब की आयतें हैं।

2. क्या लोगों को इसपर हैरत है कि हमने उन्हीं में से एक आदमी पर वही भेजी कि "लोगों को ख़बरदार कर दो, और जो लोग मानें उनको खुशख़बरी दे दो कि उनके लिए उनके रब के पास एक ला ज़वाल सच्चा मक़ाम-ए-तरक़्क़ी है"? मुनकिरीन कहने लगे "यह यक़ीनन एक खुला जादूगर है।"

3. बेशक तुम्हारा रब वही अल्लाह है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा फ़रमाया, फिर अर्श पर जलवागर होकर इंतिज़ाम चला रहा है। उसकी इजाज़त के बाद ही कोई सिफ़ारिश कर सकता है। वह अल्लाह तुम्हारा रब है; लिहाज़ा उसी की बन्दगी करो। तो क्या तुम याददिहानी हासिल न करोगे?

4. उसी की तरफ़ तुम सब को लौटना है; यह अल्लाह का पुख़्ता वादा है। बेशक वही ख़ल्क़ का आग़ाज़ करता है, फिर वही उसका इआदा करेगा ताकि जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए उन्हें इनसाफ़ के साथ बदला दे। रहे वो लोग जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया, उनके लिए खौलता हुआ मशरूब और दर्दनाक अज़ाब उस कुफ़्र के बदले में हैं जो वो करते रहे।

5. वही है जिसने सूरज को सरापा चमक, और चांद को एक रौशनी बनाया, और उसके लिए मंज़िलें मुक़र्रर कीं, ताकि बरसों की गिनती और हिसाब मालूम कर लिया करो। अल्लाह ने यह सब बामक़सद ही पैदा किया, वह निशानियां उन लोगों के लिए खोल-खोलकर बयान करता है जो जानना चाहें।

6. बेशक रात और दिन के उलट-फेर में, और जो कुछ अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन में पैदा किया उसमें, उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो डर रखते हों।

7. रहे वो लोग जो हमसे मिलने का ख़याल नहीं रखते और दुनिया ही की ज़िन्दगी पर राज़ी होकर रह गए

10 सूरतु यूनुस

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 7733 अक्षर, 1861 शब्द, 109 आयतें और 11 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, तिल्-क आयातुल् किताबिल्-हकीम (1)

अका-न लिन्नासि अ-जबन् अन् औहैना इला रजुलिम्-मिन्हुम् अन् अन्ज़िरिन्ना-स व बश्शिरिल्लज़ी-न आमनू अन्-न लहुम् क़-द-म सिद्किन् अिन्-द रब्बिहिम् क़ालल्-काफ़िरू-न इन्-न हाज़ा लसाहिरुम्-मुबीन (2)

इन्-न रब्बकुमुल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि युदब्बिरुल्-अम्-र, मा मिन् शफ़ीअ़िन् इल्ला मिम्-बअ़्दि इज़्निही, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़अ़्बुदूहु, अ-फ़ला तज़क्करून (3)

इलैहि मर्जिअ़ुकुम् जमीअ़न्, वअ़्दल्लाहि हक़्क़न्, इन्नहू यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युअ़ीदुहू लियज्ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति बिल्क़िस्ति, वल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् शराबुम्-मिन् हमीमिंव्-व अ़ज़ाबुन् अलीमुम्-बिमा कानू यक्फ़ुरून (4)

हुवल्लज़ी-ज-अ़लश्शम्-स ज़ियाअंव्-वल्क़-म-र नूरंव्-व क़द्द-रहू मनाज़ि-ल लितअ़्लमू अ़-ददस्सिनी-न वल्हिसा-ब, मा ख़-लक़ल्लाहु ज़ालि-क इल्ला बिल्हक़्क़ि युफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्यअ़्लमून (5)

इन्-न फ़िख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा ख़-लक़ल्लाहु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिल् लिक़ौमिंय्यत्तक़ून (6)

इन्नल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना व रज़ू बिल्हयातिद्दुन्या वत्म-अन्नू बिहा वल्लज़ी-न

سُوْرَةُ يُوْنُسَ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٠٩ رُكُوْعَاتُهَا ١١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝١
اَكَانَ لِلنَّاسِ عَجَبًا اَنْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى
رَجُلٍ مِّنْهُمْ اَنْ اَنْذِرِ النَّاسَ وَبَشِّرِ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنَّ لَهُمْ قَدَمَ صِدْقٍ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ؔ قَالَ الْكٰفِرُوْنَ اِنَّ
هٰذَا لَسٰحِرٌ مُّبِيْنٌ ۝٢
اِنَّ رَبَّكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
عَلَى الْعَرْشِ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ مَا مِنْ
شَفِيْعٍ اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اِذْنِهٖ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ
رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣
اِلَيْهِ مَرْجِعُكُمْ جَمِيْعًا ؕ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ؕ
اِنَّهٗ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ لِيَجْزِيَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ بِالْقِسْطِ ؕ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ شَرَابٌ مِّنْ حَمِيْمٍ
وَّعَذَابٌ اَلِيْمٌۢ بِمَا كَانُوْا يَكْفُرُوْنَ ۝٤
هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الشَّمْسَ ضِيَآءً وَّالْقَمَرَ
نُوْرًا وَّقَدَّرَهٗ مَنَازِلَ لِتَعْلَمُوْا عَدَدَ
السِّنِيْنَ وَالْحِسَابَ ؕ مَا خَلَقَ اللّٰهُ ذٰلِكَ
اِلَّا بِالْحَقِّ ۚ يُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْلَمُوْنَ ۝٥
اِنَّ فِي اخْتِلَافِ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ وَمَا خَلَقَ
اللّٰهُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّتَّقُوْنَ ۝٦
اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا وَرَضُوْا
بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَاطْمَاَنُّوْا بِهَا وَالَّذِيْنَ

और उसी पर वो मुतमइन हो गए और जो हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल हैं,

8. ऐसे लोगों का ठिकाना उसके बदले में जो वो कमाते रहे, आग है।

9. रहे वो लोग जो ईमान लाए, और नेक आमाल इख़्तियार किए, उनका रब उनके ईमान की बदौलत उनकी रहनुमाई फ़रमाएगा, उनके नीचे नेमत भरी जन्नतों में नहरें बहती होंगी;

10. वहां उनकी पुकार होगी, "अज़मत और बड़ाई है तेरी, ऐ अल्लाह," और उनकी बाहम मुलाक़ात की दुआ 'सलाम' है, और उनकी पुकार का आख़िर यह होगा, "तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जो सारे जहान का रब है"।

11. अगर अल्लाह लोगों के लिए उनके जल्दी मचाने की वजह से भलाई की जगह बुराई को जल्द वाक़े कर दे तो उनकी जानिब उनकी मुद्दत पूरी कर दी जाए। लेकिन हम उन्हें जो हमसे मुलाक़ात की तवक़्क़ो नहीं रखते उनकी अपनी सरकशी में भटकने के लिए छोड़ देते हैं।

12. इनसान को जब कोई तकलीफ़ पहुंचती है, तो वह लेटे या बैठे या खड़े हमको पुकारने लग जाता है; लेकिन जब हम उसकी तकलीफ़ उससे दूर कर देते हैं, तो वह इस तरह चल देता है, गोया कभी अपने ऊपर तकलीफ़ आने पर उसने हमें पुकारा ही न था। इसी तरह हद से तजावुज़ करनेवालों के लिए उनके करतूत खुशनुमा बना दिए गए हैं।

13. तुमसे पहले कितनी ही क़ौमों को जब उन्होंने ज़ुल्म किया हम हलाक कर चुके हैं, हालांकि उनके रसूल खुली दलीलें लेकर उनके पास आए थे, लेकिन वो ऐसे न थे कि मानते; जुर्म पेशा लोगों को हम इसी तरह बदला दिया करते हैं।

14. फिर उनके बाद हमने ज़मीन में उनकी जगह तुम्हें रखा ताकि हम देखें के तुम कैसे अमल करते हो।

15. और जब उनके सामने हमारी खुली हुई आयतें पढ़ी जाती हैं तो वो लोग जिन्हें हमसे मिलने की तवक़्क़ो नहीं, कहते हैं: "इसके सिवा कोई और क़ुरआन ले आओ, या इसमें तरमीम करो", कह दो कि "मुझसे यह नहीं

हुम् अन् आयातिना ग़ाफ़िलून (7)

उलाइ-क मअ्वाहुमुन्नारू बिमा कानू यक्सिबून (8)

इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति यह्दीहिम् रब्बुहुम् बिईमानिहिम् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारू फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम (9)

दअ्वाहुम् फ़ीहा सुब्हान-कल्लाहुम्-म व तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलामुन व आख़िरू दअ्वाहुम् अनिल-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन (10) ●

व लौ युअ़ज्जिलुल्लाहु लिन्नासिश्-शर्रस्तिअ्जा-लहुम बिल्ख़ैरि लक़ुज़ि-य इलैहिम् अ-जलुहुम्, फ़-न-ज़रूल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून (11)

व इज़ा मस्सल् इन्सानज़्-ज़ुर्रु दआ़ना लिजम्बिही औ क़ाअ़िदन् औ क़ाइमन् फ़-लम्मा कशफ़्ना अ़न्हु ज़ुर्-रहू मर्-र क-अल्लम् यद्अुना इला ज़ुर्रिम्-मस्सहू, कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिल्मुस्रिफ़ी-न मा कानू यअ्मलून (12)

व ल-क़द् अह्लक्नल्-क़ुरू-न मिन् क़ब्लिकुम् लम्मा ज़-लमू व जाअत्हुम् रूसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व मा कानू लियुअ्मिनू, कज़ालि-क नज्ज़िल् क़ौमल्-मुज्रिमीन (13)

सुम्-म जअ़ल्नाकुम् ख़लाइ-फ़ फ़िल्अर्ज़ि मिम्-बअ्दिहिम् लिनन्ज़ु-र कै-फ़ तअ्मलून (14)

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अनअ्ति बिक़ुर्आनिन् ग़ैरि हाज़ा औ बद्दिल्हु, क़ुल् मा यकूनु ली अन् उबद्दि-लहू मिन् तिल्क़ा-इ नफ़्सी इन्

هُمْ عَنْ اٰيٰتِنَا غٰفِلُوْنَ ۝٧
اُولٰٓئِكَ مَاْوٰىهُمُ النَّارُ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٨
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ يَهْدِيْهِمْ
رَبُّهُمْ بِاِيْمَانِهِمْ ۚ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهِمُ
الْاَنْهٰرُ فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ۝٩
دَعْوٰىهُمْ فِيْهَا سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَتَحِيَّتُهُمْ
فِيْهَا سَلٰمٌ ۚ وَاٰخِرُ دَعْوٰىهُمْ اَنِ الْحَمْدُ
ع لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٠
وَلَوْ يُعَجِّلُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ الشَّرَّ اسْتِعْجَالَهُمْ
بِالْخَيْرِ لَقُضِيَ اِلَيْهِمْ اَجَلُهُمْ ۗ فَنَذَرُ
الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا فِيْ طُغْيَانِهِمْ
يَعْمَهُوْنَ ۝١١
وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ الضُّرُّ دَعَانَا لِجَنْۢبِهٖٓ
اَوْ قَاعِدًا اَوْ قَآئِمًا ۚ فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُ
ضُرَّهٗ مَرَّ كَاَنْ لَّمْ يَدْعُنَآ اِلٰى ضُرٍّ
مَّسَّهٗ ۗ كَذٰلِكَ زُيِّنَ لِلْمُسْرِفِيْنَ مَا كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ۝١٢
وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
لَمَّا ظَلَمُوْا ۙ وَجَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
وَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا ۗ كَذٰلِكَ نَجْزِي
الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٣
ثُمَّ جَعَلْنٰكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْاَرْضِ مِنْۢ
بَعْدِهِمْ لِنَنْظُرَ كَيْفَ تَعْمَلُوْنَ ۝١٤
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيَاتُنَا بَيِّنٰتٍ ۙ قَالَ
الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا ائْتِ بِقُرْاٰنٍ
غَيْرِ هٰذَآ اَوْ بَدِّلْهُ ۗ قُلْ مَا يَكُوْنُ لِيْٓ
اَنْ اُبَدِّلَهٗ مِنْ تِلْقَآئِ نَفْسِيْ ۚ اِنْ

اَتَّبِعُ اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ ۚ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ
عَصَيْتُ رَبِّيْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ⑮
قُلْ لَّوْ شَآءَ اللّٰهُ مَا تَلَوْتُهٗ عَلَيْكُمْ وَلَآ
اَدْرٰىكُمْ بِهٖ ۖ فَقَدْ لَبِثْتُ فِيْكُمْ عُمُرًا
مِّنْ قَبْلِهٖ ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ⑯
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ
الْمُجْرِمُوْنَ ⑰
وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهُمْ
وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ هٰٓؤُلَاۗءِ شُفَعَاۗؤُنَا
عِنْدَ اللّٰهِ ۭ قُلْ اَتُنَبِّـــُٔوْنَ اللّٰهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ
فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۭ سُبْحٰنَهٗ
وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ⑱
وَمَا كَانَ النَّاسُ اِلَّآ اُمَّةً وَّاحِدَةً
فَاخْتَلَفُوْا ۭ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ
لَقُضِيَ بَيْنَهُمْ فِيْمَا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ⑲
وَيَقُوْلُوْنَ لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ ۚ فَقُلْ اِنَّمَا الْغَيْبُ لِلّٰهِ فَانْتَظِرُوْا ۚ
ع اِنِّيْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ⑳
وَاِذَآ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً مِّنْۢ بَعْدِ
ضَرَّاۗءَ مَسَّتْهُمْ اِذَا لَهُمْ مَّكْرٌ فِيْٓ اٰيَاتِنَا ۭ
قُلِ اللّٰهُ اَسْرَعُ مَكْرًا ۭ اِنَّ رُسُلَنَا
يَكْتُبُوْنَ مَا تَمْكُرُوْنَ (21)
هُوَ الَّذِيْ يُسَيِّرُكُمْ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ ۭ حَتّٰٓي
اِذَا كُنْتُمْ فِي الْفُلْكِ ۚ وَجَرَيْنَ بِهِمْ بِرِيْحٍ
طَيِّبَةٍ وَّفَرِحُوْا بِهَا جَاۗءَتْهَا رِيْحٌ عَاصِفٌ
وَّجَاۗءَهُمُ الْمَوْجُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّظَنُّوْٓا

अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्-य इन्नी अख़ाफु इन् अ़सैतु रब्बी अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (15)

कुल् लौ शा-अल्लाहु मा तलौतुहू अ़लैकुम् व ला अद्राकुम् बिही फ़-क़द् लबिस्तु फ़ीकुम् अुमुरम्-मिन् क़ब्लिही, अ-फ़ला तअ्क़िलून (16)

फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिआयातिही, इन्नहू ला युफ़्लिहुल् मुज्रिमून (17)

व यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहुम् व ला यन्फ़अुहुम् व यक़ूलू-न हा-उला-इ शु-फ़आउना अ़िन्दल्लाहि, क़ुल् अतुनब्बिऊनल्ला-ह बिमा ला यअ्लमु फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (18)

व मा कानन्नासु इल्ला उम्मतंव्वाहि-दतन् फ़ख़्त-लफ़ू, व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम् फ़ीमा फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (19)

व यक़ूलू-न लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही फ़क़ुल् इन्नमल्-ग़ैबु लिल्लाहि फ़न्तज़िरू इन्नी म-अ़कुम् मिनल् मुन्तज़िरीन (20)●

व इज़ा अज़क़्नन्ना-स रह्म-तम् मिम्-बअ्दि ज़र्रा-अ मस्सत्हुम् इज़ा लहुम् मक्रुन् फ़ी आयातिना, क़ुलिल्लाहु अस्रअु मक्रन, इन्-न रूसुलना यक्तुबू-न मा तम्कुरून (21)

हुवल्लज़ी युसय्यिरुकुम् फ़िल्बर्रि वल्बह्रि, हत्ता इज़ा कुन्तुम् फ़िल्फ़ुल्कि व जरै-न बिहिम् बिरीहिन् तय्यि-बतिंव्-व फ़रिहू बिहा जाअत्हा रीहुन् आ़सिफ़ुंव्-व जा-अहुमुल्-मौजु मिन् कुल्लि मकानिंव्-व ज़न्नू

होने का कि मैं अपनी तरफ़ से इसमें कोई तबदीली करूं। मैं तो बस उसकी पैरवी करता हूं जो मेरी तरफ़ वही की जाती है। अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूं, तो इसमें मुझे एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है।

16. कह दोः "अगर अल्लाह चाहता तो मैं तुम्हें यह पढ़कर न सुनाता, और न वह तुम्हें इससे वाक़िफ़ कराता; आख़िर इससे पहले मैं तुममें एक उमर गुज़ार चुका हूं। फिर क्या तुम्हें अक़्ल नहीं?"

17. फिर उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर थोपकर झूट घड़े या उसकी आयतों को झुटलाए? बेशक मुजरिम कभी कामयाब नहीं होते।

18. वो अल्लाह से हटकर उनको पूजते हैं जो न उनका कुछ बिगाड़ सकें और न उनका कुछ भला कर सकें। और वो कहते हैं कि "ये अल्लाह के यहां हमारे सिफ़ारिशी हैं!" कह दोः "क्या तुम अल्लाह को उस चीज़ की ख़बर देने चले हो जो उसके इल्म में न आसमानों की है और न ज़मीन ही की?" कितना अज़ीम है वह! बुलन्द व बरतर है उस शिर्क से जो वो कर रहे हैं!

19. सारे इनसान एक ही उम्मत हैं, वो तो ख़ुद अलग-अलग हो रहें। और अगर तेरे रब की तरफ़ से एक बात पहले ही तय न पा गई होती, तो उनके दरमियान उस चीज़ का फ़ैसला कर दिया जाता जिसमें वो इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं।

20. वो कहते हैं, 'उसपर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी"? तो कह दोः "ग़ैब का तअल्लुक़ अल्लाह ही से है। अच्छा, इंतिज़ार करो; मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करता हूं!"

21. जब हम लोगों को उनके किसी तकलीफ़ में पड़ने के बाद रहमत का ज़ाइक़ा चखाते हैं, तो वो हमारी आयतों के बारे में चालबाज़ियां करने लग जाते हैं। कह दोः "अल्लाह चाल चलने में ज़्यादा तेज़ है!" बेशक जो चालबाज़ियां तुम कर रहे हो हमारे फ़िरिश्तादे उनको लिखते जा रहे हैं।

22. वही है जो तुम्हें ख़ुश्की और तरी में चलाता है; यहां तक कि जब तुम कश्तियों में होते हो, और वो उन्हें लिए उमदा मुवाफ़िक़ हवा के सहारे चलती होती हैं, और वो उससे ख़ुशी में शादां व फ़रहां होते हैं कि अचानक उनपर तेज़ हवा का झोंका आता है,

أَنَّهُمْ أُحِيطَ بِهِمْ ۙ دَعَوُا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ ۚ لَئِنْ أَنْجَيْتَنَا مِنْ هٰذِهٖ
لَنَكُوْنَنَّ مِنَ الشّٰكِرِيْنَ ﴿٢٢﴾
فَلَمَّآ أَنْجٰهُمْ إِذَا هُمْ يَبْغُوْنَ فِى الْأَرْضِ
بِغَيْرِ الْحَقِّ ۗ يٰٓأَيُّهَا النَّاسُ إِنَّمَا بَغْيُكُمْ
عَلٰٓى أَنْفُسِكُمْ ۙ مَّتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۫ ثُمَّ
إِلَيْنَا مَرْجِعُكُمْ فَنُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٣﴾
إِنَّمَا مَثَلُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا كَمَآءٍ أَنْزَلْنٰهُ
مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ بِهٖ نَبَاتُ الْأَرْضِ
مِمَّا يَأْكُلُ النَّاسُ وَالْأَنْعَامُ ۗ حَتّٰىٓ
إِذَآ أَخَذَتِ الْأَرْضُ زُخْرُفَهَا وَازَّيَّنَتْ
وَظَنَّ أَهْلُهَآ أَنَّهُمْ قٰدِرُوْنَ عَلَيْهَآ ۙ
أَتٰىهَآ أَمْرُنَا لَيْلًا أَوْ نَهَارًا فَجَعَلْنٰهَا
حَصِيْدًا كَأَنْ لَّمْ تَغْنَ بِالْأَمْسِ ۚ كَذٰلِكَ
نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٢٤﴾
وَاللّٰهُ يَدْعُوْٓا إِلٰى دَارِ السَّلٰمِ ۗ وَيَهْدِىْ
مَنْ يَّشَآءُ إِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٢٥﴾
لِلَّذِيْنَ أَحْسَنُوا الْحُسْنٰى وَزِيَادَةٌ ۗ
وَلَا يَرْهَقُ وُجُوْهَهُمْ قَتَرٌ وَّلَا ذِلَّةٌ ۗ أُولٰٓئِكَ
أَصْحٰبُ الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٦﴾
وَالَّذِيْنَ كَسَبُوا السَّيِّاٰتِ جَزَآءُ سَيِّئَةٍ
بِمِثْلِهَا ۙ وَتَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ۗ مَا لَهُمْ مِّنَ
اللّٰهِ مِنْ عَاصِمٍ ۚ كَأَنَّمَآ أُغْشِيَتْ وُجُوْهُهُمْ
قِطَعًا مِّنَ الَّيْلِ مُظْلِمًا ۗ أُولٰٓئِكَ أَصْحٰبُ
النَّارِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٢٧﴾
وَيَوْمَ نَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ نَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ
أَشْرَكُوْا مَكَانَكُمْ أَنْتُمْ وَشُرَكَآؤُكُمْ ۚ فَزَيَّلْنَا بَيْنَهُمْ

अन्नहुम् उही-त बिहिम् द-अवुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, ल-इन् अन्जैतना मिन् हाज़िही ल-नकूनन्-न मिनश्शाकिरीन (22)

फ़-लम्मा अन्जाहुम् इज़ा हुम् यब्ग़ू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, या अय्युहन्नासु इन्नमा बग़्युकुम् अ़ला अन्फ़ुसिकुम् मताअ़ल् हयातिद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअुकुम् फ़नुनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (23)

इन्नमा म-सलुल्-हयातिद्दुन्या कमा-इन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समा-इ फ़ख़्त-ल-त बिही नबातुल्-अर्ज़ि मिम्मा यअ्कुलुन्नासु वल्-अन्आ़मु, हत्ता इज़ा अ-ख़-ज़तिल्-अर्-ज़ु ज़ुख़्रु-फ़हा वज़्ज़य्यनत् व ज़न्-न अह्लुहा अन्नहुम् क़ादिरू-न अ़लैहा अताहा अम्रुना लैलन् औ नहारन् फ़-जअ़ल्नाहा हसीदन् क-अल्लम् तग़्-न बिल्अम्सि, कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्-य-तफ़क्करून (24)

वल्लाहु यद्अू इला दारिस्सलामि, व यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (25)

लिल्लज़ी-न अह्सनुल्-हुस्ना व ज़िया-दतुन्, व ला यर्हक़ु वुजू-हहुम् क़-तरुंव्-व ला ज़िल्लतुन्, उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (26)

वल्लज़ी-न क-सबुस्सय्यिआति जज़ा-उ सय्यि-अतिम् बिमिस्लिहा व तर्हक़ुहुम् ज़िल्लतुन्, मा लहुम् मिनल्लाहि मिन् आ़सिमिन् क-अन्नमा उग़्शियत् वुजूहुहुम् क़ि-तअ़म् मिनल्लैलि मुज़्लिमन्, उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (27)

व यौ-म नह्शुरुहुम् जमीअ़न् सुम्-म नक़ूलु लिल्लज़ी-न अश्रकू मकानकुम् अन्तुम् व शु-रकाउकुम् फ़-ज़य्यल्ना बैनहुम्

और हर जगह से मौज उनपर चली आती है, और वो समझ लेते हैं कि बस अब वो घिर गए; उस वक़्त वो अल्लाह को दीन को उसी के लिए ख़ालिस करके पुकारने लगते हैं, "अगर तूने हमें इससे नजात दे दी तो हम लाज़िमन शुक्रगुज़ार हो जाएंगे"।

23. फिर जब वह उनको नजात दे देता है, तो क्या होता है कि वो हक़ से बे परवाह होकर ज़मीन में सरकशी करने लग जाते हैं। ऐ इंसानो, तुम्हारी सरकशी तुम्हारे अपने ही ख़िलाफ़ पड़ती है; दुनिया की ज़िन्दगी में फ़ायदा उठा लो, फिर हमारी ही तरफ़ तुम्हें लौटकर आना है, उस वक़्त हम तुम्हें बता देंगे जो कुछ तुम करते रहे होगे।

24. दुनिया की ज़िन्दगी की मिसाल तो बस ऐसी है जैसे हमने आसमान से पानी बरसाया, तो उसके सबब ज़मीन से उगने वाली चीज़ें जिनको इंसान और जानवर सभी खाते हैं, घनी हो गई, यहां तक कि जब ज़मीन ने अपना सिंगार कर लिया और संवर गई, और उसके मालिक समझने लगे कि उन्हें उसपर पूरा इख़्तियार हासिल है कि रात या दिन में हमारा हुक्म आ पहुंचा, फिर हमने उसे कटी फ़सल कर दिया, गोया कल वहां कोई आबादी ही न थी। इसी तरह हम उन लोगों के लिए निशानियां खोल-खोल कर बयान करते है जो ग़ौर व फ़िक्र करना चाहें।

25. और अल्लाह बुलाता है सलामती के घर की तरफ़, और जिसको चाहता है सीधे रास्ते पर चलाता है।

26. अच्छे से अच्छा करके देनेवालों के लिए अच्छा बदला है और इसके सिवा कुछ और भी; और उनके चेहरों पर न तो कलौंस छाएगी और न ज़िल्लत। वही जन्नत वाले हैं, वो उसमें मुस्तक़िल तौरपर रहेंगे।

27. रहे वो लोग जिन्होंने बुराइयां कमाई तो एक बुराई का बदला भी उसी के मिस्ल होगा; और ज़िल्लत उनपर छा रही होगी, कोई उन्हें अल्लाह से बचाने वाला न होगा, उनके चेहरों पर गोया अंधेरी रात के टुकड़े ओढ़ा दिए गए हों, वही आग वाले हैं, उन्हें उसमें मुस्तक़िल रहना है।

28. और जिस दिन हम उन सब को इकट्ठा करेंगे, फिर उनसे जिन्होंने शिर्क किया होगा कहेंगे: "अपनी जगह ठहरे रहो, तुम भी और तुम्हारे शरीक भी!" फिर हम उनके बीच फ़र्क़ व इम्तियाज़ पैदा कर देंगे, और उनके

ठहराए हुए शुरका कहेंगे, "तुम हमारी तो बन्दगी नहीं करते थे।

29. हमारे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह के तौरपर काफ़ी है; हमें तो तुम्हारी बन्दगी की ख़बर तक न थी"।

30. वहां हर शख़्स अपने अगले किए हुए कामों को खुद जांच लेगा; और वो अल्लाह, अपने हक़ीक़ी मालिक की तरफ़ फेरे जाएंगे, और जो कुछ झूट वो घड़ा करते थे वह सब उनसे गुम होकर रह जाएगा।

31. कहो: "तुमको आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ कौन देता है, या ये कान और आंखें किसके इख़्तियार में हैं, और कौन ज़िन्दा को मुर्दा से निकालता है और मुर्दा को ज़िन्दा से निकालता है, और कौन यह सारा इंतिज़ाम चला रहा है"? इस पर वो बोल पड़ेंगे, "अल्लाह"। तो कहो: "फिर आख़िर तुम क्यों नहीं डर रखते?"

32. फिर वही तो अल्लाह है, तुम्हारा हक़ीक़ी रब, फिर आख़िर हक़ के बाद गुमराही के सिवा किया रह जाता है? आख़िर तुम कहा से फिरे जाते हो?

33. इसी तरह नाफ़रमानी इख़्तियार करनेवालों पर तुम्हारे रब की बात सादिक़ होकर रही कि वो मानने के नहीं।

34. कहो: "तुम्हारे शरीकों में कोई है जो पैदाइश का आगाज़ करता हो, फिर उसका इआदा भी करे?" कहो: "अल्लाह ही पैदाइश की इबतिदा करता है, और वही उसका इआदा भी; आख़िर तुम कहां औंधे हुए जाते हो"?

35. कहो, "क्या तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में कोई है जो हक़ की तरफ़ रहनुमाई करे?" कहो: "अल्लाह ही हक़ के रास्ते पर चलाता है; फिर क्या जो हक़ के रास्ते पर चलाता हो वह इसका ज़्यादा हक़दार है कि उसकी पैरवी की जाए, या वह जो खुद ही राह न पाए जब तक कि उसे राह न दिखाई जाए? फिर यह तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसे फ़ैसले कर रहे हो?"

36. और उनमें से अकसर तो बस गुमान की पैरवी करते हैं, यक़ीनन गुमान हक़ को कुछ भी दफ़ा नहीं कर सकता। वो जो कुछ भी कर रहे हैं अल्लाह को उसका पूरा इल्म है।

37. यह क़ुरआन ऐसा नहीं है कि अल्लाह से हट कर घड़ लिया जाए;

व क़ा-ल शु-रकाउहुम् मा कुन्तुम् इय्याना तअ्बुदून (28)

फ़-कफ़ा बिल्लाहि शहीदम् बैनना व बैनकुम् इन् कुन्ना अ़न् अ़िबादतिकुम् लग़ाफ़िलीन (29)

हुनालि-क तब्लू कुल्लु नफ़्सिम् मा अस्ल-फ़त् व रुद्दू इलल्लाहि मौलाहुमुल्-हक़्क़ि व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून ●(30) ●

क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि अम्-मंय्यम्लिकुस्सम्-अ़ वल्अब्सा-र व मंय्युख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्मय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त मिनल्-हय्यि व मंय्युदब्बिरुल्-अम्-र, फ़-स-यक़ूलूनल्लाहु फ़क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून (31)

फ़ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुमुल्-हक़्क़ु फ़-माज़ा बअ्दल्-हक़्क़ि इल्लज़्ज़लालु फ़-अन्ना तुस्रफ़ून (32)

कज़ालि-क हक़्क़त् कलि-मतु रब्बि-क अ़लल्लज़ी-न फ़-सक़ू अन्नहुम् ला युअ्मिनून (33)

क़ुल् हल् मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युई़दुहू, क़ुलिल्लाहु यब्दउल्ख़ल्-क़ सुम्-म युई़दुहू फ़-अन्ना तुअ्फ़कून (34)

क़ुल् हल् मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यह्दी इलल्-हक़्क़ि, क़ुलिल्लाहु यह्दी लिल्हक़्क़ि, अ-फ़मंय्यह्दी इलल्हक़्क़ि अ-हक़्क़ु अंय्युत्त-ब-अ़ अम्-मल्ला यहिद्दी इल्ला अंय्युह्दा फ़मा लकुम्, कै-फ़ तह्कुमून (35)

व मा यत्तबिअु अक्सरुहुम् इल्ला ज़न्नन्, इन्नज़्ज़न्-न ला युग़्नी मिनल्-हक़्क़ि शैअन्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिमा यफ़्अ़लून (36)

व मा का-न हाज़ल्-क़ुर्आनु अंय्युफ़्तरा मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी

وَقَالَ شُرَكَآؤُهُمْ مَّا كُنْتُمْ اِيَّانَا تَعْبُدُوْنَ ㉘
فَكَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًاۢ بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمْ اِنْ
كُنَّا عَنْ عِبَادَتِكُمْ لَغٰفِلِيْنَ ㉙
هُنَالِكَ تَبْلُوْا كُلُّ نَفْسٍ مَّآ اَسْلَفَتْ
وَرُدُّوْٓا اِلَى اللّٰهِ مَوْلٰىهُمُ الْحَقِّ وَضَلَّ عَنْهُمْ
ع مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ㉚
قُلْ مَنْ يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ
اَمَّنْ يَّمْلِكُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَمَنْ يُّخْرِجُ
الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ
الْحَيِّ وَمَنْ يُّدَبِّرُ الْاَمْرَ ؕ فَسَيَقُوْلُوْنَ
اللّٰهُ ۚ فَقُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ㉛
فَذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمُ الْحَقُّ ۚ فَمَاذَا بَعْدَ الْحَقِّ
اِلَّا الضَّلٰلُ ۚۖ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ㉜
كَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ
فَسَقُوْٓا اَنَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ㉝
قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّبْدَؤُا
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَبْدَؤُا
الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ㉞
قُلْ هَلْ مِنْ شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّهْدِيْٓ
اِلَى الْحَقِّ ؕ قُلِ اللّٰهُ يَهْدِيْ لِلْحَقِّ ؕ اَفَمَنْ
يَّهْدِيْٓ اِلَى الْحَقِّ اَحَقُّ اَنْ يُّتَّبَعَ اَمَّنْ لَّا يَهِدِّيْٓ
اِلَّآ اَنْ يُّهْدٰى ۚ فَمَا لَكُمْ ۟ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ㉟
وَمَا يَتَّبِعُ اَكْثَرُهُمْ اِلَّا ظَنًّا ؕ اِنَّ الظَّنَّ
لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِمَا يَفْعَلُوْنَ ㊱
وَمَا كَانَ هٰذَا الْقُرْاٰنُ اَنْ يُّفْتَرٰى
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ

बल्कि यह तो जिसके सामने है उसकी तसदीक़ में है, और किताब की तफ़्सील है, जिस में किसी शक व शुबहा की गुंजाइश नहीं, यह सारे जहान के रब की तरफ़ से है।

38. क्या वो कहते हैं, "इस शख़्स ने उसे खुद ही घड़ लिया है"? कहोः "अगर तुम सच्चे हो तो इस जैसी एक सूरह ले आओ, और अल्लाह से हटकर उसे बुला लो जिसपर तुम्हारा बस चले"।

39. बल्कि बात यह है कि जिसके इल्म पर वो हावी न हो सके, उसे उन्होंने झुटला दिया और अभी उसका अंजाम उनके सामने नही आया। इसी तरह उन लोगों ने भी झुटलाया था जो उनसे पहले थे; फिर देख लो उन ज़ालिमों का कैसा अंजाम हुआ!

40. उनमें कुछ लोग उसपर ईमान रखने वाले हैं, और उनमें कुछ लोग उस पर ईमान लाने वाले नही हैं। और तुम्हारा रब बिगाड़ पैदा करने वालों को खूब जानता है।

41. अगर वो तुझे झुटलाएं, तो कह दोः "मेरा अमल मेरे लिए है, और तुम्हारा अमल तुम्हारे लिए, जो कुछ मैं करता हूं उसकी ज़िम्मेदारी से तुम बरी हो, और जो कुछ तुम करते हो उसकी ज़िम्मेदारी से मैं बरी हूं।"

42. और उनमें कितने ही ऐसे हैं जो तेरी तरफ़ कान लगाते हैं; लेकिन क्या तू बहरों को सुनाएगा, अगरचे वो अक्ल न रखते हों?

43. और कुछ उनमें ऐसे हैं जो तेरी तरफ़ ताकते हैं; लेकिन क्या तू अंधों को रास्ता दिखाएगा, ख़्वाह उन्हें कुछ सुझता न हो?

44. अल्लाह तो लोगों पर ज़रा भी ज़ुल्म नही करता, लेकिन लोग खुद ही अपने आप पर ज़ुल्म करते हैं।

45. जिस दिन वह उनको इकट्ठा करेगा, तो ऐसा महसूस होगा जैसे वो दिन की एक घड़ी भर ठहरे थे, वो बाहम एक-दूसरे को पहचानेंगे; वो लोग ख़सारे में पड़ गए जिन्होंने अल्लाह की मुलाक़ात को झुटलाया, और वो हिदायत हासिल करने वाले न हुए।

46. जिस चीज़ का हम उनसे वादा करते हैं उसमें से कुछ चाहे तुझे

बै-न यदैहि व तफ़्सीलल्-किताबि ला रै-ब फ़ीहि मिर्रब्बिल्-आलमीन (37)

अम् यक़ूलूनफ़्तराहु, क़ुल् फ़अ्तू बिसूरतिम्-मिस्लिही वद्अू मनिस्त-तअ्तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (38)

बल् कज़्ज़बू बिमा लम् युहीतू बिअिल्मिही व लम्मा यअ्तिहिम् तअ्वीलुहू, कज़ालि-क कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़न्ज़ुर् कै-फ का-न आक़ि-बतुज़्ज़ालिमीन (39)

व मिन्हुम् मंय्युअ्मिनु बिही व मिन्हुम् मल्ला युअ्मिनु बिही, व रब्बु-क अअ्लमु बिल्मुफ़्सिदीन (40) ●

व इन् कज़्ज़बू-क फ़क़ुल्-ली अ़-मली व लकुम् अ़-मलुकुम् अन्तुम् बरीऊ-न मिम्मा अअ्मलु व अ-न बरीउम्-मिम्मा तअ्मलून (41)

व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअू-न इलै-क, अ-फ़-अन्-त तुस्मिअुस्सुम्-म व लौ कानू ला यअ्क़िलून (42)

व मिन्हुम मंय्यन्ज़ुरु इलै-क, अ-फ़अन्-त तह्दिल्-अुम्-य व लौ कानू ला युब्सिरून (43)

इन्नल्ला-ह ला यज़्लिमुन्ना-स शैअंव्-व लाकिन्नन्-ना-स अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून (44)

व यौ-म यह्शुरुहुम् क-अल्लम् यल्बसू इल्ला सा-अ़तम् मिनन्नहारि य-तआ़रफ़ू-न बैनहुम्, क़द् ख़ासिरल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिलिक़ा-इल्लाहि व मा कानू मुह्तदीन (45)

व इम्मा नुरियन्न-क बअ्ज़ल्लज़ी नअिदुहुम्

بَيْنَ يَدَيْهِ وَتَفْصِيْلَ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٣٧﴾

اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ؕ قُلْ فَاْتُوْا بِسُوْرَةٍ مِّثْلِهٖ وَادْعُوْا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٣٨﴾

بَلْ كَذَّبُوْا بِمَا لَمْ يُحِيْطُوْا بِعِلْمِهٖ وَلَمَّا يَاْتِهِمْ تَاْوِيْلُهٗ ؕ كَذٰلِكَ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٣٩﴾

وَمِنْهُمْ مَّنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِالْمُفْسِدِيْنَ ﴿٤٠﴾ ع

وَاِنْ كَذَّبُوْكَ فَقُلْ لِّیْ عَمَلِیْ وَلَكُمْ عَمَلُكُمْ ۚ اَنْتُمْ بَرِيْٓـُٔوْنَ مِمَّاۤ اَعْمَلُ وَاَنَا بَرِیْٓءٌ مِّمَّا تَعْمَلُوْنَ ﴿٤١﴾

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُوْنَ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ وَلَوْ كَانُوْا لَا يَعْقِلُوْنَ ﴿٤٢﴾

وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْظُرُ اِلَيْكَ ؕ اَفَاَنْتَ تَهْدِی الْعُمْیَ وَلَوْ كَانُوْا لَا يُبْصِرُوْنَ ﴿٤٣﴾

اِنَّ اللّٰهَ لَا يَظْلِمُ النَّاسَ شَيْـًٔا وَّلٰكِنَّ النَّاسَ اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٤٤﴾

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ كَاَنْ لَّمْ يَلْبَثُوْۤا اِلَّا سَاعَةً مِّنَ النَّهَارِ يَتَعَارَفُوْنَ بَيْنَهُمْ ؕ قَدْ خَسِرَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِلِقَآءِ اللّٰهِ وَمَا كَانُوْا مُهْتَدِيْنَ ﴿٤٥﴾

وَاِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِیْ نَعِدُهُمْ

दिखा दें या हम तुझे उठा लें, उन्हें तो हमारी ही तरफ़ लौट कर आना है; फिर जो कुछ वो कर रहे हैं अल्लाह उसपर गवाह है।

47. हर उम्मत के लिए एक रसूल है; फिर जब उनके पास उनका रसूल आ जाता है, तो उनमें इनसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाता है, उनपर कुछ भी ज़ुल्म नहीं किया जाता।

48. वो कहते हैं, "अगर तुम सच्चे हो तो यह वादा कब पूरा होगा?"

49. कहो, "मैं अपनी ज़ात के लिए किसी नुक़सान का इख़्तियार रखता न नफ़ा का; बल्कि अल्लाह की मशीयत ही जारी व सारी है; हर उम्मत के लिए एक मुक़र्रर वक़्त है, जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ जाता है तो न वो घड़ी भर पीछे हट सकते हैं; और न आगे बढ़ सकते हैं"।

50. कहो: "क्या तुमने यह भी सोचा कि अगर तुमपर उसका अज़ाब रातों रात या दिन को आ ही जाए तो (क्या उसे दफ़ा कर सकोगे?) वह आख़िर कौन सी ऐसी चीज होगी जिसकी मुजरिमों को जल्दी पड़ी हुई है?

51. क्या, फिर जब वह आ ही पड़ेगा, तब तुम उसे मानोगे? — क्या अब! इसी के लिए तुम जल्दी मचा रहे थे!"

52. फिर ज़ुल्म इख़्तियार करने वालों से कहा जाएगा: "हमेशा के अज़ाब का मज़ा चखो! जो कुछ तुम कमाते रहे हो उसके सिवा तुम्हें और क्या बदला दिया जा सकता है?"

53. वो तुमसे चाहते हैं कि उन्हें ख़बर दो कि "क्या वह वाक़ई सच है?" कह दो "हां, मेरे रब की क़सम! वह बिल्कुल सच है; और तुम आजिज़ नहीं कर सकते"।

54. अगर हर ज़ालिम शख़्स के पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है, तो वह फ़िदया में उसे दे डाले। जब वो अज़ाब को देखेंगे, तो दिल ही दिल में पछताएंगे, उनके दरमियान इनसाफ़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उनपर कुछ भी ज़ुल्म न होगा।

55. सुन लो, जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है अल्लाह ही का है। जान लो, बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है; लेकिन उनमें अकसर लोग जानते नहीं।

56. वही जिलाता और मारता है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जा रहे हो।

औ न-तवफ़्फ़-यन्न-क फ़-इलैना मर्जिअुहुम् सुम्मल्लाहु शहीदुन् अला मा यफ़अलून (46)

व लिकुल्लि उम्मतिर्रसूलुन् फ-इज़ा जा-अ रसूलुहुम् क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून (47)

व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (48)

क़ुल् ला अम्लिकु लिनफ़्सी ज़र्रव्-व ला नफ़अन् इल्ला मा शा-अल्लाहु, लिकुल्लि उम्मतिन् अ-जलुन्, इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् फ़ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अतंव्-व ला यस्तक़्दिमून (49)

क़ुल् अ-रऐतुम् इन् अताकुम् अज़ाबुहू बयातन् औ नहारम् माज़ा यस्तअ्जिलु मिन्हुल् मुज्रिमून (50)

अ-सुम्-म इज़ा मा व-क़-अ आमन्तुम् बिही, आल्आ-न व क़द् कुन्तुम् बिही तस्तअ्जिलून (51)

सुम्-म क़ी-ल लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अज़ाबल्-ख़ुल्दि हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला बिमा कुन्तुम् तक्सिबून (52)

व यस्तम्बिऊन-क अ-हक़्क़ुन् हु-व, क़ुल् ई व रब्बी इन्नहू ल-हक़्क़ुन्, व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ीन (53) ●

व लौ अन्-न लिकुल्लि नफ़्सिन् ज़-लमत् मा फ़िल्अर्ज़ि लफ़्त-दत् बिही, व अ-सर्रुन्नदाम-त लम्मा र-अवुल्-अज़ा-ब व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्क़िस्ति व हुम् ला युज़्लमून (54)

अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, अला इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (55)

हु-व युह्यी व युमीतु व इलैहि तुर्जअून (56)

اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ اللّٰهُ
شَهِيْدٌ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ ۝٤٦
وَلِكُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلٌ ۚ فَاِذَا جَآءَ رَسُوْلُهُمْ
قُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٤٧
وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ۝٤٨
قُلْ لَّآ اَمْلِكُ لِنَفْسِيْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا
اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ؕ لِكُلِّ اُمَّةٍ اَجَلٌ ؕ
اِذَا جَآءَ اَجَلُهُمْ فَلَا يَسْتَاْخِرُوْنَ
سَاعَةً وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ ۝٤٩
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ اَتٰىكُمْ عَذَابُهٗ بَيَاتًا
اَوْ نَهَارًا مَّاذَا يَسْتَعْجِلُ مِنْهُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٥٠
اَثُمَّ اِذَا مَا وَقَعَ اٰمَنْتُمْ بِهٖ ؕ آٰلْـٰٔنَ
وَقَدْ كُنْتُمْ بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ ۝٥١
ثُمَّ قِيْلَ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ
الْخُلْدِ ۚ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا بِمَا كُنْتُمْ
تَكْسِبُوْنَ ۝٥٢
وَيَسْتَنْۢبِـُٔوْنَكَ اَحَقٌّ هُوَ ؕ قُلْ اِيْ وَرَبِّيْٓ
اِنَّهٗ لَحَقٌّ ؕ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝٥٣
وَلَوْ اَنَّ لِكُلِّ نَفْسٍ ظَلَمَتْ مَا فِي الْاَرْضِ
لَافْتَدَتْ بِهٖ ؕ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا
رَاَوُا الْعَذَابَ ۚ وَقُضِيَ بَيْنَهُمْ بِالْقِسْطِ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝٥٤
اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
اَلَآ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلٰكِنَّ
اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٥٥
هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٥٦

57. ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नसीहत, और जो कुछ सीनों में है उसके लिए शिफ़ा, और मोमिनीन के लिए एक हिदायत और रहमत आ चुकी है।

58. कह दो: "यह अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी रहमत से है। पस इसपर उन्हें ख़ुश होना चाहिए; यह उन सब चीज़ों से बेहतर है जिनको वो जमा करने में लगे हुए हैं"।

59. कह दो "क्या तुमने यह भी देखा कि जो रिज़्क़ ख़ुदा ने तुम्हारे लिए नाज़िल फ़रमाया है, उसमें से तुमने ख़ुद ही कुछ को हराम, और कुछ को हलाल ठहरा लिया?" कहो: "क्या अल्लाह ने तुम्हें इजाज़त दी है, या तुम अल्लाह पर झूट घड़ कर मंढ रहे हो?"

60. जो लोग झूट घड़कर उसे अल्लाह से मंसूब करते हैं, उन्होंने क़ियामत के दिन के बारे में क्या समझा है? अल्लाह तो लोगों के लिए बड़ा साहिबे फ़ज़्ल व करम है; लेकिन उनमें अक्सर शुक्रगुज़ार नहीं।

61. तुम जिस हाल में भी होते हो, और कुरआन से जो कुछ भी पढ़ते हो, और तुम लोग जो काम भी करते हो, हम तुम्हें देख रहे होते हैं, जबकि तुम उसमें मसरूफ़ होते हो; और तुम्हारे रब से ज़र्रा बराबर भी कोई चीज़ छुपी नहीं है न ज़मीन में न आसमान में, और न उससे छोटी और न बड़ी कोई चीज़ ऐसी है जो एक वाज़ेह किताब में मौजूद न हो।

62. सुन लो, अल्लाह के दोस्तों को न तो कोई डर है, और न वो ग़मगीन ही होंगे।

63. ये वो लोग हैं जो ईमान लाए और डरकर रहे।

64. उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में भी ख़ुशख़बरी है और आख़िरत में भी — अल्लाह के अलफ़ाज़ बदलते नहीं यही बड़ी कामयाबी है।

65. उनकी बात तुम्हें रंजीदा न करे, इज़्ज़त तमाम अल्लाह ही के लिए है; वह सुनता, जानता है।

66. जान रखो, जो कोई भी आसमानों में है और जो कोई ज़मीन में है अल्लाह ही का है; जो लोग अल्लाह

या अय्युहन्नासु क़द् जाअत्कुम् मौअि-ज़तुम्-मिर्रब्बिकुम् व शिफ़ाउल्लिमा फ़िस्सुदूरि व हुदंव्-व रह्मतुल्-लिल्मुअ्मिनीन (57)

कुल् बिफ़ज़्लिल्लाहि व बिरह्मतिही फ़बिज़ालि-क फ़ल्यफ़्रहू, हु-व ख़ैरुम्-मिम्मा यज्मअून (58)

कुल् अ-रऐतुम् मा अन्ज़लल्लाहु लकुम् मिर्रिज़्क़िन् फ़-जअल्तुम् मिन्हु हरामंव्-व हलालन्, कुल् आल्लाहु अज़ि-न लकुम् अम् अ़लल्लाहि तफ़्तरून (59)

व मा ज़न्नुल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब यौमल्-क़ियामति, इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून (60) ●

व मा तकूनु फ़ी शअ्निंव्-व मा तत्लू मिन्हु मिन् कुरआनिंव्-व ला तअ्मलू-न मिन् अ़-मलिन् इल्ला कुन्ना अ़लैकुम् शुहूदन् इज़् तुफ़ीज़ू-न फ़ीहि, व मा यअ्ज़ुबु अ़र्रब्बि-क मिम्-मिस्क़ालि ज़र्रतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ व ला अस़्ग़-र मिन् ज़ालि-क व ला अक्ब-र इल्ला फ़ी किताबिम् मुबीन (61)

अला इन्-न औलिया-अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह्ज़नून (62)

अल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तकून (63)

लहुमुल्बुश्रा फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्-आख़िरति, ला तब्दी-ल लि-कलिमातिल्लाहि, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (64)

व ला यह्ज़ुन्-क क़ौलुहुम्● इन्नल्-अ़िज़्ज़-त लिल्लाहि जमीअ़न्, हुवस्समीअुल्-अ़लीम (65)

अला इन्-न लिल्लाहि मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़ि-

يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَتْكُمْ مَّوْعِظَةٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَشِفَآءٌ لِّمَا فِى الصُّدُوْرِ ۙ
وَهُدًى وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٧
قُلْ بِفَضْلِ اللّٰهِ وَبِرَحْمَتِهٖ فَبِذٰلِكَ
فَلْيَفْرَحُوْا ؕ هُوَ خَيْرٌ مِّمَّا يَجْمَعُوْنَ ۝٥٨
قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ لَكُمْ مِّنْ
رِّزْقٍ فَجَعَلْتُمْ مِّنْهُ حَرَامًا وَّحَلٰلًا ؕ قُلْ
آٰللّٰهُ اَذِنَ لَكُمْ اَمْ عَلَى اللّٰهِ تَفْتَرُوْنَ ۝٥٩
وَمَا ظَنُّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ عَلَى
ع النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُوْنَ ۝٦٠
وَمَا تَكُوْنُ فِىْ شَاْنٍ وَّمَا تَتْلُوْا مِنْهُ
مِنْ قُرْاٰنٍ وَّلَا تَعْمَلُوْنَ مِنْ عَمَلٍ
اِلَّا كُنَّا عَلَيْكُمْ شُهُوْدًا اِذْ تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ؕ
وَمَا يَعْزُبُ عَنْ رَّبِّكَ مِنْ مِّثْقَالِ
ذَرَّةٍ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى السَّمَآءِ وَلَآ
اَصْغَرَ مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرَ اِلَّا فِىْ
كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۝٦١
اَلَآ اِنَّ اَوْلِيَآءَ اللّٰهِ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ
وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٦٢ ۚ
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝٦٣
لَهُمُ الْبُشْرٰى فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِى
الْاٰخِرَةِ ؕ لَا تَبْدِيْلَ لِكَلِمٰتِ اللّٰهِ ؕ
ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٦٤
وَلَا يَحْزُنْكَ قَوْلُهُمْ ۘ اِنَّ الْعِزَّةَ لِلّٰهِ
جَمِيْعًا ؕ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦٥
اَلَآ اِنَّ لِلّٰهِ مَنْ فِى السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى

को छोड़कर दूसरे शरीकों को पुकारते हैं वो आख़िर किसकी पैरवी करते हैं, वो तो महज़ गुमान के पीछे चलते हैं, और वो महज़ अटकलें दौड़ाते हैं।

67. वही है जिसने तुम्हारे लिए रात बनाई ताकि तुम उसमें सुकून पाओ, और दिन को रौशन बनाया (ताकि उसमे दौड़-धूप कर सको); बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो सुनते हैं।

68. वो कहते हैं कि "अल्लाह औलाद रखता है"। अज़ीम व बरतर है वह! वह बेनियाज़ है; उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है; तुम्हारे पास इसकी कोई दलील नहीं। क्या तुम अल्लाह से मंसूब करके वह बात कहते हो जिसका तुम्हें इल्म नहीं?

69. कह दोः "जो लोग अल्लाह पर मंढकर झूट घड़ते हैं वो कामयाब होने के नहीं"।

70. यह तो दुनिया का लुत्फ़ है, फिर हमारी ही तरफ़ उन्हें लौटना है; फिर जो कुफ़्र वो करते रहे होंगे उसके बदले में हम उन्हें सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे।

71. उन्हें नूह का हाल सुनाओ, जब उसने अपनी कौम से कहा कि "ऐ मेरी कौम के लोगो! अगर मेरा क़ियाम और अल्लाह की आयतों के ज़रिए से नसीहत करना तुम्हें गिरां हो गया है, तो मेरा भरोसा अल्लाह पर है; तुम अपना मुआमला ठहरा लो, और अपने ठहराए हुए शरीकों को भी साथ ले लो, फिर तुम्हारा मुआमला तुमपर कुछ छुपा न रहे, फिर मेरे साथ कर गुज़रो जो करना हो, और मुझे मुहलत न दो।

72. फिर अगर तुम मुंह फेरोगे, तो मैंने तुमसे कोई अजर नहीं मांगा; मेरा अजर तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है, और हुक्म मुझे मुस्लिम होने का हुआ है"।

73. लेकिन उन्होंने उसको झुटला दिया; तो हमने उसे, और उन लोगों को जो उसके साथ कश्ती में थे बचा लिया और उन्हें ख़लीफ़ा बनाया और उन लोगों को ग़र्क़ कर दिया जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया था; पस देख लो जिन्हें ख़बरदार किया गया था उनका अंजाम कैसा हुआ!

लुअर्ज़ि, व मा यत्तबिअुल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि शु-रका-अ, इंय्यत्तबिअू-न इल्लज़्ज़न्-न व इन् हुम् इल्ला यख़्रूसून (66)

हुवल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्यस्मअून (67)

क़ालुत्त-ख़ज़ल्लाहु व-लदन् सुब्हानहू, हुवल्-ग़निय्यु,लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि इन् अिन्दकुम् मिन् सुल्तानिम्-बिहाज़ा, अ-तक़ूलू-न अ़लल्लाहि मा ला तअ्लमून (68)

क़ुल् इन्नल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब ला युफ़्लिहून (69)

मताअुन् फ़िद्दुन्या सुम्-म इलैना मर्जिअुहुम् सुम्-म नुज़ीक़ुहुमुल्-अ़ज़ाबश्शदी-द बिमा कानू यक्फ़ुरून (70) ●

वत्लु अ़लैहिम न-ब-अ नूहिन ● *इज़ क़ा-ल लिक़ौमिही या क़ौमि इन् का-न कबु-र अ़लैकुम् मक़ामी व तज़्कीरी बिआयातिल्लाहि फ़-अ़लल्लाहि तवक्कल्तु फ़-अज्मिअू अम्रकुम् व शु-रका-अकुम् सुम्-म ला यकुन् अम्रुकुम् अ़लैकुम् ग़ुम्म-तन् सुम्मक़्ज़ू इलय्-य व ला तुन्ज़िरून* (71)

फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़मा सअल्तुकुम् मिन् अज्रिन्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लाहि व उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्-मुस्लिमीन (72)

फ़-कज़्ज़बूहु फ़-नज्जैनाहु व मम्-म-अहू फ़िल्फ़ुल्कि व जअ़ल्नाहुम् ख़लाइ-फ़ व अग़्रक़्नल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़कि-बतुल्-मुन्ज़रीन (73)

الْاَرْضِ ۗ وَمَا يَتَّبِعُ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُرَكَآءَ ۗ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ
اِلَّا الظَّنَّ وَاِنْ هُمْ اِلَّا يَخْرُصُوْنَ ﴿٦٦﴾
هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِتَسْكُنُوْا
فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۗ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ﴿٦٧﴾
قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۗ هُوَ الْغَنِيُّ ۗ
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۗ اِنْ
عِنْدَكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍۭ بِهٰذَا ۗ اَتَقُوْلُوْنَ
عَلَى اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿٦٨﴾
قُلْ اِنَّ الَّذِيْنَ يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ ﴿٦٩﴾
مَتَاعٌ فِي الدُّنْيَا ثُمَّ اِلَيْنَا مَرْجِعُهُمْ ثُمَّ
نُذِيْقُهُمُ الْعَذَابَ الشَّدِيْدَ بِمَا كَانُوْا
يَكْفُرُوْنَ ﴿٧٠﴾
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ نُوْحٍ ۘ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ
اِنْ كَانَ كَبُرَ عَلَيْكُمْ مَّقَامِيْ وَتَذْكِيْرِيْ
بِاٰيٰتِ اللّٰهِ فَعَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْتُ فَاَجْمِعُوْٓا
اَمْرَكُمْ وَشُرَكَآءَكُمْ ثُمَّ لَا يَكُنْ اَمْرُكُمْ عَلَيْكُمْ
غُمَّةً ثُمَّ اقْضُوْٓا اِلَيَّ وَلَا تُنْظِرُوْنِ ﴿٧١﴾
فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَمَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ ۗ
اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۙ وَاُمِرْتُ اَنْ
اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ﴿٧٢﴾
فَكَذَّبُوْهُ فَنَجَّيْنٰهُ وَمَنْ مَّعَهٗ فِي الْفُلْكِ
وَجَعَلْنٰهُمْ خَلٰٓئِفَ وَاَغْرَقْنَا الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ۚ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ
الْمُنْذَرِيْنَ ﴿٧٣﴾

74. फिर उसके बाद कितने ही रसूल उनकी अपनी क़ौम की तरफ़ हमने भेजे, और वो उनके पास खुली दलीलें लेकर आए; लेकिन वो ऐसे न थे कि जिसको पहले झुटला चुके हों उसे मानते। इसी तरह हद से आगे बढ़ने वालों के दिलों पर हम मुहर (ज़ंग) लगा दिया करते हैं।

75. फिर उनके बाद हमने मूसा और हारून को अपनी आयतों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा, लेकिन उन्होंने घमंड किया। वो थे ही मुजरिम लोग।

76. पस जब हमारी तरफ़ से हक़ उनके सामने आया, तो वो कहने लगे, “यह तो खुला जादू है”।

77. मूसा ने कहा, “क्या तुम हक़ के बारे में ऐसा कहते हो, जबकि वह तुम्हारे सामने आ गया है? क्या यह कोई जादू है? जादूगर तो कामयाब नहीं हुआ करते”।

78. उन्होंने कहा, “क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि हमको उस चीज़ से फेर दे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है, और ज़मीन में तुम दोनों की बड़ाई क़ायम हो जाए, हम तो तुम्हें मानने के नहीं”।

79. फ़िरऔन ने कहा, “हर वाक़िफ़कार जादूगर को मेरे पास लाओ”।

80. फिर जब जादूगर आ गए, तो मूसा ने उनसे कहा कि “जो कुछ तुम डालना चाहते हो डालो”।

81. फिर जब उन्होंने डाला, तो मूसा ने कहा, “तुम जो कुछ लाए हो, जादू है; अल्लाह अभी उसे मलियामेट किए देता है, बेशक अल्लाह बिगाड़ पैदा करने वालों के अमल को नतीजाख़ेज़ नहीं होने देता।

82. अल्लाह अपने कलिमात से हक़ को हक़ कर दिखाता है, ख़्वाह मुजरिमीन नापसन्द ही करते रहें”।

83. फिर मूसा की बात उसकी क़ौम की औलाद में से बस कुछ ही लोगों ने मानी, फ़िरऔन और उनके अपने सरबर आवरदह लोगों से डरते हुए कि मबादा वो उन्हें किसी फ़ितना में डाल दें; फ़िरऔन था भी ज़मीन में बहुत सर उठाए हुए, और यक़ीनन वह हद से आगे बढ़ गया था।

84. मूसा ने कहा, “ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर तुम अल्लाह पर ईमान

सुम्-म बअ़स्ना मिम्-बअ़्दिही रूसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फ़मा कानू लियुअ्मिनू बिमा कज़्ज़बू बिही मिन् क़ब्लु, कज़ालि-क नत्बअु अ़ला क़ुलूबिल्-मुअ़्तदीन (74)

सुम्-म बअ़स्ना मिम्-बअ़्दिहिम् मूसा व हारू-न इला फ़िर्औ-न व म-लइही बिआयातिना फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमम्-मुज्रिमीन (75)

फ़-लम्मा जा-अहुमुल्-हक़्क़ु मिन् अ़िन्दिना क़ालू इन्-न हाज़ा लसिह्रूम्-मुबीन (76)

क़ा-ल मूसा अ-तक़ूलू-न लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अकुम्, असिह्रून् हाज़ा, व ला युफ़्लिहुस्साहिरून (77)

क़ालू अजिअ्-तना लितल्फ़ि-तना अ़म्मा वजद्ना अ़लैहि आबा-अना व तकू-न लकुमल्-किब्रिया-उ फ़िल्अर्ज़ि, व मा नह्नु लकुमा बिमुअ्मिनीन (78)

व क़ा-ल फ़िर्औ़नुअ्तूनी बिकुल्लि साहिरिन् अ़लीम (79)

फ़-लम्मा जाअस्स-ह-रतु क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम्-मुल्क़ून (80)

फ़-लम्मा अल्क़ौ क़ा-ल मूसा मा जिअ्तुम् बिहिस्-सिह्रु, इन्नल्ला-ह सयुब्तिलुहू, इन्नल्ला-ह ला युस्लिहु अ़-मलल्-मुफ़्सिदीन (81)

व युहिक़्क़ुल्लाहुल्-हक़्-क़ बि-कलिमातिही व लौ करिहल्-मुज्रिमून (82) ●

फ़मा आम-न लिमूसा इल्ला ज़ुर्रिय्यतुम्-मिन् क़ौमिही अ़ला ख़ौफ़िम् मिन् फ़िर्औ़-न व म-लइहिम् अंय्यफ़्ति-नहुम्, व इन्-न फ़िर्औ़-न लआ़लिन् फ़िल्अर्ज़ि व इन्नहू लमिनल् मुस्रिफ़ीन (83)

व क़ा-ल मूसा या क़ौमि इन् कुन्तुम् आमन्तुम्

ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ رُسُلًا اِلٰى قَوْمِهِمْ
فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَمَا كَانُوْا لِيُؤْمِنُوْا
بِمَا كَذَّبُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ؕ كَذٰلِكَ
نَطْبَعُ عَلٰى قُلُوْبِ الْمُعْتَدِيْنَ ۝٧٤
ثُمَّ بَعَثْنَا مِنْۢ بَعْدِهِمْ مُّوْسٰى وَهٰرُوْنَ
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ بِاٰيٰتِنَا فَاسْتَكْبَرُوْا
وَكَانُوْا قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝٧٥
فَلَمَّا جَآءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْۤا
اِنَّ هٰذَا لَسِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٧٦
قَالَ مُوْسٰۤى اَتَقُوْلُوْنَ لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَكُمْ ؕ
اَسِحْرٌ هٰذَا ؕ وَلَا يُفْلِحُ السّٰحِرُوْنَ ۝٧٧
قَالُوْۤا اَجِئْتَنَا لِتَلْفِتَنَا عَمَّا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
اٰبَآءَنَا وَتَكُوْنَ لَكُمَا الْكِبْرِيَآءُ فِى
الْاَرْضِ ؕ وَمَا نَحْنُ لَكُمَا بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٧٨
وَقَالَ فِرْعَوْنُ ائْتُوْنِىْ بِكُلِّ سٰحِرٍ عَلِيْمٍ ۝٧٩
فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰۤى
اَلْقُوْا مَاۤ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝٨٠
فَلَمَّاۤ اَلْقَوْا قَالَ مُوْسٰى مَا جِئْتُمْ بِهِ ۙ
السِّحْرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ سَيُبْطِلُهٗ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
لَا يُصْلِحُ عَمَلَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٨١
وَيُحِقُّ اللّٰهُ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ وَلَوْ كَرِهَ
ع الْمُجْرِمُوْنَ ۝٨٢
فَمَاۤ اٰمَنَ لِمُوْسٰۤى اِلَّا ذُرِّيَّةٌ مِّنْ قَوْمِهٖ
عَلٰى خَوْفٍ مِّنْ فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهِمْ
اَنْ يَّفْتِنَهُمْ ؕ وَاِنَّ فِرْعَوْنَ لَعَالٍ فِى
الْاَرْضِ ۚ وَاِنَّهٗ لَمِنَ الْمُسْرِفِيْنَ ۝٨٣
وَقَالَ مُوْسٰى يٰقَوْمِ اِنْ كُنْتُمْ اٰمَنْتُمْ

रखते हो, तो उसी पर भरोसा करो, अगर तुम फ़रमांबरदार हो"।

85. इस पर वो बोले, "अल्लाह ही पर हमने भरोसा किया। हमारे रब, तू हमें ज़ालिम लोगों का तख़्ता-ए-मश्क़ न बना।

86. और अपनी रहमत से तू हमें काफ़िर लोगों से नजात दे"।

87. हमने मूसा और उसके भाई की तरफ़ वही की कि "तुम दोनों अपने लोगों के लिए मिस्र में कुछ घर मुक़र्रर कर लो; और अपने घरों को क़िब्ला बना लो; और नमाज़ क़ायम करो; और मोमिनीन को ख़ुशख़बरी दे दो"।

88. मूसा ने कहा, "हमारे रब, तूने फ़िरऔन और उसके सरदारों को दुनिया की ज़िन्दगी में ज़ेब व ज़ीनत और माल दिए हैं। हमारे रब, इसलिए कि वो तेरे रास्ते से भटकाएं। हमारे रब, उनके माल ग़ारत कर दे, और उनके दिल सख़्त कर दे कि वो ईमान न लाएं ताकि वो दर्दनाक अज़ाब देख लें"।

89. कहा, "तुम दोनों की दुआ क़बूल की गई है। पस तुम दोनों साबित क़दम रहो, और उन लोगों के रास्ते पर हरगिज़ न चलना जो जानते नहीं"।

90. और हमने इसराईलियों को पानी से पार करा दिया; फिर फ़िरऔन और उसकी फ़ौजों ने सरकशी और ज़्यादती के साथ उनका पीछा किया, यहां तक कि जब ग़रक़ाबी ने उसे आ लिया तो वह पुकार उठा, "मैं ईमान ले आया कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं जिसपर बनी इसराईल ईमान लाए, अब मैं फ़रमांबरदार हूं"।

91. "क्या अब? हालांकि इससे पहले तूने नाफ़रमानी की, और मुफ़सिद था।

92. पस आज हम तेरे जिस्म को बचा लेंगे ताकि तू अपने बाद वालों के लिए एक निशानी हो। यक़ीनन बहुत से लोग हमारी निशानियों से ग़ाफ़िल ही रहते हैं"।

93. और हमने बनी इसराईल को अच्छा इज़्ज़त का ठिकाना दिया, और उन्हें अच्छा रिज़्क़ अता किया; फिर इख़्तिलाफ़ में वो उस वक़्त पड़े जबकि इल्म उनके पास आ चुका था। यक़ीनन तुम्हारा रब उनके दरमियान क़ियामत के दिन उस चीज़ का फ़ैसला

बिल्लाहि फ़-अ़लैहि तवक्कलू इन् कुन्तुम् मुस्लिमीन (84)
फ़क़ालू अ़लल्लाहि तवक्कल्ना रब्बना ला तज्अ़ल्ना फ़ित्नतल् लिल्क़ौमिज़्ज़ालिमीन (85)
व नज्जिना बिरह्मति-क मिनल् क़ौमिल्-काफ़िरीन (86)
व औहैना इला मूसा व अख़ीहि अन् तबव्वआ लिक़ौमिकुमा बिमिस्-र बुयूतंव्वज्अ़लू बुयू-तकुम् क़िब्लतंव्-व अक़ीमुस्सला-त, व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन (87)
व क़ा-ल मूसा रब्बना इन्न-क आतै-त फ़िरऔ़-न व म-ल-अहू ज़ीनतंव्-व अम्वालन् फ़िल्हयातिद्दुन्या रब्बना लियुज़िल्लू अ़न् सबीलि-क रब्बनत्मिस् अ़ला अम्वालिहिम् वश्दुद् अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़ला युअ्मिनू हत्ता-य-रवुल् अ़ज़ाबल्-अलीम (88)
क़ा-ल क़द् उजीबद्-दअ्वतुकुमा फ़स्तक़ीमा व ला तत्तबिआ़न्नि सबीलल्लज़ी-न ला यअ्लमून (89)
व जावज़्ना, बि-बनी इस्राईलल्-बह्-र फ़अत्ब-अ़हुम् फ़िर्औ़नु व जुनूदुहू बग़्यंव्-व अ़द्वन्, हत्ता इज़ा अद्र-कहुल्-ग़-रक़ु क़ा-ल आमन्तु अन्नहू ला इला-ह इल्लल्लज़ी आ-मनत् बिही बनू इस्राई-ल व अ-न मिनल्-मुस्लिमीन (90)
आल्आ-न व क़द् अ़सै-त क़ब्लु व कुन्-त मिनल्-मुफ़्सिदीन (91)
फ़ल्यौ-म नुनज्जी-क बि-ब-दनि-क लितकू-न लिमन् ख़ल्फ़-क आयतन्, व इन्-न कसीरम् मिनन्नासि अ़न् आयातिना लग़ाफ़िलून (92) ●
व ल-क़द् बव्वअ्ना बनी इस्राई-ल मुबव्व-अ सिद्क़िंव्-व रज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति फ़मख़्त-लफ़ू हत्ता जा-अहुमुल्-अ़िल्मु, इन्-न रब्ब-क यक़ज़ी

بِاللّٰهِ فَعَلَيْهِ تَوَكَّلُوْٓا اِنْ كُنْتُمْ مُّسْلِمِيْنَ ۝٨٤
فَقَالُوْا عَلَى اللّٰهِ تَوَكَّلْنَا ۚ رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا
فِتْنَةً لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۙ ۝٨٥
وَنَجِّنَا بِرَحْمَتِكَ مِنَ الْقَوْمِ الْكٰفِرِيْنَ ۝٨٦
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰى وَاَخِيْهِ اَنْ تَبَوَّاٰ
لِقَوْمِكُمَا بِمِصْرَ بُيُوْتًا وَّاجْعَلُوْا بُيُوْتَكُمْ
قِبْلَةً وَّاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ ۗ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٨٧
وَقَالَ مُوْسٰى رَبَّنَآ اِنَّكَ اٰتَيْتَ فِرْعَوْنَ
وَمَلَاَهٗ زِيْنَةً وَّاَمْوَالًا فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ
رَبَّنَا لِيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِكَ ۚ رَبَّنَا اطْمِسْ
عَلٰٓى اَمْوَالِهِمْ وَاشْدُدْ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ
فَلَا يُؤْمِنُوْا حَتّٰى يَرَوُا الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٨٨
قَالَ قَدْ اُجِيْبَتْ دَّعْوَتُكُمَا فَاسْتَقِيْمَا
وَلَا تَتَّبِعٰٓنِّ سَبِيْلَ الَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨٩
وَجٰوَزْنَا بِبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْبَحْرَ فَاَتْبَعَهُمْ
فِرْعَوْنُ وَجُنُوْدُهٗ بَغْيًا وَّعَدْوًا ۭ حَتّٰٓى
اِذَآ اَدْرَكَهُ الْغَرَقُ ۙ قَالَ اٰمَنْتُ اَنَّهٗ
لَآ اِلٰهَ اِلَّا الَّذِيْٓ اٰمَنَتْ بِهٖ بَنُوْٓا
اِسْرَآءِيْلَ وَاَنَا مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝٩٠
اٰۗلْــٰٔنَ وَقَدْ عَصَيْتَ قَبْلُ وَكُنْتَ
مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٩١
فَالْيَوْمَ نُنَجِّيْكَ بِبَدَنِكَ لِتَكُوْنَ لِمَنْ
خَلْفَكَ اٰيَةً ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ
ع عَنْ اٰيٰتِنَا لَغٰفِلُوْنَ ۝٩٢
وَلَقَدْ بَوَّاْنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ مُبَوَّاَ صِدْقٍ
وَّرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ الطَّيِّبٰتِ ۚ فَمَا اخْتَلَفُوْا
حَتّٰى جَاۗءَهُمُ الْعِلْمُ ۭ اِنَّ رَبَّكَ يَقْضِيْ

कर देगा जिसमें वो इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं।

94. पस अगर तुम्हें उस चीज़ के बारे में कोई शक हो जो हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की है, तो उनसे पूछ लो जो तुमसे पहले से किताब पढ़ रहे हैं, तुम्हारे पास तो तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ आ चुका; पस तुम हरगिज़ शक करनेवाले न हो,

95. और न उनमें शामिल होना जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुटलाया, वरना तुम घाटे में पड़ कर रहोगे।

96. बेशक जिनके बारे में तुम्हारे रब की बात सादिक़ होकर रही वो ईमान नहीं लाने के,

97. जब तक कि वो दर्दनाक अज़ाब न देख लें, ख़्वाह हर एक निशानी उनके पास आ जाए।

98. फिर ऐसी कोई बस्ती क्यों न हुई कि वह ईमान लाती, और उसका ईमान उसके लिए नफ़ाबख़्श साबित होता? अलबत्ता यूनुस की क़ौम के लोग इससे मुस्तसना हैं; जब वो ईमान लाए, तो हमने दुनिया की ज़िन्दगी में रुसवाई के अज़ाब को उनपर से टाल दिया, और उन्हें एक मुद्दत तक लुत्फ़ उठाने का मौक़ा दिया।

99. अगर तुम्हारा रब चाहता तो ज़मीन में जो लोग भी हैं वो सबके सब ईमान ले आते। फिर क्या तुम लोगों को मजबूर करोगे कि वो मोमिन हो जाएं?

100. हालांकि किसी शख़्स के लिए यह मुमकिन नहीं कि अल्लाह की तौफ़ीक़ के बग़ैर वह ईमान लाए; वह तो उन लोगों पर गन्दगी डाल देता है जो अक़्ल से काम नहीं लेते।

101. कहो: "देख लो आसमानों और ज़मीन में क्या कुछ है!" मगर निशानियां और तम्बीहात उन लोगों के कुछ काम नहीं आतीं जो ईमान न लाना चाहें।

102. पस ये तो उस तरह के दिन का इंतिज़ार कर रहे हैं जिस तरह के दिन उन लोगों को पेश आए हैं जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं? कह दो: "अच्छा इंतिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार करता हूं!"

103. फिर हम अपने रसूलों और उन लोगों को बचा लेते हैं जो ईमान ले आए। ऐसा ही हमारा तरीक़ा है, हम पर यह हक़ है कि हम मोमिनों को बचा लें।

बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (93)

फ़-इन् कुन्-त फ़ी शक्किम् मिम्मा अन्ज़ल्ना इलै-क फ़स्अलिल्लज़ी-न यक़्रऊनल्-किता-ब मिन् क़ब्लि-क ल-क़द् जा-अकल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न मिनल्-मुम्तरीन (94)

व ला तकूनन्-न मिनल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि फ़-तकू-न मिनल्ख़ासिरीन (95)

इन्नल्लज़ी-न हक़्क़त् अलैहिम् कलि-मतु रब्बि-क ला युअ्मिनून (96)

व लौ जाअत्हुम् कुल्लु आयतिन् हत्ता य-रवुल् अज़ाबल्-अलीम (97)

फ़लौ ला कानत् क़र्यतुन् आम-नत् फ़-न-फ़-अहा ईमानुहा इल्ला क़ौ-म यूनु-स, लम्मा आमनू कशफ़्ना अन्हुम् अज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्हयातिद्दुन्या व मत्तअ्नाहुम् इला हीन (98)

व लौ शा-अ रब्बु-क लआम-न मन् फ़िल्अर्ज़ि कुल्लुहुम् जमीअन्, अ-फ़अन्-त तुक्रिहुन्ना-स हत्ता यकूनू मुअ्मिनीन (99)

व मा का-न लिनफ़्सिन् अन् तुअ्मि-न इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व यज्अलुर्रिज्-स अलल्लज़ी-न ला यअ्क़िलून (100)

कुलिन्ज़ुरू माज़ा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व मा तुग़्निल्- आयातु वन्नुज़ुरु अन् क़ौमिल् ला युअ्मिनून (101)

फ़-हल् यन्तज़िरू-न इल्ला मिस्-ल अय्यामिल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिहिम्, क़ुल् फ़न्तज़िरू इन्नी म-अकुम् मिनल्-मुन्तज़िरीन (102)

सुम्-म नुनज्जी रुसु-लना वल्लज़ी-न आमनू कज़ालि-क हक़्क़न् अलैना नुन्जिल्-मुअ्मिनीन (103) ●

بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝٩٣

فَاِنْ كُنْتَ فِيْ شَكٍّ مِّمَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ
فَسْئَلِ الَّذِيْنَ يَقْرَءُوْنَ الْكِتٰبَ مِنْ
قَبْلِكَ ۚ لَقَدْ جَآءَكَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ
فَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُمْتَرِيْنَ ۝٩٤

وَلَا تَكُوْنَنَّ مِنَ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ
اللّٰهِ فَتَكُوْنَ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٩٥

اِنَّ الَّذِيْنَ حَقَّتْ عَلَيْهِمْ كَلِمَتُ رَبِّكَ
لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٩٦

وَلَوْ جَآءَتْهُمْ كُلُّ اٰيَةٍ حَتّٰى يَرَوُا
الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝٩٧

فَلَوْلَا كَانَتْ قَرْيَةٌ اٰمَنَتْ فَنَفَعَهَآ
اِيْمَانُهَآ اِلَّا قَوْمَ يُوْنُسَ ۚ لَمَّآ اٰمَنُوْا
كَشَفْنَا عَنْهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝٩٨

وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَاٰمَنَ مَنْ فِي الْاَرْضِ
كُلُّهُمْ جَمِيْعًا ۚ اَفَاَنْتَ تُكْرِهُ النَّاسَ
حَتّٰى يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٩٩

وَمَا كَانَ لِنَفْسٍ اَنْ تُؤْمِنَ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ
وَيَجْعَلُ الرِّجْسَ عَلَى الَّذِيْنَ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝١٠٠

قُلِ انْظُرُوْا مَاذَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَمَا
تُغْنِي الْاٰيٰتُ وَالنُّذُرُ عَنْ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ۝١٠١

فَهَلْ يَنْتَظِرُوْنَ اِلَّا مِثْلَ اَيَّامِ الَّذِيْنَ
خَلَوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ قُلْ فَانْتَظِرُوْٓا اِنِّيْ
مَعَكُمْ مِّنَ الْمُنْتَظِرِيْنَ ۝١٠٢

ثُمَّ نُنَجِّيْ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا كَذٰلِكَ ۚ
ع حَقًّا عَلَيْنَا نُنْجِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠٣

104. कह दो: "ऐ लोगो। अगर तुम मेरे दीन के बारे में किसी शक में हो, तो मैं तो उनकी इबादत नहीं करता जिनकी तुम अल्लाह से हटकर इबादत करते हो, बल्कि मैं उस अल्लाह की इबादत करता हूं जो तुम्हें वफ़ात देता है, और मुझे हुक्म है कि मैं मोमिनीन में से हूं।

105. और यह कि हर तरफ़ से यकसू होकर अपना रुख़ इस दीन की तरफ़ कर लो, और अहले शिर्क में हरगिज़ शामिल न हो;

106. और अल्लाह से हटकर उसे न पुकारो जो न तुम्हें फ़ायदा पहुंचाए और न तुम्हें नुक़सान पहुंचा सके, फिर अगर तुमने ऐसा किया, तो उस वक़्त तुम ज़ालिम होगे।

107. अगर अल्लाह तुम्हें किसी तकलीफ़ में डाल दे, तो उसके सिवा कोई उसे दूर करने वाला नहीं; और अगर वह तुम्हारे लिए किसी भलाई का इरादा फ़रमा ले, तो कोई उसके फ़ज़्ल को फेरनेवाला भी नहीं, वह उसे अपने बन्दों में से जिस तक चाहता है पहुंचाता है, और वह बख़्शनेवाला, निहायत रहमवाला है"।

108. कह दो, "ऐ लोगो! तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ आ चुका है। अब जो कोई राह पर आएगा तो वह अपने ही लिए राह पर आएगा, और जो कोई गुमराही इख़्तियार करेगा तो वह अपने ही बुरे को गुमराही इख़्तियार करेगा, मैं तुम्हारे ऊपर कोई हवाला दार तो हूं नहीं"।

109. जो कुछ तुमपर वह्य की जा रही है उसकी पैरवी करो, और सब्र से काम लो यहां तक कि अल्लाह फ़ैसला फ़रमा दे; और वह बेहतरीन फ़ैसला फ़रमानेवाला है।

सूरह हूद मक्की

(आयतें 123, रुकूआत 10)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-रा। यह एक ऐसी किताब है जिसकी आयतें पुख़्ता हैं, फिर साफ़-साफ़ खोलकर बयान हुई हैं, उसकी तरफ़ से जो निहायत हिक्मत वाला, पूरी ख़बर रखने वाला है।

2. कि "तुम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो, मैं तो उसकी तरफ़ से तुम्हें ख़बरदार करने वाला, और खुशख़बरी देने वाला हूं"।

3. और यह कि "अपने रब से बख़्शिश मांगो, फिर उसकी तरफ़ पलट

कुल या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फी शक्किम् मिन् दीनी फ़ला अअ्बुदुल्लज़ी-न तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व लाकिन् अअ्बुदुल्लाहल्लज़ी य-तवफ़्फ़ाकुम् व उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (104)

व अन् अक़िम् वज्ह-क लिद्दीनि हनीफ़न् व ला तकूनन्-न मिनल्-मुश्रिकीन (105)

व ला तद्अु मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अु-क व ला यज़ुर्रु-क फ़-इन् फ़अल्-त फ़-इन्न-क इज़म् मिनज़्ज़ालिमीन (106)

व इंय्यम्सस्कल्लाहु बिज़ुर्रिन् फ़ला काशि-फ लहू इल्ला हु-व व इंय्युरिद्-क बिख़ैरिन् फ़ला राद्-द लिफ़ज़्लिही, युसीबु बिही मंय्यशा-उ मिन् अिबादिही, व हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम (107)

कुल् या अय्युहन्नासु क़द् जा-अकुमुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम् फ़-मनिह्तदा फ़-इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अलैहा, व मा अ-न अलैकुम् बि-वकील (108)

वत्तबिअ् मा यूहा इलै-क वस्बिर् हत्ता यह्कुमल्लाहु व हु-व ख़ैरुल्-हाकिमीन (109) ●

11 सूरतु हूदिन्
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 7924 अक्षर, 1936 शब्द, 123 आयतें और 10 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, किताबुन् उह्किमत् आयातुहू सुम्-म फ़ुस्सिलत् मिल्लदुन् हकीमिन् ख़बीर (1)

अल्-ला तअ्बुदू इल्लल्ला-ह, इन्ननी लकुम् मिन्हु नज़ीरुंव्-व बशीर (2)

व अनिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि

قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ شَكٍّ
مِّنْ دِيْنِيْ فَلَاۤ اَعْبُدُ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلٰكِنْ اَعْبُدُ اللّٰهَ الَّذِيْ
يَتَوَفّٰىكُمْ ۖۚ وَاُمِرْتُ اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۙ﴿١٠٤﴾
وَاَنْ اَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۚ وَلَا
تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ﴿١٠٥﴾
وَلَا تَدْعُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُكَ وَلَا
يَضُرُّكَ ۚ فَاِنْ فَعَلْتَ فَاِنَّكَ اِذًا مِّنَ الظّٰلِمِيْنَ ﴿١٠٦﴾
وَاِنْ يَّمْسَسْكَ اللّٰهُ بِضُرٍّ فَلَا كَاشِفَ لَهٗۤ
اِلَّا هُوَ ۚ وَاِنْ يُّرِدْكَ بِخَيْرٍ فَلَا رَآدَّ
لِفَضْلِهٖ ؕ يُصِيْبُ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ
عِبَادِهٖ ؕ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ﴿١٠٧﴾
قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ قَدْ جَآءَكُمُ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكُمْ ۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ
لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ
وَمَاۤ اَنَا عَلَيْكُمْ بِوَكِيْلٍ ؕ﴿١٠٨﴾
وَاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ وَاصْبِرْ
حَتّٰى يَحْكُمَ اللّٰهُ ۖۚ وَهُوَ خَيْرُ
ع الْحٰكِمِيْنَ ﴿١٠٩﴾

سُوْرَةُ هُوْدٍ مَّكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٢٣ رُكُوْعَاتُهَا ١٠

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اُحْكِمَتْ اٰيٰتُهٗ ثُمَّ
فُصِّلَتْ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ
خَبِيْرٍ ۙ﴿١﴾
اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنَّنِيْ لَكُمْ
مِّنْهُ نَذِيْرٌ وَّبَشِيْرٌ ۙ﴿٢﴾
وَّاَنِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْۤا اِلَيْهِ

आओ। वह तुम्हें एक मुकर्ररा मुद्दत तक बरतने का बेहतरीन सामान देगा, और हर साहिबे फ़ज़्ल को अपना फ़ज़्ल अता करेगा। लेकिन अगर तुम मुंह फेरते हो तो यक़ीनन मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है;

4. अल्लाह ही की तरफ़ तुम्हें पलटना है; उसे तो हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है"।

5. देखो, ये अपने सीनों को मोड़ते हैं कि उससे छुप जाएं; देखो, जब ये अपने कपड़ों से ख़ुद को ढांकते हैं, वह जानता है जो कुछ वो छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं; बेशक वह तो सीनों तक की बात को जानता है।

6. ज़मीन में चलने-फिरने वाली जो मख़्लूक़ भी है उसकी रोज़ी अल्लाह के ज़िम्मे है; वह जानता है जहां उसे ठहरना है और जहां उसे सौंपा जाना है। सब कुछ एक वाज़ेह किताब में मौजूद है।

7. वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा फ़रमाया — उसका अर्श पानी पर था — ताकि वह तुम्हें आज़माए कि तुममें अमल के एतिबार से बेहतर कौन है। और अगर तुम कहो कि "मरने के बाद तुम लाज़िमन उठोगे," तो जिन्हें इनकार है वो ज़रूर कहेंगे, "यह तो खुला जादू है।"

8. अगर हम एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए उनसे अज़ाब को टाले रखें तो वो कहेंगे, "आख़िर किस चीज़ ने उसे रोक रखा है?" सुन लो जिस दिन वह उनपर आ जाएगा, तो फिर वह उनपर से टलने का नहीं और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसकी वो हंसी उड़ाया करते थे।

9. और अगर हम इनसान को अपनी रहमत का ज़ाइक़ा चखाकर फिर उसको उससे छीन लें, (तो वह रहमत के लिए दरख़्वास्त नहीं करता) यक़ीनन वह यासज़दा, ना शुकरा है।

10. लेकिन अगर हम इसके बाद कि उसे तकलीफ़ पहुंची हो उसे नेमत का ज़ाइक़ा चखाते हैं, तो वह कहने लगता है, "मेरे तो सारे दुख-दलिद्दर दूर हो गए," वह तो फूला नहीं समाता, डींगे मारने लगता है।

युमत्तिअ्कुम् मताअन् ह-सनन् इला अ-जलिम्-मुसम्मंव्-व युअ्ति कुल्-ल ज़ी फ़ज़्लिन् फ़ज़्लहू, व इन् तवल्लौ फ़-इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ा-ब यौमिन् कबीर (3)

इलल्लाहि मर्जिअुकुम् व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर (4)

अला इन्नहुम् यस्नू-न सुदू-रहुम् लियस्तख़्फ़ू मिन्हु, अला ही-न यस्तग़्शू-न सियाबहुम् यअ्लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ्लिनू-न इन्नहू अलीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (5)

व मा मिन् दाब्बतिन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला अलल्लाहि रिज़्क़ुहा व यअ्लमु मुस्तक़र्रहा व मुस्तौद-अहा, कुल्लुन् फ़ी किताबिम् मुबीन (6)

व हुवल्लज़ी ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिंव्-व का-न अर्शुहू अलल्मा-इ लि-यब्लुवकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ-मलन्, व ल-इन् क़ुल्-त इन्नकुम् मब्अूसू-न मिम्-बअ्दिल्-मौति ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (7)

व ल-इन् अख़्ख़र्ना अन्हुमुल्-अज़ा-ब इला उम्मतिम् मअ्दूदतिल्-ल यक़ूलुन्-न मा यह्बिसुहू, अला यौ-म यअ्तीहिम् लै-स मस्रूफ़न् अन्हुम् व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (8) ●

व ल-इन् अज़क़्नल्-इन्सा-न मिन्ना रह्म-तन् सुम्-म न-ज़अ्नाहा मिन्हु इन्नहू ल-यऊसुन् कफ़ूर (9)

व ल-इन् अज़क़्नाहु नअ्मा-अ बअ्द ज़र्रा-अ मस्सत्हु ल-यक़ूलन्-न ज़-हबस्सय्यिआतु अन्नी, इन्नहू ल-फ़रिहुन् फ़ख़ूर (10)

يُمَتِّعْكُمْ مَّتَاعًا حَسَنًا اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى
وَّيُؤْتِ كُلَّ ذِىْ فَضْلٍ فَضْلَهٗ ؕ وَاِنْ
تَوَلَّوْا فَاِنِّىْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ
يَوْمٍ كَبِيْرٍ ۳
اِلَى اللّٰهِ مَرْجِعُكُمْ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ
شَىْءٍ قَدِيْرٌ ۴
اَلَآ اِنَّهُمْ يَثْنُوْنَ صُدُوْرَهُمْ لِيَسْتَخْفُوْا
مِنْهُ ؕ اَلَا حِيْنَ يَسْتَغْشُوْنَ ثِيَابَهُمْ ۙ
يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۚ
اِنَّهٗ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۵
وَمَا مِنْ دَآبَّةٍ فِى الْاَرْضِ اِلَّا
عَلَى اللّٰهِ رِزْقُهَا وَيَعْلَمُ مُسْتَقَرَّهَا
وَمُسْتَوْدَعَهَا ؕ كُلٌّ فِىْ كِتٰبٍ مُّبِيْنٍ ۶
وَهُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ وَّكَانَ عَرْشُهٗ عَلَى الْمَآءِ
لِيَبْلُوَكُمْ اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ؕ وَلَئِنْ قُلْتَ
اِنَّكُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ مِنْۢ بَعْدِ الْمَوْتِ لَيَقُوْلَنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۷
وَلَئِنْ اَخَّرْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِلٰٓى اُمَّةٍ
مَّعْدُوْدَةٍ لَّيَقُوْلُنَّ مَا يَحْبِسُهٗ ؕ اَلَا يَوْمَ
يَاْتِيْهِمْ لَيْسَ مَصْرُوْفًا عَنْهُمْ وَحَاقَ بِهِمْ
مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۸
وَلَئِنْ اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً ثُمَّ
نَزَعْنٰهَا مِنْهُ ۚ اِنَّهٗ لَيَئُوْسٌ كَفُوْرٌ ۹
وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ نَعْمَآءَ بَعْدَ ضَرَّآءَ مَسَّتْهُ
لَيَقُوْلَنَّ ذَهَبَ السَّيِّاٰتُ عَنِّىْ ؕ اِنَّهٗ
لَفَرِحٌ فَخُوْرٌ ۱۰

11. उनकी बात दूसरी है जिन्होंने सब्र, और नेक आमाल इख़्तियार किए, वही हैं जिनके लिए बख़्शिश और बड़ा अजर है।

12. तो शायद तुम उसमें से कुछ छोड़ बैठोगे जो तुम्हारी तरफ़ वह्यी की जा रही है, और तुम इस बात पर दिल तंग हो रहे हो कि वो कहते हैं कि "उसपर कोई ख़ज़ाना क्यों नहीं उतरा, या उसके साथ कोई फ़रिश्ता क्यों नहीं आया?" तुम तो सिर्फ़ ख़बरदार करनेवाले हो; हर चीज़ तो अल्लाह ही के हवाले है।

13. क्या वो कहते हैं कि "उसने इसे ख़ुद घड़ लिया है?" कह दोः "अच्छा अगर तुम सच्चे हो तो ऐसी घड़ी हुई दस सूरतें ले आओ; और अल्लाह से हटकर जिस किसी को बुला सको बुला लो"।

14. फिर अगर वो तुम्हारी बात क़बूल न कर सकें, तो जान लो कि यह अल्लाह के इल्म ही के साथ नाज़िल हुआ है, और यह कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं। तो अब क्या तुम मुस्लिम होते हो?

15. जो शख़्स दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी रौनक़ व बहार का तलबगार हो तो ऐसे लोगों को उनके कामों का बदला पूरा-पूरा हम यहीं दे देते हैं, और उसमें उनकी हक़ तलफ़ी नहीं की जाती।

16. वही हैं जिनके लिए आख़िरत में आग के सिवा और कुछ भी नहीं; उन्होंने जो कुछ बनाया वह सब वहां तबाह जान हुआ, और उनका सारा किया-धरा बे हक़ीक़त साबित हुआ।

17. फिर क्या वह जो अपने रब की एक रौशन दलील पर है और ख़ुद उसके पैकर से एक गवाह उसके साथ-साथ रहता है, — और इससे पहले मूसा की किताब भी एक रहनुमा और रहमत की हैसियत से मौजूद रही है — (और वह जो नूरे बसीरत और हिदायत से महरूम है, दोनों यकसां हो सकते हैं?) ऐसे ही लोग उसपर ईमान लाते हैं: लेकिन उन गिरोहों में से जो उसका इनकार करेगा तो उसके लिए जिस जगह का वादा है वह तो आग है। पस तुम्हें इसके बारे में कोई शक न हो; यह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है, लेकिन अकसर लोग मानते नहीं।

18. उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर मंढकर झूट

इल्लल्लज़ी-न स-बरू व अमिलुस्सालिहाति, उलाइ-क लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् कबीर (11)

फ़-लअ़ल्ल-क तारिकुम् बअ़्-ज़ मा यूहा इलै-क व ज़ाइकुम् बिही सद्रु-क अंय्यकूलू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि कन्ज़ुन् औ जा-अ म-अ़हू म-लकुन्, इन्नमा अन्-त नज़ीरुन्, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइंव्-वकील (12)

अम् यकूलूनफ़्तराहु, कुल फ़अ्तू बिअ़शिर सु-वरिम्-मिस्लिही मुफ़्त-रयातिंव्वद्अू मनिस्त-तअ़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (13)

फ़-इल्लम् यस्तजीबू लकुम् फ़अ़्लमू अन्नमा उन्ज़ि-ल बिअ़िल्मिल्लाहि व अल्ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-हल् अन्तुम् मुस्लिमून (14)

मन् का-न युरीदुल्-हयातद्दुन्या व ज़ीन-तहा नुवफ़्फ़ि इलैहिम् अअ़्मालहुम् फ़ीहा व हुम् फ़ीहा ला युब्ख़सून (15)

उलाइ-कल्लज़ी-न लै-स लहुम् फ़िल्-आख़िरति इल्लन्नारु व हबि-त मा स-नअ़ू फ़ीहा व बातिलुम्-मा कानू यअ़्मलून (16)

अ-फ़-मन् का-न अ़ला बय्यिनतिम् मिर्रब्बिही व यत्लूहु शाहिदुम् मिन्हु व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा इमामंव्-व रह्मतन्, उलाइ-क युअ़्मिनू-न बिही, व मंय्यक्फ़ुर् बिही मिनल् अह्ज़ाबि फ़न्नारु मौअ़िदुहू फ़ला तकु फ़ी मिर्यतिम् मिन्हु, इन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ़्मिनून (17)

व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि

إِلَّا الَّذِينَ صَبَرُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
أُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيرٌ ۝١١
فَلَعَلَّكَ تَارِكٌ بَعْضَ مَا يُوحٰٓى إِلَيْكَ
وَضَآئِقٌ بِهٖ صَدْرُكَ أَنْ يَّقُولُوا لَوْلَآ
أُنْزِلَ عَلَيْهِ كَنْزٌ أَوْ جَآءَ مَعَهٗ مَلَكٌ ۚ
إِنَّمَآ أَنْتَ نَذِيرٌ ۚ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ وَّكِيلٌ ۝١٢
أَمْ يَقُولُونَ افْتَرٰىهُ ۚ قُلْ فَأْتُوا بِعَشْرِ
سُوَرٍ مِّثْلِهٖ مُفْتَرَيٰتٍ وَّادْعُوا مَنِ اسْتَطَعْتُمْ
مِّنْ دُونِ اللّٰهِ إِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِينَ ۝١٣
فَإِلَّمْ يَسْتَجِيبُوا لَكُمْ فَاعْلَمُوٓا أَنَّمَآ
أُنْزِلَ بِعِلْمِ اللّٰهِ وَأَنْ لَّآ إِلٰهَ
إِلَّا هُوَ ۚ فَهَلْ أَنْتُمْ مُّسْلِمُونَ ۝١٤
مَنْ كَانَ يُرِيدُ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
وَزِينَتَهَا نُوَفِّ إِلَيْهِمْ أَعْمَالَهُمْ
فِيهَا وَهُمْ فِيهَا لَا يُبْخَسُونَ ۝١٥
أُولٰٓئِكَ الَّذِينَ لَيْسَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ
إِلَّا النَّارُ ۖ وَحَبِطَ مَا صَنَعُوا فِيهَا
وَبٰطِلٌ مَّا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝١٦
أَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ
وَيَتْلُوهُ شَاهِدٌ مِّنْهُ وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ
مُوسٰٓى إِمَامًا وَّرَحْمَةً ۚ أُولٰٓئِكَ يُؤْمِنُونَ
بِهٖ ۚ وَمَنْ يَّكْفُرْ بِهٖ مِنَ الْأَحْزَابِ فَالنَّارُ
مَوْعِدُهٗ ۚ فَلَا تَكُ فِي مِرْيَةٍ مِّنْهُ ۚ
إِنَّهُ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكَ وَلٰكِنَّ أَكْثَرَ
النَّاسِ لَا يُؤْمِنُونَ ۝١٧
وَمَنْ أَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ

घड़े? ऐसे लोगों को अपने रब के सामने पेश होना है, और गवाही देने वाले कहेंगे, “यही लोग हैं जिन्होंने अपने रब पर झूट घड़ा”। सुन लो ऐसे ज़ालिमों पर अल्लाह की लानत है,

19. जो अल्लाह के रास्ते से रोकते और उसमें कजी पैदा करनी चाहते हैं; और उन्ही को आख़िरत का इनकार है।

20. वो ज़मीन में आजिज़ नहीं कर सकते और न अल्लाह से हटकर उनका कोई हिमायती ही है। उन्हें दोहरा अज़ाब दिया जाएगा; वो न सुन ही सकते थे और न देख ही सकते थे।

21. वही हैं जिन्होंने अपने आपको घाटे में डाला, और जो कुछ वो घड़ा करते थे वह सब उनसे गुम होकर रह गया;

22. लाज़िमन वही आख़िरत में सबसे बढ़कर घाटे में रहेंगे।

23. रहे वो लोग जो ईमान लाए और उन्होंने अच्छे मौज़ूं काम किए और वो अपने रब की तरफ़ झुक पड़े, वही अहले जन्नत हैं, उसमें वो मुस्तक़िल रहेंगे।

24. दोनों फ़रीक़ों की तमसील ऐसी है जैसे एक अंधा और बहरा हो, और एक देखने और सुनने वाला; क्या दोनों की हालत बराबर हो सकती है? आख़िर क्या तुम होश से काम नहीं लेते?

25. हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि “मैं तुम्हें साफ़-साफ़ ख़बरदार करने वाला हूं:

26. यह कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो। मुझे तुम्हारे बारे में एक दर्दनाक दिन के अज़ाब का अन्देशा है”।

27. इस पर उसकी क़ौम के सरदार जिन्हें इनकार था कहने लगे कि “हमारी नज़र में तो तुम हमारे ही जैसे आदमी हो, और हम देखते हैं कि हमारे यहां के बस कुछ ऐसे लोगों ने तुम्हारी पैरवी इख़्तियार की है जो अव्वल नज़र में रज़ील हैं। हम अपने मुक़ाबले में तुममें कोई बड़ाई नहीं देखते, बल्कि हम समझते हैं कि तुम झूटे हो”।

कज़िबन्, उलाइ-क युअ्रज़ू-न अला रब्बिहिम् व यक़ूलुल्-अश्हादु हा-उलाइल्लज़ी-न क-ज़बू अला रब्बिहिम् अला लअ्नतुल्लाहि अलज़्ज़ालिमीन (18)

अल्लज़ी-न यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अि-वजन्, व हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून (19)

उलाइ-क लम् यकूनू मुअ्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मा का-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ● युज़ा-अफ़ु लहुमुल् अज़ाबु, मा कानू यस्ततीअूनस्सम्-अ व मा कानू युब्सिरून (20)

उलाइ-कल्लज़ी-न ख़ासिरू अन्फ़ु-सहुम् व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यफ़्तरून (21)

ला ज-र-म अन्नहुम् फ़िल्-आख़िरति हुमुल्-अख़्सरून (22)

इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व अख़्बतू इला रब्बिहिम् उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (23)

म-सलुल्-फ़रीक़ैनि कल्-अअ्मा वल्-असम्मि वल्बसीरि वस्समीअि, हल् यस्तवियानि म-सलन्, अ-फ़ला तज़क्करून (24) ●

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही इन्नी लकुम् नज़ीरुम् मुबीन (25)

अल्ला तअ्बुदू इल्लल्ला-ह, इन्नी अख़ाफ़ु अलैकुम् अज़ा-ब यौमिन् अलीम (26)

फ़क़ालल् म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही मा नरा-क इल्ला ब-शरम् मिस्-लना व मा नराकत्त-ब-अ-क इल्लल्लज़ी-न हुम् अराज़िलुना बादियर्-रअ्यि व मा नरा लकुम् अलैना मिन् फ़ज़्लिम्-बल् नज़ुन्नुकुम् काज़िबीन (27)

كَذِبًا ؕ اُولٰٓئِكَ يُعْرَضُوْنَ عَلٰى رَبِّهِمْ
وَيَقُوْلُ الْاَشْهَادُ هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ كَذَبُوْا
عَلٰى رَبِّهِمْ ۚ اَلَا لَعْنَةُ اللّٰهِ عَلَى الظّٰلِمِيْنَ ⑱
الَّذِيْنَ يَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ؕ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ⑲
اُولٰٓئِكَ لَمْ يَكُوْنُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
الربع اَوْلِيَآءَ ۘ يُضٰعَفُ لَهُمُ الْعَذَابُ ؕ مَا
كَانُوْا يَسْتَطِيْعُوْنَ السَّمْعَ وَمَا كَانُوْا
يُبْصِرُوْنَ ⑳
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ وَضَلَّ
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ㉑
لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ㉒
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَاَخْبَتُوْٓا اِلٰى رَبِّهِمْ ۙ اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ ۚ هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ㉓
مَثَلُ الْفَرِيْقَيْنِ كَالْاَعْمٰى وَالْاَصَمِّ وَالْبَصِيْرِ
ع وَالسَّمِيْعِ ؕ هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ㉔
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖٓ ۫ اِنِّىْ لَكُمْ
نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ㉕
اَنْ لَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ؕ اِنِّىْٓ اَخَافُ
عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ اَلِيْمٍ ㉖
فَقَالَ الْمَلَاُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ
مَا نَرٰىكَ اِلَّا بَشَرًا مِّثْلَنَا وَمَا نَرٰىكَ
اتَّبَعَكَ اِلَّا الَّذِيْنَ هُمْ اَرَاذِلُنَا
بَادِىَ الرَّاْىِ ۚ وَمَا نَرٰى لَكُمْ عَلَيْنَا مِنْ
فَضْلٍۭ بَلْ نَظُنُّكُمْ كٰذِبِيْنَ ㉗

28. उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम्हारा क्या ख़याल है? अगर मैं अपने रब की एक रौशन दलील पर हूं, और उसने मुझे अपने पास से रहमत से भी नवाज़ा है, फिर वह तुम्हें न सूझे, तो किया हम ज़बरदस्ती उसे तुम पर चिपका दें जबकि तुम उसे नापसन्द कर रहे हो?

29. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मैं इसपर तुमसे कोई माल नहीं मांगता; मेरा अजर तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है। मैं ईमान लानेवालों को दूर करने का भी नहीं; उन्हें तो अपने रब से मिलना ही है, लेकिन मैं तुम्हें देख रहा हूं कि तुम लोग जहालत बरत रहे हो"।

30. "और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अगर मैं उन्हें धुत्कार दूं तो अल्लाह के मुक़ाबले में कौन मेरी मदद कर सकता है? फिर क्या तुम होश से काम नहीं लेते?

31. और मैं तुमसे यह नहीं कहता कि, मेरे पास अल्लाह के ख़ज़ाने हैं; न मुझे ग़ैब की ख़बर है, और न मैं यह कहता हूं कि मैं कोई फ़रिश्ता हूं। और न उन लोगों के बारे में जो तुम्हारी निगाह में हक़ीर हैं मैं यह कहता हूं कि अल्लाह उन्हें कोई भलाई न देगा, जो कुछ उनके दिलों में है अल्लाह उसे ख़ूब जानता है। (अगर मैं ऐसा कहूं) तब तो मैं लाज़िमन ज़ालिम ठहरूंगा"।

32. उन्होंने कहा, "ऐ नूह! तुम हमसे झगड़ चुके और बहुत झगड़ चुके। अगर तुम सच्चे हो तो अब जिसकी तुम हमें धमकी देते हो उसे हमपर ले ही आओ"।

33. उसने कहा, "वह तो अल्लाह ही अगर चाहेगा तो तुमपर लाएगा; और तुम क़ाबू से बाहर नहीं जा सकते।

34. अब जबकि अल्लाह ही ने तुम्हें हलाक कर देने का इरादा फ़रमा लिया हो तो अगर मैं तुम्हारा भला भी चाहूं तो मेरी ख़ैर ख़्वाही तुम्हें कुछ भी फ़ायदा नहीं दे सकती; वही तुम्हारा रब है, और उसी की तरफ़ तुम्हें पलटना भी है"।

35. क्या वो कहते हैं कि "उसने ख़ुद उसे घड़ लिया है?" कह दो "अगर मैंने उसे घड़ा है तो मेरे जुर्म की ज़िम्मेदारी मुझ पर ही आती है; और जो जुर्म तुम कर रहे हो मैं उसकी ज़िम्मेदारी से बरी हूं"।

36. नूह की तरफ़ वही की गई कि "जो लोग ईमान ला चुके हैं उनके सिवा अब तुम्हारी क़ौम में कोई ईमान लाने

क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यिनतिम्-मिर्रब्बी व आतानी रह्म-तम्-मिन् अ़िन्दिही फ़-अुम्मियत् अ़लैकुम, अनुल्ज़िमुकुमूहा व अन्तुम् लहा कारिहून (28)

व या क़ौमि ला अस्अलुकुम् अ़लैहि मालन्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लाहि व मा अ-न बितारिदिल्लज़ी-न आमनू, इन्नहुम् मुलाक़ू रब्बिहिम् व लाकिन्नी अराकुम् क़ौमन् तज्हलून (29)

व या क़ौमि मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् तरत्तुहुम्, अ-फ़ला तज़क्करून (30)

व ला अक़ूलु लकुम् अ़िन्दी ख़ज़ाइनुल्लाहि व ला अअ्लमुल्-ग़ै-ब व ला अक़ूलु इन्नी म-लकुंव्-व ला अक़ूलु लिल्लज़ी-न तज़्दरी अअ्युनुकुम् लंय्युअ्ति-यहुमुल्लाहु ख़ैरन्, अल्लाहु अअ्लमु बिमा फ़ी अन्फ़ुसिहिम् इन्नी इज़ल्-लमिनज़्ज़ालिमीन (31)

क़ालू या नूहु क़द् जादल्तना फ़-अक्सर्-त जिदालना फ़अ्तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (32)

क़ा-ल इन्नमा यअ्तीकुम् बिहिल्लाहु इन् शा-अ व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ीन (33)

व ला यन्फ़अुकुम् नुस्ही इन् अरत्तु अन् अन्स-ह लकुम् इन् कानल्लाहु युरीदु अंय्युग्वि-यकुम्, हु-व रब्बुकुम्, व इलैहि तुर्जअून (34)

अम् यक़ूलूनफ़्तराहु, क़ुल् इनिफ़्तरैतुहू फ़-अ़लय्-य इज्रामी व अ-न बरीउम्-मिम्मा तुज्रिमून (35) ●

व ऊहि-य इला नूहिन् अन्नहू लंय्युअ्मि-न मिन् क़ौमि-क इल्ला मन् क़द् आम-न फ़ला तब्तइस्

قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى بَيِّنَةٍ
مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِهٖ فَعُمِّيَتْ
عَلَيْكُمْ ۭ اَنُلْزِمُكُمُوْهَا وَاَنْتُمْ لَهَا كٰرِهُوْنَ ۝٢٨
وَيٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مَالًا ۭ اِنْ
اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ وَمَآ اَنَا بِطَارِدِ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۭ اِنَّهُمْ مُّلٰقُوْا رَبِّهِمْ
وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ۝٢٩
وَيٰقَوْمِ مَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ
طَرَدْتُّهُمْ ۭ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٣٠
وَلَآ اَقُوْلُ لَكُمْ عِنْدِيْ خَزَاۗىِٕنُ اللّٰهِ
وَلَآ اَعْلَمُ الْغَيْبَ وَلَآ اَقُوْلُ اِنِّىْ
مَلَكٌ وَّلَآ اَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ تَزْدَرِيْٓ
اَعْيُنُكُمْ لَنْ يُّؤْتِيَهُمُ اللّٰهُ خَيْرًا ۭ اَللّٰهُ
اَعْلَمُ بِمَا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ښ اِنِّىْٓ اِذًا
لَّمِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٣١
قَالُوْا يٰنُوْحُ قَدْ جٰدَلْتَنَا فَاَكْثَرْتَ
جِدَالَنَا فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ
مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٣٢
قَالَ اِنَّمَا يَاْتِيْكُمْ بِهِ اللّٰهُ اِنْ شَاۗءَ
وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝٣٣
وَلَا يَنْفَعُكُمْ نُصْحِيْٓ اِنْ اَرَدْتُّ اَنْ
اَنْصَحَ لَكُمْ اِنْ كَانَ اللّٰهُ يُرِيْدُ
اَنْ يُّغْوِيَكُمْ ۭ هُوَ رَبُّكُمْ ۣ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٣٤
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ
ع فَعَلَيَّ اِجْرَامِيْ وَاَنَا بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُجْرِمُوْنَ ۝٣٥
وَاُوْحِيَ اِلٰى نُوْحٍ اَنَّهٗ لَنْ يُّؤْمِنَ مِنْ
قَوْمِكَ اِلَّا مَنْ قَدْ اٰمَنَ فَلَا تَبْتَىِٕسْ

بِمَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ (٣٦)

وَاصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا وَوَحْيِنَا وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ (٣٧)

وَيَصْنَعُ الْفُلْكَ ۗ وَكُلَّمَا مَرَّ عَلَيْهِ مَلَاٌ مِّنْ قَوْمِهٖ سَخِرُوْا مِنْهُ ۗ قَالَ اِنْ تَسْخَرُوْا مِنَّا فَاِنَّا نَسْخَرُ مِنْكُمْ كَمَا تَسْخَرُوْنَ (٣٨)

فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ عَذَابٌ مُّقِيْمٌ (٣٩)

حَتّٰۤى اِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ قُلْنَا احْمِلْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ وَمَنْ اٰمَنَ ۗ وَمَاۤ اٰمَنَ مَعَهٗۤ اِلَّا قَلِيْلٌ (٤٠)

وَقَالَ ارْكَبُوْا فِيْهَا بِسْمِ اللّٰهِ مَجْرٖىهَا وَمُرْسٰىهَا ۗ اِنَّ رَبِّيْ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٤١)

وَهِيَ تَجْرِيْ بِهِمْ فِيْ مَوْجٍ كَالْجِبَالِ ۗ وَنَادٰى نُوْحُ اِۨبْنَهٗ وَكَانَ فِيْ مَعْزِلٍ يّٰبُنَيَّ ارْكَبْ مَّعَنَا وَلَا تَكُنْ مَّعَ الْكٰفِرِيْنَ (٤٢)

[illegible]

قَالَ سَاٰوِيْۤ اِلٰى جَبَلٍ يَّعْصِمُنِيْ مِنَ الْمَآءِ ۗ قَالَ لَا عَاصِمَ الْيَوْمَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ اِلَّا مَنْ رَّحِمَ ۚ وَحَالَ بَيْنَهُمَا الْمَوْجُ فَكَانَ مِنَ الْمُغْرَقِيْنَ (٤٣)

وَقِيْلَ يٰۤاَرْضُ ابْلَعِيْ مَآءَكِ وَيٰسَمَآءُ اَقْلِعِيْ وَغِيْضَ الْمَآءُ وَقُضِيَ الْاَمْرُ وَاسْتَوَتْ عَلَى الْجُوْدِيِّ وَقِيْلَ بُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (٤٤)

وَنَادٰى نُوْحٌ رَّبَّهٗ فَقَالَ رَبِّ اِنَّ ابْنِيْ

बिमा कानू यफ़्अ़लून (36)

वस्नअ़िल्-फुल्-क बिअअ़्युनिना व वह्यिना व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी-न ज़-लमू इन्नहुम् मुग़्रकून (37)

व यस्-नअ़ुल्फुल्-क, व कुल्लमा मर्-र अ़लैहि म-लउम्मिन् क़ौमिही सख़िरू मिन्हु, क़ा-ल इन् तस्ख़रू मिन्ना फ़-इन्ना नस्ख़रु मिन्कुम् कमा तस्ख़रून (38)

फ़सौ-फ़ तअ़्लमू-न मंय्यअ़्तीहि अ़ज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अ़लैहि अ़ज़ाबुम् मुक़ीम (39)

हत्ता इज़ा जा-अ अम्रुना व फ़ारत्तन्नूरु कुल्नह्मिल् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्ल-क इल्ला मन् स-ब-क़ अ़लैहिल्-क़ौलु व मन् आम-न, व मा आम-न म-अ़हू इल्ला क़लील (40)

व क़ालर्-कबू फ़ीहा बिस्मिल्लाहि मज्रेहा व मुर्साहा इन्-न रब्बी ल-ग़फ़ूरुर्रहीम (41)

व हि-य तज्री बिहिम् फ़ी मौजिन् कल्जिबालि, व नादा नूहु-निब्नहू व का-न फ़ी मअ़्ज़िलिंय्-या बुनय्यर्कब् म-अ़ना व ला तकुम् म-अ़ल्-काफ़िरीन (42)

क़ा-ल स-आवी इला ज-बलिंय्यअ़्सिमुनी मिनल्मा-इ, क़ा-ल ला आ़सिमल्यौ-म मिन् अम्रिल्लाहि इल्ला मर्रहि-म व हा-ल बैनहुमल् -मौजु फ़का-न मिनल्-मुग़्रक़ीन (43)

व क़ी-ल या अर्ज़ुब्लअ़ी मा-अकि व या समा-उ अक़्लिअ़ी व ग़ीज़ल्-मा-उ व क़ुज़ियल्-अम्रु वस्तवत् अ़लल्-जूदिय्यि व क़ी-ल बुअ़्दल् लिल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन ●(44)

व नादा नूहुर्-रब्बहू फ़क़ा-ल रब्बि इन्नब्नी

वाला नहीं; पस जो कुछ वो कर रहे हैं उस पर तुम ग़म न खाओ।

37. तुम हमारी निगरानी में, और हमारी वह्यी के मुताबिक़ कश्ती बनाओ; और ज़ालिमों के बारे में मुझसे बात न करो; वो तो ग़र्क़ हो कर ही रहेंगे"।

38. वह कश्ती बनाने लगता है; उसकी क़ौम के सरदार जब भी उसके पास से गुज़रते तो उसका मज़ाक़ उड़ाते। उसने कहा, "अगर तुम हमारा मज़ाक़ उड़ाते हो तो जिस तरह तुम मज़ाक़ उड़ाते हो तो हम भी तुम्हारा मज़ाक़ उड़ाएंगे,

39. अब जल्द ही तुम जान लोगे कि कौन है जिसपर अज़ाब आता है जो उसे रुसवा कर देगा, और जिसपर ऐसा अज़ाब उतरता है जो हमेशा क़ायम रहता है"।

40. यहां तक कि जब हमारा हुक्म आ गया और तन्नूर उबल पड़ा तो हम ने कहाः "हर जिन्स में से दो-दो के जोड़े उसमें चढ़ा ले, और अपने घरवालों को भी — सिवाय ऐसे शख़्स के जिसपर हुक्म नाफ़िज़ हो चुका है — और जो कोई मोमिन हो उसे भी; मगर, उसके साथ जो ईमान लाए थे वो थोड़े ही थे।

41. उसने कहा, "इसमें सवार हो जाओ, इसका चलना भी अल्लाह के नाम से है ओर इसका ठहरना भी। बेशक मेरा रब बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है"।

42. और वह उन्हें लिए हुए पहाड़ों जैसी मौज के दरमियान चल रही थी; नूह ने अपने बेटे को, जो उससे अलग था पुकारा, "ऐ मेरे बेटे, हमारे साथ सवार हो जा, तू इनकार करने वालों के साथ न हो"।

43. उसने कहा "मैं किसी पहाड़ से जा लगूंगा, जो पानी से मुझे बचा लेगा"। कहा, "आज अल्लाह के हुक्म से कोई बचाने वाला नहीं है (लिहाज़ा कोई बच नहीं सकता), सिवाय उसके जिस पर वह रहम फ़रमाए"। इतने में दोनों के बीच मौज हाइल हो गई और ग़र्क़ होने वालों के साथ वह भी ग़र्क़ होकर रह गया।

44. और कहा गया, "ऐ ज़मीन, अपना पानी निगल जा; और ऐ आसमान, थम जा"। चुनांचे पानी तह में बैठ गया, मुआमला चुका दिया गया, और वह कश्ती जूदी पर टिक गई, और कह दिया गया "फिटकार हो ज़ालिम लोगों पर!"

45. नूह ने अपने रब को पुकारा और कहा, "मेरे रब, मेरा बेटा मेरे घर

वालों में से है, और बेशक तेरा वादा सच्चा है। और तू सबसे बढ़कर हाकिम भी है"।

46. फ़रमाया, "ऐ नूह, वह तेरे घर वालों में से नहीं, वह तो एक बिगड़ा काम है। लिहाज़ा जिसका तुझे इल्म नहीं उसका मुझसे सवाल न कर। तेरे नादान हो जाने के अंदेशे से मैं तुझे नसीहत करता हूं"।

47. उसने कहा, "मेरे रब! मैं इससे पनाह मांगता हूं कि तुझसे उस चीज़ की दरख़्वास्त करूं जिसका मुझे कोई इल्म न हो; अब अगर तूने मुझे बख़्श न दिया, और मुझ पर रहम न फ़रमाया, तो मैं घाटे में पड़कर रहूंगा"।

48. कहा गया, "ऐ नूह! हमारी तरफ़ से सलामती और उन बरकतों के साथ उतर जो तुझपर और उन गिरोहों पर होंगी जो तेरे साथ वालों में से होंगे; कुछ गिरोह ऐसे भी होंगे जिन्हें चंद रोज़ा ऐश देंगे फिर उन्हें हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब आ पहुंचेगा"।

49. ये ग़ैब की ख़बरें हैं, जो हम तुम्हारी तरफ़ वह्यी कर रहे हैं; इससे पहले तो न तुम्हें उनकी ख़बर थी और न तुम्हारी क़ौम को, पस सब्र करो; बेशक अंजामकार डर रखनेवालों ही के हक़ में है।

50. और आद की तरफ़ उनके भाई हूद को भेजा। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो! उसके सिवा तुम्हारा और कोई माबूद नहीं; तुमने तो बस झूट घड़ रखा है।

51. ऐ मेरी क़ौम के लोगों, मैं इसपर तुमसे कोई अजर नहीं मांगता; मेरा अजर तो बस उस ज़ात के ज़िम्मे है जिसने मुझे पैदा किया है। फिर क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?

52. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अपने रब से बख़्शिश मांगो, फिर उसकी तरफ़ पलट आओ, वह तुमपर आसमान के दहाने खोल देगा, और तुममें क़ुव्वत दर क़ुव्वत का इज़ाफ़ा फ़रमाएगा; तुम मुजरिम बनकर मुंह न फेरो"।

53. उन्होंने कहा, "ऐ हूद, तू हमारे पास कोई रौशन दलील लेकर नहीं

मिन् अह्ली व इन्-न वअ्द-कल्-हक़्क़ु व अन्-त अह्कमुल्-हाकिमीन (45)

क़ा-ल या नूहु इन्नहू लै-स मिन् अह्लि-क इन्नहू अ़-मलुन् ग़ैरू सालिहिन् फ़ला तस्अल्नि मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन्, इन्नी अअ़िज़ु-क अन् तकू-न मिनल्-जाहिलीन (46)

क़ा-ल रब्बि इन्नी अऊ़ज़ु बि-क अन् अस्अ-ल-क मा लै-स ली बिही अ़िल्मुन्, व इल्ला तग़्फ़िर् ली व तर्हम्नी अकुम् मिनल्-ख़ासिरीन (47)

क़ी-ल या नूहुह्बित् बिसलामिम्-मिन्ना व ब-रकातिन् अ़लै-क व अ़ला उ-ममिम् मिम्-मम्म-अ़-क, व उ-ममुन् सनुमत्तिअुहुम् सुम्-म यमस्सुहुम् मिन्ना अ़ज़ाबुन् अलीम (48)

तिल्-क मिन् अम्बाइल्-ग़ैबि नूहीहा इलै-क मा कुन्-त तअ्लमुहा अन्-त व ला क़ौमु-क मिन् क़ब्लि हाज़ा, फ़स्बिर्, इन्नल् अ़ाक़ि-ब-त लिल्मुत्तक़ीन (49) ●

व इला आ़दिन् अख़ाहुम् हूदन्, क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरूहू, इन् अन्तुम् इल्ला मुफ़्तरून (50)

या क़ौमि ला अस्अलुकुम् अ़लैहि अज्रन्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लज़ी फ़-त-रनी, अ-फ़ला तअ्क़िलून (51)

व या क़ौमिस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि युर्सिलिस्समा-अ अ़लैकुम् मिद्रारंव्-व यज़िद्कुम् क़ुव्व-तन् इला क़ुव्वतिकुम् व ला त-तवल्लौ मुज्रिमीन (52)

क़ालू या हूदु मा जिअ्तना बि-बय्यि-नतिंव्-व मा नह्नु

مِنْ اَهْلِيْ وَاِنَّ وَعْدَكَ الْحَقُّ وَاَنْتَ
اَحْكَمُ الْحٰكِمِيْنَ ۝٤٥
قَالَ يٰنُوْحُ اِنَّهٗ لَيْسَ مِنْ اَهْلِكَ ۚ اِنَّهٗ
عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ ۗ فَلَا تَسْـَٔلْنِ مَا لَيْسَ
لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۗ اِنِّيْٓ اَعِظُكَ اَنْ تَكُوْنَ
مِنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝٤٦
قَالَ رَبِّ اِنِّيْٓ اَعُوْذُ بِكَ اَنْ اَسْـَٔلَكَ
مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۗ وَاِلَّا تَغْفِرْ لِيْ
وَتَرْحَمْنِيْٓ اَكُنْ مِّنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٤٧
قِيْلَ يٰنُوْحُ اهْبِطْ بِسَلٰمٍ مِّنَّا وَبَرَكٰتٍ
عَلَيْكَ وَعَلٰٓى اُمَمٍ مِّمَّنْ مَّعَكَ ۗ
وَاُمَمٌ سَنُمَتِّعُهُمْ ثُمَّ يَمَسُّهُمْ مِّنَّا
عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٤٨
تِلْكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهَآ اِلَيْكَ ۚ
مَا كُنْتَ تَعْلَمُهَآ اَنْتَ وَلَا قَوْمُكَ مِنْ قَبْلِ
هٰذَا ۛ فَاصْبِرْ ۛ اِنَّ الْعَاقِبَةَ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝٤٩
وَاِلٰى عَادٍ اَخَاهُمْ هُوْدًا ۗ قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۗ
اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُفْتَرُوْنَ ۝٥٠
يٰقَوْمِ لَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ اَجْرًا ۗ اِنْ
اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى الَّذِيْ فَطَرَنِيْ ۗ اَفَلَا
تَعْقِلُوْنَ ۝٥١
وَيٰقَوْمِ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا
اِلَيْهِ يُرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا
وَّيَزِدْكُمْ قُوَّةً اِلٰى قُوَّتِكُمْ وَلَا تَتَوَلَّوْا
مُجْرِمِيْنَ ۝٥٢
قَالُوْا يٰهُوْدُ مَا جِئْتَنَا بِبَيِّنَةٍ وَّمَا نَحْنُ

आया है, हम तेरे कहने से अपने माबूदों को छोड़ने के नहीं; और न हम तुझे मानने को हैं।

54. हम तो बस यही कहते हैं कि हमारे माबूदों में से किसी की तुझपर मार पड़ गई है"। उसने कहा, "मैं तो अल्लाह को गवाह बनाता हूं और तुम भी गवाह रहो कि उनसे जिनको तुम शरीक ठहरा कर उसके सिवा पूजते हो मेरा कोई तअल्लुक़ नहीं,

55. पस तुम सब मिलकर मेरे साथ दांव-घात कर देखो, और मुझे मुहलत न दो।

56. मेरा भरोसा तो अल्लाह, अपने रब और तुम्हारे रब पर है; चलने-फिरने वाली जो मख़्लूक़ भी है उसकी चोटी तो वही पकड़े हुए है। बेशक मेरा रब सीधी राह पर है।

57. लेकिन अगर तुम मुंह मोड़ते हो तो जो कुछ देकर मुझे तुम्हारी तरफ़ भेजा गया था वह तो मैं तुम्हें पहुंचा ही चुका, मेरा रब तुम्हारी जगह दूसरी किसी क़ौम को लाएगा और तुम उसका कुछ भी बिगाड़ न सकोगे। बेशक मेरा रब तो हर चीज़ पर निगहबान है"।

58. और जब हमारा हुक्म आ पहुंचा तो हमने हूद और उसके साथ के ईमान लानेवालों को अपनी रहमत से बचा लिया, और एक सख़्त अज़ाब से हमने उन्हें नजात दी।

59. यह आद हैं जिन्होंने अपने रब की आयतों का इनकार किया, उसके रसूलों की नाफ़रमानी की, और हर जाबिर मुख़ालिफ़ की पैरवी करते रहे।

60. इस दुनिया में भी लानत ने उनका पीछा किया, और क़ियामत के दिन भी: "सुन लो, बेशक आद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया। सुनो! हलाकत हो आद, क़ौमे हूद की"। •

61. समूद की तरफ़ उनके भाई सालेह को भेजा; उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो! उसके सिवा तुम्हारा कोई और माबूद नहीं। उसी ने तुम्हें ज़मीन से पैदा फ़रमाया और उसमें तुम्हें आबाद किया। लिहाज़ा उससे बख़्शिश मांगो, फिर उसकी तरफ़ पलट आओ; बेशक मेरा रब क़रीब भी है, क़बूल करनेवाला भी"।

बितारिकी आलि-हतिना अ़न् क़ौलि-क व मा नह्नु ल-क बिमुअ्मिनीन (53)

इन्नक़ूलु इल्लअ्-तरा-क बअ्ज़ु आलि-हतिना बिसूइन्, क़ा-ल इन्नी उशिहदुल्ला-ह वश्हदू अन्नी बरीउम्-मिम्मा तुश्रिकून (54)

मिन् दूनिही फ़कीदूनी जमीअ़न् सुम्-म ला तुन्ज़िरून (55)

इन्नी तवक्कल्तु अ़लल्लाहि रब्बी व रब्बिकुम्, मा मिन् दाब्बतिन् इल्ला हु-व आख़िज़ुम् बिनासि-यतिहा, इन्-न रब्बी अ़ला सिरातिम् मुस्तक़ीम (56)

फ़-इन् तवल्लौ फ़-क़द् अब्लग्तुकुम् मा उर्सिल्तु बिही इलैकुम्, व यस्तख़्लिफ़ु रब्बी क़ौमन् ग़ैरकुम् व ला तज़ुर्रूनहू शैअन्, इन्-न रब्बी अ़ला कुल्लि शैइन् हफ़ीज़ (57)

व लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना हूदंव्वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व नज्जैनाहुम् मिन् अ़ज़ाबिन् ग़लीज़ (58)

व तिल्-क आ़दुन् ज-हदू बिआयाति रब्बिहिम् व अ़सौ रूसु-लहु वत्त-बअू अम्-र कुल्लि जब्बारिन् अ़नीद (59)

व उत्बिअू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या लअ्न-तंव्-व यौमल्-क़ियामति, अला-इन्-न आ़दन् क-फ़रू रब्बहुम्, अला बुअ्दल् लिआ़दिन् क़ौमि हूद (60) •

व इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् • *क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरूहू, हु-व अन्शा-अकुम् मिनल्अर्ज़ि वस्तअ्म-रकुम् फ़ीहा फ़स्तग्फ़िरूहु सुम्-म तूबू इलैहि, इन्-न रब्बी क़रीबुम् मुजीब* (61)

بِتَارِكِيْٓ اٰلِهَتِنَا عَنْ قَوْلِكَ وَمَا نَحْنُ
لَكَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝٥٣
اِنْ نَّقُوْلُ اِلَّا اعْتَرٰىكَ بَعْضُ اٰلِهَتِنَا
بِسُوْۗءٍ ۭ قَالَ اِنِّىْٓ اُشْهِدُ اللّٰهَ وَاشْهَدُوْٓا
اَنِّىْ بَرِيْۗءٌ مِّمَّا تُشْرِكُوْنَ ۝٥٤
مِنْ دُوْنِهٖ فَكِيْدُوْنِيْ جَمِيْعًا ثُمَّ
لَا تُنْظِرُوْنِ ۝٥٥
اِنِّىْ تَوَكَّلْتُ عَلَى اللّٰهِ رَبِّيْ وَرَبِّكُمْ ۭ
مَا مِنْ دَاۗبَّةٍ اِلَّا هُوَ اٰخِذٌۢ بِنَاصِيَتِهَا ۭ
اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝٥٦
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقَدْ اَبْلَغْتُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ
بِهٖٓ اِلَيْكُمْ ۭ وَيَسْتَخْلِفُ رَبِّيْ قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۚ
وَلَا تَضُرُّوْنَهٗ شَـيْـــًٔا ۭ اِنَّ رَبِّيْ عَلٰي كُلِّ
شَيْءٍ حَفِيْظٌ ۝٥٧
وَلَمَّا جَاۗءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا هُوْدًا وَّالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَنَجَّيْنٰهُمْ مِّنْ
عَذَابٍ غَلِيْظٍ ۝٥٨
وَتِلْكَ عَادٌ ڒ جَحَدُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ وَعَصَوْا
رُسُلَهٗ وَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ كُلِّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۝٥٩
وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً وَّيَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۭ اَلَآ اِنَّ عَادًا كَفَرُوْا رَبَّهُمْ ۭ اَلَا
بُعْدًا لِّعَادٍ قَوْمِ هُوْدٍ ۝٦٠
وَاِلٰي ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا ۘ قَالَ يٰقَوْمِ
اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ هُوَ
اَنْشَاَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ وَاسْتَعْمَرَكُمْ فِيْهَا
فَاسْتَغْفِرُوْهُ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ۭ اِنَّ رَبِّيْ
قَرِيْبٌ مُّجِيْبٌ ۝٦١

62. उन्होंने कहा, "ऐ सालेह, इससे पहले तू हमारे दरमियान ऐसा शख़्स था जिससे बड़ी उम्मीदें थीं। क्या तू हमें उनको पूजने से रोकता है जिनको हमारे बाप-दादा पूजते रहे हैं? जिसकी तरफ़ तू हमें दावत दे रहा है उसके बारे में तो हमें शक है जो ख़लजान में डाले हुए है"।

63. उसने कहा, "ऐ मेरी कौम के लोगो! क्या तुमने सोचा, अगर मैं अपने रब की एक रौशन दलील पर हूं, और उसने मुझे अपनी रहमत से नवाज़ा है, तो अगर मैं उसकी नाफ़रमानी करूं तो अल्लाह के मुकाबले में कौन मेरी मदद करेगा? तुम तो और ज़्यादा ख़सारे में डाल देने के सिवा मेरे हक़ में और कोई इज़ाफ़ा न करोगे।

64. ऐ मेरी कौम के लोगो! यह अल्लाह की ऊंटनी तुम्हारे लिए एक निशानी है। इसे छोड़ दो कि अल्लाह की ज़मीन में खाए, और उसे तकलीफ़ देने को हाथ न लगाना वरना अज़ाब तुम्हें आ पकड़ेगा जो दूर नहीं है"।

65. लेकिन उन्होंने उसकी कूचें काट डालीं, इसपर उसने कहा, "तीन दिन अपने घरों में और मजे कर लो। यह ऐसा वादा है जो झूटा साबित न होगा"।

66. फिर जब हमारा हुक्म आ पहुंचा, तो हमने अपनी रहमत से सालेह और उसके साथ के ईमान लानेवालों को बचा लिया और उस दिन की रुसवाई से महफ़ूज रखा, तुम्हारा रब ही दरअसल बड़ी ताक़त वाला, बड़ा ज़बरदस्त है।

67. और जिन लोगों ने ज़ुल्म की रविश इख़्तियार की थी उनको एक हौलनाक आवाज़ ने आ लिया, और वो अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।

68. गोया वो वहां कभी बसे ही न थे: सुनो समूद ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया, सुन लो फिटकार हो समूद पर!"

69. और हमारे फ़िरिस्तादे इब्राहीम के पास ख़ुशख़बरी लेकर पहुंचे; उन्होंने कहा, "सलाम हो!" उसने भी कहा, "सलाम हो"। फिर उसने कुछ देर न की कि एक भुना हुआ बछड़ा ले आया।

70. लेकिन जब देखा कि उनके हाथ उसकी तरफ़ नहीं बढ़ रहे हैं तो उनसे उसने अजनबियत महसूस की और वह दिल में उनसे डरा। वो बोले, "डरो नहीं, हम तो कौमे लूत की तरफ़ भेजे गए हैं"।

71. उसकी औरत भी खड़ी थी वह इस पर हंस पड़ी, फिर हम ने उसको इसहाक़, और इसहाक़ के भाई याक़ूब की ख़ुशख़बरी दी।

क़ालू या सालिहु क़द् कुन्-त फ़ीना मर्जुव्वन् क़ब्-ल हाज़ा अतन्हाना अन्-नअ्बु-द मा यअ्बुदु आबाउना व इन्नना लफ़ी शक्किम् मिम्मा तद्अूना इलैहि मुरीब (62)

क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बी व आतानी मिन्हु रह्म-तन् फ़-मंय्यन्सुरुनी मिनल्लाहि इन् अ़सैतुहू, फ़मा तज़ीदू-ननी ग़ै-र तख़्सीर (63)

व या क़ौमि हाज़िही नाक़तुल्लाहि लकुम् आयतन् फ़-ज़रूहा तअ्कुल् फ़ी अर्ज़िल्लाहि व ला तमस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्ख़ु-ज़कुम् अ़ज़ाबुन् क़रीब (64)

फ़-अ़-क़रूहा फ़क़ा-ल तमत्तअू फ़ी दारिकुम् सलास-त अय्यामिन्, ज़ालि-क वअ्दुन ग़ैरु मक्ज़ूब (65)

फ़-लम्मा जा-अ अम्रुना नज्जैना सालिहंव्-वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व मिन् ख़िज़्यि यौमिइज़िन्, इन्-न रब्ब-क हुवल् क़विय्युल्-अ़ज़ीज़ (66)

व अ-ख़ज़ल्लज़ी-न ज़-लमुस्सैहतु फ़-अस्बहू फ़ी दियारिहिम् जासिमीन (67)

कअल्लम् यग़्नौ फ़ीहा, अला इन्-न समू-द क-फ़रू रब्बहुम्, अला बुअ्दल् लि-समूद (68) ●

व ल-क़द् जाअत् रुसुलुना इब्राही-म बिल्बुश्रा क़ालू सलामन्, क़ा-ल सलामुन् फ़मा लबि-स अन् जा-अ बिअिज्लिन् हनीज़ (69)

फ़-लम्मा रआ ऐदि-यहुम् ला तसिलु इलैहि नकि-रहुम् व औज-स मिन्हुम् ख़ीफ़-तन्, क़ालू ला तख़फ़् इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमि लूत (70)

वम्र-अतुहू क़ाइ-मतुन् फ़-ज़हिकत् फ़-बश्शर्नाहा बि-इस्हा-क़ व मिंव्वरा-इ इस्हा-क़ यअ्क़ूब (71)

قَالُوْا يٰصٰلِحُ قَدْ كُنْتَ فِيْنَا مَرْجُوًّا
قَبْلَ هٰذَآ اَتَنْهٰىنَآ اَنْ نَّعْبُدَ مَا يَعْبُدُ
اٰبَآؤُنَا وَاِنَّنَا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا
تَدْعُوْنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ (٦٢)
قَالَ يٰقَوْمِ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كُنْتُ عَلٰى
بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّيْ وَاٰتٰىنِيْ مِنْهُ رَحْمَةً
فَمَنْ يَّنْصُرُنِيْ مِنَ اللّٰهِ اِنْ عَصَيْتُهٗ قف
فَمَا تَزِيْدُوْنَنِيْ غَيْرَ تَخْسِيْرٍ (٦٣)
وَيٰقَوْمِ هٰذِهٖ نَاقَةُ اللّٰهِ لَكُمْ اٰيَةً
فَذَرُوْهَا تَاْكُلْ فِيْٓ اَرْضِ اللّٰهِ وَلَا
تَمَسُّوْهَا بِسُوْٓءٍ فَيَاْخُذَكُمْ عَذَابٌ قَرِيْبٌ (٦٤)
فَعَقَرُوْهَا فَقَالَ تَمَتَّعُوْا فِيْ دَارِكُمْ
ثَلٰثَةَ اَيَّامٍ ذٰلِكَ وَعْدٌ غَيْرُ مَكْذُوْبٍ (٦٥)
فَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا صٰلِحًا وَّالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا وَمِنْ خِزْيِ
يَوْمِىِٕذٍ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْقَوِيُّ الْعَزِيْزُ (٦٦)
وَاَخَذَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ
فَاَصْبَحُوْا فِيْ دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ (٦٧)
كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا اَلَآ اِنَّ ثَمُوْدَاۡ
ع كَفَرُوْا رَبَّهُمْ اَلَا بُعْدًا لِّثَمُوْدَ (٦٨)
وَلَقَدْ جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى قَالُوْا
سَلٰمًا قَالَ سَلٰمٌ فَمَا لَبِثَ اَنْ جَآءَ بِعِجْلٍ حَنِيْذٍ (٦٩)
فَلَمَّا رَآٰ اَيْدِيَهُمْ لَا تَصِلُ اِلَيْهِ نَكِرَهُمْ
وَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً قَالُوْا لَا تَخَفْ
اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمِ لُوْطٍ (٧٠)
وَامْرَاَتُهٗ قَآىِٕمَةٌ فَضَحِكَتْ فَبَشَّرْنٰهَا
بِاِسْحٰقَ وَمِنْ وَّرَآءِ اِسْحٰقَ يَعْقُوْبَ (٧١)

72. वह बोली, "ऐ मेरी कमबख़्ती! क्या मैं बच्चा जनूंगी जबकि मैं बूढ़ी हूं और यह मेरे शौहर हैं बूढ़े? यह तो बड़ी ही अजीब बात है!"

73. वो बोले, "क्या अल्लाह के हुक्म पर तुम तअज्जुब करती हो? ऐ घरवालो! तुमपर तो अल्लाह की रहमत और उसकी बरकतें हैं, वह यक़ीनन तारीफ़ के क़ाबिल, बड़ी शानवाला है"।

74. फिर जब इब्राहीम की घबराहट दूर हो गई और उसे ख़ुशख़बरी मिली, तो वह क़ौमे लूत के मुआमले में हमसे झगड़ने लगा;

75. बेशक इब्राहीम बहुत बुर्दबार, दर्दमन्द, रुजू होने वाला था।

76. "ऐ इब्राहीम, इसे छोड़ो, तुम्हारे रब का हुक्म आ चुका है, और यक़ीनन उनपर वह अज़ाब आने को है जो टलने का नहीं"।

77. और जब हमारे क़ासिद लूत के पास पहुंचे, तो उनकी वजह से वह बहुत ग़मगीन हो गए, और उनकी हिफ़ाज़त से आजिज़ और दरमांदा कहने लगा, "यह तो बड़ा ही सख़्त दिन है"।

78. उसकी क़ौम के लोग दौड़ते हुए बे इख़्तियार उसके पास आ पहुंचे; और वो पहले से ही बुरे काम किया करते थे। उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! ये मेरी बेटियां हैं; ये तुम्हारे लिए पाकीज़ातर हैं। लिहाज़ा अल्लाह का डर रखो, और मुझे मेरे मेहमानों के मुआमले में रुसवा न करो। क्या तुममें कोई एक भी माकूल आदमी नही है?"

79. उन्होंने कहा, "तुझे तो मालूम है कि तेरी बेटियों से हमें कोई मतलब नहीं, हम जो चाहते हैं उसे तू खूब जानता है"।

80. उसने कहा, "काश मुझमें तुमसे मुक़ाबले की ताक़त होती, या मैं किसी मज़बूत सहारे की पनाह ही ले सकता!"

81. उन्होंने कहा, "ऐ लूत, हम तुम्हारे रब के भेजे हुए हैं। वो तुम तक हरगिज़ नहीं पहुंच सकते; पस तुम रात के किसी हिस्से में अपने घरवालों को लेकर निकल जाओ, और तुममें कोई पीछे पलट कर न देखे, अलबत्ता तुम्हारी औरत का मुआमला और है;

क़ालत् या वैलता अ-अलिदु व अ-न अ़जूज़ुंव्-व हाज़ा बअ़्ली शैख़न्, इन्-न हाज़ा लशैउन् अ़जीब (72)

क़ालू अतअ़्जबी-न मिन् अम्रिल्लाहि रह़्मतुल्लाहि व ब-रकातुहू अ़लैकुम् अह्लल्बैति, इन्नहू हमीदुम्-मजीद (73)

फ़-लम्मा ज़-ह-ब अ़न् इब्राहीमर्-रौअ़ु व जाअत्हुल्-बुश्रा युजादिलुना फ़ी क़ौमि लूत (74)

इन्-न इब्राही-म ल-हलीमुन् अव्वाहुम् मुनीब (75)

या इब्राहीमु अअ़्रिज़् अ़न् हाज़ा इन्नहू क़द् जा-अ अम्रु रब्बि-क व इन्नहुम् आतीहिम् अ़ज़ाबुन् ग़ैरु मर्दूद (76)

व लम्मा जाअत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व ज़ा-क़ बिहिम् ज़र्अ़ंव्-व क़ा-ल हाज़ा यौमुन् अ़सीब (77)

व जा-अहू क़ौमुहू युह्रअ़ू-न इलैहि, व मिन् क़ब्लु कानू यअ़्मलूनस्-सय्यिआति, क़ा-ल या क़ौमि हा-उला-इ बनाती हुन्-न अत्हरु लकुम् फ़त्तक़ुल्ला-ह व ला तुख़्ज़ूनि फ़ी ज़ैफ़ी, अलै-स मिन्कुम् रजुलुर्रशीद (78)

क़ालू ल-क़द् अ़लिम्-त मा लना फ़ी बनाति-क मिन् हक़्क़िन् व इन्न-क ल-तअ़्लमु मा नुरीद (79)

क़ा-ल लौ अन्-न ली बिकुम् क़ुव्वतन् औ आवी इला रुक्निन् शदीद (80)

क़ालू या लूतु इन्ना रुसुलु रब्बि-क लंय्यसिलू इलै-क फ़-असरि बिअह्लि-क बिक़ित्ञिम्-मिनल्लैलि व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ-हदुन् इल्लम्र-अ-त-क, इन्नहू मुसीबुहा मा असाबहुम, इन्-न मौअ़ि-दहुमु-

قَالَتْ يٰوَيْلَتٰٓى ءَاَلِدُ وَاَنَا عَجُوْزٌ وَّهٰذَا
بَعْلِىْ شَيْخًا ؕ اِنَّ هٰذَا لَشَىْءٌ عَجِيْبٌ ۝٧٢
قَالُوْٓا اَتَعْجَبِيْنَ مِنْ اَمْرِ اللّٰهِ رَحْمَتُ اللّٰهِ
وَبَرَكٰتُهٗ عَلَيْكُمْ اَهْلَ الْبَيْتِ ؕ اِنَّهٗ
حَمِيْدٌ مَّجِيْدٌ ۝٧٣
فَلَمَّا ذَهَبَ عَنْ اِبْرٰهِيْمَ الرَّوْعُ وَجَآءَتْهُ
الْبُشْرٰى يُجَادِلُنَا فِىْ قَوْمِ لُوْطٍ ۝٧٤
اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ لَحَلِيْمٌ اَوَّاهٌ مُّنِيْبٌ ۝٧٥
يٰٓاِبْرٰهِيْمُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ۚ اِنَّهٗ قَدْ
جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ۚ وَاِنَّهُمْ اٰتِيْهِمْ عَذَابٌ
غَيْرُ مَرْدُوْدٍ ۝٧٦
وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوْطًا سِىْٓءَ بِهِمْ
وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالَ هٰذَا يَوْمٌ
عَصِيْبٌ ۝٧٧
وَجَآءَهٗ قَوْمُهٗ يُهْرَعُوْنَ اِلَيْهِ ؕ وَمِنْ
قَبْلُ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ ؕ قَالَ
يٰقَوْمِ هٰٓؤُلَآءِ بَنَاتِىْ هُنَّ اَطْهَرُ لَكُمْ
فَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ فِىْ ضَيْفِىْ ؕ
اَلَيْسَ مِنْكُمْ رَجُلٌ رَّشِيْدٌ ۝٧٨
قَالُوْا لَقَدْ عَلِمْتَ مَا لَنَا فِىْ بَنٰتِكَ مِنْ
حَقٍّ ۚ وَاِنَّكَ لَتَعْلَمُ مَا نُرِيْدُ ۝٧٩
قَالَ لَوْ اَنَّ لِىْ بِكُمْ قُوَّةً اَوْ اٰوِىْٓ اِلٰى
رُكْنٍ شَدِيْدٍ ۝٨٠
قَالُوْا يٰلُوْطُ اِنَّا رُسُلُ رَبِّكَ لَنْ يَّصِلُوْٓا
اِلَيْكَ فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ
وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ اِلَّا امْرَاَتَكَ ؕ
اِنَّهٗ مُصِيْبُهَا مَآ اَصَابَهُمْ ؕ اِنَّ مَوْعِدَهُمُ

उसपर भी वही कुछ गुज़रने वाला है जिनका उनपर गुज़रना तय हो चुका है। उनके लिए मुक़र्रर वक़्त सुबह का है तो क्या सुबह क़रीब नहीं?"

82. फिर जब हमारा हुक्म आ पहुंचा, तो हमने उसको तलपट कर दिया, और उसपर कंकरीले पत्थर ताबड़-तोड़ बरसाए,

83. जो तुम्हारे रब के यहां निशानज़दा थे और वह ज़ालिमों से कुछ दूर भी नहीं।

84. मदयन की तरफ़ उनके भाई शुऐब को भेजा; उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो, अल्लाह की बन्दगी करो! उसके सिवा तुम्हारा और कोई माबूद नहीं। और नाप और तौल में कमी न करो। मैं तो तुम्हें अच्छी हालत में देख रहा हूं; लेकिन मुझे तुम्हारे बारे में एक घेर लेनेवाले दिन के अज़ाब का डर है।

85. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! इनसाफ़ के साथ नाप और तौल को पूरा रखो, और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो, और रूसियाह (कलंकित) मत हो ज़मीन में मुफ़्सिद बनकर।

86. अगर तुम मोमिन हो तो जो अल्लाह के पास बाक़ी रहता है वही तुम्हारे लिए बेहतर है। मैं तुम पर कोई मुक़र्रर रखवाला तो हूं नहीं"।

87. वो बोले, "ऐ शुऐब, क्या तेरी नमाज़ तुझे यही सिखाती है कि जिन्हें हमारे बाप-दादा पूजते आए हैं उन्हें हम छोड़ दें, या यह कि हम अपने माल में अपने मंशा के मुताबिक़ तसर्रुफ़ न करें? बस एक तू ही तो बुर्दबार होशमन्द रह गया है!"

88. उसने कहा "ऐ मेरे लोगो! तुम्हारा क्या ख़याल है? अगर मैं अपने रब की एक रौशन दलील पर हूं और उसने मुझे अपनी तरफ़ से अच्छा रिज़्क़ भी अता किया (तो झुटलाना मुझे कितना ज़रर रसां होगा!) और मैं नहीं चाहता कि जिन बातों से मैं तुम्हें रोकता हूं ख़ुद तुम्हारे बरख़िलाफ़ उनको करने लगूं; मैं तो अपने बस भर सिर्फ़ इसलाह चाहता हूं। मुझे तौफ़ीक़ मिलना तो अल्लाह ही की मदद से है; उसी पर मेरा भरोसा है और उसी की तरफ़ मैं रुजू करता हूं।

स्सुब्हु, अलैसस्-सुब्हु बि-क़रीब (81)

फ-लम्मा जा-अ अम्रुना जअ़ल्ना आ़लि-यहा साफ़ि-लहा व अम्तर्ना अ़लैहा हिजा-रतम् मिन् सिज्जीलिम्-मन्ज़ूद (82)

मुसव्व-मतन् अ़िन्-द रब्बि-क, व मा हि-य मिनज़्ज़ालिमी-न बि-बअ़ीद ● (83) ●

व इला मद्य-न अख़ाहुम् शुअ़ैबन्, क़ा-ल या क़ौमिअ़्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, व ला तन्क़ुसुल्-मिक्या -ल वल्मीज़ा-न इन्नी अराकुम् बिख़ैरिंव्-व इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिम्-मुहीत (84)

व या क़ौमि औफ़ुल्-मिक्या-ल वल्मीज़ा-न बिल्-क़िस्ति व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (85)

बक़िय्यतुल्लाहि ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनी-न, व मा-अ-न अ़लैकुम् बि-हफ़ीज़ (86)

क़ालू या शुअ़ैबु अ-सलातु-क तअ्मुरु-क अन् नत्रु-क मा यअ़्बुदु आबाउना औ अन्-नफ़्अ़-ल फ़ी अम्वालिना मा नशा-उ, इन्न-क ल-अन्तल् हलीमुर्रशीद (87)

क़ा-ल या क़ौमि अ-रऐतुम् इन् कुन्तु अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बी व र-ज़-क़नी मिन्हु रिज़्क़न् ह-सनन्, व मा उरीदु अन् उख़ालि-फ़कुम् इला मा अन्हाकुम् अ़न्हु, इन् उरीदु इल्लल्-इस्ला-ह मस्त-तअ़्तु, व मा तौफ़ीक़ी इल्ला बिल्लाहि, अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि उनीब (88)

الصُّبْحُ ۚ أَلَيْسَ الصُّبْحُ بِقَرِيبٍ ۝٨١
فَلَمَّا جَاءَ أَمْرُنَا جَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهَا حِجَارَةً مِّن سِجِّيلٍ
مَّنضُودٍ ۝٨٢
مُّسَوَّمَةً عِندَ رَبِّكَ ۖ وَمَا هِيَ مِنَ
الظَّالِمِينَ بِبَعِيدٍ ۝٨٣
وَإِلَىٰ مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا ۚ قَالَ
يَا قَوْمِ اعْبُدُوا اللَّهَ مَا لَكُم مِّنْ إِلَٰهٍ
غَيْرُهُ ۖ وَلَا تَنقُصُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ ۚ
إِنِّي أَرَاكُم بِخَيْرٍ وَإِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ
عَذَابَ يَوْمٍ مُّحِيطٍ ۝٨٤
وَيَا قَوْمِ أَوْفُوا الْمِكْيَالَ وَالْمِيزَانَ بِالْقِسْطِ ۖ
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝٨٥
بَقِيَّتُ اللَّهِ خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُم
مُّؤْمِنِينَ ۚ وَمَا أَنَا عَلَيْكُم بِحَفِيظٍ ۝٨٦
قَالُوا يَا شُعَيْبُ أَصَلَاتُكَ تَأْمُرُكَ أَن
نَّتْرُكَ مَا يَعْبُدُ آبَاؤُنَا أَوْ أَن نَّفْعَلَ
فِي أَمْوَالِنَا مَا نَشَاءُ ۖ إِنَّكَ لَأَنتَ
الْحَلِيمُ الرَّشِيدُ ۝٨٧
قَالَ يَا قَوْمِ أَرَأَيْتُمْ إِن كُنتُ عَلَىٰ بَيِّنَةٍ
مِّن رَّبِّي وَرَزَقَنِي مِنْهُ رِزْقًا حَسَنًا ۚ
وَمَا أُرِيدُ أَنْ أُخَالِفَكُمْ إِلَىٰ مَا
أَنْهَاكُمْ عَنْهُ ۚ إِنْ أُرِيدُ إِلَّا
الْإِصْلَاحَ مَا اسْتَطَعْتُ ۚ وَمَا تَوْفِيقِي
إِلَّا بِاللَّهِ ۚ عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ وَإِلَيْهِ
أُنِيبُ ۝٨٨

89. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मेरी मुख़ालफ़त तुम्हें इस जुर्म पर आमादा न करे कि तुमपर भी वही कुछ गुज़रे जो क़ौमे नूह, या क़ौमे हूद, या क़ौमे सालेह पर गुज़र चुका है; और क़ौमे लूत तो तुमसे कुछ दूर भी नहीं।

90. अपने रब से बख़्शिश मांगो, और फिर उसकी तरफ़ पलट आओ; मेरा रब तो बड़ा मेहरबान, निहायत मुहब्बत करनेवाला है"।

91. उन्होंने कहा, "ऐ शुऐब, तेरी बहुत सी बातों के समझने से तो हम क़ासिर हैं। और हम तो तुझे अपने दरमियान कमज़ोर देखते हैं; अगर तेरे भाई-बन्द न होते तो हम कभी का तुझे संगसार कर चुके होते; तू हमारे मुक़ाबले में कोई ज़बरदस्त तो है नहीं"।

92. उसने कहा "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या मेरे भाई-बन्द तुमपर अल्लाह से भी ज़्यादा भारी हैं कि तुमने उसे अपने पीछे डाल दिया? तुम जो कुछ भी करते हो यक़ीनन मेरा रब उसका इहाता किए हुए है।

93. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम अपनी जगह काम करते रहो; मैं भी कर रहा हूं; जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर वह अज़ाब आता है जो उसे रुसवा करके रहेगा और कौन है जो झूटा है। इंतिज़ार करो, मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार में हूं"।

94. आख़िरकार जब हमारा हुक्म आ पहुंचा, तो हमने अपनी रहमत से शुऐब और उन लोगों को जो उसके साथ ईमान लाए थे बचा लिया, और जिन्होंने ज़ुल्म की रविश अपनाई थी उन्हें एक सख़्त आवाज़ ने आ लिया, और वो अपने घरों में औंधे पड़े रह गए।

95. गोया वो वहां कभी बसे ही न थे; "सुन लो फिटकार है मदयन पर, जैसे समूद पर फिटकार हुई!"

96-97. और हमने मूसा को अपनी निशानियों और रौशन दलीलों के साथ फ़िरऔन और उसके सरदारों के पास भेजा लेकिन उन्होंने फ़िरऔन ही के हुक्म की पैरवी की, हालांकि फ़िरऔन का हुक्म रास्ती पर न था।

98. क़ियामत के दिन वह अपनी क़ौम के लोगों के आगे होगा, — और उन्हें उसने आग में जा उतारा — और बहुत ही बुरा घाट है वह उतरने का!

99. यहां भी लानत ने उनका पीछा किया, और क़ियामत के दिन भी — बहुत ही बुरा इनाम है यह जो किसी को दिया जाए!

व या क़ौमि ला यज्रिमन्नकुम् शिक़ाक़ी अंय्युसी-बकुम् मिस्लु मा असा-ब क़ौ-म नूहिन् औ क़ौ-म हूदिन् औ क़ौ-म सालिहिन्, व मा क़ौमु लूतिम्-मिन्कुम् बि-बअ़ीद (89)

वस्तग़्फ़िरू रब्बकुम् सुम्-म तूबू इलैहि, इन्-न रब्बी रहीमुंव्वदूद (90)

क़ालू या शुअ़ैबु मा नफ़्क़हु कसीरम्-मिम्मा तक़ूलु व इन्ना ल-नरा-क फ़ीना ज़अ़ीफ़न्, व लौ ला रह़्तु-क ल-रजम्ना-क व मा अन्-त अ़लैना बि-अ़ज़ीज़ (91)

क़ा-ल या क़ौमि अ-रह्ती अ-अ़ज़्ज़ु अ़लैकुम् मिनल्लाहि, वत्तख़ज़्तुमूहु वरा-अकुम् ज़िह्रिय्यन्, इन्-न रब्बी बिमा तअ़्मलू-न मुहीत (92)

व या क़ौमिअ़्-मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आ़मिलुन्, सौ-फ़ तअ़्लमू-न मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्युख़्ज़ीहि व मन् हु-व काज़िबुन्, वर्तक़िबू इन्नी म-अ़कुम् रक़ीब (93)

व लम्मा जा-अ-अम्रुना नज्जैना शुअ़ैबंव्-वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू बिरह्मतिम्-मिन्ना व अ-ख़-ज़तिल्लज़ी-न ज़-लमुस्सैहतु फ़-अस्बहू फ़ी दियारिहिम् जासिमीन (94)

कअल्लम् यग़्नौ फ़ीहा, अला बुअ़्दल् लिमद्-य-न कमा बअ़िदत् समूद (95) ●

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम्-मुबीन (96)

इला फ़िर्औ़-न व म-लइही फ़त्तबअू अम्-र फ़िरऔ़-न व मा अम्रु फ़िरऔ़-न बि-रशीद (97)

यक़्दुमु क़ौमहू यौमल-क़ियामति फ़औ-र-दहुमुन्ना-र, व बिअ्सल् विर्दुल्-मौरूद (98)

व उत्बिअू फ़ी हाज़िही लअ़्-नतंव्-व यौमल्-क़ियामति, बिअ्सर्रिफ़्दुल मर्फ़ूद (99)

وَيٰقَوْمِ لَا يَجْرِمَنَّكُمْ شِقَاقِيْٓ اَنْ يُّصِيْبَكُمْ
مِّثْلُ مَآ اَصَابَ قَوْمَ نُوْحٍ اَوْ قَوْمَ هُوْدٍ
اَوْ قَوْمَ صٰلِحٍ ؕ وَمَا قَوْمُ لُوْطٍ مِّنْكُمْ بِبَعِيْدٍ ۝٨٩
وَاسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ثُمَّ تُوْبُوْٓا اِلَيْهِ ؕ اِنَّ رَبِّيْ
رَحِيْمٌ وَّدُوْدٌ ۝٩٠
قَالُوْا يٰشُعَيْبُ مَا نَفْقَهُ كَثِيْرًا مِّمَّا تَقُوْلُ
وَاِنَّا لَنَرٰىكَ فِيْنَا ضَعِيْفًا ۚ وَلَوْلَا رَهْطُكَ
لَرَجَمْنٰكَ ؗ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْنَا بِعَزِيْزٍ ۝٩١
قَالَ يٰقَوْمِ اَرَهْطِيْٓ اَعَزُّ عَلَيْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ ؕ
وَاتَّخَذْتُمُوْهُ وَرَآءَكُمْ ظِهْرِيًّا ؕ اِنَّ رَبِّيْ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ مُحِيْطٌ ۝٩٢
وَيٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ؕ
سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۙ مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ
وَمَنْ هُوَ كَاذِبٌ ؕ وَارْتَقِبُوْٓا اِنِّيْ مَعَكُمْ رَقِيْبٌ ۝٩٣
وَلَمَّا جَآءَ اَمْرُنَا نَجَّيْنَا شُعَيْبًا وَّالَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا مَعَهٗ بِرَحْمَةٍ مِّنَّا ۚ وَاَخَذَتِ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الصَّيْحَةُ فَاَصْبَحُوْا فِيْ
دِيَارِهِمْ جٰثِمِيْنَ ۝٩٤ۙ
كَاَنْ لَّمْ يَغْنَوْا فِيْهَا ؕ اَلَا بُعْدًا لِّمَدْيَنَ
ع كَمَا بَعِدَتْ ثَمُوْدُ ۝٩٥ؒ
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝٩٦ۙ
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاتَّبَعُوْٓا اَمْرَ
فِرْعَوْنَ ۚ وَمَآ اَمْرُ فِرْعَوْنَ بِرَشِيْدٍ ۝٩٧
يَقْدُمُ قَوْمَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَاَوْرَدَهُمُ
النَّارَ ؕ وَبِئْسَ الْوِرْدُ الْمَوْرُوْدُ ۝٩٨
وَاُتْبِعُوْا فِيْ هٰذِهٖ لَعْنَةً وَّيَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ
بِئْسَ الرِّفْدُ الْمَرْفُوْدُ ۝٩٩

100. ये बस्तियों के कुछ हालात हैं जो हम तुमसे बयान कर रहे हैं; उनमें कुछ तो खड़ी हैं और कुछ की फ़सल कट चुकी है।

101. हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया, बल्कि उन्होंने ख़ुद अपने आप पर ज़ुल्म ढाया; फिर जब तेरे रब का हुक्म आ पहुंचा तो उनके वो माबूद जिन्हें वो अल्लाह से हटकर पुकारा करते थे उनके कुछ भी काम न आ सके। उन्होंने हलाकत के सिवा उनके लिए किसी और चीज़ में इज़ाफ़ा न किया।

102. तेरे रब की पकड़ जब वह किसी ज़ालिम बस्ती को पकड़ता है ऐसी ही होती है; बेशक उसकी पकड़ बड़ी दर्दनाक, निहायत सख़्त होती है।

103. इसमें यक़ीनन उस शख़्स के लिए एक निशानी है जो आख़िरत के अज़ाब से डरता हो, वह एक ऐसा दिन होगा जिसमें सारे ही इनसान जमा होंगे और वह एक ऐसा दिन होगा जिसमें सब कुछ आंखों के सामने होगा।

104. और हम उसे सिर्फ़ थोड़ी मुद्दत के लिए टाल रहे हैं;

105. जिस वक़्त वह (दिन) आएगा, तो उसकी इजाज़त के बग़ैर कोई शख़्स बात तक न कर सकेगा; फिर कोई तो उनमें बदबख़्त होगा और कोई ख़ुशनसीब होगा।

106. तो जो बदबख़्त होंगे वो आग में होंगे, जहां उन्हें सांस खींचना और फुंकार मारना है,

107. वो वहां हमेशा रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन क़ायम रहें, बात यह है कि तुम्हारे रब की मशीयत ही नाफ़िज़ रहेगी; बेशक तुम्हारा रब जो चाहे करे।

108. रहे वो जो ख़ुशनसीब होंगे, वो तो जन्नत में होंगे, जहां वो मुस्तक़िल रहेंगे जब तक आसमान व ज़मीन क़ायम रहें, बात यह है कि तुम्हारे रब की मशीयत ही नाफ़िज़ रहेगी; यह एक ऐसी बख़्शिश है जिसका सिलसिला कभी न टूटेगा।

109. पस जिनको ये पूज रहे हैं उनके बारे में तुम किसी शक में न रहो; यह तो बस उसी तरह पूजा किए जा रहे हैं जैसे इससे पहले उनके बाप-दादा पूजा करते रहे हैं; हम तो उन्हें उनका हिस्सा बग़ैर किसी कमी के पूरा-पूरा देनेवाले हैं।

110. हम मूसा को भी किताब दे चुके हैं; फिर उसमें भी इख़्तिलाफ़ किया गया, अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से

ज़ालि-क मिन् अम्बाइल्क़ुरा नक़ुस्सुहू अ़लै-क मिन्हा क़ाइमुंव्-व हसीद (100)

व मा ज़लम्नाहुम् व लाकिन् ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् फ़मा अग्नत् अ़न्हुम् आलि-हतुहुमुल्लती यद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि मिन् शैइल्-लम्मा जा-अ अम्रु रब्बि-क, व मा ज़ादूहुम् ग़ै-र तत्बीब (101)

व कज़ालि-क अख़्ज़ु रब्बि-क इज़ा अ-ख़ज़ल्-क़ुरा व हि-य ज़ालि-मतुन्, इन्-न अख़्ज़हू अलीमुन् शदीद (102)

इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयतल् लिमन् ख़ा-फ़ अ़ज़ाबल-आख़िरति ज़ालि-क यौमुम-मज्मूअुल्-लहुन्नासु व ज़ालि-क यौमुम्-मश्हूद (103)

व मा नु-अख़्ख़िरुहू इल्ला लि-अ-जलिम् मअ़्दूद (104)

यौ-म यअ्ति ला तकल्लमु नफ़्सुन् इल्ला बि-इज़्निही फ़-मिन्हुम् शक़िय्युंव्-व सअ़ीद (105)

फ़-अम्मल्लज़ी-न शक़ू फ़फ़िन्नारि लहुन् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव्-व शहीक़ (106)

ख़ालिदी-न फ़ीहा मा दामतिस्समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा-अ रब्बु-क, इन्-न रब्ब-क फ़अ़्आलुल्लिमा युरीद (107)

व अम्मल्लज़ी-न सुअ़िदू फ़फ़िल्-जन्नति ख़ालिदी-न फ़ीहा मा दामतिस्समावातु वल्अर्ज़ु इल्ला मा शा-अ रब्बु-क, अ़ताअन् ग़ै-र मज्ज़ूज़ (108)

फ़ला तकु फ़ी मिर्यतिम् मिम्मा यअ़्बुदु हा-उला-इ मा यअ़्बुदू-न इल्ला कमा यअ़्बुदु आबाउहुम् मिन् क़ब्लु, व इन्ना लमुवफ़्फ़ूहुम् नसीबहुम् ग़ै-र मन्क़ूस (109) ●

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब फ़ख़्तुलि-फ़ फ़ीहि,

ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْقُرٰى نَقُصُّهٗ عَلَيْكَ
مِنْهَا قَآئِمٌ وَّحَصِيْدٌ ۝
وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ ظَلَمُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فَمَآ
اَغْنَتْ عَنْهُمْ اٰلِهَتُهُمُ الَّتِيْ يَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ لَّمَّا جَآءَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ
وَمَا زَادُوْهُمْ غَيْرَ تَتْبِيْبٍ ۝
وَكَذٰلِكَ اَخْذُ رَبِّكَ اِذَآ اَخَذَ الْقُرٰى
وَهِيَ ظَالِمَةٌ ؕ اِنَّ اَخْذَهٗٓ اَلِيْمٌ شَدِيْدٌ ۝
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّمَنْ خَافَ عَذَابَ
الْاٰخِرَةِ ؕ ذٰلِكَ يَوْمٌ مَّجْمُوْعٌ ۙ لَّهُ النَّاسُ
وَذٰلِكَ يَوْمٌ مَّشْهُوْدٌ ۝
وَمَا نُؤَخِّرُهٗٓ اِلَّا لِاَجَلٍ مَّعْدُوْدٍ ۝
يَوْمَ يَاْتِ لَا تَكَلَّمُ نَفْسٌ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ۚ
فَمِنْهُمْ شَقِيٌّ وَّسَعِيْدٌ ۝
فَاَمَّا الَّذِيْنَ شَقُوْا فَفِي النَّارِ لَهُمْ فِيْهَا
زَفِيْرٌ وَّشَهِيْقٌ ۝
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ
اِلَّا مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ فَعَّالٌ
لِّمَا يُرِيْدُ ۝
وَاَمَّا الَّذِيْنَ سُعِدُوْا فَفِي الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا مَا دَامَتِ السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ اِلَّا
مَا شَآءَ رَبُّكَ ؕ عَطَآءً غَيْرَ مَجْذُوْذٍ ۝
فَلَا تَكُ فِيْ مِرْيَةٍ مِّمَّا يَعْبُدُ هٰٓؤُلَآءِ ؕ
مَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا كَمَا يَعْبُدُ اٰبَآؤُهُمْ
مِّنْ قَبْلُ ؕ وَاِنَّا لَمُوَفُّوْهُمْ نَصِيْبَهُمْ
ع غَيْرَ مَنْقُوْصٍ ۝
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ فِيْهِ ؕ

एक बात पहले ही तय न कर दी गई होती तो उनके दरमियान कभी का फ़ैसला कर दिया गया होता; ये उसकी तरफ़ से खलजान में मुब्तला कर देने वाले शक में पड़े हुए हैं।

111. यक़ीनन वक़्त आने पर एक-एक को जितने भी हैं उनको तुम्हारा रब उनका किया पूरा देकर रहेगा; वो जो कुछ कर रहे हैं बेशक इसकी उसे पूरी ख़बर है।

112. पस जैसा कि तुम्हें हुक्म हुआ है जमे रहो, और तुम्हारे साथ के तौबा करनेवाले भी साबित क़दम रहें; और हद से आगे न बढ़ना; तुम जो कुछ भी करते हो, यक़ीनन वह उसपर निगाह रखता है।

113. जिन्होंने ज़ुल्म इख़्तियार किया है उनकी तरफ़ ज़रा न झुकना, वरना आग तुम्हें आ लपेटेगी — और अल्लाह से हटकर तुम्हारा कोई हिमायती नहीं — फिर तुम्हें कोई मदद भी न मिलेगी।

114. दिन के दोनों सिरों पर और रात के कुछ हिस्से में नमाज़ क़ायम करो; इसमें शक नहीं कि नेकियां बुराइयों को दूर कर देती हैं। याद रखने वालों के लिए यह एक याददिहानी है।

115. और सब्र करो इसलिए कि अल्लाह खूबकारों का अजर अकारत नहीं करता।

116. फिर तुमसे पहले जो नसलें गुज़र चुकी हैं उनमें ऐसे भले समझदार क्यों न हुए, जो ज़मीन में बिगाड़ से रोकते, सिवाय उन थोड़े लोगों के जिनको उनमें से हमने बचा लिया; ज़ुल्म इख़्तियार करनेवाले तो उसी ऐश के पीछे पड़े रहे जिसमें वो रखे गए थे। वो तो थे ही मुजरिम।

117. तुम्हारा रब तो ऐसा नहीं कि बस्तियों को नाहक़ तबाह कर दे, जबकि वहां के रहनेवाले बनाव और इसलाह में लगे हों।

118. और अगर तुम्हारा रब चाहता तो वह तमाम इंसानों को एक उम्मत बना देता; लेकिन अब तो वो मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर चलते ही रहेंगे।

119. सिवाय उनके जिनपर तुम्हारा रब रहम फ़रमाए। और इसी के लिए उसने उन्हें पैदा किया है, और तुम्हारे रब की यह बात पूरी होकर रही कि "मैं जहन्नम को जिन्नों और इंसानों सबसे भर कर रहूंगा"।

120. रसूलों के हालात में से हर वह क़िस्सा जो हम तुम्हें सुनाते हैं उसके

व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम, व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम् मिन्हु मुरीब (110)

व इन्-न कुल्लल्-लम्मा लयुवफ़्फ़ियन्नहुम् रब्बु-क अअ्मालहुम्, इन्नहू बिमा यअ्मलू-न ख़बीर (111)

फ़स्तक़िम् कमा उमिर्-त व मन् ता-ब म-अ़-क व ला तत्ग़ौ, इन्नहू बिमा तअ्मलू-न बसीर (112)

व ला तर्कनू इलल्लज़ी-न ज़-लमू फ़-तमस्सकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिन् औलिया-अ सुम्-म ला तुन्सरून (113)

व अक़िमिस्सला-त त-र-फ़यिन्नहारि व ज़ु-लफ़म् मिनल्लैलि, इन्नल्-ह-सनाति युज़्हिब्नस्-सय्यिआति, ज़ालि-क ज़िक्रा लिज़्ज़ाकिरीन (114)

वस्बिर् फ़-इन्नल्ला-ह ला युज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन (115)

फ़लौ ला का-न मिनल्क़ुरूनि मिन् क़ब्लिकुम् उलू बक़िय्यतिंय्यन्हौ-न अ़निल्फ़सादि फ़िल्अर्ज़ि इल्ला क़लीलम् मिम्-मन् अन्जैना मिन्हुम् वत्त-बअ़ल्लज़ी-न ज़-लमू मा उत्रिफ़ू फ़ीहि व कानू मुज्रिमीन (116)

व मा का-न रब्बु-क लियुह्लिकल्-क़ुरा बिज़ुल्मिंव्-व अह्लुहा मुस्लिहून (117)

व लौ शा-अ रब्बु-क ल-ज-अ़लन्ना-स उम्मतंव्-वाहि-दतंव्-व ला यज़ालू-न मुख़्तलिफ़ीन (118)

इल्ला मर्रहि-म रब्बु-क, व लिज़ालि-क ख़-ल-क़हुम्, व तम्मत् कलि-मतु रब्बि-क ल-अम्ल-अन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नाति वन्नासि अज्मअ़ीन (119)

व कुल्लन् नक़ुस्सु अ़लै-क मिन् अम्बाइर्रुसुलि

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَقُضِيَ
بَيْنَهُمْ ۚ وَإِنَّهُمْ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيْبٍ ۝١١٠
وَإِنَّ كُلًّا لَّمَّا لَيُوَفِّيَنَّهُمْ رَبُّكَ
أَعْمَالَهُمْ ۚ إِنَّهٗ بِمَا يَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١١١
فَاسْتَقِمْ كَمَآ أُمِرْتَ وَمَنْ تَابَ مَعَكَ
وَلَا تَطْغَوْا ۚ إِنَّهٗ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝١١٢
وَلَا تَرْكَنُوْٓا إِلَى الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا فَتَمَسَّكُمُ
النَّارُ ۙ وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
أَوْلِيَآءَ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝١١٣
وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ طَرَفَيِ النَّهَارِ وَزُلَفًا
مِّنَ الَّيْلِ ۚ إِنَّ الْحَسَنٰتِ يُذْهِبْنَ السَّيِّاٰتِ ۚ
ذٰلِكَ ذِكْرٰى لِلذّٰكِرِيْنَ ۝١١٤
وَاصْبِرْ فَإِنَّ اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ أَجْرَ
الْمُحْسِنِيْنَ ۝١١٥
فَلَوْلَا كَانَ مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْ قَبْلِكُمْ
أُولُوْا بَقِيَّةٍ يَّنْهَوْنَ عَنِ الْفَسَادِ فِي
الْأَرْضِ إِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّنْ أَنْجَيْنَا مِنْهُمْ ۚ
وَاتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَآ أُتْرِفُوْا فِيْهِ
وَكَانُوْا مُجْرِمِيْنَ ۝١١٦
وَمَا كَانَ رَبُّكَ لِيُهْلِكَ الْقُرٰى بِظُلْمٍ
وَّأَهْلُهَا مُصْلِحُوْنَ ۝١١٧
وَلَوْ شَآءَ رَبُّكَ لَجَعَلَ النَّاسَ أُمَّةً
وَّاحِدَةً وَّلَا يَزَالُوْنَ مُخْتَلِفِيْنَ ۝١١٨
إِلَّا مَنْ رَّحِمَ رَبُّكَ ۚ وَلِذٰلِكَ خَلَقَهُمْ ۚ
وَتَمَّتْ كَلِمَةُ رَبِّكَ لَأَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ أَجْمَعِيْنَ ۝١١٩
وَكُلًّا نَّقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ أَنْۢبَآءِ الرُّسُلِ

जरिए से हम तुम्हारे दिल को मजबूत करते हैं; और इसमें तुम्हारे पास हक़ आ गया है और मोमिनीन के लिए नसीहत और याददिहानी।

121. जो लोग ईमान नहीं ला रहे हैं उनसे कह दो: "तुम अपनी जगह काम किए जाओ; हम भी कर रहे हैं।

122. तुम भी इंतिज़ार करो; हम भी इंतिज़ार में हैं"।

123. अल्लाह ही का है आसमानों और ज़मीन का ग़ैब और मुआमला हर एक उसी की तरफ़ पलटता है; लिहाज़ा उसी की बन्दगी करो, और भरोसा भी उसी पर रखो। तुम्हारा रब तुम जो कुछ भी करते हो उससे ग़ाफ़िल नहीं है।

सूरह यूसुफ़ मक्की

(आयतें 111, रुकूआत 12)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-रा। ये रौशन किताब की आयतें हैं।

2. हमने इसे अरबी क़ुरआन की शक्ल में उतारा है ताकि तुम समझो।

3. इस क़ुरआन को तुम्हारी तरफ़ वही करके इसके ज़रिए से हम तुम्हें एक निहायत अच्छा बयान सुनाते हैं, बेशक इससे पहले तुम बेख़बर थे।

4. जब यूसुफ़ ने अपने बाप से कहा, "ऐ मेरे बाप, मैंने ख़्वाब में ग्यारह सितारे देखे, और सूरज और चांद भी साथ थे, मैंने उन (सितारों) को देखा कि वो मुझे सजदा कर रहे हैं।"

5. उसने कहा "ऐ मेरे बेटे! अपना ख़्वाब अपने भाइयों से मत बयान करना, वरना वो तेरे ख़िलाफ़ कोई चाल चलकर रहेंगे। शैतान तो इनसान का खुला दुश्मन है।

6. और ऐसा ही होगा तेरा रब तुझे मुन्तख़ब करेगा, और तुझे बातों की हक़ीक़त तक पहुंचना सिखाएगा, और अपनी नवाज़िश तुझ पर और आले याक़ूब पर उसी तरह पूरी करेगा, जिस तरह इससे पहले वह तेरे बाप इब्राहीम और इसहाक़ पर उसे पूरी कर चुका है; बेशक तेरा रब सब कुछ

मा नुसब्बितु बिही फ़ुआद-क व जाअ-क फ़ी हाज़िहिल्-हक़्क़ु व मौअ़ि-ज़तुंव्-व ज़िक्रा लिल्मुअ्मिनीन (120)

व क़ुल् लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनूनअ्मलू अ़ला मकानतिकुम्, इन्ना आमिलून (121)

वन्तज़िरू इन्ना मुन्तज़िरून (122)

व लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि व इलैहि युर्जअुल्-अम्रु कुल्लुहू फ़अ्बुद्हु व तवक्कल् अ़लैहि, व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून (123)

12 सूरतु यूसुफ़

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 7411 अक्षर, 1833 शब्द, 111 आयतें और 12 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, तिल्-क आयातुल्-किताबिल् मुबीन (1)

इन्ना अन्ज़ल्नाहु क़ुरआनन् अ़-रबिय्यल् लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून (2)

नह्नु नक़ुस्सु अ़लै-क अह्स-नल्-क़-ससि बिमा औहैना इलै-क हाज़ल्-क़ुर्आ-न व इन् कुन्-त मिन् क़ब्लिही लमिनल्-ग़ाफ़िलीन (3)

इज़् क़ा-ल यूसुफ़ु लि-अबीहि या अ-बति इन्नी रऐतु अ-ह-द अ़-श-र कौकबंव्- वश्शम्-स वल्क़-म-र रऐतुहुम् ली साजिदीन (4)

क़ा-ल या बुनय्-य ला तक़्सुस् रूअ्या-क अ़ला इख़्वति-क फ़-यकीदू ल-क कैदन्, इन्नश्शैता-न लिल्इन्सानि अ़दुव्वुम् मुबीन (5)

व कज़ालि-क यज्तबी-क रब्बु-क व युअ़ल्लिमु-क मिन् तअ्वीलिल्-अहादीसि व युतिम्मु निअ्म-तहू अ़लै-क व अ़ला आलि यअ्कू-ब कमा अ-तम्महा अ़ला अ-बवै-क मिन् क़ब्लु इब्राही-म व इस्हा-क़, इन्-न रब्ब-के

مَا نُثَبِّتُ بِهٖ فُؤَادَكَ ۚ وَجَآءَكَ فِیْ هٰذِهِ
الْحَقُّ وَمَوْعِظَةٌ وَّذِكْرٰی لِلْمُؤْمِنِیْنَ ۝۱۲۰
وَقُلْ لِّلَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ اعْمَلُوْا عَلٰی
مَكَانَتِكُمْ ؕ اِنَّا عٰمِلُوْنَ ۝۱۲۱
وَانْتَظِرُوْا ۚ اِنَّا مُنْتَظِرُوْنَ ۝۱۲۲
وَلِلّٰهِ غَیْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَاِلَیْهِ
یُرْجَعُ الْاَمْرُ كُلُّهٗ فَاعْبُدْهُ وَتَوَكَّلْ
عَلَیْهِ ؕ وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا
ع تَعْمَلُوْنَ ۝۱۲۳

سُوْرَةُ یُوْسُفَ مَكِّیَّةٌ اٰیَاتُهَا ۱۱۱ رُكُوْعَاتُهَا ۱۲

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

الٓرٰ ۫ تِلْكَ اٰیٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِیْنِ ۝۱
اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِیًّا لَّعَلَّكُمْ
تَعْقِلُوْنَ ۝۲
نَحْنُ نَقُصُّ عَلَیْكَ اَحْسَنَ الْقَصَصِ
بِمَاۤ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ هٰذَا الْقُرْاٰنَ ۖۗ
وَاِنْ كُنْتَ مِنْ قَبْلِهٖ لَمِنَ الْغٰفِلِیْنَ ۝۳
اِذْ قَالَ یُوْسُفُ لِاَبِیْهِ یٰۤاَبَتِ اِنِّیْ رَاَیْتُ
اَحَدَ عَشَرَ كَوْكَبًا وَّالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ
رَاَیْتُهُمْ لِیْ سٰجِدِیْنَ ۝۴
قَالَ یٰبُنَیَّ لَا تَقْصُصْ رُءْیَاكَ عَلٰۤی
اِخْوَتِكَ فَیَكِیْدُوْا لَكَ كَیْدًا ؕ اِنَّ
الشَّیْطٰنَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوٌّ مُّبِیْنٌ ۝۵
وَكَذٰلِكَ یَجْتَبِیْكَ رَبُّكَ وَیُعَلِّمُكَ مِنْ
تَاْوِیْلِ الْاَحَادِیْثِ وَیُتِمُّ نِعْمَتَهٗ عَلَیْكَ
وَعَلٰۤی اٰلِ یَعْقُوْبَ كَمَاۤ اَتَمَّهَا عَلٰۤی اَبَوَیْكَ
مِنْ قَبْلُ اِبْرٰهِیْمَ وَاِسْحٰقَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ

जाननेवाला, हिकमतवाला है"।

7. हक़ीक़त में यूसुफ़ और उसके भाइयों में ज़रूरतमन्दों के लिए निशानियां हैं।

8. जबकि उन्होंने कहा कि "यूसुफ़ और उसका भाई दोनों हमारे बाप को हमसे ज़्यादा महबूब हैं, हालांकि हम एक पूरा जत्था हैं। हक़ीक़त में हमारे बाप सरीहन बहक गए हैं।

9. यूसुफ़ को मार डालो, या उसे किसी सरज़मीन में फेंक आओ ताकि तुम्हारे बाप की तवज्जुह सिर्फ़ तुम्हारी तरफ़ हो जाए, इसके बाद तुम लोगों के सब काम बन जाएंगे।"

10. उनमें से एक बोलने वाला बोल पड़ा, "यूसुफ़ को क़त्ल न करो, अगर तुम्हें कुछ करना ही है तो उसे किसी कुएं की तह में डाल दो, कोई राह चलता उसे उठा लेगा।"

11. उन्होंने कहा, "ऐ हमारे बाप, आपको क्या हो गया है कि यूसुफ़ के मुआमले में आप हम पर भरोसा नहीं करते, हालांकि हम तो उसके ख़ैर ख़्वाह हैं,

12 कल हमारे साथ उसे भेज दीजिए कि वह चर-चुग और खेल ले; उसकी हिफ़ाज़त के लिए हम तो मौजूद ही हैं"।

13. उसने कहा कि "यह बात कि तुम उसे ले जाओ मुझे ग़म में डाल देती है; मुझे तो डर है कि कहीं तुम उससे ग़ाफ़िल हो जाओ और भेड़िया उसे खा जाए"।

14. वो बोले, "हमारे एक जत्थे के होते हुए भी अगर भेड़िये ने उसे खा लिया, तब तो हम लाज़िमन ज़ियांकार साबित होंगे!"

15. फिर जब वो उसे ले गए, और सबकी राए यह ठहरी कि उसे एक कुएं की गहराई में डाल दें, और हमने उसकी तरफ़ वही की कि तू उनकी यह हरकत उन्हें जताएगा जबकि उन्हें कुछ ख़याल भी न होगा"।

16. कुछ रात गए वो रोते हुए अपने बाप के पास आए।

17. कहने लगे, "ऐ हमारे बाप, हम बाहम दौड़ में मुक़ाबला करते हुए दूर चले गए, और यूसुफ़ को हमने अपने सामान के पास छोड़ दिया था कि इतने में भेड़िया उसे खा गया।

अ़लीमुन् हकीम (6) ●

ल-क़द् का-न फ़ी यूसु-फ़ व इख़्वतिही आयातुल् लिस्सा-इलीन (7)

इज़् क़ालू ल-यूसुफ़ु व अख़ूहु अहब्बु इला अबीना मिन्ना व नह्नु अुस्बतुन्, इन्-न अबाना लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन (8)

उक़्तुलू यूसु-फ़ अविऱहूहु अर्ज़ंय्यख़्लु लकुम् वज्हु अबीकुम् व तकूनू मिम्-बअ्दिही क़ौमन् सालिहीन (9)

क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् ला तक़्तुलू यूसु-फ़ व अल्क़ूहु फ़ी-ग़याबतिल्-जुब्बि यल्तक़ित्हु बअ्जुस्सय्यारति इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन (10)

क़ालू या अबाना मा ल-क ला तअ्मन्ना अ़ला यूसु-फ़ व इन्ना लहू लनासिहून (11)

अर्सिल्हु म-अ़ना ग़दंय्-यर्तअ् व यल्अ़ब् व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (12)

क़ा-ल इन्नी ल-यह्ज़ुनुनी अन् तज़्हबू बिही व अख़ाफ़ु अंय्यअ्कु-लहुज़्ज़िअ्बु व अन्तुम् अ़न्हु ग़ाफ़िलून (13)

क़ालू ल-इन् अ-क-लहुज़्ज़िअ्बु व नह्नु अुस्बतुन् इन्ना इज़ल्-लख़ासिरून (14)

फ़-लम्मा ज़-हबू बिही व अज्मअू अंय्यज्-अ़लूहु फ़ी ग़याबतिल्-जुब्बि व औहैना इलैहि लतुनब्बि-अन्नहुम् बिअम्रिहिम् हाज़ा व हुम् ला यश्अुरून (15)

व जाऊ अबाहुम् अ़िशाअंय्-यब्कून (16)

क़ालू या अबाना इन्ना ज़हब्ना नस्तबिक़ु व तरक्ना यूसु-फ़ अ़िन्-द मताअ़िना फ़-अ-क-लहुज़्-ज़िअ्बु

عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ (٦)

لَقَدْ كَانَ فِيْ يُوْسُفَ وَاِخْوَتِهٖۤ اٰيٰتٌ

لِّلسَّآئِلِيْنَ (٧)

اِذْ قَالُوْا لَيُوْسُفُ وَاَخُوْهُ اَحَبُّ اِلٰۤى

اَبِيْنَا مِنَّا وَنَحْنُ عُصْبَةٌ ؕ اِنَّ اَبَانَا

لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنِ ۚ (٨)

اِقْتُلُوْا يُوْسُفَ اَوِاطْرَحُوْهُ اَرْضًا يَّخْلُ

لَكُمْ وَجْهُ اَبِيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا مِنْ بَعْدِهٖ

قَوْمًا صٰلِحِيْنَ (٩)

قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ لَا تَقْتُلُوْا يُوْسُفَ

وَاَلْقُوْهُ فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ يَلْتَقِطْهُ بَعْضُ

السَّيَّارَةِ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ (١٠)

قَالُوْا يٰۤاَبَانَا مَا لَكَ لَا تَاْمَنَّا عَلٰى يُوْسُفَ

وَاِنَّا لَهٗ لَنٰصِحُوْنَ (١١)

اَرْسِلْهُ مَعَنَا غَدًا يَّرْتَعْ وَيَلْعَبْ وَاِنَّا

لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (١٢)

قَالَ اِنِّيْ لَيَحْزُنُنِيْۤ اَنْ تَذْهَبُوْا بِهٖ

وَاَخَافُ اَنْ يَّاْكُلَهُ الذِّئْبُ وَاَنْتُمْ

عَنْهُ غٰفِلُوْنَ (١٣)

قَالُوْا لَئِنْ اَكَلَهُ الذِّئْبُ وَنَحْنُ عُصْبَةٌ

اِنَّاۤ اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ (١٤)

فَلَمَّا ذَهَبُوْا بِهٖ وَاَجْمَعُوْۤا اَنْ يَّجْعَلُوْهُ

فِيْ غَيٰبَتِ الْجُبِّ ۚ وَاَوْحَيْنَاۤ اِلَيْهِ لَتُنَبِّئَنَّهُمْ

بِاَمْرِهِمْ هٰذَا وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (١٥)

وَجَآءُوْۤ اَبَاهُمْ عِشَآءً يَّبْكُوْنَ ؕ (١٦)

قَالُوْا يٰۤاَبَانَاۤ اِنَّا ذَهَبْنَا نَسْتَبِقُ وَتَرَكْنَا

يُوْسُفَ عِنْدَ مَتَاعِنَا فَاَكَلَهُ الذِّئْبُ ۚ

आप तो हमारा यक़ीन करेंगे नहीं, अगरचे हम सच्चे हैं।"

18. वो उसके क़मीज़ पर झूटमूट का ख़ून लगाए थे। उसने कहा, "नहीं, बल्कि तुम्हारे जी ने बहका कर तुम्हारे लिए एक बात बना दी है। अब सब्र ही ख़ूबतर है। जो बात तुम बता रहे हो उसमें अल्लाह ही मददगार हो सकता है"।

19. एक क़ाफ़िला आया, फिर उन्होंने अपने पानी लाने वाले को भेजा, उसने अपना डोल जो डाला तो पुकार उठा, "अरे ख़ुशख़बरी हो! यह तो एक लड़का है;" उन्होंने उसे माले तिजारत समझकर छुपा लिया; लेकिन जो कुछ वो कर रहे थे अल्लाह तो उसे जानता ही था।

20. उन्होंने उसे हक़ीर क़ीमत, गिनती के चन्द ही दिरहमों में बेच दिया; क्योंकि वो उसके मुआमले में बेपरवाह थे।

21. मिस्र के जिस शख़्स ने उसे ख़रीदा, उसने अपनी औरत से कहा, "इसको अच्छी तरह रखना, बहुत मुमकिन है कि यह हमारे काम आए या हम इसे बेटा बना लें;" इस तरह हमने उस सरज़मीन में यूसुफ़ के क़दम जमाने की सूरत निकाली, और ताकि वाक़िआत और बातों का नतीजा हम उसके इल्म में लाएं। अल्लाह तो अपना मक़सद हासिल करके रहता है, लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।

22. और जब वह अपनी पूरी जवानी को पहुंचा, तो हमने उसे क़ुव्वते फ़ैसला और इल्म अता किया। हम इसी तरह ख़ूबकारों को जज़ा देते हैं।

23. जिस औरत के घर में वह रहता था वह उसपर डोरे डालने लगी, उसने दरवाज़े बन्द कर दिए और कहने लगी, "लो, आ जाओ!" उसने कहा, "अल्लाह की पनाह! मेरे रब ने मेरा मक़ाम बेहतर रखा है। ज़ालिम कभी कामयाब नहीं होते"।

24. उसने उसका इरादा कर लिया था; वह भी उसका इरादा कर लेता, अगर वह अपने रब की रौशन दलील न देख लेता। ऐसा हुआ ताकि हम बुराई और बेहयाई को उससे दूर रखें; बेशक वह हमारे चुने हुए बन्दों में से था"।

25. वो दोनों दरवाज़े की तरफ़ झपटे; और उस औरत ने उसका क़मीज़

व मा अन्-त बिमुअ्मिनिल्लना व लौ कुन्ना सादिक़ीन ●(17)

व जाऊ अ़ला क़मीसिही बि-दमिन् कज़िबिन्, क़ा-ल बल् सव्व-लत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रन्, फ़-सब्रुन् जमीलुन्, वल्लाहुल्-मुस्तआनु अ़ला मा तसिफ़ून (18)

व जाअत् सय्यारतुन् फ़-अर्सलू वारि-दहुम् फ़-अद्ला दल्वहू, क़ा-ल या बुश्रा हाज़ा ग़ुलामुन्, व अ-सर्रूहु बिज़ा-अ़तन्, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिमा यअ्मलून (19)

व शरौहु बि-स-मनिम् बख़्सिन् दराहि-म मअ्दू-दतिन् व कानू फ़ीहि मिनज़्ज़ाहिदीन (20) ●

व क़ालल्लज़िश्तराहु मिम्-मिस्-र लिम्र-अतिही अक्रिमी मस्वाहु अ़सा अंय्यन्फ़-अ़ना औ नत्तख़ि-ज़हू व-लदन्, व कज़ालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ़ फ़िल्अर्ज़ि व लिनुअ़ल्लि-महू मिन् तअ्वीलिल्-अहादीसि, वल्लाहु ग़ालिबुन् अ़ला अम्रिही व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (21)

व लम्मा ब-ल-ग़ अशुद्-दहू आतैनाहु हुक्मंव्-व अ़िल्मन्, व कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (22)

व रा-वदत्हुल्लती हु-व फ़ी बैतिहा अन् नफ़्सिही व ग़ल्ल-क़तिल्-अब्वा-ब व क़ालत् है-त ल-क, क़ा-ल मआज़ल्लाहि इन्नहू रब्बी अह्स-न मस्वा-य, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (23)

व ल-क़द् हम्मत् बिही व हम्-म बिहा लौ ला अर्-रआ बुर्हा-न रब्बिही, कज़ालि-क लिनस्रि-फ़ अ़न्हुस्सू-अ वल्-फ़ह्शा-अ, इन्नहू मिन् अ़िबादिनल् मुख़्लसीन (24)

वस्त-बक़ल्बा-ब व क़द्दत् क़मी-सहू मिन्

وَمَآ اَنْتَ بِمُؤْمِنٍ لَّنَا وَلَوْ كُنَّا صٰدِقِيْنَ (١٧)

وَجَآءُوْ عَلٰى قَمِيْصِهٖ بِدَمٍ كَذِبٍ ؕ قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ وَاللّٰهُ الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ (١٨)

وَجَآءَتْ سَيَّارَةٌ فَاَرْسَلُوْا وَارِدَهُمْ فَاَدْلٰى دَلْوَهٗ ؕ قَالَ يٰبُشْرٰى هٰذَا غُلٰمٌ ؕ وَاَسَرُّوْهُ بِضَاعَةً ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَعْمَلُوْنَ (١٩)

وَشَرَوْهُ بِثَمَنٍۢ بَخْسٍ دَرَاهِمَ مَعْدُوْدَةٍ ۚ وَكَانُوْا فِيْهِ مِنَ الزّٰهِدِيْنَ (٢٠)

وَقَالَ الَّذِى اشْتَرٰىهُ مِنْ مِّصْرَ لِامْرَاَتِهٖۤ اَكْرِمِىْ مَثْوٰىهُ عَسٰۤى اَنْ يَّنْفَعَنَاۤ اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا ؕ وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ؗ وَلِنُعَلِّمَهٗ مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ؕ وَاللّٰهُ غَالِبٌ عَلٰۤى اَمْرِهٖ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ (٢١)

وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗۤ اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ (٢٢)

وَرَاوَدَتْهُ الَّتِىْ هُوَ فِىْ بَيْتِهَا عَنْ نَّفْسِهٖ وَغَلَّقَتِ الْاَبْوَابَ وَقَالَتْ هَيْتَ لَكَ ؕ قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اِنَّهٗ رَبِّىْۤ اَحْسَنَ مَثْوَاىَ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ (٢٣)

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَاۤ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ ؕ كَذٰلِكَ لِنَصْرِفَ عَنْهُ السُّوْٓءَ وَالْفَحْشَآءَ ؕ اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُخْلَصِيْنَ (٢٤)

وَاسْتَبَقَا الْبَابَ وَقَدَّتْ قَمِيْصَهٗ مِنْ

पीछे से फाड़ दिया। दरवाज़े पर दोनों ने उस औरत के ख़ाविन्द को पाया। वह बोली: "जो कोई तुम्हारी घर वाली के साथ बुरा इरादा करे उसका बदला इसके सिवा क्या होगा कि उसे क़ैद किया जाए या फिर कोई दर्दनाक अज़ाब दिया जाए?"

26. उसने कहा, "यही मुझपर डोरे डाल रही थी"। उस औरत के कुंबेवालों में से एक आनेवाला आ गया, कहा कि "अगर इसका क़मीज़ आगे से फटा है तो यह सच्ची है, और वह झूटा है;

27. और अगर उसका क़मीज़ पीछे से फटा है तो यह झूटी और वह सच्चा है"।

28. फिर जब देखा कि उसका क़मीज़ पीछे से फटा है तो उसने कहा, "यह तुम औरतों की चाल है; यक़ीनन तुम्हारी चाल बड़े ग़ज़ब की होती है।

29. यूसुफ़, इस मुआमले से दरगुज़र कर; और औरत, तू अपने गुनाह की माफ़ी मांग; बेशक ख़ता तेरी ही है"।

30. शहर में औरतें कहने लगीं कि "अज़ीज़ की बीवी अपने नौजवान गुलाम पर डोरे डालना चाहती है; वह अज़रूए मुहब्बत उसके दिल में घर कर गया है; हम तो उसे देख रही हैं कि वह सरीहन ग़लती में पड़ गई है"।

31. उसने जब उनकी मक्काराना बातें सुनीं, तो उन्हें बुला भेजा, और उनमें से हर एक को तसल्ली देते हुए उनके लिए इम्तिहान की ज़मीन तैयार की। उसने कहा कि "उनके सामने आ जाओ"। फिर जब औरतों ने उसे देखा तो वो उसकी अज़मत से दंग रह गई, वो तमाम तदबीरें करके हार गई और कहने लगीं, "अल्लाह की पनाह! यह आदमी नहीं; यह तो कोई मुकर्रम फ़रिश्ता है"।

32. वह बोली "यह वही है जिसके मुआमले में तुम मुझे मलामत कर रही थीं। हां, मैंने उसे रिझाना चाहा था, लेकिन यह बचा रहा। मैं उससे जो बात कहती हूं अगर उसने न किया,

दुबुरिंव्-व अल्फ़या सय्यि-दहा लदल्-बाबि, क़ालत् मा जज़ा-उ मन् अरा-द बि-अह्लि-क सूअन् इल्ला अंय्युस्ज-न औ अज़ाबुन् अलीम (25)

क़ा-ल हि-य रा-वदत्नी अ़न्-नफ़्सी व शहि-द शाहिदुम् मिन् अह्लिहा इन् का-न क़मीसुहू क़ुद्-द मिन् क़ुबुलिन् फ़-स-दक़त् व हु-व मिनल्-काज़िबीन (26)

व इन् का-न क़मीसुहू क़ुद्-द मिन् दुबुरिन् फ़-क-ज़बत् व हु-व मिनस्सादिक़ीन (27)

फ़-लम्मा रआ क़मी-सहू क़ुद्-द मिन् दुबुरिन् क़ा-ल इन्नहू मिन् कैदिकुन्-न, इन्-न कै-दकुन्-न अ़ज़ीम (28)

यूसुफ़ु अअ्रिज़ अ़न् हाज़ा वस्तग़्फ़िरी लिज़म्बिकि इन्नकि कुन्ति मिनल्-ख़ातिईन (29)

व क़ा-ल निस्वतुन् फ़िल्-मदीनतिम्र-अतुल्-अ़ज़ीज़ि तुराविदु फ़ताहा अ़न्-नफ़्सिही क़द् श-ग़-फ़हा हुब्बन्, इन्ना ल-नराहा फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (30)

फ़-लम्मा समिअ़त् बिमक्रिहिन्-न अर्-सलत् इलैहिन्-न व अअ्त-दत् लहुन्-न मुत्त-कअंव्-व आतत् कुल्-ल वाहि-दतिम् मिन्हुन्-न सिक्कीनंव्-व क़ालतिख़्रुज् अ़लैहिन्-न फ़-लम्मा रऐ-नहू अक्बर्-नहू व क़त्तअ्-न ऐदियहुन्-न व क़ुल्-न हा-श लिल्लाहि मा हाज़ा ब-शरन्, इन् हाज़ा इल्ला म-लकुन् करीम (31)

क़ालत् फ़ज़ालिकुन्नल्लज़ी लुम्तुन्ननी फ़ीहि, व ल-क़द् रावत्तुहू अ़न् नफ़्सिही फ़स्तअ्-स-म, व ल-इल्लम् यफ़अ़ल् मा आमुरुहू लयुस्ज-नन्-न

دُبُرٍ وَّ اَلْفَيَا سَيِّدَهَا لَدَا الْبَابِ ؕ قَالَتْ
مَا جَزَآءُ مَنْ اَرَادَ بِاَهْلِكَ سُوْٓءًا اِلَّآ
اَنْ يُّسْجَنَ اَوْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٢٥
قَالَ هِيَ رَاوَدَتْنِيْ عَنْ نَّفْسِيْ وَشَهِدَ
شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا ۚ اِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ
قُدَّ مِنْ قُبُلٍ فَصَدَقَتْ وَهُوَ مِنَ
الْكٰذِبِيْنَ ۝٢٦
وَاِنْ كَانَ قَمِيْصُهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ فَكَذَبَتْ
وَهُوَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٢٧
فَلَمَّا رَاٰ قَمِيْصَهٗ قُدَّ مِنْ دُبُرٍ قَالَ
اِنَّهٗ مِنْ كَيْدِكُنَّ ؕ اِنَّ كَيْدَكُنَّ
عَظِيْمٌ ۝٢٨
يُوْسُفُ اَعْرِضْ عَنْ هٰذَا ٚ وَاسْتَغْفِرِيْ
لِذَنْۢبِكِ ۖۚ اِنَّكِ كُنْتِ مِنَ الْخٰطِـِٕيْنَ ۝٢٩
وَقَالَ نِسْوَةٌ فِي الْمَدِيْنَةِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ
تُرَاوِدُ فَتٰىهَا عَنْ نَّفْسِهٖ ۚ قَدْ شَغَفَهَا حُبًّا ؕ
اِنَّا لَنَرٰىهَا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٣٠
فَلَمَّا سَمِعَتْ بِمَكْرِهِنَّ اَرْسَلَتْ اِلَيْهِنَّ
وَاَعْتَدَتْ لَهُنَّ مُتَّكَاً وَّاٰتَتْ كُلَّ
وَاحِدَةٍ مِّنْهُنَّ سِكِّيْنًا وَّقَالَتِ
اخْرُجْ عَلَيْهِنَّ ۚ فَلَمَّا رَاَيْنَهٗۤ اَكْبَرْنَهٗ
وَقَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ وَقُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ
مَا هٰذَا بَشَرًا ؕ اِنْ هٰذَآ اِلَّا مَلَكٌ
كَرِيْمٌ ۝٣١
قَالَتْ فَذٰلِكُنَّ الَّذِيْ لُمْتُنَّنِيْ فِيْهِ ؕ
وَلَقَدْ رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ فَاسْتَعْصَمَ ؕ
وَلَئِنْ لَّمْ يَفْعَلْ مَآ اٰمُرُهٗ لَيُسْجَنَنَّ

तो यह ज़रूर कैद होगा, और ज़िल्लत उठाएगा"।

33. उसने कहा, "मेरे रब, जिसकी तरफ़ ये सब मुझे बुला रही हैं उससे ज़्यादा तो मुझे कैद ही पसन्द है; अगर तूने उनके दांव-घात को मुझसे न फेरा, तो मैं उनके दाम-ए-शौक़ में फंसकर रहूंगा, और जज़्बात से मग़लूब हो जाऊंगा"।

34. पस उसके रब ने उसकी सुन ली, और उसकी तरफ़ से उन औरतों के दांव-घात को फेर दिया; बेशक वह सब कुछ सुनता, जानता है।

35. फिर उन्हें इसके बाद कि वो निशानियां देख चुके थे, यह सूझा कि उसे एक मुद्दत के लिए कैद कर दें।

36. कैद ख़ाने में दो नौजवान भी उसके साथ दाख़िल हुए। उनमें से एक ने कहा "मैंने ख़्वाब देखा है कि मैं शराब निचोड़ रहा हूं"। दूसरे ने कहा, "मैंने देखा कि मैं अपने सर पर रोटियां उठाए हुए हूं जिनको परिन्दे खा रहे हैं। हमें इसकी ताबीर बताइए; हमें तो आप निहायत नेकूकार नज़र आते हैं"।

37-38. उसने कहा, "जो खाना तुम्हें मिला करता है वह तुम्हारे पास नहीं आ पाएगा उससे पहले ही मैं तुम्हें उसकी ताबीर बता दूंगा। यह उन बातों में से है, जो मेरे रब ने मुझे सिखाई हैं। मैंने तो उन लोगों का तरीक़ा छोड़कर जो अल्लाह को नहीं मानते और जिन्हें आख़िरत का इनकार है अपने बाप-दादा इब्राहीम और याक़ूब का तरीक़ा इख़्तियार किया है। हमारे लिए यह हरगिज़ मुनासिब नहीं कि हम अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक ठहराएं। यह हमपर और लोगों पर अल्लाह का एक फ़ज़्ल है, मगर अक्सर लोग शुक्र नहीं करते।

39. ऐ ज़िन्दां के मेरे साथियों, क्या अलग-अलग बहुत से रब अच्छे हैं, या अकेला अल्लाह जो सब पर ग़ालिब है?

40. तुम उसके सिवा जिनकी भी बन्दगी करते हो वो तो बस महज़ नाम हैं, जो तुमने अपने तौरपर रख छोड़े हैं, तुमने भी और तुम्हारे बाप-दादा

व ल-यकूनम् मिनस्साग़िरीन (32)

क़ा-ल रब्बिस्सिजनु अहब्बु इलय्-य मिम्मा यद्अू-ननी इलैहि व इल्ला तस्रिफ् अ़न्नी कैदहुन्-न अस्बु इलैहिन्-न व अकुम् मिनल्-जाहिलीन (33)

फ़स्तजा-ब लहू रब्बुहू फ़-स-र-फ़ अ़न्हु कैदहुन्-न, इन्नहू हुवस्-समीअुल्-अ़लीम (34)

सुम्-म बदा लहुम् मिम्-बअ़्दि मा र-अवुल्-आयाति ल-यस्जुनुन्नहु हत्ता हीन (35) ●

व द-ख़-ल म-अ़हुस्सिज्-न फ़-तयानि, क़ा-ल अ-हदुहुमा इन्नी अरानी अअ़्सिरू ख़म्रन व क़ालल्-आख़रु इन्नी अरानी अह्मिलु फ़ौ-क़ रअ्सी ख़ुब्ज़न् तअ्कुलुत्तैरु मिन्हु, नब्बिअ्ना बितअ्वीलिही इन्ना नरा-क मिनल्मुह्सिनीन (36)

क़ा-ल ला यअ्तीकुमा तआ़मुन् तुर्ज़क़ानिही इल्ला नब्बअ्तुकुमा बितअ्वीलिही क़ब्-ल अंय्यअ्ति-यकुमा, ज़ालिकुमा मिम्मा अ़ल्ल-मनी रब्बी, इन्नी तरक्तु मिल्ल-त क़ौमिल् ला युअ्मिनू-न बिल्लाहि व हुम् बिल्आख़िरति हुम् काफ़िरून (37)

वत्तबअ्तु मिल्ल-त आबाई इब्राही-म व इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब, मा का-न लना अन् नुश्रि-क बिल्लाहि मिन् शैइन्, ज़ालि-क मिन् फ़ज़्लिल्लाहि अ़लैना व अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (38)

या साहि-बयिस्सिज्नि अ-अर्बाबुम् मु-तफ़र्रिक़ू-न ख़ैरुन् अमिल्लाहुल् वाहिदुल्-क़ह्हार (39)

मा तअ्बुदू-न मिन् दूनिही इल्ला अस्मा-अन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़ल-

وَلَيَكُونًا مِّنَ الصّٰغِرِيْنَ ۝٣٢
قَالَ رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ
اِلَيْهِ ۚ وَاِلَّا تَصْرِفْ عَنِّيْ كَيْدَهُنَّ
اَصْبُ اِلَيْهِنَّ وَاَكُنْ مِّنَ الْجٰهِلِيْنَ ۝٣٣
فَاسْتَجَابَ لَهٗ رَبُّهٗ فَصَرَفَ عَنْهُ
كَيْدَهُنَّ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٣٤
ثُمَّ بَدَا لَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ مَا رَاَوُا الْاٰيٰتِ
ع لَيَسْجُنُنَّهٗ حَتّٰى حِيْنٍ ۝٣٥
وَدَخَلَ مَعَهُ السِّجْنَ فَتَيٰنِ ۭ قَالَ
اَحَدُهُمَآ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَعْصِرُ خَمْرًا ۚ وَقَالَ
الْاٰخَرُ اِنِّيْٓ اَرٰىنِيْٓ اَحْمِلُ فَوْقَ رَاْسِيْ
خُبْزًا تَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْهُ ۭ نَبِّئْنَا بِتَاْوِيْلِهٖ ۚ
اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٣٦
قَالَ لَا يَاْتِيْكُمَا طَعَامٌ تُرْزَقٰنِهٖٓ اِلَّا
نَبَّاْتُكُمَا بِتَاْوِيْلِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّاْتِيَكُمَا ۭ
ذٰلِكُمَا مِمَّا عَلَّمَنِيْ رَبِّيْ ۭ اِنِّيْ
تَرَكْتُ مِلَّةَ قَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۝٣٧
وَاتَّبَعْتُ مِلَّةَ اٰبَاۗءِيْٓ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ
وَيَعْقُوْبَ ۭ مَا كَانَ لَنَآ اَنْ نُّشْرِكَ بِاللّٰهِ
مِنْ شَيْءٍ ۭ ذٰلِكَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ عَلَيْنَا
وَعَلَى النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا
يَشْكُرُوْنَ ۝٣٨
يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ ءَاَرْبَابٌ مُّتَفَرِّقُوْنَ
خَيْرٌ اَمِ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٣٩
مَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلَّآ اَسْمَاۗءً
سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ وَاٰبَاۗؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ

जे भी; अल्लाह ने उनके लिए कोई दलील नहीं उतारी। इख़्तियार व इक़्तिदार तो बस अल्लाह का है; उसने हुक्म दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो। यही सीधा सही दीन है; लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।

41. ऐ ज़िन्दां के मेरे दोनों साथियों, तुम में एक तो अपने आक़ा को शराब पिलाएगा; रहा दूसरा तो वह सूली पर चढ़ेगा, और परिन्दे उसका सर खाएंगे। फ़ैसला हो चुका उस बात का जिसके बारे में तुम मुझसे पूछ रहे हो"।

42. उन दोनों में से जिसके बारे में उसने समझा था कि वह रिहा हो जाएगा, उससे कहा कि "अपने आक़ा से मेरा ज़िक्र करना", मगर शैतान ने उसे अपने आक़ा से ज़िक्र करना फ़रामोश करा दिया, पस वह कई साल तक क़ैद ख़ाने ही में रहा।

43. फिर ऐसा हुआ कि बादशाह ने कहा कि "मैंने ख़्वाब देखा है कि सात मोटी गायों को सात दुबली गायें खा रही हैं, और सात हरी बालें हैं, और दूसरी सात सूखी, ऐ सरदारों, अगर तुम ख़्वाब की ताबीर बताते हो तो मुझे मेरे इस ख़्वाब के बारे में बताओ"।

44. उन्होंने कहा, "यह तो परागन्दा परेशान ख़्वाब हैं! हम ऐसे ख़्वाबों की ताबीर नहीं जानते"।

45. इतने में उन दोनों में से जो रिहा हो गया था और एक मुद्दत के बाद उसे याद आया, बोला, "मैं इसकी ताबीर तुम्हें बताता हूं; ज़रा मुझे भेज दो"।

46. "यूसुफ़! ऐ सिद्दीक़, हमें इसका मतलब बताइए कि सात मोटी गायें हैं, जिन्हें सात दुबली गायें खा रही हैं, और सात हरी बालें हैं, और दूसरी सात सूखी, ताकि मैं लोगों के पास लौटकर जाऊं ताकि वो जान लें"।

47. उसने कहा, "सात साल तक तुम मामूल के मुताबिक़ खेती करते रहोगे; फिर जो फ़सल तुम काटो तो थोड़े हिस्से के सिवा जो तुम्हारे खाने

ल्लाहु बिहा मिन् सुल्तानिन्, इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि, अ-म-र अल्ला तअ्बुदू इल्ला इय्याहु, ज़ालिकद्-दीनुल्-क़य्यिमु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (40)

या साहि-बयिस्सिज्नि अम्मा अ-हदुकुमा फ़-यस्क़ी रब्बहू ख़म्रन् व अम्मल्-आख़रू फ़युस्-लबु फ़-तअ्कुलुत्-तैरू मिर्रअ्सिही, क़ुज़ियल्-अम्रूल्लज़ी फ़ीहि तस्तफ़्तियान (41)

व क़ा-ल लिल्लज़ी ज़न्-न अन्नहू नाजिम् मिन्हुमज़्कुर्नी अिन्-द रब्बि-क, फ़अन्साहुश्शैतानु ज़िक्-र रब्बिही फ़-लबि-स फ़िस्सिज्नि बिज़्-अ सिनीन (42)

व क़ालल्-मलिकु इन्नी अरा सब्-अ ब-क़रातिन् सिमानिंय्यअ्कुलुहुन्-न सब्अुन् अिजाफुंव्-व सब्-अ सुम्बुलातिन् ख़ुज़्रिंव्-व उ-ख़-र याबिसातिन्, या अय्युहल् म-लउ अफ़्तूनी फ़ी रूअ्या-य इन् कुन्तुम् लिर्रूअ्या तअ्बुरून (43)

क़ालू अज़्ग़ासु अह्लामिन् व मा नह्नु बितअ्वीलिल्- अह्लामि बिआ़लिमीन (44)

व क़ालल्लज़ी नजा मिन्हुमा वद्द-क-र बअ्-द उम्मतिन् अ-न उनब्बिउकुम् बितअ्वीलिही फ़-अरसिलून (45)

यूसुफ़ु अय्युहस्-सिद्दीक़ु अफ़्तिना फ़ी सब्अि ब-क़रातिन् सिमानिंय्यअ्कुलुहुन्-न सब्अुन् अिजाफुंव्-व सब्अि सुम्बुलातिन् ख़ुज़्रिंव्-व उ-ख़-र याबिसातिल्-लअल्ली अर्जिअु इलन्नासि लअल्लहुम् यअ्लमून (46)

क़ा-ल तज़्-रअू-न सब्-अ सिनी-न द-अबन् फ़मा हसत्तुम् फ़-ज़रूहु फ़ी सुम्बुलिही

اللّٰهُ بِهَا مِنْ سُلْطٰنٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا
لِلّٰهِ ؕ اَمَرَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ ؕ ذٰلِكَ
الدِّيْنُ الْقَيِّمُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤٠

يٰصَاحِبَيِ السِّجْنِ اَمَّآ اَحَدُكُمَا
فَيَسْقِيْ رَبَّهٗ خَمْرًا ۚ وَاَمَّا الْاٰخَرُ فَيُصْلَبُ
فَتَاْكُلُ الطَّيْرُ مِنْ رَّاْسِهٖ ؕ قُضِيَ الْاَمْرُ
الَّذِيْ فِيْهِ تَسْتَفْتِيٰنِ ۝٤١

وَقَالَ لِلَّذِيْ ظَنَّ اَنَّهٗ نَاجٍ مِّنْهُمَا
اذْكُرْنِيْ عِنْدَ رَبِّكَ ۫ فَاَنْسٰىهُ
الشَّيْطٰنُ ذِكْرَ رَبِّهٖ فَلَبِثَ فِي السِّجْنِ
ع بِضْعَ سِنِيْنَ ۝٤٢

وَقَالَ الْمَلِكُ اِنِّيْٓ اَرٰى سَبْعَ بَقَرٰتٍ
سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ وَّسَبْعَ
سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ؕ يٰٓاَيُّهَا
الْمَلَاُ اَفْتُوْنِيْ فِيْ رُءْيَايَ اِنْ كُنْتُمْ
لِلرُّءْيَا تَعْبُرُوْنَ ۝٤٣

قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍ ۚ وَمَا نَحْنُ
بِتَاْوِيْلِ الْاَحْلَامِ بِعٰلِمِيْنَ ۝٤٤

وَقَالَ الَّذِيْ نَجَا مِنْهُمَا وَادَّكَرَ بَعْدَ
اُمَّةٍ اَنَا اُنَبِّئُكُمْ بِتَاْوِيْلِهٖ فَاَرْسِلُوْنِ ۝٤٥

يُوْسُفُ اَيُّهَا الصِّدِّيْقُ اَفْتِنَا فِيْ سَبْعِ
بَقَرٰتٍ سِمَانٍ يَّاْكُلُهُنَّ سَبْعٌ عِجَافٌ
وَّسَبْعِ سُنْۢبُلٰتٍ خُضْرٍ وَّاُخَرَ يٰبِسٰتٍ ۙ
لَّعَلِّيْٓ اَرْجِعُ اِلَى النَّاسِ لَعَلَّهُمْ يَعْلَمُوْنَ ۝٤٦

قَالَ تَزْرَعُوْنَ سَبْعَ سِنِيْنَ دَاَبًا ۚ
فَمَا حَصَدْتُّمْ فَذَرُوْهُ فِيْ سُنْۢبُلِهٖٓ

के काम आए बाक़ी को उसकी बाली ही में रहने देना।

48. फिर उसके बाद सात साल सख़्त आएंगे जो वो सब खा जाएंगे, जो उनके लिए तुमने पहले से इकट्ठा कर रखा होगा सिवाय उस थोड़े हिस्से के जो तुम महफ़ूज़ कर लोगे।

49. फिर उसके बाद एक साल ऐसा आएगा जिसमें बारिश से लोगों की फ़रियाद रसी की जाएगी और उसमें वो रस निचोड़ेंगे"।

50. बादशाह ने कहा, "उसे मेरे पास ले आओ!" मगर जब क़ासिद उसके पास पहुंचा तो उसने कहा कि "अपने आक़ा के पास वापस जाओ, और उससे पूछो कि उन औरतों का क्या हाल है जो अपनी सी तदबीरें करके हार गईं? बेशक मेरा रब उनकी मक्कारी से ख़ूब वाक़िफ़ है"।

51. उसने कहा, "तुम औरतों का क्या हाल था जब तुमने यूसुफ़ को रिझाने की कोशिश की थी? उन्होंने कहा, "माशाअल्लाह! हम उसमें कोई बुराई नहीं जानती हैं"। अज़ीज़ की औरत बोल उठी, "अब तो हक़ बात खुल गई; मैंने ही उसे रिझाना चाहा था; वह तो बिल्कुल सच्चा है!"

52. "यह इसलिए कि वह जान ले कि मैंने दरपरदा उसकी ख़ियानत नहीं की है, और यह कि अल्लाह ख़ियानत करनेवालों की चाल को चलने नहीं देता।

53. मेरा कहना यह नहीं है कि मैं बरी हूं — बेशक नफ़्स तो बुराई पर उभारता ही है — मगर यह कि मेरा रब किसी पर रहम फ़रमाए तो बात और है, यक़ीनन मेरा रब बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम फ़रमाने वाला है"।

54. बादशाह ने कहा, "उसे मेरे पास ले आओ! मैं उसको अपना ख़ास आदमी बनाऊंगा", जब उसने उससे बातचीत की, कहा, "बेशक आज तुम हमारे यहां बा इक़्तिदार मुअतबर हो"।

55. उसने कहा, "इस सरज़मीन के आमदनी के ज़रियों पर मुझे मामूर कर दीजिए; बेशक मैं मुहाफ़िज़, वाक़िफ़कार हूं"।

इल्ला क़लीलम्-मिम्मा तअ्कुलून (47)

सुम्-म यअ्ती मिम्-बअ्दि ज़ालि-क सब्अुन् शिदादुंय्यअ्कुल्-न मा क़द्दम्तुम् लहुन्-न इल्ला क़लीलम् मिम्मा तुह्सिनून (48)

सुम्-म यअ्ती मिम्-बअ्दि ज़ालि-क आमुन् फ़ीहि युग़ासुन्नासु व फ़ीहि यअ्सिरून (49) ●

व क़ालल् मलिकुअ्तूनी बिही फ़-लम्मा जा-अहुर्रसूलु क़ालर्जिअ् इला रब्बि-क फ़स्अल्हु मा बालुन-निस्वतिल्लाती क़त्तअ्-न ऐदि-यहुन्-न, इन्-न रब्बी बिकैदिहिन्-न अ़लीम (50)

क़ा-ल मा ख़त्बुकुन्-न इज़् रावत्तुन्-न यूसु-फ अ़न् नफ़्सिही, क़ुल्-न हा-श लिल्लाहि मा अ़लिम्ना अ़लैहि मिन् सूइन्, क़ालतिम्र-अतुल्-अ़ज़ीज़िल्-आ-न हस्ह-सल्हक़्क़ु, अ-न रावत्तुहू अ़न् नफ़्सिही व इन्नहू लमिनस्सादिक़ीन (51)

ज़ालि-क लि-यअ्ल-म अन्नी लम् अख़ुन्हु बिल्ग़ैबि व अन्नल्ला-ह ला यह्दी कैदल्-ख़ाइनीन (52)

व मा उबर्रिउ नफ़्सी इन्नन्नफ़्-स ल-अम्मा-रतुम्-बिस्सू-इ इल्ला मा रहि-म रब्बी, इन्-न रब्बी ग़फ़ूरुर्रहीम (53)

व क़ालल्-मलिकुअ्तूनी बिही अस्तख़्लिस्हु लिनफ़्सी फ़-लम्मा कल्ल-महू क़ा-ल इन्नकल्-यौ-म लदैना मकीनुन् अमीन (54)

क़ालज्अ़ल्नी अ़ला ख़ज़ाइनिल्-अर्ज़ि इन्नी हफ़ीज़ुन् अ़लीम (55)

اِلَّا قَلِيْلًا مِّمَّا تَاْكُلُوْنَ (٤٧)
ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ سَبْعٌ شِدَادٌ
يَّاْكُلْنَ مَا قَدَّمْتُمْ لَهُنَّ اِلَّا قَلِيْلًا
مِّمَّا تُحْصِنُوْنَ (٤٨)
ثُمَّ يَاْتِيْ مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ عَامٌ فِيْهِ
ع يُغَاثُ النَّاسُ وَفِيْهِ يَعْصِرُوْنَ (٤٩)
وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖ ۚ فَلَمَّا
جَآءَهُ الرَّسُوْلُ قَالَ ارْجِعْ اِلٰى
رَبِّكَ فَسْـَٔلْهُ مَا بَالُ النِّسْوَةِ الّٰتِيْ
قَطَّعْنَ اَيْدِيَهُنَّ ۭ اِنَّ رَبِّيْ بِكَيْدِهِنَّ
عَلِيْمٌ (٥٠)
قَالَ مَا خَطْبُكُنَّ اِذْ رَاوَدْتُّنَّ يُوْسُفَ
عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ قُلْنَ حَاشَ لِلّٰهِ مَا عَلِمْنَا عَلَيْهِ
مِنْ سُوْۗءٍ ۭ قَالَتِ امْرَاَتُ الْعَزِيْزِ الْـٰٔنَ
حَصْحَصَ الْحَقُّ ۡ اَنَا رَاوَدْتُّهٗ عَنْ نَّفْسِهٖ
وَاِنَّهٗ لَمِنَ الصّٰدِقِيْنَ (٥١)
ذٰلِكَ لِيَعْلَمَ اَنِّيْ لَمْ اَخُنْهُ بِالْغَيْبِ
وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ كَيْدَ الْخَاۗىِٕنِيْنَ (٥٢)
وَمَآ اُبَرِّئُ نَفْسِيْ ۚ اِنَّ النَّفْسَ
لَاَمَّارَةٌۢ بِالسُّوْۗءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّيْ ۭ
اِنَّ رَبِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (٥٣)
وَقَالَ الْمَلِكُ ائْتُوْنِيْ بِهٖٓ اَسْتَخْلِصْهُ
لِنَفْسِيْ ۚ فَلَمَّا كَلَّمَهٗ قَالَ اِنَّكَ الْيَوْمَ
لَدَيْنَا مَكِيْنٌ اَمِيْنٌ (٥٤)
قَالَ اجْعَلْنِيْ عَلٰي خَزَاۗىِٕنِ الْاَرْضِ ۚ
اِنِّيْ حَفِيْظٌ عَلِيْمٌ (٥٥)

الجزء الثالث عشر ١٣

56. इस तरह हमने यूसुफ़ को उस सरज़मीन में इक्तिदार व इख़्तियार अता किया कि वह उसमें जहां चाहे मुतमक्किन हो। हम जिसे चाहते हैं अपनी रहमत से नवाज़ते हैं, ख़ूबकारों का अजर तो हमारे यहां मारा नहीं जाता।

57. और ईमान लानेवालों, और डर रखनेवालों के लिए आख़िरत का अजर इससे कहीं बेहतर है।

58. फिर ऐसा हुआ कि यूसुफ़ के भाई आए और उसके पास हाज़िर हुए, उसने उन्हें पहचान लिया, मगर वो उससे ना आशना रहे।

59. जब उसने उनके लिए उनका सामान तैयार करा दिया तो कहा "बाप की तरफ़ से जो तुम्हारा एक भाई है उसे मेरे पास लाना। क्या देखते नहीं कि मैं पूरे पैमाना से देता हूं, और मैं बेहतर मेहमान नवाज़ हूं?

60. लेकिन अगर तुम उसे मेरे पास न लाए, तो फिर तुम्हारे लिए मेरे यहां कोई पैमाना न होगा, और तुम मेरे पास मत आना"।

61. वो बोले, "हम उसके लिए इसके बाप को राज़ी करने की कोशिश करेंगे; और हम यह काम ज़रूर करेंगे"।

62. उसने अपने ख़ादिमों से कहा कि "उनका दिया हुआ माल उनके सामान में रख दो कि जब ये अपने घर वालों की तरफ़ लौटें तो इसे पहचान लें; ताकि ये फिर लौटकर आएं"।

63. फिर जब वो अपने बाप के पास लौटकर गए, तो कहा, "ऐ हमारे बाप, पैमाना हम से रोक दिया गया है; लिहाज़ा हमारे साथ हमारे भाई को भेज दीजिए ताकि हम पैमाना भर लाएं; हम उसकी हिफ़ाज़त के लिए मौजूद ही हैं!"

64. उसने कहा, "क्या मैं उसके मुआमले में तुम पर वैसा ही एतिमाद करूं जैसे इससे पहले मैं उसके भाई के सिलसिले में तुमपर एतिमाद कर चुका हूं? हां अल्लाह बेहतरीन मुहाफ़िज़ है, और वह सबसे बढ़कर रहम फ़रमाने वाला है"।

65. जब उन्होंने अपना सामान खोला, तो उन्होंने अपना माल अपनी तरफ़ वापस किया हुआ पाया। वो बोले, "ऐ अब्बाजान, हमें और क्या चाहिए, यह हमारा माल भी तो हमें लौटा दिया गया है। अब हम अपने

व कज़ालि-क मक्कन्ना लियूसु-फ़ फ़िलअर्ज़ि य-तबव्वउ मिन्हा हैसु यशा-उ, नुसीबु बिरहमतिना मन्-नशा-उ व ला नुज़ीअु अज्रल्-मुह्सिनीन (56)

व ल-अज्रुल्-आख़िरति ख़ैरुल्-लिल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तकून (57) ●

व जा-अ इख़्वतु यूसु-फ़ फ़-द-ख़लू अ़लैहि फ़-अ़-र-फ़हुम् व हुम् लहू मुन्किरून (58)

व लम्मा जह्ह-ज़हुम् बि-जहाज़िहिम् क़ालअ्तूनी बि-अख़िल-लकुम् मिन अबीकुम् अला तरौ-न अन्नी ऊफ़िल्-कै-ल व अ-न ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन (59)

फ़-इल्लम् तअ्तूनी बिही फ़ला कै-ल लकुम् अ़िन्दी व ला तक़्रबून (60)

क़ालू सनुराविदु अ़न्हु अबाहु व इन्ना लफ़ाअ़िलून (61)

व क़ा-ल लिफ़ित्यानिहिज्-अ़लू बिज़ा-अ़-तहुम् फ़ी रिहालिहिम् लअ़ल्लहुम् यअ्रिफ़ूनहा इज़न्क़-लबू इला अह्लिहिम् लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (62)

फ़-लम्मा र-जअू इला अबीहिम् क़ालू या अबाना मुनि-अ़ मिन्नल्कैलु फ़-अर्सिल् म-अ़ना अख़ाना नक्तल् व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (63)

क़ा-ल हल् आमनुकुम् अ़लैहि इल्ला कमा अमिन्तुकुम् अ़ला अख़ीहि मिन् क़ब्लु, फ़ल्लाहु ख़ैरुन् हाफ़िज़ंव्-व हु-व अर्हमुर्-राहिमीन (64)

व लम्मा फ़-तहू मता-अ़हुम् व-जदू बिज़ाअ़-तहुम् रुद्दत् इलैहिम्, क़ालू या अबाना मा नब्ग़ी, हाज़िही बिज़ा-अ़तुना रुद्दत् इलैना व नमीरु अह्लना व

وَكَذٰلِكَ مَكَّنَّا لِيُوْسُفَ فِى الْاَرْضِ ۚ
يَتَبَوَّاُ مِنْهَا حَيْثُ يَشَآءُ ؕ نُصِيْبُ بِرَحْمَتِنَا
مَنْ نَّشَآءُ وَلَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (56)
وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
ع ٨ وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ (57)
وَجَآءَ اِخْوَةُ يُوْسُفَ فَدَخَلُوْا عَلَيْهِ
فَعَرَفَهُمْ وَهُمْ لَهٗ مُنْكِرُوْنَ (58)
وَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ قَالَ ائْتُوْنِىْ
بِاَخٍ لَّكُمْ مِّنْ اَبِيْكُمْ ۚ اَلَا تَرَوْنَ اَنِّىْٓ
اُوْفِى الْكَيْلَ وَاَنَا خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ (59)
فَاِنْ لَّمْ تَاْتُوْنِىْ بِهٖ فَلَا كَيْلَ لَكُمْ
عِنْدِىْ وَلَا تَقْرَبُوْنِ (60)
قَالُوْا سَنُرَاوِدُ عَنْهُ اَبَاهُ وَاِنَّا
لَفٰعِلُوْنَ (61)
وَقَالَ لِفِتْيٰنِهِ اجْعَلُوْا بِضَاعَتَهُمْ
فِىْ رِحَالِهِمْ لَعَلَّهُمْ يَعْرِفُوْنَهَآ
اِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمْ لَعَلَّهُمْ
يَرْجِعُوْنَ (62)
فَلَمَّا رَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْهِمْ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مُنِعَ
مِنَّا الْكَيْلُ فَاَرْسِلْ مَعَنَآ اَخَانَا نَكْتَلْ
وَاِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوْنَ (63)
قَالَ هَلْ اٰمَنُكُمْ عَلَيْهِ اِلَّا كَمَآ
اَمِنْتُكُمْ عَلٰٓى اَخِيْهِ مِنْ قَبْلُ ؕ فَاللّٰهُ
خَيْرٌ حٰفِظًا ۪ وَّهُوَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ (64)
وَلَمَّا فَتَحُوْا مَتَاعَهُمْ وَجَدُوْا بِضَاعَتَهُمْ
رُدَّتْ اِلَيْهِمْ ؕ قَالُوْا يٰٓاَبَانَا مَا نَبْغِىْ ؕ هٰذِهٖ
بِضَاعَتُنَا رُدَّتْ اِلَيْنَا ۚ وَنَمِيْرُ اَهْلَنَا وَ

घरवालों के लिए रसद लाएंगे, और अपने भाई की भी हिफ़ाज़त करेंगे; और एक ऊंट के बोझभर और ज़्यादा हासिल करेंगे। यह भरत आसानी से मिल सकती है।

66. उसने कहा, "मैं हरगिज़ उसे तुम्हारे साथ भेजने का नहीं जब तक कि तुम अल्लाह को गवाह बनाकर मुझ को अहद व पैमान न दो कि तुम उसे मेरे पास लाज़िमन लाओगे, अगर तुम घिर जाओ तो बात दूसरी है"। फिर जब उन्होंने उसे अपना अहद व पैमान दिया तो उसने कहा, "हम जो कह रहे हैं अल्लाह उसपर निगहबान है"।

67. उसने कहा कि "ऐ मेरे बेटो, एक दरवाज़े से दाख़िल न होना, बल्कि मुख़्तलिफ़ दरवाज़ों से दाख़िल होना। अगरचे मैं अल्लाह के मुक़ाबले में तुम्हारे कुछ काम नहीं आ सकता; हुक्म तो बस अल्लाह ही का चलता है। उसी पर मैंने भरोसा किया, और भरोसा करने वालों को उसी पर भरोसा करना चाहिए!"

68. और जब वो दाख़िल हुए जिस तरह से कि उनके बाप ने उन्हें हुक्म दिया था — अल्लाह की तरफ़ से होने वाली किसी चीज़ को वह उनसे हटा नहीं सकता था बस याक़ूब के जी की एक तदबीर व ख़्वाहिश थी जो उसने पूरी कर ली और बेशक वह इल्म वाला था इसलिए कि हमने उसे इल्म अता किया था; मगर अक्सर लोग जानते नहीं।

69. — और जब वो यूसुफ़ के पास हाज़िर हुए, तो उसने अपने भाई को अपने पास जगह दी, कहा, "मैं तेरा भाई हूं; जो कुछ ये करते रहे हैं अब तू उसका ग़म न कर"।

70. फिर जब उनका सामान तैयार कर दिया, तो अपने भाई के सामान में पानी पीने का प्याला रख दिया। फिर एक पुकारने वाले ने आवाज़ दी, "ऐ क़ाफ़िले वालो, यक़ीनन तुम चोर हो!"

71. वो उनकी तरफ़ मुतवज्जेह होते हुए बोले, "तुम्हारी क्या चीज़ गुम हो गई?"

72. उन्होंने कहा, "बादशाह का पैमाना हमें नहीं मिल रहा है। जो उसे लाए उसको लिए एक ऊंट का बोझभर इनाम मिलेगा। और मैं इसका ज़िम्मेदार हूं"।

73. वो कहने लगे, "अल्लाह की क़सम, तुम तो जानते हो कि हम ज़मीन में फ़साद करने नहीं आए हैं। और न हम चोर हैं"।

74. उन्होंने कहा, "अगर तुम झूटे साबित हुए तो फिर उसकी क्या सज़ा होगी?"

नह्फ़ज़ु अख़ाना व नज़्दादु कै-ल बअ़ीरिन्, ज़ालि-क कैलुंय्यसीर (65)

क़ा-ल लन् उर्सि-लहू म-अ़कुम् हत्ता तुअ्तूनि मौसिक़म्-मिनल्लाहि ल-तअ्तुन्ननी बिही इल्ला अंय्युहा-त बिकुम् फ़-लम्मा आतौहु मौसि-क़हुम् क़ालल्लाहु अ़ला मा नक़ूलु वकील (66)

व क़ा-ल या बनिय्-य ला तद्ख़ुलू मिम्-बाबिंव्-वाहिदिंव्-वद्ख़ुलू मिन् अब्वाबिम् मु-तफ़र्रि-क़तिन्, व मा उग़्नी अ़न्कुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन्, इनिल्हुक्मु इल्ला लिल्लाहि, अ़लैहि तवक्कल्तु व अ़लैहि फ़ल्य-तवक्कलिल्-मु-तवक्किलून (67)

व लम्मा द-ख़लू मिन् हैसु अ-म-रहुम् अबूहुम्, मा का-न युग़्नी अ़न्हुम् मिनल्लाहि मिन् शैइन् इल्ला हा-जतन् फ़ी नफ़्सि यअ्क़ू-ब क़ज़ाहा, व इन्नहू लज़ू अ़िल्मिल्-लिमा अ़ल्लम्नाहु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (68)●

व लम्मा द-ख़लू अ़ला यूसु-फ़ आवा इलैहि अख़ाहु क़ा-ल इन्नी अ-न अख़ू-क फ़ला तब्तइस् बिमा कानू यअ्मलून (69)

फ़-लम्मा जह्ह-ज़हुम् बि-जहाज़िहिम् ज-अ़लस्सिक़ा-य-त फ़ी रह्लि अख़ीहि सुम्-म अज़्ज़-न मुअज़्ज़िनुन् अय्यतुहल्-ओ़रू इन्नकुम् लसारिक़ून (70)

क़ालू व अक़्बलू अ़लैहिम् माज़ा तफ़्क़िदून (71)

क़ालू नफ़्क़िदु सुवाअ़ल्-मलिकि व लिमन् जा-अ बिही हिम्लु बअ़ीरिंव्-व अ-न बिही ज़अ़ीम (72)

क़ालू तल्लाहि ल-क़द् अ़लिम्तुम् मा जिअ्ना लिनुफ़्सि-द फ़िल्अर्ज़ि व मा कुन्ना सारिक़ीन (73)

क़ालू फ़मा जज़ाउहू इन् कुन्तुम् काज़िबीन (74)

نَحْفَظُ اَخَانَا وَنَزْدَادُ كَيْلَ بَعِيْرٍ ؕ ذٰلِكَ
كَيْلٌ يَّسِيْرٌ ۝٦٥
قَالَ لَنْ اُرْسِلَهٗ مَعَكُمْ حَتّٰى تُؤْتُوْنِ
مَوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ لَتَاْتُنَّنِيْ بِهٖۤ اِلَّاۤ اَنْ
يُّحَاطَ بِكُمْ ۚ فَلَمَّاۤ اٰتَوْهُ مَوْثِقَهُمْ قَالَ
اللّٰهُ عَلٰى مَا نَقُوْلُ وَكِيْلٌ ۝٦٦
وَقَالَ يٰبَنِيَّ لَا تَدْخُلُوْا مِنْۢ بَابٍ وَّاحِدٍ
وَّادْخُلُوْا مِنْ اَبْوَابٍ مُّتَفَرِّقَةٍ ؕ وَمَاۤ اُغْنِيْ
عَنْكُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ اِنِ الْحُكْمُ اِلَّا لِلّٰهِ ؕ
عَلَيْهِ تَوَكَّلْتُ ۚ وَعَلَيْهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝٦٧
وَلَمَّا دَخَلُوْا مِنْ حَيْثُ اَمَرَهُمْ اَبُوْهُمْ ؕ
مَا كَانَ يُغْنِيْ عَنْهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ
اِلَّا حَاجَةً فِيْ نَفْسِ يَعْقُوْبَ قَضٰىهَا ؕ
وَاِنَّهٗ لَذُوْ عِلْمٍ لِّمَا عَلَّمْنٰهُ وَلٰكِنَّ
ع اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٦٨
وَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰۤى اِلَيْهِ
اَخَاهُ قَالَ اِنِّيْۤ اَنَا اَخُوْكَ فَلَا تَبْتَئِسْ
بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٦٩
فَلَمَّا جَهَّزَهُمْ بِجَهَازِهِمْ جَعَلَ السِّقَايَةَ
فِيْ رَحْلِ اَخِيْهِ ثُمَّ اَذَّنَ مُؤَذِّنٌ اَيَّتُهَا
الْعِيْرُ اِنَّكُمْ لَسٰرِقُوْنَ ۝٧٠
قَالُوْا وَاَقْبَلُوْا عَلَيْهِمْ مَّاذَا تَفْقِدُوْنَ ۝٧١
قَالُوْا نَفْقِدُ صُوَاعَ الْمَلِكِ وَلِمَنْ جَآءَ
بِهٖ حِمْلُ بَعِيْرٍ وَّاَنَا بِهٖ زَعِيْمٌ ۝٧٢
قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ عَلِمْتُمْ مَّا جِئْنَا لِنُفْسِدَ
فِي الْاَرْضِ وَمَا كُنَّا سٰرِقِيْنَ ۝٧٣
قَالُوْا فَمَا جَزَآؤُهٗۤ اِنْ كُنْتُمْ كٰذِبِيْنَ ۝٧٤

75. बोले, "उसकी सज़ा यह है कि जिस सामान में वह मिले, वही उसका बदला क़रार दिया जाए। हम ज़ालिमों को ऐसी ही सज़ा देते हैं"।

76. फिर उसके भाई की ख़ुरजी से पहले उनकी ख़ुरजियां देखनी शुरू की, फिर उसके भाई की ख़ुरजी से उसे बरआमद कर लिया, इस तरह हमने यूसुफ़ के लिए तदबीर की; वह बादशाह के क़ानून के मुताबिक़ अपने भाई को हासिल नहीं कर सकता था, बल्कि अल्लाह की मशीयत ही नाफ़िज़ है। हम जिसके चाहें दर्जे बुलन्द करें; और हर साहिबे इल्म से बालातर एक इल्म वाला मौजूद है।

77. उन्होंने कहा, "अगर यह चोरी करता है, तो चोरी तो इससे पहले इसका भाई भी कर चुका है"। लेकिन यूसुफ़ ने उसे यह कहते हुए अपने दिल ही में रखा और उनपर ज़ाहिर नहीं किया कि "तुम बदतर मक़ाम पर हो; जो कुछ तुम बयान करते हो अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर है"।

78. उन्होंने कहा, "ऐ अज़ीज़, इसका बाप बहुत ही बूढ़ा है; इसलिए इसकी जगह हममें से किसी को रख लीजिए; हमारी नज़र में तो आप बड़े ही मुहसिन हैं"।

79. उसने कहा, "इस बात से अल्लाह पनाह में रखे कि जिसके पास हमने अपना माल पाया है उसे छोड़कर हम किसी दूसरे को रखें; फिर तो हम ज़ालिम ही क़रार पाएंगे"।

80. तो जब वो उससे ना उम्मीद हो गए तो मशवरा करने के लिए अलग हुए। उनमें जो बड़ा था वह कहने लगा, "क्या तुम जानते नहीं कि तुम्हारा बाप तुमसे अल्लाह के नाम पर अहद व पैमान ले चुका है, और उसको भी जो इससे पहले यूसुफ़ के मुआमले में तुमसे क़ुसूर हो चुका है? मैं तो इस सरज़मीन से हरगिज़ टलने का नहीं जब तक कि मेरे वालिद मुझे इजाज़त न दें या अल्लाह ही मेरे हक़ में कोई फ़ैसला फ़रमा दे; और वही सब से अच्छा फ़ैसला फ़रमाने वाला है।

81. तुम अपने बाप के पास लौटकर जाओ, और कहो कि 'ऐ हमारे बाप, आपके बेटे ने चोरी की है; हमने तो वही कहा है जो हमें मालूम हो सका; ग़ैब पर तो हमारी कोई निगाह थी नहीं।

82. आप उस बस्ती से पूछ लीजिए जहां हम थे, और उस क़ाफ़िले से भी जिसके साथ होकर हम आए; बेशक हम बिल्कुल सच्चे हैं।"

क़ालू जज़ाउहू मंव्वुजि-द फ़ी रह्लिही फ़हु-व जज़ाउहू, कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन (75)

फ़-ब-द-अ बिऔअि-यतिहिम् क़ब्-ल विआ-इ अख़ीहि सुम्मस्तख़्र-जहा मिंव्विआ-इ अख़ीहि, कज़ालि-क किद्ना लियूसु-फ़, मा का-न लियअ्ख़ु-ज़ अख़ाहु फ़ी दीनिल्-मलिकि इल्ला अंय्यशाअल्लाहु, नर्फ़अु द-रजातिम् मन्-नशा-उ, व फ़ौ-क़ कुल्लि ज़ी अिल्मिन् अ़लीम (76)

क़ालू इंय्यस्रिक् फ़-क़द् स-र-क़ अख़ुल्लहू मिन् क़ब्लु, फ़-असर्रहा यूसुफ़ु फ़ी नफ़्सिही व लम् युब्दिहा लहुम् क़ा-ल अन्तुम् शर्रुम्-मकानन् वल्लाहु अअ्लमु बिमा तसिफ़ून (77)

क़ालू या अय्युहल्-अ़ज़ीज़ु इन्-न लहू अबन् शैख़न् कबीरन् फ़ख़ुज़् अ-ह-दना मकानहू इन्ना नरा-क मिनल्-मुह्सिनीन (78)

क़ा-ल मआ़ज़ल्लाहि अन् नअ्ख़ु-ज़ इल्ला मंव्व-जद्ना मता-अ़ना अ़िन्दहू इन्ना इज़ल्-लज़ालिमून (79)●

फ़लम्मस्तै-असू मिन्हु ख़-लसू नजिय्यन्, क़ा-ल कबीरुहुम् अलम् तअ्लमू अन्-न अबाकुम् क़द् अ-ख़-ज़ अ़लैकुम् मौसिक़म्-मिनल्लाहि व मिन् क़ब्लु मा फ़र्रत्तुम् फ़ी यूसु-फ़ फ़-लन् अब्र-हल्-अर्-ज़ हत्ता यअ्ज़-न ली अबी औ यह्कुमल्लाहु ली व हु-व ख़ैरुल्-हाकिमीन (80)

इर्जिअू इला अबीकुम् फ़क़ूलू या अबाना इन्नब्न-क स-र-क़, व मा शहिद्ना इल्ला बिमा अ़लिम्ना व मा कुन्ना लिल्ग़ैबि हाफ़िज़ीन (81)

वस्अलिल्-क़र्य-तल्लती कुन्ना फ़ीहा वल्अ़ीरल्लती अक़्बल्ना फ़ीहा, व इन्ना लसादिक़ून (82)

قَالُوْا جَزَآؤُهٗ مَنْ وُّجِدَ فِيْ رَحْلِهٖ فَهُوَ جَزَآؤُهٗ ؕ كَذٰلِكَ نَجْزِي الظّٰلِمِيْنَ ۝٧٥

فَبَدَاَ بِاَوْعِيَتِهِمْ قَبْلَ وِعَآءِ اَخِيْهِ ثُمَّ اسْتَخْرَجَهَا مِنْ وِّعَآءِ اَخِيْهِ ؕ كَذٰلِكَ كِدْنَا لِيُوْسُفَ ؕ مَا كَانَ لِيَاْخُذَ اَخَاهُ فِيْ دِيْنِ الْمَلِكِ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ؕ نَرْفَعُ دَرَجٰتٍ مَّنْ نَّشَآءُ ؕ وَفَوْقَ كُلِّ ذِيْ عِلْمٍ عَلِيْمٌ ۝٧٦

قَالُوْٓا اِنْ يَّسْرِقْ فَقَدْ سَرَقَ اَخٌ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ ۚ فَاَسَرَّهَا يُوْسُفُ فِيْ نَفْسِهٖ وَلَمْ يُبْدِهَا لَهُمْ ۚ قَالَ اَنْتُمْ شَرٌّ مَّكَانًا ۚ وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا تَصِفُوْنَ ۝٧٧

قَالُوْا يٰٓاَيُّهَا الْعَزِيْزُ اِنَّ لَهٗٓ اَبًا شَيْخًا كَبِيْرًا فَخُذْ اَحَدَنَا مَكَانَهٗ ۚ اِنَّا نَرٰىكَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٧٨

قَالَ مَعَاذَ اللّٰهِ اَنْ نَّاْخُذَ اِلَّا مَنْ وَّجَدْنَا مَتَاعَنَا عِنْدَهٗٓ ۙ اِنَّآ اِذًا لَّظٰلِمُوْنَ ۝٧٩ ع

فَلَمَّا اسْتَيْـَٔسُوْا مِنْهُ خَلَصُوْا نَجِيًّا ؕ قَالَ كَبِيْرُهُمْ اَلَمْ تَعْلَمُوْٓا اَنَّ اَبَاكُمْ قَدْ اَخَذَ عَلَيْكُمْ مَّوْثِقًا مِّنَ اللّٰهِ وَمِنْ قَبْلُ مَا فَرَّطْتُّمْ فِيْ يُوْسُفَ ۚ فَلَنْ اَبْرَحَ الْاَرْضَ حَتّٰى يَاْذَنَ لِيْٓ اَبِيْٓ اَوْ يَحْكُمَ اللّٰهُ لِيْ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الْحٰكِمِيْنَ ۝٨٠

اِرْجِعُوْٓا اِلٰٓى اَبِيْكُمْ فَقُوْلُوْا يٰٓاَبَانَآ اِنَّ ابْنَكَ سَرَقَ ۚ وَمَا شَهِدْنَآ اِلَّا بِمَا عَلِمْنَا وَمَا كُنَّا لِلْغَيْبِ حٰفِظِيْنَ ۝٨١

وَسْـَٔلِ الْقَرْيَةَ الَّتِيْ كُنَّا فِيْهَا وَالْعِيْرَ الَّتِيْٓ اَقْبَلْنَا فِيْهَا ؕ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝٨٢

83. उसने कहा, "नहीं, बल्कि तुम्हारे जी ही ने तुम्हें पट्टी पढ़ाकर एक बात बना दी है। अब सब्र ही ख़ूबतर है! बहुत मुमकिन है कि अल्लाह उन सबको मेरे पास ले आए, वह तो सब कुछ जाननेवाला, बड़ी हिकमतवाला है"।

84. उसने उनकी तरफ़ से रुख़ फेर लिया, और कहने लगा, "ऐ अफ़सोस यूसुफ़ की जुदाई पर!" और ग़म के मारे उसकी आंखें सफ़ेद पड़ गई और वह घुटा जा रहा था।

85. उन्होंने कहा, "बख़ुदा, आप तो यूसुफ़ ही की याद में लगे रहेंगे यहां तक कि घुल कर रहेंगे, या जान ही से गुज़र जाएंगे"।

86. उसने कहा, "मैं तो अपनी परेशानी और अपने ग़म की शिकायत अल्लाह ही से करता हूं; और अल्लाह की तरफ़ से जो मैं जानता हूं तुम नहीं जानते।

87. ऐ मेरे बेटो, जाओ और यूसुफ़ और उसके भाई की टोह लगाओ। और अल्लाह की रहमत से मायूस न हो; अल्लाह की रहमत से तो सिर्फ़ काफ़िर लोग ही मायूस हुआ करते हैं"।

88. फिर जब वो उसके पास हाज़िर हुए तो कहा, "ऐ अज़ीज़, हमें और हमारे घर वालों को बहुत तकलीफ़ पहुंची है। और हम कुछ हक़ीर सी पूंजी लेकर आए हैं। लेकिन आप हमें पूरा-पूरा नाप अता करें, और हमें सदक़ा से नवाज़ें, यक़ीनन सदक़ा करने वालों को अजर अल्लाह देता है"।

89. उसने कहा, "क्या तुम्हारे इल्म में यह भी है कि जब तुम मुबतला-ए-जहालत थे तो यूसुफ़ और उसके भाई के साथ तुमने क्या किया था?"

90. वो बोल पड़े, "क्या आप ही यूसुफ़ हैं?" उसने कहा, "मैं ही यूसुफ़ हूं और यह मेरा भाई है। अल्लाह ने हमपर एहसान किया है। सच तो यह है कि जो कोई डर रखे और सब्र से काम ले, तो अल्लाह भी ख़ूबकारों का अजर अकारत नहीं करता"।

91. उन्होंने कहा, "बख़ुदा हमारे मुक़ाबले में अल्लाह ने आपको पसन्द किया, और बेशक हम तो ख़ताकार थे"।

92. उसने कहा, "आज तुमपर कोई इलज़ाम नहीं; अल्लाह तुम्हें माफ़

क़ा-ल बल् सव्वलत् लकुम् अन्फ़ुसुकुम् अम्रन्, फ़-सब्रुन् जमीलुन्, अ़सल्लाहु अंय्यअ्ति-यनी बिहिम् जमीअ़न्, इन्नहू हुवल् अ़लीमुल्-हकीम (83)

व तवल्ला अ़न्हुम् व क़ा-ल या अ-सफ़ा अ़ला यूसु-फ़ वब्यज़्ज़त् अ़ैनाहु मिनल्-हुज़्नि फ़हु-व कज़ीम (84)

क़ालू तल्लाहि तफ़्तउ तज़्कुरु यूसु-फ़ हत्ता तकू-न ह-रज़न् औ तकू-न मिनल्-हालिकीन (85)

क़ा-ल इन्नमा अश्कू बस्सी व हुज़्नी इलल्लाहि व अअ़्लमु मिनल्लाहि मा ला तअ़्लमून (86)

या बनिय्यज़्हबू फ़-तहस्ससू मिंय्यूसु-फ़ व अख़ीहि व ला तै-असू मिर्रौहिल्लाहि, इन्नहू ला यै-असू मिर्रौहिल्लाहि इल्लल् क़ौमुल्-काफ़िरून (87)

फ़-लम्मा द-ख़लू अ़लैहि क़ालू या अय्युहल्-अ़ज़ीज़ु मस्सना व अह्ल-नज़्ज़ुर्रु व जिअ्ना बिबिज़ा-अतिम्-मुज़्जातिन् फ़औफ़ि लनल्कै-ल व तसद्दक़् अ़लैना, इन्नल्ला-ह यज़्ज़िल् मु-तसद्दिक़ीन (88)

क़ा-ल हल् अ़लिम्तुम् मा फ़अ़ल्तुम् बियूसु-फ़ व अख़ीहि इज़् अन्तुम् जाहिलून (89)

क़ालू अ-इन्न-क ल-अन्-त यूसुफ़ु, क़ा-ल अ-न यूसुफ़ु व हाज़ा अख़ी, क़द् मन्नल्लाहु अ़लैना, इन्नहू मंय्यत्तक़ि व यस्बिर् फ़-इन्नल्ला-ह ला युज़ीउ अज्रल्-मुह्सिनीन (90)

क़ालू तल्लाहि ल-क़द् आस-रकल्लाहु अ़लैना व इन् कुन्ना लख़ातिईन (91)

क़ा-ल ला तस्री-ब अ़लैकुमुल्-यौ-म,

قَالَ بَلْ سَوَّلَتْ لَكُمْ اَنْفُسُكُمْ
اَمْرًا ؕ فَصَبْرٌ جَمِيْلٌ ؕ عَسَى اللّٰهُ اَنْ
يَّاْتِيَنِيْ بِهِمْ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَلِيْمُ
الْحَكِيْمُ (٨٣)
وَتَوَلّٰى عَنْهُمْ وَقَالَ يٰاَسَفٰى عَلٰى يُوْسُفَ
وَابْيَضَّتْ عَيْنٰهُ مِنَ الْحُزْنِ فَهُوَ كَظِيْمٌ (٨٤)
قَالُوْا تَاللّٰهِ تَفْتَؤُا تَذْكُرُ يُوْسُفَ حَتّٰى
تَكُوْنَ حَرَضًا اَوْ تَكُوْنَ مِنَ الْهٰلِكِيْنَ (٨٥)
قَالَ اِنَّمَآ اَشْكُوْا بَثِّيْ وَحُزْنِيْۤ اِلَى
اللّٰهِ وَاَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٨٦)
يٰبَنِيَّ اذْهَبُوْا فَتَحَسَّسُوْا مِنْ يُّوْسُفَ
وَاَخِيْهِ وَلَا تَايْــَٔسُوْا مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ ؕ
اِنَّهٗ لَا يَايْــَٔسُ مِنْ رَّوْحِ اللّٰهِ اِلَّا الْقَوْمُ
الْكٰفِرُوْنَ (٨٧)
فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلَيْهِ قَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الْعَزِيْزُ
مَسَّنَا وَاَهْلَنَا الضُّرُّ وَجِئْنَا بِبِضَاعَةٍ
مُّزْجٰىةٍ فَاَوْفِ لَنَا الْكَيْلَ وَتَصَدَّقْ
عَلَيْنَا ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَجْزِى الْمُتَصَدِّقِيْنَ (٨٨)
قَالَ هَلْ عَلِمْتُمْ مَّا فَعَلْتُمْ بِيُوْسُفَ
وَاَخِيْهِ اِذْ اَنْتُمْ جٰهِلُوْنَ (٨٩)
قَالُوْۤا ءَاِنَّكَ لَاَنْتَ يُوْسُفُ ؕ قَالَ
اَنَا يُوْسُفُ وَهٰذَاۤ اَخِيْ ؗ قَدْ مَنَّ اللّٰهُ
عَلَيْنَا ؕ اِنَّهٗ مَنْ يَّتَّقِ وَيَصْبِرْ فَاِنَّ
اللّٰهَ لَا يُضِيْعُ اَجْرَ الْمُحْسِنِيْنَ (٩٠)
قَالُوْا تَاللّٰهِ لَقَدْ اٰثَرَكَ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَاِنْ
كُنَّا لَخٰطِـِٕيْنَ (٩١)
قَالَ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ ؕ

करे; वह सबसे बढ़कर रहम फ़रमाने वाला है।

93. मेरा यह क़मीज़ ले जाओ और इसे मेरे वालिद के मुंह पर डाल दो, उनकी बीनाई लौट आएगी; फिर अपने सब अहल व अयाल को मेरे यहां ले आओ"।

94. इधर जब क़ाफ़िला रवाना हुआ तो उनके बाप ने कहा, "अगर तुम मुझे बहकी बातें करने वाला न समझो, तो मुझे तो यूसुफ़ की महक आ रही है"।

95. वो बोले, "अल्लाह की क़सम, आप तो अभी तक अपने पुराने वहम ही में पड़े हुए हैं"।

96. फिर जब ख़ुशख़बरी देने वाला आया तो उसने उसको उसके मुंह पर डाल दिया, उसी वक़्त उसकी बीनाई पलट आई। उसने कहा, "क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि मैं अल्लाह की तरफ़ से वह कुछ जानता हूं जो तुम्हें नहीं मालूम?"

97. वो बोले, "ऐ हमारे बाप, आप हमारे गुनाहों की माफ़ी के लिए दुआ करें; वाक़ई हम ख़ताकार थे"।

98. उसने कहा, "मैं अपने रब से तुम्हारे लिए बख़्शिश की दुआ करूंगा; वह बहुत बख़्शने वाला, निहायत मेहरबान है"।

99. फिर जब वो यूसुफ़ के पास पहुंचे, तो उसने अपने मां-बाप को ख़ास अपने पास जगह दी, और कहा, "तुम सब शहर में दाख़िल हो। अल्लाह ने चाहा तो यह दाख़िला अमन व सलामती के साथ होगा"।

100. उसने अपने मां-बाप को ऊंची जगह तख़्त पर बिठाया; और सब उसके आगे सजदे में गिर पड़े! इस मौक़े पर उसने कहा, "ऐ मेरे बाप, यह मेरे गुज़श्ता ख़्वाब की ताबीर है; इसे मेरे रब ने हक़ीक़त बना दिया। और उसने मुझपर एहसान फ़रमाया जब मुझे क़ैद से निकाला और तुम्हें देहात से ले आया इसके बाद कि शैतान ने मेरे और मेरे भाइयों के दरमियान फ़साद डलवा दिया था। बेशक मेरा रब जो चाहता है उसके लिए ग़ैर महसूस तदबीरें इख़्तियार करता है; दर हक़ीक़त वही सब कुछ जाननेवाला, निहायत दक़ीक़रस है।

101. मेरे रब, तूने मुझे एक सलतनत अता की और वाक़िआत

यग़्फ़िरुल्लाहु लकुम् व हु-व अर्हमुर्-राहिमीन (92)

इज़्हबू बि-क़मीसी हाज़ा फ़अल्क़ूहु अ़ला वज्हि-अबी यअ्ति बसीरन् वअ्तूनी बिअह्लिकुम् अज्मअ़ीन (93) ●

व लम्मा फ़-स-लतिल्-अ़ीरु क़ा-ल अबूहुम् इन्नी ल-अजिदु री-ह यूसु-फ़ लौ ला अन् तुफ़न्निदून (94)

क़ालू तल्लाहि इन्न-क लफ़ी ज़लालिकल्-क़दीम ●(95)

फ़-लम्मा अन् जाअल्-बशीरु अल्क़ाहु अ़ला वज्हिही फ़र्तद्-द बसीरन्, क़ा-ल अलम् अक़ुल् लकुम् इन्नी अअ़्लमु मिनल्लाहि मा ला तअ़्लमून (96)

क़ालू या अबानस्तग़्फ़िर् लना ज़ुनूबना इन्ना कुन्ना ख़ातिईन (97)

क़ा-ल सौ-फ़ अस्तग़्फ़िरु लकुम् रब्बी, इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम (98)

फ़-लम्मा द-ख़लू अ़ला यूसु-फ़ आवा इलैहि अ-बवैहि व क़ालद्ख़ुलू मिस्-र इन्शा-अल्लाहु आमिनीन (99)

व र-फ़-अ़ अ-बवैहि अ़लल्-अ़र्शि व ख़र्रू लहू सुज्जदन् व क़ा-ल या अ-बति हाज़ा तअ्वीलु रूअ्या-य मिन् क़ब्लु, क़द् ज-अ़-लहा रब्बी हक़्क़न्, व क़द् अह्स-न बी इज़् अख़्र-जनी मिनस्सिज्नि व जा-अ बिकुम् मिनल्बद्वि मिम्-बअ़्दि अन् न-ज़ग़श्शैतानु बैनी व बै-न इख़्वती, इन्-न रब्बी लतीफ़ुल्लिमा यशा-उ, इन्नहू हुवल् अ़लीमुल्-हकीम (100)

रब्बि क़द् आतैतनी मिनल्मुल्कि व अ़ल्लम्तनी

يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ ز وَهُوَ اَرْحَمُ
الرّٰحِمِيْنَ (٩٢)
اِذْهَبُوْا بِقَمِيْصِيْ هٰذَا فَاَلْقُوْهُ عَلٰى
وَجْهِ اَبِيْ يَاْتِ بَصِيْرًا ج وَاْتُوْنِيْ بِاَهْلِكُمْ
ع اَجْمَعِيْنَ (٩٣)
وَلَمَّا فَصَلَتِ الْعِيْرُ قَالَ اَبُوْهُمْ اِنِّيْ
لَاَجِدُ رِيْحَ يُوْسُفَ لَوْلَآ اَنْ تُفَنِّدُوْنِ (٩٤)
قَالُوْا تَاللّٰهِ اِنَّكَ لَفِيْ ضَلٰلِكَ الْقَدِيْمِ (٩٥)
فَلَمَّآ اَنْ جَآءَ الْبَشِيْرُ اَلْقٰىهُ عَلٰى
وَجْهِهٖ فَارْتَدَّ بَصِيْرًا ج قَالَ اَلَمْ اَقُلْ
لَّكُمْ ج اِنِّيْٓ اَعْلَمُ مِنَ اللّٰهِ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ (٩٦)
قَالُوْا يٰٓاَبَانَا اسْتَغْفِرْ لَنَا ذُنُوْبَنَآ اِنَّا
كُنَّا خٰطِئِيْنَ (٩٧)
قَالَ سَوْفَ اَسْتَغْفِرُ لَكُمْ رَبِّيْ ط اِنَّهٗ
هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ (٩٨)
فَلَمَّا دَخَلُوْا عَلٰى يُوْسُفَ اٰوٰٓى اِلَيْهِ
اَبَوَيْهِ وَقَالَ ادْخُلُوْا مِصْرَ اِنْ شَآءَ
اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ (٩٩)
وَرَفَعَ اَبَوَيْهِ عَلَى الْعَرْشِ وَخَرُّوْا لَهٗ
سُجَّدًا ج وَقَالَ يٰٓاَبَتِ هٰذَا تَاْوِيْلُ
رُءْيَايَ مِنْ قَبْلُ قَدْ جَعَلَهَا رَبِّيْ حَقًّا ط
وَقَدْ اَحْسَنَ بِيْٓ اِذْ اَخْرَجَنِيْ مِنَ السِّجْنِ
وَجَآءَ بِكُمْ مِّنَ الْبَدْوِ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ
نَّزَغَ الشَّيْطٰنُ بَيْنِيْ وَبَيْنَ اِخْوَتِيْ ط
اِنَّ رَبِّيْ لَطِيْفٌ لِّمَا يَشَآءُ ط اِنَّهٗ
هُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ (١٠٠)
رَبِّ قَدْ اٰتَيْتَنِيْ مِنَ الْمُلْكِ وَعَلَّمْتَنِيْ

और बातों का नतीजा मेरे इल्म में लाया। आसमान और ज़मीन के ईजाद करनेवाले, दुनिया और आख़िरत में तू ही मेरा सरपरस्त है। तू मुझे इस हाल में उठा कि मैं मुस्लिम हूं, और मुझे सालिहीन के साथ मिला"।

102. ये कुछ ग़ैब की ख़बरें हैं जिनकी हम तुम्हारी तरफ़ वही कर रहे हैं; तुम तो उनके पास नहीं थे जब उन्होंने अपने मुआमले को पुख़्ता करके साज़िश की थी।

103. मगर ख़्वाह तुम कितना ही चाहो अक्सर लोग तो मानने के नहीं।

104. तुम उनसे इसका कोई अजर भी नहीं मांगते; यह तो सारे आलम के लिए बस एक याददिहानी है।

105. आसमानों और ज़मीन की कितनी ही निशानियां हैं जिनपर से वो इस तरह गुज़र जाते हैं कि उनकी तरफ़ उनकी तवज्जुह नहीं होती।

106. उनमें अक्सर लोग अल्लाह को मानते भी हैं तो इस तरह कि वो साथ ही शिर्क में भी मुबतला होते हैं।

107. क्या वो इस बात से बेख़ौफ़ हैं कि अल्लाह का कोई अज़ाब उन्हें ढंक ले, या अचानक वह घड़ी ही उनपर आ जाए जबकि वो बिल्कुल बेख़बर हों?

108. कह दो "यही मेरा रास्ता है। मैं अल्लाह की तरफ़ बुलाता हूं, मैं ख़ुद भी पूरी रौशनी में हूं और मेरी पैरवी करने वाले भी — अज़ीम व बरतर है अल्लाह! — और मैं मुशरिक नहीं हूं"।

109. तुमसे पहले भी हमने जिनको रसूल बनाकर भेजा वो सब बस्तियों के रहने वाले मर्द ही थे जिनकी तरफ़ हम वही करते रहे — फिर क्या वो ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उनका कैसा अंजाम हुआ जो उनसे पहले गुज़रे हैं? यक़ीनन दार-ए-आख़िरत ही डर रखने वालों के लिए सबसे बेहतर है। तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?

110. — यहां तक की जब वो रसूल मायूस होने लगे, और लोग भी ख़याल करने लगे कि उनसे झूट बोला गया था कि अचानक उन्हें हमारी

मिन् तअ्वीलिल्-अहादीसि फ़ातिरस्समावाति वल्अर्ज़ि, अन्-त वलिय्यी फ़िद्दुन्या वल्आख़िरति तवफ़्फ़नी मुस्लिमंव्-व अल्हिक़्नी बिस्सालिहीन (101)

ज़ालि-क मिन् अम्बाइल्ग़ैबि नूहीहि इलै-क व मा कुन्-त लदैहिम् इज़् अज्मअू अम्रहुम् व हुम् यम्कुरून (102)

व मा अक्सरुन्नासि व लौ हरस्-त बिमुअ्मिनीन (103)

व मा तस्अलुहुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन्, इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्-आ़लमीन (104) ●

व क-अय्यिम्-मिन् आयतिन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि यमुर्रू-न अ़लैहा व हुम् अ़न्हा मुअ्रिज़ून (105)

व मा युअ्मिनु अक्सरुहुम् बिल्लाहि इल्ला व हुम् मुश्रिकून (106)

अ-फ़-अमिनू अन् तअ्ति-यहुम् ग़ाशि-यतुम् मिन् अ़ज़ाबिल्लाहि औ तअ्ति-यहुमुस्साअ़तु बग्-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (107)

क़ुल् हाज़िही सबीली अद्अू इलल्लाहि, अ़ला बसीरतिन् अ-न व मनित्त-ब-अ़नी, व सुब्हानल्लाहि व मा अ-न मिनल्-मुश्रिकीन (108)

व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् मिन् अह्लिल्क़ुरा, अ-फ़लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, व लदारुल्-आख़िरति ख़ैरुल-लिल्लज़ीनत्तक़ौ, अ-फ़ला तअ्क़िलून (109)

हत्ता इज़स्तै-असर्-रुसुलु व ज़न्नू अन्नहुम् क़द् कुज़िबू जा-अहुम् नस्रुना

مِنْ تَاْوِيْلِ الْاَحَادِيْثِ ۚ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۟ اَنْتَ وَلِيّٖ فِي الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةِ ۚ تَوَفَّنِيْ مُسْلِمًا وَّاَلْحِقْنِيْ
بِالصّٰلِحِيْنَ ۝١٠١
ذٰلِكَ مِنْ اَنْۢبَآءِ الْغَيْبِ نُوْحِيْهِ اِلَيْكَ ۚ
وَمَا كُنْتَ لَدَيْهِمْ اِذْ اَجْمَعُوْٓا اَمْرَهُمْ
وَهُمْ يَمْكُرُوْنَ ۝١٠٢
وَمَآ اَكْثَرُ النَّاسِ وَلَوْ حَرَصْتَ بِمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠٣
وَمَا تَسْـَٔلُهُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ ۭ اِنْ هُوَ
اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝١٠٤
وَكَاَيِّنْ مِّنْ اٰيَةٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
يَمُرُّوْنَ عَلَيْهَا وَهُمْ عَنْهَا مُعْرِضُوْنَ ۝١٠٥
وَمَا يُؤْمِنُ اَكْثَرُهُمْ بِاللّٰهِ اِلَّا وَهُمْ
مُّشْرِكُوْنَ ۝١٠٦
اَفَاَمِنُوْٓا اَنْ تَاْتِيَهُمْ غَاشِيَةٌ مِّنْ عَذَابِ
اللّٰهِ اَوْ تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً وَّهُمْ
لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١٠٧
قُلْ هٰذِهٖ سَبِيْلِيْٓ اَدْعُوْٓا اِلَى اللّٰهِ ۣ
عَلٰي بَصِيْرَةٍ اَنَا وَمَنِ اتَّبَعَنِيْ ۭ وَسُبْحٰنَ
اللّٰهِ وَمَآ اَنَا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝١٠٨
وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا
نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ مِّنْ اَهْلِ الْقُرٰى ۭ اَفَلَمْ
يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ وَلَدَارُ
الْاٰخِرَةِ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ اتَّقَوْا ۭ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝١٠٩
حَتّٰٓي اِذَا اسْتَيْـَٔسَ الرُّسُلُ وَظَنُّوْٓا
اَنَّهُمْ قَدْ كُذِبُوْا جَاۗءَهُمْ نَصْرُنَا ۙ

मदद पहुंच गई, फिर हमने जिसे चाहा बचा लिया। लेकिन मुजरिम लोगों पर से तो हमारा अज़ाब फिरता नहीं।

111. यक़ीनन उनके क़िस्सों में अक़्ल व होश वालों के लिए एक सबक़ है; यह कोई घड़ी हुई बात नहीं है, बल्कि यह अपने से पहले की तसदीक़, और हर चीज़ की तफ़सील, और ईमान लानेवाले लोगों के लिए एक हिदायत और रहमत है।

सूरह अर-रअद मदनी

(आयतें 43, रुकूआत 6)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-मीम-रा। यह किताब की आयात हैं; और जो तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल हुआ है वह हक़ है, लेकिन अक्सर लोग मानते नहीं।

2. अल्लाह वह है जिसने आसमानों को बग़ैर सहारे के बुलन्द किया जैसा कि तुम उन्हें देखते हो, फिर वह अर्श पर जलवागर हुआ। उसने सूरज और चांद को काम पर लगाया, हर एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए चला जा रहा है, वह इस सारे काम का इंतिज़ाम चला रहा है; वह निशानियां खोल-खोलकर बयान करता है; ताकि तुम्हें अपने रब से मिलने का यक़ीन हो।

3. और वही है जिसने ज़मीन को फैलाया और उसमें जमे हुए पहाड़ और दरिया बनाए, और हर तरह की पैदावार की दो-दो क़िस्में बनाई, वही रात से दिन को छुपा देता है। बेशक इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर व फ़िक्र से काम लेते हैं।

4. और ज़मीन में पास-पास के क़तअे (टुकड़े) हैं जो आपस में मिले हुए हैं और अंगूरों के बाग़ हैं, और खेतियां हैं, और खजूर के पेड़ हैं इकहरे भी, और दोहरे भी, एक ही पानी सब को सेराब करता है; फिर भी हम पैदावार और मज़े में किसी को किसी के मुक़ाबले में बढ़ा देते हैं। यक़ीनन

फ़नुज्जि-य मन् नशा-उ, व ला युरद्दु बअ्सुना अ़निल् क़ौमिल्-मुज्रिमीन (110)

ल-क़द् का-न फ़ी क़-ससिहिम् अ़िब्रतुल्-लिउलिल्-अल्बाबि, मा का-न हदीसंय्युफ़्तरा व लाकिन् तस्दीक़ल्लज़ी बै-न यदैहि व तफ़्सी-ल कुल्लि शैइंव्-व हुदंव्-व रह़्म-तल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (111) ●

13 सूरतुर्-रअ़्दि
(मक्की) इस सूराः में अ़रबी के 3614 अक्षर, 863 शब्द, 43 आयतें और 6 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम्-रा, तिल्-क आयातुल्-किताबि, वल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बिकल्-हक़्क़ु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (1) *अल्लाहुल्लज़ी र- फ़अ़स्समावाति बिग़ैरि अ़-मदिन् तरौनहा सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र, कुल्लुंय्यज्री लि-अ-जलिम्-मुसम्मन्, युदब्बिरुल्-अम्-र युफ़स्सिलुल्-आयाति लअ़ल्लकुम बिलिक़ा-इ रब्बिकुम् तूक़िनून* (2) *व हुवल्लज़ी मद्दल्-अर्-ज़ व ज-अ़-ल फ़ीहा रवासि-य व अन्हारन्, व मिन् कुल्लिस्स-मराति ज-अ़-ल फ़ीहा ज़ौजैनिस्नैनि युग़्शिल्लैलन्नहा-र, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्-य-तफ़क्करून* (3) *व फ़िल्अर्ज़ि क़ि-तअुम् मु-तजाविरातुंव्-व जन्नातुम्-मिन् अअ्नाबिंव्-व ज़र्अुंव्-व नख़ीलुन् सिन्वानुंव्-व ग़ैरु सिन्वानिंय्युस्क़ा बिमाइंव्वाहिदिन् व नुफ़ज़्ज़िलु बअ्ज़हा अ़ला बअ्ज़िन् फ़िल्उकुलि,*

فَنُجِّيَ مَنْ نَّشَآءُ ۭ وَلَا يُرَدُّ بَاْسُنَا عَنِ
الْقَوْمِ الْمُجْرِمِيْنَ ﴿١١٠﴾
لَقَدْ كَانَ فِيْ قَصَصِهِمْ عِبْرَةٌ لِّاُولِي
الْاَلْبَابِ ۭ مَا كَانَ حَدِيْثًا يُّفْتَرٰى
وَلٰكِنْ تَصْدِيْقَ الَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ
وَتَفْصِيْلَ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُدًى وَّرَحْمَةً
ع لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ﴿١١١﴾

سُوْرَةُ الرَّعْدِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٤٣ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الٓمّٓرٰ ۣ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ ۭ وَالَّذِيْٓ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ الْحَقُّ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يُؤْمِنُوْنَ ﴿١﴾
اَللّٰهُ الَّذِيْ رَفَعَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ
تَرَوْنَهَا ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى الْعَرْشِ
وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ۭ كُلٌّ يَّجْرِيْ
لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ يُدَبِّرُ الْاَمْرَ يُفَصِّلُ
الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ بِلِقَاۗءِ رَبِّكُمْ
تُوْقِنُوْنَ ﴿٢﴾
وَهُوَ الَّذِيْ مَدَّ الْاَرْضَ وَجَعَلَ فِيْهَا
رَوَاسِيَ وَاَنْهٰرًا ۭ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ
جَعَلَ فِيْهَا زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ يُغْشِي
الَّيْلَ النَّهَارَ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ﴿٣﴾
وَفِي الْاَرْضِ قِطَعٌ مُّتَجٰوِرٰتٌ وَّجَنّٰتٌ
مِّنْ اَعْنَابٍ وَّزَرْعٌ وَّنَخِيْلٌ صِنْوَانٌ
وَّغَيْرُ صِنْوَانٍ يُّسْقٰى بِمَاۗءٍ وَّاحِدٍ ۣ
وَنُفَضِّلُ بَعْضَهَا عَلٰي بَعْضٍ فِي الْاُكُلِ ۭ

इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक्ल से काम लेते हैं।

5. अब अगर तुम्हें तअज्जुब ही करना है तो क़ाबिले तअज्जुब तो उनका यह क़ौल है कि "क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे तो क्या हम नए सिरे से पैदा भी होंगे?" वही हैं जिन्होंने अपने रब के साथ कुफ़्र किया; और वही हैं जिनकी गर्दनों में तौक़ पड़े हुए हैं; और वही आग वाले हैं, जिसमें उन्हें हमेशा रहना है।

6. वो भलाई से पहले बुराई के लिए तुमसे जल्दी मचा रहे हैं; हालांकि उनसे पहले कितनी ही इबरतनाक मिसालें गुज़र चुकी हैं। लेकिन तुम्हारा रब लोगों को उनके ज़ुल्म व ज़्यादती के बावजूद माफ़ कर देता है, और हक़ीक़त में तुम्हारा रब सज़ा देने में भी बहुत सख़्त है।

7. जिन्हें इनकार है वो कहते हैं कि "उस पर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नाज़िल नहीं हुई?" तुम तो बस एक ख़बरदार करने वाले हो, और हर क़ौम के लिए एक रहनुमा है।

8. किसी भी मादा को जो भी हमल रहता है अल्लाह उसे जान रहा होता है, और उसे भी जो रहम में कमी और बेशी होती है; और उसके यहां हर चीज़ एक अंदाज़े पर है।

9. वह छुपे और खुले का जाननेवाला है, बहुत बड़ा, आलीशान है।

10. तुममें से कोई चुपके से बात करे और जो कोई ज़ोर से और जो कोई रात में छुपता हो और जो दिन में चलता-फिरता नज़र आता हो, उसके लिए सब बराबर है।

11. उसके आगे और उसके पीछे निगरां होते हैं जो अल्लाह के हुक्म से उसकी हिफ़ाज़त करते हैं। जो कुछ किसी क़ौम के लोगों को हासिल होता है अल्लाह उसे बदलता नहीं जब तक वो उसे न बदल डालें जिसका तअल्लुक़ ख़ुद उनसे है। और जब अल्लाह किसी क़ौम की बुराई चाह लेता है, तो फिर वह उससे फिरने की नहीं; और उससे हटकर उनका कोई हिमायती और सरपरस्त भी नहीं।

12. वही है जो ख़ौफ़ और उम्मीद के लिए तुम्हें बिजली की चमक दिखाता

इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (4)

व इन् तअ्जब् फ़-अ-जबुन् क़ौलुहुम् अ-इज़ा कुन्ना तुराबन् अ-इन्ना लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन्, उलाइ-कल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् व उलाइकल्-अग्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम् व उलाइ-क अस्हाबुन्नारि हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (5)

व यस्तअ्जिलून-क बिस्सय्यि-अति क़ब्लल्-ह-सनति व क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहिमुल्-मसुलातु, व इन्-न रब्ब-क लज़ु मग़्फ़ि-रतिल् लिन्नासि अ़ला ज़ुल्मिहिम् व इन्-न रब्ब-क ल-शदीदुल्-अ़िक़ाब (6)

व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम्-मिर्रब्बिही, इन्नमा अन्-त मुन्ज़िरुंव्-व लिकुल्लि क़ौमिन् हाद (7) ●

अल्लाहु यअ्लमु मा तह्मिलु कुल्लु उन्सा व मा तग़ीज़ुल्-अर्हामु व मा तज़्दादु, व कुल्लु शैइन् अ़िन्दहू बिमिक़्दार (8)

आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहादतिल् कबीरुल्-मु-तआ़ल (9)

सवाउम्-मिन्कुम् मन् अ-सर्रल्-क़ौ-ल व मन् ज-ह-र बिही व मन् हु-व मुस्तख़्फ़िम् बिल्लैलि व सारिबुम्-बिन्नहार (10)

लहू मुअ़क़्क़िबातुम् मिम्-बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही यह्फ़ज़ूनहू मिन् अम्रिल्लाहि, इन्नल्ला-ह ला युग़य्यिरु मा बिक़ौमिन् हत्ता युग़य्यिरु मा बिअन्फ़ुसिहिम्, व इज़ा अरादल्लाहु बिक़ौमिन् सूअन् फ़ला म-रद्-द लहू व मा लहुम् मिन् दूनिही मिंव्वाल (11)

हुवल्लज़ी युरीकुमुल्-बर्-क ख़ौफ़ंव्-व

إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَعْقِلُونَ ۝٤
وَإِن تَعْجَبْ فَعَجَبٌ قَوْلُهُمْ أَإِذَا كُنَّا
تُرَابًا أَإِنَّا لَفِي خَلْقٍ جَدِيدٍ ۗ أُولَٰئِكَ
الَّذِينَ كَفَرُوا بِرَبِّهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ
الْأَغْلَالُ فِي أَعْنَاقِهِمْ ۖ وَأُولَٰئِكَ
أَصْحَابُ النَّارِ ۖ هُمْ فِيهَا خَالِدُونَ ۝٥
وَيَسْتَعْجِلُونَكَ بِالسَّيِّئَةِ قَبْلَ الْحَسَنَةِ
وَقَدْ خَلَتْ مِن قَبْلِهِمُ الْمَثُلَاتُ ۗ وَإِنَّ
رَبَّكَ لَذُو مَغْفِرَةٍ لِّلنَّاسِ عَلَىٰ ظُلْمِهِمْ ۖ
وَإِنَّ رَبَّكَ لَشَدِيدُ الْعِقَابِ ۝٦
وَيَقُولُ الَّذِينَ كَفَرُوا لَوْلَا أُنزِلَ
عَلَيْهِ آيَةٌ مِّن رَّبِّهِ ۗ إِنَّمَا أَنتَ مُنذِرٌ ۖ
ع وَلِكُلِّ قَوْمٍ هَادٍ ۝٧
اللَّهُ يَعْلَمُ مَا تَحْمِلُ كُلُّ أُنثَىٰ وَمَا
تَغِيضُ الْأَرْحَامُ وَمَا تَزْدَادُ ۖ وَكُلُّ
شَيْءٍ عِندَهُ بِمِقْدَارٍ ۝٨
عَالِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْكَبِيرُ الْمُتَعَالِ ۝٩
سَوَاءٌ مِّنكُم مَّنْ أَسَرَّ الْقَوْلَ وَمَن
جَهَرَ بِهِ وَمَنْ هُوَ مُسْتَخْفٍ بِاللَّيْلِ
وَسَارِبٌ بِالنَّهَارِ ۝١٠
لَهُ مُعَقِّبَاتٌ مِّن بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ
خَلْفِهِ يَحْفَظُونَهُ مِنْ أَمْرِ اللَّهِ ۗ إِنَّ
اللَّهَ لَا يُغَيِّرُ مَا بِقَوْمٍ حَتَّىٰ يُغَيِّرُوا
مَا بِأَنفُسِهِمْ ۗ وَإِذَا أَرَادَ اللَّهُ بِقَوْمٍ
سُوءًا فَلَا مَرَدَّ لَهُ ۚ وَمَا لَهُم مِّن
دُونِهِ مِن وَالٍ ۝١١
هُوَ الَّذِي يُرِيكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَ

है, और बोझल बादलों को उठाता है;

13. बादल की गरज उसका गुन गाती है, और उसके डर से लरज़ते हुए फ़रिश्ते भी। वही कड़कती बिजलियां भेजता है, फिर जिस पर चाहता है उन्हें गिरा देता है इस हाल में कि वो अल्लाह के बारे में झगड़ रहे होते हैं, यक़ीनन उसकी चाल बहुत सख़्त है।

14. पुकारना उसी को बरहक़ है; उससे हटकर जिनको वो पुकारते हैं, वो उनकी पुकार को कुछ भी क़बूल नहीं करते, बस यह ऐसा ही होता है जैसे कोई अपने दोनों हाथ पानी की तरफ़ इसलिए फैलाए कि वह उसके मुंह में पहुंच जाए, हालांकि वह उसतक पहुंचने का नहीं। अहले कुफ़्र की पुकार तो बस बेठिकाने ही होती है।

15. आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी हैं, बरज़ा या बमजबूरी अल्लाह को सजदा कर रहे हैं, और उनके साए भी सुबह व शाम।

16. कहो: "आसमानों और ज़मीन का रब कौन है?" कहो: "अल्लाह"। कह दो: "फिर क्या तुमने उससे हटकर दूसरों को अपना हिमायती बना रखा है, जो ख़ुद अपने भी न नफ़ा के मालिक हैं और न नुक़सान के?" कहो: "क्या अन्धा और आखों वाला दोनों बराबर होते हैं, या तारीकियां और रौशनी बराबर हो सकती हैं? या उन्होंने जिनको अल्लाह का शरीक ठहराया है उन्होंने भी कुछ पैदा किया है जैसा उसने पैदा किया है, जिसकी वजह से उनको ख़लक़ में इश्तिबाह हो गया है?" कहो: "हर चीज़ का पैदा करने वाला अल्लाह है, और वह अकेला है, सब पर ग़ालिब है"।

17. उसने आसमान से पानी उतारा तो नदी नाले अपनी-अपनी समाई के मुताबिक़ बह निकले, फिर सैलाब ने उभरे हुए झाग को उठा लिया; और उसमें से भी जिसे वो ज़ेवर या दूसरे सामान बनाने के लिए आग में तपाते हैं, ऐसा ही झाग उठता है, इस तरह अल्लाह हक़ और बातिल की मिसाल बयान फ़रमाता है। फिर जो झाग है वह तो सूख कर राएगां जाता है, और जो कुछ लोगों को फ़ायदा पहुंचाने वाला होता है वह ज़मीन में ठहर जाता है। इसी तरह अल्लाह तमसीलें पेश करता है।

त-म-अंव्-व युन्शिउस्-सहाबस्-सिक़ाल (12)

व युसब्बिहुर्रअ्दु बिहम्दिही वल्मलाइ-कतु मिन् ख़ीफ़तिही व युर्सिलुस्सवाअि-क फ़युसीबु बिहा मंय्यशा-उ व हुम् युजादिलू-न फ़िल्लाहि व हु-व शदीदुल-मिहाल (13)

लहू दअ्वतुल्-हक़्क़ि, वल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिही ला यस्तजीबू-न लहुम् बिशैइन् इल्ला कबासिति कफ़्फ़ैहि इलल्-मा-इ लियब्लु-ग़ फ़ाहु व मा हु-व बिबालिग़िही, व मा दुआउल्-काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल (14)

व लिल्लाहि यस्जुदु मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि तौअंव्-व कर्हंव्-व ज़िलालुहुम् बिल्गुदुव्वि वल्आसाल (15)

कुल् मर्रब्बुस्समावाति वलअर्ज़ि, कुलिल्लाहु, कुल् अ-फ़त्तख़ज़्तुम् मिन् दूनिही औलिया-अ ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम् नफ़अंव्-व ला ज़र्रन्, कुल् हल् यस्तविल्-अअ्मा वल्बसीरु अम् हल् तस्तविज़्ज़ुलुमातु वन्नूरु, अम् ज-अलू लिल्लाहि शु-रका-अ ख़-लक़ू क-ख़ल्क़िही फ़-तशाबहल्-ख़ल्क़ु अलैहिम्, कुलिल्लाहु ख़ालिक़ु कुल्लि शैइंव्-व हुवल् वाहिदुल्-क़ह्हार (16)

अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअन् फ़सालत् औदि-यतुम् बि-क़-दरिहा फ़ह्त-मलस्सैलु ज़-बदर्-राबियन्, व मिम्मा यूक़िदू-न अलैहि फ़िन्नारिब्तिग़ा-अ हिल्यतिन् औ मताअिन् ज़-बदुम्-मिस्लुहू, कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहुल्-हक़्-क़ वल्बाति-ल, फ़-अम्मज़्ज़-बदु फ़-यज़्हबु जुफ़ा-अन् व अम्मा मा यन्फ़अुन्ना-स फ़यम्कुसु फ़िल्अर्ज़ि, कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहुल्-अम्साल (17)

طَمَعًا وَّيُنْشِئُ السَّحَابَ الثِّقَالَ ۝
وَيُسَبِّحُ الرَّعْدُ بِحَمْدِهٖ وَالْمَلٰٓئِكَةُ مِنْ
خِيْفَتِهٖ ۚ وَيُرْسِلُ الصَّوَاعِقَ فَيُصِيْبُ
بِهَا مَنْ يَّشَآءُ وَهُمْ يُجَادِلُوْنَ فِي
اللّٰهِ ۚ وَهُوَ شَدِيْدُ الْمِحَالِ ۝
لَهٗ دَعْوَةُ الْحَقِّ ۗ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖ لَا يَسْتَجِيْبُوْنَ لَهُمْ بِشَيْءٍ اِلَّا كَبَاسِطِ
كَفَّيْهِ اِلَى الْمَآءِ لِيَبْلُغَ فَاهُ وَمَا هُوَ
بِبَالِغِهٖ ۗ وَمَا دُعَآءُ الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ ۝
وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
طَوْعًا وَّكَرْهًا وَّظِلٰلُهُمْ بِالْغُدُوِّ وَالْاٰصَالِ ۩ ۝
قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۗ
قُلِ اللّٰهُ ۗ قُلْ اَفَاتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖٓ
اَوْلِيَآءَ لَا يَمْلِكُوْنَ لِاَنْفُسِهِمْ نَفْعًا
وَّلَا ضَرًّا ۗ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الْاَعْمٰى
وَالْبَصِيْرُ ۙ اَمْ هَلْ تَسْتَوِي الظُّلُمٰتُ
وَالنُّوْرُ ۚ اَمْ جَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ خَلَقُوْا
كَخَلْقِهٖ فَتَشَابَهَ الْخَلْقُ عَلَيْهِمْ ۗ قُلِ اللّٰهُ
خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَّهُوَ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝
اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَسَالَتْ اَوْدِيَةٌۢ
بِقَدَرِهَا فَاحْتَمَلَ السَّيْلُ زَبَدًا
رَّابِيًا ۗ وَمِمَّا يُوْقِدُوْنَ عَلَيْهِ
فِي النَّارِ ابْتِغَآءَ حِلْيَةٍ اَوْ مَتَاعٍ
زَبَدٌ مِّثْلُهٗ ۗ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ
الْحَقَّ وَالْبَاطِلَ ۗ فَاَمَّا الزَّبَدُ فَيَذْهَبُ
جُفَآءً ۚ وَاَمَّا مَا يَنْفَعُ النَّاسَ فَيَمْكُثُ
فِي الْاَرْضِ ۗ كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ ۝

18. जिन्होंने अपने रब की दावत क़बूल कर ली, उनके लिए अच्छा इनाम है; रहे वो लोग जिन्होंने उसे क़बूल नहीं किया, अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है, बल्कि उसके साथ उतना और भी हो तो अपने छुटकारे के लिए वह सब दे डालें। वही हैं जिनका बुरा हिसाब होगा, उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह निहायत बुरी आरामगाह है।

19. भला वह जो जानता है कि जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ़ से तुमपर नाज़िल हुआ है वह हक़ है, उस जैसा हो सकता है जो अन्धा है? लेकिन समझते तो वही हैं जो अक़्ल व ख़िरद रखते हैं;

20. जो अल्लाह के साथ किए हुए अहद को पूरा करते हैं, और अहद व पैमान को तोड़ते नहीं,

21. और जो ऐसे हैं कि अल्लाह ने जिसे जोड़ने का हुक्म दिया है, उसे जोड़ते हैं, और अपने रब से डरते रहते हैं, और बुरे हिसाब का डर उन्हें लगा रहता है।

22. और जिन लोगों ने अपने रब की रिज़ाजोई में सब्र किया और नमाज़ का एहतिमाम किया और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से अलानिया और पोशीदा ख़र्च किया, और नेक किरदार से बद किरदारी को दफ़ा करते हैं। वही हैं जिनके लिए दारे आख़िरत का नेक अंजाम है।

23. यानी अद्न के बाग़ात हैं जिनमें वो दाख़िल होंगे; और उनके बाप-दादा, और उनकी बीवियों, और उनकी औलाद में से जो नेक होंगे वो भी, और फ़रिश्ते हर दरवाज़े से उनके पास पहुंचेंगे:

24. "तुमपर सलाम है, उसके बदले में जो तुमने सब्र से काम लिया"। पस क्या ही अच्छा है अंजाम दार-ए-आख़िरत का।

25. रहे वो लोग जो अल्लाह के अहद को उसे मज़बूत करने के बाद तोड़ डालते हैं, और अल्लाह ने जिसे जोड़ने का हुक्म दिया है उसे काटते हैं, और ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं। वही हैं जिनके लिए फिटकार है, और जिनके लिए दार-ए-आख़िरत का बुरा अंजाम है।

26. अल्लाह जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा करता है और इसी

लिल्लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिमुल-हुस्ना, वल्लज़ी-न लम् यस्तजीबू लहू लौ अन्-न लहुम् मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअंव्-व मिस्लहू म-अ़हू लफ़्तदौ बिही, उलाइ-क लहुम् सूउल्-हिसाबि व मअ्वाहुम् ज-हन्नमु, व बिअ्सल्-मिहाद● (18)●

अ-फ़मंय्यअ्लमु अन्नमा उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बिकल्-हक़्क़ु क-मन् हु-व अअ्मा, इन्नमा य-तज़क्करू उलुल्-अल्बाब (19)

अल्लज़ी-न यूफ़ू-न बिअ़हि्दल्लाहि व ला यन्कुज़ूनल्-मीसाक़ (20)

वल्लज़ी-न यसिलू-न मा अ-मरल्लाहु बिही अंय्यूस-ल व यख़्शौ-न रब्बहुम् व यख़ाफ़ू-न सूअल्-हिसाब (21)

वल्लज़ी-न स-बरुब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिम् व अक़ामुस्सला-त व अन्फ़क़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम् सिर्रंव्-व अ़लानि-यतंव्-व यद्रऊ-न बिल्ह-स-नतिस्सय्यि-अ-त उलाइ-क लहुम् अुक़्बद्दार (22)

जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलू-नहा व मन् स-ल-ह मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम् वल्मलाइ-कतु यद्ख़ुलू-न अ़लैहिम् मिन् कुल्लि बाब (23)

सलामुन् अ़लैकुम् बिमा सबर्तुम् फ़निअ्-म अुक़्बद्दार (24)

वल्लज़ी-न यन्क़ुज़ू-न अ़ह्दल्लाहि मिम्-बअ़्दि मीसाक़िही व यक़्तअू-न मा अ-मरल्लाहु बिही अंय्यूस-ल व युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि उलाइ-क लहुमुल्लअ्-नतु व लहुम् सूउद्दार (25)

अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु,

لِلَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمُ الْحُسْنٰى ؔ
وَالَّذِيْنَ لَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهٗ لَوْ اَنَّ لَهُمْ
مَّا فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ
لَافْتَدَوْا بِهٖ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْحِسَابِ ۙ
وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَبِئْسَ الْمِهَادُ (۱۸)
اَفَمَنْ يَّعْلَمُ اَنَّمَآ اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ
رَّبِّكَ الْحَقُّ كَمَنْ هُوَ اَعْمٰى ؕ اِنَّمَا
يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۙ (۱۹)
الَّذِيْنَ يُوْفُوْنَ بِعَهْدِ اللّٰهِ وَلَا
يَنْقُضُوْنَ الْمِيْثَاقَ ۙ (۲۰)
وَالَّذِيْنَ يَصِلُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ اَنْ
يُّوْصَلَ وَيَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ وَيَخَافُوْنَ
سُوْٓءَ الْحِسَابِ ؕ (۲۱)
وَالَّذِيْنَ صَبَرُوا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِمْ
وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
سِرًّا وَّعَلَانِيَةً وَّيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ
السَّيِّئَةَ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عُقْبَى الدَّارِ ۙ (۲۲)
جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا وَمَنْ صَلَحَ
مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ وَذُرِّيّٰتِهِمْ
وَالْمَلٰٓئِكَةُ يَدْخُلُوْنَ عَلَيْهِمْ مِّنْ كُلِّ بَابٍ ۚ (۲۳)
سَلٰمٌ عَلَيْكُمْ بِمَا صَبَرْتُمْ فَنِعْمَ عُقْبَى
الدَّارِ ؕ (۲۴)
وَالَّذِيْنَ يَنْقُضُوْنَ عَهْدَ اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ
مِيْثَاقِهٖ وَيَقْطَعُوْنَ مَآ اَمَرَ اللّٰهُ بِهٖٓ
اَنْ يُّوْصَلَ وَيُفْسِدُوْنَ فِي الْاَرْضِ ۙ
اُولٰٓئِكَ لَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ (۲۵)
اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ

तरह नपी-तुली भी। और वो दुनिया की ज़िन्दगी पर मगन हैं, हालांकि दुनिया की ज़िन्दगी आख़िरत के हिसाब में बस ऐसे चन्द रोज़ा है।

27. जिन लोगों ने कुफ़्र किया वो कहते हैं कि "उसपर उसके रब की तरफ़ से कोई निशानी क्यों नहीं उतरी?" कहोः "अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है, अपनी तरफ़ से तो वह रहनुमाई उसी की करता है जो रुजू होता है"।

28. ऐसे ही लोग हैं जो ईमान ले आए और जिनके दिलों को अल्लाह की याद से आराम और चैन मिलता है। सुन लो अल्लाह की याद ही से दिलों को चैन नसीब हुआ करता है।

29. जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल इख़्तियार किए उनके लिए ख़ुशनसीबी है और अच्छी जाए बाज़गश्त है।

30. चुनांचे हमने तुम्हें एक ऐसी उम्मत में भेजा है जिससे पहले कितनी ही उम्मतें गुज़र चुकी हैं, ताकि जो कुछ हमने तुम्हारी तरफ़ वही की है उसे उनको सुना दो; अगरचे वो रहमान के साथ कुफ़्र कर रहे हैं। कह दोः "वही मेरा रब है उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसी पर मेरा भरोसा है, और उसी की तरफ़ मेरा रुजू भी"।

31. और अगर कोई ऐसा क़ुरआन होता जिससे पहाड़ चलते, या उससे ज़मीन टुकड़े-टुकड़े हो जाती, या उसके ज़रिए से मुर्दे बोलने लगते (जब भी वो ईमान न लाते)। नहीं, बल्कि बात यह है कि सारे काम अल्लाह ही के इख़्तियार में हैं। फिर क्या जो लोग ईमान ले आए हैं उन्होंने यह जानकर आस नहीं तोड़ी कि अगर अल्लाह चाहता तो सारे ही इन्सानों को सीधे रास्ते पर लगा देता? और इनकार करने वालों पर तो उनके करतूतों के बदले में कोई न कोई आफ़त बराबर आती ही रहेगी, या उनके घर के क़रीब ही कहीं नाज़िल होती रहेगी, यहां तक कि अल्लाह का वादा आ पूरा होगा; बेशक अल्लाह वादे के ख़िलाफ़ नहीं जाता।

32. तुमसे पहले भी कितने ही रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया जा चुका है, मगर मैंने इनकार करनेवालों को मुहलत दी; फिर आख़िरकार मैंने उन्हें पकड़ लिया। फिर कैसी रही मेरी सज़ा?

व फ़रिहू बिल्हयातिद्दुन्या, व मल्हयातुद्दुन्या फ़िल्-आख़िरति इल्ला मताअ् (26) ●

व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ल उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयतुम् मिर्रब्बिही, क़ुल् इन्नल्ला-ह युज़िल्लु मंय्यशा-उ व यह्दी इलैहि मन् अनाब (27)

अल्लज़ी-न आमनू व तत्मइन्नु क़ुलूबुहुम् बिज़िक्रिल्लाहि, अला बिज़िक्रिल्लाहि तत्मइन्नुल्-क़ुलूब (28)

अल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति तूबा लहुम् व हुस्नु मआब (29)

कज़ालि-क अर्सल्ना-क फ़ी उम्मतिन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहा उ-ममुल्-लितत्लु-व अ़लैहिमुल्लज़ी औहैना इलै-क व हुम् यक्फ़ुरू-न बिर्रह्मानि, क़ुल् हु-व रब्बी ला इला-ह इल्ला हु-व अ़लैहि तवक्कल्तु व इलैहि मताब (30)

व लौ अन्-न क़ुर्आनन् सुय्यिरत् बिहिल्-जिबालु औ क़ुत्तिअ़त् बिहिल्-अर्-जु औ कुल्लि-म बिहिल्मौता, बल् लिल्लाहिल्-अम्रु जमीअ़न्, अ-फ़लम् यै-असिल्लज़ी-न आमनू अल्-लौ यशाउल्लाहु ल-हदन्ना-स जमीअ़न्, व ला यज़ालुल्लज़ी-न क-फ़रू तुसीबुहुम् बिमा स-नअू क़ारि-अ़तुन् औ तहुल्लु क़रीबम् मिन् दारिहिम् हत्ता यअ्ति-य वअ्दुल्लाहि, इन्नल्ला-ह ला युख़्लिफ़ुल्-मीआद (31) ●

व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरूसुलिम् मिन् क़ब्लि-क फ़-अम्लैतु लिल्लज़ी-न क-फ़रू सुम्-म अख़ज़्तुहुम्, फ़कै-फ़ का-न अ़िक़ाब (32)

وَفَرِحُوْا بِالْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَمَا الْحَيٰوةُ
ع الدُّنْيَا فِى الْاٰخِرَةِ اِلَّا مَتَاعٌ (٢٦)
وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَاۤ اُنْزِلَ
عَلَيْهِ اٰيَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّ اللّٰهَ
يُضِلُّ مَنْ يَّشَآءُ وَيَهْدِيْۤ اِلَيْهِ
مَنْ اَنَابَ ۚ (٢٧)
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَطْمَئِنُّ قُلُوْبُهُمْ
بِذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ
الْقُلُوْبُ ؕ (٢٨)
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ طُوْبٰى
لَهُمْ وَحُسْنُ مَاٰبٍ (٢٩)
كَذٰلِكَ اَرْسَلْنٰكَ فِيْۤ اُمَّةٍ قَدْ خَلَتْ
مِنْ قَبْلِهَاۤ اُمَمٌ لِّتَتْلُوَا۠ عَلَيْهِمُ الَّذِيْۤ
اَوْحَيْنَاۤ اِلَيْكَ وَهُمْ يَكْفُرُوْنَ بِالرَّحْمٰنِ ؕ
قُلْ هُوَ رَبِّيْ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عَلَيْهِ
تَوَكَّلْتُ وَاِلَيْهِ مَتَابِ (٣٠)
وَلَوْ اَنَّ قُرْاٰنًا سُيِّرَتْ بِهِ الْجِبَالُ اَوْ
قُطِّعَتْ بِهِ الْاَرْضُ اَوْ كُلِّمَ بِهِ الْمَوْتٰى ؕ
بَلْ لِّلّٰهِ الْاَمْرُ جَمِيْعًا ؕ اَفَلَمْ يَايْـَٔسِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْۤا اَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ لَهَدَى النَّاسَ
جَمِيْعًا ؕ وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا تُصِيْبُهُمْ
بِمَا صَنَعُوْا قَارِعَةٌ اَوْ تَحُلُّ قَرِيْبًا مِّنْ
دَارِهِمْ حَتّٰى يَاْتِيَ وَعْدُ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
ع لَا يُخْلِفُ الْمِيْعَادَ (٣١)
وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ
فَاَمْلَيْتُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۫
فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ (٣٢)

33. भला वह (अल्लाह) जो हर एक शख़्स पर उसकी कमाई पर निगाह रखते हुए खड़ा है, फिर भी उन्होंने अल्लाह के शरीक ठहरा रखे हैं। कहो: "ज़रा उनके नाम तो लो, या तुम उसे ऐसी बात की ख़बर दे रहे हो जिसके वुजूद का उसे ज़मीन भर में पता नहीं? या यूंही यह एक ऊपरी बात ही बात है?" नहीं, बल्कि इनकार करनेवालों के लिए उनकी मक्कारी ख़ुशनुमा बना दी गई है, और वो राह से रोक दिए गए हैं। जिसे अल्लाह ही गुमराह कर दे, उसे कोई राह पर लानेवाला नहीं।

34. उनके लिए दुनिया की ज़िन्दगी में भी अज़ाब है, रहा आख़िरत का अज़ाब, वह तो निहायत सख़्त है; और कोई भी नहीं जो उन्हें अल्लाह से बचाने वाला हो।

35. डर रखनेवालों के लिए जिस जन्नत का वादा है उसकी शान यह है कि उसके नीचे नहरें बह रही हैं, उसके फल दाइमी हैं, और इसी तरह उसका साया भी। यह अंजाम है उनका जो डर रखते हैं, जबकि अहले कुफ़्र का अंजाम आग है।

36. जिन लोगों को हमने किताब अता की है वो उससे जो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल हुआ है, ख़ुश होते हैं; और मुख़्तलिफ़ गिरोहों में कुछ लोग ऐसे भी हैं जो उसकी बाज़ बातों का इनकार करते हैं। कह दो: "मुझे तो बस यह हुक्म हुआ है कि मैं अल्लाह की बन्दगी करूं, और उसका शरीक न ठहराऊं। उसी की तरफ़ मैं दावत देता हूं, और उसी की तरफ़ मेरा रुजू है"।

37. और इसी तरह हमने इसे एक अरबी फ़रमान की शक्ल में उतारा है। अब अगर तुमने उस इल्म के बाद भी जो तुम्हारे पास आ चुका है उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी की, तो अल्लाह के मुक़ाबले में न तो तुम्हारा कोई हिमायती होगा, और न कोई बचाने वाला।

38. तुमसे पहले भी हम कितने ही रसूल भेज चुके हैं, और हमने उन्हें बीवियां और बच्चे भी दिए थे; और किसी रसूल को यह इख़्तियार न था कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई निशानी ख़ुद से ला देता। हर चीज़ के लिए एक वक़्त और हर एक वक़्त के लिए एक नविश्ता है।

39. अल्लाह जो कुछ चाहता है मिटा देता है, इसी तरह वह क़ायम भी रखता है, असल किताब तो ख़ुद उसी के पास है।

अ-फ़-मन् हु-व क़ाइमुन् अला कुल्लि नफ़्सिम्-बिमा क-सबत् व ज-अ़लू लिल्लाहि शु-रका-अ, क़ुल् सम्मूहुम् अम् तुनब्बिऊनहू बिमा ला यअ्लमु फ़िल् अर्ज़ि अम् बिज़ाहिरिम्-मिनल्क़ौलि, बल् ज़ुय्यि-न लिल्लज़ी-न क-फ़रू मक्रुहुम् व सुद्दू अ़निस्सबीलि, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (33)

लहुम् अ़ज़ाबुन् फ़िल्हयातिद्दुन्या व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अशक़्क़ु व मा लहुम् मिनल्लाहि मिंव्वाक़ (34)

म-सलुल्-जन्नतिल्लती वुअ़िदल्-मुत्तक़ू-न, तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु, उकुलुहा दाइमुंव्-व ज़िल्लुहा, तिल्-क उ़क़्बल्लज़ीनत्तक़ौ व उ़क़्बल् काफ़िरीनन्नार (35)

वल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब यफ़्रहू-न बिमा उन्ज़ि-ल इलै-क व मिनल्-अह़्ज़ाबि मंय्युन्किरु बअ्ज़हू, क़ुल् इन्नमा उमिर्तु अन् अअ्बुदल्ला-ह व ला उश्रि-क बिही, इलैहि अद्अू व इलैहि मआब (36)

व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु हुक्मन् अ़-रबिय्यन्, व ल-इनित्त-बअ्-त अह्वा-अहुम् बअ्-द मा जाअ-क मिनल्-अ़िल्मि मा ल-क मिनल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला वाक़ (37) ●

व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम् मिन् क़ब्लि-क व जअ़ल्ना लहुम् अ़ज़्वाजंव्-व ज़ुर्रिय्य-तन्, व मा का-न लि-रसूलिन् अंय्यअ्ति-य बिआयतिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, लिकुल्लि अ-जलिन् किताब (38)

यम्हुल्लाहु मा यशा-उ व युस्बितु व अ़िन्दहू उम्मुल्-किताब (39)

اَفَمَنْ هُوَ قَآئِمٌ عَلٰى كُلِّ نَفْسٍۢ بِمَا
كَسَبَتْ ۚ وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ شُرَكَآءَ ۗ قُلْ
سَمُّوْهُمْ ۗ اَمْ تُنَبِّئُوْنَهٗ بِمَا لَا يَعْلَمُ
فِى الْاَرْضِ اَمْ بِظَاهِرٍ مِّنَ الْقَوْلِ ۗ
بَلْ زُيِّنَ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مَكْرُهُمْ
وَصُدُّوْا عَنِ السَّبِيْلِ ۗ وَمَنْ يُّضْلِلِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝٣٣
لَهُمْ عَذَابٌ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَلَعَذَابُ
الْاٰخِرَةِ اَشَقُّ ۚ وَمَا لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ
وَّاقٍ ۝٣٤
مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِىْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ۗ
تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۗ اُكُلُهَا
دَآئِمٌ وَّظِلُّهَا ۗ تِلْكَ عُقْبَى الَّذِيْنَ
اتَّقَوْا ۖ وَّعُقْبَى الْكٰفِرِيْنَ النَّارُ ۝٣٥
وَالَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يَفْرَحُوْنَ بِمَآ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ وَمِنَ الْاَحْزَابِ مَنْ يُّنْكِرُ
بَعْضَهٗ ۗ قُلْ اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ
وَلَآ اُشْرِكَ بِهٖ ۗ اِلَيْهِ اَدْعُوْا وَاِلَيْهِ مَاٰبِ ۝٣٦
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ حُكْمًا عَرَبِيًّا ۗ وَلَئِنِ
اتَّبَعْتَ اَهْوَآءَهُمْ بَعْدَمَا جَآءَكَ مِنَ الْعِلْمِ ۙ
مَا لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ وَّلِيٍّ وَّلَا وَاقٍ ۝٣٧
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ
وَجَعَلْنَا لَهُمْ اَزْوَاجًا وَّذُرِّيَّةً ۗ وَمَا
كَانَ لِرَسُوْلٍ اَنْ يَّاْتِىَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ
اللّٰهِ ۗ لِكُلِّ اَجَلٍ كِتَابٌ ۝٣٨
يَمْحُوا اللّٰهُ مَا يَشَآءُ وَيُثْبِتُ ۖ
وَعِنْدَهٗۤ اُمُّ الْكِتٰبِ ۝٣٩

40. हम जो वादा उनसे कर रहे हैं ख़्वाह उसमें से कुछ हम तुम्हें दिखा दें, या तुम्हें उठा लें, तुम्हारे ज़िम्मे तो बस पैग़ाम पहुंचा देना ही है, हिसाब की ज़िम्मेदारी तो हमारी है।

41. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम ज़मीन को उसके किनारों से घटाते हुए आ रहे हैं? अल्लाह ही फ़ैसला करता है; कोई नहीं जो उसके फ़ैसले को पीछे डाल सके, और वह हिसाब जल्द लेता है।

42. उनसे पहले जो गुज़रे हैं वो भी चालें चल चुके हैं; लेकिन असल चाल तो पूरी की पूरी अल्लाह ही के हाथ में है। हर शख़्स जो कमाई कर रहा है वह उसके इल्म में है। अहले कुफ़्र जल्द ही जान लेंगे कि दार-ए-आख़िरत का अच्छा अन्जाम किसके लिए है।

43. जिन लोगों ने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की वो कहते हैं कि "तुम कोई भेजे हुए नहीं हो"। कह दो कि "मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह की और जिस किसी के पास किताब का इल्म है उसकी गवाही काफ़ी है"।

सूरह इबराहीम मक्की

(आयतें 52, रुकूआत 7)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-रा। यह एक किताब है जिसे हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल किया है ताकि तुम इंसानों को तारीकियों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ ले आओ उनके रब की तौफ़ीक़ से, ज़बरदस्त, क़ाबिले तारीफ़ हस्ती।

2. उस अल्लाह के रास्ते की तरफ़ जिसका वह सब है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है। काफ़िरों के लिए तो एक सख़्त अज़ाब के सबब बड़ी तबाही है।

3. जो आख़िरत पर हयात-ए-दुनिया को तरजीह देते हैं और अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं, और उसमें कजी पैदा करना चाहते हैं। वही परले दर्जे की गुमराही में हैं।

4. हमने जो रसूल भी भेजा उसकी अपनी क़ौम की ज़बान के साथ ही भेजा ताकि वह उनके लिए अच्छी तरह खोलकर बयान कर दे; फिर अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है और जिसे चाहता है राह-ए-रास्त पर लगा देता है, वह है

व इम्मा नुरियन्न-क बअ्ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-तवफ़्फ़-यन्न-क फ़-इन्नमा अलैकल्-बलाग़ु व अलैनल्-हिसाब (40)

अ-व लम् यरौ अन्ना नअ्तिल्-अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन् अत्राफ़िहा, वल्लाहु यह्कुमु ला मुअक़्क़ि-ब लिहुक्मिही, व हु-व सरीअुल्-हिसाब (41)

व क़द् म-करल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़लिल्लाहिल्-मक्रु जमीअन्, यअ्लमु मा तक्सिबु कुल्लु नफ़्सिन्, व स-यअ्लमुल्-कुफ़्फ़ारु लिमन् अुक़्बद्दार (42)

व यक़ूलुल्लज़ी-न क-फ़रू लस्-त मुर्सलन्, क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम् व मन् अिन्दहू अिल्मुल्-किताब (43) ●

14 सूरतु इब्राहीम
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 3601 अक्षर, 845 शब्द, 52 आयतें और 7 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा, किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै-क लितुख़्रिजन्ना-स मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्-नूरि बि-इज़्नि रब्बिहिम् इला सिरातिल् अज़ीज़िल्-हमीद (1)

अल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व वैलुल्-लिल्-काफ़िरी-न मिन् अज़ाबिन् शदीद (2)

अल्लज़ी-न यस्तहिब्बूनल्-हयातद्दुन्या अलल्-आख़िरति व यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि व यब्ग़ूनहा अि-वजन्, उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-बअीद (3)

व मा अर्सल्ना मिर्रसूलिन् इल्ला बिलिसानि-क़ौमिही लियुबय्यि-न लहुम्, फ़युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशा-उ व यह्दी मंय्यशा-उ, व हुव-

وَاِنْ مَّا نُرِيَنَّكَ بَعْضَ الَّذِىْ نَعِدُهُمْ
اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ
وَعَلَيْنَا الْحِسَابُ (٤٠)
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا
مِنْ اَطْرَافِهَا ۚ وَاللّٰهُ يَحْكُمُ لَا مُعَقِّبَ
لِحُكْمِهٖ ۚ وَهُوَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ (٤١)
وَقَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَلِلّٰهِ الْمَكْرُ
جَمِيْعًا ۚ يَعْلَمُ مَا تَكْسِبُ كُلُّ نَفْسٍ ۚ
وَسَيَعْلَمُ الْكُفّٰرُ لِمَنْ عُقْبَى الدَّارِ (٤٢)
وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَسْتَ مُرْسَلًا ۚ
قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنِىْ وَبَيْنَكُمْ ۙ
وَمَنْ عِنْدَهٗ عِلْمُ الْكِتٰبِ (٤٣)

سُوْرَةُ اِبْرٰهِيْمَ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٥٢ رُكُوْعَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

الٓرٰ ۚ كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ لِتُخْرِجَ النَّاسَ
مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ بِاِذْنِ رَبِّهِمْ
اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۙ (١)
اللّٰهِ الَّذِىْ لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى
الْاَرْضِ ۚ وَوَيْلٌ لِّلْكٰفِرِيْنَ مِنْ
عَذَابٍ شَدِيْدِ ۙ (٢)
الَّذِيْنَ يَسْتَحِبُّوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
عَلَى الْاٰخِرَةِ وَيَصُدُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَيَبْغُوْنَهَا عِوَجًا ۚ اُولٰٓئِكَ فِىْ
ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ (٣)
وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا بِلِسَانِ
قَوْمِهٖ لِيُبَيِّنَ لَهُمْ ۚ فَيُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ
يَّشَآءُ وَيَهْدِىْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ

भी ज़बरदस्त, बड़ी हिकमत वाला।

5. हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ भेजा था कि "अपनी कौम के लोगों को अंधेरों से रौशनी की तरफ़ निकाल ला और उन्हें खुदा के यादगार अय्याम की याद दिला, यक़ीनन इसमें हर सब्र, शुक्र करने वाले के लिए बड़ी निशानियां हैं।

6. जब मूसा ने अपनी क़ौम के लोगों से कहा कि "अल्लाह की उस नवाज़िश को याद करो जो तुमपर हुई है जब उसने तुम्हें फ़िरऔनियों से छुड़ाया, जो तुम्हें बुरा अज़ाब दे रहे थे, तुम्हारे लड़कों को ज़बह कर डालते थे, और तुम्हारी औरतों को ज़िन्दा रखते थे। और उसमें तुम्हारे रब की तरफ़ से बड़ी नवाज़िश हुई,

7. "जब तुम्हारे रब ने ख़बरदार कर दिया था कि 'अगर तुम शुक्रगुज़ार हुए, तो मैं तुम्हें बढ़ाऊंगा, लेकिन अगर तुम नाशुकरे साबित हुए तो यक़ीनन मेरा अज़ाब भी निहायत सख़्त है'।'

8. और मूसा ने यह भी कहा था कि "अगर तुम और ज़मीन में जो भी हैं सबके सब नाशुकरे हो जाओ, तो अल्लाह तो बड़ा बेनियाज़, आप अपनी ज़ात में क़ाबिले तारीफ़ है"।

9. क्या तुम को उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जो तुमसे पहले गुज़रे हैं। नूह की क़ौम, और आद, और समूद और वो लोग जो उनके बाद हुए जिनको अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता? उनके पास उनके रसूल रौशन दलाइल लेकर आए थे; लेकिन उन्होंने उनके मुंह पर अपने हाथ रख दिए और कहने लगे, "जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है हम उसका इनकार करते हैं। और जिसकी तरफ़ तुम हमें बुला रहे हो उसके बारे में तो हम सख़्त ख़लजान आमेज़ शक में हैं"।

10. उनके रसूलों ने कहा, "क्या अल्लाह के बारे में शक है, जो आसमानों और ज़मीन को वुजूद में लाने वाला है, वह तो तुम्हें इसलिए बुला रहा है ताकि तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर दे, और तुम्हें एक मुक़र्रर वक़्त तक मुहलत दे"। उन्होंने कहा, "तुम तो बस हमारे ही जैसे एक इन्सान

लु अज़ीज़ुल्-हकीम (4)

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना अन् अख़्रिज् क़ौम-क मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि व ज़क्किर्हुम् बिअय्यामिल्लाहि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (5)

व इज़् का-ल मूसा लिक़ौमिहिज़्कुरू निअ्म-तल्लाहि अलैकुम् इज़् अन्जाकुम् मिन् आलि फ़िर्औ-न यसूमूनकुम् सूअल्-अज़ाबि व युज़ब्बिहू-न अब्ना-अकुम व यस्तह्यू-न निसा-अकुम्, व फ़ी ज़ालिकुम् बलाउम्-मिर्रब्बिकुम् अज़ीम (6) ●

व इज़् त-अज़्ज़-न रब्बुकुम् ल-इन् श-कर्तुम् ल-अज़ीदन्नकुम् व ल-इन् क-फ़र्तुम् इन्-न अज़ाबी ल-शदीद (7)

व क़ा-ल मूसा इन् तक्फ़ुरू अन्तुम व मन् फ़िलअर्ज़ि जमीअ़न् फ़-इन्नल्ला-ह ल-ग़निय्युन् हमीद (8)

अलम् यअ्तिकुम् न-बउल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकुम् क़ौमि नूहिंव्-व आदिंव्-व समू-द, वल्लज़ी-न मिम्-बअ्दिहिम्, ला यअ्लमुहुम् इल्लल्लाहु, जाअत्हुम् रूसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़-रद्दू ऐदि-यहुम् फ़ी अफ़्वाहिहिम् व क़ालू इन्ना क-फ़र्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही व इन्ना लफ़ी शक्किम् मिम्मा तद्अूनना इलैहि मुरीब ●(9)

क़ालत् रूसुलुहुम् अफ़िल्लाहि शक्कुन् फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि, यद्अूकुम् लियग़्फ़ि-र लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़ि-रकुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन्, क़ालू इन् अन्तुम् इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना,

الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ④
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَآ اَنْ اَخْرِجْ
قَوْمَكَ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۙ وَذَكِّرْهُمْ
بِاَيّٰىمِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ
صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ⑤
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهِ اذْكُرُوْا نِعْمَةَ
اللّٰهِ عَلَيْكُمْ اِذْ اَنْجٰىكُمْ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَسُوْمُوْنَكُمْ سُوْٓءَ الْعَذَابِ وَيُذَبِّحُوْنَ
اَبْنَآءَكُمْ وَيَسْتَحْيُوْنَ نِسَآءَكُمْ ؕ وَفِيْ
ذٰلِكُمْ بَلَآءٌ مِّنْ رَّبِّكُمْ عَظِيْمٌ ⑥
وَاِذْ تَاَذَّنَ رَبُّكُمْ لَئِنْ شَكَرْتُمْ
لَاَزِيْدَنَّكُمْ وَلَئِنْ كَفَرْتُمْ اِنَّ عَذَابِيْ
لَشَدِيْدٌ ⑦
وَقَالَ مُوْسٰٓى اِنْ تَكْفُرُوْٓا اَنْتُمْ وَمَنْ
فِي الْاَرْضِ جَمِيْعًا ۙ فَاِنَّ اللّٰهَ لَغَنِيٌّ
حَمِيْدٌ ⑧
اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِكُمْ
قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ ۛ وَالَّذِيْنَ
مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۛؕ لَا يَعْلَمُهُمْ اِلَّا اللّٰهُ ؕ
جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرَدُّوْٓا
اَيْدِيَهُمْ فِيْۤ اَفْوَاهِهِمْ وَقَالُوْٓا اِنَّا كَفَرْنَا
بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ وَاِنَّا لَفِيْ شَكٍّ مِّمَّا
تَدْعُوْنَنَآ اِلَيْهِ مُرِيْبٍ ⑨
قَالَتْ رُسُلُهُمْ اَفِي اللّٰهِ شَكٌّ فَاطِرِ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَدْعُوْكُمْ لِيَغْفِرَ لَكُمْ
مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرَكُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ؕ قَالُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ؕ

हो; चाहते हो कि हमें उनसे रोक दो जिनकी पूजा हमारे बाप-दादा करते आए हैं; अच्छा तो अब हमारे सामने कोई खुली दलील ले आओ"।

11. उनके रसूलों ने उनसे कहा, "हम वाक़ई हैं तो बस तुम्हारे ही जैसे आदमी; लेकिन अल्लाह अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है एहसान फ़रमाता है। और यह हमारा काम नहीं कि तुम्हारे सामने कोई दलील ले आएं, यह तो बस अल्लाह के हुक्म के बाद ही मुमकिन है; और अल्लाह ही पर मोमिनों को भरोसा करना चाहिए।

12. आख़िर हमें क्या हुआ है कि हम अल्लाह पर भरोसा न करें, जबकि उसने हमारे रास्तों की हमें रहनुमाई बख़्शी? तुम जो तकलीफ़ हमें पहुंचा रहे हो उसपर तो हम सब्र ही करेंगे; भरोसा करने वालों को तो अल्लाह ही पर भरोसा करना चाहिए"।

13. आख़िरकार कुफ़्र इख़्तियार करनेवाले लोगों ने अपने रसूलों से कहा, "हम अपनी सरज़मीन से तुम्हें निकाल कर रहेंगे, या तो फिर तुम्हें हमारी मिल्लत में लौट आना होगा"। तब उनके रब ने उनकी तरफ़ वही की कि "हम ज़ालिमों को हलाक करके रहेंगे,

14. और उनके बाद तुम्हें इस ज़मीन में बसाएंगे। यह उसके लिए है जिसे मेरे हुज़ूर पेशी का ख़ौफ़ हो, और जो मेरी वईद से डरे"।

15. उन्होंने फ़ैसला चाहा, और हर सरकश ज़िद्दी मुख़ालिफ़ नामुराद होकर रहा।

16. वह जहन्नम से घिरा है, और पीने को उसे कचलहू का पानी दिया जाएगा,

17. जिसको मुश्किल से घूंट-घूंट कर के लेगा, और ऐसा नहीं लगेगा कि वह आसानी से उसे उतार सकता है, और मौत उसपर हर तरफ़ से चली आती होगी, फिर भी वह मरेगा नहीं; और उसके सामने सख़्त अज़ाब होगा।

18. जिन लोगों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया उनकी तमसील यह है कि उनके आमाल जैसे राख हों, जिसपर आंधी के दिन सख़्त हवा का झोंका चले; कुछ भी उन्हें अपनी कमाई में से हाथ न आ सकेगा। यही परले दर्जे की तबाही व गुमराही है!

तुरीदू-न अन् तसुद्दूना अ़म्मा का-न यअ्बुदु आबाउना फ़अ्तूना बिसुल्तानिम्-मुबीन (10)

क़ालत् लहुम् रूसुलुहुम् इन् नह्नु इल्ला ब-शरूम्-मिस्लुकुम् व लाकिन्नल्ला-ह यमुन्नु अ़ला मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही, व मा का-न लना अन् नअ्ति-यकुम् बिसुल्तानिन् इल्ला बि- इज़्निल्लाहि, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल्-मुअ्मिनून (11)

व मा लना अल्ला न-तवक्क-ल अ़लल्लाहि व क़द् हदाना सुबु-लना, व लनस्बिरन्-न अ़ला मा आज़ैतुमूना, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल् मु-तवक्किलून (12) ●

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिरूसुलिहिम् लनुख़्रिजन्नकुम् मिन् अर्ज़िना औ-ल तअूदुन्-न फ़ी मिल्लतिना, फ़-औहा इलैहिम् रब्बुहुम् लनुह्लिकन्नज़्-ज़ालिमीन (13)

व लनुस्किनन्न-कुमुल्-अर्-ज़ मिम्-बअ्दिहिम्, ज़ालि-क लिमन् ख़ा-फ़ मक़ामी व ख़ा-फ़ वअ़ीद (14)

वस्तफ़्तहू व ख़ा-ब कुल्लु जब्बारिन् अ़नीद (15)

मिंव्वराइही जहन्नमु व युस्क़ा मिम्-माइन् सदीद (16)

य-तजर्रअुहू व ला यकादु युसीग़ुहू व यअ्तीहिल्-मौतु मिन् कुल्लि मकानिंव्-व मा हु-व बि-मय्यितिन्, व मिंव्वराइही अ़ज़ाबुन् ग़लीज़ (17)

म-सलुल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् अअ्मालुहुम् क-रमादि-निश्तद्दत् बिहिर्रीहु फ़ी यौमिन् आ़सिफ़िन्, ला यक़्दिरू-न मिम्मा क-सबू अ़ला शैइन्, ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बअ़ीद (18)

تُرِيْدُوْنَ اَنْ تَصُدُّوْنَا عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ
اٰبَآؤُنَا فَاْتُوْنَا بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ⑩
قَالَتْ لَهُمْ رُسُلُهُمْ اِنْ نَّحْنُ اِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُكُمْ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ يَمُنُّ عَلٰى مَنْ
يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ ؕ وَمَا كَانَ لَنَآ اَنْ
نَّاْتِيَكُمْ بِسُلْطٰنٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُؤْمِنُوْنَ ⑪
وَمَا لَنَآ اَلَّا نَتَوَكَّلَ عَلَى اللّٰهِ وَقَدْ هَدٰىنَا
سُبُلَنَا ؕ وَلَنَصْبِرَنَّ عَلٰى مَآ اٰذَيْتُمُوْنَا ؕ
وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ⑫
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِرُسُلِهِمْ
لَنُخْرِجَنَّكُمْ مِّنْ اَرْضِنَآ اَوْ لَتَعُوْدُنَّ
فِيْ مِلَّتِنَا ؕ فَاَوْحٰۤى اِلَيْهِمْ رَبُّهُمْ
لَنُهْلِكَنَّ الظّٰلِمِيْنَ ۙ⑬
وَلَنُسْكِنَنَّكُمُ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ؕ
ذٰلِكَ لِمَنْ خَافَ مَقَامِيْ وَخَافَ
وَعِيْدِ ⑭
وَاسْتَفْتَحُوْا وَخَابَ كُلُّ جَبَّارٍ عَنِيْدٍ ۙ⑮
مِّنْ وَّرَآئِهٖ جَهَنَّمُ وَيُسْقٰى مِنْ مَّآءٍ
صَدِيْدٍ ۙ⑯
يَّتَجَرَّعُهٗ وَلَا يَكَادُ يُسِيْغُهٗ وَيَاْتِيْهِ
الْمَوْتُ مِنْ كُلِّ مَكَانٍ وَّمَا هُوَ بِمَيِّتٍ ؕ
وَمِنْ وَّرَآئِهٖ عَذَابٌ غَلِيْظٌ ⑰
مَثَلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ اَعْمَالُهُمْ
كَرَمَادِ ۣ اشْتَدَّتْ بِهِ الرِّيْحُ فِيْ يَوْمٍ
عَاصِفٍ ؕ لَا يَقْدِرُوْنَ مِمَّا كَسَبُوْا عَلٰى
شَيْءٍ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ⑱

19. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को मक़सद के साथ पैदा किया? अगर वह चाहे तो तुम सबको ले जाए और एक नई मख़्लूक़ ले आए,

20. और यह अल्लाह के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है।

21. सबके सब अल्लाह के सामने खुलकर आ जाएंगे; तो कमज़ोर लोग उन लोगों से जो बड़े बने हुए थे कहेंगे, "हम तो तुम्हारे पीछे चलते थे; तो क्या तुम अल्लाह के अज़ाब में से कुछ हम पर से टाल सकते हो?" वो कहेंगे, "अगर अल्लाह हमें राह दिखाता, तो हम तुम्हें भी दिखाते, अब हम जज़अ-फ़ज़अ करें या सब्र से काम लें, हमारे लिए बराबर है; हमारे लिए बचने की कोई जगह नहीं"

22. जब मुआमले का फ़ैसला हो चुकेगा तब शैतान कहेगा कि "अल्लाह ने तो तुमसे सच्चा वादा फ़रमाया था; और मैंने भी तुमसे वादा किया था, फिर मैंने तुमसे ख़िलाफ़े हक़ कहा था, मेरा तुम पर कोई इख़्तियार तो था नहीं सिवाए इसके कि मैंने तुम्हें बुलाया, और तुमने मेरी बात मान ली। तो अब मुझे मलामत न करो, बल्कि अपने आप ही को मलामत करो; न मैं तुम्हारी फ़रियाद सुन सकता हूं, और न तुम मेरी फ़रियाद सुन सकते हो, पहले जो तुमने मुझे शरीक ठहराया था मेरे दिल में तो उसकी कोई क़द्र नहीं, ज़ालिमों के लिए तो दर्दनाक अज़ाब यक़ीनी है"।

23. बख़िलाफ़ इसके जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए, वो ऐसे बागों में दाख़िल होंगे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वो अपने रब के हुक्म से वहां हमेशा रहेंगे, वहां उनका इसतिक़बाल "सलाम!" से होगा।

24. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने कैसी तमसील पेश फ़रमाई? अच्छी पाकीज़ा बात एक अच्छे बाबरकत दरख़्त की तरह है। जिसकी जड़ गहरी जमी हुई हो, और उसकी शाख़ें आसमान में पहुंची हुई हों;

25. अपने रब के हुक्म से वह हर वक़्त अपना फल दे रहा हो। अल्लाह तो लोगों के लिए मिसालें पेश करता है; ताकि उनमें होशमन्दी आए।

अलम् त-र अन्नल्ला-ह ख़-लक़स्-समावाति वल्-अर्-ज़ बिल्-हक़्क़ि, इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्क़िन् जदीद (19)

व मा ज़ालि-क अ़लल्लाहि बि-अ़ज़ीज़ (20)

व ब-रज़ू लिल्लाहि जमीअ़न् फ़क़ालज़्ज़ु-अ़फ़ा-उ लिल्लज़ीनस्-तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-बअ़न् फ़-हल् अन्तुम् मुग़्नू-न अ़न्ना मिन् अ़ज़ाबिल्लाहि मिन् शैइन्, क़ालू लौ हदानल्लाहु ल-हदैनाकुम्, सवाउन् अ़लैना अ-जज़िअ्ना अम् सबर्ना मा लना मिम्-महीस (21) ●

व क़ालश्शैतानु लम्मा क़ुज़ियल्-अम्रु इन्नल्ला-ह व-अ़-दकुम् वअ्दल्-हक़्क़ि व व-अ़त्तुकुम् फ़-अख़्लफ़्तुकुम्, व मा का-न लि-य अ़लैकुम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला अन् दअ़ौतुकुम् फ़स्त-जब्तुम् ली फ़ला तलूमूनी व लूमू अन्फ़ु-सकुम्, मा अ-न बिमुस्रिख़िकुम् व मा अन्तुम् बिमुस्रिख़िय्-य, इन्नी क-फ़र्तु बिमा अश्रक्तुमूनि मिन् क़ब्लु, इन्नज़्ज़ालिमी-न लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (22)

व उद्ख़िलल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा बि-इज़्नि रब्बिहिम्, तहिय्यतुहुम् फ़ीहा सलाम (23)

अलम् त-र कै-फ़ ज़-रबल्लाहु म-सलन् कलि-मतन् तय्यि-बतन् क-श-ज- रतिन् तय्यि-बतिन् अस्लुहा साबितुंव्-व फ़र्अुहा फ़िस्समा-इ (24)

तुअ्ती उकु-लहा कुल्-ल हीनिम्-बि-इज़्नि रब्बिहा, व यज़्रिबुल्लाहुल्-अम्सा-ल लिन्नासि लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (25)

اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَ
الْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ
وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝١٩ۙ
وَّ مَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ۝٢٠
وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ جَمِيْعًا فَقَالَ الضُّعَفٰٓؤُا
لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا
فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا مِنْ عَذَابِ
اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ ؕ قَالُوْا لَوْ هَدٰىنَا اللّٰهُ
لَهَدَيْنٰكُمْ ؕ سَوَآءٌ عَلَيْنَآ اَجَزِعْنَآ اَمْ صَبَرْنَا
مَا لَنَا مِنْ مَّحِيْصٍ ۝٢١ ع
وَقَالَ الشَّيْطٰنُ لَمَّا قُضِيَ الْاَمْرُ اِنَّ
اللّٰهَ وَعَدَكُمْ وَعْدَ الْحَقِّ وَوَعَدْتُّكُمْ
فَاَخْلَفْتُكُمْ ؕ وَمَا كَانَ لِيَ عَلَيْكُمْ مِّنْ
سُلْطٰنٍ اِلَّآ اَنْ دَعَوْتُكُمْ فَاسْتَجَبْتُمْ
لِيْ ۚ فَلَا تَلُوْمُوْنِيْ وَلُوْمُوْٓا اَنْفُسَكُمْ ؕ
مَآ اَنَا بِمُصْرِخِكُمْ وَمَآ اَنْتُمْ بِمُصْرِخِيَّ ؕ
اِنِّيْ كَفَرْتُ بِمَآ اَشْرَكْتُمُوْنِ مِنْ قَبْلُ ؕ
اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٢٢
وَاُدْخِلَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا بِاِذْنِ رَبِّهِمْ ؕ تَحِيَّتُهُمْ فِيْهَا سَلٰمٌ ۝٢٣
اَلَمْ تَرَ كَيْفَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا كَلِمَةً
طَيِّبَةً كَشَجَرَةٍ طَيِّبَةٍ اَصْلُهَا ثَابِتٌ
وَّ فَرْعُهَا فِي السَّمَآءِ ۝٢٤ۙ
تُؤْتِيْٓ اُكُلَهَا كُلَّ حِيْنٍ بِاِذْنِ رَبِّهَا ؕ
وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْاَمْثَالَ لِلنَّاسِ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٢٥

26. और बुरी नापाक बात की मिसाल ऐसी है जैसे एक ख़राब दरख़्त हो जिसे ज़मीन के ऊपर ही से उखाड़ लिया जाए, उसे कुछ भी सबात हासिल न हो।

27. अल्लाह उन लोगों को जो ईमान ले आए मुहकम बात के ज़रिए से दुनिया की ज़िन्दगी में भी और आख़िरत में भी सबात अता करता है; और ज़ालिमों को अल्लाह तबाह और बेठिकाना कर देता है; और अल्लाह जो चाहता है करता है।

28. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने अल्लाह की नेमत को कुफ़्राने नेमत से बदल डाला, और अपनी क़ौम को हलाकत के घर में उतार दिया?

29. (यानी) जहन्नम में, जिसमें वो झोंके जाएंगे; और वह निहायत बुरी जाए क़रार है!

30. उन्होंने अल्लाह के हमसर ठहरा लिए ताकि नतीजतन वो उन्हें उसकी राह से भटका दें। कह दो: "चन्द रोज़ मज़े ले लो; आख़िरकार जाना तुम्हें आग ही की तरफ़ है!"

31. मेरे उन बन्दों से जो ईमान लाए हैं कह दो कि वो नमाज़ की पाबन्दी करें, और उन्हें जो कुछ हमने दिया है उसमें से पोशीदा और अलानिया ख़र्च करें, क़ब्ल इसके कि वह दिन आ जाए जिसमें न कोई ख़रीद व फ़रोख़्त होगी और न दोस्त नवाज़ी ही।

32. वह अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और आसमान से पानी उतारा फिर उसके ज़रिए से कितने ही पैदावार और फल तुम्हारे रिज़्क़ की शक्ल में वुजूद में लाया। और कश्ती को तुम्हारे काम में लगाया ताकि समुंदर में उसके हुक्म से चले; और दरियाओं को भी तुम्हारी नफ़ारसानी में लगाया।

33. और सूरज और चांद को भी तुम्हारे काम में लगाया कि एक क़ानून पर गरदिश में हैं, और रात और दिन को भी तुम्हारी नफ़ारसानी में लगा रखा है,

34. और हर उस चीज़ में से तुम्हें अता किया जो तुमने उससे मांगा। अगर तुम अल्लाह की नेमतों का शुमार करना चाहो तो उन्हें शुमार नहीं कर सकते, हक़ीक़त यह है कि इंसान बड़ा ही बेइन्साफ़, बड़ा ही नाशुक्रा है!

व म-सलु कलि-मतिन् ख़बीसतिन् क-श-ज-रतिन् ख़बीसति-निज्तुस्सत् मिन् फ़ौक़िल्अर्ज़ि मा लहा मिन् क़रार (26)

युसब्बितुल्लाहुल्लज़ी-न आमनू बिल्क़ौलिस्-साबिति फ़िल्हयातिद्दुन्या व फ़िल्-आख़िरति व युज़िल्लुल्लाहुज़्ज़ालिमी-न व यफ़्अलुल्लाहु मा-यशा-उ (27) ●

अलम् त-र इलल्लज़ी-न बद्दलू निअ्-मतल्लाहि कुफ़्रंव्-व अ-हल्लू क़ौमहुम् दारल्-बवार (28)

जहन्न-म यस्लौनहा, व बिअ्सल्क़रार (29)

व ज-अलू लिल्लाहि अन्दादल्-लियुज़िल्लू अन् सबीलिही, क़ुल् त-मत्तअू फ़-इन्-न मसीरकुम् इलन्नार (30)

क़ुल् लिअिबादियल्लज़ी-न आमनू युक़ीमुस्सला-त व युन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम् सिर्रंव्-व अलानि-यतम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्-ला बैअुन् फ़ीहि व ला ख़िलाल (31)

अल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वलअर्-ज़ व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अख़्र-ज बिही मिनस्स-मराति रिज़्क़ल्लकुम् व सख़्ख़-र लकुमुल्फ़ुल्-क लितज्रि-य फ़िल्-बह्रि बि-अम्रिही व सख़्ख़-र लकुमुल्-अन्हार (32)

व सख़्ख़-र लकुमुश्शम्-स वल्-क़-म-र दाइबैनि व सख़्ख़-र लकुमुल्-लै-ल वन्नहार (33)

व आताकुम् मिन् कुल्लि मा स-अल्तुमूहु, व इन् तअुद्दू निअ्-मतल्लाहि ला तुह्सूहा, इन्नल्-इन्सा-न ल-ज़लूमुन् कफ़्फ़ार (34) ●

وَمَثَلُ كَلِمَةٍ خَبِيْثَةٍ كَشَجَرَةٍ خَبِيْثَةِ اِجْتُثَّتْ مِنْ فَوْقِ الْاَرْضِ مَا لَهَا مِنْ قَرَارٍ ۲۶

يُثَبِّتُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْقَوْلِ الثَّابِتِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَفِي الْاٰخِرَةِ ۚ وَيُضِلُّ اللّٰهُ الظّٰلِمِيْنَ ۙ وَيَفْعَلُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ۲۷

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ بَدَّلُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ كُفْرًا وَّاَحَلُّوْا قَوْمَهُمْ دَارَ الْبَوَارِ ۲۸

جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۭ وَبِئْسَ الْقَرَارُ ۲۹

وَجَعَلُوْا لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلُّوْا عَنْ سَبِيْلِهٖ ۭ قُلْ تَمَتَّعُوْا فَاِنَّ مَصِيْرَكُمْ اِلَى النَّارِ ۳۰

قُلْ لِّعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا يُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَيُنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا وَّعَلَانِيَةً مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا بَيْعٌ فِيْهِ وَلَا خِلٰلٌ ۳۱

اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَخْرَجَ بِهٖ مِنَ الثَّمَرٰتِ رِزْقًا لَّكُمْ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْفُلْكَ لِتَجْرِيَ فِي الْبَحْرِ بِاَمْرِهٖ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الْاَنْهٰرَ ۳۲

وَسَخَّرَ لَكُمُ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ دَآئِبَيْنِ ۚ وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۳۳

وَاٰتٰىكُمْ مِّنْ كُلِّ مَا سَاَلْتُمُوْهُ ۭ وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۭ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَظَلُوْمٌ كَفَّارٌ ۳۴

35. याद करो जब इबराहीम ने कहा था कि "मेरे रब, इस सरज़मीन को पुर अमन बना दे, और मुझे और मेरी औलाद को इससे बचा कि हम बुतों को पूजने लग जाएं;

36. मेरे रब, उन्होंने तो अकसर लोगों को गुमराह किया है। पस जिस किसी ने मेरी पैरवी की वह तो मेरा है; और जिसने मेरी नाफ़रमानी की तो यक़ीनन तू बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला है।

37. हमारे रब, मैंने एक ऐसी वादी में जहां खेती के लायक़ ज़मीन नहीं अपनी औलाद का एक हिस्सा तेरे मुहतरम घर के पास बसा दिया है; हमारे रब, ताकि वो नमाज़ क़ायम करें, लिहाज़ा तू ऐसा कर दे कि लोगों के दिल उनकी तरफ़ माइल हों, और उन्हें फलों और पैदावार की रोज़ी दे; ताकि वो शुक्रगुज़ार हों।

38. हमारे रब, तू तो जानता ही है जो कुछ हम छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं; अल्लाह से तो कोई भी चीज़ न ज़मीन में छुपी है और न आसमान में।

39. तारीफ़ है उस अल्लाह की जिसने मुझे बुढ़ापे के बावजूद इसमाईल और इसहाक़ दिए; यक़ीनन मेरा रब दुआ ज़रूर सुनता है।

40. मेरे रब, मुझे ऐसा कर कि मैं नमाज़ का एहतिमाम करूं, और मेरी औलाद को भी यह तौफ़ीक़ दे। हमारे रब, और हमारी दुआ क़बूल कर ले।

41. हमारे रब, मुझे और मेरे वालिदैन को और मोमिनीन को उस दिन बख़्श देना जिस दिन हिसाब का मुआमला पेश आएगा"।

42. अब ये ज़ालिम जो कुछ कर रहे हैं उससे अल्लाह को ग़ाफ़िल न समझो; वह तो उन्हें बस उस दिन के लिए टाल रहा है जबकि आंखें फटी की फटी रह जाएंगी,

43. वो अपने सर उठाए भागे चले जा रहे होंगे, उनकी निगाह ख़ुद उनकी अपनी तरफ़ भी न फिरेगी, और उनके

व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु रब्बिज्अ़ल् हाज़ल्-ब-ल-द आमिनंव्-वज्नुब्नी व बनिय्-य अन् नअ़्बुदल्-अस्नाम (35)

रब्बि इन्नहुन्-न अज़्लल्-न कसीरम्-मिनन्नासि फ़-मन् तबि-अ़नी फ़-इन्नहू मिन्नी व मन् अ़सानी फ़इन्न-क ग़फ़ूरुर् रहीम (36)

रब्बना इन्नी अस्कन्तु मिन् ज़ुर्रिय्यती बिवादिन् ग़ैरि ज़ी-ज़र्अ़िन् अ़िन्-द बैतिकल्-मुहर्रमि रब्बना लियुक़ीमुस्सला-त फ़ज्अ़ल् अफ़्इ-दतम् मिनन्नासि तह्वी इलैहिम् वर्ज़ुक़्हुम् मिनस्स-मराति लअ़ल्लहुम् यश्कुरून (37)

रब्बना इन्न-क तअ़्लमु मा नुख़्फ़ी व मा नुअ़्लिनु, व मा यख़्फ़ा अ़लल्लाहि मिन् शैइन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ (38)

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी व-ह-ब ली अ़लल्-कि-बरि इस्माअ़ी-ल व इस्हा-क़, इन्-न रब्बी ल-समीअुद्-दुआ़-इ (39)

रब्बिज्अ़ल्नी मुक़ीमस्सलाति व मिन् ज़ुर्रिय्यती रब्बना व तक़ब्बल् दुआ़-इ (40)

रब्बनग़्फ़िर् ली व लिवालिदय्-य व लिल्मुअ़्मिनी-न यौ-म यक़ूमुल्-हिसाब (41) ●

व ला तह्स-बन्नल्ला-ह ग़ाफ़िलन् अ़म्मा यअ़्मलुज़्ज़ालिमू-न, इन्नमा युअख़्ख़िरुहुम् लियौमिन् तश्ख़सु फ़ीहिल्-अब्सार (42)

मुह्तिअ़ी-न मुक़्निअ़ी रूअसिहिम् ला यर्तद्दु इलैहिम् तर्फ़ुहुम् व अफ़्इ-दतुहुम्

وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ ﴿٣٥﴾

رَبِّ اِنَّهُنَّ اَضْلَلْنَ كَثِيْرًا مِّنَ النَّاسِ ۚ فَمَنْ تَبِعَنِيْ فَاِنَّهٗ مِنِّيْ ۚ وَمَنْ عَصَانِيْ فَاِنَّكَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٣٦﴾

رَبَّنَآ اِنِّيْٓ اَسْكَنْتُ مِنْ ذُرِّيَّتِيْ بِوَادٍ غَيْرِ ذِيْ زَرْعٍ عِنْدَ بَيْتِكَ الْمُحَرَّمِ ۙ رَبَّنَا لِيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ فَاجْعَلْ اَفْئِدَةً مِّنَ النَّاسِ تَهْوِيْٓ اِلَيْهِمْ وَارْزُقْهُمْ مِّنَ الثَّمَرٰتِ لَعَلَّهُمْ يَشْكُرُوْنَ ﴿٣٧﴾

رَبَّنَآ اِنَّكَ تَعْلَمُ مَا نُخْفِيْ وَمَا نُعْلِنُ ۗ وَمَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ مِنْ شَيْءٍ فِي الْاَرْضِ وَلَا فِي السَّمَآءِ ﴿٣٨﴾

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ وَهَبَ لِيْ عَلَى الْكِبَرِ اِسْمٰعِيْلَ وَاِسْحٰقَ ۗ اِنَّ رَبِّيْ لَسَمِيْعُ الدُّعَآءِ ﴿٣٩﴾

رَبِّ اجْعَلْنِيْ مُقِيْمَ الصَّلٰوةِ وَمِنْ ذُرِّيَّتِيْ ۖ رَبَّنَا وَتَقَبَّلْ دُعَآءِ ﴿٤٠﴾

رَبَّنَا اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ يَوْمَ يَقُوْمُ الْحِسَابُ ﴿٤١﴾ ع ١٨

وَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ غَافِلًا عَمَّا يَعْمَلُ الظّٰلِمُوْنَ ۗ اِنَّمَا يُؤَخِّرُهُمْ لِيَوْمٍ تَشْخَصُ فِيْهِ الْاَبْصَارُ ﴿٤٢﴾

مُهْطِعِيْنَ مُقْنِعِيْ رُءُوْسِهِمْ لَا يَرْتَدُّ اِلَيْهِمْ طَرْفُهُمْ ۚ وَاَفْئِدَتُهُمْ

दिल उड़े जा रहे होंगे।

44. लोगों को उस दिन का ख़ौफ़ दिलाओ जब अज़ाब उन्हें आ लेगा, उस वक़्त ज़ुल्म पेशा लोग कहेंगे कि "हमारे रब, हमें थोड़ी सी मुहलत दे दे, हम तेरी दावत क़बूल करेंगे, और रसूलों की पैरवी इख़्तियार करेंगे"। "क्या तुम इससे पहले क़समें नहीं खाया करते थे कि तुम्हारा तो ज़वाल ही न होगा?

45. तुम उन लोगों की बस्तियों में जिन्होंने ख़ुद अपने साथ ज़ुल्म किया था रह-बस चुके थे, और तुमपर अच्छी तरह वाज़ेह हो चुका था कि हमने उनके साथ कैसा मुआमला किया, और हमने तुम्हारे लिए कितनी ही मिसालें बयान की थीं!'

46. वो अपनी चाल चल चुके हैं, अल्लाह के पास भी उनके लिए चाल मौजूद थी, ख़्वाह उनकी चाल ऐसी ही क्यों न रही हो जिससे पहाड़ भी अपनी जगह से सरक जाए।

47. पस यह न समझना कि अल्लाह अपने रसूलों से किए हुए अपने वादे के ख़िलाफ़ जाएगा; अल्लाह तो ज़बरदस्त है, इंतिक़ाम लेनेवाला है।

48. जिस दिन यह ज़मीन दूसरी ज़मीन से बदल दी जाएगी, और आसमान भी, और वो सब उस अल्लाह के सामने खुलकर आ जाएंगे, जो अकेला है, सब पर ग़ालिब है,

49. और उस दिन तुम मुजरिमों को देखोगे कि ज़ंजीरों में जकड़े हुए हैं,

50. उनके लिबास तारकोल के होंगे, और आग उनके चेहरों पर छा रही होगी,

51. ताकि अल्लाह हर नफ़्स को उस की कमाई का बदला दे; यक़ीनन अल्लाह जल्द हिसाब लेने वाला है।

52. यह लोगों के लिए एक पैग़ाम रसानी है ताकि उन्हें इसके ज़रिए से ख़बरदार कर दिया जाए और ताकि वो जान लें कि वही अकेला माबूद है, और ताकि जो अक़्ल व ख़िरदवाले हैं उन्हें होश आ जाए।

हवा-अ् (43)

व अन्ज़िरिन्ना-स यौ-म यअ्तीहिमुल् अ़ज़ाबु फ़-यक़ूलुल्लज़ी-न ज़-लमू रब्बना अख़्ख़िर्ना इला अ-जलिन् क़रीबिन् नुजिब् दअ्व-त-क व नत्तबिअ़िर्रूसु-ल, अ-व-लम् तकूनू अक़्सम्तुम् मिन् क़ब्लु मा लकुम् मिन् ज़वाल् (44)

व सकन्तुम् फ़ी मसाकिनिल्लज़ी-न ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् व तबय्य-न लकुम् कै-फ़ फ़अ़ल्ना बिहिम् व ज़रब्ना लकुमुल्-अम्साल (45)

व क़द् म-करू मक्रहुम् व अ़िन्दल्लाहि मक्रुहुम्, व इन् का-न मक्रुहुम् लि-तज़ू-ल मिन्हुल्-जिबाल (46)

फ़ला तह्स-बन्नल्ला-ह मुख़्लि-फ़ वअ्दिही रूसु-लहू, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् ज़ुन्तिक़ाम (47)

यौ-म तुबद्दलुल्-अर्ज़ु ग़ैरल्-अर्ज़ि वस्समावातु व ब-रज़ू लिल्लाहिल् वाहिदिल्-क़ह्हार (48)

व तरल्मुज्रिमी-न यौ-मइज़िम् मुक़र्रनी-न फ़िल्-अस्फ़ाद (49)

सराबीलुहुम् मिन् क़तिरानिंव्-व तग़्शा वुजू-हहुमुन्नार (50)

लियज्ज़ियल्लाहु कुल्-ल नफ़्सिम् मा-क-सबत्, इन्नल्ला-ह सरीअ़ुल्-हिसाब (51)

हाज़ा बलाग़ुल्-लिन्नासि व लियुन्ज़रू बिही व लि-यअ्लमू अन्नमा हु-व इलाहुंव्वाहिदुंव्-व लि-यज़्ज़क्क-र उलुल्-अल्बाब (52) ●

هَوَآءٌ ㊸

وَاَنْذِرِ النَّاسَ يَوْمَ يَاْتِيْهِمُ الْعَذَابُ
فَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا رَبَّنَآ اَخِّرْنَآ
اِلٰٓى اَجَلٍ قَرِيْبٍۙ نُّجِبْ دَعْوَتَكَ
وَنَتَّبِعِ الرُّسُلَؕ اَوَلَمْ تَكُوْنُوْٓا اَقْسَمْتُمْ
مِّنْ قَبْلُ مَا لَكُمْ مِّنْ زَوَالٍۙ ㊹
وَّسَكَنْتُمْ فِيْ مَسٰكِنِ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ وَتَبَيَّنَ لَكُمْ كَيْفَ فَعَلْنَا بِهِمْ
وَضَرَبْنَا لَكُمُ الْاَمْثَالَ ㊺
وَقَدْ مَكَرُوْا مَكْرَهُمْ وَعِنْدَ اللّٰهِ مَكْرُهُمْؕ
وَاِنْ كَانَ مَكْرُهُمْ لِتَزُوْلَ مِنْهُ الْجِبَالُ ㊻
فَلَا تَحْسَبَنَّ اللّٰهَ مُخْلِفَ وَعْدِهٖ رُسُلَهٗؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَزِيْزٌ ذُو انْتِقَامٍؕ ㊼
يَوْمَ تُبَدَّلُ الْاَرْضُ غَيْرَ الْاَرْضِ
وَالسَّمٰوٰتُ وَبَرَزُوْا لِلّٰهِ الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ㊽
وَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ يَوْمَئِذٍ مُّقَرَّنِيْنَ
فِي الْاَصْفَادِۚ ㊾
سَرَابِيْلُهُمْ مِّنْ قَطِرَانٍ وَّتَغْشٰى وُجُوْهَهُمُ النَّارُۙ ㊿
لِيَجْزِيَ اللّٰهُ كُلَّ نَفْسٍ مَّا كَسَبَتْؕ
اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ (51)
هٰذَا بَلٰغٌ لِّلنَّاسِ وَلِيُنْذَرُوْا بِهٖ وَلِيَعْلَمُوْٓا
ع اَنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ وَّلِيَذَّكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ (52)

सूरह अल-हिज्र मक्की

(आयतें 99, रुकूआत 6)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-रा। यह किताब यानी वाज़ेह क़ुरआन की आयतें हैं।

2. ऐसे बहुत वक़्त आएंगे जब कुफ़्र इख़्तियार करने वाले लोग आरज़ू करेंगे कि काश वो मुस्लिम होते;

3. छोड़ो उन्हें खाएं, और मज़े उड़ाएं, और लम्बी उम्मीद उन्हें भुलावे में डाले रखे; उन्हें जल्द ही मालूम हो जाएगा।

4. हमने जिस बस्ती को भी हलाक किया है, उसके लिए एक मुअय्यन नविश्ता रहा है।

5. कोई उम्मत न अपने मुक़र्रर वक़्त से आगे बढ़ सकती है, और न वो पीछे रह सकती हैं।

6. वो कहते हैं, "ऐ वह शख़्स जिसपर याददिहानी नाज़िल हुई है, तुम यक़ीनन दिवाने हो!

7. अगर तुम सच्चे हो, तो हमारे सामने फ़रिश्तों को क्यों नहीं ले आते?"

8. फ़रिश्तों को तो हम सिर्फ़ मक़सदे हक़ ही के लिए उतारते हैं, और उस वक़्त उन्हें मुहलत न मिलने की।

9. यह याददिहानी हमने नाज़िल की है, और हम ख़ुद उसके निगहबान हैं।

10. और तुमसे पहले अगले गिरोहों में भी हम रसूल भेज चुके हैं,

11. कोई भी रसूल उनके पास ऐसा नहीं आया जिसका उन्होंने मज़ाक़ न उड़ाया हो;

12. इसी तरह हम मुजरिमों के दिलों में उसे उतारते हैं।

13. वो उसे मानने के नही, अगलों की सुन्नत गुज़र चुकी है।

14. अगर हम उनपर आसमान का कोई दरवाज़ा खोल दें, और वो

---

15 सूरतुल्–हिज्रि

(मक्की) इस सूराः में अ़रबी के 2907 अक्षर, 663 शब्द, 99 आयतें और 6 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-रा,। तिल्-क आयातुल्-किताबि व क़ुर्‌आनिम्-मुबीन (1)

रु-बमा यवद्दुल्लज़ी-न क-फ़रू लौ कानू मुस्लिमीन (2)

ज़रहुम् यअ्कुलू व य-यमत्तअू व युल्हिहिमुल्-अ-मलु फ़सौ-फ़ यअ्लमून (3)

व मा अह्लक्ना मिन् क़र्‌यतिन् इल्ला व लहा किताबुम्-मअ्लूम (4)

मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ-ज-लहा व मा यस्तअ्ख़िरून (5)

व क़ालू या अय्युहल्लज़ी नुज़्ज़ि-ल अ़लैहिज़्ज़िक्रु इन्न-क ल-मज्नून (6)

लौ मा तअ्तीना बिल्मलाइ-कति इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (7)

मा नुनज़्ज़िलुल्-मलाइ-क-त इल्ला बिल्हक़्क़ि व मा कानू इज़म्-मुन्ज़रीन (8)

इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्-नज़्ज़िक्-र व इन्ना लहू लहाफ़िज़ून (9)

व ल-क़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क फ़ी शि-यअ़िल्-अव्वलीन (10)

व मा यअ्तीहिम् मिर्रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (11)

कज़ालि-क नस्लुकुहू फ़ी क़ुलूबिल्-मुज्रिमीन (12)

ला युअ्मिनू-न बिही व क़द् ख़लत् सुन्नतुल्-अव्वलीन (13)

व लौ फ़तह्ना अ़लैहिम् बाबम्-मिनस्समा-इ

سُوْرَةُ الْحِجْرِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٩٩ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓرٰ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ وَقُرْاٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝١
رُبَمَا يَوَدُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْ كَانُوْا
مُسْلِمِيْنَ ۝٢
ذَرْهُمْ يَاْكُلُوْا وَيَتَمَتَّعُوْا وَيُلْهِهِمُ
الْاَمَلُ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٣
وَمَاۤ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍ اِلَّا وَلَهَا
كِتَابٌ مَّعْلُوْمٌ ۝٤
مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا
يَسْتَاْخِرُوْنَ ۝٥
وَقَالُوْا يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْ نُزِّلَ عَلَيْهِ الذِّكْرُ
اِنَّكَ لَمَجْنُوْنٌ ۝٦
لَوْ مَا تَاْتِيْنَا بِالْمَلٰٓئِكَةِ اِنْ كُنْتَ
مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٧
مَا نُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ اِلَّا بِالْحَقِّ وَمَا
كَانُوْۤا اِذًا مُّنْظَرِيْنَ ۝٨
اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا الذِّكْرَ وَاِنَّا لَهٗ
لَحٰفِظُوْنَ ۝٩
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ شِيَعِ
الْاَوَّلِيْنَ ۝١٠
وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١١
كَذٰلِكَ نَسْلُكُهٗ فِيْ قُلُوْبِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝١٢
لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ وَقَدْ خَلَتْ سُنَّةُ
الْاَوَّلِيْنَ ۝١٣
وَلَوْ فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا مِّنَ السَّمَآءِ

दिन दहाड़े उसमें चढ़ने भी लगें,

15. फिर भी वो यही कहेंगे कि "हमारी आंखों में ख़ुमार है; बल्कि हम लोगों पर जादू कर दिया गया है!"

16. हमने आसमान में बुर्ज बनाए और देखनेवालों के लिए उसे सजाया,

17. और हर शैतान मरदूद से उसे महफ़ूज़ रखा —

18. यह और बात है कि किसी ने चोरी-छुपे कुछ सुनगुन ले लिया तो एक साफ़ शोले ने झपटकर उसे अपने पीछे कर लिया।

19. और ज़मीन को हमने फैलाया, और उसमें अटल पहाड़ डाल दिए, और उसमें हर चीज़ नपे-तुले अन्दाज़ से उगाई।

20. और उसमें तुम्हारे लिए ज़िन्दगी के सारे सामान मुहय्या किए, और वो मख़लूक़ भी, जिन्हें रिज़्क़ अता करने वाले तुम नहीं हो।

21. कोई भी चीज़ ऐसी नहीं है जिसके ख़ज़ाने हमारे पास न हों, फिर भी हम उसे एक मालूम व मुक़र्रर अन्दाज़े के साथ उतारते हैं।

22. हम ही हवाओं को बार आवर बनाकर भेजते हैं, फिर आसमान से पानी उतारते हैं, और उससे तुम्हें सैराब करते हैं, उसके ख़ज़ानादार तुम नहीं हो।

23. हम ही ज़िन्दगी और मौत देते हैं, और हम ही वारिस रह जाते हैं।

24. हम तुम्हारे अगलों को भी जानते हैं, और बाद के आने वाले भी हमारे इल्म में हैं,

25. तुम्हारा रब ही है जो उन्हें इकट्ठा करेगा, बेशक वह हिकमत वाला, सब कुछ जानने वाला है।

26. हमने इंसान को सड़े हुए सूखे गारे की मिट्टी से बनाया है,

27. और उससे पहले हम जिन्नों को लू की लपट से पैदा कर चुके थे।

फ़ज़ल्लू फ़ीहि यअ्रुजून (14)

लक़ालू इन्नमा सुक्किरत् अब्सारुना बल् नह्नु क़ौमुम्-मस्हूरून (15) ●

व ल-क़द् जअ़ल्ना फ़िस्समा-इ बुरूजंव्-व ज़य्यन्नाहा लिन्नाज़िरीन (16)

व हफ़िज़्नाहा मिन् कुल्लि शैतानिर्रजीम (17)

इल्ला मनिस्त-रक़स्सम्-अ फ़अत्ब-अहू शिहाबुम्-मुबीन (18)

वल्अर्-ज़ मदद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि शैइम्-मौज़ून (19)

व जअ़ल्ना लकुम् फ़ीहा मआयि-श व मल्लस्तुम् लहू बिराज़िक़ीन (20)

व इम्मिन् शैइन् इल्ला अ़िन्दना ख़ज़ाइनुहू व मा नुनज़्ज़िलुहू इल्ला बि-क़-दरिम्-मअ्लूम (21)

व अर्सल्नर्रिया-ह लवाक़ि-ह फ़-अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ माअन् फ़-अस्क़ैनाकुमूहु व मा अन्तुम् लहू बिख़ाज़िनीन (22)

व इन्ना ल-नह्नु नुह्यी व नुमीतु व नह्नुल्-वारिसून (23)

व ल-क़द् अ़लिम्नल्-मुस्तक़्दिमी-न मिन्कुम् व ल-क़द् अ़लिम्नल्-मुस्तअ्ख़िरीन (24)

व इन्-न रब्ब-क हु-व यह्शुरुहुम्, इन्नहू हकीमुन् अ़लीम (25) ●

व ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न मिन् सल्सालिम् मिन् ह-मइम्-मस्नून .(26)

वल्जान्-न ख़लक़्नाहु मिन् क़ब्लु मिन्-नारिस्समूम (27)

فَظَلُّوْا فِيْهِ يَعْرُجُوْنَ ۝١٤
لَقَالُوْٓا اِنَّمَا سُكِّرَتْ اَبْصَارُنَا بَلْ
ع نَحْنُ قَوْمٌ مَّسْحُوْرُوْنَ ۝١٥
وَلَقَدْ جَعَلْنَا فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا
وَّزَيَّنّٰهَا لِلنّٰظِرِيْنَ ۝١٦
وَحَفِظْنٰهَا مِنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ۝١٧
اِلَّا مَنِ اسْتَرَقَ السَّمْعَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ
مُّبِيْنٌ ۝١٨
وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا
رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ شَيْءٍ
مَّوْزُوْنٍ ۝١٩
وَجَعَلْنَا لَكُمْ فِيْهَا مَعَايِشَ وَمَنْ لَّسْتُمْ
لَهٗ بِرٰزِقِيْنَ ۝٢٠
وَاِنْ مِّنْ شَيْءٍ اِلَّا عِنْدَنَا خَزَآئِنُهٗ
وَمَا نُنَزِّلُهٗٓ اِلَّا بِقَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ۝٢١
وَاَرْسَلْنَا الرِّيٰحَ لَوَاقِحَ فَاَنْزَلْنَا مِنَ
السَّمَآءِ مَآءً فَاَسْقَيْنٰكُمُوْهُ ۚ وَمَآ اَنْتُمْ
لَهٗ بِخٰزِنِيْنَ ۝٢٢
وَاِنَّا لَنَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيْتُ وَنَحْنُ الْوٰرِثُوْنَ ۝٢٣
وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَقْدِمِيْنَ مِنْكُمْ
وَلَقَدْ عَلِمْنَا الْمُسْتَاْخِرِيْنَ ۝٢٤
وَاِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَحْشُرُهُمْ ۭ اِنَّهٗ حَكِيْمٌ
ع عَلِيْمٌ ۝٢٥
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ
مِّنْ حَمَاٍ مَّسْنُوْنٍ ۝٢٦
وَالْجَآنَّ خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ مِنْ نَّارِ
السَّمُوْمِ ۝٢٧

28. याद करो जबकि तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि "मैं सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से एक इन्सान पैदा करने वाला हूं।

29. तो जब मैं उसे पूरा बना चुकूं और उसमें अपनी रूह फूंक दूं, तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना!"

30. चुनांचे सबके सब फ़रिश्तों ने सजदा किया।

31. सिवाय इबलीस के; उसने इससे इनकार किया कि सजदा करनेवालों में शामिल हो।

32. कहा, "ऐ इबलीस, तुझे क्या हुआ है कि तू सजदा करनेवालों में शामिल न हुआ?"

33. उसने कहा, "मैं ऐसा नहीं हूं कि इन्सान को सजदा करूं जिसको तूने सड़े हुए गारे की खनखनाती हुई मिट्टी से बनाया"।

34. कहा, "अच्छा तू निकल यहां से; क्योंकि तू मरदूद है।

35. यक़ीनन तुझपर रोज़-ए-जज़ा तक लानत है"।

36. उसने कहा, "मेरे रब, फिर तू मुझे उस दिन तक के लिए मुहलत दे जबकि सब उठाए जाएंगे"।

37. कहा, "अच्छा तुझे मुहलत है।"

38. उस दिन तक के लिए जिसका वक़्त मालूम व मुतअय्यन है"।

39. उसने कहा, "मेरे रब, चूंकि तूने मुझे रास्ते से अलग कर दिया है, इसलिए मैं भी ज़मीन में उनके लिए खुशनुमाइयां पैदा करूंगा, और उन सब को बहका कर रहूंगा,

40. सिवाय उनके जो उनमें तेरे ख़ालिस बन्दे होंगे"।

41. कहा, "मुझ तक पहुंचने का यही सीधा रास्ता है।

42. मेरे बन्दों पर तो तेरा ज़ोर चलने का नहीं, सिवाय उन बहके हुए लोगों के जो तेरे पीछे हो लें;

43. यक़ीनन जहन्नम ही का ऐसे तमाम लोगों से वादा है।

44. उसके सात दरवाज़े हैं, हर दरवाज़े के लिए उनमें एक हिस्सा बटा हुआ होगा"।

45. यक़ीनन डर रखनेवाले बाग़ों और चश्मों में होंगे:

व इज़् क़ा-ल रब्बु-क लिल्मलाइ-कति इन्नी ख़ालिकुम् ब-शरम्-मिन् सल्सालिम् मिन् ह-मइम्-मस्नून (28)

फ़-इज़ा सव्वैतुहू व नफ़ख़्तु फ़ीहि मिर्रूही फ़-क़अू लहू साजिदीन (29)

फ़-स-जदल्-मलाइ-कतु कुल्लुहुम् अज्मअून (30)

इल्ला इब्ली-स, अबा अंय्यकू-न मअ़स्साजिदीन (31)

क़ा-ल या इब्लीसु मा-ल-क अल्ला तकू-न मअ़स्साजिदीन (32)

क़ा-ल लम् अकुल्-लिअस्जु-द लि-ब-शरिन् ख़ालक़्तहू मिन् सल्सालिम्-मिन् ह-मइम्-मस्नून (33)

क़ा-ल फ़ख़्रुज् मिन्हा फ़-इन्न-क रजीम (34)

व इन्-न अ़लैकल्लअ्-न-त इला यौमिद्दीन (35)

क़ा-ल रब्बि फ़-अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्अ़सून (36)

क़ा-ल फ़-इन्न-क मिनल्-मुन्ज़रीन (37)

इला यौमिल् वक़्तिल्-मअ़्लूम (38)

क़ा-ल रब्बि बिमा अग्वैतनी ल-उज़य्यिनन्-न लहुम् फ़िल्अर्ज़ि व ल-उग्वियन्नहुम् अज्मअ़ीन (39)

इल्ला अ़िबाद-क मिन्हुमुल्-मुख़्लसीन (40)

क़ा-ल हाज़ा सिरातुन् अ़लय्-य मुस्तक़ीम (41)

इन्-न अ़िबादी लै-स ल-क अ़लैहिम् सुल्तानुन् इल्ला मनित्त-ब-अ़-क मिनल्-ग़ावीन (42)

व इन्-न जहन्न-म लमौअ़िदुहुम् अज्मअ़ीन (43)

लहा सब्-अ़तु अब्वाबिन्, लिकुल्लि बाबिम् मिन्हुम् जुज़्उम्-मक़्सूम (44)●

इन्नल् मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयून (45)

وَإِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ إِنِّي خَالِقٌۢ
بَشَرًا مِّنْ صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ٢٨
فَإِذَا سَوَّيْتُهُ وَنَفَخْتُ فِيهِ مِن رُّوحِي
فَقَعُوا لَهُ سٰجِدِينَ ٢٩
فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ أَجْمَعُونَ ٣٠
إِلَّآ إِبْلِيسَ ۖ أَبَىٰٓ أَن يَكُونَ مَعَ
السّٰجِدِينَ ٣١
قَالَ يٰٓإِبْلِيسُ مَا لَكَ أَلَّا تَكُونَ مَعَ
السّٰجِدِينَ ٣٢
قَالَ لَمْ أَكُن لِّأَسْجُدَ لِبَشَرٍ خَلَقْتَهُ مِن
صَلْصَالٍ مِّنْ حَمَإٍ مَّسْنُونٍ ٣٣
قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَإِنَّكَ رَجِيمٌ ٣٤
وَإِنَّ عَلَيْكَ اللَّعْنَةَ إِلَىٰ يَوْمِ
الدِّينِ ٣٥
قَالَ رَبِّ فَأَنظِرْنِيٓ إِلَىٰ يَوْمِ يُبْعَثُونَ ٣٦
قَالَ فَإِنَّكَ مِنَ الْمُنظَرِينَ ٣٧
إِلَىٰ يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُومِ ٣٨
قَالَ رَبِّ بِمَآ أَغْوَيْتَنِي لَأُزَيِّنَنَّ لَهُمْ
فِي الْأَرْضِ وَلَأُغْوِيَنَّهُمْ أَجْمَعِينَ ٣٩
إِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِينَ ٤٠
قَالَ هٰذَا صِرَاطٌ عَلَيَّ مُسْتَقِيمٌ ٤١
إِنَّ عِبَادِي لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ
إِلَّا مَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ الْغَاوِينَ ٤٢
وَإِنَّ جَهَنَّمَ لَمَوْعِدُهُمْ أَجْمَعِينَ ٤٣
لَهَا سَبْعَةُ أَبْوَابٍ ۖ لِّكُلِّ بَابٍ مِّنْهُمْ
ع جُزْءٌ مَّقْسُومٌ ٤٤
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَعُيُونٍ ٤٥

46. "दाख़िल हो जाओ उसमें, बेख़ौफ़ होकर सलामती के साथ!"

47. उनके सीनों में जो कदूरत होगी उसे हम निकाल देंगे; वो भाई-भाई होकर आमने-सामने तख़्तों पर होंगे;

48. उन्हें वहां न कोई तकान और तकलीफ़ पहुंचेगी, और न वो वहां से कभी निकाले ही जाएंगे।

49. मेरे बन्दों को ख़बर दे दो कि मैं बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला हूं,

50. और यह कि मेरा अज़ाब भी निहायत दर्दनाक अज़ाब है।

51. और उन्हें इबराहीम के मेहमानों का हाल सुनाओ,

52. जब वो उसके पास आए, और उन्होंने सलाम किया, तो उसने कहा, "हमें तो तुमसे डर लग रहा है"।

53. वो बोले, "डरो नहीं; हम तुम्हें एक ज़ी इल्म लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं"।

54. उसने कहा, "क्या तुम मुझे ख़ुशख़बरी दे रहे हो, इसके बावजूद कि मुझ पर बुढ़ापा आ गया है? तो अब मुझे किस बात की ख़ुशख़बरी दे रहे हो?"

55. उन्होंने कहा, "हम तुम्हें बरहक़ बशारत दे रहे हैं तो तुम मायूस न हो"।

56. उसने कहा, "अपने रब की रहमत से गुमराहों के सिवा और कौन मायूस होगा?"

57. उसने कहा, "ऐ फ़िरस्तादो, किस मुहिम पर तुम आए हो?"

58. वो बोले, "हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं,

59. सिवाय लूत के घरवालों के, उन सब को तो हम बचा लेंगे,

60. सिवाय उसकी बीवी के - हमने मुक़द्दर कर दिया है, वह तो पीछे रह जाने वालों में रहेगी"।

61. फिर जब ये फ़िरिस्तादे लूत के यहां आए,

62. तो उसने कहा, "तुम तो अजनबी लोग हो"।

63. उन्होंने कहा, "नहीं, बल्कि हम तो तुम्हारे पास वही लेकर आए हैं जिसके बारे में वो शक कर रहे थे।

64. हम तुम्हारे पास यक़ीनी फ़ैसला लेकर आए हैं, और हम बिल्कुल सच कह रहे हैं।

65. लिहाज़ा अब तुम अपने घरवालों को लेकर रात के किसी हिस्से

उद्ख़ुलूहा बि-सलामिन् आमिनीन (46)

व नज़अ्ना मा फ़ी सुदूरिहिम् मिन् ग़िल्लिन् इख़्वानन् अ़ला सुरुरिम् मु-तक़ाबिलीन (47)

ला यमस्सुहुम् फ़ीहा न-सबुंव्-व मा हुम् मिन्हा बिमुख़्रजीन (48)

नब्बिअ् अ़िबादी अन्नी अनल् ग़फ़ूरुर्रहीम (49)

व अन्-न अ़ज़ाबी हुवल् अ़ज़ाबुल् अलीम (50)

व नब्बिअ्हुम् अ़न् ज़ैफ़ि इब्राहीम● (51)

इज़् द-ख़लू अ़लैहि फ़क़ालू सलामन्, क़ा-ल इन्ना मिन्कुम् वजिलून (52)

क़ालू ला तौजल् इन्ना नुबश्शिरु-क बिग़ुलामिन् अ़लीम (53)

क़ा-ल अ-बश्शर्तुमूनी अ़ला अम्मस्सनियल्-कि-बरु फ़बि-म तुबश्शिरून (54)

क़ालू बश्शर्ना-क बिल्हक़्क़ि फ़ला तकुम् मिनल् क़ानितीन (55)

क़ा-ल व मंय्यक़्नतु मिर्रह्मति रब्बिही इल्लज़्ज़ाल्लून (56)

क़ा-ल फ़मा ख़त्बुकुम् अय्युहल्-मुर्सलून (57)

क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम्-मुज्रिमीन (58)

इल्ला आ-ल लूतिन्, इन्ना लमुनज्जूहुम् अज्मअ़ीन (59)

इल्लम्-र-अ-तहू क़द्दर्ना इन्नहा लमिनल्-ग़ाबिरीन (60) ●

फ़-लम्मा जा-अ आ-ल लूति-निल्मुर्सलून (61)

क़ा-ल इन्नकुम् क़ौमुम्-मुन्करून (62)

क़ालू बल् जिअ्ना-क बिमा कानू फ़ीहि यम्तरून (63)

व अतैना-क बिल्हक़्क़ि व इन्ना लसादिक़ून (64)

फ़-अस्रि बिअह्लि-क बिक़ित्अ़िम् मिनल्लैलि वत्तबिअ्

اُدْخُلُوْهَا بِسَلٰمٍ اٰمِنِيْنَ ۝٤٦

وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ۝٤٧

لَا يَمَسُّهُمْ فِيْهَا نَصَبٌ وَّمَا هُمْ مِّنْهَا بِمُخْرَجِيْنَ ۝٤٨

نَبِّئْ عِبَادِيْٓ اَنِّيْٓ اَنَا الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٤٩

وَاَنَّ عَذَابِيْ هُوَ الْعَذَابُ الْاَلِيْمُ ۝٥٠

وَنَبِّئْهُمْ عَنْ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ ۝٥١

اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ۭ قَالَ اِنَّا مِنْكُمْ وَجِلُوْنَ ۝٥٢

قَالُوْا لَا تَوْجَلْ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝٥٣

قَالَ اَبَشَّرْتُمُوْنِيْ عَلٰٓي اَنْ مَّسَّنِيَ الْكِبَرُ فَبِمَ تُبَشِّرُوْنَ ۝٥٤

قَالُوْا بَشَّرْنٰكَ بِالْحَقِّ فَلَا تَكُنْ مِّنَ الْقٰنِطِيْنَ ۝٥٥

قَالَ وَمَنْ يَّقْنَطُ مِنْ رَّحْمَةِ رَبِّهٖٓ اِلَّا الضَّاۗلُّوْنَ ۝٥٦

قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝٥٧

قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۝٥٨

اِلَّآ اٰلَ لُوْطٍ ۭ اِنَّا لَمُنَجُّوْهُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝٥٩

اِلَّا امْرَاَتَهٗ قَدَّرْنَآ ۙ اِنَّهَا لَمِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٦٠

فَلَمَّا جَاۗءَ اٰلَ لُوْطِ ۨ الْمُرْسَلُوْنَ ۝٦١

قَالَ اِنَّكُمْ قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝٦٢

قَالُوْا بَلْ جِئْنٰكَ بِمَا كَانُوْا فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۝٦٣

وَاَتَيْنٰكَ بِالْحَقِّ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝٦٤

فَاَسْرِ بِاَهْلِكَ بِقِطْعٍ مِّنَ الَّيْلِ وَاتَّبِعْ

में निकल जाओ, और खुद उन सब के पीछे-पीछे चलो, तुम में से कोई भी पीछे मुड़ कर न देखे; बस चले जाओ जिधर का तुम्हें हुक्म है"।

66. हमने उसे अपना यह फ़ैसला पहुंचा दिया कि सुबह होते-होते उनकी जड़ कट चुकी होगी।

67. इतने में शहर वाले खुश-खुश आ पहुंचे।

68. उसने कहा, "ये मेरे मेहमान हैं; तो मेरी फ़जीहत मत करना।

69. अल्लाह का डर रखो, और मुझे रुसवा न करो"।

70. उन्होंने कहा, "क्या हमने तुम्हें दुनिया भर की हिमायत से रोका नहीं था?"

71. उसने कहा, "तुमको अगर कुछ करना है तो ये मेरी (क़ौम की) बेटियां (शादी के लिए) मौजूद हैं"।

72. तुम्हारी ज़िन्दगी की क़सम, वो अपनी सरमस्ती में मदहोश व सरगरदां थे।

73. आख़िरकार पौ फटते-फटते एक हौलनाक आवाज़ ने उन्हें आ लिया,

74. और हम ने उस बस्ती को तलपट कर दिया और उन पर कंकरीले पत्थर बरसाए।

75. यक़ीनन इसमें अहल-ए-फ़िरासत के लिए निशानियां हैं।

76. और वो शाहराह-ए-आम पर हैं।

77. इसमें यक़ीनन मोमिनीन के लिए एक बड़ी निशानी है।

78. यक़ीनन ऐका वाले भी ज़ालिम थे,

79. फिर हमने उनसे भी इंतिक़ाम लिया। और ये दोनों इलाक़े खुली शाहराह पर वाक़े हैं।

80. हिज्र वाले भी रसूलों को झुटला चुके हैं।

81. हमने तो उन्हें अपनी निशानियां अता की थीं, लेकिन वो उनको नज़रअन्दाज़ ही करते रहे।

82. वो बड़े अमन और चैन के साथ पहाड़ों को तराश-तराश कर घर बनाते थे;

83. आख़िर एक ज़बरदस्त आवाज़ ने सुबह होते-होते उन्हें आ लिया;

84. आख़िरकार जो कुछ वो कमाते रहे थे वह उनके कुछ काम न आ सका।

85. हमने तो आसमानों और ज़मीन को, और जो कुछ उनके दरमियान है हक़ के साथ ही पैदा किया है। और वह क़ियामत की घड़ी तो लाज़िमन आनेवाली है; पस तुम खूबतर दरगुज़र से काम लो।

86. यक़ीनन तुम्हारा रब ही बड़ा पैदा करने वाला, सब कुछ जानने वाला है।

अद्बारहुम् व ला यल्तफ़ित् मिन्कुम् अ-हदुंव्वम्ज़ू हैसु तुअ्मरून (65)
व क़ज़ैना इलैहि ज़ालिकल्-अम्-र अन्-न दाबि-र हाउला-इ मक़्तूअुम्-मुस्बिहीन (66)
व जा-अ अह्लुल्-मदीनति यस्तब्शिरून (67)
का-ल इन्-न हाउला-इ ज़ैफ़ी फ़ला तफ़्ज़हून (68)
वत्तक़ुल्ला-ह व ला तुख़्ज़ून (69)
क़ालू अ-व लम् नन्ह-क अ़निल्-आ़लमीन (70)
क़ा-ल हाउला-इ बनाती इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन (71)
ल-अ़म्रु-क इन्नहुम् लफ़ी सक्रतिहिम् यअ्महून (72)
फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्सैहतु मुश्रिक़ीन (73)
फ़-जअ़ल्ना आ़लि-यहा साफ़ि-लहा व अम्तर्ना अ़लैहिम् हिजा-रतम् मिन् सिज्जील (74)
इन्-न फ़ी-ज़ालि-क लआयातिल् लिल्-मु-तवस्सिमीन (75)
व इन्नहा लबि-सबीलिम् मुक़ीम (76)
इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिल्मुअ्मिनीन (77)
व इन् का-न अस्हाबुल्-ऐ-कति लज़ालिमीन (78)
फ़न्त-क़म्ना मिन्हुम् व इन्नहुमा लबि-इमामिम्-मुबीन (79)
व ल-क़द् कज़्ज़-ब अस्हाबुल् हिज्रिल्-मुर्सलीन (80)
व आतैनाहुम् आयातिना फ़कानू अ़न्हा मुअ्रिज़ीन (81)
व कानू यन्हितू-न मिनल्-जिबालि बुयूतन् आमिनीन (82)
फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्सैहतु मुस्बिहीन (83)
फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू यक्सिबून (84)
व मा ख़लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि, व इन्नस्सा-अ़-त लआति-यतुन् फ़स्फ़हिस्सफ़्हल्-जमील (85)
इन्-न रब्ब-क हुवल् ख़ल्लाक़ुल्-अ़लीम (86)

اَدْبَارَهُمْ وَلَا يَلْتَفِتْ مِنْكُمْ اَحَدٌ
وَّ امْضُوْا حَيْثُ تُؤْمَرُوْنَ ۝۶۵
وَقَضَيْنَآ اِلَيْهِ ذٰلِكَ الْاَمْرَ اَنَّ دَابِرَ
هٰٓؤُلَآءِ مَقْطُوْعٌ مُّصْبِحِيْنَ ۝۶۶
وَجَآءَ اَهْلُ الْمَدِيْنَةِ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝۶۷
قَالَ اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ ضَيْفِيْ فَلَا تَفْضَحُوْنِ ۝۶۸
وَاتَّقُوا اللّٰهَ وَلَا تُخْزُوْنِ ۝۶۹
قَالُوْٓا اَوَلَمْ نَنْهَكَ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ ۝۷۰
قَالَ هٰٓؤُلَآءِ بَنٰتِيْٓ اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ۝۷۱
لَعَمْرُكَ اِنَّهُمْ لَفِيْ سَكْرَتِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝۷۲
فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُشْرِقِيْنَ ۝۷۳
فَجَعَلْنَا عَالِيَهَا سَافِلَهَا وَاَمْطَرْنَا
عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝۷۴
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْمُتَوَسِّمِيْنَ ۝۷۵
وَاِنَّهَا لَبِسَبِيْلٍ مُّقِيْمٍ ۝۷۶
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۝۷۷
وَاِنْ كَانَ اَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ لَظٰلِمِيْنَ ۝۷۸
فَانْتَقَمْنَا مِنْهُمْ ۘ وَاِنَّهُمَا لَبِاِمَامٍ مُّبِيْنٍ ۝۷۹
وَلَقَدْ كَذَّبَ اَصْحٰبُ الْحِجْرِ الْمُرْسَلِيْنَ ۝۸۰
وَاٰتَيْنٰهُمْ اٰيٰتِنَا فَكَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝۸۱
وَكَانُوْا يَنْحِتُوْنَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا اٰمِنِيْنَ ۝۸۲
فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ مُصْبِحِيْنَ ۝۸۳
فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝۸۴
وَمَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَآ اِلَّا بِالْحَقِّ ۗ وَاِنَّ السَّاعَةَ
لَاٰتِيَةٌ فَاصْفَحِ الصَّفْحَ الْجَمِيْلَ ۝۸۵
اِنَّ رَبَّكَ هُوَ الْخَلّٰقُ الْعَلِيْمُ ۝۸۶

87. हमने तुम्हें सात मसानी (आयतें जो बार-बार दोहराई जाती हैं) का मजमूआ यानी क़ुरआन अज़ीम अता किया।

88. जो कुछ ऐश का सामान हमने उनमें मुख़्तलिफ़ क़िस्म के लोगों को दिया है तुम उसपर अपनी आंखें न पसारो; और उनका कुछ ग़म न खाओ, तुम तो अपने बाज़ू मोमिनीन के लिए झुकाए रखो,

89. और कह दो कि "मैं तो साफ़-साफ़ ख़बरदार करनेवाला हूं"।

90. जिस तरह हमने अपने-अपने हिस्से पाने वालों पर उतारा था,

91. उन्होंने क़ुरआन को ग़लत बातें क़रार दिया।

92-93. अब तुम्हारे रब की क़सम, हम लाज़िमन उन सबसे जो कुछ वो करते रहे उसके बारे में पूछेंगे।

94. पस तुम्हें जिस चीज़ का हुक्म मिला है उसे साफ़-साफ़ बयान कर दो और मुशरिकीन से एराज़ करो।

95. मज़ाक़ उड़ाने वालों के लिए हम तुम्हारी तरफ़ से काफ़ी हैं.

96. जो अल्लाह के साथ दूसरे माबूद ठहराते हैं पस अनक़रीब उन्हें मालूम हो जाएगा।

97. हमारे इल्म में है कि जो कुछ वो कहते हैं उससे तुम्हारा दिल तंग होता है।

98. तो तुम अपने रब के गुण गाओ और सजदा गुज़ार हो जाओ,

99. और अपने रब की बन्दगी में लगे रहो यहां तक कि जो यक़ीनी है वह तुम्हारे सामने आ जाए।

सूरह अन-नहल मक्की

(आयतें 128, रुकूआत 16)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. आ गया हुक्म अल्लाह का; तो अब उसके लिए जल्दी न मचाओ। वह अज़ीम व बरतर है उस शिर्क से जो वो कर रहे हैं!

2. वो फ़रिश्तों को रूह यानी अपने हुक्म के साथ अपने जिस बन्दे पर चाहता है नाज़िल करता है कि आगाह कर दो कि मेरे सिवा कोई माबूद नहीं; लिहाज़ा तुम मेरा ही डर रखो।

व ल-क़द् आतैना-क सब्अम् मिनल्-मसानी वल्क़ुर्आनल्-अ़ज़ीम (87)

ला तमुद्दन्-न अ़ैनै-क इला मा मत्तअ्ना बिही अज़्वाजम् मिन्हुम् व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् वख़्फ़िज़् जनाह-क लिल्मुअ्मिनीन (88)

व क़ुल् इन्नी अनन्नज़ीरुल-मुबीन (89)

कमा अन्ज़ल्ना अ़लल्-मुक़्तसिमीन (90)

अल्लज़ी-न ज-अ़लुल्- क़ुर्आ-न अ़िज़ीन (91)

फ़-वरब्बि-क लनस्-अलन्नहुम् अज्मअ़ीन ●(92)

अ़म्मा कानू यअ्मलून (93)

फ़स्दअ् बिमा तुअ्मरू व अअ्‌रिज़् अ़निल्-मुश्रिकीन (94)

इन्ना कफ़ैनाकल्-मुस्तह्ज़िईन (95)

अल्लज़ी-न यज्अ़लू-न मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़सौ-फ़ यअ्लमून (96)

व ल-क़द् नअ्लमु अन्न-क यज़ीक़ु सद्‌रु-क बिमा यक़ूलून (97)

फ़-सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क व कुम् मिनस्-साजिदीन (98)

वअ्बुद् रब्ब-क हत्ता यअ्ति-यकल्-यक़ीन (99) ●

16 सूरतुन् नह्लि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 7974 अक्षर, 1871 शब्द, 128 आयतें और 16 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अता अम्रुल्लाहि फ़ला तस्तअ्जिलूहु, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (1)

युनज़्ज़िलुल्-मलाइ-क-त बिर्रूहि मिन् अम्रिही अ़ला मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही अन् अन्ज़िरू अन्नहू ला इला-ह इल्ला अ-न फ़त्तक़ून (2)

وَلَقَدْ اٰتَيْنٰكَ سَبْعًا مِّنَ الْمَثَانِيْ
وَالْقُرْاٰنَ الْعَظِيْمَ (٨٧)
لَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖۤ
اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ
وَاخْفِضْ جَنَاحَكَ لِلْمُؤْمِنِيْنَ (٨٨)
وَقُلْ اِنِّيْۤ اَنَا النَّذِيْرُ الْمُبِيْنُ (٨٩)
كَمَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَى الْمُقْتَسِمِيْنَ (٩٠)
الَّذِيْنَ جَعَلُوا الْقُرْاٰنَ عِضِيْنَ (٩١)
فَوَرَبِّكَ لَنَسْـَٔلَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ (٩٢)
عَمَّا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٩٣)
فَاصْدَعْ بِمَا تُؤْمَرُ وَاَعْرِضْ عَنِ
ربع الْمُشْرِكِيْنَ (٩٤)
اِنَّا كَفَيْنٰكَ الْمُسْتَهْزِءِيْنَ (٩٥)
الَّذِيْنَ يَجْعَلُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ
فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ (٩٦)
وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّكَ يَضِيْقُ صَدْرُكَ
بِمَا يَقُوْلُوْنَ (٩٧)
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَكُنْ مِّنَ
السّٰجِدِيْنَ (٩٨)
ع وَاعْبُدْ رَبَّكَ حَتّٰى يَاْتِيَكَ الْيَقِيْنُ (٩٩)

سُوْرَةُ النَّحْلِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٢٨ رُكُوْعَاتُهَا ١٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَتٰۤى اَمْرُ اللّٰهِ فَلَا تَسْتَعْجِلُوْهُ ؕ سُبْحٰنَهٗ
وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (١)
يُنَزِّلُ الْمَلٰٓئِكَةَ بِالرُّوْحِ مِنْ اَمْرِهٖ
عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ اَنْ
اَنْذِرُوْۤا اَنَّهٗ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّاۤ اَنَا فَاتَّقُوْنِ (٢)

3. उसने आसमानों और ज़मीन को मक़्सदे हक़ के साथ पैदा फ़रमाया; वह बहुत बुलन्द व बरतर है उस शिर्क से जो वो कर रहे हैं।

4. उसने इनसान को एक बूंद से पैदा किया; फिर क्या देखते हैं कि वह अलानिया झगड़ने लगा।

5. रहे जानवर उन्हें भी उसी ने पैदा किया जिसमें तुम्हारे गर्मी हासिल करने का सामान भी है, और दूसरे बहुत से फ़ायदे हैं, उनमें बाज़ को तुम खाते भी हो।

6. उनमें तुम्हारे लिए एक शाने खुशनुमाई भी है, जबकि तुम शाम के वक़्त उन्हें लाते और जबकि तुम उन्हें चराने ले जाते हो।

7. वो तुम्हारे बोझ ढोकर ऐसी सरज़मीन तक ले जाते हैं जहां तुम जान तोड़ मशक़्क़त के बग़ैर पहुंच नहीं सकते थे। बेशक तुम्हारा रब बड़ा ही शफ़ीक़, निहायत रहमवाला है।

8. और घोड़े और ख़च्चर और गधे भी पैदा किए ताकि तुम उनपर सवार हो, और ज़ीनत और सामान-ए-रौनक़ भी हो; और वह कुछ भी वह पैदा फ़रमाता है जिसका तुम्हें इल्म तक नहीं होता।

9. अल्लाह पर लाज़िम है माकूल व मौज़ूं रास्ता बताना, और कुछ रास्ते टेढ़े भी हैं, वह अगर चाहता तो तुम सब को ज़रूर हिदायत दे देता।

10. वही है जिसने आसमान से तुम्हारे लिए पानी उतारा जिसे तुम पीते भी हो, और उसी से पेड़ और सब्ज़ नबात वुजूद में आती हैं जिनमें तुम जानवरों को चराते हो,

11. और उसी से वह तुम्हारे लिए खेतियां उगाता है, और ज़ैतून, खजूर, और अंगूर, और हर तरह के फल पैदा करता है। यक़ीनन इसमें ग़ौर व फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए एक निशानी है।

12. और उसने तुम्हारे लिए रात और दिन को, और सूरज और चांद को नफ़ारसानी में लगा रखा है, और सितारे भी उसी के हुक्म से मुसख़्ख़र हैं — यक़ीनन इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं

13. और वह जो ज़मीन में तुम्हारे लिए रंग-बिरंग की चीज़ें बिखेर रखी हैं उसमें भी उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो सबक़ हासिल करते हैं।

14. वही तो है जिसने समुंदर को इख़्तियार में किया है, ताकि तुम उससे

ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि, तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (3)

ख़-लक़ल्-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् फ़-इज़ा हु-व ख़सीमुम्-मुबीन (4)

वल-अन्आ़-म ख़-ल-क़हा लकुम् फ़ीहा दिफ़उंव्-व मनाफ़िअु व मिन्हा तअ्कुलून (5)

व लकुम् फ़ीहा जमालुन् ही-न तुरीहू-न व ही-न तस्रहून (6)

व तह़्मिलु अस्क़ा-लकुम् इला ब-लदिल्-लम् तकूनू बालिग़ीहि इल्ला बिशिक़्क़िल्-अन्फ़ुसि, इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफ़ुर्-रहीम (7)

वल्ख़ै-ल वल्बिग़ा-ल वल्हमी-र लितर्कबूहा व ज़ी-नतन्, व यख़्लुक़ु मा ला तअ्लमून (8) ●

व अ़लल्लाहि क़स्दुस्सबीलि व मिन्हा जा-इरुन्, व लौ शा-अ ल-हदाकुम् अज्मओ़न (9)

हुवल्लज़ी अन्ज़-ल मिनस्समा-इ माअल्लकुम् मिन्हु शराबुंव्-व मिन्हु श-जरुन् फ़ीहि तुसीमून (10)

युम्बितु लकुम् बिहिज़्ज़र्-अ वज़्ज़ैतू-न वन्नख़ी-ल वल्-अअ्ना-ब व मिन् कुल्लिस्स-मराति, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आ-यतल्-लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून (11)

व सख़्ख़-र लकुमुल्-लै-ल वन्नहा-र वश्शम्-स वल्क़-म-र, वन्नुजूमु मुसख़्ख़रातुम्-बिअम्रिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (12)

व मा ज़-र-अ लकुम् फ़िल्अर्ज़ि मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्यज़्ज़क्करून (13)

व हुवल्लज़ी सख़्ख़रल्-बह्-र लितअ्कुलू मिन्हु लह़्मन् तरिय्यंव्-व तस्तख़्रिजू मिन्हु हिल्य-तन्

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ
تَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝۳
خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ فَاِذَا هُوَ
خَصِيْمٌ مُّبِيْنٌ ۝۴
وَالْاَنْعَامَ خَلَقَهَا ۚ لَكُمْ فِيْهَا دِفْءٌ
وَّمَنَافِعُ وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝۵
وَلَكُمْ فِيْهَا جَمَالٌ حِيْنَ تُرِيْحُوْنَ
وَحِيْنَ تَسْرَحُوْنَ ۝۶
وَتَحْمِلُ اَثْقَالَكُمْ اِلٰى بَلَدٍ لَّمْ تَكُوْنُوْا
بٰلِغِيْهِ اِلَّا بِشِقِّ الْاَنْفُسِ ؕ اِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝۷
وَّالْخَيْلَ وَالْبِغَالَ وَالْحَمِيْرَ لِتَرْكَبُوْهَا
وَزِيْنَةً ؕ وَيَخْلُقُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۸
وَعَلَى اللّٰهِ قَصْدُ السَّبِيْلِ وَمِنْهَا جَآئِرٌ ؕ
وَلَوْ شَآءَ لَهَدٰىكُمْ اَجْمَعِيْنَ ۝۹
هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً لَّكُمْ
مِّنْهُ شَرَابٌ وَّمِنْهُ شَجَرٌ فِيْهِ تُسِيْمُوْنَ ۝۱۰
يُنْۢبِتُ لَكُمْ بِهِ الزَّرْعَ وَالزَّيْتُوْنَ
وَالنَّخِيْلَ وَالْاَعْنَابَ وَمِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝۱۱
وَسَخَّرَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ۙ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوْمُ مُسَخَّرٰتٌۢ بِاَمْرِهٖ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۝۱۲
وَمَا ذَرَاَ لَكُمْ فِي الْاَرْضِ مُخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّذَّكَّرُوْنَ ۝۱۳
وَهُوَ الَّذِيْ سَخَّرَ الْبَحْرَ لِتَاْكُلُوْا مِنْهُ
لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْا مِنْهُ حِلْيَةً

लेकर तरो ताज़ा गोश्त खाओ, और उससे ज़ेवर निकालो जिसे तुम पहनते हो; तुम तो देखते हो कि कश्तियां उसको चीरती हुई चलती हैं (ताकि तुम सफ़र कर सको) और ताकि उसका फ़ज़्ल तलाश करो और ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो।

15. और उसने ज़मीन में अटल पहाड़ डाल दिए कि वह तुम्हें लेकर झुक न पड़े, और दरिया और क़ुदरती रास्ते बनाए ताकि तुम्हारी रहनुमाई हो सके;

16. और अलामात भी हैं; और सितारों के ज़रिए से भी वो राह पा लेते हैं।

17. फिर क्या जो पैदा फ़रमाता है वह उस जैसा हो सकता है जो पैदा नही करता? फिर क्या तुम्हें होश नहीं होता?

18. और अगर तुम अल्लाह की नेमतों को शुमार करना चाहो, तो उनका इहाता नहीं कर सकते; बेशक अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

19. और अल्लाह जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो।

20. और जिन्हें वो अल्लाह से हटकर पुकारते हैं, वो किसी चीज़ को भी पैदा नहीं करते, बल्कि वो खुद मख़्लूक़ हैं,

21. मुर्दे हैं, जिनमें जान नहीं, उन्हें मालूम नहीं कि वो कब उठाए जाएंगे।

22. तुम्हारा माबूद अकेला माबूद है। लेकिन जो आख़िरत को नहीं मानते, उनके दिल मुनकिर हैं, वो अपने आपको बड़ा समझ रहे हैं।

23. अल्लाह यक़ीनन खूब जानता है जो कुछ वो छुपाते हैं और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं; वह उन्हें पसन्द नही करता जो अपने आपको बड़ा समझते हों।

24. और जब उनसे कहा जाता है कि "तुम्हारे रब ने क्या नाज़िल किया?" कहते हैं "वो तो अगलों के अफ़साने हैं"।

25. इसका नतीजा यह होगा कि वो क़ियामत के दिन अपने बोझ भी पूरे उठाएंगे, और उनके बोझ में से भी जिन्हें वो बेइल्मी की वजह से गुमराह कर रहे हैं। सुन लो बहुत ही बुरा है वह बोझ जो वो उठा रहे हैं!

26. जो उनसे पहले गुज़रे हैं, वो भी मक्कारियां कर चुके हैं; फिर अल्लाह उनकी ईमारत पर बुनियादों की तरफ़

तल्बसूनहा व तरल्फुल्-क मवाख़ि-र फ़ीहि व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (14)

व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम् व अन्हारंव्-व सुबुलल्-लअ़ल्लकुम् तह्तदून (15)

व अ़लामातिन्, व बिन्नज्मि हुम् यह्तदून (16)

अ-फ़मंय्यख़्लुक़ु कमल्-ला यख़्लुक़ु, अ-फ़ला तज़क्करून (17)

व इन् तअ़ुद्दू निअ़्-मतल्लाहि ला तुह्सूहा, इन्नल्ला-ह ल-ग़फ़ूरुर्रहीम (18)

वल्लाहु यअ़्लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ़्लिनून (19)

वल्लज़ी-न यद्अ़ू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यख़्लुक़ू-न शैअंव्-व हुम् युख़्लक़ून (20)

अम्वातुन् ग़ैरु अह्याइन्, वमा यश्अ़ुरू-न अय्या-न युब्अ़सून (21) ●

इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़ल्लज़ी-न ला युअ़्मिनू-न बिल्आख़िरति क़ुलूबुहुम् मुन्कि-रतुंव्-व हुम् मुस्तक्बिरून (22)

ला ज-र-म अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा युसिर्रू-न व मा युअ़्लिनू-न, इन्नहू ला युहिब्बुल्-मुस्तक्बिरीन (23)

व इज़ा क़ी-ल लहुम् माज़ा अन्ज़-ल रब्बुकुम् क़ालू असातीरुल्-अव्वलीन (24)

लियह्मिलू औज़ारहुम् कामि-लतंय्-यौमल्-क़ियामति व मिन् औज़ारिल्लज़ी-न युज़िल्लू-नहुम् बिग़ैरि अ़िल्मिन्, अला सा-अ मा यज़िरून (25) ●

क़द् म-करल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अतल्लाहु बुन्या-नहुम् मिनल्-क़वाअ़िदि फ़-ख़र्-र अ़लैहिमुस्सक़्फ़ु मिन् फ़ौक़िहिम् व अताहुमुल्-अ़ज़ाबु

تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ مَوَاخِرَ فِيْهِ
وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (١٤)
وَاَلْقٰى فِى الْاَرْضِ رَوَاسِىَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ
وَاَنْهٰرًا وَّسُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ (١٥)
وَعَلٰمٰتٍ ۚ وَبِالنَّجْمِ هُمْ يَهْتَدُوْنَ (١٦)
اَفَمَنْ يَّخْلُقُ كَمَنْ لَّا يَخْلُقُ ۚ اَفَلَا
تَذَكَّرُوْنَ (١٧)
وَاِنْ تَعُدُّوْا نِعْمَةَ اللّٰهِ لَا تُحْصُوْهَا ۚ
اِنَّ اللّٰهَ لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١٨)
وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ (١٩)
وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
لَا يَخْلُقُوْنَ شَيْـًٔا وَّهُمْ يُخْلَقُوْنَ (٢٠)
اَمْوَاتٌ غَيْرُ اَحْيَآءٍ ۚ وَمَا يَشْعُرُوْنَ ۙ
ع اَيَّانَ يُبْعَثُوْنَ (٢١)
اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَالَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ قُلُوْبُهُمْ مُّنْكِرَةٌ
وَّهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ (٢٢)
لَا جَرَمَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يُسِرُّوْنَ وَمَا
يُعْلِنُوْنَ ۚ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْمُسْتَكْبِرِيْنَ (٢٣)
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ مَّاذَآ اَنْزَلَ رَبُّكُمْ ۙ
قَالُوْٓا اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ (٢٤)
لِيَحْمِلُوْٓا اَوْزَارَهُمْ كَامِلَةً يَّوْمَ
الْقِيٰمَةِ ۙ وَمِنْ اَوْزَارِ الَّذِيْنَ يُضِلُّوْنَهُمْ
ع بِغَيْرِ عِلْمٍ ۗ اَلَا سَآءَ مَا يَزِرُوْنَ (٢٥)
قَدْ مَكَرَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتَى اللّٰهُ
بُنْيَانَهُمْ مِّنَ الْقَوَاعِدِ فَخَرَّ عَلَيْهِمُ
السَّقْفُ مِنْ فَوْقِهِمْ وَاَتٰىهُمُ الْعَذَابُ

से आया, और छत उनपर उनके ऊपर से आ गिरी, और अज़ाब ऐसे रुख़ से उनपर आया जिसका उन्हें एहसास तक न था।

27. फिर क़ियामत के दिन वह उन्हें ज़लील व ख़्वार करेगा, और कहेगा, "कहां हैं मेरे वो शुरका जिनके सिलसिले में तुम मुझ से शदीद मुख़ालफ़त करते थे?" जिन्हें इल्म हासिल था वो कहेंगे, "यक़ीनन आज रुसवाई और ख़राबी है काफ़िरों के लिए,

28. जिनकी रूहें फ़रिश्ते इस हाल में क़ब्ज़ करते हैं कि वो अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे होते हैं"। तब वो सिपर डाल देते हैं कि "हम तो कोई बुराई नहीं करते थे"। "नहीं; बल्कि अल्लाह को ख़ूब मालूम है जैसे कुछ तुम्हारे करतूत रहे हैं।

29. तो अब जहन्नम के दरवाज़ों में उसमें मुसतक़िल रहने के लिए दाख़िल हो जाओ"। पस यक़ीनन मुतकब्बिरों की निहायत बुरी क़ियाम गाह है।

30. दूसरी तरफ़ जो डर रखने वाले हैं उनसे कहा जाता है कि "तुम्हारे रब ने क्या नाज़िल किया?" वो कहते हैं, "बेहतरीन चीज़!" जिन लोगों ने भलाई की उनके लिए इस दुनिया में भी अच्छी हालत है; और आख़िरत का घर तो बेहतर है ही; और क्या ही अच्छा घर है डर रखनेवालों का!

31. हमेशा रहने के बाग़ जिनमें वो दाख़िल होंगे, उनके नीचे नहरें जारी होंगी, उनके लिए वहां वह सब कुछ है जो वो चाहें। अल्लाह डर रखने वालों को ऐसा ही अजर अता करता है,

32. जिनकी रूहें फ़रिश्ते इस हालत में क़ब्ज़ करते हैं कि वो पाक व पसन्दीदा होते हैं, वो कहते हैं, "तुम पर सलाम हो! जो कुछ तुम करते रहे हो उसके बदले में जन्नत में दाख़िल हो"।

33. अब जो वो इंतिज़ार में हैं तो इसके सिवा अब क्या बाक़ी रह गया है कि फ़रिश्ते उनके पास आ पहुंचे, या तुम्हारे रब का हुक्म ही आ जाए? ऐसी ही हरकत उनकी भी रही है जो उनसे पहले हुए हैं, अल्लाह ने तो उनपर ज़ुल्म नहीं किया, लेकिन वो ख़ुद अपने ख़िलाफ़ ज़ुल्म के रवादार रहे।

34. आख़िरकार उनके करतूतों की बुराइयां उनपर आ पड़ी, और जिसका वो मज़ाक़ उड़ाया करते थे उसी ने उन्हें आ घेरा।

मिन् हैसु ला यश्अुरून (26)

सुम्-म यौमल् क़ियामति युख़्ज़ीहिम् व यक़ूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तुशाक़्क़ू-न फ़ीहिम्, क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्-म इन्नल् ख़िज़्यल्-यौ-म वस्सू-अ अ़लल्-काफ़िरीन (27)

अल्लज़ी-न त-तवफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइ-कतु ज़ालिमी अन्फ़ुसिहिम् फ़-अल्क़वुस्स-ल-म मा कुन्ना नअ्-मलु मिन् सूइन्, बला इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (28)

फ़द्ख़ुलू अब्वा-ब जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा, फ़-लबिअ्-स मस्वल् मु-तकब्बिरीन (29)

व क़ी-ल लिल्लज़ीनत्तक़ौ माज़ा अन्ज़-ल रब्बुकुम, क़ालू ख़ैरन्, लिल्लज़ी-न अह़्सनू फ़ी हाज़िहिद्दुन्या ह-स-नतुन्, व लदारुल्-आख़िरति ख़ैरुन्, व लनिअ्-म दारुल्-मुत्तक़ीन (30)

जन्नातु अ़द्निंय्यद्ख़ुलूनहा तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु लहुम् फ़ीहा मा यशाऊ-न, कज़ालि-क यज्ज़िल्लाहुल्-मुत्तक़ीन (31)

अल्लज़ी-न त-तवफ़्फ़ाहुमुल्-मलाइ-कतु तय्यिबी-न यक़ूलू-न सलामुन् अ़लैकुमुद्ख़ुलुल्-जन्न-त बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (32)

हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला अन् तअ्ति-यहुमुल्-मलाइ-कतु औ यअ्ति-य अम्रु रब्बि-क, कज़ालि-क फ़-अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, व मा ज़-ल-महुमुल्लाहु व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून (33)

फ़-असाबहुम् सय्यिआतु मा अ़मिलू व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (34) ●

مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ﴿٢٦﴾
ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يُخْزِيْهِمْ وَيَقُوْلُ
اَيْنَ شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تُشَآقُّوْنَ
فِيْهِمْ ؕ قَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اِنَّ
الْخِزْيَ الْيَوْمَ وَالسُّوْٓءَ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ ﴿٢٧﴾ۙ
الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ ظَالِمِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ ۪ فَاَلْقَوُا السَّلَمَ مَا كُنَّا
نَعْمَلُ مِنْ سُوْٓءٍ ؕ بَلٰٓى اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾
فَادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ
فَلَبِئْسَ مَثْوَى الْمُتَكَبِّرِيْنَ ﴿٢٩﴾
وَقِيْلَ لِلَّذِيْنَ اتَّقَوْا مَاذَآ اَنْزَلَ
رَبُّكُمْ ؕ قَالُوْا خَيْرًا ؕ لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا
فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ وَلَدَارُ الْاٰخِرَةِ
خَيْرٌ ؕ وَلَنِعْمَ دَارُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣٠﴾ۙ
جَنّٰتُ عَدْنٍ يَّدْخُلُوْنَهَا تَجْرِيْ مِنْ
تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ لَهُمْ فِيْهَا مَا يَشَآءُوْنَ ؕ
كَذٰلِكَ يَجْزِي اللّٰهُ الْمُتَّقِيْنَ ﴿٣١﴾ۙ
الَّذِيْنَ تَتَوَفّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ طَيِّبِيْنَ ۙ
يَقُوْلُوْنَ سَلٰمٌ عَلَيْكُمُ ۙ ادْخُلُوا الْجَنَّةَ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٣٢﴾
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ تَاْتِيَهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ
اَوْ يَاْتِيَ اَمْرُ رَبِّكَ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ وَمَا ظَلَمَهُمُ اللّٰهُ وَلٰكِنْ
كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ﴿٣٣﴾
فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ
ع بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٣٤﴾

35. शिर्क करने वाले लोगों का कहना है कि "अगर अल्लाह चाहता तो उससे हटकर किसी चीज़ की न हम इबादत करते, और न हमारे बाप-दादा ही, और न हम उसके बग़ैर किसी चीज़ को हराम क़रार देते"। उनसे पहले के लोगों की भी ऐसी ही रविश रही है; तो क्या साफ़-साफ़ पहुंचा देने के सिवा रसूलों पर कोई और भी ज़िम्मेदारी है?

36. हमने हर उम्मत में कोई न कोई रसूल भेजा कि "अल्लाह की बन्दगी करो, और तागूत से बचो"। फिर उनमें से किसी को तो अल्लाह ने हिदायत बख़्शी, और किसी पर उनमें गुमराही ही साबित होकर रही। फिर ज़रा ज़मीन में चल-फिर कर तो देखो कि झुटलाने वालों का कैसा अंजाम हुआ।

37. अगरचे तुम्हें उनकी हिदायत की कितनी ही हिर्स क्यों न हो, मगर अल्लाह जिसे भटका देता है उसे वह हिदायत नहीं दिया करता, और ऐसे लोगों का कोई मददगार भी नहीं होता।

38. उन्होंने ख़ुदा की कड़ी-कड़ी क़स्में खाकर कहा कि "जो मर जाता है उसे अल्लाह नहीं उठाएगा"; क्यों नहीं, यह तो एक वादा है जिसे पूरा करना उसके लिए लाज़मी है — लेकिन अक्सर लोग जानते नहीं।

39. — ताकि वह उनपर उसको वाज़ेह कर दे जिसके बारे में वो इख़्तिलाफ़ करते हैं, और इसलिए भी कि कुफ़्र इख़्तियार करनेवाले जान लें कि वो झूटे थे।

40. किसी चीज़ के लिए, जब हम उसका इरादा करते हैं, हमारा कहना बस यही होता है कि उससे कहते हैं "हो जा" और वह हो जाती है।

41. और जिन लोगों ने इसके बाद कि उनपर ज़ुल्म ढाया गया था अल्लाह के लिए घरबार छोड़ा, उन्हें हम दुनिया में भी अच्छी तरह मुतमक्किन करेंगे, और आख़िरत का अजर तो बहुत बड़ा है, काश वो जानते।

42. ये वो लोग हैं जिन्होंने सब्र इख़्तियार किया, और वो अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

43. हमने तुमसे पहले भी मर्दों ही को रसूल बनाकर भेजा था — जिनकी तरफ़ हम वही करते रहे हैं; अगर तुम जानते नहीं हो तो अहले ज़िक्र से पूछ लो।

44. — खुली दलीलों और ज़बूरों के साथ; और अब यह ज़िक्र तुम्हारी तरफ़

व क़ालल्लज़ी-न अश्रकू लौ शाअल्लाहु मा अ़बद्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन् नह्नु व ला आबाउना व ला हर्रम्ना मिन् दूनिही मिन् शैइन्, कज़ालि-क फ़-अ़लल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-हल् अ़लर्रूसुलि इल्लल् बलागुल्-मुबीन (35)

व ल-क़द् बअ़स्ना फ़ी कुल्लि उम्मतिर्रसूलन् अनिअ़्बुदुल्ला-ह वज्तनिबुत्तागू-त फ़मिन्हुम् मन् हदल्लाहु व मिन्हुम् मन् हक़्क़त् अ़लैहिज़्ज़लतु, फ़सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्-मुकज़्ज़िबीन (36)

इन तह्रिस् अ़ला हुदाहुम् फ़-इन्नल्ला-ह ला यह्दी मंय्युज़िल्लु व मा लहुम् मिन्-नासिरीन (37)

व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ला यब्अ़सुल्लाहु मंय्यमूतु, बला वअ़्दन् अ़लैहि हक़्क़ंव्-व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ़्लमून (38)

लियुबय्यि-न लहुमुल्लज़ी यख़्तलिफ़ू-न फ़ीहि व लियअ़्-लमल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नहुम् कानू काज़िबीन (39)

इन्नमा क़ौलुना लिशैइन् इज़ा अरद्नाहु अन्-नक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून (40)●

वल्लज़ी-न हाजरू फ़िल्लाहि मिम्-बअ़्दि मा ज़ुलिमू लनुबव्विअन्नहुम् फ़िद्दुन्या ह-स-नतन्, व लअज्रुल्-आख़िरति अक्बरु● लौ कानू यअ़्लमून (41)

अल्लज़ी-न स-बरू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून (42)

व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् फ़स्अलू अह्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ़्लमून (43)

बिल्-बय्यिनाति वज़्ज़ुबुरि, व अन्ज़ल्ना इलैकज़्ज़िक्-र

وَقَالَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا لَوْ شَآءَ اللّٰهُ
مَا عَبَدْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ شَيْءٍ نَّحْنُ
وَلَآ اٰبَآؤُنَا وَلَا حَرَّمْنَا مِنْ دُوْنِهٖ مِنْ
شَيْءٍ ؕ كَذٰلِكَ فَعَلَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ
فَهَلْ عَلَى الرُّسُلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ﴿۳۵﴾
وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِيْ كُلِّ اُمَّةٍ رَّسُوْلًا
اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوْتَ ۚ
فَمِنْهُمْ مَّنْ هَدَى اللّٰهُ وَمِنْهُمْ مَّنْ حَقَّتْ
عَلَيْهِ الضَّلٰلَةُ ؕ فَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ
فَانْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُكَذِّبِيْنَ ﴿۳۶﴾
اِنْ تَحْرِصْ عَلٰى هُدٰىهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ لَا
يَهْدِيْ مَنْ يُّضِلُّ وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ﴿۳۷﴾
وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ ۙ لَا يَبْعَثُ
اللّٰهُ مَنْ يَّمُوْتُ ؕ بَلٰى وَعْدًا عَلَيْهِ حَقًّا
وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ ﴿۳۸﴾
لِيُبَيِّنَ لَهُمُ الَّذِيْ يَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ وَلِيَعْلَمَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اَنَّهُمْ كَانُوْا كٰذِبِيْنَ ﴿۳۹﴾
اِنَّمَا قَوْلُنَا لِشَيْءٍ اِذَآ اَرَدْنٰهُ اَنْ نَّقُوْلَ
ع لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ﴿۴۰﴾
وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِي اللّٰهِ مِنْ بَعْدِ
مَا ظُلِمُوْا لَنُبَوِّئَنَّهُمْ فِي الدُّنْيَا حَسَنَةً ؕ
وَلَاَجْرُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۙ ﴿۴۱﴾
الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿۴۲﴾
وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ اِلَّا رِجَالًا
نُّوْحِيْٓ اِلَيْهِمْ فَسْئَلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ
اِنْ كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۙ ﴿۴۳﴾
بِالْبَيِّنٰتِ وَالزُّبُرِ ؕ وَاَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الذِّكْرَ

हमने नाज़िल किया ताकि तुम लोगों के लिए जो कुछ उनकी तरफ़ नाज़िल हुआ खोल-खोल कर बयान कर दो; और ताकि वो ग़ौर व फ़िक्र से काम लें।

45. फिर क्या वो लोग जो ऐसी बुरी-बुरी चालें चल रहे हैं इस बात से बेख़ौफ़ हो गए हैं कि अल्लाह उन्हें ज़मीन में धंसा दे, या ऐसे रुख़ से उनपर अज़ाब आ जाए जिसका उन्हें एहसास तक न हो?

46. या उन्हें चलते-फिरते ही पकड़ ले, वो कोई क़ाबू से बाहर निकल जानेवाले तो हैं नहीं?

47. या उन्हें वह ऐन अंदेशे की हालत में पकड़ ले? लेकिन तुम्हारा रब तो बड़ा ही शफ़ीक़, निहायत रहमवाला है।

48. क्या अल्लाह की पैदा की हुई किसी चीज़ को उन्होंने देखा नहीं कि किस तरह उसके साए अल्लाह को सजदा करते और इज़हारे अजज़ करते हुए दाएं तरफ़ और बाएं अतराफ़ झुकते हैं?

49. और जानदार मख़्लूक़ात जो आसमानों में और ज़मीन में हैं सब अल्लाह ही को सजदा करती हैं और फ़रिश्ते भी। और तकब्बुर वो बिल्कुल नहीं करते,

50. अपने रब का जो उनके ऊपर है ख़ौफ़ रखते है और वही करते हैं जो उन्हें हुक्म होता है।

51. अल्लाह का फ़रमान है कि "दो-दो माबूद न बनाओ। वह तो बस अकेला माबूद है; लिहाज़ा मुझी से डरो"।

52. जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है उसी का है; उसी का दीन दायम और लाज़िम है। फिर क्या अल्लाह के सिवा तुम किसी और का डर रखोगे?

53. तुम्हारे पास जो नेमत भी है, वह अल्लाह ही की तरफ़ से है; फिर जब कोई तकलीफ़ तुम्हें पहुंचती है तो आख़िर उसी के आगे चिल्लाते और फ़रियाद करते हो।

54. फिर जब वह उस तकलीफ़ को तुमसे टाल देता है, तो क्या देखते हैं कि तुममें से कुछ लोग अपने रब का शरीक ठहराने लगते हैं,

55. ताकि जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसकी नाशुकी करें। अच्छा, कुछ मज़े ले लो; तुम्हें जल्द ही मालूम हो जाएगा!

लितुबय्यि-न लिन्नासि मा नुज़्ज़ि-ल इलैहिम् व लअ़ल्लहुम् य-तफ़क्करून ● (44)

अ-फ़-अमिनल्लज़ी-न म-करुस्सय्यिआति अंय्यख़्सिफ़ल्लाहु बिहिमुल्-अर्-ज़ औ यअ्ति-यहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन हैसु ला यश्अुरून (45)

औ यअ्ख़ु-ज़हुम् फ़ी तक़ल्लुबिहिम् फ़मा हुम् बिमुअ्जिज़ीन (46)

औ यअ्ख़ु-ज़हुम् अ़ला तख़व्वुफ़िन् फ़-इन्-न रब्बकुम् ल-रऊफ़ुर्रहीम (47)

अ-व लम् यरौ इला मा ख़-लक़ल्लाहु मिन् शैइंय्- य-तफ़य्यउ ज़िलालुहू अ़निल्-यमीनि वश्शमाइलि सुज्जदल्-लिल्लाहि व हुम् दाख़िरून (48)

व लिल्लाहि यस्जुदु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् दाब्बतिंव्-वल-मलाइ-कतु व हुम् ला यस्तक्बिरून (49)

यख़ाफ़ू-न रब्बहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् व यफ़्अ़लू-न मा युअ्मरून (50)●

व क़ालल्लाहु ला तत्तख़िज़ू इलाहैनिस्-नैनि इन्नमा हु-व इलाहुंव्-वाहिदुन् फ़-इय्या-य फ़र्हबून (51)

व लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व लहुद्दीनु वासिबन् अ-फ़ग़ैरल्लाहि तत्तक़ून (52)

व मा बिकुम् मिन् निअ्मतिन् फ़मिनल्लाहि सुम्-म इज़ा मस्सकुमुज़्-ज़ुर्रू फ़-इलैहि तज्अरून (53)

सुम्-म इज़ा क-शफ़ज़्ज़ुर्-र अ़न्कुम् इज़ा फ़रीक़ुम्-मिन्कुम् बिरब्बिहिम् युश्रिकून (54)

लियक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम्, फ़-तमत्तअू, फ़सौ-फ़ तअ्लमून (55)

لِتُبَيِّنَ لِلنَّاسِ مَا نُزِّلَ اِلَيْهِمْ وَلَعَلَّهُمْ
يَتَفَكَّرُوْنَ (۴۴)
اَفَاَمِنَ الَّذِيْنَ مَكَرُوا السَّيِّاٰتِ اَنْ
يَّخْسِفَ اللّٰهُ بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ (۴۵)
اَوْ يَاْخُذَهُمْ فِيْ تَقَلُّبِهِمْ فَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ (۴۶)
اَوْ يَاْخُذَهُمْ عَلٰى تَخَوُّفٍ ؕ فَاِنَّ رَبَّكُمْ
لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (۴۷)
اَوَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا خَلَقَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ
يَّتَفَيَّؤُا ظِلٰلُهٗ عَنِ الْيَمِيْنِ وَالشَّمَآئِلِ
سُجَّدًا لِّلّٰهِ وَهُمْ دٰخِرُوْنَ (۴۸)
وَلِلّٰهِ يَسْجُدُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي
الْاَرْضِ مِنْ دَآبَّةٍ وَّالْمَلٰٓئِكَةُ وَهُمْ
لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ (۴۹)
يَخَافُوْنَ رَبَّهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ وَيَفْعَلُوْنَ
مَا يُؤْمَرُوْنَ (۵۰)
وَقَالَ اللّٰهُ لَا تَتَّخِذُوْٓا اِلٰهَيْنِ اثْنَيْنِ ۚ
اِنَّمَا هُوَ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَاِيَّايَ فَارْهَبُوْنِ (۵۱)
وَلَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلَهُ
الدِّيْنُ وَاصِبًا ؕ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَتَّقُوْنَ (۵۲)
وَمَا بِكُمْ مِّنْ نِّعْمَةٍ فَمِنَ اللّٰهِ
ثُمَّ اِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فَاِلَيْهِ
تَجْـَٔرُوْنَ (۵۳)
ثُمَّ اِذَا كَشَفَ الضُّرَّ عَنْكُمْ اِذَا فَرِيْقٌ
مِّنْكُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ (۵۴)
لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ۫
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ (۵۵)

56. हमने उन्हें जो रिज़्क़ दिया है उसमें वो उनका हिस्सा लगाते हैं जिन्हें वो जानते भी नहीं। बख़ुदा जो झूट तुम घड़ते हो उसके बारे में तुमसे लाज़िमन पूछा जाएगा।

57. और वो अल्लाह के लिए बेटियां ठहराते हैं। अज़ीम व बरतर है वह — और अपने लिए वह, जो वो खुद चाहें;

58. और जब उनमें से किसी को बेटी की खुशख़बरी मिलती है तो उसके चहरे पर कलौंस छा जाती है और वह घुटा-घुटा रहता है,

59. जो खुशख़बरी उसे दी गई वह ऐसी बुराई हुई कि उसकी वजह से वह लोगों से छुपता फिरता है कि ज़िल्लत को बरदाश्त करके उसे रहने दे, या उसे मिट्टी में दबा दे। देखो कितना बुरा फ़ैसला है जो वो करते हैं!

60. जो लोग आख़िरत को नहीं मानते बुरा हाल है उनका, रहा अल्लाह तो उसकी शान बुलन्द है। वह तो ज़बरदस्त, हिक्मत में कामिल है।

61. अगर अल्लाह लोगों को उनके जुल्म पर पकड़ने ही लग जाता, तो ज़मीन पर किसी जानदार को न छोड़ता; लेकिन वह उन्हें एक मुक़र्रर मुद्दत तक टाले जाता है; फिर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ जाता है तो न तो वो एक घड़ी पीछे हट सकते हैं और न आगे बढ़ सकते हैं।

62. वो अल्लाह के लिए वह कुछ ठहराते हैं जिसे खुद नापसन्द करते हैं; और उनकी ज़बानें झूट बयान करती हैं कि उनके लिए अच्छा अंजाम है, कुछ शक नहीं कि उनके लिए आग है, और वो उसी में पड़े छोड़ दिए जाएंगे।

63. बख़ुदा हम तुमसे पहले भी कितनी ही उम्मतों के पास रसूल भेज चुके हैं, लेकिन शैतान ने उनके करतूत उनके लिए खुशनुमा बनाए; पस वही आज भी उनका सरपरस्त है, उनके लिए एक दर्दनाक अज़ाब है।

64. हमने यह किताब तुमपर इसी लिए नाज़िल की है कि जिसमें वो इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं उसे तुम उनपर वाज़ेह कर दो, और यह हिदायत व

व यज्अ़लू-न लिमा ला यअ़्लमू-न नसीबम् मिम्मा रज़क़्नाहुम्, तल्लाहि लतुस्अलुन्-न अ़म्मा कुन्तुम् तफ़्तरून (56)

व यज्अ़लू-न लिल्लाहिल्-बनाति सुब्हानहू व लहुम् मा यश्तहून (57)

व इज़ा बुश्शि-र अ-हदुहुम् बिल्उन्सा ज़ल्-ल वज्हुहू मुस्वद्दंव्-व हु-व कज़ीम (58)

य-तवारा मिनल्-क़ौमि मिन् सू-इ मा बुश्शि-र बिही, अयुम्सिकुहू अ़ला हूनिन् अम् यदुस्सुहू फ़ित्तुराबि, अला सा-अ मा यह्कुमून (59)

लिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति म-सलुस्सौइ व लिल्लाहिल् म-सलुल्-अअ़्ला व हुवल् अ़ज़ीज़ुल् हकीम (60) ●

व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्ना-स बिज़ुल्मिहिम् मा त-र-क अ़लैहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिंय्युअख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम् मुसम्मन् फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् ला यस्तअ्ख़िरू-न सा-अ़तंव्-व ला यस्तक़्दिमून (61)

व यज्अ़लू-न लिल्लाहि मा यक्रहू-न व तसिफ़ु अल्सिनतुहुमुल्-कज़ि-ब अन्-न लहुमुल्-हुस्ना, ला ज-र-म अन्-न लहुमुन्ना-र व अन्नहुम् मुफ़्रतून (62)

तल्लाहि ल-क़द् अर्सल्ना इला उ-ममिम् मिन् क़ब्लि-क फ़-ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ़्मालहुम् फ़हु-व वलिय्युहुमुल्-यौ-म व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (63)

व मा अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब इल्ला लितुबय्यि-न

وَيَجْعَلُوْنَ لِمَا لَا يَعْلَمُوْنَ نَصِيْبًا
مِّمَّا رَزَقْنٰهُمْ ؕ تَاللّٰهِ لَتُسْـَٔلُنَّ عَمَّا
كُنْتُمْ تَفْتَرُوْنَ (٥٦)
وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ الْبَنٰتِ سُبْحٰنَهٗ ۙ
وَلَهُمْ مَّا يَشْتَهُوْنَ (٥٧)
وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِالْاُنْثٰى ظَلَّ
وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ۚ (٥٨)
يَتَوَارٰى مِنَ الْقَوْمِ مِنْ سُوْٓءِ مَا
بُشِّرَ بِهٖ ؕ اَيُمْسِكُهٗ عَلٰى هُوْنٍ اَمْ
يَدُسُّهٗ فِى التُّرَابِ ؕ اَلَا سَآءَ مَا
يَحْكُمُوْنَ (٥٩)
لِلَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ مَثَلُ
السَّوْءِ ۚ وَلِلّٰهِ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى ؕ وَهُوَ
ع الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۚ (٦٠)
وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِظُلْمِهِمْ
مَّا تَرَكَ عَلَيْهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ
يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۚ فَاِذَا
جَآءَ اَجَلُهُمْ لَا يَسْتَاْخِرُوْنَ سَاعَةً
وَّلَا يَسْتَقْدِمُوْنَ (٦١)
وَيَجْعَلُوْنَ لِلّٰهِ مَا يَكْرَهُوْنَ وَتَصِفُ
اَلْسِنَتُهُمُ الْكَذِبَ اَنَّ لَهُمُ الْحُسْنٰى ؕ
لَا جَرَمَ اَنَّ لَهُمُ النَّارَ وَاَنَّهُمْ
مُّفْرَطُوْنَ (٦٢)
تَاللّٰهِ لَقَدْ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰٓى اُمَمٍ مِّنْ
قَبْلِكَ فَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ
فَهُوَ وَلِيُّهُمُ الْيَوْمَ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (٦٣)
وَمَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ اِلَّا لِتُبَيِّنَ

रहमत है उन लोगों के लिए जो ईमान लाए।

65. और अल्लाह ही ने तो आसमान से पानी उतारा, फिर उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा किया। यक़ीनन इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानी है जो सुनते हैं।

66. तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक बड़ा सबक़ है; जो उनके पेटों में है उसमें गोबर और ख़ून के दरमियान से हम तुम्हें ख़ालिस दूध पिलाते हैं, जो पीने वालों के लिए निहायत खुशगवार है।

67. और खजूरों और अंगूरों के फलों से भी, जिससे तुम कैफ़ आवर चीज़ तैयार कर लेते हो और अच्छा रिज़्क़ भी। यक़ीनन इसमें उन लोगों के लिए एक बड़ी निशानी है जो अक़्ल से काम लेते हैं।

68. और तुम्हारे रब ने शहद की मक्खी पर इल्क़ा (इलहाम) किया कि "पहाड़ों में, और दरख़्तों में, और उन छतरियों में जिन्हें लोग बनाते हैं, घर बना।

69. फिर हर क़िस्म के फल-फूलों से खुराक ले, और अपने रब की हमवार राहों पर चलती रह"। उसके पेट से मुख़्तलिफ़ रंग का एक मशरूब निकलता है जिसमें लोगों के लिए शिफ़ा है। यक़ीनन इसमें भी उन लोगों के लिए एक बड़ी निशानी है जो ग़ौर व फ़िक्र से काम लेते हैं।

60. अल्लाह ने तुम्हें पैदा किया; फिर वह तुम्हारी रूहें क़ब्ज़ कर लेता है; और तुममें से कोई बुढ़ापे की इंतिहाई उम्र की तरफ़ फिर जाता है, उसका अंजाम यह होता है कि जानने के बाद फिर वह कुछ नहीं जानता; बेशक अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, बड़ा साहिबे क़ुदरत है।

71. और अल्लाह ने रिज़्क़ के मुआमले में तुममें से बाज़ को बाज़ पर बरतरी दे रखी है। फिर जिन्हें बरतरी दी गई है वह अपना रिज़्क़ अपने गुलामों की तरफ़ नहीं फेर दिया करते कि वो सब उसमें बराबर हो जाएं। फिर क्या अल्लाह के एहसान व इनाम का उन्हें इनकार है?

लहुमुल्लज़िख़्त-लफ़ू फ़ीहि व हुदंव्-व रह्म-तल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (64)

वल्लाहु अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अह्या बिहिल्अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्यस्मअून (65)●

व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आमि लअिब्र-तन् नुस्क़ीकुम् मिम्मा फ़ी बुतूनिही मिम्-बैनि फ़र्सिंव्-व दमिल्-ल-बनन् ख़ालिसन् साइग़ल्-लिश्शारिबीन (66)

व मिन् स-मरातिन्नख़ीलि वल्अअ्नाबि तत्तख़िज़ू-न मिन्हु स-करंव्-व रिज़्क़न् ह-सनन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (67)

व औहा रब्बु-क इलन्नह्लि अनित्तख़िज़ी मिनल्-जिबालि बुयूतंव्-व मिनश्श-जरि व मिम्मा यअ्रिशून (68)

सुम्-म कुली मिन् कुल्लिस्स-मराति फ़स्लुकी सुबु-ल रब्बिकि ज़ुलुलन्, यख़्रुजु मिम्-बुतूनिहा शराबुम्-मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू फ़ीहि शिफ़ाउल्-लिन्नासि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून (69)

वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् सुम्-म य-तवफ़्फ़ाकुम् व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला अर्ज़लिल्-अुमुरि लिकै ला यअ्ल-म बअ्-द अिल्मिन् शैअन्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् क़दीर (70)●

वल्लाहु फ़ज़्ज़-ल बअ्ज़कुम् अ़ला बअ्ज़िन् फ़िर्रिज़्क़ि फ़-मल्लज़ी-न फ़ुज़्ज़िलू बिराद्दी रिज़्क़िहिम् अ़ला मा म-लकत् ऐमानुहुम् फ़हुम् फ़ीहि सवाउन्, अ-फ़बिनिअ्-मतिल्लाहि यज्हदून (71)

لَهُمُ الَّذِي اخْتَلَفُوْا فِيْهِ ۙ وَهُدًى
وَّرَحْمَةً لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (٦٤)
وَاللّٰهُ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَحْيَا
بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ
فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ (٦٥)
وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ
مِّمَّا فِيْ بُطُوْنِهٖ مِنْۢ بَيْنِ فَرْثٍ وَّدَمٍ
لَّبَنًا خَالِصًا سَآئِغًا لِّلشّٰرِبِيْنَ (٦٦)
وَمِنْ ثَمَرٰتِ النَّخِيْلِ وَالْاَعْنَابِ
تَتَّخِذُوْنَ مِنْهُ سَكَرًا وَّرِزْقًا حَسَنًا ۭ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ (٦٧)
وَاَوْحٰى رَبُّكَ اِلَى النَّحْلِ اَنِ اتَّخِذِيْ
مِنَ الْجِبَالِ بُيُوْتًا وَّمِنَ الشَّجَرِ
وَمِمَّا يَعْرِشُوْنَ (٦٨)
ثُمَّ كُلِيْ مِنْ كُلِّ الثَّمَرٰتِ فَاسْلُكِيْ
سُبُلَ رَبِّكِ ذُلُلًا ۭ يَخْرُجُ مِنْۢ بُطُوْنِهَا
شَرَابٌ مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ فِيْهِ شِفَآءٌ
لِّلنَّاسِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّقَوْمٍ
يَّتَفَكَّرُوْنَ (٦٩)
وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ ثُمَّ يَتَوَفّٰىكُمْ ڐ وَمِنْكُمْ
مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ لِكَيْ لَا
يَعْلَمَ بَعْدَ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۭ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ (٧٠)
وَاللّٰهُ فَضَّلَ بَعْضَكُمْ عَلٰي بَعْضٍ فِي
الرِّزْقِ ۚ فَمَا الَّذِيْنَ فُضِّلُوْا بِرَاۗدِّيْ
رِزْقِهِمْ عَلٰي مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ فَهُمْ
فِيْهِ سَوَاۗءٌ ۭ اَفَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَجْحَدُوْنَ (٧١)

72. और अल्लाह ही ने तुम्हारे लिए तुम्हारी जिन्स से बीवियां बनाईं, और तुम्हारी बीवियों से तुम्हारे लिए बेटे और पोते पैदा किए, और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ें बतौरे रिज़्क़ अता कीं। तो क्या वो बातिल को मानते हैं, और अल्लाह की इनायात ही का उन्हें इनकार है?

73. और अल्लाह से हटकर उन्हें पूजते हैं, जिन्हें आसमानों और ज़मीन से रिज़्क़ अता करने का कुछ इख़्तियार हासिल नहीं है। और न वो कुदरत रखते हैं?

74. पस अल्लाह के लिए मिसालें न घड़ो; जानता अल्लाह है; तुम नहीं जानते।

75. अल्लाह ने एक तमसील पेश की है: एक गुलाम है जो पराए के बस में है, किसी चीज़ पर उसे इख़्तियार हासिल नहीं, इसके बरअक्स एक वह शख़्स है जिसे हमने अपनी तरफ़ से अच्छा रिज़्क़ अता किया है, फिर वह उसमें से खुले और छुपे खर्च करता रहता है, तो क्या वो बराबर हैं? तारीफ़ अल्लाह के लिए है। लेकिन उनमें अकसर जानते नहीं।

76. अल्लाह ने एक और तमसील पेश फ़रमाई है: दो मर्द हैं, उनमें एक गूंगा है, किसी चीज़ पर उसे कुदरत हासिल नहीं, वह अपने आक़ा पर एक बोझ है — उसे वह जहां भेजता है, वह कुछ भलाई नहीं लाता। क्या वह और जो इनसाफ़ का हुक्म देता है और खुद भी सीधे रास्ते पर है वह यकसां हैं?

77. आसमानों और ज़मीन का राज़ अल्लाह ही के लिए मख़सूस है। और क़ियामत की घड़ी का मुआमला बस ऐसा ही है जैसे आंख का झपकना, या वह इससे भी क़रीबतर है। यक़ीनन अल्लाह को हर चीज़ पर कुदरत हासिल है।

78. अल्लाह ने तुम्हें तुम्हारी माओं के पेट से इस हालत में निकाला कि तुम कुछ जानते न थे, उसने तुम्हें

वल्लाहु ज-अ़-ल लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव-व ज-अ़-ल लकुम् मिन् अज़्याजिकुम् बनी-न व ह-फ़-दतंव्-व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति, अ-फ़बिल्बातिलि युअ्मिनू-न व बिनिअ्-मतिल्लाहि हुम् यक्फ़ुरून (72)

व यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यम्लिकु लहुम रिज़्क़म्-मिनस्समावाति वल्अर्ज़ि शैअंव्-व ला यस्ततीअून (73)

फ़ला तज़्रिबू लिल्लाहिल्-अम्सा-ल, इन्नल्ला-ह यअ़लमु व अन्तुम् ला तअ्लमून (74)

ज़-रबल्लाहु म-सलन् अ़ब्दम्-मम्लूकल्-ला यक़्दिरू अ़ला शैइंव्-व मर्रज़क़्नाहु मिन्ना रिज़्क़न् ह-सनन् फ़हु-व युन्फ़िकु मिन्हु सिर्रंव्-व जह्रन्, हल् यस्तवू-न, अल्हम्दु लिल्लाहि, बल् अक्सरूहुम् ला यअ्लमून (75)

व ज़-रबल्लाहु म-सलर्रजुलैनि अ-हदुहुमा अब्कमु ला यक़्दिरू अ़ला शैइंव्-व हु-व कल्लुन् अ़ला मौलाहु ऐ-नमा युवज्जिह्हु ला यअ्ति बिख़ैरिन्, हल् यस्तवी हु-व व मंय्यअ्मुरू बिल्-अ़द्लि व हु-व अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (76) ●

व लिल्लाहि ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा अम्रूस्सा-अ़ति इल्ला क-लम्हिल्-ब-सरि औ हु-व अक़्रबु, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (77)

वल्लाहु अख़्र-जकुम् मिम्-बुतूनि उम्महातिकुम् ला तअ्लमू-न शैअंव्-व ज-अ़-ल लकुमुस्सम्-अ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त लअ़ल्लकुम्

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَنْفُسِكُمْ
اَزْوَاجًا وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ
بَنِيْنَ وَحَفَدَةً وَّرَزَقَكُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ ؕ اَفَبِالْبَاطِلِ يُؤْمِنُوْنَ وَ
بِنِعْمَتِ اللّٰهِ هُمْ يَكْفُرُوْنَ ۝۷۲
وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا
يَمْلِكُ لَهُمْ رِزْقًا مِّنَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ شَيْئًا وَّلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ ۝۷۳
فَلَا تَضْرِبُوْا لِلّٰهِ الْاَمْثَالَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝۷۴
ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا عَبْدًا مَّمْلُوْكًا
لَّا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّمَنْ رَّزَقْنٰهُ مِنَّا
رِزْقًا حَسَنًا فَهُوَ يُنْفِقُ مِنْهُ سِرًّا
وَّجَهْرًا ؕ هَلْ يَسْتَوٗنَ ؕ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ؕ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۷۵
وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلَيْنِ اَحَدُهُمَآ
اَبْكَمُ لَا يَقْدِرُ عَلٰى شَيْءٍ وَّهُوَ
كَلٌّ عَلٰى مَوْلٰىهُ ۙ اَيْنَمَا يُوَجِّهْهُّ
لَا يَاْتِ بِخَيْرٍ ؕ هَلْ يَسْتَوِيْ هُوَ ۙ
وَمَنْ يَّاْمُرُ بِالْعَدْلِ ۙ وَهُوَ عَلٰى
صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝۷۶
وَلِلّٰهِ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَمَآ
اَمْرُ السَّاعَةِ اِلَّا كَلَمْحِ الْبَصَرِ اَوْ هُوَ
اَقْرَبُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝۷۷
وَاللّٰهُ اَخْرَجَكُمْ مِّنْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ
لَا تَعْلَمُوْنَ شَيْئًا ۙ وَّجَعَلَ لَكُمُ
السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۙ لَعَلَّكُمْ

कान, आंख, और दिल दिए ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो।

79. क्या उन्होंने परिन्दों को आसमानी फ़िज़ा में मुसख़्ख़र नहीं देखा? उन्हें बस अल्लाह ही थामे हुए होता है; यक़ीनन इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान लाए हैं।

80. और अल्लाह ने तुम्हारे घरों को तुम्हारे लिए जाए सुकून बनाया है, और जानवरों की खालों से भी तुम्हारे लिए घर बनाए — जिन्हें तुम अपने सफ़र के दिन, और अपने ठहरने के दिन हलका-फुलका पाते हो — और एक मुद्दत के लिए उनके ऊन, उनके रुओं, और उनके बालों से असासा (चीज़ें) और बरतने का सा'मान बनाया।

81. और अल्लाह ने तुम्हारे लिए अपनी पैदा करदा चीज़ों के साए बनाए, और पहाड़ों में तुम्हारे लिए छुपने की जगहें बनाई, और तुम्हें लिबास दिए जो गर्मी से तुम्हें बचाते हैं, और कुछ दूसरे लिबास भी जो तुम्हारी जंग में तुम्हारी हिफ़ाज़त करते हैं। इस तरह वह तुमपर अपनी नेमत तमाम करता है ताकि तुम फ़रमांबरदार हो।

82. फिर अगर वो मुंह मोड़ते हैं, तो तुम्हारी ज़िम्मेदारी तो बस साफ़-साफ़ पैग़ाम पहुंचा देना है।

83. वो अल्लाह की नेमत को पहचानते हैं, फिर उसका इनकार करते हैं, और अक्सर तो उनमें नाशुकरे ही हैं।

84. याद करो जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गवाह खड़ा करेंगे, फिर जिन्होंने कुफ़्र किया होगा उन्हें कोई इजाज़त न मिलेगी, और न उनसे यह फ़रमाइश होगी कि वो उसे राज़ी करें।

85. और जब वो लोग जिन्होंने ज़ुल्म किया अज़ाब देख लेंगे, तो न उसमें उनके लिए कोई तख़फ़ीफ़ की जाएगी, और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी।

86. और जब वो लोग जिन्होंने शिर्क किया अपने ठहराए हुए शरीकों को देखेंगे, तो कहेंगे, "हमारे रब, यही वो हमारे शरीक हैं जिन्हें हम तुझ से हटकर पुकारते थे," इसपर वो उनसे कहेंगे कि "तुम बिल्कुल झूटे हो"।

87. उस दिन वो अल्लाह के आगे सर डाल देंगे और जो कुछ वो घड़ा

तश्कुरून (78)

अलम् यरौ इलत्तैरि मुसख़्ख़रातिन् फ़ी जव्विस्समा-इ, मा युम्सिकुहुन्-न इल्लल्लाहु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (79)

वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिम्-बुयूतिकुम् स-कनंव्-व ज-अ-ल लकुम् मिन् जुलूदिल्-अन्आमि बुयूतन् तस्तख़िफ़्फ़ूनहा यौ-म ज़अ्निकुम् व यौ-म इक़ामतिकुम् व मिन् अस्वाफ़िहा व औबारिहा व अश्आरिहा असासंव्-व मताअ़न् इला हीन (80)

वल्लाहु ज-अ-ल लकुम् मिम्मा ख़-ल-क़ ज़िलालंव्-व ज-अ-ल लकुम् मिनल् जिबालि अक्नानंव्-व ज-अ-ल लकुम् सराबी-ल तक़ीकुमुल्हर्-र व सराबी-ल तक़ीकुम् बअ्सकुम्, कज़ालि-क युतिम्मु निअ्-मतहू अ़लैकुम् लअ़ल्लकुम् तुस्लिमून (81)

फ़-इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा अ़लैकल्-बलाग़ुल्-मुबीन (82)

यअ्रिफ़ू-न निअ्-मतल्लाहि सुम्-म युन्किरूनहा व अक्सरूहुमुल्-काफ़िरून (83) ●

व यौ-म नब्असु मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् सुम्-म ला युअ्ज़नु लिल्लज़ी-न क-फ़रू व ला हुम् युस्तअ्तबून (84)

व इज़ा रअल्लज़ी-न ज़-लमुल्-अ़ज़ा-ब फ़ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम् व ला हुम् युन्ज़रून (85)

व इज़ा रअल्लज़ी-न अश्रकू शु-रका-अहुम् क़ालू रब्बना हाउला-इ शु-रकाउनल्लज़ी-न कुन्ना नद्अू मिन् दूनि-क फ़अल्क़ौ इलैहिमुल्क़ौ-ल इन्नकुम् लकाज़िबून ● (86)

व अल्क़ौ इलल्लाहि यौमइज़ि-निस्स-ल-म व ज़ल्-ल

تَشْكُرُوْنَ (٧٨)

اَلَمْ يَرَوْا اِلَى الطَّيْرِ مُسَخَّرٰتٍ فِيْ جَوِّ
السَّمَآءِ مَا يُمْسِكُهُنَّ اِلَّا اللّٰهُ ۭ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (٧٩)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّنْۢ بُيُوْتِكُمْ سَكَنًا
وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنْ جُلُوْدِ الْاَنْعَامِ
بُيُوْتًا تَسْتَخِفُّوْنَهَا يَوْمَ ظَعْنِكُمْ وَيَوْمَ
اِقَامَتِكُمْ ۙ وَمِنْ اَصْوَافِهَا وَاَوْبَارِهَا
وَاَشْعَارِهَآ اَثَاثًا وَّمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ (٨٠)

وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمْ مِّمَّا خَلَقَ ظِلٰلًا
وَّجَعَلَ لَكُمْ مِّنَ الْجِبَالِ اَكْنَانًا
وَّجَعَلَ لَكُمْ سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمُ الْحَرَّ وَ
سَرَابِيْلَ تَقِيْكُمْ بَاْسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ يُتِمُّ
نِعْمَتَهٗ عَلَيْكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْلِمُوْنَ (٨١)

فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْكَ الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ (٨٢)

يَعْرِفُوْنَ نِعْمَتَ اللّٰهِ ثُمَّ يُنْكِرُوْنَهَا
ع وَاَكْثَرُهُمُ الْكٰفِرُوْنَ (٨٣)

وَيَوْمَ نَبْعَثُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا
ثُمَّ لَا يُؤْذَنُ لِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَلَا هُمْ
يُسْتَعْتَبُوْنَ (٨٤)

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوا الْعَذَابَ فَلَا
يُخَفَّفُ عَنْهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ (٨٥)

وَاِذَا رَاَ الَّذِيْنَ اَشْرَكُوْا شُرَكَآءَهُمْ
قَالُوْا رَبَّنَا هٰٓؤُلَآءِ شُرَكَآؤُنَا الَّذِيْنَ
كُنَّا نَدْعُوْا مِنْ دُوْنِكَ ۚ فَاَلْقَوْا اِلَيْهِمُ
الْقَوْلَ اِنَّكُمْ لَكٰذِبُوْنَ (٨٦)

وَاَلْقَوْا اِلَى اللّٰهِ يَوْمَىِٕذِ ۨ السَّلَمَ وَضَلَّ

करते थे वह सब उनसे गुम होकर रह जाएगा।

88. जिन लोगों ने इनकार किया और अल्लाह के रास्ते से रोका, उनके लिए हम उस फ़साद के बदले में जो वो बरपा करते रहे अज़ाब पर अज़ाब बढ़ाते रहेंगे।

89. और उस वक़्त को याद करो जब हम हर उम्मत में ख़ुद उसके अपने लोगों में से एक गवाह उनपर मुक़र्रर कर के भेज रहे थे, और तुम्हें उन लोगों पर निगरां मुक़र्रर कर के लाए। हमने तुमपर किताब नाज़िल की हर चीज़ को खोलकर बयान करने के लिए और मुसलमानों के लिए हिदायत और रहमत और बशारत के तौर पर।

90. यक़ीनन अल्लाह अद्ल और एहसान, और रिश्तेदारों को देने का हुक्म देता है; और बेहयाई, और बुराई, और सरकशी से रोकता है, वह तुम्हें नसीहत करता है ताकि तुम याददिहानी हासिल करो।

91. अल्लाह के साथ अपने अहद को पूरा करो, जब कि तुम अहद करो, और अपनी क़समों को उन्हें पुख़्ता करने के बाद तोड़ो मत, जबकि तुम अपने ऊपर अल्लाह को अपना ज़ामिन बना चुके हो; यक़ीनन अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

92. तुम उस औरत की तरह न हो जाओ जिसने अपना सूत मज़बूती से कातने के बाद टुकड़े-टुकड़े करके रख दिया कि तुम अपनी क़समों को आपस में दरअन्दाज़ी का ज़रिया बनाने लगो इस ख़याल से कि मबादा एक गिरोह दूसरे गिरोह से बढ़ जाए। बात सिर्फ़ यह है कि अल्लाह इसके ज़रिए से तुम्हारी आज़माइश करता है; और जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ करते हो उसकी हक़ीक़त तो क़ियामत के दिन लाज़िमन वह तुमपर खोल देगा।

93. अगर अल्लाह चाहता तो तुम सबको एक उम्मत बना देता; लेकिन वह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है, और जिसे चाहता है हिदायत देता है; तुम जो कुछ भी करते हो उसके बारे में तो तुमसे लाज़िमन पूछा जाएगा।

94. तुम अपनी क़समों को आपस में दरअन्दाज़ी का ज़रिया न बना लेना

अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (87)

अल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि ज़िद्नाहुम् अ़ज़ाबन् फ़ौक़ल-अ़ज़ाबि बिमा कानू युफ़्सिदून (88)

व यौ-म नब्अ़सु फ़ी कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् अ़लैहिम् मिन् अन्फ़ुसिहिम् व जिअ्ना बि-क शहीदन् अ़ला हाउला-इ, व नज़्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब तिब्यानल्-लिकुल्लि शैइंव्-व हुदंव्-व रह्मतंव्-व बुश्रा लिल्मुस्लिमीन (89) ●

इन्नल्ला-ह यअ्मुरु बिल्-अ़द्लि वल्-इह्सानि व ईता-इ ज़िल्क़ुर्बा व यन्हा अ़निल्-फ़ह्शा-इ वल्मुन्करि वल्बग़्यि यअ़िज़ुकुम् लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (90)

व औफ़ू बि-अ़ह्दिल्लाहि इज़ा आ़हत्तुम् व ला तन्क़ुज़ुल्-ऐमा-न बअ्-द तौकीदिहा व क़द् जअ़ल्तुमुल्ला-ह अ़लैकुम् कफ़ीलन्, इन्नल्ला-ह यअ्लमु मा तफ़्अ़लून (91)

व ला तकूनू कल्लती न-क़ज़त् ग़ज़्लहा मिम्-बअ्दि क़ुव्वतिन् अन्कासन्, तत्तख़िज़ू-न ऐमानकुम् द-ख़लम्-बैनकुम् अन् तकू-न उम्मतुन् हि-य अर्बा मिन् उम्मतिन्, इन्नमा यब्लूकुमुल्लाहु बिही, व लयुबय्यिनन्-न लकुम् यौमल्-क़ियामति मा कुन्तुम फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (92)

व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-अ़-लकुम् उम्मतंव्-वाहिदतंव्-व लाकिंय्-युज़िल्लु मंय्यशा-उ, व यह्दी मंय्यशा-उ, व लतुस्अलुन्-न अ़म्मा कुन्तुम् तअ्मलून (93)

व ला तत्तख़िज़ू ऐमानकुम् द-ख़लम् बैनकुम्

عَنْهُمْ مَّا كَانُوا يَفْتَرُونَ ﴿٨٧﴾
الَّذِينَ كَفَرُوا وَصَدُّوا عَن سَبِيلِ
اللَّهِ زِدْنَاهُمْ عَذَابًا فَوْقَ الْعَذَابِ
بِمَا كَانُوا يُفْسِدُونَ ﴿٨٨﴾
وَيَوْمَ نَبْعَثُ فِي كُلِّ أُمَّةٍ شَهِيدًا عَلَيْهِم
مِّنْ أَنفُسِهِمْ وَجِئْنَا بِكَ شَهِيدًا عَلَىٰ
هَٰؤُلَاءِ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تِبْيَانًا
لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَىٰ
لِلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾ ع
إِنَّ اللَّهَ يَأْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْإِحْسَانِ
وَإِيتَاءِ ذِي الْقُرْبَىٰ وَيَنْهَىٰ عَنِ
الْفَحْشَاءِ وَالْمُنكَرِ وَالْبَغْيِ ۚ يَعِظُكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُونَ ﴿٩٠﴾
وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدتُّمْ
وَلَا تَنقُضُوا الْأَيْمَانَ بَعْدَ تَوْكِيدِهَا
وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۚ
إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾
وَلَا تَكُونُوا كَالَّتِي نَقَضَتْ غَزْلَهَا
مِن بَعْدِ قُوَّةٍ أَنكَاثًا ۚ تَتَّخِذُونَ
أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ أَن تَكُونَ
أُمَّةٌ هِيَ أَرْبَىٰ مِنْ أُمَّةٍ ۚ إِنَّمَا يَبْلُوكُمُ
اللَّهُ بِهِ ۚ وَلَيُبَيِّنَنَّ لَكُمْ يَوْمَ الْقِيَامَةِ
مَا كُنتُمْ فِيهِ تَخْتَلِفُونَ ﴿٩٢﴾
وَلَوْ شَاءَ اللَّهُ لَجَعَلَكُمْ أُمَّةً وَاحِدَةً
وَلَٰكِن يُضِلُّ مَن يَشَاءُ وَيَهْدِي
مَن يَشَاءُ ۚ وَلَتُسْأَلُنَّ عَمَّا كُنتُمْ تَعْمَلُونَ ﴿٩٣﴾
وَلَا تَتَّخِذُوا أَيْمَانَكُمْ دَخَلًا بَيْنَكُمْ

कि मबादा कोई क़दम जमने के बाद फिसल जाए, और अल्लाह के रास्ते से तुम्हारे रोकने के बदले में तुम्हें तकलीफ़ का मज़ा चखना पड़े, और तुम एक बड़े अज़ाब के मुस्तहक़ ठहरो।

95. और थोड़ी क़ीमत हासिल करने के लिए अल्लाह के अ़हद का सौदा न करो; अल्लाह के पास जो कुछ है वही तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो।

96. जो तुम्हारे पास है वह तो ख़त्म हो जाएगा, लेकिन जो अल्लाह के पास है वही बाक़ी रहने वाला है; जिन लोगों ने सब्र से काम लिया उन्हें तो जो अच्छा काम वो करते रहे उसके बदले में लाज़िमन हम उनका अजर अता करेंगे।

97. जिस किसी ने भी नेक अमल किया, मर्द हो या औरत, बशर्तेकि वह मोमिन हो, तो ज़रूर हम उसे पाकीज़ा ज़िन्दगी बसर कराएंगे; ऐसे लोग जो अच्छा अमल करते रहे उसके बदले में लाज़िमन हम उन्हें उनका अजर अता करेंगे।

98. पस जब तुम क़ुरआन पढ़ने लगो, तो शैताने मरदूद से बचने के लिए अल्लाह की पनाह मांग लिया करो;

99. उसका तो उन लोगों पर कोई ज़ोर नहीं चलता जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं;

100. उसे तो बस उन्हीं लोगों पर तसल्लुत हासिल होता है जो उसे अपना सरपरस्त बनाते हैं और उसके (अल्लाह के) साथ शरीक करते हैं।

101. जब हम किसी आयत को बदल देते हैं किसी आयत की जगह — और अल्लाह बेहतर जानता है जो कुछ वह नाज़िल करता है — तो वो कहते हैं कि "तुम ख़ुद ही घड़ लेते हो!" नहीं, बल्कि उनमें अक्सर जानते ही नहीं।

102. कह दो, "उसे तो रूहुलक़ुदुस ने तुम्हारे रब की तरफ़ से बतदरीज हक़ के साथ उतारा है, ताकि ईमान लाने वालों को पुख़्ता करे, और फ़रमांबरदारों के लिए हिदायत और ख़ुशख़बरी हो"।

103. हमें मालूम है कि वो कहते हैं कि "उसे तो बस एक आदमी सिखाता पढ़ाता है"। हालांकि जिसकी तरफ़ वो इशारा करते हैं उसकी ज़बान अजमी है; और यह साफ़ फ़सीह अरबी ज़बान है।

फ़-तज़िल्-ल क़-दमुम्-बअ्-द सुबूतिहा व तज़ूक़ुस्सू-अ बिमा सदत्तुम् अ़न् सबीलिल्लाहि व लकुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (94)

व ला तश्तरू बि-अ़ह्दिल्लाहि स-मनन् क़लीलन्, इन्नमा अ़िन्दल्लाहि हु-व ख़ैरुल्लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून (95)

मा अ़िन्दकुम् यन्फ़दु व मा अ़िन्दल्लाहि बाक़िन्, व ल-नज्ज़ियन्नल्लज़ी-न स-बरू अज्रहुम् बि-अह्सनि मा कानू यअ्मलून (96)

मन अ़मि-ल सालिहम्-मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन् फ़-लनुह्यि-यन्नहू हयातन् तय्यि-बतन् व लनज्ज़ियन्नहुम् अज्रहुम् बिअह्सनि मा कानू यअ्मलून (97)

फ़-इज़ा क़रअ्तल्-क़ुरआ-न फ़स्तअ़िज़् बिल्लाहि मिनश्शैतानिर्रजीम (98)

इन्नहू लै-स लहू सुल्तानुन् अ़लल्लज़ी-न आमनू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून (99)

इन्नमा सुल्तानुहू अ़लल्लज़ी-न य-तवल्लौनहू वल्लज़ी-न हुम् बिही मुश्रिकून (100) ●

व इज़ा बद्दल्ना आ-यतम् मका-न आयतिंव्-वल्लाहु अअ्लमु बिमा युनज़्ज़िलु क़ालू इन्नमा अन्-त मुफ़्तरिन्, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्लमून (101)

क़ुल् नज़्ज़-लहु रूहुल्-क़ुदुसि मिर्रब्बि-क बिल्हक़्क़ि लियुसब्बितल्लज़ी-न आमनू व हुदंव्-व बुश्रा लिल्-मुस्लिमीन (102)

व ल-क़द् नअ्लमु अन्नहुम् यक़ूलू-न इन्नमा युअ़ल्लिमुहू ब-शरुन्, लिसानुल्लज़ी युल्हिदू-न इलैहि अअ्-जमिय्युंव्-व हाज़ा लिसानुन् अ़-रबिय्युम् मुबीन (103)

فَتَزِلَّ قَدَمٌۢ بَعْدَ ثُبُوْتِهَا وَتَذُوْقُوا
السُّوْٓءَ بِمَا صَدَدْتُّمْ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ
وَلَكُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝۹۴
وَلَا تَشْتَرُوْا بِعَهْدِ اللّٰهِ ثَمَنًا قَلِيْلًا ۭ
اِنَّمَا عِنْدَ اللّٰهِ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝۹۵
مَا عِنْدَكُمْ يَنْفَدُ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ بَاقٍ ۭ
وَلَنَجْزِيَنَّ الَّذِيْنَ صَبَرُوْٓا اَجْرَهُمْ
بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۹۶
مَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَنُحْيِيَنَّهٗ حَيٰوةً طَيِّبَةً ۚ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ
اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۹۷
فَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ
مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ۝۹۸
اِنَّهٗ لَيْسَ لَهٗ سُلْطٰنٌ عَلَى الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ۝۹۹
اِنَّمَا سُلْطٰنُهٗ عَلَى الَّذِيْنَ يَتَوَلَّوْنَهٗ
ع وَالَّذِيْنَ هُمْ بِهٖ مُشْرِكُوْنَ ۝۱۰۰
وَاِذَا بَدَّلْنَآ اٰيَةً مَّكَانَ اٰيَةٍ ۙ وَّاللّٰهُ
اَعْلَمُ بِمَا يُنَزِّلُ قَالُوْٓا اِنَّمَآ اَنْتَ
مُفْتَرٍ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝۱۰۱
قُلْ نَزَّلَهٗ رُوْحُ الْقُدُسِ مِنْ رَّبِّكَ
بِالْحَقِّ لِيُثَبِّتَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَهُدًى
وَّبُشْرٰى لِلْمُسْلِمِيْنَ ۝۱۰۲
وَلَقَدْ نَعْلَمُ اَنَّهُمْ يَقُوْلُوْنَ اِنَّمَا يُعَلِّمُهٗ
بَشَرٌ ۭ لِسَانُ الَّذِيْ يُلْحِدُوْنَ اِلَيْهِ
اَعْجَمِيٌّ وَّهٰذَا لِسَانٌ عَرَبِيٌّ مُّبِيْنٌ ۝۱۰۳

104. सच्ची बात यह है कि जो लोग अल्लाह की आयतों को नहीं मानते अल्लाह उन्हें हिदायत नहीं देता; उनके कि लिए तो एक दर्दनाक अज़ाब है।

105. झूट तो बस वही लोग घड़ते हैं जो अल्लाह की आयतों को मानते नहीं, और वही हैं जो झूटे हैं।

106. जिसने अपने ईमान के बाद अल्लाह के साथ कुफ़्र किया, मगर वह नहीं जिसे उसके लिए मजबूर कर दिया गया हो, और दिल उसका अब भी ईमान पर मुतमइन हो, बल्कि जिसका सीना कुफ़्र के लिए खुला हुआ है तो ऐसे लोगों पर अल्लाह का ग़ज़ब है, और उनके लिए बड़ा अज़ाब है;

107. यह इसलिए कि उन्होंने आख़िरत के मुक़ाबले में दुनिया की ज़िन्दगी को पसन्द किया, और यह कि अल्लाह कुफ़्र इख़्तियार करनेवाले लोगों को हिदायत नहीं दिया करता।

108. वही लोग हैं जिनके दिलों, और जिनके कानों, और जिनकी आंखों पर अल्लाह ने मुहर लगा दी है; और वही हैं जो ग़फ़्लत में डूबे हुए हैं;

109. लाज़िम बात है कि आख़िरत में वही ख़सारे में रहेंगे।

110. फिर तुम्हारा रब उन लोगों के लिए जिन्होंने इसके बाद कि वो आज़माइश में पड़ चुके थे हिजरत की, फिर जिहाद किया और साबित क़दमी दिखाई, तो इन बातों के बाद तो लाज़िमन तुम्हारा रब बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला है।

111. जिस दिन हर शख़्स अपने ही लिए झगड़ता हुआ आएगा; और हर शख़्स को जो कुछ उसने किया होगा उसका पूरा-पूरा बदला चुका दिया जाएगा, और उनपर कुछ भी ज़ुल्म न होगा।

112. अल्लाह ने एक मिसाल बयान की है; एक बस्ती थी जो बेख़ौफ़, और मुतमइन थी, हर जगह से उसका रिज़्क़ बफ़राग़त चला आ रहा था कि वह अल्लाह की नेमतों की नाशुकरी करने लग गई; तब अल्लाह

इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिआयातिल्लाहि ला यह्दीहिमुल्लाहु व लहुम् अज़ाबुन् अलीम (104)

इन्नमा यफ़्तरिल्-कज़िबल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिआयातिल्लाहि व उलाइ-क हुमुल्-काज़िबून (105)

मन् क-फ़-र बिल्लाहि मिम्-बअ्दि ईमानिही इल्ला मन् उक्रि-ह व क़ल्बुहू मुत्मइन्नुम्-बिल्ईमानि व लाकिम्-मन् श-र-ह बिल्कुफ़्रि सद्रन फ़-अ़लैहिम् ग़-ज़बुम्-मिनल्लाहि व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (106)

ज़ालि-क बिअन्नहुमुस्त-हब्बुल्-हयातद्दुन्या अ़लल्-आख़िरति व अन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमल्-काफ़िरीन (107)

उलाइ-कल्लज़ी-न त-बअ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् व सम्अ़िहिम् व अब्सारिहिम् व उलाइ-क हुमुल्ग़ाफ़िलून (108)

ला ज-र-म अन्नहुम् फ़िल्आख़िरति हुमुल् ख़ासिरून (109)

सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लज़ी-न हाजरू मिम्-बअ्दि मा फ़ुतिनू सुम्-म जाहदू व स-बरू इन्-न रब्ब-क मिम्-बअ्दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रहीम (110)●

यौ-म तअ्ती कुल्लु नफ़्सिन् तुजादिलु अ़न् नफ़्सिहा व तुवफ़्फ़ा कुल्लु नफ़्सिम्-मा अ़मिलत् व हुम् ला युज़्लमून (111)

व ज़-रबल्लाहु म-सलन् क़र्-यतन् कानत् आमि-नतम्-मुत्मइन्नतंय्-यअ्तीहा रिज़्क़ुहा र-ग़दम्-मिन् कुल्लि मकानिन् फ़-क-फ़रत् बिअन्अुमिल्लाहि

اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۙ
لَا يَهْدِيْهِمُ اللّٰهُ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝١٠٤
اِنَّمَا يَفْتَرِى الْكَذِبَ الَّذِيْنَ لَا
يُؤْمِنُوْنَ بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۚ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْكٰذِبُوْنَ ۝١٠٥

مَنْ كَفَرَ بِاللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ اِيْمَانِهٖٓ
اِلَّا مَنْ اُكْرِهَ وَقَلْبُهٗ مُطْمَئِنٌّۢ بِالْاِيْمَانِ
وَلٰكِنْ مَّنْ شَرَحَ بِالْكُفْرِ صَدْرًا
فَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ مِّنَ اللّٰهِ ۚ وَلَهُمْ
عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۝١٠٦

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اسْتَحَبُّوا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
عَلَى الْاٰخِرَةِ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِى
الْقَوْمَ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٠٧

اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ عَلٰى
قُلُوْبِهِمْ وَسَمْعِهِمْ وَاَبْصَارِهِمْ ۚ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْغٰفِلُوْنَ ۝١٠٨

لَا جَرَمَ اَنَّهُمْ فِى الْاٰخِرَةِ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝١٠٩

ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ هَاجَرُوْا مِنْۢ
بَعْدِ مَا فُتِنُوْا ثُمَّ جٰهَدُوْا وَصَبَرُوْٓا ۙ
ع اِنَّ رَبَّكَ مِنْۢ بَعْدِهَا لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١١٠

يَوْمَ تَاْتِىْ كُلُّ نَفْسٍ تُجَادِلُ عَنْ
نَّفْسِهَا وَتُوَفّٰى كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ
وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ۝١١١

وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا قَرْيَةً كَانَتْ اٰمِنَةً
مُّطْمَئِنَّةً يَّاْتِيْهَا رِزْقُهَا رَغَدًا مِّنْ
كُلِّ مَكَانٍ فَكَفَرَتْ بِاَنْعُمِ اللّٰهِ

ने उसके बाशिन्दों को उनके करतूतों के बदले में भूक का मज़ा चखाया और ख़ौफ़ का लिबास पहना दिया।

113. उनके पास उन्हीं में से एक रसूल आया, मगर उन्होंने उसे झुटला दिया; आख़िरकार अज़ाब ने उन्हें आ लिया। जबकि वो ज़ालिम हो चुके थे।

114. पस जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें हलाल और पाक रिज़्क़ अता किया है उसे खाओ और अल्लाह की नेमत का शुक्र अदा करो, अगर तुम उसी की इबादत करते हो।

115. उसने तो तुमपर सिर्फ़ मुरदार, और खून, और सुअर का गोश्त, और जिसपर अल्लाह के सिवा किसी और का नाम लिया गया हो हराम ठहराया है। फिर अगर कोई मजबूर हो जाए, इस तरह कि न तो वह उसका दिल से तालिब हो और न हद से आगे बढ़नेवाला हो, तो यक़ीनन अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला, निहायत रहमवाला है।

116. और अपनी ज़बानों के बयान किए हुए झूट की बुनियाद पर यह न कहा करो कि, "यह हलाल है, और यह हराम है", ताकि इस तरह अल्लाह पर झूट बांधो; जो लोग अल्लाह से मन्सूब करके झूट घड़ते हैं वो हरगिज़ कामयाब होने के नहीं।

117. यह ऐश थोड़ा है, और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

118. जो यहूदी हैं उनपर हम पहले वो चीज़ें हराम कर चुके हैं जिनका हमने तुमसे ज़िक्र किया। उनपर तो ज़ुल्म हमने नहीं किया, बल्कि वो ख़ुद ही अपने आप पर ज़ुल्म करते रहे।

119. फिर तुम्हारा रब उनके लिए जिन्होंने जहालत से बुरा अमल किया, फिर उसके बाद तौबा करके इसलाह कर ली, तो यक़ीनन तुम्हारा रब उसके बाद बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

120. यक़ीनन इबराहीम की हैसियत एक उम्मत की थी, वह ख़ुदा का फ़रमांबरदार, उसकी तरफ़ यकसू था, वह मुशरिक न था,

121. उसकी नवाज़िशों का शुक्र अदा करने वाला था; ख़ुदा ने उसे

फ़-अज़ा-क़हल्लाहु लिबासल्-जूअ़ि वल्ख़ौफ़ि बिमा कानू यस्नअ़ून (112)

व ल-क़द् जाअहुम् रसूलुम्-मिन्हुम् फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्-अ़ज़ाबु व हुम् ज़ालिमून (113)

फ़कुलू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु हलालन् तय्यिबंव्-वश्कुरू निअ़्-मतल्लाहि इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ़्बुदून (114)

इन्नमा हर्र-म अ़लैकुमुल्-मैत-त वद्द-म व लह्मल्-ख़िन्ज़ीरि व मा उहिल्-ल लिग़ैरिल्लाहि बिही फ़-मनिज़्तुर्-र ग़ै-र बाग़िंव्-व ला आ़दिन् फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (115)

व ला तक़ूलू लिमा तसिफ़ु अल्सि-नतुकुमुल्-कज़ि-ब हाज़ा हलालुंव्-व हाज़ा हरामुल्-लितफ़्तरू अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब, इन्नल्लज़ी-न यफ़्तरू-न अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब ला युफ़्लिहून (116)

मताअ़ुन् क़लीलुंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (117)

व अ़लल्लज़ी-न हादू हर्रम्ना मा क़सस्ना अ़लै-क मिन् क़ब्लु व मा ज़लम्नाहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून (118)

सुम्-म इन्-न रब्ब-क लिल्लज़ी-न अ़मिलुस्सू-अ बि-जहालतिन् सुम्-म ताबू मिम्-बअ़्दि ज़ालि-क व अस्लहू इन्-न रब्ब-क मिम्-बअ़्दिहा ल-ग़फ़ूरुर्रहीम (119) ●

इन्-न इब्राही-म का-न उम्म-तन् क़ानितल्-लिल्लाहि हनीफ़न्, व लम् यकु मिनल्-मुश्रिकीन (120)

शाकिरल्-लिअन्अुमिही, इज्तबाहु व हदाहु इला

فَاَذَاقَهَا اللّٰهُ لِبَاسَ الْجُوْعِ وَالْخَوْفِ
بِمَا كَانُوْا يَصْنَعُوْنَ (١١٢)
وَلَقَدْ جَآءَهُمْ رَسُوْلٌ مِّنْهُمْ
فَكَذَّبُوْهُ فَاَخَذَهُمُ الْعَذَابُ وَهُمْ
ظٰلِمُوْنَ (١١٣)
فَكُلُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ حَلٰلًا
طَيِّبًا ۖ وَّاشْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ اِنْ
كُنْتُمْ اِيَّاهُ تَعْبُدُوْنَ (١١٤)
اِنَّمَا حَرَّمَ عَلَيْكُمُ الْمَيْتَةَ وَالدَّمَ
وَلَحْمَ الْخِنْزِيْرِ وَمَآ اُهِلَّ لِغَيْرِ
اللّٰهِ بِهٖ ۚ فَمَنِ اضْطُرَّ غَيْرَ بَاغٍ وَّلَا عَادٍ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١١٥)
وَلَا تَقُوْلُوْا لِمَا تَصِفُ اَلْسِنَتُكُمُ
الْكَذِبَ هٰذَا حَلٰلٌ وَّهٰذَا حَرَامٌ
لِّتَفْتَرُوْا عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ ۗ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَفْتَرُوْنَ عَلَى اللّٰهِ الْكَذِبَ لَا يُفْلِحُوْنَ (١١٦)
مَتَاعٌ قَلِيْلٌ ۖ وَّلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (١١٧)
وَعَلَى الَّذِيْنَ هَادُوْا حَرَّمْنَا مَا قَصَصْنَا
عَلَيْكَ مِنْ قَبْلُ ۚ وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ
كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ (١١٨)
ثُمَّ اِنَّ رَبَّكَ لِلَّذِيْنَ عَمِلُوا السُّوْٓءَ
بِجَهَالَةٍ ثُمَّ تَابُوْا مِنْ بَعْدِ ذٰلِكَ
وَاَصْلَحُوْٓا ۙ اِنَّ رَبَّكَ مِنْ بَعْدِهَا
ع لَغَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ (١١٩)
اِنَّ اِبْرٰهِيْمَ كَانَ اُمَّةً قَانِتًا لِّلّٰهِ
حَنِيْفًا ۭ وَلَمْ يَكُ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ (١٢٠)
شَاكِرًا لِّاَنْعُمِهٖ ۭ اِجْتَبٰىهُ وَهَدٰىهُ اِلٰى

मुन्तख़ब किया, और सीधे रास्ते की तरफ़ उसकी रहनुमाई की।

122. और हमने उसे दुनिया में भी भलाई दी, और आख़िरत में भी वह सालेहीन में से होगा।

123. फिर हमने तुम्हारी तरफ़ वह्यी की कि "इबराहीम के तरीक़े पर चलो, जो बिल्कुल एक तरफ़ का हो गया था और मुशरिकों में से न था"।

124. सब्त (हफ़्ते का दिन) तो सिर्फ़ उनपर आयद किया गया था जिन्होंने उसके बारे में इख़्तिलाफ़ किया था; यक़ीनन तुम्हारा रब उनके दरमियान क़ियामत के दिन उसका फ़ैसला कर देगा जिसमें वो इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं।

125. अपने रब के रास्ते की तरफ़ हिकमत और उमदा नसीहत के साथ दावत दो, और उनसे ऐसे तरीक़े पर मुबाहसा करो जो बेहतरीन हो। तुम्हारा रब उसे ख़ूब जानता है जो उसके रास्ते से भटक गया, और वह उनसे भी ख़ूब वाक़िफ़ है जो हिदायत याफ़्ता हैं।

126. और अगर तुम बदला लो तो उसी क़द्र जितनी कि तुम्हें तकलीफ़ पहुंची हो; लेकिन अगर तुम सब्र करो, तो लाज़िमन यह सब्र करने वालों के लिए बेहतर है।

127. सब्र करो — और सब्र तुम्हारा अल्लाह ही से मुतअल्लिक़ है — और उनके लिए ग़म न खाओ, और न जो चालबाज़ियां वो करते हैं उससे दिल तंग हो।

128. यक़ीनन अल्लाह उनके साथ है जो डर रखते हैं, और एहसान जिनका शिआर है।

सूरह बनी इसराईल मक्की

(आयतें 111, रुकूआत 12)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. क्या ही अज़मत वाला है वह जो रातों-रात अपने बन्दे को मस्जिद-ए-हराम से मस्जिद-ए-अक़सा तक ले गया, जिसके माहौल को हमने बरकत दी, ताकि उसें हम अपनी कुछ निशानियां दिखाएं, बेशक वही सब कुछ सुनता, देखता है।

2. हमने मूसा को किताब दी थी और उसे बनी इसराईल के लिए

सिरातिम्-मुस्तक़ीम (121)

व आतैनाहु फ़िद्दुन्या ह-स-नतन्, व इन्नहू फ़िल्-आख़िरति लमिनस्-सालिहीन (122)

सुम्-म औहैना इलै-क अनित्तबिअ् मिल्ल-त इब्राही-म हनीफ़न्, व मा का-न मिनल्-मुश्रिकीन (123)

इन्नमा जुअ़िलस्सब्तु अ़लल्लज़ीनख़्त-लफ़ू फ़ीहि, व इन्-न रब्ब-क ल-यह्कुमु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (124)

उद्अु इला सबीलि रब्बि-क बिल्हिक्मति वल्मौअ़ि-ज़तिल् ह-स-नति व जादिल्हुम् बिल्लती हि-य अह्सनु, इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्लमु बिमन् ज़ल्-ल अ़न् सबीलिही व हु-व अअ्लमु बिल्मुह्तदीन (125)

व इन् आक़ब्तुम् फ़आक़िबू बिमिस्लि मा अूक़िब्तुम् बिही, व ल-इन् सबर्तुम् लहु-व ख़ैरुल्-लिस्साबिरीन (126)

वस्बिर् व मा सब्रू-क इल्ला बिल्लाहि व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् व ला तकु फ़ी ज़ैक़िम्-मिम्मा यम्कुरून (127)

इन्नल्ला-ह मअ़ल्लज़ीनत्तक़ौ वल्लज़ी-न हुम् मुह्सिनून (128) ●

17 सूरतु बनी इस्राईल
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 6710 अक्षर, 1582 शब्द, 111 आयतें और 12 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

सुब्हानल्लज़ी अस्रा बिअ़ब्दिही लैलम्-मिनल्-मस्जिदिल्-हरामि इलल् मस्जिदिल्-अक़्सल्लज़ी बारक्ना हौलहू लिनुरियहू मिन् आयातिना इन्नहू हुवस्समीअुल्-बसीर (1)

व आतैना मूसल्-किता-ब व जअ़ल्नाहु हुदल् लि-बनी इस्राई-ल अल्ला तत्तख़िज़ू मिन्

صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۝١٢١

وَاٰتَیْنٰهُ فِی الدُّنْیَا حَسَنَةً ۚ وَاِنَّهٗ فِی الْاٰخِرَةِ لَمِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝١٢٢

ثُمَّ اَوْحَیْنَاۤ اِلَیْكَ اَنِ اتَّبِعْ مِلَّةَ اِبْرٰهِیْمَ حَنِیْفًا ۚ وَمَا كَانَ مِنَ الْمُشْرِكِیْنَ ۝١٢٣

اِنَّمَا جُعِلَ السَّبْتُ عَلَى الَّذِیْنَ اخْتَلَفُوْا فِیْهِ ۚ وَاِنَّ رَبَّكَ لَیَحْكُمُ بَیْنَهُمْ یَوْمَ الْقِیٰمَةِ فِیْمَا كَانُوْا فِیْهِ یَخْتَلِفُوْنَ ۝١٢٤

اُدْعُ اِلٰی سَبِیْلِ رَبِّكَ بِالْحِكْمَةِ وَالْمَوْعِظَةِ الْحَسَنَةِ وَجَادِلْهُمْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ ۚ اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِیْلِهٖ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِیْنَ ۝١٢٥

وَاِنْ عَاقَبْتُمْ فَعَاقِبُوْا بِمِثْلِ مَا عُوْقِبْتُمْ بِهٖ ۚ وَلَىِٕنْ صَبَرْتُمْ لَهُوَ خَیْرٌ لِّلصّٰبِرِیْنَ ۝١٢٦

وَاصْبِرْ وَمَا صَبْرُكَ اِلَّا بِاللّٰهِ وَلَا تَحْزَنْ عَلَیْهِمْ وَلَا تَكُ فِیْ ضَیْقٍ مِّمَّا یَمْكُرُوْنَ ۝١٢٧

اِنَّ اللّٰهَ مَعَ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا وَّالَّذِیْنَ هُمْ مُّحْسِنُوْنَ ۝١٢٨ ع ١٦

سُوْرَةُ بَنِیْ اِسْرَآءِیْلَ مَكِّیَّةٌ ١٧ اٰیَاتُهَا ١١١ رُكُوْعَاتُهَا ١٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

سُبْحٰنَ الَّذِیْۤ اَسْرٰی بِعَبْدِهٖ لَیْلًا مِّنَ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ اِلَی الْمَسْجِدِ الْاَقْصَا الَّذِیْ بٰرَكْنَا حَوْلَهٗ لِنُرِیَهٗ مِنْ اٰیٰتِنَا ۚ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝١

وَاٰتَیْنَا مُوْسَی الْكِتٰبَ وَجَعَلْنٰهُ هُدًی لِّبَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ اَلَّا تَتَّخِذُوْا مِنْ

الجزء الخامس عشر (١٥) المنزل الرابع ٤

हिदायत बनाया था कि "मेरे सिवा किसी को कारसाज़ न ठहराना"।

3. ऐ उनकी औलाद जिन्हें हमने नूह के साथ सवार किया था; यक़ीनन वह एक शुक्रगुज़ार बन्दा था।

4. हमने बनी इसराईल को किताब में इस फ़ैसले की ख़बर दे दी थी कि "तुम ज़रूर ज़मीन में दो मरतबा बड़ा फ़साद मचाओगे, और बड़ी सरकशी इख़्तियार करोगे"।

5. फिर जब उन दोनों में पहले वादे का मौक़ा आ जाता है तो हम तुम्हारे मुक़ाबले में अपने ऐसे बन्दों को उठाते हैं जो लड़ाई में बड़े ज़ोर आवर होते हैं, तो वो बस्तियों में घुसकर फैल गए, और यह वादा पूरा होना ही था।

6. फिर हमने तुम्हारी बारी उनपर लौटाई कि उनपर ग़लबा पा सको, और माल और औलाद से तुम्हारी मदद की, और तुम्हें कसीरुल-तादाद अफ़राद का एक जत्था बनाया।

7. "अगर तुमने भलाई की, तो अपनी ही जानों के लिए भलाई की, और अगर तुमने बुराई की तो अपनी ही जानों के लिए"। फिर जब दूसरे वादे का वक़्त आ जाता है (तो हमने तुम्हारे मुक़ाबले में ऐसे ज़ोर आवर को उठाया) कि वो तुम्हारे चेहरे बिगाड़ दें, और मस्जिद में घुस जाएं, जैसे पहली बार वो उसमें घुसे थे, और ताकि जिस चीज़ पर उनका ज़ोर चले तबाह कर के रहें।

8. — हो सकता है कि तुम्हारा रब तुमपर रहम फ़रमाए; लेकिन अगर तुम फिर उसी पहली रविश की तरफ़ पलटे, तो हम भी पलटेंगे; और हमने जहन्नम को अहले कुफ़्र के लिए क़ैदख़ाना बना रखा है।

9. हक़ीक़त में यह क़ुरआन वह रास्ता दिखाता है जो सब से सीधी है और उन मोमिनों को जो नेक आमाल इख़्तियार करते हैं ख़ुशख़बरी देता है कि उनके लिए बड़ा अजर है।

10. और यह कि जो आख़िरत को नहीं मानते उनके लिए हमने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

11. इनसान उस तरह बुराई मांगता है जिस तरह उसकी दुआ भलाई के लिए होनी चाहिए; इनसान है ही बड़ा जल्दबाज़।

दूनी वकीला (2)

ज़ुर्रिय्य-त मन् हमल्ना म-अ नूहिन् इन्नहू का-न अ़ब्दन् शकूरा (3)

व क़ज़ैना इला बनी इस्राई-ल फ़िल्-किताबि लतुफ़्सिदुन्-न फ़िल्अर्ज़ि मर्रतैनि व ल-तअ़्लुन्-न अ़ुलुव्वन् कबीरा (4)

फ़-इज़ा जा-अ वअ़्दु ऊलाहुमा बअ़स्ना अ़लैकुम् अ़िबादल्-लना उली बअ्सिन् शदीदिन् फ़जासू ख़िलालद्दियारि, व का-न वअ़्दम्-मफ़्अ़ूला (5)

सुम्-म रदद्ना लकुमुल्कर्र-त अ़लैहिम् व अम्दद्नाकुम् बिअम्वालिंव्-व बनी-न व जअ़ल्नाकुम् अक्स-र नफ़ीरा (6)

इन् अह्सन्तुम् अह्सन्तुम् लिअन्फ़ुसिकुम्, व इन् अ-सअ्तुम् फ़-लहा, फ़-इज़ा जा-अ वअ़्दुल्-आख़िरति लि-यसूऊ वुजू-हकुम् व लियद्ख़ुलुल्-मस्जि-द कमा द-ख़लूहु अव्व-ल मर्रतिंव्-व लियुतब्बिरू मा अ़लौ तत्बीरा (7)

अ़सा रब्बुकुम् अंय्यर्ह-मकुम् व इन् अ़ुत्तुम्, अ़ुद्ना ● व जअ़ल्ना जहन्न-म लिल्काफ़िरी-न हसीरा (8)

इन्-न हाज़ल्क़ुर्आ-न यह्दी लिल्लती हि-य अक़्वमु व युबश्शिरुल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ़्मलूनस्सालिहाति अन्-न लहुम् अज्रन् कबीरा (9)

व अन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्आख़िरति अअ़्तद्ना लहुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (10) ●

व यद्अ़ुल्-इन्सानु बिश्शर्रि दुआ़-अहू बिल्ख़ैरि, व कानल्-इन्सानु अ़जूला (11)

دُوۡنِیۡ وَکِیۡلًا ۝
ذُرِّیَّۃَ مَنۡ حَمَلۡنَا مَعَ نُوۡحٍ ؕ اِنَّہٗ کَانَ
عَبۡدًا شَکُوۡرًا ۝
وَقَضَیۡنَاۤ اِلٰی بَنِیۡۤ اِسۡرَآءِیۡلَ فِی الۡکِتٰبِ
لَتُفۡسِدُنَّ فِی الۡاَرۡضِ مَرَّتَیۡنِ
وَلَتَعۡلُنَّ عُلُوًّا کَبِیۡرًا ۝
فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ اُوۡلٰىہُمَا بَعَثۡنَا عَلَیۡکُمۡ
عِبَادًا لَّنَاۤ اُولِیۡ بَاۡسٍ شَدِیۡدٍ فَجَاسُوۡا
خِلٰلَ الدِّیَارِ ؕ وَکَانَ وَعۡدًا مَّفۡعُوۡلًا ۝
ثُمَّ رَدَدۡنَا لَکُمُ الۡکَرَّۃَ عَلَیۡہِمۡ
وَاَمۡدَدۡنٰکُمۡ بِاَمۡوَالٍ وَّبَنِیۡنَ وَجَعَلۡنٰکُمۡ
اَکۡثَرَ نَفِیۡرًا ۝
اِنۡ اَحۡسَنۡتُمۡ اَحۡسَنۡتُمۡ لِاَنۡفُسِکُمۡ ۟
وَاِنۡ اَسَاۡتُمۡ فَلَہَا ؕ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ
الۡاٰخِرَۃِ لِیَسُوۡٓءٗا وُجُوۡہَکُمۡ وَلِیَدۡخُلُوا
الۡمَسۡجِدَ کَمَا دَخَلُوۡہُ اَوَّلَ مَرَّۃٍ وَّلِیُتَبِّرُوۡا
مَا عَلَوۡا تَتۡبِیۡرًا ۝
عَسٰی رَبُّکُمۡ اَنۡ یَّرۡحَمَکُمۡ ۚ وَاِنۡ عُدۡتُّمۡ
عُدۡنَا ۘ وَجَعَلۡنَا جَہَنَّمَ لِلۡکٰفِرِیۡنَ
حَصِیۡرًا ۝
اِنَّ ہٰذَا الۡقُرۡاٰنَ یَہۡدِیۡ لِلَّتِیۡ ہِیَ اَقۡوَمُ
وَیُبَشِّرُ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ الَّذِیۡنَ یَعۡمَلُوۡنَ
الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَہُمۡ اَجۡرًا کَبِیۡرًا ۝
وَّاَنَّ الَّذِیۡنَ لَا یُؤۡمِنُوۡنَ بِالۡاٰخِرَۃِ
ع اَعۡتَدۡنَا لَہُمۡ عَذَابًا اَلِیۡمًا ۝
وَیَدۡعُ الۡاِنۡسَانُ بِالشَّرِّ دُعَآءَہٗ
بِالۡخَیۡرِ ؕ وَکَانَ الۡاِنۡسَانُ عَجُوۡلًا ۝

12. हमने रात और दिन को दो निशानियां बनाई हैं; फिर रात की निशानी को हमने मिटी हुई बेनूर रखा, और दिन की निशानी को हमने रौशन बनाया, ताकि तुम अपने रब का फ़ज़्ल तलाश करो, और ताकि तुम बरसों की गिनती, और हिसाब मालूम कर सको; और हर चीज़ को हमने अलग-अलग नुमायां कर रखा है।

13. हर इनसान का नसीबा हमने उसकी अपनी गर्दन से लगा दिया है; और कियामत के दिन हम उसके लिए एक नविश्ता निकालेंगे जिसको वह खुला हुआ पाएगा।

14. "पढ़ ले अपनी किताब! आज तू खुद ही अपना हिसाब करने को काफ़ी है"।

15. जो कोई सीधी राह इख़्तियार करे, तो उसने अपने ही लिए सीधी राह इख़्तियार की, और जो गुमराह हुआ तो उसने अपने ही बुरे के लिए गुमराही इख़्तियार की; कोई भी बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। हम जब तक कि कोई रसूल न भेज दें, अज़ाब नहीं देते।

16. और जब हम किसी बस्ती को हलाक करने का इरादा कर लेते हैं, तो उसके खुशहाल लोगों को हुक्म देते हैं तो वो वहां नाफ़रमानियां करने लग जाते हैं, तब उनपर बात पूरी हो जाती है, तो फिर हम उन्हें बिल्कुल उखाड़ फेंकते हैं।

17. हमने नूह के बाद कितनी ही नसलों को हलाक कर दिया! तुम्हारा रब अपने बन्दों के गुनाहों से बाख़बर रहने, देखने के लिए काफ़ी है।

18. जो कोई जल्द हासिल होने वाली (दुनिया) को चाहता है उसके लिए हम उसी में जो कुछ किसी के लिए चाहते हैं जल्द दे देते हैं; फिर उसके लिए हमने जहन्नम रख छोड़ा है जिसमें वह मज़मूम, रान्दा होकर दाख़िल होगा।

19. और जो आख़िरत चाहता हो और उसके लिए उसके शायाने शान उसने कोशिश भी की बशर्ते कि वह मोमिन हो तो ऐसे ही लोग हैं जिनकी कोशिशें काबिले क़द्र हैं।

20. उन्हें भी और उनको भी, हर एक को हम तुम्हारे रब की अता में से

व जअ़ल्नल्ली-ल वन्नहा-र आयतैनि फ़-महौना आयतल्लैलि व जअ़ल्ना आयतन्नहारि मुब्सि-रतल्-लितब्तग़ू फ़ज़्लम् मिर्रब्बिकुम् व लितअ़्-लमू अ़-ददस्सिनी-न वल्-हिसा-ब, कुल्-ल शैइन् फ़स्सल्नाहु तफ़्सीला (12)

व कुल्-ल इन्सानिन् अल्ज़म्नाहु ताइ-रहू फ़ी अुनुक़िही, व नुख़्रिजु लहू यौमल्-क़ियामति किताबंय्-यल्क़ाहु मन्शूरा (13)

इक़्रअ़् किता-ब-क, कफ़ा बिनफ़्सिकल्-यौ-म अ़लै-क हसीबा (14)

मनिह्तदा फ़-इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा, व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा, व मा कुन्ना मुअ़ज़्ज़िबी-न हत्ता नब्अ़-स रसूला (15)

व इज़ा अरद्ना अन्नुह्लि-क क़र्-यतन् अमर्ना मुत्-रफ़ीहा फ़-फ़-सक़ू फ़ीहा फ़-हक़्-क़ अ़लैहल्क़ौलु फ़-दम्मर्नाहा तद्मीरा (16)

व कम् अह्लक्ना मिनल्क़ुरूनि मिम्-बअ़्दि नूहिन्, व कफ़ा बिरब्बि-क बिज़ुनूबि अ़िबादिही ख़बीरम्-बसीरा (17)

मन् का-न युरीदुल-आ़जि-ल-त अ़ज्जल्ना लहू फ़ीहा मा नशा-उ लिमन् नुरीदु सुम्-म जअ़ल्ना लहू जहन्न-म यस्लाहा मज़्मूमम्-मद्हूरा (18)

व मन् अरादल्-आख़िर-त व सआ़ लहा सअ़्-यहा व हु-व मुअ़्मिनुन् फ़-उलाइ-क का-न सअ़्युहुम् मश्कूरा (19)

कुल्लन्-नुमिद्दु हाउंला-इ व हाउला-इ मिन् अ़ता-इ

وَجَعَلْنَا الَّيْلَ وَالنَّهَارَ اٰيَتَيْنِ
فَمَحَوْنَآ اٰيَةَ الَّيْلِ وَجَعَلْنَآ اٰيَةَ
النَّهَارِ مُبْصِرَةً لِّتَبْتَغُوْا فَضْلًا
مِّنْ رَّبِّكُمْ وَلِتَعْلَمُوْا عَدَدَ السِّنِيْنَ
وَالْحِسَابَ ۭ وَكُلَّ شَيْءٍ فَصَّلْنٰهُ
تَفْصِيْلًا ۝۱۲
وَكُلَّ اِنْسَانٍ اَلْزَمْنٰهُ طٰۗىِٕرَهٗ فِيْ
عُنُقِهٖ ۭ وَنُخْرِجُ لَهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
كِتٰبًا يَّلْقٰىهُ مَنْشُوْرًا ۝۱۳
اِقْرَاْ كِتٰبَكَ ۭ كَفٰى بِنَفْسِكَ الْيَوْمَ
عَلَيْكَ حَسِيْبًا ۝۱۴
مَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖ ۚ
وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا يَضِلُّ عَلَيْهَا ۭ
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَمَا كُنَّا
مُعَذِّبِيْنَ حَتّٰى نَبْعَثَ رَسُوْلًا ۝۱۵
وَاِذَآ اَرَدْنَآ اَنْ نُّهْلِكَ قَرْيَةً اَمَرْنَا
مُتْرَفِيْهَا فَفَسَقُوْا فِيْهَا فَحَقَّ عَلَيْهَا
الْقَوْلُ فَدَمَّرْنٰهَا تَدْمِيْرًا ۝۱۶
وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنَ الْقُرُوْنِ مِنْۢ بَعْدِ
نُوْحٍ ۭ وَكَفٰى بِرَبِّكَ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ
خَبِيْرًۢا بَصِيْرًا ۝۱۷
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعَاجِلَةَ عَجَّلْنَا لَهٗ
فِيْهَا مَا نَشَاۗءُ لِمَنْ نُّرِيْدُ ثُمَّ جَعَلْنَا
لَهٗ جَهَنَّمَ ۚ يَصْلٰىهَا مَذْمُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝۱۸
وَمَنْ اَرَادَ الْاٰخِرَةَ وَسَعٰى لَهَا سَعْيَهَا وَهُوَ
مُؤْمِنٌ فَاُولٰۗىِٕكَ كَانَ سَعْيُهُمْ مَّشْكُوْرًا ۝۱۹
كُلًّا نُّمِدُّ هٰٓؤُلَاۗءِ وَهٰٓؤُلَاۗءِ مِنْ عَطَاۗءِ

मदद पहुंचाए जा रहे हैं; और तुम्हारे रब की अता बन्द नहीं है।

21. देखो, कैसे हमने उनके बाज़ को बाज़ पर फ़ज़ीलत दे रखी है। और आख़िरत दरजात के लिहाज़ से सबसे बढ़कर है, और फ़ज़ीलत के एतिबार से भी वह सब से बढ़-चढ़कर है।

22. अल्लाह के साथ कोई दूसरा माबूद न बनाओ वरना मलामतज़दा और बेयार व मददगार होकर बैठे रह जाओगे।

23. तुम्हारे रब ने फ़ैसला कर दिया है कि उसके सिवा किसी की बन्दगी न करो, और मां-बाप के साथ नेक सुलूक करो, अगर उनमें से कोई एक या दोनों ही तुम्हारे सामने बुढ़ापे को पहुंच जाएं, तो उन्हें "उंह" तक न कहो और न उन्हें झिड़को, बल्कि उनसे शरीफ़ाना बात करो,

24. और उनके आगे रहमदिलाना आजिज़ी के बाज़ू बिछाए रखो और कहो, "मेरे रब, जिस तरह उन्होंने बचपन में मुझे पाला है, तू भी उनपर रहम फ़रमा"।

25. जो कुछ तुम्हारे दिलों में है उसे तुम्हारा रब खूब जानता है। अगर तुम लायक़ और अच्छे हुए, तो यक़ीनन वह भी ऐसे रुजू करनेवालों के लिए बड़ा बख़्शनेवाला है।

26. और रिश्तेदार को उसका हक़ दो, और मुहताज और मुसाफ़िर को भी; — और फ़ुज़ूलख़र्ची न करो।

27. यक़ीनन फ़ुज़ूलख़र्ची करनेवाले तो शैतानों के भाई हैं, और शैतान अपने रब का बड़ा ही नाशुक्रा है।

28. लेकिन अगर तुम्हें अपने रब की रहमत की तलाश में जिसके तुम उम्मीदवार हो उनसे कतराना भी पड़े तो इस हालत में तुम उनसे नर्म गुफ़्तगू करो।

29. और अपना हाथ न तो अपनी गर्दन से बांधे रखो, और न उसे बिल्कुल खुला छोड़ो कि मलामत ज़दा दरमांदा होकर बैठ जाओ।

30. तुम्हारा रब जिसके लिए चाहता है रोज़ी कुशादा कर देता है

रब्बि-क, व मा का-न अता-उ रब्बि-क मह्ज़ूरा (20)

उन्ज़ुर् कै-फ़ फ़ज़्ज़ल्ना बअ्-ज़हुम् अ़ला बअ्ज़िन्, व लल्आख़िरतु अक्बरु द-रजातिंव्-व अक्बरु तफ़्ज़ीला (21)

ला तज्अ़ल् मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़-तक़्अु-द मज़्मूमम्-मख़्ज़ूला (22) ●

व क़ज़ा रब्बु-क अल्ला तअ्बुदू इल्ला इय्याहु व बिल्-वालिदैनि इह्सानन्, इम्मा यब्लुग़न्-न अ़िन्द-कल्-कि-ब-र अ-हदुहुमा औ किलाहुमा फ़ला तक़ुल्-लहुमा उफ़्फ़िंव्-व ला तन्हर्हुमा व क़ुल्-लहुमा क़ौलन् करीमा (23)

वख़्फ़िज़् लहुमा जनाहज़्ज़ुल्लि मिनर्रह्मति व क़ुर्रब्बिर्हम्हुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा (24)

रब्बुकुम् अअ्लमु बिमा फ़ी नुफ़ूसिकुम् इन् तकूनू सालिही-न फ़-इन्नहू का-न लिल्-अव्वाबी-न ग़फ़ूरा (25)

व आति ज़ल्क़ुर्बा हक़्क़हू वल्-मिस्की-न वब्नस्सबीलि व ला तुबज़्ज़िर् तब्ज़ीरा (26)

इन्नल्-मुबज़्ज़िरी-न कानू इख़्वानश्-शयातीनि, व कानश्शैतानु लिरब्बिही कफ़ूरा (27)

व इम्मा तुअ्रिज़न्-न अ़न्हुमुब्तिग़ा-अ रह्मतिम्-मिर्रब्बि-क तर्जूहा फ़क़ुल्-लहुम् क़ौलम्-मैसूरा (28)

व ला तज्अ़ल् य-द-क मग़्लू-लतन् इला अ़ुनुक़ि-क व ला तब्सुत्हा कुल्लल्बस्ति फ़-तक़्अु-द मलूमम्-मह्सूरा (29)

इन्-न रब्ब-क यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ

رَبِّكَ ؕ وَمَا كَانَ عَطَآءُ رَبِّكَ مَحْظُوْرًا ۝٢٠
اُنْظُرْ كَيْفَ فَضَّلْنَا بَعْضَهُمْ عَلٰى بَعْضٍ ؕ
وَلَلْاٰخِرَةُ اَكْبَرُ دَرَجٰتٍ وَّاَكْبَرُ تَفْضِيْلًا ۝٢١
لَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَقْعُدَ
ع مَذْمُوْمًا مَّخْذُوْلًا ۝٢٢
وَقَضٰى رَبُّكَ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّآ اِيَّاهُ
وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا ؕ اِمَّا يَبْلُغَنَّ
عِنْدَكَ الْكِبَرَ اَحَدُهُمَآ اَوْ كِلٰهُمَا
فَلَا تَقُلْ لَّهُمَآ اُفٍّ وَّلَا تَنْهَرْهُمَا
وَقُلْ لَّهُمَا قَوْلًا كَرِيْمًا ۝٢٣
وَاخْفِضْ لَهُمَا جَنَاحَ الذُّلِّ مِنَ
الرَّحْمَةِ وَقُلْ رَّبِّ ارْحَمْهُمَا كَمَا
رَبَّيٰنِيْ صَغِيْرًا ۝٢٤
رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِمَا فِيْ نُفُوْسِكُمْ ؕ اِنْ
تَكُوْنُوْا صٰلِحِيْنَ فَاِنَّهٗ كَانَ لِلْاَوَّابِيْنَ
غَفُوْرًا ۝٢٥
وَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ
وَابْنَ السَّبِيْلِ وَلَا تُبَذِّرْ تَبْذِيْرًا ۝٢٦
اِنَّ الْمُبَذِّرِيْنَ كَانُوْٓا اِخْوَانَ الشَّيٰطِيْنِ ؕ
وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِرَبِّهٖ كَفُوْرًا ۝٢٧
وَاِمَّا تُعْرِضَنَّ عَنْهُمُ ابْتِغَآءَ رَحْمَةٍ
مِّنْ رَّبِّكَ تَرْجُوْهَا فَقُلْ لَّهُمْ قَوْلًا
مَّيْسُوْرًا ۝٢٨
وَلَا تَجْعَلْ يَدَكَ مَغْلُوْلَةً اِلٰى عُنُقِكَ
وَلَا تَبْسُطْهَا كُلَّ الْبَسْطِ فَتَقْعُدَ
مَلُوْمًا مَّحْسُوْرًا ۝٢٩
اِنَّ رَبَّكَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ

और इसी तरह नपी-तुली भी। बेशक वह अपने बन्दों की ख़बर और उनपर नज़र रखता है।

31. और अपनी औलाद को इफ़लास के डर से क़त्ल न करो; हम उन्हें भी रिज़्क़ देंगे और तुम्हें भी; हक़ीक़त में उनका क़त्ल बहुत ही बड़ा जुर्म है।

32. और ज़िना में मत मुलव्वस हो; वह एक बुरा काम और बुरी राह है।

33. किसी जान को क़त्ल न करो जिसे अल्लाह ने मुहतरम ठहराया है, यह और बात है कि हक़ का तक़ाज़ा यही हो। और जो ज़ुल्म से क़त्ल किया गया हो, उसके वली को हमने इख़्तियार दिया है, लेकिन वह क़त्ल के बारे में हद से तजावुज़ न करे; यक़ीनन वह क़ाबिले नुसरत है।

34. और यतीम के माल को हाथ न लगाओ। सिवाय बेहतर तरीक़े के, यहां तक कि वह अपनी जवानी को पहुंच जाए और अहद को पूरा करो; अहद के बारे में लाज़िमन पूछा जाएगा।

35. और जब नापकर दो तो नाप पूरी रखो, और वज़न सही तराज़ू से करो; यही बेहतर और अंजाम के लिहाज़ से ख़ूबतर है।

36. और जिस चीज़ का तुम्हें इल्म न हो उसके पीछे न लगो; बेशक कान, और आंख, और दिल उनमें से हर एक के बारे में पुर्सिश होगी (कि उनसे क्या काम लिया)।

37. और ज़मीन में अकड़ते हुए न चलो; न तो तुम ज़मीन को फाड़ सकते हो, और न पहाड़ों की बुलन्दी को पहुंच सकते हो।

38. इनमें से हर एक की बुराई तुम्हारे रब के नज़दीक नापसन्दीदा है।

39. ये हिकमत की वो बातें हैं जो तुम्हारे रब ने तुम्हारी तरफ़ वही की हैं; और देखो अल्लाह के साथ दूसरा

व यक़्दिरु, इन्नहू का-न बिअ़िबादिही ख़बीरम्-बसीरा (30) ●

व ला तक़्तुलू औलादकुम् ख़श्य-त इम्लाक़िन्, नह्नु नर्ज़ुक़ुहुम् व इय्याकुम्, इन्-न क़त्लहुम् का-न ख़ित्अन् कबीरा (31)

व ला तक़्रबुज़्ज़िना इन्नहू का-न फ़ाहि-शतन्, व सा-अ सबीला (32)

व ला तक़्तुलुन्-नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्हक़्क़ि, व मन् क़ुति-ल मज़्लूमन् फ़-क़द् जअ़ल्ना लि-वलिय्यिही सुल्तानन् फ़ला युस्रिफ़्-फ़िल्क़त्लि, इन्नहू का-न मन्सूरा (33)

व ला तक़्रबू मालल् यतीमि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु हत्ता यब्लु-ग़ अशुद्दहू व औफ़ू बिल्अ़ह्दि इन्नल्-अ़ह्-द का-न मस्ऊला (34)

व औफ़ुल्कै-ल इज़ा किल्तुम् व ज़िनू बिल्-क़िस्तासिल्-मुस्तक़ीमि, ज़ालि-क ख़ैरुंव्-व अह्सनु तअ्वीला (35)

व ला तक़्फ़ु मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन्, इन्नस्सम्-अ़ वल्ब-स-र वल्फ़ुआ-द कुल्लु उलाइ-क का-न अ़न्हु मस्ऊला (36)

व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-रहन् इन्न-क लन् तख़्रिक़ल्-अर्-ज़ व लन् तब्लुग़ल्-जिबा-ल तूला (37)

कुल्लु ज़ालि-क का-न सय्यिउहू अ़िन्-द रब्बि-क मक्रूहा (38)

ज़ालि-क मिम्मा औहा इलै-क रब्बु-क मिनल्-

وَيَقْدِرُ ۚ اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۢ
بَصِيْرًا ۝٣٠

وَلَا تَقْتُلُوْٓا اَوْلَادَكُمْ خَشْيَةَ اِمْلَاقٍ ۭ
نَحْنُ نَرْزُقُهُمْ وَاِيَّاكُمْ ۭ اِنَّ قَتْلَهُمْ
كَانَ خِطْاً كَبِيْرًا ۝٣١

وَلَا تَقْرَبُوا الزِّنٰٓى اِنَّهٗ كَانَ فَاحِشَةً ۭ
وَسَاۗءَ سَبِيْلًا ۝٣٢

وَلَا تَقْتُلُوا النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ
اِلَّا بِالْحَقِّ ۭ وَمَنْ قُتِلَ مَظْلُوْمًا فَقَدْ
جَعَلْنَا لِوَلِيِّهٖ سُلْطٰنًا فَلَا يُسْرِفْ
فِّي الْقَتْلِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ مَنْصُوْرًا ۝٣٣

وَلَا تَقْرَبُوْا مَالَ الْيَتِيْمِ اِلَّا بِالَّتِيْ
هِىَ اَحْسَنُ حَتّٰى يَبْلُغَ اَشُدَّهٗ ۠
وَاَوْفُوْا بِالْعَهْدِ ۚ اِنَّ الْعَهْدَ كَانَ
مَسْــُٔوْلًا ۝٣٤

وَاَوْفُوا الْكَيْلَ اِذَا كِلْتُمْ وَزِنُوْا
بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيْمِ ۭ ذٰلِكَ خَيْرٌ
وَّاَحْسَنُ تَاْوِيْلًا ۝٣٥

وَلَا تَقْفُ مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۭ
اِنَّ السَّمْعَ وَالْبَصَرَ وَالْفُؤَادَ كُلُّ اُولٰۗىِٕكَ
كَانَ عَنْهُ مَسْــُٔوْلًا ۝٣٦

وَلَا تَمْشِ فِي الْاَرْضِ مَرَحًا ۚ اِنَّكَ
لَنْ تَخْرِقَ الْاَرْضَ وَلَنْ تَبْلُغَ
الْجِبَالَ طُوْلًا ۝٣٧

كُلُّ ذٰلِكَ كَانَ سَيِّئُهٗ عِنْدَ رَبِّكَ
مَكْرُوْهًا ۝٣٨

ذٰلِكَ مِمَّآ اَوْحٰٓى اِلَيْكَ رَبُّكَ مِنَ

माबूद न घड़ना वरना मलामत ज़दा, राब्दा जहन्नम में डाल दिए जाओगे।

40. क्या तुम्हारे रब ने तुम्हें तो बेटों के लिए ख़ास किया और ख़ुद अपने लिए फ़रिश्तों को बेटियां बनाया? बहुत भारी बात है जो तुम कह रहे हो!

41. हमने इस क़ुरआन में मुख़तलिफ़ अन्दाज़ से बात वाज़ेह की कि वो होश में आएं, लेकिन यह चीज़ उनकी नफ़रत और बेज़ारी ही में इज़ाफ़ा किए जा रही है।

42. कह दो: "अगर उसके साथ और भी माबूद होते, जैसा कि वो कहते हैं, तब तो वो साहिबे अर्श के मक़ाम को पहुंचने की कोई राह ज़रूर तलाश करते"।

43. अज़ीम है वह! और बहुत बुलन्द व बरतर है उन बातों से जो वो कहते हैं!

44. सातों आसमान और ज़मीन और जो कोई भी उनमें है सब उसकी तसबीह करते हैं; और कोई चीज़ नही जो उसका गुन न गाती हो, लेकिन तुम उनकी तसबीह को समझते नहीं। हक़ीक़त यह है कि वह बहुत बुर्दबार, बख़्शनेवाला है।

45. जब तुम क़ुरआन पढ़ते हो, तो हम तुम्हारे और उन लोगों के दरमियान जो आख़िरत को नहीं मानते एक मख़फ़ी पर्दा हाइल कर देते हैं,

46. और उनके दिलों पर पर्दे डाल देते हैं कि वो समझ न सकें, और उनके कानों में गिरानी पैदा कर देते हैं। और जब तुम क़ुरआन में अपने रब का उसकी वहदानियत के साथ ज़िक्र करते हो, तो वो नफ़रत से अपनी पीठ फेर कर चल देते हैं।

47. जब वो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं तो हम ख़ूब जानते हैं कि वो किस ग़र्ज़ से कान लगाते हैं, और उसे भी जब वो आपस में सरगोशियां करते हैं, जब वो ज़ालिम कहते हैं कि, "तुम लोग तो बस एक पक्के जादूगर के पीछे चलते हो"।

48. देखो, वो तुमपर कैसे फ़िक़रे चुस्त करते हैं, वो तो भटक गए, अब

हिक्मति, व ला तज्अल् मअ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र फ़-तुल्क़ा फ़ी जहन्न-म मलूमम्-मदहूरा (39)

अ-फ़अस्फ़ाकुम् रब्बुकुम् बिल्बनी-न वत्त-ख़-ज़ मिनल्-मलाइ-कति इनासन्, इन्नकुम् ल-तक़ूलू-न क़ौलन् अ़ज़ीमा (40) ●

व ल-क़द् सर्रफ़्ना फ़ी हाज़ल्-क़ुरआनि लि-यज़्ज़क्करू, व मा यज़ीदुहुम् इल्ला नुफ़ूरा (41)

क़ुल् लौ का-न म-अ़हू आलि-हतुन् कमा यक़ूलू-न इज़ल्-लब्तग़ौ इला ज़िल्-अ़र्शि सबीला (42)

सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा यक़ूलू-न अ़ुलुव्वन् कबीरा (43)

तुसब्बिहु लहुस्समावातुस्सब्अ़ु वल्अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्-न, व इम्-मिन् शैइन् इल्ला युसब्बिहु बिहम्दिही व लाकिल्-ला तफ़्क़हू-न तस्बी-हहुम्, इन्नहू का-न हलीमन् ग़फ़ूरा (44)

व इज़ा क़रअ्तल्-क़ुरआ-न जअ़ल्ना बैन-क व बैनल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति हिजाबम्-मस्तूरा (45)

व जअ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्नतन् अय्यंफ़क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रन्, व इज़ा ज़कर्-त रब्ब-क फ़िल्क़ुर्आनि वह्दहू वल्लौ अ़ला अद्बारिहिम् नुफ़ूरा (46)

नह्नु अअ्लमु बिमा यस्तमिअ़ू-न बिही इज़् यस्तमिअ़ू-न इलै-क व इज़् हुम् नज्वा इज़् यक़ूलुज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअ़ू-न इल्ला रजुलम्-मस्हूरा (47)

उन्ज़ुर् कै-फ़ ज़-रबू लकल्-अम्सा-ल फ़-ज़ल्लू

الْحِكْمَةِ ۗ وَلَا تَجْعَلْ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ
فَتُلْقٰى فِیْ جَهَنَّمَ مَلُوْمًا مَّدْحُوْرًا ۝٣٩
اَفَاَصْفٰىكُمْ رَبُّكُمْ بِالْبَنِیْنَ وَاتَّخَذَ
مِنَ الْمَلٰٓىِٕكَةِ اِنَاثًا ۚ اِنَّكُمْ لَتَقُوْلُوْنَ
ع قَوْلًا عَظِیْمًا ۝٤٠

وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِیَذَّكَّرُوْا ۚ
وَمَا یَزِیْدُهُمْ اِلَّا نُفُوْرًا ۝٤١
قُلْ لَّوْ كَانَ مَعَهٗۤ اٰلِهَةٌ كَمَا یَقُوْلُوْنَ
اِذًا لَّابْتَغَوْا اِلٰى ذِی الْعَرْشِ سَبِیْلًا ۝٤٢
سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا یَقُوْلُوْنَ عُلُوًّا
كَبِیْرًا ۝٤٣
تُسَبِّحُ لَهُ السَّمٰوٰتُ السَّبْعُ وَالْاَرْضُ
وَمَنْ فِیْهِنَّ ۗ وَاِنْ مِّنْ شَیْءٍ اِلَّا
یُسَبِّحُ بِحَمْدِهٖ وَلٰكِنْ لَّا تَفْقَهُوْنَ
تَسْبِیْحَهُمْ ۗ اِنَّهٗ كَانَ حَلِیْمًا غَفُوْرًا ۝٤٤
وَاِذَا قَرَاْتَ الْقُرْاٰنَ جَعَلْنَا بَیْنَكَ
وَبَیْنَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
حِجَابًا مَّسْتُوْرًا ۝٤٥
وَّجَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ یَّفْقَهُوْهُ
وَفِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ۚ وَاِذَا ذَكَرْتَ
رَبَّكَ فِی الْقُرْاٰنِ وَحْدَهٗ وَلَّوْا عَلٰۤى
اَدْبَارِهِمْ نُفُوْرًا ۝٤٦
نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا یَسْتَمِعُوْنَ بِهٖۤ اِذْ
یَسْتَمِعُوْنَ اِلَیْكَ وَاِذْ هُمْ نَجْوٰۤى
اِذْ یَقُوْلُ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ تَتَّبِعُوْنَ
اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝٤٧
اُنْظُرْ كَیْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ فَضَلُّوْا

कोई राह नहीं पा सकते।

49. वो कहते हैं कि "क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा-रेज़ा हो कर रह जाएंगे, तो क्या हम नए सिरे से पैदा करके उठाए जाएंगे?"

50. कह दोः "तुम पत्थर या लोहा हो जाओ,

51. या और कोई चीज़ जो तुम्हारे दिलों में बड़ी सख़्त लगे!" तब वो कहेंगे, "कौन हमें पलटा कर लाएगा?" कहोः "वही जिसने तुम्हें पहली बार पैदा किया"। तब वो तुम्हारे आगे अपने सरों को हिला हिलाकर कहेंगे, "अच्छा तो वह होगा कब?" कह दोः "अजब नहीं कि क़रीब ही हो,

52. जिस दिन वह तुम्हें पुकारेगा, तो तुम उसकी तारीफ़ करते हुए तामीले हुक्म करोगे और ख़याल करोगे कि तुम बस थोड़ी ही देर ठहरे रहे हो"।

53. मेरे बन्दों से कह दो कि बात वही कहें जो बेहतरीन हो। शैतान तो उनके दरमियान उकसाकर फ़साद डालता रहता है, बेशक शैतान इन्सान का खुला हुआ दुश्मन है।

54. तुम्हारा रब तुमसे ख़ूब वाक़िफ़ है; वह चाहे तो तुमपर रहम फ़रमाए, या चाहे तो तुम्हें अज़ाब दे। हमने तुम्हें उनपर कोई हावालादार बनाकर तो भेजा नहीं है।

55. तुम्हारा रब उससे भी ख़ूब वाक़िफ़ है जो कोई आसमानों और ज़मीन में है; और हमने बाज़ नबियों को बाज़ पर फ़ज़ीलत बख़्शी और हमने दाऊद को ज़बूर अता की थी।

56. कह दो कि "तुम उससे हटकर जिनको भी माबूद समझते हो उन्हें पुकार देखो; वो न तुमसे किसी तकलीफ़ के दूर करने का इख़्तियार रखते हैं, और न बदलने का"।

57. जिनको ये पुकारते हैं वो तो खुद अपने रब तक रसाई हासिल करने का वसीला तलाश करते हैं कि कौन उनमें सबसे ज़्यादा कुर्ब हासिल कर ले; और वो उसकी रहमत के उम्मीदवार हैं, और उसके अज़ाब से डरते रहते हैं।

फ़ला यस्ततीअू-न सबीला ● (48)

व क़ालू अ-इज़ा कुन्ना अिज़ामंव्-व रूफ़ातन् अ-इन्ना लमब्अूसू-न ख़ल्क़न् जदीदा (49)

कुल् कूनू हिजा-रतन् औ हदीदा (50)

औ ख़ल्क़म्-मिम्मा यक्बुरु फ़ी सुदूरिकुम् फ़-स-यक़ूलू-न मंय्युअीदुना, कुलिल्लज़ी फ़-त-रकुम् अव्व-ल मर्रतिन् फ़-सयुन्ग़िज़ू-न इलै-क रूऊ-सहुम् व यक़ूलू-न मता हु-व, कुल् असा अंय्यकू-न क़रीबा (51)

यौ-म यद्अूकुम् फ़-तस्तजीबू-न बिहम्दिही व तज़ुन्नू-न इल्लबिस्तुम् इल्ला क़लीला (52) ●

व कुल्-लिअिबादी यक़ूलुल्लती हि-य अह्सनु, इन्नश्शैता-न यन्ज़गु बैनहुम्, इन्नश्शैता-न का-न लिल्इन्सानि अ़दुव्वम्-मुबीना (53)

रब्बुकुम् अअ्लमु बिकुम्, इंय्यशअ् यर्हम्कुम् औ इंय्यशअ् युअ़ज़्ज़िब्कुम्, व मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् वकीला (54)

व रब्बु-क अअ्लमु बिमन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व ल-क़द् फ़ज़्ज़ल्ना बअ्ज़न्नबिय्यी-न अ़ला बअ्ज़िंव्-व आतैना दावू-द ज़बूरा (55)

कुलिद्उल्लज़ी-न ज़अ़म्तुम् मिन् दूनिही फ़ला यम्लिकू-न कश्फ़ज़्ज़ुर्रि अ़न्कुम् व ला तह्वीला (56)

उलाइ-कल्लज़ी-न यद्अू-न यब्तग़ू-न इला रब्बिहिमुल्-वसी-ल-त अय्युहुम् अक़्रबु व यर्जू-न रह्म-तहू व यख़ाफ़ू-न अ़ज़ाबहू, इन्-न अ़ज़ा-ब

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ سَبِيْلًا (٤٨)
وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا (٤٩)
قُلْ كُوْنُوْا حِجَارَةً اَوْ حَدِيْدًا (٥٠)
اَوْ خَلْقًا مِّمَّا يَكْبُرُ فِيْ صُدُوْرِكُمْ ۚ
فَسَيَقُوْلُوْنَ مَنْ يُّعِيْدُنَا ۭ قُلِ الَّذِيْ
فَطَرَكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۚ فَسَيُنْغِضُوْنَ
اِلَيْكَ رُءُوْسَهُمْ وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هُوَ ۭ
قُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ قَرِيْبًا (٥١)
يَوْمَ يَدْعُوْكُمْ فَتَسْتَجِيْبُوْنَ بِحَمْدِهٖ
ع وَتَظُنُّوْنَ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا قَلِيْلًا (٥٢)
وَقُلْ لِّعِبَادِيْ يَقُوْلُوا الَّتِيْ هِيَ
اَحْسَنُ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ يَنْزَغُ بَيْنَهُمْ ۭ
اِنَّ الشَّيْطٰنَ كَانَ لِلْاِنْسَانِ عَدُوًّا
مُّبِيْنًا (٥٣)
رَبُّكُمْ اَعْلَمُ بِكُمْ ۭ اِنْ يَّشَاْ يَرْحَمْكُمْ
اَوْ اِنْ يَّشَاْ يُعَذِّبْكُمْ ۭ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ
عَلَيْهِمْ وَكِيْلًا (٥٤)
وَرَبُّكَ اَعْلَمُ بِمَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ وَلَقَدْ فَضَّلْنَا بَعْضَ النَّبِيّٖنَ
عَلٰي بَعْضٍ وَّاٰتَيْنَا دَاوٗدَ زَبُوْرًا (٥٥)
قُلِ ادْعُوا الَّذِيْنَ زَعَمْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ
فَلَا يَمْلِكُوْنَ كَشْفَ الضُّرِّ عَنْكُمْ
وَلَا تَحْوِيْلًا (٥٦)
اُولٰۗىِٕكَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ يَبْتَغُوْنَ اِلٰى
رَبِّهِمُ الْوَسِيْلَةَ اَيُّهُمْ اَقْرَبُ وَيَرْجُوْنَ
رَحْمَتَهٗ وَيَخَافُوْنَ عَذَابَهٗ ۭ اِنَّ عَذَابَ

तुम्हारे रब का अज़ाब तो है ही डरने की चीज़।

58. कोई भी बस्ती ऐसी नहीं जिसे हम क़ियामत के दिन से पहले हलाक न कर दें, या उसे सख़्त अज़ाब न दें, यह तो किताब में लिखा जा चुका है।

59. हमको किस चीज़ ने नबी को निशानियों के साथ भेजने से रोका है? बात यह है कि पहले के लोगों ने उन्हें झूट क़रार दिया। चुनांचे हमने समूद को वाज़ेह दलील के तौरपर ऊंटनी दी, लेकिन उन्होंने उसके साथ ग़लत रवैया इख़्तियार कर के ख़ुद अपनी जानों पर ज़ुल्म किया। हम निशानियां तो ख़ौफ़ दिलाने के लिए भेजते हैं।

60. जब हमने तुमसे कहा था कि "तुम्हारे रब ने लोगों को अपने घेरे में ले रखा है; और जो रूया (दृश्य) हमने तुम्हें दिखाया उसे तो हमने लोगों के लिए बस एक फ़ितना बना दिया; और उस दरख़्त को भी जिसको क़ुरआन में लानत ज़दा क़रार दिया गया; हम उन्हें डराते हैं; लेकिन यह चीज़ उनकी बढ़ी हुई सरकशी ही में इज़ाफ़ा किए जा रही है।

61. याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि "आदम को सजदा करो"; तो उन्होंने सिवाय इब्लीस के सजदा किया; उसने कहा, "क्या मैं उसे सजदा करूं जिसे तूने मिट्टी से बनाया है?"

62. कहने लगा, "देख तो सही उसे जिसको तूने मेरे मुक़ाबले में बुज़ुर्गी अता की है, अगर तूने मुझे क़ियामत के दिन तक मुहलत दी, तो मैं लाज़िमन उसकी नस्ल को क़ाबू में करके उसका इस्तीसाल करूंगा, बस थोड़े ही लोग बच सकेंगे"।

63. कहा, "जा, उनमें से जो कोई भी तेरी पैरवी करेगा, तो तुझ समेत ऐसे ही लोगों का भरपूर बदला जहन्नम है!

64. उनमें से जिस किसी पर तेरा बस चले उसके क़दम अपनी आवाज़ से उखाड़ दे; उन पर अपने सवार और अपने प्यादे (पैदल फ़ौज) चढ़ा ला, और माल और औलाद में उनके साथ साझा लगा और उनसे वादे कर!" — मगर शैतान उनसे जो वादे करता है वह एक फ़रेब के सिवा कुछ भी नहीं होता।

65. — "यक़ीनन जो मेरे बन्दे हैं उनपर तो तेरा कुछ भी ज़ोर नहीं चल सकता"। तुम्हारा रब इसके लिए काफ़ी है कि अपना मुआमला उसी को सौंप दिया जाए।

66. तुम्हारा रब तो वह है जो तुम्हारे लिए समुंदर में कश्तियां चलाता है ताकि

रब्बि-क का-न मह्ज़ूरा (57)

व इम्-मिन् क़र्यतिन् इल्ला नह्नु मुह्लिकूहा क़ब्-ल यौमिल्-क़ियामति औ मुअ़ज़्ज़िबूहा अ़ज़ाबन् शदीदन्, का-न ज़ालि-क फ़िल्किताबि मस्तूरा (58)

व मा-म-न-अ़ना अन्नुर्सि-ल बिल्आयाति इल्ला अन् कज़्ज़-ब बिहल्-अव्वलू-न, व आतैना समूदन्ना-क़-त मुब्सि-रतन् फ़-ज़-लमू बिहा, व मा नुर्सिलु बिल्आयाति इल्ला तख़्वीफ़ा (59)

व इज़् क़ुल्ना ल-क इन्-न रब्ब-क अहा-त बिन्नासि, व मा जअ़ल्नर्रुअ्यल्लती अरैना-क इल्ला फ़ित्न-तल्-लिन्नासि वश्श-ज-रतल्-मल्अू-न-त फ़िल्क़ुर्आनि, व नुख़व्विफ़ुहुम् फ़मा यज़ीदुहुम् इल्ला तुग़्यानन् कबीरा (30) ●

व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स, क़ा-ल अ-अस्जुदु लिमन् ख़लक़्-त तीना (61)

क़ा-ल अ-रऐ-त-क हाज़ल्लज़ी कर्रम्-त अ़लय्-य, ल-इन् अख़्ख़र्तनि इला यौमिल्-क़ियामति ल-अह्तनिकन्-न ज़ुर्रिय्य-तहू इल्ला क़लीला (62)

क़ालज़्हब् फ़-मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् फ़-इन्-न जहन्न-म जज़ाउकुम् जज़ाअम्-मौफ़ूरा (63)

वस्तफ़्ज़िज़् मनिस्त-तअ्-त मिन्हुम् बिसौति-क व अज्लिब् अ़लैहिम् बिख़ैलि-क व रजिलि-क व शारिक्हुम् फ़िल्अम्वालि वल्-औलादि व अ़िद्हुम्, व मा यअ़िदुहुमुश्-शैतानु इल्ला ग़ुरूरा (64)

इन्-न अ़िबादी लै-स ल-क अ़लैहिम् सुल्तानुन्, व कफ़ा बिरब्बि-क वकीला (65)

रब्बुकुमुल्लज़ी युज़्जी लकुमुल-फ़ुल्-क फ़िल्बह्रि

رَبِّكَ كَانَ مَحْذُوْرًا ﴿۵۷﴾
وَاِنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اِلَّا نَحْنُ مُهْلِكُوْهَا قَبْلَ
يَوْمِ الْقِيٰمَةِ اَوْ مُعَذِّبُوْهَا عَذَابًا شَدِيْدًا ؕ
كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ﴿۵۸﴾
وَمَا مَنَعَنَآ اَنْ نُّرْسِلَ بِالْاٰيٰتِ اِلَّآ
اَنْ كَذَّبَ بِهَا الْاَوَّلُوْنَ ؕ وَاٰتَيْنَا ثَمُوْدَ
النَّاقَةَ مُبْصِرَةً فَظَلَمُوْا بِهَا ؕ وَمَا نُرْسِلُ
بِالْاٰيٰتِ اِلَّا تَخْوِيْفًا ﴿۵۹﴾
وَاِذْ قُلْنَا لَكَ اِنَّ رَبَّكَ اَحَاطَ بِالنَّاسِ ؕ
وَمَا جَعَلْنَا الرُّءْيَا الَّتِيْٓ اَرَيْنٰكَ اِلَّا
فِتْنَةً لِّلنَّاسِ وَالشَّجَرَةَ الْمَلْعُوْنَةَ
فِى الْقُرْاٰنِ ؕ وَنُخَوِّفُهُمْ ۙ فَمَا يَزِيْدُهُمْ
ع اِلَّا طُغْيَانًا كَبِيْرًا ﴿۶۰﴾
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا
اِلَّآ اِبْلِيْسَ ؕ قَالَ ءَاَسْجُدُ لِمَنْ خَلَقْتَ طِيْنًا ﴿۶۱﴾
قَالَ اَرَءَيْتَكَ هٰذَا الَّذِيْ كَرَّمْتَ
عَلَيَّ ؗ لَئِنْ اَخَّرْتَنِ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
لَاَحْتَنِكَنَّ ذُرِّيَّتَهٗٓ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿۶۲﴾
قَالَ اذْهَبْ فَمَنْ تَبِعَكَ مِنْهُمْ فَاِنَّ
جَهَنَّمَ جَزَآؤُكُمْ جَزَآءً مَّوْفُوْرًا ﴿۶۳﴾
وَاسْتَفْزِزْ مَنِ اسْتَطَعْتَ مِنْهُمْ بِصَوْتِكَ
وَاَجْلِبْ عَلَيْهِمْ بِخَيْلِكَ وَرَجِلِكَ وَشَارِكْهُمْ
فِى الْاَمْوَالِ وَ الْاَوْلَادِ وَ عِدْهُمْ ؕ
وَمَا يَعِدُهُمُ الشَّيْطٰنُ اِلَّا غُرُوْرًا ﴿۶۴﴾
اِنَّ عِبَادِيْ لَيْسَ لَكَ عَلَيْهِمْ سُلْطٰنٌ ؕ
وَكَفٰى بِرَبِّكَ وَكِيْلًا ﴿۶۵﴾
رَبُّكُمُ الَّذِيْ يُزْجِيْ لَكُمُ الْفُلْكَ فِى الْبَحْرِ

لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ بِكُمْ
رَحِيْمًا ۝٦٦
وَاِذَا مَسَّكُمُ الضُّرُّ فِي الْبَحْرِ ضَلَّ مَنْ
تَدْعُوْنَ اِلَّآ اِيَّاهُ ۚ فَلَمَّا نَجّٰىكُمْ اِلَى الْبَرِّ
اَعْرَضْتُمْ ۭ وَكَانَ الْاِنْسَانُ كَفُوْرًا ۝٦٧
اَفَاَمِنْتُمْ اَنْ يَّخْسِفَ بِكُمْ جَانِبَ الْبَرِّ
اَوْ يُرْسِلَ عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ثُمَّ لَا تَجِدُوْا
لَكُمْ وَكِيْلًا ۝٦٨
اَمْ اَمِنْتُمْ اَنْ يُّعِيْدَكُمْ فِيْهِ تَارَةً
اُخْرٰى فَيُرْسِلَ عَلَيْكُمْ قَاصِفًا مِّنَ الرِّيْحِ
فَيُغْرِقَكُمْ بِمَا كَفَرْتُمْ ۙ ثُمَّ لَا تَجِدُوْا لَكُمْ
عَلَيْنَا بِهٖ تَبِيْعًا ۝٦٩
وَلَقَدْ كَرَّمْنَا بَنِيْٓ اٰدَمَ وَحَمَلْنٰهُمْ
فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ وَرَزَقْنٰهُمْ مِّنَ
الطَّيِّبٰتِ وَفَضَّلْنٰهُمْ عَلٰي كَثِيْرٍ
ع مِّمَّنْ خَلَقْنَا تَفْضِيْلًا ۝٧٠
يَوْمَ نَدْعُوْا كُلَّ اُنَاسٍۢ بِاِمَامِهِمْ ۚ
فَمَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ
يَقْرَءُوْنَ كِتٰبَهُمْ وَلَا يُظْلَمُوْنَ
فَتِيْلًا ۝٧١
وَمَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ
اَعْمٰى وَاَضَلُّ سَبِيْلًا ۝٧٢
وَاِنْ كَادُوْا لَيَفْتِنُوْنَكَ عَنِ الَّذِيْٓ
اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ لِتَفْتَرِيَ عَلَيْنَا غَيْرَهٗ ڰ
وَاِذًا لَّاتَّخَذُوْكَ خَلِيْلًا ۝٧٣
وَلَوْلَآ اَنْ ثَبَّتْنٰكَ لَقَدْ كِدْتَّ تَرْكَنُ
اِلَيْهِمْ شَيْـــًٔا قَلِيْلًا ۝٧٤

लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही, इन्नहू का-न बिकुम् रहीमा (66)

व इज़ा मस्सकुमुज़्ज़ुर्रु फ़िल्बहिर ज़ल्-ल मन् तद्अू-न इल्ला इय्याहु फ़-लम्मा नज्जाकुम् इलल्-बर्रि अअ्रज़्तुम्, व कानल्-इन्सानु कफ़ूरा (67)

अ-फ़-अमिन्तुम् अंय्यख़्सि-फ़ बिकुम् जानिबल्-बर्रि औ युर्सि-ल अ़लैकुम् हासिबन् सुम्-म ला तजिदू लकुम् वकीला (68)

अम् अमिन्तुम् अंय्युअ़ी-दकुम् फ़ीहि ता-रतन् उख़्रा फ़युर्सि-ल अ़लैकुम् क़ासिफ़म्-मिनर्-रीहि फ़युग़्रि-क़कुम् बिमा कफ़र्तुम् सुम्-म ला तजिदू लकुम् अ़लैना बिही तबीआ़ (69)

व ल-क़द् कर्रम्ना बनी आद-म व हमल्नाहुम् फ़िल्बर्रि वल्बहिर व रज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति व फ़ज़्ज़ल्नाहुम् अ़ला कसीरिम्-मिम्मन् ख़लक़्ना तफ़्ज़ीला (70) ●

यौ-म नद्अू कुल्-ल उनासिम् बि-इमामिहिम् फ़-मन् ऊति-य किताबहू बियमीनिही फ़-उलाइ-क यक़्रऊ-न किताबहुम् व ला युज़्लमू-न फ़तीला (71)

व मन् का-न फ़ी हाज़िही अअ्मा फ़हु-व फ़िल्आख़िरति अअ्मा व अज़ल्लु सबीला (72)

व इन् कादू लयफ़्तिनू-न-क अ़निल्लज़ी औहैना इलै-क लितफ़्तरि-य अ़लैना ग़ैरहू व इज़ल् लत्त-ख़ज़ू-क ख़लीला (73)

व लौ ला अन् सब्बत्ना-क ल-क़द् कित्-त तर्-कनु इलैहिम् शैअन् क़लीला (74)

तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो; यक़ीनन वह तुम्हारे हाल पर निहायत मेहरबान है।

67. जब समुंदर में तुमपर कोई आफ़त आती है, तो उसके सिवा वो सब जिन्हें तुम पुकारा करते हो गुम होकर रह जाते हैं; लेकिन जब वह तुम्हें बचा कर ख़ुश्की पर पहुंचा देता है, तो तुम बेरुख़ी इख़्तियार करते हो, इनसान बड़ा ही नाशुकरा है।

68. क्या तुम इससे बेख़ौफ़ हो कि वह ख़ुश्की की जानिब ले जाकर तुम्हें धंसा दे, या तुमपर पथराव करने वाली आंधी भेज दे, फिर अपना कोई कारसाज़ न पाओ?

69. या तुम इससे बेख़ौफ़ हो कि वह फिर तुम्हें उसमें दोबारा ले जाए, और तुमपर सख़्त तूफ़ानी हवा भेज दे और तुम्हें तुम्हारे कुफ़्र के बदले में ग़र्क़ कर दे, फिर तुम किसी को अपने लिए इसपर हमारा पीछा करनेवाला न पाओ?

70. हमने बनी आदम को बुज़ुर्गी अता की और उन्हें ख़ुश्की और तरी में सवारी दी, और उमदा पाकीज़ा चीज़ों से उन्हें रिज़्क़ दिया, और अपनी बहुत-सी मख़लूक़ के मुक़ाबले में उन्हें फ़ज़ीलत बख़्शी।

71. (उस दिन से डरो) जिस दिन हम हर इनसानी गिरोह को उसके अपने इमाम के साथ बुलाएंगे। फिर जिसे उसका अपना नामा-ए-आमाल उसके सीधे हाथ में मिला तो ऐसे लोग अपना नामा-ए-आमाल पढ़ेंगे, और ज़र्रा बराबर भी उनपर ज़ुल्म न होगा।

72. और जो यहां अंधा होकर रहा वह आख़िरत में भी अंधा ही रहेगा। बल्कि सब से बढ़कर गुम करदा राह होगा।

73. और वो तो लगते थे कि फ़ितने में डालकर उस चीज़ से हटा देने को हैं जो हमने तुम्हारी तरफ़ वही की है ताकि तुम उससे मुख़्तलिफ़ चीज़ घड़कर हमारी तरफ़ मंसूब करो, और तब वो तुम्हें अपना गहरा दोस्त बना लेते;

74. अगर हम तुम्हें मज़बूत न रखते तो क़रीब था कि तुम उनकी तरफ़ कुछ झुक ही जाते।

75. उस वक्त हम तुम्हें ज़िन्दगी में भी उसका दोहरा मज़ा चखाते और मरने पर भी दोहरा मज़ा चखाते; फिर हमारे मुक़ाबले में तुम अपना कोई मददगार न पाते।

76. और बेशक वो चाल चले कि इस सरज़मीन से तुम्हारे क़दम उखाड़ दें, ताकि तुम्हें यहां से निकाल कर ही रहें, और ऐसा हुआ तो तुम्हारे बाद ये भी रह थोड़े ही पाएंगे।

77. यही तरीक़-ए-कार हमारे उन रसूलों के बारे में भी रहा है जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा था; और तुम हमारे तरीक़े कार में कोई फ़र्क़ न पाओगे।

78. नमाज़ क़ायम करो सूरज के ढलने से लेकर रात के छा जाने तक और फ़ज्र के क़ुरआन के भी पाबन्द रहो, यक़ीनन फ़ज्र का क़ुरआन पढ़ना हुज़ूरी की चीज़ है।

79. और रात के कुछ हिस्से में इस (क़ुरआन) के ज़रिए से शब बेदारी किया करो, यह तुम्हारे लिए मज़ीद बरआं है; तवक़्क़ो रखो कि तुम्हारा रब तुम्हें उठाए ऐसा उठाना जो महमूद हो।

80. और कहो: "मेरे रब तू मुझे पसन्दीदा दाख़िल कर, और पसन्दीदा निकाल; और अपनी तरफ़ से मुझे मददगार ताक़त फ़राहम कर"।

81. कह दो: "हक़ आ गया और बातिल मिट गया; बातिल तो मिट जानेवाला ही होता है"।

82. हम क़ुरआन की शक्ल में जो चीज़ उतार रहे हैं, वह मोमिनीन के लिए शिफ़ा और रहमत है; मगर ज़ालिमों के लिए तो वह बस ख़सारे ही में इज़ाफ़ा करता है।

83. इनसान पर जब हम नवाज़िश करते हैं, तो वह बेरुख़ी इख़्तियार करता और अपना पहलू बचाता है; लेकिन जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है, तो वह मायूस होने लगता है।

84. कह दो: "हर एक अपने तरीक़े पर काम कर रहा है; अब तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है कि कौन सहीतरीन रास्ते पर है।

85. वो तुमसे रूह के बारे में पूछते हैं, कह दो: "रूह का तअल्लुक़ तो मेरे रब के हुक्म से है। मगर इल्म तुम्हें थोड़ा ही मिला है"।

इज़ल् ल-अज़क़्ना-क ज़िअ्फ़ल्-हयाति व ज़िअ्फ़ल्-ममाति सुम्-म ला तजिदु ल-क अ़लैना नसीरा (75)

व इन् कादू लयस्तफ़िज़्ज़ू-न-क मिनल्अर्ज़ि लियुख़्रिजू-क मिन्हा व इज़ल्-ला यल्बसू-न ख़िलाफ़-क इल्ला क़लीला (76)

सुन्न-त मन् क़द् अर्सल्ना क़ब्ल-क मिर्रुसुलिना व ला तजिदु लिसुन्नतिना तह्वीला (77) ●

अक़िमिस्सला-त लिदुलूकिश्शम्सि इला ग़-सक़िल्लैलि व क़ुर्आनल्-फ़ज्रि, इन्-न क़ुर्आनल्-फ़ज्रि का-न मश्हूदा (78)

व मिनल्लैलि फ़-तहज्जद् बिही नाफ़ि-लतल् ल-क अ़सा अंय्यब्अ़-स-क रब्बु-क मक़ामम्-मह़्मूदा (79)

व क़ुर्रब्बि अद्ख़िल्नी मुद्ख़-ल सिद्क़िंव्-व अख़्रिज्नी मुख़्र-ज सिद्क़िंव्-वज्अ़ल्-ली मिल्लदुन्-क सुल्तानन् नसीरा (80)

व क़ुल् जाअल्-हक़्क़ु व ज़-हक़ल्-बातिलु, इन्नल्-बाति-ल का-न ज़हूक़ा (81)

व नुनज़्ज़िलु मिनल्-क़ुर्आनि मा हु-व शिफ़ाउंव्-व रह्मतुल् लिल्-मुअ्मिनी-न व ला यज़ीदुज़्ज़ालिमी-न इल्ला ख़सारा (82)

व इज़ा अन्अ़म्ना अ़लल्-इन्सानि अअ्र-ज़ व नआ बिजानिबिही व इज़ा मस्सहुश्शर्रु का-न यऊसा (83)

क़ुल् कुल्लुंय्यअ़्मलु अ़ला शाकि-लतिही, फ़रब्बुकुम् अअ़्लमु बिमन् हु-व अह्दा सबीला (84) ●

व यस्अलून-क अ़निर्रूहि क़ुलिर्रूहु मिन् अम्रि रब्बी व मा ऊतीतुम् मिनल्-अ़िल्मि इल्ला क़लीला (85)

إِذًا لَّأَذَقْنٰكَ ضِعْفَ الْحَيٰوةِ
وَضِعْفَ الْمَمَاتِ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ عَلَيْنَا
نَصِيْرًا ۝
وَإِنْ كَادُوْا لَيَسْتَفِزُّوْنَكَ مِنَ الْأَرْضِ
لِيُخْرِجُوْكَ مِنْهَا وَإِذًا لَّا يَلْبَثُوْنَ
خِلٰفَكَ إِلَّا قَلِيْلًا ۝
سُنَّةَ مَنْ قَدْ أَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنْ
ع رُّسُلِنَا وَلَا تَجِدُ لِسُنَّتِنَا تَحْوِيْلًا ۝
أَقِمِ الصَّلٰوةَ لِدُلُوْكِ الشَّمْسِ إِلٰى
غَسَقِ الَّيْلِ وَقُرْاٰنَ الْفَجْرِ ۭ إِنَّ قُرْاٰنَ
الْفَجْرِ كَانَ مَشْهُوْدًا ۝
وَمِنَ الَّيْلِ فَتَهَجَّدْ بِهٖ نَافِلَةً لَّكَ ۖ
عَسٰٓى أَنْ يَّبْعَثَكَ رَبُّكَ مَقَامًا مَّحْمُوْدًا ۝
وَقُلْ رَّبِّ أَدْخِلْنِيْ مُدْخَلَ صِدْقٍ
وَّأَخْرِجْنِيْ مُخْرَجَ صِدْقٍ وَّاجْعَلْ
لِّيْ مِنْ لَّدُنْكَ سُلْطٰنًا نَّصِيْرًا ۝
وَقُلْ جَآءَ الْحَقُّ وَزَهَقَ الْبَاطِلُ ۭ
إِنَّ الْبَاطِلَ كَانَ زَهُوْقًا ۝
وَنُنَزِّلُ مِنَ الْقُرْاٰنِ مَا هُوَ شِفَآءٌ
وَّرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ۙ وَلَا يَزِيْدُ الظّٰلِمِيْنَ
إِلَّا خَسَارًا ۝
وَإِذَآ أَنْعَمْنَا عَلَى الْإِنْسَانِ أَعْرَضَ
وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَإِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ كَانَ يَـُٔوْسًا ۝
قُلْ كُلٌّ يَّعْمَلُ عَلٰى شَاكِلَتِهٖ ۭ فَرَبُّكُمْ
ع أَعْلَمُ بِمَنْ هُوَ أَهْدٰى سَبِيْلًا ۝
وَيَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ الرُّوْحِ ۭ قُلِ الرُّوْحُ مِنْ
أَمْرِ رَبِّيْ وَمَآ أُوْتِيْتُمْ مِّنَ الْعِلْمِ إِلَّا قَلِيْلًا ۝

86. अगर हम चाहें तो वो सब छीन लें जो हमने तुम्हारी तरफ़ वही की है, फिर इसके लिए हमारे मुक़ाबले में अपना कोई हिमायती न पाओ,

87. यह तो बस तुम्हारे रब की रहमत है; हक़ीक़त यह है कि उसका तुमपर बड़ा फ़ज़्ल है।

88. कह दो: "अगर इनसान और जिन्न इसके लिए इकट्ठा हो जाएं कि इस क़ुरआन जैसा लाएं, तो वो इस जैसा न ला सकेंगे, ख़्वाह वो आपस में एक-दूसरे के मददगार ही क्यों न हों"।

89. हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर एक हिकमत की बात फेर-फेरकर बयान की; फिर भी अकसर लोगों के लिए कुफ़्र व इनकार के सिवा सब नाक़ाबिले क़बूल ही रहा।

90. और उन्होंने कहा, "हम तुम्हारी बात मानने के नहीं जब तक कि तुम हमारे लिए ज़मीन से एक चश्मा जारी न करो,

91. या फिर तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों का एक बाग़ हो, और तुम उसके बीच बहती नहरें निकालो,

92. या आसमान के टुकड़े-टुकड़े करके हम पर गिरा दो, जैसा कि तुम्हारा दावा है, या अल्लाह और फ़रिश्तों ही को सामने ले आओ,

93. या तुम्हारे लिए सोने का घर हो जाए, या तुम आसमान में चढ़ जाओ; और हम तुम्हारे चढ़ने पर भी हरगिज़ न मानेंगे जब तक कि तुम हम पर एक किताब न उतार लाओ जिसे हम पढ़ सकें"। कह दो: "अज़ीम व बरतर है मेरा रब! क्या मैं एक पैग़ाम लाने वाले इन्सान के सिवा कुछ और भी हूं?"

94. लोगों को जबकि उनके पास हिदायत आई तो उनको ईमान लाने से बस इसी चीज़ ने रोका कि वो कहने लगे: "क्या अल्लाह ने एक इन्सान को रसूल बनाकर भेज दिया?"

95. कह दो: "अगर ज़मीन में फ़रिश्ते आबाद होकर चलते-फिरते होते तो हम ज़रूर उनके लिए आसमान से किसी फ़रिश्ते ही को रसूल बनाकर भेजते।"

व ल-इन् शिअ्ना लनज़्ह-बन्-न बिल्लज़ी औहैना इलै-क सुम्-म ला तजिदु ल-क बिही अ़लैना वकीला (86)

इल्ला रह्म-तम् मिर्रब्बि-क, इन्-न फ़ज़्लहू का-न अ़लै-क कबीरा (87)

कुल् ल-इनिज्-त-म-अ़तिल्-इन्सु वल्जिन्नु अ़ला अंय्यअ्तू बिमिस्लि हाज़ल्-कुर्आनि ला यअ्तू-न बिमिस्लिही व लौ का-न बअ्ज़ुहुम् लिबअ्ज़िन् ज़हीरा (88)

व ल-क़द् सर्रफ़्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-कुरआनि मिन् कुल्लि म-सलिन्, फ़-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा (89)

व क़ालू लन् नुअ्मि-न ल-क हत्ता तफ़्जु-र लना मिनल्-अर्ज़ि यम्बूआ (90)

औ तकू-न ल-क जन्नतुम् मिन् नख़ीलिंव्-व अि-नबिन् फ़तुफ़ज्जिरल्-अन्हा-र ख़िलालहा तफ़्जीरा (91)

औ तुस्क़ितस्समा-अ कमा ज़अ़म्-त अ़लैना कि-सफ़न् औ तअ्ति-य बिल्लाहि वल्मलाइ-कति क़बीला (92)

औ यकू-न ल-क बैतुम्-मिन् ज़ुख़्रुफ़िन् औ तर्क़ा फ़िस्समा-इ, व लन् नुअ्मि-न लिरुक़िय्यि-क हत्ता तुनज़्ज़ि-ल अ़लैना किताबन् नक़्रउहू, कुल् सुब्हा-न रब्बी हल् कुन्तु इल्ला ब-शरर्-रसूला (93)●

व माम..नअ़न्ना-स अंय्युअ्मिनू इज़् जा-अहुमुल्-हुदा इल्ला अन् क़ालू अ-ब-अ़सल्लाहु ब-शररसूला (94)

कुल् लौ का-न फ़िल्अर्ज़ि मलाइ-कतुंय्यम्शू-न मुत्मइन्नी-न लनज़्ज़ल्ना अ़लैहिम् मिनस्समा-इ म-लकर्रसूला (95)

وَلَئِنْ شِئْنَا لَنَذْهَبَنَّ بِالَّذِیْۤ اَوْحَیْنَاۤ
اِلَیْكَ ثُمَّ لَا تَجِدُ لَكَ بِهٖ عَلَیْنَا وَكِیْلًاۙ ۝٨٦
اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَؕ اِنَّ فَضْلَهٗ كَانَ
عَلَیْكَ كَبِیْرًا ۝٨٧
قُلْ لَّئِنِ اجْتَمَعَتِ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ
عَلٰۤى اَنْ یَّاْتُوْا بِمِثْلِ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
لَا یَاْتُوْنَ بِمِثْلِهٖ وَلَوْ كَانَ بَعْضُهُمْ
لِبَعْضٍ ظَهِیْرًا ۝٨٨
وَلَقَدْ صَرَّفْنَا لِلنَّاسِ فِیْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
مِنْ كُلِّ مَثَلٍ٘ فَاَبٰۤى اَكْثَرُ النَّاسِ
اِلَّا كُفُوْرًا ۝٨٩
وَقَالُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ لَكَ حَتّٰى تَفْجُرَ لَنَا
مِنَ الْاَرْضِ یَنْۢبُوْعًاۙ ۝٩٠
اَوْ تَكُوْنَ لَكَ جَنَّةٌ مِّنْ نَّخِیْلٍ وَّعِنَبٍ
فَتُفَجِّرَ الْاَنْهٰرَ خِلٰلَهَا تَفْجِیْرًاۙ ۝٩١
اَوْ تُسْقِطَ السَّمَآءَ كَمَا زَعَمْتَ عَلَیْنَا كِسَفًا
اَوْ تَاْتِیَ بِاللّٰهِ وَالْمَلٰٓئِكَةِ قَبِیْلًاۙ ۝٩٢
اَوْ یَكُوْنَ لَكَ بَیْتٌ مِّنْ زُخْرُفٍ اَوْ تَرْقٰى
فِی السَّمَآءِؕ وَلَنْ نُّؤْمِنَ لِرُقِیِّكَ حَتّٰى
تُنَزِّلَ عَلَیْنَا كِتٰبًا نَّقْرَؤُهٗؕ قُلْ سُبْحَانَ
ع رَبِّیْ هَلْ كُنْتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوْلًا۠ ۝٩٣
وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ یُّؤْمِنُوْۤا اِذْ جَآءَهُمُ
الْهُدٰۤى اِلَّاۤ اَنْ قَالُوْۤا اَبَعَثَ اللّٰهُ
بَشَرًا رَّسُوْلًا ۝٩٤
قُلْ لَّوْ كَانَ فِی الْاَرْضِ مَلٰٓئِكَةٌ
یَّمْشُوْنَ مُطْمَئِنِّیْنَ لَنَزَّلْنَا عَلَیْهِمْ
مِّنَ السَّمَآءِ مَلَكًا رَّسُوْلًا ۝٩٥

96. कहो "मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह ही एक गवाह काफ़ी है; यक़ीनन वह अपने बन्दों से बाख़बर, ख़ूब नज़र रखने वाला है।"

97. जिसे अल्लाह हिदायत से नवाज़े वही हिदायतयाफ़्ता है; और जिसे वह गुमराह कर दे, तो ऐसे लोगों के लिए उससे हटकर तुम हिमायती न पाओगे। क़ियामत के दिन हम उन्हें औंधे मुंह इस हाल में इकट्ठा करेंगे कि वो अंधे और गूंगे और बहरे होंगे; उनका ठिकाना जहन्नम है, जब भी उसकी आग धीमी पड़ने लगेगी हम उनके लिए उसे भड़का देंगे।

98. यही उनका बदला है इसलिए कि उन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया और कहा, "क्या जब हम हड्डियां और रेज़ा-रेज़ा होकर रह जाएंगे, तो क्या हमें नए सिरे से पैदा करके उठा खड़ा किया जाएगा?"

99. क्या उन्हें यह न सूझा कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया है, वह उन जैसों को भी पैदा करने की क़ुदरत रखता है, उसने तो उनके लिए एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा है, जिसमें कोई शुबह नहीं है; फिर भी ज़ालिमों के लिए कुफ़्र व इनकार के सिवा सब नाक़ाबिले क़बूल ही रहा।

100. कहो: "अगर कहीं मेरे रब की रहमत के ख़ज़ाने तुम्हारे क़ब्ज़े में होते, तो ख़र्च हो जाने के डर से रोके ही रखते; वाक़िई इनसान तो दिल का बड़ा तंग वाक़े हुआ है।

101. हमने मूसा को नौ खुली निशानियां दी थीं, तो बनी इसराईल से पूछ लो, जब वह उनके पास आया और फ़िरऔन ने उससे कहा कि "ऐ मूसा मैं तो तुम्हें यक़ीनी तौरपर बड़ा जादूगर समझता हूं"।

102. उसने कहा, "तू ख़ूब जानता है कि आसमानों और ज़मीन के रब के सिवा किसी और ने उनको रौशन दलीलें बनाकर नहीं उतारा है, और ऐ फ़िरऔन, मैं तो समझता हूं कि तू हलाक होने को है"।

103. आख़िरकार उसने चाहा कि उनको उस सर ज़मीन से उखाड़ फेंके; मगर हमने उसे और जो उसके साथ थे, सब को ग़र्क़ कर दिया।

104. और उसके बाद बनी इसराईल से कहा कि "तुम इस सर ज़मीन में

क़ुल् कफ़ा बिल्लाहि शहीदम्-बैनी व बैनकुम्, इन्नहू का-न बिअ़िबादिही ख़बीरम्-बसीरा (96)

व मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्-मुह्तदि व मंय्युज़्लिल् फ़-लन् तजि-द लहुम् औलिया-अ मिन् दूनिही, व नह्शुरुहुम् यौमल्-क़ियामति अ़ला वुजूहिहिम् अुम्यंव्-व बुक्मंव्-व सुम्मन्, मअ्वाहुम् जहन्नमु, कुल्लमा ख़बत् ज़िद्नाहुम् सअ़ीरा ● (97)

ज़ालि-क जज़ा-उहुम् बिअन्नहुम् क-फ़रू बिआयातिना व क़ालू अ-इज़ा कुन्ना अ़िज़ामंव्-व रुफ़ातन् अ-इन्ना लमब्अूसू-न ख़ल्क़न् जदीदा (98)

अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ क़ादिरुन् अ़ला अंय्यख़्लु-क़ मिस्लहुम् व ज-अ़-ल लहुम् अ-जलल्-ला रै-ब फ़ीहि, फ़-अबज़्ज़ालिमू-न इल्ला कुफ़ूरा (99)

क़ुल् लौ अन्तुम् तम्लिकू-न ख़ज़ाइ-न रह्मति रब्बी इज़ल् ल-अम्सक्तुम् ख़श्य-तल्-इन्फ़ाक़ि, व कानल्-इन्सानु क़तूरा (100) ●

व ल-क़द् आतैना मूसा तिस्-अ़ आयातिम्-बय्यिनातिन् फ़स्अल् बनी इस्राई-ल इज् जा-अहुम् फ़क़ा-ल लहू फ़िर्औनु इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या मूसा मस्हूरा (101)

क़ा-ल लक़द् अ़लिम्-त मा अन्ज़-ल हाउला-इ इल्ला रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि बसाइ-र व इन्नी ल-अज़ुन्नु-क या फ़िर्औनु मस्बूरा (102)

फ़-अरा-द अंय्यस्तफ़िज़्ज़हुम् मिनल्-अर्ज़ि फ़-अग़्रक़्नाहु व मम्-म-अ़हू जमीअ़ा (103)

व क़ुल्ना मिम्-बअ़्दिही लि-बनी इस्राईलस्कुनुल्-

قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ شَهِيْدًا ۢ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ ۭ
اِنَّهٗ كَانَ بِعِبَادِهٖ خَبِيْرًا ۢ بَصِيْرًا ۝٩٦
وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ
يُّضْلِلْ فَلَنْ تَجِدَ لَهُمْ اَوْلِيَاۗءَ مِنْ
دُوْنِهٖ ۭ وَنَحْشُرُهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَلٰي
وُجُوْهِهِمْ عُمْيًا وَّبُكْمًا وَّصُمًّا ۭ
مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۭ كُلَّمَا خَبَتْ زِدْنٰهُمْ
سَعِيْرًا ۝٩٧
ذٰلِكَ جَزَاۗؤُهُمْ بِاَنَّهُمْ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا
وَقَالُوْٓا ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا وَّرُفَاتًا ءَاِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ خَلْقًا جَدِيْدًا ۝٩٨
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ قَادِرٌ عَلٰٓي اَنْ يَّخْلُقَ مِثْلَهُمْ
وَجَعَلَ لَهُمْ اَجَلًا لَّا رَيْبَ فِيْهِ ۭ فَاَبَى
الظّٰلِمُوْنَ اِلَّا كُفُوْرًا ۝٩٩
قُلْ لَّوْ اَنْتُمْ تَمْلِكُوْنَ خَزَاۗىِٕنَ رَحْمَةِ
رَبِّيْٓ اِذًا لَّاَمْسَكْتُمْ خَشْيَةَ الْاِنْفَاقِ ۭ
ع وَكَانَ الْاِنْسَانُ قَتُوْرًا ۝١٠٠
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى تِسْعَ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ
فَسْـَٔلْ بَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اِذْ جَاۗءَهُمْ فَقَالَ
لَهٗ فِرْعَوْنُ اِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰمُوْسٰي مَسْحُوْرًا ۝١٠١
قَالَ لَقَدْ عَلِمْتَ مَآ اَنْزَلَ هٰٓؤُلَاۗءِ
اِلَّا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ بَصَاۗىِٕرَ ۚ
وَاِنِّىْ لَاَظُنُّكَ يٰفِرْعَوْنُ مَثْبُوْرًا ۝١٠٢
فَاَرَادَ اَنْ يَّسْتَفِزَّهُمْ مِّنَ الْاَرْضِ فَاَغْرَقْنٰهُ
وَمَنْ مَّعَهٗ جَمِيْعًا ۝١٠٣
وَّقُلْنَا مِنْۢ بَعْدِهٖ لِبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ اسْكُنُوا

बसो; फिर जब आख़िरत का वादा आन पूरा होगा, तो हम तुम सब को इकट्ठा हाज़िर करेंगे"।

105. हक़ के साथ हमने उसे नाज़िल किया, और हक़ के साथ ही वह नाज़िल हुआ; और तुम्हें तो हमने सिर्फ़ बिशारत देने वाला और मुतनब्बेह करने वाला बनाकर भेजा है;

106. और क़ुरआन को हमने थोड़ा-थोड़ा करके इस लिए नाज़िल किया कि तुम ठहर-ठहर कर उसे लोगों को सुनाओ, और हमने उसे एहतिमाम से बतदरीज उतारा है।

107. कह दोः "तुम उसे मानो, या न मानो, जिनको इसके पहले से इल्म हासिल है उन्हें तो जब यह पढ़कर सुनाया जाता है, तो वो ठोड़ियों के बल सजदे में गिर पड़ते हैं,

108. और कहते हैं कि "अज़ीम व बरतर है हमारा रब! हमारे रब का वादा तो पूरा होकर ही रहता है"।

109. और वो रोते हुए ठोड़ियों के बल गिरते हैं; और यह (क़ुरआन) उनके अजज़ व नियाज़ को और बढ़ा देता है।

110. कह दो कि: "तुम अल्लाह को पुकारो, या रहमान को पुकारो; जिस नाम से भी पुकारो, उसके लिए सब अच्छे ही नाम हैं"। और अपनी नमाज़ न बहुत बुलन्द आवाज़ से पढ़ो, और न उसे बहुत चुपके से पढ़ो, बल्कि उन दोनों के बीच राह इख़्तियार करो"।

111. और कहोः "तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जिसने न तो अपना कोई बेटा बनाया, और न बादशाही में उसका कोई शरीक है, और न ऐसा ही है कि वह आजिज़ हो जिसके सबब से बचाने के लिए उसका कोई हिमायती हो", उसकी बड़ाई बयान करो, कमाल दर्जा की बड़ाई।

सूरह अल-कह्फ़ मक्की

(आयतें 110, रुकूआत 12)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने अपने बन्दे पर यह किताब उतारी और उसके लिए (उसकी सीरत में) कोई कजी नही रखी;

2. निहायत दुरुस्त व निगरां है ताकि उसके (खुदा के) पास से मुत्तला होकर एक सख़्त आफ़त (अज़ाब) से ख़बरदार करे और मोमिनीन को जो

अर्-ज़ फ़-इज़ा जा-अ वअ्दुल्-आख़िरति जिअ्ना बिकुम् लफ़ीफ़ा (104)

'व बिल्हक़्क़ि अन्ज़ल्लाहु व बिल्हक़्क़ि न-ज़-ल, व मा अर्सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा ●(105)

व क़ुर्आनन् फ़रक़्नाहु लितक़्र-अहू अ़लन्नासि अ़ला मुक्सिंव्-व नज़्ज़ल्नाहु तन्ज़ीला (106)

क़ुल् आमिनू बिही औ ला तुअ्मिनू, इन्नल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म मिन् क़ब्लिही इज़ा युत्ला अ़लैहिम् यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि सुज्जदा (107)

व यक़ूलू-न सुब्हा-न रब्बिना इन् का-न वअ्दु रब्बिना ल-मफ़्अूला (108)

व यख़िर्रू-न लिल्अज़्क़ानि यब्कू-न व यज़ीदुहुम् ख़ुशूआ ● (109)

क़ुलिद्अुल्ला-ह अविद्अुर्रह्मा-न, अय्यम् मा तद्अू फ़-लहुल्-अस्माउल्-हुस्ना व ला तज्हर् बि-सलाति-क व ला तुख़ाफ़ित् बिहा वब्तग़ि बै-न ज़ालि-क सबीला (110)

व क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लम् यत्तख़िज़् व-लदंव्-व लम् यकुल्-लहू शरीकुन् फ़िल्मुल्कि व लम् यकुल्लहू वलिय्युम्-मिनज़्ज़ुल्लि व कब्बिर्हु तक्बीरा (111) ●

18 सूरतुल्-कह्फ़ि
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 6620
अक्षर, 1201 शब्द, 110 आयतें और
12 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अन्ज़-ल अ़ला अ़ब्दिहिल्-किता-ब व लम् यज्अ़ल्-लहू अ़ि-वजा (1)

क़य्यिमल् लियुन्ज़ि-र बअ्सन् शदीदम्-मिल्लदुन्हु व युबश्शिरल्-मुअ्मिनीनल्लज़ी-न यअ्मलून-

الْاَرْضَ فَاِذَا جَآءَ وَعْدُ الْاٰخِرَةِ جِئْنَا بِكُمْ
لَفِيْفًا ﴿۱۰۴﴾
وَبِالْحَقِّ اَنْزَلْنٰهُ وَبِالْحَقِّ نَزَلَ وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ
اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ﴿۱۰۵﴾
وَقُرْاٰنًا فَرَقْنٰهُ لِتَقْرَاَهٗ عَلَى النَّاسِ
عَلٰى مُكْثٍ وَّنَزَّلْنٰهُ تَنْزِيْلًا ﴿۱۰۶﴾
قُلْ اٰمِنُوْا بِهٖٓ اَوْ لَا تُؤْمِنُوْا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ مِنْ قَبْلِهٖٓ اِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ
يَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ سُجَّدًا ۙ﴿۱۰۷﴾
وَّيَقُوْلُوْنَ سُبْحٰنَ رَبِّنَآ اِنْ كَانَ وَعْدُ
رَبِّنَا لَمَفْعُوْلًا ﴿۱۰۸﴾
وَيَخِرُّوْنَ لِلْاَذْقَانِ يَبْكُوْنَ وَيَزِيْدُهُمْ
خُشُوْعًا ﴿۱۰۹﴾
قُلِ ادْعُوا اللّٰهَ اَوِ ادْعُوا الرَّحْمٰنَ ؕ اَيًّا مَّا
تَدْعُوْا فَلَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى ۚ وَلَا تَجْهَرْ
بِصَلَاتِكَ وَلَا تُخَافِتْ بِهَا وَابْتَغِ
بَيْنَ ذٰلِكَ سَبِيْلًا ﴿۱۱۰﴾
وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَمْ يَتَّخِذْ
وَلَدًا وَّلَمْ يَكُنْ لَّهٗ شَرِيْكٌ فِي الْمُلْكِ
وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ وَلِيٌّ مِّنَ الذُّلِّ
ع ۱۲ وَكَبِّرْهُ تَكْبِيْرًا ﴿۱۱۱﴾

سُوْرَةُ الْكَهْفِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ۱۱۰ رُكُوْعَاتُهَا ۱۲

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ عَلٰى عَبْدِهِ
الْكِتٰبَ وَلَمْ يَجْعَلْ لَّهٗ عِوَجًا ﴿۱﴾
قَيِّمًا لِّيُنْذِرَ بَاْسًا شَدِيْدًا مِّنْ لَّدُنْهُ
وَيُبَشِّرَ الْمُؤْمِنِيْنَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ

الصّٰلِحٰتِ اَنَّ لَهُمْ اَجْرًا حَسَنًا ۝
مّٰكِثِيْنَ فِيْهِ اَبَدًا ۝
وَّ يُنْذِرَ الَّذِيْنَ قَالُوا اتَّخَذَ اللّٰهُ
وَلَدًا ۝
مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ وَّلَا لِاٰبَآئِهِمْ ۭ
كَبُرَتْ كَلِمَةً تَخْرُجُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ۭ
اِنْ يَّقُوْلُوْنَ اِلَّا كَذِبًا ۝
فَلَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ
اِنْ لَّمْ يُؤْمِنُوْا بِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَسَفًا ۝
اِنَّا جَعَلْنَا مَا عَلَى الْاَرْضِ زِيْنَةً لَّهَا
لِنَبْلُوَهُمْ اَيُّهُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۝
وَاِنَّا لَجٰعِلُوْنَ مَا عَلَيْهَا صَعِيْدًا جُرُزًا ۝
اَمْ حَسِبْتَ اَنَّ اَصْحٰبَ الْكَهْفِ وَالرَّقِيْمِ ۙ
كَانُوْا مِنْ اٰيٰتِنَا عَجَبًا ۝
اِذْ اَوَى الْفِتْيَةُ اِلَى الْكَهْفِ فَقَالُوْا
رَبَّنَآ اٰتِنَا مِنْ لَّدُنْكَ رَحْمَةً وَّهَيِّئْ لَنَا
مِنْ اَمْرِنَا رَشَدًا ۝
فَضَرَبْنَا عَلٰٓى اٰذَانِهِمْ فِي الْكَهْفِ
سِنِيْنَ عَدَدًا ۝
ثُمَّ بَعَثْنٰهُمْ لِنَعْلَمَ اَيُّ الْحِزْبَيْنِ
ع اَحْصٰى لِمَا لَبِثُوْٓا اَمَدًا ۝
نَحْنُ نَقُصُّ عَلَيْكَ نَبَاَهُمْ بِالْحَقِّ ۭ
اِنَّهُمْ فِتْيَةٌ اٰمَنُوْا بِرَبِّهِمْ وَزِدْنٰهُمْ
هُدًى ۝
وَّرَبَطْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اِذْ قَامُوْا
فَقَالُوْا رَبُّنَا رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
لَنْ نَّدْعُوَا۟ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِلٰهًا لَّقَدْ

स्सालिहाति अन्-न लहुम् अज्रन् ह-सना (2)
माकिसी-न फ़ीहि अ-बदा (3)
व युन्ज़िरल्लज़ी-न क़ालुत्त-ख़ज़ल्लाहु व-लदा (4)
मा लहुम् बिही मिन् अिल्मिंव्-व ला लि-आबाइहिम्, कबुरत् कलि-मतन् तख़्रुजु मिन् अफ़्वाहिहिम्, इंय्यक़ूलू-न इल्ला कज़िबा (5)
फ़-लअ़ल्ल-क बाख़िअुन्-नफ़्स-क अ़ला आसारिहिम् इल्लम् युअ्मिनू बिहाज़ल्-हदीसि अ-सफ़ा (6)
इन्ना जअ़ल्ना मा अ़लल्-अर्ज़ि ज़ी-नतल्-लहा लिनब्लु-वहुम् अय्युहुम् अह्सनु अ़-मला (7)
व इन्ना लजाअिलू-न मा अ़लैहा सअ़ीदन् जुरुज़ा (8)
अम् हसिब्-त अन्-न अस्हाबल्-कह्फ़ि वर्रक़ीमि कानू मिन् आयातिना अ़-जबा (9)
इज़् अवल्-फ़ित्यतु इलल्-कह्फ़ि फ़क़ालू रब्बना आतिना मिल्लदुन्-क रह्म-तंव्-व हय्यिअ् लना मिन् अम्रिना र-शदा (10)
फ़-ज़रब्ना अ़ला आज़ानिहिम् फ़िल्-कह्फ़ि सिनी-न अ़-ददा (11)
सुम्-म बअ़स्नाहुम् लि-नअ्ल-म अय्युल्-हिज़्बैनि अह्सा लिमा लबिसू अ-मदा (12) ●
नह्नु नक़ुस्सु अ़लै-क न-ब-अहुम् बिल्हक़्क़ि, इन्नहुम् फ़ित्यतुन् आमनू बिरब्बिहिम् व ज़िद्नाहुम् हुदा (13)
व रबत्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् इज़् क़ामू फ़क़ालू रब्बुना रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि लन्-नद्अु-व मिन् दूनिही इलाहल्-ल क़द्

नेक आमाल इख़्तियार करते हैं ख़ुशख़बरी दे दे कि उनके लिए अच्छा अजर है।

3. जिसमें वो हमेशा रहेंगे।

4. और उन्हें ख़बरदार करे जो कहते हैं कि "अल्लाह औलाद रखता है"।

5. इसका कोई इल्म न तो उनको है, और न उनके बाप-दादा ही को था; बड़ी बात है जो उनके मुंह से निकलती है, वो तो महज़ झूट बकते हैं।

6. ऐ नबी अगर उन्होंने यह बात न मानी तो शायद उनके पीछे तुम अफ़सोस के मारे अपनी जान ही खो दोगे।

7. जो कुछ ज़मीन पर है उसे तो हमने उसके लिए ज़ीनत बनाया है, ताकि हम उन्हें आज़माएं कि अमल के लिहाज़ से कौन उनमें बेहतर है;

8. और जो कुछ उसपर है उसे तो हम ख़ाली चटयल मैदान बना देने वाले हैं।

9. क्या तुम समझते हो कि ग़ार व रक़ीम वाले हमारी अजीब व ग़रीब निशानियों में से थे?

10. जब उन नौजवानों ने ग़ार में जा कर पनाह ली, तो कहा, "हमारे रब, हमें अपने यहां से रहमत अता कर और हमारे लिए अपने काम की दुरुस्ती का सामान कर दे"।

11. फिर हमने उस ग़ार में कई साल के लिए उनके कानों पर पर्दा डाल दिया।

12. फिर हमने उन्हें भेजा, ताकि हम यह इल्म में लाएं कि दोनों गिरोहों में किसने महफ़ूज़ रखा है जितनी मुद्दत वो रहे।

13. हम उनका हाल तुम्हें ठीक-ठीक सुनाते हैं। वो कुछ नौजवान थे जो अपने रब पर ईमान लाए थे और बएतिबारे हिदायत हमने उन्हें तरक़्क़ी अता की थी।

14. और हमने उनके दिलों को मज़बूत कर दिया, जब वो उठे तो उन्होंने कहा, "हमारा रब तो वही आसमानों और ज़मीन का रब है; हम उससे हटकर किसी और माबूद को हरगिज़ नहीं पुकारेंगे, अगर ऐसा

قُلْنَآ اِذًا شَطَطًا ﴿١٤﴾
هٰٓؤُلَآءِ قَوْمُنَا اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ
اٰلِهَةً ؕ لَوْلَا يَاْتُوْنَ عَلَيْهِمْ بِسُلْطٰنٍۢ
بَيِّنٍ ؕ فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ﴿١٥﴾
وَاِذِ اعْتَزَلْتُمُوْهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ اِلَّا اللّٰهَ
فَاْوٗٓا اِلَى الْكَهْفِ يَنْشُرْ لَكُمْ رَبُّكُمْ
مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَيُهَيِّئْ لَكُمْ مِّنْ
اَمْرِكُمْ مِّرْفَقًا ﴿١٦﴾
وَتَرَى الشَّمْسَ اِذَا طَلَعَتْ تَّزٰوَرُ
عَنْ كَهْفِهِمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَاِذَا غَرَبَتْ
تَّقْرِضُهُمْ ذَاتَ الشِّمَالِ وَهُمْ فِيْ
فَجْوَةٍ مِّنْهُ ؕ ذٰلِكَ مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ ؕ
مَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَهُوَ الْمُهْتَدِ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلْ
ع فَلَنْ تَجِدَ لَهٗ وَلِيًّا مُّرْشِدًا ﴿١٧﴾
وَتَحْسَبُهُمْ اَيْقَاظًا وَّهُمْ رُقُوْدٌ ۖ
وَّنُقَلِّبُهُمْ ذَاتَ الْيَمِيْنِ وَذَاتَ الشِّمَالِ ۖ
وَكَلْبُهُمْ بَاسِطٌ ذِرَاعَيْهِ بِالْوَصِيْدِ ؕ
لَوِ اطَّلَعْتَ عَلَيْهِمْ لَوَلَّيْتَ مِنْهُمْ فِرَارًا
وَّلَمُلِئْتَ مِنْهُمْ رُعْبًا ﴿١٨﴾
وَكَذٰلِكَ بَعَثْنٰهُمْ لِيَتَسَآءَلُوْا بَيْنَهُمْ ؕ
قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ كَمْ لَبِثْتُمْ ؕ قَالُوْا
لَبِثْنَا يَوْمًا اَوْ بَعْضَ يَوْمٍ ؕ قَالُوْا رَبُّكُمْ
اَعْلَمُ بِمَا لَبِثْتُمْ ؕ فَابْعَثُوْٓا اَحَدَكُمْ
بِوَرِقِكُمْ هٰذِهٖٓ اِلَى الْمَدِيْنَةِ فَلْيَنْظُرْ
اَيُّهَآ اَزْكٰى طَعَامًا فَلْيَاْتِكُمْ بِرِزْقٍ مِّنْهُ
وَلْيَتَلَطَّفْ وَلَا يُشْعِرَنَّ بِكُمْ اَحَدًا ﴿١٩﴾

कुल्ना इज़न् श-तता (14)

हाउला-इ क़ौमुनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-हतन्, लौ ला यअ्तू-न अ़लैहिम् बिसुल्तानिम्-बय्यिनिन्, फ़-मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबा (15)

व इज़िअ्-तज़ल्तुमूहुम् व मा यअ्बुदू-न इल्लल्ला-ह फ़अ्वू इलल्-कह्फ़ि यन्शुर् लकुम् रब्बुकुम् मिर्रह्मतिही व युहय्यिअ् लकुम् मिन् अम्रिकुम् मिर्फ़क़ा (16)

व-तरश्शम्-स इज़ा त-लअ़त्तज़ा-वरू अ़न् कह्फ़िहिम् ज़ातल्-यमीनि व इज़ा ग़-रबत् तक़्रिज़ुहुम् ज़ातश्शिमालि व हुम् फ़ी फ़ज्वतिम् मिन्हु, ज़ालि-क मिन् आयातिल्लाहि, मंय्यह्दिल्लाहु फ़हुवल्मुह्तदि व मंय्युज़्लिल् फ़-लन् तजि-द लहू वलिय्यम्-मुर्शिदा (17)●

व तह्सबुहुम् ऐक़ाज़ंव्-व हुम् रुक़ूदुंव्-व नुक़ल्लिबुहुम् ज़ातल्-यमीनि व ज़ातश्शिमालि व कल्बुहुम् बासितुन् ज़िराअ़ैहि बिल्-वसीदि, लवित्त-लअ्-त अ़लैहिम् लवल्लै-त मिन्हुम् फ़िरारंव्-व लमुलिअ्-त मिन्हुम् रुअ्बा (18)

व कज़ालि-क बअ़स्नाहुम् लि-य-तसाअलू बैनहुम्, क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् कम् लबिस्तुम्, क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ्-ज़ यौमिन्, क़ालू रब्बुकुम् अअ्लमु बिमा लबिसतुम् फ़ब्अ़सू अ-ह-दकुम् बिवरिक़िकुम् हाज़िही इलल्-मदीनति फ़ल्यन्ज़ुर् अय्युहा अज़्का तआ़मन् फ़ल्यअ्तिकुम् बिरिज़्क़िम्-मिन्हु वल्य-त●-लत्तफ़् व ला युश्अ़िरन्-न बिकुम् अ-हदा (19)

किया तब तो हमारी बात हक़ से बहुत हटी हुई होगी।

15. यह हमारी क़ौम के लोग हैं जिन्होंने उससे हटकर कुछ दूसरे माबूद बनाए हैं, आख़िर ये उनके हक़ में कोई वाज़ेह दलील क्यों नहीं लाते। भला उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर झूट बांधे?

16. और जबकि उनसे तुमने अलहदगी इख़्तियार कर ली है और उनसे भी जिनको ख़ुदा के सिवा ये पूजते हैं, तो ग़ार में चलकर पनाह लो, तुम्हारा रब तुम्हारे लिए अपना दामन-ए-रहमत फैला देगा। और तुम्हारे लिए तुम्हारे अपने काम के सिलसिले में सरो सामान फ़राहम करेगा"।

17. और तुम सूरज को उसके तुलूअ होते वक़्त देखते, तो नज़र आता कि वह उनके ग़ार से दाएं जानिब को बचकर निकल जाता है, और जब डूबता है, तो उनके बाएं जानिब कतराकर जाता है, और वो हैं कि उसकी एक कुशादा जगह में हैं। यह अल्लाह की निशानियों में से है; जिसे अल्लाह राह दिखाए राह पाने वाला वही है, और जिसे वह गुमराही में छोड़ दे, उसका तुम कोई दस्तगीर, रहनुमा न पाओगे।

18. और तुम समझते कि वो जाग रहे हैं, हालांकि वो सोए हुए होते, हम उन्हें दाएं और बाएं फेरते और उनका कुत्ता डेवढ़ी पर अपने दोनों बाज़ू फैलाए हुए होता। अगर तुम उन्हें कहीं झांक कर देखते तो उनके पास से उलटे पांव भाग खड़े होते, और तुममें उनकी दहशत समा जाती।

19. और इसी तरह हमने उन्हें उठा खड़ा किया कि वो आपस में पूछ-ताछ करें। उनमें एक कहनेवाले ने कहा, "तुम कितना ठहरे रहे?" वो बोले, "हम यही कोई एक दिन, या एक दिन से भी कम ठहरे होंगे"। उन्होंने कहा, 'जितना तुम यहां ठहरे हो उसे तुम्हारा रब ही बेहतर जानता है। अब अपने में से किसी को यह चांदी का सिक्का देकर शहर की तरफ़ भेजो, फिर वह देख ले कि उसमें सबसे अच्छा खाना किस जगह मिलता है, तो उसमें से वह तुम्हारे लिए कुछ खाने को ले आए और चाहिए कि वह नर्मी और होशियारी से काम ले, और किसी को तुम्हारी ख़बर न होने दे।

20. अगर वो कहीं तुम्हारी ख़बर पा जाएंगे तो तुम्हें संगसार कर देंगे, या तुम्हें अपनी मिल्लत में लौटा ले जाएंगे, और तब तो तुम कभी भी कामयाब न हो सकोगे"।

21. इस तरह हमने उनपर मुत्तला कर दिया, ताकि वो जान लें कि अल्लाह का वादा सच्चा है, और यह कि क़ियामत की घड़ी में कोई शक व शुबह नहीं है। वह वक़्त भी क़ाबिले ज़िक्र है जब वो आपस में उनके मुआमले में झगड़ा कर रहे थे, फिर उन्होंने कहा कि "उनपर एक इमारत बना दो; उनका रब उन्हें ख़ूब जानता है"। जो लोग उनके मुआमले में ग़ालिब आए उन्होंने कहा, "हम तो ज़रूर उनपर एक मस्जिद बनाएंगे"।

22. अब वो कहेंगे, "वो तीन थे और उनमें चौथा उनका कुत्ता था"। और यह भी कहेंगे कि "वो पांच थे; और उनमें छटा उनका कुत्ता था"। यह निशाना देखे बग़ैर पत्थर चलाना है, और वो यह भी कहेंगे कि "वो सात थे; और उनमें आठवां उनका कुत्ता था" — कह दोः "मेरा रब उनकी तादाद को बख़ूबी जानता है," उनको बस थोड़े ही जानते हैं, तुम सिवाय ज़ाहिरी बात के उनके बारे में न झगड़ो, और न उनमें से किसी से उनके बारे में कुछ पूछो।

23. और न किसी चीज़ के बारे में कभी यह कहो कि "मैं कल इसे कर दूंगा,"

24. बल्कि अल्लाह की मशीयत ही नाफ़िज़ है और जब तुम भूल जाओ तो अपने रब को याद करो, और कहो, "उम्मीद है कि मेरा रब इससे भी क़रीबतर रुश्द की तरफ़ मेरी रहनुमाई फ़रमाए"।

25. "और (कुछ लोग कहते हैं कि) वो अपने ग़ार में तीन सौ साल रहे और नौ साल मज़ीद"।

26. कह दो, "अल्लाह ख़ूब जानता है जितना वो ठहरे"। आसमानों और ज़मीन के राज़ का तअल्लुक़ उसी से है। क्या ही ख़ूब वह देखनेवाला है! और क्या ही ख़ूब वह सुननेवाला है! उससे हटकर न तो उनका कोई सरपरस्त है, और न वह अपने हुक्म व इक्तिदार में किसी को शरीक करता है।

27. अपने रब की किताब से जो कुछ तुम्हारी तरफ़ वही हुई, पढ़कर सुनाओ; कोई नहीं जो उसके फ़रमूदात को बदलने वाला हो, और न तुम उससे हटकर कोई जाए पनाह पाओगे।

28. अपने आपको उन लोगों के साथ रखो जो सुबह व शाम अपने

इन्नहुम् इंय्यज़्हरू अलैकुम् यर्जुमूकुम् औ युअीदूकुम् फ़ी मिल्लतिहिम् व लन् तुफ़्लिहू इज़न् अ-बदा (20)

व कज़ालि-क अअ्सर्ना अलैहिम् लि-यअ्लमू अन्-न वअ्दल्लाहि हक्कुंव्-व अन्नस्साअ-त ला रै-ब फ़ीहा, इज़् य-तना-ज़अू-न बैनहुम् अम्रहुम् फ़क़ालुब्नू अलैहिम् बुन्यानन्, रब्बुहुम् अअ्लमु बिहिम्, क़ालल्लज़ी-न ग़-लबू अला अम्रिहिम् ल-नत्तख़िज़न्-न अलैहिम् मस्जिदा (21)

स-यक़ूलू-न सला-सतुर्-राबिअुहुम् कल्बुहुम् व यक़ूलू-न ख़म्सतुन् सादिसुहुम् कल्बुहुम् रज्मम्-बिल्ग़ैबि व यक़ूलू-न सब्अतुंव्-व सामिनुहुम् कल्बुहुम्, क़ुर्रब्बी अअ्लमु बिअिद्दतिहिम् मा यअ्लमुहुम् इल्ला क़लीलुन्, फ़ला तुमारि फ़ीहिम् इल्ला मिराअन् ज़ाहिरंव्-व ला तस्तफ़्ति फ़ीहिम् मिन्हुम् अ-हदा (22) ●

व ला तक़ूलन्-न लिशैइन् इन्नी फ़ाअिलुन् ज़ालि-क ग़दा (23)

इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, वज़्कुर्-रब्ब-क इज़ा नसी-त व क़ुल् असा अंय्यह्दि-यनि रब्बी लिअक़्र-ब मिन् हाज़ा र-शदा (24)

व लबिसू फ़ी कह्फ़िहिम् सला-स मि-अतिन् सिनी-न वज़्दादू तिस्आ (25)

क़ुलिल्लाहु अअ्लमु बिमा लबिसू लहू ग़ैबुस्समावाति वल्अर्ज़ि अब्सिर् बिही व अस्मिअ्, मा लहुम् मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्-व ला युश्रिकु फ़ी हुक्मिही अ-हदा (26)

वत्लु मा ऊहि-य इलै-क मिन् किताबि रब्बि-क ला मुबद्दि-ल लि-कलिमातिही, व लन् तजि-द मिन् दूनिही मुल्त-हदा (27)

वस्बिर् नफ़्स-क मअल्लज़ी-न यद्अू-न

اِنَّهُمْ اِنْ يَّظْهَرُوْا عَلَيْكُمْ يَرْجُمُوْكُمْ اَوْ يُعِيْدُوْكُمْ
فِيْ مِلَّتِهِمْ وَلَنْ تُفْلِحُوْٓا اِذًا اَبَدًا ⑳
وَكَذٰلِكَ اَعْثَرْنَا عَلَيْهِمْ لِيَعْلَمُوْٓا اَنَّ
وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاَنَّ السَّاعَةَ لَا رَيْبَ
فِيْهَا ۚ اِذْ يَتَنَازَعُوْنَ بَيْنَهُمْ اَمْرَهُمْ
فَقَالُوا ابْنُوْا عَلَيْهِمْ بُنْيَانًا ۭ رَبُّهُمْ
اَعْلَمُ بِهِمْ ۭ قَالَ الَّذِيْنَ غَلَبُوْا عَلٰٓي اَمْرِهِمْ
لَنَتَّخِذَنَّ عَلَيْهِمْ مَّسْجِدًا ㉑
سَيَقُوْلُوْنَ ثَلٰثَةٌ رَّابِعُهُمْ كَلْبُهُمْ ۚ
وَيَقُوْلُوْنَ خَمْسَةٌ سَادِسُهُمْ كَلْبُهُمْ رَجْمًۢا
بِالْغَيْبِ ۚ وَيَقُوْلُوْنَ سَبْعَةٌ وَّثَامِنُهُمْ
كَلْبُهُمْ ۭ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ بِعِدَّتِهِمْ مَّا يَعْلَمُهُمْ
اِلَّا قَلِيْلٌ ڛ فَلَا تُمَارِ فِيْهِمْ اِلَّا مِرَاۗءً ظَاهِرًا ۠
ع وَّلَا تَسْتَفْتِ فِيْهِمْ مِّنْهُمْ اَحَدًا ㉒
وَلَا تَقُوْلَنَّ لِشَايْءٍ اِنِّىْ فَاعِلٌ ذٰلِكَ غَدًا ㉓
اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ ۡ وَاذْكُرْ رَّبَّكَ
اِذَا نَسِيْتَ وَقُلْ عَسٰٓى اَنْ يَّهْدِيَنِ رَبِّيْ
لِاَقْرَبَ مِنْ هٰذَا رَشَدًا ㉔
وَلَبِثُوْا فِيْ كَهْفِهِمْ ثَلٰثَ مِائَةٍ سِنِيْنَ
وَازْدَادُوْا تِسْعًا ㉕
قُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا لَبِثُوْا ۚ لَهٗ غَيْبُ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ ۭ اَبْصِرْ بِهٖ وَاَسْمِعْ ۭ مَا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ
مِنْ وَّلِيٍّ ۡ وَّلَا يُشْرِكُ فِيْ حُكْمِهٖٓ اَحَدًا ㉖
وَاتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنْ كِتَابِ رَبِّكَ ڄ
لَا مُبَدِّلَ لِكَلِمٰتِهٖ ڐ وَلَنْ تَجِدَ مِنْ
دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ㉗
وَاصْبِرْ نَفْسَكَ مَعَ الَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ

रब को उसकी रिज़ा चाहते हुए पुकारते हैं, और हयाते दुनिया की ज़ीनत की ख़्वाहिश में तुम्हारी आंखें उनसे न फिरें; और ऐसे शख़्स की बात न मानना जिसके दिल को हमने अपनी याद से ग़ाफ़िल कर दिया है और वह अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी में लगा हुआ है, और उसका मुआमला हद से आगे बढ़ गया है।

29. कह दो कि "हक़ तुम्हारे रब की तरफ़ से है; तो अब जो कोई चाहे माने और जो चाहे इनकार कर दे"। हमने तो ज़ालिमों के लिए आग तैयार कर रखी है, जिसकी क़नातों ने उन्हें घेर लिया है; अगर वो फ़रियाद करेंगे तो ऐसे पानी से उनकी फ़रियाद रसी की जाएगी, जो तेल की तलछट जैसा होगा, वह उनके मुंह भून देगा: बहुत ही बुरी है वह पीने की चीज़ और बहुत ही बुरी है वह आरामगाह!

30. रहे वो लोग जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक अमल किए, तो यक़ीनन किसी ऐसे शख़्स का अजर जिसने अच्छा अमल किया हो हम अकारत नहीं करते;

31. ऐसे ही लोगों के लिए सदाबहार बाग़ हैं, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी; वहां वो सोने के कंगन से आरास्ता किए जाएंगे, और वो हरे बारीक और दबीज़ रेशमी कपड़े पहनेंगे। और ऊंचे तख़्तों पर तकिया लगाए होंगे। क्या ही अच्छा अजर है! और क्या ही अच्छी आराम गाह!

32. उनके सामने एक मिसाल पेश करो। दो शख़्स हैं। उनमें से एक को हमने अंगूरों के दो बाग़ दिए, और उनके चारों तरफ़ हमने खजूरों के दरख़्तों की बाढ़ लगाई, और उन दोनों के दरमियान हमने खेती-बाड़ी रखी,

33. दोनों में से हर बाग़ अपने फल लाया और उसमें कोई कमी नहीं की; और उन दोनों के दरमियान हमने एक नहर भी जारी कर दी थी।

34. उसे ख़ूब फल और पैदावार हासिल हुई; इसपर वह अपने साथी से जबकि वह उससे गुफ़्तगू कर रहा था कहने लगा, "मैं तुझ से माल व दौलत में बढ़कर हूं और आदमियों का ज़ोर भी मुझे ज़्यादा हासिल है!"

35. वह अपने हक़ में ज़ालिम बनकर अपने बाग़ में दाख़िल हुआ, कहने लगा, "मैं ऐसा नहीं समझता कि यह कभी तबाह होगा;

रब्बहुम् बिल्ग़दाति वल्अशिय्यि युरीदू-न वज्हहू व ला तअ्दु अ़ैना-क अ़न्हुम् तुरीदु ज़ी-नतल्-हयातिद्दुन्या व ला तुतिअ् मन् अग़्फ़ल्ना क़ल्बहू अ़न् ज़िक्रिना वत्त-ब-अ़ हवाहु व का-न अम्रुहू फ़ुरुता ●(28)

व क़ुलिल्-हक़्क़ु मिर्रब्बिकुम्, फ़-मन् शा-अ फ़ल्युअ्मिंव्-व मन् शा-अ फ़ल्यक्फ़ुर् इन्ना अअ्तद्ना लिज़्ज़ालिमी-न नारन् अहा-त बिहिम् सुरादिक़ुहा, व इंय्यस्तग़ीसू युग़ासू बिमाइन् कल्मुह्लि यश्विल्-वुजू-ह, बिअ्सश्शराबु, व साअत् मुर्त-फ़क़ा (29)

इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति इन्ना ला नुज़ीअु अज्-र मन् अह्स-न अ़-मला (30)

उलाइ-क लहुम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्तिहिमुल्-अन्हारु युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-हबिंव्-व यल्बसू-न सियाबन् ख़ुज़्रम्-मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रक़िम्-मुत्तकिई-न फ़ीहा अ़लल् अराइकि, निअ्मस्सवाबु, व हसुनत् मुर्त-फ़क़ा (31) ●

वज़्रिब् लहुम् म-सलर्-रजुलैनि जअ़ल्ना लि-अ-हदिहिमा जन्नतैनि मिन् अअ्नाबिंव्-व हफ़फ़्नाहुमा बिनख़्लिंव्-व जअ़ल्ना बैनहुमा ज़र्अ़ा (32)

किल्तल्-जन्नतैनि आतत् उकु-लहा व लम् तज़्लिम् मिन्हु शैअंव्-व फ़ज्जर्ना ख़िला-लहुमा न-हरा (33)

व का-न लहू स-मरुन् फ़क़ा-ल लिसाहिबिही व हु-व युहाविरुहू अ-न अक्सरु मिन्-क मालंव्-व अ-अ़ज़्ज़ु न-फ़रा (34)

व द-ख़-ल जन्नतहू व हु-व ज़ालिमुल् लिनफ़्सिही क़ा-ल मा अज़ुन्नु अन् तबी-द हाज़िही अ-बदा (35)

رَبَّهُمْ بِالْغَدٰوةِ وَالْعَشِیِّ یُرِیْدُوْنَ
وَجْهَهٗ وَلَا تَعْدُ عَیْنٰكَ عَنْهُمْ ۚ تُرِیْدُ
زِیْنَةَ الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا ۚ وَلَا تُطِعْ مَنْ
اَغْفَلْنَا قَلْبَهٗ عَنْ ذِكْرِنَا وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ
وَكَانَ اَمْرُهٗ فُرُطًا ﴿۲۸﴾
وَقُلِ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّكُمْ ۗ فَمَنْ شَآءَ
فَلْیُؤْمِنْ وَّمَنْ شَآءَ فَلْیَكْفُرْ ۙ اِنَّآ اَعْتَدْنَا
لِلظّٰلِمِیْنَ نَارًا ۙ اَحَاطَ بِهِمْ سُرَادِقُهَا ؕ
وَاِنْ یَّسْتَغِیْثُوْا یُغَاثُوْا بِمَآءٍ كَالْمُهْلِ یَشْوِی
الْوُجُوْهَ ؕ بِئْسَ الشَّرَابُ ؕ وَسَآءَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۲۹﴾
اِنَّ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ اِنَّا لَا
نُضِیْعُ اَجْرَ مَنْ اَحْسَنَ عَمَلًا ﴿۳۰﴾ ۚ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِیْ مِنْ
تَحْتِهِمُ الْاَنْهٰرُ یُحَلَّوْنَ فِیْهَا مِنْ اَسَاوِرَ
مِنْ ذَهَبٍ وَّیَلْبَسُوْنَ ثِیَابًا خُضْرًا مِّنْ
سُنْدُسٍ وَّاِسْتَبْرَقٍ مُّتَّكِـِٕیْنَ فِیْهَا عَلَى
الْاَرَآئِكِ ؕ نِعْمَ الثَّوَابُ ؕ وَحَسُنَتْ مُرْتَفَقًا ﴿۳۱﴾
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا رَّجُلَیْنِ جَعَلْنَا
لِاَحَدِهِمَا جَنَّتَیْنِ مِنْ اَعْنَابٍ وَّحَفَفْنٰهُمَا
بِنَخْلٍ وَّجَعَلْنَا بَیْنَهُمَا زَرْعًا ﴿۳۲﴾ ؕ
كِلْتَا الْجَنَّتَیْنِ اٰتَتْ اُكُلَهَا وَلَمْ تَظْلِمْ
مِّنْهُ شَیْـًٔا ۙ وَّفَجَّرْنَا خِلٰلَهُمَا نَهَرًا ﴿۳۳﴾ ۙ
وَّكَانَ لَهٗ ثَمَرٌ ۚ فَقَالَ لِصَاحِبِهٖ وَهُوَ
یُحَاوِرُهٗٓ اَنَا اَكْثَرُ مِنْكَ مَالًا وَّاَعَزُّ
نَفَرًا ﴿۳۴﴾
وَدَخَلَ جَنَّتَهٗ وَهُوَ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ
قَالَ مَآ اَظُنُّ اَنْ تَبِیْدَ هٰذِهٖٓ اَبَدًا ﴿۳۵﴾ ۙ

36. और मैं नही समझता कि वह क़ियामत की घड़ी वाक़े होगी; और अगर मैं हक़ीक़त में अपने रब के पास पलटा भी तो यक़ीनन पलटने की जगह इससे बेहतर पाऊंगा"।

37. उसके साथी ने उससे गुफ़्तगू करते हुए कहा, "क्या तू उस ज़ात के साथ कुफ़्र करता है जिसने तुझे मिट्टी से, और फिर नुत्फ़े से पैदा किया, फिर तुझे एक पूरा आदमी बनाया?

38. लेकिन मेरा रब तो वही अल्लाह है, और मैं किसी को अपने रब के साथ शरीक नहीं करता।

39. और ऐसा क्यों न हुआ कि जब तू अपने बाग़ में दाख़िल हुआ, तो कहता, 'जो अल्लाह चाहे; अल्लाह के बग़ैर कोई ज़ोर नहीं'? अगर तू देखता है कि मैं माल और औलाद में तुझ से कमतर हूं,

40. तो अजब नहीं कि मेरा रब मुझे तेरे बाग़ से बेहतर अता करे, और तेरे इस बाग़ पर आसमान से कोई आफ़त भेज दे, फिर वह साफ़ मैदान होकर रह जाए।

41. या उसका पानी बिल्कुल नीचे उतर जाए, फिर तू उसे किसी तरह ढूंढ़ कर न ला सके"।

42. हुआ भी यही कि उसका समरा (फल) घिराव में आ गया, जो कुछ उसने ख़र्च किया था उसपर वह अपनी हथेलियों को नचाता रह गया, जबकि वह बाग़ अपनी छतरियों पर ढहे पड़ा हुआ था, और वह कह रहा था, "ऐ काश मैंने अपने रब के साथ किसी को शरीक न किया होता!"

43. उसका कोई जत्था न हुआ जो उसके और ख़ुदा के दरमियान हाइल होकर उसकी मदद करता, और न वह ख़ुद बदला लेने के क़ाबिल था।

44. ऐसे मौक़े पर कारसाज़ी का सारा इख़्तियार ख़ुदा-ए-बरहक़ के लिए साबित है; वही जज़ा देने में सबसे बेहतर है और वही अन्जाम बख़ैर दिखाने में सब से बेहतर है।

45. और उनके आगे हयात-ए-दुनिया की मिसाल बयान करो: यह ऐसी है जैसे पानी हो जिसे हमने आसमान से उतारा, तो उससे

व मा अज़ुन्नुस्सा-अ-त क़ाइ-मतंव्-व ल-इर्रुदित्तु इला रब्बी ल-अजिदन्-न ख़ैरम्-मिन्हा मुन्क-लबा (36)

क़ा-ल लहू साहिबुहू व हु-व युहाविरुहू अ-कफ़र्-त बिल्लज़ी ख़-ल-क़-क मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म सव्वा-क रजुला (37)

लाकिन्-न हुवल्लाहु रब्बी व ला उश्रिकु बिरब्बी अ-हदा (38)

व लौ ला इज़् दख़ल्-त जन्न-त-क क़ुल्-त मा शा-अल्लाहु ला क़ुव्व-त इल्ला बिल्लाहि इन् तरनि अ-न अक़ल्-ल मिन्-क मालंव्-व व-लदा (39)

फ़-असा रब्बी अंय्युअ्ति-यनि ख़ैरम्-मिन् जन्नति-क व युरसि-ल अलैहा हुस्बानम्-मिनस्समा-इ फ़तुस्बि-ह सअीदन् ज़-लक़ा (40)

औ युस्बि-ह माउहा ग़ौरन् फ़-लन् तस्तती-अ लहू त-लबा (41)

व उही-त बि-स-मरिही फ़-अस्ब-ह युक़ल्लिबु कफ़्फ़ैहि अ़ला मा अन्फ़-क़ फ़ीहा व हि-य ख़ावि-यतुन् अ़ला अुरूशिहा व यक़ूलु यालैतनी लम् उश्रिक् बिरब्बी अ-हदा (42)

व लम् तकुल्लहू फ़ि-अतुंय्यन्सुरूनहू मिन् दूनिल्लाहि व मा का-न मुन्तसिरा (43)

हुनालिकल्-वला-यतु लिल्लाहिल्-हक़्क़ि, हु-व ख़ैरुन् सवाबंव्-व ख़ैरुन् अुक़्बा (44) ●

वज़्रिब् लहुम् म-सलल्-हयातिद्दुन्या कमाइन् अन्ज़ल्नाहु मिनस्समा-इ फ़ख़्त-ल-त बिही नबातुल्अर्ज़ि फ़अस्ब-ह हशीमन्

وَّمَآ اَظُنُّ السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ
رُّدِدْتُّ اِلٰى رَبِّىْ لَاَجِدَنَّ خَيْرًا مِّنْهَا
مُنْقَلَبًا ۝٣٦

قَالَ لَهٗ صَاحِبُهٗ وَهُوَ يُحَاوِرُهٗٓ
اَكَفَرْتَ بِالَّذِىْ خَلَقَكَ مِنْ تُرَابٍ
ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ سَوّٰىكَ رَجُلًا ۝٣٧

لٰكِنَّا۠ هُوَ اللّٰهُ رَبِّىْ وَلَآ اُشْرِكُ
بِرَبِّىْٓ اَحَدًا ۝٣٨

وَلَوْلَآ اِذْ دَخَلْتَ جَنَّتَكَ قُلْتَ
مَا شَآءَ اللّٰهُ ۙ لَا قُوَّةَ اِلَّا بِاللّٰهِ ۚ اِنْ
تَرَنِ اَنَا اَقَلَّ مِنْكَ مَالًا وَّوَلَدًا ۝٣٩
فَعَسٰى رَبِّىْٓ اَنْ يُّؤْتِيَنِ خَيْرًا مِّنْ
جَنَّتِكَ وَيُرْسِلَ عَلَيْهَا حُسْبَانًا مِّنَ
السَّمَآءِ فَتُصْبِحَ صَعِيْدًا زَلَقًا ۝٤٠
اَوْ يُصْبِحَ مَآؤُهَا غَوْرًا فَلَنْ تَسْتَطِيْعَ
لَهٗ طَلَبًا ۝٤١

وَاُحِيْطَ بِثَمَرِهٖ فَاَصْبَحَ يُقَلِّبُ كَفَّيْهِ
عَلٰى مَآ اَنْفَقَ فِيْهَا وَهِىَ خَاوِيَةٌ
عَلٰى عُرُوْشِهَا وَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِىْ لَمْ اُشْرِكْ
بِرَبِّىْٓ اَحَدًا ۝٤٢

وَلَمْ تَكُنْ لَّهٗ فِئَةٌ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَمَا كَانَ مُنْتَصِرًا ۝٤٣
هُنَالِكَ الْوَلَايَةُ لِلّٰهِ الْحَقِّ ۗ هُوَ خَيْرٌ
ع ثَوَابًا وَّخَيْرٌ عُقْبًا ۝٤٤
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
كَمَآءٍ اَنْزَلْنٰهُ مِنَ السَّمَآءِ فَاخْتَلَطَ
بِهٖ نَبَاتُ الْاَرْضِ فَاَصْبَحَ هَشِيْمًا

ज़मीन के पौधे घनी होकर आपस में गुथ गए; फिर वह चूरा-चूरा होकर रह गया जिसे हवाएं उड़ाए लिए फिरती हैं; अल्लाह को तो हर चीज़ पर कुदरत हासिल है।

46. माल और बेटे तो बस हयात-ए-दुनिया की ज़ीनत हैं; जबकि बाक़ी रहनेवाली नेकियां तुम्हारे रब के नज़दीक नतीजा के लिहाज़ से भी बेहतर हैं, और उम्मीद के एतिबार से वही बेहतर हैं।

47. जिस दिन हम पहाड़ों को चलाएंगे और तुम ज़मीन को बिल्कुल खुला देखोगे, और हम उन्हें इकट्ठा करेंगे तो उनमें से किसी एक को भी न छोड़ेंगे;

48. वो तुम्हारे रब के सामने सफ़ बस्ता पेश होंगे – "तुम हमारे सामने आ पहुंचे जैसा हमने तुम्हें पहली बार पैदा किया था; नहीं, बल्कि तुम्हें तो यह गुमान था कि हम तुम्हारे लिए कोई वादे का वक़्त मुक़र्रर नहीं करेंगे"।

49. और किताब रखी जाएगी, तो मुजरिमों को देखोगे कि जो कुछ उसमें होगा उससे डर रहे हैं, और कह रहे हैं, "ऐ हमारी बदबख़्ती! यह कैसी किताब है कि यह न कोई छोटी बात छोड़ती है न बड़ी, सब ही का इसने इहाता कर रखा है। जो कुछ उन्होंने किया होगा सब हाज़िर पाएंगे, तुम्हारा रब किसी पर ज़ुल्म न करेगा।

50. याद करो जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि "आदम को सजदा करो," तो इब्लीस के सिवा सब ने सजदा किया, वह जिन्नों में से था, पस उसने अपने रब के हुक्म की ख़िलाफ़वर्ज़ी की। अब क्या तुम मुझ से हटकर उसे और उसकी औलाद को रफ़ीक़ व सरपरस्त बनाते हो, हालांकि वो तुम्हारे दुश्मन हैं? क्या ही बुरा मुतबादिल है जो ज़ालिमों के हाथ आया!

51. मैंने न तो आसमानों और ज़मीन को उन्हें दिखा कर पैदा किया, और न ख़ुद उनको बनाने और पैदा करने के वक़्त ही उन्हें बुलाया; मैं ऐसा नहीं हूं कि गुमराह करने वालों को अपना दोस्त व बाज़ू बनाऊं।

52. याद करो जिस दिन वह फ़रमाएगा कि "बुलाओ मेरे उन शरीकों

तज़्रूहुर्रियाहु, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइम्-मुक़्तदिरा (45)

अल्मालु वल्बनू-न ज़ीनतुल्-हयातिद्दुन्या वल्बाक़ियातुस्सालिहातु ख़ैरुन् अ़िन्-द रब्बि-क सवाबंव्-व ख़ैरुन् अ-मला (46)

व यौ-म नुसय्यिरुल्-जिबा-ल व तरल्-अर्-ज़ बारि-ज़तंव्-व हशर्नाहुम् फ़-लम् नुग़ादिर् मिन्हुम् अ-हदा (47)

व अ़ुरिज़ू अ़ला रब्बि-क सफ़्फ़न्, ल-क़द् जिअ्तुमूना कमा ख़लक़्नाकुम् अव्व-ल मर्रतिम् बल् ज़अ़म्तुम् अल्-लन् नज्-अ़-ल लकुम् मौअ़िदा (48)

व वुज़िअ़ल्-किताबु फ़-तरल्-मुज्रिमी-न मुश्फ़िक़ी-न मिम्मा फ़ीहि व यक़ूलू-न यावैल-तना मा लि-हाज़ल्-किताबि ला युग़ादिरु सग़ी-रतंव्-व ला कबी-रतन् इल्ला अह्साहा व व-जदू मा अ़मिलू हाज़िरन्, व ला यज़्लिमु रब्बु-क अ-हदा (49) ●

व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स, का-न मिनल्-जिन्नि फ़-फ़-स-क़ अ़न् अम्रि रब्बिही, अ-फ़-तत्तख़िज़ूनहू व ज़ुर्रिय्य-तहू औलिया-अ मिन् दूनी व हुम् लकुम् अ़दुव्वुन्, बिअ्-स लिज़्ज़ालिमी-न ब-दला (50)

मा अश्हत्तुहुम् ख़ल्क़स्-समावाति वल्अर्ज़ि व ला ख़ल्-क़ अन्फ़ुसिहिम् व मा कुन्तु मुत्तख़िज़ल्-मुज़िल्ली-न अ़ज़ुदा (51)

व यौ-म यक़ूलु नादू शु-रकाइ-यल्लज़ी-न

تَذْرُوْهُ الرِّيٰحُ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَیْءٍ مُّقْتَدِرًا ۝٤٥
اَلْمَالُ وَالْبَنُوْنَ زِيْنَةُ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ
ثَوَابًا وَّخَيْرٌ اَمَلًا ۝٤٦
وَيَوْمَ نُسَيِّرُ الْجِبَالَ وَتَرَى الْاَرْضَ
بَارِزَةً ۙ وَّحَشَرْنٰهُمْ فَلَمْ نُغَادِرْ مِنْهُمْ
اَحَدًا ۝٤٧
وَعُرِضُوْا عَلٰى رَبِّكَ صَفًّا ؕ لَقَدْ جِئْتُمُوْنَا
كَمَا خَلَقْنٰكُمْ اَوَّلَ مَرَّةٍ ۢ بَلْ
زَعَمْتُمْ اَلَّنْ نَّجْعَلَ لَكُمْ مَّوْعِدًا ۝٤٨
وَوُضِعَ الْكِتٰبُ فَتَرَى الْمُجْرِمِيْنَ
مُشْفِقِيْنَ مِمَّا فِيْهِ وَيَقُوْلُوْنَ يٰوَيْلَتَنَا
مَالِ هٰذَا الْكِتٰبِ لَا يُغَادِرُ صَغِيْرَةً
وَّلَا كَبِيْرَةً اِلَّاۤ اَحْصٰهَا ۚ وَوَجَدُوْا
مَا عَمِلُوْا حَاضِرًا ؕ وَلَا يَظْلِمُ رَبُّكَ
ع اَحَدًا ۝٤٩
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ
فَسَجَدُوْۤا اِلَّاۤ اِبْلِيْسَ ؕ كَانَ مِنَ الْجِنِّ
فَفَسَقَ عَنْ اَمْرِ رَبِّهٖ ؕ اَفَتَتَّخِذُوْنَهٗ
وَذُرِّيَّتَهٗۤ اَوْلِيَآءَ مِنْ دُوْنِيْ وَهُمْ
لَكُمْ عَدُوٌّ ؕ بِئْسَ لِلظّٰلِمِيْنَ
بَدَلًا ۝٥٠
مَاۤ اَشْهَدْتُّهُمْ خَلْقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَلَا خَلْقَ اَنْفُسِهِمْ ۪ وَمَا كُنْتُ
مُتَّخِذَ الْمُضِلِّيْنَ عَضُدًا ۝٥١
وَيَوْمَ يَقُوْلُ نَادُوْا شُرَكَآءِيَ الَّذِيْنَ

को जिनको तुमने मेरा शरीक गुमान किया था; तो वो उन्हें पुकारेंगे, मगर वो उन्हें कोई जवाब न देंगे और हम उनके दरमियान हलाकत का सामान कर देंगे।

53. मुजरिमीन आग को देखेंगे तो समझ लेंगे कि वो उसमें पड़ने वाले हैं, और उससे बच निकलने की कोई जगह न पाएंगे।

54. हमने लोगों के लिए इस क़ुरआन में हर क़िस्म के उमदा मज़ामीन तरह-तरह से बयान किए हैं; मगर इनसान सबसे बढ़कर झगड़ालू है।

55. आख़िर लोगों को जबकि उनके पास हिदायत आ गई तो इस बात से कि वो ईमान लाते, और अपने रब से बख़्शिश चाहते, इसके सिवा किसी चीज़ ने नहीं रोका कि उनके लिए वही कुछ ज़ाहिर हो जो अगलों के लिए ज़ाहिर हुआ है, यहां तक कि अज़ाब उनके सामने आ खड़ा हो।

56. रसूलों को हम मग़ज़ ख़ुशख़बरी देने वाले, और ख़बरदार करने वाले बनाकर भेजते हैं, मगर कुफ़्र इख़्तियार करने वाले लोग हैं कि बातिल के सहारे झगड़ते हैं ताकि हक़ को पसपा कर दें। उन्होंने मेरी आयतों का और जो उन्हें ख़बरदार किया गया उसका मज़ाक़ बना लिया।

57. उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के ज़रिए से समझाया गया तो उसने उनसे एराज़ किया और उसे भूल गया जो सरो सामान आगे के लिए उसके हाथों ने किया है? बेशक हमने उनके दिलों पर पर्दे डाल दिए हैं कि वो उसे समझ न सकें और उनके कानों में गिरानी पैदा कर दी। अगरचे तुम उन्हें हिदायत की तरफ़ बुलाओ वो कभी हिदायत पाने के नहीं।

58. तुम्हारा रब तो बहुत बख़्शनेवाला, साहिब-ए-रहमत है। अगर वह उन्हें उसपर पकड़ता जो कुछ कि उन्होंने कमाया है, तो जल्द ही उनपर अज़ाब ला देता; नहीं बल्कि उनके लिए तो वादे का एक वक़्त मुक़र्रर है, उससे हटकर वो कोई बच निकलने की जगह न पाएंगे।

59. और ये बस्तियां वो हैं कि जब उन्होंने ज़ुल्म किया तो हमने उन्हें हलाक कर दिया, और हमने उनकी हलाकत के लिए एक वक़्त मुक़र्रर कर रखा था।

60. याद करो जब मूसा ने अपने

ज़अ़म्तुम् फ़-दऔ़हुम् फ-लम् यस्तजीबू लहुम् व जअ़ल्ना बैनहुम् मौबिक़ा (52)

व र-अल् मुज्रिमूनन्ना-र फ-ज़न्नू अन्नहुम् मुवाक़िअूहा व लम् यजिदू अ़न्हा मस्रिफ़ा (53) ●

व ल-क़द् सर्रफ़्ना फ़ी हाज़ल्-क़ुरआनि लिन्नासि मिन् कुल्लि म-सलिन्, व कानल्-इन्सानु अक्स-र शैइन् ज-दला (54)

व मा म-नअ़न्-ना-स अंय्युअ्मिनू इज् जाअहुमुल्हुदा व यस्तग़्फ़िरू रब्बहुम् इल्ला अन् तअ्ति-यहुम् सुन्नतुल्-अव्वली-न औ यअ्ति-यहुमुल्-अ़ज़ाबु क़ुबुला (55)

व मा नुर्सिलुल्-मुर्सली-न इल्ला मुबश्शिरी-न व मुन्ज़िरी-न व युजादिलुल्लज़ी-न क-फ़रू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्हक़्-क वत्त-ख़ज़ू आयाती व मा उन्ज़िरू हुज़ुवा (56)

व मन् अज़्लमु मिम्-मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति रब्बिही फ-अअ्र-ज़ अ़न्हा व नसि-य मा क़द्दमत् यदाहु, इन्ना जअ़ल्ना अ़ला क़ुलूबिहिम् अकिन्न-तन् अंय्यफ़्क़हूहु व फ़ी आज़ानिहिम् वक़रन्, व इन् तद्अुहुम् इलल्-हुदा फ-लंय्यह्तदू इज़न् अ-बदा (57)

व रब्बुकल्-ग़फ़ूरू ज़ुर्रह्मति, लौ युआख़िज़ुहुम् बिमा क-सबू ल-अ़ज्ज-ल लहुमुल्-अ़ज़ा-ब, बल्-लहुम् मौअिदुल्-लंय्यजिदू मिन् दूनिही मौअिला (58)

व तिल्कल्-क़ुरा अह्लक्नाहुम् लम्मा ज़-लमू व जअ़ल्ना लिमह्लिकिहिम् मौअ़िदा (59) ●

व इज् का-ल मूसा लि-फ़ताहु ला अब्रहु हत्ता

زَعَمْتُمْ فَدَعَوْهُمْ فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ مَّوْبِقًا ۝٥٢
وَرَاَ الْمُجْرِمُوْنَ النَّارَ فَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ
ع مُّوَاقِعُوْهَا وَلَمْ يَجِدُوْا عَنْهَا مَصْرِفًا ۝٥٣
وَلَقَدْ صَرَّفْنَا فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ لِلنَّاسِ
مِنْ كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَكَانَ الْاِنْسَانُ
اَكْثَرَ شَيْءٍ جَدَلًا ۝٥٤
وَمَا مَنَعَ النَّاسَ اَنْ يُّؤْمِنُوْٓا اِذْ جَآءَهُمُ
الْهُدٰى وَيَسْتَغْفِرُوْا رَبَّهُمْ اِلَّآ اَنْ
تَاْتِيَهُمْ سُنَّةُ الْاَوَّلِيْنَ اَوْ يَاْتِيَهُمُ
الْعَذَابُ قُبُلًا ۝٥٥
وَمَا نُرْسِلُ الْمُرْسَلِيْنَ اِلَّا مُبَشِّرِيْنَ
وَمُنْذِرِيْنَ ۚ وَيُجَادِلُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ الْحَقَّ وَاتَّخَذُوْٓا
اٰيٰتِيْ وَمَآ اُنْذِرُوْا هُزُوًا ۝٥٦
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ
فَاَعْرَضَ عَنْهَا وَنَسِيَ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ ؕ
اِنَّا جَعَلْنَا عَلٰى قُلُوْبِهِمْ اَكِنَّةً اَنْ يَّفْقَهُوْهُ
وَفِيْٓ اٰذَانِهِمْ وَقْرًا ؕ وَاِنْ تَدْعُهُمْ اِلَى
الْهُدٰى فَلَنْ يَّهْتَدُوْٓا اِذًا اَبَدًا ۝٥٧
وَرَبُّكَ الْغَفُوْرُ ذُو الرَّحْمَةِ ؕ لَوْ يُؤَاخِذُهُمْ
بِمَا كَسَبُوْا لَعَجَّلَ لَهُمُ الْعَذَابَ ؕ
بَلْ لَّهُمْ مَّوْعِدٌ لَّنْ يَّجِدُوْا مِنْ
دُوْنِهٖ مَوْىِٕلًا ۝٥٨
وَتِلْكَ الْقُرٰٓى اَهْلَكْنٰهُمْ لَمَّا ظَلَمُوْا
ع وَجَعَلْنَا لِمَهْلِكِهِمْ مَّوْعِدًا ۝٥٩
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِفَتٰىهُ لَآ اَبْرَحُ حَتّٰٓى

اَبْلُغَ مَجْمَعَ الْبَحْرَيْنِ اَوْ اَمْضِىَ حُقُبًا ۝٦٠
فَلَمَّا بَلَغَا مَجْمَعَ بَيْنِهِمَا نَسِيَا حُوْتَهُمَا
فَاتَّخَذَ سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ سَرَبًا ۝٦١
فَلَمَّا جَاوَزَا قَالَ لِفَتٰىهُ اٰتِنَا غَدَآءَنَا ؗ
لَقَدْ لَقِيْنَا مِنْ سَفَرِنَا هٰذَا نَصَبًا ۝٦٢
قَالَ اَرَءَيْتَ اِذْ اَوَيْنَآ اِلَى الصَّخْرَةِ
فَاِنِّىْ نَسِيْتُ الْحُوْتَ ؗ وَمَآ اَنْسٰنِيْهُ
اِلَّا الشَّيْطٰنُ اَنْ اَذْكُرَهٗ ۚ وَاتَّخَذَ
سَبِيْلَهٗ فِى الْبَحْرِ ۖ عَجَبًا ۝٦٣
قَالَ ذٰلِكَ مَا كُنَّا نَبْغِ ۖ فَارْتَدَّا عَلٰٓى
اٰثَارِهِمَا قَصَصًا ۝٦٤
فَوَجَدَا عَبْدًا مِّنْ عِبَادِنَآ اٰتَيْنٰهُ رَحْمَةً
مِّنْ عِنْدِنَا وَعَلَّمْنٰهُ مِنْ لَّدُنَّا عِلْمًا ۝٦٥
قَالَ لَهٗ مُوْسٰى هَلْ اَتَّبِعُكَ عَلٰٓى
اَنْ تُعَلِّمَنِ مِمَّا عُلِّمْتَ رُشْدًا ۝٦٦
قَالَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ مَعِىَ صَبْرًا ۝٦٧
وَكَيْفَ تَصْبِرُ عَلٰى مَا لَمْ تُحِطْ بِهٖ خُبْرًا ۝٦٨
قَالَ سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ صَابِرًا
وَّلَآ اَعْصِىْ لَكَ اَمْرًا ۝٦٩
قَالَ فَاِنِ اتَّبَعْتَنِىْ فَلَا تَسْـَٔلْنِىْ عَنْ
ع شَىْءٍ حَتّٰٓى اُحْدِثَ لَكَ مِنْهُ ذِكْرًا ۝٧٠
فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰٓى اِذَا رَكِبَا فِى السَّفِيْنَةِ
خَرَقَهَا ؕ قَالَ اَخَرَقْتَهَا لِتُغْرِقَ اَهْلَهَا ۚ
لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا اِمْرًا ۝٧١
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ
مَعِىَ صَبْرًا ۝٧٢
قَالَ لَا تُؤَاخِذْنِىْ بِمَا نَسِيْتُ وَلَا

अब्लु-ग़ मज्म-अल् बह्रैनि औ अम्ज़ि-य हुक़ुबा (60)

फ़-लम्मा ब-लग़ा मज्म-अ बैनिहिमा नसिया हूतहुमा फ़त्त-ख़-ज़ सबीलहू फ़िल्बह्रि स-रबा (61)

फ़-लम्मा जा-वज़ा क़ा-ल लि-फ़ताहु आतिना ग़दा-अना, ल-क़द् लक़ीना मिन् स-फ़रिना हाज़ा न-सबा (62)

क़ा-ल अ-रऐ-त इज़् अवैना इलस्सख़्रति फ़-इन्नी नसीतुल्-हू-त व मा अन्सानीहु इल्लश्शैतानु अन् अज़्कु-रहु वत्त-ख़-ज़ सबी-लहू फ़िल्बह्रि अ़-जबा (63)

क़ा-ल ज़ालि-क मा कुन्ना नब्ग़ि फ़र्तद्दा अ़ला आसारिहिमा क़-ससा (64)

फ़-व-जदा अ़ब्दम्-मिन् अ़िबादिना आतैनाहु रह्म-तम् मिन् अ़िन्दिना व अ़ल्लम्नाहु मिल्लदुन्ना अ़िल्मा (65)

क़ा-ल लहू मूसा हल् अत्तबिअु-क अ़ला अन् तुअ़ल्लि-मनि मिम्मा अुल्लिम्-त रूश्दा (66)

क़ा-ल इन्न-क लन् तस्तती-अ़ मअ़ि-य सब्रा (67)

व कै-फ़ तस्बिरू अ़ला मा लम् तुहित् बिही ख़ुब्रा (68)

क़ा-ल स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु साबिरंव्-व ला अअ्सी ल-क अम्रा (69)

क़ा-ल फ़-इनित्त-बअ्तनी फ़ला तस्अल्नी अ़न् शैइन् हत्ता उह्दि-स ल-क मिन्हु ज़िक्रा (70) ●

फ़न्त-लक़ा, हत्ता इज़ा रकिबा फ़िस्सफ़ी-नति ख़-र-क़हा, क़ा-ल अ-ख़रक़्तहा लितुग़्रि-क़ अह्लहा ल-क़द् जिअ्-त शैअन् इम्रा (71)

क़ा-ल अलम् अक़ुल् इन्न-क लन् तस्तती-अ़ मअ़ि-य सब्रा (72)

क़ा-ल ला तुआख़िज़्नी बिमा नसीतु व ला

ख़ादिम से कहा, "जब तक कि मैं दो दरियाओं के संगम तक न पहुंच जाऊं हटने का नहीं, ख़्वाह मैं यूं ही ज़माना-ए-दराज़ तक चलता ही रहूं"।

61. फिर जब वो दोनों संगम पर पहुंचे, तो वो अपनी मछली से ग़ाफ़िल हो गए, और उसने दरिया में सुरंग बनाते हुए अपनी राह ली।

62. फिर जब वो वहां से आगे बढ़ गए तो अपने ख़ादिम से उसने कहा, "हमारा नाश्ता हमें लाओ, अपने इस सफ़र में तो हमें सख़्त तकान पहुंची है"।

63. उसने कहा, "ज़रा देखिए तो सही, जब हम उस चट्टान के पास ठहरे थे तो मैं मछली को भूल ही गया — और शैतान ही ने उसको याद रखने से मुझे ग़ाफ़िल कर दिया — और उसने दरिया में अजीब तरह से अपनी राह ली"।

64. कहा, "यही तो है जिसे हम तलाश कर रहे थे!" फिर दोनों अपने नक़्श-ए-क़दम देखते हुए वापस हुए।

65. फिर उन्होंने हमारे बन्दों में से एक बन्दे को पाया जिसे हमने अपनी ख़ास रहमत से नवाज़ा था, और जिसे अपने पास से इल्म अता किया था।

66. मूसा ने उससे कहा, "क्या मैं आपके पीछे चलूं ताकि आप मुझे उस इल्म व दानिश की तालीम दें, जो आपको सिखाई गई है?"

67. उसने कहा "तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे।

68. और जो चीज़ तुम्हारे दाइरा-ए-इल्म से बाहर हो उसपर तुम सब्र कर भी कैसे सकते हो?"

69. कहा, "अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे साबिर पाएंगे और मैं किसी मुआमले में भी आपकी नाफ़रमानी नहीं करूंगा"।

70. उसने कहा, "अच्छा अगर तुम मेरे साथ हो लेते हो तो मुझसे किसी चीज़ के बारे में न पूछना यहां तक कि मैं ख़ुद ही तुमसे उसका ज़िक्र करूंगा"।

71. आख़िरकार दोनों चले यहां तक कि जब कश्ती में सवार हुए तो उसने उसमें शिगाफ़ डाल दिया, कहा "क्या आपने उसमें शिगाफ़ डाल दिया कि उसके सवारों को डुबो दें? आपने तो एक अजीब हरकत कर डाली"।

72. उसने कहा, "क्या मैंने कहा नहीं था कि तुम मेरे साथ सब्र न कर सकोगे?"

73. कहा, "जो भूल-चूक मुझसे हो

गई उसपर मुझे न पकड़िए और मेरे मुआमले में मुझे ज़रा तंगी में मुबतला न कीजिए"।

74. फिर वो दोनों चले; यहां तक कि जब वो एक लड़के से मिले, तो उसने उसे क़त्ल कर दिया, कहा, "क्या आपने एक अच्छी-भली जान को क़त्ल कर दिया, बग़ैर इसके कि मक़सूद किसी के क़त्ल का बदला लेना हो? यह तो बहुत ही बुरा आपने किया"।

75. उसने कहा, "क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि तुम मेरे साथ कभी सब्र न कर सकोगे?"

76. कहा, "इसके बाद अगर मैं आपसे कुछ पूछूं, तो आप मुझे साथ न रखें; अब तो आप मेरी जानिब से हद-ए-उज़्र को पहुंच गए हैं"।

77. फिर वो दोनों चले; यहां तक कि एक बस्ती के लोगों के पास गए और उनसे खाना मांगा, लेकिन उन्होंने उनकी ज़ियाफ़त से इनकार कर दिया। फिर वहां उन्हें एक दीवार मिली जो गिरा चाहती थी, तो उसने उसे क़ायम कर दिया। कहा, "अगर आप चाहते, तो इसपर कुछ उजरत ठहरा लेते"।

78. उसने कहा, "यह मेरे और तुम्हारे दरमियान जुदाई का मौक़ा है। अब मैं तुमको उसकी हक़ीक़त बताए दे रहा हूं जिसपर तुम सब्र न कर सके।

79. वह जो कश्ती थी, वह चन्द ग़रीबों की थी, जो दरिया में काम करते थे; तो मैंने चाहा कि उसे ऐबदार कर दूं, क्योंकि आगे उनके परे एक बादशाह था जो हर कश्ती को जबरदस्ती छीन लेता था।

80. और रहा वह लड़का, तो उसके वालिदैन मोमिन थे; हमें अंदेशा हुआ कि वह सरकशी और कुफ़्र से उन पर तअद्दी (जुल्म) करेगा;

81. इसलिए हमने चाहा कि उनका रब उन्हें इसके बदले दूसरी औलाद दे जो नेक नफ़्सी और सलाहियत में उससे बेहतर हो और रहम व दर्दमन्दी भी जिससे ज़्यादा मुतवक़्क़े हो।

82. और रही यह दीवार, तो यह दो यतीम लड़कों की है, जो इस शहर में रहते हैं, और इसके नीचे उनका ख़ज़ाना मौजूद है। और उनका बाप नेक था; इसलिए तुम्हारे रब ने चाहा

तुर्हिक़्नी मिन् अम्री अुस्रा (73)

फ़न्त-लक़ा, हत्ता इज़ा लक़िया ग़ुलामन् फ़-क़-त-लहू का-ल अ-क़तल्-त नफ़्सन् ज़किय्य-तम् बिग़ैरि नफ़्सिन्, ल-क़द् जिअ्-त शैअन् नुक्रा (74)

क़ा-ल अलम् अक़ुल्-ल-क इन्न-क लन् तस्तती-अ मअि-य सब्रा (75)

क़ा-ल इन् सअल्तु-क अ़न् शैइम् बअ्-दहा फ़ला तुसाहिब्नी क़द् बलग़्-त मिल्लदुन्नी अुज़्रा (76)

फ़न्त-लक़ा, हत्ता इज़ा अ-तया अह्-ल क़र्-यति-निस्तत्-अ़मा अह्लहा फ़-अबौ अंय्युज़य्यिफ़ूहुमा फ़-व-जदा फ़ीहा जिदारंय्युरीदु अंय्यन्क़ज़्-ज़ फ़-अक़ामहू, क़ा-ल लौ शिअ्-त लत्त-ख़ज़्-त अ़लैहि अज्रा (77)

क़ा-ल हाज़ा फ़िराक़ु बैनी व बैनि-क स-उनब्बिउ-क बितअ्वीलि मा लम् तस्ततिअ् अ़लैहि सब्रा (78)

अम्मस्सफ़ी-नतु फ़-कानत् लि-मसाकी-न यअ्मलू-न फ़िल्बह्रि फ़-अरत्तु अन् अ़ीबहा व का-न वरा-अहुम् मलिकुंय्यअ्ख़ुज़ु कुल्-ल सफ़ी-नतिन् ग़स्बा (79)

व अम्मल्-ग़ुलामु फ़का-न अ-बवाहु मुअ्मिनैनि फ़-ख़शीना अंय्युर्हि-क़हुमा तुग़्यानंव्-व कुफ़्रा (80)

फ़-अरद्ना अंय्युब्दि लहुमा रब्बुहुमा ख़ैरम्-मिन्हु ज़कातंव्-व अक़्र-ब रुह्मा (81)

व अम्मल्-जिदारु फ़का-न लिग़ुलामैनि यतीमैनि फ़िल्-मदीनति व का-न तह्तहू कन्ज़ुल्-लहुमा व का-न अबूहुमा सालिहन् फ़-अरा-द रब्बु-क

تُرْهِقْنِيْ مِنْ اَمْرِيْ عُسْرًا ۝٧٣
فَانْطَلَقَا حَتّٰۤى اِذَا لَقِيَا غُلٰمًا فَقَتَلَهٗ ۙ
قَالَ اَقَتَلْتَ نَفْسًا زَكِيَّةً ۢ بِغَيْرِ نَفْسٍ ۭ
لَقَدْ جِئْتَ شَيْـًٔا نُّكْرًا ۝٧٤
الجزء السادس عشر (١٦)
قَالَ اَلَمْ اَقُلْ لَّكَ اِنَّكَ لَنْ تَسْتَطِيْعَ
مَعِيَ صَبْرًا ۝٧٥
قَالَ اِنْ سَاَلْتُكَ عَنْ شَيْءٍ ۢ بَعْدَهَا
فَلَا تُصٰحِبْنِيْ ۚ قَدْ بَلَغْتَ مِنْ لَّدُنِّيْ
عُذْرًا ۝٧٦
فَانْطَلَقَا ۫ حَتّٰۤى اِذَاۤ اَتَيَاۤ اَهْلَ قَرْيَةِ
ۨاسْتَطْعَمَاۤ اَهْلَهَا فَاَبَوْا اَنْ يُّضَيِّفُوْهُمَا
فَوَجَدَا فِيْهَا جِدَارًا يُّرِيْدُ اَنْ يَّنْقَضَّ
فَاَقَامَهٗ ۭ قَالَ لَوْ شِئْتَ لَتَّخَذْتَ
عَلَيْهِ اَجْرًا ۝٧٧
قَالَ هٰذَا فِرَاقُ بَيْنِيْ وَبَيْنِكَ ۚ سَاُنَبِّئُكَ
بِتَاْوِيْلِ مَا لَمْ تَسْتَطِعْ عَّلَيْهِ صَبْرًا ۝٧٨
اَمَّا السَّفِيْنَةُ فَكَانَتْ لِمَسٰكِيْنَ يَعْمَلُوْنَ
فِي الْبَحْرِ فَاَرَدْتُّ اَنْ اَعِيْبَهَا وَكَانَ
وَرَاۗءَهُمْ مَّلِكٌ يَّاْخُذُ كُلَّ سَفِيْنَةٍ
غَصْبًا ۝٧٩
وَاَمَّا الْغُلٰمُ فَكَانَ اَبَوٰهُ مُؤْمِنَيْنِ
فَخَشِيْنَاۤ اَنْ يُّرْهِقَهُمَا طُغْيَانًا وَّكُفْرًا ۝٨٠
فَاَرَدْنَاۤ اَنْ يُّبْدِلَهُمَا رَبُّهُمَا خَيْرًا مِّنْهُ
زَكٰوةً وَّاَقْرَبَ رُحْمًا ۝٨١
وَاَمَّا الْجِدَارُ فَكَانَ لِغُلٰمَيْنِ يَتِيْمَيْنِ
فِي الْمَدِيْنَةِ وَكَانَ تَحْتَهٗ كَنْزٌ لَّهُمَا
وَكَانَ اَبُوْهُمَا صَالِحًا ۚ فَاَرَادَ رَبُّكَ

कि वो जवान हो जाएं और अपना ख़ज़ाना निकाल लें। यह तुम्हारे रब की रहमत की वजह से हुआ। मैंने तो अपने इख़्तियार से कुछ नहीं किया। यह है हक़ीक़त उसकी जिसपर तुम सब्र न कर सके"।

83. वो तुमसे ज़ुलक़रनैन के बारे में पूछते हैं। कह दो: "मैं उसका कुछ हाल तुम्हें सुनाता हूं"।

84. हमने उसे ज़मीन में इक़्तिदार दिया था, और उसे हर तरह के असबाब व वसाइल बख़्शे थे;

85. चुनांचे उसने एक मुहिम की तैयारी की।

86. यहां तक कि जब वह ग़ुरूब-ए-आफ़ताब की जिहत में एक जगह पहुंचा, तो उसे काले पानी की एक झील में ग़ुरूब होता पाया, और उसके पास उसे एक क़ौम मिली। हमने कहा; "ऐ ज़ुलक़रनैन, तुझे इख़्तियार है ख़्वाह तकलीफ़ पहुंचाए और ख़्वाह उनके साथ अच्छा रवैया इख़्तियार करे"।

87. उसने कहा, "जो कोई ज़ुल्म करेगा उसे तो हम सज़ा देंगे, फिर वह अपने रब की तरफ़ पलटेगा और वह उसे सख़्त अज़ाब देगा।

88. लेकिन जो कोई ईमान लाया, और उसने नेक अमल किया, उसके लिए तो अच्छा सिला है, और हम उसे अपना आसान व नर्म हुक्म देंगे"।

89. फिर उसने एक और मुहिम की तैयारी की।

90. यहां तक कि जब वह तुलू-ए-आफ़ताब की जिहत में एक जगह पहुंचा, तो उसने उसे एक ऐसी क़ौम पर तुलूअ होते पाया जिनके लिए हमने सूरज के बिलमुक़ाबिल कोई पर्दा नहीं रखा था।

91. ऐसा ही हमने किया था; और जो कुछ उसके पास था उसकी हमें पूरी ख़बर थी।

92. उसने फिर एक मुहिम की तैयारी की।

93. यहां तक कि जब वह दो पहाड़ों के दरमियान पहुंचा, तो उसे उनके पास कुछ लोग मिले जो ऐसा मालूम नहीं होता था कि कोई बात समझ पाते हों।

94. उन्होंने कहा, "ऐ ज़ुलक़रनैन, याजूज और माजूज इस सर ज़मीन पर फ़साद मचाते हैं, क्या हम तुम्हें कोई टैक्स इस काम के लिए दें कि तुम

अंय्यब्लुग़ा अशुद्दहुमा व यस्तख़्रिजा कन्ज़हुमा रह्मतम् मिर्रब्बि-क व मा फ़अ़ल्तुहू अ़न् अम्री, ज़ालि-क तअ्वीलु मा लम् तस्तिअ् अ़लैहि सब्रा (82) ●

व यस्अलून-क अ़न् ज़िल्क़र्नैनि, क़ुल् स-अत्लू अ़लैकुम् मिन्हु ज़िक्रा (83)

इन्ना मक्कन्ना लहू फ़िल्अर्ज़ि व आतैनाहु मिन् कुल्लि शैइन् स-बबा (84)

फ़-अत्ब-अ़ स-बबा (85)

हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ मग़्रिबश्शम्सि व-ज-दहा तग़्रुबु फ़ी अ़ैनिन् हमि-अतिंव्-व व-ज-द अ़िन्दहा क़ौमन्, क़ुल्ना या ज़ल्क़र्नैनि इम्मा अन् तुअ़ज़्ज़ि-ब व इम्मा अन् तत्तख़ि-ज़ फ़ीहिम् हुस्ना (86)

क़ा-ल अम्मा मन् ज़-ल-म फ़सौ-फ़ नुअ़ज़्ज़िबुहू सुम्-म युरद्दु इला रब्बिही फ़युअ़ज़्ज़िबुहू अ़ज़ाबन् नुक्रा (87)

व अम्मा मन् आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-लहू जज़ा-अ निल्हुस्ना व स-नक़ूलु लहू मिन् अम्रिना युस्रा (88)

सुम्-म अत्ब-अ़ स-बबा (89)

हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ मत्लिअ़श्शम्सि व-ज-दहा तत्लुअ़ु अ़ला क़ौमिल्-लम् नज्अ़ल्-लहुम् मिन् दूनिहा सित्रा (90)

कज़ालि-क व क़द् अ-हत्ना बिमा लदैहि ख़ुब्रा (91)

सुम्-म अत्ब-अ़ स-बबा (92)

हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ बैनस्सद्दैनि व-ज-द मिन् दूनिहिमा क़ौमल्-ला यकादू-न यफ़्क़हू-न क़ौला (93)

क़ालू या ज़ल्क़र्नैनि इन्-न यअ्जू-ज व मअ्जू-ज मुफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-हल् नज्अ़लु ल-क ख़र्जन् अ़ला अन् तज्अ़-ल

أَن يَبْلُغَا أَشُدَّهُمَا وَيَسْتَخْرِجَا كَنزَهُمَا
رَحْمَةً مِّن رَّبِّكَ ۚ وَمَا فَعَلْتُهُ عَنْ أَمْرِي ۚ
ذَٰلِكَ تَأْوِيلُ مَا لَمْ تَسْطِع عَّلَيْهِ صَبْرًا ﴿٨٢﴾
وَيَسْأَلُونَكَ عَن ذِي الْقَرْنَيْنِ ۖ قُلْ
سَأَتْلُو عَلَيْكُم مِّنْهُ ذِكْرًا ﴿٨٣﴾
إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِن
كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا ﴿٨٤﴾
فَأَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٥﴾
حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَغْرِبَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا
تَغْرُبُ فِي عَيْنٍ حَمِئَةٍ وَوَجَدَ عِندَهَا
قَوْمًا ۗ قُلْنَا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِمَّا أَن
تُعَذِّبَ وَإِمَّا أَن تَتَّخِذَ فِيهِمْ حُسْنًا ﴿٨٦﴾
قَالَ أَمَّا مَن ظَلَمَ فَسَوْفَ نُعَذِّبُهُ
ثُمَّ يُرَدُّ إِلَىٰ رَبِّهِ فَيُعَذِّبُهُ عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨٧﴾
وَأَمَّا مَنْ آمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَلَهُ جَزَاءً
الْحُسْنَىٰ ۖ وَسَنَقُولُ لَهُ مِنْ أَمْرِنَا يُسْرًا ﴿٨٨﴾
ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٨٩﴾
حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا
تَطْلُعُ عَلَىٰ قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَل لَّهُم مِّن
دُونِهَا سِتْرًا ﴿٩٠﴾
كَذَٰلِكَ وَقَدْ أَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩١﴾
ثُمَّ أَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٢﴾
حَتَّىٰ إِذَا بَلَغَ بَيْنَ السَّدَّيْنِ وَجَدَ مِن
دُونِهِمَا قَوْمًا لَّا يَكَادُونَ يَفْقَهُونَ قَوْلًا ﴿٩٣﴾
قَالُوا يَا ذَا الْقَرْنَيْنِ إِنَّ يَأْجُوجَ
وَمَأْجُوجَ مُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ فَهَلْ
نَجْعَلُ لَكَ خَرْجًا عَلَىٰ أَن تَجْعَلَ

हमारे और उनके दरमियान एक बन्द तामीर कर दो?"

95. उसने कहा, "मेरे रब ने जो कुछ मुझे इख़्तियार दे रखा है वह कहीं बेहतर है; तुम तो बस ताक़त से मेरी मदद करो, मैं तुम्हारे और उनके दरमियान एक मज़बूत दीवार बनाए देता हूं।

96. मुझे लोहे के टुकड़े ला दो," यहां तक कि जब दोनों पहाड़ों के दरमियानी ख़ला को पाटकर बराबर कर दिया, तो कहा कि "धौंको!" यहां तक कि जब उसे आग कर दिया, तो कहाः "मुझे पिघला हुआ तांबा ला दो ताकि मैं उसपर उंडेल दूं"।

97. पस न तो वो उसपर चढ़कर आ सकते थे और न वो उसमें नक़्ब ही लगा सकते थे।

98. उसने कहा, "यह मेरे रब की रहमत है, मगर जब मेरे रब के वादे का वक़्त आ जाएगा, तो वह उसे ढाकर बराबर कर देगा; और मेरे रब का वादा सच्चा है"।

99. उस दिन हम उन्हें छोड़ देंगे कि वो एक-दूसरे से मौजों की तरह टकराएंगे, और सूर फूंका जाएगा, फिर हम उन सबको एक साथ इकट्ठा कर लेंगे।

100. और उस दिन जहन्नम को कुफ़्र व इनकार करनेवालों के सामने कर देंगे।

101. जिनकी आंखें मेरे ज़िक्र की तरफ़ से पर्दे में थीं और जो कुछ सुन भी नहीं सकते थे।

102. तो क्या कुफ़्र की रविश इख़्तियार करने वाले लोग इस ख़्याल में हैं कि मुझे छोड़कर मेरे बन्दों को अपना हिमायती बना लें? हमने ऐसे काफ़िरों की ज़ियाफ़त के लिए जहन्नम तैयार कर रखी है।

103. कहो, "क्या हम तुम्हें उन लोगों की ख़बर दें जो अपने आमाल के लिहाज़ से सब से बढ़कर ख़सारे में हैं?

104. वो जिनकी सारी कोशिश दुनिया की ज़िन्दगी में अकारत गई, और वो यही समझते हैं कि वो बहुत

बैनना व बैनहुम् सद्दा (94)

क़ा-ल मा मक्कन्नी फ़ीहि रब्बी ख़ैरुन् फ़-अईनूनी बिक़ुव्वतिन् अज्अल् बैनकुम् व बैनहुम् रद्मा (95)

आतूनी ज़ु-बरल्-हदीदि, हत्ता इज़ा सावा बैनस्स-दफ़ैनि क़ालन्फ़ुख़ू हत्ता इज़ा ज-अ-लहू नारन् क़ा-ल आतूनी उफ़्रिग् अलैहि क़ित्रा (96)

फ़-मस्ताऊ अंय्यज़्हरूहु व मस्तताऊ लहू नक़्बा (97)

क़ा-ल हाज़ा रह्मतुम्-मिर्रब्बी फ़-इज़ा-जा-अ वअ्दु रब्बी ज-अ-लहू दक्का-अ व का-न वअ्दु रब्बी हक़्क़ा (98)

व तरक्ना बअ्-ज़हुम् यौमइज़िंय्यमूजु फ़ी बअ्ज़िंव्-व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-जमअ्नाहुम् जम्आ (99)

व अ़रज़्ना जहन्न-म यौमइज़िल्-लिल्काफ़िरी-न अ़र्ज़ा (100)

अल्लज़ी-न कानत् अअ्युनुहुम् फ़ी ग़िताइन् अ़न् ज़िक्री व कानू ला यस्ततीऊ-न सम्आ (101) ●

अ-फ़-हसिबल्लज़ी-न क-फ़रू अंय्यत्तख़िज़ू अ़िबादी मिन् दूनी औलिया-अ, इन्ना अअ्तद्ना जहन्न-म लिल्काफ़िरी-न नुज़ुला (102)

क़ुल् हल् नुनब्बिउकुम् बिल्-अख़्सरी-न अअ्माला (103)

अल्लज़ी-न ज़ल्-ल सअ्युहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या व हुम् यह्सबू-न अन्नहुम् युह्सिनू-न

بَيْنَنَا وَبَيْنَهُمْ سَدًّا ۝٩٤
قَالَ مَا مَكَّنِّيْ فِيْهِ رَبِّيْ خَيْرٌ
فَاَعِيْنُوْنِيْ بِقُوَّةٍ اَجْعَلْ بَيْنَكُمْ
وَبَيْنَهُمْ رَدْمًا ۝٩٥
اٰتُوْنِيْ زُبَرَ الْحَدِيْدِ ؕ حَتّٰۤى اِذَا سَاوٰى
بَيْنَ الصَّدَفَيْنِ قَالَ انْفُخُوْا ؕ حَتّٰۤى
اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوْنِيْۤ اُفْرِغْ
عَلَيْهِ قِطْرًا ۝٩٦
فَمَا اسْطَاعُوْۤا اَنْ يَّظْهَرُوْهُ وَمَا
اسْتَطَاعُوْا لَهٗ نَقْبًا ۝٩٧
قَالَ هٰذَا رَحْمَةٌ مِّنْ رَّبِّيْ ۚ فَاِذَا جَآءَ
وَعْدُ رَبِّيْ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَكَانَ وَعْدُ
رَبِّيْ حَقًّا ۝٩٨
وَتَرَكْنَا بَعْضَهُمْ يَوْمَئِذٍ يَّمُوْجُ فِيْ
بَعْضٍ وَّنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ
جَمْعًا ۝٩٩
وَّعَرَضْنَا جَهَنَّمَ يَوْمَئِذٍ لِّلْكٰفِرِيْنَ
عَرْضَا ۝١٠٠
اِلَّذِيْنَ كَانَتْ اَعْيُنُهُمْ فِيْ غِطَآءٍ
عَنْ ذِكْرِيْ وَكَانُوْا لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ
ۧ سَمْعًا ۝١٠١
اَفَحَسِبَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَنْ يَّتَّخِذُوْا
عِبَادِيْ مِنْ دُوْنِيْۤ اَوْلِيَآءَ ؕ اِنَّاۤ
اَعْتَدْنَا جَهَنَّمَ لِلْكٰفِرِيْنَ نُزُلًا ۝١٠٢
قُلْ هَلْ نُنَبِّئُكُمْ بِالْاَخْسَرِيْنَ اَعْمَالًا ۝١٠٣
اَلَّذِيْنَ ضَلَّ سَعْيُهُمْ فِي الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَهُمْ يَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ يُحْسِنُوْنَ

अच्छा काम कर रहे हैं।

105. यही वो लोग हैं जिन्होंने अपने रब की आयात का और उसकी मुलाक़ात का इनकार किया; इसलिए उनके आमाल अकारत हो गए, हम उन्हें क़ियामत के दिन कुछ भी वज़न न देंगे।

106. उनका बदला वही जहन्नम है इसलिए कि उन्होंने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की और मेरी आयतों और मेरे रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया।

107. यक़ीनन जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए उनकी मेज़बानी के लिए फ़िरदौस के बाग़ होंगे।

108. जिनमें वो हमेशा रहेंगे, वहां से हटना न चाहेंगे।

109. कहो,"अगर समुंदर मेरे रब के कलिमात को लिखने के लिए रौशनाई बन जाता तो इससे पहले कि मेरे रब के कलिमात तमाम होते समुंदर ही ख़त्म हो जाता, अगरचे हम इसकी तरह एक और भी समुंदर इसके साथ ला मिलाते"।

110. कह दो: "मैं तो महज़ तुम्ही जैसा एक इनसान हूं। मेरी तरफ़ वही की जाती है कि तुम्हारा माबूद बस अकेला माबूद है। पस जो कोई अपने रब की मुलाक़ात की उम्मीद रखता हो उसे चाहिए कि नेक आमाल इख़्तियार करे, और अपने रब की बन्दगी में किसी को शरीक न करे।"

सूरह मरयम मक्की

(आयतें 98, रुकूआत 6)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. काफ़-हा-या-ऐन-स्वाद।

2. ज़िक्र है तेरे रब की रहमत का जो उसने अपने बन्दे ज़करीया पर फ़रमाई;

3. जबकि उसने अपने रब को चुपके-चुपके पुकारा;

4. उसने कहा, "मेरे रब, मेरी हड्डियां कमज़ोर हो गई और सर बुढ़ापे से भड़क उठा। और मेरे रब तुझे पुकार कर मैं कभी महरूम नहीं रहा।

5. मुझे अपने पीछे अपने भाई-बन्दों की तरफ़ से अन्देशा है; और मेरी बीवी बांझ है। पस तू मुझे अपने पास से एक वली व अज़ीज़ अता कर,

सुन्आ (104)

उलाइ-कल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयाति रब्बिहिम् व लिक़ाइही फ़-हबितत् अअ्मालुहुम् फ़ला नुक़ीमु लहुम् यौमल्-क़ियामति वज़्ना (105)

ज़ालि-क जज़ाउहुम् जहन्नमु बिमा क-फ़रू वत्त-ख़ज़ू आयाती व रूसुली हुज़ुवा (106)

इन्नल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्-सालिहाति कानत् लहुम् जन्नातुल्-फ़िर्दौसि नुज़ुला (107)

ख़ालिदी-न फ़ीहा ला यब्ग़ू-न अ़न्हा हि-वला (108)

क़ुल् लौ कानल्-बह्रू मिदादल् लि-कलिमाति रब्बी ल-नफ़िदल्-बह्रू क़ब्-ल अन् तन्फ़-द कलिमातु रब्बी व लौ जिअ्ना बिमिस्लिही म-ददा (109)

क़ुल् इन्नमा अ-न ब-शरुम्-मिस्लुकुम् यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्-वाहिदुन् फ़-मन का-न यर्जू लिक़ा-अ रब्बिही फ़ल्यअ्मल् अ़-मलन् सालिहंव्-व ला युश्रिक् बिअिबादति रब्बिही अ-हदा (110)●

19 सूरतु मरय-म

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3986 अक्षर, 968 शब्द, 98 आयतें और 6 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

काफ़्-हा-या-ऐन्-सॉद् (1)

ज़िक्रू रह्मति रब्बि-क अ़ब्दहू ज़-करिय्या (2)

इज़् नादा रब्बहू निदाअन् ख़फ़िय्या (3)

क़ा-ल रब्बि इन्नी व-हनल्-अ़ज़्मु मिन्नी वश्त-अ़लर्रअ्सु शैबंव्-व लम् अकुम्-बिदुआइ-क रब्बि शक़िय्या (4)

व इन्नी ख़िफ़्तुल्-मवालि-य मिंव्वराई व कानतिम्र-अती आ़क़िरन् फ़-हब्-ली मिल्लदुन्-क वलिय्या (5)

صُنْعًا ﴿١٠٤﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ
وَلِقَآئِهٖ فَحَبِطَتْ اَعْمَالُهُمْ فَلَا نُقِيْمُ
لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَزْنًا ﴿١٠٥﴾
ذٰلِكَ جَزَآؤُهُمْ جَهَنَّمُ بِمَا كَفَرُوْا
وَاتَّخَذُوْٓا اٰيٰتِيْ وَرُسُلِيْ هُزُوًا ﴿١٠٦﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
كَانَتْ لَهُمْ جَنّٰتُ الْفِرْدَوْسِ نُزُلًا ﴿١٠٧﴾
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا لَا يَبْغُوْنَ عَنْهَا حِوَلًا ﴿١٠٨﴾
قُلْ لَّوْ كَانَ الْبَحْرُ مِدَادًا لِّكَلِمٰتِ
رَبِّيْ لَنَفِدَ الْبَحْرُ قَبْلَ اَنْ تَنْفَدَ كَلِمٰتُ
رَبِّيْ وَلَوْ جِئْنَا بِمِثْلِهٖ مَدَدًا ﴿١٠٩﴾
قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ
اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ ۚ فَمَنْ كَانَ
يَرْجُوْا لِقَآءَ رَبِّهٖ فَلْيَعْمَلْ عَمَلًا صَالِحًا
ع وَّلَا يُشْرِكْ بِعِبَادَةِ رَبِّهٖٓ اَحَدًا ﴿١١٠﴾

سُوْرَةُ مَرْيَمَ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٩٨ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

كٓهٰيٰعٓصٓ ﴿١﴾ ذِكْرُ رَحْمَتِ رَبِّكَ
عَبْدَهٗ زَكَرِيَّا ﴿٢﴾
اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ نِدَآءً خَفِيًّا ﴿٣﴾
قَالَ رَبِّ اِنِّيْ وَهَنَ الْعَظْمُ مِنِّيْ
وَاشْتَعَلَ الرَّاْسُ شَيْبًا وَّلَمْ اَكُنْ
بِدُعَآئِكَ رَبِّ شَقِيًّا ﴿٤﴾
وَاِنِّيْ خِفْتُ الْمَوَالِيَ مِنْ وَّرَآءِيْ
وَكَانَتِ امْرَاَتِيْ عَاقِرًا فَهَبْ لِيْ
مِنْ لَّدُنْكَ وَلِيًّا ﴿٥﴾

6. जो मेरा भी वारिस हो और ख़ानदाने याक़ूब का भी वारिस हो; और उसे मेरे रब! पसन्दीदा बना"।

7. "ऐ ज़करीया, हम तुझे एक लड़के की ख़ुशख़बरी देते हैं, उसका नाम यह्या होगा। इससे पहले हमने किसी को उसका कोई नज़ीर (मिस्ल) नहीं बनाया"।

8. उसने कहा, "मेरे रब, मेरे लड़का कहां से होगा, जबकि मेरी बीवी बांझ है, और मैं बुढ़ापे की इंतिहा को पहुंच चुका हूं?"

9. कहा, "ऐसा ही होगा; तेरे रब ने कहा है कि यह मेरे लिए आसान है, इससे पहले मैं तुझे पैदा कर चुका हूं जबकि तू कुछ भी न था"।

10. उसने कहा, "मेरे रब, मेरे लिए कोई हुक्म तजवीज़ फ़रमा"। फ़रमाया, "तेरे लिए हुक्म यह है कि तू भला-चंगा रह कर भी तीन रात लोगों से बात न करे"।

11. पस वह मेहराब से निकलकर अपनी क़ौम के पास आया, और उनसे इशारों में कहा कि "सुबह व शाम तसबीह करते रहो"।

12. "ऐ यह्या, किताब को मज़बूत थाम ले"। हमने उसे बचपन ही में क़ुव्वत-ए-फ़ैसला अता की,

13. और अपने पास से सोज़ व गुदाज़, शौक़ और उमदगी भी। और वह बड़ा डर रखनेवाला था,

14. और अपने वालिदैन का हक़ शनास था, वह सरकश नाफ़रमान न था।

15. "सलाम उसपर जिस रोज़ कि वह पैदा हुआ, और जिस रोज़ वह मरे और जिस दिन कि वह ज़िन्दा कर के उठाया जाए!"

16. और इस किताब में मरयम का ज़िक्र करो जबकि वह अपने घर वालों से अलग होकर मशरिक़ी मक़ाम पर एक जगह चली गई,

17. फिर उसने उनसे पर्दा कर लिया; तब हमने उसके पास अपनी रूह को भेजा और वह उसके सामने एक कामिल इन्सान की शक्ल में नमूदार हुआ।

18. वह बोल उठी "मैं तुझसे बचने के लिए रहमान की पनाह मांगती हूं, तू अगर कोई परहेज़गार है तो (यहां से हट जाएगा)।"

यरिसुनी व यरिसु मिन् आलि यअ्कू-ब, वज्अल्हु रब्बि रज़िय्या (6)

या ज़-करिय्या इन्ना नुबश्शिरू-क बिग़ुलामि-निस्मुहू यह्या लम् नज्अल्-लहू मिन् क़ब्लु समिय्या (7)

क़ा-ल रब्बि अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव्-व कानतिम्र-अती आक़िरंव्-व क़द् बलग़्तु मिनल्-कि-बरि अ़ितिय्या (8)

क़ा-ल कज़ालि-क क़ा-ल रब्बु-क हु-व अ़लय्-य हय्यिनुंव्-व क़द् ख़लक़्तु-क मिन् क़ब्लु व लम् तकु शैआ (9)

क़ा-ल रब्बिज्-अल्-ली आ-यतन्, क़ा-ल आ-यतु-क अल्ला तुकल्लिमन्ना-स सला-स लयालिन् सविय्या (10)

फ़-ख़-र-ज अ़ला क़ौमिही मिनल्-मिह्राबि फ़औहा इलैहिम् अन् सब्बिहू बुक्र-तंव्-व अ़शिय्या (11)

या यह्या ख़ुज़िल्-किता-ब बिक़ुव्वतिन्, व आतैनाहुल्-हुक्-म सबिय्या (12)

व हनानम्-मिल्लदुन्ना व ज़कातन्, व का-न तक़िय्या (13)

व बर्रम्-बिवालिदैहि व लम् यकुन् जब्बारन् अ़सिय्या (14)

व सलामुन् अ़लैहि यौ-म वुलि-द व यौ-म यमूतु व यौ-म युब्असु हय्या (15) ●

वज़्कुर् फ़िल्किताबि मर्य-म ● *इज़िन्त-बज़त् मिन् अह्लिहा मकानन् शर्क़िय्या* (16)

फ़त्त-ख़ज़त् मिन् दूनिहिम् हिजाबन्, फ़-अर्सल्ना इलैहा रू-हना फ़-तमस्स-ल लहा ब-शरन् सविय्या (17)

क़ालत् इन्नी अअूज़ु बिर्रह्मानि मिन्-क इन् कुन्-त तक़िय्या (18)

يَّرِثُنِيْ وَيَرِثُ مِنْ اٰلِ يَعْقُوْبَ ۗ وَاجْعَلْهُ
رَبِّ رَضِيًّا (٦)
يٰزَكَرِيَّآ اِنَّا نُبَشِّرُكَ بِغُلٰمِ ۣاسْمُهٗ يَحْيٰى ۙ
لَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ مِنْ قَبْلُ سَمِيًّا (٧)
قَالَ رَبِّ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّكَانَتِ
امْرَاَتِيْ عَاقِرًا وَّقَدْ بَلَغْتُ مِنَ الْكِبَرِ
عِتِيًّا (٨)
قَالَ كَذٰلِكَ ۚ قَالَ رَبُّكَ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ
وَّقَدْ خَلَقْتُكَ مِنْ قَبْلُ وَلَمْ تَكُ
شَيْـًٔا (٩)
قَالَ رَبِّ اجْعَلْ لِّيْۤ اٰيَةً ۚ قَالَ اٰيَتُكَ
اَلَّا تُكَلِّمَ النَّاسَ ثَلٰثَ لَيَالٍ سَوِيًّا (١٠)
فَخَرَجَ عَلٰى قَوْمِهٖ مِنَ الْمِحْرَابِ فَاَوْحٰۤى
اِلَيْهِمْ اَنْ سَبِّحُوْا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا (١١)
يٰيَحْيٰى خُذِ الْكِتٰبَ بِقُوَّةٍ ۚ وَاٰتَيْنٰهُ
الْحُكْمَ صَبِيًّا (١٢)
وَّحَنَانًا مِّنْ لَّدُنَّا وَزَكٰوةً ۚ وَكَانَ
تَقِيًّا (١٣) ۙ
وَّبَرًّا بِوَالِدَيْهِ وَلَمْ يَكُنْ جَبَّارًا عَصِيًّا (١٤)
وَسَلٰمٌ عَلَيْهِ يَوْمَ وُلِدَ وَيَوْمَ يَمُوْتُ
وَيَوْمَ يُبْعَثُ حَيًّا (١٥)
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مَرْيَمَ ۘ اِذِ انْتَبَذَتْ
مِنْ اَهْلِهَا مَكَانًا شَرْقِيًّا (١٦) ۙ
فَاتَّخَذَتْ مِنْ دُوْنِهِمْ حِجَابًا ۗ فَاَرْسَلْنَآ
اِلَيْهَا رُوْحَنَا فَتَمَثَّلَ لَهَا بَشَرًا سَوِيًّا (١٧)
قَالَتْ اِنِّيْۤ اَعُوْذُ بِالرَّحْمٰنِ مِنْكَ
اِنْ كُنْتَ تَقِيًّا (١٨)

19. उसने कहा, "मैं तो महज़ तेरे रब का फ़िरिस्तादा हूं ताकि तुझे ख़ैर व सलाह में बढ़ा हुआ लड़का दूं"।

20. वह बोली, "मेरे कहां से लड़का होगा जबकि मुझे किसी आदमी ने छुआ तक नहीं और न मैं कोई बदकार हूं,"

21. उसने कहा, "ऐसा ही होगा तेरे रब ने कहा है कि, 'यह मेरे लिए आसान है,' और (ऐसा इसलिए होगा) ताकि हम उसे लोगों के लिए एक निशानी बनाएं और अपनी तरफ़ से एक रहमत; यह तो एक तय शुदा बात है"।

22. फिर उसे उसका हमल रह गया, और वह उसे लिए हुए एक दूर मक़ाम पर अलग चली गई।

23. बिलआख़िर ज़चगी की तकलीफ़ उसे एक खजूर के तने के पास ले आई। वह कहने लगी, "ऐ काश मैं इससे पहले ही मर जाती, और भूली-बिसरी हो गई होती!"

24. उस वक़्त उसे उस (दरख़्त) के नीचे से पुकारा कि "ग़म न कर; तेरे रब ने तेरे नीचे एक चश्मा जारी कर दिया है।

25. तू खजूर के उस पेड़ के तने को पकड़ कर अपनी तरफ़ हिला, तेरे ऊपर तर व ताज़ा पक्की-पक्की खजूरें टपक पड़ेंगी।

26. पस तू खा, और पी और आंखें ठण्डी कर; फिर अगर तू किसी आदमी को देखे, तो कह देना कि, 'मैंने तो रहमान के लिए रोज़े की नज़्र मानी है, इसलिए मैं आज किसी इनसान से न बोलूंगी,।'

27. फिर वह उस बच्चे को लिए हुए अपनी क़ौम के पास आई; वो बोले, "ऐ मरयम, तूने तो बड़े ही तअज्जुब का काम कर डाला।

28. ऐ हारून की बहन, न तो तेरा बाप ही कोई बुरा आदमी था, और न तेरी मां ही बदकार थी"।

29. तब उसने उसकी तरफ़ इशारा किया; वो कहने लगे, "हम उससे कैसे बात करें जो गहवारे का एक बच्चा है?"

30. उसने कहा, "मैं अल्लाह का बन्दा हूं, उसने मुझे किताब दी, और मुझे नबी बनाया।

का-ल इन्नमा अ-न रसूलु रब्बिकि लि-अ-ह-ब लकि ग़ुलामन् ज़किय्या (19)

कालत् अन्ना यकूनु ली ग़ुलामुंव्-व लम् यम्सस्नी ब-शरुंव्-व लम् अकु बग़िय्या ●(20)

क़ा-ल कज़ालिकि क़ा-ल रब्बुकि हु-व अ़लय्-य हय्यिनुन् व लिनजूअ़-लहू आयतल्-लिन्नासि व रह्म-तम्-मिन्ना व का-न अम्रम्-मक़्ज़िय्या (21)

फ़-ह-मलत्हु फ़न्त-बज़त् बिही मकानन् क़सिय्या (22)

फ़-अजा-अहल्-मख़ाज़ु इला जिज़्अ़िन्-नख़्लति कालत् यालैतनी मित्तु क़ब्-ल हाज़ा व कुन्तु नस्यम्-मन्सिय्या (23)

फ़नादाहा मिन् तह्तिहा अल्ला तह्ज़नी क़द् ज-अ़-ल रब्बुकि तह्तकि सरिय्या (24)

व हुज़्ज़ी इलैकि बिजिज़्अ़िन्-नख़्लति तुसाकित् अ़लैकि रु-तबन् जनिय्या (25)

फ़कुली वश्रबी व क़र्री अ़ैनन् फ़-इम्मा त-रयिन्-न मिनल् ब-शरि अ-हदन् फ़कूली इन्नी नज़र्तु लिर्रह्मानि सौमन् फ़-लन् उकल्लिमल् - यौ-म इन्सिय्या (26)

फ़-अतत् बिही क़ौमहा तह्मिलुहू, क़ालू या मर्यमु ल-क़द् जिअ्ति शैअन् फ़रिय्या (27)

या उख़्-त हारू-न मा का-न अबूकिम्र-अ सौइंव्-व मा कानत् उम्मुकि बग़िय्या (28)

फ़-अशारत् इलैहि, क़ालू कै-फ नुकल्लिमु मन् का-न फ़िल्मह्दि सबिय्या (29)

क़ा-ल इन्नी अ़ब्दुल्लाहि, आतानियल्-किता-ब व ज-अ़-लनी नबिय्या (30)

قَالَ اِنَّمَآ اَنَا رَسُوْلُ رَبِّكِ ۖ لِاَهَبَ لَكِ
غُلٰمًا زَكِيًّا ۝١٩
قَالَتْ اَنّٰى يَكُوْنُ لِيْ غُلٰمٌ وَّلَمْ يَمْسَسْنِيْ
بَشَرٌ وَّلَمْ اَكُ بَغِيًّا ۝٢٠
قَالَ كَذٰلِكِ ۚ قَالَ رَبُّكِ هُوَ عَلَيَّ هَيِّنٌ ۚ
وَلِنَجْعَلَهٗٓ اٰيَةً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَةً مِّنَّا ۚ
وَكَانَ اَمْرًا مَّقْضِيًّا ۝٢١
فَحَمَلَتْهُ فَانْتَبَذَتْ بِهٖ مَكَانًا قَصِيًّا ۝٢٢
فَاَجَآءَهَا الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ ۚ
قَالَتْ يٰلَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَكُنْتُ
نَسْيًا مَّنْسِيًّا ۝٢٣
فَنَادٰىهَا مِنْ تَحْتِهَآ اَلَّا تَحْزَنِيْ قَدْ جَعَلَ
رَبُّكِ تَحْتَكِ سَرِيًّا ۝٢٤
وَهُزِّيْٓ اِلَيْكِ بِجِذْعِ النَّخْلَةِ تُسٰقِطْ
عَلَيْكِ رُطَبًا جَنِيًّا ۝٢٥
فَكُلِيْ وَاشْرَبِيْ وَقَرِّيْ عَيْنًا ۚ فَاِمَّا
تَرَيِنَّ مِنَ الْبَشَرِ اَحَدًا ۙ فَقُوْلِيْٓ اِنِّيْ
نَذَرْتُ لِلرَّحْمٰنِ صَوْمًا فَلَنْ اُكَلِّمَ
الْيَوْمَ اِنْسِيًّا ۝٢٦
فَاَتَتْ بِهٖ قَوْمَهَا تَحْمِلُهٗ ۗ قَالُوْا يٰمَرْيَمُ
لَقَدْ جِئْتِ شَيْئًا فَرِيًّا ۝٢٧
يٰٓاُخْتَ هٰرُوْنَ مَا كَانَ اَبُوْكِ امْرَاَ سَوْءٍ
وَّمَا كَانَتْ اُمُّكِ بَغِيًّا ۝٢٨
فَاَشَارَتْ اِلَيْهِ ۗ قَالُوْا كَيْفَ نُكَلِّمُ مَنْ
كَانَ فِي الْمَهْدِ صَبِيًّا ۝٢٩
قَالَ اِنِّيْ عَبْدُ اللّٰهِ ۗ اٰتٰنِيَ الْكِتٰبَ
وَجَعَلَنِيْ نَبِيًّا ۝٣٠

31. और मुझे बाबरकत किया जहां भी मैं रहूं; और मुझे नमाज़ और ज़कात की ताकीद फ़रमाई जब तक कि मैं ज़िन्दा रहूं,

32. और अपनी मां का हक़ अदा करने वाला बनाया; और उसने मुझे सरकश और बदबख़्त नहीं बनाया।

33. सलाम है मुझ पर जिस दिन कि मैं पैदा हुआ, और जिस दिन कि मैं मरूं, और जिस दिन कि ज़िन्दा करके उठाया जाऊं।"

34. — यह है ईसा इब्ने मरयम, सच्ची और पक्की बात के लिहाज़ से जिसके मुतअल्लिक़ वो शक में पड़े हुए हैं।

35. अल्लाह ऐसा नहीं कि वह किसी को अपना बेटा बनाए। अज़ीम व बरतर है वह! जब वह किसी अमर (मुआमला) का फ़ैसला करता है, तो बस उसे कह देता है कि "हो जा" तो वह हो जाता है।

36. — "और बेशक अल्लाह मेरा रब भी है और तुम्हारा रब भी, पस तुम उसी की बन्दगी करो। यही सीधा रास्ता है"।

37. मगर उनमें कितने ही गिरोहों ने आपस में बाहमी चपक़लिश की वजह से इख़्तिलाफ़ किया; तो जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया उनके लिए एक बड़े दिन की हाज़िरी से बड़ी तबाही है।

38. ख़ूब सुननेवाले और ख़ूब देखनेवाले होंगे जिस दिन वो हमारे सामने आएंगे! मगर आज ये ज़ालिम खुली गुमराही में पड़े हुए हैं।

39. उन्हें हसरत के दिन से डराओ, जबकि मुआमले का फ़ैसला कर दिया जाएगा, और उनका हाल यह है कि वो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं और वो ईमान नहीं ला रहे हैं।

40. ज़मीन और जो भी उसके ऊपर है उसके वारिस हम ही रह जाएंगे, और हमारी ही तरफ़ उन्हें लौटना होगा।

41. और इस किताब में इब्राहीम का ज़िक्र करो; बेशक वह एक रास्तबाज़ नबी था।

42. जब कि उसने अपने बाप से कहा, "ऐ मेरे बाप, आप क्यों उसे पूजते हैं जो न सुने और न देखे, और न आपके कुछ काम आए?

43. ऐ मेरे बाप, मेरे पास ऐसा इल्म आ गया है जो आपके पास नहीं आया, पस आप मेरी पैरवी करें, मैं आपको सीधा रास्ता दिखाऊंगा,

व ज-अ़-लनी मुबा-रकन् ऐ-न मा कुन्तु व औसानी बिस्सलाति वज़्ज़काति मा दुम्तु हय्या (31)

व बर्रम् बिवालि-दती व लम् यज्अ़ल्नी जब्बारन् शक़िय्या (32)

वस्सलामु अ़लय्-य यौ-म वुलित्तु व यौ-म अमूतु व यौ-म उब्अ़सु हय्या (33)

ज़ालि-क अ़ीसब्नु मर्य-म क़ौलल्-हक़्क़िल्लज़ी फ़ीहि यम्तरून (34)

मा का-न लिल्लाहि अंय्यत्तख़ि-ज़ मिंव्व-लदिन् सुब्हानहू, इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून (35)

व इन्नल्ला-ह रब्बी व रब्बुकुम् फ़अ़्बुदूहु, हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (36)

फ़ख़्त-लफ़ल्-अह्ज़ाबु मिम्-बैनिहिम् फ़-वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिम्-मश्हदि यौमिन् अ़ज़ीम (37)

अस्मिअ़् बिहिम् व अब्सिर् यौ-म यअ्तूनना लाकिनिज़्ज़ालिमूनल्-यौ-म फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (38)

व अन्ज़िर्हुम् यौमल्-हस्रति इज़् क़ुज़ियल्-अम्रू • व हुम् फ़ी ग़फ़्लतिंव्-व हुम् ला युअ्मिनून (39)

इन्ना नह्नु नरिसुल्-अर्-ज़ व मन् अ़लैहा व इलैना युर्जअ़ून (40) •

वज़्कुर् फ़िल्किताबि इब्राही-म, इन्नहू का-न सिद्दीक़न् नबिय्या (41)

इज़् क़ा-ल लिअबीहि या अ-बति लि-म तअ्बुदु मा ला यस्मअ़ु व ला युब्सिरू व ला युग़्नी अ़न्-क शैआ (42)

या अ-बति इन्नी क़द् जा-अनी मिनल्-अ़िल्मि मा लम् यअ्ति-क फ़त्तबिअ़्नी अह्दि-क सिरातन् सविय्या (43)

وَّجَعَلَنِيْ مُبٰرَكًا اَيْنَ مَا كُنْتُ ۠ وَاَوْصٰنِيْ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ مَا دُمْتُ حَيًّا ۝٣١

وَّبَرًّا ۢ بِوَالِدَتِيْ ۡ وَلَمْ يَجْعَلْنِيْ جَبَّارًا شَقِيًّا ۝٣٢

وَالسَّلٰمُ عَلَيَّ يَوْمَ وُلِدْتُّ وَيَوْمَ اَمُوْتُ وَيَوْمَ اُبْعَثُ حَيًّا ۝٣٣

ذٰلِكَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ ۚ قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِيْ فِيْهِ يَمْتَرُوْنَ ۝٣٤

مَا كَانَ لِلّٰهِ اَنْ يَّتَّخِذَ مِنْ وَّلَدٍ ۙ سُبْحٰنَهٗ ۭ اِذَا قَضٰٓى اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝٣٥

وَاِنَّ اللّٰهَ رَبِّيْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ۭ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝٣٦

فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ مَّشْهَدِ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝٣٧

اَسْمِعْ بِهِمْ وَاَبْصِرْ ۙ يَوْمَ يَاْتُوْنَنَا لٰكِنِ الظّٰلِمُوْنَ الْيَوْمَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٣٨

وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْحَسْرَةِ اِذْ قُضِيَ الْاَمْرُ ۘ وَهُمْ فِيْ غَفْلَةٍ وَّهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٣٩

اِنَّا نَحْنُ نَرِثُ الْاَرْضَ وَمَنْ عَلَيْهَا وَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝٤٠ ع

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِبْرٰهِيْمَ ڛ اِنَّهٗ كَانَ صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ۝٤١

اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ يٰٓاَبَتِ لِمَ تَعْبُدُ مَا لَا يَسْمَعُ وَلَا يُبْصِرُ وَلَا يُغْنِيْ عَنْكَ شَيْـــًٔا ۝٤٢

يٰٓاَبَتِ اِنِّيْ قَدْ جَاۗءَنِيْ مِنَ الْعِلْمِ مَا لَمْ يَاْتِكَ فَاتَّبِعْنِيْٓ اَهْدِكَ صِرَاطًا سَوِيًّا ۝٤٣

44. ऐ मेरे बाप, शैतान की बन्दगी न कीजिए; शैतान तो रहमान का नाफ़रमान है।

45. ऐ मेरे बाप, मैं डरता हूं कि मबादा आपको रहमान का कोई अज़ाब आ पकड़े, और आप शैतान के साथी होकर रह जाएं"।

46. उसने कहा, "ऐ इबराहीम, क्या तू मेरे माबूदों से बरगश्ता है? अगर तू बाज़ न आया, तो मैं तुझे संगसार कर दूंगा; अरसा-ए-दराज़ के लिए तू मुझसे अलग हो जा"।

47. कहा, "सलाम है आपको! मैं आपके लिए अपने रब से बख़्शिश की दुआ करूंगा, वह तो मुझ पर बहुत मेहरबान है।

48. मैं आप लोगों को छोड़ता हूं और उनको भी जिन्हें अल्लाह को छोड़कर आप लोग पुकारा करते हैं, मैं तो अपने रब को पुकारूंगा, तवक़्क़ो है कि मैं अपने रब को पुकार कर महरूम नहीं रहूंगा"।

49. फिर जब वह उन लोगों से और उनसे जिन्हें वो अल्लाह के सिवा पूजते थे अलग हो गया, तो हमने उसे इसहाक़ और याक़ूब अता किए, और हर एक को हमने नबी बनाया;

50. और उन्हें अपनी रहमत से हिस्सा दिया, और उन्हें एक पाएदार नामवरी अता की।

51. और इस किताब में मूसा का ज़िक्र करो; बेशक वह बरगुज़ीदा था, और एक रसूल, नबी था।

52. हमने उसे तूर के मुबारक किनारे से आवाज़ दी, और राज़ की बातें करने को हमने उसे क़रीब किया।

53. और अपनी रहमत से उसके भाई हारून को नबी बनाकर उसे दिया।

54. और इस किताब में इसमाईल का ज़िक्र करो; बेशक वह वादे का सच्चा था, और वह एक रसूल, नबी था।

55. और अपने लोगों को नमाज़ और ज़कात का हुक्म देता था, और वह अपने रब के नज़दीक पसन्दीदा था।

या अ-बति ला तअ्बुदिश्शैता-न, इन्नश्शैता-न का-न लिर्रह्मानि अ़सिय्या (44)

या अ-बति इन्नी अख़ाफ़ु अंय्य-मस्स-क अ़ज़ाबुम्-मिनर्रह्मानि फ़-तकू-न लिश्शैतानि वलिय्या (45)

क़ा-ल अराग़िबुन् अन्-त अ़न् आलि-हती या इब्राहीमु ल-इल्लम् तन्तहि ल-अर्जुमन्न-क वह्जुर्नी मलिय्या (46)

क़ा-ल सलामुन् अ़लै-क स-अस्तग़्फ़िरु ल-क रब्बी, इन्नहू का-न बी हफ़िय्या (47)

व अअ्तज़िलुकुम् व मा तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि व अद्अू रब्बी अ़सा अल्ला अकू-न बिदुआ-इ रब्बी शक़िय्या (48)

फ़-लम्मअ्-त-ज़-लहुम् व मा यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब, व कुल्लन् जअ़ल्ना नबिय्या (49)

व व-हब्ना लहुम् मिर्रह्मतिना व जअ़ल्ना लहुम् लिसा-न सिद्क़िन् अ़लिय्या (50) ●

वज़्कुर् फ़िल्किताबि मूसा इन्नहू का-न मुख़्ल-संव्-व का-न रसूलन् नबिय्या (51)

व नादैनाहु मिन् जानिबित्-तूरिल्-ऐ-मनि व क़र्रब्नाहु नजिय्या (52)

व व-हब्ना लहू मिर्रह्मतिना अख़ाहु हारू-न नबिय्या (53)

वज़्कुर् फ़िल्किताबि इस्माअ़ी-ल इन्नहू का-न सादिक़ल्-वअ़्दि व का-न रसूलन् नबिय्या (54)

व का-न यअ्मुरु अह्लहू बिस्सलाति वज़्ज़काति व का-न अ़िन्-द रब्बिही मर्ज़िय्या (55)

يٰٓاَبَتِ لَا تَعْبُدِ الشَّيْطٰنَ ۭ اِنَّ الشَّيْطٰنَ
كَانَ لِلرَّحْمٰنِ عَصِيًّا ۝٤٤
يٰٓاَبَتِ اِنِّىْٓ اَخَافُ اَنْ يَّمَسَّكَ عَذَابٌ
مِّنَ الرَّحْمٰنِ فَتَكُوْنَ لِلشَّيْطٰنِ وَلِيًّا ۝٤٥
قَالَ اَرَاغِبٌ اَنْتَ عَنْ اٰلِهَتِيْ يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ۚ
لَىِٕنْ لَّمْ تَنْتَهِ لَاَرْجُمَنَّكَ وَاهْجُرْنِيْ مَلِيًّا ۝٤٦
قَالَ سَلٰمٌ عَلَيْكَ ۚ سَاَسْتَغْفِرُ لَكَ رَبِّيْ ۭ
اِنَّهٗ كَانَ بِيْ حَفِيًّا ۝٤٧
وَاَعْتَزِلُكُمْ وَمَا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
وَاَدْعُوْا رَبِّيْ ڮ عَسٰٓى اَلَّآ اَكُوْنَ بِدُعَاۗءِ
رَبِّيْ شَقِيًّا ۝٤٨
فَلَمَّا اعْتَزَلَهُمْ وَمَا يَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۙ
وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ ۭ وَكُلًّا جَعَلْنَا
نَبِيًّا ۝٤٩
وَوَهَبْنَا لَهُمْ مِّنْ رَّحْمَتِنَا وَجَعَلْنَا لَهُمْ
ع لِسَانَ صِدْقٍ عَلِيًّا ۝٥٠
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ مُوْسٰٓى ۡ اِنَّهٗ
كَانَ مُخْلَصًا وَّكَانَ رَسُوْلًا نَّبِيًّا ۝٥١
وَنَادَيْنٰهُ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ الْاَيْمَنِ
وَقَرَّبْنٰهُ نَجِيًّا ۝٥٢
وَوَهَبْنَا لَهٗ مِنْ رَّحْمَتِنَآ اَخَاهُ هٰرُوْنَ
نَبِيًّا ۝٥٣
وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِسْمٰعِيْلَ ۡ اِنَّهٗ
كَانَ صَادِقَ الْوَعْدِ وَكَانَ رَسُوْلًا
نَّبِيًّا ۝٥٤
وَكَانَ يَاْمُرُ اَهْلَهٗ بِالصَّلٰوةِ وَالزَّكٰوةِ ۠
وَكَانَ عِنْدَ رَبِّهٖ مَرْضِيًّا ۝٥٥

56. और इस किताब में इदरीस का भी ज़िक्र करो; वह निहायत रास्तबाज़ एक नबी था।

57. उसे हमने बुलन्द मक़ाम पर उठाया था।

58. ये वो पैग़म्बर हैं जिनपर अल्लाह ने नवाज़िश की, आदम की औलाद में से और उनकी नस्ल से जिनको हमने नूह के साथ सवार किया, और इबराहीम और इसराईल की औलाद में से हुए हैं और उनमें से जिनको हमने हिदायत बख़्शी, और बरगुज़ीदा किया। जब उन्हें रहमान की आयतें सुनाई जातीं, तो वो सजदा करते और रोते हुए गिर पड़ते थे।

59. — फिर उनके बाद ऐसे नाख़लफ़ उनके जांनशीन हुए जिन्होंने नमाज़ को ज़ाया किया, और ख़्वाहिशाते नफ़्स की पैरवी इख़्तियार की; पस अनक़रीब गुमराही ही वो पाएंगे।

60. मगर जो तौबा करे, और ईमान लाए, और नेक अमल करे तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, उनपर कुछ भी ज़ुल्म न होगा;

61. — अदन के बाग़ जिनका रहमान ने अपने बन्दों से ग़ैब में होते हुए वादा फ़रमाया है; यक़ीनन उसके वादे पर हाज़िर होना है।

62. — वहां वो 'सलाम' के सिवा कोई बेहूदा बात न सुनेंगे। उनका रिज़्क़ उन्हें वहां सुबह व शाम मुहय्या रहेगा।

63. यह है वह जन्नत जिसका वारिस हम अपने बन्दों में से उनको बनाएंगे जो डर रखने वाले हों।

64. हम तुम्हारे रब के हुक्म के बग़ैर नहीं उतरते। जो कुछ हमारे आगे है, और जो कुछ हमारे पीछे है, और जो कुछ उसके दरमियान है, सब उसी का है। और तुम्हारा रब भूलनेवाला नहीं है,

65. — आसमानों और ज़मीन का रब है, और उसका भी जो कुछ कि इन दोनों के दरमियान है। पस तुम उसी की बन्दगी करो, और उसकी बन्दगी पर साबित क़दम रहो; क्या तुम्हारे इल्म में उस जैसा कोई है?

66. इनसान कहता है, "क्या जब मैं मर जाऊंगा तो फिर ज़िन्दा करके

वज़्कुर् फ़िल्किताबि इद्री-स इन्नहू का-न सिद्दीक़न् नबिय्या (56)

व रफ़अ्नाहु मकानन् अ़लिय्या (57)

उलाइ-कल्लज़ी-न अन्-अ़मल्लाहु अ़लैहिम् मिनन्-नबिय्यी-न मिन् ज़ुर्रिय्यति आद-म, व मिम्-मन् हमल्ना म-अ़ नूहिंव्-व मिन् ज़ुर्रिय्यति इब्राही-म व इस्राई-ल, व मिम्-मन् हदैना वज्तबैना, इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुर्रह्मानि ख़र्रू सुज्जदंव्-व बुकिय्या ● (58)

फ़-ख़-ल-फ़ मिम्-बअ्दिहिम् ख़ल्फ़ुन् अज़ाअुस्सला-त वत्त-बअुश्श-हवाति फ़सौ-फ़ यल्क़ौ-न ग़य्या (59)

इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-उलाइ-क यद्ख़ुलूनल्-जन्न-त व ला युज़्लमू-न शैआ (60)

जन्नाति अ़द्नि-निल्लती व-अ़दर्रह्मानु अ़िबादहू बिल्ग़ैबि इन्नहू का-न वअ्दुहू मअ्तिय्या (61)

ला यस्मअू-न फ़ीहा लग़्वन् इल्ला सलामन्, व लहुम् रिज़्क़ुहुम् फ़ीहा बुक्र-तंव्-व अ़शिय्या (62)

तिल्कल्-जन्नतुल्लती नूरिसु मिन् अ़िबादिना मन् का-न तक़िय्या (63)

व मा न-तनज़्ज़लु इल्ला बिअम्रि रब्बि-क लहू मा बै-न ऐदीना व मा ख़ल्फ़ना व मा बै-न ज़ालि-क व मा का-न रब्बु-क नसिय्या (64)

रब्बुस्-समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा फ़अ्बुद्हु वस्तबिर् लिअ़िबा-दतिही, हल् तअ्लमु लहू समिय्या (65) ●

व यक़ूलुल्-इन्सानु अ-इज़ा मा मित्तु लसौ-फ़

وَاذْكُرْ فِي الْكِتٰبِ اِدْرِيْسَ اِنَّهٗ كَانَ
صِدِّيْقًا نَّبِيًّا ﴿٥٦﴾
وَّرَفَعْنٰهُ مَكَانًا عَلِيًّا ﴿٥٧﴾
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ
مِّنَ النَّبِيّٖنَ مِنْ ذُرِّيَّةِ اٰدَمَ وَمِمَّنْ
حَمَلْنَا مَعَ نُوْحٍ وَّمِنْ ذُرِّيَّةِ اِبْرٰهِيْمَ
وَاِسْرَآءِيْلَ وَمِمَّنْ هَدَيْنَا وَاجْتَبَيْنَا
اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُ الرَّحْمٰنِ خَرُّوْا
سُجَّدًا وَّبُكِيًّا ﴿٥٨﴾
فَخَلَفَ مِنْ بَعْدِهِمْ خَلْفٌ اَضَاعُوا
الصَّلٰوةَ وَاتَّبَعُوا الشَّهَوٰتِ فَسَوْفَ
يَلْقَوْنَ غَيًّا ﴿٥٩﴾
اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَاُولٰٓئِكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ وَلَا يُظْلَمُوْنَ
شَيْئًا ﴿٦٠﴾
جَنّٰتِ عَدْنِ ِالَّتِيْ وَعَدَ الرَّحْمٰنُ عِبَادَهٗ
بِالْغَيْبِ اِنَّهٗ كَانَ وَعْدُهٗ مَاْتِيًّا ﴿٦١﴾
لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا اِلَّا سَلٰمًا وَلَهُمْ
رِزْقُهُمْ فِيْهَا بُكْرَةً وَّعَشِيًّا ﴿٦٢﴾
تِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِيْ نُوْرِثُ مِنْ عِبَادِنَا
مَنْ كَانَ تَقِيًّا ﴿٦٣﴾
وَمَا نَتَنَزَّلُ اِلَّا بِاَمْرِ رَبِّكَ لَهٗ مَا بَيْنَ
اَيْدِيْنَا وَمَا خَلْفَنَا وَمَا بَيْنَ ذٰلِكَ
وَمَا كَانَ رَبُّكَ نَسِيًّا ﴿٦٤﴾
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا فَاعْبُدْهُ
وَاصْطَبِرْ لِعِبَادَتِهٖ هَلْ تَعْلَمُ لَهٗ سَمِيًّا ﴿٦٥﴾
وَيَقُوْلُ الْاِنْسَانُ ءَاِذَا مَا مِتُّ لَسَوْفَ

निकाला जाऊंगा?"

67. क्या इनसान याद नहीं करता कि हम उसे इससे पहले पैदा कर चुके हैं, जबकि वह कुछ भी न था?

68. पस तुम्हारे रब की क़सम, हम उन्हें, और शैतानों को भी ज़रूर इकट्ठा करेंगे, फिर हम उन्हें इस हालत में कि वो नीम ईस्तादा होंगे जहन्नम के गिर्द ला हाज़िर करेंगे।

69. फिर हर गिरोह में से हम लाज़िमन उसे छांट कर अलग करेंगे जो उनमें रहमान के मुक़ाबले में सबसे बढ़कर सरकश रहा होगा;

70. फिर हम उन्हें खूब जानते हैं जो उसमें झोंके जाने के सबसे ज़्यादा हक़दार हैं।

71. तुममें से हर एक को बहरहाल उसपर पहुचना ही है; तुम्हारे रब के ऊपर यह एक तय शुदा अमरे वाजिब है।

72. फिर हम डर रखने वालों को बचा लेंगे; और ज़ालिमों को उसमें घुटनों के बल पड़ा छोड़ देंगे।

73. जब उन्हें हमारी वाज़ेह आयतें सुनाई जाती हैं, तो जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वो ईमान लानेवालों से कहते हैं कि "दोनों गिरोहों में मक़ाम व मरतबा के लिहाज़ से कौन बेहतर है, और मजलिस के एतिबार से कौन ज़्यादा अच्छा है?"

74. हालांकि उनसे पहले कितनी ही नसलों को हम हलाक कर चुके हैं, जो सरो सामान और नमूद में उनसे कहीं अच्छी थीं!

75. कह दो "जो गुमराही में पड़ा हुआ है, तो यही चाहिए कि रहमान उसकी रस्सी अच्छी तरह दराज़ करे। यहां तक कि जब ऐसे लोग उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है, — ख़्वाह अज़ाब हो या क़ियामत की घड़ी — तो वो उस वक़्त जान लेंगे कि अपने मक़ाम व दरजा के लिहाज़ से कौन बदतर और जत्थे के लिहाज़ से कमज़ोरतर है"।

76. और जो लोग हिदायतयाब हैं अल्लाह उनके लिए हिदायत में इज़ाफ़ा फ़रमाता है, और बाक़ी रहने वाली नेकियां ही तुम्हारे रब के यहां सवाब, और बाज़गश्त के लिहाज़ से बेहतर हैं।

77. फिर क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने हमारी आयतों का इनकार किया, और कहा कि "मुझे तो ज़रूर ही माल और औलाद से नवाज़ा जाएगा?"

उख़्रजु हय्या (66)

अ-व ला यज़्कुरुल्-इन्सानु अन्ना ख़लक़्नाहु मिन् क़ब्लु व लम् यकु शैआ (67)

फ़-व रब्बि-क लनह्शुरन्नहुम् वश्शयाती-न सुम्-म लनुह्ज़िरन्नहुम् हौ-ल जहन्न-म जिसिय्या (68)

सुम्-म ल-नन्ज़िअन्-न मिन् कुल्लि शी-अ़तिन् अय्युहुम् अशद्दु अ़लर्रह्मानि अ़ितिय्या (69)

सुम्-म ल-नह्नु अअ्लमु बिल्लज़ी-न हुम् औला बिहा सिलिय्या (70)

व इम्-मिन्कुम् इल्ला वारिदुहा का-न अ़ला रब्बि-क हत्मम्-मक़्ज़िय्या (71)

सुम्-म नुनज्जिल्लज़ीनत्तक़ौ व न-ज़रुज़्ज़ालिमी-न फ़ीहा जिसिय्या (72)

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू अय्युल्-फ़रीक़ैनि ख़ैरुम्-मक़ामंव्-व अह्सनु नदिय्या (73)

व कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिन् क़र्निन् हुम् अह्सनु असासंव्-व रिअ्या (74)

क़ुल मन् का-न फ़िज़्ज़लालति फ़ल्यम्दुद् लहुर्रह्मानु मद्दन्, हत्ता इज़ा रऔ मा यू-अ़दू-न इम्मल्-अ़ज़ा-ब व इम्मस्सा-अ़-त, फ़-सयअ्लमू-न मन् हु-व शर्रुम्-मकानंव्-व अज़्अफ़ु जुन्दा (75)

व यज़ीदुल्लाहुल्लज़ीनह्तदौ हुदन्, वल्-बाक़ियातुस्सालिहातु ख़ैरुन् अ़िन्-द रब्बि-क सवाबंव्-व ख़ैरुम् मरद्दा (76)

अ-फ़-रऐतल्लज़ी क-फ़-र बिआयातिना व क़ा-ल ल-ऊ-तयन्-न मालंव्-व व-लदा (77)

أُخْرَجُ حَيًّا ۝٦٦
اَوَلَا يَذْكُرُ الْاِنْسَانُ اَنَّا خَلَقْنٰهُ مِنْ قَبْلُ
وَلَمْ يَكُ شَيْـًٔا ۝٦٧
فَوَرَبِّكَ لَنَحْشُرَنَّهُمْ وَالشَّيٰطِيْنَ ثُمَّ
لَنُحْضِرَنَّهُمْ حَوْلَ جَهَنَّمَ جِثِيًّا ۝٦٨
ثُمَّ لَنَنْزِعَنَّ مِنْ كُلِّ شِيْعَةٍ اَيُّهُمْ اَشَدُّ
عَلَى الرَّحْمٰنِ عِتِيًّا ۝٦٩
ثُمَّ لَنَحْنُ اَعْلَمُ بِالَّذِيْنَ هُمْ اَوْلٰى بِهَا
صِلِيًّا ۝٧٠
وَاِنْ مِّنْكُمْ اِلَّا وَارِدُهَا ۚ كَانَ عَلٰى رَبِّكَ
حَتْمًا مَّقْضِيًّا ۝٧١
ثُمَّ نُنَجِّى الَّذِيْنَ اتَّقَوْا وَّنَذَرُ الظّٰلِمِيْنَ
فِيْهَا جِثِيًّا ۝٧٢
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا ۙ اَيُّ
الْفَرِيْقَيْنِ خَيْرٌ مَّقَامًا وَّاَحْسَنُ نَدِيًّا ۝٧٣
وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ اَحْسَنُ
اَثَاثًا وَّرِءْيًا ۝٧٤
قُلْ مَنْ كَانَ فِى الضَّلٰلَةِ فَلْيَمْدُدْ
لَهُ الرَّحْمٰنُ مَدًّا ۚ حَتّٰٓى اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ
اِمَّا الْعَذَابَ وَاِمَّا السَّاعَةَ ؕ فَسَيَعْلَمُوْنَ
مَنْ هُوَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّاَضْعَفُ جُنْدًا ۝٧٥
وَيَزِيْدُ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اهْتَدَوْا هُدًى ؕ
وَالْبٰقِيٰتُ الصّٰلِحٰتُ خَيْرٌ عِنْدَ رَبِّكَ
ثَوَابًا وَّخَيْرٌ مَّرَدًّا ۝٧٦
اَفَرَءَيْتَ الَّذِىْ كَفَرَ بِاٰيٰتِنَا وَقَالَ لَاُوْتَيَنَّ
مَالًا وَّوَلَدًا ۝٧٧

78. क्या उसने ग़ैब को झांक कर देख लिया है, या रहमान से उसने कोई अ़हद ले रखा है?

79. हरगिज़ नहीं, हम लिखेंगे जो कुछ वह कहता है, और उसके लिए हम अज़ाब को दराज़ करते चले जाएंगे;

80. और जो कुछ वह बताता है उसके वारिस हम होंगे, और वह अकेला ही हमारे पास आएगा।

81. और उन्होंने अल्लाह को छोड़ कर अपने कुछ माबूद बना लिए हैं ताकि वो उनके लिए ताक़त का बाइस हों।

82. हरगिज़ नहीं, वो उनकी इबादत का इनकार करेंगे और उनके मुख़ालिफ़ हो जाएंगे।

83. क्या तुमने देखा नहीं कि हमने शैतानों को छोड़ रखा है जो अहले कुफ़्र पर मुसल्लत हैं, जो उन्हें ख़ूब उकसाते रहते हैं;

84. पस तुम उनके लिए जल्दी न करो; हम तो बस उनके लिए गिनती कर रहे हैं।

85. याद करो जिस दिन हम डर रखनेवालों को बाइज़्ज़त गिरोहों के तौरपर रहमान के हुज़ूर जमा करेंगे।

86. और मुजरिमों को जहन्नम के घाट की तरफ़ प्यासा हांकेंगे,

87. उन्हें सिफ़ारिश का इख़्तियार हासिल न होगा; सिवाय उसके जिसने रहमान के पास से कोई अहद लिया हो।

88. वो कहते हैं, "रहमान ने अपना बेटा बनाया है!"

89. निहायत भारी बात है जो तुम घड़ लाए हो!

90. क़रीब है कि आसमान इससे फट पड़ें और ज़मीन टुकड़े-टुकड़े हो जाए और पहाड़ धमाके के साथ गिर पड़ें।

91. इस बात पर कि उन्होंने रहमान के लिए बेटा होने का दावा किया;

92. जबकि रहमान के शायान-ए-शान नहीं कि वह अपना कोई बेटा बनाए।

93. आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है एक बन्दे की हैसियत से रहमान के हुज़ूर आनेवाला है;

94. उसने उनका इहाता कर रखा है, और अच्छी तरह उन्हें गिन रखा है।

95. और उनमें से हर एक क़ियामत के रोज़ उसके सामने अकेला-अकेला आने वाला है।

96. बेशक जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए, जल्द

अत्त-लअ़ल्-ग़ै-ब अमित्त-ख़-ज़ अ़िन्दर्रह्मानि अ़ह्दा (78)

कल्ला, सनक्तुबु मा यक़ूलु व नमुद्दु लहू मिनल्-अ़ज़ाबि मद्दा (79)

व नरिसुहू मा यक़ूलु व यअ्तीना फ़र्दा (80)

वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-हतल्-लि-यकूनू लहुम् अ़िज़्ज़ा (81)

कल्ला, स-यक्फ़ुरू-न बिअ़िबादतिहिम् व यकूनू-न अ़लैहिम् ज़िद्दा (82) ●

अलम् त-र अन्ना अर्सल्नश्-शयाती-न अ़लल्-काफ़िरी-न त-उज़्ज़ुहुम् अज़्ज़ा (83)

फ़ला तअ्जल् अ़लैहिम्, इन्नमा नअ़ुद्दु लहुम् अ़द्दा (84)

यौ-म नह्शुरुल्-मुत्तक़ी-न इलर्रह्मानि वफ़्दा (85)

व नसूक़ुल्-मुज्रिमी-न इला जहन्न-म विर्दा ●*(86)*

ला यम्लिकूनश्-शफ़ा-अ़-त इल्ला मनित्त-ख़-ज़ अ़िन्दर्रह्मानि अ़ह्दा ● *(87)*

व क़ालुत्त-ख़ज़र्रह्मानु व-लदा (88)

ल-क़द् जिअ्तुम् शैअन् इद्दा (89)

तकादुस्समावातु य-तफ़त्तर्-न मिन्हु व तन्शक़्क़ुल्-अर्ज़ु व तख़िर्रुल्-जिबालु हद्दा (90)

अन् दऔ लिर्रह्मानि व-लदा (91)

व मा यम्बग़ी लिर्रह्मानि अंय्यत्तख़ि-ज़ व-लदा (92)

इन् कुल्लु मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि इल्ला आतिर्रह्मानि अ़ब्दा (93)

ल-क़द् अह्साहुम् व अ़द्दहुम् अ़द्दा (94)

व कुल्लुहुम् आतीहि यौमल्-क़ियामति फ़र्दा (95)

इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति

أَطَّلَعَ الْغَيْبَ أَمِ اتَّخَذَ عِنْدَ الرَّحْمٰنِ
عَهْدًا ﴿٧٨﴾
كَلَّا سَنَكْتُبُ مَا يَقُولُ وَنَمُدُّ لَهُ مِنَ
الْعَذَابِ مَدًّا ﴿٧٩﴾
وَنَرِثُهُ مَا يَقُولُ وَيَأْتِينَا فَرْدًا ﴿٨٠﴾
وَاتَّخَذُوا مِنْ دُونِ اللّٰهِ اٰلِهَةً لِّيَكُونُوا
لَهُمْ عِزًّا ﴿٨١﴾
كَلَّا سَيَكْفُرُونَ بِعِبَادَتِهِمْ وَيَكُونُونَ
عَلَيْهِمْ ضِدًّا ﴿٨٢﴾
أَلَمْ تَرَ أَنَّا أَرْسَلْنَا الشَّيٰطِينَ عَلَى
الْكٰفِرِينَ تَؤُزُّهُمْ أَزًّا ﴿٨٣﴾
فَلَا تَعْجَلْ عَلَيْهِمْ إِنَّمَا نَعُدُّ لَهُمْ عَدًّا ﴿٨٤﴾
يَوْمَ نَحْشُرُ الْمُتَّقِينَ إِلَى الرَّحْمٰنِ وَفْدًا ﴿٨٥﴾
وَنَسُوقُ الْمُجْرِمِينَ إِلٰى جَهَنَّمَ وِرْدًا ﴿٨٦﴾
لَا يَمْلِكُونَ الشَّفَاعَةَ إِلَّا مَنِ اتَّخَذَ
عِنْدَ الرَّحْمٰنِ عَهْدًا ﴿٨٧﴾
وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا ﴿٨٨﴾
لَقَدْ جِئْتُمْ شَيْئًا إِدًّا ﴿٨٩﴾
تَكَادُ السَّمٰوٰتُ يَتَفَطَّرْنَ مِنْهُ وَتَنْشَقُّ
الْأَرْضُ وَتَخِرُّ الْجِبَالُ هَدًّا ﴿٩٠﴾
أَنْ دَعَوْا لِلرَّحْمٰنِ وَلَدًا ﴿٩١﴾
وَمَا يَنْبَغِي لِلرَّحْمٰنِ أَنْ يَتَّخِذَ وَلَدًا ﴿٩٢﴾
إِنْ كُلُّ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ
إِلَّا اٰتِي الرَّحْمٰنِ عَبْدًا ﴿٩٣﴾
لَقَدْ أَحْصٰهُمْ وَعَدَّهُمْ عَدًّا ﴿٩٤﴾
وَكُلُّهُمْ اٰتِيهِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فَرْدًا ﴿٩٥﴾
إِنَّ الَّذِينَ اٰمَنُوا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

ही रहमान उनके लिए मुहब्बत पैदा कर देगा।

97. पस हमने इस कलाम को तुम्हारी ज़बान में इसी लिए सहल व साज़गार बनाया है ताकि तुम उसके ज़रिए से परहेज़गारों को ख़ुशख़बरी दो और झगड़ालू क़ौम को इसके ज़रिए से डराओ।

98. उनसे पहले कितनी ही नसलों को हम हलाक कर चुके हैं। क्या उनमें से किसी की आहट तुम पाते हो या उनकी कोई भनक सुनते हो?

सूरह ता. हा. मक्की

(आयतें 135, रुकूआत 8)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ता हा।

2. हमने तुमपर यह क़ुरआन इसलिए नहीं उतारा है कि तुम मशक़्क़त में पड़ जाओ।

3. यह तो बस एक याददिहानी है उसके लिए जो डरे।

4. एहतिमाम के साथ नाज़िल हुआ है उस ज़ात की तरफ़ से जिसने पैदा किया है ज़मीन को और बुलन्द आसमान को;

5. वह रहमान जो अर्श पर जलवागर हुआ,

6. उसी का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है और जो कुछ ख़ाके नमनाक के नीचे है।

7. ख़्वाह तुम बात पुकार कर कहो (या चुपके से) वह तो पोशीदा और पोशीदातर को भी जानता है।

8. अल्लाह, कि उसके सिवा कोई माबूद नहीं, उसके नाम बहुत ही अच्छे हैं।

9. क्या तुम्हें मूसा की ख़बर पहुंची?

10. जब कि उसने एक आग देखी तो अपने घरवालों से कहा, "ठहरो मैंने एक आग देखी है, शायद कि तुम्हारे लिए उससे कोई अंगारा ले आऊं, या उस आग पर रास्ते का पता पा लूं"।

11. फिर जब वह वहां पहुंचा तो पुकारा गया, "ऐ मूसा!

12. मैं ही तेरा रब हूं, अपने जूते उतार दे; तू वादी-ए-मुक़द्दस तुवा में है।

13. मैंने तुझे मुंतख़ब कर लिया है; पस सुन जो कुछ वही की जाती है।

14. बेशक मैं ही अल्लाह हूं; मेरे सिवा कोई माबूद नहीं; पस मेरी बन्दगी

स-यज्अ़लु लहुमुर्रह्मानु वुद्दा (96)

फ़-इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लितुबश्शि-र बिहिल्-मुत्तक़ी-न व तुन्ज़ि-र बिहि क़ौमल्-लुद्दा (97)

व कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिन् क़र्निन्, हल् तुहिस्सु मिन्हुम् मिन् अ-हदिन् औ तस्मअु लहुम् रिक्ज़ा ●(98) ●

20 सूरतु तॉं-हा

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 5466 अक्षर, 1251 शब्द, 135 आयतें और 8 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तॉं-हा (1)

मा अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-क़ुरआ-न लितश्क़ा (2)

इल्ला तज़्कि-रतल्-लिमंय्यख़्शा (3)

तन्ज़ीलम्-मिम्-मन् ख़-लक़ल्अर्-ज़ वस्समावातिल्-अ़ुला (4)

अर्रह्मानु अ़लल्-अ़र्शिस्तवा (5)

लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्-अर्ज़ि व मा बैनहुमा व मा तह्तस्सरा (6)

व इन् तज्हर् बिल्क़ौलि फ़-इन्नहू यअ़्लमुस्सिर्-र व अख़्फ़ा (7)

अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, लहुल्-अस्माउल-हुस्ना (6)

व हल् अता-क हदीसु मूसा ● (9)

इज़् रआ नारन् फ़क़ा-ल लिअह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु नारल्-लअ़ल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-क़-बसिन् औ अजिदु अ़लन्नारि हुदा (10)

फ़-लम्मा अताहा नूदि-य या मूसा (11)

इन्नी अ-न रब्बु-क फ़ख़्लअ़् नअ़्लै-क इन्न-क बिल्वादिल्-मुक़द्दसि तुवा (12)

व अनख़्तर्तु-क फ़स्तमिअ़् लिमा यूहा (13)

इन्ननी अनल्लाहु ला इला-ह इल्ला अ-न फ़अ़्बुद्नी

سَيَجْعَلُ لَهُمُ الرَّحْمٰنُ وُدًّا (٩٦)
فَاِنَّمَا يَسَّرْنٰهُ بِلِسَانِكَ لِتُبَشِّرَ بِهِ
الْمُتَّقِيْنَ وَتُنْذِرَ بِهٖ قَوْمًا لُّدًّا (٩٧)
وَكَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هَلْ تُحِسُّ
مِنْهُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَوْ تَسْمَعُ لَهُمْ رِكْزًا (٩٨)

سُوْرَةُ طٰهٰ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٣٥ رُكُوْعَاتُهَا ٨

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰهٰ (١) مَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ
لِتَشْقٰٓى (٢)
اِلَّا تَذْكِرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى (٣)
تَنْزِيْلًا مِّمَّنْ خَلَقَ الْاَرْضَ وَالسَّمٰوٰتِ
الْعُلٰى (٤)
اَلرَّحْمٰنُ عَلَى الْعَرْشِ اسْتَوٰى (٥)
لَهٗ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا
وَمَا تَحْتَ الثَّرٰى (٦)
وَاِنْ تَجْهَرْ بِالْقَوْلِ فَاِنَّهٗ يَعْلَمُ السِّرَّ
وَاَخْفٰى (٧)
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ لَهُ الْاَسْمَآءُ الْحُسْنٰى (٨)
وَهَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى (٩)
اِذْ رَاٰ نَارًا فَقَالَ لِاَهْلِهِ امْكُثُوْٓا اِنِّىْٓ
اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّىْٓ اٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِقَبَسٍ
اَوْ اَجِدُ عَلَى النَّارِ هُدًى (١٠)
فَلَمَّآ اَتٰىهَا نُوْدِىَ يٰمُوْسٰى (١١)
اِنِّىْٓ اَنَا رَبُّكَ فَاخْلَعْ نَعْلَيْكَ اِنَّكَ
بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى (١٢)
وَاَنَا اخْتَرْتُكَ فَاسْتَمِعْ لِمَا يُوْحٰى (١٣)
اِنَّنِىْٓ اَنَا اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا فَاعْبُدْنِىْ

कर, और मेरी याद के लिए नमाज़ क़ायम कर।

15. यक़ीनन वह (क़ियामत की) घड़ी आनेवाली है - मैं चाहता हूं कि उसे छुपाए रखूं - ताकि हर शख़्स जो कोशिश करता है उसका बदला पाए।

16. पस जो कोई उसपर ईमान नही लाता, और अपनी ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी में लगा हुआ है वह तुझे इससे हरगिज़ न रोके, वरना तू हलाकत में पड़ जाएगा।

17. और ऐ मूसा, यह तेरे दाहिने हाथ में क्या है?"

18. उसने कहा, "यह मेरी लाठी है, मैं इसपर टेक लगाता हूं, और इससे अपनी बकरियों के लिए पत्ते झाड़ता हूं; और इससे मेरी दूसरी ज़रूरतें भी वाबस्ता हैं"।

19. कहा, "डाल दे उसे, ऐ मूसा!"

20. पस उसने उसे डाल दिया, तो नागहां क्या देखते हैं कि वह एक सांप है जो दौड़ रहा है।

21. फ़रमाया, "इसे पकड़ ले, और डर मत; हम इसे इसकी पहली हालत पर लौटा देंगे।

22. और अपने हाथ अपने बाज़ू की तरफ़ समेट ले; वह बग़ैर किसी ऐब के चमकता सफ़ेद दूसरी निशानी बनकर निकलेगा।

23. इसलिए कि हम तुझे अपनी बड़ी निशानियां दिखाएं।

24. तू फ़िरऔन के पास जा; वह निहायत सरकश हो गया है"।

25. उसने अर्ज़ किया, "मेरे रब, मेरा सीना मेरे लिए खोल दे।

26. और मेरी मुहिम को मेरे लिए आसान कर दे।

27. और मेरी ज़बान की गिरह खोल दे।

28. ताकि वो मेरी बात समझ सकें।

29. और मेरे लिए मेरे अपने घर वालों में से एक हाथ बटाने वाला मुक़र्रर कर दे,

30. हारून को जो मेरा भाई है,

31. उसके ज़रिए से मेरी कमर को मज़बूत कर,

32. और उसे मेरे काम में शरीक कर दे।

33. कि हम ज़्यादा से ज़्यादा तेरी तसबीह करें,

34. और ज़्यादा से ज़्यादा तेरा ज़िक्र करें।

व अक़िमिस्सला-त लिज़िक्री (14)

इन्नस्सा-अ़-त आति-यतुन् अकादु उख़्फ़ीहा लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा तस्आ़ (15)

फ़ला यसुद्दन्न-क अ़न्हा मल्ला युअ्मिनु बिहा वत्त-ब-अ़ हवाहु फ़-तर्दा (16)

व मा तिल्-क बि-यमीनि-क या मूसा (17)

क़ा-ल हि-य अ़सा-य अ-तवक्क-उ अ़लैहा व अहुश्शु बिहा अ़ला-ग़-नमी व लि-य फ़ीहा मआरिबु उख़्रा (18)

क़ा-ल अल्क़िहा या मूसा (19)

फ़-अल्क़ाहा फ़-इज़ा हि-य हय्यतुन् तस्आ़ (20)

क़ा-ल ख़ुज़्हा व ला त-ख़फ़् सनुअ़ीदुहा सी-र-तहल्- ऊला (21)

वज़्मुम् य-द-क इला जनाहि-क तख़्रुज् बैज़ा-अ मिन् ग़ैरि सूइन् आ-यतन् उख़्रा (22)

लिनुरि-य-क मिन् आयातिनल्-कुब्रा (23)

इज़्हब् इला फ़िर्औ़-न इन्नहू तग़ा (24) ●

क़ा-ल रब्बिश्रह़ ली सद्री (25)

व यस्सिर् ली अम्री (26)

वह्लुल् अ़ुक्द-तम् मिल्-लिसानी (27)

यफ़्क़हू क़ौली (28)

वज्अ़ल्-ली वज़ीरम्-मिन् अह्ली (29)

हारू-न अख़ि-(30)

-शदुद् बिही अज़्री (31)

व अश्रिक्हु फ़ी अम्री (32)

कै नुसब्बि-ह-क कसीरंव्-(33)

-व नज़्कु-र-क कसीरा (34)

وَأَقِمِ الصَّلٰوةَ لِذِكْرِيْ ۝١٤
إِنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ أَكَادُ أُخْفِيْهَا لِتُجْزٰى
كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا تَسْعٰى ۝١٥
فَلَا يَصُدَّنَّكَ عَنْهَا مَنْ لَّا يُؤْمِنُ بِهَا
وَاتَّبَعَ هَوٰىهُ فَتَرْدٰى ۝١٦
وَمَا تِلْكَ بِيَمِيْنِكَ يٰمُوْسٰى ۝١٧
قَالَ هِيَ عَصَايَۚ أَتَوَكَّؤُا عَلَيْهَا وَأَهُشُّ
بِهَا عَلٰى غَنَمِيْ وَلِيَ فِيْهَا مَاٰرِبُ
أُخْرٰى ۝١٨
قَالَ أَلْقِهَا يٰمُوْسٰى ۝١٩
فَأَلْقٰىهَا فَإِذَا هِيَ حَيَّةٌ تَسْعٰى ۝٢٠
قَالَ خُذْهَا وَلَا تَخَفْ سَنُعِيْدُهَا
سِيْرَتَهَا الْأُوْلٰى ۝٢١
وَاضْمُمْ يَدَكَ إِلٰى جَنَاحِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ
مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ اٰيَةً أُخْرٰى ۝٢٢
لِنُرِيَكَ مِنْ اٰيٰتِنَا الْكُبْرٰى ۝٢٣
ع اِذْهَبْ إِلٰى فِرْعَوْنَ إِنَّهٗ طَغٰى ۝٢٤
قَالَ رَبِّ اشْرَحْ لِيْ صَدْرِيْ ۝٢٥
وَيَسِّرْ لِيْٓ أَمْرِيْ ۝٢٦
وَاحْلُلْ عُقْدَةً مِّنْ لِّسَانِيْ ۝٢٧
يَفْقَهُوْا قَوْلِيْ ۝٢٨
وَاجْعَلْ لِّيْ وَزِيْرًا مِّنْ أَهْلِيْ ۝٢٩
هٰرُوْنَ أَخِي ۝٣٠
اشْدُدْ بِهٖٓ أَزْرِيْ ۝٣١
وَأَشْرِكْهُ فِيْٓ أَمْرِيْ ۝٣٢
كَيْ نُسَبِّحَكَ كَثِيْرًا ۝٣٣
وَّنَذْكُرَكَ كَثِيْرًا ۝٣٤

35. यक़ीनन तू हमारा निगरान-ए-हाल है"।

36. फ़रमाया, "दिया गया तुझे जो तूने मांगा, ऐ मूसा।

37. हम तो तुझपर एक मरतबा और भी एहसान कर चुके हैं,

38. जब हमने तेरी मां के दिल में यह बात डाली थी जो अब वही की जा रही है।

39. कि उसको सन्दूक़ में रख दे, फिर उसे दरिया में डाल दे, फिर दरिया उसे किनारे पर डाल दे कि उसे मेरा दुश्मन और उसका दुश्मन उठा ले। मैंने अपनी तरफ़ से तुझपर अपनी मुहब्बत का परतौ डाला (कि तू महफ़ूज़ रहे) और ताकि मेरी निगरानी में तेरी परवरिश और तर्बियत हो,

40. याद कर, जबकि तेरी बहन जाती और कहती थी, 'क्या मैं तुम्हें उसका पता बता दूं जो इसकी परवरिश अपने ज़िम्मे ले ले? इस तरह हमने फिर तुझे तेरी मां के पास पहुंचा दिया ताकि उसकी आंख ठंडी हो, और उसे ग़म न हो। और याद कर तूने एक शख़्स को क़त्ल कर दिया था, फिर हमने तुझे ग़म से नजात दी, और हमने तुझे ख़ूब परखा। फिर तू कई साल मदयन के लोगों में ठहरा रहा, फिर ऐ मूसा, तू ठीक कार-ए-ख़ास पर आ गया है।

41. हमने तुझे अपने लिए तैयार किया है;

42. जा तू और तेरा भाई मेरी निशानियों के साथ, और मेरे ज़िक्र में ढीले मत पड़ना।

43. जाओ दोनों फ़िरऔन के पास कि वह सरकश हो गया है;

44. उससे नर्म बात करना शायद वह याददिहानी हासिल करे, या डरे"।

45. दोनों ने अर्ज़ किया, "हमारे रब, हमें इसका ख़ौफ़ है कि वह हम पर ज़्यादती करे, या सरकशी करने लग जाए"।

46. फ़रमाया, "डरो नहीं, मैं तुम्हारे साथ हूं, सुनता और देखता हूं।

47. पस जाओ उसके पास, और कहो, "हम तेरे रब के रसूल हैं, बनी इसराईल को हमारे साथ भेज दे। और उन्हें मुबतला-ए-अज़ाब न रख, हम

इन्न-क कुन्-त बिना बसीरा (35)

क़ा-ल क़द् ऊती-त सुअ्‌ल-क या मूसा (36)

व ल-क़द् मनन्ना अ़लै-क मर्रतन् उख़्रा (37)

इज़् औहैना इला उम्मि-क मा यूहा (38)

अनिक़्ज़िफ़ीहि फ़ित्ताबूति फ़क़्ज़िफ़ीहि फ़िल्यम्मि फ़ल्युल्क़िहिल्-यम्मु बिस्साहिलि यअ्‌ख़ुज़्हु अ़दुव्वुल्ली व अ़दुव्वुल्लहू, व अल्क़ैतु अ़लै-क म-हब्बतम्-मिन्नी, व लितुस्न-अ़ अ़ला अ़ैनी ● (39)

इज़् तम्शी उख़्तु-क फ़-तक़ूलु हल् अदुल्लुकुम् अ़ला मंय्यक्फ़ुलुहू, फ़-रजअ्‌ना-क इला उम्मि-क कै तक़र्-र अ़ैनुहा व ला तह्ज़-न, व क़तल्-त नफ़्सन् फ़-नज्जैना-क मिनल्-ग़म्मि व फ़तन्ना-क फ़ुतूनन्, फ़-लबिस्-त सिनी-न फ़ी अह्लि मद्य-न सुम्-म जिअ्-त अ़ला क़-दरिंय्-या मूसा (40)

वस्त-नअ्‌तु-क लिनफ़्सी (41)

इज़्हब् अन्-त व अख़ू-क बिआयाती व ला तनिया फ़ी ज़िक्री (42)

इज़्हबा इला फ़िर्‌औ़-न इन्नहू तग़ा (43)

फ़क़ूला लहू क़ौलल्-लय्यिनल्-लअ़ल्लहू य-तज़क्करु औ यख़्शा (44)

क़ाला रब्बना इन्नना नख़ाफ़ु अंय्यफ़्रु-त अ़लैना औ अंय्यत्ग़ा (45)

क़ा-ल ला तख़ाफ़ा इन्ननी म-अ़कुमा अस्मअु व अरा (46)

फ़अ्‌तियाहु फ़क़ूला इन्ना रसूला रब्बि-क फ़-अर्सिल् म-अ़ना बनी इस्राई-ल व ला तुअ़ज़्ज़िब्हुम्,

إِنَّكَ كُنتَ بِنَا بَصِيرًا ۝٣٥
قَالَ قَدْ أُوتِيتَ سُؤْلَكَ يَٰمُوسَىٰ ۝٣٦
وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلَيْكَ مَرَّةً أُخْرَىٰٓ ۝٣٧
إِذْ أَوْحَيْنَآ إِلَىٰٓ أُمِّكَ مَا يُوحَىٰٓ ۝٣٨
أَنِ ٱقْذِفِيهِ فِى ٱلتَّابُوتِ فَٱقْذِفِيهِ فِى
ٱلْيَمِّ فَلْيُلْقِهِ ٱلْيَمُّ بِٱلسَّاحِلِ يَأْخُذْهُ
عَدُوٌّ لِّى وَعَدُوٌّ لَّهُۥ ۚ وَأَلْقَيْتُ عَلَيْكَ مَحَبَّةً
مِّنِّى ۚ وَلِتُصْنَعَ عَلَىٰ عَيْنِىٓ ۝٣٩
إِذْ تَمْشِىٓ أُخْتُكَ فَتَقُولُ هَلْ أَدُلُّكُمْ
عَلَىٰ مَن يَكْفُلُهُۥ ۖ فَرَجَعْنَٰكَ إِلَىٰٓ
أُمِّكَ كَىْ تَقَرَّ عَيْنُهَا وَلَا تَحْزَنَ ۚ
وَقَتَلْتَ نَفْسًا فَنَجَّيْنَٰكَ مِنَ ٱلْغَمِّ
وَفَتَنَّٰكَ فُتُونًا ۚ فَلَبِثْتَ سِنِينَ فِىٓ
أَهْلِ مَدْيَنَ ۚ ثُمَّ جِئْتَ عَلَىٰ قَدَرٍ
يَٰمُوسَىٰ ۝٤٠
وَٱصْطَنَعْتُكَ لِنَفْسِى ۝٤١
ٱذْهَبْ أَنتَ وَأَخُوكَ بِـَٔايَٰتِى وَلَا تَنِيَا
فِى ذِكْرِى ۝٤٢
ٱذْهَبَآ إِلَىٰ فِرْعَوْنَ إِنَّهُۥ طَغَىٰ ۝٤٣
فَقُولَا لَهُۥ قَوْلًا لَّيِّنًا لَّعَلَّهُۥ يَتَذَكَّرُ
أَوْ يَخْشَىٰ ۝٤٤
قَالَا رَبَّنَآ إِنَّنَا نَخَافُ أَن يَفْرُطَ عَلَيْنَآ
أَوْ أَن يَطْغَىٰ ۝٤٥
قَالَ لَا تَخَافَآ ۖ إِنَّنِى مَعَكُمَآ أَسْمَعُ
وَأَرَىٰ ۝٤٦
فَأْتِيَاهُ فَقُولَآ إِنَّا رَسُولَا رَبِّكَ فَأَرْسِلْ
مَعَنَا بَنِىٓ إِسْرَٰٓءِيلَ ۖ وَلَا تُعَذِّبْهُمْ ۖ

तेरे पास तेरे रब की निशानी लेकर आए हैं; और सलामती है उसके लिए जो हिदायत की पैरवी करे।

48. बेशक हमारी तरफ़ वही हुई है कि अज़ाब उसके लिए है जो झुटलाए और मुंह फेरे"।

49. उसने कहा, "अच्छा तुम दोनों का रब कौन है, ऐ मूसा?"

50. कहा, "हमारा रब वह है जिसने हर चीज़ को उसकी साख़्त बख़्शी, फिर रहनुमाई की"।

51. उसने कहा, "अच्छा तो उन अगली नस्लों का क्या हाल है?"

52. कहा, "उसका इल्म मेरे रब के पास एक नविश्ता में महफ़ूज़ है; मेरा रब न चूकता है और न भूलता है"।

53. "वही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन में गहवारा बनाया, और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते जारी किए, और आसमान से पानी उतारा, फिर हमने उसके ज़रिए से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के पेड़-पौधे निकाले।

54. खाओ, और चौपायों को भी चराओ! बेशक इसमें कितनी ही निशानियां हैं अक़्ल रखनेवालों के लिए,

55. उसी से हमने तुम्हें पैदा किया, और उसी में तुम्हें हम लौटाते हैं, और उसी से तुम्हें दोबारा निकालेंगे।"

56. और हमने फ़िरऔन को अपनी सब निशानियां दिखाईं, लेकिन उसने झुटलाया, और इनकार किया।

57. उसने कहा, "ऐ मूसा, क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि अपने जादू से हमको अपनी सर ज़मीन से निकाल दे?

58. अच्छा हम भी तेरे पास ऐसा ही जादू लाते हैं; अब हमारे और अपने दरमियान एक मक़ाम-ए-मुअय्यन ठहरा ले कोई बीच की जगह, न हम उसकी ख़िलाफ़ वर्ज़ी करें और न तू"।

59. कहा, "जश्न का दिन तुम्हारे वादे का है, और यह कि लोग दिन चढ़े इकट्ठे हो जाएं"।

60. तब फ़िरऔन ने पलटकर अपने सारे हथकन्डे जमा किए, और आ गया।

61. मूसा ने उन लोगों से कहा, "तबाही है तुम्हारी, अल्लाह पर झूट न बांधो कि एक अज़ाब से वह तुम्हें

क़द् जिअ्ना-क बिआयतिम्
मिर्रब्बि-क, वस्सलामु अ़ला
मनित्त-बअ़ल्-हुदा (47)
इन्ना क़द् ऊहि-य इलैना
अन्नल्-अ़ज़ा-ब अ़ला मन् कज़्ज़-ब
व तवल्ला (48)
क़ा-ल फ़-मर्रब्बुकुमा या मूसा (49)
क़ा-ल रब्बुनल्लज़ी अअ्ता कुल्-ल
शैइन् ख़ल्क़हू सुम्-म हदा (50)
क़ा-ल फ़मा बालुल्-क़ुरूनिल्-ऊला
(51)
क़ा-ल अ़िल्मुहा अ़िन्-द रब्बी फ़ी
किताबिन् ला यज़िल्लु रब्बी व ला
यन्सा (52)
अल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्-अर्-ज़
मह्दंव्-व स-ल-क लकुम् फ़ीहा
सुबुलंव्-व अन्ज़-ल मिनस्समा-इ
मा-अन्, फ़-अख़्रज्ना बिही
अज़्वाजम् मिन् नबातिन् शत्ता (53)
कुलू वर्अ़ौ अन्आ़-मकुम्, इन्-न
फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लि-उलिन्नुहा
(54) ●
मिन्हा ख़लक़्नाकुम् व फ़ीहा नुअ़ीदुकुम्
व मिन्हा नुख़्रिजुकुम् ता-रतन् उख़्रा
(55)
व ल-क़द् अरैनाहु आयातिना कुल्लहा
फ़-कज़्ज़-ब व अबा (56)
क़ा-ल अजिअ्तना लितुख़्रि-जना मिन्
अर्ज़िना बिसिह्रि-क या मूसा (57)
फ़-लनअ्तियन्न-क
बिसिह्रिम्-मिस्लिही फ़ज्अ़ल् बैनना
व बैन-क मौअ़िदल् ला नुख़्लिफ़ुहू
नह्नु व ला अन्-त मकानन् सुवा
(58)
क़ा-ल मौअ़िदुकुम यौमुज़्ज़ीनति व
अंय्युह्श-रन्नासु ज़ुहा (59)
फ़-तवल्ला फ़िर्औ़नु फ़-ज-म-अ़
कैदहू सुम्-म अता (60)
क़ा-ल लहुम् मूसा वै-लकुम ला तफ़्तरू

قَدْ جِئْنٰكَ بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّكَ ؕ وَالسَّلٰمُ عَلٰى
مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى ۝٤٧
اِنَّا قَدْ اُوْحِىَ اِلَيْنَآ اَنَّ الْعَذَابَ عَلٰى
مَنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ۝٤٨
قَالَ فَمَنْ رَّبُّكُمَا يٰمُوْسٰى ۝٤٩
قَالَ رَبُّنَا الَّذِىْٓ اَعْطٰى كُلَّ شَىْءٍ خَلْقَهٗ
ثُمَّ هَدٰى ۝٥٠
قَالَ فَمَا بَالُ الْقُرُوْنِ الْاُوْلٰى ۝٥١
قَالَ عِلْمُهَا عِنْدَ رَبِّىْ فِىْ كِتٰبٍ ۚ لَا يَضِلُّ
رَبِّىْ وَلَا يَنْسَى ۝٥٢
الَّذِىْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّسَلَكَ
لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا وَّاَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ؕ
فَاَخْرَجْنَا بِهٖٓ اَزْوَاجًا مِّنْ نَّبَاتٍ شَتّٰى ۝٥٣
كُلُوْا وَارْعَوْا اَنْعَامَكُمْ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ
ع لَاٰيٰتٍ لِّاُولِى النُّهٰى ۝٥٤
مِنْهَا خَلَقْنٰكُمْ وَفِيْهَا نُعِيْدُكُمْ وَمِنْهَا
نُخْرِجُكُمْ تَارَةً اُخْرٰى ۝٥٥
وَلَقَدْ اَرَيْنٰهُ اٰيٰتِنَا كُلَّهَا فَكَذَّبَ وَاَبٰى ۝٥٦
قَالَ اَجِئْتَنَا لِتُخْرِجَنَا مِنْ اَرْضِنَا
بِسِحْرِكَ يٰمُوْسٰى ۝٥٧
فَلَنَاْتِيَنَّكَ بِسِحْرٍ مِّثْلِهٖ فَاجْعَلْ بَيْنَنَا
وَبَيْنَكَ مَوْعِدًا لَّا نُخْلِفُهٗ نَحْنُ
وَلَآ اَنْتَ مَكَانًا سُوًى ۝٥٨
قَالَ مَوْعِدُكُمْ يَوْمُ الزِّيْنَةِ وَاَنْ
يُّحْشَرَ النَّاسُ ضُحًى ۝٥٩
فَتَوَلّٰى فِرْعَوْنُ فَجَمَعَ كَيْدَهٗ ثُمَّ اَتٰى ۝٦٠
قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰى وَيْلَكُمْ لَا تَفْتَرُوْا عَلَى

तबाह कर दे और झूट जिस किसी ने भी बांधा वह नाकाम रहा"।

62. इसपर अपने मुआमले में बाहम उन्होंने तबादला-ए-ख़याल किया और चुपके-चुपके सरगोशी की।

63. कहने लगे, "ये दोनों जादूगर हैं, चाहते हैं कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी अपनी सरज़मीन से निकाल बाहर करें, और तुम्हारे बेहतरीन और आला निज़ाम को दरहम-बरहम करके रख दें।

64. पस तुम सब मिलकर अपनी तदबीर इकट्ठी कर लो; फिर सफ़ आरा होकर आओ। आज वही कामयाब है जो ग़ालिब रहा"।

65. वो बोले, "ऐ मूसा, या तो तुम पेश करो या फिर हम पहले पेश करते हैं"।

66. कहा, "नहीं बल्कि तुम ही पेश करो!" फिर नागहां क्या देखते हैं कि उनकी रस्सियां और उनकी लाठियां उनके जादू से उसके ख़याल में दौड़ रही हैं;

67. और मूसा ने अपने जी में ख़ौफ़ महसूस किया।

68. हमने कहा, "मत डर! बेशक ग़ालिब तू ही है।

69. और डाल दे जो तेरे दाहिने हाथ में है, जो कुछ उन्होंने रचा है वह उसे निगल जाएगा; जो कुछ उन्होंने रचा है वह तो बस जादूगर का फ़रेब है, और जादूगर कामयाब नहीं होता, ख़्वाह जैसे भी आए"।

70. आख़िरकार जादूगर सजदे में गिर पड़े, बोले, "हम हारून और मूसा के रब पर ईमान ले आए"।

71. उसने कहा, "तुमने मान लिया उसको क़ब्ल इसके कि मैं तुम्हें इसकी इजाज़त देता? यक़ीनन यह तुम सबका बड़ा है, जिसने तुम्हें जादू सिखाया है; अच्छा अब मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुख़ालिफ़ सिमतों से कटवा दूंगा, और खजूर के तनों पर तुम्हें सूली दे दूंगा; तब तुम्हें लाज़िमन मालूम हो जाएगा कि हममें किसका अज़ाब ज़्यादा सख़्त, और देरपा है"।

72. उन्होंने कहा, "जो रौशन निशानियां हमारे सामने आ चुकी हैं उनके मुक़ाबले में, और उस ज़ात पर जिसने हमें पैदा किया है हम हरगिज़ तुझे तरजीह नहीं दे सकते। तू जो कुछ फ़ैसला करनेवाला है कर ले; तू बस

अ़लल्लाहि कज़िबन् फ़युस्हि-तकुम् बि-अ़ज़ाबिन् व क़द् ख़ा-ब मनिफ़्तरा (61)

फ़-तनाज़अू अम्-रहुम् बैनहुम् व अ-सर्रुन्नज्वा (62)

क़ालू इन् हाज़ानि लसाहिरानि युरीदानि अंय्युख़्रिजाकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिह्रिहिमा व यज़्हबा बि-तरी-क़ति-कुमुल्-मुस्ला (63)

फ़-अज्मिअू कैदकुम् सुम्मअ्तू सफ़्फ़न् व क़द् अफ़्ल-हल्यौ-म मनिस्तअ्ला (64)

क़ालू या मूसा इम्मा अन् तुल्कि-य व इम्मा अन् नकू-न अव्व-ल मन् अल्क़ा (65)

क़ा-ल बल् अल्क़ू फ़-इज़ा हिबालुहुम् व अ़िसिय्युहुम् युख़य्यलु इलैहि मिन् सिह्रिहिम् अन्नहा तस्आ़ (66)

फ़-औज-स फ़ी नफ़्सिही ख़ी-फ़तम्-मूसा (67)

क़ुल्ना ला तख़फ़् इन्न-क अन्तल्-अअ्ला (68)

व अल्क़ि मा फ़ी यमीनि-क तल्क़फ़् मा-स-नअू, इन्नमा स-नअू कैदु साहिरिन्, व ला युफ़्लिहुस्साहिरु हैसु अता (69)

फ़-उल्क़ियस्स-ह-रतु सुज्ज-दन् क़ालू आमन्ना बिरब्बि हारू-न व मूसा (70)

क़ा-ल आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आज़-न लकुम् इन्नहू ल-कबीरुकुमुल्लज़ी अ़ल्ल-मकुमुस्-सिह्-र फ़-ल-उक़त्तिअ़न्-न ऐदि-यकुम् व अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव्-व ल-उसल्लिबन्नकुम् फ़ी जुज़ूअ़िन्नख़्लि व ल-तअ्लमुन्-न अय्युना अशद्दु अ़ज़ाबंव्-व अब्क़ा (71)

क़ालू लन् नुअ्सि-र-क अ़ला मा जा-अना मिनल्-बय्यिनाति वल्लज़ी फ़-त-रना फ़क़्ज़ि मा अन्-त

اللهِ كَذِبًا فَيُسْحِتَكُمْ بِعَذَابٍ ۚ
وَقَدْ خَابَ مَنِ افْتَرٰى ۝٦١
فَتَنَازَعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ وَاَسَرُّوا
النَّجْوٰى ۝٦٢
قَالُوْٓا اِنْ هٰذٰنِ لَسٰحِرٰنِ يُرِيْدٰنِ
اَنْ يُّخْرِجٰكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهِمَا
وَيَذْهَبَا بِطَرِيْقَتِكُمُ الْمُثْلٰى ۝٦٣
فَاَجْمِعُوْا كَيْدَكُمْ ثُمَّ ائْتُوْا صَفًّا ۚ
وَقَدْ اَفْلَحَ الْيَوْمَ مَنِ اسْتَعْلٰى ۝٦٤
قَالُوْا يٰمُوْسٰٓى اِمَّآ اَنْ تُلْقِيَ وَاِمَّآ
اَنْ نَّكُوْنَ اَوَّلَ مَنْ اَلْقٰى ۝٦٥
قَالَ بَلْ اَلْقُوْا ۚ فَاِذَا حِبَالُهُمْ وَعِصِيُّهُمْ
يُخَيَّلُ اِلَيْهِ مِنْ سِحْرِهِمْ اَنَّهَا تَسْعٰى ۝٦٦
فَاَوْجَسَ فِيْ نَفْسِهٖ خِيْفَةً مُّوْسٰى ۝٦٧
قُلْنَا لَا تَخَفْ اِنَّكَ اَنْتَ الْاَعْلٰى ۝٦٨
وَاَلْقِ مَا فِيْ يَمِيْنِكَ تَلْقَفْ مَا صَنَعُوْا ۗ
اِنَّمَا صَنَعُوْا كَيْدُ سٰحِرٍ ۗ وَلَا يُفْلِحُ
السّٰحِرُ حَيْثُ اَتٰى ۝٦٩
فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سُجَّدًا قَالُوْٓا اٰمَنَّا
بِرَبِّ هٰرُوْنَ وَمُوْسٰى ۝٧٠
قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۭ
اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ
فَلَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ
خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ فِيْ جُذُوْعِ
النَّخْلِ وَلَتَعْلَمُنَّ اَيُّنَآ اَشَدُّ عَذَابًا وَّاَبْقٰى ۝٧١
قَالُوْا لَنْ نُّؤْثِرَكَ عَلٰى مَا جَآءَنَا
مِنَ الْبَيِّنٰتِ وَالَّذِيْ فَطَرَنَا فَاقْضِ مَآ اَنْتَ

इसी दुनिया की ज़िन्दगी का फ़ैसला कर सकता है।

73. हम तो अपने रब पर ईमान ले आए, ताकि वह हमारी ख़ताओं को माफ़ कर दे, और उस जादू को भी जिसपर तूने हमें मजबूर किया; अल्लाह ही बेहतर और बाक़ी रहनेवाला है"।

74. — हक़ीक़त यह है कि जो कोई अपने रब के पास मुजरिम होकर आया उसके लिए जहन्नम है जिसमें न वह मरेगा और न जिएगा।

75. और जो कोई उसके पास मोमिन होकर आया, जिसने नेक आमाल इख़्तियार किए होंगे, तो ऐसे लोगों के लिए तो बुलन्द दरजात हैं;

76. अद्न के बाग़ हैं, जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, उनमें वो मुस्तक़िल रहेंगे; यह बदला है उसका जिसने ख़ुद को बालीदगी से बहरामन्द किया।

77. और हमने मूसा की तरफ़ वही की कि "रातों रात मेरे बन्दों को ले कर निकल जा और उनके लिए दरिया में सूखा रास्ता निकाल ले, न तो तुझे तआक़ुब और पकड़े जाने का ख़ौफ़ हो, और न किसी और चीज़ से तुझे डर लगे"।

78. फ़िरऔन ने अपने लश्कर के साथ उनका पीछा किया; बिलआख़िर पानी उनपर छा गया जैसा कि उसे उनपर छा जाना था।

79. फ़िरऔन ने अपनी क़ौम को गुमराह किया और उसे उसने राह न दिखाई।

80. ऐ बनी इसराईल! हमने तुम्हें तुम्हारे दुश्मन से नजात दी; और तूर के मुबारक जानिब का तुमसे वादा दिया, और तुमपर मन्न और सलवा उतारा;

81. — "खाओ जो अच्छी पाकीज़ा चीज़ें हमने तुम्हें अता की हैं; लेकिन उसमें हद से आगे न बढ़ो कि तुमपर मेरा ग़ज़ब टूट पड़े; और जिस किसी पर मेरा ग़ज़ब टूटा वह गिर कर ही रहा।

81. अलबत्ता जो तौबा कर ले और ईमान लाए, और नेक अमल करे, फिर हिदायत की रविश इख़्तियार करे उसके लिए यक़ीनन मैं बहुत माफ़ करने वाला हू"।

83. — "और अपनी क़ौम को छोड़कर तुझे जल्द आने पर किस चीज़ ने उभारा ऐ मूसा?"

84. उसने कहा, "वो मेरे पीछे ही हैं, और ऐ मेरे रब मैं जल्द ही बढ़

क़ाज़िन्, इन्नमा तक़ज़ी हाज़िहिल्-हयातद्-दुन्या (72)

इन्ना आमन्ना बिरब्बिना लियग़्फ़ि-र लना ख़तायाना व मा अक्रहतना अ़लैहि मिनस्सिह्रि, वल्लाहु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा ● (73)

इन्नहू मंय्यअ्ति रब्बहू मुज्रिमन् फ़-इन्-न लहू जहन्न-म, ला यमूतु फ़ीहा व ला यह्या (74)

व मंय्यअ्तिही मुअ्मिनन् क़द् अ़मिलस्सालिहाति फ़-उलाइ-क लहुमुद्-द-रजातुल्-उ़ला (75)

जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, व ज़ालि-क जज़ा-उ मन् तज़क्का (76) ●

व ल-क़द् औहैना इला मूसा अन् अस्रि बिअ़िबादी फ़ज़्रिब् लहुम् तरीक़न् फ़िल्बह्रि य-बसल्-ला तख़ाफ़ु द-रकंव्-व ला तख़्शा (77)

फ़-अत्ब-अ़हुम् फ़िर्औ़नु बिजुनूदिही फ़-ग़शि-यहुम् मिनल्-यम्मि मा ग़शि-यहुम् (78)

व अज़ल्-ल फ़िर्औ़नु क़ौ-महू व मा हदा (79)

या बनी इस्राई-ल क़द् अन्जैनाकुम् मिन् अ़दुव्विकुम् व वाअ़द्नाकुम् जानिबत्तूरिल्-ऐम-न व नज़्ज़ल्ना अ़लैकुमुल्-मन्-न वस्सल्वा (80)

कुलू मिन् तय्यिबाति मा रज़क़्नाकुम् व ला तत़्ग़ौ फ़ीहि फ़-यहिल्-ल अ़लैकुम् ग़-ज़बी व मंय्यह्लिल् अ़लैहि ग़-ज़बी फ़-क़द् हवा (81)

व इन्नी ल-ग़फ़्फ़ारुल्-लिमन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल सालिहन् सुम्मह्-तदा (82)

व मा अअ्ज-ल-क अ़न् क़ौमि-क या मूसा (83)

क़ा-ल हुम् उला-इ अ़ला अ-सरी व अ़जिल्तु

قَاضٍ ۭ اِنَّمَا تَقْضِيْ هٰذِهِ الْحَيٰوةَ
الدُّنْيَا ۝٧٢
اِنَّآ اٰمَنَّا بِرَبِّنَا لِيَغْفِرَ لَنَا خَطٰيٰنَا وَمَآ
اَكْرَهْتَنَا عَلَيْهِ مِنَ السِّحْرِ ۭ وَاللّٰهُ
خَيْرٌ وَّاَبْقٰى ۝٧٣
اِنَّهٗ مَنْ يَّاْتِ رَبَّهٗ مُجْرِمًا فَاِنَّ
لَهٗ جَهَنَّمَ ۭ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى ۝٧٤
وَمَنْ يَّاْتِهٖ مُؤْمِنًا قَدْ عَمِلَ الصّٰلِحٰتِ
فَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمُ الدَّرَجٰتُ الْعُلٰى ۝٧٥
جَنّٰتُ عَدْنٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰۗؤُا مَنْ تَزَكّٰى ۝٧٦
وَلَقَدْ اَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى ڏ اَنْ اَسْرِ
بِعِبَادِيْ فَاضْرِبْ لَهُمْ طَرِيْقًا فِي الْبَحْرِ
يَبَسًا ۙ لَّا تَخٰفُ دَرَكًا وَّلَا تَخْشٰى ۝٧٧
فَاَتْبَعَهُمْ فِرْعَوْنُ بِجُنُوْدِهٖ فَغَشِيَهُمْ
مِّنَ الْيَمِّ مَا غَشِيَهُمْ ۝٧٨
وَاَضَلَّ فِرْعَوْنُ قَوْمَهٗ وَمَا هَدٰى ۝٧٩
يٰبَنِيْٓ اِسْرَاۗءِيْلَ قَدْ اَنْجَيْنٰكُمْ مِّنْ
عَدُوِّكُمْ وَوٰعَدْنٰكُمْ جَانِبَ الطُّوْرِ
الْاَيْمَنَ وَنَزَّلْنَا عَلَيْكُمُ الْمَنَّ وَالسَّلْوٰى ۝٨٠
كُلُوْا مِنْ طَيِّبٰتِ مَا رَزَقْنٰكُمْ
وَلَا تَطْغَوْا فِيْهِ فَيَحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبِيْ ۚ
وَمَنْ يَّحْلِلْ عَلَيْهِ غَضَبِيْ فَقَدْ هَوٰى ۝٨١
وَاِنِّىْ لَغَفَّارٌ لِّمَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ثُمَّ اهْتَدٰى ۝٨٢
وَمَآ اَعْجَلَكَ عَنْ قَوْمِكَ يٰمُوْسٰى ۝٨٣
قَالَ هُمْ اُولَاۗءِ عَلٰٓي اَثَرِيْ وَعَجِلْتُ

आया तेरी तरफ़, ताकि तू राज़ी हो जाए"।

85. कहा, "अच्छा तो हमने तेरे पीछे तेरी क़ौम को आज़माइश में डाल दिया है। और सामरी ने उन्हें गुमराह कर डाला"।

86. तब मूसा निहायत गुस्से और रंज की हालत में अपनी क़ौम की तरफ़ लौटा, कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या तुमसे तुम्हारे रब ने अच्छा वादा नहीं फ़रमाया था? क्या तुमपर लम्बी मुद्दत गुज़र गई, या तुमने यही चाहा कि तुमपर तुम्हारे रब का ग़ज़ब ही टूटे कि तुमने मुझसे वादा ख़िलाफ़ी की?"

87. उन्होंने कहा, "हमने आपसे किए हुए अ़हद की ख़िलाफ़ वर्ज़ी कुछ अपने इख़्तियार से नहीं की; बल्कि लोगों के ज़ेवरों के बोझ हम उठाए हुए थे, फिर हमने उनको फेंक दिया। तो सामरी ने इसी तरह अलक़ा किया (डाल दिया) था।

88. — और उसने उनके लिए एक बछड़ा ढाल कर पेश किया, एक धड़ जिसकी आवाज़ बैल की थी; फिर उन्होंने कहा, "यही तुम्हारा माबूद है, और मूसा का माबूद भी, मगर वह भूल गया है"।

89. क्या वो देखते न थे कि न वह किसी बात का उन्हें जवाब देता है, और न उसे उनके नुक़सान का कुछ इख़्तियार हासिल है और न नफ़ा का?

90. और हारून इससे पहले उनसे कह भी चुका था कि "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम इसकी वजह से बस फ़ितने में पड़ गए हो; तुम्हारा रब तो रहमान है; लिहाज़ा तुम मेरी पैरवी करो और मेरी बात मानो"।

91. उन्होंने कहा: "जब तक मूसा हमारे पास लौटकर न आ जाए हम तो इससे ही लगे बैठे रहेंगे"।

92-93. उसने कहा, "ऐ हारून, जब तुमने देखा कि ये गुमराह हो गए हैं, तो किस चीज़ ने तुम्हें रोका कि तुमने मेरा इत्तिबाअ न किया? क्या तुमने मेरे हुक्म की ख़िलाफ़ वर्ज़ी की?"

94. उसने कहा, "ऐ मेरी मां के बेटे, मेरी दाढ़ी न पकड़ और न मेरा सर! मुझे ख़ौफ़ हुआ कि मबादा तू यह कहे कि 'तूने बनी इसराईल में

इलै-क रब्बि लितर्ज़ा (84)

का-ल फ़-इन्ना क़द् फ़तन्ना क़ौम-क मिम्-बअ्दि-क व अज़ल्लहुमुस्-सामिरिय्यु (85)

फ़-र-ज-अ़ मूसा इला क़ौमिही ग़ज़्बा-न असिफ़न्, क़ा-ल या क़ौमि अलम् यअ़िद्कुम् रब्बुकुम् वअ़्दन् ह-सनन्, अ-फ़ता-ल अ़लैकुमुल्-अ़ह्दु अम् अरत्तुम् अंय्यहिल्-ल अ़लैकुम् ग़-ज़बुम् मिर्रब्बिकुम् फ़-अख़्लफ़्तुम् मौअ़िदी (86)

क़ालू मा अख़्लफ़्ना मौअ़ि-द-क बिमल्किना व लाकिन्ना हुम्मिल्ना औज़ारम् मिन् ज़ीनतिल्-क़ौमि फ़-क़ज़फ़्नाहा फ़-कज़ालि-क अल्क़स्-सामिरिय्यु (87)

फ़-अख़्र-ज लहुम् अ़िज्लन् ज-सदल्-लहू ख़ुवारुन् फ़क़ालू हाज़ा इलाहुकुम् व इलाहु मूसा फ़-नसि-य (88)

अ-फ़ला यरौ-न अल्ला यर्जिअ़ु इलैहिम् क़ौलंव्-व ला यम्लिकु लहुम् ज़र्रंव्-व ला नफ़्अ़ा (89) ●

व ल-क़द् क़ा-ल लहुम् हारूनु मिन् क़ब्लु या क़ौमि इन्नमा फ़ुतिन्तुम् बिही व इन्-न रब्बकुमुर्-रह्मानु फ़त्तबिअ़ूनी व अतीअ़ू अम्री (90)

क़ालू लन् नब्र-ह अ़लैहि आ़किफ़ी-न हत्ता यर्जि-अ़ इलैना मूसा (91)

क़ा-ल या हारूनु मा म-न-अ़-क इज़् रऐ-तहुम् ज़ल्लू (92)

अल्ला तत्तबि-अ़नि, अ-फ़-अ़सै-त अम्री (93)

क़ा-ल यब्नउम्-म ला तअ्ख़ुज़् बिलिह्यती व ला बिरअ्सी इन्नी ख़शीतु अन् तक़ू-ल फ़र्रक़्-त बै-न बनी इस्राई-ल व लम्

اِلَيْكَ رَبِّ لِتَرْضٰى (۸۴)
قَالَ فَاِنَّا قَدْ فَتَنَّا قَوْمَكَ مِنْۢ بَعْدِكَ
وَاَضَلَّهُمُ السَّامِرِيُّ (۸۵)
فَرَجَعَ مُوْسٰٓى اِلٰى قَوْمِهٖ غَضْبَانَ اَسِفًا ۚ
قَالَ يٰقَوْمِ اَلَمْ يَعِدْكُمْ رَبُّكُمْ وَعْدًا
حَسَنًا ۬ اَفَطَالَ عَلَيْكُمُ الْعَهْدُ اَمْ
اَرَدْتُّمْ اَنْ يَّحِلَّ عَلَيْكُمْ غَضَبٌ
مِّنْ رَّبِّكُمْ فَاَخْلَفْتُمْ مَّوْعِدِيْ (۸۶)
قَالُوْا مَآ اَخْلَفْنَا مَوْعِدَكَ بِمَلْكِنَا وَلٰكِنَّا
حُمِّلْنَآ اَوْزَارًا مِّنْ زِيْنَةِ الْقَوْمِ
فَقَذَفْنٰهَا فَكَذٰلِكَ اَلْقَى السَّامِرِيُّ ۙ (۸۷)
فَاَخْرَجَ لَهُمْ عِجْلًا جَسَدًا لَّهٗ خُوَارٌ
فَقَالُوْا هٰذَآ اِلٰهُكُمْ وَاِلٰهُ مُوْسٰى ۬
فَنَسِيَ ؕ (۸۸)
اَفَلَا يَرَوْنَ اَلَّا يَرْجِعُ اِلَيْهِمْ قَوْلًا ۙ
ع وَّلَا يَمْلِكُ لَهُمْ ضَرًّا وَّلَا نَفْعًا (۸۹)
وَلَقَدْ قَالَ لَهُمْ هٰرُوْنُ مِنْ قَبْلُ يٰقَوْمِ
اِنَّمَا فُتِنْتُمْ بِهٖ ۚ وَاِنَّ رَبَّكُمُ الرَّحْمٰنُ
فَاتَّبِعُوْنِيْ وَاَطِيْعُوْٓا اَمْرِيْ (۹۰)
قَالُوْا لَنْ نَّبْرَحَ عَلَيْهِ عٰكِفِيْنَ حَتّٰى
يَرْجِعَ اِلَيْنَا مُوْسٰى (۹۱)
قَالَ يٰهٰرُوْنُ مَا مَنَعَكَ اِذْ رَاَيْتَهُمْ
ضَلُّوْٓا ۙ (۹۲)
اَلَّا تَتَّبِعَنِ ؕ اَفَعَصَيْتَ اَمْرِيْ (۹۳)
قَالَ يَبْنَؤُمَّ لَا تَاْخُذْ بِلِحْيَتِيْ وَلَا
بِرَاْسِيْ ۚ اِنِّيْ خَشِيْتُ اَنْ تَقُوْلَ
فَرَّقْتَ بَيْنَ بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ وَلَمْ

फूट डाल दी, और मेरी बात का पास न किया'।'

95. कहा, "ऐ सामरी, तेरा क्या माजरा है?"

96. उसने कहा, "मुझे उस पर बसीरत मिली जिस पर उन्हें बसीरत न मिली, फिर मैंने रसूल के नक़्शे क़दम से एक मुट्ठी उठा ली, फिर उसे डाल दिया, और मेरे जी ने मुझे कुछ ऐसा ही सुझाया"।

97. कहा, "अच्छा तू जा! अब इस तमाम ज़िन्दगी में तेरे लिए यही है कि कहता रहे, 'कोई छूए नहीं!' और यक़ीनन तेरे लिए एक मुक़र्रर वादा है जो तुझ पर से हरगिज़ न टलेगा। और देख अपने माबूद को जिसपर तू रीझा-जमा बैठा था! हम उसे जला डालेंगे फिर उसे रेज़ा-रेज़ा करके दरिया में बिखेर देंगे।

98. "तुम्हारा माबूद तो बस वही अल्लाह है; जिस के सिवा कोई माबूद नहीं। वह अपने इल्म से हर चीज़ पर हावी है"।

99. इस तरह गुज़रे हुए हालात की ख़बरें हम तुम्हें सुनाते हैं, और हमने तुम्हें अपने पास से एक याददिहानी अता की है।

100. जिसने उससे एराज़ किया, वह यक़ीनन क़ियामत के रोज़ एक बोझ उठाएगा,

101. ऐसे लोग मुस्तक़िल इसी वबाल में रहेंगे; और क़ियामत के रोज़ वह उनके हक़ में बहुत ही बुरा बोझ साबित होगा!

102. जिस दिन सूर फूंका जाएगा; और हम मुजरिमों को उस दिन इस हालत में इकट्ठा करेंगे कि उनकी आंखें नीली पड़ गई होंगी।

103. वो आपस में चुपके-चुपके कहेंगे, "तुम बस दस ही दिन ठहरे हो"।

104. — हम ख़ूब जानते हैं जो कुछ वो कहेंगे, जबकि उनका सबसे बेहतर राए रखने वाला कहेगा, "तुम तो बस एक ही दिन ठहरे हो"।

105. वो तुमसे पहाड़ों के बारे में पूछते हैं। कह दोः "मेरा रब उन्हें धूल की तरह उड़ा देगा;

106. और इस ज़मीन को एक हमवार चटयल मैदान करके छोड़ेगा।

107. तुम उसमें न कोई बल देखोगे और न नशेब व फ़राज़"।

तर्क़ुब् क़ौली (94)

क़ा-ल फ़मा ख़त्बु-क या सामिरिय्यु (95)

क़ा-ल बसुर्तु बिमा लम् यब्सुरू बिही फ़-क़बज़्तु क़ब्ज़-तम् मिन् अ-सरिर्रसूलि फ़-नबज़्तुहा व कज़ालि-क सव्वलत् ली नफ़्सी (96)

क़ा-ल फ़ज़्हब् फ़-इन्-न ल-क फ़िल्हयाति अन् तक़ू-ल ला मिसा-स व इन्-न ल-क मौअिदल् लन् तुख़्ल-फ़हू वन्ज़ुर् इला इलाहि-कल्लज़ी ज़ल्-त अलैहि आकिफ़न्, लनुहर्रिक़न्नहू सुम्-म ल-नन्सिफ़न्नहू फ़िल्यम्मि नस्फ़ा (97)

इन्नमा इलाहुकुमुल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व, वसि-अ कुल्-ल शैइन् अ़िल्मा (98)

कज़ालि-क नक़ुस्सु अ़लै-क मिन् अम्बा-इ मा क़द् स-ब-क़ व क़द् आतैना-क मिल्लदुन्ना ज़िक्रा (99)

मन् अअ्र-ज़ अ़न्हु फ़-इन्नहू यह्मिलु यौमल्-क़ियामति विज़्रा (100)

ख़ालिदी-न फ़ीहि व सा-अ लहुम् यौमल्-क़ियामति हिम्ला (101)

यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि व नह्शुरुल्-मुज्रिमी-न यौमइज़िन् ज़ुर्क़ा (102)

य-तख़ाफ़तू-न बैनहुम् इल्लबिस्तुम् इल्ला अ़श्रा (103)

नह्नु अअ्लमु बिमा यक़ूलू-न इज़् यक़ूलु अम्सलुहुम् तरी-क़तन् इल्लबिस्तुम् इल्ला यौमा (104) ●

व यस्अलून-क अ़निल्-जिबालि फ़क़ुल् यन्सिफ़ुहा रब्बी नस्फ़ा (105)

फ़-य-ज़रुहा क़ाअ़न् सफ़्सफ़ा (106)

ला तरा फ़ीहा अ़ि-वजंव्-व ला अम्ता (107)

تَرْقُبْ قَوْلِيْ (٩٤)
قَالَ فَمَا خَطْبُكَ يٰسَامِرِيُّ (٩٥)
قَالَ بَصُرْتُ بِمَا لَمْ يَبْصُرُوْا بِهٖ فَقَبَضْتُ
قَبْضَةً مِّنْ اَثَرِ الرَّسُوْلِ فَنَبَذْتُهَا
وَكَذٰلِكَ سَوَّلَتْ لِيْ نَفْسِيْ (٩٦)
قَالَ فَاذْهَبْ فَاِنَّ لَكَ فِي الْحَيٰوةِ
اَنْ تَقُوْلَ لَا مِسَاسَ ۪ وَاِنَّ لَكَ مَوْعِدًا
لَّنْ تُخْلَفَهٗ ۚ وَانْظُرْ اِلٰٓى اِلٰهِكَ الَّذِيْ
ظَلْتَ عَلَيْهِ عَاكِفًا ۭ لَنُحَرِّقَنَّهٗ ثُمَّ
لَنَنْسِفَنَّهٗ فِي الْيَمِّ نَسْفًا (٩٧)
اِنَّمَآ اِلٰهُكُمُ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ
وَسِعَ كُلَّ شَيْءٍ عِلْمًا (٩٨)
كَذٰلِكَ نَقُصُّ عَلَيْكَ مِنْ اَنْۢبَاۗءِ مَا
قَدْ سَبَقَ ۚ وَقَدْ اٰتَيْنٰكَ مِنْ لَّدُنَّا ذِكْرًا (٩٩)
مَنْ اَعْرَضَ عَنْهُ فَاِنَّهٗ يَحْمِلُ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ وِزْرًا (١٠٠)
خٰلِدِيْنَ فِيْهِ ۭ وَسَاۗءَ لَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
حِمْلًا (١٠١)
يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ وَنَحْشُرُ الْمُجْرِمِيْنَ
يَوْمَىِٕذٍ زُرْقًا (١٠٢)
يَّتَخَافَتُوْنَ بَيْنَهُمْ اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا عَشْرًا (١٠٣)
نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَقُوْلُوْنَ اِذْ يَقُوْلُ
ع ١٥ ١٢ اَمْثَلُهُمْ طَرِيْقَةً اِنْ لَّبِثْتُمْ اِلَّا يَوْمًا (١٠٤)
وَيَسْــَٔـلُوْنَكَ عَنِ الْجِبَالِ فَقُلْ يَنْسِفُهَا
رَبِّيْ نَسْفًا (١٠٥)
فَيَذَرُهَا قَاعًا صَفْصَفًا (١٠٦)
لَّا تَرٰى فِيْهَا عِوَجًا وَّلَآ اَمْتًا (١٠٧)

108. उस दिन वो पुकारने वाले के पीछे चल पड़ेंगे और उसके सामने कोई अकड़ दिखाई न जा सकेगी; आवाज़ें रहमान के सामने दब जाएंगी; एक हल्की पस्त आवाज़ के सिवा तुम कुछ न सुनोगे।

109. उस दिन सिफ़ारिश काम न आएगी, यह और बात है कि किसी के लिए रहमान इजाज़त दे, और उसके लिए बात करने को पसन्द फ़रमाए।

110. वह जानता है जो कुछ कि उनके सामने है और जो कुछ उनके पीछे है, लेकिन वो अपने इल्म से उसका इहाता नहीं कर सकते।

111. चहरे उस हय्यु व क़य्यूम के आगे झुके होंगे। नाकाम हो गया वह शख़्स जिसने ज़ुल्म का बोझ उठाया;

112. लेकिन जो कोई नेक आमाल इख़्तियार करे और हो वह मोमिन, तो उसे न तो किसी ज़ुल्म का ख़ौफ़ होगा और न किसी हक़तलफ़ी का।

113. और इस तरह हमने इसे अरबी क़ुरआन की शक्ल में उतारा है, और इसमें हमने तरह-तरह से तम्बीहात की हैं। ताकि वो डर रखें, या यह उन्हें होश अता करे।

114. पस बुलन्द व बरतर है अल्लाह, हक़ीक़ी बादशाह! क़ुरआन के सिलसिले में जल्दी न करो जब तक कि उसकी वही तकमील को न पहुंच जाए। और कहो, "मेरे रब! मुझे इल्म में अफ़ज़ूनी (बढ़ोतरी) अता कर";

115. और हमने इससे पहले आदम पर एक अ़हद की ज़िम्मेदारी डाली थी, मगर वह भूल गया, और हमने उसमें अज़्म की पुख़्तगी न पाई।

116. और जब हमने फ़रिश्तों से कहा कि "आदम को सजदा करो", तो उन्होंने सजदा किया सिवाय इबलीस के, वह इनकार कर बैठा।

117. इसपर हमने कहा, "ऐ आदम, यक़ीनन यह तुम्हारा और तुम्हारी बीवी का दुश्मन है। ऐसा न हो कि यह तुम दोनों को बाग़ से निकलवा दे, और तुम महरूम हो जाओ।

118. तुम्हारे लिए तो ऐसा है कि न तुम यहां भूके रहोगे और न नंगे,

119. और यह कि न यहां प्यासे रहोगे और न धूप की तकलीफ़ उठाओगे"।

120. फिर शैतान ने उसे वरग़लाया, कहने लगा, "ऐ आदम! क्या मैं तुझे

यौमइज़िंय्-यत्तबिऊनद्दाअ़ि-य ला अ़ि-व-ज लहू व ख़-श-अ़तिल्-अस्वातु लिर्रह्मानि फ़ला तस्मअ़ु इल्ला हम्सा (108)

यौमइज़िल्-ला तन्फ़अ़ुश्शफ़ा-अ़तु इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह्मानु व रज़ि-य लहू क़ौला (109)

यअ़्लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला युहीतू-न बिही अ़िल्मा (110)

व अ़-नतिल्-वुजूहु लिल्हय्यिल्-क़य्यूमि, व क़द् ख़ा-ब मन् ह-म-ल ज़ुल्मा (111)

व मंय्यअ़्मल् मिनस्सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ला यख़ाफ़ु ज़ुल्मंव्-व ला हज़्मा (112)

व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यंव्-व सर्रफ़्ना फ़ीहि मिनल्-वअ़ीदि लअ़ल्लहुम् यत्तक़ू-न औ युह्दिसु लहुम् ज़िक्रा (113)

फ़-तआ़लल्लाहुल्-मलिकुल्-हक़्क़ु व ला तअ़्जल् बिल्क़ुर्आनि मिन् क़ब्लि अंय्युक़्ज़ा इलै-क वह्युहू व क़ुर्रब्बि ज़िद्नी अ़िल्मा (114)

व ल-क़द् अ़हिद्ना इला आद-म मिन् क़ब्लु फ़-नसि-य व लम् नजिद् लहू अ़ज़्मा (115) ●

व इज़् क़ुल्ना लिल्मलाइ-कतिस्जुदू लिआद-म फ़-स-जदू इल्ला इब्ली-स, अबा (116)

फ़क़ुल्ना या आदमु इन्-न हाज़ा अ़दुव्वुल्-ल-क व लिज़ौजि-क फ़ला युख़्रिजन्नकुमा मिनल्-जन्नति फ़-तश्क़ा (117)

इन्-न ल-क अल्ला तजू-अ़ फ़ीहा व ला तअ़्रा (118)

व अन्न-क ला तज़्मउ फ़ीहा व ला तज़्हा (119)

फ़-वस्व-स इलैहिश्शैतानु क़ा-ल या आदमु

يَوْمَئِذٍ يَّتَّبِعُوْنَ الدَّاعِيَ لَا عِوَجَ لَهٗ ۚ
وَخَشَعَتِ الْاَصْوَاتُ لِلرَّحْمٰنِ فَلَا تَسْمَعُ
اِلَّا هَمْسًا ۝١٠٨
يَوْمَئِذٍ لَّا تَنْفَعُ الشَّفَاعَةُ اِلَّا مَنْ
اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ وَرَضِيَ لَهٗ قَوْلًا ۝١٠٩
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يُحِيْطُوْنَ بِهٖ عِلْمًا ۝١١٠
وَعَنَتِ الْوُجُوْهُ لِلْحَيِّ الْقَيُّوْمِ ۭ وَقَدْ خَابَ
مَنْ حَمَلَ ظُلْمًا ۝١١١
وَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَا يَخٰفُ ظُلْمًا وَّلَا هَضْمًا ۝١١٢
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا وَّصَرَّفْنَا
فِيْهِ مِنَ الْوَعِيْدِ لَعَلَّهُمْ يَتَّقُوْنَ
اَوْ يُحْدِثُ لَهُمْ ذِكْرًا ۝١١٣
فَتَعٰلَى اللّٰهُ الْمَلِكُ الْحَقُّ ۚ وَلَا تَعْجَلْ
بِالْقُرْاٰنِ مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّقْضٰٓى اِلَيْكَ
وَحْيُهٗ ۡ وَقُلْ رَّبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا ۝١١٤
وَلَقَدْ عَهِدْنَآ اِلٰٓى اٰدَمَ مِنْ قَبْلُ فَنَسِيَ
وَلَمْ نَجِدْ لَهٗ عَزْمًا ۝١١٥
وَاِذْ قُلْنَا لِلْمَلٰٓئِكَةِ اسْجُدُوْا لِاٰدَمَ
فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ اَبٰى ۝١١٦
فَقُلْنَا يٰٓاٰدَمُ اِنَّ هٰذَا عَدُوٌّ لَّكَ
وَلِزَوْجِكَ فَلَا يُخْرِجَنَّكُمَا مِنَ الْجَنَّةِ
فَتَشْقٰى ۝١١٧
اِنَّ لَكَ اَلَّا تَجُوْعَ فِيْهَا وَلَا تَعْرٰى ۝١١٨
وَاَنَّكَ لَا تَظْمَؤُا فِيْهَا وَلَا تَضْحٰى ۝١١٩
فَوَسْوَسَ اِلَيْهِ الشَّيْطٰنُ قَالَ يٰٓاٰدَمُ

क़ायमी ज़िन्दगी के दरख़्त का पता बता दूं और ऐसी बादशाही जो कभी पुरानी न हो।"

121. आख़िरकार उन दोनों ने उसमें से खा लिया, जिसके नतीजे में उनकी छुपाने की चीज़ें उनके आगे खुल गई, और वो दोनों अपने ऊपर जन्नत के पत्ते जोड़-जोड़कर रखने लगे और आदम ने अपने रब की नाफ़रमानी की, पस वह राह से भटक गया।

122. इसके बाद उसके रब ने उसे बरगुज़ीदा किया, और दोबारा उसकी तरफ़ मुतवज्जेह हुआ और उसकी रहनुमाई फ़रमाई।

123. कहा, "तुम दोनों के दोनों यहां से उतरो! तुम्हारे बाज़ लोग बाज़ के दुश्मन होंगे, अब फिर अगर मेरी तरफ़ से तुम्हें हिदायत की ख़बर पहुंचे, तो जिस किसी ने मेरी हिदायत की पैरवी की वह न तो गुमराह होगा, और न बदबख़्ती में मुबतला।

124. "और जिस किसी ने मेरे ज़िक्र से एराज़ किया, तो उसके लिए ज़िन्दगी तंग होगी, और क़ियामत के रोज़ हम उसे अंधा उठाएंगे"।

125. वह कहेगा, "ऐ मेरे रब, तूने मुझे अंधा क्यों उठाया, जबकि मैं आखों वाला था?"

126. वह कहेगा, "इसी तरह (तू दुनिया में अंधा रहा) तेरे पास मेरी आयतें आई थीं, तो तूने उन्हें नज़र अन्दाज़ किया था; इसी तरह आज तुझे नज़र अन्दाज़ किया जा रहा है"।

127. इसी तरह हम उसे बदला देते हैं जो हद से गुज़र जाए और अपने रब की आयतों पर ईमान न लाए और अज़ाब-ए-आख़िरत तो बहुत ही सख़्त है और बहुत देरपा है।

128. फिर क्या उनको इससे सुझाई न दिया कि उनसे पहले कितनी ही नसलों को हम हलाक कर चुके हैं जिनकी बस्तियों में ये चलते-फिरते हैं? अक़्ल रखने वालों के लिए बेशक इसमें बहुत सी निशानियां हैं,

129. अगर तेरे रब की तरफ़ से पहले ही एक बात तय न पा गई होती, और एक मुद्दत मुक़र्रर न होती, तो अज़ाब लाज़िमन मुसल्लत होकर रहता।

130. पस जो कुछ वो कहते हैं उसपर सब्र करो, और अपने रब का गुण गाओ सूरज निकलने से पहले,

हल् अदुल्लु-क अ़ला श-ज-रतिल्-ख़ुल्दि व मुल्किल्-ला यब्ला (120)

फ़-अ-कला मिन्हा फ़-बदत् लहुमा सौआतुहुमा व तफ़िक़ा यख़्सिफ़ानि अ़लैहिमा मिंव्-व-रक़िल्-जन्नति, व अ़सा आदमु रब्बहू फ़-ग़वा (121)

सुम्मज्तबाहु रब्बुहू फ़ता-ब अ़लैहि व हदा (122)

क़ालह्बिता मिन्हा जमीअ़म्-बअ्ज़ुकुम् लिबअ्ज़िन् अ़दुव्वुन् फ़-इम्मा यअ्तियन्नकुम् मिन्नी हुदन् फ़-मनित्त-ब-अ़ हुदा-य फ़ला यज़िल्लु व ला यश्क़ा (123)

व मन् अअ्र-ज़ अ़न् ज़िक्री फ़-इन्-न लहू मअ़ी-शतन् ज़न्कंव्-व नह्शुरूहू यौमल्-क़ियामति अअ्मा (124)

क़ा-ल रब्बि लि-म हशर्-तनी अअ्मा व क़द् कुन्तु बसीरा (125)

क़ा-ल कज़ालि-क अतत्-क आयातुना फ़-नसीतहा व कज़ालिकल्-यौ-म तुन्सा (126)

व कज़ालि-क नज्ज़ी मन् अस्-र-फ व लम् युअ्मिम्-बिआयाति रब्बिही, व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अशद्दु व अब्क़ा (127)

अ-फ़लम् यह्दि लहुम् कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिनल्-क़ुरूनि यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिउलिन्नुहा (128) ●

व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्-रब्बि-क लका-न लिज़ामंव्-व अ-जलुम्-मुसम्मा (129)

फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न व सब्बिह् बि-हम्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूअ़िश्शम्सि व क़ब्-ल

هَلْ اَدُلُّكَ عَلٰى شَجَرَةِ الْخُلْدِ وَمُلْكٍ لَّا يَبْلٰى ﴿١٢٠﴾

فَاَكَلَا مِنْهَا فَبَدَتْ لَهُمَا سَوْاٰتُهُمَا وَطَفِقَا يَخْصِفٰنِ عَلَيْهِمَا مِنْ وَّرَقِ الْجَنَّةِ ز وَعَصٰٓى اٰدَمُ رَبَّهٗ فَغَوٰى ﴿١٢١﴾

ثُمَّ اجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَتَابَ عَلَيْهِ وَهَدٰى ﴿١٢٢﴾

قَالَ اهْبِطَا مِنْهَا جَمِيْعًا بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ عَدُوٌّ ۚ فَاِمَّا يَاْتِيَنَّكُمْ مِّنِّيْ هُدًى ۙ فَمَنِ اتَّبَعَ هُدَايَ فَلَا يَضِلُّ وَلَا يَشْقٰى ﴿١٢٣﴾

وَمَنْ اَعْرَضَ عَنْ ذِكْرِيْ فَاِنَّ لَهٗ مَعِيْشَةً ضَنْكًا وَّنَحْشُرُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ اَعْمٰى ﴿١٢٤﴾

قَالَ رَبِّ لِمَ حَشَرْتَنِيْٓ اَعْمٰى وَقَدْ كُنْتُ بَصِيْرًا ﴿١٢٥﴾

قَالَ كَذٰلِكَ اَتَتْكَ اٰيٰتُنَا فَنَسِيْتَهَا ۚ وَكَذٰلِكَ الْيَوْمَ تُنْسٰى ﴿١٢٦﴾

وَكَذٰلِكَ نَجْزِيْ مَنْ اَسْرَفَ وَلَمْ يُؤْمِنْ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَشَدُّ وَاَبْقٰى ﴿١٢٧﴾

اَفَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ مَسٰكِنِهِمْ ۭ ع اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّاُولِي النُّهٰى ﴿١٢٨﴾

وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ لَكَانَ لِزَامًا وَّاَجَلٌ مُّسَمًّى ﴿١٢٩﴾

فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ قَبْلَ طُلُوْعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ

और उसके डूबने से पहले, और रात के औक़ात में तसबीह करो और दिन के किनारों पर भी, ताकि तुम राज़ी हो जाओ।

131. और उसकी तरफ़ आंख उठाकर न देखो जो कुछ हमने उनमें से मुख़्तलिफ़ क़िस्म के लोगों को लुत्फ़ उठाने को दिया है, ताकि उसके ज़रिए से उनको आज़माइश में डालें, वह तो बस दुनियावी ज़िन्दगी की रौनक़ है। तुम्हारे रब का रिज़्क़ बेहतर भी है और देरपा भी।

132. और अपने लोगों को नमाज़ का हुक्म दो, और ख़ुद भी उसपर जमे रहो; हम तुमसे कोई रिज़्क़ नहीं मांगते, रिज़्क़ हम ख़ुद तुम्हें देते हैं और बेहतर अंजामकार तो तक़्वा ही के लिए है।

133. वो कहते हैं कि "यह अपने रब की तरफ़ से हमारे पास कोई निशानी क्यों नहीं लाता?" क्या उनके पास उसकी रौशन दलील नहीं आ गई, जो कुछ कि अगले सहीफ़ों में मज़कूर है?

134. अगर हम उससे पहले किसी अज़ाब से उनको हलाक कर देते तो ये कहते कि "हमारे रब, तूने हमारे पास कोई रसूल क्यों न भेजा कि इससे क़ब्ल कि हम ज़लील और रुसवा होते, तेरी आयतों की पैरवी इख़्तियार कर लेते?"

135. कह दो: "हर एक इंतिज़ार में है, पस अब तुम भी इंतिज़ार करो, जल्द ही तुम जान लोगे कि कौन सीधी राहवाले हैं, और कौन हिदायतयाफ़्ता?"

सूरह अल-अंबिया मक्की

(आयतें 112, रुकूआत 7)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. क़रीब आ गया लोगों का हिसाब, और वो हैं कि ग़फ़लत में पड़े एराज़ किए जा रहे हैं;

2. उनके पास जो ताज़ा याददिहानी भी उनके रब की तरफ़ से आती है, उसे वो हंसी-खेल करते हुए सुनते हैं।

3. उन के दिल दिलचस्पियों में खोए हुए होते हैं। उन्होंने चुपके-चुपके सरगोशी की — यानी ज़ुल्म की रविश इख़्तियार करने वालों ने — कि "यह तो बस तुम्ही जैसा एक इन्सान है? फिर क्या तुम देखते-बूझते जादू में फंसोगे?"

गुरूबिहा व मिन् आनाइल्लैलि फ़-सब्बिह् व अत्राफ़न्नहारि लअ़ल्ल-क तर्ज़ा (130)

व ला तमुद्दन्-न ऐनै-क इला मा मत्तअ्ना बिही अज़्वाजम् मिन्हुम् ज़हर-तल्-हयातिद्दुन्या लि-नफ़्ति-नहुम् फ़ीहि, व रिज़्कु रब्बि-क ख़ैरुंव्-व अब्क़ा (131)

वअ्मुर् अह्ल-क बिस्सलाति वस्तबिर् अ़लैहा, ला नस्अलु-क रिज़्क़न्, नह्नु नर्ज़ुकु-क, वल्आ़कि-बतु लित्तक़्वा (132)

व क़ालू लौ ला यअ्तीना बिआयतिम्-मिर्रब्बिही, अ-व लम् तअ्तिहिम् बय्यि-नतु मा फ़िस्सुहुफ़िल्-ऊला (133)

व लौ अन्ना अह्लक्नाहुम् बि-अ़ज़ाबिम् मिन् क़ब्लिही लक़ालू रब्बना लौ ला अर्सल्-त इलैना रसूलन् फ़-नत्तबि-अ़ आयाति-क मिन् क़ब्लि अन् नज़िल्-ल व नख़्ज़ा (134)

कुल् कुल्लुम् मु-तरब्बिसुन् फ़-तरब्बसू फ़-सतअ्लमू-न मन् अस्हाबुस्-सिरातिस्-सविय्यि व मनिह्तदा (135) ●

21 सूरतुल्-अम्बिया--इ
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 5154 अक्षर, 1187 शब्द, 112 आयतें और 7 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इक़्त-र-ब लिन्नासि हिसाबुहुम् व हुम् फ़ी ग़फ़्लतिम्-मुअ्रिज़ून (1)

मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम्-मिर्रब्बिहिम् मुह्दसिन् इल्लस्त-मअूहु व हुम् यल्अ़बून (2)

लाहि-यतन् क़ुलूबुहुम्, व अ-सर्रुन्-नज्वल्लज़ी-न ज़-लमू हल् हाज़ा इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुकुम् अ-फ़तअ्तूनस्सिह्-र व अन्तुम् तुब्सिरून (3)

غُرُوْبِهَا ۚ وَمِنْ اٰنَاۗئِ الَّيْلِ فَسَبِّحْ
وَاَطْرَافَ النَّهَارِ لَعَلَّكَ تَرْضٰى (١٣٠)
وَلَا تَمُدَّنَّ عَيْنَيْكَ اِلٰى مَا مَتَّعْنَا بِهٖٓ
اَزْوَاجًا مِّنْهُمْ زَهْرَةَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ
لِنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۭ وَرِزْقُ رَبِّكَ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى (١٣١)
وَاْمُرْ اَهْلَكَ بِالصَّلٰوةِ وَاصْطَبِرْ عَلَيْهَا ۭ
لَا نَسْـَٔــلُكَ رِزْقًا ۭ نَحْنُ نَرْزُقُكَ ۭ
وَالْعَاقِبَةُ لِلتَّقْوٰى (١٣٢)
وَقَالُوْا لَوْلَا يَاْتِيْنَا بِاٰيَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ۭ اَوَلَمْ
تَاْتِهِمْ بَيِّنَةُ مَا فِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى (١٣٣)
وَلَوْ اَنَّآ اَهْلَكْنٰهُمْ بِعَذَابٍ مِّنْ قَبْلِهٖ
لَقَالُوْا رَبَّنَا لَوْلَآ اَرْسَلْتَ اِلَيْنَا رَسُوْلًا
فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ نَّذِلَّ
وَنَخْزٰى (١٣٤)
قُلْ كُلٌّ مُّتَرَبِّصٌ فَتَرَبَّصُوْا ۚ
فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ اَصْحٰبُ الصِّرَاطِ
ع السَّوِيِّ وَمَنِ اهْتَدٰى (١٣٥)

سُوْرَةُ الْاَنْبِيَاۗءِ مَكِّيَّةٌ رُكُوْعَاتُهَا ٧ اٰيَاتُهَا ١١٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِقْتَرَبَ لِلنَّاسِ حِسَابُهُمْ وَهُمْ فِيْ
غَفْلَةٍ مُّعْرِضُوْنَ (١)
مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنْ رَّبِّهِمْ مُّحْدَثٍ
اِلَّا اسْتَمَعُوْهُ وَهُمْ يَلْعَبُوْنَ (٢)
لَاهِيَةً قُلُوْبُهُمْ ۭ وَاَسَرُّوا النَّجْوَى ڰ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ڰ هَلْ هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُكُمْ ۚ اَفَتَاْتُوْنَ السِّحْرَ وَاَنْتُمْ
تُبْصِرُوْنَ (٣)

4. उसने कहा "मेरा रब जानता है उस बात को जो आसमान और ज़मीन में हो, और वह सब कुछ सुनने, जानने वाला है"।

5. नहीं, बल्कि वो कहते हैं: "ये तो परेशान ख़्वाब हैं! बल्कि उसने ख़ुद ही इसे घड़ लिया है, बल्कि वह एक शायर है! उसे तो हमारे पास कोई निशानी लानी चाहिए, जैसे कि (पहले निशानियों के साथ) रसूल भेजे गए थे"।

6. उनसे पहले कोई बस्ती भी जिसको हमने हलाक किया ईमान न लाई, फिर क्या ये ईमान लाएंगे?

7. और तुमसे पहले भी हमने मर्दों ही को रसूल बनाकर भेजा जिनकी तरफ़ हम वही करते थे — अगर तुम्हें मालूम न हो तो अहले ज़िक्र से पूछ लो।

8. — उन को हमने कोई ऐसा जिस्म नहीं दिया था कि वो खाना न खाते रहे हों, और न वो हमेशा रहने वाले ही थे;

9. फिर हमने उनके साथ वादे को सच्चा कर दिखाया, और उन्हें हमने नजात दी। और जिसे हम चाहें उसे नजात मिलती है; और हद से गुज़रने वालों को हमने हलाक कर दिया।

10. लो, हमने तुम्हारी तरफ़ एक किताब नाज़िल कर दी जिसमें तुम्हारे लिए याददिहानी है; तो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते?

11. कितनी ही बस्तियों को जो ज़ुल्म पेशा थीं हमने तोड़कर रख दिया, और उनके बाद हमने दूसरे लोगों को उठाया!

12. फिर जब उन्होंने हमारे अज़ाब की आहट पाई, तो लगे वहां से भागने।

13. "भागो नही! लौट चलो उसी आसाइश की तरफ़ जो तुम्हें बख़्शी गई थी और अपने घरों की तरफ़; ताकि तुमसे पूछा जाए"।

14. कहने लगे, "ऐ हमारी कमबख़्ती! बेशक हम ज़ालिम थे"।

15. फिर बराबर उनकी यही पुकार रही, यहां तक कि हमने उन्हें ऐसा कर दिया जैसे कटी हुई खेती, बुझी हुई आग हो।

16. और हमने आसमान और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है कुछ इस तौरपर नहीं बनाया कि

क़ा-ल रब्बी यअ्लमुल्क़ौ-ल फ़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि व हुवस्समीउल्-अ़लीम (4)

बल् क़ालू अज़्ग़ासु अह्लामिम्-बलिफ़्तराहु बल् हु-व शाअ़िरून् फ़ल्यअ्तिना बिआयतिन् कमा उर्सिलल्-अव्वलून (5)

मा आम-नत् क़ब्लहुम् मिन् क़र्-यतिन् अह्लक्नाहा अ-फ़हुम् युअ्मिनून (6)

व मा अर्सल्ना क़ब्ल-क इल्ला रिजालन् नूही इलैहिम् फ़स्अलू अह्लज़्ज़िक्रि इन् कुन्तुम् ला तअ्लमून (7)

व मा जअ़ल्नाहुम् ज-सदल्-ला यअ्कुलूनत्तआ-म व मा कानू ख़ालिदीन (8)

सुम्-म सदक़्नाहुमुल्-वअ्-द फ़-अन्जैनाहुम् व मन्-नशा-उ व अह्लक्नल्-मुस्रिफ़ीन (9)

ल-क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् किताबन् फ़ीहि ज़िक्रुकुम्, अ-फ़ला तअ्क़िलून (10)●

व कम् क़सम्ना मिन् क़र्-यतिन् कानत् ज़ालि-मतंव्-व अन्शअ्ना बअ्-दहा क़ौमन् आ-ख़रीन (11)

फ़-लम्मा अ-हस्सू बअ्सना इज़ा हुम् मिन्हा यर्कुज़ून (12)

ला तर्कुज़ू वर्जिअू इला मा उत्रिफ़्तुम् फ़ीहि व मसाकिनिकुम् लअ़ल्लकुम् तुस्अलून (13)

क़ालू या वैलना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (14)

फ़मा ज़ालत् तिल्-क दअ्वाहुम् हत्ता जअ़ल्नाहुम् हसीदन् ख़ामिदीन (15)

व मा ख़लक़्नस्समा-अ वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा

قٰلَ رَبِّیْ یَعْلَمُ الْقَوْلَ فِی السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ وَهُوَالسَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ۝٤
بَلْ قَالُوْٓا اَضْغَاثُ اَحْلَامٍۭ بَلِ افْتَرٰىهُ
بَلْ هُوَ شَاعِرٌ ۚۖ فَلْیَاْتِنَا بِاٰیَةٍ كَمَآ
اُرْسِلَ الْاَوَّلُوْنَ۝٥
مَآ اٰمَنَتْ قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْیَةٍ اَهْلَكْنٰهَا ۚ
اَفَهُمْ یُؤْمِنُوْنَ۝٦
وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ اِلَّا رِجَالًا نُّوْحِیْٓ
اِلَیْهِمْ فَسْـَٔلُوْٓا اَهْلَ الذِّكْرِ اِنْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ۝٧
وَمَا جَعَلْنٰهُمْ جَسَدًا لَّا یَاْكُلُوْنَ
الطَّعَامَ وَمَا كَانُوْا خٰلِدِیْنَ۝٨
ثُمَّ صَدَقْنٰهُمُ الْوَعْدَ فَاَنْجَیْنٰهُمْ
وَمَنْ نَّشَآءُ وَاَهْلَكْنَا الْمُسْرِفِیْنَ۝٩
لَقَدْ اَنْزَلْنَآ اِلَیْكُمْ كِتٰبًا فِیْهِ ذِكْرُكُمْ ۭ
ع اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ۝١٠
وَكَمْ قَصَمْنَا مِنْ قَرْیَةٍ كَانَتْ
ظَالِمَةً وَّاَنْشَاْنَا بَعْدَهَا قَوْمًا
اٰخَرِیْنَ۝١١
فَلَمَّآ اَحَسُّوْا بَاْسَنَآ اِذَا هُمْ مِّنْهَا
یَرْكُضُوْنَ۝١٢
لَا تَرْكُضُوْا وَارْجِعُوْٓا اِلٰى مَآ اُتْرِفْتُمْ
فِیْهِ وَمَسٰكِنِكُمْ لَعَلَّكُمْ تُسْـَٔلُوْنَ۝١٣
قَالُوْا یٰوَیْلَنَآ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِیْنَ۝١٤
فَمَا زَالَتْ تِّلْكَ دَعْوٰىهُمْ حَتّٰى
جَعَلْنٰهُمْ حَصِیْدًا خٰمِدِیْنَ۝١٥
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْاَرْضَ وَمَا بَیْنَهُمَا

हम कोई खेल करनेवाले हों;

17. अगर हम कोई खेल और तफ़रीह इख़्तियार करना चाहते तो अपने ही पास से इख़्तियार कर लेते, बेशक हमें करने की कुव्वत हासिल है।

18. नहीं, बल्कि हम तो बातिल पर हक़ की चोट लगाते हैं तो वह उसका सर तोड़ देता है, फिर क्या देखते हैं कि वह मिटकर रह जाता है। और तुम्हारी ख़राबी है उन बातों की वजह से जो तुम बनाते हो!

19. और आसमानों और ज़मीन में जो कोई है उसी का है; और जो उसके पास हैं वो न तो अपने को बड़ा समझ कर उसकी इबादत से मुंह मोड़ते हैं, और न वो थकते हैं,

20. रात और दिन तसबीह करते रहते हैं, दम नहीं लेते।

21. क्या उन्होंने ज़मीन से ऐसे माबूद बना लिए हैं जो बेजान को जान बख़्श कर उठा खड़ा करते हों?

22. अगर इन दोनों में अल्लाह के सिवा दूसरे माबूद भी होते, तो दोनों का निज़ाम बिगड़ जाता; पस अज़ीम व बरतर है अल्लाह, अर्श का मालिक, उससे जो ये बयान करते हैं।

23. जो कुछ वह करता है उससे उसकी बाज़-पुर्स नहीं। लेकिन इनसे बाज़-पुर्स होगी।

24. क्या उन्होंने उससे हटकर दूसरे माबूद बना लिए हैं (जिसके लिए ये कुछ दलीलें रखते हों)? कह दो: "लाओ अपनी दलील! यह याददिहानी है उनकी जो मेरे साथ हैं, और याददिहानी है उनकी जो मुझसे पहले हुए हैं, बल्कि बात यह है कि उनमें अकसर हक़ को जानते नहीं, इसलिए एराज़ किए जा रहे हैं"।

25. हमने तुमसे पहले जो रसूल भी भेजा उसकी तरफ़ यही वही की कि "मेरे सिवा कोई माबूद नहीं; पस मेरी ही इबादत करो"।

26. और वो कहते हैं कि "रहमान औलाद रखता है"। अज़ीम व बरतर है वह! बल्कि वो तो मुकर्रम बन्दे हैं,

27. उससे आगे बढ़कर नहीं बोलते और उसके हुक्म की तामील करते हैं,

लाअ़िबीन (16)

लौ अरद्ना अन् नत्तख़ि-ज़ लह्वल्-लत्त-ख़ज़्नाहु मिल्लदुन्ना इन् कुन्ना फ़ाअ़िलीन (17)

बल् नक़्ज़िफ़ु बिल्हक़्क़ि अ़लल्-बातिलि फ़-यद्मग़ुहू फ़-इज़ा हु-व ज़ाहिक़ुन्, व लकुमुल्-वैलु मिम्मा तसिफ़ून (18)

व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, व मन् अ़िन्दहू ला यस्तक्बिरू-न अ़न् अ़िबादतिही व ला यस्तह्सिरून (19)

युसब्बिहूनल्लै-ल वन्नहा-र ला यफ़्तुरून (20)

अमित्त-ख़ज़ू आलि-हतम् मिनल्अर्ज़ि हुम् युन्शिरून (21)

लौ का-न फ़ीहिमा आलि-हतुन् इल्लल्लाहु ल-फ़-स-दता फ़-सुब्हानल्लाहि रब्बिल्-अ़र्शि अ़म्मा यसिफ़ून (22)

ला युस्अलु अ़म्मा यफ़्अ़लु व हुम् युस्अलून (23)

अमित्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-हतन्, क़ुल् हातू बुर्हानकुम् हाज़ा ज़िक्रु मम्-मअ़ि-य व ज़िक्रु मन् क़ब्ली, बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्लमूनल्-हक़्-क़ फ़हुम् मुअ़्रिज़ून (24)

व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रसूलिन् इल्ला नूही इलैहि अन्नहू ला इला-ह इल्ला अ-न फ़अ़्बुदून (25)

व क़ालुत्त-ख़ज़र्रह्मानु व-लदन् सुब्हानहू, बल् अ़िबादुम् मुक्रमून (26)

ला यस्बिक़ूनहू बिल्क़ौलि व हुम् बिअम्रिही यअ़्मलून (27)

لٰعِبِيْنَ ۝١٦
لَوْ اَرَدْنَآ اَنْ نَّتَّخِذَ لَهْوًا لَّاتَّخَذْنٰهُ
مِنْ لَّدُنَّآ ۖ اِنْ كُنَّا فٰعِلِيْنَ ۝١٧
بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ
فَيَدْمَغُهٗ فَاِذَا هُوَ زَاهِقٌ ۭ وَلَكُمُ الْوَيْلُ
مِمَّا تَصِفُوْنَ ۝١٨
وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَمَنْ
عِنْدَهٗ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِهٖ
وَلَا يَسْتَحْسِرُوْنَ ۝١٩
يُسَبِّحُوْنَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ لَا يَفْتُرُوْنَ ۝٢٠
اَمِ اتَّخَذُوْٓا اٰلِهَةً مِّنَ الْاَرْضِ
هُمْ يُنْشِرُوْنَ ۝٢١
لَوْ كَانَ فِيْهِمَآ اٰلِهَةٌ اِلَّا اللّٰهُ
لَفَسَدَتَا ۚ فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعَرْشِ
عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝٢٢
لَا يُسْـَٔـلُ عَمَّا يَفْعَلُ وَهُمْ يُسْـَٔـلُوْنَ ۝٢٣
اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً ۭ قُلْ هَاتُوْا
بُرْهَانَكُمْ ۚ هٰذَا ذِكْرُ مَنْ مَّعِيَ وَذِكْرُ
مَنْ قَبْلِيْ ۭ بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۙ
الْحَقَّ فَهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٢٤
وَمَآ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ
اِلَّا نُوْحِيْٓ اِلَيْهِ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنَا
فَاعْبُدُوْنِ ۝٢٥
وَقَالُوا اتَّخَذَ الرَّحْمٰنُ وَلَدًا سُبْحٰنَهٗ ۭ
بَلْ عِبَادٌ مُّكْرَمُوْنَ ۝٢٦
لَا يَسْبِقُوْنَهٗ بِالْقَوْلِ وَهُمْ بِاَمْرِهٖ
يَعْمَلُوْنَ ۝٢٧

28. वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और वो किसी की सिफ़ारिश नहीं करते सिवाय उसके जिसके लिए ख़ुदा पसन्द फ़रमाए, और उसके ख़ौफ़ से डरे रहते हैं।

29. और जो उनमें से यह कहे कि "उससे हटकर एक माबूद मैं हूं," तो उसे हम जहन्नम का बदला देंगे; ज़ालिमों को ऐसा ही बदला देना हमारा दस्तूर है।

30. क्या उन लोगों ने जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया देखा नहीं कि ये आसमान और ज़मीन बन्द थे? फिर हमने उन्हें खोल दिया और हमने पानी से हर ज़िन्दा चीज़ बनाई, तो क्या वो ईमान नहीं लाते?

31. और हमने ज़मीन में अटल पहाड़ रख दिए कि मबादा वह उन्हें लेकर ढुलक जाए और हमने उसमें ऐसे दर्रे बनाए कि रास्तों का काम देते हैं, ताकि वो राह पाएं;

32. और हमने आसमान को एक महफ़ूज़ छत बनाया; लेकिन वो हैं कि उसकी निशानियों से एराज़ किए जाते हैं।

33. वही है जिसने रात और दिन बनाए, और सूरज और चांद, हर एक अपने-अपने मदार में तैर रहा है।

34. हमने तुमसे पहले किसी आदमी के लिए हमेशगी नहीं रखी; फिर क्या अगर तुम मर गए तो वो हमेशा रहने वाले हैं?

35. हर जान को मौत का मज़ा चखना है; और हम अच्छी और बुरी हालत में डाल कर तुम सब की आज़माइश करते हैं, आख़िरकार तुम्हें हमारी ही तरफ़ पलट कर आना है।

36. जिन लोगों ने इनकार की रविश इख़्तियार की है वो जब तुम्हें देखते हैं, तो बस तुम्हारा मज़ाक़ बनाते हैं कि "क्या यही वह शख़्स है जो तुम्हारे माबूदों का बुराई के साथ ज़िक्र करता है?" और उनका अपना हाल यह है कि उन्हें रहमान के ज़िक्र से इनकार है।

37. इनसान उजलत के ख़मीर से बना है, मैं तुम्हें जल्दी ही अपनी निशानियां दिखाए देता हूं, पस मुझ से जल्दी का मुतालबा न करो।

38. वो कहते हैं, "यह वादा कब

यअ्लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व ला यश्फ़अू-न इल्ला लि-मनिर्तज़ा व हुम् मिन् ख़श्यतिही मुश्फ़िक़ून (28)

व मंय्यक़ुल् मिन्हुम् इन्नी इलाहुम्-मिन् दूनिही फ़ज़ालि-क नज्ज़ीहि जहन्न-म, कज़ालि-क नज्ज़िज़्ज़ालिमीन (29)●

अ-व लम् यरल्लज़ी-न क-फ़रू अन्नस्समावाति वल्अर्-ज़ कानता रत्क़न् फ़-फ़तक़्नाहुमा, व जअ़ल्ना मिनल्मा-इ कुल्-ल शैइन् हय्यिन्, अ-फ़ला युअ्मिनून (30)

व जअ़ल्ना फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिहिम् व जअ़ल्ना फ़ीहा फ़िजाजन् सुबुलल्-लअ़ल्लहुम् यह्तदून (31)

व जअ़ल्नस्-समा-अ सक़्फ़म्-मह़्फ़ूज़ंव्-व हुम् अ़न् आयातिहा मुअ्रिज़ून (32)

व हुवल्लज़ी ख़-लक़ल्लै-ल वन्नहा-र वश्शम्-स वल्-क़-म-र, कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्यस्बहून (33)

व मा जअ़ल्ना लि-ब-शरिम्-मिन् क़ब्लिकल्-ख़ुल्-द, अ-फ़इम्-मित्-त फ़हुमुल्-ख़ालिदून (34)

कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ-क़तुल्-मौति, व नब्लूकुम् बिश्शर्रि वल्-ख़ैरि फ़ित्-नतन्, व इलैना तुर्जअून (35)

व इज़ा रआकल्लज़ी-न क-फ़रू इंय्यत्तख़िज़ून-क इल्ला हुज़ुवन्, अ-हाज़ल्लज़ी यज़्कुरु आलि-ह-तकुम् व हुम् बिज़िक्रिर्रह़्मानि हुम् काफ़िरून (36)

ख़ुलिक़ल्-इन्सानु मिन् अ़-जलिन्, स-उरीकुम् आयाती फ़ला तस्तअ्जिलून (37)

व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ्दु इन् कुन्तुम्

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَلَا يَشْفَعُونَ إِلَّا لِمَنِ ارْتَضَىٰ وَهُمْ
مِّنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ﴿٢٨﴾
وَمَن يَقُلْ مِنْهُمْ إِنِّي إِلَٰهٌ مِّن دُونِهِ
فَذَٰلِكَ نَجْزِيهِ جَهَنَّمَ ۚ كَذَٰلِكَ
ع نَجْزِي الظَّالِمِينَ ﴿٢٩﴾
أَوَلَمْ يَرَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَنَّ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضَ كَانَتَا رَتْقًا فَفَتَقْنَاهُمَا ۖ
وَجَعَلْنَا مِنَ الْمَاءِ كُلَّ شَيْءٍ حَيٍّ ۖ
أَفَلَا يُؤْمِنُونَ ﴿٣٠﴾
وَجَعَلْنَا فِي الْأَرْضِ رَوَاسِيَ أَن تَمِيدَ بِهِمْ
وَجَعَلْنَا فِيهَا فِجَاجًا سُبُلًا لَّعَلَّهُمْ يَهْتَدُونَ ﴿٣١﴾
وَجَعَلْنَا السَّمَاءَ سَقْفًا مَّحْفُوظًا ۖ
وَهُمْ عَنْ آيَاتِهَا مُعْرِضُونَ ﴿٣٢﴾
وَهُوَ الَّذِي خَلَقَ اللَّيْلَ وَالنَّهَارَ وَالشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ۖ كُلٌّ فِي فَلَكٍ يَسْبَحُونَ ﴿٣٣﴾
وَمَا جَعَلْنَا لِبَشَرٍ مِّن قَبْلِكَ الْخُلْدَ ۖ
أَفَإِن مِّتَّ فَهُمُ الْخَالِدُونَ ﴿٣٤﴾
كُلُّ نَفْسٍ ذَائِقَةُ الْمَوْتِ ۗ وَنَبْلُوكُم
بِالشَّرِّ وَالْخَيْرِ فِتْنَةً ۖ وَإِلَيْنَا تُرْجَعُونَ ﴿٣٥﴾
وَإِذَا رَآكَ الَّذِينَ كَفَرُوا إِن
يَتَّخِذُونَكَ إِلَّا هُزُوًا أَهَٰذَا الَّذِي
يَذْكُرُ آلِهَتَكُمْ وَهُم بِذِكْرِ الرَّحْمَٰنِ
هُمْ كَافِرُونَ ﴿٣٦﴾
خُلِقَ الْإِنسَانُ مِنْ عَجَلٍ ۚ سَأُرِيكُمْ
آيَاتِي فَلَا تَسْتَعْجِلُونِ ﴿٣٧﴾
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ

पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो?"

39. काश कुफ़्र इख़्तियार करने वाले उस वक़्त को जानते जबकि वो न तो अपने चेहरों की तरफ़ से आग को रोक सकेंगे और न अपनी पीठों की जानिब से, और न उन्हें कोई मदद ही पहुंच सकेगी (तो अज़ाब की जल्दी न मचाते)।

40. बल्कि वह अचानक उनपर आएगी, और उन्हें बदहवास कर देगी, फिर न उसे फेर सकेंगे, और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी।

41. तुमसे पहले भी रसूलों का मज़ाक़ उड़ाया जा चुका है, लेकिन उनमें से जिन लोगों ने उनका मज़ाक़ उड़ाया था उन्हें उसी चीज़ ने आ घेरा जिसका वो मज़ाक़ उड़ाते थे।

42. कहो कि "रात और दिन में रहमान के मुक़ाबले में तुम्हारी हिफ़ाज़त कौन करेगा?" बल्कि बात यह है कि वो अपने रब की याददिहानी से एराज़ किए हुए हैं।

43. क्या हमसे हटकर उनके और भी माबूद हैं जो उन्हें बचा लें? वो तो ख़ुद अपनी मदद नहीं कर सकते, और न हमारे मुक़ाबले में उनका कोई साथ ही दे सकता है।

44. बल्कि असल बात यह है कि हमने उन्हें और उनके बाप-दादा को ऐश व राहत का सामान दिया, यहां तक कि इसी हालत में एक तवील मुद्दत उनपर गुज़र गई। तो क्या वो देखते नहीं कि हम इस सरज़मीन को उसके अतराफ़ से घटाते हुए चले आ रहे हैं? फिर क्या वो ग़ालिब रहने वाले हैं?

45. कह दो: "मैं तो बस वह्यी की बिना पर तुम्हें ख़बरदार करता हूं; मगर बहरे पुकार नहीं सुनते जबकि उन्हें ख़बरदार किया जाए।

46. और अगर तुम्हारे रब के अज़ाब का कोई झोंका भी उन्हें छू जाए, तो कहने लगें "ऐ हमारी कमबख़्ती! बेशक हम ज़ालिम थे"।

47. और हम बावज़न अच्छे मुनसिफ़ाना आमाल को क़ियामत के दिन के लिए रख रहे हैं, गरचे वह (अमल) राई के दाने ही के बराबर हो, फिर किसी शख़्स पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा; और अगर राई के दाने के बराबर भी कोई अमल होगा उसे ला हाज़िर करेंगे, और हिसाब करने के लिए हम काफ़ी हैं।

सादिक़ीन (38)

लौ यअ्-लमुल्लज़ी-न क-फ़रू ही-न ला यकुफ़्फ़ू-न अंव्वुजूहिहिमुन्ना-र व ला अन् ज़ुहूरिहिम् व ला हुम् युन्सरून (39)

बल् तअ्तीहिम् बग़्त-तन् फ़-तब्हतुहुम् फ़ला यस्ततीअू-न रद्दहा व ला हुम् युन्ज़रून (40)

व ल-क़दिस्तुह्ज़ि-अ बिरूसुलिम्-मिन् क़ब्लि-क फ़हा-क़ बिल्लज़ी-न सख़िरू मिन्हुम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (41) ●

क़ुल् मंय्यक्ल-उकुम् बिल्लैलि वन्नहारि मिनर्रह्मानि, बल् हुम् अन् ज़िक्रि रब्बिहिम् मुअ्रिज़ून (42)

अम् लहुम् आलि-हतुन् तम्नअुहुम् मिन् दूनिना, ला यस्ततीअू-न नस्-र अन्फ़ुसिहिम् व ला हुम् मिन्ना युस्हबून (43)

बल् मत्तअ्ना हाउला-इ व आबा-अहुम् हत्ता ता-ल अ़लैहिमुल्-अ़ुमुरू, अ-फ़ला यरौ-न अन्ना नअ्तिल्-अर्-ज़ नन्क़ुसुहा मिन् अत्राफ़िहा, अ-फ़हुमुल्-ग़ालिबून (44)

क़ुल् इन्नमा उन्ज़िरुकुम् बिल्वह्यि व ला यस्मअुस्-सुम्मुद्दुआ-अ इज़ा मा युन्ज़रून (45)

व ल-इम्-मस्सत्हुम् नफ़्हतुम् मिन् अ़ज़ाबि रब्बि-क ल-यक़ूलुन्-न या वैलना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (46)

व न-ज़अुल्- मवाज़ीनल्-क़िस्-त लियौमिल्-क़ियामति फ़ला तुज़्लमु नफ़्सुन शैअन्, व इन् का-न मिस्क़ा-ल हब्बतिम्-मिन् ख़र्-दलिन् अतैना बिहा, व कफ़ा बिना हासिबीन (47)

صٰدِقِيْنَ ۝٣٨
لَوْ يَعْلَمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا حِيْنَ لَا يَكُفُّوْنَ
عَنْ وُّجُوْهِهِمُ النَّارَ وَلَا عَنْ ظُهُوْرِهِمْ
وَلَا هُمْ يُنْصَرُوْنَ ۝٣٩
بَلْ تَاْتِيْهِمْ بَغْتَةً فَتَبْهَتُهُمْ فَلَا
يَسْتَطِيْعُوْنَ رَدَّهَا وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ۝٤٠
وَلَقَدِ اسْتُهْزِئَ بِرُسُلٍ مِّنْ قَبْلِكَ
فَحَاقَ بِالَّذِيْنَ سَخِرُوْا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا
ع بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٤١
قُلْ مَنْ يَّكْلَؤُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ
مِنَ الرَّحْمٰنِ ؕ بَلْ هُمْ عَنْ ذِكْرِ
رَبِّهِمْ مُّعْرِضُوْنَ ۝٤٢
اَمْ لَهُمْ اٰلِهَةٌ تَمْنَعُهُمْ مِّنْ دُوْنِنَا ؕ
لَا يَسْتَطِيْعُوْنَ نَصْرَ اَنْفُسِهِمْ وَلَا هُمْ
مِّنَّا يُصْحَبُوْنَ ۝٤٣
بَلْ مَتَّعْنَا هٰۤؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى
طَالَ عَلَيْهِمُ الْعُمُرُ ؕ اَفَلَا يَرَوْنَ اَنَّا
نَاْتِى الْاَرْضَ نَنْقُصُهَا مِنْ اَطْرَافِهَا ؕ
اَفَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝٤٤
قُلْ اِنَّمَاۤ اُنْذِرُكُمْ بِالْوَحْيِ ۖ وَلَا يَسْمَعُ
الصُّمُّ الدُّعَآءَ اِذَا مَا يُنْذَرُوْنَ ۝٤٥
وَلَئِنْ مَّسَّتْهُمْ نَفْحَةٌ مِّنْ عَذَابِ رَبِّكَ
لَيَقُوْلُنَّ يٰوَيْلَنَاۤ اِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ۝٤٦
وَنَضَعُ الْمَوَازِيْنَ الْقِسْطَ لِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ
فَلَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا ؕ وَاِنْ كَانَ
مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ اَتَيْنَا بِهَا ؕ
وَكَفٰى بِنَا حٰسِبِيْنَ ۝٤٧

48. और हम मूसा और हारून को कसौटी और रौशनी, और याददिहानी अता कर चुके हैं उन मुत्तक़ियों के लिए,

49. जो ग़ाइबाना अपने रब से डरते हैं, और उन्हें क़ियामत की घड़ी का ख़ौफ़ लगा रहता है।

50. और यह बाबरकत याददिहानी है जिसे हमने नाज़िल किया है; तो क्या तुम इसके मुनकिर हो?

51. और इससे पहले हमने इबराहीम को उसकी हिदायत व मारिफ़त बख़्शी थी — और हम उसे ख़ूब जानते थे।

52. — जब उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा, "यह मूर्तियां क्या हैं, जिनके गिरवीदा होकर तुम जमे बैठे हो?"

53. वो बोले, "हमने अपने बाप-दादा को इन्हीं को पूजते पाया है"।

54. उसने कहा, "तुम और तुम्हारे बाप-दादा खुली गुमराही में हो"।

55. उन्होंने कहा, "क्या तू हमारे पास हक़ लेकर आया है, या यूं 'ही खेल कर रहा है?"

56. उसने कहा, "नहीं बल्कि वाक़िआ यह है कि तुम्हारा रब आसमानों और ज़मीन का रब है जिसने उनको पैदा फ़रमाया है, और मैं इसपर तुम्हारे सामने गवाही देता हूं।

57. और बख़ुदा, इसके बाद कि तुम पीठ फेरकर लौटो, मैं ज़रूर तुम्हारे बुतों के साथ तदबीर करूंगा"।

58. चुनांचे उसने उन्हें टुकड़े-टुकड़े कर दिया, सिवाय उनके एक बड़े के कि शायद वो उसकी तरफ़ रुजू करें।

59. वो कहने लगे, "किसने हमारे माबूदों के साथ यह हरकत की है? यक़ीनन वह ज़ालिम है"।

60. बोले, "हमने एक नौजवान को उनके मुतअल्लिक़ कुछ कहते सुना है, जिसे इबराहीम कहते हैं"।

61. उन्होंने कहा, "तो उसे ले आओ, लोगों की आंखों के सामने कि वो भी गवाह रहें"।

व ल-क़द् आतैना मूसा व हारूनल्-फ़ुर्क़ा-न व ज़ियाअंव्-व ज़िक्रल् लिल्मुत्तक़ीन (48)

अल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व हुम् मिनस्सा-अ़ति मुश्फ़िक़ून (49)

व हाज़ा ज़िक्रुम् मुबा-रकुन् अन्ज़ल्नाहु, अ-फ़अन्तुम् लहू मुन्किरून • (50) •

व-ल-क़द् आतैना इब्राही-म रुश्दहू मिन् क़ब्लु व कुन्ना बिही आ़लिमीन (51)

इज़् क़ा-ल लिअबीहि व क़ौमिही मा हाज़िहित्तमासीलुल्लती अन्तुम् लहा आ़किफ़ून (52)

क़ालू वजद्ना आबा-अना लहा आ़बिदीन (53)

क़ा-ल ल-क़द् कुन्तुम् अन्तुम् व आबाउकुम् फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (54)

क़ालू अजिअ्-तना बिल्हक़्क़ि अम् अन्-त मिनल्-लाअ़िबीन (55)

क़ा-ल बर्-रब्बुकुम् रब्बुस्समावाति वल्-अर्ज़िल्लज़ी फ़-त-रहुन्-न व अ-न अ़ला ज़ालिकुम् मिनश्-शाहिदीन (56)

व तल्लाहि ल-अकीदन्-न अस्नामकुम् बअ्-द अन् तुवल्लू मुद्बिरीन (57)

फ़-ज-अ़-लहुम् जुज़ाज़न् इल्ला कबीरल्-लहुम् लअ़ल्लहुम् इलैहि यर्जिअून (58)

क़ालू मन् फ़-अ़-ल हाज़ा बिआलि-हतिना इन्नहू लमिनज़्ज़ालिमीन (59)

क़ालू समिअ्ना फ़-तंय्यज़्कुरुहुम् युक़ालु लहू इब्राहीम (60)

क़ालू फ़अ्तू बिही अ़ला अअ्युनिन्नासि लअ़ल्लहुम् यश्हदून (61)

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ الْفُرْقَانَ
وَضِيَآءً وَّذِكْرًا لِّلْمُتَّقِيْنَ ㊽
الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَهُمْ
مِّنَ السَّاعَةِ مُشْفِقُوْنَ ㊾
وَهٰذَا ذِكْرٌ مُّبٰرَكٌ اَنْزَلْنٰهُ ؕ اَفَاَنْتُمْ لَهٗ
ع مُنْكِرُوْنَ ㊿
وَلَقَدْ اٰتَيْنَآ اِبْرٰهِيْمَ رُشْدَهٗ مِنْ قَبْلُ
وَكُنَّا بِهٖ عٰلِمِيْنَ (51)
اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا هٰذِهِ التَّمَاثِيْلُ
الَّتِيْٓ اَنْتُمْ لَهَا عٰكِفُوْنَ (52)
قَالُوْا وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا لَهَا عٰبِدِيْنَ (53)
قَالَ لَقَدْ كُنْتُمْ اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمْ
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ (54)
قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا بِالْحَقِّ اَمْ اَنْتَ مِنَ
اللّٰعِبِيْنَ (55)
قَالَ بَلْ رَّبُّكُمْ رَبُّ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ الَّذِيْ فَطَرَهُنَّ ۖ وَاَنَا عَلٰى
ذٰلِكُمْ مِّنَ الشّٰهِدِيْنَ (56)
وَتَاللّٰهِ لَاَكِيْدَنَّ اَصْنَامَكُمْ بَعْدَ
اَنْ تُوَلُّوْا مُدْبِرِيْنَ (57)
فَجَعَلَهُمْ جُذٰذًا اِلَّا كَبِيْرًا لَّهُمْ لَعَلَّهُمْ
اِلَيْهِ يَرْجِعُوْنَ (58)
قَالُوْا مَنْ فَعَلَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَآ اِنَّهٗ
لَمِنَ الظّٰلِمِيْنَ (59)
قَالُوْا سَمِعْنَا فَتًى يَّذْكُرُهُمْ يُقَالُ لَهٗٓ اِبْرٰهِيْمُ (60)
قَالُوْا فَاْتُوْا بِهٖ عَلٰٓى اَعْيُنِ النَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَشْهَدُوْنَ (61)

62. उन्होंने कहा, "क्या तूने हमारे माबूदों के साथ यह हरकत की, ऐ इबराहीम?"

63. उसने कहा, "बल्कि उनके इस बड़े ने की होगी, उन्हीं से पूछ लो, अगर वो बोलते हों"।

64. तब वो खुद अपनी तरफ़ रुजू हुए और कहने लगे, "वाक़िई ज़ालिम तो तुम्हीं लोग हो"।

65. मगर फिर वो बिल्कुल औंधे हो रहे (फिर बोले) "तुझे तो मालूम है कि ये बोलते नहीं"।

66. उसने कहा, "फिर क्या तुम अल्लाह से हटकर उसे पूजते हो जो न तुम्हें कुछ नफ़ा पहुंचा सके, और न तुम्हें कोई ज़रर पहुंचा सके?

67. तुफ़ है तुमपर भी और उनपर भी जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो! तो क्या तुम अक्ल से काम नहीं लेते?"

68. उन्होंने कहा, "जला दो उसे, और अपने माबूदों की हिमायत करो, अगर तुम्हें कुछ करना है"।

69. हमने कहा, "ऐ आग, ठंडी हो जा और सलामती बन जा इबराहीम पर!"

70. उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही; लेकिन हमने उन्हीं को ज़ियांकार बना दिया,

71. और हम उसे और लूत को बचा कर उस सरज़मीन की तरफ़ निकाल ले गए जिसमें हमने दुनिया वालों के लिए बरकतें रखी थीं।

72. और हमने उसे इसहाक़ अता किया और मज़ीद याकूब और हर एक को हमने सालेह बनाया।

73. और हमने उन्हे इमाम बनाया कि वो हमारे हुक्म से राह दिखाते थे, और हमने उनकी तरफ़ नेक कामों के करने, और नमाज़ की पाबन्दी करने और ज़कात देने की वही की, और वो हमारे इबादत गुज़ार थे।

74. और रहा लूत तो उसे हम ने कुव्वते फ़ैसला और इल्म अता किया; और उसे उस बस्ती से नजात बख़्शी जो गन्दे काम करती थी, हक़ीक़त में

क़ालू अ-अन्-त फ़-अ़ल्-त हाज़ा बिआलि-हतिना या इब्राहीम (62)

क़ा-ल बल् फ़-अ़-लहू कबीरूहुम् हाज़ा फ़स्अलूहुम् इन् कानू यन्तिकून (63)

फ़-र-जअू इला अन्फ़ुसिहिम् फ़क़ालू इन्नकुम् अन्तुमुज़्ज़ालिमून (64)

सुम्-म नुकिसू अ़ला रूऊसिहिम् ल-क़द् अ़लिम्-त मा हाउला-इ यन्तिकून (65)

क़ा-ल अ-फ़तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुकुम् शैअंव्-व ला यज़ुर्रुकुम् (66)

उफ़्फ़िल्-लकुम् व लिमा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि, अ-फ़ला तअ्क़िलून (67)

क़ालू हर्रिक़ूहु वन्सुरू आलि-ह-तकुम् इन् कुन्तुम् फ़ाअ़िलीन (68)

कुल्ना या नारू कूनी बर्दंव्-व सलामन् अ़ला इब्राहीम (69)

व अरादू बिही कैदन् फ़-जअ़ल्नाहुमुल्-अख़्सरीन (70)

व नज्जैनाहु व लूतन् इलल्-अर्ज़िल्लती बारक्ना फ़ीहा लिल्आ़लमीन (71)

व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ्कू-ब नाफ़ि-लतन्, व कुल्लन् जअ़ल्ना सालिहीन (72)

व जअ़ल्नाहुम् अ-इम्म-तंय्यह्दू-न बिअम्रिना व औहैना इलैहिम् फ़िअ्लल्-ख़ैराति व इक़ामस्सलाति व ईताअज़्ज़काति व कानू लना आ़बिदीन (73)

व लूतन् आतैनाहु हुक्मंव्-व अ़िल्मंव्-व नज्जैनाहु मिनल्-क़र्यतिल्लती कानत् तअ्मलुल्-ख़बाइ-स,

قَالُوْٓا ءَاَنْتَ فَعَلْتَ هٰذَا بِاٰلِهَتِنَا
يٰٓاِبْرٰهِيْمُ ٦٢
قَالَ بَلْ فَعَلَهٗ ۖ كَبِيْرُهُمْ هٰذَا فَسْـَٔلُوْهُمْ
اِنْ كَانُوْا يَنْطِقُوْنَ ٦٣
فَرَجَعُوْٓا اِلٰٓى اَنْفُسِهِمْ فَقَالُوْٓا اِنَّكُمْ
اَنْتُمُ الظّٰلِمُوْنَ ٦٤
ثُمَّ نُكِسُوْا عَلٰى رُءُوْسِهِمْ ۚ لَقَدْ عَلِمْتَ
مَا هٰٓؤُلَآءِ يَنْطِقُوْنَ ٦٥
قَالَ اَفَتَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا
يَنْفَعُكُمْ شَيْـًٔا وَّلَا يَضُرُّكُمْ ٦٦
اُفٍّ لَّكُمْ وَلِمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ ۗ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ٦٧
قَالُوْا حَرِّقُوْهُ وَانْصُرُوْٓا اٰلِهَتَكُمْ
اِنْ كُنْتُمْ فٰعِلِيْنَ ٦٨
قُلْنَا يٰنَارُ كُوْنِيْ بَرْدًا وَّسَلٰمًا عَلٰٓى
اِبْرٰهِيْمَ ٦٩
وَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ
الْاَخْسَرِيْنَ ٧٠
وَنَجَّيْنٰهُ وَلُوْطًا اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ
بٰرَكْنَا فِيْهَا لِلْعٰلَمِيْنَ ٧١
وَوَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ ۗ وَيَعْقُوْبَ نَافِلَةً ۗ
وَكُلًّا جَعَلْنَا صٰلِحِيْنَ ٧٢
وَجَعَلْنٰهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا وَاَوْحَيْنَآ
اِلَيْهِمْ فِعْلَ الْخَيْرٰتِ وَاِقَامَ الصَّلٰوةِ
وَاِيْتَآءَ الزَّكٰوةِ ۚ وَكَانُوْا لَنَا عٰبِدِيْنَ ٧٣
وَلُوْطًا اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا وَّعِلْمًا وَّنَجَّيْنٰهُ
مِنَ الْقَرْيَةِ الَّتِيْ كَانَتْ تَّعْمَلُ الْخَبٰٓئِثَ ۗ

वह बहुत ही बुरी और फ़ासिक़ क़ौम थी;

75. और उसको हमने अपनी रहमत में दाख़िल किया; कुछ शक नही कि वह सालेहीन में से था।

76. और नूह को भी याद करो जबकि उसने उससे पहले पुकारा था, तो हमने उसकी सुन ली, और हमने उसे और उस के लोगों को बहुत बड़े ग़म से नजात दी,

77. और उस क़ौम के मुक़ाबले में जिसने हमारी आयतों को झुटला दिया था हमने उसकी मदद की; हक़ीक़त में वो बुरे लोग थे, पस हमने उन सबको ग़र्क़ कर दिया।

78. और दाऊद और सुलैमान पर भी हमने फ़ज़्ल किया, याद करो जबकि वो दोनों खेती का एक झगड़ा चुका रहे थे, जब रात में उसको कुछ लोगों की बकरियां रौंद गई थी और उनका (क़ौम का) फ़ैसला हमारे सामने था;

79. तब हमने सुलैमान को उसकी समझ दे दी, और यूं तो हर एक को हमने क़ुव्वते फ़ैसला और इल्म अता किया था। और दाऊद के साथ हमने पहाड़ों को मुसख़्ख़र कर दिया था कि वो तसबीह करते थे, और परिन्दों को भी, और ऐसा करने वाले हम ही थे।

80. और हमने उसे तुम्हारे लिए लिबास बनाने की कारीगरी भी सिखाई थी, ताकि वह तुम्हारी जंग में तुम्हारी हिफ़ाज़त करे; फिर क्या तुम शुक्रगुज़ार हो?

81. और सुलैमान के लिए हमने तेज़ हवा को मुसख़्ख़र कर दिया था, जो उसके हुक्म से उस सरज़मीन की तरफ़ चलती थी जिसमें हमने बरकतें रखी थीं; हम तो हर चीज़ का इल्म रखते हैं।

82. और कितने ही शैतानों को भी ताबे किया था जो उसके लिए ग़ोते लगाते और इसके अलावा दूसरा काम भी करते थे और हम उनको संभालने वाले थे।

83. और अय्यूब पर भी रहमत की, याद करो जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि "मुझे तकलीफ़ पहुंची है और तू सब से बढ़कर रहम करने वाला है"।

84. पस हमने उसकी सुन ली, और जिस तकलीफ़ में वह मुब्तला

इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़ासिक़ीन (74)

व अद्ख़ल्नाहु फ़ी रह्मतिना, इन्नहू मिनस्-सालिहीन (75) ●

व नूहन् इज़् नादा मिन् क़ब्लु फ़स्त-जब्ना लहू फ़नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल् कर्बिल्-अ़ज़ीम (76)

व नसर्नाहु मिनल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना, इन्नहुम् कानू क़ौ-म सौइन् फ़-अग़्रक़्नाहुम् अज्मअ़ीन (77)

व दावू-द व सुलैमा-न इज़् यह्कुमानि फ़िल्हर्सि इज़् न-फ़शत् फ़ीहि ग़-नमुल्-क़ौमि व कुन्ना लिहुक्मिहिम् शाहिदीन (78)

फ़-फ़ह्हम्नाहा सुलैमा-न व कुल्लन् आतैना हुक्मंव्-व अ़िल्मंव्-व सख़्ख़र्ना म-अ़ दावूदल्-जिबा-ल युसब्बिह्-न वत्तै-र, व कुन्ना फ़ाअ़िलीन (79)

व अ़ल्लम्नाहु सन्अ़-त लबूसिल्-लकुम् लितुह्सि-नकुम् मिम्-बअ्सिकुन् फ़-हल् अन्तुम् शाकिरून (80)

व लिसुलैमानर्री-ह आ़सि-फ़तन् तज्री बिअम्रिही इलल्-अर्ज़िल्लती बारक्ना फ़ीहा, व कुन्ना बिकुल्लि शैइन् आ़लिमीन (81)

व मिनश्-शयातीनि मंय्यग़ूसू-न लहू व यअ्मलू-न अ़-मलन् दू-न ज़ालि-क व कुन्ना लहुम् हाफ़िज़ीन (82)

व अय्यू-ब इज़् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनियज़्-ज़ुर्रू व अन्-त अर्हमुर्-राहिमीन (83)

फ़स्त-जब्ना लहू फ़-कशफ़्ना मा बिही मिन् ज़ुर्रिंव्-व आतैनाहु अह्लहू व मिस्लहुम् म-अ़हुम्

اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فٰسِقِيْنَ ۙ(٧٤)

وَ اَدْخَلْنٰهُ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ (٧٥)

وَ نُوْحًا اِذْ نَادٰى مِنْ قَبْلُ فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَنَجَّيْنٰهُ وَ اَهْلَهٗ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ ۚ(٧٦)

وَ نَصَرْنٰهُ مِنَ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمَ سَوْءٍ فَاَغْرَقْنٰهُمْ اَجْمَعِيْنَ (٧٧)

وَ دَاوٗدَ وَ سُلَيْمٰنَ اِذْ يَحْكُمٰنِ فِي الْحَرْثِ اِذْ نَفَشَتْ فِيْهِ غَنَمُ الْقَوْمِ ۚ وَ كُنَّا لِحُكْمِهِمْ شٰهِدِيْنَ ۙۗ(٧٨)

فَفَهَّمْنٰهَا سُلَيْمٰنَ ۚ وَ كُلًّا اٰتَيْنَا حُكْمًا وَّ عِلْمًا ۫ وَّ سَخَّرْنَا مَعَ دَاوٗدَ الْجِبَالَ يُسَبِّحْنَ وَ الطَّيْرَ ؕ وَ كُنَّا فٰعِلِيْنَ (٧٩)

وَ عَلَّمْنٰهُ صَنْعَةَ لَبُوْسٍ لَّكُمْ لِتُحْصِنَكُمْ مِّنْۢ بَاْسِكُمْ ۚ فَهَلْ اَنْتُمْ شٰكِرُوْنَ (٨٠)

وَ لِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ عَاصِفَةً تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖۤ اِلَى الْاَرْضِ الَّتِيْ بٰرَكْنَا فِيْهَا ؕ وَ كُنَّا بِكُلِّ شَيْءٍ عٰلِمِيْنَ (٨١)

وَ مِنَ الشَّيٰطِيْنِ مَنْ يَّغُوْصُوْنَ لَهٗ وَ يَعْمَلُوْنَ عَمَلًا دُوْنَ ذٰلِكَ ۚ وَ كُنَّا لَهُمْ حٰفِظِيْنَ ۙ(٨٢)

وَ اَيُّوْبَ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗۤ اَنِّيْ مَسَّنِيَ الضُّرُّ وَ اَنْتَ اَرْحَمُ الرّٰحِمِيْنَ ۚۖ(٨٣)

فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ فَكَشَفْنَا مَا بِهٖ مِنْ ضُرٍّ وَّ اٰتَيْنٰهُ اَهْلَهٗ وَ مِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ

था उसको दूर कर दिया, और उसे उसके अहल व अयाल, और उनके साथ उनके मानिन्द और भी अपने यहां से रहमत के तौर पर अता किए, एक याददिहानी के तौरपर इबादत गुज़ारों के लिए।

85. और इसमाईल और इदरीस और ज़ुलकिफ़्ल पर भी फ़ज़्ल किया, उनमें से हर एक सब्र करने वालों में से था,

86. और उन्हें हमने अपनी रहमत में दाख़िल किया; बेशक वो सब सालेहीन में से थे।

87. और ज़ुन-नून (हज़रत यूनुस) पर भी रहम किया, याद करो जबकि वह बेहद गुस्सा होकर चल दिया और समझा कि हम उसे तंगी में न डालेंगे, आख़िर को उसने तारीकियों में पुकारा कि "तेरे सिवा कोई माबूद नहीं। क्या ही अज़मतवाला है तू! बेशक मैं कुसूरवार हूं"।

88. तब हमने उसकी दुआ क़बूल की और उसे ग़म से नजात दी, हम इसी तरह मोमिनीन को नजात दिया करते हैं।

89. और ज़करीया पर भी फ़ज़ल किया, याद करो जबकि उसने अपने रब को पुकारा कि "मेरे रब, मुझे अकेला न छोड़। और बेहतरीन वारिस तू ही है"।

90. पस हमने उसकी दुआ क़बूल की, और उसे यह्या अता किया, और उसके लिए उसकी बीवी को तन्दुरुस्त कर दिया, यक़ीनन वह नेकी के कामों में सबक़त करते थे, और हमें रग़बत और ख़ौफ़ के साथ पुकारते थे; और हमारे आगे दबे रहते थे।

91. और वह ख़ातून जिसने अपने नामूस की हिफ़ाज़त की, हमने उसके अन्दर अपनी रूह फूंकी और उसे और उसके बेटे को सारे जहां के लिए एक निशानी बना दिया।

92. "यक़ीनन यह तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है, और मैं तुम्हारा रब हूं; पस तुम मेरी इबादत करो"।

93. मगर उन्होंने आपस में अपने मुआमले को टुकड़े-टुकड़े कर डाला; हर एक को हमारी ही तरफ़ लौटना है।

94. फिर जा नेक आमाल इख़्तियार करेगा, बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो उसकी कोशिश की नाक़दरी न होगी, हम तो उसे उसके लिए लिख रहे हैं।

रह्म-तम् मिन् अिन्दिना व ज़िक्रा लिल्आबिदीन (84)

व इस्माअी-ल व इद्री-स व ज़ुलकिफ़्लि, कुल्लुम् मिनस्साबिरीन (85)

व अद्ख़ल्नाहुम् फ़ी रह्मतिना, इन्नहुम् मिनस्सालिहीन (86)

व ज़न्नूनि इज़् ज़-ह-ब मुग़ाज़िबन् फ़-ज़न्-न अल्लन् नक़्दि-र अलैहि फ़नादा फ़िज़्ज़ुलुमाति अल्-ला इला-ह इल्ला अन्-त सुब्हान-क इन्नी कुन्तु मिनज़्ज़ालिमीन (87)

फ़स्त-जब्ना लहू व नज्जैनाहु मिनल्-ग़म्मि, व कज़ालि-क नुन्जिल्-मुअ्मिनीन (88)

व ज़-करिय्या इज़् नादा रब्बहू रब्बि ला तज़र्नी फ़र्दंव्-व अन्-त ख़ैरुल्-वारिसीन (89)

फ़स्त-जब्ना लहू व व-हब्ना लहू यह्या व अस्लह्ना लहू ज़ौजहू, इन्नहुम् कानू युसारिअू-न फ़िल्ख़ैराति व यद्अूनना र-ग़बंव्-व र-हबन्, व कानू लना ख़ाशिअीन (90)

वल्लती अह्-सनत् फ़र्-जहा फ़-नफ़ख़्ना फ़ीहा मिर्रूहिना व जअ़ल्नाहा वब्नहा आयतल् लिल्आलमीन (91)

इन्-न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव्वाहि-दतंव्-व अ-न रब्बुकुम् फ़अ्बुदून (92)

व त-क़त्तअू अम्रहुम् बैनहुम्, कुल्लुन् इलैना राजिअून (93) ●

फ़-मंय्यअ्मल् मिनस्सालिहाति व हु-व मुअ्मिनुन् फ़ला कुफ़्रा-न लिसअ्यिही व इन्ना लहू कातिबून (94)

رَحْمَةً مِّنْ عِنْدِنَا وَذِكْرٰى
لِلْعٰبِدِيْنَ ۝٨٤
وَاِسْمٰعِيْلَ وَاِدْرِيْسَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ
كُلٌّ مِّنَ الصّٰبِرِيْنَ ۝٨٥
وَاَدْخَلْنٰهُمْ فِيْ رَحْمَتِنَا ؕ اِنَّهُمْ مِّنَ
الصّٰلِحِيْنَ ۝٨٦
وَذَا النُّوْنِ اِذْ ذَّهَبَ مُغَاضِبًا فَظَنَّ
اَنْ لَّنْ نَّقْدِرَ عَلَيْهِ فَنَادٰى فِي
الظُّلُمٰتِ اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّآ اَنْتَ سُبْحٰنَكَ ۖ
اِنِّيْ كُنْتُ مِنَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٨٧
فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَنَجَّيْنٰهُ مِنَ الْغَمِّ ؕ
وَكَذٰلِكَ نُـْۨجِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٨٨
وَزَكَرِيَّآ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗ رَبِّ لَا تَذَرْنِيْ
فَرْدًا وَّاَنْتَ خَيْرُ الْوٰرِثِيْنَ ۝٨٩
فَاسْتَجَبْنَا لَهٗ ۙ وَوَهَبْنَا لَهٗ يَحْيٰى
وَاَصْلَحْنَا لَهٗ زَوْجَهٗ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا
يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَيَدْعُوْنَنَا
رَغَبًا وَّرَهَبًا ؕ وَكَانُوْا لَنَا خٰشِعِيْنَ ۝٩٠
وَالَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهَا
مِنْ رُّوْحِنَا وَجَعَلْنٰهَا وَابْنَهَآ اٰيَةً
لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝٩١
اِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً ۖ
وَّاَنَا رَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْنِ ۝٩٢
وَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ ؕ كُلٌّ اِلَيْنَا
رٰجِعُوْنَ ۝٩٣
فَمَنْ يَّعْمَلْ مِنَ الصّٰلِحٰتِ وَهُوَ مُؤْمِنٌ
فَلَا كُفْرَانَ لِسَعْيِهٖ ۚ وَاِنَّا لَهٗ كٰتِبُوْنَ ۝٩٤

95. और जिस बस्ती को हमने हलाक कर दिया उसका ज़िन्दा होना मुमकिन नहीं। उसके लोग लौटने के नहीं।

96. यहां तक कि वह वक़्त आ जाए जब याजूज व माजूज खोल दिए जाएंगे और हर बुलन्दी से निकल पड़ेंगे।

97. और वादा-ए-हक़ क़रीब आ लगेगा, तो नागहां क्या देखेंगे कि उन लोगों की आंखें फटी की फटी रह गई हैं जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया था, "ऐ हमारी बदबख़्ती! हम इसकी तरफ़ से ग़फ़लत में रहे, बल्कि हम ही ज़ालिम थे!"

98. यक़ीनन तुम और वो जिनको तुम अल्लाह को छोड़कर पूजते हो, सब जहन्नम का इंधन हो; तुम उसके घाट उतरोगे"।

99. अगर ये माबूद होते, तो उसमें न उतरते और हर एक उसमें मुस्तक़िल रहेगा;

100. उन्हें वहां चिल्लाना और सांस खींचना है, और हालत यह होगी कि वो वहां कुछ भी नहीं सुनेंगे।

101. रहे वो लोग जिनके लिए पहले ही से हमारी जानिब से भलाई (अच्छा अंजाम) सबक़त कर चुकी, वो उससे दूर रहेंगे,

102. उसकी आहट भी वो नहीं सुनेंगे, और वो अपने जी की चाही हुई चीज़ों के दरमियान हमेशा रहेंगे;

103. वह सब से बड़ी घबराहट उन्हें ग़म में न डालेगी, फ़रिश्ते उनका इस्तिक़बाल करेंगे, "यह तुम्हारा वही दिन है जिसका तुमसे वादा किया जाता रहा है"।

104. जिस दिन हम आसमान को लपेट लेंगे जैसे तूमार में औराक़ लपेटते हैं; जिस तरह हमने पहली तख़लीक़ की इबतिदा की थी, उसी तरह हम फिर उसका इआदा करेंगे। यह हमारे ज़िम्मे एक वादा है, यक़ीनन हम यह करने वाले हैं।

105. और हम ज़बूर में याददिहानी के बाद लिख चुके हैं कि "ज़मीन के वारिस मेरे सालेह बन्दे होंगे"।

106. इसमें इबादत गुज़ार लोगों के लिए एक पैग़ाम है।

व हरामुन् अ़ला क़र्यतिन् अह्लक्नाहा अन्नहुम् ला यर्जिअून (95)

हत्ता इज़ा फ़ुतिहत् यअ्जूजु व मअ्जूजु व हुम् मिन् कुल्लि ह-दबिंय्-यन्सिलून (96)

वक़्त-रबल्-वअ्दुल्हक़्क़ु फ़-इज़ा हि-य शाख़ि-सतुन् अब्सारुल्लज़ी-न क-फ़रू, या वैलना क़द् कुन्ना फ़ी ग़फ़्लतिम्-मिन् हाज़ा बल् कुन्ना ज़ालिमीन (97)

इन्नकुम् व मा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ह-सबु जहन्न-म, अन्तुम् लहा वारिदून (98)

लौ का-न हाउला-इ आलि-हतम् मा व-रदूहा, व कुल्लुन् फ़ीहा ख़ालिदून (99)

लहुम् फ़ीहा ज़फ़ीरुंव्-व हुम् फ़ीहा ला यस्मअून (100)

इन्नल्लज़ी-न स-बक़त् लहुम् मिन्नल्-हुस्ना उलाइ-क अ़न्हा मुब्अ़दून (101)

ला यस्मअू-न हसी-सहा व हुम् फ़ी मश्त-हत् अन्फ़ुसुहुम् ख़ालिदून (102)

ला यह्ज़ुनुहुमुल फ़-ज़अुल्-अक्बरु व त-तलक़्क़ाहुमुल्-मलाइ-कतु, हाज़ा यौमुकुमुल्लज़ी कुन्तुम् तूअ़दून (103)

यौ-म नत्विस्-समा-अ क-तय्यिस्-सिजिल्लि लिल्कुतुबि, कमा बदअ्ना अव्व-ल ख़ल्क़िन् नुअ़ीदुहू, वअ्दन् अ़लैना, इन्ना कुन्ना फ़ाअ़िलीन (104)

व ल-क़द् कतब्ना फ़िज़्ज़बूरि मिम्-बअ्दिज़्ज़िक्रि अन्नल्-अर्-ज़ यरिसुहा अ़िबादि-यस्सालिहून (105)

इन्-न फ़ी हाज़ा ल-बलाग़ल्-लिक़ौमिन् आ़बिदीन (106)

وَحَرٰمٌ عَلٰى قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَآ اَنَّهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٩٥﴾

حَتّٰىٓ اِذَا فُتِحَتْ يَاْجُوْجُ وَمَاْجُوْجُ وَهُمْ مِّنْ كُلِّ حَدَبٍ يَّنْسِلُوْنَ ﴿٩٦﴾

وَاقْتَرَبَ الْوَعْدُ الْحَقُّ فَاِذَا هِيَ شَاخِصَةٌ اَبْصَارُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يٰوَيْلَنَا قَدْ كُنَّا فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا بَلْ كُنَّا ظٰلِمِيْنَ ﴿٩٧﴾

اِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ حَصَبُ جَهَنَّمَ اَنْتُمْ لَهَا وٰرِدُوْنَ ﴿٩٨﴾

لَوْ كَانَ هٰٓؤُلَآءِ اٰلِهَةً مَّا وَرَدُوْهَا وَكُلٌّ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ﴿٩٩﴾

لَهُمْ فِيْهَا زَفِيْرٌ وَّهُمْ فِيْهَا لَا يَسْمَعُوْنَ ﴿١٠٠﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ سَبَقَتْ لَهُمْ مِّنَّا الْحُسْنٰىٓ اُولٰٓئِكَ عَنْهَا مُبْعَدُوْنَ ﴿١٠١﴾

لَا يَسْمَعُوْنَ حَسِيْسَهَا وَهُمْ فِيْ مَا اشْتَهَتْ اَنْفُسُهُمْ خٰلِدُوْنَ ﴿١٠٢﴾

لَا يَحْزُنُهُمُ الْفَزَعُ الْاَكْبَرُ وَتَتَلَقّٰىهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ هٰذَا يَوْمُكُمُ الَّذِيْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٣﴾

يَوْمَ نَطْوِي السَّمَآءَ كَطَيِّ السِّجِلِّ لِلْكُتُبِ كَمَا بَدَاْنَآ اَوَّلَ خَلْقٍ نُّعِيْدُهٗ وَعْدًا عَلَيْنَا اِنَّا كُنَّا فٰعِلِيْنَ ﴿١٠٤﴾

وَلَقَدْ كَتَبْنَا فِي الزَّبُوْرِ مِنْۢ بَعْدِ الذِّكْرِ اَنَّ الْاَرْضَ يَرِثُهَا عِبَادِيَ الصّٰلِحُوْنَ ﴿١٠٥﴾

اِنَّ فِيْ هٰذَا لَبَلٰغًا لِّقَوْمٍ عٰبِدِيْنَ ﴿١٠٦﴾

107. और हमने सारे जहां पर रहमत बनाकर तुम्हें भेजा है।

108. कहो: "मेरे पास तो बस यह वही की जाती है कि 'तुम्हारा माबूद अकेला माबूद है, फिर क्या तुम सरे इताअत ख़म करते हो'?"

109. फिर अगर वो मुंह फेरे, तो कह दो: "मैंने तुम्हें यकसां तौरपर आगाह कर दिया है, और मैं नहीं जानता कि जिसका वादा तुमसे किया जा रहा है वह क़रीब है या दूर।"

110. यक़ीनन वह बुलन्द आवाज़ से कही हुई बात को जानता है और उसे भी वह जानता है जो तुम छुपाते हो।

111. मुझे नहीं मालूम शायद यह तुम्हारे लिए एक आज़माइश हो और एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए लुत्फ़े हयात।

112. उसने कहा, "ऐ मेरे रब, हक़ का फ़ैसला कर दे!" और हमारा रब रहमान है; उसी से उन बातों के मुक़ाबले में जो तुम बयान करते हो मदद की दरख़्वास्त है।

सूरह अल-हज मदनी

(आयतें 78, रुकूआत 10)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो! हक़ीक़त यह है कि क़ियामत की घड़ी का ज़लज़ला बड़ी हौलनाक चीज़ है;

2. जिस दिन तुम उसे देखोगे, हाल यह होगा कि हर दूध पिलानेवाली अपने दूध पीते बच्चे को भूल जाएगी, और हर हामिला अपना हमल गिरा देगी, और लोगों को तुम मदहोश देखोगे, हालांकि वो नशे में न होंगे, बल्कि अल्लाह का अज़ाब है ही सख़्त चीज़।

3. लोगों में कोई ऐसा भी है जो इल्म के बग़ैर अल्लाह के बारे में झगड़ता है और हर शैतान सरकश की पैरवी करता है,

4. जबकि उसके लिए लिख दिया गया है कि जो उससे दोस्ती करेगा, उसे वह गुमराह कर के रहेगा, और उसे दहकती आग के अज़ाब का रास्ता दिखाएगा।

5. ऐ लोगो! अगर तुम्हें दोबारा जी उठने के बारे में कोई शक हो, तो देखो हमने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़ा से, फिर जनीन से, फिर गोश्त की बोटी से, कोई मुकम्मल शक्ल में

व मा अर्सल्ना-क इल्ला रह्म-तल्-लिल्आलमीन (107)

कुल् इन्नमा यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़-हल् अन्तुम् मुस्लिमून (108)

फ़-इन् तवल्लौ फ़क़ुल् आज़न्तुकुम् अ़ला सवा-इन्, व इन् अद्री अ-क़रीबुन् अम् बअ़ीदुम् मा तूअ़दून (109)

इन्नहू यअ्लमुल्-जह्-र मिनल्-क़ौलि व यअ्लमु मा तक्तुमून (110)

व इन् अद्री लअ़ल्लहू फ़ित्-नतुल्-लकुम् व मताअुन् इला हीन (111)

क़ा-ल रब्बिह्कुम् बिल्हक़्क़ि व रब्बुनर्रह्मानुल्-मुस्तआ़नु अ़ला मा तसिफ़ून ● (112) ●

22 सूरतुल-हज्जि
(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 5432
अक्षर, 1283 शब्द, 78 आयतें और
10 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् इन्-न ज़ल्ज़-लतस्सा-अ़ति शैउन् अ़ज़ीम (1)

यौ-म तरौनहा तज़्हलु कुल्लु मुर्ज़ि-अ़तिन् अ़म्मा-अर्ज़-अ़त् व त-ज़अु कुल्लु ज़ाति-हम्लिन् हम्लहा व तरन्ना-स सुकारा व मा हुम् बिसुकारा व लाकिन्-न अ़ज़ाबल्लाहि शदीद (2)

व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व यत्तबिअु कुल्-ल शैतानिम्-मरीद (3)

कुति-ब अ़लैहि अन्नहू मन् तवल्लाहु फ़-अन्नहू युज़िल्लुहू व यह्दीहि इला अ़ज़ाबिस्सअ़ीर (4)

या अय्युहन्नासु इन् कुन्तुम् फ़ी रैबिम् मिनल्-बअ्सि फ़-इन्ना ख़लक़्नाकुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म मिन् अ़-ल-क़तिन् सुम्-म मिम्-मुज़्-ग़तिम्

وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا رَحْمَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿١٠٧﴾
قُلْ اِنَّمَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ اِلٰهُكُمْ
اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَهَلْ اَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ﴿١٠٨﴾
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَقُلْ اٰذَنْتُكُمْ عَلٰى
سَوَآءٍ ۗ وَاِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ
مَّا تُوْعَدُوْنَ ﴿١٠٩﴾
اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ مِنَ الْقَوْلِ وَيَعْلَمُ
مَا تَكْتُمُوْنَ ﴿١١٠﴾
وَاِنْ اَدْرِيْ لَعَلَّهٗ فِتْنَةٌ لَّكُمْ
وَمَتَاعٌ اِلٰى حِيْنٍ ﴿١١١﴾
قٰلَ رَبِّ احْكُمْ بِالْحَقِّ ۗ وَرَبُّنَا الرَّحْمٰنُ
الْمُسْتَعَانُ عَلٰى مَا تَصِفُوْنَ ﴿١١٢﴾

سُوْرَةُ الْحَجِّ مَدَنِيَّةٌ ٢٢ رُكُوْعَاتُهَا ١٠ اٰيَاتُهَا ٧٨

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ۚ اِنَّ زَلْزَلَةَ
السَّاعَةِ شَيْءٌ عَظِيْمٌ ﴿١﴾
يَوْمَ تَرَوْنَهَا تَذْهَلُ كُلُّ مُرْضِعَةٍ
عَمَّآ اَرْضَعَتْ وَتَضَعُ كُلُّ ذَاتِ حَمْلٍ
حَمْلَهَا وَتَرَى النَّاسَ سُكٰرٰى وَمَا هُمْ
بِسُكٰرٰى وَلٰكِنَّ عَذَابَ اللّٰهِ شَدِيْدٌ ﴿٢﴾
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِى اللّٰهِ بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَّيَتَّبِعُ كُلَّ شَيْطٰنٍ مَّرِيْدٍ ﴿٣﴾
كُتِبَ عَلَيْهِ اَنَّهٗ مَنْ تَوَلَّاهُ فَاَنَّهٗ
يُضِلُّهٗ وَيَهْدِيْهِ اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٤﴾
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنْ كُنْتُمْ فِيْ رَيْبٍ مِّنَ
الْبَعْثِ فَاِنَّا خَلَقْنٰكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ
مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ مِنْ مُّضْغَةٍ

होता है और कोई ना मुकम्मल शक्ल में, ताकि हम तुमपर ज़ाहिर कर दें, और हम जिसे चाहते हैं एक मुक़र्रर वक़्त तक रहमों में ठहराए रखते हैं, फिर तुम्हें एक बच्चे की सूरत में निकाल लाते हैं, फिर एक वक़्त देते हैं ताकि तुम अपनी जवानी तक पहुंचो; और तुम में कोई तो पहले मर जाता है और कोई बुढ़ापे की इंतिहाई उम्र की तरफ़ फिर जाता है, जिसके नतीजे में जानने के बाद वह कुछ नहीं जानता। और तुम ज़मीन को देखते हो कि सूखी पड़ी है फिर जहां हमने उसपर पानी बरसाया कि वह फबक उठी और वह उभर आई, और उसने हर क़िस्म की खुश मंज़र चीज़ें उगाईं।

6. यह इसलिए कि अल्लाह ही हक़ है, और वह मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और उसे हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

7. और यह कि क़ियामत की घड़ी आने वाली है, इसमें कोई शक नहीं है, और यह कि अल्लाह उन्हें उठाएगा जो क़ब्रों में हैं।

8.9. और लोगों में कोई ऐसा है जो किसी इल्म और हिदायत और रौशन किताब के बग़ैर अल्लाह के बारे में तकब्बुर से अपने पहलू मोड़ते हुए झगड़ता है ताकि अल्लाह के रास्ते से भटका दे; उसके लिए दुनिया में रुसवाई है, और क़ियामत के दिन हम उसे जलती आग के अज़ाब का मज़ा चखाएंगे।

10. "यह उसकी वजह से है जो तेरे हाथों ने आगे भेजा था और यह कि अल्लाह बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म करने वाला नहीं"।

11. और लोगों में कोई ऐसा है जो एक किनारे पर रह कर अल्लाह की बन्दगी करता है। अगर उसे फ़ायदा पहुंचा तो उससे मुतमइन हो गया, और अगर उसे कोई आज़माइश पेश आ गई तो औंधा हो गया। दुनिया भी खोई और आख़िरत भी, यही है सरीह ख़सारा।

12. वह अल्लाह को छोड़कर उसे पुकारता है जो न उसे नुक़सान पहुंचा सके, और न उसे नफ़ा पहुंचा सके, यही है परले दरजे की गुमराही।

13. वह पुकार कर कहेगा कि जिससे पहुंचने वाला नुक़सान उसके नफ़ा

मुख़ल्ल-क़तिंव्-व ग़ैरि मुख़ल्ल-क़तिल् लिनुबय्यि-न लकुम्, व नुक़िर्रू फ़िल्अर्हामि मा नशा-उ इला अ-जलिम्-मुसम्मन् सुम्-म नुख़्रिजुकुम् तिफ़्लन् सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्दकुम् व मिन्कुम् मंय्यु-तवफ़्फ़ा व मिन्कुम् मंय्युरद्दु इला अर्ज़लिल्-उमुरि लिकैला यअ्ल-म मिम्-बअ्दि अिल्मिन् शैअन्, व तरल्अर्-ज़ हामि-दतन् फ़-इज़ा अन्ज़ल्ना अ़लैहल् मा-अह्तज़्ज़त् व रबत् व अम्ब-तत् मिन् कुल्लि ज़ौजिम्-बहीज (5)

ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ु व अन्नहू युह्यिल्-मौता व अन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (6)

व अन्नस्सा-अ़-त आति-यतुल्-ला रै-ब फ़ीहा व अन्नल्ला-ह यब्अ़सु मन् फ़िल्क़ुबूर (7)

व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व ला हुदंव्-व ला किताबिम्-मुनीर (8)

सानि-य अ़ित्फ़िही लियुज़िल्-ल अ़न् सबीलिल्लाहि, लहू फ़िद्दुन्या ख़िज़्युंव्-व नुज़ीक़ुहू यौमल्-क़ियामति अ़ज़ाबल्-हरीक़ (9)

ज़ालि-क बिमा क़द्द-मत् यदा-क व अन्नल्ला-ह लै-स बिज़ल्लामिल्-लिल्अ़बीद (10)●

व मिनन्नासि मंय्यअ्बुदुल्ला-ह अ़ला हर्फ़िन् फ़-इन् असा-बहू ख़ैरु-नित्मअन्-न बिही व इन् असाबत्हु फ़ितनतु-निन्क़-ल-ब अ़ला वज्हिही, ख़सिरद्दुन्या वल्आख़िर-त, ज़ालि-क हुवल् ख़ुस्रानुल्-मुबीन (11)

यद्अू मिन् दूनिल्लाहि मा ला यज़ुर्रुहू व मा ला यन्फ़अुहू, ज़ालि-क हुवज़्ज़लालुल्-बअ़ीद (12)

यद्अू ल-मन् ज़र्रुहू अक़्रबु मिन् नफ़्अ़िही,

مُّخَلَّقَةٍ وَّغَيْرِ مُخَلَّقَةٍ لِّنُبَيِّنَ لَكُمْ ۚ
وَنُقِرُّ فِي الْاَرْحَامِ مَا نَشَآءُ اِلٰٓى اَجَلٍ
مُّسَمًّى ثُمَّ نُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ
لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰى
وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّرَدُّ اِلٰٓى اَرْذَلِ الْعُمُرِ
لِكَيْلَا يَعْلَمَ مِنْۢ بَعْدِ عِلْمٍ شَيْـًٔا ۚ وَتَرَى
الْاَرْضَ هَامِدَةً فَاِذَآ اَنْزَلْنَا عَلَيْهَا
الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ وَاَنْۢبَتَتْ مِنْ
كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ۝٥
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّهٗ يُحْيِ
الْمَوْتٰى وَاَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٦ۙ
وَّاَنَّ السَّاعَةَ اٰتِيَةٌ لَّا رَيْبَ فِيْهَا ۙ وَاَنَّ
اللّٰهَ يَبْعَثُ مَنْ فِي الْقُبُوْرِ ۝٧
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ بِغَيْرِ
عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ۝٨ۙ
ثَانِيَ عِطْفِهٖ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ
لَهٗ فِي الدُّنْيَا خِزْيٌ وَّنُذِيْقُهٗ يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ عَذَابَ الْحَرِيْقِ ۝٩
ذٰلِكَ بِمَا قَدَّمَتْ يَدٰكَ وَاَنَّ اللّٰهَ
ع لَيْسَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِيْدِ ۝١٠
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّعْبُدُ اللّٰهَ عَلٰى حَرْفٍ ۚ
فَاِنْ اَصَابَهٗ خَيْرُ اِۨطْمَاَنَّ بِهٖ ۚ وَاِنْ اَصَابَتْهُ
فِتْنَةُ اِۨنْقَلَبَ عَلٰى وَجْهِهٖ ۚ خَسِرَ الدُّنْيَا
وَالْاٰخِرَةَ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝١١
يَدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَضُرُّهٗ وَمَا
لَا يَنْفَعُهٗ ۭ ذٰلِكَ هُوَ الضَّلٰلُ الْبَعِيْدُ ۝١٢ۚ
يَدْعُوْا لَمَنْ ضَرُّهٗٓ اَقْرَبُ مِنْ نَّفْعِهٖ ۭ

से अक़रब (ज़्यादा क़रीब) हो वह बहुत ही बुरा दोस्त है और बहुत ही बुरा साथी।

14. यक़ीनन अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और अच्छे आमाल इख़्तियार किए ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; यक़ीनन अल्लाह जो चाहे करे।

15. जो कोई यह समझता है कि अल्लाह दुनिया और आख़िरत में उसकी हरगिज़ कोई मदद न करेगा, तो उसे चाहिए कि वह आसमान की तरफ़ एक रस्सी ताने, फिर पूरी तदबीर करे, फिर देख ले कि क्या उसकी तदबीर उस चीज़ को दूर कर सकती है जिसके सबब उसे ग़ुस्सा है।

16. इसी तरह हमने इस क़ुरआन को वाज़ेह आयतों की सूरत में नाज़िल किया, और बात यह है कि अल्लाह जिसे चाहता है राह दिखाता है।

17. जो लोग ईमान लाए, और जिन्होंने यहूदियत इख़्तियार की, और साबिई,(सितारापरस्त) और ईसाई और मजूस और जिन लोगों ने शिर्क किया -- उन सब के दरमियान अल्लाह क़ियामत के रोज़ फ़ैसला कर देगा; बेशक अल्लाह की नज़र में हर चीज़ है।

18. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ही को सजदा करते हैं वो सब जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं, और सूरज और चांद, और तारे और पहाड़, और दरख़्त, और जानवर और बहुत से इनसान? और बहुत से ऐसे हैं जिन पर अज़ाब लाज़िम हो चुका है; और जिसे अल्लाह ज़लील करे, उसे इज़्ज़त अता करने वाला कोई नहीं। बेशक अल्लाह जो चाहता है करता है।

19. यह दो फ़रीक़ हैं जो अपने रब के बारे में आपस में झगड़े। पस जिन लोगों ने कुफ़्र किया, उनके लिए आग के लिबास काटे जा चुके हैं, उनके सरों पर खौलता हुआ पानी डाला जाएगा।

20. इससे जो कुछ उनके पेटों में है वह पिघल जाएगा और खालें भी,

21. और उनके लिए लोहे के गुर्ज़ होंगे;

22. जब कभी भी वो घबराकर उससे निकलना चाहेंगे, तो उसी में

लबिअ्सल्-मौला व लबिअ्सल्-अशीर (13)

इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, इन्नल्ला-ह यफ़्अलु मा युरीद (14)

मन् का-न यज़ुन्नु अल्लंय्यन्सु-रहुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति फ़ल्यम्दुद् बि-स-बबिन् इलस्समा-इ सुम्मल्-यक़्तअ् फ़ल्यन्ज़ुर् हल् युज़्हिबन्-न कैदुहू मा यग़ीज़ (15)

व कज़ालि-क अन्ज़ल्नाहु आयातिम्-बय्यिनातिंव्-व अन्नल्ला-ह यह्दी मंय्युरीद (16)

इन्नल्लज़ी-न आमनू वल्लज़ी-न हादू वस्साबिई-न वन्नसारा वल्मजू-स वल्लज़ी-न अश्रकू इन्नल्ला-ह यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन्, शहीद (17)

अलम् त-र अन्नल्ला-ह यस्जुदु लहू मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि वश्शम्सु वल्क़-मरु वन्नुजूमु वल्जिबालु वश्श-जरु वद्दवाब्बु व कसीरुम-मिनन्-नासि, व कसीरुन् हक़्-क़ अ़लैहिल्-अ़ज़ाबु, व मंय्युहिनिल्लाहु फ़मा लहू मिम्-मुक्रिमिन्, इन्नल्ला-ह यफ़्अलु मा यशा-उ ● (18)

हाज़ानि ख़स्मानिख़्त-समू फ़ी रब्बिहिम्, फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू क़ुत्तिअ़त् लहुम् सियाबुम्-मिन् नारिन्, युसब्बु मिन् फ़ौक़ि-रूऊसिहिमुल् -हमीम (19)

युस्हरु बिही मा फ़ी बुतूनिहिम् वल्जुलूद (20)

व लहुम् मक़ामिअु मिन् हदीद (21)

कुल्लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा मिन् ग़म्मिन्

لَبِئْسَ الْمَوْلٰى وَلَبِئْسَ الْعَشِيْرُ ⑬
اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ مَا يُرِيْدُ ⑭
مَنْ كَانَ يَظُنُّ اَنْ لَّنْ يَّنْصُرَهُ اللّٰهُ
فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ فَلْيَمْدُدْ بِسَبَبٍ
اِلَى السَّمَآءِ ثُمَّ لْيَقْطَعْ فَلْيَنْظُرْ هَلْ
يُذْهِبَنَّ كَيْدُهٗ مَا يَغِيْظُ ⑮
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنٰهُ اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ۙ وَّاَنَّ
اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يُّرِيْدُ ⑯
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَالَّذِيْنَ هَادُوْا
وَالصّٰبِـِٕيْنَ وَالنَّصٰرٰى وَالْمَجُوْسَ وَالَّذِيْنَ
اَشْرَكُوْا ۖ اِنَّ اللّٰهَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ شَهِيْدٌ ⑰
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَسْجُدُ لَهٗ مَنْ فِى
السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِى الْاَرْضِ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ وَالنُّجُوْمُ وَالْجِبَالُ وَالشَّجَرُ
وَالدَّوَآبُّ وَكَثِيْرٌ مِّنَ النَّاسِ ؕ وَكَثِيْرٌ
حَقَّ عَلَيْهِ الْعَذَابُ ؕ وَمَنْ يُّهِنِ اللّٰهُ
فَمَا لَهٗ مِنْ مُّكْرِمٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَفْعَلُ
مَا يَشَآءُ ۩ ⑱
هٰذٰنِ خَصْمٰنِ اخْتَصَمُوْا فِىْ رَبِّهِمْ ز
فَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا قُطِّعَتْ لَهُمْ ثِيَابٌ مِّنْ نَّارٍ ؕ
يُصَبُّ مِنْ فَوْقِ رُءُوْسِهِمُ الْحَمِيْمُ ⑲
يُصْهَرُ بِهٖ مَا فِىْ بُطُوْنِهِمْ وَالْجُلُوْدُ ⑳
وَلَهُمْ مَّقَامِعُ مِنْ حَدِيْدٍ ㉑
كُلَّمَآ اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَا مِنْ غَمٍّ

लौटा दिए जाएंगे; और "चखो जलने के अज़ाब का मज़ा!"

23. बेशक अल्लाह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; वहां उन्हें सोने के कंगन और मोती पहनाए जाएंगे और लिबास उनका वहां रेशम होगा।

24. रहनुमाई हुई उनकी पाकीज़ा कलिमे की तरफ़ और रहनुमाई हुई उनकी ख़ुदा-ए-हमीद की तरफ़।

25. (उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है) जिन लोगों ने कुफ़्र किया और वो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं और मस्जिद-ए-हराम से जिसे हमने सब लोगों के लिए ऐसा बनाया है कि उसमें बराबर है वहां रहने वाला और बाहर से आने वाला और जो शख़्स उस (मस्जिद-ए-हराम) में इनहिराफ़ यानी ज़ुल्म के साथ कुछ करना चाहेगा, उसे हम दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखाएंगे।

26. याद करो जबकि हमने इबराहीम के लिए ठिकाना बनाया बैतुल्लाह की जगह को इस हिदायत के साथ कि "मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक न करना। और मेरे घर को तवाफ़ करने वालों और क़ियाम करने वालों और रुकू सजदा करनेवालों के लिए पाक-साफ़ रखना;

27. और लोगों में हज के लिए आम एलान कर दो, "वो हर महरे दूर दराज़ रास्ते से प्यादा भी और दुबली-पतली ऊंटनियों पर भी तेरे पास आएंगे।

28. ताकि वो अपनी मनफ़अतों का मुशाहदा करें, और कुछ मालूम व मुक़र्रर दिनों में उन चौपायों यानी मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें दिए हैं: फिर उसमें से ख़ुद भी खाओ और तंगहाल मुहताज को भी खिलाओ"।

29. फिर उन्हें चाहिए कि अपना मैल-कुचैल दूर करें और अपनी नज़्र पूरी करें, और इस क़दीम घर का तवाफ़ करें।

30. इन उमूर का ख़याल रखो, और जो कोई अल्लाह की क़ायम की हुई हुरमतों की ताज़ीम करे तो यह उसके रब के यहां उसी के लिए बेहतर है। और तुम्हारे लिए चौपाए हलाल हैं,

उईदू फ़ीहा, व ज़ूक़ू अज़ाबल्-हरीक़ (22) ●

इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्-सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-हबिंव्-व लुअ्लुअन्, व लिबासुहुम् फ़ीहा हरीर (23)

व हुदू इलत्तय्यिबि मिनल्-क़ौलि व हुदू इला सिरातिल्-हमीद (24)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व यसुद्दू-न अन् सबीलिल्लाहि वल्मस्जिदिल्-हरामिल्लज़ी जअ़ल्नाहु लिन्नासि सवा-अ-निल्-आकिफ़ु फ़ीहि वल्बादि, व मंय्युरिद् फ़ीहि बि-इल्हादिम्-बिज़ुल्मिन् नुज़िक़्हु मिन् अज़ाबिन् अलीम (25) ●

व इज़् बव्वअ्ना लिइब्राही-म मकानल्-बैति अल्ला तुश्रिक् बी शैअंव्-व तह्हिर् बैति-य लित्ताइफ़ी-न वल्क़ाइमी-न वर्रुक्कअिस्-सुजूद (26)

व अज़्ज़िन् फ़िन्नासि बिल्हज्जि यअ्तू-क रिजालंव्-व अ़ला कुल्लि ज़ामिरिंय्यअ्ती-न मिन् कुल्लि फ़ज्जिन् अमीक़ (27)

लि-यश्हदू मनाफ़ि-अ़ लहुम् व यज़्कुरुस्मल्लाहि फ़ी अय्यामिम् मअ्लूमातिन् अ़ला मा र-ज़-क़हुम् मिम्-बहीमतिल्-अन्आमि फ़कुलू मिन्हा व अत्अिमुल्-बाइसल्-फ़क़ीर (28)

सुम्मल्-यक़्ज़ू त-फ़-सहुम् वल्यूफ़ू नुज़ूरहुम् वल्यत्तव्वफ़ू बिल्बैतिल्-अतीक़ (29)

ज़ालि-क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् हुरुमातिल्लाहि फ़हु-व ख़ैरुल्लहू अ़िन्-द रब्बिही, व उहिल्लत् लकुमुल्-अन्आमु

ع أُعِيدُوا فِيهَا وَذُوقُوا عَذَابَ الْحَرِيقِ ﴿۲۲﴾
إِنَّ اللَّهَ يُدْخِلُ الَّذِينَ آمَنُوا وَعَمِلُوا
الصَّالِحَاتِ جَنَّاتٍ تَجْرِي مِنْ تَحْتِهَا
الْأَنْهَارُ يُحَلَّوْنَ فِيهَا مِنْ أَسَاوِرَ مِنْ
ذَهَبٍ وَلُؤْلُؤًا ۖ وَلِبَاسُهُمْ فِيهَا حَرِيرٌ ﴿۲۳﴾
وَهُدُوا إِلَى الطَّيِّبِ مِنَ الْقَوْلِ وَهُدُوا
إِلَىٰ صِرَاطِ الْحَمِيدِ ﴿۲۴﴾
إِنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا وَيَصُدُّونَ عَنْ
سَبِيلِ اللَّهِ وَالْمَسْجِدِ الْحَرَامِ الَّذِي
جَعَلْنَاهُ لِلنَّاسِ سَوَاءً الْعَاكِفُ
فِيهِ وَالْبَادِ ۚ وَمَنْ يُرِدْ فِيهِ بِإِلْحَادٍ
ع بِظُلْمٍ نُذِقْهُ مِنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ﴿۲۵﴾
وَإِذْ بَوَّأْنَا لِإِبْرَاهِيمَ مَكَانَ الْبَيْتِ
أَنْ لَا تُشْرِكْ بِي شَيْئًا وَطَهِّرْ بَيْتِيَ
لِلطَّائِفِينَ وَالْقَائِمِينَ وَالرُّكَّعِ
السُّجُودِ ﴿۲۶﴾
وَأَذِّنْ فِي النَّاسِ بِالْحَجِّ يَأْتُوكَ
رِجَالًا وَعَلَىٰ كُلِّ ضَامِرٍ يَأْتِينَ
مِنْ كُلِّ فَجٍّ عَمِيقٍ ﴿۲۷﴾
لِيَشْهَدُوا مَنَافِعَ لَهُمْ وَيَذْكُرُوا اسْمَ
اللَّهِ فِي أَيَّامٍ مَعْلُومَاتٍ عَلَىٰ مَا رَزَقَهُمْ
مِنْ بَهِيمَةِ الْأَنْعَامِ ۖ فَكُلُوا مِنْهَا
وَأَطْعِمُوا الْبَائِسَ الْفَقِيرَ ﴿۲۸﴾
ثُمَّ لْيَقْضُوا تَفَثَهُمْ وَلْيُوفُوا نُذُورَهُمْ
وَلْيَطَّوَّفُوا بِالْبَيْتِ الْعَتِيقِ ﴿۲۹﴾
ذَٰلِكَ ۖ وَمَنْ يُعَظِّمْ حُرُمَاتِ اللَّهِ فَهُوَ
خَيْرٌ لَهُ عِنْدَ رَبِّهِ ۗ وَأُحِلَّتْ لَكُمُ الْأَنْعَامُ

सिवाय उनके जो तुम्हें बताए गए हैं, पस बुतों की गन्दगी से बचो और झूटी बात से,

31. इस तौरपर कि अल्लाह ही की तरफ़ के होकर रहो, उसके साथ किसी को शरीक न ठहराओ; क्योंकि जो कोई अल्लाह के साथ शिर्क करता है, तो गोया वह आसमान से गिर पड़ा, फिर ख़्वाह उसे परिन्द उचक ले जाएं, या हवा उसे किसी दूर की जगह फेंक दे।

32. इन उमूर का ख़याल रखो, और जो अल्लाह के शआइर (निशानियों) की ताज़ीम करे, तो बिलाशुबह उनका तअल्लुक़ कुलूब के तक़्वा से है।

33. उनमें एक मुक़र्रर वक़्त तक तुम्हारे लिए मनफ़अतें हैं, फिर उनको इस क़दीम घर तक (क़ुरबानी के लिए) पहुंचना है।

34. और हर उम्मत के लिए हमने क़ुरबानी का तरीक़ मुक़र्रर कर दिया है, ताकि वो उन जानवरों यानी मवेशियों पर अल्लाह का नाम लें जो उसने उन्हें दिए हैं। पस तुम्हारा माबूद अकेला माबूद है, पस उसी के फ़रमांबरदार बनकर रहो, और आजिज़ाना रविश इख़्तियार करने वालों को बशारत दे दो,

35. ये वो लोग हैं कि जब अल्लाह को याद किया जाता है, तो उनके दिल दहल जाते हैं, और जो मुसीबत उनपर आती है उसपर सब्र करते हैं और नमाज़ का एहतिमाम करते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

36. डील-डौल वाले जानवरों को हमने तुम्हारे लिए अल्लाह की निशानियों में शामिल कर दिया है; तुम्हारे लिए उनमें बेहतरी है। पस उनको खड़ा करके उनपर अल्लाह का नाम लो फिर जब उनके पहलू ज़मीन से आ लगें, तो उनमें से ख़ुद भी खाओ और क़नाअत इख़्तियार करने वालों को भी खिलाओ और मांगने वालों को भी। ऐसा ही करो। हमने उनको तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर दिया ताकि तुम शुक्र अदा करो।

37. न उनके गोश्त अल्लाह को पहुंचते हैं, और न उनके ख़ून, लेकिन तुम्हारा तक़्वा उसे पहुंचता है। इस तरह उसने उन्हें तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र किया है, ताकि तुम अल्लाह की तकबीर करो इसपर कि उसने तुम्हें हिदायत बख़्शी और ख़ूबकारों को बशारत दे दो।

38. यक़ीनन अल्लाह उन लोगों की तरफ़ से जो ईमान लाए मुदाफ़अत

इल्ला-मा युत्ला अ़लैकुम् फ़ज्तनिबुर्रिज्-स मिनल्-औसानि वज्तनिबू क़ौलज़्ज़ूर (30)

हु-नफ़ा-अ लिल्लाहि ग़ै-र मुश्रिकी-न बिही, व मंय्युश्रिक् बिल्लाहि फ़-कअन्नमा ख़र्-र मिनस्समा-इ फ़-तख़्तफ़ुहुत्तैरु औ तह्वी बिहिर्-रीहु फ़ी मकानिन् सहीक़ (31)

ज़ालि-क व मंय्युअ़ज़्ज़िम् शआ़-इरल्लाहि फ़-इन्नहा मिन् तक़्वल्-कुलूब (32)

लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु इला अ-जलिम् मुसम्मन् सुम्-म महिल्लुहा इलल्-बैतिल्-अ़तीक़ (33) ●

व लिकुल्लि उम्मतिन् जअ़ल्ना मन्-सकल् लि-यज़्कुरुस्मल्लाहि अ़ला मा र-ज़-क़हुम् मिम्-बहीमतिल्-अन्आ़मि, फ़-इलाहुकुम् इलाहुंव्वाहिदुन् फ़-लहू अस्लिमु, व बश्शिरिल्-मुख़्बितीन (34)

अल्लज़ी-न इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वजिलत् कुलूबुहुम् वस्साबिरी-न अ़ला मा असा-बहुम् वल्मुक़ीमिस्सलाति व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (35)

वल्बुद्-न जअ़ल्नाहा लकुम् मिन् शआ़-इरिल्लाहि लकुम् फ़ीहा ख़ैरुन् फ़ज़्कुरुस्मल्लाहि अ़लैहा सवाफ़्-फ़ फ़-इज़ा व-जबत् जुनूबुहा फ़कुलू मिन्हा व अत्अ़िमुल्-क़ानि-अ़ वल्-मुअ़्तर्-र, कज़ालि-क सख़्ख़र्नाहा लकुम् लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (36)

लंय्यनालल्ला-ह लुहूमुहा व ला दिमा-उहा व ला किंय्यनालुहुत्-तक़्वा मिन्कुम्, कज़ालि-क सख़्ख़-रहा लकुम् लितुकब्बिरुल्ला-ह अ़ला मा हदाकुम्, व बश्शिरिल्-मुह्सिनीन (37)

इन्नल्ला-ह युदाफ़िअु अ़निल्लज़ी-न आमनू,

إِلَّا مَا يُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاجْتَنِبُوا الرِّجْسَ
مِنَ الْاَوْثَانِ وَاجْتَنِبُوْا قَوْلَ الزُّوْرِ ۙ۝۳۰
حُنَفَآءَ لِلّٰهِ غَيْرَ مُشْرِكِيْنَ بِهٖ ؕ وَمَنْ
يُّشْرِكْ بِاللّٰهِ فَكَاَنَّمَا خَرَّ مِنَ السَّمَآءِ
فَتَخْطَفُهُ الطَّيْرُ اَوْ تَهْوِيْ بِهِ الرِّيْحُ
فِيْ مَكَانٍ سَحِيْقٍ ۝۳۱
ذٰلِكَ ۗ وَمَنْ يُّعَظِّمْ شَعَآئِرَ اللّٰهِ فَاِنَّهَا
مِنْ تَقْوَى الْقُلُوْبِ ۝۳۲
لَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى
ع ثُمَّ مَحِلُّهَآ اِلَى الْبَيْتِ الْعَتِيْقِ ۝۳۳
وَلِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا لِّيَذْكُرُوا اسْمَ
اللّٰهِ عَلٰى مَا رَزَقَهُمْ مِّنْۢ بَهِيْمَةِ الْاَنْعَامِ ؕ
فَاِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَلَهٗٓ اَسْلِمُوْا ؕ
وَبَشِّرِ الْمُخْبِتِيْنَ ۙ۝۳۴
الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَجِلَتْ قُلُوْبُهُمْ
وَالصّٰبِرِيْنَ عَلٰى مَآ اَصَابَهُمْ وَالْمُقِيْمِي
الصَّلٰوةِ ۙ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝۳۵
وَالْبُدْنَ جَعَلْنٰهَا لَكُمْ مِّنْ شَعَآئِرِ اللّٰهِ
لَكُمْ فِيْهَا خَيْرٌ ۖ فَاذْكُرُوا اسْمَ اللّٰهِ
عَلَيْهَا صَوَآفَّ ۚ فَاِذَا وَجَبَتْ جُنُوْبُهَا
فَكُلُوْا مِنْهَا وَاَطْعِمُوا الْقَانِعَ وَالْمُعْتَرَّ ؕ
كَذٰلِكَ سَخَّرْنٰهَا لَكُمْ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝۳۶
لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَلَا دِمَآؤُهَا
وَلٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ ؕ
كَذٰلِكَ سَخَّرَهَا لَكُمْ لِتُكَبِّرُوا اللّٰهَ عَلٰى
مَا هَدٰىكُمْ ؕ وَبَشِّرِ الْمُحْسِنِيْنَ ۝۳۷
اِنَّ اللّٰهَ يُدٰفِعُ عَنِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ؕ اِنَّ

करता है; बेशक अल्लाह किसी ख़ियानत करनेवाले, नाशुकरे को पसन्द नहीं करता।

39. इजाज़त दे दी गई उन लोगों को जिनके ख़िलाफ़ जंग की जा रही है इसलिए कि उनपर ज़ुल्म किया गया — और यक़ीनन अल्लाह उनकी मदद की पूरी क़ुदरत रखता है।

40. ये वो लोग हैं जो अपने घरों से नाहक़ निकाले गए, सिर्फ़ इसलिए कि वो कहते हैं कि "हमारा रब अल्लाह है"। अगर अल्लाह लोगों को एक-दूसरे के ज़रिए से दफ़ा न करता रहता, तो ख़ानक़ाहें और गिरजा और कनीसे और मस्जिदें, जिनमें बकसरत अल्लाह का नाम लिया जाता है सब ढा दी जातीं। अल्लाह लाज़िमन उसकी मदद फ़रमाएगा जो उसकी मदद करेगा — यक़ीनन अल्लाह बड़ी ताक़तवाला, बहुत ज़बरदस्त है।

41. ये वो लोग हैं कि अगर ज़मीन में हम उन्हें इक्तिदार अता करें, तो वो नमाज़ का एहतिमाम करेंगे, और ज़कात देंगे, और मारूफ़ का हुक्म देंगे, और मुनकर से रोकेंगे; और तमाम उमूर का अंजाम अल्लाह ही के हाथ में है।

42-44. अगर वो तुम्हें झुटलाते हैं, तो उनसे पहले क़ौमे नूह, आद और समूद और क़ौमे इबराहीम और क़ौमे लूत और अहले मदयन भी तकज़ीब कर चुके हैं; और मूसा को भी झुटलाया जा चुका है। लेकिन मैंने अहले कुफ़्र को मुहलत दी, फिर उन्हें पकड़ लिया; तो कैसी रही मेरी उक़ूबत (अज़ाब)!

45. कितनी ही बस्तियां हैं जिन्हें हमने हलाक कर दिया इस हाल में कि वो ज़ालिम थीं, तो वो अपनी छतों के बल गिरी पड़ी हैं। और कितने ही नाकारा कुएं पड़े हैं, और पुख़्ता महल भी।

46. क्या वो ज़मीन में चले-फिरे नहीं हैं कि उनके दिल होते जिनसे वो समझते या कान होते जिनसे वो सुनते? बात यह है कि आंखें अंधी नहीं हो जातीं, बल्कि वो दिल अंधे हो जाते हैं जो सीनों में होते हैं।

इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल ख़व्वानिन् कफ़ूर ●(38) ●

उज़ि-न लिल्लज़ी-न युक़ातलू-न बि-अन्नहुम् ज़ुलिमू, व इन्नल्ला-ह अ़ला नस्रिहिम् ल-क़दीर (39)

अल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् बिग़ैरि हक़्क़िन् इल्ला अंय्यक़ूलू रब्बुनल्लाहु, व लौ ला दफ़्अुल्लाहिन्ना-स बअ़्-ज़हुम् बिबअ़्ज़िल्-लहुद्दिमत् सवामिअु व बि-यअुंव्-व स-लवातुंव्-व मसाजिदु युज़्करु फ़ीहस्मुल्लाहि कसीरन्, व ल-यन्सुरन्नल्लाहु मंय्यन्सुरुहू, इन्नल्ला-ह ल-क़विय्युन् अ़ज़ीज़ (40)

अल्लज़ी-न इम्-मक्कन्नाहुम् फ़िल्अर्ज़ि अक़ामुस्सला-त व आ-तवुज़्-ज़का-त व अ-मरू बिल्-मअ़्रूफ़ि व नहौ अ़निल्-मुन्कारि, व लिल्लाहि आ़क़ि-बतुल्-उमूर (41)

व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कज़्ज़-बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व आ़दुंव्-व समूद (42)

व क़ौमु इब्राही-म व क़ौमु लूत (43)

व अस्हाबु मद्य-न व कुज़्ज़ि-ब मूसा फ़-अम्लैतु लिल्काफ़िरी-न सुम्-म अ-ख़ज़्तुहुम् फ़कै-फ़ का-न नकीर (44)

फ़-कअय्यिम्-मिन् क़र्-यतिन् अह्लक्नाहा व हि-य ज़ालि-मतुन् फ़हि-य ख़ावि-यतुन् अ़ला उरूशिहा व बिअ़्रिम् मु-अ़त्त-लतिंव्-व क़स्रिम्-मशीद (45)

अ-फ़लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-तकू-न लहुम् क़ुलूबुंय्-यअ़्क़िलू-न बिहा औ आज़ानुंय्यस्मअू-न बिहा फ़-इन्नहा ला तअ़्मल्-अब्सारु व लाकिन् तअ़्मल्-क़ुलूबुल्लती फ़िस्सुदूर (46)

اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ خَوَّانٍ كَفُوْرٍ ۝٣٨
اُذِنَ لِلَّذِيْنَ يُقٰتَلُوْنَ بِاَنَّهُمْ ظُلِمُوْا ۭ
وَاِنَّ اللّٰهَ عَلٰي نَصْرِهِمْ لَقَدِيْرُۨ ۝٣٩
الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ بِغَيْرِ
حَقٍّ اِلَّآ اَنْ يَّقُوْلُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ۭ وَلَوْلَا
دَفْعُ اللّٰهِ النَّاسَ بَعْضَهُمْ بِبَعْضٍ
لَّهُدِّمَتْ صَوَامِعُ وَبِيَعٌ وَّصَلَوٰتٌ
وَّمَسٰجِدُ يُذْكَرُ فِيْهَا اسْمُ اللّٰهِ
كَثِيْرًا ۭ وَلَيَنْصُرَنَّ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝٤٠
اَلَّذِيْنَ اِنْ مَّكَّنّٰهُمْ فِي الْاَرْضِ
اَقَامُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتَوُا الزَّكٰوةَ
وَاَمَرُوْا بِالْمَعْرُوْفِ وَنَهَوْا عَنِ الْمُنْكَرِ ۭ
وَلِلّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ۝٤١
وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَتْ
قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّثَمُوْدُ ۝٤٢
وَقَوْمُ اِبْرٰهِيْمَ وَقَوْمُ لُوْطٍ ۝٤٣
وَّاَصْحٰبُ مَدْيَنَ ۚ وَكُذِّبَ مُوْسٰى فَاَمْلَيْتُ
لِلْكٰفِرِيْنَ ثُمَّ اَخَذْتُهُمْ ۚ فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيْرِ ۝٤٤
فَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَهْلَكْنٰهَا وَهِيَ
ظَالِمَةٌ فَهِيَ خَاوِيَةٌ عَلٰي عُرُوْشِهَا
وَبِئْرٍ مُّعَطَّلَةٍ وَّقَصْرٍ مَّشِيْدٍ ۝٤٥
اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَتَكُوْنَ لَهُمْ
قُلُوْبٌ يَّعْقِلُوْنَ بِهَآ اَوْ اٰذَانٌ يَّسْمَعُوْنَ
بِهَا ۚ فَاِنَّهَا لَا تَعْمَى الْاَبْصَارُ وَلٰكِنْ
تَعْمَى الْقُلُوْبُ الَّتِيْ فِي الصُّدُوْرِ ۝٤٦

47. और वो तुमसे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं, अल्लाह हरगिज़ अपने वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी न करेगा। और तुम्हारे रब के यहां एक दिन ऐसा है जैसे तुम्हारे शुमार के मुताबिक़ हज़ार बरस।

48. कितनी ही बस्तियां हैं जिनको मैंने मुहलत दी इस हाल में कि वो ज़ालिम थीं, फिर मैंने उन्हें पकड़ लिया, और अंजामकार आना तो मेरी ही तरफ़ है।

49. कह दो, "ऐ लोगो! मैं तो तुम्हारे लिए बस एक साफ़-साफ़ ख़बरदार करनेवाला हूं"।

50. फिर जो लोग ईमान लाए और अच्छे काम किए, उनके लिए बख़्शिश और बाइज़्ज़त रिज़्क़ है।

51. और जिन लोगों ने हमारी आयतों को नीचा दिखाने की कोशिश की, वही भड़कती आगवाले हैं।

52. तुमसे पहले जो रसूल और नबी भी हमने भेजा, तो जब भी उसने कोई तमन्ना की, तो शैतान ने उसके अरमान में ख़लल डाला; इस तरह जो कुछ भी शैतान ख़लल डालता है अल्लाह उसे मिटा देता है। फिर अल्लाह अपनी आयतों को पुख़्ता कर देता है — अल्लाह सब कुछ जानने वाला, बड़ी हिकमत वाला है।

53. ताकि शैतान के डाले हुए ख़लल को उन लोगों के लिए आज़माइश बना दे जिनके दिलों में रोग है, और जिनके दिल सख़्त हैं; बेशक ज़ालिम लोग मुख़ालफ़त में बहुत दूर निकल गए हैं।

54. और ताकि वो लोग जिन्हें इल्म अता हुआ जान लें कि यह तुम्हारे रब की तरफ़ से हक़ है पस वो इसपर ईमान लाएं और उसके सामने उनके दिल झुक जाएं; और यह हक़ीक़त है कि अल्लाह सीधे रास्ते की तरफ़ ईमान लानेवालों की लाज़िमन रहनुमाई फ़रमाता है।

55. जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वो हमेशा उसकी तरफ़ से शक में पड़े रहेंगे, यहां तक कि क़ियामत की घड़ी अचानक उनपर आ जाए; या एक मनहूस दिन का अज़ाब उनपर आ पहुंचे।

व यस्तअ्जिलून-क बिल्-अज़ाबि व लंय्युख़्लिफ़ल्लाहु वअ्दहू, व इन्-न यौमन् अिन्-द रब्बि-क क-अल्फ़ि स-नतिम्-मिम्मा तअुद्दून (47)

व क-अय्यिम् मिन् क़र्-यतिन् अम्लैतु लहा व हि-य ज़ालि-मतुन् सुम्-म अख़ज़्तुहा व इलय्यल्-मसीर (48)●

क़ुल या अय्युहन्नासु इन्नमा अ-न लकुम् नज़ीरुम्-मुबीन (49)

फ़ल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन करीम (50)

वल्लज़ी-न सअ़ौ फ़ी आयातिना मुअ़ाजिज़ी-न उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम (51)

व मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रसूलिंव्-व ला नबिय्यिन् इल्ला इज़ा तमन्ना अल्क़श्शैतानु फ़ी उम्निय्यतिही फ़-यन्सख़ुल्लाहु मा युल्क़िश्शैतानु सुम्-म युह्किमुल्लाहु आयातिही, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (52)

लि-यज्अ़-ल मा युल्क़िश्शैतानु फ़ित्न-तल्-लिल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुंव्वल्-क़ासि-यति क़ुलूबुहुम्, व इन्नज़्ज़ालिमी-न लफ़ी शिक़ाक़िम्-बअ़ीद (53)

व लियअ्लमल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म अन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क फ़युअ्मिनू बिही फ़तुख़्बि-त लहू क़ुलूबुहुम्, व इन्नल्ला-ह लहादिल्लज़ी-न आमनू इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (54)

व ला यज़ालुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी मिर्यतिम् मिन्हु हत्ता तअ्ति-यहुमुस्सा-अ़तु बग़्त-तन् औ यअ्ति-यहुम् अ़ज़ाबु यौमिन् अ़क़ीम (55)

وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ وَلَنْ
يُّخْلِفَ اللّٰهُ وَعْدَهٗ ۚ وَاِنَّ يَوْمًا عِنْدَ
رَبِّكَ كَاَلْفِ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ ﴿٤٧﴾
وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ اَمْلَيْتُ لَهَا وَهِيَ
ع ظَالِمَةٌ ثُمَّ اَخَذْتُهَا ۚ وَاِلَيَّ الْمَصِيْرُ ﴿٤٨﴾
قُلْ يٰۤاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّمَاۤ اَنَا لَكُمْ
نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٤٩﴾
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ﴿٥٠﴾
وَالَّذِيْنَ سَعَوْا فِيْۤ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ﴿٥١﴾
وَمَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَّسُوْلٍ
وَّلَا نَبِيٍّ اِلَّاۤ اِذَا تَمَنّٰۤى اَلْقَى الشَّيْطٰنُ
فِيْۤ اُمْنِيَّتِهٖ ۚ فَيَنْسَخُ اللّٰهُ مَا يُلْقِي
الشَّيْطٰنُ ثُمَّ يُحْكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ ۗ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿٥٢﴾
لِّيَجْعَلَ مَا يُلْقِي الشَّيْطٰنُ فِتْنَةً
لِّلَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْقَاسِيَةِ
قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَفِيْ شِقَاقٍ
بَعِيْدٍ ﴿٥٣﴾
وَّلِيَعْلَمَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ اَنَّهُ الْحَقُّ
مِنْ رَّبِّكَ فَيُؤْمِنُوْا بِهٖ فَتُخْبِتَ لَهٗ
قُلُوْبُهُمْ ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهَادِ الَّذِيْنَ
اٰمَنُوْۤا اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٤﴾
وَلَا يَزَالُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ مِرْيَةٍ
مِّنْهُ حَتّٰى تَاْتِيَهُمُ السَّاعَةُ بَغْتَةً
اَوْ يَاْتِيَهُمْ عَذَابُ يَوْمٍ عَقِيْمٍ ﴿٥٥﴾

56. उस रोज़ बादशाही अल्लाह ही की होगी, वह उनके दरमियान फ़ैसला फ़रमा देगा। पस जो लोग ईमान लाए, और नेक आमाल इख़्तियार किए, वो नेमत भरी जन्नतों में होंगे।

57. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया, उनके लिए ज़लील व रुसवा कर देने वाला अज़ाब है।

58. और जिन लोगों ने अल्लाह की राह मे घर बार छोड़ा फिर क़त्ल कर दिए गए या मर गए, अल्लाह लाज़िमन उन्हें अच्छा रिज़्क़ अता करेगा; और यक़ीनन अल्लाह ही बेहतरीन राज़िक़ है।

59. वह उन्हें ऐसी जगह दाख़िल करेगा जिससे वो खुश हो जाएंगे; और यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जानने वाला, और निहायत बुर्दबार है।

60. यह बात तो सुन ली; और जो कोई बदला ले वैसा ही जैसा उसके साथ किया गया और फिर उसपर ज़्यादती की गई, तो अल्लाह लाज़िमन उसकी मदद करेगा; यक़ीनन अल्लाह दरगुज़र करने वाला, बहुत बख़्शनेवाला है।

61. यह इसलिए कि अल्लाह ही है जो रात को दिन में पिरोता हुआ ले आता है और दिन को रात में पिरोता हुआ ले आता है; और यह कि अल्लाह खूब सुनता, देखता है।

62. यह इसलिए भी कि अल्लाह ही हक़ है, और जिसे वो उसको छोड़कर पुकारते हैं वो सब बातिल हैं; और यह कि अल्लाह ही बुलन्द व बरतर, सबसे बड़ा है।

63. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह आसमान से पानी उतारता है, तो ज़मीन सरसब्ज़ हो जाती है? बेशक अल्लाह लतीफ़, बाख़बर है।

64. उसी का है जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है; यक़ीनन अल्लाह ही बेनियाज़, सज़ावारे हम्द है।

65. क्या तुमने नहीं देखा कि ज़मीन में जो कुछ भी है अल्लाह ने उसे तुम्हारे लिए मुसख़्ख़र कर रखा है और कश्ती को भी जो उसके हुक्म से समुंदर में चलती है, और वही आसमान को थामे हुए है कि ज़मीन पर गिर न पड़े, उसका हुक्म हो तो बात दूसरी है।

अल्मुल्कु यौमइज़िल्-लिल्लाहि, यह्कुमु बैनहुम्, फ़ल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम (56)

वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना फ़-उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन (57) ●

वल्लज़ी-न हाजरू फ़ी सबीलिल्लाहि सुम्-म क़ुतिलू औ मातू ल-यर्ज़ुक़न्न-हुमुल्लाहु रिज़्क़न् ह-सनन्, व इन्नल्ला-ह लहु-व ख़ैरुर्-राज़िक़ीन (58)

लयुद्ख़िलन्नहुम् मुद्-ख़लंय्-यर्ज़ौनहू, व इन्नल्ला-ह ल-अ़लीमुन् हलीम (59)

ज़ालि-क व मन् आक़-ब बिमिस्लि मा ऊक़ि-ब बिही सुम्-म बुग़ि-य अ़लैहि ल-यन्सुरन्नहुल्लाहु, इन्नल्ला-ह ल-अ़फ़ुव्वुन् ग़फ़ूर (60)

ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व अन्नल्ला-ह समीअ़ुम्-बसीर (61)

ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ु व अन्-न मा यद्अ़ू-न मिन् दूनिही हुवल्-बातिलु व अन्नल्ला-ह हुवल्-अ़लिय्युल्-कबीर (62)

अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़तुस्बिहुल्-अर्ज़ु मुख़्ज़र्र-तन्, इन्नल्ला-ह लतीफ़ुन् ख़बीर (63)

लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व इन्नल्ला-ह लहुवल्-ग़निय्युल्-हमीद (64) ●

अलम् त-र अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िल्अर्ज़ि वल्फ़ुल्-क तज्री फ़िल्बहिर बिअम्रिही, व युम्सिकुस्समा-अ अन् त-क़-अ़

اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذٍ لِّلّٰهِ ؕ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ ؕ
فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٥٦﴾
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا فَاُولٰٓئِكَ
ع لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ﴿٥٧﴾
وَالَّذِيْنَ هَاجَرُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ثُمَّ
قُتِلُوْٓا اَوْ مَاتُوْا لَيَرْزُقَنَّهُمُ اللّٰهُ رِزْقًا
حَسَنًا ؕ وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ﴿٥٨﴾
لَيُدْخِلَنَّهُمْ مُّدْخَلًا يَّرْضَوْنَهٗ ؕ وَاِنَّ
اللّٰهَ لَعَلِيْمٌ حَلِيْمٌ ﴿٥٩﴾
ذٰلِكَ ۚ وَمَنْ عَاقَبَ بِمِثْلِ مَا عُوْقِبَ
بِهٖ ثُمَّ بُغِيَ عَلَيْهِ لَيَنْصُرَنَّهُ اللّٰهُ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٦٠﴾
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ
وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَاَنَّ اللّٰهَ
سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ﴿٦١﴾
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَ اَنَّ
مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ هُوَ الْبَاطِلُ
وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ﴿٦٢﴾
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً ۫ فَتُصْبِحُ الْاَرْضُ مُخْضَرَّةً ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ﴿٦٣﴾
لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ
ع وَاِنَّ اللّٰهَ لَهُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٦٤﴾
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي
الْاَرْضِ وَالْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ
بِاَمْرِهٖ ؕ وَيُمْسِكُ السَّمَآءَ اَنْ تَقَعَ

बेशक अल्लाह लोगों के हक़ में बड़ा शफ़ीक़, निहायत रहमवाला है।

66. और वही है जिसने तुम्हें ज़िन्दगी दी, फिर वही तुम्हें मौत देता है, और फिर वही तुम्हें ज़िन्दा करने वाला है। हक़ीक़त यह है कि इनसान बड़ा ही नाशुकरा है।

67. हर उम्मत के लिए हमने एक तौर-तरीक़ ठहरा दिया है, जिसकी उसके लोग पैरवी करते हैं। पस इस मुआमले में वो तुमसे निज़ा (झगड़ने) की राह न पाएं, तुम तो अपने रब की तरफ़ दावत दो; यक़ीनन तुम सीधी हिदायत पर हो।

68. और अगर वो तुमसे झगड़ा करें तो कह दो कि "तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसे ख़ूब जानता है।

69. अल्लाह क़ियामत के दिन तुम्हारे दरमियान उस चीज़ का फ़ैसला कर देगा जिसमें तुम इख़्तिलाफ़ करते हो"।

70. क्या तुम्हें नहीं मालूम कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमान और ज़मीन में है? यक़ीनन वह (लोगों का अमल) एक किताब में दर्ज है; बेशक अल्लाह के लिए वह (फ़ैसला करना) निहायत आसान है।

71. और वो अल्लाह को छोड़कर उनकी इबादत करते हैं जिनके लिए न तो उसने कोई सनद उतारी और न उन्हें उनके बारे में कोई इल्म ही है, और उन ज़ालिमों का कोई मददगार नहीं।

72. और जब उन्हें हमारी वाज़ेह आयतें सुनाई जाती हैं, तो तुम कुफ़्र करनेवालों के चेहरों पर नागवारी देखते हो। लगता है कि अभी वो उन लोगों पर टूट पड़ेंगे जो उन्हें हमारी आयतें सुनाते हैं। कह दोः "क्या मैं इससे भी बड़े शर (नागवार चीज़) की ख़बर दूं? आग है वह — अल्लाह ने कुफ़्र इख़्तियार करनेवालों से उसी का वादा कर रखा है — और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है!"

73. ऐ लोगो! एक मिसाल पेश की जाती है; उसे ग़ौर से सुनो। अल्लाह से हटकर तुम जिन्हें पुकारते हो वो एक मक्खी भी पैदा नहीं कर सकते, अगरचे इसके लिए वो सब इकट्ठे हो जाएं; और अगर मक्खी उनसे कोई

अ़लल्-अर्ज़ि इल्ला बि-इज़्निही, इन्नल्ला-ह बिन्नासि ल-रऊफ़ुर्रहीम (65)

व हुवल्लज़ी अह्याकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म युह्यीकुम्, इन्नल्-इन्सा-न ल-कफ़ूर (66)

लिकुल्लि उम्मतिन् जअ़ल्ना मन्स-कन् हुम् नासिकूहु फ़ला युनाज़िअुन्न-क फ़िल्अम्रि वद्अु इला रब्बि-क, इन्न-क ल-अ़ला हुदम्-मुस्तक़ीम (67)

व इन् जादलू-क फ़क़ुलिल्लाहु अअ्लमु बिमा तअ्मलून (68)

अल्लाहु यह्कुमु बैनकुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कुन्तुम् फ़ीहि तख़्तलिफ़ून (69)

अलम् तअ्लम् अन्नल्ला-ह यअ्लमु मा फ़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि इन्-न ज़ालि-क फ़ी किताबिन्, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (70)

व यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा लम् युनज़्ज़िल् बिही सुल्तानंव्-व मा लै-स लहुम् बिही अ़िल्मुन्, व मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर (71)

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् तअ्रिफ़ु फ़ी वुजूहिल्लज़ी-न क-फ़रूल्-मुन्क-र, यकादू-न यस्तू-न बिल्लज़ी-न यत्लू-न अ़लैहिम् आयातिना, क़ुल् अ-फ़-उनब्बिउकुम् बिशर्रिम्-मिन् ज़ालिकुम्, अन्नारु, व-अ़-दहल्लाहुल्लज़ी-न क-फ़रू, व बिअ्सल्-मसीर (72) ●

या अय्युहन्नासु ज़ुरि-ब म-सलुन् फ़स्तमिअू लहू, इन्नल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि लंय्यख़्लुक़ू ज़ुबाबंव्-व लविज्त-मअू लहू, व इंय्यस्लुब्हुमुज़्-ज़ुबाबु शैअल्-ला यस्तन्क़िज़ूहु

عَلَى الْاَرْضِ اِلَّا بِاِذْنِهٖ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
بِالنَّاسِ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٦٥
وَهُوَ الَّذِيْٓ اَحْيَاكُمْ ؗ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ
يُحْيِيْكُمْ ؕ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ ۝٦٦
لِكُلِّ اُمَّةٍ جَعَلْنَا مَنْسَكًا هُمْ نَاسِكُوْهُ
فَلَا يُنَازِعُنَّكَ فِى الْاَمْرِ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ ؕ
اِنَّكَ لَعَلٰى هُدًى مُّسْتَقِيْمٍ ۝٦٧
وَاِنْ جٰدَلُوْكَ فَقُلِ اللّٰهُ اَعْلَمُ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٦٨
اَللّٰهُ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ فِيْمَا
كُنْتُمْ فِيْهِ تَخْتَلِفُوْنَ ۝٦٩
اَلَمْ تَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِى السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ فِىْ كِتٰبٍ ؕ اِنَّ
ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧٠
وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَمْ يُنَزِّلْ
بِهٖ سُلْطٰنًا وَّمَا لَيْسَ لَهُمْ بِهٖ عِلْمٌ ؕ
وَمَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ نَّصِيْرٍ ۝٧١
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ
تَعْرِفُ فِىْ وُجُوْهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوا
الْمُنْكَرَ ؕ يَكَادُوْنَ يَسْطُوْنَ بِالَّذِيْنَ
يَتْلُوْنَ عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ؕ قُلْ اَفَاُنَبِّئُكُمْ
بِشَرٍّ مِّنْ ذٰلِكُمْ ؕ اَلنَّارُ ؕ وَعَدَهَا اللّٰهُ
ع الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ؕ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٧٢
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ ضُرِبَ مَثَلٌ فَاسْتَمِعُوْا لَهٗ ؕ
اِنَّ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
لَنْ يَّخْلُقُوْا ذُبَابًا وَّلَوِ اجْتَمَعُوْا لَهٗ ؕ
وَاِنْ يَّسْلُبْهُمُ الذُّبَابُ شَيْئًا لَّا يَسْتَنْقِذُوْهُ

चीज़ छीन ले जाए तो उससे वो उसको छुड़ा भी नहीं सकते। कमज़ोर व नातवां हैं तालिब भी और मतलूब भी!

74. उन्होंने अल्लाह की क़द्र नहीं पहचानी जैसी कि उसकी क़द्र पहचाननी चाहिए थी; यक़ीनन अल्लाह बड़ी क़ुव्वतवाला, निहायत ज़बरदस्त है।

75. अल्लाह फ़रिश्तों में से पैग़ाम रसां मुन्तख़ब करता है और इनसानों में से भी; यक़ीनन अल्लाह सब कुछ सुनता, देखता है।

76. वह जानता है जो कुछ उनके आगे है और जो कुछ उनके पीछे है, और सारे मुआमलात अल्लाह ही की तरफ़ पलटते हैं।

77. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, रुकू और सजदा करो और अपने रब की बन्दगी करो, और भलाई करो; ताकि तुम्हें फ़लाह नसीब हो,

78. और बाहम मिलकर जिहाद करो अल्लाह की राह में जैसा कि जिहाद का हक़ है, उसने तुम्हें बरगुज़ीदा किया है — और दीन के मुआमले में तुमपर कोई तंगी नहीं रखी, तुम्हारे बाप इबराहीम की मिल्लत को तुम्हारे लिए पसन्द किया, उसने इससे पहले तुम्हारा नाम मुस्लिम रखा था और इस ग़र्ज़ से — ताकि रसूल तुमपर गवाह हो, और तुम लोगों पर गवाह हो। पस नमाज़ का एहतिमाम करो, और ज़कात दो, अल्लाह को मज़बूती से पकड़े रहो; वही तुम्हारा सरपरस्त है, तो क्या ही अच्छा सरपरस्त है, और क्या ही अच्छा मददगार।

सूरह अल-मोमिनून मक्की

(आयतें 118, रुकूआत 6)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. कामयाब हो गए अहले ईमान,

2. जो अपनी नमाज़ में अज्ज़ व सुकून इख़्तियार करते हैं,

3. और जो लग़व (बेहूदा और फ़ुज़ूल) बातों से एहतिराज़ करते हैं,

4. और जो ज़कात अदा करते हैं,

5. और जो अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं —

6. सिवाय इस सूरत के कि अपनी बीवियों या बांदियों से सुहबत करें कि इस पर वो क़ाबिले मलामत नहीं,

7. अलबत्ता जो कोई इसके अलावा कुछ और चाहे, तो ऐसे ही लोग हद से

मिन्हु, ज़अुफ़त्तालिबु वल्मत्लूब (73)

मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही, इन्नल्ला-ह ल-क़विय्युन् अ़ज़ीज़ (74)

अल्लाहु यस्तफ़ी मिनल्-मलाइ-कति रूसुलंव्-व मिनन्नासि, इन्नल्ला-ह समीअुम्-बसीर (75)

यअ्लमु मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम्, व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर (76)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुर्कअू वस्जुदू वअ्बुदू रब्बकुम् वफ़्अ़लुल्-ख़ै-र लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (77)

व जाहिदू फ़िल्लाहि हक़्-क़ जिहादिही, हुवज्तबाकुम् व मा ज-अ़-ल अ़लैकुम् फ़िद्दीनि मिन् ह-रजिन्, मिल्ल-त अबीकुम् इब्राही-म, हु-व सम्माकुमुल्-मुस्लिमी-न मिन् क़ब्लु व फ़ी हाज़ा लि-यकूनर्रसूलु शहीदन् अ़लैकुम् व तकूनू शु-हदा-अ अ़लन्नासि फ़-अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त वअ्तसिमू बिल्लाहि, हु-व मौलाकुम् फ़-निअ्मल्-मौला व निअ्मन्-नसीर (78) ●

23 सूरतुल्-मुअ्मिनून

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4538 अक्षर, 1070 शब्द, 118 आयतें और 6 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

क़द् अफ़्ल-हल् मुअ्मिनून (1)

अल्लज़ी-न हुम् फ़ी सलातिहिम् ख़ाशिअून (2)

वल्लज़ी-न हुम् अ़निल्लग़्वि मुअ्रिज़ून (3)

वल्लज़ी-न हुम् लिज़्ज़काति फ़ाअ़िलून (4)

वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् हाफ़िज़ून (5)

इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-लकत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन (6)

फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्-

مِنْهُ ضَعُفَ الطَّالِبُ وَالْمَطْلُوْبُ ۝٧٣
مَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ اِنَّ اللّٰهَ
لَقَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝٧٤
اَللّٰهُ يَصْطَفِيْ مِنَ الْمَلٰٓئِكَةِ رُسُلًا
وَّمِنَ النَّاسِ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝٧٥
يَعْلَمُ مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝٧٦
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا ارْكَعُوْا وَاسْجُدُوْا وَاعْبُدُوْا
رَبَّكُمْ وَافْعَلُوا الْخَيْرَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝٧٧
وَجَاهِدُوْا فِي اللّٰهِ حَقَّ جِهَادِهٖ هُوَ اجْتَبٰىكُمْ
وَمَا جَعَلَ عَلَيْكُمْ فِي الدِّيْنِ مِنْ حَرَجٍ
مِلَّةَ اَبِيْكُمْ اِبْرٰهِيْمَ هُوَ سَمّٰىكُمُ
الْمُسْلِمِيْنَ ەۙ مِنْ قَبْلُ وَفِيْ هٰذَا لِيَكُوْنَ
الرَّسُوْلُ شَهِيْدًا عَلَيْكُمْ وَتَكُوْنُوْا
شُهَدَآءَ عَلَى النَّاسِ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاعْتَصِمُوْا بِاللّٰهِ هُوَ
مَوْلٰىكُمْ فَنِعْمَ الْمَوْلٰى وَنِعْمَ النَّصِيْرُ ۝٧٨

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنُوْنَ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١١٨ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝١
الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ ۝٢
وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ ۝٣
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ ۝٤
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ۝٥
اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ
فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ۝٦
فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ

तजावुज़ करने वाले हैं।

8. — और जो अपनी अमानतों और अपने अ़हद व पैमान का पास व लिहाज़ रखते हैं,

9. और जो अपनी नमाज़ों की हिफ़ाज़त करते हैं।

10. वही वारिस होने वाले हैं,

11. जो फ़िरदौस की मीरास हासिल करेंगे। वो उसमें हमेशा रहेंगे।

12. हमने इनसान को मिट्टी के सत् से बनाया,

13. फिर हमने उसे एक महफ़ूज़ ठहरने की जगह टपकी हुई बूंद बनाकर रखा।

14. फिर हमने उस बूंद को जनीन की शक्ल दी, फिर हमने उस जनीन को बोटी की शक्ल दी, फिर हमने बोटी की हड्डियां बनाईं, फिर हमने उन हड्डियों पर गोश्त चढ़ाया; फिर हमने उसे एक दूसरी ही मख़्लूक़ बना दिया। पस बहुत ही बाबरकत है अल्लाह, बेहतरीन पैदा करनेवाला!

15. फिर उसके बाद तुम लाज़िमन मरनेवाले हो।

16. फिर क़ियामत के रोज़ तुम यक़ीनन उठाए जाओगे।

17. और तुम्हारे ऊपर हमने सात रास्ते बनाए हैं, और हम तख़्लीक़ से बेख़बर नहीं।

18. और हमने आसमान से एक अंदाज़े के साथ पानी उतारा, फिर हमने उसे ज़मीन में ठहरा दिया; और हमें उसे ग़ायब करने की क़ुदरत भी है।

19. फिर हमने उसके ज़रिए से तुम्हारे लिए खजूरों और अंगूरों के बाग़ पैदा किए, तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फल हैं (उनमें तुम्हारे लिए कितने ही फ़ायदे हैं) और उनमें से तुम खाते हो,

20. और वह दरख़्त भी जो तूर-ए-सीना से निकलता है जो रौग़न और खानेवालों के लिए सालन लिए हुए उगता है।

21. और यक़ीनन तुम्हारे लिए चौपायों में भी एक इबरत है; उनके

आ़दून (7)

वल्लज़ी-न हुम् लि-अमानातिहिम् व अ़ह्दिहिम् राअून (8)

वल्लज़ी-न हुम् अ़ला स-लवातिहिम् युहाफ़िज़ून (9) ●

उलाइ-क हुमुल्-वारिसून (10)

अल्लज़ी-न यरिसूनल् फ़िर्दौ-स हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (11)

व ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न मिन् सुलालतिम्-मिन् तीन (12)

सुम्-म जअ़ल्नाहु नुत्फ़-तन् फ़ी क़रारिम्-मकीन (13)

सुम्-म ख़लक़्नन्-नुत्फ़-त अ-ल-क़तन् फ़-ख़लक़्नल् अ-ल-क़-त मुज़्-ग़तन् फ़-ख़लक़्नल्-मुज़्ग़-त अ़िज़ामन् फ़-कसौनल्-अ़िज़ा-म लह्मन्, सुम्-म अन्शअ्नाहु ख़ल्क़न् आख़-र, फ़-तबा-रकल्लाहु अह्सनुल्-ख़ालिक़ीन (14)

सुम्-म इन्नकुम् बअ्-द ज़ालि-क ल-मय्यितून (15)

सुम्-म इन्नकुम् यौमल्-क़ियामति तुब्अ़सून (16)

व ल-क़द् ख़लक़्ना फ़ौक़कुम् सब्-अ़ तराइ-क़ व मा कुन्ना अ़निल्-ख़ल्क़ि ग़ाफ़िलीन (17)

व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अम् बि-क़-दरिन् फ़-अस्कन्नाहु फ़िल्अर्ज़ि व इन्ना अ़ला ज़हाबिम् बिही लक़ादिरून (18)

फ़-अन्शअ्ना लकुम् बिही जन्नातिम् मिन् नख़ीलिंव्-व अअ़्नाबिन् ●लकुम् फ़ीहा फ़वाकिहु कसीरतुंव्-व मिन्हा तअ्कुलून (19)

व श-ज-रतन् तख़्रुजु मिन् तूरि सैना-अ तम्बुतु बिद्दुह्नि व सिब्ग़िल् लिल्आकिलीन (20)

व इन्-न लकुम् फ़िल्-अन्आ़मि ल-अ़िब्-रतन्, नुस्क़ीकुम्

الْعٰدُوْنَ ۚ۝٧
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ۙ۝٨
وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ۝٩
اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْوٰرِثُوْنَ ۙ۝١٠
الَّذِيْنَ يَرِثُوْنَ الْفِرْدَوْسَ ۭ هُمْ فِيْهَا
خٰلِدُوْنَ ۝١١
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ سُلٰلَةٍ
مِّنْ طِيْنٍ ۚ۝١٢
ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ۝١٣
ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً فَخَلَقْنَا
الْعَلَقَةَ مُضْغَةً فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ
عِظٰمًا فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا ۤ ثُمَّ
اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ۭ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ
اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ ۝١٤
ثُمَّ اِنَّكُمْ بَعْدَ ذٰلِكَ لَمَيِّتُوْنَ ۝١٥
ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ تُبْعَثُوْنَ ۝١٦
وَلَقَدْ خَلَقْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعَ طَرَاۗىِٕقَ ڰ وَمَا كُنَّا
عَنِ الْخَلْقِ غٰفِلِيْنَ ۝١٧
وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءًۢ بِقَدَرٍ فَاَسْكَنّٰهُ
فِي الْاَرْضِ ڰ وَاِنَّا عَلٰي ذَهَابٍۢ بِهٖ
لَقٰدِرُوْنَ ۚ۝١٨
فَاَنْشَاْنَا لَكُمْ بِهٖ جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ
وَّاَعْنَابٍ ۘ لَكُمْ فِيْهَا فَوَاكِهُ كَثِيْرَةٌ
وَّمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۙ۝١٩
وَشَجَرَةً تَخْرُجُ مِنْ طُوْرِ سَيْنَاۗءَ تَنْۢبُتُ
بِالدُّهْنِ وَصِبْغٍ لِّلْاٰكِلِيْنَ ۝٢٠
وَاِنَّ لَكُمْ فِي الْاَنْعَامِ لَعِبْرَةً ۭ نُسْقِيْكُمْ

पेटों में जो कुछ है उसमें से हम तुम्हें पिलाते हैं, और तुम्हारे लिए उनमें बहुत से फ़ायदे हैं, और उन्हें तुम खाते भी हो;

22. और उनपर और कश्तियों पर तुम सवार होते हो।

23. हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा। तो उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो; उसके सिवा तुम्हारा और कोई माबूद नहीं है। तो क्या तुम डर नहीं रखते?"

24. इस पर उसकी क़ौम के सरदार जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया था कहने लगे, "यह तो बस तुम्हीं जैसा एक इनसान है, चाहता है कि तुमपर बरतरी हासिल करे। अल्लाह अगर चाहता, तो फ़रिश्ते उतार देता। यह बात तो हमने अपने अगले बाप-दादा के वक़्तों में सुनी ही नहीं;

25. यह तो बस दीवानगी का मारा हुआ एक शख़्स है, पस एक वक़्त तक इसका इंतिज़ार कर लो"।

26. उसने कहा "ऐ मेरे रब, उन्होंने जो मुझे झुटलाया है, उसपर तू मेरी मदद कर"।

27. तब हमने उसकी तरफ़ वही की कि "हमारी आंखों के सामने और हमारी वही के मुताबिक़ कश्ती बना, और फिर जब हमारा हुक्म आ जाए और तूफ़ान उमड़ पड़े, तो हर क़िस्म में से एक-एक जोड़ा उसमें दाख़िल कर ले और अपने लोगों को भी, बजुज़ उनके जिनके ख़िलाफ़ पहले फ़ैसला हो चुका है; और ज़ालिमों के बारे में मुझसे बात न करना; वो तो ग़र्क़ होकर रहेंगे।

28. फिर जब तू कश्ती पर सवार हो जाए और तेरे साथी भी, तो कह, "तारीफ़ है अल्लाह की, जिसने हमें ज़ालिम लोगों से नजात दी"।

29. और कह, "ऐ मेरे रब, मुझे मुबारक जगह उतार और तू बेहतर उतारने वाला है"।

30. बेशक इसमें कितनी ही निशानियां हैं, और आज़माइश तो हम करते ही हैं।

31. फिर उनके बाद, हमने एक दूसरी नस्ल को उठाया,

32. और उनमें हमने ख़ुद उन्हीं में

मिम्मा फ़ी बुतूनिहा व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु कसी-रतुंव्-व मिन्हा तअ्कुलून (21)

व अलैहा व अलल्-फ़ुल्कि तुह्मलून (22) ●१

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़क़ा-ल या क़ौमिअ्बुदुल्ला-ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, अ-फ़ला तत्तक़ून (23)

फ़क़ालल् म-लउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ौमिही मा हाज़ा इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुकुम् युरीदु अंय्य-तफ़ज़्ज़-ल अलैकुम्, व लौ शा-अल्लाहु ल-अन्ज़-ल मलाइ-कतम् मा समिअ्ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल्-अव्वलीन (24)

इन् हु-व इल्ला रजुलुम्-बिही जिन्नतुन् फ़-तरब्बसू बिही हत्ता हीन (25)

क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी बिमा कज़्ज़बून (26)

फ़-औहैना इलैहि अनिस्नअिल्-फ़ुल्-क बि-अअ्युनिना व वह्यिना फ़-इज़ा जा-अ अम्रुना व फ़ारत्तन्नूरु फ़स्लुक् फ़ीहा मिन् कुल्लिन् ज़ौजैनिस्नैनि व अह्ल-क इल्ला मन् स-ब-क़ अलैहिल्-क़ौलु मिन्हुम् व ला तुख़ातिब्नी फ़िल्लज़ी-न ज़-लमू इन्नहुम् मुग़्-रक़ून (27)

फ़-इज़स्तवै-त अन्-त व मम्-म-अ-क अलल्-फ़ुल्कि फ़क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी नज्जाना मिनल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (28)

व क़ुर्रब्बि अन्ज़िल्नी मुन्ज़-लम् मुबा-रकव्-व अन्-त ख़ैरुल्-मुन्ज़िलीन (29)

इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिंव्-व इन् कुन्ना लमुब्तलीन (30)

सुम्-म अन्शअ्ना मिम्-बअ्दिहिम् क़र्नन् आख़रीन (31)

फ़-अर्सल्ना फ़ीहिम् रसूलम् मिन्हुम् अनिअ्बुदुल्ला-

مِمَّا فِيْ بُطُوْنِهَا وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ
كَثِيْرَةٌ وَّمِنْهَا تَأْكُلُوْنَ ۝٢١
ع وَعَلَيْهَا وَعَلَى الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝٢٢
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَقَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ۭ
اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٢٣
فَقَالَ الْمَلَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَوْمِهٖ
مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ ۙ يُرِيْدُ اَنْ
يَّتَفَضَّلَ عَلَيْكُمْ ۭ وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَاَنْزَلَ
مَلٰٓئِكَةً ۚ مَّا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِيْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝٢٤
اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلٌۢ بِهٖ جِنَّةٌ فَتَرَبَّصُوْا بِهٖ
حَتّٰى حِيْنٍ ۝٢٥
قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ۝٢٦
فَاَوْحَيْنَآ اِلَيْهِ اَنِ اصْنَعِ الْفُلْكَ بِاَعْيُنِنَا
وَوَحْيِنَا فَاِذَا جَآءَ اَمْرُنَا وَفَارَ التَّنُّوْرُ ۙ
فَاسْلُكْ فِيْهَا مِنْ كُلٍّ زَوْجَيْنِ اثْنَيْنِ
وَاَهْلَكَ اِلَّا مَنْ سَبَقَ عَلَيْهِ الْقَوْلُ
مِنْهُمْ ۚ وَلَا تُخَاطِبْنِيْ فِي الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۚ
اِنَّهُمْ مُّغْرَقُوْنَ ۝٢٧
فَاِذَا اسْتَوَيْتَ اَنْتَ وَمَنْ مَّعَكَ عَلَى
الْفُلْكِ فَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ نَجّٰىنَا
مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝٢٨
وَقُلْ رَّبِّ اَنْزِلْنِيْ مُنْزَلًا مُّبٰرَكًا وَّاَنْتَ
خَيْرُ الْمُنْزِلِيْنَ ۝٢٩
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ وَّاِنْ كُنَّا لَمُبْتَلِيْنَ ۝٣٠
ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قَرْنًا اٰخَرِيْنَ ۝٣١
فَاَرْسَلْنَا فِيْهِمْ رَسُوْلًا مِّنْهُمْ اَنِ اعْبُدُوا

से एक रसूल भेजा कि "अल्लाह की बन्दगी करो! उसके सिवा तुम्हारा कोई माबूद नहीं। तो क्या तुम डर नहीं रखते?"

33. उसकी क़ौम के सरदार जिन्होंने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की और आख़िरत की मुलाक़ात को झुटलाया, और जिन्हें हमने दुनिया की ज़िन्दगी में ऐश व आराम दिया था, कहने लगे, "यह तो बस तुम्हीं जैसा एक इनसान है, जो कुछ तुम खाते हो वही यह भी खाता है और जो कुछ तुम पीते हो वही यह भी पीता है।

34. अगर तुमने अपने ही जैसे एक इनसान की इताअत की, तो यक़ीनन तुम घाटे में पड़ गए।

35. क्या यह तुमसे वादा करता है कि जब तुम मर कर मिट्टी और हड्डियां होकर रह जाओगे, तो तुम निकाले जाओगे?

36. दूर की बात है, बहुत दूर की जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है!

37. वह तो बस यही दुनिया की ज़िन्दगी ही है; हम मरते और जीते हैं, हम कोई दोबारा उठाए जाने वाले नहीं हैं।

38. वह तो बस एक ऐसा शख़्स है जिसने अल्लाह पर झूट घड़ा है, हम हरगिज़ उसे मानने के नहीं"।

39. उसने कहा, "ऐ मेरे रब, उन्होंने जो मुझे झुटलाया, उसपर तू मेरी मदद कर"।

40. फ़रमाया, "जल्द ही वो पछता कर रहेंगे"।

41. फिर वाक़े होने वाली बात के मुताबिक उन्हें एक सख़्त आवाज़ ने आ लिया, और हमने उन्हें ख़स व ख़ाशाक बनाकर रख दिया; पस फिटकार हो ऐसे ज़ालिम लोगों पर!

42. फिर हमने उनके बाद दूसरी नसलों को उठाया;

43. कोई उम्मत न तो अपने मुक़र्रर वक़्त से आगे बढ़ सकती है, और न पीछे रह सकती है।

44. फिर हमने मुसलसल अपने रसूल भेजे; जब भी कभी किसी उम्मत के पास उसका रसूल आया तो उसके लोगों ने उसे झुटला दिया, पस-हम एक को दूसरे के पीछे लगाते चले गए, और हमने उन्हें ऐसा कर दिया कि वो कहानियां होकर रह गए; फिटकार हो उन लोगों पर जो ईमान न लाएं!

45. फिर हमने मूसा और उसके

ह मा लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरुहू, अ-फ़ला तत्तकून (32) ●

व क़ालल्-मल-उ मिन् क़ौमिहिल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिलिक़ाइल्-आख़िरति व अत्रफ़्नाहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या मा हाज़ा इल्ला ब-शरूम्-मिस्लुकुम् यअ्कुलु मिम्मा तअ्कुलू-न मिन्हु व यश्रबु मिम्मा तश्रबून (33)

व ल-इन् अ-तअ्तुम् ब-शरम् मिस्लकुम् इन्नकुम् इज़ल्-लख़ासिरून (34)

अ-यअ़िदुकुम् अन्नकुम् इज़ा मित्तुम् व कुन्तुम् तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अन्नकुम् मुख़्रजून (35)

हैहा-त हैहा-त लिमा तूअ़दून (36)

इन् हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या नमूतु व नह्या व मा नह्नु बिमब्अूसीन (37)

इन् हु-व इल्ला रजुलु-निफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबंव्-व मा नह्नु लहू बिमुअ्मिनीन (38)

क़ा-ल रब्बिन्सुरनी बिमा कज़्ज़बून (39)

क़ा-ल अ़म्मा क़लीलिल्-लयुस्बिहुन्-न नादिमीन (40)

फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्सै-हतु बिल्हक़्क़ि फ़-जअ़ल्नाहुम् ग़ुसा-अन् फ़बुअ्दल्-लिल्क़ौमिज़्ज़ालिमीन (41)

सुम्-म अन्शअ्ना मिम्-बअ्दिहिम् क़ुरूनन् आ-ख़रीन (42)

मा तस्बिक़ु मिन् उम्मतिन् अ-ज-लहा व मा यस्तअ्ख़िरून (43)

सुम्-म अर्सल्ना रूसु-लना तत्रा, कुल्लमा जा-अ उम्मतर्रसूलुहा कज़्ज़बूहु फ़-अत्बअ्ना बअ्-ज़हुम् बअ्ज़ंव्-व जअ़ल्नाहुम् अहादी-स फ़बुअ्दल्-लिक़ौमिल्-ला युअ्मिनून (44)

सुम्-म अर्सल्ना मूसा व अख़ाहु हारू-न

اللّٰهَ مَا لَكُمْ مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرُهٗ ؕ اَفَلَا
تَتَّقُوْنَ ﴿٣٢﴾
وَقَالَ الْمَلَاُ مِنْ قَوْمِهِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا
وَكَذَّبُوْا بِلِقَآءِ الْاٰخِرَةِ وَاَتْرَفْنٰهُمْ
فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۙ مَا هٰذَآ اِلَّا بَشَرٌ
مِّثْلُكُمْ ۙ يَاْكُلُ مِمَّا تَاْكُلُوْنَ مِنْهُ
وَيَشْرَبُ مِمَّا تَشْرَبُوْنَ ﴿٣٣﴾
وَلَئِنْ اَطَعْتُمْ بَشَرًا مِّثْلَكُمْ اِنَّكُمْ
اِذًا لَّخٰسِرُوْنَ ﴿٣٤﴾
اَيَعِدُكُمْ اَنَّكُمْ اِذَا مِتُّمْ وَكُنْتُمْ تُرَابًا
وَّعِظَامًا اَنَّكُمْ مُّخْرَجُوْنَ ﴿٣٥﴾
هَيْهَاتَ هَيْهَاتَ لِمَا تُوْعَدُوْنَ ﴿٣٦﴾
اِنْ هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ وَنَحْيَا
وَمَا نَحْنُ بِمَبْعُوْثِيْنَ ﴿٣٧﴾
اِنْ هُوَ اِلَّا رَجُلُ ِۨافْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا
وَّمَا نَحْنُ لَهٗ بِمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣٨﴾
قَالَ رَبِّ انْصُرْنِىْ بِمَا كَذَّبُوْنِ ﴿٣٩﴾
قَالَ عَمَّا قَلِيْلٍ لَّيُصْبِحُنَّ نٰدِمِيْنَ ﴿٤٠﴾
فَاَخَذَتْهُمُ الصَّيْحَةُ بِالْحَقِّ فَجَعَلْنٰهُمْ
غُثَآءً ۚ فَبُعْدًا لِّلْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤١﴾
ثُمَّ اَنْشَاْنَا مِنْ بَعْدِهِمْ قُرُوْنًا اٰخَرِيْنَ ﴿٤٢﴾
مَا تَسْبِقُ مِنْ اُمَّةٍ اَجَلَهَا وَمَا يَسْتَاْخِرُوْنَ ﴿٤٣﴾
ثُمَّ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا تَتْرَا ؕ كُلَّمَا جَآءَ
اُمَّةً رَّسُوْلُهَا كَذَّبُوْهُ فَاَتْبَعْنَا بَعْضَهُمْ
بَعْضًا وَّجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ ۚ فَبُعْدًا
لِّقَوْمٍ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٤٤﴾
ثُمَّ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى وَاَخَاهُ هٰرُوْنَ ۙ

भाई हारून को अपनी निशानियों और खुली सनद के साथ भेजा,

46. फ़िरऔन और उसके सरदारों की तरफ़; लेकिन उन्होंने तकब्बुर किया, वो थे ही सरकश लोग,

47. तो वो कहने लगे "क्या हम अपने ही जैसे दो इनसानों की बात मान लें जबकि उनकी क़ौम हमारी ग़ुलाम है?"

48. पस उन्होंने उन दोनों को झुटलाया, और हलाक होने वालों में शामिल होकर रहे।

49. और हमने मूसा को किताब अता फ़रमाई, ताकि वो लोग रहनुमाई हासिल करें;

50. और इब्ने मरयम और उसकी मां को हमने एक निशानी बनाया, और हमने उन्हें एक क़ाबिले रिहाइश चश्मे वाली ऊंची जगह पनाह दी:

51. "ऐ पैग़म्बरो, उमदा पाकीज़ा चीज़ें खाओ और नेक अमल करो; जो कुछ तुम करते हो उसका मुझे इल्म रहता है।

52. "और यक़ीनन यह तुम्हारी उम्मत एक ही उम्मत है, और मैं तुम्हारा रब हूं; पस मेरा डर रखो"।

53. लेकिन उन्होंने खुद अपने मुआमले को आपस में टुकड़े-टुकड़े कर डाला, हर गिरोह उसी पर खुश है जो कुछ उसके पास है।

54. अच्छा तो उन्हें उनकी अपनी ग़फ़लत की सरमस्ती ही में एक वक़्त तक छोड़ दो।

55-56. क्या वो यह समझते हैं कि हम जो उन्हें माल और औलाद से मदद दिए जाते हैं तो यह उनके लिए भलाइयों में कोई जल्दी कर रहे हैं? नहीं, बल्कि उन्हें शऊर ही नहीं है।

57. यक़ीनन जो लोग अपने रब के ख़ौफ़ से कांपते रहे,

58. और जो लोग अपने रब की आयतों पर ईमान लाते हैं,

59. और जो अपने रब के साथ किसी को शरीक नहीं करते।

60. और जो देते हैं (ज़रूरतमंदों को) जो चीज़ें दें इस हाल में कि दिल उनके कांप रहे होते हैं, इसलिए कि उन्हें अपने रब की तरफ़ पलटना है,

बिआयातिना व सुल्तानिम् मुबीन (45)

इला फ़िर्औ-न व म-लइही फ़स्तक्बरू व कानू क़ौमन् आलीन (46)

फ़क़ालू अनुअ्मिनु लि-ब-शरैनि मिस्लिना व क़ौमुहुमा लना आबिदून (47)

फ़-कज़्ज़बूहुमा फ़कानू मिनल्-मुह्लकीन (48)

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब लअ़ल्लहुम् यह्तदून (49)

व जअ़ल्नब्-न मर्य-म व उम्महू आ-यतंव्-व आवैनाहुमा इला रब्वतिन् ज़ाति क़रारिंव्-व मअ़ीन (50) ●

या अय्युहर्रुसुलु कुलू मिनत्तय्यिबाति वअ्मलू सालिहन्, इन्नी बिमा तअ्मलू-न अ़लीम (51)

व इन्-न हाज़िही उम्मतुकुम् उम्मतंव्वाहि-दतंव्-व अ-न रब्बुकुम् फ़त्तक़ून (52)

फ़-तक़त्तअू अम्रहुम बैनहुम् ज़ुबुरन्, कुल्लु हिज़्बिम्-बिमा लदैहिम् फ़रिहून (53)

फ़-ज़र्हुम् फ़ी-ग़म्-रतिहिम् हत्ता हीन (54)

अ-यह्सबू-न अन्नमा नुमिद्दुहुम् बिही मिम्-मालिंव्-व बनीन (55)

नुसारिअु लहुम् फ़िल्-ख़ैराति, बल् ला यश्अुरून (56)

इन्नल्लज़ी-न हुम् मिन् ख़श्यति रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून (57)

वल्लज़ी-न हुम् बिआयाति रब्बिहिम् युअ्मिनून (58)

वल्लज़ी-न हुम् बिरब्बिहिम् ला युश्रिकून (59)

वल्लज़ी-न युअ्तू-न मा आतौ व क़ुलूबुहुम् वजि-लतुन् अन्नहुम् इला रब्बिहिम् राजिअून (60)

بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ (٤٥)
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۟ئِهٖ فَاسْتَكْبَرُوْا وَكَانُوْا
قَوْمًا عَالِيْنَ (٤٦)
فَقَالُوْٓا اَنُؤْمِنُ لِبَشَرَيْنِ مِثْلِنَا وَقَوْمُهُمَا
لَنَا عٰبِدُوْنَ (٤٧)
فَكَذَّبُوْهُمَا فَكَانُوْا مِنَ الْمُهْلَكِيْنَ (٤٨)
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ لَعَلَّهُمْ
يَهْتَدُوْنَ (٤٩)
وَجَعَلْنَا ابْنَ مَرْيَمَ وَاُمَّهٗٓ اٰيَةً وَّاٰوَيْنٰهُمَآ
اِلٰى رَبْوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّمَعِيْنٍ (٥٠)
يٰٓاَيُّهَا الرُّسُلُ كُلُوْا مِنَ الطَّيِّبٰتِ وَاعْمَلُوْا
صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ عَلِيْمٌ (٥١)
وَاِنَّ هٰذِهٖٓ اُمَّتُكُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً وَّاَنَا
رَبُّكُمْ فَاتَّقُوْنِ (٥٢)
فَتَقَطَّعُوْٓا اَمْرَهُمْ بَيْنَهُمْ زُبُرًا ۭ كُلُّ حِزْبٍۢ
بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ (٥٣)
فَذَرْهُمْ فِيْ غَمْرَتِهِمْ حَتّٰى حِيْنٍ (٥٤)
اَيَحْسَبُوْنَ اَنَّمَا نُمِدُّهُمْ بِهٖ مِنْ مَّالٍ
وَّبَنِيْنَ (٥٥)
نُسَارِعُ لَهُمْ فِي الْخَيْرٰتِ ۭ بَلْ لَّا
يَشْعُرُوْنَ (٥٦)
اِنَّ الَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ خَشْيَةِ رَبِّهِمْ
مُّشْفِقُوْنَ (٥٧)
وَالَّذِيْنَ هُمْ بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ يُؤْمِنُوْنَ (٥٨)
وَالَّذِيْنَ هُمْ بِرَبِّهِمْ لَا يُشْرِكُوْنَ (٥٩)
وَالَّذِيْنَ يُؤْتُوْنَ مَآ اٰتَوْا وَّقُلُوْبُهُمْ
وَجِلَةٌ اَنَّهُمْ اِلٰى رَبِّهِمْ رٰجِعُوْنَ (٦٠)

61. यही वो लोग हैं जो भलाइयों में जल्दी करते हैं और यही उनके लिए सबकत ले जाने वाले हैं।

62. हम किसी शख़्स पर उसकी मक़दिरत से बढ़ कर ज़िम्मेदारी का बोझ नहीं डालते, और हमारे पास एक किताब है जो ठीक-ठीक बोलती है, और उनपर ज़ुल्म नहीं किया जाएगा।

63. बल्कि उनके दिल इस (दीन-ए-हक़) की तरफ़ से वसवसों और ग़फ़लतों के भंवर में पड़े हुए हैं, और उस से हटकर उनके और ही काम हैं, वो उन्हीं को करते रहेंगे।

64. यहां तक कि जब हम उनके खुशहाल लोगों को अज़ाब में पकड़ेंगे, तो क्या देखते हैं कि वो आह व फ़रियाद कर रहे हैं।

65. आज आह व फरियाद मत करो; तुम्हें हमारी तरफ़ से कोई मदद मिलने को नहीं।

66-67. तुम्हें मेरी आयतें सुनाई जाती थीं, तो तुम अपनी एड़ियों के बल फिर जाते थे, हाल यह था कि इसके सबब से ख़ुद को बड़ा समझते थे, उसे एक क़िस्सा गो क़रार दे कर छोड़ चलते थे।

68. क्या उन्होंने इस कलाम पर ग़ौर नहीं किया, या उनके पास वह चीज़ आ गई जो पहले उनके बाप-दादा के पास न आई थी?

69. या उन्होंने अपने रसूल को पहचाना नहीं, इसलिए उसका इनकार कर रहे हैं?

70. या वो कहते हैं कि "उसे जुनून है?" नहीं, बल्कि वह उनके पास हक़ ले आया, मगर उनकी अक्सरियत को हक़ नागवार है।

71. और अगर हक़ कहीं उनकी ख़्वाहिशात के पीछे चलता, तो तमाम आसमान और ज़मीन और जो भी उनमें हैं सब में बिगाड़ पैदा हो जाता। बल्कि हम उनके पास उनके लिए याददिहानी लाए हैं, लेकिन वो अपनी याददिहानी से एराज़ कर रहे हैं।

72. या तुम उनसे कुछ महसूल मांग रहे हो? तुम्हारे रब का दिया तो बेहतर है ही, और वह बेहतरीन राज़िक़ है।

73. और तुम दर हक़ीक़त उन्हें सीधे रास्ते की तरफ़ बुला रहे हो;

74. मगर जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वो इस रास्ते से हटकर चलना चाहते हैं।

उलाइ-क युसारिऊ-न फ़िल्-ख़ैराति व हुम् लहा साबिक़ून (61)

व ला नुकल्लिफु नफ़्सन् इल्ला वुस्अहा व लदैना किताबुंय्यन्तिक़ु बिल्हक़्क़ि व हुम् ला युज़्लमून (62)

बल् क़ुलूबुहुम् फ़ी ग़म्रतिम्-मिन् हाज़ा व लहुम् अअ्मालुम्-मिन् दूनि ज़ालि-क हुम् लहा आमिलून (63)

हत्ता इज़ा अख़ज़्ना मुत्रफ़ीहिम् बिल्-अज़ाबि इज़ा हुम् यज्अरून (64)

ला तज्अरुल्-यौ-म, इन्नकुम् मिन्ना ला तुन्सरून (65)

क़द् कानत् आयाती तुत्ला अलैकुम् फ़कुन्तुम् अला अअ्क़ाबिकुम् तन्किसून (66)

मुस्तक्बिरी-न बिही सामिरन् तह्जुरून (67)

अ-फ़लम् यद्दब्बरुल्-क़ौ-ल अम् जा-अहुम् मा लम् यअ्ति आबा-अहुमुल्-अव्वलीन (68)

अम् लम् यअ्रिफ़ू रसूलहुम् फ़हुम् लहू मुन्किरून (69)

अम् यक़ूलू-न बिही जिन्नतुन्, बल् जा-अहुम् बिल्हक़्क़ि व अक्सरुहुम् लिल्हक़्क़ि कारिहून (70)

व लवित्त-बअल्-हक़्क़ु ~~अह्वा-अहुम्-ल-फ-स-दतिस्-समावातु~~ वल्अर्ज़ु व मन् फ़ीहिन्-न, बल् अतैनाहुम् बिज़िक्रिहिम् फ़हुम् अन् ज़िक्रिहिम् मुअ्रिज़ून (71)

अम् तस्अलुहुम् ख़र्जन् फ़-ख़राजु रब्बि-क ख़ैरुंव्-व हु-व ख़ैरुर्-राज़िक़ीन (72)

व इन्न-क ल-तद्अूहुम इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम ● (73)

व इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति अनिस्सिराति लनाकिबून (74)

اُولٰٓئِكَ يُسٰرِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ وَهُمْ
لَهَا سٰبِقُوْنَ (٦١)
وَلَا نُكَلِّفُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا وَلَدَيْنَا
كِتٰبٌ يَّنْطِقُ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ (٦٢)
بَلْ قُلُوْبُهُمْ فِيْ غَمْرَةٍ مِّنْ هٰذَا وَلَهُمْ
اَعْمَالٌ مِّنْ دُوْنِ ذٰلِكَ هُمْ لَهَا عٰمِلُوْنَ (٦٣)
حَتّٰٓى اِذَآ اَخَذْنَا مُتْرَفِيْهِمْ بِالْعَذَابِ
اِذَا هُمْ يَجْئَرُوْنَ (٦٤)
لَا تَجْئَرُوا الْيَوْمَ اِنَّكُمْ مِّنَّا لَا تُنْصَرُوْنَ (٦٥)
قَدْ كَانَتْ اٰيٰتِيْ تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَكُنْتُمْ عَلٰٓى
اَعْقَابِكُمْ تَنْكِصُوْنَ (٦٦)
مُسْتَكْبِرِيْنَ بِهٖ سٰمِرًا تَهْجُرُوْنَ (٦٧)
اَفَلَمْ يَدَّبَّرُوا الْقَوْلَ اَمْ جَآءَهُمْ مَّا لَمْ يَاْتِ
اٰبَآءَهُمُ الْاَوَّلِيْنَ (٦٨)
اَمْ لَمْ يَعْرِفُوْا رَسُوْلَهُمْ فَهُمْ لَهٗ
مُنْكِرُوْنَ (٦٩)
اَمْ يَقُوْلُوْنَ بِهٖ جِنَّةٌ ؕ بَلْ جَآءَهُمْ
بِالْحَقِّ وَاَكْثَرُهُمْ لِلْحَقِّ كٰرِهُوْنَ (٧٠)
وَلَوِ اتَّبَعَ الْحَقُّ اَهْوَآءَهُمْ لَفَسَدَتِ
السَّمٰوٰتُ وَالْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهِنَّ ؕ
بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِذِكْرِهِمْ فَهُمْ عَنْ ذِكْرِهِمْ
مُّعْرِضُوْنَ (٧١)
اَمْ تَسْـَٔلُهُمْ خَرْجًا فَخَرَاجُ رَبِّكَ خَيْرٌ ۖ
وَّهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ (٧٢)
وَاِنَّكَ لَتَدْعُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٧٣)
وَاِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ
عَنِ الصِّرَاطِ لَنٰكِبُوْنَ (٧٤)

75. अगर हम (किसी आज़माइश में डालने के बाद) उनपर रहम करते, और जिस तकलीफ़ में वो होते उसे दूर कर देते, तो भी वो अपनी सरकशी में मुस्तकिल बहकते रहते।

76. अगरचे हमने उन्हें अज़ाब में पकड़ा, फिर भी वो अपने रब के आगे न तो झुके और न वो आजज़ी ही करते थे,

77. यहां तक कि जब हम उन पर सख़्त अज़ाब का दरवाज़ा खोल दें, तो क्या देखेंगे कि वो उसमें मायूस होकर रह गए हैं।

78. और वही है जिसने तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए; तुम शुक्र थोड़े ही अदा करते हो।

79. वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में पैदा कर के फैलाया, और उसी की तरफ़ तुम जमा होकर जाओगे।

80. और वही है जो ज़िन्दगी बख़्शता, और मौत देता है, और रात और दिन का उलट-फेर उसी के इख़्तियार में है; फिर क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?

81. नहीं, बल्कि जो कुछ अगले कह चुके हैं वैसा ही वो कहते हैं।

82. उन्होंने कहा, "क्या जब हम मरकर मिट्टी और हड्डियां होकर रह जाएंगे, तो क्या हमें दोबारा ज़िन्दा कर के उठाया जाएगा?

83. यह वादा तो हमसे और इससे पहले हमारे बाप-दादा से होता आ रहा है; कुछ नहीं, यह तो महज़ अगलों के अफ़साने हैं"।

84. कहोः "यह ज़मीन, और जो भी इसमें आबाद हैं वो किसके हैं, बताओ अगर तुम जानते हो?"

85. वो बोल पड़ेंगे, "अल्लाह के" — कहोः "फिर तुम होश में क्यों नहीं आते?"

86. कहोः "सातों आसमानों का मालिक और अर्श-ए-अज़ीम का मालिक कौन है?"

87. वो कहेंगे, "सब अल्लाह के है"। कहो, "फिर डर क्यों नहीं रखते?"

88. कहोः "इक़्तिदार हर चीज़ पर किस का है, वह जो पनाह देता है और जिसके मुक़ाबले में कोई पनाह नहीं मिल सकती, अगर तुम जानते हो?"

89. वो बोल पड़ेंगे, "अल्लाह का"। कहो, "फिर कहां से तुमपर जादू चल जाता है?"

व लौ रहिम्नाहुम् व कशफ़्ना मा बिहिम् मिन् ज़ुर्रिल् ल-लज्जू फ़ी तुग़्यानिहिम् यअ्महून ●(75)

व ल-क़द् अख़ज़्नाहुम् बिल्अज़ाबि फ़मस्तकानू लिरब्बिहिम् व मा य-तज़र्रअून (76)

हत्ता इज़ा फ़तह्ना अलैहिम् बाबन् ज़ा-अज़ाबिन् शदीदिन् इज़ा हुम् फ़ीहि मुब्लिसून (77) ●

व हुवल्लज़ी अन्श-अ लकुमुस्सम्-अ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त, क़लीलम्-मा तश्कुरून (78)

व हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून (79)

व हुवल्लज़ी युह्यी व युमीतु व लहुख़्तिलाफ़ुल्-लैलि वन्नहारि, अ-फ़ला तअ्क़िलून (80)

बल् क़ालू मिस्-ल मा क़ालल्-अव्वलून (81)

क़ालू अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अिज़ामन् अ-इन्ना लमब्अूसून (82)

ल-क़द् वुअिद्ना नह्नु व आबाउना हाज़ा मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (83)

क़ुल् लि-मनिल्-अर्ज़ु व मन् फ़ीहा इन् कुन्तुम् तअ्लमून (84)

स-यक़ूलू-न लिल्लाहि, क़ुल् अ-फ़ला तज़क्करून (85)

क़ुल् मर्रब्बुस्समावातिस्-सब्अि व रब्बुल्-अर्शिल्-अज़ीम (86)

स-यक़ूलू-न लिल्लाहि, क़ुल् अ-फ़ला तत्तक़ून (87)

क़ुल् मम्-बि-यदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्-व हु-व युजीरु व ला युजारु अलैहि इन् कुन्तुम् तअ्लमून (88)

स-यक़ूलू-न लिल्लाहि, क़ुल् फ़-अन्ना तुस्हरून (89)

وَلَوْ رَحِمْنٰهُمْ وَكَشَفْنَا مَا بِهِمْ مِّنْ ضُرٍّ لَّلَجُّوْا
فِیْ طُغْيَانِهِمْ يَعْمَهُوْنَ ۝٧٥
وَلَقَدْ اَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ فَمَا اسْتَكَانُوْا
لِرَبِّهِمْ وَمَا يَتَضَرَّعُوْنَ ۝٧٦
حَتّٰۤی اِذَا فَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَابًا ذَا عَذَابٍ
شَدِيْدٍ اِذَا هُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ ۝٧٧
وَهُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَ لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ
وَالْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِيْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝٧٨
وَهُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ فِی الْاَرْضِ وَاِلَيْهِ
تُحْشَرُوْنَ ۝٧٩
وَهُوَ الَّذِیْ يُحْیٖ وَيُمِيْتُ وَلَهُ اخْتِلَافُ
الَّيْلِ وَالنَّهَارِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٨٠
بَلْ قَالُوْا مِثْلَ مَا قَالَ الْاَوَّلُوْنَ ۝٨١
قَالُوْۤا ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝٨٢
لَقَدْ وُعِدْنَا نَحْنُ وَاٰبَآؤُنَا هٰذَا مِنْ قَبْلُ
اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٨٣
قُلْ لِّمَنِ الْاَرْضُ وَمَنْ فِيْهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝٨٤
سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝٨٥
قُلْ مَنْ رَّبُّ السَّمٰوٰتِ السَّبْعِ وَرَبُّ
الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ۝٨٦
سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ اَفَلَا تَتَّقُوْنَ ۝٨٧
قُلْ مَنْۢ بِيَدِهٖ مَلَكُوْتُ كُلِّ شَیْءٍ
وَّهُوَ يُجِيْرُ وَلَا يُجَارُ عَلَيْهِ اِنْ كُنْتُمْ
تَعْلَمُوْنَ ۝٨٨
سَيَقُوْلُوْنَ لِلّٰهِ ؕ قُلْ فَاَنّٰی تُسْحَرُوْنَ ۝٨٩

90. नही, बल्कि हम उनके पास हक़ ले.आए हैं, और यक़ीनन वो झूटे हैं।

91. अल्लाह ने अपना कोई बेटा नही बनाया, और न उसके साथ कोई माबूद है; ऐसा होता तो हर माबूद अपनी मख़्लूक़ को लेकर अलग हो जाता और उनमें से एक-दूसरे पर चढ़ाई कर देता; अज़ीम व बरतर है अल्लाह, उन बातों से जो वो बयान करते हैं,

92. जाननेवाला है छुपे और खुले का; ग़र्ज़ बालातर है वह उस शिर्क से जो वो करते हैं!

93-94. कहो "ऐ मेरे रब, जिस चीज़ का वादा उनसे किया जा रहा है वह अगर तू मुझे दिखाए, तो मेरे रब, मुझे उन ज़ालिम लोगों में शामिल न करना"।

95. यक़ीनन हमें इसकी क़ुदरत है कि हम जो उनसे वादा कर रहे हैं वह तुम्हें दिखा दें।

96. बुराई को उस तरीक़ा से दफ़ा करो जो सब से बेहतर हो। हम खूब जानते हैं जो कुछ बातें वो बनाते हैं।

97. और कहो "ऐ मेरे रब, मैं शैतान की उक्साहटों से तेरी पनाह मांगता हूं,

98. और मैं इससे भी तेरी पनाह मांगता हूं, मेरे रब, कि वो मेरे पास आएं"।

99. यहां तक कि जब उनमें से किसी को मौत आने लगती है तो वह कहता है, "मेरे रब, मुझे लौटा दे,

100. ताकि जिसको मैं छोड़ आया उसमें अच्छा अमल करूं"। हरगिज़ नहीं, यह तो बस एक बात है जो वह कहेगा; और उनके पीछे से लेकर उस दिन तक जब वो दोबारा उठाए जाएंगे एक रोक लगी हुई है।

101. फिर जब सूर में फूंक मारी जाएगी, तो उस दिन उनके दरमियान रिश्ते बाक़ी न रहेंगे, और न वो एक-दूसरे को पूछेंगे।

102. फिर जिनके नेक आमाल भारी हुए, तो वही हैं जो कामयाब होंगे।

103. रहे वो लोग जिनके आमाल हलके हुए, तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको ख़सारा में डाला, वो जहन्नम में हमेशा रहेंगे,

बल् अतैनाहुम् बिल्हक़्क़ि व इन्नहुम् लकाज़िबून (90)

मत्त-ख़ज़ल्लाहु मिंव्व-लदिंव्-व मा का-न म-अहू मिन् इलाहिन् इज़ल् ल-ज़-ह-ब कुल्लु इलाहिम्-बिमा ख़-ल-क़ व ल-अला बअ्ज़ुहुम् अला बअ्ज़िन्, सुब्हानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून (91)

आ़लिमिल्-ग़ैबि वश्शहा-दति फ़-तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (92)●

कुर्रब्बि इम्मा तुरियन्नी मा यूअ़दून (93)

रब्बि फ़ला तज्अ़ल्नी फ़िल्-क़ौमिज़्ज़ालिमीन (94)

व इन्ना अ़ला अन् नुरि-य-क मा नअ़िदुहुम् लक़ादिरून (95)

इद्फ़अ् बिल्लती हि-य अह्सनुस्सय्यि-अ-त, नह्नु अअ्लमु बिमा यसिफ़ून (96)

व कुर्रब्बि अऊज़ु बि-क मिन् ह-मज़ातिश्-शयातीन (97)

व अऊज़ु बि-क रब्बि अंय्यह्ज़ुरून (98)

हत्ता इज़ा जा-अ अ-ह-दहुमुल्-मौतु क़ा-ल रब्बिर्जिऊन (99)

लअ़ल्ली अअ्मलु सालिहन् फ़ीमा तरक्तु कल्ला, इन्नहा कलि-मतुन् हु-व क़ाइलुहा, व मिंव्वरा-इहिम् बर्-ज़ख़ुन् इला यौमि युब्अ़सून (100)

फ़-इज़ा नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़ला अन्सा-ब बैनहुम् यौमइज़िंव्-व ला य-तसा-अलून (101)

फ़-मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (102)

व मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू फ़-उलाइ-कल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् फ़ी जहन्न-म ख़ालिदून (103)

بَلْ اَتَيْنٰهُمْ بِالْحَقِّ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (٩٠)

مَا اتَّخَذَ اللّٰهُ مِنْ وَّلَدٍ وَّمَا كَانَ مَعَهٗ مِنْ اِلٰهٍ اِذًا لَّذَهَبَ كُلُّ اِلٰهٍۢ بِمَا خَلَقَ وَلَعَلَا بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ (٩١)

عٰلِمِ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ (٩٢)

قُلْ رَّبِّ اِمَّا تُرِيَنِّيْ مَا يُوْعَدُوْنَ (٩٣)

رَبِّ فَلَا تَجْعَلْنِيْ فِى الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ (٩٤)

وَاِنَّا عَلٰٓى اَنْ نُّرِيَكَ مَا نَعِدُهُمْ لَقٰدِرُوْنَ (٩٥)

اِدْفَعْ بِالَّتِيْ هِيَ اَحْسَنُ السَّيِّئَةَ نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَا يَصِفُوْنَ (٩٦)

وَقُلْ رَّبِّ اَعُوْذُ بِكَ مِنْ هَمَزٰتِ الشَّيٰطِيْنِ (٩٧)

وَاَعُوْذُ بِكَ رَبِّ اَنْ يَّحْضُرُوْنِ (٩٨)

حَتّٰٓى اِذَا جَآءَ اَحَدَهُمُ الْمَوْتُ قَالَ رَبِّ ارْجِعُوْنِ (٩٩)

لَعَلِّيْٓ اَعْمَلُ صَالِحًا فِيْمَا تَرَكْتُ كَلَّا اِنَّهَا كَلِمَةٌ هُوَ قَآئِلُهَا وَمِنْ وَّرَآئِهِمْ بَرْزَخٌ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ (١٠٠)

فَاِذَا نُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَلَآ اَنْسَابَ بَيْنَهُمْ يَوْمَئِذٍ وَّلَا يَتَسَآءَلُوْنَ (١٠١)

فَمَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (١٠٢)

وَمَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ فَاُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ فِيْ جَهَنَّمَ خٰلِدُوْنَ (١٠٣)

104. आग उनके चेहरों को झुलस देगी और उसमें वो बदशक्ल होकर रहेंगे।

105. "क्या तुम्हें मेरी आयतें सुनाई नहीं जाती थीं, तो तुम उन्हें झुटलाते थे?"

106. वो कहेंगे, "हमारे रब, हमारी बदबख़्ती हमपर ग़ालिब आई, और हम भटके हुए लोग थे।

107. हमारे रब, हमें यहां से निकाल दे! फिर अगर हम, दोबारा ऐसा करें, तो यक़ीनन हम ज़ालिम होंगे"।

108. वह कहेगा, "फिटकारे हुए ज़लील व ख़्वार इसी में पड़े रहो, और मुझ से बात न करो।

109. मेरे बन्दों में कुछ लोग थे जो कहते थे, 'हमारे रब, हम ईमान ले आए; पस तू हमें बख़्श दे, और हम पर रहम फ़रमा, तू सबसे बेहतर रहम फ़रमाने वाला है।'

110. तो तुमने उनका मज़ाक़ बनाया, यहां तक कि उनके सबब से तुम मेरी याद को भुला बैठे, और तुम उन पर हंसते रहे।

111. आज मैंने उनके सब्र करने का बदला यह अता किया कि वही कामयाब हैं।"

112. वह कहेगा, "तुम ज़मीन में बरसों के हिसाब से कितनी मुद्दत रहे?"

113. वो कहेंगे, "एक दिन, या दिनका कुछ हिस्सा, शुमार करने वालों से पूछ ले।"

114. वह कहेगा, "तुम थोड़े ही ठहरे, काश कि तुम जानते होते।

115. तो क्या तुमने यह समझा था कि हमने तुम्हें बेकार पैदा किया है, और यह कि तुम्हें हमारी तरफ़ लौटना नहीं है?

116. पस बाला व बरतर है अल्लाह, हक़ीक़ी बादशाह! उसके सिवा कोई माबूद नहीं, मालिक है अर्शे करीम का।

117. और जो कोई अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को पुकारे, जिसके लिए उसके पास कोई दलील नहीं, तो बस उसका हिसाब उसके

तल्फ़हु वुजू-हहुमुन्नारु व हुम् फ़ीहा कालिहून (104)

अलम् तकुन् आयाती तुत्ला अ़लैकुम् फ़कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (105)

क़ालू रब्बना ग़-लबत् अ़लैना शिक़्वतुना व कुन्ना क़ौमन् ज़ाल्लीन (106)

रब्बना अख़्रिज्ना मिन्हा फ़-इन् अ़ुद्ना फ़-इन्ना ज़ालिमून (107)

कालख़्सऊ फ़ीहा व ला तुकल्लिमून (108)

इन्नहू का-न फ़रीक़ुम् मिन् अ़िबादी यक़ूलू-न रब्बना आमन्ना फ़ग़्फ़िर् लना वर्हम्ना व अन्-त ख़ैरुर्-राहिमीन (109)

फ़त्त-ख़ज़्तुमूहुम् सिख़्रिय्यन् हत्ता अन्सौकुम् ज़िक्री व कुन्तुम् मिन्हुम् तज़्हकून (110)

इन्नी जज़ैतुहुमुल्-यौ-म बिमा स-बरू अन्नहुम् हुमुल्-फ़ाइज़ून (111)

क़ा-ल कम् लबिस्तुम् फ़िल्अर्ज़ि अ़-द-द सिनीन (112)

क़ालू लबिस्ना यौमन् औ बअ़्-ज़ यौमिन् फ़स्अलिल्-आ़द्दीन (113)

क़ा-ल इल्लबिस्तुम् इल्ला क़लीलल्-लौ अन्नकुम् कुन्तुम् तअ़्लमून (114)

अ-फ़-हसिब्तुम् अन्नमा ख़लक़्नाकुम् अ़-बसंव्-व अन्नकुम् इलैना ला तुर्जअ़ून (115)

फ़-तआ़लल्लाहुल्-मलिकुल्-हक़्क़ु ला इला-ह इल्ला हु-व रब्बुल् अ़र्शिल्-करीम (116)

व मंय्यद्अ़ु मअ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र ला बुर्हा-न लहू बिही फ़-इन्नमा हिसाबुहू अ़िन्-द रब्बिही, इन्नहू

تَلۡفَحُ وُجُوۡهَهُمُ النَّارُ وَهُمۡ فِيۡهَا
كٰلِحُوۡنَ ۝١٠٤
اَلَمۡ تَكُنۡ اٰيٰتِىۡ تُتۡلٰى عَلَيۡكُمۡ فَكُنۡتُمۡ
بِهَا تُكَذِّبُوۡنَ ۝١٠٥
قَالُوۡا رَبَّنَا غَلَبَتۡ عَلَيۡنَا شِقۡوَتُنَا وَكُنَّا
قَوۡمًا ضَآلِّيۡنَ ۝١٠٦
رَبَّنَاۤ اَخۡرِجۡنَا مِنۡهَا فَاِنۡ عُدۡنَا فَاِنَّا
ظٰلِمُوۡنَ ۝١٠٧
قَالَ اخۡسَـُٔوۡا فِيۡهَا وَلَا تُكَلِّمُوۡنِ ۝١٠٨
اِنَّهٗ كَانَ فَرِيۡقٌ مِّنۡ عِبَادِىۡ يَقُوۡلُوۡنَ
رَبَّنَاۤ اٰمَنَّا فَاغۡفِرۡ لَنَا وَارۡحَمۡنَا وَاَنۡتَ
خَيۡرُ الرّٰحِمِيۡنَ ۝١٠٩
فَاتَّخَذۡتُمُوۡهُمۡ سِخۡرِيًّا حَتّٰۤى اَنۡسَوۡكُمۡ
ذِكۡرِىۡ وَكُنۡتُمۡ مِّنۡهُمۡ تَضۡحَكُوۡنَ ۝١١٠
اِنِّىۡ جَزَيۡتُهُمُ الۡيَوۡمَ بِمَا صَبَرُوۡۤا ۙ اَنَّهُمۡ
هُمُ الۡفَآئِزُوۡنَ ۝١١١
قٰلَ كَمۡ لَبِثۡتُمۡ فِى الۡاَرۡضِ عَدَدَ سِنِيۡنَ ۝١١٢
قَالُوۡا لَبِثۡنَا يَوۡمًا اَوۡ بَعۡضَ يَوۡمٍ فَسۡـَٔلِ
الۡعَآدِّيۡنَ ۝١١٣
قٰلَ اِنۡ لَّبِثۡتُمۡ اِلَّا قَلِيۡلًا لَّوۡ اَنَّكُمۡ كُنۡتُمۡ
تَعۡلَمُوۡنَ ۝١١٤
اَفَحَسِبۡتُمۡ اَنَّمَا خَلَقۡنٰكُمۡ عَبَثًا وَّاَنَّكُمۡ
اِلَيۡنَا لَا تُرۡجَعُوۡنَ ۝١١٥
فَتَعٰلَى اللّٰهُ الۡمَلِكُ الۡحَـقُّ ۚ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ
رَبُّ الۡعَرۡشِ الۡكَرِيۡمِ ۝١١٦
وَمَنۡ يَّدۡعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۙ لَا بُرۡهَانَ
لَهٗ بِهٖ ۙ فَاِنَّمَا حِسَابُهٗ عِنۡدَ رَبِّهٖ ؕ اِنَّهٗ

रब के पास है; यक़ीनन काफ़िर कभी फ़लाह पाने के नहीं।

118. और कहो: "मेरे रब, मुझे बख़्श दे और रहम फ़रमा, तू तो सब से बेहतर रहम फ़रमाने वाला है"।

सूरह अन-नूर मदनी

(आयतें 64, रुकूआत 9)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. यह एक अहम सूरह है जिसे हमने उतारा है और इसे हमने फ़र्ज़ किया है; और इसमें हमने वाज़ेह आयतें नाज़िल की हैं, इस तवक़्क़ो पर कि तुम सबक़ हासिल करोगे।

2. ज़ानिया औरत और ज़ानी मर्द, इन दोनों में से हर एक को सौ कोड़े मारो, और अल्लाह के दीन के मुआमले में तुम्हें उनपर तरस न आए अगर तुम अल्लाह और रोज़-ए-आख़िर को मानते हो; और उन्हें सज़ा देते वक़्त मोमिनों में से कुछ लोगों को मौजूद रहना चाहिए।

3. एक ज़ानी किसी ज़ानिया या मुश्रिका से ही तअल्लुक़ पैदा करता और सुहबत करता है और (इसी तरह) एक ज़ानी किसी ज़ानिया या मुशरिक से ही तअल्लुक़ पैदा करती और सुहबत करती है; और यह तो मोमिनीन पर हराम है।

4. और जो लोग पाक दामन औरतों को तोहमत लगाएं, फिर चार गवाह न लाएं, तो उन्हें अस्सी कोड़े मारो, और कभी भी उनकी गवाही क़बूल न करो वही फ़ासिक़ लोग हैं,

5. सिवाय उन लोगों के जो उसके बाद तौबा कर लें और इसलाह कर लें तो इस सूरत में यक़ीनन अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

6. और जो लोग अपनी बीवियों पर इलज़ाम लगाएं और सिवाय उनकी अपनी ज़ात के उनके लिए गवाह मौजूद न हों, तो उनमें से एक (यानी शौहर) चार शहादतें यह दे कि बख़ुदा वह बिल्कुल सच्चा है,

7. और पांचवीं शहादत यह दे कि अगर वह झूटा हो तो उस पर

ला युफ़्लिहुल्-काफ़िरून (117)

व क़ुर्रब्बिग़्फ़िर् वर्हम् व अन्-त ख़ैरुर्-राहिमीन (118) ●

24 सूरतुन्नूरि

(मदनी) इस सूरः में अरबी के 641 अक्षर, 142 शब्द, 64 आयतें और 9 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सूरतुन् अन्ज़ल्नाहा व फ़रज़्नाहा व अन्ज़ल्ना फ़ीहा आयातिम् बय्यिनातिल् लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (1)

अज़्ज़ानि-यतु वज़्ज़ानी फ़ज्लिदू कुल्-ल वाहिदिम्-मिन्हुमा मि-अ-त जल्दतिंव्-व ला तअ्ख़ुज़्कुम् बिहिमा रअ्-फ़तुन् फ़ी दीनिल्लाहि इन् कुन्तुम् तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि वल्यश्-हद् अ़ज़ाबहुमा ताइ-फ़तुम् मिनल्-मुअ्मिनीन (2)

अज़्ज़ानी ला यन्किहु इल्ला ज़ानि-यतन् औ मुश्रि-कतंव्- वज़्ज़ानि-यतु ला यन्किहुहा इल्ला ज़ानिन् औ मुश्रिकुन् व हुर्रि-म ज़ालि-क अ़लल्-मुअ्मिनीन (3)

वल्लज़ी-न यर्मूनल् मुह्सनाति सुम्-म लम् यअ्तू बि-अर्-ब-अ़ति शु-हदा-अ फ़ज्लिदूहुम् समानी-न जल्दतंव्-व ला तक़्बलू लहुम् शहा-दतन् अ-बदन् व उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (4)

इल्लल्लज़ी-न ताबू मिम्-बअ्दि ज़ालि-क व अस्लहू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (5)

वल्लज़ी-न यर्मू-न अज़्वाजहुम् व लम् यकुल्लहुम् शु-हदा-उ इल्ला अन्फ़ुसुहुम् फ़-शहा-दतु अ-हदिहिम् अर्-बअु शहादातिम्-बिल्लाहि इन्नहू लमिनस्-सादिक़ीन (6)

वल्ख़ामि-सतु अन्-न लअ्-नतल्लाहि अ़लैहि इन्

لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ﴿١١٧﴾
وَقُلْ رَّبِّ اغْفِرْ وَارْحَمْ وَاَنْتَ
ع خَيْرُ الرّٰحِمِيْنَ ﴿١١٨﴾

سُوْرَةُ النُّوْرِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٦٤ رُكُوْعَاتُهَا ٩

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سُوْرَةٌ اَنْزَلْنٰهَا وَفَرَضْنٰهَا وَاَنْزَلْنَا فِيْهَآ
اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ لَّعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿١﴾
اَلزَّانِيَةُ وَالزَّانِيْ فَاجْلِدُوْا كُلَّ وَاحِدٍ
مِّنْهُمَا مِائَةَ جَلْدَةٍ ۖ وَّلَا تَاْخُذْكُمْ بِهِمَا
رَاْفَةٌ فِيْ دِيْنِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتُمْ تُؤْمِنُوْنَ
بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ ۚ وَلْيَشْهَدْ عَذَابَهُمَا
طَآئِفَةٌ مِّنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٢﴾
اَلزَّانِيْ لَا يَنْكِحُ اِلَّا زَانِيَةً اَوْ مُشْرِكَةً ۫
وَّالزَّانِيَةُ لَا يَنْكِحُهَآ اِلَّا زَانٍ
اَوْ مُشْرِكٌ ۚ وَحُرِّمَ ذٰلِكَ عَلَى
الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٣﴾
وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ ثُمَّ لَمْ يَاْتُوْا
بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ فَاجْلِدُوْهُمْ ثَمٰنِيْنَ
جَلْدَةً وَّلَا تَقْبَلُوْا لَهُمْ شَهَادَةً اَبَدًا ۚ
وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ﴿٤﴾
اِلَّا الَّذِيْنَ تَابُوْا مِنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ وَاَصْلَحُوْا ۚ
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٥﴾
وَالَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ اَزْوَاجَهُمْ وَلَمْ يَكُنْ
لَّهُمْ شُهَدَآءُ اِلَّآ اَنْفُسُهُمْ فَشَهَادَةُ
اَحَدِهِمْ اَرْبَعُ شَهٰدٰتٍۢ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ
الصّٰدِقِيْنَ ﴿٦﴾
وَالْخَامِسَةُ اَنَّ لَعْنَتَ اللّٰهِ عَلَيْهِ اِنْ

अल्लाह की लानत हो।

8. बीवी से भी सज़ा को यह बात टाल सकती है कि वह चार शहादतें यह दे कि बख़ुदा वह बिल्कुल झूठा है।

9. और पांचवीं शहादत यह दे कि इस बन्दी पर अल्लाह का ग़ज़ब हो अगर वह (शौहर) सच्चा हो।

10. अगर तुम पर अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती (तो तुम मुश्किल में पड़ जाते) और यह कि अल्लाह बड़ा तौबा कबूल करनेवाला, निहायत हिकमत वाला है।

11. जो लोग बुहतान घड़ लाए हैं वो तुम्हारे ही अन्दर की एक टोली है; तुम उसे अपने हक़ में बुरा मत समझो; बल्कि वह भी तुम्हारे हक़ में बेहतर ही है। उनमें से हर एक शख़्स के लिए उतना ही हिस्सा है जितना गुनाह उसने कमाया; और उनमें से जिसने उसकी ज़िम्मेदारी का एक बड़ा हिस्सा अपने सर लिया, उसके लिए अज़ाबे अज़ीम है।

12. ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुमने उसे सुना था, तो मोमिन मर्द और मोमिन औरतें अपने आपसे नेक गुमान करते और कहते, "यह तो सरीह बुहतान है?"

13. आख़िर वो इसपर चार गवाह क्यों न लाए? अब जबकि वो गवाह नहीं लाए, तो अल्लाह के नज़दीक वही झूटे हैं।

14. अगर तुमपर दुनिया और आख़िरत में अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत न होती, तो जिस बात में तुम पड़ गए उसके बाइस तुम्हें एक बड़ा अज़ाब आ लेता।

15. ख़याल करो जब तुम एक-दूसरे से उसे अपनी ज़बानों पर ले जा रहे थे, और तुम अपने मुंह से वह कुछ कहे जाते थे जिसके बारे में तुम्हें कोई इल्म न था, और तुम उसे एक हलकी बात समझ रहे थे हालांकि अल्लाह के नज़दीक वह एक भारी बात थी।

16. और ऐसा क्यों न हुआ कि जब तुमने उसे सुना था तो कह देते कि "हमारे शायान-ए-शान नहीं कि हम ऐसी बात ज़बान पर लाएं; अज़ीम व बरतर है तू (ऐ अल्लाह!) यह तो एक बड़ा बुहतान है?"

17. अल्लाह तुम्हें नसीहत करता है कि फिर कभी ऐसा न करना, अगर तुम मोमिन हो।

का-न मिनल्-काज़िबीन (7)

व यद्रउ अन्हल्-अज़ा-ब अन् तश्ह-द अर्ब-अ शहादातिम्-बिल्लाहि इन्नहू लमिनल्-काज़िबीन (8)

वल्ख़ामि-स-त अन्-न ग़-ज़बल्लाहि अलैहा इन् का-न मिनस्-सादिक़ीन (9)

व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू व अन्नल्ला-ह तव्वाबुन् हकीम (10)●

इन्नल्लज़ी-न जाऊ बिल्-इफ़्कि अुस्बतुम्-मिन्कुम्, ला तह्सबूहु शर्रल्-लकुम्, बल् हु-व ख़ैरुल्-लकुम्, लिकुल्लिम्-रिइम्-मिन्हुम् मक्त-स-ब मिनल्-इस्मि वल्लज़ी तवल्ला किब्रहू मिन्हुम् लहू अज़ाबुन् अज़ीम (11)

लौ ला इज़् समिअ्तुमूहु ज़न्नल्-मुअ्मिनू-न वल्-मुअ्मिनातु बिअन्फ़ुसिहिम् ख़ैरंव्-व क़ालू हाज़ा इफ़्कुम्-मुबीन (12)

लौ ला जाऊ अलैहि बि-अर्-ब-अति शु-हदा-अ फ़-इज़् लम् यअ्तू बिश्शु-हदा-इ फ़-उलाइ-क अिन्दल्लाहि हुमुल्-काज़िबून (13)

व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अलैकुम् व रह्मतुहू फ़िद्दुन्या वल्-आख़िराते ल-मस्सकुम् फ़ीमा अफ़ज़्तुम् फ़ीहि अज़ाबुन् अज़ीम (14)

इज़् तलक़्क़ौनहू बिअल्सि-नतिकुम् व तक़ूलू-न बिअफ़्वाहिकुम् मा लै-स लकुम् बिही अिल्मुंव्-व तह्सबूनहू हय्यिनंव्-व हु-व अिन्दल्लाहि अज़ीम (15)

व लौ ला इज़् समिअ्तुमूहु क़ुल्तुम् मा यकूनु लना अन् न-तकल्ल-म बिहाज़ा सुब्हान-क हाज़ा बुह्तानुन् अज़ीम (16)

यअिज़ुकुमुल्लाहु अन् तअूदू लिमिस्लिही अ-बदन् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (17)

كَانَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ٧

وَيَدْرَؤُا عَنْهَا الْعَذَابَ اَنْ تَشْهَدَ اَرْبَعَ شَهٰدٰتٍۭ بِاللّٰهِ ۙ اِنَّهٗ لَمِنَ الْكٰذِبِيْنَ ٨

وَالْخَامِسَةَ اَنَّ غَضَبَ اللّٰهِ عَلَيْهَآ اِنْ كَانَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ٩

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ تَوَّابٌ حَكِيْمٌ ١٠

اِنَّ الَّذِيْنَ جَآءُوْ بِالْاِفْكِ عُصْبَةٌ مِّنْكُمْ ۭ لَا تَحْسَبُوْهُ شَرًّا لَّكُمْ ۭ بَلْ هُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ۭ لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ مَّا اكْتَسَبَ مِنَ الْاِثْمِ ۚ وَالَّذِيْ تَوَلّٰى كِبْرَهٗ مِنْهُمْ لَهٗ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ١١

لَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ ظَنَّ الْمُؤْمِنُوْنَ وَالْمُؤْمِنٰتُ بِاَنْفُسِهِمْ خَيْرًا ۙ وَّقَالُوْا هٰذَآ اِفْكٌ مُّبِيْنٌ ١٢

لَوْلَا جَآءُوْ عَلَيْهِ بِاَرْبَعَةِ شُهَدَآءَ ۚ فَاِذْ لَمْ يَاْتُوْا بِالشُّهَدَآءِ فَاُولٰۗىِٕكَ عِنْدَ اللّٰهِ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ١٣

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ لَمَسَّكُمْ فِيْ مَآ اَفَضْتُمْ فِيْهِ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ١٤

اِذْ تَلَقَّوْنَهٗ بِاَلْسِنَتِكُمْ وَتَقُوْلُوْنَ بِاَفْوَاهِكُمْ مَّا لَيْسَ لَكُمْ بِهٖ عِلْمٌ وَّتَحْسَبُوْنَهٗ هَيِّنًا ۤ وَّهُوَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمٌ ١٥

وَلَوْلَآ اِذْ سَمِعْتُمُوْهُ قُلْتُمْ مَّا يَكُوْنُ لَنَآ اَنْ نَّتَكَلَّمَ بِهٰذَا ۤ سُبْحٰنَكَ هٰذَا بُهْتَانٌ عَظِيْمٌ ١٦

يَعِظُكُمُ اللّٰهُ اَنْ تَعُوْدُوْا لِمِثْلِهٖٓ اَبَدًا اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ١٧

18. अल्लाह तो आयतों को तुम्हारे लिए खोल-खोल कर बयान करता है; अल्लाह तो सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।

19. जो लोग चाहते हैं कि उन लोगों में जो ईमान लाए हैं बेहयाई फैले, उनके लिए दर्दनाक अज़ाब है दुनिया में भी और आख़िरत में भी, और अल्लाह जानता है, और तुम नहीं जानते।

20. और अगर अल्लाह का फ़ज़्ल ओर उसकी रहमत तुम पर न होती; (तो लाज़िमन तुम तबाह होकर रहते) और यह कि अल्लाह बड़ा शफ़ीक़, निहायत रहम वाला है।

21. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, शैतान के नुक़ूश-ए-क़दम की पैरवी न करो, जो कोई शैतान के नुक़ूश-ए-क़दम की पैरवी करेगा, तो वह तो उसे बेहयाई और बुराई का हुक्म देगा। और अल्लाह का फ़ज़्ल और उसकी रहमत तुम पर न होती तो तुम में से किसी का भी तज़किया न होता; मगर अल्लाह जिसे चाहता है बालीदगी बख़्शता है। अल्लाह सब कुछ सुनता, जानता है।

22. तुम में जो साहिब-ए-फ़ज़्ल और साहिब-ए-मक़दिरत हैं वो क़राबत दारों, मिसकीनों और अल्लाह की राह में घर बार छोड़ने वालों को देने से बाज़ रहने की क़सम न खा बैठें; उन्हें चाहिए कि माफ़ कर दें और उनसे दरगुज़र करें। क्या तुम यह नहीं चाहते कि अल्लाह तुम्हें बख़्श दे; अल्लाह बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

23. बेशक जो लोग शरीफ़, पाक दामन भोली-भाली बेख़बर मोमिन औरतों पर तोहमत लगाते हैं उनपर दुनिया और आख़िरत में लानत है; और उनके लिए एक बड़ा अज़ाब है।

24. जिस दिन उनकी ज़बानें, और उनके हाथ, और उनके पांव उनके ख़िलाफ़ उसकी गवाही देंगे जो कुछ वो करते रहे थे।

25. उस दिन अल्लाह उन्हें उनका ठीक बदला जिसके वो मुसतहिक़ हैं पूरी तरह दे देगा, और वो जान लेंगे कि बेशक अल्लाह हक़ है, वाज़ेह कर देने वाला।

26. गंदी बातें गन्दे लोगों के लिए हैं। और गन्दे लोग गंदी बातों के लिए,

व युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (18)

इन्नल्लज़ी-न युहिब्बू-न अन् तशीअ़ल्-फ़ाहि-शतु फ़िल्लज़ी-न आमनू लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीमुन् फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति, वल्लाहु यअ्लमु व अन्तुम् ला तअ्लमून (19)

व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रहमतुहू व अन्नल्ला-ह रऊफ़ुर्-रहीम ● (20) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तबिअू ख़ुतुवातिश्शैतानि, व मंय्यत्तबिअ् ख़ुतुवातिश्शैतानि फ़-इन्नहू यअ्मुरु बिल्फ़ह्शा-इ वल्मुन्करि, व लौ ला फ़ज़्लुल्लाहि अ़लैकुम् व रह्मतुहू मा ज़का मिन्कुम् मिन् अ-हदिन् अ-बदंव्-व लाकिन्नल्ला-ह युज़क्की मंय्यशा-उ, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (21)

व ला यअ्तलि उलुल्-फ़ज़्लि मिन्कुम् वस्स-अ़ति अंय्युअ्तू उलिल्-क़ुरबा वल्मसाकी-न वल्मुहाजिरी-न फ़ी सबीलिल्लाहि वल्-यअ्फ़ू वल्-यस्फ़हू, अला तुहिब्बू-न अंय्यग़्फ़िरल्लाहु लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (22)

इन्नल्लज़ी-न यर्मूनल्-मुह्सनातिल्-ग़ाफ़िलातिल्-मुअ्मिनाति लुअ़िनू फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (23)

यौ-म तश्-हदु अ़लैहिम् अल्सि-नतुहुम् व ऐदीहिम् व अर्जुलुहुम् बिमा कानू यअ्मलून (24)

यौमइज़िंय्-युवफ़्फ़ीहिमुल्लाहु दीनहुमुल्-हक़्-क़ व यअ्लमू-न अन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ुल्-मुबीन (25)

अल्ख़बीसातु लिल्ख़बीसी-न वल्ख़बीसू-न

وَيُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ﴿۱۸﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحِبُّوْنَ اَنْ تَشِيْعَ الْفَاحِشَةُ فِى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۙ فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ وَاَنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ﴿۱۹﴾

وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ وَاَنَّ اللّٰهَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۰﴾

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّبِعُوْا خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ ؕ وَمَنْ يَّتَّبِعْ خُطُوٰتِ الشَّيْطٰنِ فَاِنَّهٗ يَاْمُرُ بِالْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَوْلَا فَضْلُ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ وَرَحْمَتُهٗ مَا زَكٰى مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ اَبَدًا ۙ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُزَكِّىْ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ﴿۲۱﴾

وَلَا يَاْتَلِ اُولُوا الْفَضْلِ مِنْكُمْ وَالسَّعَةِ اَنْ يُّؤْتُوْۤا اُولِى الْقُرْبٰى وَالْمَسٰكِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ وَلْيَعْفُوْا وَلْيَصْفَحُوْا ؕ اَلَا تُحِبُّوْنَ اَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۲۲﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ يَرْمُوْنَ الْمُحْصَنٰتِ الْغٰفِلٰتِ الْمُؤْمِنٰتِ لُعِنُوْا فِى الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ ۪ وَلَهُمْ عَذَابٌ عَظِيْمٌ ۙ﴿۲۳﴾

يَّوْمَ تَشْهَدُ عَلَيْهِمْ اَلْسِنَتُهُمْ وَاَيْدِيْهِمْ وَاَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿۲۴﴾

يَوْمَئِذٍ يُّوَفِّيْهِمُ اللّٰهُ دِيْنَهُمُ الْحَقَّ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ الْمُبِيْنُ ﴿۲۵﴾

اَلْخَبِيْثٰتُ لِلْخَبِيْثِيْنَ وَالْخَبِيْثُوْنَ

और अच्छी बातें अच्छे लोगों के लिए हैं और अच्छे लोग अच्छी बातों के लिए। ये लोग उन बातों से बरी हैं जो वो कह रहे हैं; उनके लिए मग़फ़िरत और बाइज़्ज़त रिज़्क़ है।

27. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने घरों के सिवा दूसरे घरों में दाख़िल न हुआ करो जब तक कि रिज़ामन्दी हासिल न कर लो और उन घर वालों को सलाम न कर लो; यही तुम्हारे लिए बेहतर है; शायद कि तुम ख़याल रखो।

28. फिर अगर उनमें किसी को न पाओ, तो उनमें दाख़िल न हो जब तक कि तुम्हें इजाज़त हासिल न हो। और अगर तुमसे कहा जाए कि वापस हो जाओ; तो वापस हो जाओ; यही तुम्हारे लिए ज़्यादा उमदा बात है; अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ तुम करते हो।

29. इसमें तुम्हारे लिए कोई हर्ज नहीं है कि तुम ऐसे ग़ैर रिहाइशी घरों में दाख़िल हो जिनमें तुम्हारी फ़ायदे की कोई चीज़ हो। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो और जो कुछ छुपाते हो।

30. मोमिन मर्दों से कह दो कि अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें; यही उनके लिए ज़्यादा उमदा बात है। अल्लाह को उसकी पूरी ख़बर रहती है जो कुछ वो किया करते हैं।

31. और मोमिन औरतों से कहो कि वो भी अपनी निगाहें नीची रखें और अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करें; और अपनी ज़ीनत ज़ाहिर न करें, उसकी बात दूसरी है जो नागुज़ीर तौरपर ज़ाहिर हो जाए; और अपने गिरेबानों पर अपने दुपट्टे डाले रहें, और अपनी ज़ीनत किसी पर ज़ाहिर न करें सिवाय अपने शौहरों के, या अपने बापों के, या अपने शौहरों के बापों के, या अपने बेटों के, या अपने शौहरों के बेटों के या अपने भाइयों के, या अपने भतीजों के या अपने भांजों के या अपनी तअल्लुक़ की औरतों के, या जो उनकी अपनी मिल्क में हों उनके, या ज़ेरे दस्त मर्दों या उनके जो औरत की ज़रूरत की उम्र से निकल चुके हों, या उन बच्चों के जो औरतों की पर्दे की बातों से वाक़िफ़

लिलख़बीसाति वत्तय्यिबातु लित्तय्यिबी-न वत्तय्यिबू-न लित्तय्यिबाति उलाइ-क मुबर्रऊ-न मिम्मा यक़ूलू-न, लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्क़ुन् करीम (26) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्ख़ुलू बुयूतन् ग़ै-र बुयूतिकुम् हत्ता तस्तअ्निसू व तुसल्लिमू अ़ला अह्लिहा, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्-लकुम् लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (27)

फ़-इल्लम् तजिदू फ़ीहा अ-हदन् फ़ला तद्ख़ुलूहा हत्ता युअ्-ज़-न लकुम् व इन् क़ी-ल लकुमुर्जिअू फ़र्जिअू हु-व अज़्का लकुम्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न अ़लीम (28)

लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तद्ख़ुलू बुयूतन् ग़ै-र मस्कूनतिन् फ़ीहा मताअुल्-लकुम्, वल्लाहु यअ्लमु मा तुब्दू-न व मा तक्तुमून (29)

क़ुल् लिल्-मुअ्मिनी-न यग़ुज़्ज़ू मिन् अब्सारिहिम् व यह्फ़ज़ू फ़ुरू-जहुम्, ज़ालि-क अज़्का लहुम्, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा यस्नअून (30)

व क़ुल् लिल्-मुअ्मिनाति यग़्ज़ुज़्-न मिन् अब्सारिहिन्-न व यह्फ़ज़्-न फ़ुरू-जहुन्-न व ला युब्दी-न ज़ीन-तहुन्-न इल्ला मा ज़-ह-र मिन्हा वल्यज़्रिब्-न बिख़ुमुरिहिन्-न अ़ला जुयूबिहिन्-न व ला युब्दी-न ज़ीन-तहुन्-न इल्ला लिबुअू-लतिहिन्-न औ आबाइ-हिन्-न औ आबाइ-बुअू-लतिहिन्-न औ अब्नाइ-हिन्-न औ अब्ना-इ बुअू-लतिहिन्-न औ इख़्वानिहिन्-न औ बनी इख़्वानिहिन्-न औ बनी अ-ख़वातिहिन्-न औ निसाइ-हिन्-न औ मा म-लकत् ऐमानुहुन्-न अवित्ताबिअ़ी-न ग़ैरि

لِلْخَبِيثٰتِ ۚ وَالطَّيِّبٰتُ لِلطَّيِّبِينَ
وَالطَّيِّبُونَ لِلطَّيِّبٰتِ ۚ أُولٰٓئِكَ مُبَرَّءُونَ
مِمَّا يَقُولُونَ ۖ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّ رِزْقٌ
كَرِيمٌ ﴿٢٦﴾
يٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ اٰمَنُوا لَا تَدْخُلُوا بُيُوتًا
غَيْرَ بُيُوتِكُمْ حَتّٰى تَسْتَأْنِسُوا وَتُسَلِّمُوا
عَلٰٓى أَهْلِهَا ۚ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ لَعَلَّكُمْ
تَذَكَّرُونَ ﴿٢٧﴾
فَإِنْ لَّمْ تَجِدُوا فِيهَآ أَحَدًا فَلَا تَدْخُلُوهَا
حَتّٰى يُؤْذَنَ لَكُمْ ۖ وَإِنْ قِيلَ لَكُمُ ارْجِعُوا
فَارْجِعُوا هُوَ أَزْكٰى لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُونَ عَلِيمٌ ﴿٢٨﴾
لَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ أَنْ تَدْخُلُوا بُيُوتًا
غَيْرَ مَسْكُونَةٍ فِيهَا مَتَاعٌ لَّكُمْ ۚ وَاللّٰهُ
يَعْلَمُ مَا تُبْدُونَ وَمَا تَكْتُمُونَ ﴿٢٩﴾
قُلْ لِّلْمُؤْمِنِينَ يَغُضُّوا مِنْ أَبْصَارِهِمْ
وَيَحْفَظُوا فُرُوجَهُمْ ۚ ذٰلِكَ أَزْكٰى لَهُمْ ۚ
إِنَّ اللّٰهَ خَبِيرٌۢ بِمَا يَصْنَعُونَ ﴿٣٠﴾
وَقُلْ لِّلْمُؤْمِنٰتِ يَغْضُضْنَ مِنْ
أَبْصَارِهِنَّ وَيَحْفَظْنَ فُرُوجَهُنَّ
وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا مَا ظَهَرَ مِنْهَا
وَلْيَضْرِبْنَ بِخُمُرِهِنَّ عَلٰى جُيُوبِهِنَّ ۖ
وَلَا يُبْدِينَ زِينَتَهُنَّ إِلَّا لِبُعُولَتِهِنَّ
أَوْ اٰبَآئِهِنَّ أَوْ اٰبَآءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ أَبْنَآئِهِنَّ
أَوْ أَبْنَآءِ بُعُولَتِهِنَّ أَوْ إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِيٓ
إِخْوَانِهِنَّ أَوْ بَنِيٓ أَخَوٰتِهِنَّ أَوْ نِسَآئِهِنَّ
أَوْ مَا مَلَكَتْ أَيْمَانُهُنَّ أَوِ التّٰبِعِينَ غَيْرِ

न हों; और वो अपने पांव ज़मीन पर मार कर न चलें कि अपनी जो ज़ीनत छुपा रखी हो वह मालूम हो जाए। ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम सबके सब अल्लाह से तौबा करो, ताकि तुम्हें कामयाबी हासिल हो।

32. तुम में जो मुजर्रद (बेनिकाह) हों और तुम्हारे ग़ुलामों और तुम्हारी लौन्डियों में जो नेक और लायक़ हों उनके निकाह कर दो, अगर वो ग़रीब होंगे, तो अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन्हें ग़नी (खुशहाल) कर देगा। अल्लाह बड़ी वुसअतवाला, सब कुछ जाननेवाला है।

33. और जो निकाह का मौक़ा न पा रहे हों उन्हें चाहिए कि पाक दामनी इख़्तियार किए रहें यहां तक कि अल्लाह अपने फ़ज़्ल से उन्हें खुशहाल कर दे। और जो लोग तुम्हारी मिल्क में हों उनमें से जो अफ़राद मुकातबत के तालिब हों उनसे मुकातबत कर लो, अगर तुम्हें मालूम हो कि उनके अन्दर भलाई है; और उन्हें अल्लाह के माल में से दो जो तुम्हें उसने अता किया है। और अपनी लौन्डियों को कुछ दुनियावी ज़िन्दगी के सामान की तलब में बदकारी पर मजबूर न करो, जब कि वो पाक दामन रहना चाहती हों। और जो कोई उन्हें इसके लिए मजबूर करेगा, तो यक़ीनन अल्लाह उनकी बेबसी के बाद, बख़्शने वाला, निहायत रहम फ़रमाने वाला है।

34. हमने तुम्हारी तरफ़ रौशन आयतें नाज़िल कर दी हैं और उन लोगों की मिसाल भी पेश कर दी है जो तुम से पहले गुज़रे हैं, और डर रखनेवालों के लिए नसीहत भी।

35. अल्लाह आसमानों और ज़मीन की रौशनी है; उसकी रौशनी की मिसाल ऐसी है जैसे एक ताक़ है जिसमें एक चिराग़ है — वह चिराग़ एक फ़ानूस में है, वह फ़ानूस ऐसा है गोया चमकता हुआ कोई तारा है — वह चिराग़ एक बाबरकत दरख़्त ज़ैतून के रौग़न से जलाया जाता है जो न शरक़ी (पूर्वी) है न ग़रबी (पश्चिमी), उसका रौग़न आप ही आप भड़क पड़ता है, अगरचे आग उसे न भी छुए; रौशनी पर रौशनी। अल्लाह अपने नूर की हिदायत जिसे चाहता है बख़्शता है। अल्लाह लोगों के लिए मिसाल पेश करता है, अल्लाह तो हर चीज़ जानता है।

उलिल्-इर्बति मिनर्-रिजालि अवित्-तिफ़्लिल्लज़ी-न लम् यज़्हरू अ़ला औरातिन्निसा-इ व ला यज़्रिब्-न बि-अर्जुलिहिन्-न लियुअ्-ल-म मा युख़्फ़ी-न मिन् ज़ीनतिहिन्-न, व तूबू इलल्लाहि जमीअ़न् अय्युहल्-मुअ्मिनू-न लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (31)

व अन्किहुल्-अयामा मिन्कुम् वस्सालिही-न मिन् अ़िबादिकुम् व इमा-इकुम्, इंय्यकूनू फ़ु-क़रा-अ युग़्निहिमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही, वल्लाहु वासिअुन् अ़लीम (32)

वल्-यस्तअ्फ़िफ़िल्लज़ी-न ला यजिदू-न निकाहन हत्ता युग़्नि-यहुमुल्लाहु मिन् फ़ज़्लिही, वल्लज़ी-न यब्तग़ूनल्-किता-ब मिम्मा म-लकत् ऐमानुकुम् फ़कातिबूहुम् इन् अ़लिम्तुम् फ़ीहिम् ख़ैरंव्-व आतूहुम् मिम्-मालिल्लाहिल्लज़ी आताकुम्, व ला तुक्रिहू फ़-तयातिकुम् अ़लल्बिग़ा-इ इन् अरद्-न त-हस्सुनल्-लितब्तग़ू अ़-रज़ल्-हयातिद्दुन्या, व मंय्युक्रिहहुन्-न फ़-इन्नल्ला-ह मिम्-बअ्दि इक्राहिहिन्-न ग़फ़ूरुर्-रहीम (33)

व ल-क़द् अन्ज़ल्ना इलैकुम् आयातिम्-मुबय्यिनातिंव्-व म-सलम्-मिनल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लिकुम् व मौअ़ि-ज़तल्-लिल्मुत्तक़ीन (34) ●

अल्लाहु नूरुस्समावाति वल्अर्ज़ि, म-सलु नूरिही कमिश्कातिन् फ़ीहा मिस्बाहुन्, अल्-मिस्बाहु फ़ी ज़ुजाजतिन्, अज़्ज़ुजा-जतु क-अन्नहा कौकबुन् दुर्रिय्-युंय्यू-क़दु मिन् श-ज-रतिम् मुबार-कतिन् ज़ैतूनतिल्-ला शर्क़िय्यतिंव् व ला ग़र्बिय्यतिंय्-यकादु ज़ैतुहा युज़ी-उ व लौ लम् तम्सस्हु नारुन्, नूरुन् अ़ला नूरिन्, यह्दिल्लाहु लिनूरिही मंय्यशा-उ, व यज़्रिबुल्लाहुल्-अम्सा-ल लिन्नासि, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (35)

أُولِي الْإِرْبَةِ مِنَ الرِّجَالِ أَوِ الطِّفْلِ
الَّذِينَ لَمْ يَظْهَرُوا عَلَىٰ عَوْرٰتِ النِّسَآءِ
وَلَا يَضْرِبْنَ بِأَرْجُلِهِنَّ لِيُعْلَمَ مَا يُخْفِينَ
مِنْ زِينَتِهِنَّ ۚ وَتُوبُوٓا إِلَى اللّٰهِ جَمِيعًا
أَيُّهَ الْمُؤْمِنُونَ لَعَلَّكُمْ تُفْلِحُونَ ۝٣١
وَأَنْكِحُوا الْأَيَامَىٰ مِنْكُمْ وَالصّٰلِحِينَ مِنْ
عِبَادِكُمْ وَإِمَآئِكُمْ ۚ إِنْ يَكُونُوا فُقَرَآءَ يُغْنِهِمُ
اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَاللّٰهُ وَاسِعٌ عَلِيمٌ ۝٣٢
وَلْيَسْتَعْفِفِ الَّذِينَ لَا يَجِدُونَ نِكَاحًا حَتّٰى
يُغْنِيَهُمُ اللّٰهُ مِنْ فَضْلِهٖ ۗ وَالَّذِينَ يَبْتَغُونَ
الْكِتٰبَ مِمَّا مَلَكَتْ أَيْمَانُكُمْ فَكَاتِبُوهُمْ إِنْ
عَلِمْتُمْ فِيهِمْ خَيْرًا ۖ وَّآتُوهُمْ مِّنْ مَّالِ
اللّٰهِ الَّذِيٓ اٰتٰىكُمْ ۚ وَلَا تُكْرِهُوا فَتَيٰتِكُمْ
عَلَى الْبِغَآءِ إِنْ أَرَدْنَ تَحَصُّنًا لِّتَبْتَغُوا عَرَضَ
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ وَمَنْ يُّكْرِهْهُّنَّ فَإِنَّ اللّٰهَ
مِنْ بَعْدِ إِكْرَاهِهِنَّ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝٣٣
وَلَقَدْ أَنْزَلْنَآ إِلَيْكُمْ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ وَّمَثَلًا
مِّنَ الَّذِينَ خَلَوْا مِنْ قَبْلِكُمْ
وَمَوْعِظَةً لِّلْمُتَّقِينَ ۝٣٤
اَللّٰهُ نُورُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ مَثَلُ نُورِهٖ
كَمِشْكٰوةٍ فِيهَا مِصْبَاحٌ ۚ اَلْمِصْبَاحُ فِي
زُجَاجَةٍ ۚ اَلزُّجَاجَةُ كَأَنَّهَا كَوْكَبٌ دُرِّيٌّ
يُّوقَدُ مِنْ شَجَرَةٍ مُّبٰرَكَةٍ زَيْتُونَةٍ لَّا شَرْقِيَّةٍ
وَّلَا غَرْبِيَّةٍ ۙ يَّكَادُ زَيْتُهَا يُضِيٓءُ وَلَوْ لَمْ
تَمْسَسْهُ نَارٌ ۚ نُورٌ عَلٰى نُورٍ ۚ يَهْدِي اللّٰهُ
لِنُورِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَيَضْرِبُ اللّٰهُ الْأَمْثَالَ
لِلنَّاسِ ۗ وَاللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝٣٥

36. — उन घरों में जिनको बुलन्द करने और जिनमें अपने नाम के ज़िक्र का अल्लाह ने हुक्म दिया है; उनमें ऐसे लोग सुबह और शाम उसकी तसबीह करते हैं,

37. जिन्हें अल्लाह की याद और नमाज़ क़ायम करने, और ज़कात देने से न तिजारत ग़ाफ़िल करती है और न ख़रीद व फ़रोख़्त, वो उस दिन से डरते रहते हैं जिसमें दिल और आंखें मुज़तरिब होंगी,

38. ताकि अल्लाह उन्हें जज़ा दे उनके अच्छे से अच्छे कामों का और अपने फ़ज़्ल से उन्हें मज़ीद नवाज़े; अल्लाह जिसे चाहता है बेहिसाब देता है।

39. रहे वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, उनके आमाल चटयल सहरा में सराब की तरह हैं कि प्यासा उसे पानी समझता है, यहां तक कि जब वह उसके पास पहुंचा तो उसे कुछ भी न पाया; अलबत्ता अल्लाह ही को उसके पास पाया, जिसने उसका हिसाब पूरा-पूरा चुका दिया। और अल्लाह जल्द हिसाब चुकानेवाला है।

40. या फिर जैसे एक गहरे समुंदर में तारीकियां, मौज के ऊपर मौज छा रही है उसके ऊपर बादल है, तह-ब-तह तारीकियां जमा हैं; जब वह (उनमें घिरा हुआ शख़्स) अपना हाथ निकाले, तो वह सुझाई देता मालूम न हो, जिसे अल्लाह रौशनी न दे उसके लिए फिर कोई रौशनी नहीं।

41. क्या तुमने नहीं देखा कि जो कोई भी आसमानों और ज़मीन में है अल्लाह की तसबीह कर रहा है? और पर फैलाए हुए परिन्दे भी। हर एक अपनी नमाज़ और तसबीह से वाक़िफ़ है; अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वो करते हैं।

42. अल्लाह ही की है आसमानों और ज़मीन में बादशाही, और अल्लाह ही की तरफ़ लौट कर जाना है।

43. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह बादल को चलाता है? फिर उनको (यानी उसके टुकड़ों को) आपस में मिलाता है फिर उसे तह-ब-तह करता है, फिर तुम देखते हो कि उसके बीच से मेंह बरसता है। और आसमान से — उसमें जो पहाड़

फ़ी बुयूतिन् अज़िनल्लाहु अन् तुर्-फ़-अ़ व युज़्क-र फ़ीहस्मुहू युसब्बिहु लहू फ़ीहा बिल्-ग़ुदुव्वि वल्-आसाल (36)

रिजालुल् ला तुल्हीहिम् तिजा-रतुंव्-व ला बैअुन् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व इक़ामिस्सलाति व ईताइज़्ज़काति यख़ाफ़ू-न यौमन् त-तक़ल्लबु फ़ीहिल्-क़ुलूबु वल्-अब्सार (37)

लियज्ज़ि-यहुमुल्लाहु अह्स-न मा अ़मिलू व यज़ी-दहुम् मिन् फ़ज़्लिही, वल्लाहु यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ बिग़ैरि हिसाब (38)

वल्लज़ी-न क-फ़रू अअ़्मालुहुम् क-सराबिम् बिक़ी-अ़तिंय्-यह्सबुहुज़्-ज़म्आनु मा-अन्-हत्ता, इज़ा जा-अहू लम् यजिद्हू शैअंव्-व व-जदल्ला-ह अ़िन्दहू फ़-वफ़्फ़ाहु हिसा-बहू, वल्लाहु सरीअ़ुल्-हिसाब (39)

औ क-ज़ुलुमातिन् फ़ी बह्रिल् लुज्जिय्यिंय्-यग़्शाहु मौजुम्-मिन् फ़ौक़िही मौजुम्-मिन् फ़ौक़िही सहाबुन्, ज़ुलुमातुम्-बअ़्ज़ुहा फ़ौ-क़ बअ़्ज़िन्, इज़ा अख़्र-ज य-दहू लम् य-कद् यराहा, व मल्लम् यज्अ़लिल्लाहु लहू नूरन् फ़मा लहू मिन्-नूर (40) ●

अलम् त-र अन्नल्ला-ह युसब्बिहु लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि वत्तैरु साफ़्फ़ातिन्, कुल्लुन् क़द् अ़लि-म सला-तहू व तस्बी-हहू, वल्लाहु अ़लीमुम् बिमा यफ़्अ़लून (41)

व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व इलल्लाहिल्-मसीर (42)

अलम् त-र अन्नल्ला-ह युज्ज़ी सहाबन् सुम्-म युअल्लिफ़ु बैनहू सुम्-म यज्-अ़लुहू रुकामन् फ़-तरल्-वद्-क

فِيْ بُيُوْتٍ اَذِنَ اللّٰهُ اَنْ تُرْفَعَ وَ يُذْكَرَ
فِيْهَا اسْمُهٗ ۙ يُسَبِّحُ لَهٗ فِيْهَا بِالْغُدُوِّ
وَالْاٰصَالِ ۙ (٣٦)
رِجَالٌ ۙ لَّا تُلْهِيْهِمْ تِجَارَةٌ وَّلَا بَيْعٌ
عَنْ ذِكْرِ اللّٰهِ وَاِقَامِ الصَّلٰوةِ وَ اِيْتَآءِ
الزَّكٰوةِ ۙۗ يَخَافُوْنَ يَوْمًا تَتَقَلَّبُ فِيْهِ
الْقُلُوْبُ وَ الْاَبْصَارُ ۙ (٣٧)
لِيَجْزِيَهُمُ اللّٰهُ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا وَيَزِيْدَهُمْ
مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ وَاللّٰهُ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ
بِغَيْرِ حِسَابٍ (٣٨)
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْۤا اَعْمَالُهُمْ كَسَرَابٍۭ
بِقِيْعَةٍ يَّحْسَبُهُ الظَّمْاٰنُ مَآءً ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَآءَهٗ
لَمْ يَجِدْهُ شَيْئًا وَّ وَجَدَ اللّٰهَ عِنْدَهٗ فَوَفّٰىهُ
حِسَابَهٗ ؕ وَاللّٰهُ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۙ (٣٩)
اَوْ كَظُلُمٰتٍ فِيْ بَحْرٍ لُّجِّيٍّ يَّغْشٰىهُ مَوْجٌ
مِّنْ فَوْقِهٖ مَوْجٌ مِّنْ فَوْقِهٖ سَحَابٌ ؕ
ظُلُمٰتٌۢ بَعْضُهَا فَوْقَ بَعْضٍ ؕ اِذَاۤ
اَخْرَجَ يَدَهٗ لَمْ يَكَدْ يَرٰىهَا ؕ وَمَنْ لَّمْ
ع يَجْعَلِ اللّٰهُ لَهٗ نُوْرًا فَمَا لَهٗ مِنْ نُّوْرٍ (٤٠)
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُسَبِّحُ لَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَالطَّيْرُ صٰٓفّٰتٍ ؕ كُلٌّ قَدْ
عَلِمَ صَلَاتَهٗ وَتَسْبِيْحَهٗ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِمَا يَفْعَلُوْنَ (٤١)
وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَاِلَى
اللّٰهِ الْمَصِيْرُ (٤٢)
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُزْجِيْ سَحَابًا ثُمَّ يُؤَلِّفُ
بَيْنَهٗ ثُمَّ يَجْعَلُهٗ رُكَامًا فَتَرَى الْوَدْقَ

हैं (यानी बादल जो पहाड़ जैसे मालूम होते हैं) उनसे — ओले बरसाता है, फिर जिसपर चाहता है गिराता है, और जिससे चाहता है उसे हटा देता है; लगता है बिजली की चमक निगाहों को उचक ले जाएगी।

44. रात और दिन का उलट-फेर अल्लाह ही करता है; जो आंखें रखते हैं यक़ीनन उनके लिए इसमें एक इबरत है।

45. अल्लाह ने हर जानदार को पानी से पैदा किया, तो कोई उनमें अपने पेट के बल चलता है, और कोई उनमें दो टांगों पर चलता है, और कोई उनमें चार पर चलता है; अल्लाह जो चाहता है पैदा करता है; बेशक अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

46. हमने हक़ीक़त को वाज़ेह कर देने वाली आयतें उतार दी हैं; और अल्लाह जिसको चाहता है सीधे रास्ते की तरफ़ हिदायत फ़रमाता है।

47. वो कहते हैं कि "हम अल्लाह और रसूल पर ईमान लाए, और हमने इताअत इख़्तियार की"। फिर इसके बाद उनमें से एक गिरोह पीठ फेर जाता है, ऐसे लोग मोमिन नहीं हैं।

48. जब उन्हें अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ बुलाया जाता है ताकि वह उनके दरमियान फ़ैसला करे, तो क्या देखते हैं कि उनमें एक गिरोह कतरा जाता है;

49. लेकिन अगर हक़ उन्हें मिलने वाला हो तो उसकी तरफ़ बड़े फ़रमांबरदार बनकर चले आएं।

50. क्या उनके दिलों में रोग है, या वो शक में पड़े हैं, या उनको यह डर है कि अल्लाह और उसका रसूल उनके साथ नाइनसाफ़ी करेंगे? नहीं, बल्कि बात यह है कि वही लोग ज़ालिम हैं।

51. मोमिनीन की बात तो बस यह होती है कि जब अल्लाह और उसके रसूल की तरफ़ बुलाए जाएं, ताकि वह उनके दरमियान फ़ैसला करे, तो वो कहें, "हमने सुना और इताअत की;" और वही फ़लाह पानेवाले हैं।

52. और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करे, और अल्लाह से डरे और उसके हुदूद का ख़याल रखे, तो ऐसे ही लोग कामयाब हैं।

यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही व युनज़्ज़िलु मिनस्समा-इ मिन् जिबालिन् फ़ीहा मिम्-ब रदिन् फ़युसीबु बिही मंय्यशा-उ व यस्रिफ़ुहू अम्-मंय्यशा-उ, यकादु सना बर्क़िही यज़्हबु बिल्अब्सार (43)

युक़ल्लिबुल्लाहुल्लै-ल वन्नहा-र, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लअिब्-रतल्-लिउलिल्-अब्सार (44)

वल्लाहु ख़-ल-क़ कुल्-ल दाब्बतिम् मिम्-माइन् फ़-मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला बत्निही व मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला रिज्लैनि व मिन्हुम् मंय्यम्शी अ़ला अर्-बअिन्, यख़्लुक़ुल्लाहु मा यशा-उ, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (45)

ल-क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम्-मुबय्यिनातिन्, वल्लाहु यह्दी मंय्यशा-उ इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (46)

व यक़ूलू-न आमन्ना बिल्लाहि व बिर्रसूलि व अ-तअ्ना सुम्-म य-तवल्ला फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् मिम्-बअ्दि ज़ालि-क, व मा उलाइ-क बिल्-मुअ्मिनीन (47)

व इज़ा दुअू इलल्लाहि व रसूलिही लि-यह्कु-म बैनहुम् इज़ा फ़रीक़ुम्-मिन्हुम् मुअ्रिज़ून (48)

व इंय्यकुल्-लहुमुल्-हक़्क़ु यअ्तू इलैहि मुज़्अिनीन (49)

अ-फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुन् अमिर्ताबू अम् यख़ाफ़ू-न अंय्यहीफ़ल्लाहु अ़लैहिम् व रसूलुहू, बल् उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून ●(50) ●

इन्नमा का-न क़ौलल्-मुअ्मिनी-न इज़ा दुअू इलल्लाहि व रसूलिही लि-यह्कु-म बैनहुम् अंय्यक़ूलू समिअ्ना व अतअ्ना, व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (51)

व मंय्युतिअ़िल्ला-ह व रसूलहू व यख़्शल्ला-ह व यत्तक़्हि फ़-उलाइ-क हुमुल्-फ़ाइज़ून (52)

يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ وَيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ
مِنْ جِبَالٍ فِيْهَا مِنْۢ بَرَدٍ فَيُصِيْبُ بِهٖ
مَنْ يَّشَآءُ وَيَصْرِفُهٗ عَنْ مَّنْ يَّشَآءُ ؕ
يَكَادُ سَنَا بَرْقِهٖ يَذْهَبُ بِالْاَبْصَارِ ﴿٤٣﴾
يُقَلِّبُ اللّٰهُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ ؕ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّاُولِى الْاَبْصَارِ ﴿٤٤﴾
وَاللّٰهُ خَلَقَ كُلَّ دَآبَّةٍ مِّنْ مَّآءٍ ۚ فَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّمْشِىْ عَلٰى بَطْنِهٖ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ
يَّمْشِىْ عَلٰى رِجْلَيْنِ ۚ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّمْشِىْ
عَلٰۤى اَرْبَعٍ ؕ يَخْلُقُ اللّٰهُ مَا يَشَآءُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٤٥﴾
لَقَدْ اَنْزَلْنَاۤ اٰيٰتٍ مُّبَيِّنٰتٍ ؕ وَاللّٰهُ يَهْدِىْ
مَنْ يَّشَآءُ اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٤٦﴾
وَيَقُوْلُوْنَ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَبِالرَّسُوْلِ وَاَطَعْنَا
ثُمَّ يَتَوَلّٰى فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ ذٰلِكَ ؕ
وَمَاۤ اُولٰٓئِكَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٧﴾
وَاِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ
بَيْنَهُمْ اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ مُّعْرِضُوْنَ ﴿٤٨﴾
وَاِنْ يَّكُنْ لَّهُمُ الْحَقُّ يَاْتُوْۤا اِلَيْهِ مُذْعِنِيْنَ ﴿٤٩﴾
اَفِىْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ اَمِ ارْتَابُوْۤا اَمْ يَخَافُوْنَ
اَنْ يَّحِيْفَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَرَسُوْلُهٗ ؕ بَلْ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ﴿٥٠﴾
اِنَّمَا كَانَ قَوْلَ الْمُؤْمِنِيْنَ اِذَا دُعُوْۤا اِلَى اللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ لِيَحْكُمَ بَيْنَهُمْ اَنْ يَّقُوْلُوْا
سَمِعْنَا وَاَطَعْنَا ؕ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿٥١﴾
وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَيَخْشَ اللّٰهَ
وَيَتَّقْهِ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفَآئِزُوْنَ ﴿٥٢﴾

53. वो अल्लाह की कड़ी-कड़ी क़समें खाते हैं कि अगर तुम उन्हें हुक्म दो तो वो ज़रूर निकल खड़े होंगे, कह दो: "क़समें न खाओ; दस्तूर के मुताबिक़ इताअत असल चीज़ है। तुम जो कुछ करते हो अल्लाह उसकी ख़बर रखता है"।

54. कहो: "अल्लाह की इताअत करो और रसूल की इताअत करो; लेकिन अगर तुम मुंह मोड़ते हो, तो उस पर तो बस वही ज़िम्मेदारी है जिसका बोझ उस पर डाला गया है और तुम उसके ज़िम्मेदार हो जिसका बोझ तुमपर डाला गया है। और अगर तुम उसकी इताअत करोगे, तो हिदायत पा लोगे। और रसूल पर तो बस साफ़-साफ़ पहुंचा देने ही की ज़िम्मेदारी है"।

55. अल्लाह ने उन लोगों से जो तुम में ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल इख़्तियार किए वादा किया है कि वह उन्हें ज़मीन में लाज़िमन इक्तिदार बख़्शेगा, जैसे उसने उनको इक्तिदार अता किया था जो उनसे पहले थे, और उनके लिए लाज़िमन उनके इस दीन को मुतमक्किन करेगा जिसे उसने उनके लिए पसन्द किया है, और उनकी ख़ौफ़ की हालत के बाद उसे उनके लिए अमन व बेख़ौफ़ी से बदल देगा। वो मेरी बन्दगी करते हैं, मेरे साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करते, और जो कोई उसके बाद कुफ़्र इख़्तियार करे तो ऐसे ही लोग फ़ासिक़ हैं।

56. नमाज़ क़ायम करो, और ज़कात दो, और रसूल की इताअत करो, ताकि तुमपर रहम किया जाए।

57. यह हरगिज़ न समझो कि कुफ़्र की रविश इख़्तियार करने वाले ज़मीन में क़ाबू से बाहर निकल जानेवाले हैं, उनका ठिकाना आग है। और वह बहुत ही बुरा ठिकाना है।

58. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम्हारे ममलूकों (गुलामों) को और तुममें जो अभी जवानी को नहीं पहुंचे हैं, उनको चाहिए कि तीन औक़ात में तुमसे इजाज़त लेकर तुम्हारे पास आएं। फ़जर की नमाज़ से पहले, और जब दोपहर को तुम (आराम के लिए) अपने कपड़े उतार देते हो, और नमाज़े इशा के बाद, ये तीन औक़ात तुम्हारे परदे के हैं। उनके बाद न तुम पर कोई गुनाह है न उन पर, वो तुम्हारे पास बकसरत चक्कर लगाते हैं — तुम्हारे ही बाज़ बाज़ से मिलते हैं। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वज़ाहत करता है, अल्लाह ख़ूब जानने वाला, हिकमत वाला है।

व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् अमर्-तहुम् ल-यख़्रुजुन्-न, क़ुल्-ल तुक़्सिमू ता-अ़तुम् मअ़्रू-फ़तुन्, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ़्मलून (53)

क़ुल् अतीउल्ला-ह व अतीउ़र्रसू-ल फ़-इन् तवल्लौ फ़-इन्नमा अ़लैहि मा हुम्मि-ल व अ़लैकुम् मा हुम्मिल्तुम्, व इन् तुतीऊहु तह्तदू, व मा अ़लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन(54)

व-अ़दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व अ़मिलुस्सालिहाति ल-यस्तख़्लिफ़न्नहुम् फ़िल्अर्ज़ि क-मस्तख़्ल-फ़ल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व ल-युमक्किनन्-न लहुम् दीनहुमुल्लज़िर्-तज़ा लहुम् व लयुबद्दिलन्नहुम् मिम्-बअ़्दि ख़ौफ़िहिम् अम्नन्, यअ़्बुदू-ननी ला युश्रिकू-न बी शैअन्, व मन् क-फ़-र बअ़्-द ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (55)

व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त व अतीउ़र्रसू-ल लअ़ल्लकुम् तुर्-हमून (56)

ला तह्स-बन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मुअ़्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मअ़्वाहुमुन्नारु, व ल-बिअ्सल्-मसीर (57) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-यस्तअ्ज़िन्कुमुल्लज़ी-न म-लकत् ऐमानुकुम् वल्लज़ी-न लम् यब्लुग़ुल्-हुलु-म मिन्कुम् सला-स मर्रातिन् मिन् क़ब्लि सलातिल्-फ़ज्रि व ही-न त-ज़अ़ू-न सिया-बकुम् मिनज़्ज़ही-रति व मिम्-बअ़्दि सलातिल्-अ़िशा-इ, सलासु औ़रातिल्-लकुम्, लै-स अ़लैकुम् व ला अ़लैहिम् जुनाहुम् बअ़्-दहुन्-न, तव्वाफ़ू-न अ़लैकुम् बअ़्ज़ुकुम् अ़ला बअ़्ज़िन्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्-आयाति, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (58)

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَئِنْ اَمَرْتَهُمْ
لَيَخْرُجُنَّ ؕ قُلْ لَّا تُقْسِمُوْا ۚ طَاعَةٌ
مَّعْرُوْفَةٌ ؕ اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝٥٣
قُلْ اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَ اَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ
فَاِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا عَلَيْهِ مَا حُمِّلَ وَعَلَيْكُمْ
مَّا حُمِّلْتُمْ ؕ وَاِنْ تُطِيْعُوْهُ تَهْتَدُوْا ؕ
وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝٥٤
وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ لَيَسْتَخْلِفَنَّهُمْ فِى الْاَرْضِ
كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۪
وَلَيُمَكِّنَنَّ لَهُمْ دِيْنَهُمُ الَّذِى ارْتَضٰى
لَهُمْ وَلَيُبَدِّلَنَّهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ خَوْفِهِمْ اَمْنًا ؕ
يَعْبُدُوْنَنِىْ لَا يُشْرِكُوْنَ بِىْ شَيْئًا ؕ وَمَنْ
كَفَرَ بَعْدَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٥٥
وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ وَاَطِيْعُوا
الرَّسُوْلَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٥٦
لَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مُعْجِزِيْنَ فِى
ع الْاَرْضِ ۚ وَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ؕ وَلَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٥٧
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِيَسْتَاْذِنْكُمُ الَّذِيْنَ
مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ وَالَّذِيْنَ لَمْ يَبْلُغُوا الْحُلُمَ
مِنْكُمْ ثَلٰثَ مَرّٰتٍ ؕ مِنْ قَبْلِ صَلٰوةِ الْفَجْرِ
وَحِيْنَ تَضَعُوْنَ ثِيَابَكُمْ مِّنَ الظَّهِيْرَةِ
وَمِنْۢ بَعْدِ صَلٰوةِ الْعِشَآءِ ۫ ثَلٰثُ عَوْرٰتٍ
لَّكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ وَلَا عَلَيْهِمْ جُنَاحٌۢ بَعْدَ
هُنَّ ؕ طَوّٰفُوْنَ عَلَيْكُمْ بَعْضُكُمْ عَلٰى
بَعْضٍ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمُ
الْاٰيٰتِ ؕ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٥٨

59. और जब तुममें से बच्चे जवानी को पहुंच जाएं तो उन्हें चाहिए कि इजाज़त लिया करें, जैसे उनसे अगले इजाज़त लेते रहे हैं। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वज़ाहत फ़रमाता है; अल्लाह खूब जानने वाला, हिकमत वाला है।

60. जो औरतें जवानी से गुज़री बैठी हों जिन्हें निकाह की उम्मीद न रह गई हो, उनपर कोई हर्ज नहीं कि वो अपने कपड़े उतार कर रख दें, जबकि वो ज़ीनत की नुमाइश करने वाली न हों; फिर भी वो इससे बचें तो उनके लिए ज़्यादा बेहतर है। अल्लाह खूब सुनता, जानता है।

61. न अंधे के लिए कोई हरज है, न लंगड़े के लिए कोई हरज है, और न मरीज़ के लिऐ कोई हरज है, और न तुम्हारे अपने लिए इस बात में कि तुम अपने घर खाओ, या अपने बापों के घर, या अपनी माओं के घर, या अपने भाइयों के घर, या अपनी बहनों के घर, या अपने चाचाओं के घर, या अपनी फूफियों के घर, या अपने मामूओं के घर, या अपनी खालाओं के घर, या जिसकी कुन्जियों के तुम मालिक हुए हो, या अपने दोस्त के यहां; इसमें तुम्हारे लिए कोई हरज नहीं कि तुम मिलकर खाओ, या अलग-अलग। अलबत्ता जब घरों में जाया करो, तो अपने लोगों को सलाम किया करो जो बाबरकत और पाकीज़ा दुआ है। अल्लाह के यहां से मुक़र्रर। इस तरह अल्लाह तुम्हारे लिए अपनी आयतों की वज़ाहत फ़रमाता है; ताकि तुम अक्ल से काम लो।

62. मोमिन तो बस वही हैं, जो अल्लाह और उसके रसूल पर पुख़्ता ईमान रखते हैं और जब किसी इजतिमाई मुआमले के लिए उसके साथ हों तो चले न जाएं जब तक कि उससे इजाज़त न ले लें। जो लोग तुम से इजाज़त तलब करते हैं, वही लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान रखते हैं; पस जब वो अपने किसी काम के लिए इजाज़त चाहें, तो उनमें से जिसे चाहो इजाज़त दे दिया करो, और उनके लिए अल्लाह से बख़्शिश की दुआ किया करो, बेशक अल्लाह बहुत

व इज़ा ब-लग़ल्-अत्फ़ालु मिन्कुमुल्-हुलु-म फ़ल्यस्तअ्ज़िनू कमस्तअ्- ज़नल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुम् आयातिही, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (59)

वल्क़वाअ़िदु मिनन्निसाइल्लाती ला यर्जू-न निकाहन् फ़लै-स अ़लैहिन्-न जुनाहुन् अंय्य-ज़अ्-न सिया-बहुन्-न ग़ै-र मु-तबर्रिजातिम्-बिज़ी-नतिन्, व अंय्यस्तअ्फ़िफ़्-न ख़ैरुल् लहुन्-न, वल्लाहु समीअुन् अ़लीम (60)

लै-स अ़लल्-अअ्मा ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-अअ्रजि ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-मरीज़ि ह-रजुंव्-व ला अ़ला अन्फ़ुसिकुम् अन् तअ्कुलू मिम्-बुयूतिकुम् औ बुयूति आबाइकुम् औ बुयूति उम्महातिकुम् औ बुयूति इख़्वानिकुम् औ बुयूति अ-ख़वातिकुम् औ बुयूति अअ्मामिकुम् औ बुयूति अ़म्मातिकुम् औ बुयूति अख़्वालिकुम् औ बुयूति ख़ालातिकुम् औ मा मलक्तुम् मफ़ाति-हहू औ सदीक़िकुम्, लै-स अ़लैकुम् जुनाहुन् अन् तअ्कुलू जमीअन् औ अश्तातन्, फ़-इज़ा दख़ल्तुम् बुयूतन् फ़-सल्लिमू अ़ला अन्फ़ुसिकुम् तहिय्य-तम् मिन् अ़िन्दिल्लाहि मुबार-कतन् तय्यि-बतन्, कज़ालि-क युबय्यिनुल्लाहु लकुमुल्आयाति लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून (61) ●

इन्नमल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रसूलिही व इज़ा कानू म-अ़हू अ़ला अम्रिन् जामिअ़िल् लम् यज़्हबू हत्ता यस्तअ्ज़िनूहु, इन्नल्लज़ी-न यस्तअ्ज़िनू-न-क उलाइ-कल्लज़ी-न युअ्मिनू-न बिल्लाहि व रसूलिही फ़-इज़स्तअ्-ज़नू-क लिबअ्ज़ि शअ्निहिम् फ़अ्ज़ल्-लिमन् शिअ्-त मिन्हुम् वस्तग़्फ़िर् लहुमु-

وَاِذَا بَلَغَ الْاَطْفَالُ مِنْكُمُ الْحُلُمَ
فَلْيَسْتَاْذِنُوْا كَمَا اسْتَاْذَنَ الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِهِمْ ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ لَكُمْ اٰيٰتِهٖ ؕ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۝٥٩
وَالْقَوَاعِدُ مِنَ النِّسَآءِ الّٰتِيْ لَا يَرْجُوْنَ
نِكَاحًا فَلَيْسَ عَلَيْهِنَّ جُنَاحٌ اَنْ يَّضَعْنَ
ثِيَابَهُنَّ غَيْرَ مُتَبَرِّجٰتٍ ۢبِزِيْنَةٍ ؕ وَاَنْ
يَّسْتَعْفِفْنَ خَيْرٌ لَّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ سَمِيْعٌ عَلِيْمٌ ۝٦٠
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ
حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ وَّلَا عَلٰٓى
اَنْفُسِكُمْ اَنْ تَاْكُلُوْا مِنْۢ بُيُوْتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اٰبَآئِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اُمَّهٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اِخْوَانِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ اَخَوٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اَعْمَامِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ عَمّٰتِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ
اَخْوَالِكُمْ اَوْ بُيُوْتِ خٰلٰتِكُمْ اَوْ مَا مَلَكْتُمْ
مَّفَاتِحَهٗٓ اَوْ صَدِيْقِكُمْ ؕ لَيْسَ عَلَيْكُمْ
جُنَاحٌ اَنْ تَاْكُلُوْا جَمِيْعًا اَوْ اَشْتَاتًا ؕ
فَاِذَا دَخَلْتُمْ بُيُوْتًا فَسَلِّمُوْا عَلٰٓى
اَنْفُسِكُمْ تَحِيَّةً مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ
مُبٰرَكَةً طَيِّبَةً ؕ كَذٰلِكَ يُبَيِّنُ اللّٰهُ
ع لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٦١
اِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ وَاِذَا كَانُوْا مَعَهٗ عَلٰٓى اَمْرٍ جَامِعٍ
لَّمْ يَذْهَبُوْا حَتّٰى يَسْتَاْذِنُوْهُ ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ
يَسْتَاْذِنُوْنَكَ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ
وَرَسُوْلِهٖ ۚ فَاِذَا اسْتَاْذَنُوْكَ لِبَعْضِ شَاْنِهِمْ
فَاْذَنْ لِّمَنْ شِئْتَ مِنْهُمْ وَاسْتَغْفِرْ لَهُمُ

बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला है।

63. अपने दरमियान रसूल के बुलाने को तुम आपस में एक-दूसरे का सा बुलाना न समझना, अल्लाह उन लोगों को ख़ूब जानता है जो तुममें ऐसे हैं कि एक-दूसरे की आड़ लेकर चुपके से खिसक जाते हैं; पस उनको जो उसके हुक्म से रूगरदानी कर के मुख़ालफ़त करते हैं डरना चाहिए कि मबादा उनपर कोई आज़माइश आ पड़े, या उनपर कोई दर्दनाक अज़ाब आ जाए।

64. सुन लो! आसमानों और ज़मीन में जो कुछ भी है अल्लाह का है, वह जानता है तुम जिसपर हो; और जिस दिन वो उसकी तरफ़ पलटेंगे तो जो कुछ उन्होंने किया होगा वह उन्हें बता देगा; अल्लाह हर चीज़ से वाक़िफ़ है।

सूरह अल-फ़ुरक़ान मक्की

(आयतें 77, रुकूआत 6)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अज़ीम व बाफ़ैज़ है वह जिसने यह फ़ुरक़ान अपने बन्दे पर नाज़िल फ़रमाया, ताकि वह सारे जहां के लिए ख़बरदार करनेवाला हो;

2. वह जो आसमानों और ज़मीन की बादशाही का मालिक है; और न उसने किसी को अपना बेटा बनाया, और न बादशाही में उसका कोई शरीक है; उसने हर चीज़ को पैदा किया फिर उसे ठीक अंदाज़े पर रखा।

3. फिर भी उन्होंने उससे हट कर ऐसे माबूद बना लिए जो किसी चीज़ को पैदा नहीं करते बल्कि वो ख़ुद पैदा किए जाते हैं, वो ख़ुद न अपने नुक़सान का इख़्तियार रखते हैं और न नफ़ा का और न उन्हें मौत का इख़्तियार हासिल है और न ज़िन्दगी का, और न दोबारा ज़िन्दा होकर उठने का।

4. जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया उनका कहना है कि "यह तो बस मनघड़त है, जो उसने ख़ुद ही घड़ लिया है, और कुछ दूसरे लोगों ने इसमें उसको मदद पहुंचाई है"। वो तो ज़ुल्म और झूट के मुर्तकिब हुए।

5. कहते हैं, "ये अगलों के अफ़साने हैं जिनको उसने लिख लिया है, तो वही उसके पास सुबह व शाम लिखाई जाती हैं"।

ल्ला-ह इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम (62)

ला तज्अलू दुआअर्रसूलि बैनकुम् क-दुआ-इ बअ्ज़िकुम् बअ्ज़न्, क़द् यअ्लमुल्लाहुल्लज़ी-न य-तसल्ललू-न मिन्कुम् लिवाज़न् फ़ल्यह्ज़रिल्लज़ी-न युख़ालिफ़ू-न अ़न् अम्रिही अन् तुसी-बहुम् फ़ित्-नतुन् औ युसी-बहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (63)

अला इन्-न लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, क़द् यअ्लमु मा अन्तुम् अ़लैहि, व यौ-म युर्जअू-न इलैहि फ़युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (64)●

25 सूरतुल्-फ़ुरक़ानि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3919 अक्षर, 906 शब्द, 77 आयतें और 6 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

तबा-रकल्लज़ी नज़्ज़-लल्-फ़ुर्क़ा-न अ़ला अ़ब्दिही लि-यकू-न लिल्आलमी-न नज़ीरा (1)

अल्लज़ी लहू मुल्कुस्-समावाति वल्अर्ज़ि व लम् यत्तख़िज़् व-लदंव्-व लम् यकुल्लहू शरीकुन् फ़िल्-मुल्कि व ख़-ल-क़ कुल्-ल शैइन् फ़-क़द्द-रहू तक़्दीरा (2)

वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही आलि-हतल्-ला यख़्लुक़ू-न शैअंव् व हुम् युख़्लक़ू-न व ला यम्लिकू-न लिअन्फ़ुसिहिम् ज़र्रंव्-व ला नफ़्अंव्-व ला यम्लिकू-न मौतंव्-व ला हयातंव्-व ला नुशूरा (3)

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू इन् हाज़ा इल्ला इफ़्कु-निफ़्तराहु व अ-आनहू अ़लैहि क़ौमुन् आ-ख़रू-न फ़-क़द् जाऊ ज़ुल्मंव्-वज़ूरा (4)

व क़ालू असातीरुल् अव्वलीनक्त-त-बहा फ़हि-य तुम्ला अ़लैहि बुक्र-तंव्-व असीला (5)

اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ﴿٦٢﴾
لَا تَجْعَلُوْا دُعَآءَ الرَّسُوْلِ بَیْنَكُمْ كَدُعَآءِ
بَعْضِكُمْ بَعْضًا ؕ قَدْ یَعْلَمُ اللّٰهُ الَّذِیْنَ
یَتَسَلَّلُوْنَ مِنْكُمْ لِوَاذًا ۚ فَلْیَحْذَرِ
الَّذِیْنَ یُخَالِفُوْنَ عَنْ اَمْرِهٖۤ اَنْ
تُصِیْبَهُمْ فِتْنَةٌ اَوْ یُصِیْبَهُمْ عَذَابٌ
اَلِیْمٌ ﴿٦٣﴾
اَلَاۤ اِنَّ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ ؕ
قَدْ یَعْلَمُ مَاۤ اَنْتُمْ عَلَیْهِ ؕ وَ یَوْمَ یُرْجَعُوْنَ
اِلَیْهِ فَیُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ؕ وَ اللّٰهُ
بِكُلِّ شَیْءٍ عَلِیْمٌ ﴿٦٤﴾ ع

سُوْرَةُ الْفُرْقَانِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٧٧ رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ○

تَبٰرَكَ الَّذِیْ نَزَّلَ الْفُرْقَانَ عَلٰی
عَبْدِهٖ لِیَكُوْنَ لِلْعٰلَمِیْنَ نَذِیْرَا ﴿١﴾
اِلَّذِیْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَ الْاَرْضِ
وَ لَمْ یَتَّخِذْ وَلَدًا وَّ لَمْ یَكُنْ لَّهٗ شَرِیْكٌ
فِی الْمُلْكِ وَ خَلَقَ كُلَّ شَیْءٍ فَقَدَّرَهٗ تَقْدِیْرًا ﴿٢﴾
وَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖۤ اٰلِهَةً لَّا یَخْلُقُوْنَ
شَیْـًٔا وَّ هُمْ یُخْلَقُوْنَ وَ لَا یَمْلِكُوْنَ
لِاَنْفُسِهِمْ ضَرًّا وَّ لَا نَفْعًا وَّ لَا یَمْلِكُوْنَ
مَوْتًا وَّ لَا حَیٰوةً وَّ لَا نُشُوْرًا ﴿٣﴾
وَ قَالَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْۤا اِنْ هٰذَاۤ اِلَّاۤ اِفْكُ
اِفْتَرٰىهُ وَ اَعَانَهٗ عَلَیْهِ قَوْمٌ اٰخَرُوْنَ ۚۛ
مع فَقَدْ جَآءُوْ ظُلْمًا وَّ زُوْرًا ﴿٤﴾
وَ قَالُوْۤا اَسَاطِیْرُ الْاَوَّلِیْنَ اكْتَتَبَهَا
فَهِیَ تُمْلٰی عَلَیْهِ بُكْرَةً وَّ اَصِیْلًا ﴿٥﴾

6. कहोः "उसे नाज़िल किया है उसने, जो आसमानों और ज़मीन के राज़ से वाक़िफ़ है; यक़ीनन वह बहुत बख़्शनेवाला, निहायत रहमवाला है"।

7. उनका यह भी कहना है कि "इस रसूल को क्या हुआ कि यह खाना खाता है, और बाज़ारों में चलता-फ़िरता है? क्यों न इसकी तरफ़ कोई फ़रिश्ता उतरा कि वह इसके साथ रहकर ख़बरदार करता?

8. या इसकी तरफ़ कोई ख़ज़ाना ही डाल दिया जाता, या इसके पास कोई बाग़ होता जिससे यह खाता"। और उन ज़ालिमों का कहना है कि "तुम तो बस एक ऐसे शख़्स की पैरवी कर रहे हो जो पक्का जादूगर है"।

9. देखो, उन्होंने तुम पर कैसी-कैसी फब्तियां चुस्त कीं, पस वो बहक गए हैं, अब उनमें इसकी इस्तिताअत नहीं कि कोई राह पा सकें।

10. बरकत वाला है वह जो अगर चाहे तो तुम्हारे लिए इससे भी बेहतर अता कर दे, बहुत से बाग़ जिनके नीचे नहरें बह रही हों, और तुम्हारे लिए बहुत से महल तैयार कर दे।

11. नहीं बल्कि बात यह है कि वो क़ियामत की घड़ी को झुटला चुके हैं; और जो उस घड़ी को झुटला दे उसके लिए हमने दहकती आग तैयार कर रखी है।

12. जब वह उन्हें दूर से देखेगी, तो वो उसके बिफरने और सांस खींचने की आवाज़ें सुनेंगे।

13. और जब वो उसकी किसी तंग जगह जकड़े हुए डाले जाएंगे, तो वहां हलाकत को पुकारने लगेंगे।

14. "आज एक हलाकत को मत पुकारो बल्कि बहुत-बहुत हलाकतों को पुकारो!"

15. कहोः "यह अच्छा है, या वह दायमी जन्नत, जिसका वादा डर रखने वालों से किया गया है? वह उनकी जज़ा और आख़िरी मंज़िल है!"

16. उनके लिए उसमें वह सब कुछ होगा जो वो चाहेंगे, उसमें वो हमेशा रहेंगे; यह तुम्हारे रब के ज़िम्मे एक ऐसा वादा है जो क़ाबिले तलब है।

17. और जिस दिन वो उन्हें इकट्ठा करेगा और उनको भी जिन्हें

क़ुल् अन्ज़-लहुल्लज़ी यअ्लमुस्सिर्-र फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, इन्नहू का-न ग़फ़ूरर्रहीमा (6)

व क़ालू मालि-हाज़र्रसूलि यअ्कुलुत्तआ-म व यम्शी फ़िल्-अस्वाक़ि, लौ ला उन्ज़ि-ल इलैहि म-लकुन फ़-यकू-न म-अ़हू नज़ीरा (7)

औ युल्क़ा इलैहि कन्ज़ुन् औ तकूनु लहू जन्नतुंय्-यअ्कुलु मिन्हा, व क़ालज़्ज़ालिमू-न इन् तत्तबिअू-न इल्ला रजुलम्-मस्हूरा (8)

उन्ज़ुर् कै-फ ज़-रबू ल-कल्-अम्सा-ल फ़-ज़ल्लू फ़ला यस्ततीअू-न सबीला (9) ●

तबा-रकल्लज़ी इन् शा-अ ज-अ-ल ल-क ख़ैरम्-मिन् ज़ालि-क जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व यज्अल् ल-क क़ुसूरा (10)

बल् कज़्ज़बू बिस्सा-अ़ति व अअ्तद्ना लिमन् कज़्ज़-ब बिस्सा-अ़ति सअ़ीरा (11)

इज़ा र-अत्हुम् मिम्-मकानिम्-बअ़ीदिन् समिअू लहा त-ग़य्युज़ंव्-व ज़फ़ीरा (12)

व इज़ा उल्क़ू मिन्हा मकानन् ज़य्यिक़म्-मुक़र्रनी-न दऔ हुनालि-क सुबूरा (13)

ला तद्उल्यौ-म सुबूरंव्-वाहिदंव्-वद्अू सुबूरन् कसीरा (14)

क़ुल् अ-ज़ालि-क ख़ैरुन् अम् जन्नतुल्-ख़ुल्दिल्लती वुअिदल् मुत्तक़ू-न, कानत् लहुम् जज़ा-अंव्-व मसीरा (15)

लहुम फ़ीहा मा यशाऊ-न ख़ालिदी-न, का-न अ़ला रब्बि-क वअ़्दम् मस्ऊला (16)

व यौ-म यह्शुरुहुम् व मा यअ्बुदू-न मिन्

قُلْ اَنْزَلَهُ الَّذِیْ یَعْلَمُ السِّرَّ فِی السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ كَانَ غَفُوْرًا رَّحِیْمًا ۝٦
وَقَالُوْا مَالِ هٰذَا الرَّسُوْلِ یَاْكُلُ
الطَّعَامَ وَیَمْشِیْ فِی الْاَسْوَاقِ لَوْلَاۤ
اُنْزِلَ اِلَیْهِ مَلَكٌ فَیَكُوْنَ مَعَهٗ نَذِیْرًا ۝٧
اَوْ یُلْقٰۤی اِلَیْهِ كَنْزٌ اَوْ تَكُوْنُ لَهٗ جَنَّةٌ
یَّاْكُلُ مِنْهَا ؕ وَقَالَ الظّٰلِمُوْنَ اِنْ
تَتَّبِعُوْنَ اِلَّا رَجُلًا مَّسْحُوْرًا ۝٨
اُنْظُرْ كَیْفَ ضَرَبُوْا لَكَ الْاَمْثَالَ
ع فَضَلُّوْا فَلَا یَسْتَطِیْعُوْنَ سَبِیْلًا ۝٩
تَبٰرَكَ الَّذِیْۤ اِنْ شَآءَ جَعَلَ لَكَ
خَیْرًا مِّنْ ذٰلِكَ جَنّٰتٍ تَجْرِیْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۙ وَیَجْعَلْ لَّكَ قُصُوْرًا ۝١٠
بَلْ كَذَّبُوْا بِالسَّاعَةِ ۫ وَاَعْتَدْنَا
لِمَنْ كَذَّبَ بِالسَّاعَةِ سَعِیْرًا ۝١١
اِذَا رَاَتْهُمْ مِّنْ مَّكَانٍ ۭ بَعِیْدٍ
سَمِعُوْا لَهَا تَغَیُّظًا وَّ زَفِیْرًا ۝١٢
وَاِذَاۤ اُلْقُوْا مِنْهَا مَكَانًا ضَیِّقًا مُّقَرَّنِیْنَ
دَعَوْا هُنَالِكَ ثُبُوْرًا ۝١٣
لَا تَدْعُوا الْیَوْمَ ثُبُوْرًا وَّاحِدًا وَّادْعُوْا
ثُبُوْرًا كَثِیْرًا ۝١٤
قُلْ اَذٰلِكَ خَیْرٌ اَمْ جَنَّةُ الْخُلْدِ الَّتِیْ
وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ كَانَتْ لَهُمْ جَزَآءً
وَّمَصِیْرًا ۝١٥
لَهُمْ فِیْهَا مَا یَشَآءُوْنَ خٰلِدِیْنَ ؕ
كَانَ عَلٰی رَبِّكَ وَعْدًا مَّسْـُٔوْلًا ۝١٦
وَیَوْمَ یَحْشُرُهُمْ وَمَا یَعْبُدُوْنَ مِنْ

वो अल्लाह को छोड़कर पूजते हैं, फिर वह कहेगा, "क्या मेरे बन्दों को तुमने गुमराह किया था, या ये खुद ही राह से गुम हो गए?"

18. वो कहेंगे, "अज़ीम व बरतर है तू! यह हम से नहीं हो सकता था कि तुझे छोड़कर दूसरे सरपरस्त बनाएं; लेकिन हुआ यह कि तूने उन्हें और उनके बाप-दादा को खूब ऐश व राहत का सामान दिया, यहां तक कि वो याददिहानी को भूल बैठे, और हलाक होने वाले लोग साबित हुए!"

19. पस इस तरह वो तुम्हें उस बात में जो तुम कहते हो झूटा करार दिए बैठे हैं, अब न तो तुम इस अज़ाब को फेर सकते हो, और न कोई मदद ही पा सकते हो। जो कोई तुममें से जुल्म करे, उसे हम बड़े अज़ाब का मज़ा चखाएंगे।

20. और तुमसे पहले हमने जितने रसूल भी भेजे हैं, वो सब खाना खाते, और बाज़ारों में चलते-फिरते थे; हमने तो तुम्हें बाहम एक को दूसरे के लिए आज़माइश बना दिया है: "क्या तुम सब्र करते हो?" तुम्हारा रब तो सब कुछ देखता है।

21. जो हमसे मिलने का अंदेशा नहीं रखते, वो कहते हैं, "क्यों न फ़रिश्ते हम पर उतरे, या फिर हम अपने रब को देखते?" वो अपने जी में बड़ा घमण्ड ले बैठे, और बड़ी सरकशी पर उतर आए।

22. जिस दिन वो फ़रिश्तों को देखेंगे, उस दिन मुजरिमों के लिए कोई खुशख़बरी न होगी; और वो "पनाह! पनाह!" पुकार उठेंगे।

23. हम बढ़ेंगे उस अमल की तरफ़ जो उन्होंने किया होगा, और उसे परेशां गुबार कर देंगे।

24. उस दिन अहले जन्नत ठिकाने के लिहाज़ से बेहतर होंगे और आरामगाह के लिहाज़ से भी अच्छे होंगे।

25. उस रोज़ आसमान एक बदली के साथ फटेगा और फ़रिश्तों के परे के परे उतारे जाएंगे।

26. उस दिन हक़ीक़ी बादशाही रहमान की होगी, और वह दिन अहले कुफ़्र के लिए बड़ा मुश्किल होगा।

दूनिल्लाहि फ़-यक़ूलु अ-अन्तुम् अज़्लल्तुम् अिबादी हाउला-इ अम् हुम् ज़ल्लुस्सबील (17)

क़ालू सुब्हान-क मा का-न यम्बग़ी लना अन-नत्तख़ि-ज़ मिन् दूनि-क मिन् औलिया-अ व लाकिम्-मत्तअ्-तहुम् व आबा-अहुम् हत्ता नसुज़्ज़िक्-र व कानू क़ौमम्-बूरा (18)

फ़-क़द् कज़्ज़बूकुम् बिमा तक़ूलू-न फ़मा तस्ततीअू-न सर्फ़ंव्-व ला नस्रन् व मंय्यज़्लिम् मिन्कुम् नुज़िक़्हु अज़ाबन् कबीरा (19)

व मा अर्सल्ना क़ब्ल-क मिनल्-मुर्सली-न इल्ला इन्नहुम् ल-यअ्कुलूनत्तआ-म व यमशू-न फ़िल्-अस्वाक़ि, व जअ़ल्ना बअ्-ज़कुम् लिबअ्ज़िन फ़ित्-नतन् अ-तस्बिरू-न व का-न रब्बु-क बसीरा (20) ●

व क़ालल्लज़ी-न ला यर्जू-न लिक़ा-अना लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैनल्-मलाइ-कतु औ नरा रब्बना, ल-क़दिस्तक्बरू फ़ी अन्फ़ुसिहिम् व अ़तौ अुतुव्वन् कबीरा (21)

यौ-म यरौनल्-मलाइ-क-त ला बुश्रा यौमइज़िल्-लिल्मुज्रिमी-न व यक़ूलू-न हिज्रम्-मह्जूरा (22)

व क़दिम्ना इला मा अ़मिलू मिन् अ़-मलिन् फ़-जअ़ल्नाहु हबा-अम् मन्सूरा (23)

अस्हाबुल्-जन्नति यौमइज़िन् ख़ैरुम्-मुस्त-क़र्रंव्-व अह्सनु मक़ीला (24)

व यौ-म त-शक़्क़क़ुस्समा-उ बिल्-ग़मामि व नुज़्ज़िलल्-मलाइ-कतु तन्ज़ीला (25)

अल्मुल्कु यौमइज़ि-निल्हक़्क़ु लिर्रहमानि, व का-न यौमन् अ़लल्-काफ़िरी-न अ़सीरा (26)

دُونِ اللّٰهِ فَيَقُولُ ءَاَنْتُمْ اَضْلَلْتُمْ عِبَادِيْ
هٰۤؤُلَآءِ اَمْ هُمْ ضَلُّوا السَّبِيْلَ ۝١٧
قَالُوْا سُبْحٰنَكَ مَا كَانَ يَنْۢبَغِيْ لَنَآ اَنْ
نَّتَّخِذَ مِنْ دُوْنِكَ مِنْ اَوْلِيَآءَ
وَلٰكِنْ مَّتَّعْتَهُمْ وَاٰبَآءَهُمْ حَتّٰى
نَسُوا الذِّكْرَ ۚ وَكَانُوْا قَوْمًاۢ بُوْرًا ۝١٨
فَقَدْ كَذَّبُوْكُمْ بِمَا تَقُوْلُوْنَ ۙ فَمَا
تَسْتَطِيْعُوْنَ صَرْفًا وَّلَا نَصْرًا ۚ وَمَنْ يَّظْلِمْ
مِّنْكُمْ نُذِقْهُ عَذَابًا كَبِيْرًا ۝١٩
وَمَآ اَرْسَلْنَا قَبْلَكَ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ
اِلَّآ اِنَّهُمْ لَيَاْكُلُوْنَ الطَّعَامَ وَيَمْشُوْنَ
فِي الْاَسْوَاقِ ۗ وَجَعَلْنَا بَعْضَكُمْ لِبَعْضٍ
فِتْنَةً ۗ اَتَصْبِرُوْنَ ۚ وَكَانَ رَبُّكَ بَصِيْرًا ۝٢٠ ع
وَقَالَ الَّذِيْنَ لَا يَرْجُوْنَ لِقَآءَنَا
لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْنَا الْمَلٰٓئِكَةُ اَوْ نَرٰى رَبَّنَا ۗ
لَقَدِ اسْتَكْبَرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ وَعَتَوْ
عُتُوًّا كَبِيْرًا ۝٢١
يَوْمَ يَرَوْنَ الْمَلٰٓئِكَةَ لَا بُشْرٰى يَوْمَئِذٍ
لِّلْمُجْرِمِيْنَ وَيَقُوْلُوْنَ حِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝٢٢
وَقَدِمْنَآ اِلٰى مَا عَمِلُوْا مِنْ عَمَلٍ فَجَعَلْنٰهُ
هَبَآءً مَّنْثُوْرًا ۝٢٣
اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ يَوْمَئِذٍ خَيْرٌ مُّسْتَقَرًّا
وَّاَحْسَنُ مَقِيْلًا ۝٢٤
وَيَوْمَ تَشَقَّقُ السَّمَآءُ بِالْغَمَامِ وَنُزِّلَ
الْمَلٰٓئِكَةُ تَنْزِيْلًا ۝٢٥
اَلْمُلْكُ يَوْمَئِذِ ٍۨ الْحَقُّ لِلرَّحْمٰنِ ۭ وَكَانَ
يَوْمًا عَلَى الْكٰفِرِيْنَ عَسِيْرًا ۝٢٦

27. उस दिन ज़ालिम अपने दोनों हाथ चबाएगा, कहेगा, "ऐ काश! मैंने रसूल के साथ रास्ता इख़्तियार किया होता।

28. ऐ मेरी कमबख़्ती, काश फ़लां को दोस्त न बनाता!

29. उसने मुझे भटकाकर याददिहानी की तरफ़ से बरगश्ता कर दिया, इसके बाद कि वह मेरे पास आ चुकी थी; शैतान तो वक़्त पर इनसान का साथ छोड़ ही देता है।"

30. रसूल कहेगा, "ऐ मेरे रब, बेशक मेरी क़ौम ने इस क़ुरआन को फ़ुज़ूल, बे मतलब की चीज़ क़रार दे लिया था"।

31. और इसी तरह हमने मुजरिमों में से हर नबी के लिए दुश्मन बनाया; हिदायत और मदद के लिए तो तुम्हारा रब काफ़ी है।

32. और जिन लोगों ने कुफ़्र किया उनका कहना है कि "उस पर पूरा क़ुरआन एक ही बार में क्यों नहीं उतरा?" ऐसा इसलिए किया गया ताकि हम इसके ज़रिए से तुम्हारे दिल को मज़बूत रखें और हमने उसे एक उम्दा तरतीब के साथ नाज़िल किया।

33. और जब कभी भी वो तुम्हारे पास कोई एतिराज़ लेकर आएंगे तो हम तुम्हारे पास पक्की-सच्ची चीज़ ले आएंगे, इस हाल में कि वह वज़ाहत के लिहाज़ से बेहतर व ख़ूबतर हो।

34. जो लोग औंधे मुंह जहन्नम की तरफ़ ले जाए जाएंगे, वही बदतर मकान वाले हैं, और राह के लिहाज़ से भी गुमराहतर हैं।

35. हमने मूसा को किताब अता की, और उसके भाई हारून को वज़ीर के तौर पर उसके साथ किया।

36. और कहा कि "तुम दोनों उन लोगों के पास जाओ जिन्होंने हमारी आयतों को झुटलाया है; आख़िरकार हमने उन लोगों को तबाह करके रख दिया।

37. और नूह की क़ौम को भी, जब उन्होंने रसूलों को झुटलाया, तो हमने उन्हें डुबो दिया, और लोगों के लिए उन्हें एक निशानी बना दिया; और उन ज़ालिमों के लिए हमने एक दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

38-39. और आद और समूद और असहाबु-र्रस और उस बीच की बहुत-सी नसलों को भी हलाक किया, हर एक के लिए हमने मिसालें बयान कीं, आख़िरकार हर एक को हमने

व यौ-म य-अ़ज़्ज़ुज़्ज़ालिमु अ़ला यदैहि यक़ूलु यालै-तनित्तख़ज़्तु मअ़र्-रसूलि सबीला (27)

या वैलता लै-तनी लम् अत्तख़िज़् फ़ुलानन् ख़लीला (28)

ल-क़द् अज़ल्लनी अ़निज़्ज़िक्रि बअ़्-द इज़् जा-अनी, व कानश्शैतानु लिलइन्सानि ख़ज़ूला (29)

व क़ालर्रसूलु या रब्बि इन्-न क़ौमित्त-ख़ज़ू हाज़ल्-क़ुर्आ-न मह्जूरा (30)

व कज़ालि-क जअ़ल्ना लिकुल्लि नबिय्यिन् अ़दुव्वम् मिनल्-मुज्रिमी-न, व कफ़ा बिरब्बि-क हादियंव्-व नसीरा (31)

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लौ ला नुज़्ज़ि-ल अ़लैहिल-क़ुर्आनु जुम्ल-तंव्वाहि-दतन् कज़ालि-क लिनुसब्बि-त बिही फ़ुआद-क व रत्तल्नाहु तर्तीला (32)

व ला यअ्तून-क बि-म-सलिन् इल्ला जिअ्ना-क बिल्हक़्क़ि व अह्स-न तफ़्सीरा (33)

अल्लज़ी-न युह्शरू-न अ़ला वुजूहिहिम् इला जहन्न-म उलाइ-क शर्रुम्-मकानंव्-व अज़ल्लु सबीला (34) ●

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब व जअ़ल्ना म-अ़हू अख़ाहु हारू-न वज़ीरा (35)

फ़-क़ुल्नज़्हबा इलल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिना, फ़-दम्मर्नाहुम् तद्मीरा (36)

व क़ौ-म नूहिल्-लम्मा कज़्ज़बुर्रुसु-ल अग़रक़्नाहुम व जअ़ल्नाहुम लिन्नासि आ-यतन्, व अअ़्तद्-ना लिज़्ज़ालिमी-न अ़ज़ाबन् अलीमा (37)

व आ़दंव्-व समू-द व अस्हाबर्रस्सि व क़ुरूनम्-बै-न ज़ालि-क कसीरा (38)

व कुल्लन् ज़रब्ना लहुल्-अम्सा-ल व कुल्लन् तब्बर्ना

وَيَوْمَ يَعَضُّ الظَّالِمُ عَلٰى يَدَيْهِ يَقُوْلُ
يٰلَيْتَنِي اتَّخَذْتُ مَعَ الرَّسُوْلِ سَبِيْلًا ﴿٢٧﴾
يٰوَيْلَتٰى لَيْتَنِيْ لَمْ أَتَّخِذْ فُلَانًا
خَلِيْلًا ﴿٢٨﴾
لَقَدْ أَضَلَّنِيْ عَنِ الذِّكْرِ بَعْدَ إِذْ جَآءَنِيْ ط
وَكَانَ الشَّيْطٰنُ لِلْإِنْسَانِ خَذُوْلًا ﴿٢٩﴾
وَقَالَ الرَّسُوْلُ يٰرَبِّ إِنَّ قَوْمِي اتَّخَذُوْا
هٰذَا الْقُرْاٰنَ مَهْجُوْرًا ﴿٣٠﴾
وَكَذٰلِكَ جَعَلْنَا لِكُلِّ نَبِيٍّ عَدُوًّا مِّنَ
الْمُجْرِمِيْنَ ۗ وَكَفٰى بِرَبِّكَ هَادِيًا وَّنَصِيْرًا ﴿٣١﴾
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوْلَا نُزِّلَ عَلَيْهِ
مع الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً ۛ كَذٰلِكَ ۛ لِنُثَبِّتَ
بِهٖ فُؤَادَكَ وَرَتَّلْنٰهُ تَرْتِيْلًا ﴿٣٢﴾
وَلَا يَأْتُوْنَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنٰكَ بِالْحَقِّ
وَأَحْسَنَ تَفْسِيْرًا ﴿٣٣﴾
اَلَّذِيْنَ يُحْشَرُوْنَ عَلٰى وُجُوْهِهِمْ إِلٰى جَهَنَّمَ ۙ
ع أُولٰٓئِكَ شَرٌّ مَّكَانًا وَّأَضَلُّ سَبِيْلًا ﴿٣٤﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ وَجَعَلْنَا
مَعَهٗٓ أَخَاهُ هٰرُوْنَ وَزِيْرًا ﴿٣٥﴾
فَقُلْنَا اذْهَبَآ إِلَى الْقَوْمِ الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا
بِاٰيٰتِنَا ۗ فَدَمَّرْنٰهُمْ تَدْمِيْرًا ﴿٣٦﴾
وَقَوْمَ نُوْحٍ لَّمَّا كَذَّبُوا الرُّسُلَ أَغْرَقْنٰهُمْ
وَجَعَلْنٰهُمْ لِلنَّاسِ اٰيَةً ۗ وَأَعْتَدْنَا
لِلظّٰلِمِيْنَ عَذَابًا أَلِيْمًا ﴿٣٧﴾
وَّعَادًا وَّثَمُوْدَا۠ وَأَصْحٰبَ الرَّسِّ وَقُرُوْنًا
بَيْنَ ذٰلِكَ كَثِيْرًا ﴿٣٨﴾
وَكُلًّا ضَرَبْنَا لَهُ الْأَمْثَالَ ۡ وَكُلًّا تَبَّرْنَا

बिल्कुल ही ग़ारत कर दिया।

40. और उस बस्ती पर से तो वो हो आए हैं जिसपर बदतरीन बरसात बरसी; तो क्या वो उसे देखते नही हैं? नही, बल्कि वो दोबारा ज़िन्दा होकर उठने की तवक़्क़ो ही नही रखते हैं।

41. वो जब तुम्हें देखते हैं, तो तुम्हारा मज़ाक़ बना लेते हैं कि "क्या यही शख़्स है जिसे अल्लाह ने रसूल बनाकर भेजा है?

42. इस शख़्स ने तो हमें भटका कर हमको हमारे माबूदों से फेर ही दिया होता, अगर हम उन पर मज़बूती से जम न गए होते"। जल्द ही जान लेंगे जब वो अज़ाब देखेंगे कि कौन राह से बहुत भटक गया था।

43. क्या तुमने उस शख़्स को भी देखा जिसने अपना मा'बूद अपनी ख़्वाहिश-ए-नफ़्स को बना रखा है? तो क्या तुम उसका ज़िम्मा ले सकते हो?

44. या तुम समझते हो कि उनमें अकसर सुनते या समझते हैं? वो तो बस चौपायों की तरह हैं बल्कि उनसे भी ज़्यादा गुमकरदा राह!

45. क्या तुमने अपने रब को नहीं देखा कि कैसा फैलाया साया? अगर वह चाहता, तो उसे ठहरा रखता, फिर हमने सूरज को उसका सुराग़ देने वाला बनाया।

46. फिर हम उसको आहिस्ता-आहिस्ता अपनी तरफ़ समेट लेते हैं।

47. वही है जिसने रात को तुम्हारे लिए लिबास और नींद को सुकून बनाया, और दिन को जी उठने का वक़्त।

48. और वही है जो अपनी रहमत (बारिश) के आगे-आगे हवाओं को खुशख़बरी बनाकर भेजता है; और हम ही आसमान से पाकीज़ा पानी उतारते हैं।

49. ताकि हम उसके ज़रिए से बेजान इलाक़े को ज़िन्दगी बख़्शें, और उसे अपनी मख़्लूक़ में से बहुत से चौपायों और इनसानों को पिलाएं।

50. और बेशक हमने उसे (क़ुरआन को) उनके दरमियान मुख़्तलिफ़ अंदाज़ में पेश किया है, ताकि वो याददिहानी हासिल करें; मगर अकसर लोगों ने कुफ़्र व नाशुकरी के सिवा कोई दूसरा रवैया इख़्तियार करने से इनकार ही किया।

तत्बीरा (39)

व ल-क़द् अतौ अलल्-क़र्-यतिल्लती उम्ति-रत् म-तरस्सौ-इ, अ-फ़लम् यकूनू यरौनहा बल् कानू ला यर्जू-न नुशूरा (40)

व इज़ा रऔ-क इंय्यत्तख़िज़ून-क इल्ला हुज़ुवा, अहाज़ल्लज़ी ब-असल्लाहु रसूला (41)

इन् का-द लयुज़िल्लुना अन् आलि-हतिना लौ ला अन् सबर्ना अ़लैहा, व सौ-फ़ यअ्लमू-न ही-न यरौनल्-अ़ज़ा-ब मन् अज़ल्लु सबीला (42)

अ-रऐ-त मनित्त-ख़-ज़ इला-हहू हवाहु, अ-फ़अन्-त तकूनु अ़लैहि वकीला (43)

अम् तह्सबु अन्-न अक्स-रहुम् यस्मअू-न औ यअ्क़िलू-न, इन् हुम् इल्ला कल्-अन्आमि बल् हुम् अज़ल्लु सबीला (44) ●

अलम्-त-र इला रब्बि-क कै-फ़ मद्दज़्ज़िल्-ल व लौ शा-अ ल-ज-अ़-लहू साकिनन् सुम्-म जअ़ल्नश्शम्-स अ़लैहि दलीला (45)

सुम्-म क़बज़्नाहु इलैना क़ब्ज़ंय्यसीरा (46)

व हुवल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल लिबासंव्-वन्नौ-म सुबातंव्-व ज-अ़लन्नहा-र नुशूरा (47)

व हुवल्लज़ी-अर्-सलर्रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह्मतिही व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अन् तहूरा (48)

लिनुह्यि-य बिही बल्द-तम् मैतंव्-व नुस्क़ि-यहू मिम्मा ख़लक़्ना अन्आमंव्-व अनासिय्-य कसीरा (49)

व ल-क़द् सर्रफ़्नाहु बैनहुम् लियज़्ज़क्करू फ़-अबा अक्सरुन्नासि इल्ला कुफ़ूरा (50)

تَتْبِيْرًا ۝٣٩

وَلَقَدْ اَتَوْا عَلَى الْقَرْيَةِ الَّتِيْٓ اُمْطِرَتْ
مَطَرَ السَّوْءِ ؕ اَفَلَمْ يَكُوْنُوْا يَرَوْنَهَا ۚ
بَلْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ نُشُوْرًا ۝٤٠
وَاِذَا رَاَوْكَ اِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا ؕ
اَهٰذَا الَّذِيْ بَعَثَ اللّٰهُ رَسُوْلًا ۝٤١
اِنْ كَادَ لَيُضِلُّنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا لَوْلَآ
اَنْ صَبَرْنَا عَلَيْهَا ؕ وَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ
حِيْنَ يَرَوْنَ الْعَذَابَ مَنْ اَضَلُّ
سَبِيْلًا ۝٤٢
اَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ ؕ اَفَاَنْتَ
تَكُوْنُ عَلَيْهِ وَكِيْلًا ۝٤٣
اَمْ تَحْسَبُ اَنَّ اَكْثَرَهُمْ يَسْمَعُوْنَ
اَوْ يَعْقِلُوْنَ ؕ اِنْ هُمْ اِلَّا كَالْاَنْعَامِ
ع بَلْ هُمْ اَضَلُّ سَبِيْلًا ۝٤٤
اَلَمْ تَرَ اِلٰى رَبِّكَ كَيْفَ مَدَّ الظِّلَّ ۚ وَلَوْ شَآءَ
لَجَعَلَهٗ سَاكِنًا ۚ ثُمَّ جَعَلْنَا الشَّمْسَ
عَلَيْهِ دَلِيْلًا ۝٤٥
ثُمَّ قَبَضْنٰهُ اِلَيْنَا قَبْضًا يَّسِيْرًا ۝٤٦
وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ لِبَاسًا
وَّالنَّوْمَ سُبَاتًا وَّجَعَلَ النَّهَارَ نُشُوْرًا ۝٤٧
وَهُوَ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ بَيْنَ يَدَيْ
رَحْمَتِهٖ ۚ وَاَنْزَلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً طَهُوْرًا ۝٤٨
لِّنُحْيِۦَ بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا وَّنُسْقِيَهٗ مِمَّا خَلَقْنَآ
اَنْعَامًا وَّاَنَاسِيَّ كَثِيْرًا ۝٤٩
وَلَقَدْ صَرَّفْنٰهُ بَيْنَهُمْ لِيَذَّكَّرُوْا ۖ فَاَبٰٓى
اَكْثَرُ النَّاسِ اِلَّا كُفُوْرًا ۝٥٠

51. अगर हम चाहते, तो हर बस्ती में एक डराने वाला भेज देते।

52. पस अहले कुफ़्र की इताअत न करना, और इस कुरआन के जरिए से उनसे जिहाद करो, ज़बरदस्त जिहाद।

53. वही है जिसने दो समुंदरों को मिलाया, यह लज़ीज़ और मीठा है, और यह (दूसरा) खारी और तल्ख़, और दोनों के दरमियान उसने एक पर्दा डाल दिया है, और एक मज़बूत रोक हाइल कर दी है।

54. और वही है जिसने पानी से एक इनसान पैदा किया, फिर उसे ख़ानदानी और सुसराली रिश्तेदार बनाया; तुम्हारा रब बड़ी ही कुदरतवाला है।

55. अल्लाह को छोड़कर वो उन्हें पूजते हैं जो न उनको फ़ायदा पहुंचा सकते हैं और न उनको नुक़सान ही पहुंचा सकते हैं; और मज़ीद यह कि काफ़िर अपने रब के मुक़ाबले में दूसरों का मददगार है।

56. और हमने तो तुमको बस एक खुशख़बरी देने वाला, और ख़बरदार करनेवाला बनाकर भेजा है।

57. कह दो: "मैं इसपर तुमसे कोई अजर नहीं मांगता, सिवाय इसके कि जो कोई चाहे अपने रब की तरफ़ पहुंचानेवाला रास्ता इख़्तियार करे"।

58. और उस ज़िन्दा खुदावन्द पर भरोसा करो जो नहीं मरता। और उसका गुण गाओ। वह अपने बन्दों के गुनाहों से बाख़बर रहने के लिए काफ़ी है।

59. जिसने आसमानों और ज़मीन को, और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है, छह दिनों में पैदा किया, फिर अर्श पर जलवा फ़रमा हुआ, रहमान है वह, लिहाज़ा पूछो उससे जो उससे बाख़बर है।

60. उन लोगों से जब कहा जाता है कि "रहमान को सजदा करो" तो वो कहते हैं, "और रहमान क्या होता है? क्या जिसे तू हमसे कह दे उसी को हम सजदा करने लगें?" और यह चीज़ उनकी नफ़रत को और बढ़ा देती है।

61. बड़ी बाबरकत है वह ज़ात जिसने आसमान में बुर्ज बनाए और उसमें एक चिराग़, और एक मुनव्वर चांद बनाया।

62. और वही है जिसने रात और दिन को एक-दूसरे के पीछे आनेवाला बनाया, उस शख़्स के लिए (निशानी)

व लौ शिअ्ना ल-बअ़स्ना फ़ी कुल्लि क़र्-यतिन् नज़ीरा (51)

फ़ला तुतिअ़िल्-काफ़िरी-न व जाहिद्हुम् बिही जिहादन् कबीरा (52)

व हुवल्लज़ी म-रजल्-बह्रैनि हाज़ा अ़ज़्बुन् फ़ुरातुंव्-व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन् व ज-अ़-ल बैनहुमा बर्-ज़ख़ंव्-व हिज्रम्-मह्जूरा (53)

व हुवल्लज़ी ख़-ल-क़ मिनल्-मा-इ ब-शरन् फ़-ज-अ़-लहू न-सबंव्-व् सिह्रन्, व का-न रब्बु-क क़दीरा (54)

व यअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि मा ला यन्फ़अुहुम् व ला यज़ुर्रुहुम्, व कानल्-काफ़िरु अ़ला रब्बिही ज़हीरा (55)

व मा अर्सल्ना-क इल्ला मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा (56)

क़ुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इल्ला मन् शा-अ अंय्यत्तख़ि-ज़ इला रब्बिही सबीला (57)

व तवक्कल् अ़लल्-हय्यिल्लज़ी ला यमूतु व सब्बिह् बिहम्दिही, व कफ़ा बिही बिज़ुनूबि अ़िबादिही ख़बीरा (58)

अल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, अर्रह्मानु फ़स्अल् बिही ख़बीरा (59)

व इज़ा क़ी-ल लहुमुस्जुदू लिर्रह्मानि क़ालू व मर्रह्मानु अ-नस्जुदु लिमा तअ्मुरुना व ज़ा-दहुम् नुफ़ूरा ●(60)●

तबा-रकल्लज़ी ज-अ़-ल फ़िस्समा-इ बुरूजंव्-व ज-अ़-ल फ़ीहा सिराजंव्-व क़-मरम् मुनीरा (61)

व हुवल्लज़ी ज-अ़लल्लै-ल वन्नहा-र ख़िल्फ़-तल् लिमन् अरा-द अंय्यज़्ज़क्क-र औ अरा-द

وَلَوْ شِئْنَا لَبَعَثْنَا فِيْ كُلِّ قَرْيَةٍ نَّذِيْرًا ۝٥١
فَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَجَاهِدْهُمْ بِهٖ جِهَادًا
كَبِيْرًا ۝٥٢
وَهُوَ الَّذِيْ مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ هٰذَا عَذْبٌ
فُرَاتٌ وَّهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۚ وَجَعَلَ
بَيْنَهُمَا بَرْزَخًا وَّحِجْرًا مَّحْجُوْرًا ۝٥٣
وَهُوَ الَّذِيْ خَلَقَ مِنَ الْمَآءِ بَشَرًا فَجَعَلَهٗ
نَسَبًا وَّصِهْرًا ؕ وَكَانَ رَبُّكَ قَدِيْرًا ۝٥٤
وَيَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ
وَلَا يَضُرُّهُمْ ؕ وَكَانَ الْكَافِرُ عَلٰى رَبِّهٖ
ظَهِيْرًا ۝٥٥
وَمَآ اَرْسَلْنٰكَ اِلَّا مُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝٥٦
قُلْ مَآ اَسْئَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ اِلَّا مَنْ
شَآءَ اَنْ يَّتَّخِذَ اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ۝٥٧
وَتَوَكَّلْ عَلَى الْحَيِّ الَّذِيْ لَا يَمُوْتُ
وَسَبِّحْ بِحَمْدِهٖ ؕ وَكَفٰى بِهٖ بِذُنُوْبِ عِبَادِهٖ
مۘ خَبِيْرًا ۝٥٨
اِۨلَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى
الْعَرْشِ ۛۚ اَلرَّحْمٰنُ فَسْئَلْ بِهٖ خَبِيْرًا ۝٥٩
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اسْجُدُوْا لِلرَّحْمٰنِ
قَالُوْا وَمَا الرَّحْمٰنُ ۗ اَنَسْجُدُ لِمَا تَاْمُرُنَا
ع وَزَادَهُمْ نُفُوْرًا ۩ ۝٦٠
تَبٰرَكَ الَّذِيْ جَعَلَ فِي السَّمَآءِ بُرُوْجًا
وَّجَعَلَ فِيْهَا سِرٰجًا وَّقَمَرًا مُّنِيْرًا ۝٦١
وَهُوَ الَّذِيْ جَعَلَ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
خِلْفَةً لِّمَنْ اَرَادَ اَنْ يَّذَّكَّرَ اَوْ اَرَادَ

जो याददिहानी हासिल करनी चाहे या शुक्रगुज़ार होना चाहे।

63. रहमान के बन्दे वो हैं, जो ज़मीन पर फ़िरोतनी और आहिस्तगी से चलते हैं और जब जाहिल उनके मुंह आएं तो कहते हैं "तुमको सलाम;"

64. जो अपने रब के हुज़ूर सजदे और क़ियाम में रातें गुज़ारते हैं,

65. जो कहते हैं कि "हमारे रब, जहन्नम के अज़ाब को हमसे हटा दे," यक़ीनन उसका अज़ाब तो लिपटकर रहने वाला है।

66. यक़ीनन वह जगह बुरी है ठहरने के लिहाज़ से भी और मक़ाम के लिहाज़ से भी।

67. जो ख़र्च करते हैं, तो इसराफ़ नहीं करते हैं और न तंगी से काम लेते हैं, बल्कि वह ख़र्च इसके दरमियान एतिदाल पर होता है;

68. जो अल्लाह के साथ किसी दूसरे माबूद को नहीं पुकारते, और न किसी जान को जिसे अल्लाह ने हराम किया है क़त्ल करते हैं, यह और बात है कि हक़ का तक़ाज़ा ही यही हो, और न वो ज़िना करते हैं — जो कोई यह काम करे वह गुनाह के वबाल से दो-चार होगा,

69. क़ियामत के दिन उसके लिए अज़ाब में दर्जा बदर्जा इज़ाफ़ा होगा, और वह उसी में ज़लील होकर हमेशा के लिए पड़ा रहेगा,

70. सिवाय उसके जो पलट आया और साहिबे ईमान हुआ, और अच्छा काम किया, तो ऐसे लोगों की बुराइयों को अल्लाह भलाइयों से बदल देगा, और अल्लाह है भी बहुत बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला;

71. और जिसने तौबा की, और नेक अमल इख़्तियार किया, तो यक़ीनन वह अल्लाह की तरफ़ पलटता है जैसा कि पलटने का हक़ है।

72. जो किसी झूट में शरीक नहीं होते, और जब किसी लग्व चीज़ के पास से उनका गुज़र हो जाए, तो वक़ार के साथ गुज़र जाते हैं;

73. जो ऐसे हैं कि जब उनके रब की आयतों के ज़रिए से याददिहानी कराई जाए, तो उनपर वो अंधे और बहरे होकर नहीं गिरते;

74. और जो कहते हैं, "हमारे रब, हमें हमारी अपनी बीवियों और हमारी

शुकूरा (62)

व अिबादुर्रह्मानिल्लज़ी-न यम्शू-न अ़लल्-अर्ज़ि हौनंव्-व इज़ा ख़ा-त-बहुमुल्-जाहिलू-न क़ालू सलामा (63)

वल्लज़ी-न यबीतू-न लिरब्बिहिम् सुज्जदंव्-व क़ियामा (64)

वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्ब-नस्रिफ़् अ़न्ना अ़ज़ा-ब जहन्न-म इन्-न अ़ज़ा-बहा का-न ग़रामा (65)

इन्नहा साअत् मुस्त-क़र्रंव्-व मुक़ामा (66)

वल्लज़ी-न इज़ा अन्फ़क़ू लम् युस्रिफ़ू व लम् यक़्तुरू व का-न बै-न ज़ालि-क क़वामा (67)

वल्लज़ी-न ला यद्अू-न मअ़ल्लाहि इलाहन् आख़-र व ला यक़्तुलूनन्-नफ़्सल्लती हर्रमल्लाहु इल्ला बिल्-हक़्क़ि व ला यज़्नू-न, व मंय्यफ़्अ़ल् ज़ालि-क यल्-क़ असामा (68)

युज़ाअ़फ़् लहुल्-अ़ज़ाबु यौमल्-क़ियामति व यख़्लुद् फ़ीही मुहाना (69)

इल्ला मन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल अ़-मलन् सालिहन् फ़-उलाइ-क युबद्दिलुल्लाहु सय्यिआतिहिम् ह-सनातिन्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (70)

व मन् ता-ब व अ़मि-ल सालिहन् फ़-इन्नहू यतूबु इलल्लाहि मताबा (71)

वल्लज़ी-न ला यश्हदूनज़्ज़ू-र व इज़ा मर्रू बिल्लग़्वि मर्रू किरामा (72)

वल्लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू बिआयाति रब्बिहिम् लम् यख़िर्रू अ़लैहा सुम्मंव्-व अ़ुम्याना (73)

वल्लज़ी-न यक़ूलू-न रब्बना हब् लना मिन्

شُكُوْرًا ۝٦٢

وَعِبَادُ الرَّحْمٰنِ الَّذِيْنَ يَمْشُوْنَ عَلَى
الْاَرْضِ هَوْنًا وَّاِذَا خَاطَبَهُمُ الْجٰهِلُوْنَ
قَالُوْا سَلٰمًا ۝٦٣

وَالَّذِيْنَ يَبِيْتُوْنَ لِرَبِّهِمْ سُجَّدًا
وَّقِيَامًا ۝٦٤

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا اصْرِفْ عَنَّا عَذَابَ
جَهَنَّمَ ۖ اِنَّ عَذَابَهَا كَانَ غَرَامًا ۝٦٥

اِنَّهَا سَآءَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٦٦

وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَنْفَقُوْا لَمْ يُسْرِفُوْا وَلَمْ
يَقْتُرُوْا وَكَانَ بَيْنَ ذٰلِكَ قَوَامًا ۝٦٧

وَالَّذِيْنَ لَا يَدْعُوْنَ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ
وَلَا يَقْتُلُوْنَ النَّفْسَ الَّتِيْ حَرَّمَ اللّٰهُ
اِلَّا بِالْحَقِّ وَلَا يَزْنُوْنَ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ
ذٰلِكَ يَلْقَ اَثَامًا ۝٦٨

يُّضٰعَفْ لَهُ الْعَذَابُ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
وَيَخْلُدْ فِيْهٖ مُهَانًا ۝٦٩

اِلَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ عَمَلًا صَالِحًا
فَاُولٰٓئِكَ يُبَدِّلُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِهِمْ حَسَنٰتٍ ۗ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝٧٠

وَمَنْ تَابَ وَعَمِلَ صَالِحًا فَاِنَّهٗ يَتُوْبُ
اِلَى اللّٰهِ مَتَابًا ۝٧١

وَالَّذِيْنَ لَا يَشْهَدُوْنَ الزُّوْرَ ۙ وَاِذَا مَرُّوْا
بِاللَّغْوِ مَرُّوْا كِرَامًا ۝٧٢

وَالَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِاٰيٰتِ رَبِّهِمْ لَمْ
يَخِرُّوْا عَلَيْهَا صُمًّا وَّعُمْيَانًا ۝٧٣

وَالَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَا هَبْ لَنَا مِنْ

अपनी औलाद से आखों की ठण्डक अता कर और हमें तक़्वा शिआर लोगों का सरबराह बना दे"।

75. यही लोग हैं जिन्हें इसके बदले में कि उन्होंने साबित क़दमी दिखाई मंज़िल-ए-बुलन्द हासिल होगी, और तहिय्यत व सलाम से उनका वहां इस्तिक़बाल होगा।

76. वहां वो हमेशा रहेंगे, निहायत अच्छा है वह मुस्तक़र और मक़ाम।

77. कह दोः "मेरे रब को तुम्हारी कुछ परवाह न होती अगर तुम्हें दावत देनी पेशे नज़र न होती, अब जब कि तुम झुटला चुके हो तो जल्द ही वह चीज़ लाज़िम होकर रहेगी"।

सूरह अश-शुअरा मक्की

(आयतें 227, रुकूआत 11)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ता-सीन-मीम।

2. ये वाज़ेह किताब की आयतें हैं।

3. शायद इस पर कि वो ईमान नहीं लाते तुम अपनी जान ही खो बैठोगे।

4. अगर हम चाहें तो उनपर आसमान से एक निशानी उतार दें, फिर उनकी गर्दनें उसके आगे झुकी ही रह जाएं।

5. उनके पास रहमान की तरफ़ से जो ताज़ा याददिहानी भी आती है, वो उससे एराज़ ही करते हैं।

6. अब जबकि वो झुटला चुके हैं, तो जल्द ही उन्हें उसकी ख़बरें मिल जाएंगी जिसका वो मज़ाक़ उड़ाते रहे हैं।

7. क्या उन्होंने ज़मीन को नहीं देखा कि हमने उसमें कितनी ही हर तरह की नौअ-ब-नौअ (क़िस्म-क़िस्म) फ़ैज़ बख़्श चीज़ें उगाईं।

8. यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है, इसके बावजूद उनमें अक्सर मोमिन नहीं।

9. और हक़ीक़त यह है कि तुम्हारा रब ही है जो बड़ा ज़बरदस्त, निहायत रहमवाला है।

10-11. और जबकि तुम्हारे रब ने मूसा को पुकारा कि "ज़ालिम लोगों के पास जा — क़ौमे फ़िरऔन के पास — क्या वो डर नहीं रखते?"

12. उसने कहा, "मेरे रब, मुझे डर है कि वो मुझे झुटला देंगे,

अज़्वाजिना व ज़ुर्रिय्यातिना क़ुर्र-त अअ्युनिंव्-वज्अल्ना लिल्मुत्तक़ी-न इमामा (74)

उलाइ-क युज्ज़ौनल्-ग़ुर्फ़-त बिमा स-बरू व युलक़्क़ौ-न फ़ीहा तहिय्य-तंव्-व सलामा (75)

ख़ालिदी-न फ़ीहा हसुनत् मुस्तक़र्रंव्-व मुक़ामा (76)

क़ुल् मा यअ्-बउ बिकुम् रब्बी लौ ला दुआउकुम् फ़-क़द् कज़्ज़ब्तुम् फ़सौ-फ़ यकूनु लिज़ामा ● (77) ●

26 सूरतुश-शु-अरा-इ
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 5689 अक्षर, 1347 शब्द, 227 आयतें और 11 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ता-सीम्-मीम् (1)

तिल्-क आयातुल् किताबिल्-मुबीन (2)

लअ़ल्ल-क बाख़िअुन्-नफ़्स-क अल्-ला यकूनू मुअ्मिनीन (3)

इन् न-शअ् नुनज़्ज़िल् अ़लैहिम् मिनस्समा-इ आ-यतन् फ़-ज़ल्लत् अअ्नाक़ुहुम् लहा ख़ाज़िअ़ीन (4)

व मा यअ्तीहिम् मिन् ज़िक्रिम् मिनर्रह्मानि मुह्दसिन् इल्ला कानू अ़न्हु मुअ्रिज़ीन (5)

फ़-क़द् कज़्ज़बू फ़-सयअ्तीहिम् अम्बा-उ मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (6)

अ-व लम् यरौ इलल्-अर्ज़ि कम् अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिन् करीम (7)

इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (8)

व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम (9)●

व इज़् नादा रब्बु-क मूसा अनिअ्तिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन (10)

क़ौ-म फ़िरऔ़-न, अला यत्तक़ून (11)

क़ा-ल रब्बि इन्नी अख़ाफ़ु अंय्यु-कज़्ज़िबून (12)

أَزْوَاجِنَا وَذُرِّيّٰتِنَا قُرَّةَ أَعْيُنٍ وَّاجْعَلْنَا
لِلْمُتَّقِيْنَ إِمَامًا ۝٧٤
أُولٰٓئِكَ يُجْزَوْنَ الْغُرْفَةَ بِمَا صَبَرُوْا
وَيُلَقَّوْنَ فِيْهَا تَحِيَّةً وَّسَلٰمًا ۝٧٥
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا حَسُنَتْ مُسْتَقَرًّا وَّمُقَامًا ۝٧٦
قُلْ مَا يَعْبَؤُا بِكُمْ رَبِّيْ لَوْلَا دُعَآؤُكُمْ ۚ
فَقَدْ كَذَّبْتُمْ فَسَوْفَ يَكُوْنُ لِزَامًا ۝٧٧

سُوْرَةُ الشُّعَرَآءِ مَكِّيَّةٌ ٢٦ اٰيَاتُهَا ٢٢٧ رُكُوْعَاتُهَا ١١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

طٰسٓمّٓ ۝١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝٢
لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ أَلَّا يَكُوْنُوْا
مُؤْمِنِيْنَ ۝٣
إِنْ نَّشَأْ نُنَزِّلْ عَلَيْهِمْ مِّنَ السَّمَآءِ اٰيَةً
فَظَلَّتْ أَعْنَاقُهُمْ لَهَا خٰضِعِيْنَ ۝٤
وَمَا يَأْتِيْهِمْ مِّنْ ذِكْرٍ مِّنَ الرَّحْمٰنِ مُحْدَثٍ
إِلَّا كَانُوْا عَنْهُ مُعْرِضِيْنَ ۝٥
فَقَدْ كَذَّبُوْا فَسَيَأْتِيْهِمْ أَنْبٰٓؤُا مَا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٦
أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الْأَرْضِ كَمْ أَنْۢبَتْنَا
فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝٧
إِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۚ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ۝٩
وَإِذْ نَادٰى رَبُّكَ مُوْسٰٓى أَنِ ائْتِ الْقَوْمَ
الظّٰلِمِيْنَ ۝١٠
قَوْمَ فِرْعَوْنَ ۚ أَلَا يَتَّقُوْنَ ۝١١
قَالَ رَبِّ إِنِّيْ أَخَافُ أَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝١٢

13. और मेरा सीना घुटता है, और मेरी ज़बान रवां नहीं, इसलिए हारून की तरफ़ पैग़ाम भेज दे"।

14. और मुझ पर उनके यहां के एक गुनाह का बार भी है, इसलिए मैं डरता हूं कि वो मुझे क़त्ल कर डालेंगे"।

15. फ़रमाया, "हरगिज़ नहीं, तुम दोनों हमारी निशानियां ले कर जाओ, हम तुम्हारे साथ हैं, सुनने को मौजूद हैं।

16–17. पस तुम दोनों फ़िरऔन के पास जाओ और कहो, "हम सारे जहान के रब के भेजे हुए हैं कि बनी इसराइल को हमारे साथ जाने दे,"

18. उसने कहा, "क्या हमने तुझे अपने यहां जबकि तू बच्चा था, पाला नहीं था? और तू अपनी उम्र के कई साल हम में रहा।

19. और तूने अपना वह काम किया जो किया, तू एहसान फ़रामोश है।"

20. कहा, "वह हरकत तो मुझसे उस वक़्त सरज़द हुई जब कि मैं चूक गया था;

21. फिर जब मुझे तुम्हारा ख़ौफ़ हुआ, तो मैं तुम्हारे यहां से भाग गया, फिर मेरे रब ने मुझे क़ुव्वत-ए-फ़ैसला अता की और मुझे रसूलों में शामिल फ़रमाया।

22. और यही नवाज़िश है जिसका एहसान तू मुझ पर जताता है कि बनी इसराईल को तूने ग़ुलाम बना रखा है"।

23. फ़िरऔन ने कहा, "और यह सारे जहां का रब क्या होता है?"

24. उसने कहा, "आसमानों और ज़मीन का रब, और जो कुछ इन दोनों के दरमियान है उसका भी, अगर तुम्हें यक़ीन हो"।

25. उसने अपने गिर्दपेश के लोगों से कहा "क्या तुम सुनते नहीं हो?"

26. कहा कि "तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप-दादा का रब।"

27. बोला, "यक़ीनन तुम्हारा यह रसूल जो तुम्हारी तरफ़ भेजा गया है बिल्कुल ही पागल है।"

28. उसने कहा, "मशरिक़ व मग़रिब का रब, और जो कुछ उनके दरमियान है उसका भी, अगर तुम कुछ अक़्ल रखते हो"।

29. बोला, "तूने अगर मेरे सिवा किसी और को हाकिम बनाया, तो मैं

व यज़ीक़ु सद्री व ला यन्तलिक़ु लिसानी फ़-अर्सिल् इला हारून (13)

व लहुम् अ़लय्-य ज़म्बुन् फ़-अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून (14)

क़ा-ल कल्ला फ़ज़्हबा बिआयातिना इन्ना म-अ़कुम् मुस्तमिऊन (15)

फ़अ्तिया फ़िर्औ-न फ़क़ूला इन्ना रसूलु रब्बिल्-आ़लमीन (16)

अन् अर्सिल् म-अ़ना बनी इस्राईल (17)

क़ा-ल अलम् नुरब्बि-क फ़ीना वलीदंव्-व लबिस्-त फ़ीना मिन् अ़ुमुरि-क सिनीन (18)

व फ़अ़ल्-त फ़अ़्-ल-तकल्लती फ़अ़ल्-त व अन्-त मिनल्-काफ़िरीन (19)

क़ा-ल फ़अ़ल्तुहा इज़ंव्-व अ-न मिनज़्ज़ाल्लीन (20)

फ़-फ़रर्तु मिन्कुम् लम्मा ख़िफ़्तुकुम् फ़-व-ह-ब ली रब्बी हुक्मंव्-व ज-अ़-लनी मिनल्-मुर्सलीन (21)

व तिल्-क निअ़्-मतुन् तमुन्नुहा अ़लय्-य अन् अ़ब्बत्-त बनी इस्राईल (22)

क़ा-ल फ़िर्औनु व मा रब्बुल्-आ़लमीन (23)

क़ा-ल रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा, इन् कुन्तुम् मूक़िनीन (24)

क़ा-ल लिमन् हौलहू अला तस्तमिऊन (25)

क़ा-ल रब्बुकुम् व रब्बु आबाइकुमुल्-अव्वलीन (26)

क़ा-ल इन्-न रसूलकुमुल्लज़ी उर्सि-ल इलैकुम् ल-मज्नून (27)

क़ा-ल रब्बुल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि व मा बैनहुमा, इन् कुन्तुम् तअ़्क़िलून (28)

क़ा-ल ल-इनित्त-ख़ज़्-त इलाहन् ग़ैरि ल-अज्अ़-लन्न-क

وَيَضِيْقُ صَدْرِيْ وَلَا يَنْطَلِقُ لِسَانِيْ
فَاَرْسِلْ اِلٰى هٰرُوْنَ ۝١٣
وَلَهُمْ عَلَيَّ ذَنْبٌ فَاَخَافُ اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝١٤
قَالَ كَلَّا ۚ فَاذْهَبَا بِاٰيٰتِنَآ اِنَّا مَعَكُمْ
مُّسْتَمِعُوْنَ ۝١٥
فَاْتِيَا فِرْعَوْنَ فَقُوْلَآ اِنَّا رَسُوْلُ رَبِّ
الْعٰلَمِيْنَ ۝١٦
اَنْ اَرْسِلْ مَعَنَا بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝١٧
قَالَ اَلَمْ نُرَبِّكَ فِيْنَا وَلِيْدًا وَّلَبِثْتَ
فِيْنَا مِنْ عُمُرِكَ سِنِيْنَ ۝١٨
وَفَعَلْتَ فَعْلَتَكَ الَّتِيْ فَعَلْتَ وَاَنْتَ
مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝١٩
قَالَ فَعَلْتُهَآ اِذًا وَّاَنَا مِنَ الضَّآلِّيْنَ ۝٢٠
فَفَرَرْتُ مِنْكُمْ لَمَّا خِفْتُكُمْ فَوَهَبَ لِيْ
رَبِّيْ حُكْمًا وَّجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٢١
وَتِلْكَ نِعْمَةٌ تَمُنُّهَا عَلَيَّ اَنْ عَبَّدْتَّ
بَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝٢٢
قَالَ فِرْعَوْنُ وَمَا رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٣
قَالَ رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ
اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ ۝٢٤
قَالَ لِمَنْ حَوْلَهٗٓ اَلَا تَسْتَمِعُوْنَ ۝٢٥
قَالَ رَبُّكُمْ وَرَبُّ اٰبَآىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ۝٢٦
قَالَ اِنَّ رَسُوْلَكُمُ الَّذِيْٓ اُرْسِلَ اِلَيْكُمْ
لَمَجْنُوْنٌ ۝٢٧
قَالَ رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۭ
اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٢٨
قَالَ لَىِٕنِ اتَّخَذْتَ اِلٰهًا غَيْرِيْ لَاَجْعَلَنَّكَ

तुझे क़ैद करके रहूंगा"।

30. उसने कहा, "क्या अगर मैं तेरे पास एक सरीह चीज़ ले आऊं तब भी?"

31. बोला, "अच्छा वह ले आ, अगर तू सच्चा है"।

32. फिर उसने अपनी लाठी डाल दी, तो नागहां क्या देखते हैं कि वह एक सरीह अज़दहा है।

33. और उसने अपना हाथ बाहर खींचा, फिर क्या देखते हैं कि वह देखने वालों के सामने चमक रहा है।

34. उसने अपने गिर्दोपेश के सरदारों से कहा, "यक़ीनन यह एक बड़ा ही माहिर जादूगर है,

35. चाहता है कि अपने जादू से तुम्हें तुम्हारी अपनी सरज़मीन से निकाल दे; तो अब तुम क्या कहते हो?"

36-37. उन्होंने कहा, "उसे और उसके भाई को अभी टाले रखिए और जमा करने वालों को शहरों में भेज दीजिए कि वो हर एक माहिर जादूगर को आपके पास ले आएं"।

38. चुनांचे एक मुतअय्यन दिन के मुक़र्रर वक़्त पर जादूगर इकट्ठा कर लिए गए।

39. और लोगों से कहा गया कि "क्या तुम भी इकट्ठे होते हो?

40. शायद कि हम जादूगरों के पैरौ रह जाएं अगर वो ग़ालिब रहे";

41. तो जब जादूगर आए, तो उन्होंने फ़िरऔन से कहा कि "क्या हमारे लिए कोई बदला भी है, अगर हम ग़ालिब रहे?"

42. उसने कहा, "हां, और यक़ीनन तुम उस वक़्त मुक़र्रबीन में शामिल हो जाओगे"।

43. मूसा ने उनसे कहा, "डालो जो कुछ तुम्हें डालना है"।

44. तब उन्होंने अपनी रस्सियां और लाठियां डाल दीं, और बोले, "फ़िरऔन के इक़बाल की क़सम हम ही ग़ालिब रहेंगे।"

45. फिर मूसा ने अपनी लाठी डाली तो क्या देखते हैं कि उस स्वांग को जो वो रचाते थे निगलती जा रही है;

46. इस पर जादूगर सजदे में गिर पड़े,

47. वो बोल उठे, "हम सारे जहान के रब पर ईमान ले आए —

48. मूसा और हारून के रब पर"।

49. उसने कहा, "तुमने उसको मान लिया क़ब्ल इसके कि मैं तुम्हें इजाज़त

मिनल्-मस्जूनीन (29)
का-ल अ-व लौ जिअ्तु-क बिशैइम्-मुबीन (30)
का-ल फ़अ्ति बिही इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (31)
फ़-अल्क़ा असाहु फ़-इज़ा हि-य सुअ्बानुम्-मुबीन (32)
व न-ज़-अ य-दहू फ़-इज़ा हि-य बैज़ा-उ लिन्नाज़िरीन (33) ●
क़ा-ल लिल्म-लइ हौलहू इन्-न हाज़ा लसाहिरुन् अ़लीम (34)
युरीदु अंय्युख़्रि-जकुम् मिन् अर्ज़िकुम् बिसिहिरही फ़-माज़ा तअ्मुरून (35)
कालू अर्जिह् व अख़ाहु वब्अ़स् फ़िल्मदाइनि हाशिरीन (36)
यअ्तू-क बिकुल्लि सह्हारिन् अ़लीम (37)
फ़जुमिअ़स्स-ह-रतु लिमीक़ाति यौमिम्-मअ्लूम (38)
व क़ी-ल लिन्नासि हल् अन्तुम् मुज्तमिअून (39)
लअ़ल्लना नत्तबिअुस्स-ह-र-त इन् कानू हुमुल्-ग़ालिबीन (40)
फ़-लम्मा जाअस्स-ह-रतु क़ालू लिफ़िर्औ-न अ-इन्-न लना ल-अज्रन् इन् कुन्ना नह्नुल्-ग़ालिबीन (41)
क़ा-ल न-अ़म् व इन्नकुम् इज़ल् लमिनल्-मुक़र्रबीन (42)
क़ा-ल लहुम् मूसा अल्क़ू मा अन्तुम् मुल्क़ून (43)
फ़-अल्क़ौ हिबा-लहुम् व अ़िसिय्यहुम् व क़ालू बिअ़िज़्ज़ति फ़िरऔ-न इन्ना ल-नह्नुल्-ग़ालिबून (44)
फ़-अल्क़ा मूसा अ़साहु फ़-इज़ा हि-य तल्क़फु मा यअ्फ़िकून (45)
फ़-उल्क़ियस्स-ह-रतु साजिदीन (46)
क़ालू आमन्ना बिरब्बिल्-आलमीन (47)
रब्बि मूसा व हारून (48)
क़ा-ल आमन्तुम् लहू क़ब्-ल अन् आज़-न लकुम् इन्नहू लकबीरुकुमुल्लज़ी अ़ल्ल-मकुमुस-सिह्-र

مِنَ الْمَسْجُوْنِيْنَ ۝
قَالَ اَوَلَوْ جِئْتُكَ بِشَيْءٍ مُّبِيْنٍ ۝
قَالَ فَاْتِ بِهٖٓ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝
فَاَلْقٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ ثُعْبَانٌ مُّبِيْنٌ ۝
ع وَّنَزَعَ يَدَهٗ فَاِذَا هِيَ بَيْضَآءُ لِلنّٰظِرِيْنَ ۝
قَالَ لِلْمَلَاِ حَوْلَهٗٓ اِنَّ هٰذَا لَسٰحِرٌ عَلِيْمٌ ۝
يُّرِيْدُ اَنْ يُّخْرِجَكُمْ مِّنْ اَرْضِكُمْ بِسِحْرِهٖ ۖ
فَمَاذَا تَاْمُرُوْنَ ۝
قَالُوْٓا اَرْجِهْ وَاَخَاهُ وَابْعَثْ فِي الْمَدَآئِنِ
حٰشِرِيْنَ ۝
يَاْتُوْكَ بِكُلِّ سَحَّارٍ عَلِيْمٍ ۝
فَجُمِعَ السَّحَرَةُ لِمِيْقَاتِ يَوْمٍ مَّعْلُوْمٍ ۝
وَّقِيْلَ لِلنَّاسِ هَلْ اَنْتُمْ مُّجْتَمِعُوْنَ ۝
لَعَلَّنَا نَتَّبِعُ السَّحَرَةَ اِنْ كَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ۝
فَلَمَّا جَآءَ السَّحَرَةُ قَالُوْا لِفِرْعَوْنَ اَئِنَّ
لَنَا لَاَجْرًا اِنْ كُنَّا نَحْنُ الْغٰلِبِيْنَ ۝
قَالَ نَعَمْ وَاِنَّكُمْ اِذًا لَّمِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝
قَالَ لَهُمْ مُّوْسٰٓى اَلْقُوْا مَآ اَنْتُمْ مُّلْقُوْنَ ۝
فَاَلْقَوْا حِبَالَهُمْ وَعِصِيَّهُمْ وَقَالُوْا بِعِزَّةِ
فِرْعَوْنَ اِنَّا لَنَحْنُ الْغٰلِبُوْنَ ۝
فَاَلْقٰى مُوْسٰى عَصَاهُ فَاِذَا هِيَ تَلْقَفُ
مَا يَاْفِكُوْنَ ۝
فَاُلْقِيَ السَّحَرَةُ سٰجِدِيْنَ ۝
قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝
رَبِّ مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ۝
قَالَ اٰمَنْتُمْ لَهٗ قَبْلَ اَنْ اٰذَنَ لَكُمْ ۚ
اِنَّهٗ لَكَبِيْرُكُمُ الَّذِيْ عَلَّمَكُمُ السِّحْرَ ۚ

देता। यक़ीनन वह तुम सब का बड़ा है जिसने तुमको जादू सिखाया है; अच्छा जल्द ही तुम्हें मालूम हुआ जाता है! मैं तुम्हारे हाथ और पांव मुख़ालिफ़ सिमतों से कटवा दूंगा और तुम सब को सूली पर चढ़ा दूंगा"।

50. उन्होंने कहा "कुछ मुज़ायक़ नहीं; हम अपने रब की तरफ़ पलटने वाले हैं।

51. हम तो इसी के आरज़ूमन्द हैं कि हमारा रब हमारी ख़ताओं को बख़्श दे, क्योंकि हम सबसे पहले मोमिन हुए"।

52. हमने मूसा को वही की कि "मेरे बन्दों को लेकर रातों-रात निकल जा; यक़ीनन तुम्हारा पीछा किया जाएगा"।

53-56. इस पर फ़िरऔन ने जमा करने वालों को शहरों में भेजा कि "यह एक छोटा सा गिरोह है। और ये हमें गुस्सा दिलाते हैं; और हम एक मुसतइद और चौकन्ना रहने वाला गिरोह हैं।"

57-58. इस तरह हम उन्हें बाग़ों और चश्मों, और ख़ज़ानों और अच्छे मक़ाम से निकाल लाए;

59. इसी तरह हम करते हैं, और उनका वारिस हमने बनी इसराईल को बना दिया।

60. सुबह तड़के उन्होंने उनका पीछा किया;

61. फिर जब दोनों गिरोहों ने एक दूसरे को देख लिया, तो मूसा के साथियों ने कहा, "हम तो पकड़े गए!"

62. उसने कहा, "हरगिज़ नहीं, मेरे साथ मेरा रब है; वह ज़रूर मेरी रहनुमाई करेगा"।

63. तब हमने मूसा की तरफ़ वही की कि "अपनी लाठी दरिया पर मार;" पस वह फट गया, और हर हिस्सा एक अज़ीम पहाड़ की तरह हो गया।

64. और हम दूसरों को भी क़रीब ले आए,

65. हमने मूसा को और उन सबको जो उसके साथ थे बचा लिया,

66. और दूसरों को ग़र्क़ कर दिया।

67. यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है, इसके बावजूद उनमें से अकसर मानने वाले नहीं।

फ़-लसौ-फ़ तअ्लमू-न,
ल-उक़त्तिअन्-न ऐदि-यकुम् व
अर्जु-लकुम् मिन् ख़िलाफ़िंव्-व
ल-उसल्लिबन्नकुम् अज्मअीन (49)
क़ालू ला ज़ै-र इन्ना इला रब्बिना
मुन्क़लिबून (50)
इन्ना नत्मअु अंय्यग़्फ़ि-र लना
रब्बुना ख़तायाना अन् कुन्ना
अव्वलल्-मुअ्मिनीन (51) ●
व औहैना इला मूसा अन् अस्रि
बिअिबादी इन्नकुम मुत्त-बअून (52)
फ़-अर्स-ल फ़िरऔनु फ़िल्मदाइनि
हाशिरीन (53)
इन्-न हाउला-इ लशिर्ज़ि-मतुन्
क़लीलून (54)
व इन्नहुम् लना लग़ाइज़ून (55)
व इन्ना ल-जमीअुन् हाज़िरून (56)
फ़-अख़्रज्नाहुम् मिन् जन्नातिंव्-व
अुयून (57)
व कुनूज़िंव्-व मक़ामिन् करीम (58)
कज़ालि-क, व औरस्नाहा बनी
इस्राईल (59)
फ़-अत्बअूहुम् मुश्रिक़ीन (60)
फ़-लम्मा तरा-अल्-जम्आनि क़ा-ल
अस्हाबु मूसा इन्ना लमुद्-रकून् (61)
क़ा-ल कल्ला इन्-न मअि-य रब्बी
स-यह्दीन (62)
फ़-औहैना इला मूसा अनिज़्रिब्
बिअ़साकल्-बह्-र, फ़न्फ़-ल-क
फ़का-न कुल्लु फ़िर्क़िन्
कत्तौदिल्-अ़ज़ीम (63)
व अज़्लफ़्ना सम्मल्-आ-ख़रीन
(64)
व अन्जैना मूसा व मम्-म-अहू
अज्मअीन (65)
सुम्-म अग़्रक़्नल्-आ-ख़रीन (66)
इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व
मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन
(67)

فَلَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۚ لَاُقَطِّعَنَّ اَيْدِيَكُمْ
وَاَرْجُلَكُمْ مِّنْ خِلَافٍ وَّلَاُوصَلِّبَنَّكُمْ
اَجْمَعِيْنَ ۝
قَالُوْا لَا ضَيْرَ ۖ اِنَّآ اِلٰى رَبِّنَا مُنْقَلِبُوْنَ ۝
اِنَّا نَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لَنَا رَبُّنَا خَطٰيٰنَآ
اَنْ كُنَّآ اَوَّلَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنْ اَسْرِ بِعِبَادِيْٓ
اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ۝
فَاَرْسَلَ فِرْعَوْنُ فِى الْمَدَآئِنِ حٰشِرِيْنَ ۝
اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَشِرْذِمَةٌ قَلِيْلُوْنَ ۝
وَاِنَّهُمْ لَنَا لَغَآئِظُوْنَ ۝
وَاِنَّا لَجَمِيْعٌ حٰذِرُوْنَ ۝
فَاَخْرَجْنٰهُمْ مِّنْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۝
وَّكُنُوْزٍ وَّمَقَامٍ كَرِيْمٍ ۝
كَذٰلِكَ ۚ وَاَوْرَثْنٰهَا بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ ۝
فَاَتْبَعُوْهُمْ مُّشْرِقِيْنَ ۝
فَلَمَّا تَرَآءَ الْجَمْعٰنِ قَالَ اَصْحٰبُ مُوْسٰٓى
اِنَّا لَمُدْرَكُوْنَ ۝
قَالَ كَلَّا ۚ اِنَّ مَعِىَ رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ ۝
فَاَوْحَيْنَآ اِلٰى مُوْسٰٓى اَنِ اضْرِبْ بِّعَصَاكَ
الْبَحْرَ ۖ فَانْفَلَقَ فَكَانَ كُلُّ فِرْقٍ كَالطَّوْدِ
الْعَظِيْمِ ۝
وَاَزْلَفْنَا ثَمَّ الْاٰخَرِيْنَ ۝
وَاَنْجَيْنَا مُوْسٰى وَمَنْ مَّعَهٗٓ اَجْمَعِيْنَ ۝
ثُمَّ اَغْرَقْنَا الْاٰخَرِيْنَ ۝
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً ۚ وَمَا كَانَ اَكْثَرُهُمْ
مُّؤْمِنِيْنَ ۝

68. और हक़ीक़त यह है कि तुम्हारा रब ही है जो बड़ा ज़बरदस्त, निहायत रहमवाला है।

69-70. और उन्हें इबराहीम का हाल सुनाओ, जब कि उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा, "तुम क्या पूजते हो?"

71. उन्होंने कहा, "हम बुतों की पूजा करते हैं, हम तो उन्हीं की सेवा में लगे रहेंगे"।

72. उसने कहा, "क्या ये तुम्हारी सुनते हैं जब तुम पुकारते हो,

73. या ये तुम्हें कुछ नफ़ा, या नुक़सान पहुंचाते हैं?"

74. उन्होंने कहा, "नहीं बल्कि हमने तो अपने बाप-दादा को ऐसा ही करते पाया है"।

75-76. उसने कहा, "क्या तुमने उनपर ग़ौर भी किया जिन्हें तुम पूजते हो, तुम और तुम्हारे अगले बाप-दादा?

77. वो सब मेरे दुश्मन हैं, सिवाय रब्बुल आलमीन के,

78. जिसने मुझे पैदा किया, और फिर वही मेरी रहनुमाई फ़रमाता है,

79. और वही है जो मुझे खिलाता और पिलाता है,

80. और जब मैं बीमार होता हूं, तो वही मुझे शिफ़ा देता है,

81. और वही है जो मुझे मारेगा, फिर मुझे ज़िन्दा करेगा।

82. और वही है जिससे मैं उम्मीद रखता हूं कि रोज़-ए-जज़ा को वह मेरी ख़ता बख़्श देगा।

83. ऐ मेरे रब, मुझे क़ुव्वत-ए-फ़ैसला अता कर, और मुझे सालेहीन के साथ मिला,

84. और बाद के आने वालों में मुझे सच्ची नेक नामी अता कर।

85. और मुझे नेमतों भरी जन्नत के वारिसों में शामिल फ़रमा।

86. और मेरे बाप को माफ़ कर दे, यक़ीनन वह गुमराहों में से है।

87. और मुझे उस दिन रूसवा न कर जब लोग ज़िन्दा करके उठाए जाएंगे,

88. जिस दिन न माल काम आएगा और न बेटे,

89. सिवाय इसके कि कोई सही सालिम दिल लेकर अल्लाह के पास आया हो"।

90. और जन्नत परहेज़गारों के लिए क़रीब लाई जाएगी।

91. और भड़कती आग गुमराहों के लिए बेनक़ाब कर दी जाएगी।

92-93. और उनसे कहा जाएगा, "कहां हैं वो जिन्हें तुम अल्लाह से हटकर पूजते रहे हो? क्या वो तुम्हारी कुछ

व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अज़ीज़ुर्रहीम (68) ●
वत्लु अलैहिम् न-ब-अ इब्राही-म ● (69)
इज़् क़ा-ल लि-अबीहि व क़ौमिही मा तअ्बुदून (70)
क़ालू नअ्बुदु अस्नामन् फ़-नज़ल्लु लहा आ़किफ़ीन (71)
क़ा-ल हल् यस्मअ़ूनकुम् इज़् तद्अ़ून (72)
औ यन्फ़अ़ूनकुम् औ यज़ुर्रून (73)
क़ालू बल् वजद्ना आबा-अना कज़ालि-क यफ़्अ़लून (74)
क़ा-ल अ-फ़-रऐतुम् मा कुन्तुम् तअ्बुदून (75)
अन्तुम् व आबाउकुमुल्-अक़्दमून (76)
फ़-इन्नहुम् अ़दुव्वुल्-ली इल्ला रब्बल्-आ़लमीन (77)
अल्लज़ी ख़-ल-क़नी फ़हु-व यह्दीन (78)
वल्लज़ी हु-व युत्अ़िमुनी व यस्क़ीन (79)
व इज़ा मरिज़्तु फ़हु-व यश्फ़ीन (80)
वल्लज़ी युमीतुनी सुम्-म युह्यीन (81)
वल्लज़ी अत्मअ़ु अंय्यग़्फ़ि-र ली ख़तीअती यौमद्दीन (82)
रब्बि हब् ली हुक्मंव्-व अल्हिक़्नी बिस्सालिहीन (83)
वज्अ़ल्ली लिसा-न सिद्क़िन् फ़िल्-आख़िरीन (84)
वज्अ़ल्नी मिंव्व-र-सति जन्नतिन्-नअ़ीम (85)
वग़्फ़िर् लि-अबी इन्नहू का-न मिनज़्ज़ाल्लीन (86)
व ला तुख़्ज़िनी यौ-म युब्अ़सून (87)
यौ-म ला यन्फ़अ़ु मालुंव्-व ला बनून (88)
इल्ला मन् अतल्ला-ह बि-क़ल्बिन् सलीम (89)
व उज़्लि-फ़तिल्-जन्नतु लिल्मुत्तक़ीन (90)
व बुर्रि-ज़तिल्-जहीमु लिल्ग़ावीन (91)
व क़ी-ल लहुम् ऐ-नमा कुन्तुम् तअ्बुदून (92)
मिन् दूनिल्लाहि, हल् यन्सुरूनकुम् औ

وَاِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيْزُ الرَّحِيْمُ ﴿٦٨﴾
وَاتْلُ عَلَيْهِمْ نَبَاَ اِبْرٰهِيْمَ ﴿٦٩﴾
اِذْ قَالَ لِاَبِيْهِ وَقَوْمِهٖ مَا تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٠﴾
قَالُوْا نَعْبُدُ اَصْنَامًا فَنَظَلُّ لَهَا عٰكِفِيْنَ ﴿٧١﴾
قَالَ هَلْ يَسْمَعُوْنَكُمْ اِذْ تَدْعُوْنَ ﴿٧٢﴾
اَوْ يَنْفَعُوْنَكُمْ اَوْ يَضُرُّوْنَ ﴿٧٣﴾
قَالُوْا بَلْ وَجَدْنَآ اٰبَآءَنَا كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٧٤﴾
قَالَ اَفَرَءَيْتُمْ مَّا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٧٥﴾
اَنْتُمْ وَاٰبَآؤُكُمُ الْاَقْدَمُوْنَ ﴿٧٦﴾
فَاِنَّهُمْ عَدُوٌّ لِّيْٓ اِلَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ﴿٧٧﴾
الَّذِيْ خَلَقَنِيْ فَهُوَ يَهْدِيْنِ ﴿٧٨﴾
وَالَّذِيْ هُوَ يُطْعِمُنِيْ وَيَسْقِيْنِ ﴿٧٩﴾
وَاِذَا مَرِضْتُ فَهُوَ يَشْفِيْنِ ﴿٨٠﴾
وَالَّذِيْ يُمِيْتُنِيْ ثُمَّ يُحْيِيْنِ ﴿٨١﴾
وَالَّذِيْٓ اَطْمَعُ اَنْ يَّغْفِرَ لِيْ خَطِيْٓـَٔتِيْ
يَوْمَ الدِّيْنِ ﴿٨٢﴾
رَبِّ هَبْ لِيْ حُكْمًا وَّاَلْحِقْنِيْ بِالصّٰلِحِيْنَ ﴿٨٣﴾
وَاجْعَلْ لِّيْ لِسَانَ صِدْقٍ فِي الْاٰخِرِيْنَ ﴿٨٤﴾
وَاجْعَلْنِيْ مِنْ وَّرَثَةِ جَنَّةِ النَّعِيْمِ ﴿٨٥﴾
وَاغْفِرْ لِاَبِيْٓ اِنَّهٗ كَانَ مِنَ الضَّآلِّيْنَ ﴿٨٦﴾
وَلَا تُخْزِنِيْ يَوْمَ يُبْعَثُوْنَ ﴿٨٧﴾
يَوْمَ لَا يَنْفَعُ مَالٌ وَّلَا بَنُوْنَ ﴿٨٨﴾
اِلَّا مَنْ اَتَى اللّٰهَ بِقَلْبٍ سَلِيْمٍ ﴿٨٩﴾
وَاُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ﴿٩٠﴾
وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِلْغٰوِيْنَ ﴿٩١﴾
وَقِيْلَ لَهُمْ اَيْنَمَا كُنْتُمْ تَعْبُدُوْنَ ﴿٩٢﴾
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ هَلْ يَنْصُرُوْنَكُمْ اَوْ

मदद करते हैं या अपना ही बचाव कर सकते हैं?"

94-95. फिर वो उसमें औंधे झोंक दिए जाएंगे, वो और बहके हुए और इबलीस के लश्कर सबके सब।

96. वो वहां बाहम झगड़ते हुए कहेंगे,

97. "बख़ुदा यक़ीनन हम सरीह गुमराही में थे,

98. जबकि हम तुम्हें रब्बुल आलमीन के बराबर ठहरा रहे थे।

99. और हमें तो बस उन मुजरिमों ने ही गुमराह किया;

100. अब न हमारा कोई सिफ़ारिशी है,

101. और न जिगरी दोस्त,

102. काश हमें एक बार फिर पलटना होता, तो हम मोमिनीन में से हो जाते!"

103. यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है, इसके बावजूद उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं।

104. और हक़ीक़त यह है कि तुम्हारा रब ही है जो बड़ा ज़बरदस्त, निहायत रहमवाला है।

105. नूह की क़ौम ने रसूलों को झुठलाया,

106. जब कि उनसे उनके भाई नूह ने कहा, "क्या तुम डर नहीं रखते?

107. यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूं,

108. लिहाज़ा अल्लाह का डर रखो, और मेरा कहा मानो।

109. और मैं इसपर तुमसे कोई अजर तलब नहीं करता, मेरा अजर तो बस सारे जहां के रब के ज़िम्मे है,

110. पस अल्लाह का डर रखो, और मेरी इताअत करो"।

111. उन्होंने कहा, "क्या हम तेरी बात मान लें, जबकि तेरी पैरवी तो बहुत ही रज़ील लोगों ने इख़्तियार की है?"

112. उसने कहा, "मुझे क्या मालूम कि वो क्या करते रहे हैं?

113. उनका हिसाब तो बस मेरे रब के ज़िम्मे है, काश कि तुम शऊर से काम लेते।

114. और मैं अहले ईमान को धुत्कारने वाला नहीं हूं;

115. मैं तो बस एक साफ़-साफ़ ख़बरदार करनेवाला हूं"।

116. उन्होंने कहा, "अगर तू बाज़ न आया, ऐ नूह! तो तू संगसार होकर रहेगा"।

यन्तसिरून (93)
फ़कुब्किबू फ़ीहा हुम् वल्ग़ावून (94)
व जुनूदु इब्ली-स अज्मऊन (95)
क़ालू व हुम् फ़ीहा यख़्तसिमून (96)
तल्लाहि इन् कुन्ना लफ़ी ज़लालिम् मुबीन (97)
इज़् नुसव्वीकुम् बिरब्बिल्-आलमीन (98)
व मा अज़ल्लना इल्लल्-मुज्रिमून (99)
फ़मा लना मिन् शाफ़िईन (100)
व ला सदीक़िन् हमीम (101)
फ़लौ अन्-न लना कर्र-तन् फ़-नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (102)
इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (103)
व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अज़ीज़ुर्-रहीम (104) ●
कज़्ज़बत् क़ौमु नूहि-निल्-मुर्सलीन (105)
इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् नूहुन् अला तत्तक़ून (106)
इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (107)
फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (108)
व मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आलमीन (109)
फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (110)
क़ालू अनुअ्मिनु ल-क वत्त-ब-अ़कल्-अर्ज़लून (111)
क़ा-ल व मा अ़िल्मी बिमा कानू यअ्मलून (112)
इन् हिसाबुहुम् इल्ला अ़ला रब्बी लौ तश्अुरून (113)
व मा अ-न बितारिदिल्-मुअ्मिनीन (114)
इन् अ-न इल्ला नज़ीरुम्-मुबीन (115)
क़ालू ल-इल्लम् तन्तहि या नूहु ल-तकूनन्-न मिनल्-मर्जूमीन (116)

يَنْتَصِرُونَ ﴿٩٣﴾
فَكُبْكِبُوا فِيهَا هُمْ وَالْغَاوُونَ ﴿٩٤﴾
وَجُنُودُ إِبْلِيسَ أَجْمَعُونَ ﴿٩٥﴾
قَالُوا وَهُمْ فِيهَا يَخْتَصِمُونَ ﴿٩٦﴾
تَاللَّهِ إِنْ كُنَّا لَفِي ضَلَالٍ مُبِينٍ ﴿٩٧﴾
إِذْ نُسَوِّيكُمْ بِرَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿٩٨﴾
وَمَا أَضَلَّنَا إِلَّا الْمُجْرِمُونَ ﴿٩٩﴾
فَمَا لَنَا مِنْ شَافِعِينَ ﴿١٠٠﴾
وَلَا صَدِيقٍ حَمِيمٍ ﴿١٠١﴾
فَلَوْ أَنَّ لَنَا كَرَّةً فَنَكُونَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١٠٢﴾
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ﴿١٠٣﴾
ع وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ﴿١٠٤﴾
كَذَّبَتْ قَوْمُ نُوحٍ الْمُرْسَلِينَ ﴿١٠٥﴾
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ نُوحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ﴿١٠٦﴾
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ﴿١٠٧﴾
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١٠٨﴾
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ﴿١٠٩﴾
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ﴿١١٠﴾
قَالُوا أَنُؤْمِنُ لَكَ وَاتَّبَعَكَ الْأَرْذَلُونَ ﴿١١١﴾
قَالَ وَمَا عِلْمِي بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ﴿١١٢﴾
إِنْ حِسَابُهُمْ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّي ۖ لَوْ تَشْعُرُونَ ﴿١١٣﴾
وَمَا أَنَا بِطَارِدِ الْمُؤْمِنِينَ ﴿١١٤﴾
إِنْ أَنَا إِلَّا نَذِيرٌ مُبِينٌ ﴿١١٥﴾
قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا نُوحُ لَتَكُونَنَّ
مِنَ الْمَرْجُومِينَ ﴿١١٦﴾

117. उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मेरी क़ौम ने तो मुझे झुटला दिया,

118. अब मेरे और उनके दरमियान दो टूक फ़ैसला कर दे, और मुझे और जो अहले ईमान मेरे साथ हैं उन्हें नजात दे"।

119. पस हमने उसे, और जो उसके साथ भरी हुई कश्ती में थे उन्हें बचा लिया,

120. और उसके बाद बाक़ी लोगों को ग़र्क़ कर दिया।

121. यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है, इसके बावजूद उनमें से अकसर मानने वाले नहीं।

122. और हक़ीक़त यह है कि तुम्हारा रब ही है जो बड़ा ज़बरदस्त, निहायत रहमवाला है।

123. आद ने रसूलों को झुटलाया,

124. जबकि उनके भाई हूद ने उनसे कहा, "क्या तुम डर नहीं रखते?

125. मैं तो तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूं,

126. लिहाज़ा तुम अल्लाह का डर रखो, और मेरी इताअत करो।

127. मैं इसपर तुमसे कोई अजर नहीं तलब करता, मेरा अजर तो बस सारे जहां के रब के ज़िम्मे है"।

128. "क्या तुम हर बुलन्दी पर अबस एक यादगार तामीर करते रहोगे,

129. और शानदार महल बनाते रहोगे, गोया तुम्हें हमेशा रहना है?

130. और जब किसी पर हाथ डालते हो, तो बिल्कुल जाबिर बनकर हाथ डालते हो!

131. पस अल्लाह का डर रखो, और मेरी इताअत करो;

132. उसका डर रखो जिसने तुम्हें वो चीज़ें पहुंचाई जिनको तुम जानते हो,

133. उसने तुम्हारी मदद की चौपायों और बेटों से,

134. और बाग़ों और चश्मों से।

135. यक़ीनन मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है"।

136. उन्होंने कहा, "हमारे लिए यकसां है, ख़्वाह तुम नसीहत करो, या नसीहत करने वाले न बनो,

137. यह तो बस पहले लोगों की पुरानी आदत है।

138. और हमें हरगिज़ अज़ाब न दिया जाएगा"।

139. आख़िरकार उन्होंने उसे झुटला दिया तो हमने उन्हें हलाक कर दिया।

का-ल रब्बि इन्-न क़ौमी कज़्ज़बून (117) ●

फ़फ़्तह् बैनी व बैनहुम् फ़त्हंव्-व नज्जिनी व मम्-मअ़ि-य मिनल्-मुअ्मिनीन (118)

फ़-अन्जैनाहु व मम्-म-अ़हू फ़िल्फ़ुल्किल्-मश्हून (119)

सुम्-म अग़्रक़्ना बअ्दुल्-बाक़ीन (120)

इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन् व मा का-न अक्सरुहुम्-मुअ्मिनीन (121)

व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (122) ●

कज़्ज़-बत् आ़दु-निल्-मुर्-सलीन (123)

इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् हूदुन् अला तत्तक़ून (124)

इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (125)

फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून (126)

व मा असअलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन (127)

अ-तब्नू-न बिकुल्लि रीअ़िन् आ-यतन् तअ्-बसून (128)

व तत्तख़िज़ू-न मसानि-अ़ लअ़ल्लकुम् तख़्लुदून (129)

व इज़ा ब-तश्तुम् ब-तश्तुम् जब्बारीन (130)

फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअ़ून (131)

वत्तक़ुल्लज़ी अ-मद्दकुम् बिमा तअ्लमून (132)

अ-मद्दकुम् बिअन्आ़मिंव्-व बनीन (133)

व जन्नातिंव्-व अ़ुयून (134)

इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (135)

क़ालू सवाउन् अ़लैना अ-वअ़ज़्-त अम् लम् तकुम् मिनल्-वाअ़िज़ीन (136)

इन् हाज़ा इल्ला ख़ुलुक़ुल्-अव्वलीन (137)

व मा नह्नु बिमु-अ़ज़्ज़बीन (138)

फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अह्लक्नाहुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्,

قَالَ رَبِّ إِنَّ قَوْمِي كَذَّبُونِ ۝١١٧
فَافْتَحْ بَيْنِي وَبَيْنَهُمْ فَتْحًا وَنَجِّنِي
وَمَن مَّعِيَ مِنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝١١٨
فَأَنجَيْنَاهُ وَمَن مَّعَهُ فِي الْفُلْكِ الْمَشْحُونِ ۝١١٩
ثُمَّ أَغْرَقْنَا بَعْدُ الْبَاقِينَ ۝١٢٠
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُم
مُّؤْمِنِينَ ۝١٢١
وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝١٢٢
كَذَّبَتْ عَادٌ الْمُرْسَلِينَ ۝١٢٣
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ هُودٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝١٢٤
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝١٢٥
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝١٢٦
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝١٢٧
أَتَبْنُونَ بِكُلِّ رِيعٍ آيَةً تَعْبَثُونَ ۝١٢٨
وَتَتَّخِذُونَ مَصَانِعَ لَعَلَّكُمْ تَخْلُدُونَ ۝١٢٩
وَإِذَا بَطَشْتُم بَطَشْتُمْ جَبَّارِينَ ۝١٣٠
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝١٣١
وَاتَّقُوا الَّذِي أَمَدَّكُم بِمَا تَعْلَمُونَ ۝١٣٢
أَمَدَّكُم بِأَنْعَامٍ وَبَنِينَ ۝١٣٣
وَجَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝١٣٤
إِنِّي أَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝١٣٥
قَالُوا سَوَاءٌ عَلَيْنَا أَوَعَظْتَ أَمْ لَمْ تَكُن
مِّنَ الْوَاعِظِينَ ۝١٣٦
إِنْ هَٰذَا إِلَّا خُلُقُ الْأَوَّلِينَ ۝١٣٧
وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِينَ ۝١٣٨
فَكَذَّبُوهُ فَأَهْلَكْنَاهُمْ ۗ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ

यकीनन इसमें एक बड़ी निशानी है। इसके बावजूद उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं।

140. और हकीकत यह है कि तुम्हारा रब ही है जो बड़ा ज़बरदस्त, निहायत रहमवाला है।

141. समूद ने रसूलों को झुटलाया,

142. जबकि उनके भाई सालेह ने उनसे कहा, "क्या तुम डर नहीं रखते?

143. बेशक मैं तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूं,

144. लिहाज़ा तुम अल्लाह का डर रखो, और मेरी बात मानो।

145. मैं इसपर तुमसे कोई अजर नहीं तलब करता, मेरा अजर तो बस सारे जहान के रब के ज़िम्मे है।

146. क्या तुम उन चीज़ों के दरमियान जो यहां हैं हर ख़तरे से महफूज़ छोड़ दिए जाओगे?

147-148. बाग़ों और चश्मों, और खेतों और उन खजूरों में जिनके खोशे तर व ताज़ा और गुंथे हुए हैं।

149. तुम पहाड़ों को काट-काटकर इतराते हुए घर बनाते हो।

150. पस अल्लाह का डर रखो, और मेरी इताअत करो।

151-152. और उन हुदूद से गुज़र जाने वालों की इताअत न करो जो ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं, और इसलाह का काम नहीं करते"।

153. उन्होंने कहा, "तू तो बस जादू का मारा हुआ है;

154. तू बस हमारे ही जैसा एक आदमी है; अगर तू सच्चा है तो कोई निशानी ले आ"।

155. उसने कहा, "यह ऊंटनी है, एक दिन पानी पीने की बारी इसकी है और एक मुतअय्यन दिन की बारी पानी लेने की तुम्हारे लिए है,

156. गज़न्द पहुंचाने के लिए उसे हाथ न लगाना वरना एक बड़े दिन का अज़ाब तुम्हें आ लेगा"।

157. लेकिन उन्होंने उसकी कूचें काट दीं, फिर पछताते रह गए।

158. आख़िरकार अज़ाब ने उन्हें आ दबोचा। यकीनन इसमें एक बड़ी निशानी है। इसके बावजूद उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं।

159. और हकीकत यह है कि तुम्हारा रब ही है जो बड़ा ज़बरदस्त, निहायत रहम वाला है।

160. लूत की कौम ने रसूलों को झुटलाया,

व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (139)
व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अज़ीज़ुर्-रहीम (140) ●
कज़्ज़-बत् समूदुल्-मुर्सलीन (141)
इज़् का-ल लहुम् अख़ूहुम् सालिहुन् अला तत्तकून (142)
इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (143)
फ़त्तकुल्ला-ह व अतीऊन (144)
व मा अस्अलुकुम अ़लैहिमिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आलमीन (145)
अ-तुत्रकू-न फ़ी मा हाहुना आमिनीन (146)
फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयून (147)
व ज़ुरूअ़िंव् व नख़्लिन् तल्अ़ुहा हज़ीम (148)
व तन्हितू-न मिनल्-जिबालि बुयूतन् फ़ारिहीन (149)
फ़त्तकुल्ला-ह व अतीऊन (150)
व ला तुतीअ़ू अम्रल्-मुस्रिफ़ीन (151)
अल्लज़ी-न युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून (152)
कालू इन्नमा अन्-त मिनल्-मुसह्हरीन (153)
मा अन्-त इल्ला ब-शरुम् मिस्लुना फ़अ्ति बिआ-यतिन् इन्-कुन्-त मिनस्सादिकीन (154)
का-ल हाज़िही ना-कतुल्-लहा शिर्बुंव्-व लकुम् शिर्बु यौमिम्-मअ्लूम (155)
व ला तमस्सूहा बिसूइन् फ़-यअ्ख़ु-ज़कुम् अ़ज़ाबु यौमिन् अ़ज़ीम (156)
फ़-अ-क़रूहा फ़-अस्बहू नादिमीन (157)
फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्-अ़ज़ाबु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (158)
व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अज़ीज़ुर्-रहीम (159) ●
कज़्ज़-बत् कौमु लूति-निल्-मुर्सलीन (160)

وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝١٣٩
ع وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝١٤٠
كَذَّبَتْ ثَمُودُ الْمُرْسَلِينَ ۝١٤١
إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ صَالِحٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝١٤٢
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝١٤٣
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝١٤٤
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ إِنْ
أَجْرِيَ إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝١٤٥
أَتُتْرَكُونَ فِي مَا هَاهُنَا آمِنِينَ ۝١٤٦
فِي جَنَّاتٍ وَعُيُونٍ ۝١٤٧
وَزُرُوعٍ وَنَخْلٍ طَلْعُهَا هَضِيمٌ ۝١٤٨
وَتَنْحِتُونَ مِنَ الْجِبَالِ بُيُوتًا فَارِهِينَ ۝١٤٩
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝١٥٠
وَلَا تُطِيعُوا أَمْرَ الْمُسْرِفِينَ ۝١٥١
الَّذِينَ يُفْسِدُونَ فِي الْأَرْضِ وَلَا يُصْلِحُونَ ۝١٥٢
قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝١٥٣
مَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا فَأْتِ بِآيَةٍ إِنْ
كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝١٥٤
قَالَ هَٰذِهِ نَاقَةٌ لَهَا شِرْبٌ وَلَكُمْ شِرْبُ
يَوْمٍ مَعْلُومٍ ۝١٥٥
وَلَا تَمَسُّوهَا بِسُوءٍ فَيَأْخُذَكُمْ عَذَابُ
يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝١٥٦
فَعَقَرُوهَا فَأَصْبَحُوا نَادِمِينَ ۝١٥٧
فَأَخَذَهُمُ الْعَذَابُ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً
وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ مُؤْمِنِينَ ۝١٥٨
ع وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝١٥٩
كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوطٍ الْمُرْسَلِينَ ۝١٦٠

161. जबकि उनके भाई लूत ने उनसे कहा "क्या तुम डर नहीं रखते?

162. मैं तो तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूं,

163. लिहाज़ा अल्लाह का डर रखो, और मेरी इताअत करो।

164. मैं इसपर तुमसे कोई अजर तलब नही करता, मेरा अजर तो सारे जहां के रब के ज़िम्मे है।

165. क्या तमाम ख़ल्क़ में से तुम ही ऐसे हो जो मर्दों के पास जाते हो,

166. और अपनी बीवियों को जिन्हें तुम्हारे रब ने तुम्हारे लिए पैदा किया छोड़ देते हो? इतना ही नहीं बल्कि तुम हद से गुज़रे हुए लोग हो"।

167. उन्होंने कहा, "अगर तू बाज़ न आया, ऐ लूत, तो तू ज़रूर ही निकाल बाहर किया जाएगा"।

168. उसने कहा, "मैं तुम्हारे अमल से सख़्त बेज़ार हूं।

169. ऐ मेरे रब, मुझे और मेरे घरवालों को जो कुछ ये करते हैं उसके अंजाम से बचा ले"।

170-171. आख़िरकार हमने उसे और उसके सारे घरवालों को बचा लिया, सिवाय एक बुढ़िया के जो पीछे रह जाने वालों में रही;

172. फिर बाक़ी दूसरों को हमने तबाह व बरबाद कर दिया,

173. और हमने उन पर एक बारिश बरसाई; और यह बारिश बहुत ही बुरी थी जो उन ख़बरदार किए जाने वालों पर की।

174. यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है, इसके बावजूद उनमें से अक्सर मानने वाले नहीं।

175. और हक़ीक़त यह है कि तुम्हारा रब ही बड़ा ज़बरदस्त, निहायत रहमवाला है।

176. अल-ऐका वालों ने रसूलों को झुटलाया।

177. जबकि शुऐब ने उनसे कहा, "क्या तुम डर नहीं रखते?

178. मैं तो तुम्हारे लिए एक अमानतदार रसूल हूं,

179. "लिहाज़ा अल्लाह का डर रखो, और मेरी इताअत करो।

180. मैं इसपर तुमसे कोई अजर तलब नहीं करता; मेरा अजर तो सारे जहान के रब के ज़िम्मे है।

181. "तुम पूरा-पूरा पैमाना भरो, और घाटा न दो,

इज़् क़ा-ल लहुम् अख़ूहुम् लूतुन् अला तत्तक़ून (161)

इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (162)

फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीऊन (163)

व मा असअलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन (164)

अ-तअ्तूनज़्ज़ुक्रा-न मिनल्-आ़लमीन (165)

व त-ज़रू-न मा ख़-ल-क़ लकुम् रब्बुकुम् मिन् अज़्वाजिकुम्, बल् अन्तुम् क़ौमुन् आ़दून (166)

क़ालू ल-इल्लम् तन्तहि या लूतु ल-तकूनन्-न मिनल्-मुख़रजीन (167)

क़ा-ल इन्नी लि-अ़-मलिकुम् मिनल्-क़ालीन (168)

रब्बि नज्जिनी व अह्ली मिम्मा यअ़्मलून (169)

फ़-नज्जैनाहु व अह्लहू अज्मअ़ीन (170)

इल्ला अ़जूज़न् फ़िल्-ग़ाबिरीन (171)

सुम्-म दम्मर्नल् आख़रीन (172)

व अम्तर्ना अ़लैहिम् म-तरन् फ़सा-अ म-तरुल्-मुन्ज़रीन (173)

इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन् व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (174)

व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (175) ●

कज़्ज़-ब अस्हाबुल्-ऐ-कतिल् मुर्-सलीन (176)

इज़् क़ा-ल लहुम् शुअ़ैबुन् अला तत्तक़ून (177)

इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (178)

फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीऊन (179)

व मा असअलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिन् इन् अज्रि-य इल्ला अ़ला रब्बिल्-आ़लमीन (180)

औफ़ुल्कै-ल व ला तकूनू मिनल्-मुख़्सिरीन (181)

إِذْ قَالَ لَهُمْ أَخُوهُمْ لُوطٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝١٦١
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝١٦٢
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝١٦٣
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۚ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝١٦٤
أَتَأْتُونَ الذُّكْرَانَ مِنَ الْعَالَمِينَ ۝١٦٥
وَتَذَرُونَ مَا خَلَقَ لَكُمْ رَبُّكُمْ مِنْ أَزْوَاجِكُمْ ۚ
بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ عَادُونَ ۝١٦٦
قَالُوا لَئِنْ لَمْ تَنْتَهِ يَا لُوطُ لَتَكُونَنَّ مِنَ
الْمُخْرَجِينَ ۝١٦٧
قَالَ إِنِّي لِعَمَلِكُمْ مِنَ الْقَالِينَ ۝١٦٨
رَبِّ نَجِّنِي وَأَهْلِي مِمَّا يَعْمَلُونَ ۝١٦٩
فَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ أَجْمَعِينَ ۝١٧٠
إِلَّا عَجُوزًا فِي الْغَابِرِينَ ۝١٧١
ثُمَّ دَمَّرْنَا الْآخَرِينَ ۝١٧٢
وَأَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَطَرًا ۖ فَسَاءَ مَطَرُ
الْمُنْذَرِينَ ۝١٧٣
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً ۖ وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝١٧٤
ع وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝١٧٥
كَذَّبَ أَصْحَابُ لْئَيْكَةِ الْمُرْسَلِينَ ۝١٧٦
إِذْ قَالَ لَهُمْ شُعَيْبٌ أَلَا تَتَّقُونَ ۝١٧٧
إِنِّي لَكُمْ رَسُولٌ أَمِينٌ ۝١٧٨
فَاتَّقُوا اللَّهَ وَأَطِيعُونِ ۝١٧٩
وَمَا أَسْأَلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ أَجْرٍ ۖ إِنْ أَجْرِيَ
إِلَّا عَلَىٰ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝١٨٠
أَوْفُوا الْكَيْلَ وَلَا تَكُونُوا مِنَ الْمُخْسِرِينَ ۝١٨١

182. और ठीक तराज़ू से तौलो।

183. और लोगों को उनकी चीज़ों में घाटा न दो, और ज़मीन में मुफ़्सिद बन कर रूसियाह मत हो,

184. उसका डर रखो जिसने तुम्हें और पहली नसलों को पैदा किया है"।

185. उन्होंने कहा, "तू तो बस जादू का मारा हुआ है;

186. और तू बस हमारे ही जैसा एक आदमी है; और हम तो तुझे झूटा समझते हैं।

187. फिर तू हम पर कोई आसमान का टुकड़ा गिरा दे, अगर तू सच्चा है"।

188. उसने कहा, "मेरा रब खूब जानता है जो कुछ तुम कर रहे हो"।

189. लेकिन उन्होंने उसे झुटला दिया; फिर साए वाले दिन के अज़ाब ने उन्हें आ लिया; यकीनन वह एक बड़े दिन का अज़ाब था।

190. यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है, इसके बावजूद उनमें से अकसर माननेवाले नहीं।

191. और हक़ीक़त यह है कि तुम्हारा रब ही है जो बड़ा ज़बरदस्त, निहायत रहमवाला है।

192. यक़ीनन यह सारे जहां के रब की नाज़िल करदा चीज़ है,

193–195. इसको साफ़ वाज़ेह अरबी ज़बान में लेकर तुम्हारे कल्ब पर मोतमिद फ़रिश्ता उतरा है ताकि तुम ख़बरदार करनेवाले हो।

196. और बेशक यह अगले लोगों के सहीफ़ों में भी मौजूद है।

197. क्या यह उनके लिए कोई निशानी नहीं है कि इसे बनी इसराईल के उलमा जानते हैं?

198. अगर हम इसे किसी अजमी पर उतारते।

199. और वह इसे उन्हें पढ़कर सुनाता, तब भी वो इसपर ईमान लानेवाले न होते।

200. इसी तरह हमने इसे मुजरिमों के दिलों में गुज़ारा है,

201. वो इसपर ईमान लाने के नहीं, जब तक कि दर्दनाक अज़ाब न देख लें।

202. फिर जब वह अचानक उनपर आ जाएगा और उन्हें ख़बर भी न होगी,

व ज़िनू बिल-क़िस्तासिल्-मुस्तक़ीम (182)

व ला तब्ख़सुन्ना-स अश्या-अहुम् व ला तअ्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (183)

वत्तक़ुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् वल्-जिबिल्ल- तल्-अव्वलीन (184)

क़ालू इन्नमा अन्-त मिनल्-मुसह्हरीन (185)

व मा अन्-त इल्ला ब-शरुम्-मिस्लुना व इन् नज़ुन्नु-क लमिनल-काज़िबीन (186)

फ़-अस्क़ित् अलैना कि-सफ़म्-मिनस्समा-इ इन् कुन्-त मिनस्सादिक़ीन (187)

क़ा-ल रब्बी अअ्लमु बिमा तअ्मलून (188)

फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-ख़-ज़हुम् अज़ाबु यौमिज़्ज़ुल्लति, इन्नहू का-न अज़ा-ब यौमिन् अज़ीम (189)

इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतन्, व मा का-न अक्सरुहुम् मुअ्मिनीन (190)

व इन्-न रब्ब-क लहुवल् अज़ीज़ुर्-रहीम (191) ●

व इन्नहू ल-तन्ज़ीलु रब्बिल्-आलमीन (192)

न-ज़-ल बिहिर्-रूहुल्-अमीन (193)

अ़ला क़ल्बि-क लि-तकू-न मिनल्-मुन्ज़िरीन (194)

बिलिसानिन् अ-रबिय्यिम्-मुबीन (195)

व इन्नहू लफ़ी ज़ुबुरिल्-अव्वलीन (196)

अ-व लम् यकुल्लहुम् आ-यतन् अंय्यअ्-ल-महू अु-लमा-उ बनी इस्राईल (197)

व लौ नज़्ज़ल्नाहु अ़ला बअ्ज़िल्-अअ्-जमीन (198)

फ़-क़-र-अहू अ़लैहिम् मा कानू बिही मुअ्मिनीन (199)

कज़ालि-क सलक्नाहु फ़ी क़ुलूबिल्-मुज्रिमीन (200)

ला युअ्मिनू-न बिही हत्ता य-रवुल्-अज़ाबल्-अलीम (201)

फ़-यअ्ति-यहुम् बग्-ततंव्-व हुम् ला यश्अुरून (202)

وَزِنُوا بِالْقِسْطَاسِ الْمُسْتَقِيمِ ۝
وَلَا تَبْخَسُوا النَّاسَ أَشْيَاءَهُمْ وَلَا تَعْثَوْا
فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝
وَاتَّقُوا الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالْجِبِلَّةَ الْأَوَّلِينَ ۝
قَالُوا إِنَّمَا أَنْتَ مِنَ الْمُسَحَّرِينَ ۝
وَمَا أَنْتَ إِلَّا بَشَرٌ مِثْلُنَا وَإِنْ نَظُنُّكَ
لَمِنَ الْكَاذِبِينَ ۝
فَأَسْقِطْ عَلَيْنَا كِسَفًا مِنَ السَّمَاءِ إِنْ
كُنْتَ مِنَ الصَّادِقِينَ ۝
قَالَ رَبِّي أَعْلَمُ بِمَا تَعْمَلُونَ ۝
فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَهُمْ عَذَابُ يَوْمِ الظُّلَّةِ
إِنَّهُ كَانَ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيمٍ ۝
إِنَّ فِي ذَٰلِكَ لَآيَةً وَمَا كَانَ أَكْثَرُهُمْ
مُؤْمِنِينَ ۝
ع وَإِنَّ رَبَّكَ لَهُوَ الْعَزِيزُ الرَّحِيمُ ۝
وَإِنَّهُ لَتَنْزِيلُ رَبِّ الْعَالَمِينَ ۝
نَزَلَ بِهِ الرُّوحُ الْأَمِينُ ۝
عَلَىٰ قَلْبِكَ لِتَكُونَ مِنَ الْمُنْذِرِينَ ۝
بِلِسَانٍ عَرَبِيٍّ مُبِينٍ ۝
وَإِنَّهُ لَفِي زُبُرِ الْأَوَّلِينَ ۝
أَوَلَمْ يَكُنْ لَهُمْ آيَةً أَنْ يَعْلَمَهُ عُلَمَاءُ
بَنِي إِسْرَائِيلَ ۝
وَلَوْ نَزَّلْنَاهُ عَلَىٰ بَعْضِ الْأَعْجَمِينَ ۝
فَقَرَأَهُ عَلَيْهِمْ مَا كَانُوا بِهِ مُؤْمِنِينَ ۝
كَذَٰلِكَ سَلَكْنَاهُ فِي قُلُوبِ الْمُجْرِمِينَ ۝
لَا يُؤْمِنُونَ بِهِ حَتَّىٰ يَرَوُا الْعَذَابَ الْأَلِيمَ ۝
فَيَأْتِيَهُمْ بَغْتَةً وَهُمْ لَا يَشْعُرُونَ ۝

203. तब वो कहेंगे, "क्या हमें कुछ मुहलत मिल सकती है?"

204. तो क्या ये हमारे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं?

205. क्या तुमने कुछ ग़ौर किया? अगर हम उन्हें कुछ साल तक ऐश करने दें,

206. फिर उनपर वह आ जाए जिससे उन्हें डराया जा रहा है,

207. तो जो ऐश उन्हें मिला होगा वह उनके कुछ काम न आएगा।

208-209. हमने कोई बस्ती भी इसके बग़ैर हलाक नहीं की कि उसके लिए ख़बरदार करने वाले याददिहानी के लिए मौजूद रहे हैं; और हम ज़ालिम नहीं हैं।

210. इसे शैतान लेकर नहीं उतरे हैं।

211. न यह उनके लायक़ ही है। और न यह उनके बस का है।

212. वो तो इसके सुनने से भी दूर कर दिए गए हैं।

213. पस अल्लाह के साथ दूसरे माबूद को न पुकारना वरना तुम्हें अज़ाब दिया जाएगा।

214. और अपने क़रीबतरीन ख़ानदान वालों को ख़बरदार करो।

215. और जिन अहले ईमान ने तुम्हारी पैरवी इख़्तियार की है उनके लिए अपने बाज़ू झुकाए रखो।

216. लेकिन अगर वो तुम्हारी नाफ़रमानी करें तो कह दो, "जो कुछ तुम कर रहे हो उससे मैं बरी-उज़्-ज़िम्मा हूं"।

217-218. और उस ज़बरदस्त, निहायत रहम करने वाले पर भरोसा रखो जो तुम्हें देख रहा होता है जब तुम खड़े होते हो।

219. और सजदा गुज़ार लोगों में तुम्हारी नक़्ल व हरकत पर भी वह निगाह रखता है।

220. बेशक वह ख़ूब सुनता, जानता है,

221. क्या मैं तुम्हें बताऊं कि शैतान किस पर उतरते हैं?

222. वो हर जालसाज़ गुनहगार पर उतरते हैं।

223. वो कान लगाते हैं और उनमें से अकसर झूटे होते हैं।

224. रहे शुअ़रा तो उनकी पैरवी बहके हुए लोग ही किया करते हैं;

225. क्या तुमने देखा नहीं कि वो हर वादी में सरगरदां फिरते हैं?

226. और कहते वह हैं जो करते नहीं।

227. — वो नहीं जो ईमान लाए, और नेक आमाल इख़्तियार किए, और

फ़-यक़ूलू हल् नह्नु मुन्ज़रून (203)
अ-फ़बि-अ़ज़ाबिना यस्तअ्जिलून (204)
अ-फ़-रऐ-त इम् मत्तअ्नाहुम् सिनीन (205)
सुम्-म जा-अहुम् मा कानू यू-अ़दून (206)
मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू युमत्तअून (207)
व मा अह्लक्ना मिन् क़र्-यतिन् इल्ला लहा मुन्ज़िरून (208)
ज़िक्रा व मा कुन्ना ज़ालिमीन (209)
व मा तनज़्ज़-लत् बिहिश्शयातीन (210)
व मा यम्बग़ी लहुम व मा यस्ततीअून (211)
इन्नहुम् अ़निस्सम्अ़ि ल-मअ्ज़ूलून (212)
फ़ला तद्अु मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़-तकू-न मिनल्-मुअ़ज़्ज़बीन (213)
व अन्ज़िर् अ़शी-र-तकल् अक़्रबीन (214)
वख़्फ़िज़् जना-ह-क लि-मनित्त-ब-अ़-क मिनल्-मुअ्मिनीन (215)
फ़-इन् अ़सौ-क फ़क़ुल् इन्नी बरीउम्-मिम्मा तअ्मलून (216)
व त-वक्कल् अ़लल्-अ़ज़ीज़िर्रहीम (217)
अल्लज़ी यरा-क ही-न तक़ूम (218)
व तक़ल्लु-ब-क फ़िस्साजिदीन (219)
इन्नहू हुवस्समीअुल्-अ़लीम (220)
हल् उनब्बिउकुम् अ़ला मन् तनज़्ज़लुश्शयातीन (221)
तनज़्ज़लु अ़ला कुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीम (222)
युल्क़ूनस्सम्-अ़ व अक्सरुहुम् काज़िबून (223)
वश्शु-अ़रा-उ यत्तबिअुहुमुल्-ग़ावून (224)
अलम् त-र अन्नहुम् फ़ी कुल्लि वादिंय्-यहीमून (225)
व अन्नहुम् यक़ूलू-न मा ला यफ़्अ़लून (226)
इल्लल्लज़ी-न .. आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति व

فَيَقُوۡلُوۡا هَلۡ نَحۡنُ مُنۡظَرُوۡنَ ۝٢٠٣
اَفَبِعَذَابِنَا يَسۡتَعۡجِلُوۡنَ ۝٢٠٤
اَفَرَءَيۡتَ اِنۡ مَّتَّعۡنٰهُمۡ سِنِيۡنَ ۝٢٠٥
ثُمَّ جَآءَهُمۡ مَّا كَانُوۡا يُوۡعَدُوۡنَ ۝٢٠٦
مَاۤ اَغۡنٰى عَنۡهُمۡ مَّا كَانُوۡا يُمَتَّعُوۡنَ ۝٢٠٧
مع وَمَاۤ اَهۡلَكۡنَا مِنۡ قَرۡيَةٍ اِلَّا لَهَا مُنۡذِرُوۡنَ ۝٢٠٨
ذِكۡرٰى ۛ وَمَا كُنَّا ظٰلِمِيۡنَ ۝٢٠٩
وَمَا تَنَزَّلَتۡ بِهِ الشَّيٰطِيۡنُ ۝٢١٠
وَمَا يَنۡۢبَغِىۡ لَهُمۡ وَمَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ ۝٢١١
اِنَّهُمۡ عَنِ السَّمۡعِ لَمَعۡزُوۡلُوۡنَ ۝٢١٢
فَلَا تَدۡعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ فَتَكُوۡنَ
مِنَ الۡمُعَذَّبِيۡنَ ۝٢١٣
وَاَنۡذِرۡ عَشِيۡرَتَكَ الۡاَقۡرَبِيۡنَ ۝٢١٤
وَاخۡفِضۡ جَنَاحَكَ لِمَنِ اتَّبَعَكَ مِنَ
الۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝٢١٥
فَاِنۡ عَصَوۡكَ فَقُلۡ اِنِّىۡ بَرِىۡٓءٌ مِّمَّا تَعۡمَلُوۡنَ ۝٢١٦
وَتَوَكَّلۡ عَلَى الۡعَزِيۡزِ الرَّحِيۡمِ ۝٢١٧
الَّذِىۡ يَرٰٮكَ حِيۡنَ تَقُوۡمُ ۝٢١٨
وَتَقَلُّبَكَ فِى السّٰجِدِيۡنَ ۝٢١٩
اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيۡعُ الۡعَلِيۡمُ ۝٢٢٠
هَلۡ اُنَبِّئُكُمۡ عَلٰى مَنۡ تَنَزَّلُ الشَّيٰطِيۡنُ ۝٢٢١
تَنَزَّلُ عَلٰى كُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيۡمٍ ۝٢٢٢
يُّلۡقُوۡنَ السَّمۡعَ وَاَكۡثَرُهُمۡ كٰذِبُوۡنَ ۝٢٢٣
وَالشُّعَرَآءُ يَتَّبِعُهُمُ الۡغَاوٗنَ ۝٢٢٤
اَلَمۡ تَرَ اَنَّهُمۡ فِىۡ كُلِّ وَادٍ يَّهِيۡمُوۡنَ ۝٢٢٥
وَاَنَّهُمۡ يَقُوۡلُوۡنَ مَا لَا يَفۡعَلُوۡنَ ۝٢٢٦
اِلَّا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَ

عند المتقدمين ١٢

अल्लाह को कसरत से याद किया, और इसके बाद कि उनपर जुल्म किया गया तो उन्होंने उसका मुकाबला किया; और जिन लोगों ने जुल्म किया उन्हें जल्द ही मालूम हो जाएगा कि वो किस जगह पलटते हैं।

सूरह अन-नम्ल मक्की

(आयतें 93, रुकूआत 7)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ता-सीन। ये आयतें जो कुरआन और एक वाज़ेह किताब की हैं।

2. हिदायत है, और खुशखबरी उन मोमिनों के लिए,

3. जो नमाज़ का एहतिमाम करते और ज़कात देते हैं, और वही हैं जो आख़िरत पर यकीन रखते हैं।

4. रहे वो लोग जो आख़िरत पर ईमान नहीं रखते, हमने उनके लिए उनके करतूतों को खुशनुमा बना दिया है, लिहाज़ा वो भटकते फिर रहे हैं;

5. वही लोग हैं जिनके लिए बुरा अज़ाब है, और वही हैं जो आख़िरत में निहायत ख़सारे में रहेंगे।

6. यकीनन तुम यह कुरआन एक बड़े हिकमतवाले, इल्मवाले की तरफ़ से पा रहे हो।

7. याद करो जबकि मूसा ने अपने घरवालों से कहा कि "मैंने एक आग-सी देखी है, मैं अभी वहां से तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आता हूं, या तुम्हारे पास कोई दहकता अंगारा लाता हूं, ताकि तुम तापो"।

8. फिर जब वह उसके पास पहुंचा, तो आवाज़ दी गई कि, "मुबारक है वह जो इस आग में है, और जो इसके ईर्द-गिर्द हैं। अज़ीम व बरतर है अल्लाह, सारे जहान का रब।

9. ऐ मूसा, वह तो मैं हूं अल्लाह, ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला।

10. तू अपनी लाठी डाल दे"। जब मूसा ने देखा कि वह बल खा रही है जैसे वह कोई सांप हो, तो वह पीठ फेरकर भागा और पीछे पलट कर न देखा। "ऐ मूसा, डर मत, बेशक रसूल मेरे हुज़ूर डरा नहीं करते,

11. सिवाय उसके जो कोई ज़्यादती कर गया हो, फिर बुराई के बाद, उसे भलाई से बदल दिया, तो मैं भी बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला हूं।

12. अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल, वह बग़ैर किसी नुक़्स के सफ़ेद

ज़-करुल्ला-ह कसीरंव्-वन्त-सरू मिम्-बअ्दि मा ज़ुलिमू, व स-यअ्-लमुल्लज़ी-न ज़-लमू अय्-य मुन्क़-लबिंय्-यन्क़लिबून (227) ●

27 सूरतुन्-नम्लि
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4879 अक्षर, 1167 शब्द, 93 आयतें और 7 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तॉ-सीन्, तिल्-क आयातुल्-कुर्आनि व किताबिम्-मुबीन (1)
हुदंव् व बुश्रा लिल्-मुअ्मिनीन (2)
अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्सला-त व युअ्तूनज़्ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् यूक़िनून (3)
इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति ज़य्यन्ना लहुम् अअ्मालहुम् फ़हुम् यअ्महून (4)
उलाइ-कल्लज़ी-न लहुम् सूउल्-अ़ज़ाबि व हुम् फ़िल्-आख़िरति हुमुल् अख़्सरून (5)
व इन्न-क लतु-लक़्क़ल्-कुर्आ-न मिल्लदुन् हकीमिन् अ़लीम ● (6)
इज़् क़ा-ल मूसा लिअह्लिही इन्नी आनस्तु नारन्, स-आतीकुम् मिन्हा बि-ख़-बरिन् औ आतीकुम् बिशिहाबिन् क़-बसिल् लअ़ल्लकुम् तस्तलून (7)
फ़-लम्मा जा-अहा नूदि-य अम्बूरि-क मन् फ़िन्नारि व मन् हौलहा, व सुब्हानल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन (8)
या मूसा इन्नहू अनल्लाहुल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (9)
व अल्क़ि अ़सा-क, फ़-लम्मा र-आहा तह्तज़्ज़ु क-अन्नहा जान्नुंव्-वल्ला मुद्बिरंव्-व लम् युअ़क़्क़िब्, या मूसा ला तख़फ़्, इन्नी ला यख़ाफ़ु ल-दय्यल्-मुर्सलून (10)
इल्ला मन् ज़-ल-म सुम्-म बद्द-ल हुस्नम् बअ्-द सूइन् फ़-इन्नी ग़फ़ूरुर्-रहीम (11)
व अद्ख़िल् य-द-क फ़ी जैबि-क तख़्रुज् बैज़ा-अ

ذَكَرُوا اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّانْتَصَرُوْا مِنْۢ
بَعْدِ مَا ظُلِمُوْا ؕ وَسَيَعْلَمُ الَّذِيْنَ
ظَلَمُوْۤا اَیَّ مُنْقَلَبٍ يَّنْقَلِبُوْنَ ۝٢٢٧ ع

سُوْرَةُ النَّمْلِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٩٣ رُكُوْعَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

طٰسٓ ۚ تِلْكَ اٰيٰتُ الْقُرْاٰنِ وَكِتَابٍ مُّبِيْنٍ ۝١ۙ
هُدًى وَّبُشْرٰى لِلْمُؤْمِنِيْنَ ۝٢ۙ
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ
وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٣
اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ زَيَّنَّا
لَهُمْ اَعْمَالَهُمْ فَهُمْ يَعْمَهُوْنَ ۝٤ؕ
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَهُمْ سُوْٓءُ الْعَذَابِ وَهُمْ
فِي الْاٰخِرَةِ هُمُ الْاَخْسَرُوْنَ ۝٥
وَاِنَّكَ لَتُلَقَّى الْقُرْاٰنَ مِنْ لَّدُنْ حَكِيْمٍ
عَلِيْمٍ ۝٦
اِذْ قَالَ مُوْسٰى لِاَهْلِهٖۤ اِنِّيْۤ اٰنَسْتُ نَارًا ؕ
سَاٰتِيْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ اٰتِيْكُمْ بِشِهَابٍ
قَبَسٍ لَّعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝٧
فَلَمَّا جَآءَهَا نُوْدِيَ اَنْۢ بُوْرِكَ مَنْ فِي النَّارِ
وَمَنْ حَوْلَهَا ؕ وَسُبْحٰنَ اللّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨
يٰمُوْسٰۤى اِنَّهٗۤ اَنَا اللّٰهُ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩ۙ
وَاَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا
جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّلَمْ يُعَقِّبْ ؕ يٰمُوْسٰى
لَا تَخَفْ ۫ اِنِّيْ لَا يَخَافُ لَدَيَّ الْمُرْسَلُوْنَ ۝١٠ۖۗ
اِلَّا مَنْ ظَلَمَ ثُمَّ بَدَّلَ حُسْنًاۢ بَعْدَ سُوْٓءٍ
فَاِنِّيْ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١١
وَاَدْخِلْ يَدَكَ فِيْ جَيْبِكَ تَخْرُجْ بَيْضَآءَ

चमकता निकलेगा। ये नौ निशानियों में से हैं फ़िरऔन और उसकी क़ौम की तरफ़ भेजने के लिए, यक़ीनन वो नाफ़रमान लोग हैं"।

13. मगर जब आंखें खोल देने वाली हमारी निशानियां उनके पास आई, तो उन्होंने कहा, "यह तो खुला हुआ जादू है"।

14. उन्होंने जुल्म और गुरूर व सरकशी से उनका इनकार कर दिया, हालांकि उनके जी को उनका यक़ीन हो चुका था, अब देख लो, इन मुफ़्सिदों का कैसा अंजाम हुआ।

15. हमने दाऊद और सुलैमान को बड़ा इल्म दिया था। और उन दोनों ने कहा, "सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है जिसने हमें अपने बहुत से मोमिन बन्दों के मुक़ाबले में फ़ज़ीलत अता की;"

16. सुलैमान दाऊद का वारिस हुआ और उसने कहा, "ऐ लोगो, हमें परिंदों की बोली सिखाई गई है, और हमें हर चीज़ दी गई है; यक़ीनन यह नुमाया फ़ज़्ल है"।

17. सुलैमान के जायज़े के लिए उसके लश्कर जिन्न और इनसानों और परिंदे में से जमा किए गए; फिर उनकी दर्जाबन्दी की जा रही थी;

18. यहां तक कि जब वो चींटियों की वादी में पहुंचे, तो एक चींटी ने कहा, "ऐ चींटियो, अपने घरों में दाख़िल हो जाओ, कहीं सुलैमान और उसके लश्कर तुम्हें कुचल न डालें, और उन्हें एहसास भी न हो"

19. पस वह उसकी बात पर खुश होकर मुस्कराया और कहा "मेरे रब, मुझे तौफ़ीक़ दे कि मैं तेरी उस नवाज़िश पर जो तूने मुझपर और मेरे मां-बाप पर की है, शुक्र अदा करूं, और यह कि मैं ऐसा नेक अमल करूं जो तुझे पसन्द आए; और अपनी रहमत से मुझे अपने नेक बन्दों में दाख़िल कर"।

20. उसने परिन्दों का जायज़ा लिया, तो कहा कि "क्या बात है कि मैं हुदहुद को नहीं देख रहा हूं? (वह यहीं कहीं है) या वह ग़ायब हो गया है?

21. मैं उसे सख़्त सज़ा दूंगा, या उसे ज़बह ही कर डालूंगा, या फिर वह मेरे सामने कोई वाज़ेह उज़्र पेश करे"।

22. फिर कुछ ज़्यादा देर नहीं ठहरा कि उसने आ कर कहा "मैंने वह

मिन् ग़ैरि सूइन्, फ़ी तिस्अ़ आयातिन् इला फ़िर्औ़-न व क़ौमिही, इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन (12)

फ़-लम्मा जाअत्हुम् आयातुना मुब्सि-रतन् क़ालू हाज़ा सिह्रुम्-मुबीन (13)

व ज-हदू बिहा वस्तै-क़नत्हा अन्फ़ुसुहुम् ज़ुल्मंव्-व अ़ुलुव्वन्, फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुफ़्सिदीन (14)●

व ल-क़द् आतैना दावू-द व सुलैमा-न अ़िल्मन् व क़ालल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी फ़ज़्ज़-लना अ़ला कसीरिम् मिन् अ़िबादिहिल्-मुअ्मिनीन (15)

व वरि-स सुलैमानु दावू-द व क़ा-ल या अय्युहन्नासु अ़ुल्लिम्ना मन्तिक़त्तैरि व ऊतीना मिन् कुल्लि शैइन्, इन्-न हाज़ा ल-हुवल् फ़ज़्लुल्-मुबीन (16)

व हुशि-र लिसुलैमा-न जुनूदुहू मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि वत्तैरि फ़हुम् यू-ज़अ़ून (17)

हत्ता इज़ा अतौ अ़ला वादिन्नम्लि क़ालत् नम्लतुंय्-या अय्युहन्-नम्लुद्ख़ुलू मसाकि-नकुम् ला यह्तिमन्नकुम् सुलैमानु व जुनूदुहू व हुम् ला यश्अ़ुरून (18)

फ़-तबस्स-म ज़ाहिकम्-मिन् क़ौलिहा व क़ा-ल रब्बि औज़िअ़्नी अन् अश्कु-र निअ़्-म-तकल्लती अन्अ़म्-त अ़लय्-य व अ़ला वालिदय्-य व अन् अअ़्-म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु व अद्ख़िल्नी बि-रह्मति-क फ़ी अ़िबादिकस्-सालिहीन (19)

व त-फ़क़्क़-दत्तै-र फ़क़ा-ल मा लि-य ला अरल्-हुद्हु-द अम् का-न मिनल्-ग़ाइबीन (20)

ल-उअ़ज़्ज़िबन्नहू अ़ज़ाबन् शदीदन् औ ल-अज़्ब-हन्नहू औ ल-यअ्ति-यन्नी बिसुल्तानिम्-मुबीन (21)

फ़-म-क-स ग़ै-र बअ़ीदिन् फ़क़ा-ल अहत्तु बिमा

مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ فِيْ تِسْعِ اٰيٰتٍ اِلٰى فِرْعَوْنَ
وَقَوْمِهٖ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝١٢
فَلَمَّا جَآءَتْهُمْ اٰيٰتُنَا مُبْصِرَةً قَالُوْا هٰذَا
سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٣
وَجَحَدُوْا بِهَا وَاسْتَيْقَنَتْهَآ اَنْفُسُهُمْ ظُلْمًا
وَّعُلُوًّا ۭ فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُفْسِدِيْنَ ۝١٤
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ وَسُلَيْمٰنَ عِلْمًا ۚ وَقَالَا
الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ فَضَّلَنَا عَلٰى كَثِيْرٍ
مِّنْ عِبَادِهِ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٥
وَوَرِثَ سُلَيْمٰنُ دَاوٗدَ وَقَالَ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ
عُلِّمْنَا مَنْطِقَ الطَّيْرِ وَاُوْتِيْنَا مِنْ كُلِّ
شَيْءٍ ۭ اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَضْلُ الْمُبِيْنُ ۝١٦
وَحُشِرَ لِسُلَيْمٰنَ جُنُوْدُهٗ مِنَ الْجِنِّ
وَالْاِنْسِ وَالطَّيْرِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝١٧
حَتّٰٓى اِذَآ اَتَوْا عَلٰى وَادِ النَّمْلِ ۙ قَالَتْ
نَمْلَةٌ يّٰٓاَيُّهَا النَّمْلُ ادْخُلُوْا مَسٰكِنَكُمْ ۚ
لَا يَحْطِمَنَّكُمْ سُلَيْمٰنُ وَجُنُوْدُهٗ ۙ
وَهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١٨
فَتَبَسَّمَ ضَاحِكًا مِّنْ قَوْلِهَا وَقَالَ رَبِّ
اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ
عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ
وَاَدْخِلْنِيْ بِرَحْمَتِكَ فِيْ عِبَادِكَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١٩
وَتَفَقَّدَ الطَّيْرَ فَقَالَ مَا لِيَ لَآ اَرَى
الْهُدْهُدَ ڮ اَمْ كَانَ مِنَ الْغَاۗىِٕبِيْنَ ۝٢٠
لَاُعَذِّبَنَّهٗ عَذَابًا شَدِيْدًا اَوْ لَاَاذْبَحَنَّهٗٓ
اَوْ لَيَاْتِيَنِّيْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝٢١
فَمَكَثَ غَيْرَ بَعِيْدٍ فَقَالَ اَحَطْتُّ بِمَا

मालूमात हासिल की हैं जो आपके इल्म में नहीं हैं, मैं सबा से आपके पास एक यक़ीनी इत्तिला लेकर आया हूं।

23. मैंने एक औरत को उनपर हुकूमत करते पाया है, उसे हर चीज़ हासिल है, और वह एक बड़े तख़्त की मालिक है।

24. मैंने उसे और उसकी क़ौम को अल्लाह से हटकर, सूरज को सजदा करते हुए पाया, शैतान ने उनके आमाल उनके लिए खुशनुमा बना दिए हैं और उन्हें सही राह से रोक दिया है, — पस वो रास्ता नहीं पा रहे हैं,

25. — कि अल्लाह को सजदा न करें, जो आसमानों और ज़मीन की पोशीदा चीज़ें निकालता है; और जानता है जो कुछ भी तुम छुपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो।

26. अल्लाह, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह अर्श-ए-अज़ीम का रब है"।

27. उसने कहा, "अभी हम देख लेते हैं कि तूने सच कहा, या तू झूटा है।

28. मेरा यह ख़त लेकर जा और इसे उन लोगों की तरफ़ डाल दे फिर उनके पास से अलग हटकर देख कि वो क्या रद्दे अमल ज़ाहिर करते हैं।

29. वह बोली "ऐ सरदारो! मेरी तरफ़ एक गिरामी नामा डाला गया है।

30. वह सुलैमान की तरफ़ से है, और वह यह है कि, 'अल्लाह के नाम से, जो बड़ा मेहरबान, निहायत रहम वाला है।

31. यह कि मेरे मुक़ाबले में सरकशी न करो, और फ़रमांबरदार बनकर मेरे पास आओ!'"

32. उसने कहा, "ऐ सरदारो! मेरे मुआमले में मुझे मश्वरा दो; मैं किसी मुआमले का फ़ैसला नहीं करती जब तक कि तुम मेरे पास मौजूद न हो"।

33. उन्होंने कहा, "हम ताक़तवर और बड़ी जंगी सलाहियत के मालिक हैं। और मुआमला आपके इख़्तियार में है; पस आप देख लें कि आपको क्या हुक्म देना है"।

34. उसने कहा, "बादशाह जब किसी बस्ती में दाख़िल होते हैं तो उसे ख़राब कर देते हैं और वहां के इज़्ज़तवालों को ज़लील करके रख देते हैं और वो ऐसा ही करेंगे।

35. मैं उनके पास एक तोहफ़ा भेजती हूं, फिर देखती हूं कि सफ़ीर

लम् तुहित् बिही व जिअ्तु-क मिन् स-बइम् बि-न बइंय्-यक़ीन (22)
इन्नी वजत्तुम्-र-अतन् तम्लिकुहुम् व ऊतियत् मिन् कुल्लि शैइंव्-व लहा अर्शुन् अज़ीम (23)
वजत्तुहा व क़ौमहा यस्जुदू-न लिश्शम्सि मिन् दूनिल्लाहि व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ्मालहुम् फ़-सद्दहुम् अनिस्सबीलि फ़हुम् ला यह्तदून (24)
अल्ला यस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी युख़्रिजुल्-ख़ब्-अ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्लमु मा तुख़्फ़ू-न व मा तुअ्लिनून (25)
अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व रब्बुल्-अर्शिल्-अज़ीम (26)
क़ा-ल सनन्ज़ुरु अ-सदक़्-त अम् कुन्-त मिनल्-काज़िबीन (27)
इज़्हब्-बिकिताबी हाज़ा फ़-अल्क़िह् इलैहिम् सुम्-म तवल्-ल अन्हुम् फ़न्ज़ुर् माज़ा यर्जिअून (28)
क़ालत् या अय्युहल्म-लउ इन्नी उल्क़ि-य इलय्-य किताबुन् करीम (29)
इन्नहू मिन् सुलैमा-न व इन्नहू बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम (30)
अल्ला तअ्लू अलय्-य वअ्तूनी मुस्लिमीन (31) ●
क़ालत् या अय्युहल् म-लउ अफ़्तूनी फ़ी अम्री मा कुन्तु क़ाति-अतन् अम्रन् हत्ता तश्हदून (32)
क़ालू नह्नु उलू क़ुव्वतिंव्-व उलू बअ्सिन् शदीदिंव्-वल्-अम्रु इलैकि फ़न्ज़ुरी माज़ा तअ्मुरीन (33)
क़ालत् इन्नल्-मुलू-क इज़ा द-ख़लू क़र्-यतन् अफ़्सदूहा व ज-अलू अअिज़्ज़-त-अह्लिहा अज़िल्ल-तन् व कज़ालि-क यफ़्अलून (34)
व इन्नी मुर्सि-लतुन् इलैहिम् बि-हदिय्यतिन् फ़नाज़ि-रतुम् बि-म

لَمْ تُحِطْ بِهٖ وَجِئْتُكَ مِنْ سَبَاٍۭ بِنَبَاٍ
يَّقِيْنٍ ﴿٢٢﴾
اِنِّيْ وَجَدْتُّ امْرَاَةً تَمْلِكُهُمْ وَاُوْتِيَتْ
مِنْ كُلِّ شَيْءٍ وَّلَهَا عَرْشٌ عَظِيْمٌ ﴿٢٣﴾
وَجَدْتُّهَا وَقَوْمَهَا يَسْجُدُوْنَ لِلشَّمْسِ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ اَعْمَالَهُمْ
فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ فَهُمْ لَا يَهْتَدُوْنَ ﴿٢٤﴾
اَلَّا يَسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِيْ يُخْرِجُ الْخَبْءَ فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ مَا تُخْفُوْنَ
وَمَا تُعْلِنُوْنَ ﴿٢٥﴾
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ رَبُّ الْعَرْشِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٦﴾
قَالَ سَنَنْظُرُ اَصَدَقْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ﴿٢٧﴾
اِذْهَبْ بِّكِتٰبِيْ هٰذَا فَاَلْقِهْ اِلَيْهِمْ ثُمَّ
تَوَلَّ عَنْهُمْ فَانْظُرْ مَاذَا يَرْجِعُوْنَ ﴿٢٨﴾
قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اِنِّيْۤ اُلْقِيَ اِلَيَّ كِتٰبٌ
كَرِيْمٌ ﴿٢٩﴾
اِنَّهٗ مِنْ سُلَيْمٰنَ وَاِنَّهٗ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ
الرَّحِيْمِ ﴿٣٠﴾
اَلَّا تَعْلُوْا عَلَيَّ وَاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ﴿٣١﴾
قَالَتْ يٰۤاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَفْتُوْنِيْ فِيْۤ اَمْرِيْ
مَا كُنْتُ قَاطِعَةً اَمْرًا حَتّٰى تَشْهَدُوْنِ ﴿٣٢﴾
قَالُوْا نَحْنُ اُولُوْا قُوَّةٍ وَّاُولُوْا بَاْسٍ شَدِيْدٍ
وَّالْاَمْرُ اِلَيْكِ فَانْظُرِيْ مَاذَا تَاْمُرِيْنَ ﴿٣٣﴾
قَالَتْ اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً
اَفْسَدُوْهَا وَجَعَلُوْۤا اَعِزَّةَ اَهْلِهَاۤ اَذِلَّةً
وَكَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٤﴾
وَاِنِّيْ مُرْسِلَةٌ اِلَيْهِمْ بِهَدِيَّةٍ فَنٰظِرَةٌۢ بِمَ

क्या जवाब लेकर लौटते हैं"।

36. फिर जब वह सुलैमान के पास पहुंचा, तो उसने कहा, "क्या तुम माल से मुझे मदद पहुंचाओगे? तो जो कुछ अल्लाह ने मुझे दिया है वह उससे कहीं बेहतर है जो उसने तुम्हें दिया है; बल्कि तुम्हीं लोग हो जो अपने तोहफ़े से खुश होते हो!

37. उनके पास वापस जाओ हम उनपर ऐसे लश्कर ले आएंगे कि वो उनके मुक़ाबले की ताब न ला सकेंगे, और हम उन्हें वहां से ज़लील कर के निकाल देंगे कि वो पस्त होकर रहेंगे"।

38. उसने कहा, "ऐ अहले दरबार, तुममें कौन उसका तख़्त लेकर मेरे पास आता है, क़ब्ल इसके कि वो फ़रमांबरदार होकर मेरे पास आएं?"

39. जिन्नों में से एक सरहंग ने कहा, "मैं उसे आपके पास ले आऊंगा, इससे पहले कि आप अपनी जगह से उठें। मुझे इसके लिए ताक़त भी हासिल है, मैं अमानतदार भी हूं"।

40. जिस शख़्स के पास किताब का एक इल्म था उसने कहा, "मैं आपकी पलक झपकने से पहले उसे आपके पास ला देता हूं!" फिर जब उसने उसे अपने पास रखा हुआ देखा तो उसने कहा, "यह मेरे रब का फ़ज़्ल है ताकि वह मुझे आज़माए कि मैं शुक्रगुज़ार होता हूं या काफ़िर-ए-नेमत बनता हूं। जो शुक्र करता है तो वह अपने ही लिए शुक्र करता है, और जिसने नाशुक्री की, तो मेरा रब तो बेनियाज़, बड़ा करीम है"।

41. उसने कहा कि "उसके लिए उसके तख़्त की शक्ल बदल दो, देखें वह हक़ीक़त पा लेती है या उनमें से होकर रह जाती है जो हक़ीक़त को नहीं पाते"।

42. जब वह आई, तो कहा गया, "क्या तुम्हारा तख़्त ऐसा ही है?" उसने कहा, "यह तो जैसे वही है, और हमें तो इससे पहले ही इल्म हासिल हो चुका था, और हम फ़रमांबरदार हो गए थे"।

43. अल्लाह को छोड़कर वह दूसरे को पूजती थी, इसी चीज़ ने उसे रोक रखा था, बेशक वह एक काफ़िर क़ौम में से थी।

44. उससे कहा गया कि "महल में दाख़िल हो; तो जब उसने उसे देखा, तो उसको उसने गहरा पानी समझा, और उसने अपनी दोनों पिंडलियां खोल

यर्जिअुल-मुर्सलून (35)

फ़-लम्मा जा-अ सुलैमा-न क़ा-ल अतुमिद्दू-ननि बिमालिन् फ़मा आतानि-यल्लाहु ख़ैरुम् मिम्मा आताकुम् बल् अन्तुम् बि-हदिय्यतिकुम् तफ़्रहून (36)

इर्जिअ् इलैहिम् फ़-लनअ्ति-यन्नहुम् बिजुनूदिल् ला क़ि-ब-ल लहुम् बिहा व लनुख़्रिजन्नहुम् मिन्हा अज़िल्ल-तंव्-व हुम् साग़िरून (37)

क़ा-ल या अय्युहल्-म-लउ अय्युकुम् यअ्तीनी बिअ़र्शिहा क़ब्-ल अंय्यअ्तूनी मुस्लिमीन (38)

क़ा-ल अ़िफ़्रीतुम् मिनल्-जिन्नि अ-न आती-क बिही क़ब्-ल अन् तक़ू-म मिम्-मक़ामि-क व इन्नी अ़लैहि ल-क़विय्युन् अमीन (39)

क़ालल्लज़ी अ़िन्दहू अ़िल्मुम् मिनल्-किताबि अ-न आती-क बिही क़ब्-ल अंय्यर्-तद्-द इलै-क तर्फ़ु-क, फ़-लम्मा रआहु मुस्तक़िर्रन् अ़िन्दहू क़ा-ल हाज़ा मिन् फ़ज़्लि रब्बी, लि-यब्लु-वनी अ-अश्कुरु अम् अक्फ़ुरु, व मन् श-क-र-फ़-इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही व मन् क-फ़-र फ़-इन्-न रब्बी ग़निय्युन् करीम (40)

क़ा-ल नक्किरू लहा अ़र्-शहा नन्ज़ुर् अ-तह्तदी अम् तकूनु मिनल्लज़ी-न ला यह्तदून (41)

फ़-लम्मा जाअत् क़ी-ल अहा-कज़ा अ़र्शुकि, क़ालत् क-अन्नहू हु-व व ऊतीनल्-अ़िल्-म मिन् क़ब्लिहा व कुन्ना मुस्लिमीन (42)

व सद्दहा मा कानत् तअ्बुदु मिन् दूनिल्लाहि, इन्नहा कानत् मिन् क़ौमिन् काफ़िरीन (43)

क़ी-ल ल-हद्ख़ुलिस्सर्-ह फ़-लम्मा र-अत्हु हसि-बत्हु लुज्जतंव्-व क-शफ़त् अ़न् साक़ैहा, क़ा-ल इन्नहू सर्हुम्-मुमर्रदुम मिन् क़वारी-र,

يَرْجِعُ الْمُرْسَلُوْنَ ۝٣٥

فَلَمَّا جَآءَ سُلَيْمٰنَ قَالَ اَتُمِدُّوْنَنِ بِمَالٍ ز
فَمَآ اٰتٰىنِۦَ اللّٰهُ خَيْرٌ مِّمَّآ اٰتٰىكُمْ ۚ بَلْ
اَنْتُمْ بِهَدِيَّتِكُمْ تَفْرَحُوْنَ ۝٣٦

اِرْجِعْ اِلَيْهِمْ فَلَنَاْتِيَنَّهُمْ بِجُنُوْدٍ لَّا قِبَلَ لَهُمْ بِهَا
وَلَنُخْرِجَنَّهُمْ مِّنْهَآ اَذِلَّةً وَّهُمْ صٰغِرُوْنَ ۝٣٧

قَالَ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَؤُا اَيُّكُمْ يَاْتِيْنِيْ
بِعَرْشِهَا قَبْلَ اَنْ يَّاْتُوْنِيْ مُسْلِمِيْنَ ۝٣٨

قَالَ عِفْرِيْتٌ مِّنَ الْجِنِّ اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ
قَبْلَ اَنْ تَقُوْمَ مِنْ مَّقَامِكَ ۚ وَاِنِّيْ عَلَيْهِ
لَقَوِيٌّ اَمِيْنٌ ۝٣٩

قَالَ الَّذِيْ عِنْدَهٗ عِلْمٌ مِّنَ الْكِتٰبِ
اَنَا اٰتِيْكَ بِهٖ قَبْلَ اَنْ يَّرْتَدَّ اِلَيْكَ طَرْفُكَ ؕ
فَلَمَّا رَاٰهُ مُسْتَقِرًّا عِنْدَهٗ قَالَ هٰذَا مِنْ
فَضْلِ رَبِّيْ ۖ لِيَبْلُوَنِيْٓ ءَاَشْكُرُ اَمْ اَكْفُرُ ؕ
وَمَنْ شَكَرَ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ
كَفَرَ فَاِنَّ رَبِّيْ غَنِيٌّ كَرِيْمٌ ۝٤٠

قَالَ نَكِّرُوْا لَهَا عَرْشَهَا نَنْظُرْ اَتَهْتَدِيْٓ
اَمْ تَكُوْنُ مِنَ الَّذِيْنَ لَا يَهْتَدُوْنَ ۝٤١

فَلَمَّا جَآءَتْ قِيْلَ اَهٰكَذَا عَرْشُكِ ؕ
قَالَتْ كَاَنَّهٗ هُوَ ۚ وَاُوْتِيْنَا الْعِلْمَ
مِنْ قَبْلِهَا وَكُنَّا مُسْلِمِيْنَ ۝٤٢

وَصَدَّهَا مَا كَانَتْ تَّعْبُدُ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ
اِنَّهَا كَانَتْ مِنْ قَوْمٍ كٰفِرِيْنَ ۝٤٣

قِيْلَ لَهَا ادْخُلِي الصَّرْحَ ۚ فَلَمَّا رَاَتْهُ
حَسِبَتْهُ لُجَّةً وَّكَشَفَتْ عَنْ سَاقَيْهَا ؕ
قَالَ اِنَّهٗ صَرْحٌ مُّمَرَّدٌ مِّنْ قَوَارِيْرَ ؕ

दी। उसने कहा, "यह तो शीशे से बना हुआ महल है"। बोली, "ऐ मेरे रब, यक़ीनन मैंने अपने आप पर ज़ुल्म किया, अब मैंने सुलैमान के साथ अल्लाह के आगे अपने आपको डाल दिया, जो सारे जहान का रब है"।

45. और समूद की तरफ़ हमने उनके भाई सालेह को भेजा कि "अल्लाह की बन्दगी करो," तो क्या देखते हैं कि वो दो फ़रीक़ बनकर आपस में झगड़ने लगे।

46. उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम भलाई से पहले बुराई के लिए क्यों जल्दी मचाते हो? तुम अल्लाह से बख़्शिश क्यों नहीं तलब करते? शायद तुमपर रहम किया जाए!"

47. उन्होंने कहा हमने तुम्हें और तुम्हारे साथ वालों को बद शगूनी का निशान पाया है"। उसने कहा, "तुम्हारे नसीबा का सर रिश्ता तो ख़ुदा के पास है; बल्कि बात यह है कि तुम लोग आज़माए जा रहे हो"।

48. शहर में नौ जत्थेदार थे जो ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते थे, इसलाह पर आमादा नहीं होते थे;

49. वो आपस में अल्लाह की क़समें खाकर बोले कि "हम ज़रूर उस पर और उसके घरवालों पर शबख़ून मारेंगे, फिर उसके वारिसों से कह देंगे कि हम उसके घरवालों की हलाकत के मौक़े पर मौजूद न थे; और हम बिल्कुल सच्चे हैं"।

50. वो एक चाल चले, और हम भी एक चाल चले, और उन्हें ख़बर तक न हुई।

51. अब देख लो कि उनकी चाल का कैसा अंजाम हुआ! कि हमने उन्हें और उनकी क़ौम सब को ग़ारत करके रख दिया।

52. अब ये उनके घर, उनके ज़ुल्म की वजह से वीरान पड़े हुए हैं; यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है ऐसे लोगों के लिए जो जानना चाहें।

53. और हमने उन लोगों को नजात दी जो ईमान लाए और डर रखते थे।

54. और लूत को भी भेजा जब उसने अपनी क़ौम से कहा, "क्या तुम आंखों से देखते हुए बेहयाई का काम करते हो?

55. क्या तुम औरतों को छोड़कर अपनी ख़्वाहिश पूरी करने के लिए मर्दों के पास जाते हो? बल्कि बात यह है कि तुम बड़े ही जाहिल लोग हो"।

56. मगर उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा कुछ न था कि उन्होंने कहा,

क़ालत् रब्बि इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी व असलम्तु म-अ सुलैमा-न लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (44) ●

व ल-क़द् अर्सल्ना इला समू-द अख़ाहुम् सालिहन् अनिअ्बुदुल्ला-ह फ़-इज़ा हुम् फ़रीक़ानि यख़्तसिमून (45)

क़ा-ल या क़ौमि लि-म तस्तअ्जिलू-न बिस्सय्यि-अति क़ब्लल्-ह-स-नति लौ ला तस्तग़्फ़िरूनल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुर्हमून (46)

क़ालुत्तय्यर्ना बि-क व बि-मम्-म-अ-क, क़ा-ल ताइरुकुम् अिन्दल्लाहि बल् अन्तुम् क़ौमुन् तुफ़्तनून (47)

व का-न फ़िल्मदी-नति तिस्अतु रह्तिंय्-युफ़्सिदू-न फ़िल्अर्ज़ि व ला युस्लिहून (48)

क़ालू तक़ा-समू बिल्लाहि लनुबय्यितन्नहू व अह्लहू सुम्-म ल-नक़ूलन्-न लि-वलिय्यिही मा शहिद्ना मह्लि-क अह्लिही व इन्ना ल-सादिक़ून (49)

व म-करू मक्रंव्-व मकर्ना मक्रंव्-व हुम् ला यश्अुरून (50)

फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आक़ि-बतु मक्रिहिम् अन्ना दम्मर्नाहुम् व क़ौमहुम् अज्मअ़ीन (51)

फ़-तिल्-क बुयूतुहुम् ख़ावि-यतम् बिमा ज़-लमू, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिक़ौमिंय्-यअ्लमून (52)

व अन्जैनल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून (53)

व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अ-तअ्तूनल् फ़ाहि-श-त व अन्तुम् तुब्सिरून (54)

अ-इन्नकुम् ल-तअ्तूनर्-रिजा-ल शह्व-तम् मिन् दूनिन्निसा-इ, बल् अन्तुम् क़ौमुन् तज्हलून (55)

फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालू अख़्रिजू

قَالَتْ رَبِّ اِنِّیْ ظَلَمْتُ نَفْسِیْ وَاَسْلَمْتُ
ع مَعَ سُلَیْمٰنَ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝٤٤

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَآ اِلٰی ثَمُوْدَ اَخَاهُمْ صٰلِحًا
اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ فَاِذَا هُمْ فَرِیْقٰنِ
یَخْتَصِمُوْنَ ۝٤٥

قَالَ یٰقَوْمِ لِمَ تَسْتَعْجِلُوْنَ بِالسَّیِّئَةِ
قَبْلَ الْحَسَنَةِ ۚ لَوْلَا تَسْتَغْفِرُوْنَ اللّٰهَ
لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٤٦

قَالُوا اطَّیَّرْنَا بِكَ وَبِمَنْ مَّعَكَ ۭ قَالَ طٰٓئِرُكُمْ
عِنْدَ اللّٰهِ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تُفْتَنُوْنَ ۝٤٧

وَكَانَ فِی الْمَدِیْنَةِ تِسْعَةُ رَهْطٍ یُّفْسِدُوْنَ
فِی الْاَرْضِ وَلَا یُصْلِحُوْنَ ۝٤٨

قَالُوْا تَقَاسَمُوْا بِاللّٰهِ لَنُبَیِّتَنَّهٗ وَاَهْلَهٗ
ثُمَّ لَنَقُوْلَنَّ لِوَلِیِّهٖ مَا شَهِدْنَا مَهْلِكَ
اَهْلِهٖ وَاِنَّا لَصٰدِقُوْنَ ۝٤٩

وَمَكَرُوْا مَكْرًا وَّمَكَرْنَا مَكْرًا وَّهُمْ
لَا یَشْعُرُوْنَ ۝٥٠

فَانْظُرْ كَیْفَ كَانَ عَاقِبَةُ مَكْرِهِمْ ۙ
اَنَّا دَمَّرْنٰهُمْ وَقَوْمَهُمْ اَجْمَعِیْنَ ۝٥١
فَتِلْكَ بُیُوْتُهُمْ خَاوِیَةًۢ بِمَا ظَلَمُوْا ۭ
اِنَّ فِیْ ذٰلِكَ لَاٰیَةً لِّقَوْمٍ یَّعْلَمُوْنَ ۝٥٢
وَاَنْجَیْنَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا یَتَّقُوْنَ ۝٥٣
وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اَتَاْتُوْنَ الْفَاحِشَةَ
وَاَنْتُمْ تُبْصِرُوْنَ ۝٥٤
اَىِٕنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ شَهْوَةً مِّنْ دُوْنِ
النِّسَآءِ ۭ بَلْ اَنْتُمْ قَوْمٌ تَجْهَلُوْنَ ۝٥٥
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوْٓا اَخْرِجُوْٓا

"निकाल बाहर करो लूत के घरवालों को अपनी बस्ती से, ये लोग बहुत पाकीज़गी पसन्द करते हैं!"

57. आख़िरकार हमने उसे और उसके अहल को नजात दी, सिवाय उसकी बीवी के; उसके लिए हमने मुक़द्दर कर दिया था कि वह पीछे रह जाने वालों में से होगी।

58. और हमने उनपर एक बरसात बरसाई; और वह बहुत ही बुरी बरसात थी उन लोगों के हक़ में जिन्हें ख़बरदार किया जा चुका था।

59. — कहो तारीफ़ अल्लाह के लिए है, और सलाम है उसके उन बन्दों पर जिन्हें उसने बरगुज़ीदा किया, क्या अल्लाह बेहतर है, या वो जिन्हें वो शरीक ठहरा रहे हैं?

60. (तुम्हारे माबूद बेहतर हैं) या वह जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और तुम्हारे लिए आसमान से पानी बरसाया — फिर उसके ज़रिए से हमने खुशमंज़र बाग़ उगाए? तुम्हारे लिए मुमकिन न था कि तुम उनके दरख़्तों को उगाते। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? नहीं बल्कि वही लोग रास्ते से हटकर चले जा रहे हैं।

61. या वह जिसने ज़मीन को जाए क़रार बनाया और उसके बीच-बीच में दरिया बहाए और उसके लिए मज़बूत पहाड़ बनाए और दो समुंदर के दरमियान एक पर्दा डाल दिया? क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? नहीं, बल्कि उनमें से अक्सर जानते ही नहीं।

62. या वह जो बेक़रार की पुकार सुनता है, जब वह उसे पुकारे और तकलीफ़ दूर कर देता है और तुम्हें ज़मीन का ख़लीफ़ा बनाता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? तुम याददिहानी हासिल थोड़े ही करते हो।

63. या वह जो ख़ुश्की और समुंदर की तारीकियों में तुम्हारी रहनुमाई करता है और जो अपनी रहमत के आगे हवाओं को खुशख़बरी बनाकर भेजता है। क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? बुलन्द व बरतर है अल्लाह, उस शिर्क से जो वो करते हैं!

64. या वह जो तख़लीक़ की इब्तिदा करता है फिर उसे दोहराता है, या वह जो तुमको आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ देता है? क्या अल्लाह के साथ कोई और माबूद है? कहोः "लाओ अपनी दलील, अगर तुम सच्चे हो"।

65. कहोः "आसमानों और ज़मीन

आ-ल लूतिम-मिन् क़र्-यतिकुम् इन्नहुम् उनासुंय्-य-त-तह्हरून (56)

फ़-अन्जैनाहु व अह्लहू इल्लम्र-अ-तहू क़द्दर्नाहा मिनल्-ग़ाबिरीन (57)

व अम्तर्ना अ़लैहिम् म-तरन् फ़सा-अ म-तरुल्-मुन्ज़रीन (58)●

क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहि व सलामुन् अ़ला इबादिहिल्लज़ीनस्-तफ़ा, अल्लाहु ख़ैरुन् अम्मा युश्रिकून (59)

अम्मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व अन्ज़-ल लकुम् मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अम्बत्ना बिही हदाइ-क़ ज़ा-त बह्जतिन् मा का-न लकुम् अन् तुम्बितू श-ज-रहा अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, बल् हुम् क़ौमुंय्-यअ्दिलून (60)

अम्मन् ज-अ़लल्-अर्-ज़ क़रारंव्-व ज-अ़-ल ख़िला-लहा अन्हारंव्-व ज-अ़-ल लहा रवासि-य व ज-अ़-ल बैनल्-बह्रैनि हाजिज़न्, अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्लमून (61)

अम्-मंय्युजीबुल्-मुज़्तर्-र इज़ा दआ़हु व यक्शिफ़ुस्सू-अ व यज्-अ़लुकुम् ख़ु-लफ़ाअल्-अर्ज़ि, अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, क़लीलम् मा तज़क्करून (62)

अम्-मंय्यह्दीकुम् फ़ी ज़ुलुमातिल्-बर्रि वल्बह्रि व मंय्युर्सिलुर्-रिया-ह बुश्रम्-बै-न यदै रह्मतिही, अ-इलाहुम्-मअ़ल्लाहि, तआ़लल्लाहु अ़म्मा युश्रिकून (63)

अम्-मंय्यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युई़दुहू व मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि, अ-इलाहुम् मअ़ल्लाहि, क़ुल् हातू बुर्हा-नकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (64)

क़ुल् ला यअ्लमु मन् फ़िस्-समावाति वल्अर्ज़ि-

اٰلَ لُوْطٍ مِّنْ قَرْيَتِكُمْ ۚ اِنَّهُمْ اُنَاسٌ
يَّتَطَهَّرُوْنَ ۝٥٦
فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَهْلَهٗٓ اِلَّا امْرَاَتَهٗ ۡ قَدَّرْنٰهَا
مِنَ الْغٰبِرِيْنَ ۝٥٧
ع وَاَمْطَرْنَا عَلَيْهِمْ مَّطَرًا ۚ فَسَآءَ مَطَرُ الْمُنْذَرِيْنَ ۝٥٨
قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ وَسَلٰمٌ عَلٰى عِبَادِهِ الَّذِيْنَ
اصْطَفٰى ۭ ءٰۗاللّٰهُ خَيْرٌ اَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٥٩
اَمَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَاَنْزَلَ
لَكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ حَدَآئِقَ
ذَاتَ بَهْجَةٍ ۚ مَا كَانَ لَكُمْ اَنْ تُنْۢبِتُوْا شَجَرَهَا ۭ
ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ بَلْ هُمْ قَوْمٌ يَّعْدِلُوْنَ ۝٦٠
اَمَّنْ جَعَلَ الْاَرْضَ قَرَارًا وَّجَعَلَ خِلٰلَهَآ
اَنْهٰرًا وَّجَعَلَ لَهَا رَوَاسِيَ وَجَعَلَ
بَيْنَ الْبَحْرَيْنِ حَاجِزًا ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٦١
اَمَّنْ يُّجِيْبُ الْمُضْطَرَّ اِذَا دَعَاهُ وَيَكْشِفُ
السُّوْۗءَ وَيَجْعَلُكُمْ خُلَفَاۗءَ الْاَرْضِ ۭ ءَاِلٰهٌ
مَّعَ اللّٰهِ ۭ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ ۝٦٢
اَمَّنْ يَّهْدِيْكُمْ فِيْ ظُلُمٰتِ الْبَرِّ
وَالْبَحْرِ وَمَنْ يُّرْسِلُ الرِّيٰحَ بُشْرًاۢ
بَيْنَ يَدَيْ رَحْمَتِهٖ ۭ ءَاِلٰهٌ مَّعَ اللّٰهِ ۭ
تَعٰلَى اللّٰهُ عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٦٣
اَمَّنْ يَّبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ وَمَنْ
يَّرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ ءَاِلٰهٌ
مَّعَ اللّٰهِ ۭ قُلْ هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٦٤
قُلْ لَّا يَعْلَمُ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ

में जो कोई भी हैं अल्लाह के सिवा किसी को ग़ैब का इल्म नहीं है, और न वो उससे आगाह हैं कि वो कब उठाए जाएंगे;

66. बल्कि आख़िरत के बारे में उनका इल्म पुख़्ता हो गया है; बल्कि वो उसकी तरफ़ से कुछ शक में हैं। बल्कि वो उससे अंधे हैं"।

67. जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वो कहते हैं कि "क्या जब हम मिट्टी हो जाएंगे, और हमारे बाप-दादा भी, तो क्या हम वाक़ई निकाले जाएंगे?

68. इस का वादा तो हमसे इससे पहले भी किया जा चुका है, हमसे भी और हमारे बाप-दादा से भी; यह तो महज़ अगलों के अफ़साने हैं"।

69. कहो कि "ज़मीन में चलो-फिरो, और देखो कि मुजरिमों का कैसा अन्जाम हुआ"।

70. उनपर ग़म न खाओ, और न उस चाल से दिल तंग हो जो वो चल रहे हैं।

71. वो कहते हैं, "यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो?"

72. कहो: "जिसकी तुम जल्दी मचा रहे हो बहुत मुमकिन है कि उसका कोई हिस्सा तुम्हारे पीछे ही लगा हो"।

73. यक़ीनन तुम्हारा रब तो लोगों पर बड़ा फ़ज़्ल फ़रमाने वाला है। मगर उनमें से अक्सर शुक्र नहीं करते।

74. यक़ीनन तुम्हारा रब ख़ूब जानता है जो कुछ उनके सीने छुपाए हुए हैं, और जो कुछ वो ज़ाहिर करते हैं।

75. आसमान और ज़मीन में पोशीदा कोई भी चीज़ ऐसी नहीं जो एक वाज़ेह किताब में मौजूद न हो।

76. यक़ीनन यह क़ुरआन बनी इसराईल को अक्सर ऐसी बातें खोलकर सुनाता है जिनमें वो इख़्तिलाफ़ रखते हैं।

77. और बिलाशुबह यह तो अहले ईमान के लिए हिदायत और रहमत है।

78. यक़ीनन तुम्हारा रब उनके दरमियान अपने हुक्म से फ़ैसला कर देगा; वह तो बहुत ही ज़बरदस्त, सब कुछ जानने वाला है।

ग़ै-ब इल्लल्लाहु, व मा यश्अुरू-न अय्या-न युब्अ़सून (65)

बलिद्दार-क अ़िल्मुहुम् फ़िल्-आख़िरति, बल् हुम् फ़ी शक्किम् मिन्हा, बल् हुम् मिन्हा अ़मून (66) ●

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू अ-इज़ा कुन्ना तुराबंव्-व आबाउना अ-इन्ना ल-मुख़्रजून (67)

ल-क़द् वुअ़िद्ना हाज़ा नह्नु व आबाउना मिन् क़ब्लु इन् हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (68)

कुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुज्रिमीन (69)

व ला तह्ज़न् अ़लैहिम् व ला तकुन् फ़ी ज़ैक़िम्-मिम्मा यम्कुरून (70)

व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ़्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (71)

कुल् अ़सा अंय्यकू-न रदि-फ़ लकुम् बअ़्ज़ुल्लज़ी तस्तअ़्जिलून (72)

व इन्-न रब्ब-क लज़ू फ़ज़्लिन् अ़लन्नासि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यश्कुरून (73)

व इन्-न रब्ब-क ल-यअ़्लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ़्लिनून (74)

व मा मिन् ग़ाइ-बतिन् फ़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि इल्ला फ़ी किताबिम्-मुबीन (75)

इन्-न हाज़ल्-क़ुरआ-न यक़ुस्सु अ़ला बनी इस्राई-ल अक्स-रल्लज़ी हुम् फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (76)

व इन्नहू ल-हुदंव्-व रह्मतुल् लिल्-मुअ्मिनीन (77)

इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम बिहुक्मिही व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-अ़लीम (78)

الْغَيْبَ إِلَّا اللَّهُ ۚ وَمَا يَشْعُرُونَ أَيَّانَ
يُبْعَثُونَ ۝٦٥
بَلِ ادَّارَكَ عِلْمُهُمْ فِي الْآخِرَةِ ۚ بَلْ هُمْ
فِي شَكٍّ مِّنْهَا ۖ بَلْ هُم مِّنْهَا عَمُونَ ۝٦٦
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا أَإِذَا كُنَّا تُرَابًا
وَآبَاؤُنَا أَئِنَّا لَمُخْرَجُونَ ۝٦٧
لَقَدْ وُعِدْنَا هَٰذَا نَحْنُ وَآبَاؤُنَا مِن قَبْلُ
إِنْ هَٰذَا إِلَّا أَسَاطِيرُ الْأَوَّلِينَ ۝٦٨
قُلْ سِيرُوا فِي الْأَرْضِ فَانظُرُوا كَيْفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الْمُجْرِمِينَ ۝٦٩
وَلَا تَحْزَنْ عَلَيْهِمْ وَلَا تَكُن فِي ضَيْقٍ مِّمَّا
يَمْكُرُونَ ۝٧٠
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ۝٧١
قُلْ عَسَىٰ أَن يَكُونَ رَدِفَ لَكُم بَعْضُ
الَّذِي تَسْتَعْجِلُونَ ۝٧٢
وَإِنَّ رَبَّكَ لَذُو فَضْلٍ عَلَى النَّاسِ وَلَٰكِنَّ
أَكْثَرَهُمْ لَا يَشْكُرُونَ ۝٧٣
وَإِنَّ رَبَّكَ لَيَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُورُهُمْ
وَمَا يُعْلِنُونَ ۝٧٤
وَمَا مِنْ غَائِبَةٍ فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ
إِلَّا فِي كِتَابٍ مُّبِينٍ ۝٧٥
إِنَّ هَٰذَا الْقُرْآنَ يَقُصُّ عَلَىٰ بَنِي إِسْرَائِيلَ
أَكْثَرَ الَّذِي هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝٧٦
وَإِنَّهُ لَهُدًى وَرَحْمَةٌ لِّلْمُؤْمِنِينَ ۝٧٧
إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُم بِحُكْمِهِ ۚ
وَهُوَ الْعَزِيزُ الْعَلِيمُ ۝٧٨

79. पस अल्लाह पर भरोसा रखो; यक़ीनन तुम सरीह हक़ पर हो।

80. तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते, और न बहरों को अपनी पुकार सुना सकते हो जबकि वो पीठ देकर फिरे जा रहे हों।

81. और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से हटा कर राह पर ला सकते हो, तुम तो बस उन्हीं को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाना चाहें, पस वही फ़रमांबरदार होते हैं।

82. और जब उनपर बात पूरी हो जाएगी, तो हम उनके लिए ज़मीन से एक जानवर निकालेंगे जो उनसे बातें करेगा कि लोग हमारी आयतों पर यक़ीन नहीं करते थे।

83. और जिस दिन हम हर उम्मत में से एक गिरोह ऐसे लोगों का जो हमारी आयतों को झुटलाते हैं घेर कर लाएंगे, फिर उनकी दर्जाबन्दी की जाएगी,

84. यहां तक कि जब वो आ जाएंगे, तो वह कहेगा, "क्या तुमने मेरी आयतों को झुटलाया, हालांकि तुमने उनका कोई इल्मी इहाता नहीं किया था, या फिर तुम क्या करते रहे थे?"

85. और बात उनपर पूरी होकर रहेगी इसलिए कि उन्होंने ज़ुल्म किया, पस वो कुछ न बोल सकेंगे।

86. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने रात को (तारीक) बनाया, ताकि वो उसमें सुकून व आराम हासिल करें, और दिन को रौशन बनाया (कि उसमें काम करें)? यक़ीनन इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान लाना चाहें।

87. और (ख़याल करो) जिस दिन सूर फूंका जाएगा, और जो आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं घबरा उठेंगे, सिवाय उनके जिन्हें अल्लाह चाहे — और सब कान दबाए उसके हुज़ूर हाज़िर हो जाएंगे।

88. और तुम पहाड़ों को देखकर समझते हो कि वो जमे हुए हैं, हालांकि वो गुज़र रहे होंगे जिस तरह बादल गुज़रते हैं। यह अल्लाह की कारीगरी है, जिसने हर चीज़ को उस्तुवार किया। बेशक वह उससे बाख़बर है जो कुछ तुम करते हो।

89. और जो कोई भलाई लेकर आएगा उसको उससे भी बेहतर हासिल होगा; और ऐसे लोग घबराहट के ख़तरे से उस रोज़ महफ़ूज़ होंगे।

फ़-तवक्कल् अ़लल्लाहि, इन्न-क अ़लल्-हक़्क़िल्-मुबीन (79)

इन्न-क ला तुस्मिअुल्मौता व ला तुस्मिअुस्-सुम्मद्दुआ-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन (80)

व मा अन्-त बिहादिल्-अुम्यि अ़न् ज़लालतिहिम्, इन् तुस्मिअु इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून (81)

व इज़ा व-क़अ़ल्-क़ौलु अ़लैहिम् अख़्रज्ना लहुम् दाब्बतम् मिनलअर्ज़ि तुकल्लिमुहुम् अन्नन्ना-स कानू बिआयातिना ला यूक़िनून (82) ●

व यौ-म नह्शुरु मिन् कुल्लि उम्मतिन् फ़ौजम् मिम्मंय्युकज़्ज़िबु बिआयातिना फ़हुम् यू-ज़अून (83)

हत्ता इज़ा जाऊ क़ा-ल अ-कज़्ज़ब्तुम् बिआयाती व लम् तुहीतू बिहा अ़िल्मन् अम्-मा ज़ा कुन्तुम् तअ्मलून (84)

व व-क़अ़ल्-क़ौलु अ़लैहिम् बिमा ज़-लमू फ़हुम् ला यन्तिक़ून (85)

अलम् यरौ अन्ना ज-अ़ल्नल्लै-ल लियस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्-युअमिनून (86)

व यौ-म युन्फ़खु फ़िस्सूरि फ़-फ़ज़ि-अ़ मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला मन् शा-अल्लाहु, व कुल्लुन् अतौहु दाख़िरीन (87)

व तरल्-जिबा-ल तह्सबुहा जामि-दतंव्-व हि-य तमुर्रु मर्रस्सहाबि, सुन्-अ़ल्लाहिल्लज़ी अत्क़-न कुल्-ल शैइन्, इन्नहू ख़बीरुम् बिमा तफ़्अ़लून (88)

मन् जा-अ बिल्ह-स-नति फ़-लहू ख़ैरुम्-मिन्हा व हुम् मिन् फ़-ज़अ़िंय्-यौमइज़िन् आमिनून (89)

فَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّكَ عَلَى الْحَقِّ الْمُبِيْنِ ۝٧٩
اِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ
الدُّعَاۗءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝٨٠
وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِي الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ۭ
اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ
مُّسْلِمُوْنَ ۝٨١
وَاِذَا وَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ اَخْرَجْنَا لَهُمْ
دَاۗبَّةً مِّنَ الْاَرْضِ تُكَلِّمُهُمْ ۙ اَنَّ النَّاسَ
كَانُوْا بِاٰيٰتِنَا لَا يُوْقِنُوْنَ ۝٨٢
وَيَوْمَ نَحْشُرُ مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ فَوْجًا مِّمَّنْ
يُّكَذِّبُ بِاٰيٰتِنَا فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝٨٣
حَتّٰٓي اِذَا جَاۗءُوْ قَالَ اَكَذَّبْتُمْ بِاٰيٰتِيْ
وَلَمْ تُحِيْطُوْا بِهَا عِلْمًا اَمَّاذَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ۝٨٤
وَوَقَعَ الْقَوْلُ عَلَيْهِمْ بِمَا ظَلَمُوْا فَهُمْ
لَا يَنْطِقُوْنَ ۝٨٥
اَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا الَّيْلَ لِيَسْكُنُوْا
فِيْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٨٦
وَيَوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَفَزِعَ مَنْ فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ
شَاۗءَ اللّٰهُ ۭ وَكُلٌّ اَتَوْهُ دٰخِرِيْنَ ۝٨٧
وَتَرَى الْجِبَالَ تَحْسَبُهَا جَامِدَةً وَّهِىَ
تَمُرُّ مَرَّ السَّحَابِ ۭ صُنْعَ اللّٰهِ الَّذِيْٓ اَتْقَنَ
كُلَّ شَيْءٍ ۭ اِنَّهٗ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَفْعَلُوْنَ ۝٨٨
مَنْ جَاۗءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ
وَهُمْ مِّنْ فَزَعٍ يَّوْمَىِٕذٍ اٰمِنُوْنَ ۝٨٩

90. और जो बुराई लेकर आएगा तो ऐसे लोगों के मुंह आग में औंधे होंगेः "क्या तुम उसके सिवा किसी और चीज़ का बदला पा रहे हो जो तुम करते रहे?"

91. मुझे तो बस यही हुक्म मिला है कि इस शहर के रब की बन्दगी करूं, जिसने इसे मुहतरम ठहराया और वही हर चीज़ का मालिक है। और मुझे हुक्म मिला है कि मैं फ़रमांबरदार होकर रहूं।

92. और यह कि क़ुरआन पढ़कर सुनाऊं। अब जिस किसी ने हिदायत इख़्तियार की वह अपने ही लिए हिदायत पाएगा। और जो गुमराह रहा तो कह दो, "मैं तो बस एक ख़बरदार करने वाला हूं"।

93. और कहोः "सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है। जल्द ही वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखा देगा और तुम उन्हें पहचान लोगे। और तेरा रब उससे बेख़बर नहीं जो कुछ कि तुम सब कर रहे हो।

सूरह अल-क़सस मक्की

(आयतें 88, रुकूआत 9)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ता-सीन-मीम।

2. ये वाज़ेह किताब की आयतें हैं।

3. हम तुम्हें मूसा और फ़िरऔन का कुछ हाल ठीक-ठीक सुनाते हैं, उन लोगों के लिए जो ईमान लाना चाहें।

4. बेशक फ़िरऔन ने ज़मीन में सरकशी इख़्तियार की और उसके बाशिन्दों को मुख़्तलिफ़ गिरोहों में तक़सीम कर दिया, उनमें से एक गिरोह को कमज़ोर कर रखा था, वह उनके बेटों को बकसरत ज़बह करता, और चाहता था कि उनकी औरतें ज़िन्दा रहें, यक़ीनन वह मुफ़्सिदों में से था।

5. और हम यह चाहते थे कि उन लोगों पर एहसान करें जो ज़मीन में कमज़ोर पड़े थे, और उन्हें इमाम बना दें, और उन्हीं को वारिस बनाएं,

6. और ज़मीन में उन्हें इक़्तिदार अता कर दें, और उनकी तरफ़ से फ़िरऔन व हामान और उनकी फ़ौजों को वह कुछ दिखाएं जिसका वो अन्देशा रखते थे।

7. हमने मूसा की मां को इशारा किया कि "उसे दूध पिला, फिर जब तुझे उसके बारे में ख़ौफ़ हो, तो उसे दरिया में डाल दे, और न तुझे कोई ख़ौफ़ हो और न ग़म खा, हम उसे तेरे

व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़कुब्बत् वुजूहुहुम् फ़िन्नारि, हल् तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्मलून (90) इन्नमा उमिर्तु अन् अअ्बु-द रब्-ब हाज़िहिल्-बल्दतिल्लज़ी हर्र-महा व लहू कुल्लु शैइंव्-व उमिर्तु अन् अकू-न मिनल्-मुस्लिमीन (91) व अन् अत्लुवल्-कुर्आ-न फ़-मनिह्तदा फ़-इन्नमा यह्तदी लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़कुल् इन्नमा अ-न मिनल्-मुन्ज़िरीन (92) व कुलिल्-हम्दु लिल्लाहि सयुरीकुम् आयातिही फ़-तअ्रिफ़ूनहा, व मा रब्बु-क बिग़ाफ़िलिन् अ़म्मा तअ्मलून (93) ●

28 सूरतुल क़-ससि
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 6011
अक्षर, 1454 शब्द, 88 आयतें और 9
रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ता-सीम्-मीम् (1) तिल्-क आयातुल् किताबिल्-मुबीन (2) नत्लू अ़लै-क मिन् न-बइ मूसा व फ़िर्औ-न बिल्हक़्क़ि लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून (3) इन्-न फ़िर्औ-न अ़ला फ़िल्अर्ज़ि व ज-अ़-ल अह्लहा शि-यअंय्-यस्तज़्अिफ़ु ताइ-फ़तम् मिन्हुम् युज़ब्बिहु अब्ना-अहुम् व यस्तह्यी निसा-अहुम्, इन्नहू का-न मिनल्-मुफ़्सिदीन (4) व नुरीदु अन्-नमुन्-न अ़लल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू फ़िल्अर्ज़ि व नज्अ़-लहुम् अ-इम्मतंव्-व नज्अ़-लहुमुल्- वारिसीन (5) व नुमक्कि-न लहुम् फ़िल्अर्ज़ि व नुरि-य फ़िर्औ-न व हामा-न व जुनू-दहुमा मिन्हुम् मा कानू यह्ज़रून (6) व औहैना इला उम्मि मूसा अन् अर्ज़िअ़ीहि फ़-इज़ा ख़िफ़्ति अ़लैहि फ़-अल्क़ीहि फ़िल्यम्मि व ला तख़ाफ़ी व ला तह्ज़नी इन्ना राद्दूहु इलैकि व

وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَكُبَّتْ وُجُوْهُهُمْ فِي
النَّارِؕ هَلْ تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۹۰
اِنَّمَآ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ رَبَّ هٰذِهِ الْبَلْدَةِ
الَّذِيْ حَرَّمَهَا وَلَهٗ كُلُّ شَيْءٍ وَّ اُمِرْتُ
اَنْ اَكُوْنَ مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝۹۱
وَاَنْ اَتْلُوَا الْقُرْاٰنَۚ فَمَنِ اهْتَدٰى فَاِنَّمَا
يَهْتَدِيْ لِنَفْسِهٖۚ وَمَنْ ضَلَّ فَقُلْ اِنَّمَآ
اَنَا مِنَ الْمُنْذِرِيْنَ ۝۹۲
وَقُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ سَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ فَتَعْرِفُوْنَهَاؕ
ع وَمَا رَبُّكَ بِغَافِلٍ عَمَّا تَعْمَلُوْنَ ۝۹۳

سُوْرَةُ الْقَصَصِ مَكِّيَّةٌ ۲۸ اٰيَاتُهَا ۸۸ رُكُوْعَاتُهَا ۹

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

طٰسٓمّٓ ۝۱ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ۝۲
نَتْلُوْا عَلَيْكَ مِنْ نَّبَاِ مُوْسٰى وَفِرْعَوْنَ
بِالْحَقِّ لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝۳
اِنَّ فِرْعَوْنَ عَلَا فِي الْاَرْضِ وَجَعَلَ
اَهْلَهَا شِيَعًا يَّسْتَضْعِفُ طَآئِفَةً مِّنْهُمْ
يُذَبِّحُ اَبْنَآءَهُمْ وَيَسْتَحْيٖ نِسَآءَهُمْؕ اِنَّهٗ
كَانَ مِنَ الْمُفْسِدِيْنَ ۝۴
وَنُرِيْدُ اَنْ نَّمُنَّ عَلَى الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا
فِي الْاَرْضِ وَنَجْعَلَهُمْ اَئِمَّةً وَّنَجْعَلَهُمُ
الْوٰرِثِيْنَ ۝۵
وَنُمَكِّنَ لَهُمْ فِي الْاَرْضِ وَنُرِيَ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ
وَجُنُوْدَهُمَا مِنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَحْذَرُوْنَ ۝۶
وَاَوْحَيْنَآ اِلٰٓى اُمِّ مُوْسٰٓى اَنْ اَرْضِعِيْهِۚ
فَاِذَا خِفْتِ عَلَيْهِ فَاَلْقِيْهِ فِي الْيَمِّ وَلَا
تَخَافِيْ وَلَا تَحْزَنِيْۚ اِنَّا رَآدُّوْهُ اِلَيْكِ وَ

पास लौटाएंगे, और उसे रसूल बनाएंगे"।

8. आख़िरकार फ़िरऔन के लोगों ने उसे उठा लिया ताकि वह उनके लिए दुश्मन और ग़म का सबब हो। यक़ीनन फ़िरऔन व हामान और उनके लश्कर ख़ताकार थे।

9. फ़िरऔन की औरत ने कहा, "यह मेरी और तुम्हारी आंख की ठंडक है। इसे क़त्ल न करो; क्या अजब कि यह हमें नफ़ा पहुंचाए, या हम इसे अपना बेटा ही बना लें"। और वो (अन्जाम से) बेख़बर थे।

10. और मूसा की मां का दिल ख़ाली हो गया, क़रीब था कि वह उसको ज़ाहिर ही कर बैठती अगर हम उसके दिल को इस ग़र्ज़ से न संभालते कि वह मोमिनीन में से हो;

11. उसने उसकी बहन से कहा, "तू उसके पीछे-पीछे जा," चुनांचे वह उसे दूर ही दूर से देखती रही, और वो महसूस नहीं कर रहे थे।

12. हमने पहले ही से दूध पिलाने वालियों को उसपर हराम कर दिया था; पस उसने कहा, "क्या तुम्हें ऐसे घरवालों का पता बताऊं जो तुम्हारी ख़ातिर से उसकी परवरिश का ज़िम्मा लें और उसकी ख़ैरख़्वाही करें?"

13. इस तरह हम उसे उसकी मां के पास लौटा लाए, ताकि उसकी आंख ठंडी हो और वह ग़मगीन न हो, और ताकि वह जान ले कि अल्लाह का वादा सच्चा है; लेकिन उनमें से अकसर जानते नहीं।

14. और जब वह अपनी जवानी को पहुंचा और पूरा हुआ तो हमने उसे क़ुव्वते फ़ैसला और इल्म अता किया; और ख़ूबकारों को हम इसी तरह बदला देते हैं।

15. और वह शहर में ऐसे वक़्त दाख़िल हुआ जबकि वहां के लोग बेख़बर थे, वहां उसने दो आदमियों को लड़ते पाया; यह (एक) उसके अपने गिरोह का था, और यह (दूसरा) उसके दुश्मनों में से था। जो उसके गिरोह में से था उसने उसके मुक़ाबले में जो उसके दुश्मनों से था मदद के लिए उसे पुकारा, मूसा ने उसे घूंसा मारा, और उसका काम तमाम कर दिया, कहा, "यह शैतान की कारस्तानी है, यक़ीनन वह खुला हुआ गुमराहकुन दुश्मन है!"

16. उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मैंने अपनी जान पर ज़ुल्म किया, पस तू

जाअ़िलूहु मिनल्-मुर्सलीन (7)

फ़ल्त-क़-तहू आलु फ़िर्औ़-न लि-यकू-न लहुम् अ़दुव्वंव्-व ह-ज़नन्, इन्-न फ़िर्औ़-न व हामा-न व जुनू-दहुमा कानू ख़ातिईन (8)

व क़ालतिम्-र-अतु फ़िरऔ़-न क़ुर्रतु अ़ैनिल्-ली व ल-क, ला तक़्तुलूहु अ़सा अंय्यन्फ़-अ़ना औ नत्तख़ि-ज़हू व-लदंव्-व हुम् ला यश्अुरून (9)

व अस्ब-ह फ़ुआदु उम्मि मूसा फ़ारिग़न्, इन् कादत् लतुब्दी बिही लौ ला अर्र-बत्ना अ़ला क़ल्बिहा लि-तकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (10)

व क़ालत् लिउख़्तिही क़ुस्सीहि फ़-बसुरत् बिही अ़न् जुनुबिंव्-व हुम् ला यश्अुरून (11)

व हर्रम्ना अ़लैहिल्-मराज़ि-अ़ मिन् क़ब्लु फ़क़ालत् हल् अदुल्लुकुम् अ़ला अह्लि बैतिंय्-यक्फ़ुलूनहू लकुम् व हुम् लहू नासिहून (12)

फ़-रदद्नाहु इला उम्मिही कै तक़र्-र अ़ैनुहा व ला तह्ज़-न व लितअ्-ल-म अन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून ● (13)●

व लम्मा ब-ल-ग़ अशुद्-दहू वस्तवा आतैनाहु हुक्मंव्-व अ़िल्मन्, व कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन (14)

व द-ख़लल्-मदी-न-त अ़ला हीनि ग़फ़्लतिम् मिन् अह्लिहा फ़-व-ज-द फ़ीहा रजुलैनि यक़्ततिलानि, हाज़ा मिन् शी-अ़तिही व हाज़ा मिन् अ़दुव्विही फ़स्तग़ा-सहुल्लज़ी मिन् शी-अ़तिही अ़लल्लज़ी मिन् अ़दुव्विही फ़-व-क-ज़हू मूसा फ़-क़ज़ा अ़लैहि, क़ा-ल हाज़ा मिन् अ़-मलिश्-शैतानि, इन्नहू अ़दुव्वुम्-मुज़िल्लुम्-मुबीन (15)

क़ा-ल रब्बि इन्नी ज़लम्तु नफ़्सी फ़ग़्फ़िर् ली

جَاعِلُوْهُ مِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٧
فَالْتَقَطَهٗۤ اٰلُ فِرْعَوْنَ لِيَكُوْنَ لَهُمْ عَدُوًّا
وَّحَزَنًا ؕ اِنَّ فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَجُنُوْدَهُمَا
كَانُوْا خٰطِـِٕيْنَ ۝٨
وَقَالَتِ امْرَاَتُ فِرْعَوْنَ قُرَّتُ عَيْنٍ لِّيْ
وَلَكَ ؕ لَا تَقْتُلُوْهُ ۖۗ عَسٰٓى اَنْ يَّنْفَعَنَآ
اَوْ نَتَّخِذَهٗ وَلَدًا وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٩
وَاَصْبَحَ فُؤَادُ اُمِّ مُوْسٰى فٰرِغًا ؕ اِنْ كَادَتْ
لَتُبْدِيْ بِهٖ لَوْلَآ اَنْ رَّبَطْنَا عَلٰى قَلْبِهَا
لِتَكُوْنَ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝١٠
وَقَالَتْ لِاُخْتِهٖ قُصِّيْهِ ؗ فَبَصُرَتْ بِهٖ
عَنْ جُنُبٍ وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝١١
وَحَرَّمْنَا عَلَيْهِ الْمَرَاضِعَ مِنْ قَبْلُ فَقَالَتْ
هَلْ اَدُلُّكُمْ عَلٰٓى اَهْلِ بَيْتٍ يَّكْفُلُوْنَهٗ
لَكُمْ وَهُمْ لَهٗ نٰصِحُوْنَ ۝١٢
فَرَدَدْنٰهُ اِلٰٓى اُمِّهٖ كَيْ تَقَرَّ عَيْنُهَا
وَلَا تَحْزَنَ وَلِتَعْلَمَ اَنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ
وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝١٣ ع
وَلَمَّا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَاسْتَوٰٓى اٰتَيْنٰهُ حُكْمًا
وَّعِلْمًا ؕ وَكَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ۝١٤
وَدَخَلَ الْمَدِيْنَةَ عَلٰى حِيْنِ غَفْلَةٍ مِّنْ
اَهْلِهَا فَوَجَدَ فِيْهَا رَجُلَيْنِ يَقْتَتِلٰنِ ۫ هٰذَا
مِنْ شِيْعَتِهٖ وَهٰذَا مِنْ عَدُوِّهٖ ۚ فَاسْتَغَاثَهُ
الَّذِيْ مِنْ شِيْعَتِهٖ عَلَى الَّذِيْ مِنْ عَدُوِّهٖ ۙ
فَوَكَزَهٗ مُوْسٰى فَقَضٰى عَلَيْهِ ۗ قَالَ هٰذَا مِنْ
عَمَلِ الشَّيْطٰنِ ؕ اِنَّهٗ عَدُوٌّ مُّضِلٌّ مُّبِيْنٌ ۝١٥
قَالَ رَبِّ اِنِّيْ ظَلَمْتُ نَفْسِيْ فَاغْفِرْ لِيْ

मुझे बख़्श दे!" चुनांचे उसने उसको बख़्श दिया, यक़ीनन वही बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला है।

17. उसने कहा, "ऐ मेरे रब, जैसे तूने मुझ पर नवाज़िश की है, अब मैं भी कभी मुजरिमों का मददगार नहीं बनूंगा"।

18. फिर दूसरे दिन वह शहर में डरता, टोह लेता हुआ दाख़िल हुआ; इतने में नागहां क्या देखता है कि वही शख़्स जिसने कल उससे मदद चाही थी उसे पुकार रहा है। मूसा ने उससे कहा, "तू तो सरीह बहका हुआ है"।

19. फिर जब उसने इरादा किया कि उस शख़्स को पकड़े जो उन दोनों का दुश्मन था, तो वह बोल उठा, "ऐ मूसा, क्या तू चाहता है कि मुझे क़त्ल करे, जैसे तूने कल एक शख़्स को क़त्ल कर दिया? तू तो ज़मीन में सरकश बनकर रहना चाहता है; और यह नहीं चाहता कि इसलाह करने वाला हो"।

20. इसके बाद एक आदमी शहर के परले सिरे से दौड़ता हुआ आया; उसने कहा, "ऐ मूसा, सरदार तेरे मुतअल्लिक़ मशवरे कर रहे हैं कि तुझे क़त्ल कर डालें। पस निकल जा; मैं तो तेरा ख़ैर ख़्वाह हूं"।

21. फिर वो वहां से डरता, ख़तरा भांपता हुआ निकल खड़ा हुआ; उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मुझे ज़ालिम लोगों से नजात दे"।

22. जब उसने मद्यन का रुख़ किया, तो कहा, "उम्मीद है कि मेरा रब मुझे ठीक रास्ते पर डाल देगा"।

23. और जब वह मद्यन के पानी पर पहुंचा, तो उसने उस पर पानी पिलाते लोगों की एक जमाअत पाई, और उनसे हटकर एक तरफ़ दो औरतों को पाया जो अपने जानवरों को रोक रही थीं। उसने कहा, "तुम्हारा क्या मुआमला है?" उन्होंने कहा, "हम उस वक़्त तक पानी नहीं पिला सकते जब तक कि ये चरवाहे अपने जानवर निकाल न ले जाएं, और हमारे वालिद बहुत ही बूढ़े हैं"

24. तब उसने दोनों की ख़ातिर से पानी पिला दिया; फिर साए की तरफ़ लौट गया, और कहा, "ऐ मेरे रब, जो भलाई भी तू मेरी तरफ़ उतार दे मैं उसका ज़रूरतमंद हूं"।

25. फिर उन दोनों में से एक शरमाती हुई उसके पास आई, उसने

फ़-ग़-फ़-र लहू, इन्नहू हुवल् ग़फ़ूरुर्रहीम (16)

क़ा-ल रब्बि बिमा अन्अ़म्-त अ़लय्-य फ़-लन् अकू-न ज़हीरल्-लिल्मुज्रिमीन (17)

फ़-अस्ब-ह फ़िल्मदी-नति ख़ाइफ़य्य-तरक़्क़बु फ़-इज़ल्-लज़िस्तन्स-रहू बिल्अम्सि यस्तस्रिख़ुहू, क़ा-ल लहू मूसा इन्न-क ल-ग़विय्युम्-मुबीन (18)

फ़-लम्मा अन् अरा-द अंय्यब्ति-श बिल्लज़ी हु-व अ़दुव्वुल्-लहुमा क़ा-ल या मूसा अतुरीदु अन् तक़्तु-लनी कमा क़तल्-त नफ़्सम्-बिल्अम्सि इन् तुरीदु इल्ला अन्-तकू-न जब्बारन् फ़िल्अर्ज़ि व मा तुरीदु अन् तकू-न मिनल्-मुस्लिहीन (19)

व जा-अ रजुलुम्-मिन् अक़्सल्-मदी-नति यस्आ़, क़ा-ल या मूसा इन्नल्-म-ल-अ यअ्तमिरू-न बि-क लि-यक़्तुलू-क फ़ख़्रुज् इन्नी ल-क मिनन्नासिहीन (20)

फ़-ख़-र-ज मिन्हा ख़ाइफ़य्-य-तरक़्क़बु क़ा-ल रब्बि नज्जिनी मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (21)●

व लम्मा तवज्ज-ह तिल्क़ा-अ मद्-य-न क़ा-ल अ़सा रब्बी अंय्यह्दि-यनी सवा-अस्सबील (22)

व लम्मा व-र-द मा-अ मद्-य-न व-ज-द अ़लैहि उम्म-तम् मिनन्नासि यस्क़ू-न, व व-ज-द मिन् दूनिहिमुम्-र-अतैनि तज़ूदानि क़ा-ल मा ख़त्बुकुमा, क़ा-लता ला नस्क़ी हत्ता युस्दिरर्-रिआ़-उ, व अबूना शैख़ुन् कबीर (23)

फ़-सक़ा लहुमा सुम्-म तवल्ला इलज़्ज़िल्लि फ़क़ा-ल रब्बि इन्नी लिमा अन्ज़ल्-त इलय्-य मिन् ख़ैरिन् फ़क़ीर (24)

फ़जा-अत्हु इह्दाहुमा तम्शी अ़-लस्तिह्याइन्

فَغَفَرَ لَهٗ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ﴿۱۶﴾
قَالَ رَبِّ بِمَاۤ اَنْعَمْتَ عَلَیَّ فَلَنْ اَكُوْنَ
ظَهِیْرًا لِّلْمُجْرِمِیْنَ ﴿۱۷﴾
فَاَصْبَحَ فِی الْمَدِیْنَةِ خَآئِفًا یَّتَرَقَّبُ فَاِذَا
الَّذِی اسْتَنْصَرَهٗ بِالْاَمْسِ یَسْتَصْرِخُهٗ ؕ
قَالَ لَهٗ مُوْسٰۤی اِنَّكَ لَغَوِیٌّ مُّبِیْنٌ ﴿۱۸﴾
فَلَمَّاۤ اَنْ اَرَادَ اَنْ یَّبْطِشَ بِالَّذِیْ هُوَ
عَدُوٌّ لَّهُمَا ۙ قَالَ یٰمُوْسٰۤی اَتُرِیْدُ اَنْ
تَقْتُلَنِیْ كَمَا قَتَلْتَ نَفْسًۢا بِالْاَمْسِ ۗ
اِنْ تُرِیْدُ اِلَّاۤ اَنْ تَكُوْنَ جَبَّارًا فِی الْاَرْضِ
وَمَا تُرِیْدُ اَنْ تَكُوْنَ مِنَ الْمُصْلِحِیْنَ ﴿۱۹﴾
وَجَآءَ رَجُلٌ مِّنْ اَقْصَا الْمَدِیْنَةِ یَسْعٰی ؗ
قَالَ یٰمُوْسٰۤی اِنَّ الْمَلَاَ یَاْتَمِرُوْنَ بِكَ
لِیَقْتُلُوْكَ فَاخْرُجْ اِنِّیْ لَكَ مِنَ النّٰصِحِیْنَ ﴿۲۰﴾
فَخَرَجَ مِنْهَا خَآئِفًا یَّتَرَقَّبُ ؗ قَالَ رَبِّ
ع نَجِّنِیْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ﴿۲۱﴾
وَلَمَّا تَوَجَّهَ تِلْقَآءَ مَدْیَنَ قَالَ عَسٰی
رَبِّیْۤ اَنْ یَّهْدِیَنِیْ سَوَآءَ السَّبِیْلِ ﴿۲۲﴾
وَلَمَّا وَرَدَ مَآءَ مَدْیَنَ وَجَدَ عَلَیْهِ اُمَّةً
مِّنَ النَّاسِ یَسْقُوْنَ ۬ وَوَجَدَ مِنْ دُوْنِهِمُ
امْرَاَتَیْنِ تَذُوْدٰنِ ۚ قَالَ مَا خَطْبُكُمَا ؕ
قَالَتَا لَا نَسْقِیْ حَتّٰی یُصْدِرَ الرِّعَآءُ ٚ
وَاَبُوْنَا شَیْخٌ كَبِیْرٌ ﴿۲۳﴾
فَسَقٰی لَهُمَا ثُمَّ تَوَلّٰۤی اِلَی الظِّلِّ
فَقَالَ رَبِّ اِنِّیْ لِمَاۤ اَنْزَلْتَ اِلَیَّ مِنْ
خَیْرٍ فَقِیْرٌ ﴿۲۴﴾
فَجَآءَتْهُ اِحْدٰىهُمَا تَمْشِیْ عَلَی اسْتِحْیَآءٍ ؗ

कहा, "मेरे वालिद आपको बुला रहे हैं, ताकि आपने हमारी ख़ातिर से जो पानी पिलाया है उसका बदला आपको दें"। फिर जब वह उसके पास आया और उससे सारे अहवाल बयान किए, तो उसने कहा, "कुछ ख़ौफ़ न करो, ज़ालिम लोगों से तुम नजात पा गए हो"।

26. उन दोनों औरतों में से एक ने कहा, "ऐ मेरे बाप, इनको उजरत पर रख लीजिए; अच्छा शख़्स जिसे आप उजरत पर रखें वही है जो मज़बूत और अमानतदार हो"।

27. उसने कहा "मैं चाहता हूं कि अपनी इन दोनों बेटियों में से एक का निकाह तुम्हारे साथ इस शर्त पर कर दूं कि तुम आठ साल तक मेरे यहां उजरत पर काम करो, और अगर तुम दस साल पूरे कर दो, तो यह तुम्हारी तरफ़ से होगा; मैं तुम्हें मशक़्क़त में डालना नहीं चाहता। इंशाअल्लाह तुम मुझे नेक पाओगे"।

28. कहा, "यह मेरे और आपके दरमियान तय रहा, इन दोनों मुद्दतों में से जो भी मैं पूरी कर दूं, तो मुझ पर कोई इलज़ाम नहीं; और जो कुछ हम कह रहे हैं अल्लाह उसपर गवाह है"।

29. फिर जब मूसा ने मुद्दत पूरी कर दी और अपने घरवालों को लेकर चला, तो उसने तूर की जानिब एक आग-सी देखी। उसने अपने घरवालों से कहा, "ठहरो; मैंने एक आग देखी है। शायद मैं वहां से तुम्हारे पास कोई ख़बर ले आऊं, या उस आग से कोई अंगारा ही, ताकि तुम ताप सको"।

30. फिर जब वह वहां आया तो वादी के दाहिने किनारे से मुबारक ख़ित्ते में दरख़्त से पुकारा गया कि "ऐ मूसा, मैं ही अल्लाह हूं, सारे जहानों का रब!"

31. और यह कि "डाल दे अपनी लाठी"। फिर जब उसने उसे देखा कि वह बल खा रही है जैसे कोई सांप हो, तो पीठ फेरकर भागा और पीछे मुड़कर भी न देखा। "ऐ मूसा, आगे आ, और ख़ौफ़ न कर, बेशक तू ख़तरे से महफ़ूज़ है।

32. अपना हाथ अपने गिरेबान में डाल, बग़ैर किसी नुक़्स के सफ़ेद

क़ालत् इन्-न अबी यद्अू-क लि-यज्ज़ि-य-क अज्-र मा सक़ै-त लना, फ़-लम्मा जा-अहू व क़स्-स अ़लैहिल्-क़-स-स क़ा-ल ला त-ख़फ़् नजौ-त मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (25)

क़ालत् इह्दाहुमाया अ-बतिस्तअ्जिरहु इन्-न ख़ै-र मनिस्तअ्जर्तल्-क़विय्युल्-अमीन (26)

क़ा-ल इन्नी उरीदु अन् उन्कि-ह-क इह्दब्-नतय्-य हातैनि अ़ला अन् तअ्जु-रनी समानि-य हि-जजिन् फ़-इन् अत्मम्-त अ़श्रन् फ़-मिन् अ़िन्दि-क व मा उरीदु अन् अशुक़्-क़ अ़लै-क, स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु मिनस्सालिहीन (27)

क़ा-ल ज़ालि-क बैनी व बैन-क, अय्यमल्-अ-जलैनि क़ज़ैतु फ़ला अुद्वा-न अ़लय्-य, वल्लाहु अ़ला मा नक़ूलु वकील (28) ●

फ़-लम्मा क़ज़ा मूसल्-अ-ज-ल-व सा-र बि-अह्लिही आ-न-स मिन् जानिबित्-तूरि नारन् क़ा-ल लि-अह्लिहिम्कुसू इन्नी आनस्तु नारल्-लअ़ल्ली आतीकुम् मिन्हा बि-ख़-बरिन् औ जज़्वतिम् मिनन्नारि लअ़ल्लकुम् तस्तलून (29)

फ़-लम्मा अताहा नूदि-य मिन् शातिइल्-वादिल्-ऐमनि फ़िल्-बुक़्अ़तिल्-मुबा-र-कति मिनश्श-ज-रति अंय्यामूसा इन्नी अनल्लाहु रब्बुल्-आ़लमीन (30)

व अन् अल्क़ि अ़सा-क, फ़-लम्मा रआहा तह्तज़्ज़ु क-अन्नहा जान्नुंव्-वल्ला मुद्बिरंव्-व लम्-यु-अ़क़्क़िब्, या मूसा अक़्बिल् व ला तख़ाफ़्, इन्न-क मिनल्-आमिनीन (31)

उस्लुक् य-द-क फ़ी जैबि-क तख़्रुज् बैज़ा-अ

قَالَتْ اِنَّ اَبِیْ یَدْعُوْكَ لِیَجْزِیَكَ اَجْرَ مَا
سَقَیْتَ لَنَا ؕ فَلَمَّا جَآءَهٗ وَ قَصَّ عَلَیْهِ
الْقَصَصَ ۙ قَالَ لَا تَخَفْ ٝ نَجَوْتَ مِنَ
الْقَوْمِ الظّٰلِمِیْنَ ۝٢٥
قَالَتْ اِحْدٰىهُمَا یٰۤاَبَتِ اسْتَاْجِرْهُ ؗ
اِنَّ خَیْرَ مَنِ اسْتَاْجَرْتَ الْقَوِیُّ
الْاَمِیْنُ ۝٢٦
قَالَ اِنِّیْۤ اُرِیْدُ اَنْ اُنْكِحَكَ اِحْدَى
ابْنَتَیَّ هٰتَیْنِ عَلٰۤى اَنْ تَاْجُرَنِیْ ثَمٰنِیَ
حِجَجٍ ۚ فَاِنْ اَتْمَمْتَ عَشْرًا فَمِنْ عِنْدِكَ ۚ
وَ مَاۤ اُرِیْدُ اَنْ اَشُقَّ عَلَیْكَ ؕ سَتَجِدُنِیْۤ
اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰلِحِیْنَ ۝٢٧
قَالَ ذٰلِكَ بَیْنِیْ وَ بَیْنَكَ ؕ اَیَّمَا الْاَجَلَیْنِ
قَضَیْتُ فَلَا عُدْوَانَ عَلَیَّ ؕ وَ اللّٰهُ عَلٰى
ع مَا نَقُوْلُ وَكِیْلٌ ۝٢٨
فَلَمَّا قَضٰى مُوْسَى الْاَجَلَ وَ سَارَ بِاَهْلِهٖۤ
اٰنَسَ مِنْ جَانِبِ الطُّوْرِ نَارًا ۚ قَالَ
لِاَهْلِهِ امْكُثُوْۤا اِنِّیْۤ اٰنَسْتُ نَارًا لَّعَلِّیْۤ
اٰتِیْكُمْ مِّنْهَا بِخَبَرٍ اَوْ جَذْوَةٍ مِّنَ النَّارِ
لَعَلَّكُمْ تَصْطَلُوْنَ ۝٢٩
فَلَمَّاۤ اَتٰىهَا نُوْدِیَ مِنْ شَاطِئِ الْوَادِ الْاَیْمَنِ
فِی الْبُقْعَةِ الْمُبٰرَكَةِ مِنَ الشَّجَرَةِ اَنْ
یّٰمُوْسٰۤى اِنِّیْۤ اَنَا اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ۝٣٠ۙ
وَ اَنْ اَلْقِ عَصَاكَ ؕ فَلَمَّا رَاٰهَا تَهْتَزُّ كَاَنَّهَا
جَآنٌّ وَّلّٰى مُدْبِرًا وَّ لَمْ یُعَقِّبْ ؕ یٰمُوْسٰۤى
اَقْبِلْ وَ لَا تَخَفْ ۫ اِنَّكَ مِنَ الْاٰمِنِیْنَ ۝٣١
اُسْلُكْ یَدَكَ فِیْ جَیْبِكَ تَخْرُجْ بَیْضَآءَ

चमकता निकलेगा। और ख़ौफ़ के वक़्त अपने बाज़ू को अपने से मिलाए रख। यह दो निशानियां हैं तेरे रब की तरफ़ से फ़िरऔन और उसके दरबारियों के पास लेकर जाने कि लिए; यक़ीनन वो बड़े ही नाफ़रमान लोग हैं।'

33. उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मैंने उनके एक आदमी को क़त्ल किया है, इसलिए में डरता हूं कि वो मुझे मार डालेंगे।

34. मेरा भाई हारून मुझसे ज़्यादा फ़सीह ज़बान वाला है। लिहाज़ा उसे मेरे साथ मददगार की हैसियत से भेज कि वह मेरी तसदीक़ व ताईद करे, मुझे डर है कि वो मुझे झुटलाएंगे"।

35. फ़रमाया, "हम तेरे भाई के ज़रिए से तेरे बाज़ू को मज़बूत करेंगे, और तुम दोनों को एक सतवत (दबदबा) अता करेंगे कि वो फिर तुमपर दस्तरस न पा सकें, हमारी निशानियों के सबब से; तुम दोनों को और जो तुम्हारी पैरवी करेंगे उन्हें ग़लबा हासिल होगा"।

36. फिर जब मूसा उनके पास हमारी खुली निशानियां लेकर आया तो उन्होंने कहा, "यह तो बस बनाया हुआ जादू है। हमने तो यह बात अपने अगले बाप-दादा में कभी सुनी ही नहीं"।

37. मूसा ने कहा, "मेरा रब उस शख़्स को ख़ूब जानता है जो उसके यहां से हिदायत लेकर आया है, और उसको भी जिसके लिए आख़िरत का घर है। यक़ीनन ज़ालिम कामयाब न होंगे।

38. फ़िरऔन ने कहा, "ऐ अहले दरबार, मैं तो अपने सिवा तुम्हारे किसी हाकिम को नहीं जानता। अच्छा तो ऐ हामान, तू मेरे लिए ईंटें आग में पकवा, फिर मेरे लिए एक ऊंचा महल बनवा कि मैं मूसा के माबूद को झांक आऊं; मैं तो उसे झूटा समझता हूं"।

39. उसने और उसके लश्करों ने ज़मीन में बग़ैर किसी हक़ के घमंड किया, और समझा कि उन्हें हमारी तरफ़ लौटना नहीं है।

40. आख़िरकार हमने उसे और उसके लश्करों को पकड़ा और उन्हें गहरे पानी में फेंक दिया, अब देख लो कि ज़ालिमों का कैसा अन्जाम हुआ!

मिन् ग़ैरि सूइंव्-वज़्मुम् इलै-क जना-ह-क मिनर्रह्बि फ़ज़ानि-क बुर्हानानि मिर्रब्बि-क इला फ़िर्औ़-न व म-लइही, इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन (32)

क़ा-ल रब्बि इन्नी क़तल्तु मिन्हुम् नफ़्सन् फ़-अख़ाफ़ु अंय्यक़्तुलून (33)

व अख़ी हारूनु हु-व अफ़्सहु मिन्नी लिसानन् फ़-अर्सिल्हु मअ़ि-य रिद्अंय्-युसद्दिक़ुनी इन्नी अख़ाफ़ु अंय्युकज़्ज़िबून (34)

क़ा-ल स-नशुद्दु अ़ज़ु-द-क बि-अख़ी-क व नज्अ़लु लकुमा सुल्तानन् फ़ला यसिलू-न इलैकुमा बिआयातिना अन्तुमा व मनित्त-ब-अ़कुमल्-ग़ालिबून (35)

फ़-लम्मा जा-अहुम् मूसा बिआयातिना बय्यिनातिन् क़ालू मा हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुफ़्तरंव्-व मा समिअ़्ना बिहाज़ा फ़ी आबाइनल्-अव्वलीन (36)

व क़ा-ल मूसा रब्बी अअ़्लमु बिमन् जा-अ बिल्हुदा मिन् अ़िन्दिही व मन् तकूनु लहू आ़क़ि-बतुद्-दारि, इन्नहू ला युफ़्लिहुज़्ज़ालिमून (37)

व क़ा-ल फ़िर्अ़ौनु या अय्युहल्-म-ल-उ मा अ़लिम्तु लकुम् मिन् इलाहिन् ग़ैरी फ़-औक़िद् ली या हामानु अ़लत्तीनि फ़ज्अ़ल्ली सर्हल्-लअ़ल्ली अत्तलिअ़ु इला इलाहि मूसा व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू मिनल्-काज़िबीन (38)

वस्तक्ब-र हु-व व जुनूदुहू फ़िल्-अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व ज़न्नू अन्नहुम् इलैना ला युर्जअ़ून (39)

फ़-अख़ज़्नाहु व जुनू-दहू फ़-नबज़्नाहुम् फ़िल्यम्मि फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुज़्ज़ालिमीन (40)

مِنْ غَيْرِ سُوْٓءٍ ۡ وَّاضْمُمْ اِلَيْكَ جَنَاحَكَ
مِنَ الرَّهْبِ فَذٰنِكَ بُرْهَانٰنِ مِنْ رَّبِّكَ
اِلٰى فِرْعَوْنَ وَمَلَا۠ئِهٖ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا
فٰسِقِيْنَ ۝٣٢
قَالَ رَبِّ اِنِّىْ قَتَلْتُ مِنْهُمْ نَفْسًا فَاَخَافُ
اَنْ يَّقْتُلُوْنِ ۝٣٣
وَاَخِىْ هٰرُوْنُ هُوَ اَفْصَحُ مِنِّىْ لِسَانًا
فَاَرْسِلْهُ مَعِىَ رِدْاً يُّصَدِّقُنِىْٓ ۡ اِنِّىْٓ
اَخَافُ اَنْ يُّكَذِّبُوْنِ ۝٣٤
قَالَ سَنَشُدُّ عَضُدَكَ بِاَخِيْكَ وَنَجْعَلُ
لَكُمَا سُلْطٰنًا فَلَا يَصِلُوْنَ اِلَيْكُمَا ۚۛ بِاٰيٰتِنَآ ۚۛ
اَنْتُمَا وَمَنِ اتَّبَعَكُمَا الْغٰلِبُوْنَ ۝٣٥
فَلَمَّا جَآءَهُمْ مُّوْسٰى بِاٰيٰتِنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا
مَا هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّفْتَرًى وَّمَا سَمِعْنَا
بِهٰذَا فِىْٓ اٰبَآئِنَا الْاَوَّلِيْنَ ۝٣٦
وَقَالَ مُوْسٰى رَبِّىْٓ اَعْلَمُ بِمَنْ جَآءَ
بِالْهُدٰى مِنْ عِنْدِهٖ وَمَنْ تَكُوْنُ لَهٗ
عَاقِبَةُ الدَّارِ ؕ اِنَّهٗ لَا يُفْلِحُ الظّٰلِمُوْنَ ۝٣٧
وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰٓاَيُّهَا الْمَلَاُ مَا عَلِمْتُ لَكُمْ
مِّنْ اِلٰهٍ غَيْرِىْ ۚ فَاَوْقِدْ لِىْ يٰهَامٰنُ
عَلَى الطِّيْنِ فَاجْعَلْ لِّىْ صَرْحًا لَّعَلِّىْٓ
اَطَّلِعُ اِلٰٓى اِلٰهِ مُوْسٰى ۙ وَاِنِّىْ لَاَظُنُّهٗ
مِنَ الْكٰذِبِيْنَ ۝٣٨
وَاسْتَكْبَرَ هُوَ وَجُنُوْدُهٗ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ اِلَيْنَا لَا يُرْجَعُوْنَ ۝٣٩
فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِى الْيَمِّ ۚ
فَانْظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الظّٰلِمِيْنَ ۝٤٠

41. और हमने उनको आग की तरफ़ दावत देने वाले पेशवा बना दिए; और क़ियामत के रोज़ उन्हें कोई मदद हासिल न होगी;

42. और हमने इस दुनिया में उनके पीछे लानत लगा दी, और क़ियामत के दिन वो बदहाल लोगों में से होंगे।

43. और अगली नसलों को हलाक कर देने के बाद हमने मूसा को किताब अता की, लोगों के लिए बसीरतों का सामान और हिदायत व रहमत बनाकर, ताकि वो याददिहानी हासिल करें।

44. तुम (शहर के) मग़रिबी किनारे पर नहीं थे जबकि हमने मूसा को बात की क़तई इत्तिला दी थी, और न तुम गवाहों में से थे;

45. लेकिन हमने बहुत सी नस्लें उठाईं, और उनपर बहुत ज़माना गुज़र गया। और तुम अहले मद्यन में भी मुक़ीम न थे कि उन्हें हमारी आयतें सुना रहे होते, मगर रसूल बनाने वाले हम ही रहे हैं।

46. और तुम तूर के पहलू में भी मौजूद न थे जब हमने पुकारा था; मगर यह तुम्हारे रब की रहमत है, ताकि तुम ऐसे लोगों को ख़बरदार करो जिनके पास तुमसे पहले कोई ख़बरदार करने वाला नहीं आया, ताकि वो याददिहानी हासिल करें।

47. और अगर यह बात न होती कि जो कुछ उनके हाथ आगे भेज चुके हैं उसकी वजह से उनपर कोई मुसीबत आए, तो वो कहने लगते, "ऐ हमारे रब, तूने क्यों न हमारी तरफ़ कोई रसूल भेजा कि हम तेरी आयतों की पैरवी करते और मोमिन होते?"

48. फिर जब उनके पास हक़ हमारे यहां से आ गया तो वो कहने लगे कि जो चीज़ मूसा को मिली थी उसी तरह की चीज़ इसे क्यों न मिली? क्या वो उसका इनकार नहीं कर चुके हैं जो इससे पहले मूसा को अता किया गया था? उन्होंने कहा, "दोनों जादू हैं जो एक-दूसरे की मदद करते हैं" और कहा, "हम तो हर एक का इनकार करते हैं"।

व जअ़ल्ना-हुम् अ-इम्म-तंय्यद्अू-न इलन्नारि व यौमल्-क़ियामति ला युन्सरून (41)

व अत्बअ़्नाहुम् फ़ी हाज़िहिद्दुन्या लअ़्-नतन् व यौमल्-क़ियामति हुम् मिनल् मक़्बूहीन (42) ●

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब मिम्-बअ़्दि मा अह्लक्नल्-क़ुरूनल्-ऊला बसाइ-र लिन्नासि व हुदंव्-व रह्म-तल् लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (43)

व मा कुन्-त बिजानिबिल् ग़र्बिय्यि इज़् क़ज़ैना इला मूसल्-अम्-र व मा कुन्-त मिनश्शाहिदीन (44)

व लाकिन्ना अन्शअ्ना क़ुरूनन् फ़-तता-व-ल अ़लैहिमुल्-अ़ुमुरु व मा कुन्-त सावि-यन् फ़ी अह्लि मद्-य-न तत्लू अ़लैहिम् आयातिना व लाकिन्ना कुन्ना मुर्सिलीन (45)

व मा कुन्-त बिजानिबित्तूरि इज़् नादैना व लाकिर्-रह्म-तम् मिर्रब्बि-क लितुन्ज़ि-र क़ौमम् मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम् मिन् क़ब्लि-क लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (46)

व लौ ला अन् तुसी-बहुम् मुसीबतुम् बिमा क़द्दमत् ऐदीहिम् फ़-यक़ूलू रब्बना लौ ला अर्सल्-त इलैना रसूलन् फ़-नत्तबि-अ आयाति-क व नकू-न मिनल्-मुअ्मिनीन (47)

फ़-लम्मा जा-अहुमुल्-हक़्क़ु मिन् अ़िन्दिना क़ालू लौ ला ऊति-य मिस्-ल मा ऊति-य मूसा, अ-व लम् यक्फ़ुरू बिमा ऊति-य मूसा मिन् क़ब्लु क़ालू सिह्रानि तज़ा-हरा, व क़ालू इन्ना बिकुल्लिन् काफ़िरून (48)

وَجَعَلْنٰهُمْ اَىِٕمَّةً يَّدْعُوْنَ اِلَى النَّارِ ۚ
وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝٤١
وَاَتْبَعْنٰهُمْ فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا لَعْنَةً ۚ
ع وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ هُمْ مِّنَ الْمَقْبُوْحِيْنَ ۝٤٢
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ مِنْ بَعْدِ
مَاۤ اَهْلَكْنَا الْقُرُوْنَ الْاُوْلٰى بَصَاۤىِٕرَ
لِلنَّاسِ وَهُدًى وَّرَحْمَةً لَّعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٤٣
وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الْغَرْبِيِّ اِذْ قَضَيْنَاۤ
اِلٰى مُوْسَى الْاَمْرَ وَمَا كُنْتَ مِنَ
الشّٰهِدِيْنَ ۝٤٤ ۙ
وَلٰكِنَّاۤ اَنْشَاْنَا قُرُوْنًا فَتَطَاوَلَ عَلَيْهِمُ
الْعُمُرُ ۚ وَمَا كُنْتَ ثَاوِيًا فِيْۤ اَهْلِ
مَدْيَنَ تَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِنَا ۙ وَلٰكِنَّا
كُنَّا مُرْسِلِيْنَ ۝٤٥
وَمَا كُنْتَ بِجَانِبِ الطُّوْرِ اِذْ نَادَيْنَا
وَلٰكِنْ رَّحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا
مَّاۤ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ مِّنْ قَبْلِكَ
لَعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٤٦
وَلَوْلَاۤ اَنْ تُصِيْبَهُمْ مُّصِيْبَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ
اَيْدِيْهِمْ فَيَقُوْلُوْا رَبَّنَا لَوْلَاۤ اَرْسَلْتَ
اِلَيْنَا رَسُوْلًا فَنَتَّبِعَ اٰيٰتِكَ وَنَكُوْنَ
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ ۝٤٧
فَلَمَّا جَاۤءَهُمُ الْحَقُّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوْا لَوْلَاۤ
اُوْتِيَ مِثْلَ مَاۤ اُوْتِيَ مُوْسٰى ؕ اَوَلَمْ يَكْفُرُوْا
بِمَاۤ اُوْتِيَ مُوْسٰى مِنْ قَبْلُ ۚ قَالُوْا سِحْرٰنِ
تَظٰهَرَا ۟ وَقَالُوْۤا اِنَّا بِكُلٍّ كٰفِرُوْنَ ۝٤٨

قُلْ فَاْتُوْا بِكِتٰبٍ مِّنْ عِنْدِ اللّٰهِ هُوَ
اَهْدٰى مِنْهُمَآ اَتَّبِعْهُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤٩
فَاِنْ لَّمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَكَ فَاعْلَمْ اَنَّمَا
يَتَّبِعُوْنَ اَهْوَآءَهُمْ ۭ وَمَنْ اَضَلُّ
مِمَّنِ اتَّبَعَ هَوٰىهُ بِغَيْرِ هُدًى مِّنَ
اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ
ع ٨ الظّٰلِمِيْنَ ۝٥٠

وَلَقَدْ وَصَّلْنَا لَهُمُ الْقَوْلَ لَعَلَّهُمْ
يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٥١

اَلَّذِيْنَ اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِهٖ
هُمْ بِهٖ يُؤْمِنُوْنَ ۝٥٢

وَاِذَا يُتْلٰى عَلَيْهِمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖٓ اِنَّهُ
الْحَقُّ مِنْ رَّبِّنَآ اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلِهٖ
مُسْلِمِيْنَ ۝٥٣

اُولٰٓئِكَ يُؤْتَوْنَ اَجْرَهُمْ مَّرَّتَيْنِ بِمَا
صَبَرُوْا وَيَدْرَءُوْنَ بِالْحَسَنَةِ السَّيِّئَةَ
وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ۝٥٤

وَاِذَا سَمِعُوا اللَّغْوَ اَعْرَضُوْا عَنْهُ وَقَالُوْا
لَنَآ اَعْمَالُنَا وَلَكُمْ اَعْمَالُكُمْ ۡ سَلٰمٌ
عَلَيْكُمْ ۡ لَا نَبْتَغِي الْجٰهِلِيْنَ ۝٥٥

اِنَّكَ لَا تَهْدِيْ مَنْ اَحْبَبْتَ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ يَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ اَعْلَمُ
بِالْمُهْتَدِيْنَ ۝٥٦

وَقَالُوْٓا اِنْ نَّتَّبِعِ الْهُدٰى مَعَكَ
نُتَخَطَّفْ مِنْ اَرْضِنَا ۭ اَوَلَمْ نُمَكِّنْ
لَّهُمْ حَرَمًا اٰمِنًا يُّجْبٰٓى اِلَيْهِ ثَمَرٰتُ كُلِّ
شَيْءٍ رِّزْقًا مِّنْ لَّدُنَّا وَلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ

कुल् फ़अ्तू बिकिताबिम् मिन् अिन्दिल्लाहि हु-व अह्दा मिन्हुमा अत्तबिअ्हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (49)

फ़-इल्लम् यस्तजीबू ल-क फ़अ्लम् अन्नमा यत्तबिअू-न अह्वा-अहुम्, व मन् अज़ल्लु मिम्-मनित्त-ब-अ हवाहु बिग़ैरि हुदम्-मिनल्लाहि, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमज़्ज़ालिमीन (50) ●

व ल-क़द् वस्सल्ना लहुमुल्-क़ौ-ल लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (51)

अल्लज़ी-न आतैनाहुमुल्-किता-ब मिन् क़ब्लिही हुम् बिही युअ्मिनून ●(52)

व इज़ा युत्ला अ़लैहिम् क़ालू आमन्ना बिही इन्नहुल्-हक़्क़ु मिर्रब्बिना इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लिही मुस्लिमीन (53)

उलाइ-क युअ्तौ-न अज्-रहुम् मर्रतैनि बिमा स-बरू व यद्रऊ-न बिल्ह-स- नतिस्- सय्यि-अ-त व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (54)

व इज़ा समिअुल्लग़्-व अअ्-रज़ू अ़न्हु व क़ालू लना अअ्मालुना व लकुम् अअ्मालुकुम् सलामुन् अ़लैकुम् ला नब्तग़िल्-जाहिलीन (55)

इन्न-क ला तह्दी मन् अह्बब्-त व लाकिन्नल्ला-ह यह्दी मंय्यशा-उ व हु-व अअ्लमु बिल्मुह्-तदीन (56)

व क़ालू इन् नत्तबिअ़िल्-हुदा म-अ़-क नु-तख़त्तफ़् मिन् अर्ज़िना, अ-व लम् नुमक्किल् लहुम् ह-रमन् आमिनंय्-युज्बा इलैहि स-मरातु कुल्लि शैइर्-रिज़्क़म् मिल्लदुन्ना व लाकिन्-न अक्स-रहुम्

49. कहो, "अच्छा तो अल्लाह के यहां से कोई ऐसी किताब लाओ जो इन दोनों से बढ़कर हिदायत बख़्शनेवाली हो कि मैं उसकी पैरवी करूं, अगर तुम सच्चे हो"।

50. अब अगर वो तुम्हारा मुतालबा पूरा न करें, तो जान लो कि वो सिर्फ़ अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करते हैं; और उससे बढ़कर भटका हुआ कौन होगा जो अल्लाह की तरफ़ की हिदायत के बग़ैर अपनी ख़्वाहिश की पैरवी करे? यक़ीनन अल्लाह जुल्म पेशा लोगों को हिदायत नहीं बख़्शता।

51. और हमने उनके लिए पे-दर-पे अपना कलाम भेजा, ताकि वो याददिहानी हासिल करें।

52. जिन लोगों को हमने इससे पहले किताब अता की थी, वो इसपर ईमान लाते हैं।

53. और जब यह उनको पढ़कर सुनाया जाता है, तो वो कहते हैं, "हम इसपर ईमान लाए; यक़ीनन यह हक़ है हमारे रब की तरफ़ से। हम तो पहले ही से फ़रमांबरदार हैं"।

54. ये वो लोग हैं जो अपना दोहरा अजर पाएंगे इसलिए कि वो साबित क़दम रहे, और भलाई से बुराई को दफ़ा करते हैं, और जो कुछ रिज़्क़ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

55. और जब वो लग्व बात सुनते हैं तो यह कहते हुए उससे किनारा कश हो जाते हैं कि "हमारे लिए हमारे आमाल हैं, और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल हैं, तुम को सलाम है! हम जाहिलों से (उलझना) नहीं चाहते"।

56. तुम जिसे चाहो हिदायत नहीं दे सकते, मगर अल्लाह जिसे चाहता है हिदायत अता करता है, और वही राह पाने वालों को ख़ूब जानता है।

57. वो कहते हैं, "अगर हम तुम्हारे साथ इस हिदायत की पैरवी करें, तो अपनी सरज़मीन से उचक लिए जाएंगे"। क्या ख़तरों से महफ़ूज़ हरम में हमने उन्हें मुतमक्किन नहीं किया, जिस की तरफ़ हमारी जानिब से रिज़्क़ के तौरपर हर चीज़ की पैदावार खिंची

لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٥٧
وَكَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَرْيَةٍۭ بَطِرَتْ مَعِيْشَتَهَا
فَتِلْكَ مَسٰكِنُهُمْ لَمْ تُسْكَنْ مِّنْۢ بَعْدِهِمْ
اِلَّا قَلِيْلًا ؕ وَكُنَّا نَحْنُ الْوٰرِثِيْنَ ۝٥٨
وَمَا كَانَ رَبُّكَ مُهْلِكَ الْقُرٰى حَتّٰى
يَبْعَثَ فِيْٓ اُمِّهَا رَسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْهِمْ
اٰيٰتِنَا ۚ وَمَا كُنَّا مُهْلِكِي الْقُرٰٓى اِلَّا
وَاَهْلُهَا ظٰلِمُوْنَ ۝٥٩
وَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا وَزِيْنَتُهَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ
ع وَّاَبْقٰى ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ۝٦٠
اَفَمَنْ وَّعَدْنٰهُ وَعْدًا حَسَنًا فَهُوَ
لَاقِيْهِ كَمَنْ مَّتَّعْنٰهُ مَتَاعَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا
ثُمَّ هُوَ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ مِنَ الْمُحْضَرِيْنَ ۝٦١
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِيَ
الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝٦٢
قَالَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ رَبَّنَا
هٰٓؤُلَآءِ الَّذِيْنَ اَغْوَيْنَا ۚ اَغْوَيْنٰهُمْ كَمَا
غَوَيْنَا ۚ تَبَرَّاْنَآ اِلَيْكَ ۫ مَا كَانُوْٓا اِيَّانَا
يَعْبُدُوْنَ ۝٦٣
وَقِيْلَ ادْعُوْا شُرَكَآءَكُمْ فَدَعَوْهُمْ
فَلَمْ يَسْتَجِيْبُوْا لَهُمْ وَرَاَوُا الْعَذَابَ ۚ
لَوْ اَنَّهُمْ كَانُوْا يَهْتَدُوْنَ ۝٦٤
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ مَاذَآ اَجَبْتُمُ
الْمُرْسَلِيْنَ ۝٦٥
فَعَمِيَتْ عَلَيْهِمُ الْاَنْۢبَآءُ يَوْمَئِذٍ فَهُمْ
لَا يَتَسَآءَلُوْنَ ۝٦٦

ला यअ्लमून (57)

व कम् अह्लक्ना मिन् क़र्-यतिम् बतिरत् मअी-श-तहा फ़तिल्-क मसाकिनुहुम् लम् तुस्कम् मिम्-बअ्दिहिम् इल्ला क़लीलन्, व कुन्ना नह्नुल्-वारिसीन (58)

व मा का-न रब्बु-क मुह्लिकल्-क़ुरा हत्ता यब्-अ़-स फ़ी उम्मिहा रसूलंय्-यत्लू अ़लैहिम् आयातिना व मा कुन्ना मुह्लिकिल्-क़ुरा इल्ला-व अह्लुहा ज़ालिमून (59)

व मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़-मताअुल्-हयातिद्दुन्या व ज़ी-नतुहा व मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुंव्-व अब्क़ा, अ-फ़ला तअ्क़िलून (60) ●

अ-फ़मंव्-वअ़द्नाहु वअ्दन् ह-सनन् फ़हु-व लाक़ीहि कमम्-मत्तअ्नाहु मताअ़ल्-हयातिद्दुन्या सुम्-म हु-व यौमल्-क़ियामति मिनल्-मुह्ज़रीन (61)

व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अुमून (62)

क़ालल्लज़ी-न हक़्-क़ अ़लैहिमुल्-क़ौलु रब्बना हा-उलाइल्लज़ी-न अग्वैना अग्वैनाहुम् कमा ग़वैना तबर्रअ्ना इलै-क मा कानू इय्याना यअ्बुदून (63)

व क़ीलद्अू शु-रका-अकुम् फ़-दऔहुम् फ़-लम् यस्तजीबू लहुम् व र-अवुल्-अ़ज़ा-ब लौ अन्नहुम् कानू यह्तदून (64)

व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु माज़ा अ-जब्तुमुल्-मुर्सलीन (65)

फ़-अ़मियत् अ़लैहिमुल्-अम्बा-उ यौमइज़िन् फ़हुम् ला य-तसाअलून (66)

चली आती है? मगर उनमें से अक्सर जानते नहीं।

58. हमने कितनी ही बस्तियों को जो अपनी मईशत पर नाज़ां थी हलाक करके छोड़ा! तो ये हैं उनकी बस्तियां जो उनके बाद आबाद नहीं हुई मगर बहुत कम, आख़िरकार हम ही वारिस हुए।

59. तेरा रब तो बस्तियों को हलाक करने वाला नहीं जब तक कि उनकी मर्कज़ी बस्ती में कोई रसूल न भेज दे, जो उन्हें हमारी आयतें सुनाए, और हम बस्तियों को हलाक करने वाले नहीं, सिवाय इस सूरत के कि वहां के बाशिन्दे ज़ुल्म पेशा हों।

60. जो चीज़ भी तुम्हें अता हुई है वह तो दुनिया की ज़िन्दगी का सामान और उसकी ज़ीनत है; और जो कुछ अल्लाह के पास है वह बेहतर और पाएदारतर है। तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?

61. भला वह शख़्स जिससे हमने अच्छा वादा किया, और वह उसे पानेवाला भी हो, वह उसकी तरह हो सकता है जिसे हमने दुनिया की ज़िन्दगी का सरो सामान दे दिया हो, फिर वह क़ियामत के रोज़ पकड़कर पेश किया जानेवाला हो?

62. और (ख़याल करो) जिस रोज़ वह उन्हें पुकारेगा, और कहेगा, "कहां हैं मेरे वो शरीक जिनका तुम गुमान रखते थे"?

63. जिनपर बात पूरी हो चुकी होगी, वो कहेंगे, "ऐ हमारे रब, ये वो लोग हैं जिन्हें हमने बहका दिया था, जैसे हम ख़ुद बहके थे उन्हें भी बहकाया, हमने तेरे हुज़ूर उनसे इज़हार-ए-बराअत कर दी; ये कोई हमारी बन्दगी तो करते न थे"।

64. कहा जाएगा, "पुकारो अपने ठहराए हुए शुरका को!" तो वह उन्हें पुकारेंगे, मगर वो उनकी शुनवाई न करेंगे, और वो अज़ाब देखकर रहेंगे, काश वो हिदायत इख़्तियार करनेवाले होते।

65. और (ख़याल करो) जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा और कहेगा, "तुमने रसूलों को क्या जवाब दिया था?"

66. उस दिन उन्हें बातें न सूझेंगी, फिर वो आपस में भी एक दूसरे से पूछ-गछ न करेंगे।

67. अलबत्ता जिस किसी ने तौबा कर ली, और वह ईमान ले आया, और नेक अमल किया, तो तवक़्क़ो है कि वह कामयाब होनेवालों में से होगा।

68. और तेरा रब पैदा करता है जो कुछ चाहता है और इख़्तियार करता है जो चाहता है; उन्हें कोई इख़्तियार हासिल नहीं। अल्लाह अज़ीम व बरतर है उससे जो वो शिर्क करते हैं!

69. और तेरा रब जानता है जो कुछ उनके सीने छुपाते हैं और जो कुछ वो लोग ज़ाहिर करते हैं।

70. और वही अल्लाह है; उसके सिवा कोई माबूद नहीं। तारीफ़ उसी के लिए है पहली और पिछली ज़िन्दगी में; उसी के इख़्तियार में फ़ैसला है; और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे।

71. कहो: "क्या तुमने ग़ौर किया? अगर अल्लाह क़ियामत के रोज़ तक हमेशा के लिए तुमपर रात तारी कर दे तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन माबूद है जो तुम्हारे पास रौशनी लाए? तो क्या तुम सुनते नहीं?"

72. कहो: "क्या तुमने ग़ौर किया? अगर अल्लाह क़ियामत के रोज़ तक हमेशा के लिए तुमपर दिन तारी कर दे, तो अल्लाह के सिवा दूसरा कौन माबूद है जो तुम्हारे लिए रात लाए जिसमें तुम सुकून हासिल करते हो? तो क्या तुम देखते नहीं?

73. उसने अपनी रहमत से तुम्हारे लिए रात और दिन बनाए, ताकि तुम उसमें (रात में) सुकून हासिल करो और ताकि तुम (दिन में) उसके फ़ज़्ल के तालिब हो और ताकि तुम शुक्रगुज़ार हो"।

74. और (ख़याल करो) जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा, और कहेगा, "कहां हैं मेरे वो शरीक जिनका तुम गुमान रखते थे?"

75. और हम हर उम्मत में से एक गवाह निकाल लाएंगे और कहेंगे, "लाओ अपनी दलील!" तब वो जान लेंगे कि हक़ अल्लाह के लिए है और जो कुछ वो घड़ते थे, वह सब उनसे गुम होकर रह जाएगा।

76. यह वाक़िया है कि क़ारून मूसा की क़ौम में से था; फिर उसने

फ़-अम्मा मन् ता-ब व आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-अ़सा अंय्यकू-न मिनल्-मुफ़्लिहीन (67)

व रब्बु-क यख़्लुक़ु मा यशा-उ व यख़्तारु, मा का-न लहुमुल् ख़ि-य-रतु, सुब्हानल्लाहि व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (68)

व रब्बु-क यअ़्लमु मा तुकिन्नु सुदूरुहुम् व मा युअ़्लिनून (69)

व हुवल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, लहुल्-हम्दु फ़िल्-ऊला वल्-आख़िरति व लहुल्-हुक्मु व इलैहि तुर्जअ़ून (70)

क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ़लल्लाहु अ़लैकुमुल्-लै-ल सर्-मदन् इला यौमिल्-क़ियामति मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिज़ियाइन्, अ-फ़ला तस्-मअ़ून (71)

क़ुल् अ-रऐतुम् इन् ज-अ़लल्लाहु अ़लैकुमुन्नहा-र सर्-मदन् इला यौमिल्-क़ियामति मन् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि यअ्तीकुम् बिलैलिन् तस्कुनू-न फ़ीहि, अ-फ़ला तुब्सिरून (72)

व मिर्रह्मतिही ज-अ़-ल लकुमुल्लै-ल वन्नहा-र लितस्कुनू फ़ीहि व लि-तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (73)

व यौ-म युनादीहिम् फ़-यक़ूलु ऐ-न शु-रकाइ-यल्लज़ी-न कुन्तुम् तज़्अ़ुमून (74)

व न-ज़अ़्ना मिन् कुल्लि उम्मतिन् शहीदन् फ़-क़ुल्ना हातू बुर्हा-नकुम् फ़-अ़लिमू अन्नल्-हक़्-क़ लिल्लाहि व ज़ल्-ल अ़न्हुम् मा कानू यफ़्तरून (75) ●

इन्-न क़ारू-न का-न मिन् क़ौमि मूसा फ़-बग़ा

فَاَمَّا مَنْ تَابَ وَاٰمَنَ وَعَمِلَ صَالِحًا
فَعَسٰٓى اَنْ يَّكُوْنَ مِنَ الْمُفْلِحِيْنَ ۝٦٧
وَرَبُّكَ يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ وَيَخْتَارُ ؕ
مَا كَانَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ ؕ سُبْحٰنَ اللّٰهِ
وَتَعٰلٰى عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٦٨
وَرَبُّكَ يَعْلَمُ مَا تُكِنُّ صُدُوْرُهُمْ
وَمَا يُعْلِنُوْنَ ۝٦٩
وَهُوَ اللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؕ لَهُ الْحَمْدُ
فِى الْاُوْلٰى وَالْاٰخِرَةِ ؗ وَلَهُ الْحُكْمُ
وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٧٠
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ
الَّيْلَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ
اِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِضِيَآءٍ ؕ اَفَلَا
تَسْمَعُوْنَ ۝٧١
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ جَعَلَ اللّٰهُ عَلَيْكُمُ
النَّهَارَ سَرْمَدًا اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ مَنْ اِلٰهٌ
غَيْرُ اللّٰهِ يَاْتِيْكُمْ بِلَيْلٍ تَسْكُنُوْنَ فِيْهِ ؕ
اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝٧٢
وَمِنْ رَّحْمَتِهٖ جَعَلَ لَكُمُ الَّيْلَ وَالنَّهَارَ
لِتَسْكُنُوْا فِيْهِ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ۝٧٣
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ فَيَقُوْلُ اَيْنَ شُرَكَآءِىَ
الَّذِيْنَ كُنْتُمْ تَزْعُمُوْنَ ۝٧٤
وَنَزَعْنَا مِنْ كُلِّ اُمَّةٍ شَهِيْدًا فَقُلْنَا
هَاتُوْا بُرْهَانَكُمْ فَعَلِمُوْٓا اَنَّ الْحَقَّ لِلّٰهِ
ع وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَفْتَرُوْنَ ۝٧٥
اِنَّ قَارُوْنَ كَانَ مِنْ قَوْمِ مُوْسٰى فَبَغٰى

उनके मुक़ाबले में सर उठाया, और हमने उसे इतने ख़ज़ाने दे रखे थे कि उनकी कुंजियां एक ताक़तवर जमाअत को भारी पड़ती थीं। जब उससे उसकी क़ौम ने कहा, "इतराओ मत; अल्लाह इतराने वालों को पसन्द नहीं करता।

77. जो कुछ अल्लाह ने तुझे दिया उसमें आख़िरत के घर का तालिब बन, और दुनिया में से अपना हिस्सा फ़रामोश न कर; और एहसान कर, जैसा कि अल्लाह ने तेरे साथ एहसान किया है। और ज़मीन में फ़साद के तालिब न बनो। यक़ीनन अल्लाह मुफ़्सिदों को पसन्द नहीं करता"।

78. उसने कहा, "मुझे तो यह मेरे अपने ज़ाती इल्म की बदौलत मिला है"। क्या उसने यह नहीं जाना कि अल्लाह उससे पहले कितनी ही नसलों को हलाक कर चुका है जो ताक़त में उससे बढ़-चढ़कर और जमईयत में उससे ज़्यादा थीं? और मुजरिमों से उनके गुनाहों के मुतअल्लिक़ पूछा नहीं जाएगा।

79. फिर वह अपने ठाट-बाट में अपनी क़ौम के सामने निकला। जो लोग हयात-ए-दुनिया के तालिब थे उन्होंने कहा, "ऐ काश! जैसा कुछ क़ारून को हासिल है हमें भी हासिल होता! वह तो बड़ा ही नसीबेवाला है"।

80. मगर जिनको इल्म अता हुआ था उन्होंने कहा, "अफ़सोस तुमपर! अल्लाह का अजर बेहतर है उसके लिए जो ईमान लाए, और नेक अमल करे; और यह हिकमत उन्हीं के हिस्से में आती है जो सब्र इख़्तियार करने वाले होते हैं"।

81. आख़िरकार हमने उसको और उसके घर को ज़मीन में धंसा दिया और कोई ऐसी जमाअत उसकी न हुई जो अल्लाह और उसके बीच हायल होकर उसकी मदद करती, और न वह ख़ुद अपनी मुदाफ़अत कर सका;

82. अब वही लोग जो कल उसके मक़ाम की तमन्ना कर रहे थे कहने लगे, "क्या तुम्हें ख़बर न हुई कि अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा करता है, और जिसे चाहता है नपा-तुला देता है, अगर अल्लाह ने हम पर एहसान न फ़रमाया होता, तो हमें भी धंसा देता। क्या

अ़लैहिम् व आतैनाहु मिनल्-कुनूज़ि मा इन्-न मफ़ाति-हहू ल-तनूउ बिल्अुस्बति उलिल्-क़ुव्वति, इज़् क़ा-ल लहू क़ौमुहू ला तफ़्रह् इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-फ़रिहीन (76)

वब्तग़ि फ़ीमा आताकल्लाहुद्-दारल्-आख़िर-त व ला तन्-स नसी-ब-क मिनद्दुन्या व अह्सिन् कमा अह्स-नल्लाहु इलै-क व ला तब्ग़िल्-फ़सा-द फ़िल्अर्ज़ि, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बुल्-मुफ़्सिदीन (77)

क़ा-ल इन्नमा ऊतीतुहू अ़ला अ़िल्मिन् अ़िन्दी, अ-व लम् यअ्लम् अन्नल्ला-ह क़द् अह्ल-क मिन् क़ब्लिही मिनल्-क़ुरूनि मन् हु-व अशद्दु मिन्हु क़ुव्वतंव्-व अक्सरु जम्अ़न्, व ला युस्अलु अ़न् ज़ुनूबिहिमुल्-मुज्रिमून (78)

फ़-ख़-र-ज अ़ला क़ौमिही फ़ी ज़ीनतिही, क़ालल्लज़ी-न युरीदूनल्-हयातद्दुन्या यालै-त लना मिस्-ल मा ऊति-य क़ारूनु इन्नहू लज़ू हज़्ज़िन् अ़ज़ीम (79)

व क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म वैलकुम् सवाबुल्लाहि ख़ैरुल्-लिमन् आम-न व अ़मि-ल सालिहन् व ला युलक़्क़ाहा इल्लस्साबिरून (80)

फ़-ख़सफ़्ना बिही व बिदारिहिल्-अर्-ज़, फ़मा का-न लहू मिन् फ़ि-अतिंय्-यन्सुरूनहू मिन् दूनिल्लाहि, व मा का-न मिनल्-मुन्तसिरीन (81)

व अस्-बहल्लज़ी-न तमन्नौ मकानहू बिल्अम्सि यक़ूलू-न वै-क-अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्-रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु लौ ला अम्-मन्नल्लाहु अ़लैना ल-ख़-स-फ़ बिना, वै-क-अन्नहू

عَلَيْهِمْ ۖ وَاٰتَيْنٰهُ مِنَ الْكُنُوْزِ مَآ اِنَّ
مَفَاتِحَهٗ لَتَنُوْٓاُ بِالْعُصْبَةِ اُولِي
الْقُوَّةِ ۗ اِذْ قَالَ لَهٗ قَوْمُهٗ لَا تَفْرَحْ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْفَرِحِيْنَ ۝٧٦
وَابْتَغِ فِيْمَآ اٰتٰىكَ اللّٰهُ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ
وَلَا تَنْسَ نَصِيْبَكَ مِنَ الدُّنْيَا وَاَحْسِنْ
كَمَآ اَحْسَنَ اللّٰهُ اِلَيْكَ وَلَا تَبْغِ الْفَسَادَ
فِي الْاَرْضِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٧٧
قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ عَلٰي عِلْمٍ عِنْدِيْ ۭ
اَوَلَمْ يَعْلَمْ اَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَهْلَكَ مِنْ
قَبْلِهٖ مِنَ الْقُرُوْنِ مَنْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُ
قُوَّةً وَّاَكْثَرُ جَمْعًا ۭ وَلَا يُسْـَٔلُ
عَنْ ذُنُوْبِهِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝٧٨
فَخَرَجَ عَلٰي قَوْمِهٖ فِيْ زِيْنَتِهٖ ۭ قَالَ
الَّذِيْنَ يُرِيْدُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا
يٰلَيْتَ لَنَا مِثْلَ مَآ اُوْتِيَ قَارُوْنُ ۙ
اِنَّهٗ لَذُوْ حَظٍّ عَظِيْمٍ ۝٧٩
وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَيْلَكُمْ
ثَوَابُ اللّٰهِ خَيْرٌ لِّمَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ۚ وَلَا يُلَقّٰىهَآ اِلَّا الصّٰبِرُوْنَ ۝٨٠
فَخَسَفْنَا بِهٖ وَبِدَارِهِ الْاَرْضَ ۣ فَمَا كَانَ
لَهٗ مِنْ فِئَةٍ يَّنْصُرُوْنَهٗ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۤ
وَمَا كَانَ مِنَ الْمُنْتَصِرِيْنَ ۝٨١
وَاَصْبَحَ الَّذِيْنَ تَمَنَّوْا مَكَانَهٗ بِالْاَمْسِ
يَقُوْلُوْنَ وَيْكَاَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ ۚ لَوْلَآ
اَنْ مَّنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا لَخَسَفَ بِنَا ۭ وَيْكَاَنَّهٗ

ع لَا يُفْلِحُ الْكٰفِرُوْنَ ۝۸۲
تِلْكَ الدَّارُ الْاٰخِرَةُ نَجْعَلُهَا لِلَّذِيْنَ
لَا يُرِيْدُوْنَ عُلُوًّا فِي الْاَرْضِ وَلَا
فَسَادًا ۭ وَالْعَاقِبَةُ لِلْمُتَّقِيْنَ ۝۸۳
مَنْ جَآءَ بِالْحَسَنَةِ فَلَهٗ خَيْرٌ مِّنْهَا ۚ
وَمَنْ جَآءَ بِالسَّيِّئَةِ فَلَا يُجْزَى الَّذِيْنَ
عَمِلُوا السَّيِّاٰتِ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۸۴
اِنَّ الَّذِيْ فَرَضَ عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ لَرَآدُّكَ
اِلٰى مَعَادٍ ۭ قُلْ رَّبِّيْٓ اَعْلَمُ مَنْ جَآءَ
بِالْهُدٰى وَمَنْ هُوَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝۸۵
وَمَا كُنْتَ تَرْجُوْٓا اَنْ يُّلْقٰٓى اِلَيْكَ
الْكِتٰبُ اِلَّا رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ فَلَا تَكُوْنَنَّ
ظَهِيْرًا لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝۸۶
وَلَا يَصُدُّنَّكَ عَنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ بَعْدَ اِذْ
اُنْزِلَتْ اِلَيْكَ وَادْعُ اِلٰى رَبِّكَ وَلَا
تَكُوْنَنَّ مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۝۸۷
وَلَا تَدْعُ مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۘ لَآ اِلٰهَ
اِلَّا هُوَ ۣ كُلُّ شَيْءٍ هَالِكٌ اِلَّا وَجْهَهٗ ۭ
لَهُ الْحُكْمُ وَاِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝۸۸

سُوْرَةُ الْعَنْكَبُوْتِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ۶۹ رُكُوْعَاتُهَا ۷

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

الٓمّٓ ۝۱ اَحَسِبَ النَّاسُ اَنْ يُّتْرَكُوْٓا
اَنْ يَّقُوْلُوْٓا اٰمَنَّا وَهُمْ لَا يُفْتَنُوْنَ ۝۲
وَلَقَدْ فَتَنَّا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ صَدَقُوْا
وَلَيَعْلَمَنَّ الْكٰذِبِيْنَ ۝۳
اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ يَعْمَلُوْنَ السَّيِّاٰتِ

ला युफ़्लिहुल्-काफ़िरून (82) ●

तिल्कद्-दारुल्-आख़ि-रतु नज्अलुहा लिल्लज़ी-न ला युरीदू-न अुलुव्वन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़सादन्, वल्-आक़ि-बतु लिल्-मुत्तक़ीन (83)

मन् जा-अ बिल्ह-स-नति फ़-लहू ख़ैरुम्-मिन्हा व मन् जा-अ बिस्सय्यि-अति फ़ला युज्ज़ल्लज़ी-न अ़मिलुस्सय्यिआति इल्ला मा कानू यअ्मलून (84)

इन्नल्लज़ी फ़-र-ज़ अ़लैकल्-क़ुरआ-न ल-राद्दु-क इला मआदिन्, क़ुर्रब्बी अअ्लमु मन् जा-अ बिल्हुदा व मन् हु-व फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (85)

व मा कुन्-त तर्जू अंय्युल्क़ा इलैकल्-किताबु इल्ला रह्म-तम् मिर्रब्बि-क फ़ला तकूनन्-न ज़हीरल् लिल्-काफ़िरीन (86)

व ला यसुद्दुन्न-क अ़न् आयातिल्लाहि बअ्-द इज़् उन्ज़िलत् इलै-क वद्अु इला रब्बि-क व ला तकूनन्-न मिनल्-मुश्रिकीन (87)

व ला तद्अु मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र ● ला इला-ह इल्ला हु-व, कुल्लु शैइन् हालिकुन् इल्ला वज्-हहू, लहुल्-हुक्मु व इलैहि तुर्जअून ● (88) ●

29 सूरतुल–अ़नकबूति

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4410 अक्षर, 990 शब्द, 69 आयतें और 7 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़-लाम्-मीम् (1)

अ-हसिबन्-नासु अंय्युत्-रकू अंय्यक़ूलू आमन्ना व हुम् ला युफ़्तनून (2)

व ल-क़द् फ़तन्नल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-लयअ्-लमन्नल्लाहुल्लज़ी-न स-दक़ू व ल-यअ्-लमन्नल्-काज़िबीन (3)

अम् हसिबल्लज़ी-न यअ्मलूनस्सय्यिआति

तुम्हें ख़बर न हुई कि अहले कुफ़्र कामयाब नहीं हुआ करते?

83. वह आख़िरत का घर हम उनके लिए मख़सूस रखेंगे जो न तो ज़मीन में अपनी बड़ाई चाहते हैं और न फ़साद करना। अन्जाम तो अहले तक़्वा के लिए है।

84. जो शख़्स नेकी लेकर आएगा उसे उससे भी बेहतर हासिल होगा। और जो बुराई लेकर आएगा, तो बुराइयां करने वालों को तो बस वह मिलेगा जो वो करते थे।

85. जिसने इस क़ुरआन की ज़िम्मेदारी तुमपर डाली है वह तुम्हें एक बेहतरीन अन्जाम को पहुंचाने वाला है। कहोः "मेरा रब उसे खूब जानता है जो हिदायत लेकर आया, और उसे भी जो खुली गुमराही में पड़ा है"।

86. तुम तो इसकी उम्मीद न रखते थे कि तुम्हारी तरफ़ किताब उतारी जाएगी, उसका बाइस महज़ तुम्हारे रब की रहमत है; लिहाज़ा तुम अहले कुफ़्र की पुश्त पनाह न बनो।

87. और वो तुम्हें अल्लाह की आयतों से बाज़ न रखने पाएं, इसके बाद कि वो तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की जा चुकी हैं। और अपने रब की तरफ़ दावत दो, और मुश्रिकों में हरगिज़ शामिल न होना।

88. और अल्लाह के साथ किसी और माबूद को न पुकारना; उसके सिवा कोई माबूद नहीं। उसकी ज़ात के सिवा हर चीज़ हलाक होने वाली है। फ़ैसला व हुक्म उसी के इख़्तियार में है और उसी की तरफ़ सब को लौटकर जाना है।

सूरह अल–अनकबूत मक्की

(आयात 69, रुकूआत 7)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-मीम।

2. क्या लोगों ने यह समझ रखा है कि वो इतना कह देने से छोड़ दिए जाएंगे कि "हम ईमान लाए," और वो आज़माए नहीं जाएंगे?

3. हालांकि हम उन लोगों की आज़माइश कर चुके हैं जो उनसे पहले गुज़रे हैं, अल्लाह तो उन लोगों को मालूम करके रहेगा जो सच्चे हैं, और वह झूटों को भी जान कर रहेगा।

4. या उन लोगों ने जो बुरे काम करते हैं, यह समझ रखा है कि वो

हमारे क़ाबू से बाहर निकल जाएंगे? निहायत बुरा है जो फ़ैसला वो कर रहे हैं।

5. जो शख़्स अल्लाह से मिलने की उम्मीद रखता है, तो अल्लाह का मुक़र्रर वक़्त तो आने ही वाला है; वह तो सब कुछ सुनता, जानता है।

6. और जो शख़्स जिद्दो जहद करता है, वह तो ख़ुद अपने ही लिए जिद्दो जहद करता है; यक़ीनन अल्लाह सारे जहान से बेनियाज़ है।

7. और जो लोग ईमान लाए, और नेक आमाल इख़्तियार किए, हम उनसे उनकी बुराइयों को दूर कर देंगे, और उन्हें लाज़िमन उसका अजर अता करेंगे जो कुछ बेहतरीन अमल वो करते रहे होंगे।

8. और हमने इनसान को अपने वालिदैन के साथ नेक सुलूक करने की ताकीद की; लेकिन अगर वो तुझ पर ज़ोर डालें कि तू किसी चीज़ को मेरा शरीक ठहराए जिसका तेरे पास कोई इल्मी सुबूत नहीं, तो उनकी बात न मान; मेरी ही तरफ़ तुम सबको पलटकर आना है, पस मैं तुम्हें बता दूंगा जो कुछ तुम करते रहे होगे।

9. और जो लोग ईमान लाए, और नेक आमाल इख़्तियार किए हम उन्हें ज़रूर सालेहीन में दाख़िल करेंगे।

10. लोगों में ऐसे भी हैं जो कहते हैं कि "हम अल्लाह पर ईमान लाए", मगर जब वो अल्लाह के मुआमले में सताए गए, तो उन्होंने लोगों की तरफ़ से पेश आई हुई आज़माइश को अल्लाह के अज़ाब की तरह क़रार दे लिया; अब अगर तेरे रब की तरफ़ से मदद आ गई, तो कहेंगे, "हम तो तुम्हारे साथ थे"। क्या जो कुछ तमाम दुनिया वालों के सीनों में है वह अल्लाह को बख़ूबी मालूम नहीं?

11. अल्लाह तो उन लोगों को मालूम करके रहेगा जो ईमान लाए, और वह मुनाफ़िक़ीन को भी मालूम करके रहेगा।

12. और कुफ़्र इख़्तियार करनेवाले लोग उन लोगों से जो ईमान लाए कहते हैं, "तुम हमारे रास्ते पर चलो, हम तुम्हारी ख़ताओं का बोझ उठा लेंगे;" हालांकि वो उनकी ख़ताओं में से कुछ भी उठाने वाले नहीं हैं; वो यक़ीनन झूटे हैं।

13. हां, यह ज़रूर है कि वो अपने बोझ भी उठाएंगे, और अपने बोझों के साथ और बोझ भी, और क़ियामत के रोज़ लाज़िमन उनसे उसके बारे में पूछ जाएगा जो कुछ इफ़्तिरा परदाज़ी वो करते रहे होंगे।

अंय्यस्बिक़ूना, सा-अ मा यह्कुमून (4)

मन् का-न यर्जू लिक़ा-अल्लाहि फ़-इन्-न अ-जलल्लाहि लआतिन्, व हुवस्समीअुल्-अ़लीम (5)

व मन् जा-ह-द फ़-इन्नमा युजाहिदु लिनफ़्सिही, इन्नल्ला-ह ल-ग़निय्युन् अ़निल्-आ़लमीन (6)

वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ल-नुकफ़्फ़िरन्-न अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम् व ल-नज्ज़ियन्नहुम् अह्-सनल्लज़ी कानू यअ्मलून (7)

व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि हुस्नन्, व इन् जा-हदा-क लितुश्रि-क बी मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन् फ़ला तुतिअ़हुमा, इलय्-य मर्जिअ़ुकुम् फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (8)

वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति ल-नुद्ख़िलन्नहुम् फ़िस्सालिहीन (9)

व मिनन्नासि मंय्यक़ूलु आमन्ना बिल्लाहि फ़-इज़ा ऊज़ि-य फ़िल्लाहि ज-अ़-ल फ़ित्-नतन्नासि क-अ़ज़ाबिल्लाहि, व लइन् जा-अ नस्रुम्-मिर्रब्बि-क ल-यक़ूलुन्-न इन्ना कुन्ना म-अ़कुम्, अ-व लैसल्लाहु बि-अअ्ल-म बिमा फ़ी सुदूरिल्-आ़लमीन (10)

व ल-यअ्-ल-मन्नल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व ल-यअ्-ल-मन्नल्-मुनाफ़िक़ीन (11)

व क़ालल्-लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनुत्-तबिअ़ू सबीलना वल्नह्मिल् ख़तायाकुम्, व मा हुम् बिहामिली-न मिन् ख़तायाहुम् मिन् शैइन्, इन्नहुम् ल-काज़िबून (12)

व ल-यह्मिलुन्-न अस्क़ा-लहुम् व अस्क़ालम् म-अ़ अस्क़ालिहिम् व ल-युस्अलुन्-न यौमल्-क़ियामति अ़म्मा कानू यफ़्तरून (13) ●

اَنْ يَّسْبِقُوْنَا ؕ سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ (٤)
مَنْ كَانَ يَرْجُوْا لِقَآءَ اللّٰهِ فَاِنَّ اَجَلَ
اللّٰهِ لَاٰتٍ ؕ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٥)
وَمَنْ جَاهَدَ فَاِنَّمَا يُجَاهِدُ لِنَفْسِهٖ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ لَغَنِىٌّ عَنِ الْعٰلَمِيْنَ (٦)
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُكَفِّرَنَّ
عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَلَنَجْزِيَنَّهُمْ اَحْسَنَ
الَّذِىْ كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ (٧)
وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ حُسْنًا ؕ
وَاِنْ جَاهَدٰكَ لِتُشْرِكَ بِىْ مَا لَيْسَ
لَكَ بِهٖ عِلْمٌ فَلَا تُطِعْهُمَا ؕ اِلَىَّ مَرْجِعُكُمْ
فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٨)
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَنُدْخِلَنَّهُمْ فِى الصّٰلِحِيْنَ (٩)
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّقُوْلُ اٰمَنَّا بِاللّٰهِ فَاِذَآ
اُوْذِىَ فِى اللّٰهِ جَعَلَ فِتْنَةَ النَّاسِ
كَعَذَابِ اللّٰهِ ؕ وَلَئِنْ جَآءَ نَصْرٌ مِّنْ
رَّبِّكَ لَيَقُوْلُنَّ اِنَّا كُنَّا مَعَكُمْ ؕ اَوَلَيْسَ
اللّٰهُ بِاَعْلَمَ بِمَا فِىْ صُدُوْرِ الْعٰلَمِيْنَ (١٠)
وَلَيَعْلَمَنَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيَعْلَمَنَّ
الْمُنٰفِقِيْنَ (١١)
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبِعُوْا
سَبِيْلَنَا وَلْنَحْمِلْ خَطٰيٰكُمْ ؕ وَمَا هُمْ بِحٰمِلِيْنَ
مِنْ خَطٰيٰهُمْ مِّنْ شَىْءٍ ؕ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (١٢)
وَلَيَحْمِلُنَّ اَثْقَالَهُمْ وَاَثْقَالًا مَّعَ اَثْقَالِهِمْ
وَلَيُسْـَٔلُنَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عَمَّا كَانُوْا
ع يَفْتَرُوْنَ (١٣)

14. हमने नूह को उसकी कौम की तरफ़ भेजा, और वह पचास साल कम एक हज़ार बरस उनके दरमियान रहा; आख़िरकार उनको तूफ़ान ने इस हाल में आ पकड़ा कि वो ज़ालिम थे।

15. फिर उसको, और कश्ती वालों को हमने बचा लिया, और उसे सारे जहान के लिए एक निशानी बना दिया।

16. और इबराहीम को भी भेजा जबकि उसने अपनी कौम से कहा कि "अल्लाह की बन्दगी करो, और उसका डर रखो; यह तुम्हारे लिए बेहतर है अगर तुम जानो।

17. तुम तो अल्लाह से हटकर बस बुतों को पूज रहे हो और बुहतान घड़ रहे हो; तुम अल्लाह को छोड़ कर जिनको पूजते हो, वो तुम्हारे लिए रिज़्क़ का भी इख़्तियार नहीं रखते। पस तुम अल्लाह ही के पास रिज़्क़ के तालिब बनो, और उसी की इबादत करो, और उसका शुक्र अदा करो, उसी की तरफ़ तुम्हें लौटकर जाना है।

18. और अगर तुम झुटलाते हो, तो तुमसे पहले कितने ही गिरोह झुटला चुके हैं; रसूल पर तो महज़ वाज़ेह तौर पर पहुंचा देने ही की ज़िम्मेदारी है"।

19. क्या उन्होंने देखा नहीं कि अल्लाह किस तरह तख़्लीक़ का आग़ाज़ करता है, और फिर उसे दोहराता है? यक़ीनन यह अल्लाह के लिए निहायत आसान है।

20. कहो कि "ज़मीन में चलो-फिरो, और देखो कि उसने किस तरह तख़्लीक़ का आग़ाज़ किया; फिर अल्लाह ही दूसरी नई तख़्लीक़ ज़ुहूर में लाएगा; यक़ीनन अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

21. वह जिसे चाहे अज़ाब दे, और जिस पर चाहे रहम फ़रमाए, और उसी की तरफ़ तुम्हें पलट कर जाना है"।

22. तुम न तो ज़मीन में क़ाबू से बाहर निकल सकते हो और न आसमान में; और अल्लाह को छोड़कर तुम्हारा न तो कोई कारसाज़ है और न मददगार।

23. और जिन लोगों ने अल्लाह की आयतों और उसकी मुलाक़ात का इनकार किया, वही लोग हैं जिनके हिस्से में मेरी रहमत की तरफ़ से

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही फ़-लबि-स फ़ीहिम् अल्-फ़ स-नतिन् इल्ला ख़म्सी-न आमन्, फ़-अ-ख़-ज़हुमुत्तूफ़ानु व हुम् ज़ालिमून (14)

फ़-अन्जैनाहु व अस्हाबस्सफ़ी-नति व जअ़ल्नाहा आ-यतल् लिल्आ़लमीन (15)

व इब्राही-म इज़् क़ा-ल लिक़ौमिहिअ्बुदुल्ला-ह वत्तक़ूहु, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्लकुम् इन कुन्तुम् तअ्लमून (16)

इन्नमा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि औसानंव्-व तख़्लुक़ू-न इफ़्कन्, इन्नल्लज़ी-न तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि ला यम्लिकू-न लकुम् रिज़्क़न् फ़ब्तग़ू अ़िन्दल्लाहिर्-रिज़्-क़ वअ्बुदूहु वश्कुरू लहू, इलैहि तुर्जअून (17)

व इन् तुकज़्ज़िबू फ़-क़द् कज़्ज़-ब उ-ममुम्-मिन् क़ब्लिकुम्, व मा अ़लर्रसूलि इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन (18)

अ-व लम् यरौ कै-फ़ युब्दिउल्लाहुल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युई़दुहू, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (19)

क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ ब-दअल्-ख़ल्-क़ सुम्मल्लाहु युन्शिउन्-नश्-अतल्-आख़ि-र-त, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (20)

युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ व यर्-हमु मंय्यशा-उ व इलैहि तुक़्लबून (21)

व मा अन्तुम् बिमुअ्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़िस्समा-इ व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (22) ●

वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिल्लाहि व लिक़ा-इही उलाइ-क यइसू मिर्रह्मती व उलाइ-क

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖ فَلَبِثَ
فِيْهِمْ اَلْفَ سَنَةٍ اِلَّا خَمْسِيْنَ عَامًا ؕ
فَاَخَذَهُمُ الطُّوْفَانُ وَهُمْ ظٰلِمُوْنَ ۝١٤
فَاَنْجَيْنٰهُ وَاَصْحٰبَ السَّفِيْنَةِ وَجَعَلْنٰهَاۤ
اٰيَةً لِّلْعٰلَمِيْنَ ۝١٥
وَاِبْرٰهِيْمَ اِذْ قَالَ لِقَوْمِهِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ ؕ
ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝١٦
اِنَّمَا تَعْبُدُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَوْثَانًا
وَّتَخْلُقُوْنَ اِفْكًا ؕ اِنَّ الَّذِيْنَ تَعْبُدُوْنَ
مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَا يَمْلِكُوْنَ لَكُمْ رِزْقًا
فَابْتَغُوْا عِنْدَ اللّٰهِ الرِّزْقَ وَاعْبُدُوْهُ
وَاشْكُرُوْا لَهٗ ؕ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝١٧
وَاِنْ تُكَذِّبُوْا فَقَدْ كَذَّبَ اُمَمٌ مِّنْ
قَبْلِكُمْ ؕ وَمَا عَلَى الرَّسُوْلِ اِلَّا الْبَلٰغُ
الْمُبِيْنُ ۝١٨
اَوَلَمْ يَرَوْا كَيْفَ يُبْدِئُ اللّٰهُ الْخَلْقَ ثُمَّ
يُعِيْدُهٗ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝١٩
قُلْ سِيْرُوْا فِى الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ
بَدَاَ الْخَلْقَ ثُمَّ اللّٰهُ يُنْشِئُ النَّشْاَةَ الْاٰخِرَةَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٢٠
يُعَذِّبُ مَنْ يَّشَآءُ وَيَرْحَمُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ
وَاِلَيْهِ تُقْلَبُوْنَ ۝٢١
وَمَاۤ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِيْنَ فِى الْاَرْضِ وَلَا فِى
السَّمَآءِ ز وَمَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ
ع وَّلِيٍّ وَّلَا نَصِيْرٍ ۝٢٢
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَلِقَآئِهٖۤ
اُولٰٓئِكَ يَئِسُوْا مِنْ رَّحْمَتِيْ وَاُولٰٓئِكَ

मायूसी आई। और वही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

24. फिर उसकी क़ौम का जवाब इसके सिवा और कुछ न था कि उन्होंने कहा, "क़त्ल कर दो उसे, या जला दो उसे!" आख़िरकार अल्लाह ने उसे आग से बचा लिया; यक़ीनन इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ईमान लाएं।

25. और उसने कहा, "अल्लाह को छोड़कर तुमने कुछ बुतों को महज़ दुनिया की ज़िन्दगी में अपनी बाहमी मुहब्बत की वजह से पकड़ रखा है; फिर क़ियामत के दिन तुममें से हर एक दूसरे का इनकार करेगा, तुम्हारा ठिकाना आग है और तुम्हारा मददगार कोई न होगा"।

26. फिर लूत ने उसकी बात मानी और उस ने कहा, "बेशक मैं अपने रब की तरफ़ हिजरत करता हूं; यक़ीनन वह ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है"।

27. और हमने उसे इसहाक़ और याकूब अता किए और उसकी नस्ल में नुबूवत और किताब का सिलसिला जारी किया; और हमने उसे दुनिया में भी उसका बदला अता किया और यक़ीनन वह आख़िरत में भी सालेहीन में से होगा।

28. और हमने लूत को भेजा, जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा, "तुम तो वह बेहयाई का काम करते हो जिसे तुमसे पहले सारे जहान में किसी क़ौम ने नहीं किया।

29. क्या तुम मर्दों के पास आते हो, और रहज़नी करते हो, और अपनी मजलिस में बुरा काम करते हो?" फिर उसकी क़ौम का जवाब बस यही था कि उन्होंने कहा, "ले आ हमपर अल्लाह का अज़ाब, अगर तू सच्चा है"।

30. उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मुफ़्सिद लोगों के मुक़ाबले में मेरी मदद कर"।

31. और हमारे फ़िरिस्तादे जब इबराहीम के पास बशारत लेकर आए, तो उन्होंने कहा, "हम इस बस्ती के लोगों को हलाक कर देनेवाले हैं, बेशक इस बस्ती के लोग ज़ालिम हैं"।

32. उसने कहा, "वहां तो लूत मौजूद है"। वो बोले, "जो कोई भी वहां है हम ख़ूब जानते हैं; हम उसे

लहुम् अज़ाबुन् अलीम (23)

फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालुक़्तुलूहु औ हर्रिकूहु फ़अन्जाहुल्लाहु मिनन्नारि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून (24)

व क़ा-ल इन्नमत्तख़ज़्तुम् मिन् दूनिल्लाहि औसानम् म-वद्द-त बैनिकुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या सुम्-म यौमल्-क़ियामति यक्फ़ुरु बअ्ज़ुकुम् बि-बअ्ज़िंव्-व यल्अनु बअ्ज़ुकुम् बअ्ज़ंव्-व मअ्वाकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन्-नासिरीन (25)

फ़-आम-न लहू लूतुन् ● व क़ा-ल इन्नी मुहाजिरुन् इला रब्बी, इन्नहू हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम (26)

व व-हब्ना लहू इस्हा-क़ व यअ्क़ू-ब व जअ्ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहिन्-नुबुव्व-त वल्किता-ब व आतैनाहु अज्रहू फ़िद्दुन्या व इन्नहू फ़िल्-आख़िरति लमिनस्सालिहीन (27)

व लूतन् इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही इन्नकुम् ल-तअ्तूनल्-फ़ाहि-श-त मा स-ब-क़कुम् बिहा मिन् अ-हदिम्-मिनल्-आ़लमीन (28)

अ-इन्नकुम् लतअ्तूनर्-रिजा-ल व तक़्तअूनस्सबी-ल व तअ्तू-न फ़ी नादीकुमुल्-मुन्क-र, फ़मा का-न जवा-ब क़ौमिही इल्ला अन् क़ालुअ्तिना बि-अ़ज़ाबिल्लाहि इन् कुन्-त मिनस्-सादिक़ीन (29)

क़ा-ल रब्बिन्सुर्नी अलल्-क़ौमिल्-मुफ़्सिदीन (30) ●

व लम्मा जाअत् रुसुलुना इब्राही-म बिल्बुश्रा क़ालू इन्ना मुह्लिकू अह्लि हाज़िहिल्-क़र्यति इन्-न अह्लहा कानू ज़ालिमीन (31)

क़ा-ल इन्-न फ़ीहा लूतन्, क़ालू नह्नु अअ्लमु बि-मन्

لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٢٣

فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا
اقْتُلُوْهُ اَوْ حَرِّقُوْهُ فَاَنْجٰىهُ اللّٰهُ مِنَ النَّارِ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٢٤

وَ قَالَ اِنَّمَا اتَّخَذْتُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَوْثَانًا ۙ مَّوَدَّةَ بَيْنِكُمْ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
ثُمَّ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُ بَعْضُكُمْ بِبَعْضٍ
وَّيَلْعَنُ بَعْضُكُمْ بَعْضًا ۫ وَّمَاْوٰىكُمُ النَّارُ
وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٢٥

فَاٰمَنَ لَهٗ لُوْطٌ ۘ وَقَالَ اِنِّيْ مُهَاجِرٌ
اِلٰى رَبِّيْ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٢٦

وَ وَهَبْنَا لَهٗٓ اِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ وَجَعَلْنَا
فِيْ ذُرِّيَّتِهِ النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ وَاٰتَيْنٰهُ
اَجْرَهٗ فِي الدُّنْيَا ۚ وَاِنَّهٗ فِي الْاٰخِرَةِ
لَمِنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝٢٧

وَلُوْطًا اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖٓ اِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ
الْفَاحِشَةَ ۫ مَا سَبَقَكُمْ بِهَا مِنْ اَحَدٍ
مِّنَ الْعٰلَمِيْنَ ۝٢٨

اَئِنَّكُمْ لَتَاْتُوْنَ الرِّجَالَ وَتَقْطَعُوْنَ
السَّبِيْلَ ۙ۬ وَتَاْتُوْنَ فِيْ نَادِيْكُمُ الْمُنْكَرَ ؕ
فَمَا كَانَ جَوَابَ قَوْمِهٖٓ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتِنَا
بِعَذَابِ اللّٰهِ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ۝٢٩

قَالَ رَبِّ انْصُرْنِيْ عَلَى الْقَوْمِ الْمُفْسِدِيْنَ ۝٣٠

وَلَمَّا جَآءَتْ رُسُلُنَآ اِبْرٰهِيْمَ بِالْبُشْرٰى ۙ
قَالُوْٓا اِنَّا مُهْلِكُوْٓا اَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ ۚ
اِنَّ اَهْلَهَا كَانُوْا ظٰلِمِيْنَ ۝٣١

قَالَ اِنَّ فِيْهَا لُوْطًا ؕ قَالُوْا نَحْنُ اَعْلَمُ بِمَنْ

और उसके मुतअल्लिक़ीन को बचा लेंगे, सिवाय उसकी औरत के। वह पीछे रह जाने वालों में से है"।

33. और जब हमारे फ़िरिश्तादे लूत के पास आए, तो उनका आना उसे नागवार हुआ और उनकी हिफ़ाज़त से आजिज़ व दरमान्दा रहा। मगर उन्होंने कहा, "डरो मत, और न ग़म करो, हम तुम्हें और तुम्हारे घरवालों को बचा लेंगे, सिवाय तुम्हारी औरत के; वह पीछे रह जानेवालों में से है।

34. हम यक़ीनन इस बस्ती के लोगों पर आसमान से आफ़त उतारने वाले हैं, जो फ़िस्क़ ये करते रहे हैं उसकी वजह से"।

35. और हमने इस बस्ती से हासिल होने वाली एक वाज़ेह निशानी उन लोगों के लिए छोड़ दी है कि जो अक़्ल से काम लेना चाहें।

36. और मद्यन की तरफ़ उन के भाई शुऐब को भेजा; उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! अल्लाह की बन्दगी करो, और रोज़-ए-आख़िरत की तवक़्क़ो रखो और ज़मीन में मुफ़्सिद बनकर ख़रियाह मत हो।"

37. मगर उन्होंने उसे झुटला दिया; आख़िरकार ज़लज़ले ने उन्हें आ पकड़ा और वो अपने घरों में ज़मीन से चिपक कर रह गए।

38. और आद और समूद को भी हमने हलाक किया, और उनके (वीरान) घर तुम्हारी आंखों के सामने हैं; शैतान ने उनके कामों को उनके लिए ख़ुशनुमा बनाया, और उन्हें सही रास्ते से रोक दिया, हालांकि वो बड़ी तेज़ निगाह वाले थे।

39. और क़ारून और फ़िरऔन और हामान को भी हमने हलाक किया, मूसा उनके पास खुली निशानियां लेकर आया, मगर ज़मीन में उन्होंने घमन्ड किया, हालांकि वो सबक़त ले जाने वाले न थे।

40. आख़िरकार हमने हर एक को उसके अपने गुनाह के सबब से पकड़ा; फिर उनमें से बाज़ पर तो हमने पथराव करनेवाली हवा भेजी और उनमें से बाज़ को एक हौलनाक आवाज़ ने आ लिया, और उनमें से बाज़ को ज़मीन में हमने धंसा दिया, और उनमें से बाज़ को हमने ग़र्क़ कर दिया; अल्लाह ऐसा न था कि उन पर ज़ुल्म करता, मगर वो ख़ुद ही अपने आप पर ज़ुल्म कर रहे थे।

फ़ीहा ल-नुनज्जियन्नहू व अह्लहू इल्लम्-र-अ-तहू कानत् मिनल्-ग़ाबिरीन (32)

व लम्मा अन् जाअत् रुसुलुना लूतन् सी-अ बिहिम् व ज़ा-क़ बिहिम् ज़रअंव्-व क़ालू ला तख़फ़् व ला तह्ज़न्, इन्ना मुनज्जू-क व अह्ल-क इल्लम्-र-अ-त-क कानत् मिनल्-ग़ाबिरीन (33)

इन्ना मुन्ज़िलू-न अ़ला अह्लि हाज़िहिल् क़र्यति रिज्ज़म-मिनस्समा-इ बिमा कानू यफ़्सुक़ून (34)

व ल-क़त्तरक्ना मिन्हा आ-यतम् बय्यि-नतल्-लिक़ौमिंय् यअ़्क़िलून (35)

व इला मद्-य-न अख़ाहुम् शुऐबन् फ़क़ा-ल या क़ौमिअ़्बुदुल्ला-ह वर्जुल्-यौमल्-आख़ि-र व ला तअ़्सौ फ़िल्अर्ज़ि मुफ़्सिदीन (36)

फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-ख़ज़तहुमुर्-रज्फ़तु फ़-अस्बहू फ़ी दारिहिम् जासिमीन (37)

व आ़दंव्-व समू-द व क़त्-त-बय्य-न लकुम् मिम-मसाकिनिहिम्, व ज़य्य-न लहुमुश्शैतानु अअ़्मालहुम् फ़-सद्दहुम् अनिस्सबीलि व कानू मुस्तब्सिरीन (38)

व क़ारू-न व फ़िर्औ-न व हामा-न, व ल-क़द् जा-अहुम् मूसा बिल्बय्यिनाति फ़स्तक्बरू फ़िल्अर्ज़ि व मा कानू साबिक़ीन (39)

फ़-कुल्लन् अख़ज़्ना बि-ज़म्बिही फ़-मिन्हुम् मन् अर्सल्ना अ़लैहि हासिबन् व मिन्हुम् मन् अ-ख़ज़त्हुस्सै-हतु व मिन्हुम् मन् ख़सफ़्ना बिहिल्-अर्-ज़ व मिन्हुम् मन् अग़्रक़्ना व मा कानल्लाहु लि-यज़्लिमहुम् व लाकिन् कानू अन्फु-सहुम् यज़्लिमून (40)

فِيهَا لَنُنَجِّيَنَّهٗ وَأَهْلَهٗٓ إِلَّا امْرَأَتَهٗ
كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ۝٣٢
وَلَمَّآ أَنْ جَآءَتْ رُسُلُنَا لُوطًا سِيٓءَ بِهِمْ
وَضَاقَ بِهِمْ ذَرْعًا وَّقَالُوا لَا تَخَفْ
وَلَا تَحْزَنْ إِنَّا مُنَجُّوكَ وَأَهْلَكَ إِلَّا
امْرَأَتَكَ كَانَتْ مِنَ الْغٰبِرِينَ ۝٣٣
إِنَّا مُنْزِلُونَ عَلٰٓى أَهْلِ هٰذِهِ الْقَرْيَةِ
رِجْزًا مِّنَ السَّمَآءِ بِمَا كَانُوا يَفْسُقُونَ ۝٣٤
وَلَقَدْ تَّرَكْنَا مِنْهَآ اٰيَةًۢ بَيِّنَةً لِّقَوْمٍ
يَّعْقِلُونَ ۝٣٥
وَإِلٰى مَدْيَنَ أَخَاهُمْ شُعَيْبًا فَقَالَ
يٰقَوْمِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَارْجُوا الْيَوْمَ الْاٰخِرَ
وَلَا تَعْثَوْا فِي الْأَرْضِ مُفْسِدِينَ ۝٣٦
فَكَذَّبُوهُ فَأَخَذَتْهُمُ الرَّجْفَةُ فَأَصْبَحُوا
فِي دَارِهِمْ جٰثِمِينَ ۝٣٧
وَعَادًا وَّثَمُودَا۟ وَقَدْ تَّبَيَّنَ لَكُمْ
مِّنْ مَّسٰكِنِهِمْ وَزَيَّنَ لَهُمُ الشَّيْطٰنُ
أَعْمَالَهُمْ فَصَدَّهُمْ عَنِ السَّبِيلِ
وَكَانُوا مُسْتَبْصِرِينَ ۝٣٨
وَقَارُونَ وَفِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَلَقَدْ
جَآءَهُمْ مُّوسٰى بِالْبَيِّنٰتِ فَاسْتَكْبَرُوا
فِي الْأَرْضِ وَمَا كَانُوا سٰبِقِينَ ۝٣٩
فَكُلًّا أَخَذْنَا بِذَنْۢبِهٖ فَمِنْهُمْ مَّنْ أَرْسَلْنَا
عَلَيْهِ حَاصِبًا وَمِنْهُمْ مَّنْ أَخَذَتْهُ
الصَّيْحَةُ وَمِنْهُمْ مَّنْ خَسَفْنَا بِهِ الْأَرْضَ
وَمِنْهُمْ مَّنْ أَغْرَقْنَا وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلٰكِنْ كَانُوٓا أَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُونَ ۝٤٠

41. अल्लाह को छोड़कर जिन लोगों ने अपने दूसरे सरपरस्त बनाए हैं, उनकी मिसाल मकड़ी जैसी है जिसने अपना एक घर बनाया; और यह हक़ीक़त है कि सब घरों से कमज़ोर मकड़ी का घर ही होता है, काश वो जानते।

42. बेशक अल्लाह उन चीज़ों को जिन्हें ये उससे हटकर पुकारते हैं अच्छी तरह जानता है; वह तो ज़बरदस्त, निहायत हिक्मत वाला है।

43. ये मिसालें हम लोगों के लिए पेश करते हैं, लेकिन उनको अहले इल्म ही समझते हैं;

44. अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को मक़सद-ए-हक़ के साथ पैदा किया है; यक़ीनन इसमें एक बड़ी निशानी है अहले ईमान के लिए।

45. इस किताब की तिलावत करो जो तुम्हारी तरफ़ वही की गई है, और नमाज़ का एहतिमाम करो; यक़ीनन नमाज़ बेहयाई और बुराई से रोकती है। और अल्लाह का याद करना तो बहुत बड़ी चीज़ है; अल्लाह जानता है जो कुछ तुम करते-धरते हो।

46. और अहले किताब से बहस बस उस तरीक़े से करो जो बेहतर हो, रहे वो लोग जो उनमें ज़ालिम हैं, उनकी बात दूसरी है। और कहो, "हम ईमान लाए उस चीज़ पर जो हमारी तरफ़ नाज़िल हुई, और तुम्हारी तरफ़ भी नाज़िल हुई; और हमारा माबूद और तुम्हारा माबूद एक ही है, और हम उसी के फ़रमांबरदार हैं"।

47. इसी तरह हमने तुम्हारी तरफ़ किताब नाज़िल की है। पस जिन्हें हमने किताब दी है, वो उसपर ईमान लाएंगे, उनमें से बाज़ उसपर ईमान ला रहे हैं; हमारी आयतों का इनकार तो बस अहले कुफ़्र ही करते हैं।

48. और इससे पहले तुम न कोई किताब पढ़ते थे, और न उसे अपने हाथ से लिखते ही थे, ऐसी सूरत में तो ये बातिल परस्त शक में पड़ सकते थे"।

49. नहीं, बल्कि ये तो उन लोगों के सीनों में मौजूद रौशन आयतें हैं जिन्हें इल्म अता हुआ है; हमारी आयतों

म-सलुल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया-अ क-म सलिल्-अन्कबूति इत्त-ख़ज़त् बैतन्, व इन्-न औ-हनल्-बुयूति लबैतुल्-अनकबूति • लौ कानू यअ्लमून (41)

इन्नल्ला-ह यअ्लमु मा यद्अू-न मिन् दूनिही मिन् शैइन्, व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम (42)

व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि व मा यअ्क़िलुहा इल्लल्-आलिमून (43)

ख़-लक़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल् लिल्मुअ्मिनीन (44) •

उत्लु मा ऊहि-य इलै-क मिनल्-किताबि व अक़िमिस्सला-त, इन्नस्सला-त तन्हा अनिल् फ़ह्शा-इ वल्मुन्करि, व ल-ज़िक्रुल्लाहि अक्बरु, वल्लाहु यअ्लमु मा तस्नअून (45)

व ला तुजादिलू अह्लल्-किताबि इल्ला बिल्लती हि-य अह्सनु इल्लल्लज़ी-न ज़-लमू मिन्हुम् व क़ूलू आमन्ना बिल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलैना व उन्ज़ि-ल इलैकुम् व इलाहुना व इलाहुकुम् वाहिदुंव्-व नह्नु लहू मुस्लिमून (46)

व कज़ालि-क अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब फ़ल्लज़ी-न आतैनाहुमुल किताब युअ्मिनू-न बिही व मिन् हाउला-इ मंय्युअ्मिनु बिही, व मा यज्हदु बिआयातिना इल्लल्-काफ़िरून (47)

व मा कुन्-त तत्लू मिन् क़ब्लिही मिन् किताबिंव्-व ला तख़ुत्तुहू बि-यमीनि-क इज़ल्-लर्ताबल्-मुब्तिलून (48)

बल् हु-व आयातुम् बय्यिनातुन् फ़ी सुदूरिल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्-म, व मा यज्हदु बिआयातिना

مَثَلُ الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
اَوْلِيَآءَ كَمَثَلِ الْعَنْكَبُوْتِ ۚ اِتَّخَذَتْ
بَيْتًا ؕ وَاِنَّ اَوْهَنَ الْبُيُوْتِ لَبَيْتُ
الْعَنْكَبُوْتِ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ﴿٤١﴾
اِنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهٖ
مِنْ شَيْءٍ ؕ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ﴿٤٢﴾
وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ ۚ
وَمَا يَعْقِلُهَآ اِلَّا الْعٰلِمُوْنَ ﴿٤٣﴾
خَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ؕ
اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ ﴿٤٤﴾
اُتْلُ مَآ اُوْحِيَ اِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ
وَاَقِمِ الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّ الصَّلٰوةَ تَنْهٰى
عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ ؕ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ
اَكْبَرُ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا تَصْنَعُوْنَ ﴿٤٥﴾
وَلَا تُجَادِلُوْٓا اَهْلَ الْكِتٰبِ اِلَّا بِالَّتِيْ هِيَ
اَحْسَنُ ۖ اِلَّا الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْهُمْ وَقُوْلُوْٓا
اٰمَنَّا بِالَّذِيْٓ اُنْزِلَ اِلَيْنَا وَاُنْزِلَ
اِلَيْكُمْ وَاِلٰهُنَا وَاِلٰهُكُمْ وَاحِدٌ
وَّنَحْنُ لَهٗ مُسْلِمُوْنَ ﴿٤٦﴾
وَكَذٰلِكَ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ ؕ فَالَّذِيْنَ
اٰتَيْنٰهُمُ الْكِتٰبَ يُؤْمِنُوْنَ بِهٖ ۚ وَمِنْ
هٰٓؤُلَآءِ مَنْ يُّؤْمِنُ بِهٖ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ
اِلَّا الْكٰفِرُوْنَ ﴿٤٧﴾
وَمَا كُنْتَ تَتْلُوْا مِنْ قَبْلِهٖ مِنْ كِتٰبٍ
وَّلَا تَخُطُّهٗ بِيَمِيْنِكَ اِذًا لَّارْتَابَ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٤٨﴾
بَلْ هُوَ اٰيٰتٌۢ بَيِّنٰتٌ فِيْ صُدُوْرِ الَّذِيْنَ
اُوْتُوا الْعِلْمَ ؕ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ اِلَّا

الجزء الحادى والعشرون (٢١)

का इनकार तो बस ज़ालिम ही करते हैं।

50. उनका कहना है कि "उसपर उसके रब की तरफ़ से निशानियां क्यों नहीं उतरीं?" कह दोः "निशानियां तो अल्लाह ही के पास हैं, मैं तो सिर्फ़ वाज़ेह तौरपर ख़बरदार करनेवाला हूं"।

51. क्या उनके लिए यह काफ़ी नहीं कि हमने तुमपर किताब नाज़िल की जो उन्हें पढ़कर सुनाई जाती है? यक़ीनन उसमें रहमत, और याददिहानी है उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं।

52. कह दोः "मेरे और तुम्हारे दरमियान अल्लाह गवाह की हैसियत से काफ़ी है"। वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है। जो लोग बातिल पर ईमान लाए और अल्लाह का इनकार किया, वही हैं जो ख़सारे में हैं।

53. जो तुमसे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं, अगर एक मुद्दत मुक़र्रर न होती तो लाज़िमन उनपर अज़ाब आ जाता; वह तो उनपर अचानक आकर रहेगा कि उन्हें ख़बर भी न होगी।

54. वो तुमसे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं, हालांकि जहन्नम काफ़िरों को अपने घेरे में लिए हुए है।

55. जिस दिन अज़ाब उन्हें उनके ऊपर से ढांक लेगा और उनके पांव के नीचे से भी, और वह कहेगा, "चखो उसका मज़ा जो कुछ तुम करते रहे हो!"

56. ऐ मेरे बन्दो जो ईमान लाए हो, बेशक मेरी ज़मीन कुशादा है; पस तुम मेरी ही बन्दगी करो!

57. हर एक जान को मौत का मज़ा चखना है, फिर तुम हमारी ही तरफ़ वापस लौटाए जाओगे।

58. जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए, उन्हें हम जन्नत के बालाख़ानों में जगह देंगे, जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, वो उसमें हमेशा रहेंगे; क्या ही उमदा अजर है अमल करनेवालों का,

59. जिन्होंने सब्र इख़्तियार किया और वो अपने रब पर भरोसा रखते हैं।

60. कितने ही चलने वाले जानवर हैं जो अपना रिज़्क़ उठाए नहीं फिरते, अल्लाह ही उन्हें रिज़्क़ देता है और तुम्हें

इल्लज़्ज़ालिमून (49)

व क़ालू लौ ला उन्ज़ि-ल अ़लैहि आयातुम् मिर्रब्बिही, क़ुल् इन्नमल्-आयातु अ़िन्दल्लाहि, व इन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन (50)

अ-व लम् यक्फ़िहिम् अन्ना अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब युत्ला अ़लैहिम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-रह्म-तंव्-व ज़िक्रा लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून (51) ●

क़ुल् कफ़ा बिल्लाही बैनी व बैनकुम् शहीदन् यअ्लमु मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लज़ी-न आमनू बिल्बातिलि व क-फ़रू बिल्लाहि उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (52)

व यस्तअ्जिलून-क बिल्अ़ज़ाबि, व लौ ला अ-जलुम्-मुसम्मल्-लजा-अहुमुल्-अ़ज़ाबु, व ल-यअ्ति-यन्नहुम् बग़्त-तंव्-व हुम् ला यश्अुरून (53)

यस्तअ्जिलून-क बिल्अ़ज़ाबि, व इन्-न जहन्न-म लमुहीततुम्-बिल्-काफ़िरीन (54)

यौ-म यग़्शाहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् फ़ौक़िहिम् व मिन् तह्ति अर्जुलिहिम् व यक़ूलु ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तअ्मलून (55)

या अ़िबादि-यल्लज़ी-न आमनू इन्-न अर्ज़ी वासि-अ़तुन् फ़-इय्या-य फ़अ्बुदून (56)

कुल्लु नफ़्सिन् ज़ाइ-क़तुल्मौति, सुम्-म इलैना तुर्जअून (57)

वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति लनुबव्वि-अन्नहुम् मिनल्-जन्नति ग़ु-रफ़न् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, निअ्-म अज्रुल्-आ़मिलीन (58)

अल्लज़ी-न स-बरू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून (59)

व क-अय्यिम् मिन् दाब्बतिल्-ला तह्मिलु रिज़्-क़हा

الظّٰلِمُوْنَ (٤٩)
وَقَالُوْا لَوْلَآ اُنْزِلَ عَلَيْهِ اٰيٰتٌ مِّنْ
رَّبِّهٖ ؕ قُلْ اِنَّمَا الْاٰيٰتُ عِنْدَ اللّٰهِ ؕ
وَاِنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ (٥٠)
اَوَلَمْ يَكْفِهِمْ اَنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ
الْكِتٰبَ يُتْلٰى عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَرَحْمَةً وَّذِكْرٰى لِقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ (٥١)
قُلْ كَفٰى بِاللّٰهِ بَيْنِيْ وَبَيْنَكُمْ شَهِيْدًا ۚ يَعْلَمُ مَا فِي
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِالْبَاطِلِ
وَكَفَرُوْا بِاللّٰهِ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ (٥٢)
وَيَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَلَوْلَآ
اَجَلٌ مُّسَمًّى لَّجَآءَهُمُ الْعَذَابُ ؕ
وَلَيَاْتِيَنَّهُمْ بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (٥٣)
يَسْتَعْجِلُوْنَكَ بِالْعَذَابِ ؕ وَاِنَّ جَهَنَّمَ
لَمُحِيْطَةٌ ۢ بِالْكٰفِرِيْنَ (٥٤)
يَوْمَ يَغْشٰهُمُ الْعَذَابُ مِنْ فَوْقِهِمْ
وَمِنْ تَحْتِ اَرْجُلِهِمْ وَيَقُوْلُ ذُوْقُوْا
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ (٥٥)
يٰعِبَادِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ اَرْضِيْ وَاسِعَةٌ
فَاِيَّايَ فَاعْبُدُوْنِ (٥٦)
كُلُّ نَفْسٍ ذَآئِقَةُ الْمَوْتِ ۟ ثُمَّ اِلَيْنَا
تُرْجَعُوْنَ (٥٧)
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَنُبَوِّئَنَّهُمْ
مِّنَ الْجَنَّةِ غُرَفًا تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ؕ نِعْمَ اَجْرُ الْعٰمِلِيْنَ (٥٨)
الَّذِيْنَ صَبَرُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ (٥٩)
وَكَاَيِّنْ مِّنْ دَآبَّةٍ لَّا تَحْمِلُ رِزْقَهَا ۖ

भी! वह सब कुछ सुनता, जानता है।

61. और अगर तुम उनसे पूछो कि "किसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया और सूरज और चांद को मुसख़्ख़र किया?" तो वो बोल उठेंगे, "अल्लाह ने"। फिर वो कहां उलटे फिरे जाते हैं?

62. अल्लाह अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपा-तुला कर देता है; यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ जानता है।

63. और अगर तुम उनसे पूछो कि "किसने आसमान से पानी उतारा, फिर उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा किया?" वो बोल उठेंगे, "अल्लाह ने"। कहो, "सब तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है"। लेकिन उनमें से अक्सर अक़्ल से काम नहीं लेते।

64. और यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस दिल का बहलावा और खेल है; रहा आख़िरत का घर, तो ज़िन्दगी वही है, काश कि वो जानते!

65. जब वो कश्ती में सवार होते हैं, तो वो अल्लाह को, उसके लिए दीन को ख़ालिस करके पुकारते हैं; लेकिन जब वह उन्हें बचाकर ख़ुश्की तक ले आता है, तो क्या देखते हैं कि वो लगे शिर्क करने,

66. ताकि जो कुछ हमने उन्हें दिया है अन्जामकार वो उसकी नाशुकरी कर लें, और ताके इस तरह मज़े उड़ा लें, अच्छा तो वो जल्द ही जान लेंगे!

67. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने एक पुर अमन हरम बनाया, हालांकि उनके आस-पास से लोग उचक लिए जाते हैं? तो क्या फिर भी वो बातिल पर ईमान लाते हैं, और अल्लाह की नेमत की नाशुकरी करते हैं?

68. उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह के ज़िम्मे डालकर झूट घड़े या हक़ को झुटलाए जबकि वह उसके पास आ चुका हो? क्या काफ़िरों का ठिकाना जहन्नम में न होगा?

69. रहे वो लोग जिन्होंने हमारी ख़ातिर ज़ोर सर्फ़ किया, उन्हें हम ज़रूर अपनी राहें दिखाएंगे; बेशक अल्लाह ख़ूबकारों के साथ है।

अल्लाहु यर्ज़ुक़ुहा व इय्याकुम् व हुवस्-समीअ़ुल्-अ़लीम (60)

व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र ल-यक़ूलुन्नल्लाहु फ़-अन्ना युअ़्फ़कून (61)

अल्लाहु यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही व यक़्दिरु लहू, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (62)

व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् नज़्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अह्या बिहिल्-अर्-ज़ मिम्बअ़्दि मौतिहा ल-यक़ूलुन्नल्लाहु, क़ुलिल्-हम्दु लिल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ़्क़िलून (63) ●

व मा हाज़िहिल्-हयातुद्दुन्या इल्ला लह्वुंव्-व लअ़िबुन्, व इन्नद्दारल्-आख़ि-र-त लहि-यल् ह-यवानु ● लौ कानू यअ़्लमून (64)

फ़-इज़ा रकिबू फ़िल्-फ़ुल्कि द-अ़वुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, फ़-लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि इज़ा हुम् युश्रिकून (65)

लि-यक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम् व लि-य तमत्तअ़ू, फ़सौ-फ़ यअ़्लमून (66)

अ-व लम् यरौ अन्ना जअ़ल्ना ह-रमन् आमिनंव्-व यु-तख़त्-त-फ़ुन्नासु मिन् हौलिहिम्, अ-फ़बिल्बातिलि युअ़्मिनू-न व बिनिअ़्-मतिल्लाहि यक्फ़ुरून (67)

व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् औ कज़्ज़-ब बिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहू, अलै-स फ़ी जहन्न-म मस्वल्-लिल्काफ़िरीन (68)

वल्लज़ी-न जा-हदू फ़ीना ल-नह्दियन्नहुम् सुबुलना, व इन्नल्ला-ह ल-मअ़ल्मुह्सिनीन (69)●

اللّٰهُ يَرْزُقُهَا وَاِيَّاكُمْ ۡۖ وَهُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ ۝٦٠
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ لَيَقُوْلُنَّ
اللّٰهُ ۚ فَاَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝٦١
اَللّٰهُ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ
وَيَقْدِرُ لَهٗ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝٦٢
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ نَّزَّلَ مِنَ السَّمَآءِ
مَآءً فَاَحْيَا بِهِ الْاَرْضَ مِنْۢ بَعْدِ مَوْتِهَا
لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۭ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۭ بَلْ
ع اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُوْنَ ۝٦٣
وَمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا لَهْوٌ وَّلَعِبٌ ۭ
الثلثة وَاِنَّ الدَّارَ الْاٰخِرَةَ لَهِيَ الْحَيَوَانُ ۘ
لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝٦٤
فَاِذَا رَكِبُوْا فِي الْفُلْكِ دَعَوُا اللّٰهَ
مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ۥ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ
اِلَى الْبَرِّ اِذَا هُمْ يُشْرِكُوْنَ ۝٦٥ۙ
لِيَكْفُرُوْا بِمَآ اٰتَيْنٰهُمْ ښ وَلِيَتَمَتَّعُوْا ۫
فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٦٦
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا جَعَلْنَا حَرَمًا اٰمِنًا وَّيُتَخَطَّفُ
النَّاسُ مِنْ حَوْلِهِمْ ۭ اَفَبِالْبَاطِلِ
يُؤْمِنُوْنَ وَبِنِعْمَةِ اللّٰهِ يَكْفُرُوْنَ ۝٦٧
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِالْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهٗ ۭ
اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ۝٦٨
وَالَّذِيْنَ جَاهَدُوْا فِيْنَا لَنَهْدِيَنَّهُمْ
ع سُبُلَنَا ۭ وَاِنَّ اللّٰهَ لَمَعَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٦٩

सूरह अर-रूम मक्की

(आयतें 60, रुकूआत 6)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-मीम।

2-5. रूमी पास के इलाक़े में मग़लूब हो गए हैं; और वो अपने मग़लूब होने के बाद, जल्द ही चन्द साल में ग़ालिब हो जाएंगे। अल्लाह ही के हुक्म से हुआ जो पहले हुआ और उसी के हुक्म से होगा जो बाद में होगा, और उस दिन अहले ईमान अल्लाह की मदद से खुश होंगे; वह जिसकी चाहता है मदद फ़रमाता है; वह ज़बरदस्त, निहायत रहमवाला है।

6. यह वादा अल्लाह का है! अल्लाह अपने वादे की ख़िलाफ़ वर्ज़ी नही करता, मगर अकसर लोग जानते नहीं।

7. वो दुनिया की ज़िन्दगी के ज़ाहिर को जानते हैं, मगर आख़िरत से वो बिल्कुल ही ग़ाफ़िल हैं।

8. क्या उन्होंने अपने आप में ग़ौर व फ़िक्र नहीं किया? अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को और जो कुछ उनके दरमियान है हक़ के साथ और एक मुक़र्रर मुद्दत ही के लिए पैदा फ़रमाया है; मगर बहुत से लोग तो अपने रब की मुलाक़ात के मुनकिर हैं।

9. क्या वो ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा अंजाम हुआ जो उनसे पहले थे? वो ताक़त में उनसे ज़्यादा ज़ोरआवर थे, और उन्होंने ज़मीन को ज़रख़ेज़ बनाया और उससे कहीं ज़्यादा उसे आबाद किया जितना इन्होंने उसे आबाद किया; और उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें लेकर आए; फिर अल्लाह ऐसा न था कि उनपर ज़ुल्म करता, मगर वो खुद ही अपने आप पर ज़ुल्म करते थे।

10. फिर जिन लोगों ने बुरा किया था उनका अन्जाम बुरा हुआ, इसलिए कि उन्होंने अल्लाह की आयतों को झुटलाया और उनका मज़ाक़ उड़ाते रहे।

11. अल्लाह ही तख़लीक़ का आग़ाज़ करता है, फिर वही उसको दोहराता है फिर उसी की तरफ़ तुम पलटाए जाओगे।

30 सूरतुर्-रूमि
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 3547 अक्षर, 827 शब्द, 60 आयतें और 6 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1)

ग़ुलि-बतिर्रूम (2)

फ़ी अद्नल्-अर्ज़ि व हुम् मिम्बअ्दि ग़-लबिहिम् स-यग़्लिबून (3)

फ़ी बिज़्अ़ सिनी-न, लिल्लाहिल्-अम्रु मिन् क़ब्लु व मिम्बअ्दु, व यौमइज़िंय्-यफ़्रहुल्-मुअ्मिनून (4)

बिनस्रिल्लाहि, यन्सुरु मंय्यशा-उ, व हुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम (5)

वअ्दल्लाहि, ला युख़्लिफ़ुल्लाहु वअ्-दहू व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (6)

यअ्लमू-न ज़ाहिरम् मिनल्-हयातिद्दुन्या व हुम् अ़निल्-आख़िरति हुम् ग़ाफ़िलून (7)

अ-व लम् य-तफ़क्करू फ़ी अन्फ़ुसिहिम्, मा ख़-लक़ल्लाहुस्-समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मन्, व इन्-न कसीरम्-मिनन्नासि बिलिक़ा-इ रब्बिहिम् लकाफ़िरून (8)

अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कानू अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्वतंव्-व असारुल्-अर्-ज़ व अ़-मरूहा अक्स-र मिम्मा अ़-मरूहा व जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति, फ़मा कानल्लाहु लियज़्लिमहुम् व लाकिन् कानू अन्फ़ु-सहुम् यज़्लिमून (9)

सुम्-म का-न आ़क़ि-बतल्लज़ी-न असाउस्सूआ अन् कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि व कानू बिहा यस्तह्ज़िऊन (10) ●

अल्लाहु यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युईदुहू सुम्-म इलैहि तुर्जअून (11)

سُوْرَةُ الرُّوْمِ مَكِّيَّةٌ ، اٰيَاتُهَا ٦٠ ، رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
الٓمّٓ ۝١ غُلِبَتِ الرُّوْمُ ۝٢
فِيْٓ اَدْنَى الْاَرْضِ وَهُمْ مِّنْۢ بَعْدِ غَلَبِهِمْ
سَيَغْلِبُوْنَ ۝٣
فِيْ بِضْعِ سِنِيْنَ ۬ لِلّٰهِ الْاَمْرُ مِنْ قَبْلُ
وَمِنْۢ بَعْدُ ۭ وَيَوْمَىِٕذٍ يَّفْرَحُ الْمُؤْمِنُوْنَ ۝٤
بِنَصْرِ اللّٰهِ ۭ يَنْصُرُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ ۝٥
وَعْدَ اللّٰهِ ۭ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ وَعْدَهٗ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٦
يَعْلَمُوْنَ ظَاهِرًا مِّنَ الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ښ
وَهُمْ عَنِ الْاٰخِرَةِ هُمْ غٰفِلُوْنَ ۝٧
اَوَلَمْ يَتَفَكَّرُوْا فِيْٓ اَنْفُسِهِمْ ۣ مَا خَلَقَ
اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ اِلَّا
بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ وَاِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ
النَّاسِ بِلِقَاۗئِ رَبِّهِمْ لَكٰفِرُوْنَ ۝٨
اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ
كَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّاَثَارُوا الْاَرْضَ
وَعَمَرُوْهَآ اَكْثَرَ مِمَّا عَمَرُوْهَا وَجَاۗءَتْهُمْ
رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ ۭ فَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيَظْلِمَهُمْ
وَلٰكِنْ كَانُوْٓا اَنْفُسَهُمْ يَظْلِمُوْنَ ۝٩
ثُمَّ كَانَ عَاقِبَةَ الَّذِيْنَ اَسَاۗءُوا السُّوْۗآٰى
ع اَنْ كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ وَكَانُوْا بِهَا يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝١٠
اَللّٰهُ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ ثُمَّ
اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝١١

12. जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, उस दिन मुजरिम मायूस दम बख़ुद होकर रह जाएंगे।

13. उनके ठहराए हुए शरीकों में से कोई उनका सिफ़ारिशी नहीं होगा, और वो ख़ुद भी अपने शरीकों का इनकार करेंगे।

14. और जिस दिन क़ियामत बरपा होगी, उस दिन वो सब अलग-अलग हो जाएंगे;

15. पस जो लोग ईमान लाए, और नेक आमाल इख़्तियार किए, वो एक बाग़ में ख़ुश व ख़ुर्रम रखे जाएंगे।

16. मगर जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और हमारी आयतों को और आख़िरत की मुलाक़ात को झुटलाया, वो लाकर अज़ाब में मुबतला किए जाएंगे।

17-18. पस अब अल्लाह की तसबीह करो जबकि तुम शाम करो और जबकि तुम सुबह करो — और उसी के लिए हम्द है आसमानों और ज़मीन में, — नीज़ इशा के वक़्त भी और जब तुम ज़ुहर करते हो।

19. वह ज़िन्दा को मुर्दे से निकालता है, और मुर्दे को ज़िन्दा में से, और ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दगी अता करता है; इसी तरह तुम भी निकाले जाओगे।

20. और यह उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया; फिर क्या देखते हैं कि तुम आदमी हो कर फैलते जा रहे हो।

21. और यह भी उसकी निशानियों में से है कि उसने तुम्हारी ही जिन्स से, तुम्हारे लिए जोड़े पैदा किए, ताकि तुम उनके पास सुकून हासिल करो, और उसने तुम्हारे दरमियान मुहब्बत और रहमत पैदा की। यक़ीनन इसमें कितनी ही निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ग़ौर व फ़िक्र करते हैं।

22. और उसकी निशानियों में से आसमानों और ज़मीन की पैदाइश और तुम्हारी ज़बानों और तुम्हारे रंगों का तनव्वो (क़िस्म-क़िस्म का होना) है। यक़ीनन इसमें इल्म वालों के लिए कितनी ही निशानियां हैं।

23. और उसकी निशानियों में से तुम्हारा रात और दिन का सोना, और तुम्हारा उसके फ़ज़्ल को तलाश करना भी है। यक़ीनन इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो सुनते हैं।

व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु युब्लिसुल-मुज्रिमून (12)

व लम् यकुन्-लहुम् मिन् शु-रकाइहिम् शु-फ़आ-उ व कानू बिशु-रकाइहिम् काफ़िरीन (13)

व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु यौमइज़िंय्-य-तफ़र्रक़ून (14)

फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़हुम् फ़ी रौज़तिंय्-युह्-बरून (15)

व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना व लिक़ाइल्-आख़िरति फ़-उलाइ-क फ़िल्अ़ज़ाबि मुह्ज़रून (16)

फ़सुब्हानल्लाहि ही-न तुम्सू-न व ही-न तुस्बिहून (17)

व लहुल्-हम्दु फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व अ़शिय्यंव्-व ही-न तुज़्हिरून (18)

युख़्रिजुल्-हय्-य मिनल्-मय्यिति व युख़्रिजुल्-मय्यि-त मिनल्-हय्यि व युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, व कज़ालि-क तुख़्रजून (19) ●

व मिन् आयातिही अन् ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म इज़ा अन्तुम् ब-शरुन् तन्तशिरून (20)

व मिन् आयातिही अन् ख़-ल-क़ लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजल्-लितस्कुनू इलैहा व ज-अ़-ल बैनकुम् मवद्द-तंव्-व रह्म-तन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिक़ौमिंय्-य-तफ़क्करून (21)

व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि वख़्तिलाफ़ु-अल्सि-नतिकुम् व अल्वानिकुम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिल्-आ़लिमीन (22)

व मिन् आयातिही मनामुकुम् बिल्लैलि वन्नहारि वब्तिग़ा-उकुम् मिन् फ़ज़्लिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल्-लिक़ौमिंय्यस्-मऊन (23)

وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُبْلِسُ الْمُجْرِمُوْنَ ۝۱۲
وَلَمْ يَكُنْ لَّهُمْ مِّنْ شُرَكَآئِهِمْ شُفَعٰٓؤُا
وَكَانُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝۱۳
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّتَفَرَّقُوْنَ ۝۱۴
فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَهُمْ فِيْ رَوْضَةٍ يُّحْبَرُوْنَ ۝۱۵
وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا وَلِقَآئِ
الْاٰخِرَةِ فَاُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ ۝۱۶
فَسُبْحٰنَ اللّٰهِ حِيْنَ تُمْسُوْنَ وَحِيْنَ
تُصْبِحُوْنَ ۝۱۷
وَلَهُ الْحَمْدُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَعَشِيًّا
وَّحِيْنَ تُظْهِرُوْنَ ۝۱۸
يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ
ع مِنَ الْحَيِّ وَيُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ
وَكَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ۝۱۹
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ
اِذَآ اَنْتُمْ بَشَرٌ تَنْتَشِرُوْنَ ۝۲۰
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ خَلَقَ لَكُمْ مِّنْ
اَنْفُسِكُمْ اَزْوَاجًا لِّتَسْكُنُوْٓا اِلَيْهَا وَجَعَلَ
بَيْنَكُمْ مَّوَدَّةً وَّرَحْمَةً ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝۲۱
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَاخْتِلَافُ اَلْسِنَتِكُمْ وَاَلْوَانِكُمْ ۭ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّلْعٰلِمِيْنَ ۝۲۲
وَمِنْ اٰيٰتِهٖ مَنَامُكُمْ بِالَّيْلِ وَالنَّهَارِ
وَابْتِغَآؤُكُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّسْمَعُوْنَ ۝۲۳

24. और उसकी निशानियों में से यह भी है कि वह तुम्हें बिजली की चमक दिखाता है डर और उम्मीद पैदा करने के लिए, और वह आसमान से पानी बरसाता है फिर उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दगी बख़्शता है। बेशक इसमें कितनी ही निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लेते हैं।

25. और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आसमान व ज़मीन उसके हुक्म से क़ायम हैं; फिर जब वह तुम्हें एक बार पुकार कर ज़मीन से बुलाएगा, तो क्या देखेंगे कि नागहां तुम निकल पड़े।

26. आसमानों और ज़मीन में जो कोई भी है उसी का है; हर एक उसी का नियाज़मन्द है।

27. वही है जो तख़्लीक़ का आग़ाज़ करता है, फिर वही उसे दोबारा पैदा करेगा, और यह उसके लिए आसान है। आसमानों और ज़मीन में उसी की मिसाल सबसे बरतर है; और वह निहायत ज़बरदस्त, बड़ी हिकमतवाला है।

28. उसने तुम्हारे लिए ख़ुद तुम्हारे अंदर से एक मिसाल पेश की है; क्या जो रिज़्क़ हमने तुम्हें दिया है उसमें तुम्हारे ममलूकों में से कुछ तुम्हारे शरीक हैं कि तुम सब उसमें यकसां हैसियत के हो, तुम उनका ऐसा लिहाज़ और डर रखते हो जैसा अपने लोगों का लिहाज़ और डर रखते हो? — इस तरह हम उन लोगों के लिए आयतें खोलकर पेश करते हैं जो अक़्ल से काम लेते हैं।

29. नहीं, बल्कि ये ज़ालिम तो बग़ैर इल्म के अपनी ख़्वाहिशात के पीछे चल पड़े; तो अब कौन उसे राह दिखाएगा जिसे अल्लाह ने भटका दिया हो? ऐसे लोगों का तो कोई मददगार नहीं।

30. पस एक तरफ़ के होकर अपना रुख़ इस दीन की तरफ़ जमा दो — अल्लाह की (बनाई हुई) उस फ़ितरत का इत्तिबाअ करो जिसपर उसने लोगों को पैदा किया। अल्लाह की बनाई हुई साख़्त बदली नहीं जा सकती। यही सीधा और उस्तुवार दीन है; मगर अकसर लोग जानते नहीं।

31. उसकी तरफ़ रुजू करनेवाले रहो, और उसका डर रखो, और नमाज़ का एहतिमाम करो, और मुशरिकीन में से न होना,

व मिन् आयातिही युरीकुमुल्-बर्-क ख़ौफ़ंव्-व त-मअंव्-व युनज़्ज़िलु मिनस्-समा-इ मा-अन् फ़युह्यी बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्यअ्क़िलून (24)

व मिन् आयातिही अन् तक़ूमस्समा-उ वल्अर्ज़ु बिअम्रिही, सुम्-म इज़ा दआकुम् दअ्-वतम्-मिनल्अर्ज़ि इज़ा अन्तुम् तख़्रुजून (25)

व लहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, कुल्लुल्-लहू क़ानितून (26)

व हुवल्लज़ी यब्दउल्-ख़ल्-क़ सुम्-म युईदुहू व हु-व अह्वनु अलैहि, व लहुल्-म-सलुल्-अअ्ला फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम • (27) •

ज़-र-ब लकुम् म-सलम् मिन् अन्फ़ुसिकुम्, हल्-लकुम् मिम्मा म-लकत् ऐमानुकुम् मिन् शु-रका-अ फ़ी मा रज़क़्नाकुम् फ़-अन्तुम् फ़ीहि सवाउन् तख़ाफ़ूनहुम् कख़ी-फ़तिकुम् अन्फ़ु-सकुम्, कज़ालि-क नुफ़स्सिलुल्-आयाति लिक़ौमिंय्-यअ्क़िलून (28)

बलित्-त-बअ़ल्लज़ी-न ज़-लमू अह्वा-अहुम् बिग़ैरि अिल्मिन् फ़-मंय्यह्दी मन् अज़ल्लल्लाहु, व मा लहुम् मिन्-नासिरीन (29)

फ़-अक़िम् वज्ह-क लिद्दीनि हनीफ़न्, फ़ित्-रतल्लाहिल्लती फ़-तरन्ना-स अलैहा, ला तब्दी-ल लिख़ल्क़िल्लाहि, ज़ालिकद्-दीनुल्-क़य्यिमु व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (30)

मुनीबी-न इलैहि वत्तक़ूहु व अक़ीमुस्-सला-त व ला तकूनू मिनल्-मुश्रिकीन (31)

وَمِنْ اٰيٰتِهٖ يُرِيْكُمُ الْبَرْقَ خَوْفًا وَّطَمَعًا
وَّيُنَزِّلُ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَيُحْيٖ بِهِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۲۴
وَمِنْ اٰيٰتِهٖٓ اَنْ تَقُوْمَ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ
بِاَمْرِهٖ ۭ ثُمَّ اِذَا دَعَاكُمْ دَعْوَةً ڰ
مِّنَ الْاَرْضِ ڰ اِذَآ اَنْتُمْ تَخْرُجُوْنَ ۲۵
وَلَهٗ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ
كُلٌّ لَّهٗ قٰنِتُوْنَ ۲۶
وَهُوَ الَّذِيْ يَبْدَؤُا الْخَلْقَ ثُمَّ يُعِيْدُهٗ
وَهُوَ اَهْوَنُ عَلَيْهِ ۭ وَلَهُ الْمَثَلُ الْاَعْلٰى
فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ
الْحَكِيْمُ ۲۷
ضَرَبَ لَكُمْ مَّثَلًا مِّنْ اَنْفُسِكُمْ ۭ هَلْ
لَّكُمْ مِّنْ مَّا مَلَكَتْ اَيْمَانُكُمْ مِّنْ شُرَكَآءَ
فِيْ مَا رَزَقْنٰكُمْ فَاَنْتُمْ فِيْهِ سَوَآءٌ
تَخَافُوْنَهُمْ كَخِيْفَتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ ۭ كَذٰلِكَ
نُفَصِّلُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّعْقِلُوْنَ ۲۸
بَلِ اتَّبَعَ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ فَمَنْ يَّهْدِيْ مَنْ اَضَلَّ اللّٰهُ ۭ
وَمَا لَهُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۲۹
فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ حَنِيْفًا ۭ فِطْرَتَ
اللّٰهِ الَّتِيْ فَطَرَ النَّاسَ عَلَيْهَا ۭ لَا تَبْدِيْلَ
لِخَلْقِ اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ الدِّيْنُ الْقَيِّمُ ڎ وَلٰكِنَّ
اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ۳۰
مُنِيْبِيْنَ اِلَيْهِ وَاتَّقُوْهُ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَلَا تَكُوْنُوْا مِنَ الْمُشْرِكِيْنَ ۳۱

32. उन लोगों में से जिन्होंने अपने दीन को टुकड़े-टुकड़े कर डाला, और गिरोह- गिरोह हो गए, हर गिरोह के लोग उसी में मगन हैं जो कुछ कि उनके पास है।

33. और जब लोगों को कोई तकलीफ़ पहुंचती है, तो वो अपने रब को उसकी तरफ़ रुजू होकर पुकारते हैं; फिर जब वह उन्हें अपनी तरफ़ से रहमत का ज़ायक़ा चखा देता है, तो क्या देखते हैं कि उनमें से कुछ लोग अपने रब के शरीक ठहराने लगे,

34. ताकि इस तरह वो उसकी नाशुकरी करें जो कुछ हमने उन्हें दिया है। "अच्छा तो मज़े उड़ा लो, जल्द ही तुम जान लोगे"।

35. क्या हमने उन पर कोई सनद उतारी है कि वह उसके हक़ में बोलती हो जो वो उसके साथ शरीक करते हैं?

36. और जब हम लोगों को रहमत का ज़ायक़ा चखाते हैं तो वो उसपर इतराने लगते हैं; लेकिन जो उनके हाथों ने आगे भेजा है अगर उसकी वजह से उन्हें कोई बुराई पहुंचे, तो क्या देखते हैं कि वो मायूस हो रहे हैं।

37. क्या उन्होंने ग़ौर नहीं किया कि अल्लाह जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपा-तुला कर देता है? बेशक इसमें निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो ईमान लाएं।

38. पस रिश्तेदार को उसका हक़ दो, और मुहताज, और मुसाफ़िर को भी; यह बेहतर है उनके लिए जो अल्लाह की ख़ुशनूदी चाहते हों; और वही कामयाब हैं।

39. जो कुछ तुम सूद पर देते हो, ताकि वह लोगों के मालों के अन्दर परवान चढ़े, तो वह अल्लाह के नज़दीक नहीं बढ़ता; लेकिन जो ज़कात तुमने अल्लाह की ख़ुशनूदी चाहते हुए दी, तो ऐसे ही लोग अपना माल बढ़ाते हैं।

40. अल्लाह ही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर तुम्हें रिज़्क़ दिया, फिर वह तुम्हें मौत देता है, फिर तुम्हें ज़िन्दा करेगा; क्या तुम्हारे ठहराए हुए शरीकों में भी कोई है जो इन कामों में से कुछ कर सके? अज़ीम व बरतर

मिनल्लज़ी-न फ़र्रक़ू दीनहुम् व कानू शि-यअन्, कुल्लु हिज़्बिम्-बिमा लदैहिम् फ़रिहून (32)

व इज़ा मस्सन्ना-स ज़ुर्रुन् दऔ रब्बहुम् मुनीबी-न इलैहि सुम-म इज़ा अज़ाक़हुम मिन्हु रह़्म-तन् इज़ा फ़रीक़ुम् मिन्हुम् बिरब्बिहिम् युश्रिकून (33)

लियक्फ़ुरू बिमा आतैनाहुम्, फ़-तमत्तअ़ू, फ़सौ-फ़ तअ़्लमून (34)

अम् अन्ज़ल्ना अ़लैहिम् सुल्तानन् फ़हु-व य-तकल्लमु बिमा कानू बिही युश्रिकून (35)

व इज़ा अज़क़्नन्ना-स रह़्म-तन् फ़रिहू बिहा, व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुम्-बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम् इज़ा हुम् यक़्नतून (36)

अ-व लम् यरौ अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्-युअ्मिनून (37)

फ़-आति ज़ल्क़ुर्बा हक़्क़हू वल्मिस्की-न वब्नस्सबीलि, ज़ालि-क ख़ैरुल्-लिल्लज़ी-न युरीदू-न वज्हल्लाहि व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (38)

व मा आतैतुम् मिर्रिबल्-लि-यर्बु-व फ़ी अम्वालिन्नासि फ़ला यर्बू अ़िन्दल्लाहि व मा आतैतुम् मिन् ज़कातिन् तुरीदू-न वज्हल्लाहि फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुज़्अिफ़ून (39)

अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् सुम्-म र-ज़-क़कुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम-म युह़्यीकुम्, हल् मिन् शु-रकाइकुम् मंय्यफ़अ़लु मिन् ज़ालिकुम् मिन् शैइन्, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा

مِنَ الَّذِيْنَ فَرَّقُوْا دِيْنَهُمْ وَكَانُوْا شِيَعًا ؕ
كُلُّ حِزْبٍۢ بِمَا لَدَيْهِمْ فَرِحُوْنَ ۝٣٢
وَاِذَا مَسَّ النَّاسَ ضُرٌّ دَعَوْا رَبَّهُمْ مُّنِيْبِيْنَ
اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَاۤ اَذَاقَهُمْ مِّنْهُ رَحْمَةً
اِذَا فَرِيْقٌ مِّنْهُمْ بِرَبِّهِمْ يُشْرِكُوْنَ ۝٣٣ ۙ
لِيَكْفُرُوْا بِمَاۤ اٰتَيْنٰهُمْ ؕ فَتَمَتَّعُوْا ٝ
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣٤
اَمْ اَنْزَلْنَا عَلَيْهِمْ سُلْطٰنًا فَهُوَ يَتَكَلَّمُ
بِمَا كَانُوْا بِهٖ يُشْرِكُوْنَ ۝٣٥
وَاِذَاۤ اَذَقْنَا النَّاسَ رَحْمَةً فَرِحُوْا بِهَا ؕ
وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ
اِذَا هُمْ يَقْنَطُوْنَ ۝٣٦
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ
لَاٰيٰتٍ لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٣٧
فَاٰتِ ذَا الْقُرْبٰى حَقَّهٗ وَالْمِسْكِيْنَ
وَابْنَ السَّبِيْلِ ؕ ذٰلِكَ خَيْرٌ لِّلَّذِيْنَ
يُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ ۫ وَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْمُفْلِحُوْنَ ۝٣٨
وَمَاۤ اٰتَيْتُمْ مِّنْ رِّبًا لِّيَرْبُوَا۠ فِيْۤ اَمْوَالِ
النَّاسِ فَلَا يَرْبُوْا عِنْدَ اللّٰهِ ۚ وَمَاۤ اٰتَيْتُمْ
مِّنْ زَكٰوةٍ تُرِيْدُوْنَ وَجْهَ اللّٰهِ فَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُضْعِفُوْنَ ۝٣٩
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ ثُمَّ رَزَقَكُمْ ثُمَّ
يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ يُحْيِيْكُمْ ؕ هَلْ مِنْ
شُرَكَآئِكُمْ مَّنْ يَّفْعَلُ مِنْ ذٰلِكُمْ
مِّنْ شَيْءٍ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا

है वह उससे जो ये शरीक ठहराते हैं।

41. खुश्की और तरी में फ़साद छा गया, खुद लोगों ही के हाथों से कमाई की बदौलत, ताकि वह उन्हें उनके कुछ करतूतों का मज़ा चखाए, इस तवक़्क़ो पर कि वो बाज़ आ जाएं।

42. कहो कि "ज़मीन में चल-फिर कर देखो कि उन लोगों का कैसा अंजाम हो चुका है जो पहले हुए हैं; उनमें अक्सर मुशरिक ही थे"।

43. पस तुम अपना रुख़ रास्त दुरुस्त दीन की तरफ़ जमा दो, इससे पहले कि अल्लाह की तरफ़ से वह दीन आ जाए जिसके लिए वापसी नहीं; उस दिन वो अलग-अलग हो जाएंगे।

44. जिस किसी ने कुफ़्र किया, तो उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर होगा; और जिन लोगों ने नेक अमल किया, वो अपने ही लिए रास्ता हमवार कर रहे हैं,

45. ताकि वह अपने फ़ज़्ल से उन लोगों को बदला दे जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए; यक़ीनन वह काफ़िरों को पसन्द नहीं करता।

46. और उसकी निशानियों में से यह भी है कि वह बशारत देनेवाली हवाएं भेजता है (ताकि उनके ज़रिए से तुम्हें बारिश की बशारत मिले) और ताकि वह तुम्हें अपनी रहमत का ज़ायक़ा चखाए और ताकि उसके हुक्म से कश्तियां चलें, और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो; और शायद तुम शुक्रगुज़ार बनो।

47. हम तुमसे पहले कितने ही रसूलों को उनकी क़ौम की तरफ़ भेज चुके हैं, और वो उनके पास खुली निशानियां लेकर आए; फिर हम उन लोगों से इंतिक़ाम लेकर रहे जिन्होंने जुर्म किया; और अहले ईमान की मदद करना हमपर लाज़िम है।

48. अल्लाह ही है जो हवाओं को भेजता है, और वो बादलों को उठाती हैं, फिर जिस तरह चाहता है उन्हें आसमान में फैला देता है, और उन्हें तहों और टुकड़ियों की शक्ल दे देता है, फिर तुम देखते हो कि उनके बीच से बारिश के क़तरे टपके चले आते हैं, फिर जब वह अपने बन्दों में से जिनपर चाहता है उसे बरसाता है, तो क्या देखते हैं कि वो खुश हो गए,

युश्रिकून (40) ●

ज़-हरल्-फ़सादु फ़िल्-बर्रि वल्-बह्रि बिमा क-सबत् ऐदिन्नासि लियुज़ी-क़हुम् बअ्ज़ल्लज़ी-अ़मिलू लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (41)

क़ुल् सीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़न्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लु, का-न अक्सरुहुम् मुश्रिकीन (42)

फ़-अक़िम् वज्ह-क लिद्दीनिल्-क़य्यिमि मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल् ला मरद्-द लहू मिनल्लाहि यौमइज़िंय्-यस्सद्दअून (43)

मन् क-फ़-र फ़-अ़लैहि कुफ़्रुहू व मन् अ़मि-ल सालिहन् फ़लिअन्फ़ुसिहिम् यम्हदून (44)

लि-यज्ज़ि-यल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति मिन् फ़ज़्लिही, इन्नहू ला युहिब्बुल्-काफ़िरीन (45)

व मिन् आयातिही अंय्युर्सिलर्-रिया-ह मुबश्शिरातिंव्-व लियुज़ी-क़कुम् मिर्रह्मतिही व लितज्रि-यल्फ़ुल्कु बिअम्रिही व लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (46)

व ल-क़द् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क रुसुलन् इला क़ौमिहिम् फ़जाऊहुम् बिल्बय्यिनाति फ़न्त-क़म्ना मिनल्लज़ी-न अज्-रमू, व का-न हक़्क़न् अ़लैना नस्रुल्-मुअ्मिनीन (47)

अल्लाहुल्लज़ी युर्सिलुर्-रिया-ह फ़तुसीरु सहाबन् फ़-यब्सुतुहू फ़िस्समा-इ कै-फ़ यशा-उ व यज्-अ़लुहू कि-सफ़न् फ़-तरल्-वद्-क़ यख़्रुजु मिन् ख़िलालिही फ़-इज़ा असा-ब बिही मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून (48)

يُشْرِكُوْنَ (٤٠)
ظَهَرَ الْفَسَادُ فِي الْبَرِّ وَالْبَحْرِ بِمَا كَسَبَتْ
اَيْدِي النَّاسِ لِيُذِيْقَهُمْ بَعْضَ الَّذِيْ
عَمِلُوْا لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ (٤١)
قُلْ سِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَانْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلُ ؕ كَانَ
اَكْثَرُهُمْ مُّشْرِكِيْنَ (٤٢)
فَاَقِمْ وَجْهَكَ لِلدِّيْنِ الْقَيِّمِ مِنْ قَبْلِ
اَنْ يَّاْتِيَ يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ يَوْمَئِذٍ
يَّصَّدَّعُوْنَ (٤٣)
مَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ ۚ وَمَنْ عَمِلَ
صَالِحًا فَلِاَنْفُسِهِمْ يَمْهَدُوْنَ (٤٤)
لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
مِنْ فَضْلِهٖ ؕ اِنَّهٗ لَا يُحِبُّ الْكٰفِرِيْنَ (٤٥)
وَمِنْ اٰيٰتِهٖۤ اَنْ يُّرْسِلَ الرِّيَاحَ مُبَشِّرٰتٍ
وَّلِيُذِيْقَكُمْ مِّنْ رَّحْمَتِهٖ وَلِتَجْرِيَ
الْفُلْكُ بِاَمْرِهٖ وَلِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ
وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ (٤٦)
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ رُسُلًا اِلٰى
قَوْمِهِمْ فَجَآءُوْهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَانْتَقَمْنَا
مِنَ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا ؕ وَكَانَ حَقًّا عَلَيْنَا
نَصْرُ الْمُؤْمِنِيْنَ (٤٧)
اَللّٰهُ الَّذِيْ يُرْسِلُ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ سَحَابًا
فَيَبْسُطُهٗ فِي السَّمَآءِ كَيْفَ يَشَآءُ وَيَجْعَلُهٗ
كِسَفًا فَتَرَى الْوَدْقَ يَخْرُجُ مِنْ خِلٰلِهٖ ۚ
فَاِذَآ اَصَابَ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖۤ
اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ (٤٨)

49. हालांकि इससे पहले, क़ब्ल इसके कि वह उनपर उतरे, वो बिल्कुल ना उम्मीद थे।

50. पस अल्लाह की रहमत के नुक़ूश देखो, वह किस तरह ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दगी बख़्शता है, यक़ीनन वह मुर्दों को ज़िन्दा करने वाला है, और उसे तो हर चीज़ पर क़ुदरत है।

51. लेकिन अगर हम एक दूसरी हवा भेज दें, और वो उस खेती को देखें कि पीली पड़ गई, तो उसके बाद वो कुफ़्र करने लग जाएं।

52. पस तुम मुर्दों को नहीं सुना सकते और न बहरों को पुकार सुना सकते हो, जब कि वो पीठ फेरे चले जा रहे हों।

53. और न तुम अंधों को उनकी गुमराही से फेरकर राह पर ला सकते हो, तुम तो सिर्फ़ उन्हीं को सुना सकते हो जो हमारी आयतों पर ईमान लाएं, पस वही फ़रमांबरदार हैं।

54. अल्लाह ही है जिसने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया, फिर कमज़ोरी के बाद क़ुव्वत बख़्शी, फिर क़ुव्वत के बाद कमज़ोरी और बुढ़ापा दिया; वह जो चाहता है पैदा करता है, वह जानने वाला, क़ुदरत वाला है।

55. जिस रोज़ क़ियामत वाक़े होगी, मुजरिम क़सम खाएंगे कि वो घड़ी भर से ज़्यादा नहीं ठहरे; ऐसे ही ये उलटे फिरे चले जाते थे।

56. लेकिन जिन्हें इल्म और ईमान अता हुआ वो कहेंगे कि "अल्लाह के नविश्ते में तो तुम जी उठने के दिन तक ठहरे रहे हो, पस यही जी उठने का दिन है, लेकिन तुम जानते न थे"।

57. पस उस दिन उन ज़ालिमों को उनका कोई उज़्र नफ़ा न देगा, और न उनसे यह चाहा जाएगा कि वो माफ़ी मांगकर (ख़ुदा का) इताब दूर करें।

58. हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर एक मिसाल पेश कर दी है; अगर तुम उनके पास कोई भी निशानी लाओ, जिन लोगों ने कुफ़्र किया वो तो यही कहेंगे कि, "तुम तो बस झूट घड़ते हो"।

व इन् कानू मिन् क़ब्लि अंय्युनज़्ज़-ल अलैहिम् मिन् क़ब्लिही लमुब्लिसीन (49)

फ़न्ज़ुर् इला आसारि रह्मतिल्लाहि कै-फ़ युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, इन्-न ज़ालि-क लमुह्यिल्-मौता व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (50)

व ल-इन् अर्सल्ना रीहन् फ़-रऔहु मुस्फ़र्रल् लज़ल्लू मिम्-बअ्दिही यक्फ़ुरून (51)

फ़-इन्न-क ला तुस्मिअुल्-मौता व ला तुस्मिअुस्-सुम्मद्-दुआ़-अ इज़ा वल्लौ मुद्बिरीन (52)

व मा अन्-त बिहादिल्-अुम्यि अ़न् ज़ला-लतिहिम्, इन् तुस्मिअु इल्ला मंय्युअ्मिनु बिआयातिना फ़हुम् मुस्लिमून (53) ●

अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-ककुम् मिन् ज़ुअ्फ़िन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्बअ्दि ज़ुअ्फ़िन् क़ुव्वतन् सुम्-म ज-अ़-ल मिम्-बअ्दि क़ुव्वतिन् ज़ुअ्फ़ंव्-व शै-बतन्, यख़्लुक़ु मा यशा-उ व हुवल्-अ़लीमुल्-क़दीर (54)

व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु युक़्सिमुल्-मुज्रिमू-न मा लबिसू ग़ै-र सा-अ़तिन्, कज़ालि-क कानू युअ्फ़कून (55)

व क़ालल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म वल्-ईमा-न ल-क़द् लबिस्तुम् फ़ी किताबिल्लाहि इला यौमिल्-बअ्सि फ़-हाज़ा यौमुल्-बअ्सि व लाकिन्नकुम् कुन्तुम् ला तअ्लमून (56)

फ़यौमइज़िल्-ला यन्फ़अुल्लज़ी-न ज़-लमू मअ्ज़ि-रतुहुम् व ला हुम् युस्तअ्-तबून (57)

व ल-क़द् ज़रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिन्, व ल-इन् जिअ्-तहुम् बिआयातिल् ल-यक़ूलन्नल्लज़ी-न क-फ़रू इन् अन्तुम् इल्ला मुब्तिलून (58)

وَاِنْ كَانُوْا مِنْ قَبْلِ اَنْ يُّنَزَّلَ عَلَيْهِمْ
مِّنْ قَبْلِهٖ لَمُبْلِسِيْنَ ۝٤٩
فَانْظُرْ اِلٰٓى اٰثٰرِ رَحْمَتِ اللّٰهِ كَيْفَ يُحْيِ
الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ لَمُحْيِ
الْمَوْتٰى ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۝٥٠
وَلَئِنْ اَرْسَلْنَا رِيْحًا فَرَاَوْهُ مُصْفَرًّا لَّظَلُّوْا
مِنْۢ بَعْدِهٖ يَكْفُرُوْنَ ۝٥١
فَاِنَّكَ لَا تُسْمِعُ الْمَوْتٰى وَلَا تُسْمِعُ الصُّمَّ
الدُّعَآءَ اِذَا وَلَّوْا مُدْبِرِيْنَ ۝٥٢
وَمَآ اَنْتَ بِهٰدِ الْعُمْيِ عَنْ ضَلٰلَتِهِمْ ؕ
اِنْ تُسْمِعُ اِلَّا مَنْ يُّؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا
ع فَهُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝٥٣
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ ضُعْفٍ ثُمَّ
جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ ضُعْفٍ قُوَّةً ثُمَّ
جَعَلَ مِنْۢ بَعْدِ قُوَّةٍ ضُعْفًا وَّشَيْبَةً ؕ
يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْقَدِيْرُ ۝٥٤
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ يُقْسِمُ الْمُجْرِمُوْنَ ۙ
مَا لَبِثُوْا غَيْرَ سَاعَةٍ ؕ كَذٰلِكَ كَانُوْا يُؤْفَكُوْنَ ۝٥٥
وَقَالَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ وَالْاِيْمَانَ
لَقَدْ لَبِثْتُمْ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ اِلٰى يَوْمِ
الْبَعْثِ ؗ فَهٰذَا يَوْمُ الْبَعْثِ وَلٰكِنَّكُمْ
كُنْتُمْ لَا تَعْلَمُوْنَ ۝٥٦
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَعْذِرَتُهُمْ
وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝٥٧
وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِيْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ مِنْ
كُلِّ مَثَلٍ ؕ وَلَئِنْ جِئْتَهُمْ بِاٰيَةٍ لَّيَقُوْلَنَّ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا مُبْطِلُوْنَ ۝٥٨

59. इसी तरह अल्लाह उन लोगों के दिलों पर जो इल्म नहीं रखते ठप्पा लगा देता है।

60. पस सब्र करो; यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है; और यक़ीन न रखने वाले तुम्हें हरगिज़ हलका न पाएं।

सूरह लुक़मान मक्की

(आयतें 34, रुकूआत 4)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-मीम।

2. ये किताबे हकीम की आयतें हैं।

3. हिदायत और रहमत खूबकारों के लिए,

4. जो नमाज़ का एहतिमाम करते हैं, और ज़कात देते हैं, और आख़िरत पर वही यक़ीन रखते हैं,

5. वही अपने रब की हिदायत पर हैं और वही फ़लाह पाने वाले हैं।

6. लोगों में से कोई ऐसा भी है जो बातों की दिल फ़रेबी का ख़रीदार बनता है ताकि किसी इल्म के बग़ैर अल्लाह के रास्ते से भटका दे, और उनका मज़ाक़ उड़ाए; वही हैं जिनके लिए रुसवाकुन अज़ाब है।

7. जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं तो वह घमंड के साथ पीठ फेरकर चल देता है, गोया उसने उन्हें सुना ही नहीं, गोया उसके दोनों कान बहरे हैं; अच्छा तो उसे एक दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी दे दो।

8-9. अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल इख़्तियार किए, उनके लिए नेमत भरी जन्नतें हैं जिनमें वो हमेशा रहेंगे, यह अल्लाह का सच्चा वादा है; और वह ज़बरदस्त, बड़ी हिकमत वाला है।

10. उसने आसमानों को बग़ैर ऐसे सुतूनों के बनाया जो तुम्हें नज़र आएं, और उसने ज़मीन में पहाड़ डाल दिए कि वह तुम्हें लेकर लुढ़क न जाए और उसने उसमें हर क़िस्म के जानवर फैला दिए। और हमने ही आसमान से पानी उतारा, और उसमें हर क़िस्म

कज़ालि-क यत्बअुल्लाहु अ़ला कुलूबिल्लज़ी-न ला यअ़्लमून (59)

फ़स्बिर् इन्-न वअ़्दल्लाहि हक़्कुंव्-व ला यस्तख़िफ़्फ़न्नकल्लज़ी-न ला यूक़िनून (60) ●

31 सूरतु लुक़मान
(मक्की) इस सूराः में अ़रबी के 2217 अक्षर, 554 शब्द, 34 आयतें और 4 रुकू हैं।
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़-लाम्-मीम् (1)

तिल्-क आयातुल्-किताबिल्-हकीम (2)

हुदंव्-व रह़्म-तल् लिल्मुह़्सिनीन (3)

अल्लज़ी-न युक़ीमूनस्-सला-त व युअ्तूनज़्-ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् यूक़िनून (4)

उलाइ-क अ़ला हुदम्-मिर्रब्बिहिम् व उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (5)

व मिनन्नासि मंय्यश्तरी लह़्वल्-हदीसि लियुज़िल्-ल अ़न् सबीलिल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व यत्तख़ि-ज़हा हुज़ुवन्, उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन (6)

व इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना वल्ला मुस्तक्बिरन् क-अल्लम् यस्मअ़्हा क-अन्-न फ़ी उज़ुनैहि वक़रन् फ़-बश्शिर्हु बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (7)

इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन्-नअ़ीम (8)

ख़ालिदी-न फ़ीहा, वअ़्दल्लाहि हक़्क़न्, व हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (9)

ख़-लक़स्समावाति बिग़ैरि अ़-मदिन् तरौनहा व अल्क़ा फ़िल्अर्ज़ि रवासि-य अन् तमी-द बिकुम् व बस्-स फ़ीहा मिन् कुल्लि दाब्बतिन्, व अन्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि

كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوْبِ الَّذِيْنَ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٥٩
فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّلَا يَسْتَخِفَّنَّكَ
ع الَّذِيْنَ لَا يُوْقِنُوْنَ ۝٦٠

سُوْرَةُ لُقْمٰنَ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٣٤ رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
الٓمّٓ ۝١ تِلْكَ اٰيٰتُ الْكِتٰبِ الْحَكِيْمِ ۝٢
هُدًى وَّرَحْمَةً لِّلْمُحْسِنِيْنَ ۝٣
الَّذِيْنَ يُقِيْمُوْنَ الصَّلٰوةَ وَيُؤْتُوْنَ
الزَّكٰوةَ وَهُمْ بِالْاٰخِرَةِ هُمْ يُوْقِنُوْنَ ۝٤
اُولٰٓئِكَ عَلٰى هُدًى مِّنْ رَّبِّهِمْ وَاُولٰٓئِكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ۝٥
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْتَرِيْ لَهْوَ
الْحَدِيْثِ لِيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ ۖ وَّيَتَّخِذَهَا هُزُوًا ۗ اُولٰٓئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝٦
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا وَلّٰى مُسْتَكْبِرًا
كَاَنْ لَّمْ يَسْمَعْهَا كَاَنَّ فِيْٓ اُذُنَيْهِ وَقْرًا ۚ
فَبَشِّرْهُ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٧
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَهُمْ جَنّٰتُ النَّعِيْمِ ۝٨
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۗ وَعْدَ اللّٰهِ حَقًّا ۗ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٩
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ بِغَيْرِ عَمَدٍ تَرَوْنَهَا وَاَلْقٰى
فِي الْاَرْضِ رَوَاسِيَ اَنْ تَمِيْدَ بِكُمْ وَبَثَّ
فِيْهَا مِنْ كُلِّ دَآبَّةٍ ۗ وَاَنْزَلْنَا
مِنَ السَّمَآءِ مَآءً فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ

की फ़ैज़ बख़्श चीज़ें उगाईं।

11. यह तो अल्लाह की तख़्लीक़ है; अब ज़रा मुझे दिखाओ कि उसके सिवा जो दूसरे हैं उन्होंने क्या पैदा किया है! नहीं, बल्कि ज़ालिम एक सरीह गुमराही में पड़े हुए हैं।

12. यक़ीनन हमने लुक़मान को हिकमत अता की थी कि अल्लाह के शुक्रगुज़ार रहो। और जो कोई शुक्रगुज़ार हो तो वह अपने ही लिए शुक्र करता है, और जो नाशुकरी करे, तो अल्लाह तो बेनियाज़ तारीफ़ के लायक़ है।

13. और (याद करो) जब लुक़मान ने अपने बेटे से, उसे नसीहत करते हुए कहा, "ऐ मेरे बेटे, अल्लाह का शरीक न ठहराना; यक़ीनन शिर्क बहुत बड़ा ज़ुल्म है"।

14. और हमने इनसान को उसके अपने वालिदैन के मुआमले में ताकीद की है — उसकी मां ने निढाल पर निढाल होकर उसे पेट में रखा, और दो साल उसके दूध छूटने मे लगे — कि "मेरे शुक्रगुज़ार रहो, और अपने मां-बाप के भी, बिलआख़िर मेरी ही तरफ़ आना है।

15. लेकिन अगर वो तुझ पर दबाव डालें कि तू किसी को मेरा शरीक ठहराए जिसका तुझे कोई इल्म नहीं, तो उनकी बात न मानना और दुनिया में उसके साथ भले तरीक़े से रहना: मगर पैरवी उस शख़्स के रास्ते की करना जो मेरी तरफ़ मुतवज्जेह हो। फिर तुम सबको मेरी ही तरफ़ पलटना है, फिर मैं तुम्हें उससे आगाह कर दूंगा जो कुछ तुम करते रहे होगे"।

16. "ऐ मेरे बेटे, यह बात यक़ीनी है कि अगर वह राई के दाने के बराबर भी हो, फिर वह किसी चट्टान के दरमियान हो, या आसमानों में हो, या ज़मीन में, अल्लाह उसे ला हाज़िर कर देगा; बेशक अल्लाह बड़ा बारीक बीन, बाख़बर है।

17. ऐ मेरे बेटे, नमाज़ का एहतिमाम कर, और भलाई का हुक्म दे, और बुराई से रोक। और जो मुसीबत भी तुझ पर पड़े उसपर सब्र कर; बेशक ये बातें उन उमूर में से हैं जो ज़रूरी और हिम्मत के काम हैं।

18. और लोगों से अपना रुख़ न फेर, और न ज़मीन में इतराकर चल, यक़ीनन अल्लाह किसी ख़ुद पसन्द

ज़ौजिन् करीम (10)

हाज़ा ख़ल्क़ुल्लाहि फ़-अरूनी माज़ा ख़-लक़ल्लज़ी-न मिन् दूनिही, बलिज़्ज़ालिमू-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (11) ●

व ल-क़द् आतैना लुक़्मानल्-हिक्म-त अनिश्कुर् लिल्लाहि, व मंय्यश्कुर् फ़-इन्नमा यश्कुरु लिनफ़्सिही व मन् क-फ़-र फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् हमीद (12)

व इज़् क़ा-ल लुक़्मानु लिब्निही व हु-व यअ़िज़ुहू या-बुनय्-य ला तुश्रिक् बिल्लाहि, इन्नश्शिर्-क ल-ज़ुल्मुन् अ़ज़ीम (13)

व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि ह-मलत्हू उम्मुहू वह्नन् अ़ला वह्निंव्-व फ़िसालुहू फ़ी आ़मैनि अनिश्कुर् ली व लिवालिदै-क, इलय्यल्-मसीर ●(14)

व इन् जा-हदा-क अ़ला अन् तुश्रि-क बी मा लै-स ल-क बिही अ़िल्मुन् फ़ला तुतिअ़्हुमा व साहिब्हुमा फ़िद्दुन्या मअ़्रूफ़ंव्-वत्तबिअ़् सबी-ल मन् अना-ब इलय्-य सुम्-म इलय्-य मर्जिअ़ुकुम् फ़-उनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलून (15)

या बुनय्-य इन्नहा इन् तकु मिस्क़ा-ल हब्बतिम् मिन् ख़र्-दलिन फ़-तकुन् फ़ी सख़्रतिन् औ फ़िस्समावाति औ फ़िल्अर्ज़ि यअ्ति बिहल्लाहु, इन्नल्ला-ह लतीफ़ुन् ख़बीर (16)

या बुनय्-य अक़िमिस्सला-त वअ़्मुर् बिल्मअ़्रूफ़ि वन्-ह अ़निल्-मुन्करि वस्बिर् अ़ला मा असा-ब-क, इन्-न ज़ालि-क मिन् अ़ज़्मिल्-उमूर (17)

व ला तुसअ़्अ़िर् ख़द्द-क लिन्नासि व ला तम्शि फ़िल्अर्ज़ि म-रहन्, इन्नल्ला-ह ला युहिब्बु कुल्-ल

زَوْجٍ كَرِيْمٍ ۝١٠

هٰذَا خَلْقُ اللّٰهِ فَاَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقَ
الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ؕ بَلِ الظّٰلِمُوْنَ
فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝١١

وَلَقَدْ اٰتَيْنَا لُقْمٰنَ الْحِكْمَةَ اَنِ اشْكُرْ
لِلّٰهِ ؕ وَمَنْ يَّشْكُرْ فَاِنَّمَا يَشْكُرُ لِنَفْسِهٖ ۚ
وَمَنْ كَفَرَ فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝١٢

وَاِذْ قَالَ لُقْمٰنُ لِابْنِهٖ وَهُوَ يَعِظُهٗ
يٰبُنَيَّ لَا تُشْرِكْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّ الشِّرْكَ
لَظُلْمٌ عَظِيْمٌ ۝١٣

وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ ۚ حَمَلَتْهُ
اُمُّهٗ وَهْنًا عَلٰى وَهْنٍ وَّفِصٰلُهٗ فِيْ
عَامَيْنِ اَنِ اشْكُرْ لِيْ وَلِوَالِدَيْكَ ؕ اِلَيَّ
الْمَصِيْرُ ۝١٤

وَاِنْ جَاهَدٰكَ عَلٰۤى اَنْ تُشْرِكَ بِيْ
مَا لَيْسَ لَكَ بِهٖ عِلْمٌ ۙ فَلَا تُطِعْهُمَا
وَصَاحِبْهُمَا فِي الدُّنْيَا مَعْرُوْفًا ۫ وَّاتَّبِعْ
سَبِيْلَ مَنْ اَنَابَ اِلَيَّ ۚ ثُمَّ اِلَيَّ مَرْجِعُكُمْ
فَاُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٥

يٰبُنَيَّ اِنَّهَاۤ اِنْ تَكُ مِثْقَالَ حَبَّةٍ مِّنْ خَرْدَلٍ
فَتَكُنْ فِيْ صَخْرَةٍ اَوْ فِي السَّمٰوٰتِ اَوْ فِي الْاَرْضِ
يَاْتِ بِهَا اللّٰهُ ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَطِيْفٌ خَبِيْرٌ ۝١٦

يٰبُنَيَّ اَقِمِ الصَّلٰوةَ وَاْمُرْ بِالْمَعْرُوْفِ
وَانْهَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَاصْبِرْ عَلٰى مَاۤ
اَصَابَكَ ؕ اِنَّ ذٰلِكَ مِنْ عَزْمِ الْاُمُوْرِ ۝١٧

وَلَا تُصَعِّرْ خَدَّكَ لِلنَّاسِ وَلَا تَمْشِ فِي
الْاَرْضِ مَرَحًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَا يُحِبُّ كُلَّ

घमंड करने वाले को पसन्द नहीं करता।

19. और अपनी चाल में मियानारवी इख़्तियार कर, और अपनी आवाज़ को पस्त व नर्म रख, बेशक आवाज़ों में से बुरी गधों की आवाज़ होती है"।

20. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है सब को तुम्हारे काम में लगा रखा है, और उसने तुमपर अपनी खुली और छुपी नेमतें पूरी कर दी हैं? इसपर भी बाज़ लोग ऐसे हैं जो अल्लाह के बारे में बग़ैर किसी इल्म, और बग़ैर किसी हिदायत और बग़ैर किसी रौशन किताब के झगड़ते हैं।

21. और जब उनसे कहा जाता है कि "उस चीज़ की पैरवी करो जो अल्लाह ने नाज़िल की है"। तो वो कहते हैं, "नहीं, बल्कि हम तो उस चीज़ की पैरवी करेंगे जिसपर हमने अपने बाप-दादा को पाया है"। क्या अगर शैतान उनको भड़कती आग के अज़ाब की तरफ़ बुलाता रहा हो तब भी?

22. जो कोई नियाज़मन्दी के साथ अपना रुख़ अल्लाह की तरफ़ करे, और वह ख़ूबकार भी हो, उसने मज़बूत सहारा थाम लिया; और सारे मुआमलात का अन्जाम अल्लाह ही की तरफ़ है।

23. और जिस किसी ने कुफ़्र किया, तो उसका कुफ़्र तुम्हें ग़म में न डाले, हमारी ही तरफ़ उन्हें पलटकर आना है, फिर जो कुछ वो करते रहे होंगे उससे हम उन्हें आगाह करेंगे। बेशक अल्लाह सीनों की बात तक जानता है।

24. हम उन्हें थोड़ा मज़ा उड़ाने देंगे, फिर बेबस करके उन्हें एक सख़्त अज़ाब की तरफ़ खींच ले जाएंगे।

25. अगर तुम उनसे पूछो कि "आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया?" तो वो ज़रूर कहेंगे कि "अल्लाह ने"। कहो, "सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है"। बल्कि बात यह है कि उनमें से अकसर लोग जानते नहीं।

26. आसमानों और ज़मीन में जो कुछ है अल्लाह ही का है। बेशक अल्लाह ही बेनियाज़, बज़ाते ख़ुद महमूद है।

27. ज़मीन में जितने दरख़्त हैं अगर वो क़लम हो जाएं और समुंदर

मुख़्तालिन् फ़ख़ूर (18)

वक़्सिद् फ़ी मश्यि-क वग़्जुज़् मिन् सौति-क, इन्-न अन्करल्-अस्वाति लसौतुल्-हमीर (19) ●

अलम् तरौ अन्नल्ला-ह सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व अस्ब-ग़ अलैकुम् नि-अ़-महू ज़ाहि-रतंव-व बाति-नतन्, व मिनन्नासि मंय्युजादिलु फ़िल्लाहि बिग़ैरि अ़िल्मिंव्-व ला हुदंव्-व ला किताबिम् मुनीर (20)

व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तबिअू मा अन्ज़लल्लाहु क़ालू बल् नत्तबिअु मा वजद्ना अ़लैहि आबा-अना, अ-व लौ कानश्शैतानु यद्अूहुम् इला अ़ज़ाबिस्-सअ़ीर (21)

व मंय्युस्लिम् वज्हहू इलल्लाहि व हु-व मुह्सिनुन् फ़-क़दिस्तम्-स-क बिल्अुर्-वतिल्-वुस्क़ा, व इलल्लाहि आ़क़ि-बतुल्-उमूर (22)

व मन् क-फ़-र फ़ला यह्ज़ुन्-क कुफ़्रुहू, इलैना मर्जिअुहुम् फ़नुनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिज़ातिस्-सुदूर (23)

नुमत्तिअुहुम् क़लीलन् सुम्-म नज़्तर्रुहुम् इला अ़ज़ाबिन् ग़लीज़ (24)

व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्नल्लाहु, क़ुलिल्हम्दु लिल्लाहि, बल्, अक्सरुहुम् ला यअ्लमून (25)

लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद (26)

व लौ अन्-न मा फ़िल्अर्ज़ि मिन् श-ज-रतिन् अक़्लामुंव्-

مُخْتَالٍ فَخُوْرٍ ﴿١٨﴾
وَاقْصِدْ فِيْ مَشْيِكَ وَاغْضُضْ مِنْ
صَوْتِكَ ۚ اِنَّ اَنْكَرَ الْاَصْوَاتِ لَصَوْتُ
ع الْحَمِيْرِ ﴿١٩﴾
اَلَمْ تَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ سَخَّرَ لَكُمْ مَّا فِي
السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ وَاَسْبَغَ
عَلَيْكُمْ نِعَمَهٗ ظَاهِرَةً وَّبَاطِنَةً ۗ
وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يُّجَادِلُ فِي اللّٰهِ
بِغَيْرِ عِلْمٍ وَّلَا هُدًى وَّلَا كِتٰبٍ مُّنِيْرٍ ﴿٢٠﴾
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّبِعُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ
قَالُوْا بَلْ نَتَّبِعُ مَا وَجَدْنَا عَلَيْهِ
اٰبَآءَنَا ۚ اَوَلَوْ كَانَ الشَّيْطٰنُ يَدْعُوْهُمْ
اِلٰى عَذَابِ السَّعِيْرِ ﴿٢١﴾
وَمَنْ يُّسْلِمْ وَجْهَهٗٓ اِلَى اللّٰهِ وَهُوَ
مُحْسِنٌ فَقَدِ اسْتَمْسَكَ بِالْعُرْوَةِ
الْوُثْقٰى ۗ وَاِلَى اللّٰهِ عَاقِبَةُ الْاُمُوْرِ ﴿٢٢﴾
وَمَنْ كَفَرَ فَلَا يَحْزُنْكَ كُفْرُهٗ ۚ اِلَيْنَا
مَرْجِعُهُمْ فَنُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا ۚ اِنَّ اللّٰهَ
عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿٢٣﴾
نُمَتِّعُهُمْ قَلِيْلًا ثُمَّ نَضْطَرُّهُمْ اِلٰى
عَذَابٍ غَلِيْظٍ ﴿٢٤﴾
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ قُلِ الْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٥﴾
لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ اِنَّ اللّٰهَ
هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ﴿٢٦﴾
وَلَوْ اَنَّمَا فِي الْاَرْضِ مِنْ شَجَرَةٍ اَقْلَامٌ

उसकी सियाही हो जाए, सात समुंदर उसके बाद मज़ीद उसे पूरा करने को हों, तब भी अल्लाह की बातें ख़त्म न हो सकेंगी। बेशक अल्लाह ज़बरदस्त, बड़ी हिकमतवाला है।

28. तुम सबका पैदा करना और तुम सबका ज़िन्दा करके दोबारा उठाना तो बस एक नफ़्स का सा मुआमला है। अल्लाह तो सब कुछ सुनता, देखता है।

29. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है; उसने सूरज और चांद को मुसख़्ख़र किया? हर एक एक वक़्त-ए-मुक़र्रर तक चला जा रहा है और यह कि जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसकी पूरी ख़बर रखता है।

30. यह सब कुछ इस वजह से है कि अल्लाह ही हक़ है, और यह कि उसे छोड़कर जिनको वो पुकारते हैं वो बातिल हैं; और यह कि अल्लाह ही सबसे बरतर, बड़ा है।

31. क्या तुमने देखा नहीं कि कश्ती समुंदर में अल्लाह की नवाज़िश से चलती है ताकि वह तुम्हें अपनी कुछ निशानियां दिखाए? यक़ीनन इसमें हर एक सब्र करनेवाले, शुक्रगुज़ार के लिए निशानियां हैं।

32. और जब कोई मौज साएबानों की तरह उन्हें ढांक लेती है तो वो अल्लाह को उसी के लिए दीन व एतिक़ाद को ख़ालिस करते हुए पुकारते हैं; फिर जब वह उन्हें बचाकर ख़ुश्की तक पहुंचा देता है, तो उनमें से कुछ ही लोग मियाना रवी पर क़ायम रहते हैं। हमारी निशानियों का इनकार तो बस हर बदअहद नाशुकरा ही करता है।

33. ऐ लोगो! अपने रब का डर रखो, और उस दिन से डरो जब न कोई बाप अपनी औलाद की तरफ़ से बदला देगा और न कोई औलाद ही अपने बाप की तरफ़ से बदला देनेवाली होगी। यक़ीनन अल्लाह का वादा हक़ है, पस दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें हरगिज़ धोके में न डाले, और न अल्लाह के मुआमले में फ़रेबकार तुम्हें धोके में डाले।

34. बेशक उस साअत (घड़ी) का इल्म अल्लाह ही के पास है; वही मेंह

वल्बह्रु यमुद्दुहू मिम्बअ़्दिही सब्अ़तु अब्हुरिम्-मा नफ़िदत् कलिमातुल्लाहि, इन्नल्ला-ह अ़ज़ीज़ुन् हकीम (27)

मा ख़ल्क़ुकुम् व ला बअ़्सुकुम् इल्ला क-नफ़्सिंव्-वाहि-दतिन्, इन्नल्ला-ह समीअुम्-बसीर (28)

अलम् त-र अन्नल्ला-ह यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व सख़्ख़रश्शम्-स वल्क़-म-र कुल्लुंय्यज्री इला अ-जलिम् मुसम्मंव्-व अन्नल्ला-ह बिमा तअ़्मलू-न ख़बीर (29)

ज़ालि-क बिअन्नल्ला-ह हुवल्-हक़्क़ु व अन्-न मा यद्अू-न मिन् दूनिहिल्-बातिलु व अन्नल्ला-ह हुवल् अ़लिय्युल्-कबीर (30) ●

अलम् त-र अन्नल्-फ़ुल्-क तज्री फ़िल्बह्रि बिनिअ़्मतिल्लाहि लियुरि-यकुम् मिन् आयातिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (31)

व इज़ा ग़शि-यहुम् मौजुन् कज़्ज़ु-ललि द-अ़वुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न, फ़-लम्मा नज्जाहुम् इलल्बर्रि फ़मिन्हुम् मुक़्तसिदुन, व मा यज्हदु बिआयातिना इल्ला कुल्लु ख़त्तारिन् कफ़ूर (32)

या अय्युहन्नासुत्तक़ू रब्बकुम् वख़्शौ यौमल्-ला यज्ज़ी वालिदुन् अंव्व-लदिही व ला मौलूदुन हु-व जाज़िन् अंव्वालिदिही शैअन्, इन्-न वअ़्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़ला तग़ुर्रन्नकुमुल्-हयातुद्दुन्या, व ला यग़ुर्रन्न-कुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर (33)

इन्नल्ला-ह अ़िन्दहू अ़िल्मुस्सा-अ़ति व युनज़्ज़िलुल्-ग़ै-स व यअ़्लमु मा फ़िल्-अर्हामि, व मा

وَّالْبَحْرُ يَمُدُّهٗ مِنْۢ بَعْدِهٖ سَبْعَةُ
اَبْحُرٍ مَّا نَفِدَتْ كَلِمٰتُ اللّٰهِ ۭ اِنَّ
اللّٰهَ عَزِيْزٌ حَكِيْمٌ ۝٢٧
مَا خَلْقُكُمْ وَلَا بَعْثُكُمْ اِلَّا كَنَفْسٍ
وَّاحِدَةٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌۢ بَصِيْرٌ ۝٢٨
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ
وَيُوْلِجُ النَّهَارَ فِي الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ
وَالْقَمَرَ ۡ كُلٌّ يَّجْرِيْٓ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى
وَّاَنَّ اللّٰهَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٢٩
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ
مِنْ دُوْنِهِ الْبَاطِلُ ۙ وَاَنَّ اللّٰهَ هُوَ
ع الْعَلِيُّ الْكَبِيْرُ ۝٣٠
اَلَمْ تَرَ اَنَّ الْفُلْكَ تَجْرِيْ فِي الْبَحْرِ
بِنِعْمَتِ اللّٰهِ لِيُرِيَكُمْ مِّنْ اٰيٰتِهٖ ۭ اِنَّ فِيْ
ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ۝٣١
وَاِذَا غَشِيَهُمْ مَّوْجٌ كَالظُّلَلِ دَعَوُا اللّٰهَ
مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ ڬ فَلَمَّا نَجّٰىهُمْ اِلَى
الْبَرِّ فَمِنْهُمْ مُّقْتَصِدٌ ۭ وَمَا يَجْحَدُ بِاٰيٰتِنَآ
اِلَّا كُلُّ خَتَّارٍ كَفُوْرٍ ۝٣٢
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمْ وَاخْشَوْا
يَوْمًا لَّا يَجْزِيْ وَالِدٌ عَنْ وَّلَدِهٖ ۡ وَلَا
مَوْلُوْدٌ هُوَ جَازٍ عَنْ وَّالِدِهٖ شَيْـًٔا ۭ
اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا تَغُرَّنَّكُمُ
الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ بِاللّٰهِ
الْغَرُوْرُ ۝٣٣
اِنَّ اللّٰهَ عِنْدَهٗ عِلْمُ السَّاعَةِ ۚ وَيُنَزِّلُ
الْغَيْثَ ۚ وَيَعْلَمُ مَا فِي الْاَرْحَامِ ۭ وَمَا

बरसाता है; और जानता है जो कुछ रहमों में होता है। कोई शख़्स नही जानता कि कल वह क्या कमाई करेगा, और कोई शख़्स नहीं जानता कि किस सरज़मीन में वह मरेगा। बेशक अल्लाह जाननेवाला, बाख़बर है।

सूरह अस-सजदा मक्की

(आयतें 30, रुकूआत 3)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अलिफ़-लाम-मीम।

2. इस किताब की तनज़ील, इसमें ज़रा शुबह नहीं, सारे जहां के रब की तरफ़ से है।

3. क्या वो कहते हैं कि "इसने इसे खुद ही घड़ लिया है?" नही, बल्कि वह हक़ है तेरे रब की तरफ़ से ताकि तू उन लोगों को ख़बरदार करे जिनके पास तुझसे पहले कोई ख़बरदार करने वाला नही आया, ताकि वो हिदायत पाएं।

4. अल्लाह ही है जिसने आसमानों और ज़मीन को, और जो कुछ दोनों के दरमियान है, छह दिनों में पैदा किया, फिर अर्श पर जलवा गर हुआ। उससे हटकर न तुम्हारा कोई हिमायती है और न उसके मुक़ाबिल में कोई सिफ़ारिश करनेवाला; फिर क्या तुम होश में नहीं आओगे?

5. वह तदबीर-ए-कार करता है आसमान से ज़मीन तक — फिर वह ऊपर उसकी तरफ़ चढ़ता है — एक ऐसे दिन में जिस की मिक़दार तुम जो शुमार करते हो उसके लिहाज़ से एक हज़ार साल है।

6. वही है ग़ैब और मौजूद का जाननेवाला, ज़बरदस्त, निहायत रहम फ़रमाने वाला,

7. जिसने हर एक चीज़ जो उसने बनाई ख़ूब बनाई। और उसने इनसान की तख़लीक़ की इबतिदा गारे से की,

8. फिर उसकी नस्ल हक़ीर पानी जैसे सत से चलाई,

9. फिर उसके नोक-पलक संवारे, और उसमें अपनी रूह फूंकी। और तुम्हें कान और आंखें, और दिल दिए। तुम शुक्रगुज़ार थोड़े ही होते हो।

10. और उन्होंने कहा कि "जब हम ज़मीन में रल-मिल जाएंगे, तो फिर क्या हम सच-मुच नई ख़िलक़त

तद्री नफ़्सुम्-माज़ा तक्सिबु ग़दन्, व मा तद्री नफ़्सुम् बिअय्यि अर्ज़िन् तमूतु, इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् ख़बीर (34)●

32 सूरतुस्-सज्दति
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1577
अक्षर, 274 शब्द, 30 आयतें और 3
रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलिफ़्-लाम्-मीम् (1)
तन्ज़ीलुल्-किताबि ला रै-ब फ़ीहि मिर्रब्बिल्-आ़लमीन (2)
अम् यक़ूलूनफ़्तराहु बल् हुवल्-हक़्क़ु मिर्रब्बि-क लितुन्ज़ि-र क़ौमम्-मा अताहुम् मिन् नज़ीरिम्-मिन् क़ब्लि-क लअ़ल्लहुम् यह्तदून (3)
अल्लाहुल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अ़लल्-अ़र्शि, मा लकुम् मिन् दूनिही मिंव्वलिय्यिंव्-वला शफ़ीअ़िन्, अ-फ़ला त-तज़क्करून (4)
युदब्बिरुल्-अम्-र मिनस्समा-इ इलल्-अर्ज़ि सुम्-म यअ़्रुजु इलैहि फ़ी यौमिन् का-न मिक़्दारुहू अल्-फ़ स-नतिम्-मिम्मा तअ़ुद्दून (5)
ज़ालि-क आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहा-दतिल् अ़ज़ीज़ुर्-रहीम (6)
अल्लज़ी अह्स-न कुल्-ल शैइन् ख़-ल-क़हू व ब-द-अ ख़ल्क़ल्-इन्सानि मिन् तीन (7)
सुम्-म ज-अ़-ल नस्-लहु मिन् सुला-लतिम् मिम्मा-इम्-महीन (8)
सुम्-म सव्वाहु व न-फ़-ख़ फ़ीहि मिर्रूहिही व ज-अ़-ल लकुमुस्-सम्-अ़ वल्-अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त, क़लीलम्-मा तश्कुरून (9)
व क़ालू अ-इज़ा ज़लल्ना फ़िल्अर्ज़ि अ-इन्ना लफ़ी ख़ल्क़िन् जदीदिन्, बल् हुम् बिलिक़ा-इ

تَدْرِىْ نَفْسٌ مَّاذَا تَكْسِبُ غَدًا ۭ
وَمَا تَدْرِىْ نَفْسٌ بِاَيِّ اَرْضٍ تَمُوْتُ ۭ
ع اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌ خَبِيْرٌ (۳۴)

سُوْرَةُ السَّجْدَةِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ۳۰ رُكُوْعَاتُهَا ۳

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

الٓمّٓ (۱) تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ لَا رَيْبَ فِيْهِ
مِنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ (۲)
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۚ بَلْ هُوَ الْحَقُّ مِنْ
رَّبِّكَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اَتٰىهُمْ مِّنْ نَّذِيْرٍ
مِّنْ قَبْلِكَ لَعَلَّهُمْ يَهْتَدُوْنَ (۳)
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
وَمَا بَيْنَهُمَا فِيْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى
عَلَى الْعَرْشِ ۭ مَا لَكُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ مِنْ وَّلِيٍّ
وَّلَا شَفِيْعٍ ۭ اَفَلَا تَتَذَكَّرُوْنَ (۴)
يُدَبِّرُ الْاَمْرَ مِنَ السَّمَاۗءِ اِلَى الْاَرْضِ
ثُمَّ يَعْرُجُ اِلَيْهِ فِيْ يَوْمٍ كَانَ مِقْدَارُهٗٓ
اَلْفَ سَنَةٍ مِّمَّا تَعُدُّوْنَ (۵)
ذٰلِكَ عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ
الرَّحِيْمُ (۶)
الَّذِيْٓ اَحْسَنَ كُلَّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ وَبَدَاَ
خَلْقَ الْاِنْسَانِ مِنْ طِيْنٍ (۷)
ثُمَّ جَعَلَ نَسْلَهٗ مِنْ سُلٰلَةٍ مِّنْ مَّاۗءٍ مَّهِيْنٍ (۸)
ثُمَّ سَوّٰىهُ وَنَفَخَ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِهٖ وَجَعَلَ
لَكُمُ السَّمْعَ وَالْاَبْصَارَ وَالْاَفْـِٕدَةَ ۭ قَلِيْلًا
مَّا تَشْكُرُوْنَ (۹)
وَقَالُوْٓا ءَاِذَا ضَلَلْنَا فِي الْاَرْضِ ءَاِنَّا
لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ڛ بَلْ هُمْ بِلِقَاۗئِ

मेंहोंगे?" नहीं, बल्कि ये अपने रब की मुलाक़ात ही के मुनकिर हैं।

11. कहोः "मौत का फ़रिश्ता जो तुमपर मुक़र्रर है वह तुम्हें पूरे तौरपर अपने क़ब्ज़े में ले लेता है, फिर तुम अपने रब की तरफ़ वापस होगे"।

12. और कहीं तुम देखते जब वो मुजरिम अपने रब के सामने अपने सर झुकाए होंगे कि "हमारे रब हमने देख लिया और सुन लिया; अब हमें वापस भेज दे कि हम नेक काम करें, बेशक अब हमको यक़ीन आ गया"।

13. अगर हम चाहते तो हर शख़्स को उसकी हिदायत दे देते; मगर मेरी तरफ़ से बात साबित हो चुकी है कि "जहन्नम को जिन्नों और इनसानों सबसे भरकर रहूंगा"।

14. पस अब चखो मज़ा उसका कि तुमने अपने इस दिन की मुलाक़ात को भुलाए रखा! तो हमने भी तुम्हें भुला दिया। चखो हमेशगी के अज़ाब का मज़ा, उसके बदले में जो तुम करते रहे हो।

15. हमारी आयतों पर तो बस वही लोग ईमान लाते हैं, जिन्हें उनके ज़रिए से जब याददिहानी कराई जाती है तो वो सजदे में गिर पड़ते हैं आर अपने रब की हम्द की तसबीह करते हैं, और तकब्बुर नहीं करते।

16. उनके पहलू बिस्तरों से अलग रहते हैं कि वो अपने रब को डर और उम्मीद से पुकारते हैं, और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से ख़र्च करते हैं।

17. फिर कोई नफ़्स उसे नहीं जानता आंखों की जो ठंडक उनके लिए पोशीदा रखी गई है, उन आमाल के बदले में जो वो करते थे।

18. भला जो शख़्स मोमिन हो वह उस शख़्स जैसा हो सकता है जो बद अमल हो? वो बराबर नहीं हो सकते।

19. रहे वो लोग जो ईमान लाए, और नेक आमाल इख़्तियार किए, तो उनके लिए जो कुछ आमाल वो करते रहे उसके बदले में पहली ज़ियाफ़त के तौरपर रिहाइशी बाग़ात हैं।

20. रहे वो लोग जिन्होंने नाफ़रमानी की, उनका ठिकाना आग है; जब कभी भी वो चाहेंगे कि उससे निकल जाएं, उसी में लौटा दिए जाएंगे, और उनसे कहा जाएगा, "चखो उस

रब्बिहिम् काफ़िरून (10)

क़ुल् य-तवफ़्फ़ाकुम् म-लकुल्-मौतिल्लज़ी वुक्कि-ल बिकुम् सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्जअून (11)●

व लौ तरा इज़िल्-मुज्रिमू-न नाकिसू रुऊसिहिम् अिन्-द रब्बिहिम्, रब्बना अब्सर्ना व समिअ्ना फ़र्जिअ्ना नअ्मल् सालिहन् इन्ना मूक़िनून (12)

व लौ शिअ्ना लआतैना कुल्-ल नफ़्सिन् हुदाहा व लाकिन् हक़्क़ल्-क़ौलु मिन्नी ल-अम्-लअन्-न जहन्न-म मिनल्-जिन्नति वन्नासि अज्मअीन (13)

फ़ज़ूक़ू बिमा नसीतुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा इन्ना नसीनाकुम् व ज़ूक़ू अज़ाबल्-ख़ुल्दि बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (14)

इन्नमा युअ्मिनु बिआयातिनल्लज़ी-न इज़ा ज़ुक्किरू बिहा ख़र्रू सुज्जदंव्-व सब्बहू बिहम्दि रब्बिहिम् व हुम् ला यस्तक्बिरून ● (15)

त-तजाफ़ा जुनूबुहुम् अनिल्-मज़ाजिअि यद्अू-न रब्बहुम् ख़ौफ़ंव्-व त-मअंव्-व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (16)

फ़ला तअ्लमु नफ़्सुम्-मा उख़्फ़ि-य लहुम् मिन् क़ुर्रति अअ्युनिन्, जज़ा-अम् बिमा कानू यअ्मलून (17)

अ-फ़-मन् का-न मुअ्मिनन् कमन् का-न फ़ासिक़न्, ला यस्तवून (18)

अम्मल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् जन्नातुल्-मअ्वा नुज़ुलम् बिमा कानू यअ्मलून (19)

व अम्मल्लज़ी-न फ़-सक़ू फ़-मअ्वाहुमुन्नारु, कुल्-लमा अरादू अंय्यख़्रुजू मिन्हा उअ़ीदू फ़ीहा व क़ी-ल लहुम् ज़ूक़ू अज़ाबन्नारिल्लज़ी

رَبِّهِمْ كٰفِرُوْنَ ۝۱۰

قُلْ يَتَوَفّٰىكُمْ مَّلَكُ الْمَوْتِ الَّذِيْ وُكِّلَ
بِكُمْ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ تُرْجَعُوْنَ ۝۱۱

وَلَوْ تَرٰۤى اِذِ الْمُجْرِمُوْنَ نَاكِسُوْا رُءُوْسِهِمْ
عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ رَبَّنَآ اَبْصَرْنَا وَسَمِعْنَا
فَارْجِعْنَا نَعْمَلْ صَالِحًا اِنَّا مُوْقِنُوْنَ ۝۱۲

وَلَوْ شِئْنَا لَاٰتَيْنَا كُلَّ نَفْسٍ هُدٰىهَا
وَلٰكِنْ حَقَّ الْقَوْلُ مِنِّيْ لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ
مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ اَجْمَعِيْنَ ۝۱۳

فَذُوْقُوْا بِمَا نَسِيْتُمْ لِقَاۗءَ يَوْمِكُمْ هٰذَا ۚ
اِنَّا نَسِيْنٰكُمْ وَذُوْقُوْا عَذَابَ الْخُلْدِ
بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝۱۴

اِنَّمَا يُؤْمِنُ بِاٰيٰتِنَا الَّذِيْنَ اِذَا ذُكِّرُوْا بِهَا
خَرُّوْا سُجَّدًا وَّسَبَّحُوْا بِحَمْدِ رَبِّهِمْ
وَهُمْ لَا يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝۱۵

تَتَجَافٰى جُنُوْبُهُمْ عَنِ الْمَضَاجِعِ
يَدْعُوْنَ رَبَّهُمْ خَوْفًا وَّطَمَعًا ۡ وَّمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ
يُنْفِقُوْنَ ۝۱۶

فَلَا تَعْلَمُ نَفْسٌ مَّآ اُخْفِيَ لَهُمْ مِّنْ قُرَّةِ
اَعْيُنٍ ۚ جَزَاۗءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۱۷

اَفَمَنْ كَانَ مُؤْمِنًا كَمَنْ كَانَ فَاسِقًا ۭ
لَا يَسْتَوٗنَ ۝۱۸

اَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فَلَهُمْ
جَنّٰتُ الْمَاْوٰى ۡ نُزُلًۢا بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝۱۹

وَاَمَّا الَّذِيْنَ فَسَقُوْا فَمَاْوٰىهُمُ النَّارُ ۭ كُلَّمَآ
اَرَادُوْٓا اَنْ يَّخْرُجُوْا مِنْهَآ اُعِيْدُوْا فِيْهَا
وَقِيْلَ لَهُمْ ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّذِيْ

كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿۲۰﴾
وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنَ الْعَذَابِ الْاَدْنٰى دُوْنَ
الْعَذَابِ الْاَكْبَرِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ﴿۲۱﴾
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ ذُكِّرَ بِاٰيٰتِ رَبِّهٖ
ثُمَّ اَعْرَضَ عَنْهَا ؕ اِنَّا مِنَ الْمُجْرِمِيْنَ
مُنْتَقِمُوْنَ ﴿۲۲﴾
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْكِتٰبَ فَلَا تَكُنْ
فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآئِهٖ وَجَعَلْنٰهُ هُدًى
لِّبَنِيْٓ اِسْرَآءِيْلَ ﴿۲۳﴾
وَجَعَلْنَا مِنْهُمْ اَئِمَّةً يَّهْدُوْنَ بِاَمْرِنَا
لَمَّا صَبَرُوْا ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا
يُوْقِنُوْنَ ﴿۲۴﴾
اِنَّ رَبَّكَ هُوَ يَفْصِلُ بَيْنَهُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ
فِيْمَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ﴿۲۵﴾
اَوَلَمْ يَهْدِ لَهُمْ كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ
قَبْلِهِمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ يَمْشُوْنَ فِيْ
مَسٰكِنِهِمْ ؕ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ ؕ
اَفَلَا يَسْمَعُوْنَ ﴿۲۶﴾
اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّا نَسُوْقُ الْمَآءَ اِلَى الْاَرْضِ
الْجُرُزِ فَنُخْرِجُ بِهٖ زَرْعًا تَاْكُلُ مِنْهُ
اَنْعَامُهُمْ وَاَنْفُسُهُمْ ؕ اَفَلَا يُبْصِرُوْنَ ﴿۲۷﴾
وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْفَتْحُ اِنْ كُنْتُمْ
صٰدِقِيْنَ ﴿۲۸﴾
قُلْ يَوْمَ الْفَتْحِ لَا يَنْفَعُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا
اِيْمَانُهُمْ وَلَا هُمْ يُنْظَرُوْنَ ﴿۲۹﴾
فَاَعْرِضْ عَنْهُمْ وَانْتَظِرْ اِنَّهُمْ
مُّنْتَظِرُوْنَ ﴿۳۰﴾

कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (20)

व ल-नुज़ीक़न्नहुम् मिनल् अ़ज़ाबिल्-अद्ना दूनल् अ़ज़ाबिल्-अक्बरि लअ़ल्लहुम् यर्जिअ़ून (21)

व मन् अज़्लमु मिम्मन् ज़ुक्कि-र बिआयाति रब्बिही सुम्-म अअ़्र-ज़ अ़न्हा, इन्ना मिनल् मुज्रिमी-न मुन्तक़िमून (22) ●

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब फ़ला तकुन् फ़ी मिर्यतिम् मिल्लिक़ा-इही व जअ़ल्नाहु हुदल् लि-बनी इस्राईल (23)

व जअ़ल्ना मिन्हुम् अ-इम्मतंय्-यह्दू-न बिअम्रिना लम्मा स-बरू, व कानू बिआयातिना यूक़िनून (24)

इन्-न रब्ब-क हु-व यफ़्सिलु बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (25)

अ-व लम् यह्दि लहुम् कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्-क़ुरूनि यम्शू-न फ़ी मसाकिनिहिम्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिन्, अ-फ़ला यस्मअ़ून (26)

अ-व लम् यरौ अन्ना नसूक़ुल्-मा-अ इलल्-अर्ज़िल्-जुरुज़ि फ़नुख़्रिजु बिही ज़र्अ़न् तअ्कुलु मिन्हु अन्आमुहुम् व अन्फ़ुसुहुम्, अ-फ़ला युब्सिरून ●(27)

व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-फ़त्हु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (28)

क़ुल् यौमल्-फ़त्हि ला यन्फ़अ़ुल्लज़ी-न क-फ़रू ईमानुहुम् व ला हुम् युन्ज़रून (29)

फ़-अअ़्रिज़् अ़न्हुम् वन्तज़िर् इन्नहुम् मुन्तज़िरून (30) ●

आग के अज़ाब का मज़ा, जिसे तुम झुटलाते थे"।

21. हम बड़े अज़ाब से पहले उन्हें कमतर दर्जे के अज़ाब का मज़ा चखाएंगे; इस तवक़्क़ो पर कि वो रुजू करें।

22. और उस शख़्स से बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जिसे उसके रब की आयतों के ज़रिए से याददिहानी कराई जाए, फिर वह उनसे मुंह फेर ले? यक़ीनन हम मुजरिमों से इंतिक़ाम लेकर रहेंगे।

23. हमने मूसा को किताब दी थी; — लिहाज़ा उसके मिलने में तुम किसी शक में न रहना; — और हमने उसे बनी इसराईल के लिए हिदायत बनाया था।

24. और जब उन्होंने साबित क़दमी दिखाई और वो हमारी आयतों पर यक़ीन रखते थे तो हमने उनमें से इमाम बनाए जो हमारे हुक्म से रहनुमाई करते थे।

25. यक़ीनन तेरा रब ही क़ियामत के दिन उनके दरमियान उन बातों का फ़ैसला करेगा जिनमें वो इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं।

26. क्या उनपर मुनकशिफ़ नहीं हुआ कि उनसे पहले कितनी ही नसलों को हम हलाक कर चुके हैं जिनके रहने-बसने की जगहों में वो चलते-फिरते हैं? बेशक इसमें बहुत-सी निशानियां हैं, फिर क्या वो सुनते नहीं?

27. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हम चटयल सूखी ज़मीन की तरफ़ पानी चलाते हैं फिर उससे खेती उगाते हैं जिससे उनके चौपाए भी खाते हैं और वो ख़ुद भी? तो क्या उन्हें सूझता नहीं?

28. वो कहते हैं कि "यह फ़ैसला कब होगा, अगर तुम सच्चे हो?"

29. कह दो "कुफ़्र करने वालों को फ़ैसला के दिन उनका ईमान नफ़ा न देगा, और न उन्हें मुहलत ही मिलेगी"।

30. अच्छा उन्हें उनके हाल पर छोड़ो, और इंतिज़ार करो; वो भी मुंतज़िर हैं।

सूरह अल–अहज़ाब मदनी
(आयतें 73, रुकूआत 9)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ऐ नबी, अल्लाह का डर रखो, और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की इताअत न करना। यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।

2. और पैरवी करो उस चीज़ की जिसकी वही तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हें की जा रही है। यक़ीनन अल्लाह उससे बाख़बर है जो तुम करते हो।

3. और अल्लाह पर भरोसा रखो; और कारसाज़ी के लिए अल्लाह काफ़ी है।

4. अल्लाह ने किसी शख़्स के अन्दर दो दिल नहीं रखे; और न उसने तुम्हारी उन बीवियों को जिनसे तुम ज़िहार कर बैठते हो हक़ीक़त में तुम्हारी माएं बनाया, और न उसने तुम्हारे मुंह बोले बेटों को तुम्हारे हक़ीक़ी बेटे बनाए। यह तो तुम्हारे अपने मुंह की बातें हैं, मगर अल्लाह हक़ बात कहता है, और वही राह दिखाता है।

5. उन्हें उनके बापों की निसबत से पुकारो; यही अल्लाह के नज़दीक ज़्यादा मुन्सिफ़ाना बात है। और अगर उनके बापों के मुतअल्लिक़ तुम्हें इल्म न हो, तो वो तुम्हारे दीनी भाई, और तुम्हारे शरीके क़बीला की हैसियत रखते हैं। इस सिलसिले में तुमसे जो ग़लती हुई हो उसमें तुम पर कोई गुनाह नहीं, अलबत्ता जिसका अज़्म व इरादा तुम्हारे दिलों ने कर लिया उसकी बात दीगर है। अल्लाह तो बहुत बख़्शनेवाला, निहायत मेहरबान है।

6. नबी अहले ईमान पर खुद उनकी अपनी जानों से बढ़कर हक़ रखता है; और उसकी बीवियां उनकी माएं हैं। और अल्लाह के क़ानून में आम मोमिनीन व मुहाजिरीन की बनिस्बत रिश्तेदार आपस में एक-दूसरे से ज़्यादा क़रीब हैं; यह बात दीगर है कि तुम अपने साथियों के साथ कोई भलाई करो; यह चीज़ किताब में लिख दिया गया है।

7. और याद करो जब हमने नबियों से उनका अहद व पैमान लिया, तुमसे भी और नूह और इबराहीम और मूसा और ईसा इब्ने मरयम से भी; उन सबसे हमने पुख़्ता अहद लिया,

33 सूरतुल्–अह्ज़ाबि
(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 5909 अक्षर, 1210 शब्द 73 आयतें और 9 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहन्नबिय्युत्–तक़िल्ला–ह व ला तुतिअ़िल्–काफ़िरी–न वल्मुनाफ़िक़ी–न, इन्नल्ला–ह का–न अ़लीमन् हकीमा (1)

वत्तबिअ् मा यूहा इलै–क मिर्रब्बि–क, इन्नल्ला–ह का–न बिमा तअ्मलू–न ख़बीरा (2)

व तवक्कल् अ़लल्लाहि, व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (3)

मा ज–अ़लल्लाहु लि–रजुलिम् मिन् क़ल्बैनि फ़ी जौफ़िही व मा ज–अ़–ल अज़्वा–जकुमुल्लाई तुज़ाहिरू–न मिन्हुन्–न उम्महातिकुम् व मा ज–अ़–ल अद्अ़िया–अकुम् अब्ना–अकुम्, ज़ालिकुम् क़ौलुकुम् बि–अफ़्वाहिकुम्, वल्लाहु यक़ूलुल्–हक़्–क़ व हु–व यह्दिस्सबील (4)

उद्अूहुम् लिआबाइहिम् हु–व अक़्सतु अ़िन्दल्लाहि फ़–इल्लम् तअ्लमू आबा–अहुम् फ़–इख़्वानुकुम् फ़िद्दीनि व मवालीकुम्, व लै–स अ़लैकुम् जुनाहुन् फ़ीमा अख़्तअ्तुम् बिही व लाकिम्–मा तअ़म्म–दत् क़ुलूबुकुम्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्–रहीमा (5)

अन्नबिय्यु औला बिल्मुअ्मिनी–न मिन् अन्फ़ुसिहिम् व अज़्वाजुहू उम्महातुहुम्, व उलुल्–अर्हामि बअ्ज़ुहुम् औला बि–बअ्ज़िन् फ़ी किताबिल्लाहि मिनल्–मुअ्मिनी–न वल्मुहाजिरी–न इल्ला अन् तफ़्अ़लू इला औलिया–इकुम् मअ्रूफ़न्, का–न ज़ालि–क फ़िल्–किताबि मस्तूरा (6)

व इज़् अख़ज़्ना मिनन्नबिय्यी–न मीसा–क़हुम् व मिन्–क व मिन् नूहिंव्–व इब्राही–म व मूसा व ईसब्नि–मर्यम व अख़ज़्ना मिन्हुम् मीसाक़न् ग़लीज़ा (7)

سُوْرَةُ الْاَحْزَابِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ۷۳ رُكُوْعَاتُهَا ۹

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اتَّقِ اللّٰهَ وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ۙ۝۱ وَّاتَّبِعْ مَا يُوْحٰۤى اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ۙ۝۲ وَّتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ۝۳

مَا جَعَلَ اللّٰهُ لِرَجُلٍ مِّنْ قَلْبَيْنِ فِيْ جَوْفِهٖ ۚ وَمَا جَعَلَ اَزْوَاجَكُمُ الّٰٓـِٔيْ تُظٰهِرُوْنَ مِنْهُنَّ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ وَمَا جَعَلَ اَدْعِيَآءَكُمْ اَبْنَآءَكُمْ ؕ ذٰلِكُمْ قَوْلُكُمْ بِاَفْوَاهِكُمْ ؕ وَاللّٰهُ يَقُوْلُ الْحَقَّ وَهُوَ يَهْدِى السَّبِيْلَ ۝۴

اُدْعُوْهُمْ لِاٰبَآئِهِمْ هُوَ اَقْسَطُ عِنْدَ اللّٰهِ ۚ فَاِنْ لَّمْ تَعْلَمُوْۤا اٰبَآءَهُمْ فَاِخْوَانُكُمْ فِى الدِّيْنِ وَمَوَالِيْكُمْ ؕ وَلَيْسَ عَلَيْكُمْ جُنَاحٌ فِيْمَاۤ اَخْطَاْتُمْ بِهٖ ۙ وَلٰكِنْ مَّا تَعَمَّدَتْ قُلُوْبُكُمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ۝۵ اَلنَّبِيُّ اَوْلٰى بِالْمُؤْمِنِيْنَ مِنْ اَنْفُسِهِمْ وَاَزْوَاجُهٗۤ اُمَّهٰتُهُمْ ؕ وَاُولُوا الْاَرْحَامِ بَعْضُهُمْ اَوْلٰى بِبَعْضٍ فِيْ كِتٰبِ اللّٰهِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُهٰجِرِيْنَ اِلَّاۤ اَنْ تَفْعَلُوْۤا اِلٰٓى اَوْلِيٰٓئِكُمْ مَّعْرُوْفًا ؕ كَانَ ذٰلِكَ فِى الْكِتٰبِ مَسْطُوْرًا ۝۶ وَاِذْ اَخَذْنَا مِنَ النَّبِيّٖنَ مِيْثَاقَهُمْ وَمِنْكَ وَمِنْ نُّوْحٍ وَّاِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى وَعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ ۪ وَاَخَذْنَا مِنْهُمْ مِّيْثَاقًا غَلِيْظًا ۙ۝۷

8. ताकि वह सच्चों से उनकी सच्चाई के बारे में सवाल करे; और काफ़िरों के लिए तो उसने दर्दनाक अज़ाब तैयार कर रखा है।

9. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह की उस इनायत को याद करो जो तुम पर हुई, जबकि फ़ौजें तुम पर चढ़ आईं, तो हमने उनपर एक हवा भेज दी, और ऐसी फौजें भी जिनको तुमने देखा नहीं; और अल्लाह वह सब कुछ देखता रहता है जो तुम करते हो।

10. (याद करो) जबकि वो तुम्हारे ऊपर से और तुम्हारे नीचे से भी तुमपर चढ़ आए, और जबकि निगाहें कज हो गईं और दिल हलकूम तक पहुंच गए, और तुम अल्लाह के बारे में ख़यालात बांध रहे थे;

11. उस वक़्त अहले ईमान आज़माए गए, और बिल्कुल हिला दिए गए।

12. और जबकि मुनाफ़िक़ीन और वो लोग जिनके दिलों में रोग है, कहने लगे, "अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे जो वादा किया था वह महज़ फ़रेब था"।

13. और जबकि उनमें से एक गिरोह ने कहा कि "ऐ यसरिब वालो! तुम्हारे लिए ठहरने का कोई मक़ाम नहीं, लिहाज़ा पलट चलो!" और उनका एक गिरोह नबी से यह कहकर इजाज़त तलब कर रहा था कि "हमारे घर ग़ैर महफ़ूज़ हैं;" हालांकि वो ग़ैर महफ़ूज़ न थे; वो तो बस भागना चाहते थे।

14. और अगर उसके अतराफ़ से उनपर हमला हो जाता, फिर उस वक़्त उनसे फ़ितने का मुतालबा किया जाता, तो वो उसे पूरा कर देते, और इसमें तअम्मुल व तवक़्क़ुफ़ थोड़ा ही करते।

15. हालांकि वो इससे पहले अल्लाह से अहद कर चुके थे कि वो पीठ न फेरेंगे; और अल्लाह से किए हुए अहद के बारे में पुरसिश तो होनी ही।

16. कह दो: "अगर तुम मौत और क़त्ल से भागो भी, तो यह भागना तुम्हें हरगिज़ फ़ायदा न पहुंचा सकेगा; और तब भी तुम मज़ा थोड़ा ही हासिल कर पाओगे"।

17. कहो: "कौन है जो तुम्हें अल्लाह से बचा सकता है, अगर वह तुम्हें कोई नुक़सान पहुंचाना चाहे, या वह तुम्हारे साथ रहमत का इरादा करे

लियस्-अलस्सादिक़ी-न अ़न् सिद्क़िहिम् व अ-अ़द्-द लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबन् अलीमा (8)●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरू निअ्-मतल्लाहि अ़लैकुम् इज़् जाअत्कुम् जुनूदुन् फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहंव्-व जुनूदल्-लम् तरौहा, व कानल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीरा (9)

इज़् जाऊकुम् मिन् फ़ौक़िकुम् व मिन् अस्-फ़-ल मिन्कुम् व इज़् ज़ा-ग़तिल्-अब्सारु व ब-ल-ग़तिल् क़ुलूबुल्-हनाजि-र व तज़ुन्नू-न बिल्लाहिज़्ज़ुनूना (10)

हुनालिकब्-तुलियल्-मुअ्मिनू-न व ज़ुल्ज़िलू ज़िल्ज़ालन् शदीदा (11)

व इज़् यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुम् मा व-अ़-दनल्लाहु व रसूलुहू इल्ला ग़ुरूरा (12)

व इज़् क़ालत्ताइ-फ़तुम् मिन्हुम् या अह्-ल यस्रि-ब ला मुक़ा-म लकुम् फ़र्जिअू व यस्तअ्ज़िनु फ़रीक़ुम् मिन्हुमुन्नबिय्-य यक़ूलू-न इन्-न बुयूतना औ़-रतुन्, व मा हि-य बिऔ़-रतिन्, इंय्युरीदू-न इल्ला फ़िरारा (13)

व लौ दुख़िलत् अ़लैहिम् मिन् अक़्तारिहा सुम्-म सुइलुल्-फ़ित्-न-त लआतौहा व मा तलब्बसू बिहा इल्ला यसीरा (14)

व ल-क़द् कानू आ़-हदुल्ला-ह मिन् क़ब्लु ला युवल्लूनल्-अद्बा-र, व का-न अ़ह्दुल्लाहि मस्ऊला (15)

क़ुल् लंय्यन्फ़-अ़कुमुल्-फ़िरारु इन् फ़रर्तुम् मिनल्-मौति अविल्-क़त्लि व इज़ल् ला तुमत्तअू-न इल्ला क़लीला (16)

क़ुल् मन् ज़ल्लज़ी यअ्सिमुकुम् मिनल्लाहि इन्

لِّيَسۡـَٔلَ الصّٰدِقِيۡنَ عَنۡ صِدۡقِهِمۡ ۚ
ع وَاَعَدَّ لِلۡكٰفِرِيۡنَ عَذَابًا اَلِيۡمًا ۝٨
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوا اذۡكُرُوۡا نِعۡمَةَ اللّٰهِ
عَلَيۡكُمۡ اِذۡ جَآءَتۡكُمۡ جُنُوۡدٌ فَاَرۡسَلۡنَا
عَلَيۡهِمۡ رِيۡحًا وَّجُنُوۡدًا لَّمۡ تَرَوۡهَا ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ بَصِيۡرًا ۝٩
اِذۡ جَآءُوۡكُمۡ مِّنۡ فَوۡقِكُمۡ وَمِنۡ اَسۡفَلَ
مِنۡكُمۡ وَاِذۡ زَاغَتِ الۡاَبۡصَارُ وَبَلَغَتِ
الۡقُلُوۡبُ الۡحَـنَاجِرَ وَتَظُنُّوۡنَ بِاللّٰهِ الظُّنُوۡنَا ۝١٠
هُنَالِكَ ابۡتُلِىَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ وَزُلۡزِلُوۡا
زِلۡزَالًا شَدِيۡدًا ۝١١
وَاِذۡ يَقُوۡلُ الۡمُنٰفِقُوۡنَ وَالَّذِيۡنَ فِىۡ
قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ مَّا وَعَدَنَا اللّٰهُ
وَرَسُوۡلُهٗۤ اِلَّا غُرُوۡرًا ۝١٢
وَاِذۡ قَالَتۡ طَّآئِفَةٌ مِّنۡهُمۡ يٰۤاَهۡلَ
يَثۡرِبَ لَا مُقَامَ لَكُمۡ فَارۡجِعُوۡا ۚ وَيَسۡتَاۡذِنُ
مع فَرِيۡقٌ مِّنۡهُمُ النَّبِىَّ يَقُوۡلُوۡنَ اِنَّ بُيُوۡتَنَا عَوۡرَةٌ ۛؕ
وَمَا هِىَ بِعَوۡرَةٍ ۛۚ اِنۡ يُّرِيۡدُوۡنَ اِلَّا فِرَارًا ۝١٣
وَلَوۡ دُخِلَتۡ عَلَيۡهِمۡ مِّنۡ اَقۡطَارِهَا ثُمَّ
سُئِلُوا الۡفِتۡنَةَ لَاٰتَوۡهَا وَمَا تَلَبَّثُوۡا
بِهَاۤ اِلَّا يَسِيۡرًا ۝١٤
وَلَقَدۡ كَانُوۡا عَاهَدُوا اللّٰهَ مِنۡ قَبۡلُ لَا يُوَلُّوۡنَ
الۡاَدۡبَارَ ؕ وَكَانَ عَهۡدُ اللّٰهِ مَسۡـُٔوۡلًا ۝١٥
قُلۡ لَّنۡ يَّنۡفَعَكُمُ الۡفِرَارُ اِنۡ فَرَرۡتُمۡ
مِّنَ الۡمَوۡتِ اَوِ الۡقَتۡلِ وَاِذًا لَّا تُمَتَّعُوۡنَ
اِلَّا قَلِيۡلًا ۝١٦
قُلۡ مَنۡ ذَا الَّذِىۡ يَعۡصِمُكُمۡ مِّنَ اللّٰهِ اِنۡ

(तो कौन है जो उसकी रहमत को रोक सके) ? वो अपने और ख़ुदा के दरमियान हायल होने वाला अपना न कोई हामी पाएंगे और न कोई मददगार।

18. अल्लाह तुममें से उन लोगों को ख़ूब जानता है जो रोकते हैं, और अपने भाइयों से कहते हैं कि "हमारे पास आ जाओ" और वो लड़ाई में थोड़े ही आते हैं,

19. तुम्हारे साथ बुख़्ल से काम लेते हैं, पस जब ख़ौफ़ का वक़्त आ जाता है, तो तुम उन्हें देखते हो कि वो तुम्हारी तरफ़ इस तरह ताक रहे हैं कि आंखें गर्दिश करती हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छा रही हो; लेकिन जब ख़ौफ़ जाता रहता है, तो वो माल के लालच में तेज़ ज़बानों से तुमसे बढ़-चढ़ कर बातें करते हैं। वो ईमान लाए ही नहीं, पस अल्लाह ने उनके आमाल अकारत कर दिए; और यह अल्लाह के लिए बहुत आसान है।

20. वो समझ रहे हैं कि (दुश्मन की) जमाअतें अभी गई नहीं हैं; और अगर वो जमाअतें फिर आ जाएं, तो वो चाहेंगे कि वो किसी तरह बाहर सहरा में बदवियों के साथ हों और वहीं से तुम्हारे बारे में ख़बरें पूछा करें। और अगर वो तुम्हारे साथ होते भी, तो लड़ाई में हिस्सा थोड़े ही लेते।

21. बेशक तुम्हारे पास अल्लाह के रसूल में एक बेहतरीन नमूना है यानी उसके लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो, और ख़ुदा को कसरत से याद करे।

22. और जब अहले ईमान ने जमाअतों को देखा, तो वो बोल उठे कि "यह तो वही है जिसका अल्लाह और उसके रसूल ने हमसे वादा किया था; और अल्लाह और उसके रसूल ने सच फ़रमाया था"। और इस चीज़ ने उनके ईमान व इताअत ही में इज़ाफ़ा किया।

23. मोमिनीन के पैकरों में ऐसे मर्द मौजूद हैं कि जो अहद उन्होंने अल्लाह से किया था उसे उन्होंने सच्चा कर दिखाया; फिर उनमें से बाज़ तो अपनी नज़र पूरी कर चुके, और बाज़ उनमें से इंतिज़ार कर रहे हैं, और उन्होंने ज़रा भी अपनी बात नहीं बदली;

24. ताकि इसके नतीजे में अल्लाह सच्चों को उनकी सच्चाई का बदला

अरा-द बिकुम् सूअन् औ अरा-द बिकुम् रह्म-तन्, व ला यजिदू-न लहुम् मिन् दूनिल्लाहि वलिय्यंव्-व ला नसीरा (17)

क़द् यअ्-लमुल्लाहुल्-मुअ़व्विक़ी-न मिन्कुम् वल्क़ाइली-न लि-इख़्वानिहिम् हलुम्-म इलैना व ला यअ्तूनल्-बअ्-स इल्ला क़लीला (18)

अशिह्ह-तन् अ़लैकुम् फ़-इज़ा जा-अल्ख़ौफ़ु रऐ-तहुम् यन्ज़ुरू-न इलै-क तदूरु अअ्युनुहुम् कल्लज़ी युग़्शा अ़लैहि मिनल्-मौति फ़-इज़ा ज़-हबल्-ख़ौफ़ु स-लक़ूकुम् बि-अलि-स-नतिन् हिदादिन् अशिह्ह-तन् अ़लल्-ख़ैरि, उलाइ-क लम् युअ्मिनू फ़-अह्-बतल्लाहु अअ्मालहुम्, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा (19)

यह्सबूनल्-अह्ज़ा-ब लम् यज़्हबू व इंय्यअ्तिल्-अह्ज़ाबु यवद्दू लौ अन्नहुम् बादू-न फ़िल्-अअ्राबि यस्अलू-न अ़न् अम्बा-इकुम्, व लौ कानू फ़ीकुम् मा क़ा-तलू इल्ला क़लीला (20) ●

ल-क़द् का-न लकुम् फ़ी रसूलिल्लाहि उस्वतुन् ह-स-नतुल्-लिमन् का-न यर्जुल्ला-ह वल्यौमल्-आख़ि-र व ज़-करल्ला-ह कसीरा (21)

व लम्मा र-अल्-मुअ्मिनूनल् अह्ज़ा-ब क़ालू हाज़ा मा व-अ़-दनल्लाहु व रसूलुहू व स-दक़ल्लाहु व रसूलुहू व मा ज़ा-दहुम् इल्ला ईमानंव्-व तस्लीमा (22)

मिनल्-मुअ्मिनी-न रिजालुन् स-दक़ू मा आ़-हदुल्ला-ह अ़लैहि फ़मिन्हुम् मन् क़ज़ा नह्-बहू व मिन्हुम् मंय्यन्तज़िरु व मा बद्दलू तब्दीला (23)

लियज्ज़ि- यल्लाहुस्सादिक़ी-न बिसिद्क़िहिम्

اَرَادَ بِكُمْ سُوْٓءًا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ رَحْمَةً ؕ وَلَا
يَجِدُوْنَ لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝۱۷
قَدْ يَعْلَمُ اللّٰهُ الْمُعَوِّقِيْنَ مِنْكُمْ وَالْقَآئِلِيْنَ
لِاِخْوَانِهِمْ هَلُمَّ اِلَيْنَا ۚ وَلَا يَاْتُوْنَ
الْبَاْسَ اِلَّا قَلِيْلًا ۝۱۸
اَشِحَّةً عَلَيْكُمْ ۖ فَاِذَا جَآءَ الْخَوْفُ
رَاَيْتَهُمْ يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ تَدُوْرُ اَعْيُنُهُمْ
كَالَّذِيْ يُغْشٰى عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۚ فَاِذَا ذَهَبَ
الْخَوْفُ سَلَقُوْكُمْ بِاَلْسِنَةٍ حِدَادٍ اَشِحَّةً عَلَى
الْخَيْرِ ؕ اُولٰٓئِكَ لَمْ يُؤْمِنُوْا فَاَحْبَطَ اللّٰهُ
اَعْمَالَهُمْ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرًا ۝۱۹
يَحْسَبُوْنَ الْاَحْزَابَ لَمْ يَذْهَبُوْا ۚ وَاِنْ
يَّاْتِ الْاَحْزَابُ يَوَدُّوْا لَوْ اَنَّهُمْ
بَادُوْنَ فِي الْاَعْرَابِ يَسْاَلُوْنَ عَنْ
اَنْۢبَآئِكُمْ ؕ وَلَوْ كَانُوْا فِيْكُمْ مَّا قٰتَلُوْٓا
اِلَّا قَلِيْلًا ۝۲۰ ع
لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ
حَسَنَةٌ لِّمَنْ كَانَ يَرْجُوا اللّٰهَ وَالْيَوْمَ
الْاٰخِرَ وَذَكَرَ اللّٰهَ كَثِيْرًا ۝۲۱
وَلَمَّا رَاَ الْمُؤْمِنُوْنَ الْاَحْزَابَ ۙ قَالُوْا
هٰذَا مَا وَعَدَنَا اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ وَصَدَقَ
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗ ؗ وَمَا زَادَهُمْ اِلَّآ اِيْمَانًا
وَّتَسْلِيْمًا ۝۲۲
مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا
اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ
مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ۝۲۳
لِّيَجْزِيَ اللّٰهُ الصّٰدِقِيْنَ بِصِدْقِهِمْ

दे, और मुनाफ़िकों को चाहे तो अज़ाब दे, या उनकी तौबा क़बूल फ़रमाए। यक़ीनन अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला, निहायत रहमवाला है।

25. अल्लाह ने उन लोगों को जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया उनके अपने गुस्से के साथ फेर दिया, वो कोई भलाई हासिल न कर सके; लड़ाई में अल्लाह ही मोमिनीन के लिए काफ़ी हो गया। अल्लाह तो है ही बड़ा कुव्वत वाला, निहायत ज़बरदस्त।

26. और अहले क़िताब में से जिन लोगों ने उनकी मदद की थी उन्हें उनकी गढ़ियों से उतार लाया और उनके दिलों में रोब डाल दिया; एक गिरोह को तुम क़त्ल करने लगे, और एक गिरोह को क़ैदी बनाने लगे।

27. और उसने तुम्हें उनकी ज़मीन, और उनके घरों और उनके मालों का वारिस बना दिया, और ऐसी ज़मीन का भी जिसे तुमने पामाल नहीं किया, अल्लाह को तो हर चीज़ पर कुदरत है।

28. ऐ नबी, अपनी बीवियों से कह दो कि "अगर तुम दुनिया की ज़िन्दगी और उसकी ज़ीनत चाहती हो, तो आओ मैं तुम्हें कुछ दे दिलाकर खुश उसलूबी से रुख़्सत कर दूं।

29. लेकिन अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल और आख़िरत के घर को चाहती हो, तो यक़ीनन अल्लाह ने तुममें से ख़ूबकारों के लिए बड़ा अजर मुहय्या कर रखा है"।

30. ऐ नबी की औरतो, तुममें से जो कोई खुली बेहूदगी की मुरतकिब हो, तो उसके लिए दोहरा अज़ाब होगा; और यह बात अल्लाह के लिए निहायत आसान है।

31. लेकिन तुममें से जो अल्लाह और उसके रसूल के साथ नियाज़मन्दी का रवैया इख़्तियार करे, और नेक अमल करे उसे हम दोहरा अजर देंगे, और उसके लिए हमने बाइज़्ज़त रिज़्क़ मुहय्या कर रखा है।

व युअ़ज़्ज़िबल्-मुनाफ़िक़ी-न इन् शा-अ औ यतू-ब अ़लैहिम्, इन्नल्ला-ह का-न ग़फ़ूरर्रहीमा (24)

व रद्दल्लाहुल्लज़ी-न क-फ़रू बिग़ैज़िहिम् लम् यनालू ख़ैरन्, व कफ़ल्लाहुल्- मुअ्मिनीनल्-क़िता-ल, व कानल्लाहु क़विय्यन् अ़ज़ीज़ा (25)

व अन्ज़लल्लज़ी-न ज़ा-हरूहुम् मिन् अह्लिल्-किताबि मिन् सयासीहिम् व क़-ज़-फ़ फ़ी कुलूबिहिमुर्-रुअ्-ब फ़रीक़न् तक़्तुलू-न व तअ्सिरू-न फ़रीक़ा (26)

व औ-र-सकुम् अर्-ज़हुम् व दिया-रहुम् व अम्वा-लहुम् व अर्ज़ल्-लम् त-तऊहा, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा (27) ●

या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लिअज़्वाजि-क इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्-हयातद्दुन्या व ज़ीन-तहा फ़-तआ़लै-न उमत्तिअ्कुन्-न व उसर्रिह्कुन्-न सराहन् जमीला (28)

व इन् कुन्तुन्-न तुरिद्नल्ला-ह व रसूलहू वद्दारल्-आख़िर-त फ़-इन्नल्ला-ह अ-अ़द्-द लिल्मुह्सिनाति मिन्कुन्-न अज्रन् अ़ज़ीमा (29)

या निसाअन्नबिय्यि मंय्यअ्ति मिन्कुन्-न बिफ़ाहि-शतिम् मुबय्यि-नतिंय्- युज़ा-अफ़् ल-हल्-अ़ज़ाबु ज़िअ्फ़ैनि, व का-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीरा (30)

व मंय्यक़्नुत् मिन्कुन्-न लिल्लाहि व रसूलिही व तअ्मल् सालिहन् नुअ्तिहा अज्रहा मर्रतैनि व अअ्तद्ना लहा रिज़्क़न् करीमा (31)

وَيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ اِنْ شَآءَ اَوْ يَتُوْبَ
عَلَيْهِمْ ؕ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ غَفُوْرًا
رَّحِيْمًا ﴿٢٤﴾
وَرَدَّ اللّٰهُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِغَيْظِهِمْ لَمْ يَنَالُوْا
خَيْرًا ؕ وَكَفَى اللّٰهُ الْمُؤْمِنِيْنَ الْقِتَالَ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ قَوِيًّا عَزِيْزًا ﴿٢٥﴾
وَاَنْزَلَ الَّذِيْنَ ظَاهَرُوْهُمْ مِّنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ مِنْ صَيَاصِيْهِمْ وَقَذَفَ فِيْ
قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ فَرِيْقًا تَقْتُلُوْنَ وَتَاْسِرُوْنَ
فَرِيْقًا ﴿٢٦﴾
وَاَوْرَثَكُمْ اَرْضَهُمْ وَدِيَارَهُمْ وَاَمْوَالَهُمْ
وَاَرْضًا لَّمْ تَطَـُٔوْهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ
شَیْءٍ قَدِيْرًا ﴿٢٧﴾
يٰۤاَيُّهَا النَّبِیُّ قُلْ لِّاَزْوَاجِكَ اِنْ
كُنْتُنَّ تُرِدْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا وَزِيْنَتَهَا
فَتَعَالَيْنَ اُمَتِّعْكُنَّ وَاُسَرِّحْكُنَّ سَرَاحًا
جَمِيْلًا ﴿٢٨﴾
وَاِنْ كُنْتُنَّ تُرِدْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
وَالدَّارَ الْاٰخِرَةَ فَاِنَّ اللّٰهَ اَعَدَّ لِلْمُحْسِنٰتِ
مِنْكُنَّ اَجْرًا عَظِيْمًا ﴿٢٩﴾
يٰنِسَآءَ النَّبِیِّ مَنْ يَّاْتِ مِنْكُنَّ
بِفَاحِشَةٍ مُّبَيِّنَةٍ يُّضٰعَفْ لَهَا الْعَذَابُ
ضِعْفَيْنِ ؕ وَكَانَ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ
يَسِيْرًا ﴿٣٠﴾
وَمَنْ يَّقْنُتْ مِنْكُنَّ لِلّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ
وَتَعْمَلْ صَالِحًا نُّؤْتِهَاۤ اَجْرَهَا مَرَّتَيْنِ ۙ
وَاَعْتَدْنَا لَهَا رِزْقًا كَرِيْمًا ﴿٣١﴾

32. ऐ नबी की औरतो। तुम आम औरतों में से किसी की तरह नहीं हो, अगर तुम तक़्वा इख़्तियार करो, तो तुम दबी ज़बान से बात न करना कि जिस शख़्स के दिल में बीमारी है वह लालच में पड़ जाए; तुम दस्तूर के मुताबिक़ बात करो।

33. अपने घरों में टिक कर रहो; और साबिक़ा जाहिलियत की सी सज-धज दिखाती न फिरना। नमाज़ का एहतिमाम करो, और ज़कात दो, और अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो। अल्लाह तो बस यह चाहता है कि ऐ अहले बैत, तुमसे गन्दगी को दूर रखे और तुम्हें बख़ूबी पाक-साफ़ रखे।

34. तुम्हारे घरों में अल्लाह की जो आयतें और हिक्मत की बातें सुनाई जाती हैं उनका ज़िक्र करती रहो; यक़ीनन अल्लाह बड़ा बारीक बीन, बाख़बर है।

35. मुस्लिम मर्द और मुस्लिम औरतें, मोमिन मर्द और मोमिन औरतें, फ़रमांबरदार मर्द और फ़रमांबरदार औरतें, रास्तबाज़ मर्द और रास्तबाज़ औरतें, साबित क़दम रहनेवाले मर्द और साबित क़दम रहनेवाली औरतें, फ़िरोतनी इख़्तियार करनेवाले मर्द और फ़िरोतनी इख़्तियार करनेवाली औरतें, सदक़ा देनेवाले मर्द और सदक़ा देने वाली औरतें, रोज़ा रखनेवाले मर्द और रोज़ा रखनेवाली औरतें, अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करनेवाले मर्द और हिफ़ाज़त करने वाली औरतें, और अल्लाह को बकसरत याद करनेवाले मर्द और याद करनेवाली औरतें — उनके लिए अल्लाह ने मग़फ़िरत और अजरे अज़ीम मुहय्या कर रखा है।

36. न किसी मोमिन मर्द को यह हक़ है, न किसी मोमिन औरत को कि जब अल्लाह और उसका रसूल किसी मुआमले का फ़ैसला कर दें, तो फिर उन्हें अपने मुआमले में कोई इख़्तियार बाक़ी रहे। जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करे तो वह खुली गुमराही में पड़ गया।

37. (याद करो, ऐ नबी!) जबकि तुम उस शख़्स से कह रहे थे जिसपर अल्लाह ने नवाज़िश फ़रमाई और तुमने भी जिस पर नवाज़िश की कि "अपनी बीवी को अपने पास रोके

या निसा-अन्नबिय्यि लस्तुन्-न क-अ-हदिम् मिनन्निसा-इ इनित्तक़ैतुन्-न फ़ला तख़्-ज़अ्-न बिल्क़ौलि फ़यत्म-अ़ल्लज़ी फ़ी क़ल्बिही म-रज़ुंव्-व क़ुल्-न क़ौलम् मअ्रूफ़ा (32)

व क़र्-न फ़ी बुयूतिकुन्-न व ला त-बर्रज्-न त-बर्रुजल्-जाहिलिय्यतिल्-ऊला व अक़िम्नस्सला-त व आतीनज़्-ज़का-त व अतिअ्नल्ला-ह व रसूलहू, इन्नमा युरीदुल्लाहु लियुज़्हि-ब अ़न्कुमुर्-रिज्-स अह्लल्-बैति व यु-तह्हि-रकुम् तत्हीरा (33)

वज़्कुर्-न मा युत्ला फ़ी बुयूतिकुन्-न मिन् आयातिल्लाहि वल्हिक्मति, इन्नल्ला-ह का-न लतीफ़न् ख़बीरा (34) ●

इन्नल्-मुस्लिमी-न वल्मुस्लिमाति वल्मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति वल्क़ानिती-न वल्क़ानिताति वस्सादिक़ी-न वस्सादिक़ाति वस्साबिरी-न वस्साबिराति वल्ख़ाशिअ़ी-न वल्ख़ाशिअ़ाति वल्मु-तसद्दिक़ी-न वल्मु-तसद्दिक़ाति वस्सा-इमी-न वस्सा-इमाति वल्हाफ़िज़ी-न फ़ुरू-जहुम् वल्हाफ़िज़ाति वज़्ज़ाकिरीनल्ला-ह कसीरंव्-वज़्ज़ाकिराति अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् मग़्फ़ि-रतंव्-व अज्रन् अ़ज़ीमा (35)

व मा का-न लिमुअ्मिनिंव्-व ला मुअ्मि-नतिन् इज़ा क़ज़ल्लाहु व रसूलुहू अम्रन् अंय्यकू-न लहुमुल्-ख़ि-य-रतु मिन् अम्रिहिम्, व मंय्यअ्सिल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द् ज़ल्-ल ज़लालम्-मुबीना (36)

व इज़् तक़ूलु लिल्लज़ी अन्-अ़मल्लाहु अ़लैहि व अन्अ़म्-त अ़लैहि अम्सिक्-अ़लै-क ज़ौ-ज-क वत्तक़िल्ला-ह व तुख़्फ़ी फ़ी नफ़्सि-क मल्लाहु मुब्दीहि व तख़्शन्ना-स वल्लाहु अ-हक़्क़ु

يٰنِسَآءَ النَّبِيِّ لَسْتُنَّ كَاَحَدٍ مِّنَ النِّسَآءِ
اِنِ اتَّقَيْتُنَّ فَلَا تَخْضَعْنَ بِالْقَوْلِ
فَيَطْمَعَ الَّذِيْ فِيْ قَلْبِهٖ مَرَضٌ وَّقُلْنَ
قَوْلًا مَّعْرُوْفًا ۝٣٢ۚ
وَقَرْنَ فِيْ بُيُوْتِكُنَّ وَلَا تَبَرَّجْنَ تَبَرُّجَ
الْجَاهِلِيَّةِ الْاُوْلٰى وَاَقِمْنَ الصَّلٰوةَ
وَاٰتِيْنَ الزَّكٰوةَ وَاَطِعْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ
اِنَّمَا يُرِيْدُ اللّٰهُ لِيُذْهِبَ عَنْكُمُ الرِّجْسَ
اَهْلَ الْبَيْتِ وَيُطَهِّرَكُمْ تَطْهِيْرًا ۝٣٣ۚ
وَاذْكُرْنَ مَا يُتْلٰى فِيْ بُيُوْتِكُنَّ
مِنْ اٰيٰتِ اللّٰهِ وَالْحِكْمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
ع كَانَ لَطِيْفًا خَبِيْرًا ۝٣٤ۧ
اِنَّ الْمُسْلِمِيْنَ وَالْمُسْلِمٰتِ وَالْمُؤْمِنِيْنَ
وَالْمُؤْمِنٰتِ وَالْقٰنِتِيْنَ وَالْقٰنِتٰتِ وَالصّٰدِقِيْنَ
وَالصّٰدِقٰتِ وَالصّٰبِرِيْنَ وَالصّٰبِرٰتِ وَالْخٰشِعِيْنَ
وَالْخٰشِعٰتِ وَالْمُتَصَدِّقِيْنَ وَالْمُتَصَدِّقٰتِ
وَالصَّآئِمِيْنَ وَالصّٰٓئِمٰتِ وَالْحٰفِظِيْنَ فُرُوْجَهُمْ
وَالْحٰفِظٰتِ وَالذّٰكِرِيْنَ اللّٰهَ كَثِيْرًا وَّالذّٰكِرٰتِ ۙ
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِيْمًا ۝٣٥
وَمَا كَانَ لِمُؤْمِنٍ وَّلَا مُؤْمِنَةٍ اِذَا قَضَى
اللّٰهُ وَرَسُوْلُهٗٓ اَمْرًا اَنْ يَّكُوْنَ لَهُمُ الْخِيَرَةُ
مِنْ اَمْرِهِمْ ؕ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
فَقَدْ ضَلَّ ضَلٰلًا مُّبِيْنًا ۝٣٦ؕ
وَاِذْ تَقُوْلُ لِلَّذِيْٓ اَنْعَمَ اللّٰهُ عَلَيْهِ
وَاَنْعَمْتَ عَلَيْهِ اَمْسِكْ عَلَيْكَ زَوْجَكَ
وَاتَّقِ اللّٰهَ وَتُخْفِيْ فِيْ نَفْسِكَ مَا اللّٰهُ
مُبْدِيْهِ وَتَخْشَى النَّاسَ ۚ وَاللّٰهُ اَحَقُّ

रखो, और अल्लाह का डर रखो, और तुम अपने जी में उस बात को छुपा रहे हो जिसे अल्लाह ज़ाहिर करनेवाला है, तुम लोगों से डरते हो; हालांकि अल्लाह इसका ज़्यादा हक़ रखता है कि तुम उससे डरो"। पस जब ज़ैद ने उससे अपना तअल्लुक़ ख़त्म कर लिया तो हमने उसको तुमसे बियाह दिया, ताकि अहले ईमान पर अपने मुंह बोले बेटों की बीवियों के मुआमले में कोई तंगी न रहे, जबकि वो उनसे अपनी हाजत पूरी कर लें; अल्लाह का फ़ैसला तो पूरा हो कर ही रहता है।

38. नबी पर उसमें कोई तंगी नहीं, जो अल्लाह ने उसके लिए फ़र्ज़ किया हो। यही अल्लाह का दस्तूर उन लोगों के मुआमले में भी रहा है जो पहले गुज़रे हैं; — और अल्लाह का काम तो मुक़र्ररा अन्दाज़े के मुताबिक़ जचा-तुला होता है;

39. जो अल्लाह के पैग़ामात पहुंचाते थे, और उसी से डरते थे; और ख़ुदा के सिवा किसी से डरते न थे; और हिसाब लेने के लिए अल्लाह काफ़ी है।

40. मुहम्मद तुम्हारे मर्दों में से किसी के बाप नहीं हैं, बल्कि वह अल्लाह के रसूल, और नबियों के ख़ातम (मुहर यानी ख़तम करनेवाले) हैं, अल्लाह को हर चीज़ का इल्म है।

41. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो; अल्लाह को बकसरत याद करो,

42. और सुबह व शाम उसकी तसबीह करते रहो।

43. वही है जो तुम पर रहमत भेजता है और उसके फ़रिश्ते भी — ताकि वह तुम्हें तारीकियों से रौशनी की तरफ़ निकाल लाए। वह तो मोमिनीन पर बहुत मेहरबान है।

44. जिस दिन वो उससे मिलेंगे, उनका इस्तेक़बाल सलाम से होगा। और उनके लिए उसने बाइज़्ज़त अजर तैयार कर रखा है।

45. ऐ नबी, हमने तुम्हें गवाह और ख़ुश ख़बरी देनेवाला और ख़बरदार करनेवाला बनाकर भेजा है,

46. और अल्लाह की तरफ़ उसके हुक्म से दावत देनेवाला, और एक रौशन चिराग़ बनाकर।

47. मोमिनों को बशारत दे दो कि उनके लिए अल्लाह की तरफ़ से बहुत बड़ा फ़ज़्ल है।

अन् तख़्शाहु, फ़-लम्मा क़ज़ा ज़ैदुम्-मिन्हा व-तरन् ज़व्वज्ना-क-हा लिकैला यकू-न अलल्-मुअ्मिनी-न ह-रजुन् फ़ी अज़्वाजि अद्अिया-इहिम् इज़ा क़ज़ौ मिन्हुन्-न व-तरन्, व का-न अम्रुल्लाहि मफ़्अूला (37)

मा का-न अलन्नबिय्यि मिन् ह-रजिन् फ़ीमा फ़-रज़ल्लाहु लहू, सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लु, व का-न अम्रुल्लाहि क़-दरम् मक़्दूरा (38)

अल्लज़ी-न युबल्लिग़ू-न रिसालातिल्लाहि व यख़्शौनहू व ला यख़्शौ-न अ-हदन् इल्लल्ला-ह, व कफ़ा बिल्लाहि हसीबा (39)

मा का-न मुहम्मदुन् अबा अ-हदिम्-मिर्रिजालिकुम् व लाकिर्रसूलल्लाहि व ख़ा-तमन्-नबिय्यी-न, व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अलीमा (40) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज़्कुरुल्ला-ह ज़िक्रन् कसीरा (41)

व सब्बिहूहु बुक्र-तंव्-व असीला (42)

हुवल्लज़ी युसल्ली अलैकुम् व मलाइ-कतुहू लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, व का-न बिल्मुअ्मिनी-न रहीमा (43)

तहिय्यतुहुम् यौ-म यल्क़ौनहू सलामुन् व अ-अद्-द लहुम् अज्रन् करीमा (44)

या अय्युहन्नबिय्यु इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव्-व मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा (45)

व दाअि-यन् इलल्लाहि बि-इज़्निही व सिराजम्-मुनीरा (46)

व बश्शिरिल्-मुअ्मिनी-न बिअन्-न लहुम् मिनल्लाहि फ़ज़्लन् कबीरा (47)

أَنْ تَخْشٰهُ ۚ فَلَمَّا قَضٰى زَيْدٌ مِّنْهَا وَطَرًا زَوَّجْنٰكَهَا لِكَيْ لَا يَكُوْنَ عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ حَرَجٌ فِيْٓ أَزْوَاجِ أَدْعِيَآئِهِمْ إِذَا قَضَوْا مِنْهُنَّ وَطَرًا ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللّٰهِ مَفْعُوْلًا ۝۳۷

مَا كَانَ عَلَى النَّبِيِّ مِنْ حَرَجٍ فِيْمَا فَرَضَ اللّٰهُ لَهٗ ۚ سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ وَكَانَ أَمْرُ اللّٰهِ قَدَرًا مَّقْدُوْرًا ۝۳۸

الَّذِيْنَ يُبَلِّغُوْنَ رِسٰلٰتِ اللّٰهِ وَيَخْشَوْنَهٗ وَلَا يَخْشَوْنَ أَحَدًا إِلَّا اللّٰهَ ۚ وَكَفٰى بِاللّٰهِ حَسِيْبًا ۝۳۹

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَآ أَحَدٍ مِّنْ رِّجَالِكُمْ وَلٰكِنْ رَّسُوْلَ اللّٰهِ وَخَاتَمَ النَّبِيّٖنَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝۴۰

يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اذْكُرُوا اللّٰهَ ذِكْرًا كَثِيْرًا ۝۴۱

وَّسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّأَصِيْلًا ۝۴۲

هُوَ الَّذِيْ يُصَلِّيْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ لِيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ إِلَى النُّوْرِ ۚ وَكَانَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ رَحِيْمًا ۝۴۳

تَحِيَّتُهُمْ يَوْمَ يَلْقَوْنَهٗ سَلٰمٌ ۚ وَّأَعَدَّ لَهُمْ أَجْرًا كَرِيْمًا ۝۴۴

يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ إِنَّآ أَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا وَّنَذِيْرًا ۝۴۵

وَّدَاعِيًا إِلَى اللّٰهِ بِإِذْنِهٖ وَسِرَاجًا مُّنِيْرًا ۝۴۶

وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِيْنَ بِأَنَّ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَضْلًا كَبِيْرًا ۝۴۷

48. और काफ़िरों और मुनाफ़िक़ों की इताअत न करना; उनकी अज़ीयतरसानी को नज़र अन्दाज़ करो और अल्लाह पर भरोसा रखो; अल्लाह इसके लिए काफ़ी है कि अपना मुआमला उसके सुपुर्द किया जाए।

49. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जब तुम मोमिन औरतों से निकाह करो और फिर उन्हें हाथ लगाने से पहले तलाक़ दे दो, तो तुम्हारे लिए उनके ज़िम्मे कोई इद्दत नहीं जिसे तुम शुमार करो; बस उन्हें कुछ सामान दे दो, और ख़ूबसूरती के साथ उन्हें रुख़सत कर दो।

50. ऐ नबी, हमने तुम्हारे लिए तुम्हारी बीवियां जायज़ की हैं जिनके महर तुम दे चुके हो नीज़ उन औरतों को जो तुम्हारी मिल्कियत में हों जो अल्लाह ने तुम्हें बतौरे ग़नीमत अता कीं, और तुम्हारे चचा की बेटियां, और तुम्हारी फूफियों की बेटियां, और तुम्हारे मामुओं की बेटियां, और तुम्हारी ख़ालाओं की बेटियां, जिन्होंने तुम्हारे साथ हिजरत की है, और वह मोमिन औरत जो अपने आपको नबी के लिए हिबा कर दे अगर नबी उससे निकाह करना चाहे, मोमिनों से हटकर यह (कई बीवियां रखनी) ख़ास तुम्हारे लिए है — हमें मालूम है जो कुछ हमने उनकी बीवियों और उनकी लौण्डियों के बारे में उनपर फ़र्ज़ किया है, ताकि तुम पर कोई तंगी न रहे; अल्लाह बहुत बख़्शनेवाला, निहायत रहमवाला है।

51. तुम उनमें से जिसे चाहो मुअख़्ख़र रखो, और जिसे चाहो अपने पास रखो; और जिनको तुमने अलग रखा हो उनमें से किसी के तालिब हो तो इसमें तुमपर कोई मुज़ायक़ा नहीं। यह इस बात के ज़्यादा क़रीब है कि उनकी आंखें ठंडी रहें, और वो रंजीदा न हों, और जो कुछ तुम उन्हें दो उसपर वो सब राज़ी रहें। अल्लाह जानता है जो कुछ तुम्हारे दिलों में है; अल्लाह सब कुछ जानने वाला, बहुत बुर्दबार है।

52. इसके बाद तुम्हारे लिए दूसरी औरतें जायज़ नहीं, और न यह कि तुम उनकी जगह दूसरी बीवियां ले आओ, ख़्वाह उनका हुस्न तुम्हारे लिए दिल पसन्द ही हो, उनकी बात और है जो तुम्हारी लौण्डियां हों; अल्लाह तो हर चीज़ पर निगाह रखता है।

53. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो,

व ला तुतिअ़िल्-काफ़िरी-न वल्-मुनाफ़िक़ी-न व दअ़् अज़ाहुम् व तवक्कल् अ़लल्लाहि, व कफ़ा बिल्लाहि वकीला (48)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नकह़्तुमुल् मुअ्मिनाति सुम्-म तल्लक़्तुमूहुन्-न मिन् क़ब्लि अन् तमस्सूहुन्-न फ़मा लकुम् अ़लैहिन्-न मिन् अिद्दतिन् तअ्तद्दूनहा फ़-मत्तिअूहुन्-न व सर्रिहू-हुन्-न सराहन् जमीला (49)

या अय्युहन्-नबिय्यु इन्ना अह़्लल्ना ल-क अज़्वा-जकल्लाती आतै-त उजू-रहुन्-न व मा म-लकत् यमीनु-क मिम्मा अफ़ाअल्लाहु अ़लै-क व बनाति अ़म्मि-क व बनाति अ़म्माति-क व बनाति ख़ालि-क व बनाति ख़ालातिकल्-लाती हाजर्-न म-अ़-क वम्-र-अतम् मुअ्मि-नतन् इंव्व-हबत् नफ़्सहा लिन्नबिय्यि इन् अरादन्नबिय्यु अंय्यस्तन्कि-हहा, ख़ालि-सतल् ल-क मिन् दूनिल्-मुअ्मिनी-न, क़द् अ़लिम्ना मा फ़रज़्ना अ़लैहिम् फ़ी अज़्वाजिहिम् व मा म-लकत् ऐमानुहुम् लिकैला यकू-न अ़लै-क ह-रजुन्, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (50)

तुर्जी मन् तशा-उ मिन्हुन्-न व तुअ्वी इलै-क मन् तशा-उ, व मनिब्तग़ै-त मिम्मन् अ़ज़ल्-त फ़ला जुना-ह अ़लै-क, ज़ालि-क अद्ना अन् तक़र्-र अअ्युनुहुन्-न व ला यह़्ज़न्-न व यर्ज़ै-न बिमा आतै-तहुन्-न कुल्लुहुन्-न, वल्लाहु यअ्लमु मा फ़ी क़ुलूबिकुम्, व कानल्लाहु अ़लीमन् हलीमा (51)

ला यहिल्लु लकन्निसा-उ मिम्बअ्दु व ला अन् तबद्द-ल बिहिन्-न मिन् अज़्वाजिंव्-व लौ अअ्-ज-ब-क हुस्नुहुन्-न इल्ला मा म-लकत् यमीनु-क, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइर्-रक़ीबा (52) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तद्ख़ुलू बुयूतन्नबिय्यि

وَلَا تُطِعِ الْكٰفِرِيْنَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَدَعْ اَذٰىهُمْ
وَتَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ وَكَفٰى بِاللّٰهِ وَكِيْلًا ﴿٤٨﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَكَحْتُمُ الْمُؤْمِنٰتِ
ثُمَّ طَلَّقْتُمُوْهُنَّ مِنْ قَبْلِ اَنْ تَمَسُّوْهُنَّ
فَمَا لَكُمْ عَلَيْهِنَّ مِنْ عِدَّةٍ تَعْتَدُّوْنَهَا ۚ
فَمَتِّعُوْهُنَّ وَسَرِّحُوْهُنَّ سَرَاحًا جَمِيْلًا ﴿٤٩﴾
يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ اِنَّاۤ اَحْلَلْنَا لَكَ اَزْوَاجَكَ
الّٰتِيْۤ اٰتَيْتَ اُجُوْرَهُنَّ وَمَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ
مِمَّاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلَيْكَ وَبَنٰتِ عَمِّكَ وَبَنٰتِ
عَمّٰتِكَ وَبَنٰتِ خَالِكَ وَبَنٰتِ خٰلٰتِكَ الّٰتِيْ
هَاجَرْنَ مَعَكَ ؗ وَامْرَاَةً مُّؤْمِنَةً اِنْ وَّهَبَتْ
نَفْسَهَا لِلنَّبِيِّ اِنْ اَرَادَ النَّبِيُّ اَنْ يَّسْتَنْكِحَهَا ۗ
خَالِصَةً لَّكَ مِنْ دُوْنِ الْمُؤْمِنِيْنَ ؕ قَدْ
عَلِمْنَا مَا فَرَضْنَا عَلَيْهِمْ فِيْۤ اَزْوَاجِهِمْ
وَمَا مَلَكَتْ اَيْمَانُهُمْ لِكَيْلَا يَكُوْنَ
عَلَيْكَ حَرَجٌ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٠﴾
تُرْجِيْ مَنْ تَشَآءُ مِنْهُنَّ وَتُـْٔوِيْۤ اِلَيْكَ
مَنْ تَشَآءُ ؕ وَمَنِ ابْتَغَيْتَ مِمَّنْ عَزَلْتَ
فَلَا جُنَاحَ عَلَيْكَ ؕ ذٰلِكَ اَدْنٰۤى اَنْ تَقَرَّ
اَعْيُنُهُنَّ وَلَا يَحْزَنَّ وَيَرْضَيْنَ بِمَاۤ اٰتَيْتَهُنَّ
كُلُّهُنَّ ؕ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مَا فِيْ قُلُوْبِكُمْ ؕ
وَكَانَ اللّٰهُ عَلِيْمًا حَلِيْمًا ﴿٥١﴾
لَا يَحِلُّ لَكَ النِّسَآءُ مِنْۢ بَعْدُ وَلَاۤ اَنْ
تَبَدَّلَ بِهِنَّ مِنْ اَزْوَاجٍ وَّلَوْ اَعْجَبَكَ
حُسْنُهُنَّ اِلَّا مَا مَلَكَتْ يَمِيْنُكَ ؕ وَكَانَ
ع اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ رَّقِيْبًا ﴿٥٢﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَدْخُلُوْا بُيُوْتَ

नबी के घरों में दाख़िल न हो, सिवाय इसके कि कभी तुम्हें खाने पर आने की इजाज़त दी जाए, वह भी इस तरह कि उसकी तैयारी के इंतिज़ार में न रहो। अलबत्ता जब तुम्हें बुलाया जाए, तो अंदर जाओ; और जब तुम खा चुको, तो मुंतशिर हो जाओ, बातों में लगे न रहो; यक़ीनन तुम्हारी यह हरकत नबी को तकलीफ़ देती है, मगर वह तुमसे शर्म करते हैं; लेकिन अल्लाह हक़ बात कहने से नहीं शर्माता। और जब तुम उनसे कुछ मांगो, तो पर्दे के पीछे से उनसे मांगो; यह तुम्हारे दिलों के लिए भी ज़्यादा पाकीज़ा है और उनके दिलों के लिए भी। तुम्हें जायज़ नहीं कि तुम अल्लाह के रसूल को तकलीफ़ पहुंचाओ; और न यही कि कभी भी उसके बाद उसकी बीवियों से निकाह करो; यक़ीनन अल्लाह के नज़दीक यह बड़ी संगीन बात है।

54. ख़्वाह तुम किसी चीज को ज़ाहिर करो या उसे छुपाओ, अल्लाह को तो हर चीज़ का इल्म है।

55. न उनके लिए अपने बापों के सामने होने में कोई मुज़ायक़ा है और न अपने बेटों और न अपने भाइयों, न अपने भतीजों, न अपने भांजों, न अपने मेल की औरतों, और न जो उनकी मिल्कियत में हों उनके सामने होने में। अल्लाह का डर रखो; यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।

56. बेशक अल्लाह और उसके फ़रिश्ते नबी पर रहमत भेजते हैं, ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम भी उस पर रहमत भेजो,और अच्छी तरह सलाम भेजा करो।

57. जो लोग अल्लाह और उसके रसूल को अज़ीयत देते हैं अल्लाह ने उनपर दुनिया और आख़िरत में लानत की है, और उनके लिए रुसवाकुन अज़ाब तैयार कर रखा है।

58. और जो लोग मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को, बग़ैर इसके कि उन्होंने कुछ किया हो, (तोहमत लगाकर) ईज़ा (तकलीफ़) पहुंचाते हैं, उन्होंने तो बड़े बुहतान और गुनाह का बार अपने ऊपर उठाया।

59. ऐ नबी, अपनी बीवियों और अपनी बेटियों और अहले ईमान की

इल्ला अंय्युअ्-ज़-न लकुम् इला तआमिन् ग़ै-र नाज़िरी-न इनाहु व लाकिन् इज़ा दुईतुम् फ़द्ख़ुलू फ़-इज़ा तइ़म्तुम् फ़न्तशिरू व ला मुस्तअ्निसी-न लि-हदीसिन्, इन्-न ज़ालिकुम् का-न युअ्ज़िन्नबिय्-य फ़-यस्तह्यी मिन्कुम् वल्लाहु ला यस्तह्यी मिनल्-हक़्क़ि, व इज़ा सअल्तुमूहुन्-न मताअ़न् फ़स्अलूहुन्-न मिंव्वरा-इ हिजाबिन्, ज़ालिकुम् अत्हरु लिक़ुलूबिकुम् व क़ुलूबिहिन्-न, व मा का-न लकुम् अन् तुअ्ज़ू रसूलल्लाहि व ला अन् तन्किहू अज़्वाजहू मिम्बअ्दिही अ-बदन्, इन्-न ज़ालिकुम् का-न ञ़िन्दल्लाहि अ़ज़ीमा (53)

इन् तुब्दू शैअन् औ तुख़्फ़ूहु फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा (54)

ला जुना-ह अ़लैहिन्-न फ़ी आबा-इहिन्-न व ला अब्ना-इहिन्-न व ला इख़्वानिहिन्-न व ला अब्ना-इ इख़्वानिहिन्-न व ला अब्ना-इ अ-ख़वातिहिन्-न व ला निसा-इहिन्-न व ला मा म-लकत् ऐमानुहुन्-न वत्तक़ीनल्ला-ह, इन्नल्ला-ह का-न अ़ला कुल्लि शैइन् शहीदा (55)

इन्नल्ला-ह व मलाइ-क-तहू युसल्लू-न अ़लन्नबिय्यि, या अय्युहल्लज़ी-न आमनू सल्लू अ़लैहि व सल्लिमू तस्लीमा (56)

इन्नल्लज़ी-न युअ्ज़ूनल्ला-ह व रसूलहू ल-अ़-नहुमुल्लाहु फ़िद्दुन्या वल्-आख़िरति व अ-अ़द्-द लहुम् अ़ज़ाबम्-मुहीना (57)

वल्लज़ी-न युअ्ज़ूनल्-मुअमिनी-न वल्मुअ्मिनाति बिग़ैरि मक्त-सबू फ़-क़दिह्त-मलू बुह्तानंव्-व इस्मम्-मुबीना (58) ●

या अय्युहन्नबिय्यु क़ुल् लि-अज़्वाजि-क

النَّبِيِّ إِلَّا أَنْ يُؤْذَنَ لَكُمْ إِلَىٰ طَعَامٍ
غَيْرَ نٰظِرِيْنَ إِنٰىهُ ۙ وَلٰكِنْ إِذَا دُعِيْتُمْ
فَادْخُلُوْا فَإِذَا طَعِمْتُمْ فَانْتَشِرُوْا
وَلَا مُسْتَأْنِسِيْنَ لِحَدِيْثٍ ۭ إِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ
يُؤْذِي النَّبِيَّ فَيَسْتَحْيٖ مِنْكُمْ ۡ وَاللّٰهُ لَا يَسْتَحْيٖ
مِنَ الْحَقِّ ۭ وَإِذَا سَأَلْتُمُوْهُنَّ مَتَاعًا فَسْئَلُوْهُنَّ
مِنْ وَّرَآءِ حِجَابٍ ۭ ذٰلِكُمْ أَطْهَرُ لِقُلُوْبِكُمْ
وَقُلُوْبِهِنَّ ۭ وَمَا كَانَ لَكُمْ أَنْ تُؤْذُوْا رَسُوْلَ
اللّٰهِ وَلَآ أَنْ تَنْكِحُوْٓا أَزْوَاجَهٗ مِنْ بَعْدِهٖٓ
أَبَدًا ۭ إِنَّ ذٰلِكُمْ كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ عَظِيْمًا ﴿٥٣﴾
إِنْ تُبْدُوْا شَيْئًا أَوْ تُخْفُوْهُ فَإِنَّ اللّٰهَ كَانَ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ﴿٥٤﴾
لَا جُنَاحَ عَلَيْهِنَّ فِيْٓ اٰبَآئِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآئِهِنَّ
وَلَآ إِخْوَانِهِنَّ وَلَآ أَبْنَآءِ إِخْوَانِهِنَّ وَلَآ
أَبْنَآءِ أَخَوٰتِهِنَّ وَلَا نِسَآئِهِنَّ وَلَا مَا مَلَكَتْ
أَيْمَانُهُنَّ ۚ وَاتَّقِيْنَ اللّٰهَ ۭ إِنَّ اللّٰهَ كَانَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدًا ﴿٥٥﴾
إِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِيِّ ۭ
يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا صَلُّوْا عَلَيْهِ وَسَلِّمُوْا
تَسْلِيْمًا ﴿٥٦﴾
إِنَّ الَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فِي الدُّنْيَا وَالْاٰخِرَةِ
وَأَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا مُّهِيْنًا ﴿٥٧﴾
وَالَّذِيْنَ يُؤْذُوْنَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
بِغَيْرِ مَا اكْتَسَبُوْا فَقَدِ احْتَمَلُوْا بُهْتَانًا
ع وَّإِثْمًا مُّبِيْنًا ﴿٥٨﴾
يٰٓأَيُّهَا النَّبِيُّ قُلْ لِّأَزْوَاجِكَ

وَبَنٰتِكَ وَنِسَآءِ الْمُؤْمِنِيْنَ يُدْنِيْنَ
عَلَيْهِنَّ مِنْ جَلَابِيْبِهِنَّ ۚ ذٰلِكَ اَدْنٰٓى
اَنْ يُّعْرَفْنَ فَلَا يُؤْذَيْنَ ۚ وَكَانَ اللّٰهُ
غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٥٩﴾
لَئِنْ لَّمْ يَنْتَهِ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالَّذِيْنَ فِيْ
قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْمُرْجِفُوْنَ فِي الْمَدِيْنَةِ
لَنُغْرِيَنَّكَ بِهِمْ ثُمَّ لَا يُجَاوِرُوْنَكَ
فِيْهَآ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٦٠﴾
مَّلْعُوْنِيْنَ ۚ اَيْنَمَا ثُقِفُوْٓا اُخِذُوْا
وَقُتِّلُوْا تَقْتِيْلًا ﴿٦١﴾
سُنَّةَ اللّٰهِ فِي الَّذِيْنَ خَلَوْا مِنْ قَبْلُ ۚ
وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ﴿٦٢﴾
يَسْـَٔلُكَ النَّاسُ عَنِ السَّاعَةِ ۗ قُلْ اِنَّمَا
عِلْمُهَا عِنْدَ اللّٰهِ ۗ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ
السَّاعَةَ تَكُوْنُ قَرِيْبًا ﴿٦٣﴾
اِنَّ اللّٰهَ لَعَنَ الْكٰفِرِيْنَ وَاَعَدَّ لَهُمْ
سَعِيْرًا ﴿٦٤﴾
خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ۚ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا
وَّلَا نَصِيْرًا ﴿٦٥﴾
يَوْمَ تُقَلَّبُ وُجُوْهُهُمْ فِي النَّارِ يَقُوْلُوْنَ
يٰلَيْتَنَآ اَطَعْنَا اللّٰهَ وَاَطَعْنَا الرَّسُوْلَا ﴿٦٦﴾
وَقَالُوْا رَبَّنَآ اِنَّآ اَطَعْنَا سَادَتَنَا وَكُبَرَآءَنَا
فَاَضَلُّوْنَا السَّبِيْلَا ﴿٦٧﴾
رَبَّنَآ اٰتِهِمْ ضِعْفَيْنِ مِنَ الْعَذَابِ
وَالْعَنْهُمْ لَعْنًا كَبِيْرًا ﴿٦٨﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ
اٰذَوْا مُوْسٰى فَبَرَّاَهُ اللّٰهُ مِمَّا قَالُوْا ۚ وَ

व बनाति-क व निसाइल्-मुअ्मिनी-न युद्नी-न अ़लैहिन्-न मिन् जलाबिहिन्-न, ज़ालि-क अद्ना अंय्युअ्-रफ़्-न फ़ला युअ्ज़ै-न, व कानल्लाहु ग़फ़ूररहीमा (59)

ल-इल्लम् यन्तहिल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुंव्वल्-मुर्जिफ़ू-न फ़िल्मदी-नति ल-नुग़्रियन्न-क बिहिम सुम्-म ला युजाविरू-न-क फ़ीहा इल्ला क़लीला (60)

मल्अूनी-न ऐ-नमा सुक़िफ़ू उख़िज़ू व क़ुत्तिलू तक़्तीला (61)

सुन्नतल्लाहि फ़िल्लज़ी-न ख़लौ मिन् क़ब्लु व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला ●(62)

यस्अलुकन्नासु अ़निस्सा-अ़ति, क़ुल इन्नमा अ़िल्मुहा अ़िन्दल्लाहि, व मा युद्री-क लअ़ल्लस्-सा-अ़-त तकूनु क़रीबा (63)

इन्नल्ला-ह ल-अ़नल्-काफ़िरी-न व अ-अ़द्-द लहुम् सअ़ीरा (64) *ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन् ला यजिदू-न वलिय्यंव्-व ला नसीरा* (65)

यौ-म तुक़ल्लबु वुजूहुहुम् फ़िन्नारि यक़ूलू-न या लै-तना अतअ्नल्ला-ह व अतअ्नर्रसूला (66)

व क़ालू रब्बना इन्ना अतअ्ना सा-द-तना व कु-बरा-अना फ़-अज़ल्लूनस्-सबीला (67)

रब्बना आतिहिम् ज़िअ्फ़ैनि मिनल्-अ़ज़ाबि वल्अ़न्हुम् लअ्नन् कबीरा (68) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तकूनू कल्लज़ी-न आज़ौ मूसा फ़-बर्र-अहुल्लाहु मिम्मा क़ालू, व

औरतों से कह दो कि (घर से बाहर निकलें तो) वो अपने ऊपर अपनी चादरों का कुछ हिस्सा लटका लिया करें, यह इस बात से ज़्यादा क़रीब है कि वो पहचान ली जाएं और सताई न जाएं। अल्लाह बड़ा बख़्शनेवाला निहायत रहमवाला है।

60. अगर मुनाफ़िक़ीन और वो लोग जिनके दिलों में रोग है और मदीने में हैजान अंगेज़ अफ़वाहें फैलानेवाले बाज़ न आएं तो हम तुम्हें उनके ख़िलाफ़ उभार देंगे फिर वो उसमें तुम्हारे साथ थोड़ा ही रहने पाएंगे;

61. फिटकारे हुए होंगे, जहां पाए गए पकड़े जाएंगे और बुरी तरह क़त्ल किए जाएंगे।

62. यही अल्लाह का दस्तूर रहा है उन लोगों के बारे में जो पहले गुज़र चुके हैं; और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे।

63. लोग तुमसे क़ियामत की घड़ी के बारे में पूछते हैं। कह दो: "उसका इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है; और तुम्हें क्या मालूम? शायद वह घड़ी क़रीब ही आ लगी हो"।

64. यक़ीनन अल्लाह ने अहले कुफ़्र पर लानत की है, और उनके लिए दहकती आग तैयार कर रखी है,

65. जिसमें वो मुस्तक़िल तौर से रहेंगे; न वो कोई हामी पाएंगे और न कोई मददगार।

66. जिस दिन उनके चेहरे आग में उलटे-पलटे जाएंगे वो कहेंगे, "काश, हमने अल्लाह की इताअत की होती और रसूल की इताअत की होती!"

67. वो कहेंगे, "ऐ हमारे रब, हमने तो अपने सरदारों और अपने बड़ों की इताअत की, और उन्होंने हमें राह से बेराह कर दिया।

68. ऐ हमारे रब, उन्हें दोहरा अज़ाब दे, और उन पर बड़ी लानत कर!"

69. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने मूसा को तकलीफ़ पहुंचाई तो अल्लाह ने जो कुछ उन्होंने कहा था उससे उसे बरी कर दिया, वो

अल्लाह के नज़दीक बड़ा बावक़ार था।

70. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह का डर रखो, और दुरुस्त बात कहो,

71. वह तुम्हारे आमाल दुरुस्त करेगा और तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा। जो शख़्स अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करे उसने बड़ी कामयाबी हासिल कर ली।

72. हमने अमानत को आसमानों और ज़मीन और पहाड़ों के सामने पेश किया, मगर उन्होंने उसके उठाने से इनकार किया और उससे डर गए, लेकिन इनसान ने उसे उठा लिया। यक़ीनन वह बड़ा ज़ालिम, नादान और जज़्बात से मग़लूब हो जानेवाला है।

73. ताकि अल्लाह मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों, और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को अज़ाब दे; और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों की तरफ़ अल्लाह तवज्जुह फ़रमाए, अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला निहायत रहमवाला है।

सूरह सबा मक्की

(आयतें 54, रुकूआत 6)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. हम्द अल्लाह ही के लिए है जिसका वह सब ही कुछ है जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। और उसी के लिए हम्द आख़िरत में भी है; और वही हिकमत वाला, बाख़बर है।

2. वह जानता है जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है और जो कुछ उससे निकलता है, और जो कुछ आसमान से उतरता, और जो कुछ उसमें चढ़ता है, वही निहायत रहमवाला, बख़्शने वाला है।

3. जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया उनका कहना है कि "हमपर क़ियामत नहीं आएगी"। कह दो कि "क्यों नहीं, मेरे आलिमुल-ग़ैब रब की क़सम, वह तो तुमपर आकर रहेगी — उससे ज़र्रा बराबर कोई चीज़ न आसमानों में ओझल है और न ज़मीन में; और न उससे छोटी कोई चीज़, और न उससे बड़ी, मगर वह एक

का-न अ़िन्दल्लाहि वजीहा (69)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व क़ूलू क़ौलन् सदीदा (70)

युस्लिह् लकुम् अअ्मा-लकुम् व यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम्, व मंय्युतिअ़िल्ला-ह व रसूलहू फ़-क़द् फ़ा-ज़ फ़ौज़न् अ़ज़ीमा (71)

इन्ना अ़रज़्नल्-अमान-त अ़लस्-समावाति वल्अर्ज़ि वल्जिबालि फ़-अबै-न अंय्यहमिल्नहा व अश्फ़क़्-न मिन्हा व ह-म-लहल्-इन्सानु, इन्नहू का-न ज़लूमन् जहूला (72)

लि-युअ़ज़्ज़िबल्लाहुल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्-मुनाफ़िक़ाति वल्-मुश्रिकी-न वल्-मुश्रिकाति व यतूबल्लाहु अ़लल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (73)●

34 सूरतु स-बइन्
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 3636 अक्षर, 896 शब्द, 54 आयतें और 6 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व लहुल्-हम्दु फ़िल्-आख़िरति, व हुवल् हकीमुल्-ख़बीर (1)

यअ्लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समा-इ व मा यअ्रुजु फ़ीहा, व हुवर्रहीमुल्-ग़फ़ूर (2)

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू ला तअ्तीनस्सा-अ़तु क़ुल् बला व रब्बी ल-तअ्ति-यन्नकुम् आलिमिल्-ग़ैबि ला यअ्ज़ुबु अ़न्हु मिस्क़ालु ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व ला अस्-ग़रु मिन् ज़ालि-क व ला अक्बरु इल्ला फ़ी किताबिम्-

كَانَ عِنْدَ اللّٰهِ وَجِيْهًا ﴿٦٩﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا
قَوْلًا سَدِيْدًا ﴿٧٠﴾
يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ
ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ
فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٧١﴾
اِنَّا عَرَضْنَا الْاَمَانَةَ عَلَى السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضِ وَالْجِبَالِ فَاَبَيْنَ اَنْ يَّحْمِلْنَهَا
وَاَشْفَقْنَ مِنْهَا وَحَمَلَهَا الْاِنْسَانُ ؕ
اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوْمًا جَهُوْلًا ﴿٧٢﴾
لِّيُعَذِّبَ اللّٰهُ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ وَيَتُوْبَ اللّٰهُ
عَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ
ع غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ﴿٧٣﴾

سُوْرَةُ سَبَاٍ مَّكِّيَّةٌ ، اٰيَاتُهَا ٥٤ ، رُكُوْعَاتُهَا ٦

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا
فِي الْاَرْضِ وَلَهُ الْحَمْدُ فِي الْاٰخِرَةِ ؕ وَهُوَ
الْحَكِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿١﴾
يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِي الْاَرْضِ وَمَا يَخْرُجُ
مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ وَمَا يَعْرُجُ
فِيْهَا ؕ وَهُوَ الرَّحِيْمُ الْغَفُوْرُ ﴿٢﴾
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَاْتِيْنَا السَّاعَةُ ؕ
قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتَاْتِيَنَّكُمْ ۙ عٰلِمِ
الْغَيْبِ ۚ لَا يَعْزُبُ عَنْهُ مِثْقَالُ ذَرَّةٍ فِي
السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ وَلَآ اَصْغَرُ
مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْبَرُ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ

वाज़ेह किताब में मौजूद है।

4. ताकि वह उन लोगों को जज़ा दे जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए; वही हैं जिनके लिए मग़फ़िरत और रिज़्क़-ए-करीम है।

5. रहे वो लोग जिन्होंने हमारी आयतों को नीचा दिखाने की कोशिश की, वही हैं जिनके लिए बदतरीन क़िस्म का दर्दनाक अज़ाब है"।

6. जिन लोगों को इल्म दिया गया वो ख़ुद देखते हैं कि जो कुछ तुम्हारे रब की तरफ़ से तुम्हारी तरफ़ नाज़िल हुआ है वही हक़ है, और वह ख़ुदा-ए-अज़ीज़ व हमीद के रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करता है।

7. जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वो कहते हैं कि "क्या हम तुम्हें एक ऐसा आदमी बताएं, जो तुम्हें ख़बर देता है कि जब तुम बिल्कुल रेज़ा-रेज़ा हो चुके होगे तो तुम एक नई ख़िलक़त में होगे?"

8. क्या उसने अल्लाह पर झूट बांधा है, या उसे कोई जुनून है? नहीं, बल्कि जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वही अज़ाब और परले दर्जे की गुमराही में हैं।

9. क्या उन्होंने आसमान और ज़मीन को नहीं देखा जो उनके आगे और उनके पीछे हैं? अगर हम चाहें तो उन समेत ज़मीन को धंसा दें, या उनपर आसमान से कुछ टुकड़े गिरा दें। यक़ीनन इसमें एक निशानी है हर उस बन्दे के लिए जो मुतवज्जेह होता हो।

10-11. हमने दाऊद को अपने फ़ज़्ल से नवाज़ा था: "ऐ पहाड़ो, उसके साथ ज़िक्र-ए-हक़ दोहराओ, और परिन्दो तुम भी!" और हमने उसके लिए लोहे को नर्म कर दिया कि "कुशादा ज़िरहें बना, और कड़ियों को ठीक अंदाज़े से जोड़" — और तुम नेक अमल करो, यक़ीनन जो कुछ तुम करते हो उसे मैं देखता हूं।

12. और सुलैमान के लिए हवा को मुसख़्ख़र कर दिया था; उसका जाना-आना महीना-महीना भर का होता — और हमने उसके लिए पिघले हुए तांबे का चश्मा बहा दिया — और जिन्नों में से भी कुछ को उसके ताबे कर दिया था जो अपने रब के हुक्म

मुबीन (3)

लि-यज्ज़ियल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति, उलाइ-क लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व रिज़्कुन् करीम (4)

वल्लज़ी-न सऔ फ़ी आयातिना मुआ़जिज़ी-न उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम् मिर्रिज्ज़िन् अलीम (5)

व यरल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्मल्लज़ी उन्ज़ि-ल इलै-क मिर्रब्बि-क हुवल्-हक़्-क़ व यह्दी इला सिरातिल् अ़ज़ीज़िल्-हमीद (6)

व कालल्लज़ी-न क-फ़रू हल् नदुल्लुकुम् अ़ला रजुलिंय्-युनब्बिउकुम् इज़ा मुज़्ज़िक़्तुम् कुल्-ल मुमज़्ज़किन् इन्नकुम् लफ़ी ख़ल्किन् जदीद (7)

अफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् अम् बिही जिन्नतुन्, बलिल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति फ़िल्अ़ज़ाबि वज़्ज़लालिल्-बअ़ीद (8)

अ-फ़लम् यरौ इला मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् मिनस्-समा-इ वल्अर्ज़ि, इन्न-शअ् नख़्सिफ़् बिहिमुल्-अर्-ज़ औ नुस्क़ित् अ़लैहिम् कि-सफ़म् मिनस्समा-इ, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआ-यतल्-लिकुल्लि अ़ब्दिम्-मुनीब (9) ●

व ल-क़द् आतैना दावू-द मिन्ना फ़ज़्लन्, या जिबालु अव्विबी म-अ़हू वत्तै-र व अलन्ना लहुल्-हदीद (10)

अनिअ्मल् साबिग़ातिंव्-व क़द्दिर् फ़िस्सर्दि वअ्मलू सालिहन्, इन्नी बिमा तअ्मलू-न बसीर (11)

व लि-सुलैमानर्-री-ह ग़ुदुव्वुहा शह्रुंव-व रवाहुहा शह्रुन् व असल्ना लहू अ़ैनल्-क़ित्रि, व मिनल्-जिन्नि मंय्यअ्मलु बै-न यदैहि

مُّبِيْنٍ ۝٣

لِّيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ
اُولٰٓئِكَ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّرِزْقٌ كَرِيْمٌ ۝٤
وَالَّذِيْنَ سَعَوْ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ
لَهُمْ عَذَابٌ مِّنْ رِّجْزٍ اَلِيْمٌ ۝٥
وَيَرَى الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ الَّذِيْٓ
اُنْزِلَ اِلَيْكَ مِنْ رَّبِّكَ هُوَ الْحَقَّ ۙ
وَيَهْدِيْٓ اِلٰى صِرَاطِ الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ۝٦
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا هَلْ نَدُلُّكُمْ
عَلٰى رَجُلٍ يُّنَبِّئُكُمْ اِذَا مُزِّقْتُمْ كُلَّ
مُمَزَّقٍ ۙ اِنَّكُمْ لَفِيْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝٧ۚ
اَفْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَمْ بِهٖ جِنَّةٌ ۭ
بَلِ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ فِي
الْعَذَابِ وَالضَّلٰلِ الْبَعِيْدِ ۝٨
اَفَلَمْ يَرَوْا اِلٰى مَا بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ
مِّنَ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ ۭ اِنْ نَّشَاْ نَخْسِفْ
بِهِمُ الْاَرْضَ اَوْ نُسْقِطْ عَلَيْهِمْ كِسَفًا
مِّنَ السَّمَآءِ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيَةً لِّكُلِّ
عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ۝٩ ع
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا دَاوٗدَ مِنَّا فَضْلًا ۭ يٰجِبَالُ
اَوِّبِيْ مَعَهٗ وَالطَّيْرَ ۚ وَاَلَنَّا لَهُ الْحَدِيْدَ ۝١٠ۙ
اَنِ اعْمَلْ سٰبِغٰتٍ وَّقَدِّرْ فِي السَّرْدِ
وَاعْمَلُوْا صَالِحًا ۭ اِنِّيْ بِمَا تَعْمَلُوْنَ
بَصِيْرٌ ۝١١
وَلِسُلَيْمٰنَ الرِّيْحَ غُدُوُّهَا شَهْرٌ
وَّرَوَاحُهَا شَهْرٌ ۚ وَاَسَلْنَا لَهٗ عَيْنَ
الْقِطْرِ ۭ وَمِنَ الْجِنِّ مَنْ يَّعْمَلُ بَيْنَ يَدَيْهِ

بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۭ وَمَنْ يَّزِغْ مِنْهُمْ عَنْ اَمْرِنَا
نُذِقْهُ مِنْ عَذَابِ السَّعِيْرِ ⑫
يَعْمَلُوْنَ لَهٗ مَا يَشَاۗءُ مِنْ مَّحَارِيْبَ
وَتَمَاثِيْلَ وَجِفَانٍ كَالْجَوَابِ وَقُدُوْرٍ
رّٰسِيٰتٍ ۭ اِعْمَلُوْٓا اٰلَ دَاوٗدَ شُكْرًا ۭ وَقَلِيْلٌ
مِّنْ عِبَادِيَ الشَّكُوْرُ ⑬
فَلَمَّا قَضَيْنَا عَلَيْهِ الْمَوْتَ مَا دَلَّهُمْ
عَلٰي مَوْتِهٖٓ اِلَّا دَاۗبَّةُ الْاَرْضِ تَاْكُلُ
مِنْسَاَتَهٗ ۚ فَلَمَّا خَرَّ تَبَيَّنَتِ الْجِنُّ اَنْ لَّوْ
كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ الْغَيْبَ مَا لَبِثُوْا فِي
الْعَذَابِ الْمُهِيْنِ ⑭
لَقَدْ كَانَ لِسَبَاٍ فِيْ مَسْكَنِهِمْ اٰيَةٌ ۚ
جَنَّتٰنِ عَنْ يَّمِيْنٍ وَّشِمَالٍ ڛ كُلُوْا مِنْ
رِّزْقِ رَبِّكُمْ وَاشْكُرُوْا لَهٗ ۭ بَلْدَةٌ طَيِّبَةٌ
وَّرَبٌّ غَفُوْرٌ ⑮
فَاَعْرَضُوْا فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ سَيْلَ الْعَرِمِ
وَبَدَّلْنٰهُمْ بِجَنَّتَيْهِمْ جَنَّتَيْنِ ذَوَاتَيْ اُكُلٍ
خَمْطٍ وَّاَثْلٍ وَّشَيْءٍ مِّنْ سِدْرٍ قَلِيْلٍ ⑯
ذٰلِكَ جَزَيْنٰهُمْ بِمَا كَفَرُوْا ۭ وَهَلْ نُجٰزِيْٓ
اِلَّا الْكَفُوْرَ ⑰
وَجَعَلْنَا بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ الْقُرَى الَّتِيْ
بٰرَكْنَا فِيْهَا قُرًى ظَاهِرَةً وَّقَدَّرْنَا فِيْهَا
السَّيْرَ ۭ سِيْرُوْا فِيْهَا لَيَالِيَ وَاَيَّامًا اٰمِنِيْنَ ⑱
فَقَالُوْا رَبَّنَا بٰعِدْ بَيْنَ اَسْفَارِنَا وَظَلَمُوْٓا
اَنْفُسَهُمْ فَجَعَلْنٰهُمْ اَحَادِيْثَ وَمَزَّقْنٰهُمْ
كُلَّ مُمَزَّقٍ ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ
صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ⑲

बि-इज़्नि रब्बिही, व मंय्यज़िग़् मिन्हुम् अ़न् अम्रिना नुज़िक़्हु मिन् अ़ज़ाबिस्-सअ़ीर (12)

यअ़्मलू-न लहू मा यशा-उ मिम्-महारी-ब व तमासी-ल व जिफ़ानिन् कल्जवाबि व क़ुदूरिर्-रासियातिन्, इअ़्मलू आ-ल दावू-द शुक्रन्, व क़लीलुम् मिन् अ़िबादि-यश्शकूर (13)

फ़-लम्मा क़ज़ैना अ़लैहिल्-मौ-त मा दल्लहुम् अ़ला मौतिही इल्ला दाब्बतुल्-अर्ज़ि तअ्कुलु मिन्स-अ-तहू फ़-लम्मा ख़र्-र तबय्य-नतिल्-जिन्नु अल्लौ कानू यअ़्लमूनल्-ग़ै-ब मा लबिसू फ़िल्-अ़ज़ाबिल्-मुहीन (14)

ल-क़द् का-न लि-स-बइन् फ़ी मस्कनिहिम् आ-यतुन् जन्नतानि अ़ंय्यमीनिंव्-व शिमालिन्, कुलू मिर्रिज़्क़ि-रब्बिकुम् वश्कुरू लहू, बल्दतुन् तय्यि-बतुंव्-व रब्बुन् ग़फ़ूर (15)

फ़-अअ्-रज़ू फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् सैलल्-अ़रिमि व बद्दल्नाहुम् बिजन्नतैहिम् जन्नतैनि ज़वातै उकुलिन् ख़म्तिंव्-व अस्लिंव्-व शैइम्-मिन् सिद्रिन् क़लील (16)

ज़ालि-क जज़ैनाहुम् बिमा क-फ़रू, व हल् नुजाज़ी इल्लल्-कफ़ूर (17)

व जअ़ल्ना बैनहुम् व बैनल्, क़ुरल्लती बारक्ना फ़ीहा क़ुरन् ज़ाहि-रतंव्-व क़द्दर्ना फ़ीहस्सै-र, सीरू फ़ीहा लयालि-य व अय्यामन् आमिनीन (18)

फ़क़ालू रब्बना बाअ़िद् बै-न अस्फ़ारिना व ज़-लमू अन्फ़ु-सहुम् फ़-जअ़ल्नाहुम् अहादी-स व मज़्ज़क़्नाहुम् कुल्-ल मुमज़्ज़क़िन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (19)

से उसके आगे काम करते थे; (हमारा हुक्म था) "उनमें से जो हमारे हुक्म से फिरेगा, उसे हम दहकती आग का मज़ा चखाएंगे";

13. वो उसके लिए बनाते जो कुछ वह चाहता — ऊंची इमारतें, मुजस्समे, बड़े हौज़ के मानिन्द लगन, और जमी रहती देगें। "ऐ आले दाऊद, शुक्रगुज़ारी के तौरपर अमल करो; मेरे बन्दों में शुक्रगुज़ार थोड़े ही हैं"।

14. फिर जब हमने उसके लिए मौत का फ़ैसला नाफ़िज़ किया, तो फिर उन जिन्नों को उसकी मौत का पता बस ज़मीन के उस कीड़े ने दिया जो उसकी लाठी को खा रहा था; फिर जब वह गिर पड़ा तो जिन्न मुतफ़र्रिक़ हो गए। अगर वो ग़ैब के जानने वाले होते, तो इस ज़िल्लत के अज़ाब में पड़े न रहते।

15. सबा के लिए उनके रहने-बसने के मक़ाम में एक निशानी थी — दाएं और बाएं, दो बाग़, "खाओ अपने रब का रिज़्क़, और उसके शुक्रगुज़ार रहो; ज़मीन भी अच्छी-सी, और रब भी बख़्शनेवाला है"।

16. लेकिन उन्होंने मुंह फेर लिया; तो हमने उनपर बन्द-तोड़ सैलाब भेज दिया, और उनके दोनों बाग़ों के बदले में उन्हें दो दूसरे बाग़ दिए, जिनमें कड़वे-कसैले फल थे और झाऊ, और कुछ थोड़ी-सी झड़-बेरियां।

17. यह बदला हमने उन्हें दिया इस वजह से कि उन्होंने कुफ़्र और नाशुकरी की; ऐसा बदला तो हम बस नाशुकरे ही को देते हैं।

18. और हमने उनके और उन बस्तियों के दरमियान जिनमें हमने बरकत रखी थी नुमायां बस्तियां बसाई और उनमें सफ़र की मंज़िलें ख़ास अन्दाज़े पर रखीं: "उनमें रात-दिन बेख़ौफ़ होकर चलो-फिरो"।

19. मगर उन्होंने कहा, "ऐ हमारे रब, हमारे सफ़रों में दूरी कर दे"। उन्होंने ख़ुद अपने ही ऊपर ज़ुल्म किया, आख़िरकार हमने उन्हें अफ़साने बनाकर रख दिया, और उन्हें बिल्कुल तितर-बितर कर दिया। यक़ीनन इसमें निशानियां हैं हर बड़े सब्र, शुक्र करनेवाले के लिए।

20. इब्लीस ने उनके बारे में अपना गुमान सच कर दिखाया और अहले ईमान के एक गिरोह के सिवा उन्होंने उसकी पैरवी की।

21. अगरचे उसका उनपर कोई ज़ोर इख़्तियार हासिल न था, मगर यह इसलिए कि हम उन लोगों को जो आख़िरत पर ईमान रखते हैं उन लोगों से जो उसकी तरफ़ से किसी शक में पड़े हुए हैं मुमय्यज़ कर दें। तुम्हारा रब हर चीज़ का निगरां है।

22. कह दोः "अल्लाह को छोड़कर जिनका तुम्हें (माबूद होने का) गुमान है उन्हें पुकार देखो; वो न आसमानों में ज़र्रा भर के मालिक हैं और न ज़मीन में; और न उन दोनों में उनका साझा है, और न उनमें से कोई उसका मददगार है।"

23. और उसके यहां कोई सिफ़ारिश काम नहीं आएगी मगर उसी की जिसको उसने इजाज़त दी हो। यहां तक कि जब उनके दिलों से घबराहट दूर कर दी जाती है तो वो कहते हैं, क्या बात है। तुम्हारा रब फ़रमाता है कि "उन्होंने (अहले ईमान ने) सच्ची बात कही है।" और वह निहायत बुलन्द, सब से बड़ा है।

24. कहोः "कौन तुम्हें आसमानों और ज़मीन से रिज़्क़ देता है?" कहोः "अल्लाह!" अब लाज़िमन हम हैं या तुम ही हो हिदायत पर, या खुली हुई गुमराही में।

25. कहोः "जो जुर्म हमने किए, उसकी पुरसिश तुमसे न होगी, और न उसकी पुरसिश हमसे होगी जो तुम करते हो"।

26. कह दोः "हमारा रब हम सब को इकट्ठा करेगा, फिर हमारे दरमियान ठीक-ठीक फ़ैसला फ़रमा देगा। वही ख़ूब फ़ैसला करने वाला, निहायत इल्मवाला है"।

27. कहोः "मुझे उनको दिखाओ तो जिनको तुमने उसके साथ शरीक जोड़ रखा है। हरगिज़ नहीं; बल्कि वही अल्लाह ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है"।

28. हमने तो तुम्हें सारे ही इनसानों के लिए बशारत देने वाला, और ख़बरदार करने वाला बनाकर भेजा, मगर अक्सर लोग जानते नहीं।

29. वो कहते हैं, "यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो?"

30. कह दोः "तुम्हारे लिए एक ख़ास दिन का वादा है जिससे न एक घड़ी

व ल-क़द् सद्-क़ अ़लैहिम् इब्लीसु ज़न्नहू फ़त्त-बअूहु इल्ला फ़रीक़म् मिनल्-मुअ्मिनीन (20)

व मा का-न लहू अ़लैहिम् मिन् सुल्तानिन् इल्ला लिनअ्-ल-म मंय्युअ्मिनु बिल्-आख़िरति मिम्-मन् हु-व मिन्हा फ़ी शक्किन्, व रब्बु-क अ़ला कुल्लि शैइन् हफ़ीज़ (21) ●

कुलिद्अुल्लज़ी-न ज़अ़म्तुम् मिन् दूनिल्लाहि ला यम्लिकू-न मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि व मा लहुम फ़ीहिमा मिन् शिर्किंव्-व मा लहू मिन्हुम् मिन् ज़हीर (22)

व ला तन्फ़अुश्शफ़ा-अ़तु अ़िन्दहू इल्ला लिमन् अज़ि-न लहू, हत्ता इज़ा फ़ुज़्ज़ि-अ़ अ़न् क़ुलूबिहिम् क़ालू माज़ा क़ा-ल रब्बुकुम्, क़ालुल्-हक़्-क़ व हुवल् अ़लिय्युल्-कबीर (23)

क़ुल् मंय्यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समावाति वल्अर्ज़ि, क़ुलिल्लाहु व इन्ना औ इय्याकुम् ल-अ़ला हुदन् औ फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (24)

क़ुल् ला तुस्अलू-न अ़म्मा अज्रम्ना व ला नुस्अलु अ़म्मा तअ्मलून (25)

क़ुल् यज्-मअु बै-नना रब्बुना सुम्-म यफ़्तहु बै-नना बिल्हक़्क़ि, व हुवल् फ़त्ताहुल्-अ़लीम (26)

क़ुल् अरूनियल्लज़ी-न अल्हक़्तुम् बिही शु-रका-अ कल्ला, बल् हुवल्लाहुल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (27)

व मा अर्सल्ना-क इल्ला काफ़्फ़-तल् लिन्नासि बशीरंव्-व नज़ीरंव्-व लाकिन्-न अक्स-रन्नासि ला यअ्लमून (28)

व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (29)

क़ुल् लकुम् मीआ़दु यौमिल्-ला तस्तअ्ख़िरू-न

وَلَقَدْ صَدَّقَ عَلَيْهِمْ إِبْلِيسُ ظَنَّهُ
فَاتَّبَعُوهُ إِلَّا فَرِيقًا مِّنَ الْمُؤْمِنِينَ ۝۲۰
وَمَا كَانَ لَهُ عَلَيْهِم مِّن سُلْطَانٍ إِلَّا لِنَعْلَمَ
مَن يُؤْمِنُ بِالْآخِرَةِ مِمَّنْ هُوَ مِنْهَا فِي
شَكٍّ ۗ وَرَبُّكَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ حَفِيظٌ ۝۲۱
قُلِ ادْعُوا الَّذِينَ زَعَمْتُم مِّن دُونِ
اللَّهِ ۖ لَا يَمْلِكُونَ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ فِي السَّمَاوَاتِ
وَلَا فِي الْأَرْضِ وَمَا لَهُمْ فِيهِمَا مِن شِرْكٍ
وَمَا لَهُ مِنْهُم مِّن ظَهِيرٍ ۝۲۲
وَلَا تَنفَعُ الشَّفَاعَةُ عِندَهُ إِلَّا لِمَنْ
أَذِنَ لَهُ ۚ حَتَّىٰ إِذَا فُزِّعَ عَن قُلُوبِهِمْ
قَالُوا مَاذَا ۙ قَالَ رَبُّكُمْ ۖ قَالُوا الْحَقَّ ۖ
وَهُوَ الْعَلِيُّ الْكَبِيرُ ۝۲۳
قُلْ مَن يَرْزُقُكُم مِّنَ السَّمَاوَاتِ
وَالْأَرْضِ ۖ قُلِ اللَّهُ ۖ وَإِنَّا أَوْ إِيَّاكُمْ
لَعَلَىٰ هُدًى أَوْ فِي ضَلَالٍ مُّبِينٍ ۝۲۴
قُل لَّا تُسْأَلُونَ عَمَّا أَجْرَمْنَا وَلَا نُسْأَلُ
عَمَّا تَعْمَلُونَ ۝۲۵
قُلْ يَجْمَعُ بَيْنَنَا رَبُّنَا ثُمَّ يَفْتَحُ بَيْنَنَا
بِالْحَقِّ وَهُوَ الْفَتَّاحُ الْعَلِيمُ ۝۲۶
قُلْ أَرُونِيَ الَّذِينَ أَلْحَقْتُم بِهِ شُرَكَاءَ ۖ
كَلَّا ۚ بَلْ هُوَ اللَّهُ الْعَزِيزُ الْحَكِيمُ ۝۲۷
وَمَا أَرْسَلْنَاكَ إِلَّا كَافَّةً لِّلنَّاسِ بَشِيرًا
وَنَذِيرًا وَلَٰكِنَّ أَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُونَ ۝۲۸
وَيَقُولُونَ مَتَىٰ هَٰذَا الْوَعْدُ إِن كُنتُمْ
صَادِقِينَ ۝۲۹
قُل لَّكُم مِّيعَادُ يَوْمٍ لَّا تَسْتَأْخِرُونَ

भर पीछे हटोगे और न आगे बढ़ोगे"।

31. जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वो कहते हैं "हम इस क़ुरआन पर हरगिज़ ईमान न लाएंगे और न उस चीज़ पर जो उसके आगे है।" और अगर तुम देख पाते जबकि ज़ालिम अपने रब के हुज़ूर खड़े किए जाएंगे? वो आपस में एक-दूसरे पर बात डाल रहे होंगे। जो लोग कमज़ोर समझे गए वो उन लोगों से जो बड़े बनते थे कहेंगे कि "अगर तुम न होते, तो हम लाज़िमन मोमिन होते"।

32. वो लोग जो बड़े बनते थे उन लोगों से जो कमज़ोर समझे गए थे कहेंगे, "क्या हमने तुम्हें हिदायत से रोका था जबकि वह तुम्हारे पास आई थी? नहीं, बल्कि तुम खुद ही मुजरिम हो"।

33. वो लोग जो कमज़ोर समझे गए थे बड़े बनने वालों से कहेंगे, "नहीं, बल्कि रात-दिन की मक्कारी थी, जब तुम हम से कहते थे कि हम अल्लाह के साथ कुफ़्र करें और दूसरों को उसका हमसर ठहराएं"। जब वो अज़ाब देखेंगे तो अन्दर ही अन्दर पछताएंगे और हम उन लोगों की गर्दनों में जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया तौक़ डाल देंगे, वो वही बदला पाएंगे जो वो करते रहे थे,

34. हमने जिस बस्ती में भी कोई ख़बरदार करने वाला भेजा तो वहां के खुशहाल लोगों ने यही कहा कि "जो कुछ देकर तुम्हें भेजा गया है हम तो उसके मुनकिर हैं"।

35. उन्होंने कहा कि "हम तो माल और औलाद में तुमसे बढ़कर हैं, और हम अज़ाब में मुबतला होनेवाले नहीं"।

36. कह दो: "बेशक मेरा रब जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और जिसे चाहता है नपा-तुला अता करता है, मगर अक्सर लोग जानते नहीं।

37. वो चीज़ न तुम्हारे माल हैं और न तुम्हारी औलाद जो तुम्हें हमसे क़रीब करे, अलबत्ता जो कोई ईमान लाया, और उसने नेक अमल किया; — तो ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए उसका कई गुना बदला है, जो वो करते रहे, और वो बुलन्द व बाला

अ़न्हु सा-अतंव्-व ला तस्तक़्दिमून
● (30) ●

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लन्-नुअ्मि-न बिहाज़ल्-क़ुरआनि व ला बिल्लज़ी बै-न यदैहि, व लौ तरा इज़िज़्ज़ालिमू-न मौक़ूफ़ू-न अ़िन्-द रब्बिहिम् यर्जिअु बअ्ज़ुहुम् इला बअ्ज़ि-निल् क़ौ-ल यक़ूलुल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू लिल्लज़ीनस्तक्बरू लौ ला अन्तुम लकुन्ना मुअ्मिनीन (31)
क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू लिल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू अ-नह्नु सदद्नाकुम् अ़निल्हुदा बअ्-द इज़् जा-अकुम् बल् कुन्तुम् मुज्रिमीन (32)
व क़ालल्लज़ीनस्तुज़्अिफ़ू लिल्लज़ीनस्तक्बरू बल् मक्रुल्लैलि वन्नहारि इज़् तअ्मुरू-नना अन् नक्फ़ु-र बिल्लाहि व नज्-अ़-ल लहू अन्दादन्, व असर्रुन्नदा-म-त लम्मा र-अवुल् अ़ज़ा-ब, व जअ़ल्नल्-अ़ग्ला-ल फ़ी अअ्नाक़िल्लज़ी-न क-फ़रू, हल् युज्ज़ौ-न इल्ला मा कानू यअ्मलून (33)
व मा अर्सल्ना फ़ी क़र्यतिम्-मिन् नज़ीरिन् इल्ला क़ा-ल मुत्-रफ़ूहा इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (34)
व क़ालू नह्नु अक्सरु अम्वालंव्-व औलादंव्-व मा नह्नु बिमु-अ़ज़्ज़बीन (35)
क़ुल् इन्-न रब्बी यब्सुतुर्-रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु व लाकिन्-न अक्स-रन्नासि ला यअ्लमून (36)●
व मा अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् बिल्लती तुक़र्रिबुकुम् अ़िन्-दना ज़ुल्फ़ा इल्ला मन् आम-न व अ़मि-ल सालिहन् फ़-उलाइ-क लहुम् जज़ाउज़्-ज़िअ्फ़ि
बिमा अ़मिलू व हुम् फ़िल्-ग़ुरुफ़ाति

عَنْهُ سَاعَةً وَّلَا تَسْتَقْدِمُوْنَ ﴿٣٠﴾
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَنْ نُّؤْمِنَ بِهٰذَا
الْقُرْاٰنِ وَلَا بِالَّذِيْ بَيْنَ يَدَيْهِ ۭ وَلَوْ تَرٰٓى
اِذِ الظّٰلِمُوْنَ مَوْقُوْفُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ښ
يَرْجِعُ بَعْضُهُمْ اِلٰى بَعْضِ ۨ الْقَوْلَ ۚ
يَقُوْلُ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْا لَوْلَآ اَنْتُمْ لَكُنَّا مُؤْمِنِيْنَ ﴿٣١﴾
قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْا لِلَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْٓا
اَنَحْنُ صَدَدْنٰكُمْ عَنِ الْهُدٰى بَعْدَ
اِذْ جَاۗءَكُمْ بَلْ كُنْتُمْ مُّجْرِمِيْنَ ﴿٣٢﴾
وَقَالَ الَّذِيْنَ اسْتُضْعِفُوْا لِلَّذِيْنَ
اسْتَكْبَرُوْا بَلْ مَكْرُ الَّيْلِ وَالنَّهَارِ اِذْ
تَاْمُرُوْنَنَآ اَنْ نَّكْفُرَ بِاللّٰهِ وَنَجْعَلَ لَهٗٓ
اَنْدَادًا ۭ وَاَسَرُّوا النَّدَامَةَ لَمَّا رَاَوُا الْعَذَابَ ۭ
وَجَعَلْنَا الْاَغْلٰلَ فِيْٓ اَعْنَاقِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ
هَلْ يُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ﴿٣٣﴾
وَمَآ اَرْسَلْنَا فِيْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا
قَالَ مُتْرَفُوْهَآ ۙ اِنَّا بِمَآ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ
كٰفِرُوْنَ ﴿٣٤﴾
وَقَالُوْا نَحْنُ اَكْثَرُ اَمْوَالًا وَّ اَوْلَادًا ۙ
وَّمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٣٥﴾
قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ
يَّشَاۗءُ وَيَقْدِرُ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٦﴾
وَمَآ اَمْوَالُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ بِالَّتِيْ
تُقَرِّبُكُمْ عِنْدَنَا زُلْفٰٓى اِلَّا مَنْ اٰمَنَ وَعَمِلَ
صَالِحًا ۡ فَاُولٰۗىِٕكَ لَهُمْ جَزَاۗءُ الضِّعْفِ

इमारतों में बेख़ौफ़ होकर रहेंगे।

38. रहे वो लोग जो हमारी आयतों को नीचा दिखाने के लिए सरगरम हैं, वो लाकर अज़ाब में मुबतला किए जाएंगे।

39. कह दोः "मेरा रब ही है जो अपने बन्दों में से जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपा-तुला कर देता है; और जो तुमने ख़र्च किया, उसकी जगह वह तुम्हें और देगा। वह बेहतरीन राज़िक़ है।

40. याद करो जिस दिन वह उन सब को इकट्ठा करेगा, फिर फ़रिश्तों से कहेगा, "क्या यही वो लोग हैं जो तुम को ही पूजते रहे हैं?"

41. वो कहेंगे, "अज़ीम व बरतर है तू! हमारा क़रीबी तअल्लुक़ तो उनसे नहीं तुझ से है; बल्कि ये जिन्नों को पूजते थे; उनकी अकसरियत उन्ही पर ईमान रखती थी"।

42. "पस आज न तो तुम बाहम एक-दूसरे के नफ़ा का इख़्तियार रखते हो और न नुक़सान का"। और हम ज़ालिमों से कहेंगे कि "अब उस आग के अज़ाब का मज़ा चखो जिसे तुम झुटलाते रहे हो!"

43. उन्हें जब हमारी रोशन आयतें पढ़कर सुनाई जाती हैं, तो वो कहते हैं "यह तो बस ऐसा शख़्स है जो चाहता है कि तुम्हें उनसे रोक दे जिनको तुम्हारे बाप-दादा पूजते आए"। और कहते हैं, "यह तो एक घड़ा हुआ झूट है"। जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्होंने हक़ के बारे में जबकि वह उनके पास आया कहा, "यह तो बस एक सरीह जादू है"।

44. हमने उन्हें न तो किताबें दी थी जिनको वो पढ़ते हों, और न तुमसे पहले उनकी तरफ़ कोई मुतनब्बेह करनेवाला भेजा था।

45. और झुटलाया उन लोगों ने भी जो उनसे पहले थे, और ये तो उसके दसवें हिस्से को भी नहीं पहुंचे हैं जो हमने उन्हें दिया था; तो उन्होंने मेरे रसूलों को झुटलाया, तो फिर कैसा रहा मेरा इनकार!

46. कहोः "मैं तुम्हें बस एक बात की नसीहत करता हूं कि अल्लाह के लिए दो-दो और एक-एक करके उठ खड़े हो, फिर ग़ौर करो; तुम्हारे रफ़ीक़

आमिनून (37)

वल्लज़ी-न यस्औ-न फ़ी आयातिना मुआजिज़ी-न उलाइ-क फ़िल्-अज़ाबि मुह्ज़रून (38)

कुल् इन्-न रब्बी यब्सुतुर्रिज़्-क लिमंय्यशा-उ मिन् अिबादिही व यक़्दिरु लहू, व मा अन्फ़क़्तुम् मिन् शैइन् फ़हु-व युख़्लिफ़ुहू व हु-व ख़ैरुर्-राज़िक़ीन (39)

व यौ-म यह्शुरुहुम् जमीअन् सुम्-म यक़ूलु लिल्मलाइ-कति अ-हाउला-इ इय्याकुम् कानू यअ्बुदून (40)

क़ालू सुब्हान-क अन्-त वलिय्युना मिन् दूनिहिम् बल् कानू यअ्बुदूनल्-जिन्-न अक्सरुहुम् बिहिम् मुअ्मिनून (41)

फ़ल्यौ-म ला यम्लिकु बअ्ज़ुकुम् लि-बअ्ज़िन् नफ़्अंव्-व ला ज़र्रन्, व नक़ूलु लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़ूक़ू अ़ज़ाबन्-नारिल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (42)

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालू मा हाज़ा इल्ला रजुलुंय्-युरीदु अंय्यसुद्दकुम् अ़म्मा का-न यअ्बुदु आबाउकुम् व क़ालू मा हाज़ा इल्ला इफ़्कुम् मुफ़्तरन्, व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (43)

व मा आतैनाहुम् मिन् कुतुबिंय्-यद्रुसूनहा व मा अर्सल्ना इलैहिम् क़ब्ल-क मिन् नज़ीर (44)

व कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व मा ब-लग़ू मिअ्शा-र मा आतैनाहुम् फ़-कज़्ज़बू रुसुली, फ़कै-फ़ का-न नकीर (45) ●

कुल् इन्नमा अअ़िज़ुकुम् बिवाहि-दतिन् अन् तक़ूमू लिल्लाहि मस्ना व फ़ुरादा सुम्-म त-तफ़क्करू, मा

बिसाहिबिकुम् मिन् जिन्नतिन्, इन्

بِمَا عَمِلُوْا وَهُمْ فِي الْغُرُفٰتِ اٰمِنُوْنَ (٣٧)

وَالَّذِيْنَ يَسْعَوْنَ فِيْٓ اٰيٰتِنَا مُعٰجِزِيْنَ اُولٰٓئِكَ فِي الْعَذَابِ مُحْضَرُوْنَ (٣٨)

قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَبْسُطُ الرِّزْقَ لِمَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ وَيَقْدِرُ لَهٗ ؕ وَمَآ اَنْفَقْتُمْ مِّنْ شَيْءٍ فَهُوَ يُخْلِفُهٗ ۚ وَهُوَ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ (٣٩)

وَيَوْمَ يَحْشُرُهُمْ جَمِيْعًا ثُمَّ يَقُوْلُ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اَهٰٓؤُلَآءِ اِيَّاكُمْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ (٤٠)

قَالُوْا سُبْحٰنَكَ اَنْتَ وَلِيُّنَا مِنْ دُوْنِهِمْ ۚ بَلْ كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ الْجِنَّ ۚ اَكْثَرُهُمْ بِهِمْ مُّؤْمِنُوْنَ (٤١)

فَالْيَوْمَ لَا يَمْلِكُ بَعْضُكُمْ لِبَعْضٍ نَّفْعًا وَّلَا ضَرًّا ؕ وَنَقُوْلُ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذُوْقُوْا عَذَابَ النَّارِ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ (٤٢)

وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّا رَجُلٌ يُّرِيْدُ اَنْ يَّصُدَّكُمْ عَمَّا كَانَ يَعْبُدُ اٰبَآؤُكُمْ ۚ وَقَالُوْا مَا هٰذَآ اِلَّآ اِفْكٌ مُّفْتَرًى ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ ۙ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ (٤٣)

وَمَآ اٰتَيْنٰهُمْ مِّنْ كُتُبٍ يَّدْرُسُوْنَهَا وَمَآ اَرْسَلْنَآ اِلَيْهِمْ قَبْلَكَ مِنْ نَّذِيْرٍ (٤٤)

وَكَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۙ وَمَا بَلَغُوْا مِعْشَارَ مَآ اٰتَيْنٰهُمْ فَكَذَّبُوْا رُسُلِيْ ۫ فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ (٤٥) ع

قُلْ اِنَّمَآ اَعِظُكُمْ بِوَاحِدَةٍ ۚ اَنْ تَقُوْمُوْا لِلّٰهِ مَثْنٰى وَفُرَادٰى ثُمَّ تَتَفَكَّرُوْا ۫ مَا

को कोई जुनून नहीं है। वह तो एक सख़्त अज़ाब से पहले तुम्हें ख़बरदार करने वाला है"।

47. कहो: "मैंने तुमसे कोई अजर मांगा है तो वह तुम्हारे ही लिए है। मेरा अजर तो बस अल्लाह के ज़िम्मे है; और वह हर चीज़ पर गवाह है"।

48. कह दो: "यक़ीनन मेरा रब हक़ के ज़रिए से दूर फेंक रहा है (बातिल को), वह ग़ैब की बातों को ख़ूब जानता है"।

49. कह दो: "हक़ आ गया (बातिल मिट गया) और बातिल न आग़ाज़ करता है और न इआदा ही"।

50. कहो: "अगर मैं गुमराह हो जाऊं, तो मेरे गुमराह होने का वबाल मुझ पर है; और अगर मैं हिदायत पर हूं, तो यह उस वही की बदौलत जो मेरा रब मेरी तरफ़ करता है। बेशक वह सब कुछ सुनता है, क़रीब ही है"।

51. और अगर तुम देख लेते जबकि वो घबराए हुए होंगे, वो बच कर भाग न सकेंगे, और पास ही से पकड़ लिए जाएंगे,

52. और कहेंगे, "हम उसपर ईमान ले आए"; हालांकि इतनी दूर से उनके लिए उसका पाना कहां मुमकिन है,

53. इससे पहले तो उन्होंने उसका इन्कार किया, और दूर के मक़ाम से बग़ैर देखे तीर-तुक्के चलाते रहे।

54. उनके और उनकी चाहतों के दरमियान रोक लगा दी जाएगी, जिस तरह इससे पहले उन जैसों के साथ मुआमला किया गया; यक़ीनन वो उलझन में डाल देने वाले शक में पड़े रहे हैं।

सूरह फ़ातिर मक्की

(आयतें 45, रुकूआत 5)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. सब तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जो आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है और बाज़ुओं वाले दो-दो, तीन-तीन और चार-चार फ़रिश्तों को पैग़ाम रसां बनाकर मुक़र्रर करता है। वह तख़लीक़ में जो चाहता है इज़ाफ़ा फ़रमाता है। यक़ीनन अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

हु-व इल्ला नज़ीरुल्-लकुम् बै-न यदै अ़ज़ाबिन् शदीद (46)

क़ुल् मा सअल्तुकुम् मिन् अज्रिन् फ़हु-व लकुम्, इन् अज्रि-य इल्ला अ़लल्लाहि व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (47)

क़ुल इन्-न रब्बी यक़्ज़िफ़ु बिल्हक़्क़ि अ़ल्लामुल्-ग़ुयूब (48)

क़ुल् जा-अल्हक़्क़ु व मा युब्दिउल्-बातिलु व मा युअ़ीद (49)

क़ुल इन् ज़लल्तु फ़-इन्नमा अज़िल्लु अ़ला नफ़्सी व इनिह्तदैतु फ़-बिमा यूही इलय्-य रब्बी, इन्नहू समीअुन् क़रीब (50)

व लौ तरा इज़् फ़ज़िअू फ़ला फ़ौ-त व उख़िज़ू मिम्-मकानिन् क़रीब (51)

व क़ालू आमन्ना बिही व अन्ना लहुमुत्-तनावुशु मिम्-मकानिम्-बअ़ीद (52)

व क़द् क-फ़रू बिही मिन् क़ब्लु व यक़्ज़िफ़ू-न बिलग़ैबि मिम्-मकानिम्-बअ़ीद (53)

व ही-ल बैनहुम् व बै-न मा यश्तहू-न कमा फ़ुअि-ल बिअश्याअिहिम् मिन् क़ब्लु, इन्नहुम् कानू फ़ी शक्किम् मुरीब (54) ●

35 सूरतु फ़ातिरिन्
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3289 अक्षर, 792 शब्द, 45 आयतें और 5 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हम्दु लिल्लाहि फ़ातिरिस्समावाति वल्अर्ज़ि जाअ़िलिल्-मलाइ-कति रुसुलन् उली अज्नि-हतिम् मस्ना व सुला-स व रुबा-अ़, यज़ीदु फ़िल्-ख़ल्कि मा यशा-उ, इन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (1)

بِصَاحِبِكُمْ مِّنْ جِنَّةٍ ۭ اِنْ هُوَ اِلَّا نَذِيْرٌ لَّكُمْ
بَيْنَ يَدَيْ عَذَابٍ شَدِيْدٍ (٤٦)
قُلْ مَا سَاَلْتُكُمْ مِّنْ اَجْرٍ فَهُوَ لَكُمْ ۭ
اِنْ اَجْرِيَ اِلَّا عَلَى اللّٰهِ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيْدٌ (٤٧)
قُلْ اِنَّ رَبِّيْ يَقْذِفُ بِالْحَقِّ ۚ عَلَّامُ
الْغُيُوْبِ (٤٨)
قُلْ جَاۗءَ الْحَقُّ وَمَا يُبْدِئُ الْبَاطِلُ
وَمَا يُعِيْدُ (٤٩)
قُلْ اِنْ ضَلَلْتُ فَاِنَّمَآ اَضِلُّ عَلٰي
نَفْسِيْ ۚ وَاِنِ اهْتَدَيْتُ فَبِمَا يُوْحِيْٓ
اِلَيَّ رَبِّيْ ۭ اِنَّهٗ سَمِيْعٌ قَرِيْبٌ (٥٠)
وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ فَزِعُوْا فَلَا فَوْتَ وَاُخِذُوْا
مِنْ مَّكَانٍ قَرِيْبٍ (٥١)
وَّقَالُوْٓا اٰمَنَّا بِهٖ ۚ وَاَنّٰى لَهُمُ التَّنَاوُشُ
مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ (٥٢)
وَّقَدْ كَفَرُوْا بِهٖ مِنْ قَبْلُ ۚ وَيَقْذِفُوْنَ
بِالْغَيْبِ مِنْ مَّكَانٍۢ بَعِيْدٍ (٥٣)
وَحِيْلَ بَيْنَهُمْ وَبَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ كَمَا
فُعِلَ بِاَشْيَاعِهِمْ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا
فِيْ شَكٍّ مُّرِيْبٍ (٥٤) ع

سُوْرَةُ فَاطِرٍ مَّكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٤٥ رُكُوْعَاتُهَا ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ فَاطِرِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
جَاعِلِ الْمَلٰۗىِٕكَةِ رُسُلًا اُولِيْٓ اَجْنِحَةٍ
مَّثْنٰى وَثُلٰثَ وَرُبٰعَ ۭ يَزِيْدُ فِي الْخَلْقِ
مَا يَشَاۗءُ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلٰي كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ (١)

2. अल्लाह जो रहमत लोगों के लिए खोल दे, उसे कोई रोकनेवाला नहीं, और जिसे वह रोक ले, तो उसके बाद उसे कोई जारी करनेवाला भी नहीं। वह ज़बरदस्त, निहायत हिक्मतवाला है।

3. ऐ लोगो! अल्लाह की तुम पर जो नवाज़िश है उसे याद करो; क्या अल्लाह के सिवा कोई और ख़ालिक़ है, जो तुम्हें आसमान और ज़मीन से रिज़्क़ देता हो? उसके सिवा कोई माबूद नहीं; तो तुम कहां औंधे हुए जाते हो?

4. और अगर वो तुम्हें झुटलाते हैं, तो तुम से पहले भी कितने ही रसूल झुटलाए जा चुके हैं; अल्लाह ही की तरफ़ सारे मुआमलात पलटते हैं।

5. ऐ लोगो! अल्लाह का वादा यक़ीनन बर हक़ है; लिहाज़ा दुनिया की ज़िन्दगी तुम्हें धोके में न डाले, और न वह बड़ा फ़रेबकार अल्लाह के बारे में तुम्हें धोके में रखे।

6. यक़ीनन शैतान तुम्हारा दुश्मन है; पस तुम उसे दुश्मन ही समझो। वह तो अपने गिरोह को सिर्फ़ इसी लिए बुलाता है कि वो दहकती आग वालों में से हो जाएं।

7. वो लोग कि जिन्होंने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की, उनके लिए सख़्त अज़ाब है; मगर जो ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल इख़्तियार किए उनके लिए मग़फ़िरत और बड़ा अजर है।

8. फिर क्या वह शख़्स जिसके लिए उसका बुरा अमल ख़ुशनुमा बना दिया गया हो, और वह उसे अच्छा समझता हो (तो क्या वह बुराई से बाज़ आ जाएगा?) पस अल्लाह ही जिसको चाहता है गुमराह कर देता है। और जिसे चाहता है हिदायत देता है; पस उनके लिए अफ़सोस करते-करते तुम्हारी जान न जाती रहे; अल्लाह ख़ूब जानता है जो कुछ वो रच रहे हैं।

9. अल्लाह ही तो है जिसने हवाएं चलाई फिर वो बादल को उभारती हैं, फिर हम उसे किसी ख़ुश्क व बेजान सरज़मीन की तरफ़ ले गए, और उसके ज़रिए से हमने ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दगी बख़्श दी। इसी तरह (लोगों का अज़सरे नौ) ज़िन्दा होकर उठना भी है।

10. जो कोई इज़्ज़त चाहता हो, तो इज़्ज़त तो सारी की सारी अल्लाह की है। उसकी तरफ़ अच्छा पाकीज़ा क़ौल (बात) चढ़ता है और नेक अमल उसे बुलन्द करता है; रहे वो लोग जो बुरी चालें चलते हैं, उनके लिए सख़्त अज़ाब है और उनकी चालबाज़ी मलियामेट होकर रहेगी।

मा यफ़्तहिल्लाहु लिन्नासि मिर्रह्मतिन् फ़ला मुम्सि-क लहा व मा युम्सिक् फ़ला मुर्सि-ल लहू मिम्बअ्दिही, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (2)

या अय्युहन्नासुज़्कुरू निअ्-मतल्लाहि अ़लैकुम्, हल् मिन् ख़ालिक़िन् ग़ैरुल्लाहि यर्ज़ुक़ुकुम् मिनस्समा-इ वल्अर्ज़ि, ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुअ्फ़कून (3)

व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कुज़्ज़िबत् रुसुलुम् मिन् क़ब्लि-क, व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर (4)

या अय्युहन्नासु इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़ला तग़ुर्रन्नकुमुल्-हयातुद्दुन्या व ला यग़ुर्रन्नकुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर (5)

इन्नश्-शैता-न लकुम् अ़दुव्वुन् फ़त्तख़िज़ूहु अ़दुव्वन्, इन्नमा यद्अू हिज़्बहू लि-यकूनू मिन् अस्हाबिस्सअ़ीर (6)

अल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन्, वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् कबीर (7)●

अ-फ़-मन् ज़ुय्यि-न लहू सूउ अ़-मलिही फ़-रआहु ह-सनन्, फ़-इन्नल्ला-ह युज़िल्लु मंय्यशा-उ व यह्दी मंय्यशा-उ फ़ला तज़्हब् नफ़्सु-क अ़लैहिम् ह-सरातिन्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुम्-बिमा यस्-नअ़ून (8)

वल्लाहुल्लज़ी अर्-सलर्-रिया-ह फ़-तुसीरु सहाबन् फ़-सुक़्नाहु इला ब-लदिम्-मय्यितिन् फ़-अह्यैना बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, कज़ालिकन्-नुशूर (9)

मन् का-न युरीदुल्-अ़िज़्ज़-त फ़लिल्लाहिल्-अ़िज़्ज़तु जमीअ़न्, इलैहि यस्-अ़दुल्-कलिमुत्तय्यिबु वल्-अ़-मलुस्-सालिहु यर्-फ़अुहू, वल्लज़ी-न यम्कुरूनस्सय्यिआति लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुन्, व मक्रु उलाइ-क हु-व यबूर (10)

مَا يَفْتَحِ اللّٰهُ لِلنَّاسِ مِنْ رَّحْمَةٍ فَلَا
مُمْسِكَ لَهَا ۚ وَمَا يُمْسِكْ ۙ فَلَا مُرْسِلَ لَهٗ
مِنْ بَعْدِهٖ ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝۲
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوْا نِعْمَتَ اللّٰهِ عَلَيْكُمْ ۭ
هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللّٰهِ يَرْزُقُكُمْ مِّنَ السَّمَاۗءِ
وَالْاَرْضِ ۭ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ڮ فَاَنّٰى تُؤْفَكُوْنَ ۝۳
وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كُذِّبَتْ رُسُلٌ مِّنْ
قَبْلِكَ ۭ وَاِلَى اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ ۝۴
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ فَلَا
تَغُرَّنَّكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۪ وَلَا يَغُرَّنَّكُمْ
بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ۝۵
اِنَّ الشَّيْطٰنَ لَكُمْ عَدُوٌّ فَاتَّخِذُوْهُ عَدُوًّا ۭ
اِنَّمَا يَدْعُوْا حِزْبَهٗ لِيَكُوْنُوْا مِنْ اَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ۝۶
اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ڛ
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ لَهُمْ
ع مَّغْفِرَةٌ وَّاَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝۷
اَفَمَنْ زُيِّنَ لَهٗ سُوْۗءُ عَمَلِهٖ فَرَاٰهُ حَسَنًا ۭ
فَاِنَّ اللّٰهَ يُضِلُّ مَنْ يَّشَاۗءُ وَيَهْدِيْ
مَنْ يَّشَاۗءُ ڮ فَلَا تَذْهَبْ نَفْسُكَ عَلَيْهِمْ
حَسَرٰتٍ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِمَا يَصْنَعُوْنَ ۝۸
وَاللّٰهُ الَّذِيْٓ اَرْسَلَ الرِّيٰحَ فَتُثِيْرُ
سَحَابًا فَسُقْنٰهُ اِلٰى بَلَدٍ مَّيِّتٍ فَاَحْيَيْنَا
بِهِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ كَذٰلِكَ النُّشُوْرُ ۝۹
مَنْ كَانَ يُرِيْدُ الْعِزَّةَ فَلِلّٰهِ الْعِزَّةُ جَمِيْعًا ۭ
اِلَيْهِ يَصْعَدُ الْكَلِمُ الطَّيِّبُ وَالْعَمَلُ الصَّالِحُ
يَرْفَعُهٗ ۭ وَالَّذِيْنَ يَمْكُرُوْنَ السَّيِّاٰتِ لَهُمْ
عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۭ وَمَكْرُ اُولٰۗىِٕكَ هُوَ يَبُوْرُ ۝۱۰

11. अल्लाह ने तुम्हें मिट्टी से पैदा किया, फिर नुत्फ़ा से, फिर तुम्हें जोड़े-जोड़े बनाया। बग़ैर उसके इल्म के न कोई औरत हामिला होती है और न जनती है; और जो कोई उम्र पानेवाला उम्र पाता है और जो कुछ भी उसकी उम्र में कमी होती है, लाज़िमन यह सब एक किताब में लिखा हुआ है। यक़ीनन यह सब अल्लाह के लिए निहायत आसान है।

12. समुंदर के दोनों ज़ख़ीरे यकसां नहीं हैं; यह मीठा ख़ुशमज़ा है जिससे प्यास जाती रहे, पीने में ख़ुशगवार, और यह खारी कड़वा है। और तुम हर एक में से तर व ताज़ा गोश्त खाते हो, और सामान-ए-ज़ीनत निकालते हो जिसे पहनते हो; और तुम कश्तियों को देखते हो चीरती हुई उसमें चली जा रही हैं, ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो, और ताकि तुम शुक्रगुज़ार रहो।

13. वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल फ़रमाता है, उसने सूरज और चांद को मुसख़्ख़र कर रखा है, हर एक, एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए चला जा रहा है। यही अल्लाह तुम्हारा रब है, उसी की बादशाही है; उससे हटकर जिनको तुम पुकारते हो, वो ज़रा भी किसी चीज़ के मालिक नहीं।

14. अगर तुम उन्हें पुकारो, तो वो तुम्हारी पुकार सुनेंगे नहीं, और अगर वो सुनते, तो भी तुम्हारी गुज़ारिश क़बूल न करते; और क़ियामत के रोज़ वो तुम्हारे शिर्क का इनकार करेंगे। एक बाख़बर की तरह कोई तुम्हें न बताएगा।

15. ऐ लोगो! तुम ही अल्लाह के मुहताज हो; अल्लाह तो ग़नी (बेनियाज़), तारीफ़ वाला है।

16. अगर वह चाहे, तो तुम्हें हटा दे और एक नई मख़्लूक़ ले आए;

17. और यह अल्लाह के लिए कुछ भी मुश्किल नहीं।

18. कोई बोझ उठाने वाली जान किसी दूसरी जान का बोझ उठाने की नहीं; और अगर कोई गिरां बार शख़्स किसी को अपने बोझ की तरफ़ बुलाए, तो उसमें से कुछ भी न उठाया जाएगा, अगरचे वह बुलाया हुआ शख़्स क़रीब का रिश्तेदार ही क्यों न हो। तुम तो बस उन लोगों को ख़बरदार कर सकते हो जो ग़ैब में रहते हुए अपने रब से डरते हैं और नमाज़ के पाबन्द हो चुके हैं और जो

वल्लाहु ख़-ल-क़कुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म ज-अ-लकुम् अज़्वाजन्, व मा तह्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़अु इल्ला बिअिल्मिही, व मा युअम्म-रु मिम्-मुअम्म-रिंव्-व ला युन्क़सु मिन् अुमुरिही इल्ला फ़ी किताबिन्, इन्-न ज़ालि-क अलल्लाहि यसीर (11)

व मा यस्तविल्-बह्रानि हाज़ा अज़्बुन् फ़ुरातुन् सा-इग़ुन् शराबुहू व हाज़ा मिल्हुन् उजाजुन्, व मिन् कुल्लिन् तअ्कुलू-न लह्मन् तरिय्यंव्-व तस्तख़्रिजू-न हिल्य-तन् तल्बसूनहा व तरल्-फ़ुल्-क फ़ीहि मवाख़ि-र लितब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअल्लकुम् तश्कुरून (12)

यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन्नहा-र फ़िल्लैलि व सख़्ख़-रश्शम्-स वल्क़-म-र कुल्लुंय्-यज्री लि-अ-जलिम्-मुसम्मन्, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्-मुल्कु, वल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिही मा यम्लिकू-न मिन् क़ित्मीर (13)

इन् तद्अूहुम् ला यस्मअू दुआ-अकुम् व लौ समिअू मस्तजाबू लकुम्, व यौमल्-क़ियामति यक्फ़ुरू-न बिशिर्किकुम् व ला युनब्बिउ-क मिस्लु ख़बीर ●(14) ●

या अय्युहन्नासु अन्तुमुल्-फ़ु-करा-उ इलल्लाहि वल्लाहु हुवल् ग़निय्युल्-हमीद (15)

इंय्यशअ् युज़्हिब्कुम् व यअ्ति बिख़ल्क़िन् जदीद (16)

व मा ज़ालि-क अलल्लाहि बि-अज़ीज़ (17)

व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा, व इन् तद्अु मुस्क़-लतुन् इला हिम्लिहा ला युह्मल् मिन्हु शैउंव्-व लौ का-न ज़ा-क़ुरबा, इन्नमा तुन्ज़िरुल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि व अक़ामुस्-सला-त, व मन् तज़क्का फ़-इन्नमा य-तज़क्का लि-नफ़्सिही,

وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ
ثُمَّ جَعَلَكُمْ اَزْوَاجًا ۭ وَمَا تَحْمِلُ مِنْ اُنْثٰى
وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ۭ وَمَا يُعَمَّرُ
مِنْ مُّعَمَّرٍ وَّلَا يُنْقَصُ مِنْ عُمُرِهٖٓ
اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ ۭ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ⑪
وَمَا يَسْتَوِي الْبَحْرٰنِ ڰ هٰذَا عَذْبٌ فُرَاتٌ
سَاۗىِٕغٌ شَرَابُهٗ وَهٰذَا مِلْحٌ اُجَاجٌ ۭ وَمِنْ
كُلٍّ تَاْكُلُوْنَ لَحْمًا طَرِيًّا وَّتَسْتَخْرِجُوْنَ
حِلْيَةً تَلْبَسُوْنَهَا ۚ وَتَرَى الْفُلْكَ فِيْهِ مَوَاخِرَ
لِتَبْتَغُوْا مِنْ فَضْلِهٖ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُوْنَ ⑫
يُوْلِجُ الَّيْلَ فِي النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ
فِي الَّيْلِ ۙ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ڮ كُلٌّ
يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ
لَهُ الْمُلْكُ ۭ وَالَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ
دُوْنِهٖ مَا يَمْلِكُوْنَ مِنْ قِطْمِيْرٍ ⑬
اِنْ تَدْعُوْهُمْ لَا يَسْمَعُوْا دُعَاۗءَكُمْ ۚ وَلَوْ سَمِعُوْا
مَا اسْتَجَابُوْا لَكُمْ ۭ وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ يَكْفُرُوْنَ
بِشِرْكِكُمْ ۭ وَلَا يُنَبِّئُكَ مِثْلُ خَبِيْرٍ ⑭
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اَنْتُمُ الْفُقَرَاۗءُ اِلَى
اللّٰهِ ۚ وَاللّٰهُ هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ⑮
اِنْ يَّشَاْ يُذْهِبْكُمْ وَيَاْتِ بِخَلْقٍ جَدِيْدٍ ⑯
وَمَا ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ بِعَزِيْزٍ ⑰
وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۭ وَاِنْ
تَدْعُ مُثْقَلَةٌ اِلٰى حِمْلِهَا لَا يُحْمَلْ مِنْهُ
شَيْءٌ وَّلَوْ كَانَ ذَا قُرْبٰى ۭ اِنَّمَا تُنْذِرُ
الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ ۭ وَمَنْ تَزَكّٰى فَاِنَّمَا يَتَزَكّٰى لِنَفْسِهٖ

अपना तज़किया करता है वह खुद अपने ही लिए तज़किया करता है और लौटकर जाना तो अल्लाह ही की तरफ़ है।

19-23. अंधा और आंखोंवाला बराबर नहीं, और न तारीकियां और न रौशनी और न साया और न धूप; और न ज़िन्दे और न मुर्दे यकसां हैं। यक़ीनन अल्लाह जिसे चाहता है सुनाता है; तुम उन्हें नहीं सुना सकते जो क़ब्रों के अंदर हों। तुम तो बस एक ख़बरदार करने वाले हो!

24. हमने तुम्हें हक़ के साथ बशारत देनेवाला, और ख़बरदार कर देने वाला बनाकर भेजा है; और जो उम्मत गुज़री है, उसमें लाज़िमन एक ख़बरदार करने वाला गुज़रा है।

25. अगर वो तुम्हें झुटलाते हैं, तो जो उनसे पहले थे वो भी झुटला चुके हैं; उनके रसूल उनके पास वाज़ेह दलीलें, और सहीफ़े और रौशन किताब लेकर आए थे।

26. फिर मैंने उन लोगों को जिन्होंने कुफ़्र किया पकड़ लिया, तो फिर कैसी हुई मेरी फ़िटकार और सज़ा!

27. क्या तुमने देखा नहीं कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा, फिर उसके ज़रिए से हमने मुख़्तलिफ़ रंगों के फल पैदा किए? और पहाड़ों में भी सफ़ेद और सुर्ख़ मुख़्तलिफ़ रंगों की धारियां पाई जाती हैं, और भुजंग काली भी;

28. और इनसानों और जानवरों और चौपायों की अलग-अलग क़िस्म है। उसके अफ़राद के रंग भी इसी तरह मुख़्तलिफ़ हैं। अल्लाह से डरते तो उसके वही बन्दे हैं जो इल्म वाले हैं; यक़ीनन अल्लाह ज़बरदस्त, निहायत बख़्शनेवाला है।

29. यक़ीनन जो लोग अल्लाह की किताब पढ़ते हैं इस हाल में कि नमाज़ के पाबंद हो और जो कुछ हमने उन्हें दिया है उसमें से उन्होंने छुपे और खुले ख़र्च किया है, वो एक ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी बरबाद न होगी।

30 नतीजे में वह उन्हें उनके अजर पूरे के पूरे देगा और अपने फ़ज़्ल में से उन्हें और ज़्यादा भी अता करेगा;

व इलल्लाहिल्-मसीर (18)
व मा यस्तविल्-अअ्मा वल्बसीर (19)
व लज़्ज़ुलुमातु व लन्नूर (20)
व लज़्ज़िल्लु व लल्हरूर (21)
व मा यस्तविल्-अह्या-उ व लल्अम्वातु, इन्नल्ला-ह युस्मिअु मंय्यशा-उ व मा अन्-त बिमुस्मिअिम्-मन् फ़िल्क़ुबूर (22)
इन् अन्-त इल्ला नज़ीर (23)
इन्ना अर्सल्ना-क बिल्हक़्क़ि बशीरंव्-व नज़ीरन्, व इम्-मिन् उम्म-तिन् इल्ला ख़ला फ़ीहा नज़ीर (24)
व इंय्युकज़्ज़िबू-क फ़-क़द् कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् जाअत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति व बिज़्ज़ुबुरि व बिल्-किताबिल्-मुनीर (25)
सुम्-म अख़ज़्तुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-कै-फ़ का-न नकीर (26) ●
अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-अख़रज्ना बिही स-मरातिम्-मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहा, व मिनल्-जिबालि जु-ददुम् बीज़ुंव्-व हुमुरुम् मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहा व ग़राबीबु सूद (27)
व मिनन्नासि वद्दवाब्बि वल्-अन्आमि मुख़्तलिफ़ुन् अल्वानुहू कज़ालि-क, इन्नमा यख़्शल्ला-ह मिन् अिबादिहिल्-अु-लमा-उ, इन्नल्ला-ह अज़ीज़ुन् ग़फ़ूर (28)
इन्नल्लज़ी-न यत्लू-न किताबल्लाहि व अक़ामुस्सला-त व अन्फ़क़ू मिम्मा रज़क़्नाहुम् सिर्रंव्-व अलानि-यतंय्-यर्जू-न तिजा-रतल् लन् तबूर (29)
लियुवफ़्फ़ि-यहुम् उजू-रहुम् व यज़ी-दहुम् मिन् फ़ज़्लिही,

وَاِلَى اللّٰهِ الْمَصِيْرُ ۝١٨
وَمَا يَسْتَوِى الْاَعْمٰى وَالْبَصِيْرُ ۝١٩
وَلَا الظُّلُمٰتُ وَلَا النُّوْرُ ۝٢٠
وَلَا الظِّلُّ وَلَا الْحَرُوْرُ ۝٢١
وَمَا يَسْتَوِى الْاَحْيَآءُ وَلَا الْاَمْوَاتُ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ يُسْمِعُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَمَآ اَنْتَ
بِمُسْمِعٍ مَّنْ فِى الْقُبُوْرِ ۝٢٢
اِنْ اَنْتَ اِلَّا نَذِيْرٌ ۝٢٣
اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ بِالْحَقِّ بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ؕ
وَاِنْ مِّنْ اُمَّةٍ اِلَّا خَلَا فِيْهَا نَذِيْرٌ ۝٢٤
وَاِنْ يُّكَذِّبُوْكَ فَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ
مِنْ قَبْلِهِمْ ۚ جَآءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
وَبِالزُّبُرِ وَبِالْكِتٰبِ الْمُنِيْرِ ۝٢٥
ثُمَّ اَخَذْتُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَكَيْفَ
كَانَ نَكِيْرِ ۝٢٦
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً ۚ
فَاَخْرَجْنَا بِهٖ ثَمَرٰتٍ مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهَا ؕ
وَمِنَ الْجِبَالِ جُدَدٌۢ بِيْضٌ وَّحُمْرٌ
مُّخْتَلِفٌ اَلْوَانُهَا وَغَرَابِيْبُ سُوْدٌ ۝٢٧
وَمِنَ النَّاسِ وَالدَّوَآبِّ وَالْاَنْعَامِ
مُخْتَلِفٌ اَلْوَانُهٗ كَذٰلِكَ ؕ اِنَّمَا يَخْشَى
اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ اِنَّ اللّٰهَ
عَزِيْزٌ غَفُوْرٌ ۝٢٨
اِنَّ الَّذِيْنَ يَتْلُوْنَ كِتٰبَ اللّٰهِ وَاَقَامُوا
الصَّلٰوةَ وَاَنْفَقُوْا مِمَّا رَزَقْنٰهُمْ سِرًّا
وَّعَلَانِيَةً يَّرْجُوْنَ تِجَارَةً لَّنْ تَبُوْرَ ۝٢٩
لِيُوَفِّيَهُمْ اُجُوْرَهُمْ وَيَزِيْدَهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ

बेशक वह बहुत बख़्शनेवाला, निहायत क़द्रदां है।

31. जो किताब हमने तुम्हारी तरफ़ वही की है वही हक़ है, अपने से पहले की तसदीक़ में है; यक़ीनन अल्लाह अपने बंदों की ख़बर रखने वाला, देखने वाला है।

32. फिर हमने किताब का वारिस उन लोगों को बनाया जिन्हें हमने अपने बंदों में से मुन्तख़ब कर लिया है; अब कोई तो उनमें से अपने आप पर जुल्म करता है, और कोई उनमें मियाना रौ है, और कोई उनमें से अल्लाह की तौफ़ीक़ से भलाइयों में सबक़त करने वाला है; यही बड़ा फ़ज़्ल है।

33. हमेशा रहनेवाले बाग़ात हैं जिनमें वो दाख़िल होंगे; वहां उन्हें सोने के दस्तीने (कंगन) और मोती पहनाए जाएंगे, और वहां उनका लिबास रेशम होगा।

34. और वो कहेंगे, "सब तारीफ़ है अल्लाह के लिए जिसने हमसे ग़म को दूर किया। यक़ीनन हमारा रब निहायत बख़्शने वाला, बड़ा क़द्रदां है।

35. जिसने हमें अपने फ़ज़्ल से रहने के ऐसे घर में उतारा जहां न हमें कोई मशक़्क़त उठानी पड़ेगी और न वहां हमें कोई तकान लाहिक़ होगी"।

36. रहे वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, उनके लिए जहन्नम की आग है; न उनका काम तमाम किया जाएगा कि मर जाएं, और न उनसे उसका अज़ाब ही कुछ हल्का किया जाएगा। हम ऐसा ही बदला हर नाशुकरे को देते हैं।

37. वहां वो चिल्लाएंगे कि "हमारे रब, हमें निकाल ले, हम नेक अमल करेंगे, उससे मुख़्तलिफ़ जो हम करते रहे"। "क्या हमने तुम्हें इतनी उम्र नहीं दी, जिसमें जो कोई होश में आना चाहता तो होश में आ जाता? और तुम्हारे पास ख़बरदार करनेवाला भी आया था; तो अब मज़ा चखते रहो! ज़ालिमों का तो कोई मददगार नहीं"।

38. बेशक अल्लाह आसमानों और ज़मीन के ग़ैब को जानता है; वह तो सीनों तक की बातें जानता है।

39. वही तो है जिसने तुम्हें ज़मीन में ख़लीफ़ा बनाया। अब जो कोई कुफ़्र

इन्नहू ग़फ़ूरुन् शकूर (30)

वल्लज़ी औहैना इलै-क मिनल्-किताबि हुवल्-हक़्क़ु मुसद्दिक़ल्लिमा बै-न यदैहि, इन्नल्ला-ह बिअ़िबादिही ल-ख़बीरुम्-बसीर (31)

सुम्-म औरस्नल्-किताबल्लज़ीनस्तफ़ैना मिन् अ़िबादिना फ़मिन्हुम् ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही व मिन्हुम् मुक़्तसिदुन् व मिन्हुम् साबिक़ुम् बिल्-ख़ैराति बि-इज़्निल्लाहि, ज़ालि-क हुवल् फ़ज़्लुल्-कबीर (32)

जन्नातु अ़द्निंय्-यद्ख़ुलूनहा युहल्लौ-न फ़ीहा मिन् असावि-र मिन् ज़-हबिंव्-व लुअ्लुअन् व लिबासुहुम् फ़ीहा हरीर (33)

व क़ालुल्हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी अज़्ह-ब अ़न्नल्-ह-ज़-न, इन्-न रब्बना ल-ग़फ़ूरुन् शकूर (34)

अल्लज़ी अ-हल्लना दारल्-मुक़ामति मिन् फ़ज़्लिही ला यमस्सुना फ़ीहा न-सबुंव्-व ला यमस्सुना फ़ीहा लुग़ूब (35)

वल्लज़ी-न क-फ़रू लहुम् नारु जहन्न-म ला युक़्ज़ा अ़लैहिम् फ़-यमूतू व ला युख़फ़्फ़फ़ु अ़न्हुम् मिन् अ़ज़ाबिहा, कज़ालि-क नज्ज़ी कुल्-ल कफ़ूर (36)

व हुम् यस्तरिख़ू-न फ़ीहा रब्बना अख़्रिज्ना नअ्मल् सालिहन् ग़ैरल्लज़ी कुन्ना नअ्मलु, अ-व लम् नुअ़म्मिर्कुम् मा य-तज़क्करु फ़ीहि मन् तज़क्क-र व जा-अकुमुन्नज़ीरु, फ़ज़ूक़ू फ़मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् नसीर (37) ●

इन्नल्ला-ह आ़लिमु ग़ैबिस्समावाति वल्अर्ज़ि, इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (38)

हुवल्लज़ी ज-अ़-लकुम् ख़लाइ-फ फ़िल्अर्ज़ि,

إِنَّهُ غَفُورٌ شَكُورٌ ۝٣٠

وَالَّذِيٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ مِنَ الْكِتٰبِ
هُوَ الْحَقُّ مُصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ يَدَيْهِ ۗ
إِنَّ اللّٰهَ بِعِبَادِهٖ لَخَبِيرٌۢ بَصِيرٌ ۝٣١

ثُمَّ أَوْرَثْنَا الْكِتٰبَ الَّذِينَ اصْطَفَيْنَا
مِنْ عِبَادِنَا ۚ فَمِنْهُمْ ظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ ۚ
وَمِنْهُم مُّقْتَصِدٌ ۚ وَمِنْهُمْ سَابِقٌۢ بِالْخَيْرٰتِ
بِإِذْنِ اللّٰهِ ۚ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيرُ ۝٣٢

جَنّٰتُ عَدْنٍ يَدْخُلُونَهَا يُحَلَّوْنَ فِيهَا
مِنْ أَسَاوِرَ مِن ذَهَبٍ وَّلُؤْلُؤًا ۚ وَلِبَاسُهُمْ
فِيهَا حَرِيرٌ ۝٣٣

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِيٓ أَذْهَبَ عَنَّا
الْحَزَنَ ۚ إِنَّ رَبَّنَا لَغَفُورٌ شَكُورٌ ۝٣٤

الَّذِيٓ أَحَلَّنَا دَارَ الْمُقَامَةِ مِن فَضْلِهٖ ۚ
لَا يَمَسُّنَا فِيهَا نَصَبٌ وَّلَا يَمَسُّنَا فِيهَا
لُغُوبٌ ۝٣٥

وَالَّذِينَ كَفَرُوا لَهُمْ نَارُ جَهَنَّمَ ۚ لَا يُقْضٰى
عَلَيْهِمْ فَيَمُوتُوا وَلَا يُخَفَّفُ عَنْهُم مِّنْ
عَذَابِهَا ۚ كَذٰلِكَ نَجْزِي كُلَّ كَفُورٍ ۝٣٦

وَهُمْ يَصْطَرِخُونَ فِيهَا ۚ رَبَّنَآ أَخْرِجْنَا
نَعْمَلْ صَالِحًا غَيْرَ الَّذِي كُنَّا نَعْمَلُ ۚ
أَوَلَمْ نُعَمِّرْكُم مَّا يَتَذَكَّرُ فِيهِ مَن
تَذَكَّرَ وَجَآءَكُمُ النَّذِيرُ ۖ فَذُوقُوا فَمَا
ع لِلظّٰلِمِينَ مِن نَّصِيرٍ ۝٣٧

إِنَّ اللّٰهَ عٰلِمُ غَيْبِ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ ۚ
إِنَّهُ عَلِيمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُورِ ۝٣٨

هُوَ الَّذِي جَعَلَكُمْ خَلٰٓئِفَ فِي الْأَرْضِ

करेगा, उसके कुफ़्र का वबाल उसी पर पड़ेगा; अहले कुफ़्र का कुफ़्र उनके रब के यहां सिर्फ़ नाराज़ी में इज़ाफ़ा करता है; और अहले कुफ़्र का कुफ़्र सिर्फ़ ख़सारे में इज़ाफ़ा करता है।

40. कहो: "क्या तुमने अपने ठहराए हुए शरीकों पर गौर भी किया, जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन का कौन सा हिस्सा पैदा किया है; या आसमानों में उनकी कोई हिस्सेदारी है?" या हमने उन्हें कोई किताब दे दी है कि वो उसकी खुली दलील पर हैं? नहीं, बल्कि ये ज़ालिम आपस में एक दूसरे से महज़ फ़रेब का वादा कर रहे हैं।

41. अल्लाह ही आसमानों और ज़मीन को थामे हुए है कि वो टल न जाएं, और अगर वो टल जाएं, तो उसके बाद कोई भी नहीं जो उन्हें थाम सके। बेशक वह बहुत बुर्दबार है, निहायत बख़्शने वाला है।

42-43. उन्होंने अल्लाह की कड़ी क़समें खाई थीं कि अगर उनके पास कोई ख़बरदार करनेवाला आ जाए, तो वो गिरोहों में से हर एक से ज़्यादा हिदायत पर होंगे; मगर जब उनके पास एक ख़बरदार करनेवाला आ गया तो इस चीज़ ने ज़मीन में उनके गुरूर और बुरी चालों की वजह से नफ़रत ही में इज़ाफ़ा किया; हालांकि बुरी चाल खुद अपने ही लोगों को घेरती है। तो अब क्या जो दस्तूर अगलों के सिलसिले में रहा, ये बस उसी के इंतिज़ार में हैं? तो तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे, और न तुम अल्लाह के दस्तूर को कभी टलते ही पाओगे।

44. क्या वो ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा अन्जाम हो चुका है जो उनसे पहले गुज़रे हैं? हालांकि वो कुव्वत में उनसे कहीं बढ़-चढ़कर थे; अल्लाह ऐसा नहीं कि आसमानों में कोई चीज़ उसके क़ाबू से बाहर निकल सके और न ज़मीन ही में, बेशक वह सब कुछ जाननेवाला, निहायत क़ुदरत वाला है।

45. अगर अल्लाह लोगों को उनकी कमाई की वजह से पकड़ने पर आ जाए तो इस ज़मीन की पुश्त पर एक

फ़-मन् क-फ़-र फ़-अ़लैहि कुफ़्रुहू, व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् अि़न्-द रब्बिहिम् इल्ला मक़्तन् व ला यज़ीदुल्-काफ़िरी-न कुफ़्रुहुम् इल्ला ख़सारा (39)

कुल् अ-रऐतुम् शु-रका-अकुमुल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि, अरूनी माज़ा ख़-लक़ू मिनल्-अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावाति अम् आतैनाहुम् किताबन् फ़हुम् अ़ला बय्यि-नतिम् मिन्हु बल् इंय्यअि़दुज़्ज़ालिमू-न बअ्ज़ुहुम् बअ्ज़न् इल्ला ग़ुरूरा (40)

इन्नल्ला-ह युम्सिकुस्समावाति वल्अर्-ज़ अन् तज़ूला, व ल-इन् ज़ा-लता इन् अम्-स-कहुमा मिन् अ-हदिम् मिम्बअ्दिही, इन्नहू का-न हलीमन् ग़फ़ूरा (41)

व अक़्समू बिल्लाहि जह्-द ऐमानिहिम् ल-इन् जा-अहुम् नज़ीरुल् ल-यकूनुन्-न अह्दा मिन् इह्दल्-उ-ममि फ़-लम्मा जा-अहुम् नज़ीरुम् मा ज़ा-दहुम् इल्ला नुफ़ूरा (42)

इस्तिक्बारन् फ़िल्अर्ज़ि व मक्रस्सय्यि-इ व ला यहीकुल्-मक्रुस्सय्यि-उ इल्ला बि-अह्लिही, फ़-हल् यन्ज़ुरू-न इल्ला सुन्नतल्-अव्वली-न फ़-लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला, व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तह्वीला (43)

अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़कि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व कानू अशद्-द मिन्हुम् कुव्वतन्, व मा कानल्लाहु लियुअ्जि-ज़हू मिन् शैइन् फ़िस्समावाति व ला फ़िल्अर्ज़ि, इन्नहू का-न अ़लीमन् क़दीरा (44)

व लौ युआख़िज़ुल्लाहुन्ना-स बिमा क-सबू मा

فَمَنْ كَفَرَ فَعَلَيْهِ كُفْرُهٗ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ اِلَّا مَقْتًا ۚ وَلَا يَزِيْدُ الْكٰفِرِيْنَ كُفْرُهُمْ اِلَّا خَسَارًا ۝۳۹

قُلْ اَرَءَيْتُمْ شُرَكَآءَكُمُ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۚ اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا فَهُمْ عَلٰي بَيِّنَتٍ مِّنْهُ ۚ بَلْ اِنْ يَّعِدُ الظّٰلِمُوْنَ بَعْضُهُمْ بَعْضًا اِلَّا غُرُوْرًا ۝۴۰

اِنَّ اللّٰهَ يُمْسِكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ اَنْ تَزُوْلَا ۚ وَلَىِٕنْ زَالَتَآ اِنْ اَمْسَكَهُمَا مِنْ اَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِهٖ ۭ اِنَّهٗ كَانَ حَلِيْمًا غَفُوْرًا ۝۴۱

وَاَقْسَمُوْا بِاللّٰهِ جَهْدَ اَيْمَانِهِمْ لَىِٕنْ جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ لَّيَكُوْنُنَّ اَهْدٰى مِنْ اِحْدَى الْاُمَمِ ۚ فَلَمَّا جَآءَهُمْ نَذِيْرٌ مَّا زَادَهُمْ اِلَّا نُفُوْرَا ۝۴۲ۙ

اِسْتِكْبَارًا فِي الْاَرْضِ وَمَكْرَ السَّيِّئِ ۭ وَلَا يَحِيْقُ الْمَكْرُ السَّيِّئُ اِلَّا بِاَهْلِهٖ ۭ فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا سُنَّتَ الْاَوَّلِيْنَ ۚ فَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۚ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّتِ اللّٰهِ تَحْوِيْلًا ۝۴۳

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَكَانُوْٓا اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً ۭ وَمَا كَانَ اللّٰهُ لِيُعْجِزَهٗ مِنْ شَيْءٍ فِي السَّمٰوٰتِ وَلَا فِي الْاَرْضِ ۭ اِنَّهٗ كَانَ عَلِيْمًا قَدِيْرًا ۝۴۴

وَلَوْ يُؤَاخِذُ اللّٰهُ النَّاسَ بِمَا كَسَبُوْا مَا

تَرَكَ عَلٰى ظَهْرِهَا مِنْ دَآبَّةٍ وَّلٰكِنْ
يُّؤَخِّرُهُمْ اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّىۚ فَاِذَا جَآءَ
اَجَلُهُمْ فَاِنَّ اللّٰهَ كَانَ بِعِبَادِهٖ بَصِيْرًا (٤٥)

سُوْرَةُ يٰسٓ مَكِّيَّةٌ، اٰيَاتُهَا ٨٣، رُكُوْعَاتُهَا ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰسٓ (١) وَالْقُرْاٰنِ الْحَكِيْمِ (٢)
اِنَّكَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ (٣)
عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ (٤)
تَنْزِيْلَ الْعَزِيْزِ الرَّحِيْمِ (٥)
لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآؤُهُمْ فَهُمْ
غٰفِلُوْنَ (٦)
لَقَدْ حَقَّ الْقَوْلُ عَلٰٓى اَكْثَرِهِمْ فَهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ (٧)
اِنَّا جَعَلْنَا فِيْٓ اَعْنَاقِهِمْ اَغْلٰلًا فَهِيَ اِلَى
الْاَذْقَانِ فَهُمْ مُّقْمَحُوْنَ (٨)
وَجَعَلْنَا مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ سَدًّا وَّمِنْ
خَلْفِهِمْ سَدًّا فَاَغْشَيْنٰهُمْ فَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ (٩)
وَسَوَآءٌ عَلَيْهِمْ ءَاَنْذَرْتَهُمْ اَمْ لَمْ تُنْذِرْهُمْ
لَا يُؤْمِنُوْنَ (١٠)
اِنَّمَا تُنْذِرُ مَنِ اتَّبَعَ الذِّكْرَ وَخَشِيَ
الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِۚ فَبَشِّرْهُ بِمَغْفِرَةٍ وَّاَجْرٍ
كَرِيْمٍ (١١)
اِنَّا نَحْنُ نُحْيِ الْمَوْتٰى وَنَكْتُبُ مَا قَدَّمُوْا
وَاٰثَارَهُمْؕ وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ فِيْٓ
اِمَامٍ مُّبِيْنٍ (١٢)
وَاضْرِبْ لَهُمْ مَّثَلًا اَصْحٰبَ الْقَرْيَةِۘ
اِذْ جَآءَهَا الْمُرْسَلُوْنَ (١٣)

त-र-क अ़ला ज़हिरहा मिन् दाब्बतिंव्-व लाकिंय्-युअख़्ख़िरुहुम् इला अ-जलिम् मुसम्मन् फ़-इज़ा जा-अ अ-जलुहुम् फ़-इन्नल्ला-ह का-न बिअिबादिही बसीरा (45) ●

36 सूरतु या-सीन
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3090 अक्षर, 739 शब्द, 83 आयतें और 5 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या-सीन् (1)
वल्क़ुरआनिल्-हकीम (2)
इन्न-क ल-मिनल्-मुर्सलीन (3)
अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (4)
तन्ज़ीलल् अ़ज़ीज़िर्-रहीम (5)
लितुन्ज़ि-र क़ौमम्-मा उन्ज़ि-र आबाउहुम् फ़हुम् ग़ाफ़िलून (6)
ल-क़द् हक़्क़ल्-क़ौलु अ़ला अक्सरिहिम् फ़हुम् ला युअ्मिनून (7)
इन्ना जअ़ल्ना फ़ी अअ्नाक़िहिम् अग़्लालन् फ़हि-य इलल्-अज़्क़ानि फ़हुम् मुक़्महून (8)
व जअ़ल्ना मिम्बैनि ऐदीहिम् सद्दंव्-व मिन् ख़ल्फ़िहिम् सद्दन् फ़-अग़्शैनाहुम् फ़हुम् ला युब्सिरून (9)
व सवाउन् अ़लैहिम् अ-अन्ज़र्-तहुम् अम् लम् तुन्ज़िर्हुम् ला युअ्मिनून (10)
इन्नमा तुन्ज़िरु मनित्त-ब-अ़ज़्ज़िक्-र व ख़शि-यर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि फ़-बश्शिर्हु बिमग़्फ़ि-रतिंव्-व अज्रिन् करीम (11)
इन्ना नह्नु नुह्यिल्-मौता व नक्तुबु मा क़द्दमू व आसा-रहुम्, व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु फ़ी इमामिम्-मुबीन (12) ●
वज़्रिब् लहुम् म-सलन् अस्हाबल्-क़र्-यति ● इज़् जा-अहल्-मुर्-सलून (13)

जानदार को भी न छोड़े; लेकिन वह उन्हें एक मुक़र्रर वक़्त तक मुहलत देता है। फिर जब उनका मुक़र्रर वक़्त आ जाता है, तो यक़ीनन अल्लाह तो अपने बंदों को देख ही रहा है।

सूरह या. सीन. मक्की

(आयतें 83, रुकूआत 5)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. या. सीन.।

2-5. शाहिद है क़ुरआन-ए-हकीम कि तुम यक़ीनन रसूलों में से हो, एक सीधे रास्ते पर; — खूब है अज़ीज़ व रहीम का उसे नाज़िल करना,

6. ताकि तुम ऐसे लोगों को ख़बरदार करो जिनके बाप-दादा को ख़बरदार नहीं किया गया, इस वजह से वो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं।

7. उनमें से अक्सर लोगों पर बात पूरी हो चुकी है, पस वो ईमान लाने के नहीं।

8. हमने उनकी गर्दनों में तौक़ डाल दिए हैं जो उनकी ठोड़ियों तक हैं, पस उनके सर ऊपर को उचके हुए हैं।

9. और हमने उनके आगे एक दीवार कर दी है और एक दीवार उनके पीछे भी; इस तरह हमने उन्हें ढांक दिया है, लिहाज़ा उन्हें कुछ सुझाई नहीं देता।

10. उनके लिए यकसां है तुमने उन्हें ख़बरदार किया या उन्हें ख़बरदार नहीं किया, वो ईमान नहीं लाएंगे।

11. तुम तो बस उसको ख़बरदार कर सकते हो जो याददिहानी की पैरवी करे और ग़ाइबाना रहमान से डरे, पस उसे मग़फ़िरत और अजरे करीम की बशारत दे दो।

13. बेशक हम मुर्दों को ज़िन्दा करेंगे और हम लिखेंगे जो कुछ उन्होंने आगे के लिए भेजा, और उनके नुक़ूश व आसार को (जो पीछे रहा), हर चीज़ को हमने एक वाज़ेह किताब में शुमार कर रखा है।

13. उनके लिए एक मिसाल बस्तीवालों की बयान करो, जबकि वहां फ़िरिस्तादे आए;

14. जबकि हमने उनकी तरफ़ दो भेजे, तो उन्होंने उनको झुटला दिया, तब हमने एक तीसरे से कुव्वत पहुंचाई। पस उन्होंने कहा, "हम तुम्हारे पास भेजे गए हैं"।

15. वो बोले "तुम तो बस हमारे ही जैसे इनसान हो; रहमान ने कोई भी चीज़ नहीं नाज़िल की है। तुम महज़ झूट बोलते हो"।

16. उन्होंने कहा, "हमारा रब जानता है कि हम यक़ीनन तुम्हारी तरफ़ भेजे गए हैं;

17. और हमारी ज़िम्मेदारी तो महज़ साफ़-साफ़ पैग़ाम पहुंचा देने की है"।

18. वो बोले, "हमने तुम्हें मनहूस पाया। अगर तुम बाज़ न आए, तो हम तुम्हें संगसार कर देंगे और तुम्हें ज़रूर हमारी तरफ़ से दर्दनाक अज़ाब पहुंचेगा"।

19. उन्होंने कहा, "तुम्हारी नुहूसत तो तुम्हारे अपने ही साथ है, क्या अगर तुम्हें याददिहानी कराई जाए (तो यह कोई गुस्सा में आने की बात है)? नहीं, बल्कि तुम हद से गुज़र जाने वाले लोग हो"।

20-21. इतने में शहर के परले सिरे से एक शख़्स दौड़ता हुआ आया, उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! उनकी पैरवी इख़्तियार करो जो भेजे गए हैं, उनकी पैरवी करो जो तुमसे कोई अजर नहीं मांगते और वो राह पर भी हैं"।

22. "और मुझे क्या हुआ है कि उसकी बन्दगी न करूं जिसने मुझे पैदा किया, और उसी की तरफ़ तुम्हें लौटकर जाना है?

23. क्या मैं उसे छोड़कर दूसरे माबूद बनाऊं, अगर रहमान मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचानी चाहे, तो उनकी सिफ़ारिश मेरे कुछ काम नहीं आने की, और न वो मुझे छुड़ा ही सकते हैं?

24. तब तो मैं लाज़िमन सरीह गुमराही में हूंगा।

25. मैं तो तुम्हारे रब पर ईमान ले आया; पस मेरी सुनो!"

26-27. कहा गया, "जन्नत में दाख़िल हो जा!" उसने कहा, "ऐ काश! मेरी क़ौम के लोग जानते कि मेरे रब ने मुझे बख़्श दिया और मुझे इज़्ज़त वालों में किया"।

28. उसके बाद उसकी क़ौम पर हमने आसमान से कोई लश्कर नहीं

इज़् अर्सल्ना इलैहिमुस्नैनि
फ़-कज़्ज़बूहुमा फ़-अ़ज़्ज़ज़्ना
बिसालिसिन् फ़क़ालू इन्ना इलैकुम्
मुर्-सलून (14)
क़ालू मा अन्तुम् इल्ला
ब-शरुम्-मिस्लुना व मा
अन्ज़लर्-रह्मानु मिन् शैइन् इन्
अन्तुम् इल्ला तक्ज़िबून (15)
क़ालू रब्बुना यअ़्लमु इन्ना इलैकुम्
ल-मुर्-सलून (16)
व मा अ़लैना इल्लल्-बलाग़ुल्-मुबीन
(17)
क़ालू इन्ना त-तय्यर्ना बिकुम्
ल-इल्लम् तन्तहू ल-नर्जुमन्नकुम्
व ल-यमस्सन्नकुम् मिन्ना अ़ज़ाबुन्
अलीम (18)
क़ालू ताइरुकुम् म-अ़कुम् अ-इन्
ज़ुक्किर्तुम्; बल् अन्तुम्
क़ौमुम्-मुस्रिफ़ून (19)
व जा-अ मिन् अक़्सल्-मदीनति
रजुलुंय्-यस्आ, क़ा-ल या
क़ौमित्तबिउ़ल्-मुर्-सलीन (20)
इत्तबिऊ़ मल्ला यस्अलुकुम् अज्रंव्-व
हुम् मुह्तदून (21)
व मा लि-य ला अअ़्बुदुल्लज़ी
फ़-त-रनी व इलैहि तुर्जअ़ून (22)
अ-अत्तख़िज़ु मिन् दूनिही
आलि-हतन् इंय्युरिद्-निर्-रह्मानु
बिज़ुर्रिल्-ला तुग़्नि अ़न्नी शफ़ा-अ़तुहुम्
शैअंव्-व ला युन्क़िज़ून (23)
इन्नी इज़ल्-लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन
(24)
इन्नी आमन्तु बिरब्बिकुम् फ़स्मअ़ून
(25)
क़ीलद्ख़ुलिल्-जन्न-त, क़ा-ल यालै-त
क़ौमी यअ़्लमून (26)
बिमा ग़-फ़-र ली रब्बी व ज-अ़-लनी
मिनल्-मुक्रमीन (27)
व मा अन्ज़ल्ना अ़ला क़ौमिही
मिम्बअ़्दिही मिन्

إِذْ أَرْسَلْنَآ إِلَيْهِمُ اثْنَيْنِ فَكَذَّبُوهُمَا
فَعَزَّزْنَا بِثَالِثٍ فَقَالُوٓا إِنَّآ إِلَيْكُمْ
مُّرْسَلُونَ ۝۱۴
قَالُوا مَآ أَنْتُمْ إِلَّا بَشَرٌ مِّثْلُنَا ۙ وَمَآ
أَنْزَلَ الرَّحْمٰنُ مِنْ شَيْءٍ ۙ إِنْ أَنْتُمْ
إِلَّا تَكْذِبُونَ ۝۱۵
قَالُوا رَبُّنَا يَعْلَمُ إِنَّآ إِلَيْكُمْ لَمُرْسَلُونَ ۝۱۶
وَمَا عَلَيْنَآ إِلَّا الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ۝۱۷
قَالُوٓا إِنَّا تَطَيَّرْنَا بِكُمْ ۚ لَئِنْ لَّمْ تَنْتَهُوا
لَنَرْجُمَنَّكُمْ وَلَيَمَسَّنَّكُمْ مِّنَّا عَذَابٌ أَلِيْمٌ ۝۱۸
قَالُوا طَآئِرُكُمْ مَّعَكُمْ ۚ أَئِنْ ذُكِّرْتُمْ ۚ
بَلْ أَنْتُمْ قَوْمٌ مُّسْرِفُوْنَ ۝۱۹
وَجَآءَ مِنْ أَقْصَا الْمَدِيْنَةِ رَجُلٌ يَّسْعٰى
قَالَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوا الْمُرْسَلِيْنَ ۝۲۰
اتَّبِعُوْا مَنْ لَّا يَسْئَلُكُمْ أَجْرًا وَّهُمْ
مُّهْتَدُوْنَ ۝۲۱
وَمَالِيَ لَآ أَعْبُدُ الَّذِيْ فَطَرَنِيْ وَإِلَيْهِ
تُرْجَعُوْنَ ۝۲۲
ءَأَتَّخِذُ مِنْ دُوْنِهٖٓ اٰلِهَةً إِنْ يُّرِدْنِ
الرَّحْمٰنُ بِضُرٍّ لَّا تُغْنِ عَنِّيْ شَفَاعَتُهُمْ
شَيْئًا وَّلَا يُنْقِذُوْنِ ۝۲۳
إِنِّيْٓ إِذًا لَّفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝۲۴
إِنِّيْٓ اٰمَنْتُ بِرَبِّكُمْ فَاسْمَعُوْنِ ۝۲۵
قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ ۚ قَالَ يٰلَيْتَ قَوْمِيْ
يَعْلَمُوْنَ ۝۲۶
بِمَا غَفَرَ لِيْ رَبِّيْ وَجَعَلَنِيْ مِنَ الْمُكْرَمِيْنَ ۝۲۷
وَمَآ أَنْزَلْنَا عَلٰى قَوْمِهٖ مِنْ بَعْدِهٖ مِنْ

उतारा; और हम इस तरह उतारा नहीं करते।

29. वह तो बस एक सख़्त आवाज़ थी, तो नागहां क्या देखते हैं कि वो बुझकर रह गए।

30. अफ़सोस है बंदों पर! जो रसूल भी उनके पास आया, वो उसका मज़ाक़ ही उड़ाते रहे।

31. क्या उन्होंने देखा नहीं कि उनसे पहले कितनी ही नसलों को हमने हलाक किया कि वो उनकी तरफ़ पलटने के नहीं?

32. और जितने भी हैं सबके सब हमारे ही सामने हाज़िर किए जाएंगे।

33. और एक निशानी उनके लिए मुर्दा ज़मीन है, हमने उसे ज़िन्दा किया और उससे अनाज निकाला, तो वो उसी खाते हैं;

34. और हमने उसमें खजूरों और अंगूरों के बाग़ लगाए, और उसमें चश्मे जारी किए।

35. ताकि वो उसके फल खाएं — हालांकि यह सब कुछ कोई उनके हाथों की कारगुज़ारी नहीं — तो क्या वो शुक्र नहीं करते?

36. शान व अज़मतवाला है वह, जिसने सब के जोड़े पैदा किए, ज़मीन जो चीज़ें उगाती है उनमें से भी, और ख़ुद उनके अन्दर से भी और जिन चीज़ों को वो जानते नहीं उनमें से भी।

37. और एक निशानी उनके लिए रात है, हम उस पर से दिन को खींच लेते हैं, फिर क्या देखते हैं कि वो अंधेरे में रह गए।

38. और सूरज अपने मुक़र्रर ठिकाने के लिए चला जा रहा है, यह साधा हुआ है ज़बरदस्त साहिब-ए- इल्म का।

39. और रहा चांद उसके लिए हमने मंज़िलें मुक़र्रर कर दी हैं, यहां तक कि वह फिर खजूर की पुरानी ख़मदार टहनी के मानिन्द हो गया।

40. न सूरज ही से हो सकता है कि चांद को जा पकड़े, और न रात दिन पर सबक़त ले जा सकती है, सब अपने-अपने मदार में तैर रहे हैं।

41. और एक निशानी उनके लिए यह है कि हमने उनके पैरौओं को

जुन्दिम्-मिनस्समा-इ व मा कुन्ना मुन्ज़िलीन (28)

इन् कानत् इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतन् फ़-इज़ा हुम् ख़ामिदून (29)

या हस्-रतन् अ़लल्-अ़िबादि, मा यअ्तीहिम् मिर्-रसूलिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (30)

अलम् यरौ कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिनल्-क़ुरूनि अन्नहुम् इलैहिम् ला यर्जिअून (31)

व इन् कुल्लुल्-लम्मा जमीअुल्-लदैना मुह्ज़रून (32) ●

व आ-यतुल् लहुमुल्-अर्ज़ुल्-मै-ततु अह्यैनाहा व अख़्रज्ना मिन्हा हब्बन् फ़मिन्हु यअ्कुलून (33)

व-जअ़ल्ना फ़ीहा जन्नातिम् मिन् नख़ीलिंव्-व अअ्नाबिंव-व फ़ज्जर्ना फ़ीहा मिनल्-अ़ुयून (34)

लि-यअ्कुलू मिन् स-मरिही व मा अ़मिलत्हु ऐदीहिम्, अ-फ़ला यश्कुरून (35)

सुब्हानल्लज़ी ख़-लक़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा मिम्मा तुम्बितुल्-अर्ज़ु व मिन् अन्फ़ुसिहिम् व मिम्मा ला यअ्लमून (36)

व आ-यतुल् लहुमुल्लैलु नस्-लख़ु मिन्हुन्नहा-र फ़-इज़ा हुम् मुज़्लिमून (37)

वश्शम्सु तज्री लिमुस्त-क़र्रिल्-लहा, ज़ालि-क तक़्दीरुल् अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (38)

वल्क़-म-र क़द्दर्नाहु मनाज़ि-ल हत्ता आ-द कल्-अ़ुर्जूनिल्-क़दीम (39)

लश्शम्सु यम्बग़ी लहा अन् तुद्रिकल्-क़-म-र व लल्लैलु साबिक़ुन्-नहारि, व कुल्लुन् फ़ी फ़-लकिंय्-यस्बहून (40)

व आ-यतुल्-लहुम् अन्ना हमल्ना ज़ुर्रिय्य-तहुम् फ़िल्-फ़ुल्किल्-

جُنْدٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَمَا كُنَّا مُنْزِلِيْنَ ۝٢٨
اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ
خٰمِدُوْنَ ۝٢٩
يٰحَسْرَةً عَلَى الْعِبَادِ ۚ مَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ
اِلَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٣٠
اَلَمْ يَرَوْا كَمْ اَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنَ الْقُرُوْنِ
اَنَّهُمْ اِلَيْهِمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ۝٣١
ع وَاِنْ كُلٌّ لَّمَّا جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝٣٢
وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الْاَرْضُ الْمَيْتَةُ ۖ اَحْيَيْنٰهَا
وَاَخْرَجْنَا مِنْهَا حَبًّا فَمِنْهُ يَاْكُلُوْنَ ۝٣٣
وَجَعَلْنَا فِيْهَا جَنّٰتٍ مِّنْ نَّخِيْلٍ وَّاَعْنَابٍ
وَّفَجَّرْنَا فِيْهَا مِنَ الْعُيُوْنِ ۝٣٤
لِيَاْكُلُوْا مِنْ ثَمَرِهٖ ۙ وَمَا عَمِلَتْهُ اَيْدِيْهِمْ ؕ
اَفَلَا يَشْكُرُوْنَ ۝٣٥
سُبْحٰنَ الَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا
مِمَّا تُنْۢبِتُ الْاَرْضُ وَمِنْ اَنْفُسِهِمْ
وَمِمَّا لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٣٦
وَاٰيَةٌ لَّهُمُ الَّيْلُ ۖ نَسْلَخُ مِنْهُ النَّهَارَ
فَاِذَا هُمْ مُّظْلِمُوْنَ ۝٣٧
وَالشَّمْسُ تَجْرِيْ لِمُسْتَقَرٍّ لَّهَا ؕ ذٰلِكَ
تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝٣٨
وَالْقَمَرَ قَدَّرْنٰهُ مَنَازِلَ حَتّٰى عَادَ كَالْعُرْجُوْنِ
الْقَدِيْمِ ۝٣٩
لَا الشَّمْسُ يَنْۢبَغِيْ لَهَاۤ اَنْ تُدْرِكَ الْقَمَرَ
وَلَا الَّيْلُ سَابِقُ النَّهَارِ ۚ وَكُلٌّ فِيْ
فَلَكٍ يَّسْبَحُوْنَ ۝٤٠
وَاٰيَةٌ لَّهُمْ اَنَّا حَمَلْنَا ذُرِّيَّتَهُمْ فِي الْفُلْكِ

भरी हुई कश्ती में सवार किया,

42. और उनके लिए उसी के मानिन्द और भी ऐसी चीज़ें पैदा की जिनपर वो सवार होते हैं।

43. और अगर हम चाहें, तो उन्हें ग़र्क़ कर दें, फिर न तो उनकी कोई चीख़-पुकार हो, और न उन्हें नजात मिल सके,

44. यह तो बस हमारी रहमत, और एक मुक़र्रर वक़्त तक का सामाने लुत्फ़ है।

45. और जब उनसे कहा जाता है कि उस चीज़ का डर रखो जो तुम्हारे आगे है और जो तुम्हारे पीछे है; ताकि तुम पर रहम किया जाए (तो चुप साध लेते हैं)।

46. उनके पास उनके रब की आयतों में से जो आयत भी आती है, वो उससे एराज़ ही करते हैं।

47. और जब उनसे कहा जाता है कि "जो कुछ अल्लाह ने तुम्हें रिज़्क़ दिया है उसमें से कुछ ख़र्च करो"। तो जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया है वो उन लोगों से जो ईमान लाए हैं कहते हैं, "क्या हम उसको खाना खिलाएं जिसे अगर अल्लाह चाहे तो खुद खिला दे? तुम तो बस सरीह गुमराही में पड़े हो!"

48. और वो कहते हैं कि "यह वादा कब पूरा होगा, अगर तुम सच्चे हो?"

49. वो बस एक ज़ोर की आवाज़ के इंतिज़ार में हैं जो उन्हें आ पकड़ेगी जबकि वो झगड़ते होंगे।

50. फिर न तो वो कोई वसीयत कर पाएंगे, और न अपने घरवालों की तरफ़ लौट ही सकेंगे।

51. और सूर फूंका जाएगा; फिर क्या देखेंगे कि वो क़ब्रों से निकल कर अपने रब की तरफ़ चल पड़े हैं।

52. कहेंगे, "ऐ अफ़सोस हम पर! किसने हमें सोते से जगा दिया? यह वही चीज़ है जिसका रहमान ने वादा फ़रमाया था, और रसूलों ने सच कहा था"।

53. बस वह एक ज़ोर की आवाज़ होगी; फिर क्या देखेंगे कि वो सबके सब हमारे सामने हाज़िर कर दिए गए।

54. अब आज किसी जान पर कुछ भी ज़ुल्म न होगा, और तुम्हें बदले में वही मिलेगा जो कुछ तुम करते रहे हो।

मश्हून (41)

व ख़लक़्ना लहुम् मिम्-मिस्लिही मा यर्कबून (42)

व इन्-नशअ् नुग्रिक़्हुम् फ़ला सरी-ख़ लहुम् व ला हुम् युन्क़ज़ून (43)

इल्ला रह्म-तम् मिन्ना व मताअन् इला हीन (44)

व इज़ा क़ी-ल लहुमुत्तक़ू मा बै-न ऐदीकुम् व मा ख़ल्फ़कुम् लअ़ल्लकुम् तुर्हमून (45)

व मा तअ्तीहिम् मिन् आ-यतिम् मिन् आयाति रब्बिहिम् इल्ला कानू अ़न्हा मुअ्रिज़ीन (46)

व इज़ा क़ी-ल लहुम् अन्फ़िक़ू मिम्मा र-ज़-क़कुमुल्लाहु क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू अ-नुत्इ़मु मल्लौ यशाउल्लाहु अत्-अ़-महू इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (47)

व यक़ूलू-न मता हाज़ल-वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (48)

मा यन्ज़ुरू-न इल्ला सै-हतंव्-वाहि-दतन् तअ्ख़ुज़ुहुम् व हुम् यख़िस्सिमून (49)

फ़ला यस्ततीअू-न तौसि-यतंव्-व ला इला अह्लिहिम् यर्जिअून (50) ●

व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-इज़ा हुम् मिनल्-अज्दासि इला रब्बिहिम् यन्सिलून (51)

क़ालू या वैलना मम्ब-अ़-सना मिम्-मर्क़दिना ● हाज़ा मा व-अ़-दर्रह्मानु व स-दक़ल्-मुर्सलून (52)

इन् कानत् इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतन् फ़-इज़ा हुम् जमीअुल्-लदैना मुह्ज़रून (53)

फ़ल्यौ-म ला तुज़्लमु नफ़्सुन् शैअंव्-व ला तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्मलून (54)

الْمَشْحُوْنِ ۙ۝٤١

وَخَلَقْنَا لَهُمْ مِّنْ مِّثْلِهٖ مَا يَرْكَبُوْنَ ۝٤٢

وَاِنْ نَّشَاْ نُغْرِقْهُمْ فَلَا صَرِيْخَ لَهُمْ وَلَا هُمْ يُنْقَذُوْنَ ۙ۝٤٣

اِلَّا رَحْمَةً مِّنَّا وَمَتَاعًا اِلٰى حِيْنٍ ۝٤٤

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمُ اتَّقُوْا مَا بَيْنَ اَيْدِيْكُمْ وَمَا خَلْفَكُمْ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ۝٤٥

وَمَا تَاْتِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ مِّنْ اٰيٰتِ رَبِّهِمْ اِلَّا كَانُوْا عَنْهَا مُعْرِضِيْنَ ۝٤٦

وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ اَنْفِقُوْا مِمَّا رَزَقَكُمُ اللّٰهُ ۙ قَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنُطْعِمُ مَنْ لَّوْ يَشَآءُ اللّٰهُ اَطْعَمَهٗٓ ۖ اِنْ اَنْتُمْ اِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٤٧

وَيَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٤٨

مَا يَنْظُرُوْنَ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً تَاْخُذُهُمْ وَهُمْ يَخِصِّمُوْنَ ۝٤٩

فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ تَوْصِيَةً وَّلَآ اِلٰٓى اَهْلِهِمْ يَرْجِعُوْنَ ۝٥٠ ع

وَنُفِخَ فِى الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ ۝٥١

قَالُوْا يٰوَيْلَنَا مَنْۢ بَعَثَنَا مِنْ مَّرْقَدِنَا ۜ هٰذَا مَا وَعَدَ الرَّحْمٰنُ وَصَدَقَ الْمُرْسَلُوْنَ ۝٥٢

اِنْ كَانَتْ اِلَّا صَيْحَةً وَّاحِدَةً فَاِذَا هُمْ جَمِيْعٌ لَّدَيْنَا مُحْضَرُوْنَ ۝٥٣

فَالْيَوْمَ لَا تُظْلَمُ نَفْسٌ شَيْـًٔا وَّلَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٥٤

55. यक़ीनन अहले जन्नत आज एक न एक मशग़ले में ख़ुश हैं,

56. वो और उनकी बीवियां, सायों में मसहरियों पर तकिया लगाए हैं,

57. उनके लिए उसमें मेवे हैं, और उनके लिए वह सब कुछ मौजूद है जो वो तलब करें।

58. रहम फ़रमाने वाले रब की तरफ़ से "सलाम" फ़रमाया गया है।

59. "और ऐ मुजरिमो! आज तुम छटकर अलग हो जाओ!

60. क्या मैंने तुम्हें ताकीद नहीं की थी, ऐ आदम के बेटो! कि शैतान की बन्दगी न करो, वह तो तुम्हारा खुला दुश्मन है।

61. और यह कि मेरी ही बन्दगी करो। यही सीधी राह है।

62. उसने तो तुममें से बहुत-सी ख़िलक़त को गुमराह कर दिया; तो क्या तुम अक़्ल नहीं रखते थे?

63. "यह वही जहन्नम है जिसकी तुम्हें धमकी दी जाती रही है।

64. जो कुफ़्र तुम करते रहे हो उसके बदले में आज इसमें दाख़िल हो जाओ!"

65. आज हम उनके मुंह पर मुहर कर देंगे, और उनके हाथ हमसे बोलेंगे, और जो कुछ वो कमाते रहे हैं उसकी उनके पांव गवाही देंगे।

66. अगर हम चाहें, तो उनकी आंखें मिटा दें, कि वो रास्ते की तरफ़ लपके हैं, लेकिन सुझाई उन्हें कहां से देगा?

67. और अगर हम चाहते तो उन्हें उनकी जगह ही पर मस्ख़ कर देते, फ़िर न वो चल सकते और न लौट सकते।

68. जिस को हम लम्बी उम्र देते हैं उसे उसकी ख़िलक़त में उलटा फेर देते हैं; तो क्या वो अक़्ल से काम नहीं लेते?

69. हमने उसे शायरी की तालीम नहीं दी; और न वह उसके लायक़ ही है। वह तो बस याददिहानी और वाज़ेह क़ुरआन है।

70. ताकि वह उसे ख़बरदार कर दे जिसके अंदर ज़िन्दगी हो, और अहले कुफ़्र पर हुज्जत क़ायम हो जाए।

इन्-न अस्हाबल्-जन्नतिल्-यौ-म फ़ी शुग़ुलिन् फ़ाकिहून (55)

हुम् व अज़्वाजुहुम् फ़ी ज़िलालिन् अ़लल्-अराइकि मुत्तकिऊन (56)

लहुम् फ़ीहा फ़ाकि-हतुंव्-व लहुम् मा यद्-दअून (57)

सलामुन्, क़ौलम् मिर्रब्बिर्-रहीम (58)

वम्ताज़ुल्-यौ-म अय्युहल् मुज्रिमून (59)

अलम् अअ्हद् इलैकुम् या बनी आद-म अल्ला तअ्बुदुश्शैता-न इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन (60)

व अनिअ्बुदूनी, हाज़ा सिरातुम् मुस्तक़ीम (61)

व ल-क़द् अज़ल्-ल मिन्कुम् जिबिल्लन् कसीरन्, अ-फ़लम् तकूनू तअ्क़िलून (62)

हाज़िही जहन्नमुल्लती कुन्तुम् तू-अ़दून (63)

इस्लौहल्-यौ-म बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (64)

अल्यौ-म नख़्तिमु अ़ला अफ़्वाहिहिम् व तुकल्लिमुना ऐदीहिम् व तश्हदु अर्जुलुहुम् बिमा कानू यक्सिबून (65)

व लौ नशा-उ ल-तमस्ना अ़ला अअ्युनिहिम् फ़स्त-बक़ुस्सिरा-त फ़-अन्ना युब्सिरून (66)

व लौ नशा-उ ल-मसख़्नाहुम् अ़ला मका-नतिहिम् फ़-मस्तताअू मुज़िय्यंव्-व ला यर्जिअून (67) ●

व मन् नुअ़म्मिर्हु नुनक्किस्हु फ़िल्ख़ल्कि अ-फ़ला यअ्क़िलून (68)

व मा अ़ल्लम्नाहुश्-शिअ्-र व मा यम्बग़ी लहू, इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुंव्-व क़ुर्आनुम्-मुबीन (69)

लियुन्ज़ि-र मन् का-न हय्यंव्-व यहिक़्क़ल्-क़ौलु अ़लल्-काफ़िरीन (70)

إِنَّ أَصْحٰبَ الْجَنَّةِ الْيَوْمَ فِي شُغُلٍ
فٰكِهُونَ ﴿٥٥﴾
هُمْ وَأَزْوٰجُهُمْ فِي ظِلٰلٍ عَلَى الْأَرَآئِكِ
مُتَّكِـُٔونَ ﴿٥٦﴾
لَهُمْ فِيهَا فٰكِهَةٌ وَلَهُمْ مَا يَدَّعُونَ ﴿٥٧﴾
سَلٰمٌ قَوْلًا مِنْ رَبٍّ رَحِيمٍ ﴿٥٨﴾
وَامْتٰزُوا الْيَوْمَ أَيُّهَا الْمُجْرِمُونَ ﴿٥٩﴾
أَلَمْ أَعْهَدْ إِلَيْكُمْ يٰبَنِي آدَمَ أَنْ لَا تَعْبُدُوا
الشَّيْطٰنَ إِنَّهُ لَكُمْ عَدُوٌّ مُبِينٌ ﴿٦٠﴾
وَأَنِ اعْبُدُونِي هٰذَا صِرٰطٌ مُسْتَقِيمٌ ﴿٦١﴾
وَلَقَدْ أَضَلَّ مِنْكُمْ جِبِلًّا كَثِيرًا
أَفَلَمْ تَكُونُوا تَعْقِلُونَ ﴿٦٢﴾
هٰذِهِ جَهَنَّمُ الَّتِي كُنْتُمْ تُوعَدُونَ ﴿٦٣﴾
اصْلَوْهَا الْيَوْمَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُونَ ﴿٦٤﴾
الْيَوْمَ نَخْتِمُ عَلٰى أَفْوٰهِهِمْ وَتُكَلِّمُنَا
أَيْدِيهِمْ وَتَشْهَدُ أَرْجُلُهُمْ بِمَا كَانُوا
يَكْسِبُونَ ﴿٦٥﴾
وَلَوْ نَشَآءُ لَطَمَسْنَا عَلٰى أَعْيُنِهِمْ فَاسْتَبَقُوا
الصِّرٰطَ فَأَنّٰى يُبْصِرُونَ ﴿٦٦﴾
وَلَوْ نَشَآءُ لَمَسَخْنٰهُمْ عَلٰى مَكَانَتِهِمْ
فَمَا اسْتَطٰعُوا مُضِيًّا وَلَا يَرْجِعُونَ ﴿٦٧﴾
وَمَنْ نُعَمِّرْهُ نُنَكِّسْهُ فِي الْخَلْقِ
أَفَلَا يَعْقِلُونَ ﴿٦٨﴾
وَمَا عَلَّمْنٰهُ الشِّعْرَ وَمَا يَنْبَغِي لَهُ
إِنْ هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ وَقُرْآنٌ مُبِينٌ ﴿٦٩﴾
لِيُنْذِرَ مَنْ كَانَ حَيًّا وَيَحِقَّ الْقَوْلُ
عَلَى الْكٰفِرِينَ ﴿٧٠﴾

71. क्या उन्होंने देखा नहीं कि हमने उनके लिए अपने हाथों की बनाई हुई चीज़ों में से चौपाए पैदा किए और अब ये उनके मालिक हैं?

72. और उन्हें उनके बस में कर दिया कि उनमें से बाज़ तो उनकी सवारियां हैं, और उनमें से बाज़ को वो खाते भी हैं;

73. और उनके लिए उनमें कितनी ही मनफ़अतें हैं, और मशरूबात भी। तो क्या वो शुक्र नहीं करते?

74. उन्होंने अल्लाह से हटकर कितने ही माबूद बना लिए हैं कि शायद उन्हें मदद पहुंचे।

75. वो उनकी मदद की ताक़त नहीं रखते, हालांकि वो (मुशरिकीन की निगाह में) उनके लिए हाज़िर लश्कर हैं।

76. पस उनकी बात तुम्हें ग़म में न डाले; हम जानते हैं जो कुछ वो छुपाते और जो कुछ ज़ाहिर करते हैं।

77. क्या इंसान ने देखा नहीं कि हमने उसे एक बूंद से पैदा किया? फिर क्या देखते हैं कि वह सरीह झगड़ालू हो गया।

78. और उसने हमपर फबती कसी और अपनी पैदाइश को भूल गया; कहता है कि "कौन हड्डियों में जान डालेगा जबकि वो बोसीदा हो चुकी होंगी?"

79. कह दो: "उनमें वही जान डालेगा, जिसने उनको पहली मरतबा पैदा किया; वह तो हर मख़्लूक़ को अच्छी तरह जानता है।

80. वही है जिसने तुम्हारे लिए हरे-भरे दरख़्त से आग पैदा कर दी, तो तुम लगे उससे सुलगाने"।

81. क्या जिसने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, उसे इसकी क़ुदरत नहीं कि उन जैसों को पैदा कर दे? क्यों नहीं; जबकि वह बड़ा पैदा करने वाला, सब कुछ जानने वाला है।

82. उसका मुआमला तो बस यह है कि जब वह किसी चीज़ का इरादा करता है, तो उससे कहता है, "हो जा" और वह हो जाती है।

83. पस शान व अज़मत है उसकी, जिसके हाथ में हर चीज़ का पूरा इख़्तियार है, और उसी की तरफ़ तुम लौटाए जा रहे हो।

अ-व लम् यरौ अन्ना ख़लक़्ना लहुम् मिम्मा अमिलत् ऐदीना अन्आमन् फ़हुम् लहा मालिकून (71)

व ज़ल्लल्नाहा लहुम् फ़मिन्हा रकूबुहुम् व मिन्हा यअ्कुलून (72)

व लहुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व मशारिबु, अ-फ़ला यश्कुरून (73)

वत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि आलि-हतल् लअल्लहुम् युन्सरून (74)

ला यस्ततीअू-न नस्-रहुम् व हुम् लहुम् जुन्दुम् मुह्ज़रूना (75)

फ़ला यह्ज़ुन्-क क़ौलुहुम् ● *इन्ना नअ्लमु मा युसिर्रून व मा युअ्लिनून* (76)

अ-व लम् यरल्-इन्सानु अन्ना ख़लक़्नाहु मिन् नुत्फ़तिन् फ़-इज़ा हु-व ख़सीमुम्-मुबीन (77)

व ज़-र-ब लना म-सलंव्-व नसि-य ख़ल्क़हू, क़ा-ल मंय्युह्यिल्-अिज़ा-म व हि-य रमीम (78)

कुल् युह्यीहल्लज़ी अन्श-अहा अव्व-ल मर्रतिन्, व हु-व बिकुल्लि ख़ल्क़िन् अलीम (79)

अल्लज़ी ज-अ-ल लकुम् मिनश्श-जरिल्-अख़्-ज़रि नारन् फ़-इज़ा अन्तुम् मिन्हु तूक़िदून (80)

अ-व लैसल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिक़ादिरिन् अला अंय्यख़्लु-क़ मिस्लहुम्, बला, व हुवल् ख़ल्लाक़ुल्-अलीम (81)

इन्नमा अम्रुहू इज़ा अरा-द शैअन् अंय्यक़ू-ल लहू कुन् फ़-यकून (82)

फ़-सुब्हानल्लज़ी बि-यदिही म-लकूतु कुल्लि शैइंव्-व इलैहि तुर्जअून (83)●

أَوَلَمْ يَرَوْا أَنَّا خَلَقْنَا لَهُم مِّمَّا عَمِلَتْ أَيْدِينَا أَنْعَامًا فَهُمْ لَهَا مَالِكُونَ ٧١

وَذَلَّلْنَاهَا لَهُمْ فَمِنْهَا رَكُوبُهُمْ وَمِنْهَا يَأْكُلُونَ ٧٢

وَلَهُمْ فِيهَا مَنَافِعُ وَمَشَارِبُ ۖ أَفَلَا يَشْكُرُونَ ٧٣

وَاتَّخَذُوا مِن دُونِ اللَّهِ آلِهَةً لَّعَلَّهُمْ يُنصَرُونَ ٧٤

لَا يَسْتَطِيعُونَ نَصْرَهُمْ وَهُمْ لَهُمْ جُندٌ مُّحْضَرُونَ ٧٥

فَلَا يَحْزُنكَ قَوْلُهُمْ ۘ إِنَّا نَعْلَمُ مَا يُسِرُّونَ وَمَا يُعْلِنُونَ ٧٦

أَوَلَمْ يَرَ الْإِنسَانُ أَنَّا خَلَقْنَاهُ مِن نُّطْفَةٍ فَإِذَا هُوَ خَصِيمٌ مُّبِينٌ ٧٧

وَضَرَبَ لَنَا مَثَلًا وَنَسِيَ خَلْقَهُ ۖ قَالَ مَن يُحْيِي الْعِظَامَ وَهِيَ رَمِيمٌ ٧٨

قُلْ يُحْيِيهَا الَّذِي أَنشَأَهَا أَوَّلَ مَرَّةٍ ۖ وَهُوَ بِكُلِّ خَلْقٍ عَلِيمٌ ٧٩

الَّذِي جَعَلَ لَكُم مِّنَ الشَّجَرِ الْأَخْضَرِ نَارًا فَإِذَا أَنتُم مِّنْهُ تُوقِدُونَ ٨٠

أَوَلَيْسَ الَّذِي خَلَقَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضَ بِقَادِرٍ عَلَىٰ أَن يَخْلُقَ مِثْلَهُم ۚ بَلَىٰ وَهُوَ الْخَلَّاقُ الْعَلِيمُ ٨١

إِنَّمَا أَمْرُهُ إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَن يَقُولَ لَهُ كُن فَيَكُونُ ٨٢

فَسُبْحَانَ الَّذِي بِيَدِهِ مَلَكُوتُ كُلِّ شَيْءٍ وَإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ٨٣

सूरह अस-साफ़्फ़ात मक्की

(आयतें 182, रुकूआत 5)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. शाहिद (गवाह) हैं परा जमाकर सफ़ बांधनेवाले,

2. फिर डांटनेवाले,

3. फिर ज़िक्र करनेवाले,

4-5. कि तुम्हारा मा'बूद अकेला है, वह आसमानों और ज़मीन, और जो कुछ उनके दरमियान है सब का रब है, और अतराफ़े मश्रिक़ का रब भी।

6. हमने आसमान-ए-दुनिया को ज़ीनत यानी सितारों से आरास्ता किया।

7. (रात में मुसाफ़िरों की उनके ज़रिए से रहनुमाई की) और हर सरकश शैतान से हिफ़ाज़त भी की;

8-9. वो आलम-ए-बाला के फ़रिश्तों की तरफ़ कान नहीं लगा पाते, और हर तरफ़ से फेंक मारे जाते हैं भगाने- धुतकारने के लिए और उनके लिए पैहम अज़ाब है,

10. मगर यह और बात है कि कोई कुछ उचक ले, इस सूरत में एक तेज़ दहकता शोला झपटकर उसका पीछा करता है।

11. अब उनसे पूछो कि उनके पैदा करने का मुआमला ज़्यादा सख़्त है, या उनको जिनको हमने पैदा किया है? उनको तो हमने चिपकती मिट्टी से पैदा किया।

12. बल्कि तुम तो हैरत में हो; और वो हैं कि मज़ाक़ उड़ा रहे हैं।

13. और जब उन्हें याददिहानी कराई जाती है, तो याददिहानी हासिल नहीं करते,

14. और जब कोई निशानी देखते हैं, तो मज़ाक़ उड़ाते हैं;

15. और कहते हैं, "यह तो बस एक सरीह जादू है।

16. क्या जब हम मर चुके होंगे और मिट्टी और हड्डियां होकर रह जाएंगे, तो क्या फिर हम उठाए जाएंगे?

17. क्या और हमारे अगले बाप-दादा भी?"

18. कह दो: "हां, और तुम ज़लील भी होगे"।

19. वह तो बस एक झिड़की होगी, फिर क्या देखेंगे कि वो ताकने लगे हैं।

20. और वो कहेंगे, "ऐ अफ़सोस हमपर! यह तो जज़ा (बदले) का दिन है"।

---

37 सूरतुस्-साफ़्फ़ाति
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 2951 अक्षर, 873 शब्द, 182 आयतें और 5 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वस्साफ़्फ़ाति सफ़्फ़ा (1)
फ़ज़्ज़ाजिराति ज़ज्रा (2)
फ़त्तालियाति ज़िक्रा (3)
इन्-न इला-हकुम् लवाहिद् (4)
रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व रब्बुल्-मशारिक़् (5)
इन्ना ज़य्यन्नस्समा-अद्दुन्या बिज़ी-नति-निल्-कवाकिब (6)
व हिफ़्ज़म् मिन् कुल्लि शैतानिम्-मारिद (7)
ला यस्सम्मअू-न इलल् म-लइल्-अअ्ला व युक़्ज़फ़ू-न मिन् कुल्लि जानिब (8)
दुहूरंव्-व लहुम् अज़ाबुंव्-वासिब् (9)
इल्ला मन् ख़तिफ़ल्-ख़त्फ़-त फ़-अत्ब-अहू शिहाबुन् साक़िब (10)
फ़स्तफ़्तिहिम् अ-हुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अम्मन् ख़लक़्ना, इन्ना ख़लक़्नाहुम् मिन् तीनिल्-लाज़िब (11)
बल् अजिब्-त व यस्ख़रून (12)
व इज़ा ज़ुक्किरू ला यज़्कुरून (13)
व इज़ा रऔ आ-यतंय्-यस्तस्ख़िरून (14)
व क़ालू इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुम्-मुबीन (15)
अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अिज़ामन् अ-इन्ना लमब्अूसून (16)
अ-व आबा-उनल्-अव्वलून (17)
क़ुल् न-अम् व अन्तुम् दाख़िरून (18)
फ़-इन्नमा हि-य ज़ज्-रतुंव्-वाहि-दतुन् फ़-इज़ा हुम् यन्ज़ुरून (19)
व क़ालू या वै-लना हाज़ा यौमुद्दीन (20)

سُوْرَةُ الصّٰفّٰتِ مَكِّيَّةٌ، اٰيَاتُهَا ۱۸۲، رُكُوْعَاتُهَا ۵

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

المنزل السادس

وَالصّٰٓفّٰتِ صَفًّا ۝۱
فَالزّٰجِرٰتِ زَجْرًا ۝۲
فَالتّٰلِيٰتِ ذِكْرًا ۝۳
اِنَّ اِلٰهَكُمْ لَوَاحِدٌ ۝۴
رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا وَرَبُّ
الْمَشَارِقِ ۝۵
اِنَّا زَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِزِيْنَةِ نِ الْكَوَاكِبِ ۝۶
وَحِفْظًا مِّنْ كُلِّ شَيْطٰنٍ مَّارِدٍ ۝۷
لَا يَسَّمَّعُوْنَ اِلَى الْمَلَاِ الْاَعْلٰى وَيُقْذَفُوْنَ
مِنْ كُلِّ جَانِبٍ ۝۸
دُحُوْرًا وَّلَهُمْ عَذَابٌ وَّاصِبٌ ۝۹
اِلَّا مَنْ خَطِفَ الْخَطْفَةَ فَاَتْبَعَهٗ شِهَابٌ
ثَاقِبٌ ۝۱۰
فَاسْتَفْتِهِمْ اَهُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمْ مَّنْ
خَلَقْنَا ؕ اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّنْ طِيْنٍ لَّازِبٍ ۝۱۱
بَلْ عَجِبْتَ وَيَسْخَرُوْنَ ۝۱۲
وَاِذَا ذُكِّرُوْا لَا يَذْكُرُوْنَ ۝۱۳
وَاِذَا رَاَوْا اٰيَةً يَّسْتَسْخِرُوْنَ ۝۱۴
وَقَالُوْٓا اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝۱۵
ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا
لَمَبْعُوْثُوْنَ ۝۱۶
اَوَ اٰبَآؤُنَا الْاَوَّلُوْنَ ۝۱۷
قُلْ نَعَمْ وَاَنْتُمْ دَاخِرُوْنَ ۝۱۸
فَاِنَّمَا هِيَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ فَاِذَا هُمْ يَنْظُرُوْنَ ۝۱۹
وَقَالُوْا يٰوَيْلَنَا هٰذَا يَوْمُ الدِّيْنِ ۝۲۰

21. यह वही फ़ैसले का दिन है, जिसे तुम झुटलाते रहे हो।

22-23. "जमा करो उन लोगों को जिन्होंने ज़ुल्म किया, और उनके साथियों को, और अल्लाह से हटकर जिनकी वो बन्दगी करते रहे हैं उन्हें भी, फिर उन सब को भड़कती हुई आग की राह दिखाओ!

24. और ज़रा उनको ठहराओ, उनसे पूछना है:

25. "तुम्हें क्या हुआ जो तुम एक-दूसरे की मदद नहीं कर रहे हो?"

26. बल्कि वो आज बड़े फ़रमांबरदार हो गए हैं।

27-28. वो एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह होकर पूछते हुए कहेंगे, "तुम तो हमारे पास आते थे दाएं से (और बाएं से)"।

29. वो कहेंगे, "नहीं बल्कि तुम खुद ही मोमिन न थे;

30. और हमारा तो तुमपर कोई ज़ोर न था; बल्कि तुम खुद ही सरकश लोग थे।

31. आख़िरकार हमपर हमारे रब की बात पूरी होकर रही; बेशक हमें (अपने किए का) मज़ा चखना ही होगा।

32. सो हमने तुम्हें बहकाया, यक़ीनन हम खुद बहके हुए थे"।

33. पस वो सब उस दिन अज़ाब में एक-दूसरे के शरीक-ए-हाल होंगे,

34. हम मुजरिमों के साथ ऐसा ही किया करते हैं;

35-36. उनका हाल यह था कि जब उनसे कहा जाता कि "अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं है" तो वो घमंड में आ जाते थे, और कहते थे कि "क्या हम एक दीवाने शायर की ख़ातिर अपने माबूदों को छोड़ दें?"

37. "नहीं, बल्कि वह हक़ लेकर आया, और वह रसूलों की पेशीनगोइयों का मिसदाक़ है।

38. यक़ीनन तुम दर्दनाक अज़ाब का मज़ा चखोगे,

39. तुम बदला वही तो पाओगे जो करते रहे हो"।

40. अलबत्ता खुदा के उन बंदों की बात और है जिनको उसने अपने लिए ख़ालिस कर लिया है;

41-44. वही लोग हैं जिनके लिए मालूम व मुक़र्रर रिज़्क़ है, लज़ीज़ फल

हाज़ा यौमुल-फ़स्लिल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (21) ●

उह्शुरुल्लज़ी-न ज़-लमू व अज़्वाजहुम् व रुकानू यअ्बुदून (22)

मिन् दूनिल्लाहि फ़ह्दूहुम् इला सिरातिल्-जहीम ●(23)

वक़िफ़ुहुम् इन्नहुम् मस्ऊलून (24)

मा लकुम् ला तना-सरून (25)

बल् हुमुल्-यौ-म मुस्तस्लिमून (26)

व अक़्ब-ल बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िंय्-य-तसा-अलून (27)

क़ालू इन्नकुम् कुन्तुम् तअ्तू-नना अ़निल्-यमीन (28)

क़ालू बल्-लम् तकूनू मुअ्मिनीन (29)

व मा का-न लना अ़लैकुम् मिन् सुल्तानिन् बल् कुन्तुम् क़ौमन् ताग़ीन (30)

फ़-हक़्-क़ अ़लैना क़ौलु रब्बिना इन्ना लज़ा-इक़ून (31)

फ़-अग़्वैनाकुम् इन्ना कुन्ना ग़ावीन (32)

फ़-इन्नहुम् यौमइज़िन् फ़िल्-अ़ज़ाबि मुश्तरिकून (33)

इन्ना कज़ालि-क नफ़्अ़लु बिल्-मुज्रिमीन (34)

इन्नहुम् कानू इज़ा क़ी-ल लहुम् ला इला-ह इल्लल्लाहु यस्तक्बिरून (35)

व यक़ूलू-न अ-इन्ना लतारिकू आलि-हतिना लिशाअ़िरिम्-मज्नून (36)

बल् जा-अ बिल्हक़्क़ि व सद्द-क़ल् मुर्-सलीन (37)

इन्नकुम् लज़ा-इक़ुल् अ़ज़ाबिल्-अलीम (38)

व मा तुज्ज़ौ-न इल्ला मा कुन्तुम् तअ्मलून (39)

इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन (40)

उलाइ-क लहुम् रिज़्क़ुम्-मअ्लूम (41)

फ़वाकिहु व हुम् मुक्रमून (42)

ع هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ الَّذِي كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُونَ ۝٢١

اُحْشُرُوا الَّذِينَ ظَلَمُوْا وَاَزْوَاجَهُمْ

وَمَا كَانُوْا يَعْبُدُوْنَ ۝٢٢

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ فَاهْدُوْهُمْ اِلٰى صِرَاطِ

الْجَحِيْمِ ۝٢٣

وَقِفُوْهُمْ اِنَّهُمْ مَّسْئُوْلُوْنَ ۝٢٤

مَا لَكُمْ لَا تَنَاصَرُوْنَ ۝٢٥

بَلْ هُمُ الْيَوْمَ مُسْتَسْلِمُوْنَ ۝٢٦

وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ۝٢٧

قَالُوْٓا اِنَّكُمْ كُنْتُمْ تَاْتُوْنَنَا عَنِ الْيَمِيْنِ ۝٢٨

قَالُوْا بَلْ لَّمْ تَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ ۝٢٩

وَمَا كَانَ لَنَا عَلَيْكُمْ مِّنْ سُلْطٰنٍ ۚ

بَلْ كُنْتُمْ قَوْمًا طٰغِيْنَ ۝٣٠

فَحَقَّ عَلَيْنَا قَوْلُ رَبِّنَآ ۖ اِنَّا لَذَآئِقُوْنَ ۝٣١

فَاَغْوَيْنٰكُمْ اِنَّا كُنَّا غٰوِيْنَ ۝٣٢

فَاِنَّهُمْ يَوْمَئِذٍ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ۝٣٣

اِنَّا كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ۝٣٤

اِنَّهُمْ كَانُوْٓا اِذَا قِيْلَ لَهُمْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ

يَسْتَكْبِرُوْنَ ۝٣٥

وَيَقُوْلُوْنَ اَئِنَّا لَتَارِكُوْٓا اٰلِهَتِنَا لِشَاعِرٍ

مَّجْنُوْنٍ ۝٣٦

بَلْ جَآءَ بِالْحَقِّ وَصَدَّقَ الْمُرْسَلِيْنَ ۝٣٧

اِنَّكُمْ لَذَآئِقُوا الْعَذَابِ الْاَلِيْمِ ۝٣٨

وَمَا تُجْزَوْنَ اِلَّا مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝٣٩

اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝٤٠

اُولٰٓئِكَ لَهُمْ رِزْقٌ مَّعْلُوْمٌ ۝٤١

فَوَاكِهُ ۚ وَهُمْ مُّكْرَمُوْنَ ۝٤٢

और वो नेमत भरी जन्नतों में बाइज़्ज़त तौरपर होंगे, तख़्तों पर आमने-सामने बैठे होंगे,

45-46. उनके दरमियान ख़ालिस शराब का जाम गर्दिश में होगा, बिल्कुल साफ़-शफ़्फ़ाफ़, पीनेवालों के लिए लज़्ज़त ही लज़्ज़त,

47. न उसमें कोई ख़राबी होगी, और न वो उससे निढाल और मदहोश होंगे,

48-49. और उनके पास निगाहें नीची रखनेवाली कुशादा चश्म औरतें होंगी, गोया कि वो महफ़ूज़ अंडे हैं।

50. फिर वो एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह होकर पूछेंगे।

51. उनमें से एक कहनेवाला कहेगा, "मेरा एक साथी था,

52. जो कहा करता था, 'क्या तुम भी तसदीक़ करने वालों में से हो;

53. क्या जब हम मर चुके होंगे और मिट्टी और हड्डियां होकर रह जाएंगे, तो क्या उस वक़्त हम बदला दिए जाएंगे?"

54. वह कहेगा, "क्या तुम झांक कर देखोगे?"

55. फिर वह झांकेगा, तो उसे भड़कती हुई आग के बीच में देखेगा।

56. कहेगा, "अल्लाह की क़सम, तुम तो मुझे तबाह ही करने को थे;

57. अगर मेरे रब की नवाज़िश न होती, तो लाज़िमन मैं भी पकड़ के हाज़िर किए गए लोगों में से होता।

58-59. तो क्या अब हमें मरना नहीं है? हमें जो मौत आनी थी वह बस पहले आ चुकी, और न हम पर अज़ाब ही होगा?

60. यक़ीनन यही बड़ी कामयाबी है

61. ऐसी ही चीज़ के लिए अमल करनेवालों को अमल करना चाहिए"।

62. क्या यह ज़ियाफ़त अच्छी है, या ज़क़्क़ूम का दरख़्त?

63. यक़ीनन हमने उसे ज़ालिमों के लिए एक फ़ित्ना बनाया है।

64. वह एक दरख़्त है जो भड़कती हुई आग की तह से निकलता है;

65. उसके शिगूफ़े गोया सांपों के फन हैं।

66. पस वो उसे खाएंगे और उसी से पेट भरेंगे,

फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम (43)
अ़ला सुरुरिम् मु-तक़ाबिलीन (44)
युताफ़ु अ़लैहिम् बिकअ्सिम् मिम्-मअ़ीन (45)
बैज़ा-अ लज़्ज़तिल्-लिश्शारिबीन (46)
ला फ़ीहा ग़ौलुंव्-व ला हुम् अ़न्हा युन्ज़फ़ून (47)
व अ़िन्-दहुम् क़ासिरातुत्-तर्फ़ि अ़ीन (48)
क-अन्नहुन्-न बैज़ुम्-मक्नून (49)
फ़-अक़्ब-ल बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िंय्-य-तसा-अलून (50)
क़ा-ल क़ाइलुम्-मिन्हुम् इन्नी का-न ली क़रीन (51)
यक़ूलु अ-इन्न-क लमिनल्-मुसद्दिक़ीन (52)
अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अ़िज़ामन् अ-इन्ना ल-मदीनून (53)
क़ा-ल हल् अन्तुम् मुत्तलिअ़ून (54)
फ़त्त-ल-अ फ़-रआहु फ़ी सवाइल्-जहीम (55)
क़ा-ल तल्लाहि इन् किद्-त ल-तुर्दीन (56)
व लौ ला निअ्मतु रब्बी लकुन्तु मिनल्-मुह्ज़रीन (57)
अ-फ़मा नह्नु बिमय्यितीन (70)
इल्ला मौत-तनल्-ऊला व मा नह्नु बिमुअ़ज़्ज़बीन (59)
इन्-न हाज़ा ल-हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (60)
लिमिस्लि हाज़ा फ़ल्यअ्मलिल्-आ़मिलून (61)
अ-ज़ालि-क ख़ैरुन नुज़ुलन् अम् श-ज-रतुज़्-ज़क़्क़ूम (62)
इन्ना जअ़ल्नाहा फ़ित्-नतल् लिज़्ज़ालिमीन (63)
इन्नहा श-ज-रतुन् तख़्रुजु फ़ी अस्लिल्-जहीम (64)
तल्अ़ुहा क-अन्नहू रुऊसुश्-शयातीन (65)
फ़-इन्नहुम् ल-आकिलू-न मिन्हा फ़-मालिऊ-न मिन्हल्-बुतून (66)

فِيْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ﴿٤٣﴾
عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ ﴿٤٤﴾
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِكَاْسٍ مِّنْ مَّعِيْنٍ ﴿٤٥﴾
بَيْضَآءَ لَذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ﴿٤٦﴾
لَا فِيْهَا غَوْلٌ وَّلَا هُمْ عَنْهَا يُنْزَفُوْنَ ﴿٤٧﴾
وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ عِيْنٌ ﴿٤٨﴾
كَاَنَّهُنَّ بَيْضٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٤٩﴾
فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٥٠﴾
قَالَ قَآئِلٌ مِّنْهُمْ اِنِّيْ كَانَ لِيْ قَرِيْنٌ ﴿٥١﴾
يَّقُوْلُ اَئِنَّكَ لَمِنَ الْمُصَدِّقِيْنَ ﴿٥٢﴾
ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا وَّعِظَامًا ءَاِنَّا
لَمَدِيْنُوْنَ ﴿٥٣﴾
قَالَ هَلْ اَنْتُمْ مُّطَّلِعُوْنَ ﴿٥٤﴾
فَاطَّلَعَ فَرَاٰهُ فِيْ سَوَآءِ الْجَحِيْمِ ﴿٥٥﴾
قَالَ تَاللّٰهِ اِنْ كِدْتَّ لَتُرْدِيْنِ ﴿٥٦﴾
وَلَوْلَا نِعْمَةُ رَبِّيْ لَكُنْتُ مِنَ
الْمُحْضَرِيْنَ ﴿٥٧﴾
اَفَمَا نَحْنُ بِمَيِّتِيْنَ ﴿٥٨﴾
اِلَّا مَوْتَتَنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُعَذَّبِيْنَ ﴿٥٩﴾
اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ﴿٦٠﴾
لِمِثْلِ هٰذَا فَلْيَعْمَلِ الْعٰمِلُوْنَ ﴿٦١﴾
اَذٰلِكَ خَيْرٌ نُّزُلًا اَمْ شَجَرَةُ الزَّقُّوْمِ ﴿٦٢﴾
اِنَّا جَعَلْنٰهَا فِتْنَةً لِّلظّٰلِمِيْنَ ﴿٦٣﴾
اِنَّهَا شَجَرَةٌ تَخْرُجُ فِيْ اَصْلِ الْجَحِيْمِ ﴿٦٤﴾
طَلْعُهَا كَاَنَّهٗ رُءُوْسُ الشَّيٰطِيْنِ ﴿٦٥﴾
فَاِنَّهُمْ لَاٰكِلُوْنَ مِنْهَا فَمَالِـُٔوْنَ مِنْهَا
الْبُطُوْنَ ﴿٦٦﴾

67. फिर उसके ऊपर से उनके लिए गर्म पानी की आमेज़िश होगी,

68. फिर उनकी वापसी भड़कती हुई आग की तरफ़ होगी।

69-70. बिलाशुबह उन्होंने अपने बाप-दादा को गुमराह पाया, फिर वो उन्हीं के नक़्श-ए-क़दम पर दौड़ते रहे।

71. और उनसे पहले भी अगलों में अक्सर गुमराह हो चुके हैं।

72. हमने उनमें ख़बरदार करनेवाले भेजे थे;

73. तो अब देख लो, उन लोगों का कैसा अन्जाम हुआ जिन्हें ख़बरदार किया गया था,

74. अलबत्ता अल्लाह के उन बन्दों की बात और है जिनको उसने अपने लिए ख़ालिस कर लिया है।

75. नूह ने हमको पुकारा था; तो हम कैसे अच्छे हैं गुज़ारिश क़बूल करने वाले।

76. हमने उसे और उसके लोगों को बहुत बड़े ग़म से नजात दी,

77. और हमने उसके मुत्तबिईन (अनुयायी) ही को बाक़ी रखा,

78. और हमने पीछे आने वाली नसलों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि,

79. "सलाम है नूह पर तमाम दुनियावालों में!"

80. बेशक हम ख़ूबकारों को ऐसा ही बदला देते हैं;

81. यक़ीनन वह हमारे मोमिन बंदों में से था।

82. फिर हमने दूसरों को ग़र्क़ कर दिया।

83. और उसी की जमाअत में से इब्राहीम भी था;

84. जबकि वह अपने रब के हुज़ूर में क़ल्ब-ए-सलीम (बेऐब दिल) लेकर आया,

85. जबकि उसने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि "तुम किस चीज़ की परसतिश करते हो?

86. क्या अल्लाह से हटकर, मनघड़त माबूदों को चाह रहे हो?

87. आख़िर सारे जहान के रब के बारे में तुम्हारा क्या गुमान है?"

88-89. फिर उसने एक नज़र सितारों पर डाली और कहा, "मैं तो निढाल हो रहा हूं"।

90. चुनांचे वो उसे छोड़कर चले गए पीठ फेर कर।

91. फिर वह नज़र बचाकर उनके देवताओं की तरफ़ गया, और कहा, "क्या तुम खाते नहीं?

92. तुम्हें क्या हुआ है कि तुम बोलते नहीं?"

93. फिर वह उनपर भरपूर हाथ मारते हुए पिल पड़ा।

सुम्-म इन्-न लहुम् अ़लैहा लशौबम् मिन् हमीम (67)

सुम्-म इन्-न मर्जि-अ़हुम् ल-इलल्-जहीम (68)

इन्नहुम् अल्फ़ौ आबा-अहुम् ज़ाल्लीन (69)

फ़हुम् अ़ला आसारिहिम् युह्रअ़ून (70)

व ल-क़द् ज़ल्-ल क़ब्लहुम् अक्सरुल्-अव्वलीन (71)

व ल-क़द् अर्सल्ना फ़ीहिम् मुन्ज़िरीन (72)

फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुन्ज़रीन (73)

इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन (74)●

व ल-क़द् नादाना नूहुन् फ़-लनिअ़्मल्-मुजीबून (75)

व नज्जैनाहु व अह्लहू मिनल् कर्बिल्-अ़ज़ीम (76)

व जअ़ल्ना ज़ुर्रिय्य-तहू हुमुल्-बाक़ीन (77)

व तरक्ना अ़लैहि फ़िल्-आख़िरीन (78)

सलामुन् अ़ला नूहिन् फ़िल्-आ़लमीन (79)

इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (80)

इन्नहू मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन (81)

सुम्-म अग़्रक़्नल्-आ-ख़रीन (82)

व इन्-न मिन् शी-अ़तिही ल-इब्राहीम ●(83)

इज़् जा-अ रब्बहू बिक़ल्बिन् सलीम (84)

इज़् क़ा-ल लि-अबीहि व क़ौमिही माज़ा तअ्बुदून (85)

अ-इफ़्कन् आलि-हतन् दूनल्लाहि तुरीदून (86)

फ़मा ज़न्नुकुम् बिरब्बिल्-आ़लमीन (87)

फ़-न-ज़-र नज़्र-तन् फ़िन्नुजूम (88)

फ़क़ा-ल इन्नी सक़ीम (89)

फ़-तवल्लौ अ़न्हु मुद्बिरीन (90)

फ़रा-ग़ इला आलि-हतिहिम् फ़क़ा-ल अला तअ्कुलून (91)

मा लकुम् ला तन्तिक़ून (92)

फ़रा-ग़ अ़लैहिम् ज़र्बम्-बिल्यमीन (93)

ثُمَّ إِنَّ لَهُمْ عَلَيْهَا لَشَوْبًا مِّنْ حَمِيمٍ (٦٧)

ثُمَّ إِنَّ مَرْجِعَهُمْ لَإِلَى الْجَحِيمِ (٦٨)

إِنَّهُمْ أَلْفَوْا آبَاءَهُمْ ضَالِّينَ (٦٩)

فَهُمْ عَلَىٰ آثَارِهِمْ يُهْرَعُونَ (٧٠)

وَلَقَدْ ضَلَّ قَبْلَهُمْ أَكْثَرُ الْأَوَّلِينَ (٧١)

وَلَقَدْ أَرْسَلْنَا فِيهِم مُّنذِرِينَ (٧٢)

فَانظُرْ كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الْمُنذَرِينَ (٧٣)

إِلَّا عِبَادَ اللَّهِ الْمُخْلَصِينَ (٧٤)

وَلَقَدْ نَادَانَا نُوحٌ فَلَنِعْمَ الْمُجِيبُونَ (٧٥)

وَنَجَّيْنَاهُ وَأَهْلَهُ مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيمِ (٧٦)

وَجَعَلْنَا ذُرِّيَّتَهُ هُمُ الْبَاقِينَ (٧٧)

وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِي الْآخِرِينَ (٧٨)

سَلَامٌ عَلَىٰ نُوحٍ فِي الْعَالَمِينَ (٧٩)

إِنَّا كَذَٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ (٨٠)

إِنَّهُ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِينَ (٨١)

ثُمَّ أَغْرَقْنَا الْآخَرِينَ (٨٢)

وَإِنَّ مِن شِيعَتِهِ لَإِبْرَاهِيمَ (٨٣)

إِذْ جَاءَ رَبَّهُ بِقَلْبٍ سَلِيمٍ (٨٤)

إِذْ قَالَ لِأَبِيهِ وَقَوْمِهِ مَاذَا تَعْبُدُونَ (٨٥)

أَئِفْكًا آلِهَةً دُونَ اللَّهِ تُرِيدُونَ (٨٦)

فَمَا ظَنُّكُم بِرَبِّ الْعَالَمِينَ (٨٧)

فَنَظَرَ نَظْرَةً فِي النُّجُومِ (٨٨)

فَقَالَ إِنِّي سَقِيمٌ (٨٩)

فَتَوَلَّوْا عَنْهُ مُدْبِرِينَ (٩٠)

فَرَاغَ إِلَىٰ آلِهَتِهِمْ فَقَالَ أَلَا تَأْكُلُونَ (٩١)

مَا لَكُمْ لَا تَنطِقُونَ (٩٢)

فَرَاغَ عَلَيْهِمْ ضَرْبًا بِالْيَمِينِ (٩٣)

94. फिर वो लोग झपटते हुए उसकी तरफ़ आए।

95. उसने कहा, "क्या तुम उन चीज़ों को पूजते हो जिन्हें ख़ुद तराशते हो,

96. हालांकि अल्लाह ने तुम्हें भी पैदा किया है और उन चीज़ों को भी जिनको तुम बनाते हो!"

97. वो बोले; "उसके लिए एक मकान बनाओ, फिर उसे भड़कती आग में डाल दो!"

98. ग़र्ज़ उन्होंने उसके साथ एक चाल चलनी चाही; मगर हमने उन्हीं को नीचा दिखाया।

99. उसने कहा, "मैं अपने रब की तरफ़ जा रहा हूं; वह मेरी रहनुमाई करेगा।

100. मेरे रब, मुझे सालेह औलाद अता कर"।

101. तो हमने उसे एक बुर्दबार फ़र्ज़ाना लड़के की बशारत दी;

102. फिर जब वह उसके साथ दौड़-धूप करने की उम्र को पहुंचा, तो उसने कहा, "ऐ मेरे बेटे, मैं ख़्वाब में देखता हूं कि तुम्हें ज़बह कर रहा हूं; तो अब देख लो, तुम्हारी क्या राय है?" उसने कहा, "ऐ मेरे बाप, जो कुछ आपको हुक्म दिया जा रहा है कीजिए; अगर अल्लाह ने चाहा तो आप मुझे साबित क़दम पाएंगे"।

103–105. आख़िरकार जब दोनों ने सर-ए-तसलीम ख़म कर दिया, और उसने उसे कनपटी के बल लिटाया, और हमने उसे पुकारा, "ऐ इबराहीम, तूने ख़्वाब को सच कर दिखाया, बेशक हम ख़ूबकारों को इसी तरह बदला देते हैं"।

106. यक़ीनन यह एक खुली हुई आज़माइश थी।

107. और हमने उसे एक अज़ीम क़ुरबानी के इवज़ छुड़ा लिया।

108. और हमने पीछे आने वाली नसलों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि।

109. "सलाम है इबराहीम पर!"

110. ख़ूबकारों को हम ऐसा ही बदला देते हैं;

111. यक़ीनन वह हमारे मोमिन बंदों में से था।

112. और हमने उसे इसहाक़ की बशारत दी, सालेहीन में से एक नबी की!

113. और उसे, और इसहाक़ को बरकत दी; और उन दोनों की नस्ल में कोई तो ख़ूबकार है, और कोई अपने नफ़्स पर सरीह ज़ुल्म रवा रखनेवाला।

114. और हम मूसा और हारून पर भी एहसान कर चुके हैं,

115. और हमने उन्हें और उनकी क़ौम को बड़ी मुसीबत से नजात दी।

फ़-अक़्बलू इलैहि यज़िफ़्फ़ून (94)

क़ा-ल अ-तअ्बुदू-न मा तन्हितून (95)

वल्लाहु ख़-ल-क़्कुम् व मा तअ्मलून (96)

क़ालुब्नू लहू बुन्यानन् फ़-अल्क़ूहु फ़िल्-जहीम (97)

फ़-अरादू बिही कैदन् फ़-जअ़ल्नाहुमुल्-अस्-फ़लीन (98)

व क़ा-ल इन्नी ज़ाहिबुन् इला रब्बी स-यह्दीन (99)

रब्बि हब् ली मिनस्सालिहीन (100)

फ़-बश्शर्नाहु बिग़ुलामिन् हलीम (101)

फ़-लम्मा ब-ल-ग़ म-अ़हुस्सअ्-य क़ा-ल या बुनय्-य इन्नी अरा फ़िल्-मनामि अन्नी अज़्बहु-क फ़न्ज़ुर् माज़ा तरा, क़ा-ल या अ-बतिफ़्अ़ल् मा तुअ्मरु, स-तजिदुनी इन्शा-अल्लाहु मिनस्साबिरीन (102)

फ़-लम्मा अस्-लमा व तल्लहू लिल्जबीन (103)

व नादैनाहु अंय्या इब्राहीम (104)

क़द् सद्दक़्तर्-रुअ्या इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (105)

इन्-न हाज़ा ल-हुवल् बलाउल्-मुबीन (106)

व फ़दैनाहु बिज़िब्हिन् अ़ज़ीम (107)

व तरक्ना अ़लैहि फ़िल्-आख़िरीन (108)

सलामुन् अ़ला इब्राहीम (109)

कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (110)

इन्नहू मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन (111)

व बश्शर्नाहु बि-इस्हा-क़ नबिय्यम् मिनस्-सालिहीन (112)

व बारक्ना अ़लैहि व अ़ला इस्हा-क़, व मिन् ज़ुर्रिय्यतिहिमा मुह्सिनुंव्-व ज़ालिमुल्-लिनफ़्सिही मुबीन (113)●

व ल-क़द् मनन्ना अ़ला मूसा व हारून (114)

व नज्जैनाहुमा व क़ौमहुमा मिनल् करबिल्-अ़ज़ीम (115)

فَاَقْبَلُوْٓا اِلَيْهِ يَزِفُّوْنَ (٩٤)
قَالَ اَتَعْبُدُوْنَ مَا تَنْحِتُوْنَ (٩٥)
وَاللّٰهُ خَلَقَكُمْ وَمَا تَعْمَلُوْنَ (٩٦)
قَالُوا ابْنُوْا لَهٗ بُنْيَانًا فَاَلْقُوْهُ فِى الْجَحِيْمِ (٩٧)
فَاَرَادُوْا بِهٖ كَيْدًا فَجَعَلْنٰهُمُ الْاَسْفَلِيْنَ (٩٨)
وَقَالَ اِنِّىْ ذَاهِبٌ اِلٰى رَبِّىْ سَيَهْدِيْنِ (٩٩)
رَبِّ هَبْ لِىْ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ (١٠٠)
فَبَشَّرْنٰهُ بِغُلٰمٍ حَلِيْمٍ (١٠١)
فَلَمَّا بَلَغَ مَعَهُ السَّعْىَ قَالَ يٰبُنَىَّ اِنِّىْٓ
اَرٰى فِى الْمَنَامِ اَنِّىْٓ اَذْبَحُكَ فَانْظُرْ
مَاذَا تَرٰى ۗ قَالَ يٰٓاَبَتِ افْعَلْ مَا تُؤْمَرُ ۡ
سَتَجِدُنِىْٓ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ مِنَ الصّٰبِرِيْنَ (١٠٢)
فَلَمَّآ اَسْلَمَا وَتَلَّهٗ لِلْجَبِيْنِ (١٠٣)
وَنَادَيْنٰهُ اَنْ يّٰٓاِبْرٰهِيْمُ (١٠٤)
قَدْ صَدَّقْتَ الرُّءْيَا ۚ اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى
الْمُحْسِنِيْنَ (١٠٥)
اِنَّ هٰذَا لَهُوَ الْبَلٰٓؤُا الْمُبِيْنُ (١٠٦)
وَفَدَيْنٰهُ بِذِبْحٍ عَظِيْمٍ (١٠٧)
وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ (١٠٨)
سَلٰمٌ عَلٰٓى اِبْرٰهِيْمَ (١٠٩)
كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ (١١٠)
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ (١١١)
وَبَشَّرْنٰهُ بِاِسْحٰقَ نَبِيًّا مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ (١١٢)
وَبٰرَكْنَا عَلَيْهِ وَعَلٰٓى اِسْحٰقَ ۗ وَمِنْ ذُرِّيَّتِهِمَا
ع مُحْسِنٌ وَّظَالِمٌ لِّنَفْسِهٖ مُبِيْنٌ (١١٣)
وَلَقَدْ مَنَنَّا عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ (١١٤)
وَنَجَّيْنٰهُمَا وَقَوْمَهُمَا مِنَ الْكَرْبِ الْعَظِيْمِ (١١٥)

116. हमने उन्हें नुसरत बख़्शी तो वही ग़ालिब रहे;

117. हमने उनको निहायत वाज़ेह किताब अता की,

118. और उनको सीधे रास्ते की हिदायत बख़्शी,

119. और हमने पीछे आने वाली नसलों में उन दोनों का अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि,

120. "सलाम है मूसा और हारून पर!"

121. बेशक हम ख़ूबकारों को ऐसा ही बदला देते हैं;

122. यक़ीनन वो दोनों हमारे मोमिन बंदों में से थे।

123. इलयास भी यक़ीनन रसूलों में से था;

124. याद करो जबकि उसने अपनी क़ौम से कहा, "क्या तुम डर नहीं रखते?

125-126. क्या तुम 'बअल' को पुकारते हो, और बेहतरीन ख़ालिक़ को छोड़ देते हो? अपने रब, और अपने अगले बाप-दादा के रब, अल्लाह को?"

127. मगर उन्होंने उसे झुटला दिया, तो वो यक़ीनन पकड़ कर हाज़िर किए जाएंगे,

128. अल्लाह के उन बंदों की बात और है जिनको उसने अपने लिए ख़ालिस कर लिया है।

129. और हमने पीछे आने वाली नसलों में उसका अच्छा ज़िक्र छोड़ा कि,

130. "सलाम है इलयासीन पर!"

131. बेशक हम ख़ूबकारों को ऐसा ही बदला देते हैं;

132. यक़ीनन वह हमारे मोमिन बंदों में से था।

133. और यक़ीनन लूत भी रसूलों में था;

134-135. याद करो जबकि हमने उसे और उसके सब ही मुतअल्लिक़ीन को बचाया, सिवाय एक बुढ़िया के कि वह पीछे रह जाने वालों में थी;

136. फिर दूसरों को हमने तहस-नहस करके रख दिया;

137-138. और तुम उनपर गुज़रते हो सुबह को भी और रात में भी; तो क्या तुम अक़्ल से काम नहीं लेते?

139. और बेशक यूनुस भी रसूलों में से था;

140-141. जबकि वह भरी कश्ती की तरफ़ भाग निकला फिर दूसरों के साथ शामिल हो गया, पस वह कुछ लोगों के साथ किनारे की तरफ़ धकेल दिया गया,

142. फिर मछली उस पर मुंह मारने लगी, और वह मलामत ज़दा हो गया था।

व नसर्नाहुम् फ़कानू हुमुल्-ग़ालिबीन (116)
व आतैनाहुमल् किताबल्-मुस्तबीन (117)
व हदैनाहुमस्सिरातल् मुस्तक़ीम(118)
व तरक्ना अ़लैहिमा फ़िल्-आख़िरीन (119)
सलामुन् अ़ला मूसा व हारून (120)
इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन (121)
इन्नहुमा मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन (122)
व इन्-न इल्या-स लमिनल्-मुर्-सलीन (123)
इज़् क़ा-ल लिक़ौमिही अला तत्तकून (124)
अतद्अू-न बअ्लंव्-व त-ज़रू-न अह्स-नल्-ख़ालिक़ीन (125)
अल्ला-ह रब्बकुम् व रब्-ब आबा-इकुमुल् अव्वलीन (126)
फ़-कज़्ज़बूहु फ़-इन्नहुम् ल-मुह्ज़रून (127)
इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन (128)
व तरक्ना अ़लैहि फ़िल्-आख़िरीन (129)
सलामुन् अ़ला इल्यासीन (130)
इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल् मुह्सिनीन (131)
इन्नहु मिन् अ़िबादिनल्-मुअ्मिनीन (132)
व इन्-न लूतल्-लमिनल्-मुर्-सलीन (133)
इज़् नज्जैनाहु व अह्लहू अज्मअ़ीन (134)
इल्ला अ़जूज़न् फ़िल्-ग़ाबिरीन (135)
सुम्-म दम्मर्नल्-आख़रीन (136)
व इन्नकुम् ल-तमुर्रू-न अ़लैहिम् मुस्बिहीन (137)
व बिल्लैलि, अ-फ़ला तअ्क़िलून (138)●
व इन्-न यूनु-स लमिनल्-मुर्-सलीन (139)
इज़् अ-ब-क़ इलल्-फ़ुल्किल्-मश्हून (140)
फ़-सा-ह-म फ़का-न मिनल्-मुद्-हज़ीन (141)
फ़ल्त-क़-महुल्-हूतु व हु-व मुलीम (142)

وَنَصَرْنٰهُمْ فَكَانُوْا هُمُ الْغٰلِبِيْنَ ﴿١١٦﴾
وَاٰتَيْنٰهُمَا الْكِتٰبَ الْمُسْتَبِيْنَ ﴿١١٧﴾
وَهَدَيْنٰهُمَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ ﴿١١٨﴾
وَتَرَكْنَا عَلَيْهِمَا فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١١٩﴾
سَلٰمٌ عَلٰى مُوْسٰى وَهٰرُوْنَ ﴿١٢٠﴾
اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٢١﴾
اِنَّهُمَا مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٢٢﴾
وَاِنَّ اِلْيَاسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٢٣﴾
اِذْ قَالَ لِقَوْمِهٖۤ اَلَا تَتَّقُوْنَ ﴿١٢٤﴾
اَتَدْعُوْنَ بَعْلًا وَّتَذَرُوْنَ اَحْسَنَ الْخَالِقِيْنَ ﴿١٢٥﴾
اللّٰهَ رَبَّكُمْ وَرَبَّ اٰبَآئِكُمُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٢٦﴾
فَكَذَّبُوْهُ فَاِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ﴿١٢٧﴾
اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ﴿١٢٨﴾
وَتَرَكْنَا عَلَيْهِ فِى الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٢٩﴾
سَلٰمٌ عَلٰۤى اِلْ يَاسِيْنَ ﴿١٣٠﴾
اِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِى الْمُحْسِنِيْنَ ﴿١٣١﴾
اِنَّهٗ مِنْ عِبَادِنَا الْمُؤْمِنِيْنَ ﴿١٣٢﴾
وَاِنَّ لُوْطًا لَّمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٣﴾
اِذْ نَجَّيْنٰهُ وَاَهْلَهٗۤ اَجْمَعِيْنَ ﴿١٣٤﴾
اِلَّا عَجُوْزًا فِى الْغٰبِرِيْنَ ﴿١٣٥﴾
ثُمَّ دَمَّرْنَا الْاٰخَرِيْنَ ﴿١٣٦﴾
وَاِنَّكُمْ لَتَمُرُّوْنَ عَلَيْهِمْ مُّصْبِحِيْنَ ﴿١٣٧﴾
وَبِالَّيْلِ ؕ اَفَلَا تَعْقِلُوْنَ ﴿١٣٨﴾
وَاِنَّ يُوْنُسَ لَمِنَ الْمُرْسَلِيْنَ ﴿١٣٩﴾
اِذْ اَبَقَ اِلَى الْفُلْكِ الْمَشْحُوْنِ ﴿١٤٠﴾
فَسَاهَمَ فَكَانَ مِنَ الْمُدْحَضِيْنَ ﴿١٤١﴾
فَالْتَقَمَهُ الْحُوْتُ وَهُوَ مُلِيْمٌ ﴿١٤٢﴾

143-144. अब अगर वह तसबीह करने वाला न होता, तो उसी के अंदर उस दिन तक के लिए पड़ कर रह जाता जबकि वो सब उठाए जाएंगे;

145. आख़िरकार हमने उसे इस हालत में कि वह निढाल था, साफ़ मैदान में डाल दिया।

146. हमने उस पर बेलदार दरख़्त उगाया था।

147. और हमने उसे एक लाख, या उससे ज़्यादा की तरफ़ भेजा।

148. फिर वो ईमान लाए; तो हमने उन्हें एक मुद्दत तक लुत्फ़ उठाने का मौक़ा दिया।

149. अब उनसे पूछो, क्या तुम्हारे रब के लिए तो बेटियां हों, और उनके अपने लिए बेटे?

150. या हमने फ़रिश्तों को औरतें बनाया, और यह उनकी आंखों देखी बात है?

151-152. सुन लो वो यक़ीनन अपनी मनघड़त कहते हैं कि "अल्लाह के औलाद हुई है" यक़ीनन वो झूटे हैं।

153. क्या उसने बेटों के मुक़ाबले में बेटियां मुन्तख़ब की हैं?

154. तुम्हें क्या हो गया है, तुम कैसा फ़ैसला करते हो?

155. तो क्या तुम होश से काम नहीं लेते?

156. या तुम्हारे पास कोई साफ़ सनद है?

157. तो लाओ अपनी किताब, अगर तुम सच्चे हो।

158. उन्होंने ख़ुदा के और जिन्नों के दरमियान रिश्ता जोड़ रखा है; हालांकि जिन्नों को ख़ूब मालूम है कि वो लाज़िमन पकड़ कर हाज़िर किए जाएंगे।

159. अल्लाह अज़ीम व बरतर है उससे जो वो बयान करते हैं,

160. अल्लाह के उन बंदों की बात और है जिनको उसने अपने लिए ख़ालिस कर लिया है।

161-162. पस तुम और जिनको तुम पूजते हो वो, तुम सब किसी को अल्लाह के ख़िलाफ़ बहका नहीं सकते,

163. सिवाय उसके जो दोज़ख़ की भड़कती आग ही में पड़ने वाला हो।

164. और हमारी तरफ़ से उसके लिए लाज़िमन एक मालूम व मुक़र्रर मक़ाम है;

165. और हम ही सफ़बस्ता करते हैं,

166. और हम ही (अपनी) अज़मत व बरतरी बताते हैं।

167-169. वो तो कहा करते थे

फ़-लौ ला अन्नहू का-न मिनल्-मुसब्बिहीन (143)
ल-लबि-स फ़ी बत्निही इला यौमि युब्अ़सून ●(144)
फ़-नबज़्नाहु बिल्अ़रा-इ व हु-व सक़ीम (145)
व अम्बत्ना अ़लैहि श-ज-रतम् मिंय्यक़्तीन (146)
व अर्सल्नाहु इला मि-अति अल्फ़िन् औ यज़ीदून (147)
फ़-आमनू फ़-मत्तअ्नाहुम् इला हीन (148)
फ़स्तफ़्तिहिम् अ-लिरब्बिकल्-बनातु व लहुमुल्-बनून (149)
अम् ख़लक़्नल्-मलाइ-क-त इनासंव्-व हुम् शाहिदून (150)
अला इन्नहुम् मिन् इफ़्किहिम् ल-यक़ूलून (151)
व-लदल्लाहु व इन्नहुम् ल-काज़िबून (152)
अस्त-फ़ल्-बनाति अ़लल्-बनीन (153)
मा लकुम्, कै-फ़ तह्कुमून (154)
अ-फ़ला तज़क्करून (155)
अम् लकुम् सुल्तानुम्-मुबीन (156)
फ़अ्तू बिकिताबिकुम् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (157)
व ज-अ़लू बैनहू व बैनल्-जिन्नति न-सबन्, व ल-क़द् अ़लि-मतिल्-जिन्नतु इन्नहुम् ल-मुह्ज़रून (158)
सुब्हानल्लाहि अ़म्मा यसिफ़ून (159)
इल्ला अ़िबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन (160)
फ़-इन्नकुम् व मा तअ्बुदून (161)
मा अन्तुम् अ़लैहि बिफ़ातिनीन (162)
इल्ला मन् हु-व सालिल्-जहीम (163)
व मा मिन्ना इल्ला लहू मक़ामुम् मअ्लूम (164)
व इन्ना ल-नह्नुस्-साफ़्फ़ून (165)
व इन्ना ल-नह्नुल्-मुसब्बिहून (166)
व इन् कानू ल-यक़ूलून (167)

فَلَوْلَآ اَنَّهٗ كَانَ مِنَ الْمُسَبِّحِيْنَ ۝١٤٣
لَلَبِثَ فِيْ بَطْنِهٖٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ ۝١٤٤
فَنَبَذْنٰهُ بِالْعَرَآءِ وَهُوَ سَقِيْمٌ ۝١٤٥
وَاَنْۢبَتْنَا عَلَيْهِ شَجَرَةً مِّنْ يَّقْطِيْنٍ ۝١٤٦
وَاَرْسَلْنٰهُ اِلٰى مِائَةِ اَلْفٍ اَوْ يَزِيْدُوْنَ ۝١٤٧
فَاٰمَنُوْا فَمَتَّعْنٰهُمْ اِلٰى حِيْنٍ ۝١٤٨
فَاسْتَفْتِهِمْ اَلِرَبِّكَ الْبَنَاتُ وَلَهُمُ
الْبَنُوْنَ ۝١٤٩
اَمْ خَلَقْنَا الْمَلٰٓئِكَةَ اِنَاثًا وَّهُمْ شٰهِدُوْنَ ۝١٥٠
اَلَآ اِنَّهُمْ مِّنْ اِفْكِهِمْ لَيَقُوْلُوْنَ ۝١٥١
وَلَدَ اللّٰهُ ۙ وَاِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ ۝١٥٢
اَصْطَفَى الْبَنَاتِ عَلَى الْبَنِيْنَ ۝١٥٣
مَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ ۝١٥٤
اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ۝١٥٥
اَمْ لَكُمْ سُلْطٰنٌ مُّبِيْنٌ ۝١٥٦
فَاْتُوْا بِكِتٰبِكُمْ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝١٥٧
وَجَعَلُوْا بَيْنَهٗ وَبَيْنَ الْجِنَّةِ نَسَبًا ۭ وَلَقَدْ
عَلِمَتِ الْجِنَّةُ اِنَّهُمْ لَمُحْضَرُوْنَ ۝١٥٨
سُبْحٰنَ اللّٰهِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝١٥٩
اِلَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝١٦٠
فَاِنَّكُمْ وَمَا تَعْبُدُوْنَ ۝١٦١
مَآ اَنْتُمْ عَلَيْهِ بِفٰتِنِيْنَ ۝١٦٢
اِلَّا مَنْ هُوَ صَالِ الْجَحِيْمِ ۝١٦٣
وَمَا مِنَّآ اِلَّا لَهٗ مَقَامٌ مَّعْلُوْمٌ ۝١٦٤
وَّاِنَّا لَنَحْنُ الصَّاۗفُّوْنَ ۝١٦٥
وَاِنَّا لَنَحْنُ الْمُسَبِّحُوْنَ ۝١٦٦
وَاِنْ كَانُوْا لَيَقُوْلُوْنَ ۝١٦٧

لَوْاَنَّ عِنْدَنَا ذِكْرًا مِّنَ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٦٨
لَكُنَّا عِبَادَ اللّٰهِ الْمُخْلَصِيْنَ ۝١٦٩
فَكَفَرُوْا بِهٖ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝١٧٠
وَلَقَدْ سَبَقَتْ كَلِمَتُنَا لِعِبَادِنَا
الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٧١
اِنَّهُمْ لَهُمُ الْمَنْصُوْرُوْنَ ۝١٧٢
وَاِنَّ جُنْدَنَا لَهُمُ الْغٰلِبُوْنَ ۝١٧٣
فَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝١٧٤
وَّاَبْصِرْهُمْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ۝١٧٥
اَفَبِعَذَابِنَا يَسْتَعْجِلُوْنَ ۝١٧٦
فَاِذَا نَزَلَ بِسَاحَتِهِمْ فَسَآءَ صَبَاحُ
الْمُنْذَرِيْنَ ۝١٧٧
وَتَوَلَّ عَنْهُمْ حَتّٰى حِيْنٍ ۝١٧٨
وَّاَبْصِرْ فَسَوْفَ يُبْصِرُوْنَ ۝١٧٩
سُبْحٰنَ رَبِّكَ رَبِّ الْعِزَّةِ عَمَّا يَصِفُوْنَ ۝١٨٠
وَسَلٰمٌ عَلَى الْمُرْسَلِيْنَ ۝١٨١
وَالْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝١٨٢

سُوْرَةُ صٓ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٨٨ رُكُوْعَاتُهَا ٥

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

صٓ وَالْقُرْاٰنِ ذِى الذِّكْرِ ۝١
بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِىْ عِزَّةٍ وَّشِقَاقٍ ۝٢
كَمْ اَهْلَكْنَا مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ قَرْنٍ
فَنَادَوْا وَّلَاتَ حِيْنَ مَنَاصٍ ۝٣
وَعَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ وَقَالَ
الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝٤
اَجَعَلَ الْاٰلِهَةَ اِلٰهًا وَّاحِدًا اِنَّ هٰذَا
لَشَيْءٌ عُجَابٌ ۝٥

लौ अन्-न अिन्-दना ज़िक्रम् मिनल्-अव्वलीन (168)

लकुन्ना अिबादल्लाहिल्-मुख़्लसीन (169)

फ़-क-फ़रू बिही फ़सौ-फ़ यअ्लमून (170)

व ल-क़द् स-बक़त् कलि-मतुना लिअिबादिनल्-मुर्-सलीन (171)

इन्नहुम् लहुमुल्-मन्सूरून (172)

व इन्-न जुन्दना लहुमुल्-ग़ालिबून (173)

फ़-तवल्-ल अन्हुम् हत्ता हीन (174)

व अब्सिर्हुम् फ़सौ-फ़ युब्सिरून (175)

अ-फ़ बि-अ़ज़ाबिना यस्तअ्जिलून (176)

फ़-इज़ा न-ज़-ल बिसा-हतिहिम् फ़सा-अ सबाहुल्-मुन्ज़रीन (177)

व तवल्-ल अन्हुम् हत्ता हीन (178)

व अब्सिर् फ़सौ-फ़ युब्सिरून (179)

सुब्हा-न रब्बि-क रब्बिल्-अिज़्ज़ति अ़म्मा यसिफ़ून (180)

व सलामुन् अ़लल्-मुर्-सलीन (181)

वल्हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन (182) ●

38 सूरतु सॉद
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3107 अक्षर, 738 शब्द, 88 आयतें और 5 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सॉद् वल्-क़ुर्आनि ज़िज़्ज़िक्र (1)

बलिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी अिज़्ज़तिंव्-व शिक़ाक़ (2)

कम् अह्लक्ना मिन् क़ब्लिहिम् मिन् क़र्निन् फ़नादव्-व ला-त ही-न मनास (3)

व अ़जिबू अन् जा-अहुम् मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम् व क़ालल्-काफ़िरू-न हाज़ा साहिरुन् कज़्ज़ाब (4)

अ-ज-अ़लल् आलि-ह-त इलाहंव्-वाहिदन् इन्-न हाज़ा लशैउन् अुजाब (5)

कि "अगर हमारे पास अगलों की कोई तालीम होती तो हम अल्लाह के चीदा बन्दे होते"।

170. मगर उन्होंने उसका इनकार कर दिया, तो अब जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा।

171-172. हमारे भेजे गए बन्दों के बारे में हमारा फ़ैसला हो चुका है कि यक़ीनन उन्हीं की मदद होनी है,

173. और यक़ीनन हमारा लश्कर ही ग़ालिब रहनेवाला है।

174-175. पस एक मुद्दत के लिए उनसे रुख़ फेर लो, और उन्हें देखते रहो; वो जल्द ही देख लेंगे!

176. क्या वो हमारे अज़ाब के लिए जल्दी मचा रहे हैं?

177. तो जब वह उनके सेहन में उतरेगा, तो बहुत बुरी सुबह होगी उन लोगों की जिन्हें मुतनब्बेह किया जा चुका है!

178-179. और एक मुद्दत के लिए उनसे मुंह मोड़ लो, और देखते रहो; वो जल्द ही देख लेंगे।

180. तुम्हारा रब, रब्ब-ए-इज़्ज़त, अज़ीम व बरतर है, उस से जो वो बताते हैं!

181. और सलाम है रसूलों पर;

182. और तारीफ़ अल्लाह के लिए है; जो सारे जहान का रब है।

सुरह सॉद् मक्की

(आयतें 88, रुकूआत 5)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. साद, क़सम है याददिहानी वाले क़ुरआन की।

2. बल्कि जिन्होंने इनकार किया वही ग़ुरूर और मुख़ालफ़त में पड़े हुए हैं।

3. उनसे पहले हमने कितनी ही नसलों को हलाक किया, तो वो लगे पुकारने, मगर वह भागने का वक़्त और मौक़ा न था।

4. उन्होंने तअज्जुब किया कि उनके पास उन्हीं में से एक मुतनब्बेह करने वाला आया; और इनकार करने वाले कहने लगे, "यह जादूगर है निहायत झूटा।

5. क्या उसने सारे माबूदों को अकेला माबूद क़रार दिया? यह तो अजीब चीज़ हुई"।

6. और उनके सरदार चल खड़े हुए कि "चलते रहो और अपने माबूदों पर डटे रहो; बेशक इसमें तो इसका कोई मतलब है।

7. यह तो हमने पिछली मिल्लत में सुना ही नहीं; यह तो बस एक सोची समझी बात है।

8. क्या हमारे दरमियान से मुन्तख़ब करके इसी पर याददिहानी उतरी है?" नहीं, बल्कि वो मेरी याददिहानी के बारे में शक में हैं; बल्कि उन्होंने अभी तक वो मेरे अज़ाब का मज़ा चखा ही नहीं।

9. या तेरे ज़बरदस्त, बड़े दाता रब की रहमत के ख़ज़ाने उनके पास हैं?

10. या आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान है उन सब पर उन्ही की हुकूमत है? फिर तो चाहिए कि मुयस्सर ज़राए इस्तेमाल करके ऊपर चढ़ जाएं।

11. यह एक मामूली लश्कर है (हलाक शुदा) गिरोहों में से, वहां शिकस्त खाना जिसके लिए मुक़द्दर है।

12. उनसे पहले नूह की क़ौम और आद, और लश्करोंवाले फ़िरऔन ने झुटलाया,

13. और समूद और क़ौमे लूत, और ऐकावालों ने भी, ये हैं वो जत्थे;

14. उनमें से हर एक ने रसूलों को झुटलाया तो मेरी उक़ूबत (सज़ा) वाक़े होकर रही।

15. उन्हें बस एक चीख़ का इंतिज़ार है, जिसके लिए ज़रा वक़्फ़ा न होगा।

16. वो कहते हैं, "हमारे रब, हमारा हिस्सा हमें हिसाब के दिन से पहले ही जल्दी से दे दे"।

17. वो जो कुछ कहते हैं उस पर सब्र करो, और ज़ोर व क़ुव्वत वाले हमारे बन्दे दाऊद का ज़िक्र करो; यक़ीनन वह बहुत रुजू करने वाला था।

18. हमने पहाड़ों को उसके साथ ताबे कर दिया था कि शाम और सुबह तसबीह करते रहें,

19. और परिन्दों को भी जो जमा हो जाते थे, हर एक उसके आगे रुजू रहता;

20. हमने उसकी सलतनत मज़बूत कर दी थी; और उसे हिकमत

वन्त-लक़ल्-म-ल-उ मिन्हुम् अनिम्शू वस्बिरू अ़ला आलि-हतिकुम् इन्-न हाज़ा लशैउंय्-युराद (6)

मा समिअ़्ना बिहाज़ा फ़िल्-मिल्लतिल्-आख़िरति इन् हाज़ा इल्लख़्तिलाक़ (7)

अ-उन्ज़ि-ल अ़लैहिज़्ज़िक्रु मिम्बैनिना, बल् हुम् फ़ी शक्किम् मिन् ज़िक्री बल् लम्मा यज़ूक़ू अ़ज़ाब (8)

अम् अ़िन्दहुम् ख़ज़ा-इनु रह्मति रब्बिकल्-अ़ज़ीज़िल्-वह्हाब (9)

अम् लहुम् मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा, फ़ल्यर्तक़ू फ़िल्-अस्बाब (10)

जुन्दुम्-मा हुनालि-क महज़ूमुम् मिनल्-अह्ज़ाब (11)

कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व आ़दुंव्-व फ़िर्औ़नु ज़ुल्-औताद (12)

व समूदु व क़ौमु लूतिंव्-व अस्हाबुल्-ऐ-कति, उलाइ-कल्-अह्ज़ाब (13)

इन् कुल्लुन् इल्ला कज़्ज़-बर्रुसु-ल फ़-हक़्-क़ अ़िक़ाब (14) ●

व मा यन्ज़ुरु हा-उला-इ इल्ला सै-हतंव्वाहि-दतम् मा लहा मिन् फ़वाक़ (15)

व क़ालू रब्बना अ़ज्जिल्-लना क़ित्तना क़ब्-ल यौमिल्-हिसाब (16)

इस्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न वज़्कुर् अ़ब्दना दावू-द ज़ल्ऐदि इन्नहू अव्वाब (17)

इन्ना सख़्ख़र्नल्-जिबा-ल म-अ़हू युसब्बिह्-न बिल्-अ़शिय्यि वल्-इश्राक़ (18)

वत्तै-र मह्शू-रतन्, कुल्लुल्लहू अव्वाब (19)

व श-दद्ना मुल्कहू व आतैनाहुल्-हिक्म-त व फ़स्लल्-

وَانْطَلَقَ الْمَلَاُ مِنْهُمْ اَنِ امْشُوْا وَاصْبِرُوْا
عَلٰۤى اٰلِهَتِكُمْ ۚۖ اِنَّ هٰذَا لَشَیْءٌ یُّرَادُ ۚۖ ۝٦
مَا سَمِعْنَا بِهٰذَا فِی الْمِلَّةِ الْاٰخِرَةِ ۚۖ
اِنْ هٰذَاۤ اِلَّا اخْتِلَاقٌ ۚۖ ۝٧
ءَاُنْزِلَ عَلَیْهِ الذِّكْرُ مِنْۢ بَیْنِنَا ؕ بَلْ هُمْ
فِیْ شَكٍّ مِّنْ ذِكْرِیْ ۚ بَلْ لَّمَّا یَذُوْقُوْا
عَذَابِ ؕ ۝٨
اَمْ عِنْدَهُمْ خَزَآىِٕنُ رَحْمَةِ رَبِّكَ الْعَزِیْزِ
الْوَهَّابِ ۚ ۝٩
اَمْ لَهُمْ مُّلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا
بَیْنَهُمَا ۫ فَلْیَرْتَقُوْا فِی الْاَسْبَابِ ۝١٠
جُنْدٌ مَّا هُنَالِكَ مَهْزُوْمٌ مِّنَ الْاَحْزَابِ ۝١١
كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ
ذُو الْاَوْتَادِ ۙ ۝١٢
وَثَمُوْدُ وَقَوْمُ لُوْطٍ وَّاَصْحٰبُ لْـَٔیْكَةِ ؕ
اُولٰٓىِٕكَ الْاَحْزَابُ ۝١٣
ع اِنْ كُلٌّ اِلَّا كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ عِقَابِ ۝١٤
وَمَا یَنْظُرُ هٰۤؤُلَآءِ اِلَّا صَیْحَةً وَّاحِدَةً
مَّا لَهَا مِنْ فَوَاقٍ ۝١٥
وَقَالُوْا رَبَّنَا عَجِّلْ لَّنَا قِطَّنَا قَبْلَ
یَوْمِ الْحِسَابِ ۝١٦
اِصْبِرْ عَلٰى مَا یَقُوْلُوْنَ وَاذْكُرْ عَبْدَنَا
دَاوٗدَ ذَا الْاَیْدِ ۚ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ ۝١٧
اِنَّا سَخَّرْنَا الْجِبَالَ مَعَهٗ یُسَبِّحْنَ بِالْعَشِیِّ
وَالْاِشْرَاقِ ۙ ۝١٨
وَالطَّیْرَ مَحْشُوْرَةً ؕ كُلٌّ لَّهٗۤ اَوَّابٌ ۝١٩
وَشَدَدْنَا مُلْكَهٗ وَاٰتَیْنٰهُ الْحِكْمَةَ وَفَصْلَ

और फ़ैसलाकुन बात की सलाहियत अता की थी"।

21. क्या तुम्हें मुक़द्दमा के फ़रीक़ों की ख़बर पहुंची है? जब वो दीवार पर चढ़कर मेहराब में आ पहुंचे,

22. जब वो दाऊद के पास पहुंचे, तो वह उनसे सहम गया; वो बोले कि "डरिए नहीं; हम मुक़द्दमे के दो फ़रीक़ हैं। हम में से एक ने दूसरे पर ज़्यादती की है; तो हमारे दरमियान ठीक-ठीक फ़ैसला कर दीजिए, और नाइनसाफ़ी न कीजिए, और सीधी राह की तरफ़ हमारी रहनुमाई कीजिए"।

23. "यह मेरा भाई है। इसके पास निन्नान्वे दुंबियां हैं और मेरे पास एक दुंबी है। अब इसका कहना है कि, उसे भी मेरे हवाले कर दे, और बात करने में उसने मुझे दबा लिया"।

24. उसने कहा, "उसने अपनी दुंबियों के साथ तेरी दुंबी को मिला लेने का मुतालबा करके यक़ीनन तुझ पर ज़ुल्म किया है; और यक़ीनन बहुत से शुरका (साझीदार) एक-दूसरे पर ज़्यादती ही करते हैं, बजुज़ उन लोगों के जो ईमान लाए और उन्होंने नेक आमाल इख़्तियार किए। लेकिन ऐसे लोग थोड़े ही हैं!" अब दाऊद समझ गया कि यह तो हमने उसे आज़माइश में डाला है, चुनांचे वह अपने रब से बख़्शिश का तलबगार हुआ, और झुककर गिर पड़ा, और रुजू हुआ।

25. तो हमने उसका वह क़सूर बख़्श दिया और यक़ीनन उसके लिए हमारे यहां कुरबत और अच्छा ठिकाना है।

26. "ऐ दाऊद, हमने ज़मीन में तुम्हें ख़लीफ़ा बनाया है; लिहाज़ा तुम लोगों के दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला करो और ख़्वाहिशे नफ़्स की पैरवी न करना कि वह तुम्हें अल्लाह के रास्ते से हटा दे। जो लोग अल्लाह के रास्ते से भटकते हैं यक़ीनन उनके लिए सख़्त अज़ाब है इसलिए कि वो हिसाब के दिन को भूले रहे"।

27. हमने आसमान और ज़मीन और जो कुछ उनके दरमियान है बातिल (बेमक़सद) नहीं पैदा किया। यह तो उन लोगों का गुमान है जिन्होंने कुफ़्र किया, तो उन लोगों के लिए जिन्होंने कुफ़्र किया हलाकत है आग से।

ख़िताब (20)

व हल् अता-क न-बउल्-ख़स्मि● इज़् तसव्वरुल्-मिहराब (21)

इज़् द-ख़लू अ़ला दावू-द फ़-फ़ज़ि-अ़ मिन्हुम् क़ालू ला तख़फ़् ख़स्मानि बग़ा बअ़्ज़ुना अ़ला बअ़्ज़िन् फ़ह्कुम् बैनना बिल्हक़्क़ि व ला तुश्तित् वह्दिना इला सवा-इस्सिरात (22)

इन्-न हाज़ा अख़ी, लहू तिस्अ़ुंव्-व तिस्अ़ू-न नअ़्-जतंव्-व लि-य नअ़्-जतुंव्-वाहि-दतुन्, फ़क़ा-ल अक्फ़िल्नीहा व अ़ज़्ज़नी फ़िल्-ख़िताब (23)

क़ा-ल ल-क़द् ज़-ल-म-क बिसुआलि-नअ़्जति-क इला निआजिही. व इन्-न कसीरम् मिनल्-ख़ु-लता-इ ल-यब्ग़ी बअ़्ज़ुहुम् अ़ला बअ़्ज़िन् इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति व क़लीलुम्-मा हुम् व ज़न्-न दावूदु अन्नमा फ़तन्नाहु फ़स्तग़्फ़-र रब्बहू व ख़र्-र राकिअ़ंव्-व अनाब ● (24)

फ़-ग़फ़र्ना लहू ज़ालि-क, व इन्-न लहू अ़िन्दना ल-ज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब (25)

या दावूदु इन्ना जअ़ल्ना-क ख़ली-फ़तन् फ़िल्अर्ज़ि फ़ह्कुम् बैनन्नासि बिल्हक़्क़ि व ला तत्तबिअ़िल्हवा फ़युज़िल्ल-क अ़न् सबीलिल्लाहि, इन्नल्लज़ी-न यज़िल्लू-न अ़न् सबीलिल्लाहि लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीदुम्-बिमा नसू यौमल्-हिसाब (26) ●

व मा ख़लक़्नस्समा-अ वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा बातिलन्, ज़ालि-क ज़न्नुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिनन्नार (27)

الْخِطَابِ ﴿٢٠﴾

وَهَلْ أَتٰىكَ نَبَؤُا الْخَصْمِ إِذْ تَسَوَّرُوا
الْمِحْرَابَ ﴿٢١﴾
إِذْ دَخَلُوْا عَلٰى دَاوٗدَ فَفَزِعَ مِنْهُمْ قَالُوْا
لَا تَخَفْ خَصْمٰنِ بَغٰى بَعْضُنَا عَلٰى بَعْضٍ
فَاحْكُمْ بَيْنَنَا بِالْحَقِّ وَلَا تُشْطِطْ وَاهْدِنَآ
إِلٰى سَوَآءِ الصِّرَاطِ ﴿٢٢﴾
إِنَّ هٰذَآ أَخِيْ لَهٗ تِسْعٌ وَّتِسْعُوْنَ نَعْجَةً
وَّلِيَ نَعْجَةٌ وَّاحِدَةٌ فَقَالَ أَكْفِلْنِيْهَا
وَعَزَّنِيْ فِي الْخِطَابِ ﴿٢٣﴾
قَالَ لَقَدْ ظَلَمَكَ بِسُؤَالِ نَعْجَتِكَ
إِلٰى نِعَاجِهٖ ۭ وَإِنَّ كَثِيْرًا مِّنَ
الْخُلَطَآءِ لَيَبْغِيْ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ
إِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
وَقَلِيْلٌ مَّا هُمْ ۭ وَظَنَّ دَاوٗدُ أَنَّمَا
فَتَنّٰهُ فَاسْتَغْفَرَ رَبَّهٗ وَخَرَّ رَاكِعًا
وَّأَنَابَ ﴿٢٤﴾
فَغَفَرْنَا لَهٗ ذٰلِكَ ۭ وَإِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى
وَحُسْنَ مَاٰبٍ ﴿٢٥﴾
يٰدَاوٗدُ إِنَّا جَعَلْنٰكَ خَلِيْفَةً فِي الْأَرْضِ
فَاحْكُمْ بَيْنَ النَّاسِ بِالْحَقِّ وَلَا تَتَّبِعِ
الْهَوٰى فَيُضِلَّكَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۭ إِنَّ
الَّذِيْنَ يَضِلُّوْنَ عَنْ سَبِيْلِ اللّٰهِ لَهُمْ عَذَابٌ
شَدِيْدٌۢ بِمَا نَسُوْا يَوْمَ الْحِسَابِ ﴿٢٦﴾
وَمَا خَلَقْنَا السَّمَآءَ وَالْأَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَا
بَاطِلًا ۭ ذٰلِكَ ظَنُّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۚ فَوَيْلٌ
لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنَ النَّارِ ﴿٢٧﴾

28. क्या हम उनको जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए उनकी तरह कर देंगे जो ज़मीन में बिगाड़ पैदा करते हैं या मुत्तक़ियों को हम फ़ाजिरों जैसा कर देंगे?"

29. यह एक मुबारक किताब है जो हमने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल की, ताकि वो उसकी आयतों पर तदब्बुर करें और ताकि अक़्ल व ख़िरदवाले याददिहानी हासिल करें।

30. — और हमने दाऊद को सुलैमान अता किया, कितना अच्छा बन्दा था वह! यक़ीनन वह बड़ा ही रुजू रहने वाला था।

31. (याद करो) जबकि शाम को उसके सामने तेज़ रफ़्तार उमदा घोड़े पेश किए गए,

32. तो उसने कहा, "मैंने इस माल की मुहब्बत अपने रब की याद की वजह से इख़्तियार की" यहां तक कि वो ओट में छुप गए।

33. "उन्हें मेरे सामने वापस लाओ!" फिर वह उनकी पिन्डलियों और गर्दनों पर हाथ फेरने लगा।

34. यक़ीनन हमने सुलैमान की आज़माइश की, और हमने एक धड़ उसके तख़्त पर डाल दिया; फिर वह रुजू हुआ।

35. उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मुझे बख़्श दे, और मुझे वह सलतनत दे जो मेरे बाद किसी के लिए सज़ावार न हो, यक़ीनन तू बड़ा दाता है"।

36. तब हमने हवा को उसके लिए मुसख़्ख़र कर दिया, जो उसके हुक्म से साज़गार होकर चलती थी, जहां का वह क़सद करता,

37-38. और शैतानों को भी, हर एक इमारत बनाने वाले और ग़ोताख़ोर को और दूसरों को भी जो ज़ंजीरों में जकड़े हुए रहते:

39. "यह हमारी बेहिसाब अता (देन) है। अब एहसान करो, या रोको"।

40. और यक़ीनन उसके लिए हमारे पास कुरबत और बेहतरीन ठिकाना है।

41. हमारे बन्दे अय्यूब को भी याद करो; जब उसने अपने रब को पुकारा कि "शैतान ने मुझे दुख और तकलीफ़ में डाल दिया है"।

अम् नज्अलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति कल्-मुफ़्सिदी-न फ़िल्अर्ज़ि अम् नज्अ़लुल्-मुत्तक़ी-न कल्फ़ुज्जार (28)

किताबुन् अन्ज़ल्नाहु इलै-क मुबारकुल्-लियद्-दब्बरू आयातिही व लि-य-तज़क्क-र उलुल्-अल्बाब (29)

व व-हब्ना लिदावू-द सुलैमा-न, निअ्मल्-अ़ब्दु इन्नहू अव्वाब (30)

इज़् अुरि-ज़ अ़लैहि बिल्अ़शिय्यिस्-साफ़िनातुल्-जियाद (31)

फ़क़ा-ल इन्नी अह्बब्तु हुब्बल्-ख़ैरि अ़न् ज़िक्रि रब्बी हत्ता तवारत् बिल्-हिजाब (32)

रुद्दूहा अ़लय्-य फ़-तफ़ि-क़ मस्हम्-बिस्सूक़ि वल्-अअ्नाक़ (33)

व ल-क़द् फ़तन्ना सुलैमा-न व अल्क़ैना अ़ला कुर्सिय्यिही ज-सदन् सुम्-म अनाब (34)

क़ा-ल रब्बिग़्फ़िर् ली व हब् ली मुल्कल्-ला यम्बग़ी लि-अ-हदिम् मिम्बअ्दी इन्न-क अन्तल्-वह्हाब (35)

फ़-सख़्ख़र्ना लहुर्-री-ह तज्री बिअम्रिही रुख़ाअन् हैसु असाब (36)

वश्शयाती-न कुल्-ल बन्नाइंव्-व ग़व्वास (37)

व आख़रीन मुक़र्रनी-न फ़िल्-अस्फ़ाद (38)

हाज़ा अ़ता-उना फ़म्-नुन् औ अम्सिक् बिग़ैरि हिसाब (39)

व इन्-न लहू अ़िन्दना ल-ज़ुल्फ़ा व हुस्-न मआब (40) ●

वज़्कुर् अ़ब्दना अय्यू-ब ● इज़् नादा रब्बहू अन्नी मस्सनि-यश्शैतानु बिनुसबिंव्-व अ़ज़ाब (41)

أَمْ نَجْعَلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
كَالْمُفْسِدِيْنَ فِي الْاَرْضِ ۫ اَمْ نَجْعَلُ
الْمُتَّقِيْنَ كَالْفُجَّارِ ۝٢٨
كِتٰبٌ اَنْزَلْنٰهُ اِلَيْكَ مُبٰرَكٌ لِّيَدَّبَّرُوْٓا اٰيٰتِهٖ
وَلِيَتَذَكَّرَ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٢٩
وَوَهَبْنَا لِدَاوٗدَ سُلَيْمٰنَ ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ
اِنَّهٗٓ اَوَّابٌ ۝٣٠ۘ
اِذْ عُرِضَ عَلَيْهِ بِالْعَشِيِّ الصّٰفِنٰتُ الْجِيَادُ ۝٣١ۙ
فَقَالَ اِنِّيْٓ اَحْبَبْتُ حُبَّ الْخَيْرِ عَنْ ذِكْرِ
رَبِّيْ ۚ حَتّٰى تَوَارَتْ بِالْحِجَابِ ۝٣٢
رُدُّوْهَا عَلَيَّ ۭ فَطَفِقَ مَسْحًۢا بِالسُّوْقِ
وَالْاَعْنَاقِ ۝٣٣
وَلَقَدْ فَتَنَّا سُلَيْمٰنَ وَاَلْقَيْنَا عَلٰي كُرْسِيِّهٖ
جَسَدًا ثُمَّ اَنَابَ ۝٣٤
قَالَ رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَهَبْ لِيْ مُلْكًا لَّا
يَنْۢبَغِيْ لِاَحَدٍ مِّنْۢ بَعْدِيْ ۚ اِنَّكَ اَنْتَ
الْوَهَّابُ ۝٣٥
فَسَخَّرْنَا لَهُ الرِّيْحَ تَجْرِيْ بِاَمْرِهٖ رُخَاۗءً حَيْثُ
اَصَابَ ۝٣٦ۙ
وَالشَّيٰطِيْنَ كُلَّ بَنَّاۗءٍ وَّغَوَّاصٍ ۝٣٧ۙ
وَّاٰخَرِيْنَ مُقَرَّنِيْنَ فِي الْاَصْفَادِ ۝٣٨
هٰذَا عَطَاۗؤُنَا فَامْنُنْ اَوْ اَمْسِكْ بِغَيْرِ
حِسَابٍ ۝٣٩
وَاِنَّ لَهٗ عِنْدَنَا لَزُلْفٰى وَحُسْنَ
مَاٰبٍ ۝٤٠ۧ
وَاذْكُرْ عَبْدَنَآ اَيُّوْبَ ۘ اِذْ نَادٰى رَبَّهٗٓ
اَنِّيْ مَسَّنِيَ الشَّيْطٰنُ بِنُصْبٍ وَّعَذَابٍ ۝٤١ؕ

42. "अपना पांव मार, यह है ठंडा नहाने को, और पीने को"।

43. और हमने उसे उसका कुंबा अता किया, वैसे उनके साथ और भी, अपनी तरफ़ से रहमत के तौरपर, और अक़्ल व ख़िरद वालों की याददिहानी केलिए;

44. और अपने हाथ में तिनकों का एक मुट्ठा ले, और उससे मार, और क़सम न तोड़; यक़ीनन हमने उसे साबिर पाया। क्या ही अच्छा बन्दा! बेशक वह बड़ा ही रुजू रहने वाला था।

45. हमारे बन्दो इबराहीम, और इसहाक़ और याक़ूब को भी याद करो, जो क़ुव्वत व निगाह वाले थे।

46. बेशक हमने उन्हें एक ख़ास बात यानी आख़िरत की याद के लिए चुन लिया था।

47. और यक़ीनन वह हमारे यहां बरगुज़ीदा नेक लोगों में से हैं।

48. इसमाईल और अल-यसअ और ज़ुल-किफ़्ल को भी याद करो उनमें से हर एक अच्छा रहा है।

49. यह एक याददिहानी है और यक़ीनन डर रखनेवालों के लिए अच्छा ठिकाना है।

50. (यानी) हमेशा रहने के बाग़ात, जिनके दरवाज़े उनके लिए खुले हुए होंगे,

51. उनमें वो तकिया लगाए हुए होंगे, वहां वो बहुत से मेवे, और मशरूबात तलब कर रहे होंगे,

52. और उनके पास निगाहें बचाए रखने वाली औरतें भी होंगी जो हम उम्र होंगी।

53. यह है वह चीज़ जिसका हिसाब के दिन के लिए तुमसे वादा किया जाता है;

54. यह हमारा दिया है जो कभी ख़त्म होने का नहीं।

55. एक तरफ़ यह है, लेकिन सरकशों के लिए निहायत बुरा ठिकाना है।

56. जहन्नम, जिसमें वो दाख़िल होंगे। पस वह बहुत ही बुरी आरामगाह है!

57. यह है, उन्हें उसे चखना है, खौलता हुआ पानी और ख़ून आमेज़ पीप है।

58. और इसी क़िस्म की दूसरी और चीज़ें भी।

59. यह एक भीड़ है जो तुम्हारे साथ घुसी चली आ रही है। कोई मरहबा (ख़ैर मक़दम) उनके लिए नहीं, वो तो आग में पड़ने वाले हैं।

60. वो कहेंगे, "नहीं, बल्कि तुम, तुम्हारे लिए कोई मरहबा नहीं; तुमने ही तो हमारे लिए यह सामान किया, पस वह बहुत ही बुरा ठिकाना है!"

उर्कुज़् बिरिज्लि-क हाज़ा मुग़्-त-सलुम् बारिदुंव्-व शराब (42)

व व-हब्ना लहू अह्लहू व मिस्लहुम् म-अ़हुम् रह्म-तम्-मिन्ना व ज़िक्रा लि-उलिल्-अल्बाब (43)

व ख़ुज़् बि-यदि-क ज़िग़्सन् फ़ज़्रिब् बिही व ला तह्नस्, इन्ना वजद्नाहु साबिरन्, निअ़्मल्-अ़ब्दु, इन्नहू अव्वाब (44)

वज़्कुर् अ़िबा-दना इब्राही-म व इस्हा-क़ व यअ़्क़ू-ब उलिल्-ऐदी वल्-अब्सार (45)

इन्ना अख़्लस्नाहुम् बिख़ालि-सतिन् ज़िक्रद्दार (46)

व इन्नहुम् अ़िन्दना लमिनल् मुस्तफ़ैनल्-अख़्यार (47)

वज़्कुर् इस्माअ़ी-ल वल्य-स-अ़ व ज़ल्किफ़्लि, व कुल्लुम् मिनल्-अख़्यार (48)

हाज़ा ज़िक्रुन्, व इन्-न लिल्-मुत्तक़ी-न लहुस्-न मआब (49)

जन्नाति अ़द्निम्-मुफ़त्त-ह-तल् लहुमुल्-अब्वाब (50)

मुत्तकिई-न फ़ीहा यद्अ़ू-न फ़ीहा बिफ़ाकि-हतिन् कसी-रतिंव्-व शराब (51)

व अ़िन्दहुम् क़ासिरातुत्तर्फ़ि अत्राब (52)

हाज़ा मा तू-अ़दू-न लियौमिल्-हिसाब ● (53)

इन्-न हाज़ा ल-रिज़्क़ुना मा लहू मिन्-नफ़ाद (54)

हाज़ा व इन्-न लित्ताग़ी-न लशर्-र मआब (55)

जहन्न-म यस्लौनहा फ़बिअ्सल्-मिहाद (56)

हाज़ा फ़ल्यज़ूक़ूहु हमीमुंव्-व ग़स्साक़ (57)

व आ-ख़रु मिन् शक्लिही अज़्वाज (58)

हाज़ा फ़ौजुम्-मुक़्तहिमुम्- म-अ़कुम् ला मर्-हबम् बिहिम्, इन्नहुम् सालुन्नार (59)

क़ालू बल् अन्तुम्, ला मर्-हबम् बिकुम्, अन्तुम् क़द्दम्तुमूहु लना फ़बिअ्सल-क़रार (60)

اُرْكُضْ بِرِجْلِكَ ۚ هٰذَا مُغْتَسَلٌۢ بَارِدٌ
وَّشَرَابٌ (٤٢)
وَوَهَبْنَا لَهٗۤ اَهْلَهٗ وَمِثْلَهُمْ مَّعَهُمْ رَحْمَةً
مِّنَّا وَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ (٤٣)
وَخُذْ بِيَدِكَ ضِغْثًا فَاضْرِبْ بِّهٖ وَلَا تَحْنَثْ ؕ
اِنَّا وَجَدْنٰهُ صَابِرًا ؕ نِعْمَ الْعَبْدُ ؕ اِنَّهٗۤ اَوَّابٌ (٤٤)
وَاذْكُرْ عِبٰدَنَاۤ اِبْرٰهِيْمَ وَاِسْحٰقَ وَيَعْقُوْبَ
اُولِى الْاَيْدِىْ وَالْاَبْصَارِ (٤٥)
اِنَّاۤ اَخْلَصْنٰهُمْ بِخَالِصَةٍ ذِكْرَى الدَّارِ (٤٦)
وَاِنَّهُمْ عِنْدَنَا لَمِنَ الْمُصْطَفَيْنَ الْاَخْيَارِ (٤٧)
وَاذْكُرْ اِسْمٰعِيْلَ وَالْيَسَعَ وَذَا الْكِفْلِ ؕ وَكُلٌّ
مِّنَ الْاَخْيَارِ (٤٨)
هٰذَا ذِكْرٌ ؕ وَاِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ لَحُسْنَ مَاٰبٍ (٤٩)
جَنّٰتِ عَدْنٍ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ (٥٠)
مُتَّكِـِٕيْنَ فِيْهَا يَدْعُوْنَ فِيْهَا بِفَاكِهَةٍ
كَثِيْرَةٍ وَّشَرَابٍ (٥١)
وَعِنْدَهُمْ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ اَتْرَابٌ (٥٢)
هٰذَا مَا تُوْعَدُوْنَ لِيَوْمِ الْحِسَابِ (٥٣)
اِنَّ هٰذَا لَرِزْقُنَا مَا لَهٗ مِنْ نَّفَادٍ (٥٤)
هٰذَا ؕ وَاِنَّ لِلطّٰغِيْنَ لَشَرَّ مَاٰبٍ (٥٥)
جَهَنَّمَ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ فَبِئْسَ الْمِهَادُ (٥٦)
هٰذَا ۙ فَلْيَذُوْقُوْهُ حَمِيْمٌ وَّغَسَّاقٌ (٥٧)
وَّاٰخَرُ مِنْ شَكْلِهٖۤ اَزْوَاجٌ (٥٨)
هٰذَا فَوْجٌ مُّقْتَحِمٌ مَّعَكُمْ ۚ لَا مَرْحَبًۢا بِهِمْ ؕ
اِنَّهُمْ صَالُوا النَّارِ (٥٩)
قَالُوْا بَلْ اَنْتُمْ ۟ لَا مَرْحَبًۢا بِكُمْ ؕ اَنْتُمْ
قَدَّمْتُمُوْهُ لَنَا ۚ فَبِئْسَ الْقَرَارُ (٦٠)

61. वो कहेंगे, "हमारे रब, जिस किसी ने हमारे लिए इसका सामान किया उसे दो गुणा अज़ाब दे आग में।"

62. और वो कहेंगे कि "क्या बात है कि हम उन लोगों को नहीं देखते, जिनको हम बुरों में शुमार करते थे?

63. क्या हमने यूं ही उनका मज़ाक बना लिया था? या उनसे निगाहें चूक गई हैं?"

64. बेशक आग में पड़ने वालों का यह आपस का झगड़ा तो ज़रूर होना है।

65. कह दोः "मैं तो बस एक मुतनब्बेह कर देने वाला हूं। कोई माबूद नहीं सिवाय अल्लाह के, जो अकेला है, सब पर काबू रखनेवाला है,

66. आसमानों और ज़मीन और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है उसका भी निहायत ज़बरदस्त, बड़ा बख़्शनेवाला"।

67-68. कह दोः "वह एक अज़ीम ख़बर है जिससे तुम एराज़ कर रहे हो।

69. मुझे बुलन्द क़दर फ़रिश्तों का कोई इल्म नहीं था जब वो झगड़ रहे थे।

70. मेरी तरफ़ तो बस इसलिए वही की जाती है कि मैं खुल्लम-खुल्ला ख़बरदार करने वाला हूं"।

71. याद करो जबकि तुम्हारे रब ने फ़रिश्तों से कहा कि "मैं मिट्टी से एक इनसान पैदा करने वाला हूं।

72. तो जब मैं उसको दुरुस्त कर लूं, और उसमें अपनी रूह फूंक दूं तो तुम उसके आगे सजदे में गिर जाना"।

73-74. पस तमाम फ़रिश्तों ने सजदा किया, सिवाय इबलीस के; उसने गुरूर किया, और काफ़िरों में से हो गया।

75. कहा, "ऐ इबलीस, तुझे किस चीज़ ने उसके लिए सजदा करने से रोका जिसे मैंने अपने दोनों हाथों से बनाया? क्या तूने तकब्बुर किया, या तू कोई बरतर हस्ती है?"

कालू रब्बना मन् क़द्द-म लना हाज़ा फ़ज़िद्हु अज़ाबन् ज़िअ्फ़न् फ़िन्नार (61)

व कालू मा लना ला नरा रिजालन् कुन्ना नअुद्दुहुम्-मिनल्-अश्रार (62)

अत्त-ख़ज़्नाहुम् सिख़्रिय्यन् अम् ज़ागत् अन्हुमुल्-अब्सार (63)

इन्-न ज़ालि-क ल-हक़्क़ुन् तख़ासुमु अह्लिन्नार (64) ●

कुल् इन्नमा अ-न मुन्ज़िरुंव्-व मा मिन् इलाहिन् इल्लल्लाहुल्-वाहिदुल्-क़ह्हार (65)

रब्बुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमल्-अज़ीज़ुल्-ग़फ़्फ़ार (66)

कुल् हु-व न-बउन् अज़ीम (67)

अन्तुम् अन्हु मुअ्रिज़ून (68)

मा का-न लि-य मिन् अिल्मिम्-बिल्म-लइल्-अअ्ला इज़् यख़्तसिमून (69)

इंय्यूहा इलय्-य इल्ला अन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन (70)

इज़् का-ल रब्बु-क लिल्मलाइ-कति इन्नी ख़ालिकुम् ब-शरम्-मिन् तीन (71)

फ़-इज़ा सव्वैतुहू व नफ़ख़्तु फ़ीहि मिर्रूही फ़-क़अू लहू साजिदीन (72)

फ़-स-जदल् मलाइ-कतु कुल्लुहुम् अज्मअून (73)

इल्ला इब्ली-स, इस्तक्ब-र व का-न मिनल्-काफ़िरीन (74)

का-ल या इब्लीसु मा म-न-अ-क अन् तस्जु-द लिमा ख़लक़्तु बि-यदय्-य, अस्तक्बर्-त अम् कुन्-त मिनल्-आलीन (75)

قَالُوْا رَبَّنَا مَنْ قَدَّمَ لَنَا هٰذَا فَزِدْهُ عَذَابًا ضِعْفًا فِي النَّارِ ﴿٦١﴾

وَقَالُوْا مَا لَنَا لَا نَرٰى رِجَالًا كُنَّا نَعُدُّهُمْ مِّنَ الْاَشْرَارِ ﴿٦٢﴾

اَتَّخَذْنٰهُمْ سِخْرِيًّا اَمْ زَاغَتْ عَنْهُمُ الْاَبْصَارُ ﴿٦٣﴾

ع اِنَّ ذٰلِكَ لَحَقٌّ تَخَاصُمُ اَهْلِ النَّارِ ﴿٦٤﴾

قُلْ اِنَّمَآ اَنَا مُنْذِرٌ ۖ وَّمَا مِنْ اِلٰهٍ اِلَّا اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ﴿٦٥﴾

رَبُّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ﴿٦٦﴾

قُلْ هُوَ نَبَؤٌا عَظِيْمٌ ﴿٦٧﴾

اَنْتُمْ عَنْهُ مُعْرِضُوْنَ ﴿٦٨﴾

مَا كَانَ لِيَ مِنْ عِلْمٍ بِالْمَلَاِ الْاَعْلٰى اِذْ يَخْتَصِمُوْنَ ﴿٦٩﴾

اِنْ يُّوْحٰى اِلَيَّ اِلَّآ اَنَّمَآ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٧٠﴾

اِذْ قَالَ رَبُّكَ لِلْمَلٰٓئِكَةِ اِنِّيْ خَالِقٌ بَشَرًا مِّنْ طِيْنٍ ﴿٧١﴾

فَاِذَا سَوَّيْتُهٗ وَنَفَخْتُ فِيْهِ مِنْ رُّوْحِيْ فَقَعُوْا لَهٗ سٰجِدِيْنَ ﴿٧٢﴾

فَسَجَدَ الْمَلٰٓئِكَةُ كُلُّهُمْ اَجْمَعُوْنَ ﴿٧٣﴾

اِلَّآ اِبْلِيْسَ ۭ اِسْتَكْبَرَ وَكَانَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ﴿٧٤﴾

قَالَ يٰٓاِبْلِيْسُ مَا مَنَعَكَ اَنْ تَسْجُدَ لِمَا خَلَقْتُ بِيَدَيَّ ۭ اَسْتَكْبَرْتَ اَمْ كُنْتَ مِنَ الْعَالِيْنَ ﴿٧٥﴾

76. उसने कहा, "मैं उससे बेहतर हूं; तूने मुझे आग से पैदा किया, और उसे मिट्टी से पैदा किया"।

77. फ़रमाया, "अच्छा निकल यहां से; क्योंकि तू मरदूद है।

78. और यक़ीनन हिसाब-किताब वाले दिन तक तुझपर मेरी लानत है"।

79. उसने कहा, "मेरे रब, फिर तू मुझे उस दिन तक के लिए मुहलत दे जबकि वो उठाए जाएंगे"।

80-81. फ़रमाया, "अच्छा तुझे मालूम व मुक़र्रर वक़्त के दिन तक मुहलत है"।

82. उसने कहा, "तेरी इज़्ज़त की क़सम मैं लाज़िमन उन सब को बहका कर रहूंगा,

83. सिवाय उनमें से तेरे उन बन्दों के जिनको तूने अपने लिए ख़ालिस कर लिया है"।

84-85. फ़रमाया, "पस हक़ यह है, और मैं हक़ ही कहता हूं कि मैं जहन्नम को तुझ से, और उन सब से भर दूंगा जिन्होंने उनमें से तेरी पैरवी की होगी।"

86. कह दो, "मैं तुमसे इसपर कोई अजर नहीं मांगता और न मैं अपनी तरफ़ से बातें बनाने वालों में से हूं।"

87. वह तो बस एक याददिहानी है सारे जहान के लिए।

88. और थोड़ी ही मुद्दत के बाद उसकी दी हुई ख़बर तुम्हारे इल्म में आ जाएगी।

सूरह अज़-ज़ुमर मक्की

(आयतें 75, रुकूआत 8)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. इस किताब का उतारा जाना अल्लाह, ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाले की तरफ़ से है।

2. बेशक हमने यह किताब तुम्हारी तरफ़ हक़ के साथ नाज़िल की है; पस तुम अल्लाह ही की बन्दगी करो, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए,

3. जान रखो कि ख़ालिस दीन अल्लाह ही के लिए है। रहे वो लोग जिन्होंने उससे हटकर दूसरे हामी व सरपरस्त बना रखे हैं कि "हम तो उनकी इबादत महज़ इसलिए करते हैं कि वो हमें अल्लाह से क़रीब कर दें"। यक़ीनन अल्लाह उनके दरमियान उस बात का फ़ैसला कर देगा जिसमें वो इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं। अल्लाह उसकी रहनुमाई नहीं फ़रमाता जो झूटा, बड़ा नाशुकरा हो।

क़ा-ल अ-न ख़ैरुम्-मिन्हु ख़लक़्तनी मिन्-नारिंव्-व ख़लक़्तहू मिन् तीन (76)

क़ा-ल फ़ख़्रुज् मिन्हा फ़-इन्न-क रजीम (77)

व इन्-न अ़लै-क लअ़्नती इला यौमिद्दीन (78)

क़ा-ल रब्बि फ़-अन्ज़िर्नी इला यौमि युब्अ़सून (79)

क़ा-ल फ़-इन्न-क मिनल्-मुन्ज़रीन (80)

इला यौमिल्-वक़्तिल्-मअ़्लूम (81)

क़ा-ल फ़बिअ़िज़्ज़ति-क ल-उग़्वियन्नहुम् अज्मअ़ीन (82)

इल्ला अ़िबा-द-क मिन्हुमुल्-मुख़्लसीन (83)

क़ा-ल फ़ल्-हक़्क़ु वल्-हक़्-क़ अक़ूल (84)

ल-अम्ल-अन्-न जहन्न-म मिन्-क व मिम्-मन् तबि-अ़-क मिन्हुम् अज्मअ़ीन (85)

क़ुल् मा अस्अलुकुम् अ़लैहि मिन् अज्रिंव्-व मा अ-न मिनल्-मु-त-कल्लिफ़ीन (86)

इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्आ़लमीन (87)

व लतअ़्-लमुन्-न न-ब-अहू बअ़्-द हीन (88) ●

39 सूरतुज़्-ज़ु-मरि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 4965 अक्षर, 1184 शब्द, 75 आयतें और 8 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-हकीम (1)

इन्ना अन्ज़ल्ना इलैकल्-किता-ब बिल्-हक़्क़ि फ़अ़्बुदिल्ला-ह मुख़्लिसल्-लहुद्दीन (2)

अला लिल्लाहिद्-दीनुल्-ख़ालिसु, वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अ ● मा नअ़्बुदुहुम् इल्ला लियुक़र्रिबूना इलल्लाहि ज़ुल्फ़ा, इन्नल्ला-ह यह्कुमु बैनहुम् फ़ीमा हुम् फ़ीहि यख़्तलिफ़ू-न, इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन् हु-व काज़िबुन कफ़्फ़ार (3)

قَالَ اَنَا خَيْرٌ مِّنْهُ ۚ خَلَقْتَنِيْ مِنْ نَّارٍ
وَّخَلَقْتَهٗ مِنْ طِيْنٍ (٧٦)
قَالَ فَاخْرُجْ مِنْهَا فَاِنَّكَ رَجِيْمٌ (٧٧)
وَّاِنَّ عَلَيْكَ لَعْنَتِيْٓ اِلٰى يَوْمِ الدِّيْنِ (٧٨)
قَالَ رَبِّ فَاَنْظِرْنِيْٓ اِلٰى يَوْمِ يُبْعَثُوْنَ (٧٩)
قَالَ فَاِنَّكَ مِنَ الْمُنْظَرِيْنَ (٨٠)
اِلٰى يَوْمِ الْوَقْتِ الْمَعْلُوْمِ (٨١)
قَالَ فَبِعِزَّتِكَ لَاُغْوِيَنَّهُمْ اَجْمَعِيْنَ (٨٢)
اِلَّا عِبَادَكَ مِنْهُمُ الْمُخْلَصِيْنَ (٨٣)
قَالَ فَالْحَقُّ ۡ وَالْحَقَّ اَقُوْلُ (٨٤)
لَاَمْلَئَنَّ جَهَنَّمَ مِنْكَ وَمِمَّنْ تَبِعَكَ
مِنْهُمْ اَجْمَعِيْنَ (٨٥)
قُلْ مَآ اَسْـَٔلُكُمْ عَلَيْهِ مِنْ اَجْرٍ وَّمَآ اَنَا
مِنَ الْمُتَكَلِّفِيْنَ (٨٦)
اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ (٨٧)
ع وَلَتَعْلَمُنَّ نَبَاَهٗ بَعْدَ حِيْنٍ (٨٨)

سُوْرَةُ الزُّمَرِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٧٥ رُكُوْعَاتُهَا ٨

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ (١)
اِنَّآ اَنْزَلْنَآ اِلَيْكَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ فَاعْبُدِ
اللّٰهَ مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ (٢)
اَلَا لِلّٰهِ الدِّيْنُ الْخَالِصُ ۭ وَالَّذِيْنَ
اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِيَاۗءَ ۘ مَا نَعْبُدُهُمْ
اِلَّا لِيُقَرِّبُوْنَآ اِلَى اللّٰهِ زُلْفٰى ۭ اِنَّ اللّٰهَ يَحْكُمُ
بَيْنَهُمْ فِيْ مَا هُمْ فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ڛ
اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِيْ مَنْ هُوَ كٰذِبٌ
كَفَّارٌ (٣)

4. अगर अल्लाह अपनी औलाद ही बनाना चाहता, तो वह उनमें से जिन्हें पैदा कर रहा है जिसे चाहता बरगुज़ीदा कर लेता। वह अज़ीम व बरतर है, अल्लाह! अकेला, सब पर क़ाबू रखने वाला।

5. उसने आसमानों और ज़मीन को बरहक़ पैदा किया, रात को दिन पर लपेटता है और दिन को रात पर लपेटता है; और उसने सूरज और चांद को मुसख़्ख़र कर रखा है, हर एक, एक मुक़र्रर वक़्त पूरा करने के लिए चल रहा है। जान रखो, वही ज़बरदस्त, निहायत बख़्शने वाला है।

6. उसने तुम सबको एक ही जान से पैदा किया, फिर उसी से उसका जोड़ा बनाया; और तुम्हारे लिए चौपायों में से आठ नर-मादा उतारे। वह तुम्हारी माओं के पेटों में तीन तारीकियों के अंदर तुम्हें एक बनावट के बाद दूसरी बनावट में पैदा करता है, वही अल्लाह, तुम्हारा रब है; उसी की बादशाही है; उसके सिवा कोई माबूद नहीं, फिर तुम कहां फिरे जाते हो?

7. अगर तुम कुफ़्र करोगे, तो अल्लाह तुम से बेनियाज़ है, अगरचे वह अपने बन्दों के लिए कुफ़्र को पसन्द नहीं करता; लेकिन अगर तुम शुक्र करोगे, तो उसे वह तुम्हारे लिए पसन्द करता है; कोई बोझ उठाने वाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा। फिर तुम्हारी अपने रब ही की तरफ़ वापसी है, और वह तुम्हें बता देगा जो कुछ तुम करते रहे होगे। यक़ीनन वह सीनों तक की बातें जानता है।

8. जब इनसान को कोई तकलीफ़ पहुंचती है, तो वह अपने रब को उसी की तरफ़ मुतवज्जेह होकर पुकारने लगता है; फिर जब वह अपनी ख़ास नवाज़िश से उसकी ख़बरगीरी करता है तो वह उस चीज़ को भूल जाता है जिसके लिए पहले पुकार रहा था और अल्लाह के हमसर ठहराने लगता है ताकि वह उसकी राह से गुमराह करे। कह दोः "अपने कुफ़्र का थोड़ा लुत्फ़ उठा लो; बेशक तुम आग (में पड़ने) वालों में से हो"।

9. (क्या यह शख़्स अच्छा है) या वह शख़्स जो रात की घड़ियों में सजदा व क़ियाम करता, आख़िरत से अंदेशानाक और अपने रब की रहमत की उम्मीद रखता हुआ नियाज़मंदी के साथ बन्दगी में लगा रहता है? कहोः

लौ अरादल्लाहु अंय्यत्तख़ि-ज़ व-लदल्लस्तफ़ा मिम्मा यख़्लुक़ु मा यशा-उ सुब्हानहू, हुवल्लाहुल्-वाहिदुल्-क़ह्हार (4)

ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि युकव्विरुल्-लै-ल अ़लन्नहारि व युकव्विरुन्-नहा-र अ़लल्-लैलि व सख़्ख़-रश्-शम्-स वल्क़-म-र, कुल्लुंय्-यज्री लि-अ-जलिम् मुसम्मन्, अला हुवल्-अ़ज़ीज़ुल्-ग़फ़्फ़ार (5)

ख़-ल-क़कुम् मिन् नफ़्सिंव्वाहि-दतिन् सुम्-म ज-अ़-ल मिन्हा ज़ौ-जहा व अन्ज़-ल लकुम् मिनल्-अन्आ़मि समानि-य-त अज़्वाजिन्, यख़्लुक़ुकुम् फ़ी बुतूनि उम्म-हातिकुम् ख़ल्क़म्-मिम्बअ़्दि ख़ल्क़िन् फ़ी ज़ुलुमातिन् सलासिन्, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् लहुल्-मुल्कु, ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुस्रफ़ून (6)

इन् तक्फ़ुरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़निय्युन् अ़न्कुम्, व ला यर्ज़ा लिअ़िबादिहिल्-कुफ़्-र व इन् तश्कुरू यर्-ज़हु लकुम्, व ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा, सुम्-म इला रब्बिकुम् मर्जिअ़ुकुम् फ़-युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ़्मलू-न, इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (7)

व इज़ा मस्सल्-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआ़ रब्बहू मुनीबन् इलैहि सुम्-म इज़ा ख़व्व-लहू निअ़्-मतम् मिन्हु नसि-य मा का-न यद्अ़ू इलैहि मिन् क़ब्लु व ज-अ़-ल लिल्लाहि अन्दादल् लियुज़िल्-ल अ़न् सबीलिही, क़ुल् त-मत्तअ़् बिकुफ़्रि-क क़लीलन् इन्न-क मिन् अस्हाबिन्नार (8)

अम्मन् हु-व क़ानितुन् आना-अल्लैलि साजिदंव्-व क़ाइमंय्यह्-ज़रुल्-आख़ि-र-त व यर्जू रह्म-त रब्बिही, क़ुल् हल् यस्तविल्-लज़ी-न यअ़्लमू-न वल्लज़ी-न

لَوْ اَرَادَ اللّٰهُ اَنْ يَّتَّخِذَ وَلَدًا لَّاصْطَفٰى مِمَّا يَخْلُقُ مَا يَشَآءُ ۙ سُبْحٰنَهٗ ؕ هُوَ اللّٰهُ الْوَاحِدُ الْقَهَّارُ ۝٤

خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ ۚ يُكَوِّرُ الَّيْلَ عَلَى النَّهَارِ وَيُكَوِّرُ النَّهَارَ عَلَى الَّيْلِ وَسَخَّرَ الشَّمْسَ وَالْقَمَرَ ؕ كُلٌّ يَّجْرِيْ لِاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اَلَا هُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفَّارُ ۝٥

خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ وَّاحِدَةٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَاَنْزَلَ لَكُمْ مِّنَ الْاَنْعَامِ ثَمٰنِيَةَ اَزْوَاجٍ ؕ يَخْلُقُكُمْ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ خَلْقًا مِّنْۢ بَعْدِ خَلْقٍ فِيْ ظُلُمٰتٍ ثَلٰثٍ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ لَهُ الْمُلْكُ ؕ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ فَاَنّٰى تُصْرَفُوْنَ ۝٦

اِنْ تَكْفُرُوْا فَاِنَّ اللّٰهَ غَنِيٌّ عَنْكُمْ ۟ وَلَا يَرْضٰى لِعِبَادِهِ الْكُفْرَ ۚ وَاِنْ تَشْكُرُوْا يَرْضَهُ لَكُمْ ؕ وَلَا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ؕ ثُمَّ اِلٰى رَبِّكُمْ مَّرْجِعُكُمْ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٧

وَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَا رَبَّهٗ مُنِيْبًا اِلَيْهِ ثُمَّ اِذَا خَوَّلَهٗ نِعْمَةً مِّنْهُ نَسِيَ مَا كَانَ يَدْعُوْۤا اِلَيْهِ مِنْ قَبْلُ وَجَعَلَ لِلّٰهِ اَنْدَادًا لِّيُضِلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ؕ قُلْ تَمَتَّعْ بِكُفْرِكَ قَلِيْلًا ۖ اِنَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ النَّارِ ۝٨

اَمَّنْ هُوَ قَانِتٌ اٰنَآءَ الَّيْلِ سَاجِدًا وَّقَآئِمًا يَّحْذَرُ الْاٰخِرَةَ وَيَرْجُوْا رَحْمَةَ رَبِّهٖ ؕ قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ

"क्या वो लोग जो जानते हैं और वो लोग जो नहीं जानते दोनों यकसां होंगे? याददिहानी तो अक्ल व ख़िरदवाले ही हासिल करते हैं।"

10. कह दो कि "ऐ मेरे वो बन्दो जो ईमान लाए हो, अपने रब का डर रखो। जिन लोगों ने इस दुनिया में अच्छा कर दिखाया उनके लिए इस दुनिया में अच्छाई है, और अल्लाह की ज़मीन कुशादा है। साबित क़दम रहने वालों को तो उनका अजर लाज़िमन बेहिसाब मिलेगा"।

11. कह दो: "मुझे तो हुक्म दिया गया है कि मैं अल्लाह की बन्दगी करूं, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए,

12. और मुझे हुक्म दिया गया है कि सबसे बढ़कर मुस्लिम मैं खुद बनूं"

13. कहो: "अगर मैं अपने रब की नाफ़रमानी करूं, तो मुझे एक बड़े दिन के अज़ाब का ख़ौफ़ है"।

14. कहो: "मैं तो खुदा ही की बन्दगी करता हूं, अपने दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए;

15. अब तुम उससे हटकर जिसकी चाहो बन्दगी करो"। कह दो: "हक़ीक़त में ख़सारे में पड़ने वाले तो वही हैं जिन्होंने अपने आपको और अपने अहल व अयाल को क़ियामत के रोज़ ख़सारे में डाल दिया, जान रखो यही सरीह ख़सारा है।"

16. उनके लिए उनके ऊपर से भी आग के साएबान होंगे, और उनके नीचे से भी साएबान होंगे; यही वह चीज़ है जिसका अल्लाह अपने बन्दों को ख़ौफ़ दिलाता है; "ऐ मेरे बन्दो, पस तुम मेरा डर रखो"।

17-18. रहे वो लोग जिन्होंने इससे इजतिनाब किया कि वो तागूत की बन्दगी इख़्तियार करते और अल्लाह की तरफ़ रुजू हुए, उनके लिए बशारत है, पस मेरे बन्दों को बशारत दे दो जो बात को तवज्जुह से सुनते हैं, फिर उस अच्छी से अच्छी बात की पैरवी करते हैं। वही हैं जिनको अल्लाह ने हिदायत बख़्शी है; और वही अक्ल व ख़िरदवाले हैं।

19. तो क्या वह जिसपर अज़ाब का फ़ैसला चसपां हो चुका है (अज़ाब से बच सकता है)? तो क्या तुम बचा लोगे उसको जो आग में है?

20. अलबत्ता जो अपने रब से

ला यअ्‌लमू-न, इन्नमा य-तज़क्करु उलुल्-अल्बाब (9) ●

कुल् या अिबादिल्लज़ी-न आमनुत्तक़ू रब्बकुम्, लिल्लज़ी-न अह्सनू फ़ी हाज़िहिद्-दुन्या ह-स-नतुन्, व अर्ज़ुल्लाहि वासि-अतुन्, इन्नमा युवफ़्फ़स्-साबिरू-न अज्रहुम् बिग़ैरि हिसाब (10)

कुल् इन्नी उमिर्तु अन् अअ्‌बुदल्ला-ह मुख़्लिसल्-लहुद्दीन (11)

व उमिर्तु लि-अन् अकू-न अव्वलल्-मुस्लिमीन (12)

कुल् इन्नी अख़ाफ़ु इन् असैतु रब्बी अज़ा-ब यौमिन् अज़ीम (13)

कुलिल्ला-ह अअ्‌बुदु मुख़्लिसल्-लहू दीनी (14)

फ़अ्‌बुदू मा शिअ्‌तुम् मिन् दूनिही, कुल् इन्नल्-ख़ासिरीनल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामति, अला ज़ालि-क हुवल् ख़ुस्रानुल्-मुबीन (15)

लहुम् मिन् फ़ौक़िहिम् ज़ु-ललुम्-मिनन्नारि व मिन् तह्तिहिम् ज़ु-ललुन्, ज़ालि-क युख़व्विफ़ुल्लाहु बिही अिबादहू, या अिबादि फ़त्तक़ून (16)

वल्लज़ीनज्-त-नबुत्तागू-त अंय्यअ्‌बुदूहा व अनाबू इलल्लाहि लहुमुल्-बुश्रा फ़-बश्शिर् अिबाद (17)

अल्लज़ी-न यस्तमिअूनल्-क़ौ-ल फ़-यत्तबिअू-न अह्स-नहू, उलाइ-कल्लज़ी-न हदाहुमुल्लाहु व उलाइ-क हुम् उलुल्-अल्बाब (18)

अ-फ़-मन् हक़्-क़ अलैहि कलि-मतुल्-अज़ाबि, अ-फ़ अन्-त तुन्क़िज़ु मन् फ़िन्नार (19)

लाकिनिल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् लहुम् ग़ु-रफ़ुम्-

لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ اِنَّمَا يَتَذَكَّرُ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝٩
قُلْ يٰعِبَادِ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوْا رَبَّكُمْ ؕ
لِلَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا فِيْ هٰذِهِ الدُّنْيَا حَسَنَةٌ ؕ
وَاَرْضُ اللّٰهِ وَاسِعَةٌ ؕ اِنَّمَا يُوَفَّى
الصّٰبِرُوْنَ اَجْرَهُمْ بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝١٠
قُلْ اِنِّيْٓ اُمِرْتُ اَنْ اَعْبُدَ اللّٰهَ
مُخْلِصًا لَّهُ الدِّيْنَ ۝١١
وَاُمِرْتُ لِاَنْ اَكُوْنَ اَوَّلَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝١٢
قُلْ اِنِّيْٓ اَخَافُ اِنْ عَصَيْتُ رَبِّيْ
عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ۝١٣
قُلِ اللّٰهَ اَعْبُدُ مُخْلِصًا لَّهٗ دِيْنِيْ ۝١٤
فَاعْبُدُوْا مَا شِئْتُمْ مِّنْ دُوْنِهٖ ؕ قُلْ
اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ الَّذِيْنَ خَسِرُوْٓا اَنْفُسَهُمْ
وَاَهْلِيْهِمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَا ذٰلِكَ
هُوَ الْخُسْرَانُ الْمُبِيْنُ ۝١٥
لَهُمْ مِّنْ فَوْقِهِمْ ظُلَلٌ مِّنَ النَّارِ وَمِنْ
تَحْتِهِمْ ظُلَلٌ ؕ ذٰلِكَ يُخَوِّفُ اللّٰهُ بِهٖ
عِبَادَهٗ ؕ يٰعِبَادِ فَاتَّقُوْنِ ۝١٦
وَالَّذِيْنَ اجْتَنَبُوا الطَّاغُوْتَ اَنْ يَّعْبُدُوْهَا
وَاَنَابُوْٓا اِلَى اللّٰهِ لَهُمُ الْبُشْرٰى ۚ
فَبَشِّرْ عِبَادِ ۝١٧
الَّذِيْنَ يَسْتَمِعُوْنَ الْقَوْلَ فَيَتَّبِعُوْنَ
اَحْسَنَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ هَدٰىهُمُ اللّٰهُ
وَاُولٰٓئِكَ هُمْ اُولُوا الْاَلْبَابِ ۝١٨
اَفَمَنْ حَقَّ عَلَيْهِ كَلِمَةُ الْعَذَابِ ؕ اَفَاَنْتَ
تُنْقِذُ مَنْ فِي النَّارِ ۝١٩
لٰكِنِ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ لَهُمْ غُرَفٌ

डर कर रहे, उनके लिए बालाख़ाने होंगे, जिनके ऊपर भी तामीरशुदा बालाख़ाने होंगे, उनके नीचे नहरें बह रही होंगी। यह अल्लाह का वादा है; अल्लाह अपने वादे की ख़िलाफ़वर्ज़ी नहीं करता।

21. क्या तुमने नहीं देखा कि अल्लाह ने आसमान से पानी उतारा फिर ज़मीन में उसके चश्मे जारी कर दिए, फिर उससे खेती निकालता है, जिसके मुख़्तलिफ़ रंग होते हैं, फिर वह सूखने लगती है, फिर तुम देखते हो कि वह ज़र्द पड़ गई, फिर वह उसे रेज़ा-रेज़ा कर देता है, बेशक इसमें अक़्ल व ख़िरदवालों के लिए बड़ी याददिहानी है।

22. तो क्या वह शख़्स जिसका सीना अल्लाह ने इस्लाम के लिए खोल दिया, पस वह अपने रब की तरफ़ से रौशनी पर है (उस शख़्स की तरह होगा जो सख़्त दिल और अल्लाह की याद से महरूम है)? पस तबाही है उनके लिए जिनके दिल सख़्त हो चुके हैं अल्लाह की याद से ख़ाली होकर। वही खुली गुमराही में पड़े हुए हैं,

23. अल्लाह ने बेहतरीन कलाम उतारा, एक ऐसी किताब की शक्ल में जो आपस में मिलती-जुलती है, और जो रुख़ फेर देने वाली है, उससे उन लोगों की खालें कपकपा उठती हैं जो अपने रब से डरते हैं। फिर उनकी खालें (जिस्म) और उनके दिल नर्म होकर अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ झुक जाते हैं। यह अल्लाह की हिदायत है, जिससे वह हिदायत बख़्शता है, जिस किसी को चाहता है; और जिसको अल्लाह गुमराह कर दे, फिर उसके लिए कोई रहनुमा नहीं।

24. अब क्या जो क़ियामत के रोज़ अपने चेहरे को बुरे अज़ाब की सिपर बनाएगा (वह अज़ाब से महफ़ूज़ लोगों जैसा होगा)? और ज़ालिमों से कहा जाएगा, “जो कमाई तुम करते रहे थे उसका मज़ा चखो”!

25. जो लोग उनसे पहले थे उन्होंने भी तकज़ीब की, आख़िर उनपर वहां से अज़ाब आ पहुंचा जिसका उन्हें कोई पता न था;

26. फिर अल्लाह ने उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में भी रुसवाई का मज़ा चखाया? और आख़िरत का अज़ाब तो इससे भी बड़ा है, काश वो जानते।

27. हमने इस क़ुरआन में लोगों के लिए हर तरह की मिसालें पेश कर दी हैं, ताकि वो याददिहानी हासिल करें;

28. एक अरबी क़ुरआन की सूरत

मिन् फ़ौक़िहा ग़ु-रफ़ुम्-मब्निय्यतुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, वअ्दल्लाहि, ला युख़्लिफ़ुल्लाहुल्-मीआद (20)

अलम् त-र अन्नल्ला-ह अन्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अन् फ़-स-ल-कहू यनाबी-अ़ फ़िल्अर्ज़ि सुम्-म युख़्रिजु बिही ज़र्अ़म्-मुख़्तलिफ़न् अल्वानुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यज्-अ़लुहू हुतामन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा लि-उलिल्-अल्बाब (21) ●

अ-फ़ मन् श-रहल्लाहु सद्-रहू लिल्इस्लामि फ़हु-व अ़ला नूरिम्-मिर्रब्बिही, फ़-वैलुल्-लिल्क़ासि-यति क़ुलूबुहुम् मिन् ज़िक्रिल्लाहि, उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (22)

अल्लाहु नज़्ज़-ल अह्स-नल्-हदीसि किताबम्-मु-तशाबिहम्-मसानि-य तक़्शअ़िर्रु मिन्हु जुलूदुल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् सुम्-म तलीनु जुलूदुहुम् व क़ुलूबुहुम् इला ज़िक्रिल्लाहि, ज़ालि-क हुदल्लाहि यह्दी बिही मंय्यशा-उ, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (23)

अ-फ़-मंय्यत्तक़ी बिवज्हिही सूअल्-अ़ज़ाबि यौमल्-क़ियामति, व क़ी-ल लिज़्ज़ालिमी-न ज़ूक़ू मा कुन्तुम् तक्सिबून (24)

कज़्ज़बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़-अताहुमुल्-अ़ज़ाबु मिन् हैसु ला यश्अुरून (25)

फ़-अज़ा-क़हुमुल्लाहुल्-ख़िज़्-य फ़िल्-हयातिद्दुन्या व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अक्बरु ● लौ कानू यअ्लमून (26)

व ल-क़द् ज़रब्ना लिन्नासि फ़ी हाज़ल्-क़ुर्आनि मिन् कुल्लि म-सलिल्-लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (27)

क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यन् ग़ै-र ज़ी अ़ि-वजिल्-लअ़ल्लहुम्

مِّنْ فَوْقِهَا غُرَفٌ مَّبْنِيَّةٌ ۙ تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا
الْاَنْهٰرُ ۬ؕ وَعْدَ اللّٰهِ ؕ لَا يُخْلِفُ اللّٰهُ الْمِيْعَادَ ۝٢٠
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ اَنْزَلَ مِنَ السَّمَآءِ مَآءً
فَسَلَكَهٗ يَنَابِيْعَ فِى الْاَرْضِ ثُمَّ يُخْرِجُ
بِهٖ زَرْعًا مُّخْتَلِفًا اَلْوَانُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ
فَتَرٰىهُ مُصْفَرًّا ثُمَّ يَجْعَلُهٗ حُطَامًا ؕ
ع اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ۝٢١
اَفَمَنْ شَرَحَ اللّٰهُ صَدْرَهٗ لِلْاِسْلَامِ فَهُوَ
عَلٰى نُوْرٍ مِّنْ رَّبِّهٖ ؕ فَوَيْلٌ لِّلْقٰسِيَةِ
قُلُوْبُهُمْ مِّنْ ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ اُولٰٓئِكَ فِىْ
ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝٢٢
اَللّٰهُ نَزَّلَ اَحْسَنَ الْحَدِيْثِ كِتٰبًا مُّتَشَابِهًا
مَّثَانِىَ ۖ تَقْشَعِرُّ مِنْهُ جُلُوْدُ الَّذِيْنَ
يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ ۚ ثُمَّ تَلِيْنُ جُلُوْدُهُمْ
وَقُلُوْبُهُمْ اِلٰى ذِكْرِ اللّٰهِ ؕ ذٰلِكَ هُدَى
اللّٰهِ يَهْدِىْ بِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ
اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ۝٢٣
اَفَمَنْ يَّتَّقِىْ بِوَجْهِهٖ سُوْٓءَ الْعَذَابِ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ وَقِيْلَ لِلظّٰلِمِيْنَ ذُوْقُوْا
مَا كُنْتُمْ تَكْسِبُوْنَ ۝٢٤
كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَاَتٰىهُمُ
الْعَذَابُ مِنْ حَيْثُ لَا يَشْعُرُوْنَ ۝٢٥
فَاَذَاقَهُمُ اللّٰهُ الْخِزْىَ فِى الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۚ
وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ ۝٢٦
وَلَقَدْ ضَرَبْنَا لِلنَّاسِ فِىْ هٰذَا الْقُرْاٰنِ
مِنْ كُلِّ مَثَلٍ لَّعَلَّهُمْ يَتَذَكَّرُوْنَ ۝٢٧
قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا غَيْرَ ذِىْ عِوَجٍ لَّعَلَّهُمْ

يَتَّقُوْنَ ﴿۲۸﴾
ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا رَّجُلًا فِيْهِ شُرَكَآءُ
مُتَشٰكِسُوْنَ وَرَجُلًا سَلَمًا لِّرَجُلٍ ۚ
هَلْ يَسْتَوِيٰنِ مَثَلًا ۚ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ ۚ
بَلْ اَكْثَرُهُمْ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿۲۹﴾
اِنَّكَ مَيِّتٌ وَّاِنَّهُمْ مَّيِّتُوْنَ ﴿۳۰﴾
ثُمَّ اِنَّكُمْ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ عِنْدَ رَبِّكُمْ
تَخْتَصِمُوْنَ ﴿۳۱﴾
فَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنْ كَذَبَ عَلَى اللّٰهِ
وَكَذَّبَ بِالصِّدْقِ اِذْ جَآءَهٗ ۚ اَلَيْسَ فِيْ
جَهَنَّمَ مَثْوًى لِّلْكٰفِرِيْنَ ﴿۳۲﴾
وَالَّذِيْ جَآءَ بِالصِّدْقِ وَصَدَّقَ بِهٖٓ
اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُتَّقُوْنَ ﴿۳۳﴾
لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ ذٰلِكَ جَزٰٓؤُا
الْمُحْسِنِيْنَ ﴿۳۴﴾
لِيُكَفِّرَ اللّٰهُ عَنْهُمْ اَسْوَاَ الَّذِيْ عَمِلُوْا
وَيَجْزِيَهُمْ اَجْرَهُمْ بِاَحْسَنِ الَّذِيْ كَانُوْا
يَعْمَلُوْنَ ﴿۳۵﴾
اَلَيْسَ اللّٰهُ بِكَافٍ عَبْدَهٗ ۚ وَيُخَوِّفُوْنَكَ
بِالَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ
فَمَا لَهٗ مِنْ هَادٍ ﴿۳۶﴾
وَمَنْ يَّهْدِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ مُّضِلٍّ ۚ
اَلَيْسَ اللّٰهُ بِعَزِيْزٍ ذِي انْتِقَامٍ ﴿۳۷﴾
وَلَئِنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ اللّٰهُ ۚ قُلْ اَفَرَءَيْتُمْ
مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ اِنْ اَرَادَنِيَ اللّٰهُ
بِضُرٍّ هَلْ هُنَّ كٰشِفٰتُ ضُرِّهٖٓ اَوْ اَرَادَنِيْ

यत्तकून (28)

ज़-रबल्लाहु म-सलर्-रजुलन् फ़ीहि शु-रका-उ मु-तशाकिसू-न व रजुलन् स-लमल्-लि-रजुलिन्, हल् यस्तवियानि म-सलन्, अल्हम्दु लिल्लाहि, बल् अक्सरुहुम् ला यअ्लमून (29)

इन्न-क मय्यितुंव्-व इन्नहुम् मय्यितून (30)

सुम्-म इन्नकुम् यौमल्-क़ियामति अिन्-द रब्बिकुम् तख़्तसिमून (31)●

फ़-मन् अज़्लमु मिम्मन् क-ज़-ब अ़लल्लाहि व कज़्ज़-ब बिस्सिद्क़ि इज़् जा-अहू, अलै-स फ़ी जहन्न-म मस्वल्-लिल्-काफ़िरीन (32)

वल्लज़ी जा-अ बिस्सिद्क़ि व सद्द-क़ बिही उलाइ-क हुमुल्-मुत्तक़ून (33)

लहुम् मा यशाऊ-न अिन्-द रब्बिहिम्, ज़ालि-क जज़ाउल्-मुह्सिनीन (34)

लि-युकफ़्फ़िरल्लाहु अ़न्हुम् अस्व-अल्लज़ी अ़मिलू व यज्ज़ि-यहुम् अज्रहुम् बि-अह्सनिल्लज़ी कानू यअ्मलून (35)

अ-लैसल्लाहु बिकाफ़िन् अ़ब्दहू, व युख़व्विफ़ून-क बिल्लज़ी-न मिन् दूनिही, व मंय्युज़्लि-लिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (36)

व मंय्यहदिल्लाहु फ़मा लहू मिम्-मुज़िल्लिन्, अ-लैसल्लाहु बि-अ़ज़ीज़िन् ज़िन्तिक़ाम (37)

व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्नल्लाहु क़ुल् अ-फ़-रऐतुम् मा तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि इन् अरा-दनियल्लाहु बिज़ुर्रिन् हल् हुन्-न काशिफ़ातु ज़ुर्रिही औ अरा-दनी

मैं जिसके अंदर कोई कजी नहीं; ताकि वो तक़वा इख़्तियार करें।

29. अल्लाह एक मिसाल पेश करता है कि एक शख़्स है जिसके मालिक होने में कई आक़ा शरीक हैं, आपस में खींचातानी करने वाले, और एक शख़्स वह है जो पूरा-पूरा एक ही शख़्स का है, क्या दोनों का हाल यकसां होगा? सब हम्द अल्लाह ही के लिए है, मगर उनमें से अकसर जानते नहीं।

30. तुम्हें भी मरना है और उनको भी मरना है;

31. फिर क़ियामत के रोज़ तुम सब अपने रब के सामने अपना मुक़द्दमा पेश करोगे।

32. फिर उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा, जिसने अल्लाह पर झूट बांधा और सच्चाई को झुटला दिया जब वह उसके पास आई? क्या जहन्नम में काफ़िरों का ठिकाना नहीं है?

33. और जो शख़्स सच्चाई लेकर आया, और उसने उसकी तसदीक़ की, ऐसे ही लोग डर रखते हैं,

34. उनके लिए उनके रब के पास वह सब कुछ है जो वो चाहेंगे; यह है बदला ख़ूबकारों की,

35. ताकि जो बदतर अमल उन्होंने किए अल्लाह उन (के बुरे असरात) को उनसे दूर कर दे, और जो बेहतर अमल वो करते रहे उसका उन्हें अज्र अता फ़रमाए।

36. क्या अल्लाह अपने बन्दे के लिए काफ़ी नहीं है, अगरचे वो तुम्हें उनसे डराते हैं जो उसके सिवा (उन्होंने हामी बना रखे) हैं? अल्लाह जिसे गुमराही में डाल दे उसे राह दिखानेवाला कोई नहीं।

37. और जिसे अल्लाह राह दिखाए उसे गुमराह करने वाला भी कोई नहीं; क्या अल्लाह ग़ालिब, इंतिक़ाम लेने वाला नहीं है?

38. अगर तुम उनसे पूछो कि "आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया"? तो वो ज़रूर कहेंगे कि "अल्लाह ने"। कहोः "तुम्हारा क्या ख़याल है? अगर अल्लाह मुझे कोई तकलीफ़ पहुंचानी चाहे, तो क्या

अल्लाह से हटकर जिन (देवियों) को तुम पुकारते हो वो उसकी पहुंचाई हुई तकलीफ़ को दूर कर सकती हैं? या वह किसी रहमत से मुझे नवाज़ना चाहे, तो क्या वो उसकी रहमत को रोक सकते हैं"? कह दोः "मेरे लिए अल्लाह काफ़ी है; उसी पर भरोसा करने वाले भरोसा करते हैं"।

39-40. कह दोः "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम अपनी जगह काम करो; मैं भी अपना काम करता हूं; तो जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा कि किस पर वह अज़ाब आता है जो उसे रुसवा कर देगा, और किस पर आकर ठहर जाने वाला अज़ाब उतरता है"।

41. यक़ीनन हमने हक़ के साथ लोगों के लिए तुम पर किताब नाज़िल की है। पस जिसने हिदायत हासिल की, तो अपने ही लिए और जो भटका तो वह गुमराह होकर ख़ुद को नुक़सान पहुंचाता है; तुम उनके ज़िम्मेदार नहीं हो।

42. अल्लाह ही रूहों को उनकी मौत के वक़्त क़ब्ज़ करता है, और जिसकी मौत नहीं आई, उसे उसकी नींद की हालत में क़ब्ज़ कर लेता है; फिर जिसकी मौत का फ़ैसला कर दिया है उसे रोक रखता है, और दूसरों को एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए छोड़ देता है। यक़ीनन इसमें ग़ौर व फ़िक्र करने वाले लोगों के लिए कितनी ही निशानियां हैं।

43. क्या उन्होंने अल्लाह से हटकर दूसरों को सिफ़ारिशी बना रखा है? कहोः "क्या अगरचे वो किसी चीज़ का इख़्तियार न रखते हों और न कुछ समझते ही हों तब भी"?

44. कहोः "सिफ़ारिश तो सारी अल्लाह के इख़्तियार में है। आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है; फिर उसी की तरफ़ तुम लौटाए जाओगे"।

45. जब अकेले अल्लाह का ज़िक्र किया जाता है, तो जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते उनके दिल भिंचने लगते हैं, लेकिन जब उसके सिवा दूसरों का ज़िक्र होता है, तो क्या देखते हैं कि वो ख़ुशी से खिले जा रहे हैं।

46. कहोः "ऐ अल्लाह, आसमानों और ज़मीन के पैदा करने वाले, ग़ायब, और हाज़िर के जाननेवाले, तू ही अपने बन्दों के दरमियान उस चीज़ का फ़ैसला करेगा जिसमें वो इख़्तिलाफ़ कर रहे हैं।"

47. जिन लोगों ने ज़ुल्म किया अगर उनके पास वह सब कुछ हो जो ज़मीन में है, और उसके साथ उतना ही मज़ीद भी, तो वो क़ियामत के रोज़ वह सब बुरे अज़ाब से बचने के लिए फ़िदया में दे डालें, सूरते वाक़िया यह है

बिरह्मतिन् हल् हुन्-न मुम्सिकातु रह्मतिही, कुल् हस्बियल्लाहु अ़लैहि य-तवक्कलुल्-मु-तवक्किलून (38)

कुल् या क़ौमिअ़मलू अ़ला मकानतिकुम् इन्नी आ़मिलुन् फ़सौ-फ़ तअ़्लमून (39)

मंय्यअ्तीहि अ़ज़ाबुंय्-युख़्ज़ीहि व यहिल्लु अ़लैहि अ़ज़ाबुम्-मुक़ीम (40)

इन्ना अन्ज़ल्ना अ़लैकल्-किता-ब लिन्नासि बिल्हक़्क़ि फ़-मनिह्तदा फ़लिनफ़्सिही व मन् ज़ल्-ल फ़-इन्नमा यज़िल्लु अ़लैहा व मा अन्-त अ़लैहिम् बि-वकील (41) ●

अल्लाहु य-तवफ़्फ़ल्-अन्फ़ु-स ही-न मौतिहा वल्लती लम् तमुत् फ़ी मनामिहा फ़-युम्सिकुल्लती क़ज़ा अ़लैहल्-मौ-त व युर्सिलुल्-उख़्रा इला अ-जलिम्-मुसम्मन्, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल् लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून (42)

अमित्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि शु-फ़आ-अ, कुल् अ-व लौ कानू ला यम्लिकू-न शैअंव्-व ला यअ़्क़िलून (43)

कुल् लिल्लाहिश्-शफ़ा-अ़तु जमीअ़न्, लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, सुम्-म इलैहि तुर्जअून (44)

व इज़ा ज़ुकिरल्लाहु वह्दहुश्-म-अज़्ज़त् क़ुलूबुल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति व इज़ा ज़ुकिरल्लज़ी-न मिन् दूनिही इज़ा हुम् यस्तब्शिरून (45)

कुलिल्लाहुम्-म फ़ातिरस्-समावाति वल्अर्ज़ि आ़लिमल्-ग़ैबि वश्शहा-दति अन्-त तह्कुमु बै-न अ़िबादि-क फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (46)

व लौ अन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू मा फ़िल्-अर्ज़ि जमीअ़ंव्-व मिस्-लहू म-अ़हू लफ़्तदौ बिही मिन् सूइल्-अ़ज़ाबि यौमल्-क़ियामति, व बदा लहुम्

بِرَحْمَةٍ هَلْ هُنَّ مُمْسِكٰتُ رَحْمَتِهٖ ۚ قُلْ
حَسْبِيَ اللّٰهُ ۖ عَلَيْهِ يَتَوَكَّلُ الْمُتَوَكِّلُوْنَ ۝٣٨
قُلْ يٰقَوْمِ اعْمَلُوْا عَلٰى مَكَانَتِكُمْ اِنِّيْ عَامِلٌ ۚ
فَسَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣٩
مَنْ يَّاْتِيْهِ عَذَابٌ يُّخْزِيْهِ وَيَحِلُّ عَلَيْهِ
عَذَابٌ مُّقِيْمٌ ۝٤٠
اِنَّآ اَنْزَلْنَا عَلَيْكَ الْكِتٰبَ لِلنَّاسِ بِالْحَقِّ ۚ
فَمَنِ اهْتَدٰى فَلِنَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ ضَلَّ فَاِنَّمَا
ع يَضِلُّ عَلَيْهَا ۚ وَمَآ اَنْتَ عَلَيْهِمْ بِوَكِيْلٍ ۝٤١
اَللّٰهُ يَتَوَفَّى الْاَنْفُسَ حِيْنَ مَوْتِهَا وَالَّتِيْ
لَمْ تَمُتْ فِيْ مَنَامِهَا ۚ فَيُمْسِكُ الَّتِيْ
قَضٰى عَلَيْهَا الْمَوْتَ وَيُرْسِلُ الْاُخْرٰٓى
اِلٰٓى اَجَلٍ مُّسَمًّى ۭ اِنَّ فِيْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يَّتَفَكَّرُوْنَ ۝٤٢
اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ شُفَعَاۗءَ ۭ قُلْ
اَوَلَوْ كَانُوْا لَا يَمْلِكُوْنَ شَيْـًٔا وَّلَا يَعْقِلُوْنَ ۝٤٣
قُلْ لِّلّٰهِ الشَّفَاعَةُ جَمِيْعًا ۭ لَهٗ مُلْكُ
السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ ثُمَّ اِلَيْهِ تُرْجَعُوْنَ ۝٤٤
وَاِذَا ذُكِرَ اللّٰهُ وَحْدَهُ اشْمَاَزَّتْ قُلُوْبُ
الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ ۚ وَاِذَا ذُكِرَ
الَّذِيْنَ مِنْ دُوْنِهٖٓ اِذَا هُمْ يَسْتَبْشِرُوْنَ ۝٤٥
قُلِ اللّٰهُمَّ فَاطِرَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ عٰلِمَ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ اَنْتَ تَحْكُمُ بَيْنَ
عِبَادِكَ فِيْ مَا كَانُوْا فِيْهِ يَخْتَلِفُوْنَ ۝٤٦
وَلَوْ اَنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مَا فِي الْاَرْضِ
جَمِيْعًا وَّمِثْلَهٗ مَعَهٗ لَافْتَدَوْا بِهٖ مِنْ
سُوْۗءِ الْعَذَابِ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ۭ وَبَدَا لَهُمْ

कि अल्लाह की तरफ़ से उनके सामने वह कुछ ज़ाहिर होगा जिसका वो गुमान तक न करते थे।

48. और जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयां उन पर ज़ाहिर हो जाएंगी, और वही चीज़ उन्हें घेर लेगी जिसका वो मज़ाक़ उड़ाते रहे थे।

49. सो जब इनसान को कोई तकलीफ़ पहुंचती है तो वह हमें पुकारने लगता है; फिर जब हम अपनी तरफ़ से उसे कोई नेमत अता कर देते हैं तो कहता है, "यह तो मुझे इल्म की बिना पर हासिल हुआ है"। नहीं, बल्कि यह एक आज़माइश है, मगर उनमें से अकसर जानते नहीं।

50. यही बात वो लोग भी कह चुके हैं जो उनसे पहले गुज़रे हैं, मगर जो कुछ कमाई वो करते थे, वह उनके कुछ काम न आई,

51. फिर जो कुछ उन्होंने कमाया उसकी बुराइयां उन पर आ पड़ीं। और उनमें से भी जिन लोगों ने ज़ुल्म किया उनकी की हुई बुराइयां भी उनपर आ पड़ेंगी। और वो क़ाबू से बाहर निकलने वाले नहीं हैं।

52. क्या उन्हें मालूम नहीं कि अल्लाह जिस किसी के लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और जिस के लिए चाहता है नपा-तुला कर देता है? बेशक इसमें उन लोगों के लिए बड़ी निशानियां हैं जो ईमान लाएं।

53. कह दो: "ऐ मेरे बन्दो! जिन्होंने अपनी जानों पर ज़्यादती की है, अल्लाह की रहमत से मायूस न हो; यक़ीनन अल्लाह सारे ही गुनाहों को माफ़ कर देता है; यक़ीनन वही बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला है।

54. रुजू हो अपने रब की तरफ़ और सर-ए-तसलीम ख़म कर दो उसके आगे, इससे पहले कि तुम पर अज़ाब आ जाए फिर तुम्हारी मदद न की जाएगी।

55. और पैरवी करो उस बेहतरीन चीज़ की जो तुमपर तुम्हारे रब की तरफ़ से नाज़िल की गई है, इससे पहले कि तुम पर अचानक अज़ाब आ जाए और तुम्हें पता भी न हो।

56. (ऐसा न हो) कि कोई शख़्स कहने लगे, "ऐ अफ़सोस! उसपर जो कोताही अल्लाह के जनाब में मैंने की, और मैं तो मज़ाक उड़ाने वालों ही में शामिल रहा"।

57. या कहने लगे कि "अगर अल्लाह मेरी रहनुमाई करता, तो ज़रूर

मिनल्लाहि मा लम् यकूनू यह्तसिबून (47)

व बदा लहुम् सय्यिआतु मा क-सबू व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (48)

फ़-इज़ा मस्सल्-इन्सा-न ज़ुर्रुन् दआना सुम्-म इज़ा ख़व्वल्नाहु निअ्मतम् मिन्ना क़ा-ल इन्नमा ऊतीतुहू अ़ला अिल्मिन्, बल् हि-य फ़ित्-नतुंव्-व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (49)

क़द् क़ा-लहल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़मा अग्ना अ़न्हुम् मा कानू यक्सिबून (50)

फ़-असा-बहुम् सय्यिआतु मा क-सबू, वल्लज़ी-न ज़-लमू मिन् हाउला-इ सयुसीबुहुम् सय्यिआतु मा क-सबू व मा हुम् बिमुअ्जिज़ीन (51)

अ-व लम् यअ्लमू अन्नल्ला-ह यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्यशा-उ व यक़्दिरु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल् लिक़ौमिंय्युअ्मिनून (52) ●

क़ुल् या अ़िबादि-यल्लज़ी-न अस्-रफ़ू अ़ला अन्फ़ुसिहिम् ला तक़्नतू मिर्रह्मतिल्लाहि, इन्नल्ला-ह यग्फ़िरुज़्-ज़ुनू-ब जमीअ़न्, इन्नहू हुवल्-ग़फ़ूरुर्रहीम (53)

व अनीबू इला रब्बिकुम् व अस्लिमू लहू मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यकुमुल्-अ़ज़ाबु सुम्-म ला तुन्सरून (54)

वत्तबिअू अह्स-न मा उन्ज़ि-ल इलैकुम् मिर्रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यकुमुल्-अ़ज़ाबु बग़्-ततंव्-व अन्तुम् ला तश्अुरून (55)

अन् तक़ू-ल नफ़्सुंय्या-हस्-रता अ़ला मा फ़र्रत्तु फ़ी जम्बिल्लाहि व इन् कुन्तु ल-मिनस्साख़िरीन (56)

औ तक़ू-ल लौ अन्नल्ला-ह हदानी लकुन्तु

مِّنَ اللّٰهِ مَا لَمْ يَكُوْنُوْا يَحْتَسِبُوْنَ ۝٤٧
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا وَحَاقَ
بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٤٨
فَاِذَا مَسَّ الْاِنْسَانَ ضُرٌّ دَعَانَا ۡ ثُمَّ اِذَا
خَوَّلْنٰهُ نِعْمَةً مِّنَّا ۙ قَالَ اِنَّمَآ اُوْتِيْتُهٗ
عَلٰى عِلْمٍ ؕ بَلْ هِىَ فِتْنَةٌ وَّلٰكِنَّ اَكْثَرَهُمْ
لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٤٩
قَدْ قَالَهَا الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ فَمَآ اَغْنٰى
عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝٥٠
فَاَصَابَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا كَسَبُوْا ؕ وَالَّذِيْنَ
ظَلَمُوْا مِنْ هٰٓؤُلَآءِ سَيُصِيْبُهُمْ سَيِّاٰتُ
مَا كَسَبُوْا ۙ وَمَا هُمْ بِمُعْجِزِيْنَ ۝٥١
اَوَلَمْ يَعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يَبْسُطُ الرِّزْقَ
لِمَنْ يَّشَآءُ وَيَقْدِرُ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ
لِّقَوْمٍ يُّؤْمِنُوْنَ ۝٥٢ ع
قُلْ يٰعِبَادِىَ الَّذِيْنَ اَسْرَفُوْا عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ
لَا تَقْنَطُوْا مِنْ رَّحْمَةِ اللّٰهِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ يَغْفِرُ
الذُّنُوْبَ جَمِيْعًا ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝٥٣
وَاَنِيْبُوْٓا اِلٰى رَبِّكُمْ وَاَسْلِمُوْا لَهٗ مِنْ قَبْلِ
اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ ثُمَّ لَا تُنْصَرُوْنَ ۝٥٤
وَاتَّبِعُوْٓا اَحْسَنَ مَآ اُنْزِلَ اِلَيْكُمْ مِّنْ رَّبِّكُمْ
مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَكُمُ الْعَذَابُ بَغْتَةً
وَّاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝٥٥ ۙ
اَنْ تَقُوْلَ نَفْسٌ يّٰحَسْرَتٰى عَلٰى مَا فَرَّطْتُّ
فِىْ جَنْۢبِ اللّٰهِ وَاِنْ كُنْتُ لَمِنَ
السّٰخِرِيْنَ ۝٥٦ ۙ
اَوْ تَقُوْلَ لَوْ اَنَّ اللّٰهَ هَدٰىنِىْ لَكُنْتُ

मैं डर रखने वालों में से होता"।

58. या जब वह अज़ाब देखे तो कहने लगे, "काश मुझे एक बार फिर लौटकर जाना हो! तो मैं खूबकारों में शामिल हो जाऊं"।

59. "क्यों नहीं! मेरी आयतें तेरे पास आ चुकी थीं, मगर तूने उनको झुटलाया, और तकब्बुर किया और काफ़िरों में शामिल रहा"।

60. और क़ियामत के रोज़ तुम उन लोगों को देखोगे जिन्होंने अल्लाह पर झूट बांधा है कि उनके चेहरे सियाह हैं; क्या मुतकब्बिरों का ठिकाना जहन्नम में नहीं है?

61. और (इसके बरअक्स) अल्लाह उन लोगों को जिन्होंने डर रखा उनकी कामयाबी के साथ नजात देगा; न तो उन्हें कोई गज़न्द पहुंचेगा और न वो ग़मगीन होंगे।

62. अल्लाह हर चीज़ का ख़ालिक़ है; और वही हर चीज़ का ज़िम्मा लेता है;

63. उसी के क़ब्ज़े में आसमानों और ज़मीन की कुन्जियां हैं। और जिन्होंने अल्लाह की आयतों से कुफ़्र किया वही हैं जो घाटे में रहेंगे।

64. कहो: "क्या फिर भी तुम मुझ से कहते हो कि मैं अल्लाह के सिवा किसी और की इबादत करूं, ऐ जाहिलो!"

65. तुम्हारी तरफ़ और जो लोग तुमसे पहले गुज़र चुके हैं उनकी तरफ़ भी वही की जा चुकी है कि "अगर तुमने शिर्क किया, तो तुम्हारा किया-धरा लाज़िमन जान को लागू होगा और तुम लाज़िमन ख़सारे में पड़ने वालों में से हो जाओगे।"

66. नहीं, बल्कि अल्लाह ही की इबादत करो; और शुक्रगुज़ारों में से हो।

67. उन्होंने अल्लाह की क़द्र न की जैसी क़द्र उसकी करनी चाहिए थी, हालांकि क़ियामत के रोज़ ज़मीन सारी की सारी उसकी मुट्ठी में होगी, और आसमान उसके दाहिने हाथ में लिपटे हुए होंगे, वह अज़ीम व बरतर है उससे, जो शिर्क वो करते हैं!

68. और सूर फूंका जाएगा, तो जो कोई आसमानों में और जो कोई ज़मीन में होगा बेहोश हो जाएगा सिवाय उसके जिसको अल्लाह चाहे। फिर उसे दोबारा फूंका जाएगा, तो

मिनल्-मुत्तक़ीन (57)

औ तक़ू-ल ही-न तरल्-अज़ा-ब लौ अन्-न ली कर्र-तन् फ़-अकू-न मिनल्-मुह्सिनीन (58)

बला क़द् जाअत्-क आयाती फ़-कज़्ज़ब्-त बिहा वस्तक्बर्-त व कुन्-त मिनल्-काफ़िरीन (59)

व यौमल्-क़ियामति तरल्लज़ी-न क-ज़बू अ़लल्लाहि वुजूहुहुम् मुसवद्द-तुन्, अलै-स फ़ी जहन्न-म मस्वल्-लिल्मु-तकब्बिरीन (60)

व युनज्जिल्लाहुल-लज़ीनत्तक़ौ बि-मफ़ा-ज़तिहिम् ला यमस्सुहुमुस्सू-उ व ला हुम् यह्ज़नून (61)

अल्लाहु ख़ालिक़ु कुल्लि शैइंव्-व हु-व अ़ला कुल्लि शैइंव्-वकील (62)

लहू मक़ालीदुस्-समावाति वल्अर्ज़ि, वल्लज़ी-न क-फ़रू बि-आयातिल्लाहि उलाइ-क हुमुल्-ख़ासिरून (63) •

कुल् अ-फ़ग़ैरल्लाहि तअ्मुरून्नी अअ्बुदु अय्युहल्-जाहिलून (64)

व ल-क़द् ऊहि-य इलै-क व इलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लि-क ल-इन् अश्रक्-त ल-यह्-बतन्-न अ़-मलु-क व ल-तकूनन्-न मिनल्-ख़ासिरीन (65)

बलिल्ला-ह फ़अ्बुद् व कुम् मिनश्-शाकिरीन (66)

व मा क़-दरुल्ला-ह हक़्-क़ क़द्रिही वल्अर्ज़ु जमीअ़न् क़ब्-ज़तुहू यौमल्-क़ियामति वस्समावातु मत्विय्यातुम् बि-यमीनिही, सुब्हानहू व तआ़ला अ़म्मा युश्रिकून (67)

व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि फ़-सअ़ि-क़ मन् फ़िस्समावाति व मन् फ़िल्अर्ज़ि इल्ला मन् शा-अल्लाहु, सुम्-म नुफ़ि-ख़ फ़ीहि उख़्रा फ़-इज़ा हुम् क़ियामुंय्-

مِنَ الْمُتَّقِيْنَ ۝٥٧

اَوْ تَقُوْلَ حِيْنَ تَرَى الْعَذَابَ لَوْ اَنَّ
لِيْ كَرَّةً فَاَكُوْنَ مِنَ الْمُحْسِنِيْنَ ۝٥٨

بَلٰى قَدْ جَآءَتْكَ اٰيٰتِيْ فَكَذَّبْتَ بِهَا
وَاسْتَكْبَرْتَ وَكُنْتَ مِنَ الْكٰفِرِيْنَ ۝٥٩

وَيَوْمَ الْقِيٰمَةِ تَرَى الَّذِيْنَ كَذَبُوْا عَلَى اللّٰهِ
وُجُوْهُهُمْ مُّسْوَدَّةٌ ؕ اَلَيْسَ فِيْ جَهَنَّمَ مَثْوًى
لِّلْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٦٠

وَيُنَجِّي اللّٰهُ الَّذِيْنَ اتَّقَوْا بِمَفَازَتِهِمْ ۡ
لَا يَمَسُّهُمُ السُّوْٓءُ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝٦١

اَللّٰهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ ۡ وَّهُوَ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ وَّكِيْلٌ ۝٦٢

لَهٗ مَقَالِيْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَالَّذِيْنَ
ع كَفَرُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ۝٦٣

قُلْ اَفَغَيْرَ اللّٰهِ تَاْمُرُوْٓنِّيْٓ اَعْبُدُ اَيُّهَا
الْجٰهِلُوْنَ ۝٦٤

وَلَقَدْ اُوْحِيَ اِلَيْكَ وَاِلَى الَّذِيْنَ مِنْ
قَبْلِكَ ۚ لَئِنْ اَشْرَكْتَ لَيَحْبَطَنَّ عَمَلُكَ
وَلَتَكُوْنَنَّ مِنَ الْخٰسِرِيْنَ ۝٦٥

بَلِ اللّٰهَ فَاعْبُدْ وَكُنْ مِّنَ الشّٰكِرِيْنَ ۝٦٦

وَمَا قَدَرُوا اللّٰهَ حَقَّ قَدْرِهٖ ۖ وَالْاَرْضُ
جَمِيْعًا قَبْضَتُهٗ يَوْمَ الْقِيٰمَةِ وَالسَّمٰوٰتُ
مَطْوِيّٰتٌ بِيَمِيْنِهٖ ؕ سُبْحٰنَهٗ وَتَعٰلٰى عَمَّا
يُشْرِكُوْنَ ۝٦٧

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَصَعِقَ مَنْ فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَنْ فِي الْاَرْضِ اِلَّا مَنْ شَآءَ اللّٰهُ ؕ
ثُمَّ نُفِخَ فِيْهِ اُخْرٰى فَاِذَا هُمْ قِيَامٌ

क्या देखेंगे कि नागहां वो खड़े देख रहे हैं।

69. और ज़मीन अपने रब के नूर से चमक उठेगी, किताब रखी जाएगी, और नबियों और गवाहों को लाया जाएगा, और लोगों के दरमियान हक़ के साथ फ़ैसला कर दिया जाएगा और उनपर कोई ज़ुल्म न होगा।

70. और हर शख़्स को उसके अमल का बदला भरपूर दिया जाएगा; और वह खूब जानता है जो कुछ वो करते हैं।

71. जिन लोगों ने कुफ़्र किया वो जहन्नम की तरफ़ गिरोह दर गिरोह ले जाए जाएंगे, यहां तक कि जब वो वहां पहुंचेंगे, तो उसके दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उसके दारोग़ा उनसे कहेंगे "क्या तुम्हारे पास तुम्हीं में से रसूल नहीं आए थे, जो तुम्हें तुम्हारे रब की आयतें सुनाते रहे हों और तुम्हें तुम्हारे इस दिन की मुलाक़ात से ख़बरदार करते रहे हों?" वो कहेंगे, "क्यों नहीं, लेकिन काफ़िरों पर अज़ाब का हुक्म पूरा होकर रहा"।

72. कहा जाएगा, "जहन्नम के दरवाज़ों में दाख़िल हो जाओ, उसमें मुसतक़िल रहने के लिए"। पस बहुत ही बुरा ठिकाना है मुतकब्बिरों का!

73. और जो लोग अपने रब का डर रखते थे वो गिरोह दर गिरोह जन्नत की तरफ़ ले जाए जाएंगे, यहां तक कि जब वो वहां पहुंचेंगे, इस हाल में कि उसके दरवाज़े (पहले से) खोल रखे गए होंगे, और उसके दारोग़ा उनसे कहेंगे, "सलाम हो तुमपर! बहुत अच्छे रहे; पस इसमें हमेशा रहने के लिए दाख़िल हो जाओ"।

74. और वो कहेंगे "तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जिसने हमारे साथ अपना वादा सच कर दिखाया, और हमें इस ज़मीन का वारिस बनाया कि हम जन्नत में जहां चाहें रिहाइश इख़्तियार करें"। पस क्या ही अच्छा अजर है अमल करने वालों का!

75. और तुम फ़रिश्तों को देखोगे कि वो अर्श के गिर्द हलक़ा बांधे हुए अपने रब के गुण गा रहे हैं, और लोगों के दरमियान ठीक-ठीक फ़ैसला कर दिया जाएगा; और कहा जाएगा, "तारीफ़ अल्लाह के लिए है जो सारे जहान का रब है"।

यन्ज़ुरून (68)

व अश्र-क़तिल्-अर्ज़ु बिनूरि रब्बिहा व वुज़िअ़ल्-किताबु व जी-अ बिन्नबिय्यी-न वश्शु-हदा-इ व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व हुम् ला युज़्लमून (69)

व वुफ़्फ़ि-यत् कुल्लु नफ़्सिम्-मा अ़मिलत् व हु-व अअ़्लमु बिमा यफ़्अ़लून (70) ●

व सीक़ल्लज़ी-न क-फ़रू इला जहन्न-म ज़ु-मरन्, हत्ता इज़ा जाऊहा फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व क़ा-ल लहुम् ख़-ज़-नतुहा अलम् यअ्तिकुम् रुसुलुम्-मिन्कुम् यत्लू-न अ़लैकुम् आयाति रब्बिकुम् व युन्ज़िरू-नकुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा, क़ालू बला व लाकिन् हक़्क़त् कलि-मतुल्-अ़ज़ाबि अ़लल्-काफ़िरीन (71)

क़ीलद्ख़ुलू अब्वा-ब जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा फ़-बिअ्-स मस्वल्-मु-तकब्बिरीन (72)

व सीक़ल्लज़ीनत्तक़ौ रब्बहुम् इलल्-जन्नति ज़ु-मरन्, हत्ता इज़ा जाऊहा व फ़ुतिहत् अब्वाबुहा व क़ा-ल लहुम् ख़-ज़-नतुहा सलामुन् अ़लैकुम् तिब्तुम् फ़द्ख़ुलूहा ख़ालिदीन (73)

व क़ालुल्-हम्दु लिल्लाहिल्लज़ी स-द-क़ना वअ़्दहू व और-सनल्-अर्-ज़ न-तबव्व-उ मिनल्-जन्नति हैसु नशा-उ फ़निअ़्-म अज्रुल्-आ़मिलीन (74)

व तरल्-मलाइ-क-त हाफ़्फ़ी-न मिन् हौलिल्-अ़र्शि युसब्बिहू-न बि-हम्दि रब्बिहिम् व क़ुज़ि-य बैनहुम् बिल्हक़्क़ि व क़ीलल्-हम्दु लिल्लाहि रब्बिल्-आ़लमीन ● *(75)* ●

یَنْظُرُوْنَ ۝۶۸

وَاَشْرَقَتِ الْاَرْضُ بِنُوْرِ رَبِّهَا وَوُضِعَ
الْكِتٰبُ وَجِایْٓءَ بِالنَّبِیّٖنَ وَالشُّهَدَآءِ
وَقُضِیَ بَیْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَهُمْ لَا
یُظْلَمُوْنَ ۝۶۹

وَوُفِّیَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّا عَمِلَتْ وَهُوَ اَعْلَمُ
ع بِمَا یَفْعَلُوْنَ ۝۷۰

وَسِیْقَ الَّذِیْنَ كَفَرُوْٓا اِلٰی جَهَنَّمَ زُمَرًا ؕ
حَتّٰٓی اِذَا جَآءُوْهَا فُتِحَتْ اَبْوَابُهَا وَقَالَ
لَهُمْ خَزَنَتُهَآ اَلَمْ یَاْتِكُمْ رُسُلٌ مِّنْكُمْ
یَتْلُوْنَ عَلَیْكُمْ اٰیٰتِ رَبِّكُمْ وَیُنْذِرُوْنَكُمْ
لِقَآءَ یَوْمِكُمْ هٰذَا ؕ قَالُوْا بَلٰی وَلٰكِنْ
حَقَّتْ كَلِمَةُ الْعَذَابِ عَلَی الْكٰفِرِیْنَ ۝۷۱

قِیْلَ ادْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِیْنَ
فِیْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَی الْمُتَكَبِّرِیْنَ ۝۷۲

وَسِیْقَ الَّذِیْنَ اتَّقَوْا رَبَّهُمْ اِلَی الْجَنَّةِ
زُمَرًا ؕ حَتّٰٓی اِذَا جَآءُوْهَا وَفُتِحَتْ اَبْوَابُهَا
وَقَالَ لَهُمْ خَزَنَتُهَا سَلٰمٌ عَلَیْكُمْ طِبْتُمْ
فَادْخُلُوْهَا خٰلِدِیْنَ ۝۷۳

وَقَالُوا الْحَمْدُ لِلّٰهِ الَّذِیْ صَدَقَنَا
وَعْدَهٗ وَاَوْرَثَنَا الْاَرْضَ نَتَبَوَّاُ مِنَ
الْجَنَّةِ حَیْثُ نَشَآءُ ۚ فَنِعْمَ اَجْرُ
الْعٰمِلِیْنَ ۝۷۴

وَتَرَی الْمَلٰٓئِكَةَ حَآفِّیْنَ مِنْ حَوْلِ
الْعَرْشِ یُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ ۚ
وَقُضِیَ بَیْنَهُمْ بِالْحَقِّ وَقِیْلَ الْحَمْدُ
ع لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ ۝۷۵

सूरह अल–मोमिन मक्की

(आयतें 85, रुकूआत 9)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. हा. मीम.।

2. इस किताब का नाज़िल फ़रमाना अल्लाह की तरफ़ से है जो ज़बरदस्त, सब कुछ जाननेवाला है,

3. गुनाह बख़्शनेवाला, तौबा क़बूल करनेवाला, सख़्त सज़ा देनेवाला, क़ुदरतवाला है; उसके सिवा कोई माबूद नहीं, और उसी की तरफ़ अंजामकार जाना है।

4. अल्लाह की आयतों के बारे में बस वही लोग झगड़ते हैं, जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया; तो शहरों में उनकी चलत-फिरत तुम्हें धोके में न डाले।

5. उनसे पहले नूह की क़ौम के लोगों ने, और उनके बाद दूसरे गिरोहों ने भी झुटलाया और हर उम्मत के लोगों ने अपने रसूल के बारे में इरादा किया कि उसे पकड़ लें, और वो बातिल का सहारा लेकर झगड़े ताकि उसके ज़रिए से हक़ को पसपा कर दें। आख़िरकार मैंने उन्हें पकड़ लिया, तो कैसी थी मेरी उक़ूबत (सज़ा)!

6. और इसी तरह तेरे रब की यह बात भी उन लोगों पर साबित हो गई है जिन्होंने कुफ़्र किया कि वो आग में पड़ने वाले हैं।

7. जो अर्श को उठाए हुए हैं, और जो उसके गिर्द व पेश हैं अपने रब की हम्द की तसबीह करते हैं, और उसपर ईमान रखते हैं, और उन लोगों के लिए बख़्शिश की दुआ करते हैं जो ईमान ले आए कि "ऐ हमारे रब, तू अपनी रहमत और इल्म के एतिबार से हर चीज़ को मुहीत है; पस जिन लोगों ने तौबा की, और तेरे रास्ते की पैरवी इख़्तियार की, उन्हें बख़्श दे, और उन्हें भड़कती हुई आग के अज़ाब से बचा ले।

8. "हमारे रब, और उन्हें अदन के बाग़ात में दाख़िल कर जिनका तूने उनसे वादा फ़रमाया है और उनके बाप-दादा, और उनकी बीवियों, और उनकी औलाद में से जो सालेह हों उन्हें भी; बेशक तू ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है।

9. और उन्हें तकलीफ़ों से बचा। जिसे उस दिन तूने तकलीफ़ों से बचा लिया, तो यक़ीनन उस पर तूने रहम फ़रमाया और यही बड़ी कामयाबी है"।

10. यक़ीनन जिन लोगों ने कुफ़्र किया उन्हें पुकार कर कहा जाएगा कि "अपनी जानों से जो तुम्हारी बेज़ारी

40 सूरतुल्–मुअ्मिनि
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 5213 अक्षर, 1242 शब्द, 85 आयतें और 9 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हा–मीम् (1) तन्ज़ीलुल्–किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्–अ़लीम (2) ग़ाफ़िरिज़्–ज़म्बि व क़ाबिलित्तौबि शदीदिल्–अ़िक़ाबि ज़ित्तौलि, ला इला–ह इल्ला हु–व, इलैहिल्–मसीर (3)
मा युजादिलु फ़ी आयातिल्लाहि इल्लल्लज़ी–न क–फ़रू फ़ला यग्रुर्–क त–क़ल्लुबुहुम् फ़िल्–बिलाद (4)
कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्वल्–अह्ज़ाबु मिम्बअ़्दिहिम् व हम्मत् कुल्लु उम्म–तिम्–बि–रसूलिहिम् लियअ्ख़ुज़ूहु व जादलू बिल्बातिलि लियुद्हिज़ू बिहिल्हक़्–क फ़–अख़ज़्तुहुम् फ़कै–फ़ का–न अ़िक़ाब (5)
व कज़ालि–क हक़्क़त् कलि–मतु रब्बि–क अ़लल्लज़ी–न क–फ़रू अन्नहुम् अस्हाबुन्–नार ●(6)
अल्लज़ी–न यह्मिलूनल्–अ़र्–श व मन् हौलहू युसब्बिहू–न बिहम्दि–रब्बिहिम् व युअ्मिनू–न बिही व यस्तग़्फ़िरू–न लिल्लज़ी–न आमनू रब्बना वसिअ़्–त कुल्–ल शैइर्रह्म–तंव्–व अ़िल्मन् फ़ग़्फ़िर् लिल्लज़ी–न ताबू वत्त–बअ़ू सबील–क वक़िहिम् अ़ज़ाबल्–जहीम (7)
रब्बना व अद्ख़िल्हुम् जन्नाति अ़द्नि–निल्लती वअ़त्त–हुम् व मन् स–ल–ह मिन् आबाइहिम् व अज़्वाजिहिम् व ज़ुर्रिय्यातिहिम्, इन्न–क अन्तल्–अ़ज़ीज़ुल हकीम (8)
वक़िहिमुस्सय्यिआति, व मन् तक़िस्सय्यिआति यौमइज़िन् फ़–क़द् रहिम्–तहू, व ज़ालि–क हुवल् फ़ौज़ुल्–अ़ज़ीम (9) ●
इन्नल्लज़ी–न क–फ़रू युनादौ–न ल–मक़्तुल्लाहि

سُوْرَةُ الْمُؤْمِنِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٨٥ رُكُوْعَاتُهَا ٩

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

حٰمٓ ۝١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ
الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝٢
غَافِرِ الذَّنْبِ وَقَابِلِ التَّوْبِ شَدِيْدِ
الْعِقَابِ ذِى الطَّوْلِ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
اِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣
مَا يُجَادِلُ فِيْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ اِلَّا الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا فَلَا يَغْرُرْكَ تَقَلُّبُهُمْ فِى
الْبِلَادِ ۝٤
كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّالْاَحْزَابُ
مِنْ بَعْدِهِمْ وَهَمَّتْ كُلُّ اُمَّةٍ بِرَسُوْلِهِمْ
لِيَاْخُذُوْهُ وَجٰدَلُوْا بِالْبَاطِلِ لِيُدْحِضُوْا بِهِ
الْحَقَّ فَاَخَذْتُهُمْ فَكَيْفَ كَانَ عِقَابِ ۝٥
وَكَذٰلِكَ حَقَّتْ كَلِمَتُ رَبِّكَ عَلَى الَّذِيْنَ
كَفَرُوْٓا اَنَّهُمْ اَصْحٰبُ النَّارِ ۝٦
اَلَّذِيْنَ يَحْمِلُوْنَ الْعَرْشَ وَمَنْ حَوْلَهٗ
يُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ وَيُؤْمِنُوْنَ بِهٖ
وَيَسْتَغْفِرُوْنَ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَا وَسِعْتَ
كُلَّ شَىْءٍ رَّحْمَةً وَّعِلْمًا فَاغْفِرْ لِلَّذِيْنَ
تَابُوْا وَاتَّبَعُوْا سَبِيْلَكَ وَقِهِمْ عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝٧
رَبَّنَا وَاَدْخِلْهُمْ جَنّٰتِ عَدْنِ الَّتِىْ وَعَدْتَّهُمْ
وَمَنْ صَلَحَ مِنْ اٰبَآئِهِمْ وَاَزْوَاجِهِمْ
وَذُرِّيّٰتِهِمْ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٨
وَقِهِمُ السَّيِّاٰتِ وَمَنْ تَقِ السَّيِّاٰتِ يَوْمَئِذٍ
ع فَقَدْ رَحِمْتَهٗ وَذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُنَادَوْنَ لَمَقْتُ اللّٰهِ

है, अल्लाह की बेज़ारी तुमसे उससे कहीं बढ़कर रही है कि जब तुम्हें ईमान की तरफ़ बुलाया जाता था, तो तुम कुफ़्र करते थे"।

11. वो कहेंगे, "हमारे रब, तूने हमें दोबारा मुर्दा रखा, और दोबारा ज़िन्दगी दी, अब हमने अपने गुनाहों का एतिराफ़ किया। तो क्या अब निकलने का कोई रास्ता है?"

12. वह (बुरा अन्जाम) तो इसलिए सामने आएगा कि जब ख़ुदा-ए-वाहिद को पुकारा जाता है, तो तुम इनकार करते हो; लेकिन अगर उसके साथ शिर्क किया जाए तो तुम मान लेते हो अब फ़ैसला तो अल्लाह ही के हाथ में है जो बुलन्द, बहुत बड़ा है।

13. वही है जो तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है और तुम्हारे लिए आसमान से रिज़्क़ उतारता है; मगर याददिहानी तो बस वही हासिल करता है जो मुतवज्जेह हो।

14. पस तुम अल्लाह ही को, दीन को उसी के लिए ख़ालिस करते हुए पुकारो, ख़्वाह कुफ़्फ़ार नापसन्द ही करें।

15. वह बुलन्द दर्जों वाला, अर्श वाला है, अपने बन्दों में से जिसपर चाहता है अपने हुक्म से रूह उतारता है, ताकि वह मुलाक़ात के दिन से ख़बरदार कर दे,

16. जिस दिन वो निकल पड़ेंगे, उनकी कोई चीज़ अल्लाह से छुपी न रहेगी। "आज किसकी बादशाही है?" ख़ुदा-ए-वाहिद, सब पर क़ाबू रखनेवाले की।

17. आज हर जान को उसकी कमाई का बदला दिया जाएगा; आज कोई ज़ुल्म न होगा। यक़ीनन अल्लाह हिसाब लेने में बहुत तेज़ है।

18. और उन्हें क़रीब आ जाने वाली (क़ियामत) के दिन से ख़बरदार कर दो जबकि दिल हलक़ में आ रहे होंगे, वो दबा रहे होंगे, ज़ालिमों का न कोई जिगरी दोस्त होगा, और न ऐसा सिफ़ारिशी जिसकी बात मानी जाए।

19. वह आंखों की ख़ियानत को जानता है और उसे भी जो सीने छुपा रहे होते हैं।

20. अल्लाह ठीक-ठीक फ़ैसला कर देगा, रहे वो जिन्हें वो अल्लाह को

अक्बरु मिम्मक़्तिकुम् अन्फ़ु-सकुम् इज़् तुदऔ-न इलल्-ईमानि फ़-तक्फ़ुरून (10)

क़ालू रब्बना अ-मत्त-नस्नतैनि व अह्यै-तनस्नतैनि फ़अ्-तरफ़्ना बिज़ुनूबिना फ़-हल् इला ख़ुरूजिम् मिन् सबील (11)

ज़ालिकुम् बिअन्नहू इज़ा दुअि-यल्लाहु वह्दहू क-फ़र्तुम् व इंय्युश्-रक् बिही तुअ्मिनू, फ़ल्-हुक्मु लिल्लाहिल् अ़लिय्यिल्-कबीर (12)

हुवल्लज़ी युरीकुम् आयातिही व युनज़्ज़िलु लकुम् मिनस्समा-इ रिज़्क़न्, व मा य-तज़क्करु इल्ला मंय्युनीब (13)

फ़द्अुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न व लौ करिहल्-काफ़िरून (14)

रफ़ीअुद्-द-रजाति ज़ुल्अ़र्शि युल्क़िर्रू-ह मिन् अम्रिही अ़ला मंय्यशा-उ मिन् अ़िबादिही लि-युन्ज़ि-र यौमत्तलाक़ (15)

यौ-म हुम् बारिज़ू-न, ला यख़्फ़ा अ़लल्लाहि मिन्हुम् शैउन, लि-मनिल्-मुल्कुल्-यौ-म, लिल्लाहिल्-वाहिदिल्-क़ह्हार (16)

अल्यौ-म तुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-सबत्, ला ज़ुल्मल्-यौ-म, इन्नल्ला-ह सरीअुल्-हिसाब (17)

व अन्ज़िर्हुम् यौमल्-आज़ि-फ़ति इज़िल्-क़ुलूबु ल-दल्-हनाजिरि काज़िमी-न, मा लिज़्ज़ालिमी-न मिन् हमीमिंव्-व ला शफ़ीअिंय्-युता-अु (18)

यअ्लमु ख़ाइ-नतल्-अअ्युनि व मा तुख़्फ़िस्सुदूर (19)

वल्लाहु यक़्ज़ी बिल्हक़्क़ि वल्लज़ी-न यद्अू-न

اَكْبَرُ مِنْ مَّقْتِكُمْ اَنْفُسَكُمْ اِذْ تُدْعَوْنَ
اِلَى الْاِيْمَانِ فَتَكْفُرُوْنَ ۝١٠
قَالُوْا رَبَّنَآ اَمَتَّنَا اثْنَتَيْنِ وَاَحْيَيْتَنَا
اثْنَتَيْنِ فَاعْتَرَفْنَا بِذُنُوْبِنَا فَهَلْ
اِلٰى خُرُوْجٍ مِّنْ سَبِيْلٍ ۝١١
ذٰلِكُمْ بِاَنَّهٗٓ اِذَا دُعِيَ اللّٰهُ وَحْدَهٗ كَفَرْتُمْ ۚ
وَاِنْ يُّشْرَكْ بِهٖ تُؤْمِنُوْا ۭ فَالْحُكْمُ لِلّٰهِ
الْعَلِيِّ الْكَبِيْرِ ۝١٢
هُوَ الَّذِيْ يُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ وَيُنَزِّلُ لَكُمْ
مِّنَ السَّمَآءِ رِزْقًا ۭ وَمَا يَتَذَكَّرُ اِلَّا
مَنْ يُّنِيْبُ ۝١٣
فَادْعُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ لَهُ الدِّيْنَ
وَلَوْ كَرِهَ الْكٰفِرُوْنَ ۝١٤
رَفِيْعُ الدَّرَجٰتِ ذُو الْعَرْشِ ۚ يُلْقِي الرُّوْحَ
مِنْ اَمْرِهٖ عَلٰي مَنْ يَّشَآءُ مِنْ عِبَادِهٖ
لِيُنْذِرَ يَوْمَ التَّلَاقِ ۝١٥
يَوْمَ هُمْ بٰرِزُوْنَ ڬ لَا يَخْفٰى عَلَى اللّٰهِ
مِنْهُمْ شَيْءٌ ۭ لِمَنِ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ۭ لِلّٰهِ
الْوَاحِدِ الْقَهَّارِ ۝١٦
اَلْيَوْمَ تُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۢ بِمَا كَسَبَتْ ۭ
لَا ظُلْمَ الْيَوْمَ ۭ اِنَّ اللّٰهَ سَرِيْعُ الْحِسَابِ ۝١٧
وَاَنْذِرْهُمْ يَوْمَ الْاٰزِفَةِ اِذِ الْقُلُوْبُ لَدَى
الْحَنَاجِرِ كٰظِمِيْنَ ڛ مَا لِلظّٰلِمِيْنَ مِنْ
حَمِيْمٍ وَّلَا شَفِيْعٍ يُّطَاعُ ۝١٨
يَعْلَمُ خَاۗىِٕنَةَ الْاَعْيُنِ وَمَا تُخْفِي
الصُّدُوْرُ ۝١٩
وَاللّٰهُ يَقْضِيْ بِالْحَقِّ ۭ وَالَّذِيْنَ يَدْعُوْنَ

छोड़कर पुकारते हैं, वो किसी चीज़ का भी फ़ैसला करने वाले नहीं। बेशक अल्लाह ही है जो सुनता, देखता है।

21. क्या वो ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा अन्जाम हुआ जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं, वो ताक़त और ज़मीन में नुक़ूश व आसार के लिहाज़ से उनसे कहीं बढ़-चढ़कर थे; फिर उनके गुनाहों की वजह से अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया, और अल्लाह से उन्हें बचाने वाला कोई न हुआ।

22. वह (बुरा अन्जाम) तो इसलिए हुआ कि उनके पास उनके रसूल रौशन दलीलें लेकर आते रहे; लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया, आख़िरकार अल्लाह ने उन्हें पकड़ लिया। यक़ीनन वह बड़ी क़ुव्वत वाला, सज़ा देने में निहायत सख़्त है

23-24. और हमने मूसा को भी अपनी निशानियों और खुली दलीलों के साथ, फ़िरऔन और हामान और क़ारून की तरफ़ भेजा था; मगर उन्होंने कहा कि "यह तो जादूगर है बड़ा झूटा!"

25. फिर जब वह उनके सामने हमारे पास से हक़ लेकर आया तो उन्होंने कहा, "जो लोग ईमान लाकर उसके साथ हैं उनके बेटों को क़त्ल करो, और उनकी औरतों को ज़िन्दा छोड़ दो"। मगर काफ़िरों की चाल तो बेअसर ही होकर रहती है।

26. फ़िरऔन ने कहा, "मुझे छोड़ो मैं मूसा को क़त्ल कर दूं, और उसे चाहिए कि अपने रब को पुकारे। मुझे डर है कि वह कहीं तुम्हारे दीन को न बदल डाले, या यह कि मुल्क में फ़साद पैदा करे"।

27. मूसा ने कहा कि "मैंने हर मुतकब्बिर के मुक़ाबले में जो रोज़े हिसाब पर ईमान नहीं रखता, अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह ले ली"।

28. आले फ़िरऔन में से एक मर्दे मोमिन ने, जो अपने ईमान को छुपा रहा था कहा, "क्या तुम एक ऐसे शख़्स को इसलिए क़त्ल करोगे कि वह कहता है कि, 'मेरा रब अल्लाह है', और वह तुम्हारे पास तुम्हारे रब की तरफ़ से रौशन दलीलें भी लेकर आया है? अगर वह झूटा है तो उसके झूट का वबाल उसी पर पड़ेगा; लेकिन अगर वह सच्चा है तो जिस चीज़ की तुम्हें वह धमकी दे रहा है उसमें से कुछ न कुछ तो तुम पर पड़कर रहेगा।

मिन् दूनिही ला यक़्ज़ू-न बिशैइन्, इन्नल्ला-ह हुवस्समीअुल्-बसीर (20)●

अ-व लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्लज़ी-न कानू मिन् क़ब्लिहिम्, कानू हुम् अशद्-द मिन्हुम् क़ुव्व-तंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु बिज़ुनूबिहिम्, व मा का-न लहुम् मिनल्लाहि मिंव्वाक़ (21)

ज़ालि-क बि-अन्नहुम् कानत् तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़-क-फ़रू फ़-अ-ख़-ज़हुमुल्लाहु, इन्नहू क़विय्युन् शदीदुल्-अिक़ाब (22)

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना व सुल्तानिम् मुबीन (23)

इला फ़िर्औ-न व हामा-न व क़ारू-न फ़क़ालू साहिरुन् कज़्ज़ाब (24)

फ़-लम्मा जा-अहुम् बिल्हक़्क़ि मिन् अिन्दिना क़ालुक़्तुलू अब्नाअल्लज़ी-न आमनू म-अहू वस्तह़्यू निसा-अहुम्, व मा कैदुल्-काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल (25)

व क़ा-ल फ़िर्औनु ज़रूनी अक़्तुल् मूसा वल्यद्अु रब्बहू इन्नी अख़ाफ़ु अंय्यु-बद्दि-ल दी-नकुम् औ अंय्युज़्हि-र फ़िल्अर्ज़िल्-फ़साद (26)

व क़ा-ल मूसा इन्नी अुज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् मिन् कुल्लि मु-तकब्बिरिल्-ला युअ्मिनु बियौमिल्-हिसाब (27) ●

व क़ा-ल रजुलुम्-मुअ्मिनुम्-मिन् आलि फ़िर्औ-न यक्तुमु ईमानहू अ-तक़्तुलू-न रजुलन् अंय्यक़ू-ल रब्बियल्लाहु व क़द् जा-अकुम् बिल्-बय्यिनाति मिर्रब्बिकुम्, व इंय्यकु काज़िबन् फ़-अलैहि कज़िबुहू

مِنْ دُوْنِهٖ لَا يَقْضُوْنَ بِشَیْءٍ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
ع هُوَ السَّمِيْعُ الْبَصِيْرُ ۝٢٠

اَوَلَمْ يَسِيْرُوْا فِی الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ كَانُوْا مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ
كَانُوْا هُمْ اَشَدَّ مِنْهُمْ قُوَّةً وَّ اٰثَارًا فِی
الْاَرْضِ فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ بِذُنُوْبِهِمْ ؕ وَمَا
كَانَ لَهُمْ مِّنَ اللّٰهِ مِنْ وَّاقٍ ۝٢١

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَكَفَرُوْا فَاَخَذَهُمُ اللّٰهُ ؕ
اِنَّهٗ قَوِیٌّ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝٢٢

وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰی بِاٰيٰتِنَا وَسُلْطٰنٍ
مُّبِيْنٍ ۝٢٣

اِلٰی فِرْعَوْنَ وَهَامٰنَ وَقَارُوْنَ فَقَالُوْا
سٰحِرٌ كَذَّابٌ ۝٢٤

فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِالْحَقِّ مِنْ عِنْدِنَا قَالُوا
اقْتُلُوْٓا اَبْنَآءَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ
وَاسْتَحْيُوْا نِسَآءَهُمْ ؕ وَمَا كَيْدُ الْكٰفِرِيْنَ
اِلَّا فِیْ ضَلٰلٍ ۝٢٥

وَقَالَ فِرْعَوْنُ ذَرُوْنِیْٓ اَقْتُلْ مُوْسٰی
وَلْيَدْعُ رَبَّهٗ ۚ اِنِّیْٓ اَخَافُ اَنْ يُّبَدِّلَ
دِيْنَكُمْ اَوْ اَنْ يُّظْهِرَ فِی الْاَرْضِ الْفَسَادَ ۝٢٦

وَقَالَ مُوْسٰٓی اِنِّیْ عُذْتُ بِرَبِّیْ وَرَبِّكُمْ
ع مِّنْ كُلِّ مُتَكَبِّرٍ لَّا يُؤْمِنُ بِيَوْمِ الْحِسَابِ ۝٢٧

وَقَالَ رَجُلٌ مُّؤْمِنٌ ۖۗ مِّنْ اٰلِ فِرْعَوْنَ
يَكْتُمُ اِيْمَانَهٗٓ اَتَقْتُلُوْنَ رَجُلًا اَنْ
يَّقُوْلَ رَبِّیَ اللّٰهُ وَقَدْ جَآءَكُمْ بِالْبَيِّنٰتِ
مِنْ رَّبِّكُمْ ؕ وَاِنْ يَّكُ كَاذِبًا فَعَلَيْهِ كَذِبُهٗ ۚ

यक़ीनन अल्लाह उसकी रहनुमाई नही फ़रमाता जो हद से गुज़रने वाला, निहायत झूटा हो।

29. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! आज तुम्हारी बादशाही है, ज़मीन में ग़ालिब हो। लेकिन अल्लाह के अज़ाब के मुक़ाबले में कौन हमारी मदद करेगा, अगर वह हमपर आ गया?" फ़िरऔन ने कहा, "मैं तो तुम्हें बस वही बता रहा हूं जो मुझे सुझाई दे रहा है, और मैं तुम्हें बस माक़ूलियत का ठीक रास्ता दिखाता रहा हूं"।

31. उस शख़्स ने जो ईमान ला चुका था कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम्हारे बारे में मुझे ख़ौफ़ है कि तुमपर (हलाकत का) ऐसा दिन न आ पड़े जैसा दूसरी गुज़िश्ता क़ौमों पर आ पड़ा था, जैसा क़ौमे नूह, आद, समूद और उनके बाद वालों का हाल हुआ; और अल्लाह अपने बन्दों पर किसी तरह का ज़ुल्म करना नही चाहता।

32. और ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मुझे तुम्हारे बारे में हांक-पुकार के दिन का ख़ौफ़ है,

33. जिस दिन तुम पीठ फेर कर भागोगे, तुम्हें अल्लाह से बचानेवाला कोई न होगा; — और जिसे अल्लाह ही भटका दे, उसे राह दिखाने वाला कोई नहीं।

34. इससे पहले तुम्हारे पास यूसुफ़ रौशन दलीलें लेकर आ चुके हैं, मगर तुम उसके बारे में बराबर शक ही में पड़े रहे जो कुछ वह लेकर तुम्हारे पास आए थे, यहां तक कि जब वह वफ़ात पा गए, तो तुम कहने लगे कि, 'अल्लाह उनके बाद हरगिज़ कोई रसूल न भेजेगा'। इसी तरह अल्लाह उसे गुमराही में डाल देता है जो हद से तजावुज़ करनेवाला, शुबहात में पड़ जानेवाला हो"।

35. ऐसे लोगों को (गुमराही में डालता है) जो अल्लाह की आयतों में झगड़ते हैं, बग़ैर इसके कि उनके पास कोई दलील आई हो, अल्लाह के नज़दीक और उन लोगों के नज़दीक जो ईमान लाए यह रविश सख़्त नापसन्दीदा है; इसी तरह अल्लाह हर मुतकब्बिर, जब्बार के दिल पर मुहर लगा देता है।

36. फ़िरऔन ने कहा, "ऐ हामान,

व इंय्यकु सादिक़ंय्-युसिब्कुम् बअ्ज़ुल्लज़ी यअ़िदुकुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दी मन् हु-व मुस्रिफ़ुन् कज़्ज़ाब (28)

या क़ौमि लकुमुल्-मुल्कुल्-यौ-म ज़ाहिरी-न फ़िल्अर्ज़ि फ़-मंय्यन्सुरुना मिम्बअ्सिल्लाहि इन् जा-अना, क़ा-ल फ़िर्औनु मा उरीकुम् इल्ला मा अरा व मा अह्दीकुम् इल्ला सबीलर्-रशाद (29)

व क़ालल्लज़ी आम-न या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् मिस्-ल यौमिल्-अह्ज़ाब (30)

मिस्-ल दअ्बि क़ौमि नूहिंव्-व आ़दिंव्-व समू-द वल्लज़ी-न मिम्बअ्दिहिम्, व मल्लाहु युरीदु ज़ुल्मल्-लिल्अ़िबाद (31)

व या क़ौमि इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् यौमत्तनाद (32)

यौ-म तुवल्लू-न मुद्बिरी-न मा लकुम् मिनल्लाहि मिन् आ़सिमिन् व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् हाद (33)

व ल-क़द् जा-अकुम् यूसुफ़ु मिन् क़ब्लु बिल्बय्यिनाति फ़मा ज़िल्तुम् फ़ी शक्किम् मिम्मा जा-अकुम् बिही, हत्ता इज़ा ह-ल-क क़ुल्तुम् लंय्यब्-अ़सल्लाहु मिम्बअ्दिही रसूलन्, कज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहु मन् हु-व मुस्रिफ़ुम्-मुर्ताब (34)

अल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि सुल्तानिन् अताहुम्, कबु-र मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि व अ़िन्दल्लज़ी-न आमनू, कज़ालि-क यत्बअुल्लाहु अ़ला कुल्लि क़ल्बि मु-तकब्बिरिन् जब्बार (35)

व क़ा-ल फ़िर्औनु या हामानुब्नि-ली

وَاِنْ يَّكُ صَادِقًا يُّصِبْكُمْ بَعْضُ الَّذِیْ
يَعِدُكُمْ ۚ اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِیْ مَنْ هُوَ
مُسْرِفٌ كَذَّابٌ ۝٢٨

يٰقَوْمِ لَكُمُ الْمُلْكُ الْيَوْمَ ظٰهِرِيْنَ
فِی الْاَرْضِ ۫ فَمَنْ يَّنْصُرُنَا مِنْۢ بَاْسِ
اللّٰهِ اِنْ جَآءَنَا ۚ قَالَ فِرْعَوْنُ مَاۤ اُرِيْكُمْ
اِلَّا مَاۤ اَرٰی وَمَاۤ اَهْدِيْكُمْ اِلَّا سَبِيْلَ
الرَّشَادِ ۝٢٩

وَقَالَ الَّذِیْۤ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اِنِّیْۤ اَخَافُ
عَلَيْكُمْ مِّثْلَ يَوْمِ الْاَحْزَابِ ۝٣٠ۙ

مِثْلَ دَاْبِ قَوْمِ نُوْحٍ وَّعَادٍ وَّثَمُوْدَ
وَالَّذِيْنَ مِنْۢ بَعْدِهِمْ ۚ وَمَا اللّٰهُ يُرِيْدُ
ظُلْمًا لِّلْعِبَادِ ۝٣١

وَيٰقَوْمِ اِنِّیْۤ اَخَافُ عَلَيْكُمْ يَوْمَ التَّنَادِ ۝٣٢ۙ

يَوْمَ تُوَلُّوْنَ مُدْبِرِيْنَ ۚ مَا لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ
مِنْ عَاصِمٍ ۚ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ هَادٍ ۝٣٣

وَلَقَدْ جَآءَكُمْ يُوْسُفُ مِنْ قَبْلُ بِالْبَيِّنٰتِ
فَمَا زِلْتُمْ فِیْ شَكٍّ مِّمَّا جَآءَكُمْ بِهٖ ۚ
حَتّٰۤی اِذَا هَلَكَ قُلْتُمْ لَنْ يَّبْعَثَ اللّٰهُ
مِنْۢ بَعْدِهٖ رَسُوْلًا ۚ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ
مَنْ هُوَ مُسْرِفٌ مُّرْتَابُ ۝٣٤ۚۖ

اِلَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِیْۤ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ
سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۚ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ
وَعِنْدَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۚ كَذٰلِكَ يَطْبَعُ اللّٰهُ
عَلٰی كُلِّ قَلْبِ مُتَكَبِّرٍ جَبَّارٍ ۝٣٥

وَقَالَ فِرْعَوْنُ يٰهَامٰنُ ابْنِ لِیْ

मेरे लिए एक बुलन्द इमारत बना, ताकि मैं रास्तों को पहुंचूं,

37. आसमानों के रास्तों को, फिर मूसा के माबूद को झांककर देखूं; मैं तो उसे झूटा ही समझता हूं"। इस तरह फ़िरऔन के लिए उसकी बदअमली खुशनुमा बना दी गई, और रास्ते से उसे रोक दिया गया, फ़िरऔन की चाल तो बस तबाही के सिलसिला में रही।

38. उस शख़्स ने जो ईमान लाया था कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! मेरी पैरवी करो मैं तुम्हें भलाई का सही रास्ता दिखाऊंगा।

39. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! यह दुनिया की ज़िन्दगी तो बस आरज़ी फ़ायदा उठाने की चीज़ है, यक़ीनन हमेशा रहने का घर तो आख़िरत ही है।

40. जिसने बुराई की, तो उसे वैसा ही बदला मिलेगा, लेकिन जिसने अमल-ए-सालेह किया, ख़्वाह वह मर्द हो ख़्वाह औरत, बशर्ते कि वह मोमिन हो, तो ऐसे लोग जन्नत में दाख़िल होंगे, वहां उन्हें बेहिसाब दिया जाएगा।

41. ऐ मेरी क़ौम के लोगो! यह मेरे साथ क्या मुआमला है कि मैं तो तुम्हें नजात की तरफ़ बुलाता हूं और तुम मुझे आग की तरफ़ बुला रहे हो?

42. तुम मुझे बुलाते हो कि मैं अल्लाह के साथ कुफ़्र करूं, और उसके साथ उसे शरीक ठहराऊं जिसका मुझे कोई इल्म नहीं, जबकि मैं तुम्हें उसकी तरफ़ बुलाता हूं जो ज़बरदस्त, निहायत बख़्शने वाला है।

43. कुछ शक नहीं कि तुम मुझे जिस की तरफ़ बुलाते हो, उसके लिए कोई दावत न दुनिया में है और न आख़िरत ही में, और यह कि हमें लौटना भी अल्लाह ही की तरफ़ है, और यह कि हद से गुज़रनेवाले ही आग (में जाने) वाले हैं।

44. पस अनक़रीब तुम याद करोगे जो कुछ मैं तुमसे कह रहा हूं। मैं तो अपना मुआमला अल्लाह के सुपुर्द करता हूं; यक़ीनन अल्लाह की बन्दों पर निगाह है"।

सर्‌हल्‌लअ़ल्ली अब्लुग़ुल्-अस्बाब (36)

अस्बाबस्समावाति फ़-अत्तलि-अ़ इला इलाहि मूसा व इन्नी ल-अज़ुन्नुहू काज़िबन्, व कज़ालि-क ज़ुय्यि-न लिफ़िर्‌औ-न सू-उ अ़-मलिही व सुद्-द अ़निस्सबीलि, व मा कैदु फ़िर्‌औ-न इल्ला फ़ी तबाब (37) ●

व क़ालल्लज़ी आम-न या क़ौमित्तबिअ़ूनि अह्‌दिकुम् सबीलर्रशाद (38)

या क़ौमि इन्नमा हाज़िहिल्-हयातुद्‌दुन्या मताअुंव्-व इन्नल्-आख़िर-त हि-य दारुल्-क़रार (39)

मन् अ़मि-ल सय्यि-अतन् फ़ला युज्ज़ा इल्ला मिस्लहा व मन् अ़मि-ल सालिहम्-मिन् ज़-करिन् औ उन्सा व हु-व मुअ्मिनुन फ़-उलाइ-क यद्‌ख़ुलूनल्-जन्न-त युर्‌ज़क़ू-न फ़ीहा बिग़ैरि हिसाब (40)

व या क़ौमि मा ली अद्‌अ़ूकुम् इलन्नजाति व तद्‌अ़ूननी इलन्नार● (41)

तद्‌अ़ूननी लि-अक्फ़ु-र बिल्लाहि व उश्रि-क बिही मा लै-स ली बिही अ़िल्मुंव्-व अ-न अद्‌अ़ूकुम् इलल् अ़ज़ीज़िल्-ग़फ़्फ़ार (42)

ला ज-र-म अन्नमा तद्‌अ़ूननी इलैहि लै-स लहू दअ़्-वतुन् फ़िद्‌दुन्या व ला फ़िल्-आख़िरति व अन्-न मरद्-दना इलल्लाहि व अन्नल्-मुस्रिफ़ी-न हुम् अस्हाबुन्नार (43)

फ़-सतज़्कुरू-न मा अक़ूलु लकुम् व उफ़व्विज़ु अम्री इलल्लाहि, इन्नल्ला-ह बसीरुम्-बिल्‌अ़िबाद (44)

صَرْحًا لَّعَلِّيْٓ اَبْلُغُ الْاَسْبَابَ ۝۳۶

اَسْبَابَ السَّمٰوٰتِ فَاَطَّلِعَ اِلٰٓى اِلٰهِ
مُوْسٰى وَاِنِّيْ لَاَظُنُّهٗ كَاذِبًا ۭ وَكَذٰلِكَ
زُيِّنَ لِفِرْعَوْنَ سُوْۗءُ عَمَلِهٖ وَصُدَّ عَنِ
السَّبِيْلِ ۭ وَمَا كَيْدُ فِرْعَوْنَ اِلَّا فِيْ
تَبَابٍ ۝۳۷ ع

وَقَالَ الَّذِيْٓ اٰمَنَ يٰقَوْمِ اتَّبِعُوْنِ
اَهْدِكُمْ سَبِيْلَ الرَّشَادِ ۝۳۸

يٰقَوْمِ اِنَّمَا هٰذِهِ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا مَتَاعٌ ۡ
وَّاِنَّ الْاٰخِرَةَ هِيَ دَارُ الْقَرَارِ ۝۳۹

مَنْ عَمِلَ سَيِّئَةً فَلَا يُجْزٰٓى اِلَّا مِثْلَهَا ۚ
وَمَنْ عَمِلَ صَالِحًا مِّنْ ذَكَرٍ اَوْ اُنْثٰى
وَهُوَ مُؤْمِنٌ فَاُولٰۗىِٕكَ يَدْخُلُوْنَ الْجَنَّةَ
يُرْزَقُوْنَ فِيْهَا بِغَيْرِ حِسَابٍ ۝۴۰

وَيٰقَوْمِ مَا لِيْٓ اَدْعُوْكُمْ اِلَى النَّجٰوةِ
وَتَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَى النَّارِ ۝۴۱

تَدْعُوْنَنِيْ لِاَكْفُرَ بِاللّٰهِ وَاُشْرِكَ بِهٖ
مَا لَيْسَ لِيْ بِهٖ عِلْمٌ ۡ وَّاَنَا اَدْعُوْكُمْ
اِلَى الْعَزِيْزِ الْغَفَّارِ ۝۴۲

لَا جَرَمَ اَنَّمَا تَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ لَيْسَ لَهٗ
دَعْوَةٌ فِي الدُّنْيَا وَلَا فِي الْاٰخِرَةِ وَاَنَّ
مَرَدَّنَآ اِلَى اللّٰهِ وَاَنَّ الْمُسْرِفِيْنَ هُمْ
اَصْحٰبُ النَّارِ ۝۴۳

فَسَتَذْكُرُوْنَ مَآ اَقُوْلُ لَكُمْ ۭ وَاُفَوِّضُ
اَمْرِيْٓ اِلَى اللّٰهِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ بَصِيْرٌۢ
بِالْعِبَادِ ۝۴۴

45. आख़िरकार जो चाल वो चल रहे थे उसकी बुराइयों से अल्लाह ने उसे बचा लिया, और आले फ़िरऔन को बुरे अज़ाब ने आ घेरा,

46. यानी आग ने, जिसके सामने वो सुबह व शाम पेश किए जाते हैं; और जिस दिन क़ियामत की घड़ी वाक़े होगी (हुक्म होगा): "आले फ़िरऔन को सख़्ततरीन अज़ाब में दाख़िल करो"!

47. और जबकि वो आग के अन्दर एक-दूसरे से झगड़ रहे होंगे, तो कमज़ोर लोग उन लोगों से जो बड़े बनते थे कहेंगे कि "हम तो तुम्हारे पीछे चलने वाले थे। अब क्या तुम हमपर से आग का कुछ हिस्सा हटा सकते हो?"

48. वो लोग जो बड़े बनते थे कहेंगे कि "हम में से हर एक इसी में पड़ा है; यक़ीनन अल्लाह बन्दों के दरमियान फ़ैसला कर चुका"।

49. जो लोग आग में होंगे वो जहन्नम के अहलकारों से कहेंगे कि "अपने रब को पुकारो कि वह हमपर से एक दिन अज़ाब कुछ हलका कर दे"।

50. वो कहेंगे, "क्या तुम्हारे पास तुम्हारे रसूल रौशन दलीलें लेकर नहीं आते रहे"? कहेंगे, "क्यों नहीं"! वो कहेंगे, "फिर तो तुम्ही पुकारो"! लेकिन काफ़िरों की पुकार तो बेअसर ही होकर रहती है।

51. यक़ीनन हम अपने रसूलों की और उन लोगों की जो ईमान लाए दुनिया की ज़िन्दगी में भी लाज़िमन मदद करते हैं, और उस रोज़ भी करेंगे जबकि गवाह खड़े होंगे,

52. जिस दिन ज़ालिमों को उनकी मअज़िरत कुछ भी फ़ायदा न देगी, बल्कि उनके लिए तो लानत है, और उनके लिए बुरा घर है।

53-54. हम मूसा को भी हिदायत से नवाज़ चुके हैं, और बनी इसराईल को किताब का वारिस बनाया जो अक़्ल व ख़िरदवालों के लिए हिदायत और याददिहानी थी।

55. पस सब्र करो; यक़ीनन अल्लाह का वादा सच्चा है, और अपने क़ुसूर की बख़्शिश चाहो, और शाम और सहर के वक़्त अपने रब की हम्द की तसबीह करो।

56. जो लोग बग़ैर किसी ऐसी दलील के जो उनके पास आई हो, अल्लाह

फ़-वक़ाहुल्लाहु सय्यिआति मा म-करू व हा-क़ बि-आलि फ़िर्औ-न सूउल्-अज़ाब (45)

अन्नारु युअ्-रज़ू-न अलैहा ग़ुदुव्वंव्-व अशिय्यन् व यौ-म तक़ूमुस्सा-अतु, अद्ख़िलू आ-ल फ़िरऔ-न अशद्दल्-अज़ाब (46)

व इज़् य-तहाज्जू-न फ़िन्नारि फ़-यक़ूलुज़्-ज़ु-अफ़ा-उ लिल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुन्ना लकुम् त-बअन् फ़-हल् अन्तुम् मुग़्नू-न अन्ना नसीबम्-मिनन्नार (47)

क़ालल्लज़ीनस्तक्बरू इन्ना कुल्लुन् फ़ीहा इन्नल्ला-ह क़द् ह-क-म बैनल्-अिबाद (48)

व क़ालल्लज़ी-न फ़िन्नारि लि-ख़-ज़-नति जहन्न-मद्अू रब्बकुम् युख़फ़्फ़िफ़् अन्ना यौमम् मिनल्-अज़ाब (49)

क़ालू अ-व लम् तकु तअ्तीकुम् रुसुलुकुम् बिल्बय्यिनाति, क़ालू बला, क़ालू फ़द्अू व मा दुआउल्-काफ़िरी-न इल्ला फ़ी ज़लाल (50) ●

इन्ना ल-नन्सुरु रुसु-लना वल्लज़ी-न आमनू फ़िल्हयातिद्दुन्या व यौ-म यक़ूमुल्-अश्हाद (51)

यौ-म ला यन्फ़अुज़्ज़ालिमी-न मअ्ज़ि-रतुहुम् व लहुमुल्-लअ्-नतु व लहुम् सूउद्-दार (52)

व ल-क़द् आतैना मूसल्हुदा व औरस्ना बनी इस्राईलल्-किताब (53) *हुदंव्-व ज़िक्रा लि-उलिल्-अल्बाब* (54)

फ़स्बिर् इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-वस्तग़्फ़िर् लि-ज़म्बि-क व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क बिल्अशिय्यि वल्-इब्कार (55)

इन्नल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि बिग़ैरि

فَوَقٰىهُ اللّٰهُ سَيِّاٰتِ مَا مَكَرُوْا وَحَاقَ
بِاٰلِ فِرْعَوْنَ سُوْٓءُ الْعَذَابِ ۝٤٥
اَلنَّارُ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا غُدُوًّا وَّعَشِيًّا ۚ
وَيَوْمَ تَقُوْمُ السَّاعَةُ ۫ اَدْخِلُوْٓا اٰلَ
فِرْعَوْنَ اَشَدَّ الْعَذَابِ ۝٤٦
وَاِذْ يَتَحَآجُّوْنَ فِى النَّارِ فَيَقُوْلُ الضُّعَفٰٓؤُا
لِلَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُنَّا لَكُمْ تَبَعًا
فَهَلْ اَنْتُمْ مُّغْنُوْنَ عَنَّا نَصِيْبًا
مِّنَ النَّارِ ۝٤٧
قَالَ الَّذِيْنَ اسْتَكْبَرُوْٓا اِنَّا كُلٌّ فِيْهَآ ۙ
اِنَّ اللّٰهَ قَدْ حَكَمَ بَيْنَ الْعِبَادِ ۝٤٨
وَقَالَ الَّذِيْنَ فِى النَّارِ لِخَزَنَةِ جَهَنَّمَ
ادْعُوْا رَبَّكُمْ يُخَفِّفْ عَنَّا يَوْمًا مِّنَ
الْعَذَابِ ۝٤٩
قَالُوْٓا اَوَلَمْ تَكُ تَاْتِيْكُمْ رُسُلُكُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ ۗ قَالُوْا بَلٰى ۗ قَالُوْا فَادْعُوْا ۚ
ع وَمَا دُعٰٓؤُا الْكٰفِرِيْنَ اِلَّا فِىْ ضَلٰلٍ ۝٥٠
اِنَّا لَنَنْصُرُ رُسُلَنَا وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا فِى
الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا وَيَوْمَ يَقُوْمُ الْاَشْهَادُ ۝٥١
يَوْمَ لَا يَنْفَعُ الظّٰلِمِيْنَ مَعْذِرَتُهُمْ
وَلَهُمُ اللَّعْنَةُ وَلَهُمْ سُوْٓءُ الدَّارِ ۝٥٢
وَلَقَدْ اٰتَيْنَا مُوْسَى الْهُدٰى وَاَوْرَثْنَا
بَنِىْٓ اِسْرَآءِيْلَ الْكِتٰبَ ۝٥٣
هُدًى وَّذِكْرٰى لِاُولِى الْاَلْبَابِ ۝٥٤
فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّاسْتَغْفِرْ لِذَنْۢبِكَ
وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ بِالْعَشِىِّ وَالْاِبْكَارِ ۝٥٥
اِنَّ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِىْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ بِغَيْرِ

की आयतों में झगड़ते हैं, उनके सीनों में सिर्फ़ किब्र (बड़ाई) है, जिस तक वो पहुंचने के नही पस अल्लाह की पनाह लो, यक़ीनन वह सुनता, देखता है।

57. बेशक आसमानों और ज़मीन को पैदा करना लोगों के पैदा करने की बनिसबत ज़्यादा बड़ा काम है; लेकिन अकसर लोग जानते नहीं।

58. अंधा और बीना (देखनेवाला) बराबर नहीं होते, और वो लोग भी बाहम यकसां नहीं होते जिन्होंने ईमान लाकर नेक आमाल इख़्तियार किए और न बुरे काम करनेवाले ही (बाहम यकसां होते हैं) तुम होश से काम थोड़े ही लेते हो।

59. यक़ीनन क़ियामत की घड़ी आनेवाली है, इसमें कोई शक नहीं, मगर अकसर लोग ईमान नही लाते।

60. तुम्हारे रब ने कहा है कि "तुम मुझे पुकारो मैं तुम्हारी दुआएं क़बूल करूंगा"। जो लोग मेरी इबादत के मुआमले में घमण्ड से काम लेते हैं, यक़ीनन वो जल्द ही ज़लील होकर जहन्नम में दाख़िल होंगे।

61. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए रात (तारीक) बनाई, ताकि तुम उसमें सुकून हासिल करो, और दिन को रौशन बनाया (ताकि उसमें दौड़-धूप करो)। बेशक अल्लाह लोगों के लिए बड़ा फ़ज़्लवाला है, लेकिन अकसर लोग शुक्र अदा नहीं करते।

62. यह है अल्लाह, तुम्हारा रब, हर चीज़ का ख़ालिक़; उसके सिवा कोई माबूद नहीं। फिर तुम कहां उलटे फिरे जाते हो?

63. इसी तरह वो भी औंधे हुए जाते रहे हैं जो अल्लाह की आयतों का इनकार करते थे।

64. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को जाए क़रार और आसमान को बतौरे छत बनाया; और तुम्हारी सूरतगिरी की, तो तुम्हारी निहायत अच्छी सूरतें बनाई, और तुम्हें पाकीज़ा चीज़ों का रिज़्क़ बख़्शा। यह है अल्लाह, तुम्हारा रब, पस बड़ी बरकतवाला है अल्लाह, सारे जहां का रब।

65. वही ज़िन्दा है; उसके सिवा कोई माबूद नहीं। पस उसे ही दीन को उसी के लिए ख़ालिस कर के पुकारो।

सुल्तानिन् अताहुम् इन् फ़ी सुदूरिहिम् इल्ला किब्रुम्-मा हुम् बिबालिग़ीहि फ़स्तअिज़् बिल्लाहि, इन्नहू हुवस्समीअुल्-बसीर (56)

ल-ख़ल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि अक्बरु मिन ख़ल्क़िन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यअ्लमून (57)

व मा यस्तविल्-अअ्मा वल्बसीरु वल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्सालिहाति व लल्-मुसी-उ, क़लीलम्-मा त-तज़क्करून (58)

इन्नस्सा-अ-त लआति-यतुल्-ला रै-ब फ़ीहा व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला युअ्मिनून (59)

व क़ा-ल रब्बुकुमुद्-अूनी अस्तजिब् लकुम्, इन्नल्लज़ी-न यस्तक्बिरू-न अन् अिबादती स-यद्ख़ुलू-न जहन्न-म दाख़िरीन (60) ●

अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्लै-ल लितस्कुनू फ़ीहि वन्नहा-र मुब्सिरन्, इन्नल्ला-ह लज़ू फ़ज़्लिन् अलन्नासि व लाकिन्-न अक्सरन्नासि ला यश्कुरून (61)

ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् ख़ालिक़ु कुल्लि शैइन् ● *ला इला-ह इल्ला हु-व फ़-अन्ना तुअ्फ़कून* (62)

कज़ालि-क युअ्-फ़कुल्लज़ी-न कानू बिआयातिल्लाहि यज्हदून (63)

अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्-अर्-ज़ क़रारंव्-वस्समा-अ बिनाअंव्-व सव्व-रकुम् फ़-अह्स-न सु-व-रकुम् व र-ज़-क़कुम् मिनत्तय्यिबाति, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बुकुम् फ़-तबा-रकल्लाहु रब्बुल्-आलमीन (64)

हुवल्-हय्यु ला इला-ह इल्ला हु-व फ़द्अूहु मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न अल्हम्दु

سُلْطٰنٍ اَتٰىهُمْ ۙ اِنْ فِیْ صُدُوْرِهِمْ اِلَّا
كِبْرٌ مَّا هُمْ بِبَالِغِیْهِ ۚ فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ
اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْبَصِیْرُ ۝٥٦
لَخَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ اَكْبَرُ مِنْ خَلْقِ
النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یَعْلَمُوْنَ ۝٥٧
وَمَا یَسْتَوِی الْاَعْمٰی وَالْبَصِیْرُ ۙ۬ وَالَّذِیْنَ
اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَلَا الْمُسِیْٓءُ ؕ
قَلِیْلًا مَّا تَتَذَكَّرُوْنَ ۝٥٨
اِنَّ السَّاعَةَ لَاٰتِیَةٌ لَّا رَیْبَ فِیْهَا
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا یُؤْمِنُوْنَ ۝٥٩
وَقَالَ رَبُّكُمُ ادْعُوْنِیْۤ اَسْتَجِبْ لَكُمْ ؕ
اِنَّ الَّذِیْنَ یَسْتَكْبِرُوْنَ عَنْ عِبَادَتِیْ
ع سَیَدْخُلُوْنَ جَهَنَّمَ دٰخِرِیْنَ ۝٦٠
اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الَّیْلَ لِتَسْكُنُوْا
فِیْهِ وَالنَّهَارَ مُبْصِرًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ لَذُوْ فَضْلٍ
عَلَی النَّاسِ وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ
لَا یَشْكُرُوْنَ ۝٦١
ذٰلِكُمُ اللّٰهُ رَبُّكُمْ خَالِقُ كُلِّ شَیْءٍ ۘ
لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ؗ فَاَنّٰی تُؤْفَكُوْنَ ۝٦٢
كَذٰلِكَ یُؤْفَكُ الَّذِیْنَ كَانُوْا بِاٰیٰتِ اللّٰهِ
یَجْحَدُوْنَ ۝٦٣
اَللّٰهُ الَّذِیْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ قَرَارًا
وَّالسَّمَآءَ بِنَآءً وَّصَوَّرَكُمْ فَاَحْسَنَ
صُوَرَكُمْ وَرَزَقَكُمْ مِّنَ الطَّیِّبٰتِ ؕ ذٰلِكُمُ اللّٰهُ
رَبُّكُمْ ۚۖ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ رَبُّ الْعٰلَمِیْنَ ۝٦٤
هُوَ الْحَیُّ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ فَادْعُوْهُ
مُخْلِصِیْنَ لَهُ الدِّیْنَ ؕ اَلْحَمْدُ

सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जो सारे जहां का रब है।

66. कह दो, "मुझे इससे रोक दिया गया है कि मैं उनकी इबादत करूं जिनको तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो जबकि मेरे पास मेरे रब की तरफ़ से रौशन दलीलें आ चुके हैं; मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं सारे जहां के रब के आगे सरे तसलीम ख़म कर दूं"।

67. वही है जिसने तुम्हें मिट्टी से फिर नुत्फ़ा से, फिर ख़ून के लोथड़े से बनाया, फिर वह तुम्हें एक बच्चे की शक्ल में निकालता है, फिर तुम्हें बढ़ाता है ताकि अपनी जवानी को पहुंच जाओ, फिर मुहलत देता है कि तुम बुढ़ापे को पहुंचो। अगरचे तुममें से कोई इससे पहले भी उठा लिया जाता है — और यह इसलिए करता है कि ताकि तुम एक मुक़र्रर मुद्दत तक पहुंच जाओ; और ऐसा इसलिए है ताकि तुम समझो।

68. वही है जो ज़िन्दगी और मौत देता है; और जब वह किसी काम का फ़ैसला करता है, तो उसके लिए बस कह देता है कि 'हो जा' तो वह हो जाता है।

69. क्या तुमने उनको नहीं देखा जो अल्लाह की आयतों के बारे में झगड़ते हैं, वो कहां फिरे जाते हैं?

70. जिन लोगों ने किताब को झुटलाया और उसे भी जिसके साथ हमने अपने रसूलों को भेजा था, तो जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा!

71–72. जबकि तौक़ उनकी गर्दनों में होंगे, और ज़ंजीरें (उनके पैरों में), वो खौलते हुए पानी में घसीटे जाएंगे, फिर आग में झोंक दिए जाएंगे;

73–74. फिर उनसे कहा जाएगा, "कहां हैं वो जिन्हें ख़ुदाई में शरीक ठहराकर तुम ख़ुदा के सिवा पूजते थे?" वो कहेंगे "वो हमसे गुम होकर रह गए; बल्कि हम तो पहले किसी चीज़ को नहीं पुकारते रहे।" इसी तरह अल्लाह काफ़िरों को भटकता छोड़ देता है।

75. "यह इसलिए कि तुम ज़मीन में नाहक़ मगन थे, और इसलिए कि तुम इतराते रहे हो।

76. जहन्नम के दरवाज़ों में हमेशा उसमें रहने के लिए दाख़िल हो जाओ"। बस निहायत ही बुरा ठिकाना है तकब्बुर करने वालों का!

लिल्लाहि रब्बिल्-आलमीन (65)

कुल् इन्नी नुहीतु अन् अअ्बुदल्लज़ी-न तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि लम्मा जा-अनियल्-बय्यिनातु मिर्रब्बी व उमिर्तु अन् उस्लि-म लि-रब्बिल्-आलमीन (66)

हुवल्लज़ी ख़-ल-ककुम् मिन् तुराबिन् सुम्-म मिन् नुत्फ़तिन् सुम्-म मिन् अ-ल-क़तिन् सुम्-म युख़्रिजुकुम् तिफ़्लन् सुम्-म लितब्लुग़ू अशुद्-दकुम् सुम्-म लि-तकूनू शुयूख़न् व मिन्कुम् मंय्यु-तवफ़्फ़ा मिन् क़ब्लु व लि-तब्लुग़ू अ-जलम्-मुसम्मंव्-व लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून (67)

हुवल्लज़ी युह्यी व युमीतु फ़-इज़ा क़ज़ा अम्रन् फ़-इन्नमा यक़ूलु लहू कुन् फ़-यकून (68) ●

अलम् त-र इलल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिल्लाहि, अन्ना युस्रफ़ून (69)

अल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिल्किताबि व बिमा अर्सल्ना बिही रुसु-लना, फ़सौ-फ़ यअ्लमून (70)

इज़िल्-अग़्लालु फ़ी अअ्नाक़िहिम् वस्सलासिलु युस्हबून (71)

फ़िल्हमीमि सुम्-म फ़िन्नारि युस्जरून (72)

सुम्-म क़ी-ल लहुम् ऐ-न मा कुन्तुम् तुश्रिकून (73)

मिन् दूनिल्लाहि, क़ालू ज़ल्लू अ़न्ना बल-लम् नकुन्-नद्अू मिन् क़ब्लु शैअन्, कज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहुल्-काफ़िरीन (74)

ज़ालिकुम् बिमा कुन्तुम् तफ़्रहू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तम्रहून (75)

उद्ख़ुलू अब्वा-ब जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा फ़बिअ्-स मस्वल्-मु-तकब्बिरीन (76)

لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦٥

قُلْ اِنِّیْ نُهِيْتُ اَنْ اَعْبُدَ الَّذِيْنَ تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ لَمَّا جَآءَنِیَ الْبَيِّنٰتُ مِنْ رَّبِّیْ ۫ وَاُمِرْتُ اَنْ اُسْلِمَ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٦٦

هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ مِّنْ تُرَابٍ ثُمَّ مِنْ نُّطْفَةٍ ثُمَّ مِنْ عَلَقَةٍ ثُمَّ يُخْرِجُكُمْ طِفْلًا ثُمَّ لِتَبْلُغُوْٓا اَشُدَّكُمْ ثُمَّ لِتَكُوْنُوْا شُيُوْخًا ۚ وَمِنْكُمْ مَّنْ يُّتَوَفّٰی مِنْ قَبْلُ وَلِتَبْلُغُوْٓا اَجَلًا مُّسَمًّی وَّلَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ۝٦٧

هُوَ الَّذِیْ يُحْیٖ وَيُمِيْتُ ۚ فَاِذَا قَضٰٓی اَمْرًا فَاِنَّمَا يَقُوْلُ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ ۝٦٨ ع

اَلَمْ تَرَ اِلَی الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِیْٓ اٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ اَنّٰی يُصْرَفُوْنَ ۝٦٩

الَّذِيْنَ كَذَّبُوْا بِالْكِتٰبِ وَبِمَآ اَرْسَلْنَا بِهٖ رُسُلَنَا ۛ فَسَوْفَ يَعْلَمُوْنَ ۝٧٠

اِذِ الْاَغْلٰلُ فِیْٓ اَعْنَاقِهِمْ وَالسَّلٰسِلُ ۭ يُسْحَبُوْنَ ۝٧١

فِی الْحَمِيْمِ ۬ ثُمَّ فِی النَّارِ يُسْجَرُوْنَ ۝٧٢

ثُمَّ قِيْلَ لَهُمْ اَيْنَ مَا كُنْتُمْ تُشْرِكُوْنَ ۝٧٣

مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ ۭ قَالُوْا ضَلُّوْا عَنَّا بَلْ لَّمْ نَكُنْ نَّدْعُوْا مِنْ قَبْلُ شَيْئًا ۭ كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ الْكٰفِرِيْنَ ۝٧٤

ذٰلِكُمْ بِمَا كُنْتُمْ تَفْرَحُوْنَ فِی الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَمْرَحُوْنَ ۝٧٥

اُدْخُلُوْٓا اَبْوَابَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ فَبِئْسَ مَثْوَی الْمُتَكَبِّرِيْنَ ۝٧٦

77. पस सब्र करो; यक़ीनन अल्लाह का वादा बरहक़ है। तो जिसकी हम उन्हें धमकी दे रहे हैं उसमें से अगर कुछ हम तुम्हें दिखा दें, या हम तुम्हें उठा लें, लौटना तो बहरहाल उन्हें हमारी ही तरफ़ है।

78. हम तुमसे पहले कितने ही रसूल भेज चुके हैं; उनमें से कुछ तो वो हैं जिनके हालात हमने तुमसे बयान किए हैं, और उनमें ऐसे भी हैं जिनके हालात हमने तुमसे बयान नहीं किए। किसी रसूल को भी यह क़ुदरत न थी कि वह अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई निशानी ले आए। फिर जब अचानक अल्लाह का हुक्म आ जाएगा, तो ठीक-ठीक फ़ैसला चुका दिया जाएगा; और हक़ को झुटलानेवाले उस वक़्त ख़सारे में पड़ जाएंगे।

79. अल्लाह ही है जिसने तुम्हारे लिए चौपाए बनाए ताकि उनमें से कुछ पर तुम सवारी करो और उनमें से कुछ को तुम खाते भी हो;

80. उनमें तुम्हारे लिए और भी फ़ायदे हैं — और ताकि उनके ज़रिए से तुम उस हाजत (ज़रूरत) को पहुंच सको जो तुम्हारे सीनों में हो, और उनपर भी और कश्तियों पर भी तुम सवार होते हो।

81. और वह तुम्हें अपनी निशानियां दिखाता है; आख़िर तुम अल्लाह की कौन सी निशानी को नहीं पहचानते?

82. फिर क्या वो ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा अन्जाम हुआ जो उनसे पहले गुज़र चुके हैं? वो उनसे ज़्यादा थे और ताक़त और अपने छोड़े हुए आसार (निशानात) के लिहाज़ से भी बढ़-चढ़कर थे; मगर जो कुछ वो कमाते थे वह उनके कुछ भी काम न आया।

83. फिर जब उनके रसूल उनके पास रौशन दलीलों के साथ आए, तो जो इल्म उनके अपने पास था वो उसी पर मगन होते रहे, और उनको उसी चीज़ ने आ घेरा जिसका वो मज़ाक़ उड़ाते थे।

84. फिर जब उन्होंने हमारे अज़ाब की शिद्दत को देखा तो कहने लगे, "हम ख़ुदा-ए-वाहिद पर ईमान लाए, और उसका इनकार किया जिसे हम उसका शरीक ठहराते थे"।

85. मगर उनका ईमान उनके लिए कुछ भी नाफ़े नहीं हो सकता था,

फ़स्बिर् इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्कुन् फ़-इम्मा नुरि-यन्न-क बअ्ज़ल्लज़ी नअिदुहुम् औ न-तवफ़्फ़यन्न-क फ़-इलैना युर्जअून (77)

व ल-क़द् अर्सल्ना रुसुलम्-मिन् क़ब्लि-क मिन्हुम् मन् क़सस्ना अ़लै-क व मिन्हुम् मल्लम् नक़्सुस् अ़लै-क, व मा का-न लि-रसूलिन् अंय्यअ्ति-य बिआ-यतिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि फ़-इज़ा जा-अ अम्रुल्लाहि क़ुज़ि-य बिल्-हक़्क़ि व ख़सि-र हुनालिकल्-मुब्तिलून (78)●

अल्लाहुल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्-अन्आ-म लि-तर्कबू मिन्हा व मिन्हा तअ्कुलून (79)

व लकुम् फ़ीहा मनाफ़िअु व लि-तब्लुग़ू अ़लैहा हा-जतन् फ़ी सुदूरिकुम् व अ़लैहा व अ़लल्-फ़ुल्कि तुह्मलून (80)

व युरीकुम् आयातिही फ़-अय्-य आयातिल्लाहि तुन्किरून (81)

अ-फ़ लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़-यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, कानू अक्स-र मिन्हुम् व अशद्-द क़ुव्वतंव्-व आसारन् फ़िल्अर्ज़ि फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् मा कानू यक्सिबून (82)

फ़-लम्मा जा-अत्हुम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़रिहू बिमा अ़िन्दहुम् मिनल्-अ़िल्मि व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (83)

फ़-लम्मा रऔ बअ्-सना क़ालू आमन्ना बिल्लाहि वह्-दहू व क-फ़र्ना बिमा कुन्ना बिही मुश्रिकीन (84)

फ़-लम् यकु यनफ़अुहुम् ईमानुहुम् लम्मा रऔ

فَاصْبِرْ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَاِمَّا نُرِيَنَّكَ
بَعْضَ الَّذِيْ نَعِدُهُمْ اَوْ نَتَوَفَّيَنَّكَ
فَاِلَيْنَا يُرْجَعُوْنَ ۝٧٧
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلًا مِّنْ قَبْلِكَ مِنْهُمْ
مَّنْ قَصَصْنَا عَلَيْكَ وَمِنْهُمْ مَّنْ لَّمْ
نَقْصُصْ عَلَيْكَ ۭ وَمَا كَانَ لِرَسُوْلٍ
اَنْ يَّاْتِيَ بِاٰيَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۚ فَاِذَا
جَاۗءَ اَمْرُ اللّٰهِ قُضِيَ بِالْحَقِّ وَخَسِرَ
ع هُنَالِكَ الْمُبْطِلُوْنَ ۝٧٨
اَللّٰهُ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَنْعَامَ لِتَرْكَبُوْا
مِنْهَا وَمِنْهَا تَاْكُلُوْنَ ۝٧٩
وَلَكُمْ فِيْهَا مَنَافِعُ وَلِتَبْلُغُوْا عَلَيْهَا
حَاجَةً فِيْ صُدُوْرِكُمْ وَعَلَيْهَا وَعَلَى
الْفُلْكِ تُحْمَلُوْنَ ۝٨٠
وَيُرِيْكُمْ اٰيٰتِهٖ ڰ فَاَيَّ اٰيٰتِ اللّٰهِ
تُنْكِرُوْنَ ۝٨١
اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا
كَيْفَ كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ۭ
كَانُوْٓا اَكْثَرَ مِنْهُمْ وَاَشَدَّ قُوَّةً وَّاٰثَارًا
فِي الْاَرْضِ فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ ۝٨٢
فَلَمَّا جَاۗءَتْهُمْ رُسُلُهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ فَرِحُوْا
بِمَا عِنْدَهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ وَحَاقَ بِهِمْ
مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٨٣
فَلَمَّا رَاَوْا بَاْسَنَا قَالُوْٓا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَحْدَهٗ
وَكَفَرْنَا بِمَا كُنَّا بِهٖ مُشْرِكِيْنَ ۝٨٤
فَلَمْ يَكُ يَنْفَعُهُمْ اِيْمَانُهُمْ لَمَّا رَاَوْا

जबकि उन्होंने हमारा अज़ाब देख लिया — यही अल्लाह की सुन्नत है, जो उसके बन्दों में पहले ज़ाहिर होती रही है; — और उस वक़्त काफ़िर ख़सारे में पड़कर रहे।

सूरह हा.मीम. अस-सजदा मक्की

(आयतें 54, रुकूआत 6)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. हा. मीम.।

2. यह (कलाम) उतारा हुआ है बड़े मेहरबान, निहायत रहम फ़रमानेवाले की तरफ़ से।

3. एक किताब जिसकी आयतें खोल-खोलकर बयान की गई हैं अरबी क़ुरआन की सूरत में उन लोगों के लिए जो जानना चाहें,

4. बशारत देनेवाला, ख़बरदार करनेवाला, मगर उनमें से अकसर ने एराज़ किया तो वो सुनते ही नहीं।

5. कहते हैं कि "जिसकी तरफ़ तुम हमें बुलाते हो उसके लिए तो हमारे दिल गिलाफ़ों (पर्दों) में हैं, और हमारे कानों में गिरानी है, और हमारे और तुम्हारे दरमियान एक हिजाब (ओट) हायल है; बस तुम अपना काम करो; हम तो अपना काम कर रहे हैं"।

6-7. कह दो: "मैं तो तुम्ही जैसा एक इनसान हूं। मेरी तरफ़ वही की जाती है कि तुम्हारा माबूद बस अकेला माबूद है; लिहाज़ा तुम सीधे उसी का रुख़ इख़्तियार करो; और उसी से बख़्शिश मांगो; — शिर्क करनेवालों के लिए तो बड़ी तबाही है, जो ज़कात नहीं देते, और आख़िरत के वही मुनकिर हैं।

8. रहे वो लोग जो ईमान लाए, और उन्होंने नेक आमाल इख़्तियार किए उनके लिए ऐसा अजर है जिसका सिलसिला टूटने का नहीं"।

9. कहो: "क्या तुम उसका इनकार करते हो जिसने ज़मीन को दो दिन (दो दौर) में पैदा किया, और तुम उसके हमसर ठहराते हो? वह तो सारे जहान का रब है।

10. और उसने ज़मीन में उसके ऊपर से पहाड़ जमाए, और उसमें बरकत रखी और उसके अन्दर उसकी ख़ुराकें सब ज़रूरत मन्दों के लिए यकसां तौरपर ठीक अंदाज़ से रखें। यह सब चार दिन में हुआ।

11. फिर उसने आसमान की तरफ़

बअ्-सना, सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख़-लत् फ़ी अ़िबादिही व ख़सि-र हुनालिकल्-काफ़िरून (85) ●

41 सूरतु हा–मीम् अस्सज्दति (मक्की) इस सूरः में अरबी के 3406 अक्षर, 809 शब्द, 54 आयतें और 6 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हा-मीम् (1)

तन्ज़ीलुम्-मिनर्रह्मानिर्रहीम (2)

किताबुन् फ़ुस्सिलत् आयातुहू क़ुरआनन् अ-रबिय्यल् लिक़ौमिंय्-यअ्लमून (3)

बशी-रंव्-व नज़ीरन् फ़-अअ्-र-ज़ अक्सरुहुम् फ़हुम् ला यस्मअून (4)

व क़ालू क़ुलूबुना फ़ी अकिन्नतिम्-मिम्मा तद्अूना इलैहि व फ़ी आज़ानिना वक़्रुंव्-व मिम्बैनिना व बैनि-क हिजाबुन् फ़अ्मल् इन्नना आ़मिलून ● (5)

क़ुल् इन्नमा अ-न ब-शरुम्-मिस्लुकुम् यूहा इलय्-य अन्नमा इलाहुकुम् इलाहुंव्-वाहिदुन् फ़स्तक़ीमू इलैहि वस्तग़्फ़िरूहु, व वैलुल्-लिल्-मुश्रिकीन (6)

अल्लज़ी-न ला युअ्तूनज़्ज़का-त व हुम् बिल्-आख़िरति हुम् काफ़िरून (7)

इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (8) ●

क़ुल् अ-इन्नकुम् ल-तक्फ़ुरू-न बिल्लज़ी ख़-लक़ल्-अर्-ज़ फ़ी यौमैनि व तज्अ़लू-न लहू अन्दादन्, ज़ालि-क रब्बुल्-आ़लमीन (9)

व ज-अ़-ल फ़ीहा रवासि-य मिन् फ़ौक़िहा व बार-क फ़ीहा व क़द्-द-र फ़ीहा अक़्वा-तहा फ़ी अर्-ब-अ़ति अय्यामिन्, सवा-अल् लिस्सा-इलीन (10)

सुम्मस्तवा इलस्समा-इ व हि-य दुख़ानुन्

بَأْسَنَا ۭ سُنَّتَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ فِيْ
عِبَادِهٖ ۚ وَخَسِرَ هُنَالِكَ الْكٰفِرُوْنَ ۸۵

سُوْرَةُ حٰمٓ السَّجْدَةِ آيَاتُهَا ۵۴ رُكُوْعَاتُهَا ۶

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمٓ ۱ تَنْزِيْلٌ مِّنَ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۲
كِتٰبٌ فُصِّلَتْ اٰيٰتُهٗ قُرْاٰنًا عَرَبِيًّا لِّقَوْمٍ
يَّعْلَمُوْنَ ۳
بَشِيْرًا وَّنَذِيْرًا ۚ فَاَعْرَضَ اَكْثَرُهُمْ
فَهُمْ لَا يَسْمَعُوْنَ ۴
وَقَالُوْا قُلُوْبُنَا فِيْٓ اَكِنَّةٍ مِّمَّا تَدْعُوْنَآ
اِلَيْهِ وَفِيْٓ اٰذَانِنَا وَقْرٌ وَّمِنْۢ بَيْنِنَا
وَبَيْنِكَ حِجَابٌ فَاعْمَلْ اِنَّنَا عٰمِلُوْنَ ۵
قُلْ اِنَّمَآ اَنَا بَشَرٌ مِّثْلُكُمْ يُوْحٰٓى اِلَيَّ اَنَّمَآ
اِلٰهُكُمْ اِلٰهٌ وَّاحِدٌ فَاسْتَقِيْمُوْٓا اِلَيْهِ
وَاسْتَغْفِرُوْهُ ۭ وَوَيْلٌ لِّلْمُشْرِكِيْنَ ۶
الَّذِيْنَ لَا يُؤْتُوْنَ الزَّكٰوةَ وَهُمْ
بِالْاٰخِرَةِ هُمْ كٰفِرُوْنَ ۷
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۸
قُلْ اَىِٕنَّكُمْ لَتَكْفُرُوْنَ بِالَّذِيْ خَلَقَ
الْاَرْضَ فِيْ يَوْمَيْنِ وَتَجْعَلُوْنَ لَهٗٓ
اَنْدَادًا ۭ ذٰلِكَ رَبُّ الْعٰلَمِيْنَ ۹
وَجَعَلَ فِيْهَا رَوَاسِيَ مِنْ فَوْقِهَا
وَبٰرَكَ فِيْهَا وَقَدَّرَ فِيْهَآ اَقْوَاتَهَا فِيْٓ
اَرْبَعَةِ اَيَّامٍ ۭ سَوَاۗءً لِّلسَّاۗىِٕلِيْنَ ۱۰
ثُمَّ اسْتَوٰٓى اِلَى السَّمَاۗءِ وَهِىَ دُخَانٌ

रुख़ किया जबकि वह महज़ धुआं था — और उसने उससे और ज़मीन से कहा, 'आओ ख़ुशी से या मजबूर होकर!' दोनों ने कहा, 'हम आए फ़रमांबरदारों की तरह!'

12. फिर उनके सात आसमान होने का फ़ैसला सादिर फ़रमाया दो दिनों में, और हर आसमान में उससे मुतअल्लिक़ हुक्म वही कर दिया। और आसमान-ए-दुनिया को हमने चिराग़ों (तारों) से सजाया। (रात में राह दिखाने वग़ैरा के लिए) और हिफ़ाज़त करने की ग़र्ज़ से, यह निहायत ज़बरदस्त और जानने वाले की मंसूबाबन्दी है"।

13. अब अगर वो एराज़ करें तो कह दो, "मैं तो तुम्हें उस तरह के कड़के से डराता हूं जिस तरह का कड़का आद और समूद पर नाज़िल हुआ"।

14. जब रसूल उनके पास उनके आगे और उनके पीछे से आए कि "अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो," तो उन्होंने कहा, "अगर हमारा रब चाहता तो फ़रिश्तों को उतार देता, लिहाज़ा जिस चीज़ के साथ तुम्हें भेजा गया है हम उसे नहीं मानते"।

15. रहे आद, तो उन्होंने बग़ैर किसी हक़ के ज़मीन में तकब्बुर किया, और कहा, "ताक़त में हमसे कौन बढ़कर है?" क्या उन्होंने देखा नहीं कि अल्लाह, जिसने उन्हें पैदा किया, वह ताक़त में उनसे कहीं बढ़कर है? वो तो हमारी आयतों का इनकार ही करते रहे।

16. आख़िरकार हमने उनपर चन्द मनहूस दिनों में एक तेज़ व तुन्द सर्द हवा चलाई, ताकि हम उन्हें दुनिया की ज़िन्दगी में ज़िल्लत और रुसवाई के अज़ाब का मज़ा चखा दें; और आख़िरत का अज़ाब तो इससे कहीं बढ़कर रुसवाकुन है, और उनको कोई मदद भी हासिल न होगी।

17. और रहे समूद, तो हमने उनके सामने राह-ए-रास्त पेश की, मगर हिदायत के मुक़ाबले में उन्होंने अंधा रहना ही पसन्द किया, आख़िर अज़ाब-ए-ज़िल्लत के कड़के ने उसकी पादाश में उन्हें आ लिया जो कमाई वो करते रहे थे।

18. और हमने उन लोगों को बचा लिया जो ईमान लाए थे और डर रखते थे।

19. और (ख़याल करो) जिस रोज़ अल्लाह के दुश्मन आग की तरफ़ जमा किए जाएंगे, पस उनकी दर्जाबन्दी की जाएगी,

फ़क़ा-ल लहा व लिल्-अर्ज़िअ्तिया तौअन् औ कर्हन्, क़ा-लता अतैना ता-इअ़ीन (11)

फ़-क़ज़ाहुन्-न सब्-अ़ समावातिन् फ़ी यौमैनि व औहा फ़ी कुल्लि समा-इन् अम्-रहा, व ज़य्यन्नस्समा-अद्दुन्या बि-मसाबी-ह व हिफ़्ज़न् ज़ालि-क तक़्दीरुल्-अ़ज़ीज़िल्-अ़लीम (12)

फ़-इन् अअ्-रज़ू फ़क़ुल् अन्ज़र्तुकुम् साअि़-क़तम् मिस्-ल साअि़-क़ति आ़दिंव्-व समूद (13)

इज़् जा-अत्हुमुर्-रसुलु मिम्-बैनि ऐदीहिम् व मिन् ख़ल्फ़िहिम् अल्ला तअ्बुदू इल्लल्ला-ह, क़ालू लौ शा-अ रब्बुना ल-अन्ज़-ल मलाइ-कतन् फ़-इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (14)

फ़-अम्मा आ़दुन् फ़स्तक्बरू फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व क़ालू मन् अशद्दु मिन्ना क़ुव्वतन्, अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-ल-क़हुम् हु-व अशद्दु मिन्हुम् क़ुव्वतन्, व कानू बिआयातिना यज्हदून (15)

फ़-अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहन् सर्-सरन् फ़ी अय्यामिन्-नहिसातिल्-लिनुज़ी-क़हुम् अ़ज़ाबल्-ख़िज़्यि फ़िल्हयातिद्दुन्या, व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अख़्ज़ा व हुम् ला युन्सरून (16)

व अम्मा समूदु फ़-हदैनाहुम् फ़स्तहब्बुल्-अ़मा अ़लल्-हुदा फ़-अ-ख़ज़त्हुम् साअि़-क़तुल्-अ़ज़ाबिल्-हूनि बिमा कानू यक्सिबून (17)

व नज्जैनल्लज़ी-न आमनू व कानू यत्तक़ून (18) ●

व यौ-म युह्शरु अअ्दाउल्लाहि इलन्नारि फ़हुम् यू-ज़अ़ून (19)

فَقَالَ لَهَا وَلِلْاَرْضِ ائْتِيَا طَوْعًا اَوْ كَرْهًا ؕ قَالَتَاۤ اَتَيْنَا طَآئِعِيْنَ ۝

فَقَضٰىهُنَّ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ فِيْ يَوْمَيْنِ وَاَوْحٰى فِيْ كُلِّ سَمَآءٍ اَمْرَهَا ؕ وَزَيَّنَّا السَّمَآءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ ۖ وَحِفْظًا ؕ ذٰلِكَ تَقْدِيْرُ الْعَزِيْزِ الْعَلِيْمِ ۝

فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَقُلْ اَنْذَرْتُكُمْ صٰعِقَةً مِّثْلَ صٰعِقَةِ عَادٍ وَّثَمُوْدَ ۝

اِذْ جَآءَتْهُمُ الرُّسُلُ مِنْۢ بَيْنِ اَيْدِيْهِمْ وَمِنْ خَلْفِهِمْ اَلَّا تَعْبُدُوْۤا اِلَّا اللّٰهَ ؕ قَالُوْا لَوْ شَآءَ رَبُّنَا لَاَنْزَلَ مَلٰٓئِكَةً فَاِنَّا بِمَاۤ اُرْسِلْتُمْ بِهٖ كٰفِرُوْنَ ۝

فَاَمَّا عَادٌ فَاسْتَكْبَرُوْا فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَقَالُوْا مَنْ اَشَدُّ مِنَّا قُوَّةً ؕ اَوَلَمْ يَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِيْ خَلَقَهُمْ هُوَ اَشَدُّ مِنْهُمْ قُوَّةً ؕ وَكَانُوْا بِاٰيٰتِنَا يَجْحَدُوْنَ ۝

فَاَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِيْۤ اَيَّامٍ نَّحِسَاتٍ لِّنُذِيْقَهُمْ عَذَابَ الْخِزْيِ فِي الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ؕ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ اَخْزٰى وَهُمْ لَا يُنْصَرُوْنَ ۝

وَاَمَّا ثَمُوْدُ فَهَدَيْنٰهُمْ فَاسْتَحَبُّوا الْعَمٰى عَلَى الْهُدٰى فَاَخَذَتْهُمْ صٰعِقَةُ الْعَذَابِ الْهُوْنِ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ ۝

وَنَجَّيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَكَانُوْا يَتَّقُوْنَ ۝

وَيَوْمَ يُحْشَرُ اَعْدَآءُ اللّٰهِ اِلَى النَّارِ فَهُمْ يُوْزَعُوْنَ ۝

20. यहां तक कि जब वो उसके पास आ जाएंगे तो उनके कान, उनकी आंखें और उनकी खालें उनके ख़िलाफ़ उन बातों की गवाही देंगी जो कुछ वो करते रहे होंगे।

21. वो अपनी खालों से कहेंगे कि, "तुमने हमारे ख़िलाफ़ गवाही क्यों दी?" वो कहेंगी, "हमें उसी ख़ुदा ने गोयाई (बोलने की ताक़त) बख़्शी जिसने हर चीज़ को गोयाई अता की"। उसी ने तुम्हें पहली बार पैदा किया, और उसी की तरफ़ तुम्हें लौटना है।

22. तुम इस अन्देशे से पर्दादारी करते न थे कि तुम्हारे कान तुम्हारे ख़िलाफ़ गवाही देंगे और न इसलिए कि तुम्हारी आंखें गवाही देंगी, और न इस वजह से कि तुम्हारी खालें शहादत देंगी; बल्कि तुमने तो यह समझ रखा था कि अल्लाह तो तुम्हारे बहुत से कामों को जानता ही नहीं।

23. और तुम्हारे उस गुमान ने तुम्हें बर्बाद किया जो तुमने अपने रब के साथ किया, पस तुम ख़सारे में पड़कर रहे।

24. अब अगर वो सब्र करें, तब भी उनका ठिकाना आग ही है; और अगर वो किसी तरह इताब दूर करना चाहें तब भी वो ऐसे नहीं कि राज़ी कर सकें।

25. हमने उनके लिए कुछ साथी मुक़र्रर कर दिए थे, फिर उन्होंने उनके आगे और उनके पीछे जो कुछ था उसे ख़ुशनुमा करके उन्हें दिखाया। आख़िरकार उनपर भी जिन्नों और इंसानों के उन गिरोहों के साथ फ़ैसला चसपां होकर रहा जो उनसे पहले गुज़र चुके थे; यक़ीनन वो ख़सारे में रह जाने वाले थे।

26. जिन लोगों ने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की उन्होंने कहा कि "इस क़ुरआन को सुनो मत, और उसके बीच में शोर व गुल मचाओ; ताकि तुम ग़ालिब आ जाओ"।

27. पस हम लाज़िमन उन लोगों को जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया, सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे, और ज़रूर हम उन्हें उसका बदला देंगे जो बदतरीन आमाल वो करते रहे हैं।

28. यह है अल्लाह के दुश्मनों का बदला आग, उसी में उनका हमेशा का घर है, उसके बदले में जो वो हमारी आयतों का इनकार करते रहे।

29. और जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वो कहेंगे, "ऐ हमारे रब, हमें दिखा दे उन जिन्नों और इनसानों को जिन्होंने हमको गुमराह किया कि हम उन्हें अपने पांव तले डाल दें ताकि वो सबसे नीचे जा पड़ें!"

हत्ता इज़ा मा जाऊहा शहि-दे अलैहिम् सम्अुहुम् व अब्सारुहुम् व जुलूदुहुम् बिमा कानू यअ्मलून (20)

व क़ालू लिजुलूदिहिम् लि-म शहित्तुम् अलैना, क़ालू अन्त-क़नल्लाहुल्लज़ी अन्त-क़ कुल-ल शैइंव्-व हु-व ख़-ल-क़कुम् अव्व-ल मर्रतिंव्-व इलैहि तुर्जअून (21)

व मा कुन्तुम् तस्ततिरू-न अंय्यश्-ह-द अलैकुम् सम्अुकुम् व ला अब्सारुकुम् व ला जुलूदुकुम् व लाकिन् ज़नन्तुम् अन्नल्ला-ह ला यअ्लमु कसीरम्-मिम्मा तअ्मलून (22)

व ज़ालिकुम् ज़न्नुकुमुल्लज़ी ज़नन्तुम् बिरब्बिकुम् अर्दाकुम् फ़-अस्बह्तुम् मिनल्-ख़ासिरीन (23)

फ़-इंय्यस्बिरू फ़न्नारु मस्वल्-लहुम्, व इंय्यस्तअ्तिबू फ़मा हुम् मिनल्-मुअ्तबीन (24)

व क़य्यज़ना लहुम् क़ु-रना-अ फ़-ज़य्यनू लहुम् मा बै-न ऐदीहिम् व मा ख़ल्फ़हुम् व हक़्-क़ अलैहिमुल्-क़ौलु फ़ी-उ-ममिन् क़द् ख़लत् मिन् क़ब्लिहिम् मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि इन्नहुम् कानू ख़ासिरीन (25) ●

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू ला तस्मअू लिहाज़ल्-क़ुर्आनि वल्ग़ौ फ़ीहि लअ़ल्लकुम् तग़्लिबून (26)

फ़-लनुज़ीक़न्नल्लज़ी-न क-फ़रू अज़ाबन् शदीदंव्-व ल-नज्ज़ियन्नहुम् अस्व-अल्लज़ी कानू यअ्मलून (27)

ज़ालि-क जज़ा-उ अअ्दा-इल्लाहिन्नारु लहुम् फ़ीहा दारुल्-ख़ुल्दि जज़ा-अम् बिमा कानू बिआयातिना यज्हदून (28)

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू रब्बना अरिनल्लज़ैनि अज़ल्लाना मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि नज्अल्हुमा तह्-त अक़्दामिना लि-यकूना मिनल्-अस्फ़लीन (29)

حَتّٰىٓ إِذَا مَا جَآءُوهَا شَهِدَ عَلَيْهِمْ
سَمْعُهُمْ وَأَبْصَارُهُمْ وَجُلُودُهُمْ
بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ٢٠
وَقَالُوا لِجُلُودِهِمْ لِمَ شَهِدْتُّمْ عَلَيْنَا ۖ
قَالُوٓا أَنْطَقَنَا اللّٰهُ الَّذِىٓ أَنْطَقَ كُلَّ شَىْءٍ
وَّهُوَ خَلَقَكُمْ أَوَّلَ مَرَّةٍ وَّإِلَيْهِ تُرْجَعُونَ ٢١
وَمَا كُنْتُمْ تَسْتَتِرُونَ أَنْ يَّشْهَدَ عَلَيْكُمْ
سَمْعُكُمْ وَلَآ أَبْصَارُكُمْ وَلَا جُلُودُكُمْ وَلٰكِنْ
ظَنَنْتُمْ أَنَّ اللّٰهَ لَا يَعْلَمُ كَثِيرًا مِّمَّا تَعْمَلُونَ ٢٢
وَذٰلِكُمْ ظَنُّكُمُ الَّذِى ظَنَنْتُمْ بِرَبِّكُمْ
أَرْدٰىكُمْ فَأَصْبَحْتُمْ مِّنَ الْخٰسِرِينَ ٢٣
فَإِنْ يَّصْبِرُوا فَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۖ وَإِنْ
يَّسْتَعْتِبُوا فَمَا هُمْ مِّنَ الْمُعْتَبِينَ ٢٤
وَقَيَّضْنَا لَهُمْ قُرَنَآءَ فَزَيَّنُوا لَهُمْ مَّا بَيْنَ
أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَحَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ
فِىٓ أُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ الْجِنِّ
ع وَالْإِنْسِ ۚ إِنَّهُمْ كَانُوا خٰسِرِينَ ٢٥
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا لَا تَسْمَعُوا لِهٰذَا
الْقُرْاٰنِ وَالْغَوْا فِيهِ لَعَلَّكُمْ تَغْلِبُونَ ٢٦
فَلَنُذِيقَنَّ الَّذِينَ كَفَرُوا عَذَابًا شَدِيدًا ۙ
وَّلَنَجْزِيَنَّهُمْ أَسْوَأَ الَّذِى كَانُوا يَعْمَلُونَ ٢٧
ذٰلِكَ جَزَآءُ أَعْدَآءِ اللّٰهِ النَّارُ ۚ لَهُمْ فِيهَا
دَارُ الْخُلْدِ ۖ جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوا بِاٰيٰتِنَا
يَجْحَدُونَ ٢٨
وَقَالَ الَّذِينَ كَفَرُوا رَبَّنَآ أَرِنَا الَّذَيْنِ
أَضَلّٰنَا مِنَ الْجِنِّ وَالْإِنْسِ نَجْعَلْهُمَا تَحْتَ
أَقْدَامِنَا لِيَكُونَا مِنَ الْأَسْفَلِينَ ٢٩

30. जिन लोगों ने कहा कि "हमारा रब अल्लाह है"। फिर उस पर साबित क़दम रहे, उनपर फ़रिश्ते उतरते हैं कि "डरो नहीं, और न ग़म खाओ; बल्कि उस जन्नत की ख़ुशख़बरी लो जिसका तुमसे वादा किया गया है।

31. हम दुनिया की ज़िन्दगी में भी तुम्हारे साथी हैं और आख़िरत में भी; और वहां तुम्हारे लिए वह सब कुछ होगा जिसकी ख़्वाहिश तुम्हारे जी को होगी, और वहां तुम्हारे लिए वह सब कुछ होगा जो तुम तलब करोगे,

32. ग़फ़ूर व रहीम हस्ती की तरफ़ से ज़ियाफ़त के तौरपर।"

33. और उस शख़्स से बात में अच्छा कौन हो सकता है जो अल्लाह की तरफ़ बुलाए और नेक अमल करे और कहे कि "बेशक मैं मुस्लिम हूं?"

34. और भलाई और बुराई बराबर नहीं होती, तुम (बुरी सीरत की बुराई को) अच्छी से अच्छी सीरत के ज़रिए से दूर करो। फिर क्या देखोगे कि वही शख़्स तुम्हारे और जिसके दरमियान अदावत पड़ी हुई थी जैसे वह कोई जिगरी दोस्त है।

35. मगर यह चीज़ सिर्फ़ उन लोगों को हासिल होती है जो सब्र से काम लेते हैं, और यह चीज सिर्फ़ उसे हासिल होती है जो बड़ा नसीबे वाला होता है।

36. और अगर शैतान की तरफ़ से कोई उकसाहट तुम्हें चुभे, तो अल्लाह की पनाह मांग लो; यक़ीनन वह सब कुछ सुनता, जानता है।

37. रात और दिन और सूरज और चांद उसकी निशानियों में से हैं। तुम न तो सूरज को सजदा करो और न चांद को, बल्कि अल्लाह को सजदा करो जिसने उन्हें पैदा किया, अगर तुम उसी की बन्दगी करने वाले हो।

38. लेकिन अगर वो तकब्बुर करें, तो जो फ़रिश्ते तुम्हारे रब के पास हैं वो तो उसकी तसबीह रात और दिन करते ही रहते हैं, और वो उकताते नहीं।

39. और यह चीज़ भी उसकी निशानियों में से है कि तुम देखते हो कि ज़मीन दबी पड़ी है; फिर जूं ही हमने उस पर पानी बरसाया कि वह फबक उठीं, और फूल गई। यक़ीनन जिसने उसे ज़िन्दा किया वही मुर्दो

इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्-तक़ामू त' तनज़्ज़लु अ़लैहिमुल्-मलाइ-कतु अल्ला तख़ाफ़ू व ला तह्ज़नू व अब्शिरू बिल्-जन्नतिल्लती कुन्तुम् तू-अ़दून (30)

नह्नु औलिया-उकुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या व फ़िल्-आख़िरति व लकुम् फ़ीहा मा तश्तही अन्फ़ुसुकुम् व लकुम् फ़ीहा मा तद्-दअ़ून (31)

नुज़ुलम् मिन् ग़फ़ूरिर्रहीम (32) ●

व मन् अह्सनु क़ौलम् मिम्-मन् दआ़ इलल्लाहि व अ़मि-ल सालिहंव्-व क़ा-ल इन्ननी मिनल्-मुस्लिमीन (33)

व ला तस्तविल्-ह-स-नतु व लस्सय्यि-अतु इद्फ़अ़् बिल्लती हि-य अह्सनु फ़-इज़ल्-लज़ी बैन-क व बैनहू अ़दा-वतुन् क-अन्नहू वलिय्युन् हमीम (34)

व मा युलक़्क़ाहा इल्लल्लज़ी-न स-बरू व मा युलक़्क़ाहा इल्ला ज़ू हज़्ज़िन् अ़ज़ीम (35)

व इम्मा यन्-ज़ग़न्न-क मिनश्-शैतानि नज़्ग़ुन् फ़स्तअ़िज़् बिल्लाहि, इन्नहू हुवस्समीअ़ुल्-अ़लीम (36)

व मिन् आयातिहिल्लैलु वन्नहारु वश्शम्सु वल्क़-मरु, ला तस्जुदू लिश्शम्सि व ला लिल्क़-मरि वस्जुदू लिल्लाहिल्लज़ी ख़-ल-क़हुन्-न इन् कुन्तुम् इय्याहु तअ़्बुदून (37)

फ़-इनिस्तक्बरू फ़ल्लज़ी-न अ़िन्-द रब्बि-क युसब्बिहू-न लहू बिल्लैलि वन्नहारि व हुम् ला यस्-अमून (38)

व मिन् आयातिही अन्न-क तरल्-अर्-ज़ ख़ाशि-अतन् फ़-इज़ा अन्ज़ल्ना अ़लैहल् मा-अह्तज़्ज़त् व र-बत्, इन्नल्लज़ी अह्याहा ल-मुह्यिल्-मौता, इन्नहू

اِنَّ الَّذِیْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا
تَتَنَزَّلُ عَلَیْهِمُ الْمَلٰٓئِكَةُ اَلَّا تَخَافُوْا وَلَا تَحْزَنُوْا
وَاَبْشِرُوْا بِالْجَنَّةِ الَّتِیْ كُنْتُمْ تُوْعَدُوْنَ ۝٣٠
نَحْنُ اَوْلِیٰٓؤُكُمْ فِی الْحَیٰوةِ الدُّنْیَا وَفِی
الْاٰخِرَةِ ۚ وَلَكُمْ فِیْهَا مَا تَشْتَهِیْۤ
اَنْفُسُكُمْ وَلَكُمْ فِیْهَا مَا تَدَّعُوْنَ ۝٣١ؕ
ع نُزُلًا مِّنْ غَفُوْرٍ رَّحِیْمٍ ۝٣٢
وَمَنْ اَحْسَنُ قَوْلًا مِّمَّنْ دَعَاۤ اِلَى
اللّٰهِ وَعَمِلَ صَالِحًا وَّقَالَ اِنَّنِیْ مِنَ
الْمُسْلِمِیْنَ ۝٣٣
وَلَا تَسْتَوِی الْحَسَنَةُ وَلَا السَّیِّئَةُ ؕ
اِدْفَعْ بِالَّتِیْ هِیَ اَحْسَنُ فَاِذَا الَّذِیْ
بَیْنَكَ وَبَیْنَهٗ عَدَاوَةٌ كَاَنَّهٗ وَلِیٌّ حَمِیْمٌ ۝٣٤
وَمَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا الَّذِیْنَ صَبَرُوْا ۚ
وَمَا یُلَقّٰىهَاۤ اِلَّا ذُوْ حَظٍّ عَظِیْمٍ ۝٣٥
وَاِمَّا یَنْزَغَنَّكَ مِنَ الشَّیْطٰنِ نَزْغٌ
فَاسْتَعِذْ بِاللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِیْعُ الْعَلِیْمُ ۝٣٦
وَمِنْ اٰیٰتِهِ الَّیْلُ وَالنَّهَارُ وَالشَّمْسُ
وَالْقَمَرُ ؕ لَا تَسْجُدُوْا لِلشَّمْسِ وَلَا لِلْقَمَرِ
وَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ الَّذِیْ خَلَقَهُنَّ اِنْ كُنْتُمْ
اِیَّاهُ تَعْبُدُوْنَ ۝٣٧
فَاِنِ اسْتَكْبَرُوْا فَالَّذِیْنَ عِنْدَ رَبِّكَ
یُسَبِّحُوْنَ لَهٗ بِالَّیْلِ وَالنَّهَارِ وَهُمْ
السجدة لَا یَسْــَٔمُوْنَ ۝٣٨
وَمِنْ اٰیٰتِهٖۤ اَنَّكَ تَرَى الْاَرْضَ خَاشِعَةً
فَاِذَاۤ اَنْزَلْنَا عَلَیْهَا الْمَآءَ اهْتَزَّتْ وَرَبَتْ ؕ
اِنَّ الَّذِیْۤ اَحْیَاهَا لَمُحْیِ الْمَوْتٰى ؕ اِنَّهٗ

को ज़िन्दा करनेवाला है, बेशक उसे तो हर चीज़ पर कुदरत हासिल है।

40. जो लोग हमारी आयतों में कजरवी इख़्तियार करते हैं वो हमसे छुपे हुए नहीं हैं, तो क्या जो शख़्स आग में डाला जाए वह बेहतर है, या वह जो क़ियामत के रोज़ बेख़ौफ़ होकर आएगा? कर लो जो चाहो; तुम जो कुछ करते हो वह तो उसे देख ही रहा है।

41. जिन लोगों ने याददिहानी का इनकार कर दिया जबकि वह उनके पास आ गई हालांकि वह एक ज़बरदस्त किताब है (उनका अन्जाम बुरा होगा)।

42. बातिल उस तक न उसके आगे से आ सकता है न उसके पीछे से; यह नाज़िल किया हुआ है उसकी तरफ़ से जो निहायत हिक्मत वाला और ख़ुबियों वाला है।

43. तुमसे बस वही कहा जा रहा है जो उन रसूलों से कहा जा चुका है जो तुमसे पहले गुज़रे हैं। बेशक तुम्हारा रब बड़ी बख़्शिश वाला भी है और दर्दनाक सज़ा देनेवाला भी।

44. अगर हम उसे अजमी कुरआन बनाते, तो वो कहते कि "क्यों नहीं इसकी आयतें (हमारी ज़बान में) खोलकर बयान की गई? यह क्या? कलाम तो अजमी और शख़्स अरबी"। कहो: "वह उन लोगों के लिए जो ईमान लाए हिदायत और शिफ़ा है। मगर जो लोग ईमान नहीं ला रहे हैं उनके कानों में गिरानी है, और वह उनके हक़ में अंधापन है; वो ऐसे हैं जिनको किसी दूर के मकाम से पुकारा जा रहा हो।

45. हमने मूसा को किताब अता की थी; फिर उसमें भी इख़्तिलाफ़ किया गया, अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से पहले ही से एक बात तय न हो चुकी होती, तो उनके दरमियान फ़ैसला चुका दिया जाता; वो लोग तो उसकी तरफ़ से उलझन में डाल देने वाले शक में पड़े हुए हैं।

46. जिस किसी ने नेक अमल किया, तो अपने ही लिए, और जिसने बुराई की तो उसका वबाल भी उसी पर पड़ेगा। तुम्हारा रब तो अपने बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म नहीं करता।

अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (39)

इन्नल्लज़ी-न युल्हिदू-न फ़ी आयातिना ला यख़्फ़ौ-न अ़लैना, अ-फ़-मंय्युल्क़ा फ़िन्नारि ख़ैरुन् अम्-मंय्यअ्ती आमिनंय्यौमल्-क़ियामति, इअ्मलू मा शिअ्तुम् इन्नहू बिमा तअ्मलू-न बसीर (40)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिज़्ज़िक्रि लम्मा जा-अहुम् व इन्नहू ल-किताबुन् अ़ज़ीज़ (41)

ला यअ्तीहिल्-बातिलु मिम्बैनि यदैहि व ला मिन् ख़ल्फ़िही, तन्ज़ीलुम्-मिन् हकीमिन् हमीद (42)

मा युक़ालु ल-क इल्ला मा क़द् क़ी-ल लिर्रुसुलि मिन् क़ब्लि-क, इन्-न रब्ब-क लज़ू मग़्फ़ि-रतिंव्-व ज़ू अ़िक़ाबिन् अलीम (43)

व लौ जअ़ल्नाहु क़ुरआनन् अअ्-जमिय्यल्-लक़ालू लौ ला फ़ुस्सिलत् आयातुहू अ-अअ्-जमिय्युंव-व अ़-रबिय्युन्, क़ुल् हु-व लिल्लज़ी-न आमनू हुदंव्-व शिफ़ाउन्, वल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न फ़ी आज़ानिहिम् वक़्रुंव्-व हु-व अ़लैहिम् अ़-मन्, उलाइ-क युनादौ-न मिम्-मकानिम्-बअ़ीद (44) ●

व ल-क़द् आतैना मूसल्-किता-ब फ़ख़्तुलि-फ़ फ़ीहि, व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क लक़ुज़ि-य बैनहुम्, व इन्नहुम् लफ़ी शक्किम् मिन्हु मुरीब (45)

मन् अ़मि-ल सालिहन् फ़लि-नफ़्सिही व मन् असा-अ फ़-अ़लैहा, व मा रब्बु-क बिज़ल्लामिल्-लिल्-अ़बीद (46)

عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ﴿۳۹﴾
اِنَّ الَّذِیْنَ یُلْحِدُوْنَ فِیْۤ اٰیٰتِنَا
لَا یَخْفَوْنَ عَلَیْنَا ؕ اَفَمَنْ یُّلْقٰی فِی
النَّارِ خَیْرٌ اَمْ مَّنْ یَّاْتِیْۤ اٰمِنًا یَّوْمَ
الْقِیٰمَةِ ؕ اِعْمَلُوْا مَا شِئْتُمْ ۙ اِنَّهٗ
بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ﴿۴۰﴾
اِنَّ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا بِالذِّكْرِ لَمَّا جَآءَهُمْ ۚ
وَ اِنَّهٗ لَكِتٰبٌ عَزِیْزٌ ﴿۴۱﴾
لَّا یَاْتِیْهِ الْبَاطِلُ مِنْۢ بَیْنِ یَدَیْهِ
وَ لَا مِنْ خَلْفِهٖ ؕ تَنْزِیْلٌ مِّنْ حَكِیْمٍ
حَمِیْدٍ ﴿۴۲﴾
مَا یُقَالُ لَكَ اِلَّا مَا قَدْ قِیْلَ لِلرُّسُلِ
مِنْ قَبْلِكَ ؕ اِنَّ رَبَّكَ لَذُوْ مَغْفِرَةٍ
وَّ ذُوْ عِقَابٍ اَلِیْمٍ ﴿۴۳﴾
وَ لَوْ جَعَلْنٰهُ قُرْاٰنًا اَعْجَمِیًّا لَّقَالُوْا لَوْ لَا
فُصِّلَتْ اٰیٰتُهٗ ؕ ءَاَعْجَمِیٌّ وَّ عَرَبِیٌّ ؕ
قُلْ هُوَ لِلَّذِیْنَ اٰمَنُوْا هُدًی وَّ شِفَآءٌ ؕ
وَ الَّذِیْنَ لَا یُؤْمِنُوْنَ فِیْۤ اٰذَانِهِمْ وَقْرٌ
وَّ هُوَ عَلَیْهِمْ عَمًی ؕ اُولٰٓئِكَ یُنَادَوْنَ
مِنْ مَّكَانٍۭ بَعِیْدٍ ﴿۴۴﴾
وَ لَقَدْ اٰتَیْنَا مُوْسَی الْكِتٰبَ فَاخْتُلِفَ
فِیْهِ ؕ وَ لَوْ لَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ مِنْ رَّبِّكَ
لَقُضِیَ بَیْنَهُمْ ؕ وَ اِنَّهُمْ لَفِیْ شَكٍّ
مِّنْهُ مُرِیْبٍ ﴿۴۵﴾
مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهٖ وَ مَنْ اَسَآءَ
فَعَلَیْهَا ؕ وَ مَا رَبُّكَ بِظَلَّامٍ لِّلْعَبِیْدِ ﴿۴۶﴾

47. उस साअत (घड़ी) का इल्म खुदा ही की तरफ़ फेरा जाता है, जो फल भी अपने खोलों से निकलते हैं और जो मादा भी हामिला होती है और बच्चा जनती है, यह सब लाज़िमन उसके इल्म में होता है। जिस दिन वह उन्हें पुकारेगा कि "कहां हैं मेरे शरीक"? वो कहेंगे, "हम तेरे सामने एलान कर चुके हैं कि हम में कोई भी इसका गवाह नहीं"।

48. और जिन्हें वो पहले पुकारा करते थे वो उनसे गुम होकर रह गए होंगे, और वो समझ लेंगे कि उनके लिए कोई जाए फ़रार नहीं।

49. इनसान भलाई मांगने से नहीं उकताता; लेकिन अगर उसे कोई तकलीफ़ पहुंचती है, तो वह मायूस होकर आस छोड़ बैठता है।

50. और अगर उस तकलीफ़ के बाद जो उसे पहुंची हम उसे अपनी रहमत का ज़ायक़ा चखा दें तो वह यक़ीनन कहेगा, "यह तो मेरा हक़ है, मैं तो यह नहीं समझता कि वह क़ियामत की घड़ी वाक़े होगी, और अगर मैं अपने रब की तरफ़ लौटा भी, तो लाज़िमन मेरे लिए उसके पास अच्छा इनाम होगा"। फिर तो हम उन लोगों को जिन्होंने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की जो कुछ उन्होंने किया होगा लाज़िमन बता के रहेंगे और उन्हें हम लाज़िमन सख़्त अज़ाब का मज़ा चखाएंगे।

51. जब हम इनसान पर नवाज़िश करते हैं, तो वह एराज़ करता है और अपना पहलू फेर लेता है; लेकिन जब उसे तकलीफ़ छू जाती है, तो वह लम्बी-चौड़ी दुआएं करने लगता है।

52. कह दो कि "क्या तुमने ग़ौर भी किया? अगर यह अल्लाह की तरफ़ से हुआ और तुमने उसका इनकार किया, तो उससे बढ़कर भटका हुआ और कौन होगा जो मुख़ालफ़त में बहुत दूर चला जाए?"

53. जल्द ही हम उन्हें अपनी निशानियां अतराफ़ व आफ़ाक़ में दिखाएंगे और ख़ुद उनकी अपनी ज़ात में भी यहां तक कि उनपर वाज़ेह हो जाएगा कि वह (क़ुरआन) हक़ है, क्या तुम्हारा रब इस एतिबार से काफ़ी नहीं कि वह हर चीज़ का गवाह है?

54. आगाह रहो कि वो लोग अपने रब की मुलाक़ात के बारे में शक में पड़े हुए हैं, आगाह रहो कि वह यक़ीनन हर चीज़ का इहाता किए हुए है।

इलैहि युरद्दु अिल्मुस्सा-अति व मा तख़्रुजु मिन् स-मरातिम्-मिन् अक्मामिहा व मा तह्मिलु मिन् उन्सा व ला त-ज़अु इल्ला बिअिल्मिही, व यौ-म युनादीहिम् ऐ-न शु-रकाई क़ालू आज़न्ना-क मा मिन्ना मिन् शहीद (47)

व ज़ल्-ल अन्हुम् मा कानू यद्अू-न मिन् क़ब्लु व ज़न्नू मा लहुम् मिम्-महीस (48)

ला यस्-अमुल्-इन्सानु मिन् दुआ-इल्ख़ैरि व इम्मस्सहुश्-शर्रु फ़-यऊसुन् क़नूत (49)

व ल-इन् अज़क़्नाहु रह्म-तम् मिन्ना मिम्-बअ्दि ज़र्रा-अ मस्सत्हु ल-यक़ूलन्-न हाज़ा ली व मा अज़ुन्नुस्सा-अ-त क़ाइ-मतंव्-व ल-इर्-रुजिअ्तु इला रब्बी इन्-न ली अिन्दहू लल्हुस्ना फ़-लनुनब्बि-अन्नल्लज़ी-न क-फ़रू बिमा अमिलू व लनुज़ीक़न्नहुम् मिन् अज़ाबिन् ग़लीज़ (50)

व इज़ा अन्अम्ना अलल्-इन्सानि अअ्-र-ज़ व नआ बिजानिबिही व इज़ा मस्सहुश्शर्रु फ़ज़ू दुआइन् अरीज़ (51)

क़ुल् अ-रऐतुम् इन् का-न मिन् अिन्दिल्लाहि सुम्-म कफ़र्तुम् बिही मन् अज़ल्लु मिम्मन् हु-व फ़ी शिक़ाक़िम्-बअ़ीद (52)

सनुरीहिम् आयातिना फ़िल्-आफ़ाक़ि व फ़ी अन्फ़ुसिहिम् हत्ता य-तबय्य-न लहुम् अन्नहुल्-हक़्क़ु, अ-व लम् यक्फ़ि बिरब्बि-क अन्नहू अला कुल्लि शैइन् शहीद (53)

अला इन्नहुम् फ़ी मिर्-यतिम्-मिल्लिक़ा-इ रब्बिहिम्, अला इन्नहू बिकुल्लि शैइम्-मुहीत (54) ●

الجزء الخامس والعشرون (۲۵)

اِلَيْهِ يُرَدُّ عِلْمُ السَّاعَةِ ؕ وَمَا تَخْرُجُ
مِنْ ثَمَرٰتٍ مِّنْ اَكْمَامِهَا وَمَا تَحْمِلُ
مِنْ اُنْثٰى وَلَا تَضَعُ اِلَّا بِعِلْمِهٖ ؕ
وَيَوْمَ يُنَادِيْهِمْ اَيْنَ شُرَكَآءِيْ ۙ قَالُوْٓا
اٰذَنّٰكَ ۙ مَا مِنَّا مِنْ شَهِيْدٍ (۴۷)
وَضَلَّ عَنْهُمْ مَّا كَانُوْا يَدْعُوْنَ مِنْ
قَبْلُ وَظَنُّوْا مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ (۴۸)
لَا يَسْـَٔمُ الْاِنْسَانُ مِنْ دُعَآءِ الْخَيْرِ ؗ
وَاِنْ مَّسَّهُ الشَّرُّ فَيَـُٔوْسٌ قَنُوْطٌ (۴۹)
وَلَئِنْ اَذَقْنٰهُ رَحْمَةً مِّنَّا مِنْۢ بَعْدِ ضَرَّآءَ
مَسَّتْهُ لَيَقُوْلَنَّ هٰذَا لِيْ ۙ وَمَآ اَظُنُّ
السَّاعَةَ قَآئِمَةً ۙ وَّلَئِنْ رُّجِعْتُ اِلٰى رَبِّيْٓ
اِنَّ لِيْ عِنْدَهٗ لَلْحُسْنٰى ۚ فَلَنُنَبِّئَنَّ الَّذِيْنَ
كَفَرُوْا بِمَا عَمِلُوْا ۫ وَلَنُذِيْقَنَّهُمْ مِّنْ
عَذَابٍ غَلِيْظٍ (۵۰)
وَاِذَآ اَنْعَمْنَا عَلَى الْاِنْسَانِ اَعْرَضَ
وَنَاٰ بِجَانِبِهٖ ۚ وَاِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ فَذُوْ
دُعَآءٍ عَرِيْضٍ (۵۱)
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ
ثُمَّ كَفَرْتُمْ بِهٖ مَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ هُوَ
فِيْ شِقَاقٍۭ بَعِيْدٍ (۵۲)
سَنُرِيْهِمْ اٰيٰتِنَا فِي الْاٰفَاقِ وَفِيْٓ
اَنْفُسِهِمْ حَتّٰى يَتَبَيَّنَ لَهُمْ اَنَّهُ الْحَقُّ ؕ
اَوَلَمْ يَكْفِ بِرَبِّكَ اَنَّهٗ عَلٰى كُلِّ
شَيْءٍ شَهِيْدٌ (۵۳)
اَلَآ اِنَّهُمْ فِيْ مِرْيَةٍ مِّنْ لِّقَآءِ رَبِّهِمْ ؕ
ع اَلَآ اِنَّهٗ بِكُلِّ شَيْءٍ مُّحِيْطٌ (۵۴)

सूरह अश्-शूरा मक्की

(आयतें 53, रुकूआत 5)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. हा. मीम.।

2. ऐन. सीन. क़ाफ़.।

3. इसी तरह अल्लाह ग़ालिब, हिकमत वाला तुम्हारी तरफ़, और उन लोगों की तरफ़ जो तुमसे पहले गुज़रे हैं, वही करता रहा है।

4. जो कुछ आसमानों और जो कुछ ज़मीन में है उसी का है; और वह बरतर, अज़मतवाला है।

5. क़रीब है कि आसमान अपने ऊपर से फट पड़ें, हाल यह है कि फ़रिश्ते अपने रब का गुण गा रहे हैं, और उन लोगों के लिए जो ज़मीन में हैं बख़्शिश की दुआ करते रहते हैं। सुन लो कि यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

6. और जिन लोगों ने उससे हटकर अपने कुछ हिमायती बना रखे हैं, अल्लाह उनपर निगरानी रखे हुए है; तुम उनके कोई हवालादार नहीं।

7. और इसी तरह हमने तुम्हारी तरफ़ एक अरबी क़ुरआन वही किया है, ताकि तुम बस्तियों के मर्कज़ (मक्का) को और जो लोग उसके गिर्द व पेश हैं उनको ख़बरदार कर दो; और ख़बरदार कर दो जमा होने के दिन से, जिसमें कोई शक नहीं। एक गिरोह जन्नत में होगा, और एक गिरोह दहकती आग में।

8. अगर अल्लाह चाहता, तो उन्हें एक ही उम्मत बना देता; मगर वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल करता है, रहे ज़ालिम तो उनका न तो कोई दोस्त है, और न मददगार।

9. क्या उन्होंने उससे हटकर दूसरे सरपरस्त बना रखे हैं? सरपरस्त तो अल्लाह ही है; वही मुर्दों को ज़िन्दा करता है, और उसे हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

10. (रसूल ने कहा) "जिस चीज़ में तुम इख़्तिलाफ़ करते हो, उसका फ़ैसला तो अल्लाह के हवाले है। वही अल्लाह मेरा रब है; उसी पर मैंने भरोसा किया है, और उसी की तरफ़

42 सूरतुश्-शूरा

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 3585 अक्षर, 869 शब्द, 53 आयतें और 5 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हा-मीम् (1) *अ़ैन्-सीन्-क़ाफ़्* (2)

कज़ालि-क यूही इलै-क व इलल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिकल्लाहुल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (3)

लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, व हुवल् अ़लिय्युल्-अ़ज़ीम (4)

तकादुस्-समावातु य-तफ़त्तर्-न मिन् फ़ौक़िहिन्-न वल्मलाइ-कतु युसब्बिहू-न बिहम्दि-रब्बिहिम् व यस्तग़्फ़िरू-न लिमन् फ़िल्-अर्ज़ि, अला इन्नल्ला-ह हुवल् ग़फ़ूरुर्-रहीम (5)

वल्लज़ीनत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अल्लाहु हफ़ीज़ुन् अ़लैहिम् व मा अन्-त अ़लैहिम् बि-वकील (6)

व कज़ालि-क औहैना इलै-क क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यल्-लितुन्ज़ि-र उम्मल्-क़ुरा व मन् हौ-लहा व तुन्ज़ि-र यौमल्-जम्अ़ि ला रै-ब फ़ीहि, फ़रीक़ुन् फ़िल्-जन्नति व फ़रीक़ुन् फ़िस्सअ़ीर (7)

व लौ शा-अल्लाहु ल-ज-अ़-लहुम् उम्म-तंव्-वाहि-दतंव्-व लाकिंय्युद्ख़िलु मंय्यशा-उ फ़ी रह्मतिही, वज़्ज़ालिमू-न मा लहुम् मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (8)

अमित्त-ख़ज़ू मिन् दूनिही औलिया-अ फ़ल्लाहु हुवल्-वलिय्यु व हु-व युह्यिल्-मौता व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (9) ●

व मख़्त-लफ़्तुम् फ़ीहि मिन् शैइन् फ़हुक्मुहू इलल्लाहि, ज़ालिकुमुल्लाहु रब्बी अ़लैहि तवक्कल्तु

سُوْرَۃُ الشُّوْرٰی مَکِّیَّۃٌ ۴۲ اٰیَاتُهَا ۵۳ رُکُوْعَاتُهَا ۵

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

حٰمٓ ۝۱ عٓسٓقٓ ۝۲
کَذٰلِکَ یُوْحِیْٓ اِلَیْکَ وَاِلَی الَّذِیْنَ
مِنْ قَبْلِکَ ۙ اللّٰهُ الْعَزِیْزُ الْحَکِیْمُ ۝۳
لَهٗ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی الْاَرْضِ ۭ
وَهُوَ الْعَلِیُّ الْعَظِیْمُ ۝۴
تَکَادُ السَّمٰوٰتُ یَتَفَطَّرْنَ مِنْ فَوْقِهِنَّ
وَالْمَلٰٓئِکَةُ یُسَبِّحُوْنَ بِحَمْدِ رَبِّهِمْ
وَیَسْتَغْفِرُوْنَ لِمَنْ فِی الْاَرْضِ ۭ
اَلَآ اِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِیْمُ ۝۵
وَالَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِیَآءَ
اللّٰهُ حَفِیْظٌ عَلَیْهِمْ ۡ وَمَآ اَنْتَ عَلَیْهِمْ
بِوَکِیْلٍ ۝۶
وَکَذٰلِکَ اَوْحَیْنَآ اِلَیْکَ قُرْاٰنًا
عَرَبِیًّا لِّتُنْذِرَ اُمَّ الْقُرٰی وَمَنْ
حَوْلَهَا وَتُنْذِرَ یَوْمَ الْجَمْعِ لَا رَیْبَ
فِیْهِ ۭ فَرِیْقٌ فِی الْجَنَّةِ وَفَرِیْقٌ فِی
السَّعِیْرِ ۝۷
وَلَوْ شَآءَ اللّٰهُ لَجَعَلَهُمْ اُمَّةً وَّاحِدَةً
وَّلٰکِنْ یُّدْخِلُ مَنْ یَّشَآءُ فِیْ رَحْمَتِهٖ ۭ
وَالظّٰلِمُوْنَ مَا لَهُمْ مِّنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ۝۸
اَمِ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِیَآءَ ۚ فَاللّٰهُ
هُوَ الْوَلِیُّ وَهُوَ یُحْیِ الْمَوْتٰی ۡ وَهُوَ
ع عَلٰی کُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ ۝۹
وَمَا اخْتَلَفْتُمْ فِیْهِ مِنْ شَیْءٍ فَحُکْمُهٗٓ
اِلَی اللّٰهِ ۭ ذٰلِکُمُ اللّٰهُ رَبِّیْ عَلَیْهِ تَوَکَّلْتُ ڮ

मैं रुजू होता हूं।

11. वह आसमानों और ज़मीन का पैदा करने वाला है; उसने तुम्हारे लिए तुम्हीं में से जोड़े बनाए, और चौपायों के जोड़े भी, उसके ज़रिए से वह तुम्हें फैला रहा है, उसके मानिन्द कोई चीज़ नहीं; वही सब कुछ सुनता, देखता है।

12. आसमानों और ज़मीन की कुन्जियां उसी के पास हैं, वह जिसके लिए चाहता है रिज़्क़ कुशादा कर देता है और जिसके लिए चाहता है नपा-तुला कर देता है, यक़ीनन उसे हर चीज़ का इल्म है।

13. उसने तुम्हारे लिए वही दीन मुक़र्रर किया जिसकी ताकीद उसने नूह को की थी" और जिसकी वही हमने तुम्हारी तरफ़ की है, और जिसकी ताकीद हमने इबराहीम, और मूसा और ईसा को की थी कि "दीन को क़ायम रखो, और उसके बारे में तफ़रिक़ा डालनेवाले न हो जाओ"। मुश्रिकों को वह चीज़ बहुत गिरां गुज़री है, जिसकी तरफ़ तुम उन्हें बुलाते हो। अल्लाह जिसे चाहता है अपनी तरफ़ छांट लेता है, और अपनी तरफ़ रहनुमाई उसकी करता है जो उसकी तरफ़ रुजू करता है।

14. और उन्होंने तो बाहम एक-दूसरे पर ज़्यादती करने की ग़र्ज़ से इसके बाद तफ़रिक़ा डाला कि इल्म उनके पास आ चुका था; और अगर तुम्हारे रब की तरफ़ से एक मुक़र्रर मुद्दत तक के लिए बात पहले से तय न हो चुकी होती तो उनके दरमियान फ़ैसला कर दिया गया होता। मगर जो लोग उनके बाद किताब के वारिस हुए, वो उसकी तरफ़ से इज़तिराब अंगेज़ शक में पड़े हुए हैं।

15. पस इसी की तरफ़ तुम दावत दो, और खुद जैसा कि तुम्हें हुक्म दिया गया है क़ायम रहो; आर उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी न करना। और कह दो कि "अल्लाह ने जो किताब भी नाज़िल फ़रमाई है मैं उसपर ईमान लाया; मुझे तो हुक्म हुआ है कि मैं तुम्हारे दरमियान इनसाफ़ करूं। अल्लाह हमारा भी रब है और तुम्हारा भी। हमारे लिए हमारे आमाल हैं, और तुम्हारे लिए तुम्हारे आमाल; हम में और तुममें कोई झगड़ा नहीं; अल्लाह हम सब को इकट्ठा करेगा, और उसी की तरफ़ अन्जामकार जाना भी है"।

व इलैहि उनीब (10)

फ़ातिरुस्समावाति वल्अर्ज़ि, ज-अ़-ल लकुम् मिन् अन्फ़ुसिकुम् अज़्वाजंव्-व मिनल्-अन्आ़मि अज़्वाजन् यज़्-रउकुम् फ़ीहि, लै-स कमिस्लिही शैउन् व हुवस्समीअुल्-बसीर (11)

लहू मक़ालीदुस्समावाति वल्अर्ज़ि यब्सुतुर्रिज़्-क़ लिमंय्-यशा-उ व यक़्दिरु, इन्नहू बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (12)

श-र-अ़ लकुम् मिनद्दीनि मा वस्सा बिही नूहंव्वल्लज़ी औहैना इलै-क व मा वस्सैना बिही इब्राही-म व मूसा व अ़ीसा अन् अक़ीमुद्-दी-न व ला त-तफ़र्रक़ू फ़ीहि, कबु-र अ़लल्-मुश्रिकी-न मा तद्अूहुम् इलैहि, अल्लाहु यज्तबी इलैहि मंय्यशा-उ व यह्दी इलैहि मंय्युनीब (13)

व मा त-फ़र्रक़ू इल्ला मिम्-बअ़्दि मा जा-अहुमुल्-अ़िल्मु बग़्यम् बैनहुम्, व लौ ला कलि-मतुन् स-बक़त् मिर्रब्बि-क इला अ-जलिम् मुसम्मल्-लक़ुज़ि-य बैनहुम्, व इन्नल्लज़ी-न ऊरिसुल्-किता-ब मिम्-बअ़्दिहिम् लफ़ी शक्किम्-मिन्हु मुरीब (14)

फ़-लिज़ालि-क फ़द्अु वस्तक़िम् कमा उमिर्-त व ला तत्तबिअ़् अह्वा-अहुम् व क़ुल् आमन्तु बिमा अन्ज़लल्लाहु मिन् किताबिन् व उमिर्तु लि-अअ़्दि-ल बैनकुम्, अल्लाहु रब्बुना व रब्बुकुम्, लना अअ़्मालुना व लकुम् अअ़्मालुकुम्, ला हुज्ज-त बैनना व बैनकुम्, अल्लाहु यज्मअु बैनना व इलैहिल्-मसीर (15)

وَإِلَيْهِ أُنِيبُ ۝

فَاطِرُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ جَعَلَ لَكُمْ
مِّنْ أَنفُسِكُمْ أَزْوٰجًا وَّمِنَ الْأَنْعٰمِ
أَزْوٰجًا يَذْرَؤُكُمْ فِيهِ لَيْسَ كَمِثْلِهِ
شَيْءٌ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ۝١١
لَهُ مَقَالِيدُ السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضِ يَبْسُطُ
الرِّزْقَ لِمَن يَشَآءُ وَيَقْدِرُ إِنَّهُ بِكُلِّ
شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝١٢
شَرَعَ لَكُم مِّنَ الدِّينِ مَا وَصّٰى
بِهِ نُوحًا وَّالَّذِيٓ أَوْحَيْنَآ إِلَيْكَ وَمَا
وَصَّيْنَا بِهِٓ إِبْرٰهِيمَ وَمُوسٰى
وَعِيسٰىٓ أَنْ أَقِيمُوا الدِّينَ وَلَا تَتَفَرَّقُوا
فِيهِ كَبُرَ عَلَى الْمُشْرِكِينَ مَا تَدْعُوهُمْ
إِلَيْهِ اللّٰهُ يَجْتَبِيٓ إِلَيْهِ مَن يَشَآءُ
وَيَهْدِيٓ إِلَيْهِ مَن يُنِيبُ ۝١٣
وَمَا تَفَرَّقُوٓا إِلَّا مِنۢ بَعْدِ مَا جَآءَهُمُ
الْعِلْمُ بَغْيًۢا بَيْنَهُمْ وَلَوْلَا كَلِمَةٌ سَبَقَتْ
مِن رَّبِّكَ إِلٰىٓ أَجَلٍ مُّسَمًّى لَّقُضِيَ بَيْنَهُمْ
وَإِنَّ الَّذِينَ أُورِثُوا الْكِتٰبَ مِنۢ
بَعْدِهِمْ لَفِي شَكٍّ مِّنْهُ مُرِيبٍ ۝١٤
فَلِذٰلِكَ فَادْعُ وَاسْتَقِمْ كَمَآ أُمِرْتَ
وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَآءَهُمْ وَقُلْ آمَنتُ بِمَآ
أَنزَلَ اللّٰهُ مِن كِتٰبٍ وَأُمِرْتُ لِأَعْدِلَ
بَيْنَكُمُ اللّٰهُ رَبُّنَا وَرَبُّكُمْ لَنَآ
أَعْمٰلُنَا وَلَكُمْ أَعْمٰلُكُمْ لَا حُجَّةَ
بَيْنَنَا وَبَيْنَكُمُ اللّٰهُ يَجْمَعُ بَيْنَنَا
وَإِلَيْهِ الْمَصِيرُ ۝١٥

16. जो लोग अल्लाह के बारे में हुज्जत करते हैं इसके बाद कि उसकी पुकार क़बूल कर ली गई उनकी हुज्जत उनके रब के नज़दीक बातिल है। उनपर ग़ज़ब है, और उनके लिए सख़्त अज़ाब है।

17. वह अल्लाह ही है जिसने हक़ के साथ किताब और मीज़ान नाज़िल फ़रमाई और तुम्हें क्या मालूम शायद क़ियामत की घड़ी क़रीब ही आ लगी हो।

18. उसकी जल्दी वो लोग मचाते हैं जो उसपर ईमान नहीं रखते; मगर जो उस पर ईमान रखते हैं वो तो उससे डरते हैं, और जानते हैं कि वह हक़ है। आगाह रहो जो लोग उस साअत (घड़ी) के बारे में शक डालनेवाली बहसें करते हैं वो परले दर्जे की गुमराही में हैं।

19. अल्लाह अपने बन्दों के बारीक से बारीक हालात का ख़याल रखता है, वह जिसे चाहता है रिज़्क़ देता है। वह कुव्वत वाला, निहायत ज़बरदस्त है।

20. जो कोई आख़िरत की खेती चाहता है हम उसके लिए उसकी खेती में अफ़ज़ूनी अता करेंगे; और जो कोई दुनिया की खेती चाहता है उसे हम उसमें से कुछ दे देते हैं, मगर आख़िरत में उसका कोई हिस्सा नहीं।

21. क्या उनके कुछ ऐसे (ठहराए हुए) शरीक हैं जिन्होंने उनके लिए कोई ऐसा दीन मुक़र्रर कर दिया है जिसका हुक्म अल्लाह ने नहीं दिया? अगर फ़ैसला की बात तय न हो गई होती, तो उनके दरमियान फ़ैसला हो चुका होता। यक़ीनन उन ज़ालिमों के लिए एक दर्दनाक अज़ाब है।

22. तुम ज़ालिमों को देखोगे कि उन्होंने जो कुछ कमाया उससे डर रहे होंगे, लेकिन वह तो उनपर पड़कर रहेगा, मगर जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए वो जन्नत के बाग़ीचों में होंगे; उनके लिए उनके रब के पास वह सब कुछ होगा जो वो चाहेंगे; वही तो बड़ा फ़ज़्ल है।

23. उसी की ख़ुशख़बरी अल्लाह अपने उन बन्दों को देता है जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए। कहो: "मैं तुमसे इसका

वल्लज़ी-न युहाज्जू-न फ़िल्लाहि मिम्-बअ्दि मस्तुजी-ब लहू हुज्जतुहुम् दाहि-ज़तुन् अ़िन्-द रब्बिहिम् व अ़लैहिम् ग़-ज़बुंव्-व लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद (16)

अल्लाहुल्लज़ी अन्ज़लल्-किता-ब बिल्हक़्क़ि वल्मीज़ा-न, व मा युद्‌री-क लअ़ल्लस्सा-अ़-त क़रीब (17)

यस्तअ्जिलु बि-हल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिहा वल्लज़ी-न आमनू मुश्फ़िक़ू-न मिन्हा व यअ्लमू-न अन्नहल्-हक़्क़ु, अला इन्नल्लज़ी-न युमारू-न फ़िस्सा-अ़ति लफ़ी ज़लालिम्-बअ़ीद (18)

अल्लाहु लतीफ़ुम्-बिअ़िबादिही यर्ज़ुक़ु मंय्यशा-उ व हुवल्-क़विय्युल-अ़ज़ीज़ (19) ●

मन् का-न युरीदु हर्सल्-आख़िरति नज़िद् लहू फ़ी हर्सिही व मन् का-न युरीदु हर्सद्दुन्या नुअ्तिही मिन्हा व मा लहू फ़िल्आख़िरति मिन्-नसीब (20)

अम् लहुम् शु-रका-उ श-रअ़ू लहुम् मिनद्दीनि मा लम् यअ्ज़म्-बिहिल्लाहु, व लौ ला कलि-मतुल्-फ़स्लि लक़ुज़ि-य बैनहुम् व इन्नज़्-ज़ालिमीन-न लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (21)

तरज़्ज़ालिमी-न मुश्फ़िक़ी-न मिम्मा क-सबू व हु-व वाक़िअ़ुम् बिहिम्, वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़ी रौज़ातिल्-जन्नाति लहुम्-मा यशाऊ-न अ़िन्-द रब्बिहिम्, ज़ालि-क हुवल् फ़ज़्लुल्-कबीर (22)

ज़ालिकल्लज़ी युबश्शिरुल्लाहु अ़िबा-दहुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति, क़ुल्-ला अस्-अलुकुम्

وَالَّذِيْنَ يُحَآجُّوْنَ فِى اللّٰهِ مِنْۢ بَعْدِ مَا اسْتُجِيْبَ لَهٗ حُجَّتُهُمْ دَاحِضَةٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ وَعَلَيْهِمْ غَضَبٌ وَّلَهُمْ عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۝١٦

اَللّٰهُ الَّذِىْٓ اَنْزَلَ الْكِتٰبَ بِالْحَقِّ وَالْمِيْزَانَ ؕ وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّ السَّاعَةَ قَرِيْبٌ ۝١٧

يَسْتَعْجِلُ بِهَا الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِهَا ۚ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مُشْفِقُوْنَ مِنْهَا ۙ وَيَعْلَمُوْنَ اَنَّهَا الْحَقُّ ؕ اَلَآ اِنَّ الَّذِيْنَ يُمَارُوْنَ فِى السَّاعَةِ لَفِىْ ضَلٰلٍۢ بَعِيْدٍ ۝١٨

اَللّٰهُ لَطِيْفٌۢ بِعِبَادِهٖ يَرْزُقُ مَنْ يَّشَآءُ ۚ وَهُوَ الْقَوِىُّ الْعَزِيْزُ ۝١٩ ع

مَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الْاٰخِرَةِ نَزِدْ لَهٗ فِىْ حَرْثِهٖ ۚ وَمَنْ كَانَ يُرِيْدُ حَرْثَ الدُّنْيَا نُؤْتِهٖ مِنْهَا ۙ وَمَا لَهٗ فِى الْاٰخِرَةِ مِنْ نَّصِيْبٍ ۝٢٠

اَمْ لَهُمْ شُرَكٰٓؤُا شَرَعُوْا لَهُمْ مِّنَ الدِّيْنِ مَا لَمْ يَاْذَنْۢ بِهِ اللّٰهُ ؕ وَلَوْلَا كَلِمَةُ الْفَصْلِ لَقُضِىَ بَيْنَهُمْ ؕ وَاِنَّ الظّٰلِمِيْنَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٢١

تَرَى الظّٰلِمِيْنَ مُشْفِقِيْنَ مِمَّا كَسَبُوْا وَهُوَ وَاقِعٌۢ بِهِمْ ؕ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ فِىْ رَوْضٰتِ الْجَنّٰتِ ۚ لَهُمْ مَّا يَشَآءُوْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ ؕ ذٰلِكَ هُوَ الْفَضْلُ الْكَبِيْرُ ۝٢٢

ذٰلِكَ الَّذِىْ يُبَشِّرُ اللّٰهُ عِبَادَهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ؕ قُلْ لَّآ اَسْـَٔلُكُمْ

कोई अज्र नहीं मांगता, बस क़राबत की मुहब्बत मेरे पेशे नज़र है; जो कोई नेकी कमाएगा, हम उसके लिए उसमें भलाई बढ़ा देंगे। यक़ीनन अल्लाह निहायत बख़्शनेवाला, क़द्रदान है"।

24. क्या वो कहते हैं कि "इस शख़्स ने अल्लाह पर झूटा बुहतान घड़ा है?" अगर अल्लाह चाहे, तो तुम्हारे दिल पर मुहर लगा दे। अल्लाह अपने कलिमात से बातिल को मिटाता है और हक़ को हक़ साबित करता है; यक़ीनन वह सीनों तक की बात को बख़ूबी जानता है।

25. वही है जो अपने बन्दों की तौबा क़बूल करता है, और बुराइयों से दरगुज़र फ़रमाता है; हालांकि वह जानता है जो कुछ तुम करते हो।

26. और वह उन लोगों की दुआएं क़बूल करता है जो ईमान लाए और जिन्होंने नेक आमाल किया और उन्हें अपने फ़ज़्ल से मज़ीद नवाज़ता है। रहे काफ़िर, तो उनके लिए एक सख़्त अज़ाब है।

27. अगर अल्लाह अपने बन्दों के लिए रोज़ी फ़राख़ कर देता, तो वो ज़मीन में सरकशी करने लगते; मगर वह एक अन्दाज़े के साथ जो चाहता है उतारता है; यक़ीनन वह अपने बन्दों से बाख़बर, उन पर निगाह रखता है।

28. वही है जो इसके बाद कि लोग मायूस हो चुके होते हैं मेंह बरसाता है और अपनी रहमत को फैला देता है। और वह कारसाज़ और क़ाबिले तारीफ़ है।

29. और उसकी निशानियों में से है आसमानों और ज़मीन का पैदा करना और ये जानदार मख़्लूक़ात भी जो उसने इन दोनों में फैला रखी हैं, वह जब चाहे उन्हें इकट्ठा करने पर भी क़ुदरत रखता है।

30. जो मुसीबत तुम्हें पहुंची वह तो तुम्हारे अपने हाथों की कमाई से पहुंची; और बहुत कुछ तो वह माफ़ कर देता है।

31. तुम ज़मीन में क़ाबू से निकल जाने वाले नहीं हो, और न अल्लाह से हटकर तुम्हारा कोई दोस्त है और न मददगार ही।

32. उसकी निशानियों में से समुंदर में पहाड़ों जैसे चलते जहाज़ भी;

33. अगर वह चाहे तो हवा को ठहरा दे तो वो समुंदर की पीठ पर ठहरे

अ़लैहि अज्रन् इल्लल्-म-वद्द-त फ़िल्क़ुर्बा, व मंय्यक़्तरिफ़् ह-स-नतन् नज़िद् लहू फ़ीहा हुस्नन, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुन् शकूर (23)

अम् यक़ूलूनफ़्तरा अ़लल्लाहि कज़िबन् फ़-इंय्य-श-इल्लाहु यख़्तिम् अ़ला क़ल्बि-क, व यम्हुल्लाहुल्-बाति-ल व युहिक़्क़ुल्-हक़्-क़ बि-कलिमातिही, इन्नहू अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (24)

व हुवल्लज़ी यक़्बलुत्तौ-ब-त अ़न् अ़िबादिही व यअ़्फ़ू अ़निस्सय्यिआति व यअ़्लमु मा तफ़्अ़लून (25)

व यस्तजीबुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति व यज़ीदुहुम्-मिन् फ़ज़्लिही, वल्काफ़िरू-न लहुम् अ़ज़ाबुन् शदीद (26)

व लौ ब-सतल्लाहुर्रिज़्-क़ लिअ़िबादिही ल-बग़ौ फ़िल्अर्ज़ि व लाकिंय्-युनज़्ज़िलु बि-क़-दरिम्-मा यशा-उ, इन्नहू बिअ़िबादिही ख़बीरुम्-बसीर (27)

व हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलुल्-ग़ै-स मिम्बअ़्दि मा क़-नतू व यन्शुरु रह्म-तहू, व हुवल् वलिय्युल्-हमीद (28)

व मिन् आयातिही ख़ल्क़ुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बस्-स फ़ीहिमा मिन् दाब्बतिन्, व हु-व अ़ला जम्अ़िहिम् इज़ा यशा-उ क़दीर ● (29) ●

व मा असाबकुम् मिम्-मुसी-बतिन् फ़बिमा क-सबत् ऐदीकुम् व यअ़्फ़ू अ़न् कसीर (30)

व मा अन्तुम् बिमुअ़्जिज़ी-न फ़िल्अर्ज़ि व मा लकुम् मिन् दूनिल्लाहि मिंव्वलिय्यिंव्-व ला नसीर (31)

व मिन् आयातिहिल्-जवारि फ़िल्-बह्रि कल्-अअ़्लाम (32)

इंय्य-शअ् युस्किनिर्-री-ह फ़-यज़्लल्-न रवाकि-द

عَلَیْهِ اَجْرًا اِلَّا الْمَوَدَّةَ فِی الْقُرْبٰی ؕ
وَمَنْ یَّقْتَرِفْ حَسَنَةً نَّزِدْ لَهٗ فِیْهَا
حُسْنًا ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ شَكُوْرٌ ۝٢٣
اَمْ یَقُوْلُوْنَ افْتَرٰی عَلَی اللّٰهِ كَذِبًا ۚ
فَاِنْ یَّشَاِ اللّٰهُ یَخْتِمْ عَلٰی قَلْبِكَ ؕ
وَیَمْحُ اللّٰهُ الْبَاطِلَ وَیُحِقُّ الْحَقَّ بِكَلِمٰتِهٖ ؕ
اِنَّهٗ عَلِیْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٢٤
وَهُوَ الَّذِیْ یَقْبَلُ التَّوْبَةَ عَنْ عِبَادِهٖ
وَیَعْفُوْا عَنِ السَّیِّاٰتِ وَیَعْلَمُ مَا تَفْعَلُوْنَ ۝٢٥
وَیَسْتَجِیْبُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ وَیَزِیْدُهُمْ مِّنْ فَضْلِهٖ ؕ
وَالْكٰفِرُوْنَ لَهُمْ عَذَابٌ شَدِیْدٌ ۝٢٦
وَلَوْ بَسَطَ اللّٰهُ الرِّزْقَ لِعِبَادِهٖ لَبَغَوْا فِی
الْاَرْضِ وَلٰكِنْ یُّنَزِّلُ بِقَدَرٍ مَّا یَشَآءُ ؕ
اِنَّهٗ بِعِبَادِهٖ خَبِیْرٌۢ بَصِیْرٌ ۝٢٧
وَهُوَ الَّذِیْ یُنَزِّلُ الْغَیْثَ مِنْۢ بَعْدِ
مَا قَنَطُوْا وَیَنْشُرُ رَحْمَتَهٗ ؕ وَهُوَ الْوَلِیُّ
الْحَمِیْدُ ۝٢٨
وَمِنْ اٰیٰتِهٖ خَلْقُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
وَمَا بَثَّ فِیْهِمَا مِنْ دَآبَّةٍ ؕ وَهُوَ عَلٰی
جَمْعِهِمْ اِذَا یَشَآءُ قَدِیْرٌ ۝٢٩
وَمَآ اَصَابَكُمْ مِّنْ مُّصِیْبَةٍ فَبِمَا
كَسَبَتْ اَیْدِیْكُمْ وَیَعْفُوْا عَنْ كَثِیْرٍ ۝٣٠
وَمَآ اَنْتُمْ بِمُعْجِزِیْنَ فِی الْاَرْضِ ۚۖ وَمَا
لَكُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ مِنْ وَّلِیٍّ وَّلَا نَصِیْرٍ ۝٣١
وَمِنْ اٰیٰتِهِ الْجَوَارِ فِی الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝٣٢
اِنْ یَّشَاْ یُسْكِنِ الرِّیْحَ فَیَظْلَلْنَ رَوَاكِدَ

عَلٰى ظَهْرِهٖ ؕ اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَاٰيٰتٍ لِّكُلِّ
صَبَّارٍ شَكُوْرٍ ﴿٣٣﴾
اَوْ يُوْبِقْهُنَّ بِمَا كَسَبُوْا وَيَعْفُ
عَنْ كَثِيْرٍ ﴿٣٤﴾
وَّيَعْلَمَ الَّذِيْنَ يُجَادِلُوْنَ فِىْٓ اٰيٰتِنَا ؕ
مَا لَهُمْ مِّنْ مَّحِيْصٍ ﴿٣٥﴾
فَمَآ اُوْتِيْتُمْ مِّنْ شَىْءٍ فَمَتَاعُ الْحَيٰوةِ
الدُّنْيَا ۚ وَمَا عِنْدَ اللّٰهِ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَلٰى رَبِّهِمْ يَتَوَكَّلُوْنَ ﴿٣٦﴾
وَالَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰٓئِرَ الْاِثْمِ وَالْفَوَاحِشَ
وَاِذَا مَا غَضِبُوْا هُمْ يَغْفِرُوْنَ ﴿٣٧﴾
وَالَّذِيْنَ اسْتَجَابُوْا لِرَبِّهِمْ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ۪
وَاَمْرُهُمْ شُوْرٰى بَيْنَهُمْ ۪ وَمِمَّا رَزَقْنٰهُمْ يُنْفِقُوْنَ ﴿٣٨﴾
وَالَّذِيْنَ اِذَآ اَصَابَهُمُ الْبَغْىُ هُمْ يَنْتَصِرُوْنَ ﴿٣٩﴾
وَجَزٰٓؤُا سَيِّئَةٍ سَيِّئَةٌ مِّثْلُهَا ۚ فَمَنْ
عَفَا وَاَصْلَحَ فَاَجْرُهٗ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ
لَا يُحِبُّ الظّٰلِمِيْنَ ﴿٤٠﴾
وَلَمَنِ انْتَصَرَ بَعْدَ ظُلْمِهٖ فَاُولٰٓئِكَ مَا
عَلَيْهِمْ مِّنْ سَبِيْلٍ ﴿٤١﴾
اِنَّمَا السَّبِيْلُ عَلَى الَّذِيْنَ يَظْلِمُوْنَ
النَّاسَ وَيَبْغُوْنَ فِى الْاَرْضِ بِغَيْرِ
الْحَقِّ ؕ اُولٰٓئِكَ لَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ﴿٤٢﴾
وَلَمَنْ صَبَرَ وَغَفَرَ اِنَّ ذٰلِكَ لَمِنْ
عَزْمِ الْاُمُوْرِ ﴿٤٣﴾
وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ مِنْ وَّلِىٍّ
مِّنْۢ بَعْدِهٖ ؕ وَتَرَى الظّٰلِمِيْنَ لَمَّا
رَاَوُا الْعَذَابَ يَقُوْلُوْنَ هَلْ اِلٰى مَرَدٍّ

अ़ला ज़ह्‌रिही, इन्-न फ़ी ज़ालि-क लआयातिल्-लिकुल्लि सब्बारिन् शकूर (33)

औ यूबिक़्हुन्-न बिमा क-सबू व यअ़्फु अ़न् कसीर (34)

व यअ़्-ल-मल्लज़ी-न युजादिलू-न फ़ी आयातिना, मा लहुम् मिम्-महीस (35)

फ़मा ऊतीतुम् मिन् शैइन् फ़-मताअुल्-हयातिद्दुन्या व मा अिन्दल्लाहि ख़ैरुंव्-व अब्क़ा लिल्लज़ी-न आमनू व अ़ला रब्बिहिम् य-तवक्कलून (36)

वल्लज़ी-न यज्तनिबू-न कबा-इरल्-इस्मि वल्फ़वाहि-श व इज़ा मा ग़ज़िबू हुम् यग़्फ़िरून (37)

वल्लज़ीनस्तजाबू लिरब्बिहिम् व अक़ामुस्सला-त व अम्रुहुम् शूरा बैनहुम् व मिम्मा रज़क़्नाहुम् युन्फ़िक़ून (38)

वल्लज़ी-न इज़ा असा-बहुमुल्-बग़्यु हुम् यन्तसिरून (39)

व जज़ा-उ सय्यि-अतिन् सय्यि-अतुम्-मिस्लुहा फ़-मन् अ़फ़ा व अस्ल-ह फ़-अज्रुहू अ़लल्लाहि, इन्नहू ला युहिब्बुज़्-ज़ालिमीन (40)

व ल-मनिन्त-स-र बअ़्-द ज़ुल्मिही फ़-उलाइ-क मा अ़लैहिम् मिन् सबील (41)

इन्नमस्सबीलु अ़लल्लज़ी-न यज़्लिमूनन्ना-स व यब्ग़ू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि, उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (42)

व ल-मन् स-ब-र व ग़-फ़-र इन्-न ज़ालि-क लमिन् अ़ज़्मिल्-उमूर (43)●

व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिंव्-वलिय्यिम्-मिम्-बअ़्दिही, व तरज़्-ज़ालिमी-न लम्मा र-अवुल्-अ़ज़ा-ब यक़ूलू-न हल् इला मरद्दिम्-

रह जाएं — यक़ीनन इसमें हर कमाल दर्जा के साबिर शाकिर के लिए कितनी ही निशानियां हैं।

34. — या उनको उनकी कमाई की वजह से तबाह कर दे; और बहुतों से दरगुज़र फ़रमाए।

35. और ताकि (नतीजे में) वो लोग जान लें जो हमारी आयतों में झगड़ते हैं कि उनके लिए कोई जाए फ़रार नहीं।

36. तुम्हें जो चीज़ भी मिली है वह तो दुनिया की ज़िन्दगी का आरज़ी सामान-ए-लुत्फ़ है, मगर जो अल्लाह के पास है वह बेहतर भी है और बाक़ी रहने वाला भी। वह उन्हीं के लिए है जो ईमान लाए और अपने रब पर भरोसा रखते हैं;

37. जो बड़े-बड़े गुनाहों और बेहयाई से बचते हैं और जब उन्हें (किसी पर) गुस्सा आ जाता है तो वो बख़्श देते हैं,

38. और जिन्होंने अपने रब की दावत क़बूल की, और नमाज़ का एहतिमाम किया, उनका मुआमला उनके आपस के मशवरे से चलता है, और हमने जो कुछ उन्हें रिज़्क़ दिया है उसमें से वो ख़र्च करते हैं।

39. और जो ऐसे हैं कि जब उनपर ज़्यादती हो, तो वो इंतिक़ाम लेते हैं।

40. बुराई का बदला वैसी ही बुराई है; मगर जो माफ़ कर दे और इसलाह करे, तो उसका अज्र अल्लाह के ज़िम्मे है; यक़ीनन वह ज़ालिमों को पसन्द नहीं करता।

41. और जो कोई अपने ऊपर ज़ुल्म होने के बाद बदला ले ले, तो ऐसे लोगों पर कोई इलज़ाम नहीं।

42. इलज़ाम के मुस्तहिक़ सिर्फ़ वो हैं जो लोगों पर ज़ुल्म करते हैं, और ज़मीन में बग़ैर किसी हक़ के ज़्यादती करते हैं; ऐसे ही लोग हैं जिनके लिए दर्दनाक अज़ाब है।

43. मगर जिसने सब्र किया और बख़्श दिया तो यक़ीनन यह उन उमूर में से है जो अज़ीमत के हैं।

44. जिसको अल्लाह ही गुमराही में डाल दे, तो उसके बाद उसे संभालनेवाला कोई भी नहीं, तुम ज़ालिमों को देखोगे कि जब वो अज़ाब को देख लेंगे तो कह रहे होंगे कि

"क्या लौटने का कोई रास्ता है?"

45. और तुम उन्हें देखोगे कि वो उस (दोज़ख़) के सामने इस हालत में लाए जा रहे हैं कि ज़िल्लत के मारे झुके हुए हैं, छुपी निगाह से देख रहे हैं। जो लोग ईमान ले आए वो उस वक़्त कहेंगे कि "यक़ीनन ख़सारे में पड़नेवाले वही हैं जिन्होंने क़ियामत के रोज़ अपने आपको और अपने मुतअल्लिक़ीन को ख़सारे में डाल दिया; ख़बरदार, ज़ालिम यक़ीनन क़ायम रहने वाले अज़ाब में होंगे।

46. और उनके कुछ हामी व सरपरस्त भी न होंगे जो मदद करके उन्हें अल्लाह से बचा लें, जिसे अल्लाह गुमराही में डाल दे, तो फिर उसके लिए कोई राह नहीं"।

47. अपने रब की दावत क़बूल करो, इससे पहले कि अल्लाह की तरफ़ से वह दिन आ जाए जो पलटने का नहीं; उस दिन तुम्हारे लिए न कोई जाए पनाह होगी, और न तुम किसी चीज़ को रद्द कर सकोगे।

48. अब अगर वो एराज़ करें, तो हमने तुम्हें उनपर कोई निगेहबान बनाकर नहीं भेजा है। तुमपर तो सिर्फ़ पहुंचा देने की ज़िम्मेदारी है। और जब हम इनसान को अपनी तरफ़ से किसी रहमत का ज़ायक़ा चखाते हैं, तो वह उसपर इतराने लगता है; लेकिन ऐसे लोगों के हाथों ने जो कुछ आगे भेजा है उसकी वजह से अगर उनपर कोई तकलीफ़ पहुंचती है, तो यक़ीनन इनसान बड़ा नाशुकरा साबित होता है।

49-50. आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है; वह जो चाहता है पैदा करता है; जिसे चाहता है लड़कियां देता है, और जिसे चाहता है लड़के देता है या उन्हें लड़के और लड़कियां मिला-जुलाकर देता है, और जिसे चाहता है बेऔलाद रखता है। यक़ीनन वह सब जानने वाला, क़ुदरत रखने वाला है।

51. किसी इनसान के लिए मुमकिन नहीं कि अल्लाह उससे बात करे, मगर वही के ज़रिए से या पर्दे के पीछे से, या यह कि वह एक रसूल भेज दे फिर वह उसके हुक्म से वह जो कुछ चाहे वही करे, यक़ीनन वह आली मक़ाम, निहायत हिकमतवाला है।

मिन् सबील (44)

व तराहुम् युअ्रज़ू-न अ़लैहा ख़ाशिअ़ी-न मिनज़्ज़ुल्लि यन्ज़ुरू-न मिन् तर्फ़िन् ख़फ़िय्यिन्, व क़ालल्लज़ी-न आमनू इन्नल्-ख़ासिरीनल्लज़ी-न ख़सिरू अन्फ़ु-सहुम् व अह्लीहिम् यौमल्-क़ियामति, अला इन्नज़्ज़ालिमी-न फ़ी अ़ज़ाबिम्-मुक़ीम (45)

व मा का-न लहुम् मिन् औलिया-अ यन्सुरूनहुम् मिन् दूनिल्लाहि, व मंय्युज़्लिलिल्लाहु फ़मा लहू मिन् सबील (46)

इस्तजीबू लि-रब्बिकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य यौमुल्-ला मरद्-द लहू मिनल्लाहि, मा लकुम् मिम्-मल्ज-इंय्यौमइज़िंव्-व मा लकुम् मिन्-नकीर (47)

फ़-इन् अअ्रज़ू फ़मा अर्सल्ना-क अ़लैहिम् हफ़ीज़न्, इन् अ़लै-क इल्लल्-बलाग़ु, व इन्ना इज़ा अज़क़्नल्-इन्सा-न मिन्ना रह्म-तन् फ़रि-ह बिहा व इन् तुसिब्हुम् सय्यि-अतुम् बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम् फ़-इन्नल्-इन्सा-न कफ़ूर (48)

लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, यख़्लुक़ु मा यशा-उ, य-हबु लिमंय्यशा-उ इनासंव्-व य-हबु लिमंय्यशा-उज़्-ज़ुकूर (49)

औ युज़व्विजुहुम् ज़ुक्रानंव्-व इनासन् व यज्अ़लु मंय्यशा-उ अ़क़ीमन्, इन्नहू अ़लीमुन् क़दीर (50)

व मा का-न लि-ब-शरिन् अंय्युकल्लि-महुल्लाहु इल्ला वह्यन् औ मिंव्वरा-इ हिजाबिन् औ युर्सि-ल रसूलन् फ़यूहि-य बि-इज़्निही मा यशा-उ, इन्नहू अ़लिय्युन् हकीम (51)

مِّنْ سَبِيْلٍ ۝٤٤
وَتَرٰىهُمْ يُعْرَضُوْنَ عَلَيْهَا خٰشِعِيْنَ
مِنَ الذُّلِّ يَنْظُرُوْنَ مِنْ طَرْفٍ
خَفِيٍّ ؕ وَقَالَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِنَّ الْخٰسِرِيْنَ
الَّذِيْنَ خَسِرُوْۤا اَنْفُسَهُمْ وَاَهْلِيْهِمْ
يَوْمَ الْقِيٰمَةِ ؕ اَلَاۤ اِنَّ الظّٰلِمِيْنَ فِيْ
عَذَابٍ مُّقِيْمٍ ۝٤٥
وَمَا كَانَ لَهُمْ مِّنْ اَوْلِيَآءَ يَنْصُرُوْنَهُمْ
مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ ؕ وَمَنْ يُّضْلِلِ اللّٰهُ فَمَا لَهٗ
مِنْ سَبِيْلٍ ۝٤٦
اِسْتَجِيْبُوْا لِرَبِّكُمْ مِّنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَ
يَوْمٌ لَّا مَرَدَّ لَهٗ مِنَ اللّٰهِ ؕ مَا لَكُمْ مِّنْ
مَّلْجَاٍ يَّوْمَئِذٍ وَّمَا لَكُمْ مِّنْ نَّكِيْرٍ ۝٤٧
فَاِنْ اَعْرَضُوْا فَمَاۤ اَرْسَلْنٰكَ عَلَيْهِمْ حَفِيْظًا ؕ
اِنْ عَلَيْكَ اِلَّا الْبَلٰغُ ؕ وَاِنَّاۤ اِذَاۤ
اَذَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنَّا رَحْمَةً فَرِحَ بِهَا ۚ
وَاِنْ تُصِبْهُمْ سَيِّئَةٌۢ بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ
فَاِنَّ الْاِنْسَانَ كَفُوْرٌ ۝٤٨
لِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ يَخْلُقُ
مَا يَشَآءُ ؕ يَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ اِنَاثًا
وَّيَهَبُ لِمَنْ يَّشَآءُ الذُّكُوْرَ ۝٤٩
اَوْ يُزَوِّجُهُمْ ذُكْرَانًا وَّاِنَاثًا ۚ وَيَجْعَلُ
مَنْ يَّشَآءُ عَقِيْمًا ؕ اِنَّهٗ عَلِيْمٌ قَدِيْرٌ ۝٥٠
وَمَا كَانَ لِبَشَرٍ اَنْ يُّكَلِّمَهُ اللّٰهُ
اِلَّا وَحْيًا اَوْ مِنْ وَّرَآئِ حِجَابٍ اَوْ
يُرْسِلَ رَسُوْلًا فَيُوْحِيَ بِاِذْنِهٖ مَا يَشَآءُ ؕ
اِنَّهٗ عَلِيٌّ حَكِيْمٌ ۝٥١

52-53. और इसी तरह एक रूह हमने अपने हुक्म से तुम्हारी तरफ़ वही की है, तुम नहीं जानते थे कि किताब क्या होती है, और न ईमान की तुम्हें कोई ख़बर थी; मगर हमने इस (वही) को एक नूर बना दिया जिसके ज़रिए से हम अपने बन्दों में से जिसे चाहते हैं राह दिखाते हैं। यक़ीनन तुम एक सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई कर रहे हो — उस ख़ुदा के रास्ते की तरफ़ जिसका वह सब कुछ है जो आसमानों में है, और जो ज़मीन में है। आगाह रहो सारे मुआमलात अंजाम-ए-कार ख़ुदा ही की तरफ़ पलटते हैं।

सूरह अज़-ज़ुख़रुफ़ मक्की

(आयतें 89, रुकूआत 7)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. हा. मीम.।

2. गवाह है वाज़ेह किताब,

3. हमने उसे अरबी क़ुरआन बनाया; ताकि तुम समझो;

4. और दर हक़ीक़त वह हमारे यहां, असल किताब में (सबत) है; बहुत बुलन्द, हिक्मत से लबरेज़।

5. तो क्या इसलिए कि तुम हद से गुज़रे हुए लोग हो, हम तुमको बिल्कुल ही नज़र अन्दाज़ कर देंगे।

6. हमने पहले लोगों में कितने ही रसूल भेजे।

7. मगर जो नबी भी उनके पास आया, वो उसका मज़ाक़ ही उड़ाते रहे,

8 आख़िर कार हमने उनको जो उन लोगों से कहीं ज़्यादा ज़ोर आवर थे, गिरिफ़्त में लेकर हलाक कर दिया, और पहले लोगों की मिसाल गुज़र चुकी।

9. अगर तुम उनसे पूछो कि "आसमानों और ज़मीन को किसने पैदा किया"? तो वो ज़रूर कहेंगे कि "उन्हें निहायत ज़बरदस्त, अलीम हस्ती ने पैदा किया"।

10. जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को गहवारा बनाया, और उसमें तुम्हारे लिए रास्ते बना दिए ताकि तुम्हारी रहनुमाई हो,

11. और जिसने आसमान से एक अन्दाज़े से पानी उतारा; और हमने उससे मुर्दा ज़मीन को जिला उठाया; इसी तरह तुम भी (ज़िन्दा करके) निकाले जाओगे।

12. और जिसने तमाम गूनागूं क़िस्म की चीज़ें पैदा कीं, और तुम्हारे

व कज़ालि-क औहैना इलै-क रूहम्-मिन् अम्रिना, मा कुन्-त तद्री मल्किताबु व लल्-ईमानु व लाकिन् ज-अल्नाहु नूरन्-नह्दी बिही मन् नशा-उ मिन् अ़िबादिना, व इन्न-क ल-तह्दी इला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (52)

सिरातिल्लाहिल्लज़ी लहू मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, अला इलल्लाहि तसीरुल्-उमूर (53) ●

43 सूरतुज़्-ज़ुख़्रुफ़ि (मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 3656 अक्षर, 848 शब्द, 89 आयतें और 7 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हा-मीम् (1)

वल्-किताबिल्-मुबीन (2) इन्ना जअ़ल्नाहु क़ुर्आनन् अ़-रबिय्यल् लअ़ल्लकुम् तअ़्क़िलून (3)

व इन्नहू फ़ी उम्मिल्-किताबि लदैना ल-अ़लिय्युन् हकीम (4)

अ-फ़ नज़्रिबु अ़न्कुमुज़्ज़िक्-र सफ़्हन् अन् कुन्तुम् क़ौमम्-मुस्रिफ़ीन (5)

व कम् अर्सल्ना मिन्-नबिय्यिन् फ़िल्-अव्वलीन (6)

व मा यअ्तीहिम् मिन् नबिय्यिन् इल्ला कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (7)

फ़-अह्लक्ना अशद्-द मिन्हुम् बत्शंव्-व मज़ा म-सलुल्-अव्वलीन (8)

व ल-इन् स-अल्तहुम् मन् ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ ल-यक़ूलुन्-न ख़-ल-क़हुन्नल्-अ़ज़ीज़ुल्-अ़लीम (9)

अल्लज़ी ज-अ़-ल लकुमुल्-अर्-ज़ मह्दंव्-व ज-अ़-ल लकुम् फ़ीहा सुबुलल्-लअ़ल्लकुम् तह्तदून (10)

वल्लज़ी नज़्ज़-ल मिनस्समा-इ मा-अम्-बि-क़-दरिन् फ़-अन्शर्ना बिही बल्द-तम्-मैतन् कज़ालि-क तुख़्रजून (11)

वल्लज़ी ख़-लक़ल्-अज़्वा-ज कुल्लहा व ज-अ़-ल

وَكَذٰلِكَ اَوْحَيْنَآ اِلَيْكَ رُوْحًا مِّنْ اَمْرِنَا ۭ
مَا كُنْتَ تَدْرِيْ مَا الْكِتٰبُ وَلَا الْاِيْمَانُ
وَلٰكِنْ جَعَلْنٰهُ نُوْرًا نَّهْدِيْ بِهٖ مَنْ
نَّشَاۗءُ مِنْ عِبَادِنَا ۭ وَاِنَّكَ لَتَهْدِيْٓ
اِلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ﴿٥٢﴾
صِرَاطِ اللّٰهِ الَّذِيْ لَهٗ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ۭ اَلَآ اِلَى اللّٰهِ تَصِيْرُ
ع الْاُمُوْرُ ﴿٥٣﴾

سُوْرَةُ الزُّخْرُفِ مَكِّيَّةٌ، اٰيَاتُهَا ٨٩، رُكُوْعَاتُهَا ٧

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

حٰمۗ ﴿١﴾ وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ ﴿٢﴾
اِنَّا جَعَلْنٰهُ قُرْءٰنًا عَرَبِيًّا لَّعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿٣﴾
وَاِنَّهٗ فِيْٓ اُمِّ الْكِتٰبِ لَدَيْنَا لَعَلِيٌّ حَكِيْمٌ ﴿٤﴾
اَفَنَضْرِبُ عَنْكُمُ الذِّكْرَ صَفْحًا اَنْ كُنْتُمْ
قَوْمًا مُّسْرِفِيْنَ ﴿٥﴾
وَكَمْ اَرْسَلْنَا مِنْ نَّبِيٍّ فِي الْاَوَّلِيْنَ ﴿٦﴾
وَمَا يَاْتِيْهِمْ مِّنْ نَّبِيٍّ اِلَّا كَانُوْا بِهٖ
يَسْتَهْزِءُوْنَ ﴿٧﴾
فَاَهْلَكْنَآ اَشَدَّ مِنْهُمْ بَطْشًا وَّمَضٰى
مَثَلُ الْاَوَّلِيْنَ ﴿٨﴾
وَلَىِٕنْ سَاَلْتَهُمْ مَّنْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ لَيَقُوْلُنَّ خَلَقَهُنَّ الْعَزِيْزُ الْعَلِيْمُ ﴿٩﴾
الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ مَهْدًا وَّجَعَلَ
لَكُمْ فِيْهَا سُبُلًا لَّعَلَّكُمْ تَهْتَدُوْنَ ﴿١٠﴾
وَالَّذِيْ نَزَّلَ مِنَ السَّمَاۗءِ مَاۗءًۢ بِقَدَرٍ ۚ
فَاَنْشَرْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ تُخْرَجُوْنَ ﴿١١﴾
وَالَّذِيْ خَلَقَ الْاَزْوَاجَ كُلَّهَا وَجَعَلَ

लिए कश्तियां और जानवर बनाए जिन पर तुम सवार होते हो,

13. ताकि तुम उनकी पीठ पर जमकर बैठो फिर याद करो अपने रब की नवाज़िश को जब तुम उनपर बैठ जाओ। और कहो "कितनी अज़्मत वाला है वह जिसने इसे हमारे बस में किया, वरना हम तो ऐसे न थे कि इसे क़ाबू में कर सकते;

14. और यक़ीनन हम अपने रब की तरफ़ लौटने वाले हैं"।

15. उन्होंने उसके बन्दों में से उसका जुज़ (औलाद) क़रार दे लिया। यक़ीनन इनसान खुला एहसान नाशनास है।

16. क्या जो कुछ वह पैदा फ़रमाता है उसमें से उसने खुद अपने लिए तो बेटियां, और बेटों से तुम्हें बरगुज़ीदा फ़रमाया।

17. और हाल यह है कि जब उनमें से किसी को उसकी खुशख़बरी दी जाती है जो वह रहमान के लिए बयान करता है, तो उसका मुंह सियाह पड़ जाता है, और वह ग़म के मारे घुटा-घुटा रहने लगता है।

18. और क्या वह जो ज़ेवरों में पले और वह बहस और झगड़े में खुल न पाए?

19. उन्होंने फ़रिश्तों को, जो रहमान के बन्दे हैं, औरतें क़रार दे लिया। क्या वो उनकी पैदाइश पर मौजूद थे? उनकी गवाही लिख ली जाएगी, और उनसे पुरसिश होगी।

20. वो कहते हैं, "अगर रहमान चाहता तो हम उन्हें न पूजते"। उन्हें इसका कुछ इल्म नहीं वो तो बस अटकल दौड़ाते हैं।

21. क्या हमने इससे पहले उनको कोई किताब दी है तो वो उसे मज़बूती से थामे हुए हैं?

22. नहीं, बल्कि वो कहते हैं, "हमने तो अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर पाया है, और हम उन्हीं के नक़्श-ए-क़दम पर चलकर राहयाब हैं।

23. इसी तरह हमने जिस किसी बस्ती में तुमसे पहले कोई ख़बरदार करने वाला भेजा, वहां के खुशहाल लोगों ने बस यही कहा कि "हमने तो अपने बाप-दादा को एक तरीक़े पर पाया है, और हम उन्हीं के नुक़ूश-ए-

लकुम् मिनल्-फ़ुल्कि वल्-अन्आमि मा तर्-कबून (12)

लि-तस्तवू अ़ला ज़ुहूरिही सुम्-म तज़्कुरू निअ्-म-त रब्बिकुम् इज़स्तवैतुम् अ़लैहि व तक़ूलू सुब्हानल्लज़ी सख़्ख़-र लना हाज़ा व मा कुन्ना लहू मुक़्रिनीन (13)

व इन्ना इला रब्बिना ल-मुन्क़लिबून (14)

व ज-अ़लू लहू मिन् अ़िबादिही जुज़्अन्, इन्नल्-इन्सा-न ल-कफ़ूरुम्-मुबीन (15) ●

अमित्त-ख़-ज़ मिम्मा यख़्लुक़ु बनातिंव्-व अस्फ़ाकुम् बिल्-बनीन (16)

व इज़ा बुश्शि-र अ-हदुहुम् बिमा ज़-र-ब लिर्रह्मानि म-सलन् ज़ल्-ल वज्हुहू मुस्वद्दंव्-व हु-व कज़ीम (17)

अ-व मंय्युनश्श-उ फ़िल्-हिल्यति व हु-व फ़िल्ख़िसामि ग़ैरु मुबीन (18)

व ज-अ़लुल् मलाइ-कतल्लज़ी-न हुम् अ़िबादुर्रह्मानि इनासन्, अ-शहिदू ख़ल्क़हुम्, स-तुक्तबु शहा-दतुहुम् व युस्-अलून (19)

व क़ालू लौ शा-अर्रह्मानु मा अ़बद्नाहुम्, मा लहुम् बिज़ालि-क मिन् अ़िल्मिन् इन् हुम् इल्ला यख़्रुसून (20)

अम् आतैनाहुम् किताबम्-मिन् क़ब्लिही फ़हुम् बिही मुस्तम्सिकून (21)

बल् क़ा-लू इन्ना वजद्ना आबा-अना अ़ला उम्म-तिंव्-व इन्ना अ़ला आसारिहिम् मुह्तदून (22)

व कज़ालि-क मा अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क फ़ी क़र्-यतिम् मिन् नज़ीरिन् इल्ला क़ा-ल मुत्-रफ़ूहा इन्ना वजद्ना आबा-अना अ़ला उम्म-तिंव्-व इन्ना अ़ला

لَكُمْ مِّنَ الْفُلْكِ وَالْاَنْعَامِ مَا تَرْكَبُوْنَ ۝١٢
لِتَسْتَوٗا عَلٰى ظُهُوْرِهٖ ثُمَّ تَذْكُرُوْا
نِعْمَةَ رَبِّكُمْ اِذَا اسْتَوَيْتُمْ عَلَيْهِ
وَتَقُوْلُوْا سُبْحٰنَ الَّذِيْ سَخَّرَ لَنَا هٰذَا
وَمَا كُنَّا لَهٗ مُقْرِنِيْنَ ۝١٣
وَاِنَّاۤ اِلٰى رَبِّنَا لَمُنْقَلِبُوْنَ ۝١٤
وَجَعَلُوْا لَهٗ مِنْ عِبَادِهٖ جُزْءًا ؕ اِنَّ
ع الْاِنْسَانَ لَكَفُوْرٌ مُّبِيْنٌ ۝١٥
اَمِ اتَّخَذَ مِمَّا يَخْلُقُ بَنٰتٍ وَّاَصْفٰىكُمْ
بِالْبَنِيْنَ ۝١٦
وَاِذَا بُشِّرَ اَحَدُهُمْ بِمَا ضَرَبَ لِلرَّحْمٰنِ
مَثَلًا ظَلَّ وَجْهُهٗ مُسْوَدًّا وَّهُوَ كَظِيْمٌ ۝١٧
اَوَمَنْ يُّنَشَّؤُا فِي الْحِلْيَةِ وَهُوَ فِي
الْخِصَامِ غَيْرُ مُبِيْنٍ ۝١٨
وَجَعَلُوا الْمَلٰٓئِكَةَ الَّذِيْنَ هُمْ عِبٰدُ
الرَّحْمٰنِ اِنَاثًا ؕ اَشَهِدُوْا خَلْقَهُمْ ؕ
سَتُكْتَبُ شَهَادَتُهُمْ وَيُسْئَلُوْنَ ۝١٩
وَقَالُوْا لَوْ شَآءَ الرَّحْمٰنُ مَا عَبَدْنٰهُمْ ؕ
مَا لَهُمْ بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۗ اِنْ هُمْ اِلَّا
يَخْرُصُوْنَ ۝٢٠
اَمْ اٰتَيْنٰهُمْ كِتٰبًا مِّنْ قَبْلِهٖ فَهُمْ بِهٖ
مُسْتَمْسِكُوْنَ ۝٢١
بَلْ قَالُوْۤا اِنَّا وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى اُمَّةٍ
وَّاِنَّا عَلٰۤى اٰثٰرِهِمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝٢٢
وَكَذٰلِكَ مَاۤ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ فِيْ قَرْيَةٍ
مِّنْ نَّذِيْرٍ اِلَّا قَالَ مُتْرَفُوْهَاۤ ۙ اِنَّا
وَجَدْنَاۤ اٰبَآءَنَا عَلٰۤى اُمَّةٍ وَّ اِنَّا عَلٰۤى

क़दम पर हैं, उनकी पैरवी कर रहे हैं"।

24. उसने कहाः "क्या अगर मैं तुम्हारे पास ऐसी चीज़ लाया हूं जो हिदायत में उससे बढ़कर है जिसपर तुमने अपने बाप-दादा को पाया है जब भी (तुम बाप-दादा ही की पैरवी करते रहोगे)?" उन्होंने कहा, "तुम्हें जो कुछ देकर भेजा गया है हम तो उसके मुनकिर हैं"।

25. आख़िरकार हमने उनसे इन्तिक़ाम लिया; पस देख लो कि झुटलाने वालों का कैसा अन्जाम हुआ।

26. और याद करो जबकि इबराहीम ने अपने बाप और अपनी क़ौम से कहा कि "तुम जिनको पूजते हो मेरा उन से कोई तअल्लुक़ नहीं,

27. सिवाय उसके जिसने मुझे पैदा किया, पस यक़ीनन वही मेरी रहनुमाई फ़रमाएगा"।

28. और इसी बात को वह अपने पीछे (अपनी औलाद में) बाक़ी छोड़ गया; ताकि वो रुजू करें।

29. नहीं, बल्कि मैं उन्हें और उनके बाप-दादा को ज़िन्दगी की लज़्ज़तों से नवाज़ता रहा, यहां तक कि उनके पास हक़ और वाज़ेह करने वाला रसूल आ गया।

30. मगर जब वह हक़ उनके पास आया, तो वो कहने लगे, "यह तो जादू है, और हम तो इसके मुनकिर हैं"।

31. वो कहते हैं, "यह क़ुरआन उन दो बस्तियों के किसी बड़े आदमी पर क्यों नहीं उतरा"?

32. क्या वो तुम्हारे रब की रहमत को तक़सीम करते हैं? दुनिया की ज़िन्दगी में उनकी गुज़र-बसर के ज़राए हमने उनके दरमियान तक़सीम किए हैं, और हमने उनमें से बाज़ को बाज़ से दरजात के लिहाज़ से बुलन्द रखा है, ताकि उनमें से बाज़ बाज़ से काम लें, और तुम्हारे रब की रहमत उससे कहीं बेहतर है जिसे ये जमा कर रहे हैं।

33-35. अगर यह बात न होती कि सब लोग एक ही तरीक़े के हो जाएंगे, तो जो रहमान के साथ कुफ़्र की रविश इख़्तियार करते हैं उनके लिए हम उनके घरों की छतें चांदी की कर देते, और सीढ़ियां भी जिनपर वो चढ़ते, और उनके घरों के दरवाज़े भी, और वो तख़्त भी जिनपर वो टेक लगाते, और सोने से आराइश भी कर देते, यह सब तो कुछ नहीं बस दुनिया

आसारिहिम्-मुक़्तदून (23)

क़ा-ल अ-व लौ जिअ्तुकुम् बि-अह्दा मिम्मा वजत्तुम् अ़लैहि आबा-अकुम्, क़ालू इन्ना बिमा उर्सिल्तुम् बिही काफ़िरून (24)

फ़न्त-क़म्ना मिन्हुम् फ़न्ज़ुर् कै-फ़ का-न आ़क़ि-बतुल्-मुकज़्ज़िबीन ●(25) ●

व इज़् क़ा-ल इब्राहीमु लि-अबीहि व क़ौमिही इन्ननी बराउम् मिम्मा तअ्बुदून (26)

इल्लल्लज़ी फ़-त-रनी फ़-इन्नहू स-यह्दीन (27)

व ज-अ़-लहा कलि-मतम्-बाक़ि-यतन् फ़ी अ़क़िबिही लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (28)

बल् मत्तअ्तु हाउला-इ व आबा-अहुम् हत्ता जा-अहुमुल्-हक़्क़ु व रसूलुम्-मुबीन (29)

व लम्मा जा-अहुमुल्-हक़्क़ु क़ालू हाज़ा सिह्रुंव्-व इन्ना बिही काफ़िरून (30)

व क़ालू लौ ला नुज़्ज़ि-ल हाज़ल्-क़ुरआनु अ़ला रजुलिम्-मिनल् क़र्-यतैनि अ़ज़ीम (31)

अ-हुम् यक़्सिमू-न रह्म-त रब्बि-क, नह्नु क़सम्ना बैनहुम् मअ़ी-श-तहुम् फ़िल्-हयातिद्दुन्या व रफ़अ्ना बअ्-ज़हुम् फ़ौ-क़ बअ्ज़िन् द-रजातिल्-लि-यत्तख़ि-ज़ बअ्ज़ुहुम् बअ्ज़न् सुख़्रिय्यन्, व रह्मतु रब्बि-क ख़ैरुम्-मिम्मा यज्मअून (32)

व लौ ला अंय्यकूनन्नासु उम्म-तंव्वाहि-दतल् ल-जअ़ल्ना लिमंय्यक्फ़ुरु बिर्रह्मानि लि-बुयूतिहिम् सुक़ुफ़म्-मिन् फ़िज़्ज़तिंव् व मआ़रि-ज अ़लैहा यज़्हरून (33)

व लिबुयूतिहिम् अब्वाबंव्-व सुरुरन् अ़लैहा यत्तकिऊन (34)

व ज़ुख़्रुफ़न्, व इन् कुल्लु ज़ालि-क लम्मा मताअ़ुल्-

اٰثٰرِهِمۡ مُّقۡتَدُوۡنَ ۝٢٣
قُلَ اَوَلَوۡ جِئۡتُكُمۡ بِاَهۡدٰى مِمَّا وَجَدۡتُّمۡ
عَلَيۡهِ اٰبَآءَكُمۡ ؕ قَالُوۡۤا اِنَّا بِمَاۤ اُرۡسِلۡتُمۡ
بِهٖ كٰفِرُوۡنَ ۝٢٤
فَانۡتَقَمۡنَا مِنۡهُمۡ فَانۡظُرۡ كَيۡفَ كَانَ
عَاقِبَةُ الۡمُكَذِّبِيۡنَ ۝٢٥
وَاِذۡ قَالَ اِبۡرٰهِيۡمُ لِاَبِيۡهِ وَقَوۡمِهٖۤ اِنَّنِىۡ
بَرَآءٌ مِّمَّا تَعۡبُدُوۡنَ ۝٢٦
اِلَّا الَّذِىۡ فَطَرَنِىۡ فَاِنَّهٗ سَيَهۡدِيۡنِ ۝٢٧
وَجَعَلَهَا كَلِمَةًۢ بَاقِيَةً فِىۡ عَقِبِهٖ
لَعَلَّهُمۡ يَرۡجِعُوۡنَ ۝٢٨
بَلۡ مَتَّعۡتُ هٰٓؤُلَآءِ وَاٰبَآءَهُمۡ حَتّٰى
جَآءَهُمُ الۡحَقُّ وَرَسُوۡلٌ مُّبِيۡنٌ ۝٢٩
وَلَمَّا جَآءَهُمُ الۡحَقُّ قَالُوۡا هٰذَا سِحۡرٌ
وَّاِنَّا بِهٖ كٰفِرُوۡنَ ۝٣٠
وَقَالُوۡا لَوۡلَا نُزِّلَ هٰذَا الۡقُرۡاٰنُ
عَلٰى رَجُلٍ مِّنَ الۡقَرۡيَتَيۡنِ عَظِيۡمٍ ۝٣١
اَهُمۡ يَقۡسِمُوۡنَ رَحۡمَتَ رَبِّكَ ؕ نَحۡنُ قَسَمۡنَا
بَيۡنَهُمۡ مَّعِيۡشَتَهُمۡ فِى الۡحَيٰوةِ الدُّنۡيَا
وَرَفَعۡنَا بَعۡضَهُمۡ فَوۡقَ بَعۡضٍ دَرَجٰتٍ
لِّيَتَّخِذَ بَعۡضُهُمۡ بَعۡضًا سُخۡرِيًّا ؕ وَرَحۡمَتُ
رَبِّكَ خَيۡرٌ مِّمَّا يَجۡمَعُوۡنَ ۝٣٢
وَلَوۡلَاۤ اَنۡ يَّكُوۡنَ النَّاسُ اُمَّةً وَّاحِدَةً
لَّجَعَلۡنَا لِمَنۡ يَّكۡفُرُ بِالرَّحۡمٰنِ لِبُيُوۡتِهِمۡ سُقُفًا
مِّنۡ فِضَّةٍ وَّمَعَارِجَ عَلَيۡهَا يَظۡهَرُوۡنَ ۝٣٣
وَلِبُيُوۡتِهِمۡ اَبۡوَابًا وَّسُرُرًا عَلَيۡهَا يَتَّكِـُٔوۡنَ ۝٣٤
وَزُخۡرُفًا ؕ وَاِنۡ كُلُّ ذٰلِكَ لَمَّا مَتَاعُ

की ज़िन्दगी का आरज़ी सामाने लुत्फ़ है, और आख़िरत तुम्हारे रब के यहां मुत्तक़ीन के लिए है।

36. जो रहमान के ज़िक्र से आंखें चुराता है (यानी गफ़लत बरते), हम उसपर एक शैतान मुक़र्रर कर देते हैं तो वही उसका साथी होता है;

37. और वह उन्हें रास्ते से रोकते हैं, और वो समझते यह हैं कि वो हिदायत पर हैं,

38. यहां तक कि जब वह हमारे पास आएगा, तो कहेगा कि "ऐ काश, मेरे और तेरे दरमियान मशरिक़ के दोनों किनारों की दूरी होती! तू तो निहायत बुरा साथी निकला!"

39. और जबकि तुम ज़ालिम ठहरे तो आज यह बात तुम्हें कुछ फ़ायदा न पहुंचा सकेगी, अज़ाब में तुम एक-दूसरे के साथ शरीक हो"।

40. क्या तुम बहरों को सुनाओगे, या अन्धों और जो सरीह गुमराही में पड़ा हो उस को राह दिखाओगे?

41-42. फिर अगर हम तुम्हें उठा भी लें, जब भी हम उनसे इंतिक़ाम लेकर रहेंगे, या हम तुम्हें वह चीज़ दिखा देंगे जिसका हमने उनसे वादा किया है, बेशक हमें उनपर पूरी क़ुदरत हासिल है।

43. पस तुम उसे मज़बूती से थामे रहो जिसकी वह्यी तुम्हारी तरफ़ की गई; यक़ीनन तुम सीधे रास्ते पर हो।

44. यक़ीनन वो तुम्हारे और तुम्हारी क़ौम के लिए नसीहत और याददिहानी है। और जल्द ही तुम सबसे पूछा जाएगा।

45. तुम हमारे उन रसूलों से जिन्हें हमने तुमसे पहले भेजा, पूछ लो कि क्या हमने रहमान के सिवा वो माबूद तजवीज़ किए हैं जिनकी इबादत की जा रही है?

46. और हमने मूसा को अपनी निशानियों के साथ फ़िरऔन और उसके दरबारियों की तरफ़ भेजा, और उसने कहा कि "मैं सारे जहान के रब का रसूल हूं"।

47. लेकिन जब वह उन के पास हमारी निशानियां लेकर आया तो क्या देखते हैं कि वो लगे उनकी हंसी उड़ाने।

48. और हम उन्हें जो निशानी भी दिखाते वह अपनी क़िस्म की पहली निशानी से बढ़-चढ़कर होती; और हमने उन्हें अज़ाब में धर लिया, ताकि वो रुजू करें।

हयातिद्दुन्या, वल्-आख़िरतु अिन्-द रब्बि-क लिल्-मुत्तक़ीन (35) ●

व मंय्यअ्शु अन् ज़िक्रिर्-रह्मानि नुक़य्यिज़् लहू शैतानन् फ़हु-व लहू क़रीन (36)

व इन्नहुम् ल-यसुद्दूनहुम् अ़निस्सबीलि व यह्सबू-न अन्नहुम् मुह्तदून (37)

हत्ता इज़ा जा-अना क़ा-ल या लै-त बैनी व बैन-क बुअ्दल्-मश्रिक़ैनि फ़-बिअ्सल्-क़रीन (38)

व लंय्यन्फ़-अ़कुमुल्-यौ-म इज़् ज़लम्तुम् अन्नकुम् फ़िल्-अ़ज़ाबि मुश्तरिकून (39)

अ-फ़-अन्-त तुस्मिअुस्सुम्-म औ तह्दिल्-अुम्-य व मन् का-न फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (40)

फ़-इम्मा नज़्हबन्-न बि-क फ़-इन्ना मिन्हुम् मुन्तक़िमून (41)

औ नुरि-यन्नकल्लज़ी व-अ़द्नाहुम् फ़-इन्ना अ़लैहिम् मुक़्तदिरून (42)

फ़स्तम्सिक् बिल्लज़ी ऊहि-य इलै-क इन्न-क अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (43)

व इन्नहू ल-ज़िक्रुल्-ल-क व लिक़ौमि-क व सौ-फ़ तुस्अलून (44)

वस्अल् मन् अर्सल्ना मिन् क़ब्लि-क मिर्रुसुलिना, अ-जअ़ल्ना मिन् दूनिर्रह्मानि आलि-हतंय्-युअ्बदून (45) ●

व ल-क़द् अर्सल्ना मूसा बिआयातिना इला फ़िर्औ़-न व म-लइही फ़क़ा-ल इन्नी रसूलु रब्बिल्-आ़लमीन (46)

फ़-लम्मा जा-अहुम् बिआयातिना इज़ा हुम् मिन्हा यज़्हकून (47)

व मा नुरीहिम् मिन् आ-यतिन् इल्ला हि-य अक्बरु मिन् उख़्तिहा व अख़ज़्नाहुम् बिल्अ़ज़ाबि लअ़ल्लहुम् यर्जिअून (48)

الْحَيٰوةِ الدُّنْيَا ۭ وَالْاٰخِرَةُ عِنْدَ رَبِّكَ
ع لِلْمُتَّقِيْنَ ۝۳۵
وَمَنْ يَّعْشُ عَنْ ذِكْرِ الرَّحْمٰنِ نُقَيِّضْ
لَهٗ شَيْطٰنًا فَهُوَ لَهٗ قَرِيْنٌ ۝۳۶
وَاِنَّهُمْ لَيَصُدُّوْنَهُمْ عَنِ السَّبِيْلِ
وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ مُّهْتَدُوْنَ ۝۳۷
حَتّٰۤى اِذَا جَآءَنَا قَالَ يٰلَيْتَ بَيْنِيْ وَبَيْنَكَ
بُعْدَ الْمَشْرِقَيْنِ فَبِئْسَ الْقَرِيْنُ ۝۳۸
وَلَنْ يَّنْفَعَكُمُ الْيَوْمَ اِذْ ظَّلَمْتُمْ
اَنَّكُمْ فِي الْعَذَابِ مُشْتَرِكُوْنَ ۝۳۹
اَفَاَنْتَ تُسْمِعُ الصُّمَّ اَوْ تَهْدِي الْعُمْيَ
وَمَنْ كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ۝۴۰
فَاِمَّا نَذْهَبَنَّ بِكَ فَاِنَّا مِنْهُمْ مُّنْتَقِمُوْنَ ۝۴۱
اَوْ نُرِيَنَّكَ الَّذِيْ وَعَدْنٰهُمْ فَاِنَّا عَلَيْهِمْ
مُّقْتَدِرُوْنَ ۝۴۲
فَاسْتَمْسِكْ بِالَّذِيْۤ اُوْحِيَ اِلَيْكَ ۚ اِنَّكَ
عَلٰى صِرَاطٍ مُّسْتَقِيْمٍ ۝۴۳
وَاِنَّهٗ لَذِكْرٌ لَّكَ وَلِقَوْمِكَ ۚ وَسَوْفَ
تُسْـَٔلُوْنَ ۝۴۴
وَسْـَٔلْ مَنْ اَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ
رُّسُلِنَاۤ اَجَعَلْنَا مِنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ اٰلِهَةً
ع يُّعْبَدُوْنَ ۝۴۵
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا مُوْسٰى بِاٰيٰتِنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ
وَمَلَا۟ئِهٖ فَقَالَ اِنِّيْ رَسُوْلُ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝۴۶
فَلَمَّا جَآءَهُمْ بِاٰيٰتِنَاۤ اِذَا هُمْ مِّنْهَا يَضْحَكُوْنَ ۝۴۷
وَمَا نُرِيْهِمْ مِّنْ اٰيَةٍ اِلَّا هِيَ اَكْبَرُ مِنْ اُخْتِهَا ۡ
وَاَخَذْنٰهُمْ بِالْعَذَابِ لَعَلَّهُمْ يَرْجِعُوْنَ ۝۴۸

49. उनका कहना था "ऐ जादूगर, अपने रब से हमारे लिए दुआ कर उस अ़हद की बिना पर जो उसने तुझसे कर रखा है, यक़ीनन हम राह-ए-रास्त पर चलेंगे"।

50. फिर जब भी हम उनपर से अज़ाब हटा देते तो क्या देखते कि वो अ़हद तोड़ दे रहे हैं।

51. फ़िरऔन ने अपनी क़ौम के दरमियान पुकारा, कहा: "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! क्या मिस्र की सलतनत मेरी नहीं और यह मेरे नीचे बहती नहरें? तो क्या तुम देखते नहीं?

52. (यह बेहतर है) या मैं इससे बेहतर हूं जो ज़लील व हक़ीर है और साफ़ बोल भी नहीं पाता?

53. फिर (अगर वह रसूल है तो) उसके लिए ऊपर से सोने के कंगन क्यों न डाले गए? या उसके साथ फ़रिश्ते मसाहिब होकर आए होते"?

54. ग़र्ज़ उसने अपनी क़ौम को बेवक़ूफ़ बनाया और उन्होंने उसकी बात मान ली; यक़ीनन वो नाफ़रमान लोग थे।

55. आख़िरकार जब उन्होंने हमें ग़ज़बनाक कर दिया, तो हमने उनसे इंतिक़ाम लिया, और हमने उन सब को ग़र्क़ कर दिया;

56. पस हमने उन्हें पेशरौ, और बाद वालों के लिए निशाने इबरत बना दिया।

57. और जब इब्ने मरयम की मिसाल दी गई, तो क्या देखते हैं कि उसपर तुम्हारी क़ौम के लोग लगे चीख़ने।

58. और कहने लगे, "क्या हमारे माबूद अच्छे हैं या वह"? उन्होंने यह तुमसे महज़ झगड़ने के लिए कहा; नहीं, बल्कि वो हैं ही झगड़ालू लोग।

59. वह तो बस एक बन्दा था जिसपर हमने नवाज़िश की, और उसे हमने बनी इसराईल के लिए एक मिसाल बनाया।

60. और अगर हम चाहें तो तुम्हें फ़रिश्ते बना दें जो जांनशीन हों।

61. और यक़ीनन वह उस घड़ी (क़ियामत) की अलामत है; पस तुम उसके बारे में शक न करो, और मेरी पैरवी करो। यही सीधी राह है।

62. और शैतान तुम्हें रोक न दे; यक़ीनन वह तुम्हारा खुला दुश्मन है।

व क़ालू या अय्युहस्-साहिरुद्अु लना रब्ब-क बिमा अ़हि-द अ़िन्द-क इन्नना ल-मुह्तदून (49)

फ़-लम्मा कशफ़्ना अ़न्हुमुल्-अ़ज़ा-ब इज़ा हुम् यन्कुसून (50)

व नादा फ़िर्औ़नु फ़ी क़ौमिही क़ा-ल या क़ौमि अलै-स ली मुल्कु मिस्-र व हाज़िहिल्-अन्हारु तज्री मिन् तह्ती अ-फ़ला तुब्सिरून (51)

अम् अ-न ख़ैरुम् मिन् हाज़ल्लज़ी हु-व महीनुंव्-व ला यकादु युबीन (52)

फ़-लौ ला उल्कि़-य अ़लैहि अस्वि-रतुम् मिन् ज़-हबिन् औ जा-अ म-अ़हुल्-मलाइकतु मुक़्तरिनीन (53)

फ़स्तख़फ़्-फ़ क़ौमहू फ़-अताअूहु, इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन (54)

फ़-लम्मा आ-सफ़ूनन्-त-क़म्ना मिन्हुम् फ़-अग़्रक़्नाहुम् अज्मअ़ीन (55)

फ़-जअ़ल्नाहुम् स-लफ़ंव्-व म-सलल्-लिल्आख़िरीन (56) ●

व लम्मा ज़ुरिबब्नु मर्य-म म-सलन् इज़ा क़ौमु-क मिन्हु यसिद्दून (57)

व क़ालू अ-आलि-हतुना ख़ैरुन् अम् हु-व, मा ज़-रबूहु ल-क इल्ला ज-दलन्, बल् हुम् क़ौमुन् ख़सिमून (58)

इन् हु-व इल्ला अ़ब्दुन् अन्अ़म्ना अ़लैहि व ज-अ़ल्नाहु म-सलल्-लि-बनी इस्राईल (59)

व लौ नशा-उ ल-जअ़ल्ना मिन्कुम् मलाइ-कतन् फ़िल्अर्ज़ि यख़्लुफ़ून (60)

व इन्नहू ल-अ़िल्मुल्-लिस्सा-अ़ति फ़ला तम्तरुन्-न बिहा वत्तबिअूनि, हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (61)

व ला यसुद्दन्नकुमुश्-शैतानु इन्नहू लकुम् अ़दुव्वुम्-मुबीन (62)

وَقَالُوْا يٰۤاَيُّهَ السّٰحِرُ ادْعُ لَنَا رَبَّكَ بِمَا عَهِدَ
عِنْدَكَ ۚ اِنَّنَا لَمُهْتَدُوْنَ ۝۴۹
فَلَمَّا كَشَفْنَا عَنْهُمُ الْعَذَابَ اِذَا هُمْ يَنْكُثُوْنَ ۝۵۰
وَنَادٰى فِرْعَوْنُ فِيْ قَوْمِهٖ قَالَ يٰقَوْمِ
اَلَيْسَ لِيْ مُلْكُ مِصْرَ وَهٰذِهِ الْاَنْهٰرُ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِيْ ۚ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ ۝۵۱
اَمْ اَنَا خَيْرٌ مِّنْ هٰذَا الَّذِيْ هُوَ مَهِيْنٌ ۙ
وَّلَا يَكَادُ يُبِيْنُ ۝۵۲
فَلَوْلَاۤ اُلْقِيَ عَلَيْهِ اَسْوِرَةٌ مِّنْ ذَهَبٍ
اَوْ جَآءَ مَعَهُ الْمَلٰٓئِكَةُ مُقْتَرِنِيْنَ ۝۵۳
فَاسْتَخَفَّ قَوْمَهٗ فَاَطَاعُوْهُ ۚ اِنَّهُمْ كَانُوْا
قَوْمًا فٰسِقِيْنَ ۝۵۴
فَلَمَّاۤ اٰسَفُوْنَا انْتَقَمْنَا مِنْهُمْ فَاَغْرَقْنٰهُمْ
اَجْمَعِيْنَ ۝۵۵
فَجَعَلْنٰهُمْ سَلَفًا وَّمَثَلًا لِّلْاٰخِرِيْنَ ۝۵۶
وَلَمَّا ضُرِبَ ابْنُ مَرْيَمَ مَثَلًا اِذَا قَوْمُكَ
مِنْهُ يَصِدُّوْنَ ۝۵۷
وَقَالُوْۤا ءَاٰلِهَتُنَا خَيْرٌ اَمْ هُوَ ۚ مَا ضَرَبُوْهُ
لَكَ اِلَّا جَدَلًا ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ خَصِمُوْنَ ۝۵۸
اِنْ هُوَ اِلَّا عَبْدٌ اَنْعَمْنَا عَلَيْهِ وَجَعَلْنٰهُ
مَثَلًا لِّبَنِيْۤ اِسْرَآءِيْلَ ۝۵۹
وَلَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنَا مِنْكُمْ مَّلٰٓئِكَةً فِي
الْاَرْضِ يَخْلُفُوْنَ ۝۶۰
وَاِنَّهٗ لَعِلْمٌ لِّلسَّاعَةِ فَلَا تَمْتَرُنَّ بِهَا
وَاتَّبِعُوْنِ ۚ هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ ۝۶۱
وَلَا يَصُدَّنَّكُمُ الشَّيْطٰنُ ۚ اِنَّهٗ لَكُمْ عَدُوٌّ
مُّبِيْنٌ ۝۶۲

وَلَمَّا جَآءَ عِيْسٰى بِالْبَيِّنٰتِ قَالَ قَدْ
جِئْتُكُمْ بِالْحِكْمَةِ وَلِاُبَيِّنَ لَكُمْ
بَعْضَ الَّذِیْ تَخْتَلِفُوْنَ فِيْهِ ۚ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ وَاَطِيْعُوْنِ (٦٣)
اِنَّ اللّٰهَ هُوَ رَبِّیْ وَرَبُّكُمْ فَاعْبُدُوْهُ ؕ
هٰذَا صِرَاطٌ مُّسْتَقِيْمٌ (٦٤)
فَاخْتَلَفَ الْاَحْزَابُ مِنْۢ بَيْنِهِمْ ۚ
فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا مِنْ عَذَابِ
يَوْمٍ اَلِيْمٍ (٦٥)
هَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ
بَغْتَةً وَّهُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ (٦٦)
اَلْاَخِلَّآءُ يَوْمَئِذٍۢ بَعْضُهُمْ لِبَعْضٍ
ع عَدُوٌّ اِلَّا الْمُتَّقِيْنَ (٦٧)
يٰعِبَادِ لَا خَوْفٌ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ وَلَآ اَنْتُمْ
تَحْزَنُوْنَ (٦٨)
اَلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاٰيٰتِنَا وَكَانُوْا مُسْلِمِيْنَ (٦٩)
اُدْخُلُوا الْجَنَّةَ اَنْتُمْ وَاَزْوَاجُكُمْ تُحْبَرُوْنَ (٧٠)
يُطَافُ عَلَيْهِمْ بِصِحَافٍ مِّنْ ذَهَبٍ
وَّاَكْوَابٍ ۚ وَفِيْهَا مَا تَشْتَهِيْهِ الْاَنْفُسُ
وَتَلَذُّ الْاَعْيُنُ ۚ وَاَنْتُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ (٧١)
وَتِلْكَ الْجَنَّةُ الَّتِیْۤ اُوْرِثْتُمُوْهَا بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ (٧٢)
لَكُمْ فِيْهَا فَاكِهَةٌ كَثِيْرَةٌ مِّنْهَا تَاْكُلُوْنَ (٧٣)
اِنَّ الْمُجْرِمِيْنَ فِیْ عَذَابِ جَهَنَّمَ
خٰلِدُوْنَ (٧٤)
لَا يُفَتَّرُ عَنْهُمْ وَهُمْ فِيْهِ مُبْلِسُوْنَ (٧٥)
وَمَا ظَلَمْنٰهُمْ وَلٰكِنْ كَانُوْا هُمُ الظّٰلِمِيْنَ (٧٦)

व लम्मा जा-अ ईसा बिल्बय्यिनाति क़ा-ल क़द् जिअ्तुकुम् बिल्-हिक्मति व लि-उबय्यि-न लकुम् बअ्ज़ल्लज़ी तख़्तलिफ़ू-न फ़ीहि फ़त्तक़ुल्ला-ह व अतीअून (63)

इन्नल्ला-ह हु-व रब्बी व रब्बकुम् फ़अ्बुदूहु, हाज़ा सिरातुम्-मुस्तक़ीम (64)

फ़ख़्त-लफ़ल्-अह्ज़ाबु मिम्-बैनिहिम् फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न ज़-लमू मिन् अ़ज़ाबि यौमिन् अलीम (65)

हल् यन्ज़ुरू-न इल्लस्सा-अ़-त अन् तअ्ति-यहुम् बग़्-ततंव्-व हुम् ला यश्अुरून् (66)

अल्-अख़िल्ला-उ यौमइज़िम्-बअ्ज़ुहुम् लिबअ्ज़िन् अ़दुव्वुन् इल्लल्-मुत्तक़ीन (67) ●

या अ़िबादि ला ख़ौफ़ुन् अ़लैकुमुल्-यौ-म व ला अन्तुम् तह्ज़नून (68)

अल्लज़ी-न आमनू बिआयातिना व कानू मुस्लिमीन (69)

उद्ख़ुलुल्-जन्न-त अन्तुम् व अज़्वाजुकुम् तुह्बरून (70)

युताफ़ु अ़लैहिम् बिसिहाफ़िम्-मिन् ज़-हबिंव्-व अक्वाबिन् व फ़ीहा मा तश्तहीहिल्-अन्फ़ुसु व त-लज़्ज़ुल्-अअ्युनु व अन्तुम् फ़ीहा ख़ालिदून (71)

व तिल्कल्-जन्नतुल्लती ऊरिस्तुमूहा बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (72)

लकुम् फ़ीहा फ़ाकि-हतुन् कसी-रतुम् मिन्हा तअ्कुलून (73)

इन्नल्-मुज्रिमी-न फ़ी अ़ज़ाबि जहन्न-म ख़ालिदून (74)

ला युफ़त्तरु अ़न्हुम् व हुम् फ़ीहि मुब्लिसून (75)

व मा ज़लम्नाहुम् व लाकिन् कानू हुमुज़्ज़ालिमीन (76)

63. जब ईसा रौशन दलीलों के साथ आया, तो उसने कहा कि "मैं तुम्हारे पास हिक्मत लेकर आया हूं। (ताकि उसकी तालीम तुम्हें दूं) और ताकि वो बातें तुमपर खोल दूं जिनमें तुम इख़्तिलाफ़ करते हो; लिहाज़ा अल्लाह का डर रखो और मेरी इताअत करो।

64. हक़ीक़त में अल्लाह ही मेरा रब है और तुम्हारा भी रब है; पस उसी की इबादत करो, यही सीधा रास्ता है"।

65. मगर उनके दरमियान कितने ही गिरोहों ने बाहम इख़्तिलाफ़ बरपा किए; पस तबाही है एक दर्दनाक दिन के अज़ाब से उन लोगों के लिए जिन्होंने ज़ालिमाना रविश इख़्तियार की।

66. क्या वो बस उस (क़ियामत की) घड़ी का इंतिज़ार कर रहे हैं कि वह अचानक उनपर आ पड़े, और उन्हें ख़बर भी न हो?

67. दोस्त उस रोज़ बाहम एक-दूसरे के दुश्मन होंगे, बजुज़ मुत्तक़ीन के।

68. "ऐ मेरे बन्दो, आज न तुम्हें कोई ख़ौफ़ है, और न तुम ग़मगीन होगे"।

69. वो जो हमारी आयतों पर ईमान लाए और फ़रमांबरदार होकर रहे;

70. "जन्नत में दाख़िल हो जाओ, तुम भी और तुम्हारे जोड़े भी, ख़ुश-ख़ुश!"

71. उनके आगे सोने की तश्तरियां और प्याले गर्दिश करेंगे, और उसमें वह सभी कुछ होगा जिस को जी चाहे, और आंखें जिससे लज़्ज़त हासिल करें। "और तुम उसमें हमेशा रहोगे।

72. यह वह जन्नत है जिसके तुम अपने आमाल के बदले में वारिस हुए।

73. तुम्हारे लिए वहां बहुत से लज़ीज़ फल हैं, जिनको तुम खाओगे"।

74. बिलाशुबह मुजरिमीन हमेशा जहन्नम के अज़ाब में रहेंगे।

75. वह कभी उनपर से हलका न होगा और वो उसी में मायूस पड़े रहेंगे।

76. हमने उनपर ज़ुल्म नहीं किया, लेकिन वो ख़ुद ही ज़ालिम थे।

77. वो पुकारेंगे कि "ऐ मालिक, तुम्हारा रब हमारा काम ही तमाम कर दे"! वह कहेगा, "तुम्हें तो इसी हाल में रहना है"।

78. "हम तुम्हारे पास हक़ लेकर आए, मगर तुममें से अकसर को हक़ नागवार रहा"।

79. क्या उन्होंने किसी बात का क़तई फ़ैसला कर लिया है? अच्छा तो हमने भी क़तई फ़ैसला कर लिया है।

80. या वो समझते हैं कि हम उनकी छुपी बात और उनकी सरगोशी को सुनते नहीं हैं? क्यों नहीं, और हमारे फ़िरिस्तादे उनके पास लिखते रहते हैं।

81. कहोः "अगर रहमान की कोई औलाद होती, तो सबसे पहले मैं (उसे) पूजता।

82. आसमानों और ज़मीन का रब, अर्श का रब, उससे अज़ीम व बरतर है जो वो बयान करते हैं"।

83. अच्छा छोड़ो उन्हें वो बेहूदा बहस में पड़े रहें और खेलों में लगे रहें, यहां तक कि वो अपने उस दिन से दो-चार हों जिसका उनसे वादा किया जाता है।

84. वही है जो आसमान में भी माबूद है और ज़मीन में भी माबूद है; और वह हिकमतवाला, सब कुछ जानने वाला है।

85. बड़ी ही बाबरकत है वह ज़ात जिसके इख़्तियार में बादशाही आसमानों और ज़मीन की और जो कुछ उनके दरमियान है उसकी भी; और उसी के पास उस घड़ी (क़ियामत) का इल्म है, और उसी की तरफ़ तुम लौटोगे।

86. जिन्हें वो उसके और अपने दरमियान वास्ता ठहराकर पुकारते हैं उन्हें सिफ़ारिश का कुछ इख़्तियार नहीं, बस उसे ही यह इख़्तियार है जो हक़ की गवाही दे और वो जानते हैं।

87. अगर तुम उनसे पूछो कि "उन्हें किसने पैदा किया"? तो वो ज़रूर कहेंगे कि "अल्लाह ने", तो फिर वो कहां उलटे फिरे जाते हैं?

88. और उसका कहना है कि "ऐ मेरे रब, यक़ीनन ये वो लोग हैं जो ईमान नहीं रखते"।

89. अच्छा तो उन्हें नज़र अन्दाज़ करो, और कह दो कि "सलाम है तुम्हें!" आख़िर जल्द ही वो ख़ुद जान लेंगे।

व नादौ या मालिकु लि-यक़्ज़ि अ़लैना रब्बु-क, क़ा-ल इन्नकुम् माकिसून (77)

ल-क़द् जिअ्नाकुम् बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रकुम् लिल्हक़्क़ि कारिहून (78)

अम् अब्रमू अम्रन् फ़-इन्ना मुब्रिमून (79)

अम् यह्सबू-न अन्ना ला नस्मअु सिर्रहुम् व नज्वाहुम्, बला व रुसुलुना लदैहिम् यक्तुबून (80)

क़ुल इन् का-न लिर्रह्मानि व-लदुन् फ़-अ-न अव्वलुल्-आबिदीन (81)

सुब्हा-न रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि रब्बिल्-अ़र्शि अ़म्मा यसिफ़ून (82)

फ़-ज़र्हुम् यख़ूज़ू व यल्अबू हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी यू-अ़दून (83)

व हुवल्लज़ी फ़िस्समा-इ इलाहुंव्-व फ़िल्अर्ज़ि इलाहुन्, व हुवल् हकीमुल्-अ़लीम (84)

व तबा-रकल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा व अ़िन्दहू अ़िल्मुस्सा-अ़ति व इलैहि तुर्जअून (85)

व ला यम्लिकुल्लज़ी-न यद्अू-न मिन् दूनिहिश्-शफ़ा-अ-त इल्ला मन् शहि-द बिल्हक़्क़ि व हुम् यअ्लमून (86)

व ल-इन स-अल्-तहुम् मन् ख़-ल-क़हुम् ल-यक़ूलुन्नल्लाहु फ़-अन्ना युअ्फ़कून (87)

व क़ीलिही या रब्बि इन्-न हा-उला-इ क़ौमुल्-ला युअ्मिनून ● (88)

फ़स्फ़ह् अ़न्हुम् व क़ुल सलामुन्, फ़सौ-फ़ यअ्लमून (89) ●

وَنَادَوۡا يٰمٰلِكُ لِيَقۡضِ عَلَيۡنَا رَبُّكَ ؕ
قَالَ اِنَّكُمۡ مّٰكِثُوۡنَ ۝۷۷
لَقَدۡ جِئۡنٰكُمۡ بِالۡحَقِّ وَلٰكِنَّ اَكۡثَرَكُمۡ
لِلۡحَقِّ كٰرِهُوۡنَ ۝۷۸
اَمۡ اَبۡرَمُوۡۤا اَمۡرًا فَاِنَّا مُبۡرِمُوۡنَ ۝۷۹ۚ
اَمۡ يَحۡسَبُوۡنَ اَنَّا لَا نَسۡمَعُ سِرَّهُمۡ وَنَجۡوٰٮهُمۡ ؕ
بَلٰى وَرُسُلُنَا لَدَيۡهِمۡ يَكۡتُبُوۡنَ ۝۸۰
قُلۡ اِنۡ كَانَ لِلرَّحۡمٰنِ وَلَدٌ ۖ فَاَنَا اَوَّلُ
الۡعٰبِدِيۡنَ ۝۸۱
سُبۡحٰنَ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ رَبِّ
الۡعَرۡشِ عَمَّا يَصِفُوۡنَ ۝۸۲
فَذَرۡهُمۡ يَخُوۡضُوۡا وَيَلۡعَبُوۡا حَتّٰى
يُلٰقُوۡا يَوۡمَهُمُ الَّذِىۡ يُوۡعَدُوۡنَ ۝۸۳
وَهُوَ الَّذِىۡ فِى السَّمَآءِ اِلٰهٌ وَّفِى الۡاَرۡضِ
اِلٰهٌ ؕ وَهُوَ الۡحَكِيۡمُ الۡعَلِيۡمُ ۝۸۴
وَتَبٰرَكَ الَّذِىۡ لَهٗ مُلۡكُ السَّمٰوٰتِ
وَالۡاَرۡضِ وَمَا بَيۡنَهُمَا ۚ وَعِنۡدَهٗ عِلۡمُ
السَّاعَةِ ۚ وَاِلَيۡهِ تُرۡجَعُوۡنَ ۝۸۵
وَلَا يَمۡلِكُ الَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِهِ
الشَّفَاعَةَ اِلَّا مَنۡ شَهِدَ بِالۡحَقِّ وَهُمۡ
يَعۡلَمُوۡنَ ۝۸۶
وَلَٮِٕنۡ سَاَلۡتَهُمۡ مَّنۡ خَلَقَهُمۡ لَيَقُوۡلُنَّ
اللّٰهُ فَاَنّٰى يُؤۡفَكُوۡنَ ۝۸۷ۙ
وَقِيۡلِهٖ يٰرَبِّ اِنَّ هٰٓؤُلَۤاءِ قَوۡمٌ
لَّا يُؤۡمِنُوۡنَ ۝۸۸ۘ
فَاصۡفَحۡ عَنۡهُمۡ وَقُلۡ سَلٰمٌ ؕ فَسَوۡفَ
يَعۡلَمُوۡنَ ۝۸۹

सूरह अद-दुख़ान मक्की

(आयतें 59, रुकूआत 3)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. हा. मीम.।

2. गवाह है वाज़ेह किताब।

3-6. बेशक हमने उसे एक मुबारक रात में नाज़िल किया है — यक़ीनन हम ख़बरदार करते रहनेवाले हैं — उसमें हर पुर हिक्मत मुआमले का फ़ैसला व वज़ाहत हमारे यहां से हुक्म के तौरपर सादिर होता है। बेशक रसूलों को भेजनेवाले हम ही हैं — तुम्हारे रब की रहमत के बाइस — यक़ीनन वही सब कुछ सुननेवाला, जाननेवाला है,

7. आसमानों और ज़मीन का रब, और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है उसका भी, अगर तुम यक़ीन रखते हो।

8. उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वही जिलाता और मारता है; तुम्हारा रब और तुम्हारे अगले बाप-दादा का रब है।

9. बल्कि वो शक में पड़े खेल रहे हैं।

10-11. अच्छा तो उस दिन का इन्तिज़ार करो जब आसमान सरीह धुआं लाएगा, वह लोगों को ढांक लेगा; यह है दर्दनाक अज़ाब।

12. "हमारे रब! हमपर से अज़ाब हटा दे; हम ईमान लाते हैं"।

13-14. अब उनके लिए होश में आने का मौक़ा कहां बाक़ी रहा, जबकि उनका हाल तो यह है कि उनके पास खोल-खोलकर बयान करनेवाले रसूल आया था, फिर उन्होंने उसकी तरफ़ से मुंह मोड़ लिया और कहने लगे, "यह तो एक सिखाया पढ़ाया दीवाना है"।

15. "इसमें शुबह नहीं कि अगर हम अज़ाब हटा दें तो तुम फिर वही करोगे जो करते रहे हो"।

16. याद रखो जिस दिन हम बड़ी पकड़ पकड़ेंगे, तो यक़ीनन हम इन्तिक़ाम लेकर रहेंगे।

17-18. इनसे पहले हम फ़िरऔन की क़ौम को आज़माइश में डाल चुके हैं, जबकि उनके पास एक निहायत शरीफ़ रसूल आया कि "तुम अल्लाह के बन्दों को मेरे हवाले कर दो; यक़ीनन मैं तुम्हारे लिए एक क़ाबिल-ए-एतिमाद रसूल हूं।

---

44 सूरतुद-दुख़ानि
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 1495
अक्षर, 349 शब्द, 59 आयतें और 3
रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हा-मीम् (1)

वल्-किताबिल्-मुबीन (2)

इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लै-लतिम् मुबा-र-कतिन् इन्ना कुन्ना मुन्ज़िरीन (3)

फ़ीहा युफ़रक़ु कुल्लु अम्रिन् हकीम (4)

अम्रम् मिन् अिन्दिना, इन्ना कुन्ना मुर्सिलीन (5)

रह्म-तम् मिर्रब्बि-क इन्नहू हुवस्समीअुल्-अलीम (6)

रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमा ● इन् कुन्तुम् मूक़िनीन (7)

ला इला-ह इल्ला हु-व युह्यी व युमीतु, रब्बुकुम् व रब्बु आबा-इकुमुल्-अव्वलीन (8)

बल् हुम् फ़ी शक्किंय्-यल्-अबून (9)

फ़र्तक़िब् यौ-म तअ्तिस्समा-उ बिदुख़ानिम्-मुबीन (10)

यग़्शन्ना-स, हाज़ा अज़ाबुन् अलीम (11)

रब्बनक्शिफ़् अन्नल्-अज़ा-ब इन्ना मुअ्मिनून (12)

अन्ना लहुमुज़्ज़िक्रा व क़द् जा-अहुम् रसूलुम्-मुबीन (13)

सुम्-म तवल्लौ अन्हु व क़ालू मु-अल्लमुम्-मज्नून ● (14)

इन्ना काशिफ़ुल्-अज़ाबि क़लीलन् इन्नकुम् आ-इदून ● (15)

यौ-म नब्तिशुल् बत्-शतल्-कुब्रा इन्ना मुन्तक़िमून (16)

व ल-क़द् फ़तन्ना क़ब्लहुम् क़ौ-म फ़िरऔ-न व जा-अहुम् रसूलुन् करीम (17)

अन् अद्दू इलय्-य अिबादल्लाहि, इन्नी लकुम् रसूलुन् अमीन (18)

سُورَةُ الدُّخَانِ مَكِّيَّةٌ آيَاتُهَا ٥٩ رُكُوعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

حٰمٓ (١) وَالْكِتٰبِ الْمُبِيْنِ (٢)
اِنَّآ اَنْزَلْنٰهُ فِيْ لَيْلَةٍ مُّبٰرَكَةٍ اِنَّا
كُنَّا مُنْذِرِيْنَ (٣)
فِيْهَا يُفْرَقُ كُلُّ اَمْرٍ حَكِيْمٍ (٤)
اَمْرًا مِّنْ عِنْدِنَا ۭ اِنَّا كُنَّا مُرْسِلِيْنَ (٥)
رَحْمَةً مِّنْ رَّبِّكَ ۭ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ (٦)
رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا ۘ
اِنْ كُنْتُمْ مُّوْقِنِيْنَ (٧)
لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ يُحْيٖ وَيُمِيْتُ ۭ رَبُّكُمْ
وَرَبُّ اٰبَاۗىِٕكُمُ الْاَوَّلِيْنَ (٨)
بَلْ هُمْ فِيْ شَكٍّ يَّلْعَبُوْنَ (٩)
فَارْتَقِبْ يَوْمَ تَاْتِي السَّمَاۗءُ بِدُخَانٍ مُّبِيْنٍ (١٠)
يَّغْشَى النَّاسَ ۭ هٰذَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ (١١)
رَبَّنَا اكْشِفْ عَنَّا الْعَذَابَ اِنَّا مُؤْمِنُوْنَ (١٢)
اَنّٰى لَهُمُ الذِّكْرٰى وَقَدْ جَاۗءَهُمْ رَسُوْلٌ
مُّبِيْنٌ (١٣)
ثُمَّ تَوَلَّوْا عَنْهُ وَقَالُوْا مُعَلَّمٌ مَّجْنُوْنٌ (١٤)
اِنَّا كَاشِفُوا الْعَذَابِ قَلِيْلًا اِنَّكُمْ
عَاۗىِٕدُوْنَ (١٥)
يَوْمَ نَبْطِشُ الْبَطْشَةَ الْكُبْرٰى ۚ اِنَّا
مُنْتَقِمُوْنَ (١٦)
وَلَقَدْ فَتَنَّا قَبْلَهُمْ قَوْمَ فِرْعَوْنَ وَجَاۗءَهُمْ
رَسُوْلٌ كَرِيْمٌ (١٧)
اَنْ اَدُّوْٓا اِلَيَّ عِبَادَ اللّٰهِ ۭ اِنِّىْ لَكُمْ
رَسُوْلٌ اَمِيْنٌ (١٨)

19. और अल्लाह के मुक़ाबले में सरकशी न करो, मैं तुम्हारे पास एक वाज़ेह सनद (दलील) लेकर आया हूं,

20. और मैं इससे अपने रब और तुम्हारे रब की पनाह ले चुका हूं कि तुम मुझे संगसार करो।

21. लेकिन अगर तुम मेरी बात नहीं मानते तो मुझसे अलग हो जाओ!"

22. आख़िरकार उसने अपने रब को पुकारा कि "ये मुजरिम लोग हैं"।

23. "अच्छा तुम मेरे बन्दों को लेकर रातों रात चले जाओ; यक़ीनन तुम्हारा पीछा किया जाएगा।

24. और दरिया को पुर सुकून छोड़ दो; वो तो एक लश्कर हैं डूब जानेवाले"।

25–27. वो छोड़ गए कितने ही बाग़ और चश्मे, और खेतियां और उमदा क़ियाम गाहें। और ऐश व इशरत के सामान जिनमें वो मज़े कर रहे थे!

28. हम ऐसा ही मुआमला करते हैं; और उन चीज़ों का वारिस हमने दूसरे लोगों को बनाया।

29. फिर न तो आसमान और ज़मीन उनपर रोए और न उन्हें मुहलत ही मिली;

30–31. इसी तरह हमने बनी इसराईल को नजात दी ज़िल्लत के अज़ाब से यानी फ़िरऔन से, यक़ीनन वह हुदूद से निकल जानेवालों में से बड़ा ही सरकश था;

32. और हमने जानते हुए उन्हें सारे जहान के मुक़ाबले में बरगुज़ीदा किया।

33. और हमने उन्हें अपने अहकाम की बदौलत वह चीज़ (उरूज) दी जिसमें सरीह आज़माइश थी।

34–35. यक़ीनन ये लोग कहते हैं कि, "बस यह हमारी पहली मौत ही है; हम दोबारा उठाए जाने वाले नहीं हैं।

36. तो ले आओ हमारे बाप-दादा को, अगर तुम सच्चे हो"!

37. क्या वो बेहतर हैं या क़ौम-ए-तुब्बअ, और वो लोग जो उनसे पहले

व अल्-ला तअ्लू अ़लल्लाहि, इन्नी आतीकुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन (19)

व इन्नी अ़ुज़्तु बिरब्बी व रब्बिकुम् अन् तर्जुमून (20)

व इल्लम् तुअ्मिनू ली फ़अ्तज़िलून (21)

फ़-दआ़ रब्बहू अन्-न हाउला-इ क़ौमुम्-मुज्रिमून ● (22)

फ़-अस्रि बिअ़िबादी लैलन् इन्नकुम् मुत्त-बअ़ून (23)

वत्रुकिल्-बह्-र रह्वन्, इन्नहुम् जुन्दुम् मुग़्-रक़ून (24)

कम् त-रकू मिन् जन्नातिंव्-व अ़ुयून (25)

व ज़ुरूअ़िंव्-व मक़ामिन् करीम (26)

व नअ़्-मतिन् कानू फ़ीहा फ़ाकिहीन (27)

कज़ालि-क, व औरस्नाहा क़ौमन् आ-ख़रीन (28)

फ़मा ब-कत् अ़लैहिमुस्समा-उ वल्अर्ज़ु व मा कानू मुन्ज़रीन (29)●

व ल-क़द् नज्जैना बनी इस्राई-ल मिनल्-अ़ज़ाबिल्-मुहीन (30)

मिन् फ़िर्औ़-न, इन्नहू का-न आ़लि-यम् मिनल्-मुस्रिफ़ीन (31)

व ल-क़दिख़्तर्नाहुम् अ़ला अ़िल्मिन् अ़लल्-आ़लमीन (32)

व आतैनाहुम् मिनल्-आयाति मा फ़ीहि बलाउम्-मुबीन (33)

इन्-न हाउला-इ ल-यक़ूलून (34)

इन् हि-य इल्ला मौततुनल्-ऊला व मा नह्नु बिमुन्शरीन (35)

फ़अ्तू बिआबा-इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (36)

अ-हुम् ख़ैरुन् अम् क़ौमु तुब्बअ़िंव्-वल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, अह्लक्नाहुम् इन्नहुम् कानू

وَّاَنْ لَّا تَعْلُوْا عَلَى اللّٰهِ ۚ اِنِّیْۤ اٰتِیْكُمْ بِسُلْطٰنٍ مُّبِیْنٍ ﴿۱۹﴾

وَاِنِّیْ عُذْتُ بِرَبِّیْ وَرَبِّكُمْ اَنْ تَرْجُمُوْنِ ﴿۲۰﴾

وَاِنْ لَّمْ تُؤْمِنُوْا لِیْ فَاعْتَزِلُوْنِ ﴿۲۱﴾

فَدَعَا رَبَّهٗۤ اَنَّ هٰۤؤُلَآءِ قَوْمٌ مُّجْرِمُوْنَ ﴿۲۲﴾

فَاَسْرِ بِعِبَادِیْ لَیْلًا اِنَّكُمْ مُّتَّبَعُوْنَ ﴿۲۳﴾

وَاتْرُكِ الْبَحْرَ رَهْوًا ؕ اِنَّهُمْ جُنْدٌ مُّغْرَقُوْنَ ﴿۲۴﴾

كَمْ تَرَكُوْا مِنْ جَنّٰتٍ وَّعُیُوْنٍ ﴿۲۵﴾

وَّزُرُوْعٍ وَّمَقَامٍ كَرِیْمٍ ﴿۲۶﴾

وَّنَعْمَةٍ كَانُوْا فِیْهَا فٰكِهِیْنَ ﴿۲۷﴾

كَذٰلِكَ ۫ وَاَوْرَثْنٰهَا قَوْمًا اٰخَرِیْنَ ﴿۲۸﴾

فَمَا بَكَتْ عَلَیْهِمُ السَّمَآءُ وَالْاَرْضُ وَمَا كَانُوْا مُنْظَرِیْنَ ﴿۲۹﴾

وَلَقَدْ نَجَّیْنَا بَنِیْۤ اِسْرَآءِیْلَ مِنَ الْعَذَابِ الْمُهِیْنِ ﴿۳۰﴾

مِنْ فِرْعَوْنَ ؕ اِنَّهٗ كَانَ عَالِیًا مِّنَ الْمُسْرِفِیْنَ ﴿۳۱﴾

وَلَقَدِ اخْتَرْنٰهُمْ عَلٰى عِلْمٍ عَلَى الْعٰلَمِیْنَ ﴿۳۲﴾

وَاٰتَیْنٰهُمْ مِّنَ الْاٰیٰتِ مَا فِیْهِ بَلٰٓؤٌا مُّبِیْنٌ ﴿۳۳﴾

اِنَّ هٰۤؤُلَآءِ لَیَقُوْلُوْنَ ﴿۳۴﴾

اِنْ هِیَ اِلَّا مَوْتَتُنَا الْاُوْلٰى وَمَا نَحْنُ بِمُنْشَرِیْنَ ﴿۳۵﴾

فَاْتُوْا بِاٰبَآىِٕنَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ﴿۳۶﴾

اَهُمْ خَیْرٌ اَمْ قَوْمُ تُبَّعٍ ۙ وَّالَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ اَهْلَكْنٰهُمْ ۫ اِنَّهُمْ كَانُوْا

गुज़रे हैं? हमने उन्हें हलाक कर दिया, यक़ीनन वो मुजरिम थे।

38. और हमने आसमानों और ज़मीन को, और जो कुछ उनके दरमियान है खेल नही बनाया;

39. हमने उन्हें बरहक़ पैदा किया; मगर उनमें से अकसर लोग जानते नहीं।

40. यक़ीनन फ़ैसले का दिन उन सब का मुक़र्रर वक़्त है।

41-42. जिस दिन कोई अज़ीज़ क़रीब अपने किसी अज़ीज़ क़रीब के कुछ काम न आएगा और न उन्हें कोई मदद पहुंचेगी सिवाय उसके जिसपर अल्लाह रहम फ़रमाए; यक़ीनन वह ज़बरदस्त, निहायत रहमवाला है।

43-46. बेशक ज़क़्क़ूम का दरख़्त गुनहगार का खाना होगा तेल की तलछट के मानिन्द, वह पेटों में खौलता होगा जैसे गर्म पानी खौलता है।

47. "पकड़ो उसे, और उसे भड़कती हुई आग के बीच तक घसीट ले जाओ,

48. फिर उसके सर पर खौलते हुए पानी का अज़ाब उन्डेल दो!"

49. "मज़ा चख, तू तो बड़ा ज़बरदस्त, शरीफ़ व इज़्ज़तदार है।

50. यह तो वही चीज़ है जिसके बारे में तुम शक और झगड़ा करते थे"।

51. बेशक डर रखनेवाले बेख़ौफ़ी की जगह होंगे,

52-53. बाग़ों और चश्मों में बारीक और दबीज़ रेशम के लिबास पहने हुए, एक-दूसरे के आमने-सामने मौजूद होंगे।

54. ऐसा ही उनके साथ मुआमला होगा; और हम कुशादा चश्म हूरों से उनके जोड़े लगाएंगे,

55. वो वहां बेख़ौफ़ी के साथ हर एक लज़ीज़ फल तलब करते होंगे।

56. वहां वो मौत का मज़ा कभी न चखेंगे, बस पहली मौत जो हुई सो हुई, और वह उनको भड़कती हुई आग के अज़ाब से बचा लेगा।

मुज्रिमीन (37)

व मा ख़लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा लाअ़िबीन (38)

मा ख़लक़्नाहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (39)

इन्-न यौमल्-फ़स्लि मीक़ातुहुम् अज्मअ़ीन (40)

यौ-म ला युग़्नी मौलन् अ़म्मौलन् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून (41)

इल्ला मर्रहिमल्लाहु, इन्नहु हुवल् अ़ज़ीज़ुर्रहीम (42) ●

इन्-न श-ज-रतज़्ज़क़्क़ूम (43)

तआ़मुल्-असीम (44)

कल्मुह्लि यग़्ली फ़िल्बुतून (45)

क-ग़ल्यिल्-हमीम (46)

ख़ुज़ूहु फ़अ़्तिलूहु इला सवाइल्-जहीम (47)

सुम्-म सुब्बू फ़ौ-क़ रअ्सिही मिन् अ़ज़ाबिल्-हमीम (48)

ज़ुक़् इन्न-क अन्तल्-अ़ज़ीज़ुल्-करीम (49)

इन्-न हाज़ा मा कुन्तुम् बिही तम्तरून (50)

इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी मक़ामिन् अमीन (51)

फ़ी जन्नातिंव्-व अ़ुयून (52)

यल्बसू-न मिन् सुन्दुसिंव्-व इस्तब्रक़िम् मु-तक़ाबिलीन (53)

कज़ालि-क, व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् अ़ीन (54)

यद्अू-न फ़ीहा बिकुल्लि फ़ाकि-हतिन् आमिनीन (55)

ला यज़ूक़ू-न फ़ीहल्मौ-त इल्लल्-मौ-ततल्-ऊला व वक़ाहुम् अ़ज़ाबल्-जहीम (56)

مُجۡرِمِيۡنَ ۝٣٧

وَمَا خَلَقۡنَا السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضَ وَمَا بَيۡنَهُمَا لٰعِبِيۡنَ ۝٣٨

مَا خَلَقۡنٰهُمَاۤ اِلَّا بِالۡحَقِّ وَلٰـكِنَّ اَكۡثَرَهُمۡ لَا يَعۡلَمُوۡنَ ۝٣٩

اِنَّ يَوۡمَ الۡفَصۡلِ مِيۡقَاتُهُمۡ اَجۡمَعِيۡنَ ۝٤٠

يَوۡمَ لَا يُغۡنِىۡ مَوۡلًى عَنۡ مَّوۡلًى شَيۡـًٔا وَّلَا هُمۡ يُنۡصَرُوۡنَ ۝٤١

اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ اللّٰهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الۡعَزِيۡزُ الرَّحِيۡمُ ۝٤٢

اِنَّ شَجَرَتَ الزَّقُّوۡمِ ۝٤٣

طَعَامُ الۡاَثِيۡمِ ۝٤٤

كَالۡمُهۡلِ ۛۚ يَغۡلِىۡ فِى الۡبُطُوۡنِ ۝٤٥

كَغَلۡىِ الۡحَمِيۡمِ ۝٤٦

خُذُوۡهُ فَاعۡتِلُوۡهُ اِلٰى سَوَآءِ الۡجَحِيۡمِ ۝٤٧

ثُمَّ صُبُّوۡا فَوۡقَ رَاۡسِهٖ مِنۡ عَذَابِ الۡحَمِيۡمِ ۝٤٨

ذُقۡ ۚ اِنَّكَ اَنۡتَ الۡعَزِيۡزُ الۡكَرِيۡمُ ۝٤٩

اِنَّ هٰذَا مَا كُنۡتُمۡ بِهٖ تَمۡتَرُوۡنَ ۝٥٠

اِنَّ الۡمُتَّقِيۡنَ فِىۡ مَقَامٍ اَمِيۡنٍ ۝٥١

فِىۡ جَنّٰتٍ وَّعُيُوۡنٍ ۝٥٢

يَّلۡبَسُوۡنَ مِنۡ سُنۡدُسٍ وَّاِسۡتَبۡرَقٍ مُّتَقٰبِلِيۡنَ ۝٥٣

كَذٰلِكَ وَزَوَّجۡنٰهُمۡ بِحُوۡرٍ عِيۡنٍ ۝٥٤

يَدۡعُوۡنَ فِيۡهَا بِكُلِّ فَاكِهَةٍ اٰمِنِيۡنَ ۝٥٥

لَا يَذُوۡقُوۡنَ فِيۡهَا الۡمَوۡتَ اِلَّا الۡمَوۡتَةَ الۡاُوۡلٰى ۚ وَوَقٰٮهُمۡ عَذَابَ الۡجَحِيۡمِ ۝٥٦

57. यह सब तुम्हारे रब के ख़ास फ़ज़्ल से होगा; वही बड़ी कामयाबी है।

58. हमने तो इस (कुरआन) को तुम्हारी ज़बान में आसान कर दिया है ताकि वो नसीहत हासिल करें।

59. अच्छा तुम भी इन्तिज़ार करो; वो भी मुन्तज़िर हैं।

सूरह अल-जासिया मक्की

(आयतें 37, रुकूआत 4)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. हा. मीम.।

2. इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की तरफ़ से है; जो निहायत ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है।

3. बेशक आसमानों और ज़मीन में अहले ईमान के लिए बहुत सी निशानियां हैं;

4. और तुम्हारी तख़लीक़ में, और उन हैवानात में भी जिन्हें वह फैलाता रहता है, यक़ीन करनेवाले लोगों के लिए निशानियां हैं।

5. और रात व दिन के फ़र्क़ व इख़्तिलाफ़ में भी, और उस रिज़्क़ में भी जिसे अल्लाह ने आसमान से उतारा फिर उसके ज़रिए से ज़मीन को उसके मुर्दा हो जाने के बाद ज़िन्दा किया, और हवाओं की गर्दिश में भी बहुत सी निशानियां हैं उन लोगों के लिए जो अक़्ल से काम लें।

6. यह अल्लाह की आयतें हैं। हक़ को लिए हुए उन्हें हम तुमको सुना रहे हैं; अब आख़िर अल्लाह और उसकी आयतों के बाद और कौन सी बात है जिसपर वो ईमान लाएंगे?

7. तबाही है हर झूट घड़नेवाले गुनहगार के लिए,

8. जो अल्लाह की उन आयतों को सुनता है जो उसे पढ़कर सुनाई जाती हैं, फिर तकब्बुर करता हुआ अपनी रविश पर अड़ा रहता है, गोया उसने उनको सुना ही नहीं, पस उसे दर्दनाक अज़ाब की ख़ुशख़बरी सुना दो।

9. जब हमारी आयतों में से उसके इल्म में कोई बात आती है, तो वह उसका मज़ाक़ बना लेता है; ऐसे लोगों के लिए रुसवाकुन अज़ाब है।

10. उनके आगे जहन्नम है; जो उन्होंने कमाया वह उनके कुछ काम न आएगा, और न यही कि उन्होंने अल्लाह को छोड़कर अपने हामी व सरपरस्त ठहरा रखे हैं; उनके लिए तो बड़ा अज़ाब है।

फ़ज़्लम्-मिर्रब्बि-क, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अज़ीम (57)

फ़-इन्नमा यस्सर्नाहु बिलिसानि-क लअ़ल्लहुम् य-तज़क्करून (58)

फ़र्-तक़िब्-इन्नहुम् मुर्-तक़िबून (59) ●

45 सूरतुल्-जासि-यति
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 2131
अक्षर, 492 शब्द, 37 आयतें और 4
रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हा-मीम् (1) तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् अ़ज़ीज़िल्-हकीम (2)

इन्-न फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि लआयातिल्-लिल्-मुअ्मिनीन (3)

व फ़ी ख़ल्क़िकुम् व मा यबुस्सु मिन् दाब्बतिन् आयातुल्-लिक़ौमिंय्-यूक़िनून (4)

वख़्तिलाफ़िल्लैलि वन्नहारि व मा अन्ज़लल्लाहु मिनस्समा-इ मिर्रिज़्क़िन् फ़-अह्या बिहिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा व तस्रीफ़िर्-रियाहि आयातुल् लिक़ौमिंय्-यअ्क़िलून (5)

तिल्-क आयातुल्लाहि नत्लूहा अ़लै-क बिलहक़्क़ि फ़बि-अय्यि हदीसिम्-बअ्दल्लाहि व आयातिही युअ्मिनून (6)

वैलुल-लिकुल्लि अफ़्फ़ाकिन् असीम (7)

यस्-मअु आयातिल्लाहि तुत्ला अ़लैहि सुम्-म युसिर्रु मुस्तक्बिरन् क-अल्लम् यस्मअ्हा फ़-बश्शिर्हु बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (8)

व इज़ा अ़लि-म मिन् आयातिना शै-अ-नित्त-ख़-ज़हा हुज़ुवन्, उलाइ-क लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन (9)

मिंव्वरा-इहिम् जहन्नमु व ला युग़्नी अ़न्हुम् मा क-सबू शैअंव्-व ला मत्त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि औलिया-अ व लहुम् अ़ज़ाबुन् अ़ज़ीम (10)

فَضۡلًا مِّنۡ رَّبِّكَ ذٰلِكَ هُوَ الۡفَوۡزُ الۡعَظِيۡمُ ۝۵۷
فَاِنَّمَا يَسَّرۡنٰهُ بِلِسَانِكَ لَعَلَّهُمۡ
يَتَذَكَّرُوۡنَ ۝۵۸
فَارۡتَقِبۡ اِنَّهُمۡ مُّرۡتَقِبُوۡنَ ۝۵۹

سُوۡرَةُ الۡجَاثِيَةِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ۳۷ رُكُوۡعَاتُهَا ۴

بِسۡمِ اللّٰهِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِيۡمِ

حٰمٓ ۝۱ تَنۡزِيۡلُ الۡكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الۡعَزِيۡزِ
الۡحَكِيۡمِ ۝۲
اِنَّ فِى السَّمٰوٰتِ وَالۡاَرۡضِ لَاٰيٰتٍ
لِّلۡمُؤۡمِنِيۡنَ ۝۳
وَفِىۡ خَلۡقِكُمۡ وَمَا يَبُثُّ مِنۡ دَآبَّةٍ
اٰيٰتٌ لِّقَوۡمٍ يُّوۡقِنُوۡنَ ۝۴
وَاخۡتِلَافِ الَّيۡلِ وَالنَّهَارِ وَمَآ اَنۡزَلَ
اللّٰهُ مِنَ السَّمَآءِ مِنۡ رِّزۡقٍ فَاَحۡيَا بِهِ
الۡاَرۡضَ بَعۡدَ مَوۡتِهَا وَتَصۡرِيۡفِ
الرِّيٰحِ اٰيٰتٌ لِّقَوۡمٍ يَّعۡقِلُوۡنَ ۝۵
تِلۡكَ اٰيٰتُ اللّٰهِ نَتۡلُوۡهَا عَلَيۡكَ بِالۡحَقِّ
فَبِاَىِّ حَدِيۡثٍۢ بَعۡدَ اللّٰهِ وَاٰيٰتِهٖ يُؤۡمِنُوۡنَ ۝۶
وَيۡلٌ لِّكُلِّ اَفَّاكٍ اَثِيۡمٍ ۝۷
يَّسۡمَعُ اٰيٰتِ اللّٰهِ تُتۡلٰى عَلَيۡهِ ثُمَّ يُصِرُّ
مُسۡتَكۡبِرًا كَاَنۡ لَّمۡ يَسۡمَعۡهَا
فَبَشِّرۡهُ بِعَذَابٍ اَلِيۡمٍ ۝۸
وَاِذَا عَلِمَ مِنۡ اٰيٰتِنَا شَيۡـئَا اۨتَّخَذَهَا
هُزُوًا اُولٰٓئِكَ لَهُمۡ عَذَابٌ مُّهِيۡنٌ ۝۹
مِنۡ وَّرَآئِهِمۡ جَهَنَّمُ وَلَا يُغۡنِىۡ عَنۡهُمۡ
مَّا كَسَبُوۡا شَيۡـئًا وَّلَا مَا اتَّخَذُوۡا مِنۡ
دُوۡنِ اللّٰهِ اَوۡلِيَآءَ وَلَهُمۡ عَذَابٌ عَظِيۡمٌ ۝۱۰

11. यह सरासर हिदायत है; और जिन लोगों ने अपने रब की आयतों का इनकार किया, उनके लिए हिला देने वाला दर्दनाक अज़ाब है।

12. वह अल्लाह ही है जिसने समुंदर को तुम्हारे लिए साज़गार बना दिया है, ताकि उसमें उसके हुक्म से कश्तियां चलें और ताकि तुम उसका फ़ज़्ल तलाश करो; और इसलिए कि तुम शुक्रगुज़ार हो।

13. जो चीज़ें आसमानों में हैं और जो ज़मीन में हैं उसने उन सब को अपनी तरफ़ से तुम्हारी ख़िदमत में लगा रखा है। यक़ीनन इसमें उन लोगों के लिए निशानियां हैं जो ग़ौर व फ़िक्र से काम लेते हैं।

14. जो लोग ईमान लाए उनसे कह दो कि वो उन लोगों से दरगुज़र करें जो ख़ुदा के दिनों की तवक़्क़ो नहीं रखते, ताकि वह उन लोगों को उनकी अपनी कमाई का बदला दे।

15. जो कोई नेकी करता है, तो अपने ही लिए और जो बुराई करता है, तो उसका वबाल उसी पर आएगा; फिर तुम अपने रब ही की तरफ़ लौटाए जाओगे।

16. यक़ीनन हमने बनी इसराईल को किताब, और हुक्म और नुबूवत अता की थी, और हमने उन्हें बतौरे रिज़्क़ पाकीज़ा चीज़ें अता कीं, और उन्हें सारे जहान पर फ़ज़ीलत बख़्शी।

17. और हमने उन्हें इस मुआमले से मुतअल्लिक़ वाज़ेह अहकामात अता किए; फिर जो इख़्तिलाफ़ भी उन्होंने किया वह इसके बाद ही किया कि उनके पास इल्म आ चुका था, इस सबब से कि वो बाहम एक-दूसरे पर ज़्यादती करना चाहते थे; यक़ीनन तुम्हारा रब क़ियामत के रोज़ उनके दरमियान उन चीज़ों के बारे में जिनमें वो इख़्तिलाफ़ करते रहे हैं फ़ैसला कर देगा।

18. फिर हमने तुम्हें इस मुआमले में एक शाहराह पर कर दिया; लिहाज़ा तुम उसी पर चलो, और उनकी ख़्वाहिशात की पैरवी न करना जो इल्म नहीं रखते।

19. वो अल्लाह से बचाने में तुम्हारे हरगिज़ कुछ काम नहीं आ सकते। यक़ीनन ज़ालिम लोग एक-दूसरे के साथी हैं; और मुत्तक़ियों का साथी अल्लाह है।

20. यह बसीरत की रौशनियां हैं, लोगों के लिए, और हिदायत व रहमत है उन लोगों के लिए जो यक़ीन करें।

हाज़ा हुदन् वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयाति रब्बिहिम् लहुम अज़ाबुम् मिर्रिज्ज़िन् अलीम (11) •

अल्लाहुल्लज़ी सख़्ख़-र लकुमुल-बह्-र लितज्रि-यल्-फ़ुल्कु फ़ीहि बिअम्रिही व लि-तब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिही व लअ़ल्लकुम् तश्कुरून (12)

व सख़्ख़-र लकुम् मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़म्-मिन्हु, इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-आयातिल् लिक़ौमिंय्य-तफ़क्करून (13)

कुल् लिल्लज़ी-न आमनू यग्फ़िरू लिल्लज़ी-न ला यर्जू-न अय्यामल्लाहि लि-यज्ज़ि-य क़ौमम्-बिमा कानू यक्सिबून (14)

मन् अ़मि-ल सालिहन् फ़लिनफ़्सिही व मन् असा-अ फ़-अ़लैहा सुम्-म इला रब्बिकुम् तुर्-जअ़ून (15)

व ल-क़द् आतैना बनी इस्राईलल्-किता-ब वल्-हुक्-म वन्नुबुव्व-त व रज़क़्नाहुम् मिनत्तय्यिबाति व फ़ज़्ज़ल्नाहुम् अ़लल्-आ़लमीन (16)

व आतैनाहुम् बय्यिनातिम् मिनल्-अम्रि फ़-मख़्त-लफ़ू इल्ला मिम्बअ़्दि मा जा-अहुमुल्-अ़िल्मु बग़्यम्-बैनहुम्, इन्-न रब्ब-क यक़्ज़ी बैनहुम् यौमल्-क़ियामति फ़ीमा कानू फ़ीहि यख़्तलिफ़ून (17)

सुम्-म जअ़ल्ना-क अ़ला शरी-अ़तिम्-मिनल्-अम्रि फ़त्तबिअ़्हा व ला तत्तबिअ़् अह्वा-अल्लज़ी-न ला यअ़्लमून (18)

इन्नहुम् लंय्युग़नू अ़न्-क मिनल्लाहि शैअन्, व इन्नज़्ज़ालिमी-न बअ़्ज़ुहुम् औलिया-उ बअ़्ज़िन् वल्लाहु वलिय्युल्-मुत्तक़ीन (19)

हाज़ा बसा-इरु लिन्नासि व हुदंव्-व रह्मतुल्-लिक़ौमिंय्-यूक़िनून (20)

هٰذَا هُدًى ۚ وَالَّذِينَ كَفَرُوا بِآيَاتِ
ع رَبِّهِمْ لَهُمْ عَذَابٌ مِّن رِّجْزٍ أَلِيمٌ ۝١١
اللَّهُ الَّذِي سَخَّرَ لَكُمُ الْبَحْرَ لِتَجْرِيَ
الْفُلْكُ فِيهِ بِأَمْرِهِ وَلِتَبْتَغُوا مِن
فَضْلِهِ وَلَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ۝١٢
وَسَخَّرَ لَكُم مَّا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي
الْأَرْضِ جَمِيعًا مِّنْهُ ۚ إِنَّ فِي ذَٰلِكَ
لَآيَاتٍ لِّقَوْمٍ يَتَفَكَّرُونَ ۝١٣
قُل لِّلَّذِينَ آمَنُوا يَغْفِرُوا لِلَّذِينَ لَا
يَرْجُونَ أَيَّامَ اللَّهِ لِيَجْزِيَ قَوْمًا بِمَا
كَانُوا يَكْسِبُونَ ۝١٤
مَنْ عَمِلَ صَالِحًا فَلِنَفْسِهِ ۖ وَمَنْ أَسَاءَ
فَعَلَيْهَا ۖ ثُمَّ إِلَىٰ رَبِّكُمْ تُرْجَعُونَ ۝١٥
وَلَقَدْ آتَيْنَا بَنِي إِسْرَائِيلَ الْكِتَابَ
وَالْحُكْمَ وَالنُّبُوَّةَ وَرَزَقْنَاهُم مِّنَ
الطَّيِّبَاتِ وَفَضَّلْنَاهُمْ عَلَى الْعَالَمِينَ ۝١٦
وَآتَيْنَاهُم بَيِّنَاتٍ مِّنَ الْأَمْرِ ۖ فَمَا اخْتَلَفُوا
إِلَّا مِن بَعْدِ مَا جَاءَهُمُ الْعِلْمُ بَغْيًا
بَيْنَهُمْ ۚ إِنَّ رَبَّكَ يَقْضِي بَيْنَهُمْ يَوْمَ
الْقِيَامَةِ فِيمَا كَانُوا فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۝١٧
ثُمَّ جَعَلْنَاكَ عَلَىٰ شَرِيعَةٍ مِّنَ الْأَمْرِ فَاتَّبِعْهَا
وَلَا تَتَّبِعْ أَهْوَاءَ الَّذِينَ لَا يَعْلَمُونَ ۝١٨
إِنَّهُمْ لَن يُغْنُوا عَنكَ مِنَ اللَّهِ شَيْئًا ۚ
وَإِنَّ الظَّالِمِينَ بَعْضُهُمْ أَوْلِيَاءُ
بَعْضٍ ۖ وَاللَّهُ وَلِيُّ الْمُتَّقِينَ ۝١٩
هَٰذَا بَصَائِرُ لِلنَّاسِ وَهُدًى وَرَحْمَةٌ
لِّقَوْمٍ يُوقِنُونَ ۝٢٠

اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ اجْتَرَحُوا السَّيِّاٰتِ
اَنْ نَّجْعَلَهُمْ كَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ ۙ سَوَآءً مَّحْيَاهُمْ وَمَمَاتُهُمْ ؕ
سَآءَ مَا يَحْكُمُوْنَ ﴿٢١﴾
وَخَلَقَ اللّٰهُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ
وَلِتُجْزٰى كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ وَهُمْ
لَا يُظْلَمُوْنَ ﴿٢٢﴾
اَفَرَءَيْتَ مَنِ اتَّخَذَ اِلٰهَهٗ هَوٰىهُ وَاَضَلَّهُ
اللّٰهُ عَلٰى عِلْمٍ وَّخَتَمَ عَلٰى سَمْعِهٖ وَقَلْبِهٖ
وَجَعَلَ عَلٰى بَصَرِهٖ غِشٰوَةً ؕ فَمَنْ يَّهْدِيْهِ
مِنْۢ بَعْدِ اللّٰهِ ؕ اَفَلَا تَذَكَّرُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَقَالُوْا مَا هِىَ اِلَّا حَيَاتُنَا الدُّنْيَا نَمُوْتُ
وَنَحْيَا وَمَا يُهْلِكُنَآ اِلَّا الدَّهْرُ ۚ وَمَا لَهُمْ
بِذٰلِكَ مِنْ عِلْمٍ ۚ اِنْ هُمْ اِلَّا يَظُنُّوْنَ ﴿٢٤﴾
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ مَّا كَانَ
حُجَّتَهُمْ اِلَّآ اَنْ قَالُوا ائْتُوْا بِاٰبَآئِنَآ
اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٥﴾
قُلِ اللّٰهُ يُحْيِيْكُمْ ثُمَّ يُمِيْتُكُمْ ثُمَّ
يَجْمَعُكُمْ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ لَا رَيْبَ فِيْهِ
وَلٰكِنَّ اَكْثَرَ النَّاسِ لَا يَعْلَمُوْنَ ﴿٢٦﴾
وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَيَوْمَ
تَقُوْمُ السَّاعَةُ يَوْمَئِذٍ يَّخْسَرُ الْمُبْطِلُوْنَ ﴿٢٧﴾
وَتَرٰى كُلَّ اُمَّةٍ جَاثِيَةً ۫ كُلُّ
اُمَّةٍ تُدْعٰى اِلٰى كِتٰبِهَا ؕ اَلْيَوْمَ تُجْزَوْنَ
مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٨﴾
هٰذَا كِتٰبُنَا يَنْطِقُ عَلَيْكُمْ بِالْحَقِّ ؕ
اِنَّا كُنَّا نَسْتَنْسِخُ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٢٩﴾

अम् हसिबल्लज़ीनज्त-रहुस्-सय्यिआति अन् नज्अ़-लहुम् कल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति, सवा-अम्-मह्याहुम् व ममातुहुम्, सा-अ मा यह्कुमून (21) ●

व ख़-लक़ल्लाहुस्-समावाति वल्-अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि व लितुज्ज़ा कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-सबत् व हुम् ला युज़्लमून (22)

अ-फ़-रऐ-त मनित्त-ख़-ज़ इला-हहू हवाहु व अज़ल्लहुल्लाहु अ़ला अ़िल्मिंव्-व ख़-त-म अ़ला सम्अ़िही व क़ल्बिही व ज-अ़-ल अ़ला ब-सरिही ग़िशा-वतन्, फ़-मंय्-यह्दीहि मिम्बअ़्दिल्लाहि, अ-फ़ला तज़क्करून (23)

व क़ालू मा हि-य इल्ला हयातुनद्दुन्या नमूतु व नह्या व मा युह्लिकुना इल्लद्-दह्रु व मा लहुम् बिज़ालि-क मिन् अ़िल्मिन् इन् हुम् इल्ला यज़ुन्नून (24)

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिम्-मा का-न हुज्ज-तहुम् इल्ला अन् क़ालुअ्तू बिआबा-इना इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (25)

क़ुलिल्लाहु युह्यीकुम् सुम्-म युमीतुकुम् सुम्-म यज्मअ़ुकुम् इला यौमिल्-क़ियामति ला रै-ब फ़ीहि व लाकिन्-न अक्सरन्-नासि ला यअ़्लमून (26) ●

व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व यौ-म तक़ूमुस्सा-अ़तु यौमइज़िंय्-यख़्-सरुल्-मुब्तिलून (27)

व तरा कुल्-ल उम्म-तिन् जासि-यतन्, कुल्लु उम्म-तिन् तुद्अ़ा इला किताबिहा, अल्यौ-म तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ़्मलून (28)

हाज़ा किताबुना यन्तिक़ु अ़लैकुम् बिल्हक़्क़ि, इन्ना कुन्ना नस्तन्सिख़ु मा कुन्तुम् तअ़्मलून (29)

21. क्या जिन लोगों ने बुराइयों का इरतिकाब किया है वो यह समझ बैठे हैं कि हम उन्हें उन लोगों जैसा कर देंगे जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए कि उनका जीना और मरना यकसां हो जाए? बहुत ही बुरा है जो हुक्म वो लगाते हैं।

22. अल्लाह ने तो आसमानों और ज़मीन को बरहक़ पैदा किया, और इसलिए कि हर जान को उसकी कमाई का बदला दिया जाए; और उनपर ज़ुल्म न किया जाएगा।

23. क्या तुमने उस शख़्स को देखा जिसने अपनी ख़्वाहिश-ए-नफ़्स को अपना माबूद बना लिया, इल्म की बिना पर अल्लाह ने उसे गुमराही में डाल दिया, और उसके कान और उसके दिल पर ठप्पा लगा दिया, और उसकी आंख पर परदा डाल दिया? फिर अब अल्लाह के बाद कौन उसे राह पर ला सकता है? तो क्या तुम सबक़ नहीं लेते?

24. वो कहते हैं "वह तो बस हमारी दुनिया की ज़िन्दगी ही है; हम मरते और जीते हैं, और हमें तो बस ज़माना ही हलाक करता है"। हालांकि उनके पास इसका कोई इल्म नहीं; वह तो बस अटकलें दौड़ाते हैं।

25. और जब हमारी वाज़ेह आयतें उनके सामने पढ़ी जाती हैं, तो उनकी हुज्जत इसके सिवा और कुछ नहीं होती कि वो कहते हैं कि "अगर तुम सच्चे हो, तो हमारे बाप-दादा को ले आओ"।

26. कह दो: "अल्लाह ही तुम्हें ज़िन्दगी देता है, फिर वही तुम्हें मौत देता है, फिर वही तुम्हें क़ियामत के रोज़ जमा करेगा जिसमें कोई शक नहीं, मगर अक्सर लोग जानते नहीं"।

27. आसमानों और ज़मीन की बादशाहत अल्लाह ही की है जिस रोज़ क़ियामत की घड़ी वाक़े होगी, उस दिन (हक़ को) बातिल ठहराने वाले ख़सारे में होंगे।

28. और तुम हर गिरोह को घुटनों के बल पड़ा हुआ देखोगे, हर गिरोह अपनी किताब की तरफ़ बुलाया जाएगा "आज तुम्हें उसी का बदला दिया जाएगा जो तुम करते थे।

29. यह हमारी किताब है जो तुम्हारे मुक़ाबले में ठीक-ठीक बोल रही है, यक़ीनन हम लिखवाते रहे हैं जो कुछ तुम करते थे"।

30. पस जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए, उन्हें उनका रब अपनी रहमत में दाख़िल करेगा; यही खुली कामयाबी है।

31. रहे वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया: "क्या तुम्हें हमारी आयतें पढ़कर नहीं सुनाई जाती थीं, मगर तुमने तकब्बुर किया, और तुम थे ही मुजरिम लोग?

32. और जब कहा जाता था कि 'अल्लाह का वादा सच्चा है, और क़ियामत में कोई शक नहीं है', तो तुम कहते थे कि, 'हम नहीं जानते कि क़ियामत क्या है; हमें तो बस एक गुमान है जो हम करते हैं, और हमें यक़ीन नहीं आता'।"

33. और जो कुछ वो करते रहे उसकी बुराइयां उनपर ज़ाहिर हो गईं, और ज़िस चीज़ का वो मज़ाक़ उड़ाते रहे हैं उसी ने उन्हें आ घेरा।

34. और कह दिया जाएगा कि "आज हम तुम्हें भुला देते हैं, जैसे तुमने इस दिन की मुलाक़ात को भुला रखा था; तुम्हारा ठिकाना अब आग है, और तुम्हारा कोई मददगार नहीं।

35. यह इसलिए कि तुमने अल्लाह की आयतों का मज़ाक़ उड़ाया, और दुनिया की ज़िन्दगी ने तुम्हें धोके में डाले रखा"। लिहाज़ा आज वो न तो उससे निकाले जाएंगे और न उनको यह मौक़ा मिलेगा कि वो किसी तदबीर से (अल्लाह की) नाराज़गी दूर करें।

36. पस तारीफ़ अल्लाह ही के लिए है, जो आसमानों का रब और ज़मीन का रब, सारे जहां का रब है।

37. आसमानों और ज़मीन में बड़ाई उसी के लिए है; और वही ज़बरदस्त, निहायत हिकमतवाला है।

सूरह अल-अहक़ाफ़ मक्की

(आयतें 35, रुकूआत 4)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. हा. मीम.।

2. इस किताब का उतारा जाना अल्लाह की तरफ़ से है जो ज़बरदस्त निहायत हिकमत वाला है।

3. हमने आसमानों और ज़मीन को, और जो कुछ उन दोनों के दरमियान है महज़ हक़ के साथ और एक मुक़र्रर वक़्त तक के लिए पैदा किया है; मगर जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वो उस चीज़ से एराज़ किए हुए हैं जिससे उन्हें ख़बरदार किया गया है।

फ़-अम्मल्लज़ी-न आमनू व अमिलुस्-सालिहाति फ़-युद्ख़िलुहुम् रब्बुहुम् फ़ी रह्मतिही, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-मुबीन (30)

व अम्मल्लज़ी-न क-फ़रू, अ-फ़ लम् तकुन् आयाती तुत्ला अलैकुम् फ़स्तक्बर्तुम् व कुन्तुम् क़ौमम्-मुज्रिमीन (31)

व इज़ा क़ी-ल इन्-न वअ्दल्लाहि हक़्क़ुंव्-वस्सा-अतु ला रै-ब फ़ीहा क़ुल्तुम्-मा नद्री मस्सा-अतु इन्-नज़ुन्नु इल्ला ज़न्नंव्-व मा नह्नु बिमुस्तैक़िनीन (32)

व बदा लहुम् सय्यिआतु मा अमिलू व हा-क़ बिहिम्-मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (33)

व क़ीलल्-यौ-म नन्साकुम् कमा नसीतुम् लिक़ा-अ यौमिकुम् हाज़ा व मअ्वाकुमुन्नारु व मा लकुम् मिन्-नासिरीन (34)

ज़ालिकुम् बि-अन्न-कुमुत्तख़ज़्तुम् आयातिल्लाहि हुज़ुवंव्-व ग़र्रत्कुमुल्-हयातुद्दुन्या फ़ल्यौ-म ला युख़्रजू-न मिन्हा व ला हुम् युस्तअ्-तबून (35)

फ़लिल्लाहिल्-हम्दु रब्बिस्समावाति व रब्बिल्-अर्ज़ि रब्बिल्-आलमीन (36)

व लहुल्-किब्रिया-उ फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम (37) ●

46 सूरतुल्-अह्क़ाफ़ि
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 2709 अक्षर, 750 शब्द, 35 आयतें और 4 रुकू हैं।
बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

हा-मीम् (1) *तन्ज़ीलुल्-किताबि मिनल्लाहिल् अज़ीज़िल्-हकीम* (2)

मा ख़लक़्नस्समावाति वल्अर्-ज़ व मा बैनहुमा इल्ला बिल्हक़्क़ि व अ-जलिम्-मुसम्मन्, वल्लज़ी-न क-फ़रू अम्मा उन्ज़िरू मुअ्रिज़ून (3)

فَاَمَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
فَيُدْخِلُهُمْ رَبُّهُمْ فِيْ رَحْمَتِهٖ ؕ ذٰلِكَ
هُوَ الْفَوْزُ الْمُبِيْنُ ۝٣٠
وَاَمَّا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۟ اَفَلَمْ تَكُنْ اٰيٰتِيْ
تُتْلٰى عَلَيْكُمْ فَاسْتَكْبَرْتُمْ وَكُنْتُمْ
قَوْمًا مُّجْرِمِيْنَ ۝٣١
وَاِذَا قِيْلَ اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ وَّالسَّاعَةُ
لَا رَيْبَ فِيْهَا قُلْتُمْ مَّا نَدْرِيْ مَا السَّاعَةُ
اِنْ نَّظُنُّ اِلَّا ظَنًّا وَّمَا نَحْنُ بِمُسْتَيْقِنِيْنَ ۝٣٢
وَبَدَا لَهُمْ سَيِّاٰتُ مَا عَمِلُوْا وَحَاقَ
بِهِمْ مَّا كَانُوْا بِهٖ يَسْتَهْزِءُوْنَ ۝٣٣
وَقِيْلَ الْيَوْمَ نَنْسٰىكُمْ كَمَا نَسِيْتُمْ لِقَآءَ يَوْمِكُمْ
هٰذَا وَمَاْوٰىكُمُ النَّارُ وَمَا لَكُمْ مِّنْ نّٰصِرِيْنَ ۝٣٤
ذٰلِكُمْ بِاَنَّكُمُ اتَّخَذْتُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ هُزُوًا
وَّغَرَّتْكُمُ الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا ۚ فَالْيَوْمَ
لَا يُخْرَجُوْنَ مِنْهَا وَلَا هُمْ يُسْتَعْتَبُوْنَ ۝٣٥
فَلِلّٰهِ الْحَمْدُ رَبِّ السَّمٰوٰتِ وَرَبِّ الْاَرْضِ
رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٣٦
وَلَهُ الْكِبْرِيَآءُ فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۠
ع وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٣٧

سُوْرَةُ الْاَحْقَافِ مَكِّيَّةٌ (٦٦) اٰيَاتُهَا ٣٥ رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
حٰمٓ ۝١ تَنْزِيْلُ الْكِتٰبِ مِنَ اللّٰهِ الْعَزِيْزِ
الْحَكِيْمِ ۝٢
مَا خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ وَمَا بَيْنَهُمَآ
اِلَّا بِالْحَقِّ وَاَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ وَالَّذِيْنَ
كَفَرُوْا عَمَّآ اُنْذِرُوْا مُعْرِضُوْنَ ۝٣

4. कहोः "क्या तुमने उन हस्तियों को देखा भी जिन्हें तुम अल्लाह को छोड़कर पुकारते हो? मुझे दिखाओ उन्होंने ज़मीन की चीज़ों में से क्या पैदा किया है; या आसमानों में उनकी कोई शिर्कत है? मेरे पास इससे पहले की कोई किताब ले आओ, या कोई इल्मी रिवायत ही, अगर तुम सच्चे हो"।

5. आख़िर उससे बढ़कर गुमराह कौन होगा, जो अल्लाह से हटकर उन्हें पुकारता हो जो क़ियामत के रोज़ तक उसकी पुकार को नहीं पहुंच सकते? बल्कि वो तो उनकी पुकार से बेख़बर हैं।

6. और जब लोग इकट्ठे किए जाएंगे, तो वो उनके दुश्मन होंगे, और उनकी इबादत का इनकार करेंगे।

7. जब हमारी वाज़ेह आयतें उन्हें पढ़कर सुनाई जाती हैं, तो वो लोग जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया हक़ के मुतअल्लिक़ जबकि वह उनके पास आ गया, कहते हैं, "यह तो खुला जादू है"।

8. क्या वो कहते हैं कि "उसने उसको ख़ुद ही घड़ लिया है?" कहोः "अगर मैंने उसे ख़ुद घड़ा है, तो अल्लाह के मुक़ाबिल तुम मेरे लिए कुछ इख़्तियार नहीं रखते। जो बातें तुम बना रहे हो वह उसे ख़ूब जानता है; वह मेरे और तुम्हारे दरमियान गवाह की हैसियत से काफ़ी है; और वही बख़्शनेवाला, निहायत रहमवाला है"।

9. कह दो कि "मैं कोई पहला रसूल तो नहीं हूं, और मैं नहीं जानता कि मेरे साथ क्या किया जाएगा और न यह कि तुम्हारे साथ क्या किया जाएगा। मैं तो बस उसी की पैरवी करता हूं जिसकी वही मेरी तरफ़ की जाती है; और मैं तो महज़ एक खुला ख़बरदार कर देने वाला हूं"।

10. कहोः "क्या तुमने सोचा भी? अगर यह अल्लाह के यहां से हुआ, और तुमने उसका इनकार कर दिया, और बनी इसराईल में से एक गवाह ने उसी जैसे (हिस्सा-ए-कलाम) की गवाही भी दी, सो वह तो ईमान लाया, और तुम घमंड में पड़े रहे, अल्लाह तो ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता"।

11. जिन लोगों ने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की वह उन लोगों के बारे में जो ईमान लाए कहते हैं कि "अगर वह बेहतर होता तो वो उसकी तरफ़ हमसे सबक़त न ले जाते"। और जब उन्होंने उससे हिदायत न पाई, तो अब लाज़िमन कहेंगे, "यह तो पुराना झूट है"।

कुल् अ-रऐतुम्-मा तद्अू-न मिन् दूनिल्लाहि अरूनी माज़ा ख़-लक़ू मिनल्-अर्ज़ि अम् लहुम् शिर्कुन् फ़िस्समावाति, ईतूनी बिकिताबिम् मिन् क़ब्लि हाज़ा औ असा-रतिम्-मिन् अ़िल्मिन् इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (4)

व मन् अज़ल्लु मिम्मंय्यद्अू मिन् दूनिल्लाहि मल्-ला यस्तजीबु लहू इला यौमिल्-क़ियामति व हुम् अ़न् दुआ-इहिम् ग़ाफ़िलून (5)

व इज़ा हुशिरन्नासु कानू लहुम् अअ्दाअंव्-व कानू बिअ़िबा-दतिहिम् काफ़िरीन (6)

व इज़ा तुत्ला अ़लैहिम् आयातुना बय्यिनातिन् क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् हाज़ा सिह्रुम्-मुबीन (7)

अम् यक़ूलूनफ़्तराहु, क़ुल् इनिफ़्तरैतुहू फ़ला तम्लिकू-न ली मिनल्लाहि शैअन्, हु-व अअ्लमु बिमा तुफ़ीज़ू-न फ़ीहि, कफ़ा बिही शहीदम्-बैनी व बैनकुम्, व हुवल् ग़फ़ूरुर्-रहीम (8)

क़ुल् मा कुन्तु बिद्अ़म्-मिनर्रुसुलि व मा अद्री मा युफ़्अ़लु बी व ला बिकुम्, इन अत्तबिअु इल्ला मा यूहा इलय्-य व मा अ-न इल्ला नज़ीरुम्-मुबीन (9)

क़ुल् अ-रऐतुम् इन् का-न मिन् अ़िन्दिल्लाहि व कफ़र्तुम् बिही व शहि-द शाहिदुम् मिम्-बनी इस्राई-ल अ़ला मिस्लिही फ़-आम-न वस्तक्बर्तुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन (10) ●

व क़ालल्लज़ी-न क-फ़रू लिल्लज़ी-न आमनू लौ का-न ख़ैरम्-मा स-बक़ूना इलैहि, व इज़् लम् यह्तदू बिही फ़-स-यक़ूलू-न हाज़ा इफ़्कुन् क़दीम (11)

قُلْ اَرَءَيْتُمْ مَّا تَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ اَرُوْنِيْ مَاذَا خَلَقُوْا مِنَ الْاَرْضِ
اَمْ لَهُمْ شِرْكٌ فِي السَّمٰوٰتِ ۭ اِيْتُوْنِيْ
بِكِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ هٰذَآ اَوْ اَثٰرَةٍ مِّنْ
عِلْمٍ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝
وَمَنْ اَضَلُّ مِمَّنْ يَّدْعُوْا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ
مَنْ لَّا يَسْتَجِيْبُ لَهٗٓ اِلٰى يَوْمِ الْقِيٰمَةِ
وَهُمْ عَنْ دُعَاۗىِٕهِمْ غٰفِلُوْنَ ۝
وَاِذَا حُشِرَ النَّاسُ كَانُوْا لَهُمْ اَعْدَاۗءً
وَّكَانُوْا بِعِبَادَتِهِمْ كٰفِرِيْنَ ۝
وَاِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِمْ اٰيٰتُنَا بَيِّنٰتٍ قَالَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلْحَقِّ لَمَّا جَاۗءَهُمْ ۙ
هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝
اَمْ يَقُوْلُوْنَ افْتَرٰىهُ ۭ قُلْ اِنِ افْتَرَيْتُهٗ
فَلَا تَمْلِكُوْنَ لِيْ مِنَ اللّٰهِ شَـيْـــًٔا ۭ هُوَ اَعْلَمُ
بِمَا تُفِيْضُوْنَ فِيْهِ ۭ كَفٰى بِهٖ شَهِيْدًۢا بَيْنِيْ
وَبَيْنَكُمْ ۭ وَهُوَ الْغَفُوْرُ الرَّحِيْمُ ۝
قُلْ مَا كُنْتُ بِدْعًا مِّنَ الرُّسُلِ وَمَآ
اَدْرِيْ مَا يُفْعَلُ بِيْ وَلَا بِكُمْ ۭ اِنْ اَتَّبِعُ
اِلَّا مَا يُوْحٰٓى اِلَيَّ وَمَآ اَنَا اِلَّا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ۝
قُلْ اَرَءَيْتُمْ اِنْ كَانَ مِنْ عِنْدِ اللّٰهِ
وَكَفَرْتُمْ بِهٖ وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْۢ بَنِيْٓ
اِسْرَاۗءِيْلَ عَلٰي مِثْلِهٖ فَاٰمَنَ وَاسْتَكْبَرْتُمْ ۭ
ع اِنَّ اللّٰهَ لَا يَهْدِي الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝
وَقَالَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْ كَانَ
خَيْرًا مَّا سَبَقُوْنَآ اِلَيْهِ ۭ وَاِذْ لَمْ يَهْتَدُوْا
بِهٖ فَسَيَقُوْلُوْنَ هٰذَآ اِفْكٌ قَدِيْمٌ ۝

12. हालांकि इसके पहले से मूसा की किताब रहनुमा और रहमत रही है; और यह किताब जो अरबी ज़बान में है उसकी तसदीक़ करती है ताकि जिन लोगों ने ज़ुल्म की रविश इख़्तियार की उन्हें ख़बरदार कर दे, और बशारत हो ख़ूबकारों के लिए।

13. यक़ीनन जिन लोगों ने कहा, "हमारा रब अल्लाह है" फिर वो उसपर जमे रहे, तो उन्हें न कोई ख़ौफ होगा, और न वो ग़मगीन होंगे।

14. वही अहले जन्नत हैं, वहां वो हमेशा उसके बदले में रहेंगे ज़ो वो करते रहे हैं।

15. हमने इनसान को अपने वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक की ताकीद की; उसकी मां ने उसे बड़ी तकलीफ़ के साथ उठाए रखा, और तकलीफ़ के साथ ही उसे जना; और उसके हमल की हालत में रहने और दूध छुड़ाने की मुद्दत तीस माह है। यहां तक कि जब वह अपनी पूरी क़ुव्वत को पहुंचा, और चालीस साल का हुआ, तो उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मुझे तौफ़िक़ दे कि मैं तेरी इस नवाज़िश का शुक्र अदा करूं जो तूने मुझपर और मेरे वालिदैन पर की, और यह कि मैं ऐसा नेक अमल करूं जो तुझे पसन्द आए; और मेरे लिए मेरी औलाद को नेक बना दे, मैं तेरी जनाब में तौबा करता हूं, और मैं मुस्लिम हूं"।

16. ऐसे ही लोग हैं जिनसे हम अच्छे आमाल जो उन्होंने किए होंगे क़बूल करेंगे, और उनकी बुराइयों से दरगुज़र करेंगे, इस हाल में कि वो अहले जन्नत में होंगे उस सच्चे वादे के मुताबिक़ जो उनसे किया जाता रहा है।

17. मगर वह जिसने अपने वालिदैन से कहा, "तुफ़ है तुमपर! क्या तुम मुझे डराते हो कि मैं (क़ब्र से) निकाला जाऊंगा, हालांकि मुझसे पहले कितनी नसलें गुज़र चुकी हैं?" और वो दोनों अल्लाह से फ़रियाद करते हैं — "अफ़सोस है तुझ पर! ईमान ला; बेशक अल्लाह का वादा सच्चा है"। मगर वह कहता है, "यह तो बस अगलों के अफ़साने हैं"।

18. ऐसे ही लोग हैं जिन पर उन गिरोहों के साथ अज़ाब की बात चसपां होकर रही जो जिन्नों और इनसानों में से उनसे पहले गुज़र चुके

व मिन् क़ब्लिही किताबु मूसा इमामंव्-व रह़्म-तन्, व हाज़ा किताबुम् मुसद्दिक़ुल्-लिसानन् अ़-रबिय्यल् लियुन्ज़िरल्लज़ी-न ज़-लमू व बुश्रा लिल्-मुह़्सिनीन (12)

इन्नल्लज़ी-न क़ालू रब्बुनल्लाहु सुम्मस्तक़ामू फ़ला ख़ौफ़ुन् अ़लैहिम् व ला हुम् यह़्ज़नून (13)

उलाइ-क अस्हाबुल्-जन्नति ख़ालिदी-न फ़ीहा जज़ा-अम् बिमा कानू यअ़्मलून (14)

व वस्सैनल्-इन्सा-न बिवालिदैहि इह़्सानन्, ह-मलत्हु उम्मुहू कुर्हंव्-व व-ज़अ़त्हु कुर्हन्, व ह़म्लुहू व फ़िसालुहू सलासू-न शह्रन्, हत्ता इज़ा ब-ल-ग़ अशुद्-दहू व ब-ल-ग़ अर्बअ़ी-न स-नतन् क़ा-ल रब्बि औज़िअ़्नी अन् अश्कु-र निअ़्-म-त-कल्लती अन्अ़म्-त अ़लय्-य व अ़ला वालिदय्-य व अन् अअ़्म-ल सालिहन् तर्ज़ाहु व अस्लिह् ली फ़ी ज़ुर्रिय्यती, इन्नी तुब्तु इलै-क व इन्नी मिनल्-मुस्लिमीन (15)

उलाइ-कल्लज़ी-न न-तक़ब्बलु अ़न्हुम् अह़्स-न मा अ़मिलू व न-तजा-वज़ु अ़न् सय्यिआतिहिम् फ़ी अस्हाबिल्-जन्नति, वअ़्दस्-सिद्क़िल्लज़ी कानू यू-अ़दून (16)

वल्लज़ी क़ा-ल लिवालिदैहि उफ़्फ़िल्-लकुमा अ-तअ़िदानिनी अन् उख़्र-ज व क़द् ख़-लतिल्-क़ुरूनु मिन् क़ब्ली व हुमा यस्तग़ीसानिल्ला-ह वैल-क आमिन् इन्-न वअ़्दल्लाहि हक़्क़ुन् फ़-यक़ूलु मा हाज़ा इल्ला असातीरुल्-अव्वलीन (17)

उलाइ-कल्लज़ी-न हक़्-क़ अ़लैहिमुल्-क़ौलु फ़ी उ-ममिन् क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लिहिम्-मिनल्-जिन्नि वल्-इन्सि, इन्नहुम् कानू

وَمِنْ قَبْلِهٖ كِتٰبُ مُوْسٰٓى اِمَامًا وَّرَحْمَةً ؕ
وَهٰذَا كِتٰبٌ مُّصَدِّقٌ لِّسَانًا عَرَبِيًّا لِّيُنْذِرَ
الَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ۖ وَبُشْرٰى لِلْمُحْسِنِيْنَ ۝١٢
اِنَّ الَّذِيْنَ قَالُوْا رَبُّنَا اللّٰهُ ثُمَّ اسْتَقَامُوْا
فَلَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَلَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ۝١٣
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۚ
جَزَآءًۢ بِمَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝١٤
وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ اِحْسٰنًا ؕ
حَمَلَتْهُ اُمُّهٗ كُرْهًا وَّوَضَعَتْهُ كُرْهًا ؕ
وَحَمْلُهٗ وَفِصٰلُهٗ ثَلٰثُوْنَ شَهْرًا ؕ حَتّٰٓى
اِذَا بَلَغَ اَشُدَّهٗ وَبَلَغَ اَرْبَعِيْنَ سَنَةً ۙ
قَالَ رَبِّ اَوْزِعْنِيْٓ اَنْ اَشْكُرَ نِعْمَتَكَ
الَّتِيْٓ اَنْعَمْتَ عَلَيَّ وَعَلٰى وَالِدَيَّ وَاَنْ
اَعْمَلَ صَالِحًا تَرْضٰىهُ وَاَصْلِحْ لِيْ
فِيْ ذُرِّيَّتِيْ ۚ اِنِّيْ تُبْتُ اِلَيْكَ وَاِنِّيْ
مِنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝١٥
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ نَتَقَبَّلُ عَنْهُمْ اَحْسَنَ مَا عَمِلُوْا
وَنَتَجَاوَزُ عَنْ سَيِّاٰتِهِمْ فِيْٓ اَصْحٰبِ الْجَنَّةِ ؕ
وَعْدَ الصِّدْقِ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝١٦
وَالَّذِيْ قَالَ لِوَالِدَيْهِ اُفٍّ لَّكُمَآ اَتَعِدٰنِنِيْٓ
اَنْ اُخْرَجَ وَقَدْ خَلَتِ الْقُرُوْنُ مِنْ
قَبْلِيْ ۚ وَهُمَا يَسْتَغِيْثٰنِ اللّٰهَ وَيْلَكَ اٰمِنْ ۖ
اِنَّ وَعْدَ اللّٰهِ حَقٌّ ۚ فَيَقُوْلُ مَا هٰذَآ
اِلَّآ اَسَاطِيْرُ الْاَوَّلِيْنَ ۝١٧
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ حَقَّ عَلَيْهِمُ الْقَوْلُ فِيْٓ
اُمَمٍ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنَ
الْجِنِّ وَالْاِنْسِ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا

خٰسِرِيْنَ ⑱

وَلِكُلٍّ دَرَجٰتٌ مِّمَّا عَمِلُوْا ۚ وَلِيُوَفِّيَهُمْ اَعْمَالَهُمْ وَهُمْ لَا يُظْلَمُوْنَ ⑲

وَيَوْمَ يُعْرَضُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ ۭ اَذْهَبْتُمْ طَيِّبٰتِكُمْ فِيْ حَيَاتِكُمُ الدُّنْيَا وَاسْتَمْتَعْتُمْ بِهَا ۚ فَالْيَوْمَ تُجْزَوْنَ عَذَابَ الْهُوْنِ بِمَا كُنْتُمْ تَسْتَكْبِرُوْنَ فِي الْاَرْضِ بِغَيْرِ الْحَقِّ وَبِمَا كُنْتُمْ تَفْسُقُوْنَ ⑳

وَاذْكُرْ اَخَا عَادٍ ۭ اِذْ اَنْذَرَ قَوْمَهٗ بِالْاَحْقَافِ وَقَدْ خَلَتِ النُّذُرُ مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖٓ اَلَّا تَعْبُدُوْٓا اِلَّا اللّٰهَ ۭ اِنِّيْٓ اَخَافُ عَلَيْكُمْ عَذَابَ يَوْمٍ عَظِيْمٍ ㉑

قَالُوْٓا اَجِئْتَنَا لِتَاْفِكَنَا عَنْ اٰلِهَتِنَا ۚ فَاْتِنَا بِمَا تَعِدُنَآ اِنْ كُنْتَ مِنَ الصّٰدِقِيْنَ ㉒

قَالَ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ڮ وَاُبَلِّغُكُمْ مَّآ اُرْسِلْتُ بِهٖ وَلٰكِنِّيْٓ اَرٰىكُمْ قَوْمًا تَجْهَلُوْنَ ㉓

فَلَمَّا رَاَوْهُ عَارِضًا مُّسْتَقْبِلَ اَوْدِيَتِهِمْ ۙ قَالُوْا هٰذَا عَارِضٌ مُّمْطِرُنَا ۭ بَلْ هُوَ مَا اسْتَعْجَلْتُمْ بِهٖ ۭ رِيْحٌ فِيْهَا عَذَابٌ اَلِيْمٌ ㉔

تُدَمِّرُ كُلَّ شَيْءٍۢ بِاَمْرِ رَبِّهَا فَاَصْبَحُوْا لَا يُرٰٓى اِلَّا مَسٰكِنُهُمْ ۭ كَذٰلِكَ نَجْزِي الْقَوْمَ الْمُجْرِمِيْنَ ㉕

وَلَقَدْ مَكَّنّٰهُمْ فِيْمَآ اِنْ مَّكَّنّٰكُمْ فِيْهِ وَجَعَلْنَا لَهُمْ سَمْعًا وَّاَبْصَارًا وَّاَفْـِٕدَةً ڮ

ख़ासिरीन (18)

व लि-कुल्लिन् द-रजातुम्-मिम्मा अ़मिलू व लियुवफ़्फ़ि-यहुम् अअ़्मालहुम् व हुम् ला युज़्लमून (19)

व यौ-म युअ़्रज़ुल्लज़ी-न क-फ़रू अ़लन्-नारि, अज़्हब्तुम् तय्यिबातिकुम् फ़ी हयातिकुमुद्-दुन्या वस्तम्तअ़्तुम् बिहा फ़ल्यौ-म तुज्ज़ौ-न अ़ज़ाबल्-हूनि बिमा कुन्तुम् तस्तक्बिरू-न फ़िल्अर्ज़ि बिग़ैरिल्-हक़्क़ि व बिमा कुन्तुम् तफ़्सुक़ून (20) ●

वज़्कुर् अख़ा आ़दिन्, इज़् अन्ज़-र क़ौमहू बिल्-अह़्क़ाफ़ि व क़द् ख़-लतिन्-नुज़ुरु मिम्बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही अल्ला तअ़्बुदू इल्लल्ला-ह, इन्नी अख़ाफ़ु अ़लैकुम् अ़ज़ा-ब यौमिन् अ़ज़ीम (21)

क़ालू अजिअ्-तना लितअ्फ़िकना अ़न् आलि-हतिना फ़अ्तिना बिमा तअ़िदुना इन् कुन्-त मिनस्-सादिक़ीन (22)

क़ा-ल इन्नमल्-अ़िल्मु अ़िन्दल्लाहि व उबल्लिग़ुकुम् मा उर्सिल्तु बिही व लाकिन्नी अराकुम् क़ौमन् तज्हलून (23)

फ़-लम्मा रऔहु आ़रिज़म्-मुस्तक़्बि-ल औदि-यतिहिम् क़ालू हाज़ा आ़रिज़ुम् मुम्तिरुना, बल् हु-व मस्तअ्जल्तुम् बिही, रीहुन् फ़ीहा अ़ज़ाबुन् अलीम (24)

तुदम्मिरु कुल्-ल शैइम्-बि-अम्रि रब्बिहा फ़-अस्बहू ला युरा इल्ला मसाकिनुहुम्, कज़ालि-क नज्ज़िल्-क़ौमल्-मुज्रिमीन (25)

व ल-क़द् मक्कन्नाहुम् फ़ीमा इम्-मक्कन्नाकुम् फ़ीहि व जअ़ल्ना लहुम् सम्-अ़ंव्-व अब्सारंव्-व अफ़्इ-दतन्

हैं, यक़ीनन वो ख़सारे में रहे।

19. उनमें से हर एक के जो कुछ उन्होंने किया उसके काम के लिहाज़ से दर्जे होंगे, और ताकि वह उन्हें उनके आमाल पूरे-पूरे चुका दे, और उनपर हरगिज़ ज़ुल्म न होगा।

20. और याद करो जिस दिन वो लोग जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया आग के सामने पेश किए जाएंगे: "तुम अपनी दुनिया की ज़िन्दगी में अपनी अच्छी लज़्ज़त बख़्श चीज़ें ज़ाए कर बैठे, और उनका मज़ा ले चुके; पस आज तुम्हें बदले में ज़िल्लत का अज़ाब दिया जाएगा, इसलिए कि तुम ज़मीन में बग़ैर किसी हक़ के तकब्बुर करते रहे, और इसलिए कि तुम फ़िस्क़ करते रहे"।

21. आद के भाई को याद करो, जबकि उसने अपनी क़ौम को अह्क़ाफ़ में ख़बरदार किया — और उसके आगे और पीछे भी ख़बरदार करने वाले गुज़र चुके थे — कि "अल्लाह के सिवा किसी की बन्दगी न करो! मुझे तुम्हारे बारे में एक बड़े दिन के अज़ाब का डर है"।

22. उन्होंने कहा, "क्या तू हमारे पास इसलिए आया है कि झूट बोल कर हम को हमारे माबूदों से बरगश्ता कर दे? अच्छा तो हम पर ले आ जिसकी तू हमें धमकी देता है, अगर तू सच्चा है"।

23. उसने कहा, "यह इल्म तो अल्लाह ही के पास है (कि वह कब अज़ाब लाएगा) और मैं तो तुम्हें वह पैग़ाम पहुंचा रहा हूं जो मुझे देकर भेजा गया है; लेकिन मैं तुम्हें देख रहा हूं कि तुम जहालत बरत रहे हो"।

24. फिर जब उन्होंने उसे बादल की शक्ल में देखा जिसका रुख़ उनकी वादियों की तरफ़ था, तो कहने लगे, "यह बादल है, जो हम पर बरसने वाला है!" "नहीं, बल्कि यह तो वही चीज़ है जिसकी तुमने जल्दी मचा रखी थी — एक आंधी है जिसमें दर्दनाक अज़ाब है,

25. हर चीज़ को अपने रब के हुक्म से तबाह कर देगी"। आख़िरकार वो ऐसे हो गए कि उनके रहने की जगहों के सिवा कुछ नज़र न आता था। मुजरिम लोगों को हम इसी तरह बदला देते हैं।

26. हमने उन्हें तमक्कुन बख़्शा था उन चीज़ों में जिनमें तुम्हें तमक्कुन अता नहीं किया, और हमने उन्हें कान,

आंखें, और दिल दिए थे; मगर न तो उनके कान उनके कुछ काम आए, और न उनकी आंखें और न उनके दिल ही, क्योंकि वो अल्लाह की आयतों का इनकार करते थे, और जिस चीज़ की वो हंसी उड़ाते थे उसी ने उन्हें आ घेरा।

27. हम तुम्हारे गिर्द व पेश की बस्तियों को तबाह कर चुके हैं, और हमने आयतों को तरह-तरह से पेश किया, ताकि वो रुजू करें।

28. फिर क्यों न उन हस्तियों ने उनकी मदद की जिनको उन्होंने अपने और खुदा के दरमियान वास्ता ठहराकर तकर्रुब के लिए माबूद बना लिया था? बल्कि वो उनसे गुम हो गए, और यह था उनका बुहतान, और वो कुछ जो वो घड़ा करते थे।

29. और (याद करो) जब हमने कुछ जिन्नों को तुम्हारी तरफ़ फेर दिया कि कुरआन सुनें; तो जब वो उसके पास हाज़िर हुए तो कहने लगे, "ख़ामोश हो जाओ!" फिर जब (पढ़ना) ख़तम हो गया, तो वो अपनी क़ौम की तरफ़ ख़बरदार करनेवाले होकर लौटे।

30. उन्होंने कहा, "ऐ हमारी क़ौम के लोगो, हमने एक किताब सुनी है जो मूसा के बाद नाज़िल हुई है, उन (पेशीनगोइयों) की तसदीक़ में है जो उससे पहले से मौजूद हैं, हक़ की तरफ़ और सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई करती है।

31. ऐ हमारी क़ौम के लोगो! अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की दावत क़बूल करो, और उसपर ईमान लाओ, अल्लाह तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाकर गुनाहों से तुम्हें पाक कर देगा, और दर्दनाक अज़ाब से तुम्हें पनाह में रखेगा।

32. और जो कोई अल्लाह की तरफ़ बुलाने वाले की दावत क़बूल नहीं करेगा, तो वह ज़मीन में क़ाबू से बच निकलनेवाला नहीं है, और न अल्लाह से हटकर उसके हामी व सरपरस्त होंगे; ऐसे ही लोग खुली गुमराही में हैं"।

33. क्या उन्होंने देखा नहीं कि जिस अल्लाह ने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया, और उनके पैदा करने से थका नहीं, कि वह इसपर क़ादिर है कि मुर्दों को ज़िन्दा करे। क्यों नहीं; यक़ीनन उसे हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

34. और याद करो जिस दिन वो लोग जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया

फ़मा अग़्ना अ़न्हुम् सम्अुहुम् व ला अब्सारुहुम् व ला अफ़्इ-दतुहुम् मिन् शैइन् इज़् कानू यज्हदू-न बिआयातिल्लाहि व हा-क़ बिहिम् मा कानू बिही यस्तह्ज़िऊन (26) ●

व-ल-क़द् अह्लक्ना मा हौलकुम् मिनल्-क़ुरा व सर्रफ़्नल्-आयाति लअ़ल्लहुम् यर्जिऊन (27)

फ़-लौ ला न-स-रहुमुल्लज़ीनत्-त-ख़ज़ू मिन् दूनिल्लाहि क़ुर्बानन् आलि-हतन्, बल् ज़ल्लू अ़न्हुम् व ज़ालि-क इफ़्कुहुम् व मा कानू यफ़्तरून (28)

व इज़् सरफ़्ना इलै-क न-फ़रम्-मिनल्-जिन्नि यस्तमिअूनल्-क़ुरआ-न फ़-लम्मा ह-ज़रूहु क़ालू अन्सितू फ़-लम्मा क़ुज़ि-य वल्लौ इला क़ौमिहिम् मुन्ज़िरीन (29)

क़ालू या क़ौमना इन्ना समिअ्ना किताबन् उन्ज़ि-ल मिम्बअ्दि मूसा मुसद्दि-क़ल्लिमा बै-न यदैहि यह्दी इलल्-हक़्क़ि व इला तरीक़िम्-मुस्तक़ीम (30)

या क़ौमना अजीबू दाअि-यल्लाहि व आमिनू बिही यग़्फ़िर् लकुम् मिन् ज़ुनूबिकुम् व युजिर्कुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम (31)

व मल्-ला युजिब् दाअि-यल्लाहि फ़लै-स बिमुअ्जिज़िन् फ़िल्अर्ज़ि व लै-स लहू मिन् दूनिही औलिया-उ, उलाइ-क फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (32)

अ-व लम् यरौ अन्नल्लाहल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ व लम् यअ्-य बिख़ल्क़िहिन्-न बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह्यि-यल्मौता, बला इन्नहू अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (33)

व यौ-म युअ्रज़ुल्लज़ी-न क-फ़रू अ़लन्नारि,

فَمَآ اَغْنٰى عَنْهُمْ سَمْعُهُمْ وَلَآ اَبْصَارُهُمْ
وَلَآ اَفْـِٕدَتُهُمْ مِّنْ شَیْءٍ اِذْ كَانُوْا
یَجْحَدُوْنَ بِاٰیٰتِ اللّٰهِ وَحَاقَ بِهِمْ
مَّا كَانُوْا بِهٖ یَسْتَهْزِءُوْنَ (٢٦)
وَلَقَدْ اَهْلَكْنَا مَا حَوْلَكُمْ مِّنَ الْقُرٰى
وَصَرَّفْنَا الْاٰیٰتِ لَعَلَّهُمْ یَرْجِعُوْنَ (٢٧)
فَلَوْلَا نَصَرَهُمُ الَّذِیْنَ اتَّخَذُوْا مِنْ دُوْنِ
اللّٰهِ قُرْبَانًا اٰلِهَةً بَلْ ضَلُّوْا عَنْهُمْ
وَذٰلِكَ اِفْكُهُمْ وَمَا كَانُوْا یَفْتَرُوْنَ (٢٨)
وَاِذْ صَرَفْنَآ اِلَیْكَ نَفَرًا مِّنَ الْجِنِّ
یَسْتَمِعُوْنَ الْقُرْاٰنَ فَلَمَّا حَضَرُوْهُ
قَالُوْٓا اَنْصِتُوْا فَلَمَّا قُضِیَ وَلَّوْا اِلٰى
قَوْمِهِمْ مُّنْذِرِیْنَ (٢٩)
قَالُوْا یٰقَوْمَنَآ اِنَّا سَمِعْنَا كِتٰبًا اُنْزِلَ
مِنْ بَعْدِ مُوْسٰى مُصَدِّقًا لِّمَا بَیْنَ یَدَیْهِ
یَهْدِیْٓ اِلَى الْحَقِّ وَاِلٰى طَرِیْقٍ مُّسْتَقِیْمٍ (٣٠)
یٰقَوْمَنَآ اَجِیْبُوْا دَاعِیَ اللّٰهِ وَاٰمِنُوْا بِهٖ
یَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَیُجِرْكُمْ
مِّنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ (٣١)
وَمَنْ لَّا یُجِبْ دَاعِیَ اللّٰهِ فَلَیْسَ بِمُعْجِزٍ
فِی الْاَرْضِ وَلَیْسَ لَهٗ مِنْ دُوْنِهٖٓ اَوْلِیَآءُ
اُولٰٓىِٕكَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ (٣٢)
اَوَلَمْ یَرَوْا اَنَّ اللّٰهَ الَّذِیْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ
وَالْاَرْضَ وَلَمْ یَعْیَ بِخَلْقِهِنَّ بِقٰدِرٍ
عَلٰٓى اَنْ یُّحْیِیَ الْمَوْتٰى بَلٰٓى اِنَّهٗ عَلٰى
كُلِّ شَیْءٍ قَدِیْرٌ (٣٣)
وَیَوْمَ یُعْرَضُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا عَلَى النَّارِ

आग के सामने पेश किए जाएंगेः "क्या यह हक़ नहीं है?" वो कहेंगे, "क्यों नहीं, हमारे रब की क़सम!" वह कहेगा, "तो अब अज़ाब का मज़ा चखो उसके बदले में जो कुफ़्र तुम करते रहे हो!"

35. पस सब्र करो, जैसे साहिब-ए-अज़्म रसूलों ने सब्र किया। और उनके लिए जल्दी न करो। जिस दिन वो लोग उस चीज़ को देखेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है, तो वो महसूस करेंगे जैसे वो बस दिन की एक घड़ी भर ही ठहरे थे। यह (पैग़ाम) साफ़-साफ़ पहुंचा देना है। अब क्या क़ौमे फ़ासिक़ के सिवा कोई और हलाक होगा?

सूरह मुहम्मद मदनी

(आयतें 38, रुकूआत 4)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका उनके आमाल उसने अकारत कर दिए।

2. रहे वो लोग जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए और उस चीज़ पर ईमान लाए जो मुहम्मद पर नाज़िल हुई — हालांकि वह हक़ है उनके रब की तरफ़ से — उसने उनकी बुराइयां उनसे दूर कर दीं, और उनका हाल दुरुस्त कर दिया।

3. यह इसलिए कि जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया उन्होंने बातिल की पैरवी की, और यह कि जो लोग ईमान लाए उन्होंने हक़ की पैरवी की, जो उनके रब की तरफ़ से है। इस तरह अल्लाह लोगों के लिए उनके हालात बयान करता है।

4. पस जब उन लोगों से जिन्होंने कुफ़्र किया मुक़ाबला करो तो (उनकी) गर्दनें मारो यहां तक कि जब उन्हें अच्छी तरह कुचल दो, तो बन्दिशों में जकड़ो; फिर बाद में या तो एहसान करो, या फ़िदया का मुआमला करो यहां तक कि जंग अपने हथियार डाल दे, यह बख़ूबी समझ लो, अगर अल्लाह चाहे तो ख़ुद उनसे निमट ले; मगर (उसने यह हुक्म इसलिए दिया) ताकि वह तुम्हें एक को दूसरे के ज़रिए से आज़माए। और जो लोग अल्लाह की राह में मारे जाते हैं, उनके आमाल वह हरगिज़ अकारत न करेगा।

5. वह उनकी रहनुमाई फ़रमाएगा, और उनका हाल दुरुस्त करेगा,

6. और उन्हें जन्नत में दाख़िल करेगा, जिसकी पहचान उन्हें करा दी है।

7. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अगर तुम अल्लाह की मदद करोगे, तो वह तुम्हारी मदद फ़रमाएगा, और तुम्हारे क़दम जमा देगा।

अलै-स हाज़ा बिल्हक़्क़ि, क़ालू बला व रब्बिना, क़ा-ल फ़ज़ूक़ुल-अज़ा-ब बिमा कुन्तुम् तक्फ़ुरून (34)

फ़स्बिर् कमा स-ब-र उलुल्-अ़ज़्मि मिनर्-रुसुलि व ला तस्तअ्जिल्-लहुम्, क-अन्नहुम् यौ-म यरौ-न मा यू-अ़दू-न लम् यल्बसू इल्ला सा-अ़तम् मिन्-नहारिन्, बलाग़ुन् फ़-हल् युह्लकु इल्लल्-क़ौमुल्-फ़ासिक़ून ● (35) ●

47 सूरतु मुहम्मदिन्
(मदनी) इस सूरः में अरबी के 2475 अक्षर, 558 शब्द, 38 आयतें और 4 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि अज़ल्-ल अअ्मालहुम् (1)

वल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति व आमनू बिमा नुज़्ज़ि-ल अ़ला मुहम्मदिंव्-व हुवल्-हक़्क़ु मिर्रब्बिहिम् कफ़्फ़-र अ़न्हुम सय्यिआतिहिम् व अस्ल-ह बालहुम् (2)

ज़ालि-क बिअन्नल्लज़ी-न क-फ़रुत्त-बअ़ुल्-बाति-ल व अन्नल्लज़ी-न आमनुत्त-ब-अ़ुल्-हक़्-क़ मिर्-रब्बिहिम्, कज़ालि-क यज़्रिबुल्लाहु लिन्नासि अम्सालहुम् (3)

फ़-इज़ा लक़ीतुमुल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ज़र्बर्रिक़ाबि, हत्ता इज़ा अस्ख़न्तुमूहुम् फ़शुद्दुल्-वसा-क़ फ़-इम्मा मन्नम्-बअ़्दु व इम्मा फ़िदा-अन् हत्ता त-ज़अ़ल्-हर्बु औज़ा-रहा, ज़ालि-क, व लौ यशा-उल्लाहु लन्त-स-र मिन्हुम् व लाकिल्-लियब्लु-व बअ़्-ज़कुम् बिबअ़्ज़िन्, वल्लज़ी-न क़ुतिलू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़-लंय्युज़िल्-ल अअ्मालहुम् (4)

स-यह्दीहिम् व युस्लिहु बालहुम (5)

युद्ख़िलुहुमुल्-जन्न-त अ़र्र-फ़हा लहुम् (6)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् तन्सुरुल्ला-ह यन्सुर्कुम् व युसब्बित् अक़्दामकुम् (7)

اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ ۭ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا ۭ قَالَ
فَذُوْقُوا الْعَذَابَ بِمَا كُنْتُمْ تَكْفُرُوْنَ ۝٣٤
فَاصْبِرْ كَمَا صَبَرَ اُولُوا الْعَزْمِ مِنَ الرُّسُلِ
وَلَا تَسْتَعْجِلْ لَّهُمْ ۭ كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَ مَا
يُوْعَدُوْنَ ۙ لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا سَاعَةً مِّنْ نَّهَارٍ ۭ
ع بَلٰغٌ ۚ فَهَلْ يُهْلَكُ اِلَّا الْقَوْمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝٣٥

سُوْرَةُ مُحَمَّدٍ مَّدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٣٨ رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ اَضَلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝١
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ وَاٰمَنُوْا
بِمَا نُزِّلَ عَلٰى مُحَمَّدٍ وَّهُوَ الْحَقُّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۙ
كَفَّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ وَاَصْلَحَ بَالَهُمْ ۝٢
ذٰلِكَ بِاَنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوا اتَّبَعُوا الْبَاطِلَ
وَاَنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّبَعُوا الْحَقَّ مِنْ رَّبِّهِمْ ۭ
كَذٰلِكَ يَضْرِبُ اللّٰهُ لِلنَّاسِ اَمْثَالَهُمْ ۝٣
فَاِذَا لَقِيْتُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَضَرْبَ الرِّقَابِ ۭ
حَتّٰٓى اِذَآ اَثْخَنْتُمُوْهُمْ فَشُدُّوا الْوَثَاقَ ۤ ۙ
فَاِمَّا مَنًّۢا بَعْدُ وَاِمَّا فِدَاۗءً حَتّٰى تَضَعَ
مع الْحَرْبُ اَوْزَارَهَا ڃ ذٰلِكَ ڒ وَلَوْ يَشَاۗءُ اللّٰهُ
لَانْتَصَرَ مِنْهُمْ ۙ وَلٰكِنْ لِّيَبْلُوَا۟ بَعْضَكُمْ
بِبَعْضٍ ۭ وَالَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ فَلَنْ يُّضِلَّ اَعْمَالَهُمْ ۝٤
سَيَهْدِيْهِمْ وَيُصْلِحُ بَالَهُمْ ۝٥
وَيُدْخِلُهُمُ الْجَنَّةَ عَرَّفَهَا لَهُمْ ۝٦
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَنْصُرُوا اللّٰهَ
يَنْصُرْكُمْ وَيُثَبِّتْ اَقْدَامَكُمْ ۝٧

8. रहे वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया, तो हलाकत और ठोकर खाना है उनके लिए! और उनके आमाल ख़ुदा ने अकारत कर दिए।

9. यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ को नापसन्द किया जिसे अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाया, लिहाज़ा उसने उनके आमाल को वबाले जान कर दिया।

10. क्या वो ज़मीन में चले-फिरे नहीं कि देखते कि उन लोगों का कैसा अन्जाम हुआ जो उनसे पहले गुज़रे हैं? अल्लाह ने उन्हें तहस-नहस कर दिया; और अहले कुफ़्र के लिए ऐसे ही मुआमलात मुक़द्दर हैं।

11. यह इसलिए कि जो लोग ईमान लाए उनका हामी अल्लाह है, और यह कि काफ़िरों का कोई हामी नहीं।

12. अल्लाह यक़ीनन उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। रहे वो लोग कुफ़्र की रविश इख़्तियार की वो चन्द रोज़ ऐश कर रहे हैं और जिस तरह चौपाए खाते हैं खा रहे हैं; और आग उनका ठिकाना है।

13. कितनी ही बस्तियां थीं जो क़ुव्वत में तुम्हारी इसी बस्ती से जिसने तुम्हें निकाल दिया बढ़-चढ़कर थीं, हमने उन्हें हलाक कर दिया, फिर कोई उनका मददगार न हुआ।

14. तो क्या जो अपने रब की तरफ़ से एक रौशन दलील पर हो वह उन लोगों जैसा हो सकता है जिन्हें उनका बुरा अमल ही ख़ुशनुमा मालूम होता है, और वो अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी में लग गए?

15. उस जन्नत की शान जिसका वादा डर रखने वालों से किया गया है यह है कि उसमें ऐसे पानी की नहरें होंगी जो बिगड़ता नहीं, और ऐसे दूध की नहरें होंगी जिसका ज़ायक़ा ज़रा भी बदला हुआ न होगा, और ऐसी शराब की नहरें होंगी जो पीने वालों के लिए यकसर लुत्फ़ व लज़्ज़त होगी, और साफ़-सुथरे शहद की नहरें भी होंगी; और उनके लिए वहां हर एक फल और उनके अपने रब की तरफ़ से बख़्शिश होगी — क्या वो उन जैसे हो सकते हैं जो हमेशा आग में रहनेवाले हैं और जिन्हें खौलता हुआ पानी पिलाया जाएगा, जो उनकी आंतों को टुकड़े-टुकड़े कर के रख देगा?

16. और उनमें कुछ लोग ऐसे हैं जो तुम्हारी तरफ़ कान लगाते हैं, यहां

वल्लज़ी-न क-फ़रू फ़-तअ्सल्-लहुम् व अज़ल्-ल अअ्मालहुम् (8)

ज़ालि-क बिअन्नहुम् करिहू मा अन्ज़लल्लाहु फ़-अह्ब-त अअ्मालहुम (9)

अ-फ़ लम् यसीरू फ़िल्अर्ज़ि फ़यन्ज़ुरू कै-फ़ का-न आक़ि-बतुल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम्, दम्म-रल्लाहु अ़लैहिम् व लिल्काफ़िरी-न अम्सालुहा (10)

ज़ालि-क बि-अन्नल्ला-ह मौलल्लज़ी-न आमनू व अन्नल्-काफ़िरी-न ला मौला लहुम (11) ●

इन्नल्ला-ह युद्ख़िलुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु, वल्लज़ी-न क-फ़रू य-तमत्तअू-न व यअ्कुलू-न कमा तअ्कुलुल्-अन्आमु वन्नारु मस्वल्-लहुम (12)

व क-अय्यिम् मिन् क़र्-यतिन् हि-य अशद्दु क़ुव्वतम्-मिन् क़र्-यतिकल्लती अख़्र-जत्-क अह्लक्नाहुम् फ़ला नासि-र लहुम् (13)

अ-फ़ मन् का-न अ़ला बय्यि-नतिम् मिर्रब्बिही क-मन् ज़ुय्यि-न लहू सू-उ अ़-मलिही वत्त-बअू अह्वा-अहुम् (14)

म-सलुल्-जन्नतिल्लती वुअि-दल्-मुत्तक़ू-न, फ़ीहा अन्हारुम्-मिम्मा-इन् ग़ैरि आसिनिन् व अन्हारुम् मिल्-ल-बनिल्-लम् य-तग़य्यर् तअ्मुहू व अन्हारुम्-मिन् ख़म्रिल् लज़्ज़तिल्-लिश्शारिबी-न व अन्हारुम्-मिन् अ़-सलिम् मुसफ़्फ़न्, व लहुम् फ़ीहा मिन् कुल्लिस्स-मराति व मग़्फ़ि-रतुम् मिर्रब्बिहिम्, क-मन् हु-व ख़ालिदुन् फ़िन्नारि व सुक़ू मा-अन् हमीमन् फ़-क़त्त-अ़ अम्आ-अहुम् (15)

व मिन्हुम् मंय्यस्तमिअु इलै-क हत्ता इज़ा ख़-रजू मिन् अ़िन्दि-क क़ालू लिल्लज़ी-न ऊतुल्-अ़िल्-म

وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا فَتَعْسًا لَّهُمْ وَاَضَلَّ
اَعْمَالَهُمْ ۝٨
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ كَرِهُوْا مَآ اَنْزَلَ اللّٰهُ فَاَحْبَطَ
اَعْمَالَهُمْ ۝٩
اَفَلَمْ يَسِيْرُوْا فِي الْاَرْضِ فَيَنْظُرُوْا كَيْفَ
كَانَ عَاقِبَةُ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ ؕ دَمَّرَ اللّٰهُ
عَلَيْهِمْ ۫ وَلِلْكٰفِرِيْنَ اَمْثَالُهَا ۝١٠
ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ مَوْلَى الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
ع وَاَنَّ الْكٰفِرِيْنَ لَا مَوْلٰى لَهُمْ ۝١١
اِنَّ اللّٰهَ يُدْخِلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ؕ
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا يَتَمَتَّعُوْنَ وَيَاْكُلُوْنَ
كَمَا تَاْكُلُ الْاَنْعَامُ وَالنَّارُ مَثْوًى لَّهُمْ ۝١٢
وَكَاَيِّنْ مِّنْ قَرْيَةٍ هِيَ اَشَدُّ قُوَّةً مِّنْ
قَرْيَتِكَ الَّتِيْٓ اَخْرَجَتْكَ ۚ اَهْلَكْنٰهُمْ
فَلَا نَاصِرَ لَهُمْ ۝١٣
اَفَمَنْ كَانَ عَلٰى بَيِّنَةٍ مِّنْ رَّبِّهٖ كَمَنْ زُيِّنَ
لَهٗ سُوْٓءُ عَمَلِهٖ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ۝١٤
مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ ؕ فِيْهَآ
اَنْهٰرٌ مِّنْ مَّآءٍ غَيْرِ اٰسِنٍ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ
لَّبَنٍ لَّمْ يَتَغَيَّرْ طَعْمُهٗ ۚ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ
خَمْرٍ لَّذَّةٍ لِّلشّٰرِبِيْنَ ۚ۬ وَاَنْهٰرٌ مِّنْ
عَسَلٍ مُّصَفًّى ؕ وَلَهُمْ فِيْهَا مِنْ كُلِّ
الثَّمَرٰتِ وَمَغْفِرَةٌ مِّنْ رَّبِّهِمْ ؕ كَمَنْ هُوَ خَالِدٌ
فِي النَّارِ وَسُقُوْا مَآءً حَمِيْمًا فَقَطَّعَ اَمْعَآءَهُمْ ۝١٥
وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّسْتَمِعُ اِلَيْكَ ۚ حَتّٰٓى اِذَا خَرَجُوْا
مِنْ عِنْدِكَ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ

तक कि जब वो तुम्हारे पास से निकलते हैं तो उन लोगों से जिन्हें इल्म अता हुआ है कहते हैं कि "उन्होंने अभी-अभी क्या कहा?" वही वो लोग हैं जिनके दिलों पर अल्लाह ने ठप्पा लगा दिया है, उन्होंने तो अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी इख़्तियार की।

17. रहे वो लोग जिन्होंने सीधा रास्ता इख़्तियार किया, उनकी हिदायत में अल्लाह ने अफ़ज़ूनी बख़्शी और उन्हें उनका तक़वा अता किया।

18. अब क्या वो लोग बस उस घड़ी का इन्तिज़ार कर रहे हैं कि वह उनपर अचानक आ जाए? उसकी अलामात तो आ चुकी हैं, जब वह ख़ुद उनपर आ जाएगी, तो फिर उनके लिए होश में आने का मौक़ा कहां बाक़ी रहेगा।

19. पस जान रखो कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और अपने गुनाहों के लिए बख़्शिश मांगो, और मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों के लिए भी। अल्लाह तुम्हारी चलत-फिरत को भी जानता है, और तुम्हारे ठिकाने को भी।

20. जो लोग ईमान लाए वो कहते थे, "कोई सूरह (जिहाद के बारे में) क्यों नहीं उतरी"? मगर जब एक मुहकम सूरह नाज़िल की जाती है जिसमें जंग का ज़िक्र होता है तो तुम उन लोगों को देखते हो जिनके दिलों में रोग है कि वो तुम्हारी तरफ़ इस तरह देखते हैं जैसे किसी पर मौत की बेहोशी छा गई हो; पस अफ़सोस है उनके हाल पर!

21. फ़रमान का बजा लाना और पसन्दीदा बात उनके लिए मुनासिब है। फिर जब (जंग की) बात पुख़्ता हो जाए (तो जंग करनी चाहिए)। तो अगर वो अल्लाह के लिए सच्चे साबित होते, तो उनके लिए बेहतर होता।

22. अब क्या तुमसे इसके सिवा कुछ और तवक़्क़ो की जा सकती है अगर तुम उलटे फिर गए तो ज़मीन में फ़साद बरपा करो, और अपने रहमी रिश्तों को काट डालो?

23. ये वो लोग हैं जिन पर अल्लाह ने लानत की, पस उन्हें बहरा कर दिया और उनकी आंखों को अंधा कर दिया।

24. तो क्या वो क़ुरआन में ग़ौर व फ़िक्र नहीं करते? या उनके दिलों पर क़ुफ़्ल लगे हैं?

25. वो लोग जो पीठ फेरकर पलट गए इसके बाद कि हिदायत उनपर वाज़ेह हो चुकी, उन्हें शैतान ने पट्टी पढ़ाई, और उसने उन्हें ढील दे दी।

26. यह इसलिए कि उन्होंने उन लोगों से जिन्होंने उस चीज़ को नापसन्द किया जो अल्लाह ने नाज़िल फ़रमाई,

माज़ा क़ा-ल आनिफ़न्, उलाइ-कल्लज़ी-न त-बअ़ल्लाहु अ़ला क़ुलूबिहिम् वत्त-बअू अह्वा-अहुम् (16)

वल्लज़ीनह्-तदौ ज़ा-दहुम् हुदंव्-व आताहुम् तक़्वाहुम (17)

फ़-हल् यन्ज़ुरू-न इल्लस्-सा-अ़-त अन् तअ्ति-यहुम् बग़्-ततन् फ़-क़द् जा-अ अश्रातुहा फ़-अन्ना लहुम् इज़ा जा-अत्हुम् ज़िक्राहुम (18)

फ़अ्लम् अन्नहू ला इला-ह इल्लल्लाहु वस्तग़्फ़िर् लि-ज़म्बि-क व लिल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति, वल्लाहु यअ्लमु मु-तक़ल्ल-बकुम् व मस्वाकुम् (19) ●

व यक़ूलुल्लज़ी-न आमनू लौ ला नुज़्ज़िलत् सू-रतुन् फ़-इज़ा उन्ज़िलत् सू-रतुम् मुह्क-मतुंव्-व ज़ुकि-र फ़ीहल्-क़ितालु रऐतल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम् म-रज़ुंय्-यन्ज़ुरू-न इलै-क न-ज़रल्-मग़्शिय्यि अ़लैहि मिनल्-मौति, फ़-औला लहुम (20)

ता-अ़तुंव्-व क़ौलुम्-मअ्रूफ़ुन्, फ़-इज़ा अ़-ज़मल्-अम्रु फ़लौ स-दक़ुल्ला-ह लका-न ख़ैरल्-लहुम् (21)

फ़-हल् अ़सैतुम् इन् तवल्लैतुम् अन् तुफ़्सिदू फ़िल्अर्ज़ि व तुक़त्तिअू अर्हा-मकुम (22)

उलाइ-कल्लज़ी-न ल-अ़-नहुमुल्लाहु फ़-असम्म-हुम् व अअ्मा अब्सा-रहुम (23)

अ-फ़ला य-तदब्बरूनल्-क़ुरआ-न अम् अ़ला क़ुलूबिन् अक़्फ़ालुहा (24)

इन्नल्-लज़ीनर्तद्दू अ़ला अद्बारिहिम् मिम्बअ्दि मा तबय्य-न लहुमुल्-हुदश्शैतानु सव्व-ल लहुम्, व अम्ला लहुम (25)

ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ालू लिल्लज़ी-न करिहू मा नज़्ज़-लल्लाहु

مَاذَا قَالَ اٰنِفًا ۙ اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ طَبَعَ اللّٰهُ
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ ۝١٦
وَالَّذِيْنَ اهْتَدَوْا زَادَهُمْ هُدًى وَّاٰتٰىهُمْ
تَقْوٰىهُمْ ۝١٧
فَهَلْ يَنْظُرُوْنَ اِلَّا السَّاعَةَ اَنْ تَاْتِيَهُمْ
بَغْتَةً ۚ فَقَدْ جَآءَ اَشْرَاطُهَا ۚ فَاَنّٰى
لَهُمْ اِذَا جَآءَتْهُمْ ذِكْرٰىهُمْ ۝١٨
فَاعْلَمْ اَنَّهٗ لَآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاسْتَغْفِرْ
لِذَنْۢبِكَ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۭ
ع وَاللّٰهُ يَعْلَمُ مُتَقَلَّبَكُمْ وَمَثْوٰىكُمْ ۝١٩
وَيَقُوْلُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَوْلَا نُزِّلَتْ سُوْرَةٌ ۚ
فَاِذَآ اُنْزِلَتْ سُوْرَةٌ مُّحْكَمَةٌ وَّذُكِرَ
فِيْهَا الْقِتَالُ ۙ رَاَيْتَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ
مَّرَضٌ يَّنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ نَظَرَ الْمَغْشِيِّ
عَلَيْهِ مِنَ الْمَوْتِ ۭ فَاَوْلٰى لَهُمْ ۝٢٠
طَاعَةٌ وَّقَوْلٌ مَّعْرُوْفٌ ۣ فَاِذَا عَزَمَ
الْاَمْرُ ۣ فَلَوْ صَدَقُوا اللّٰهَ لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۝٢١
فَهَلْ عَسَيْتُمْ اِنْ تَوَلَّيْتُمْ اَنْ تُفْسِدُوْا
فِي الْاَرْضِ وَتُقَطِّعُوْٓا اَرْحَامَكُمْ ۝٢٢
اُولٰٓئِكَ الَّذِيْنَ لَعَنَهُمُ اللّٰهُ فَاَصَمَّهُمْ
وَاَعْمٰٓى اَبْصَارَهُمْ ۝٢٣
اَفَلَا يَتَدَبَّرُوْنَ الْقُرْاٰنَ اَمْ عَلٰى قُلُوْبٍ
اَقْفَالُهَا ۝٢٤
اِنَّ الَّذِيْنَ ارْتَدُّوْا عَلٰٓى اَدْبَارِهِمْ مِّنْۢ
بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ لَهُمُ الْهُدَى ۙ الشَّيْطٰنُ
سَوَّلَ لَهُمْ ۭ وَاَمْلٰى لَهُمْ ۝٢٥
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَالُوْا لِلَّذِيْنَ كَرِهُوْا مَا نَزَّلَ

कहा कि "बाज़ मुआमलात में हम तुम्हारी ही बात मान लेंगे", अल्लाह उनकी राज़दाराना बातों को खूब जानता है।

27. फिर उस वक़्त क्या हाल होगा, जब फ़रिश्ते उनके चेहरों और उनकी पीठों पर मारते हुए उनकी रूहें क़ब्ज़ करेंगे?

28. यह इसलिए कि उन्होंने उस चीज़ की पैरवी की जो अल्लाह को नाराज़ करने वाली थी, और उन्होंने उसकी खुशनूदी को नापसन्द किया, पस उसने उनके आमाल वबाल अंगेज़ कर दिए।

29. क्या जिन लोगों के दिलों में रोग है वो यह समझ बैठे हैं कि अल्लाह उनके कीनों को हरगिज़ ज़ाहिर न करेगा?

30. अगर हम चाहें तो उनको तुम्हें दिखा दें, फिर तुम उन्हें उनकी अलामतों से पहचान लो; मगर तुम उन्हें उनके अन्दाज़-ए-कलाम से ज़रूर पहचान लोगे; अल्लाह तुम्हारे आमाल को जानता ही है।

31. हम ज़रूर तुम्हें आज़माएंगे यहां तक कि हम तुम में से मुजाहिदीन और साबित क़दम रहने वालों को जान लें, और तुम्हारे हालात की जांच लें।

32. जिन लोगों ने इसके बाद कि उनपर हिदायत वाज़ेह हो चुकी थी कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और रसूल की मुख़ालफ़त की, वो हरगिज़ अल्लाह को कुछ नुक़सान नहीं पहुंचा सकेंगे, बल्कि वह उनका सब किया-कराया वबाले जान कर देगा।

33. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह की इताअत करो, और रसूल की इताअत करो, और अपने आमाल को बातिल न करो।

34. यक़ीनन जिन लोगों ने कुफ़्र किया और अल्लाह के रास्ते से रोका और काफ़िर ही रह कर मर गए, अल्लाह उन्हें हरगिज़ न बख़्शेगा।

35. पस ऐसा न हो कि तुम हिम्मत हार जाओ और सुलह की दावत देने लगो, जबकि तुम ही ग़ालिब हो, अल्लाह तुम्हारे साथ है, और वह तुम्हारे आमाल में तुम्हें हरगिज़ नुक़सान नहीं पहुंचाएगा।

36. दुनिया की ज़िन्दगी तो बस एक खेल और तमाशा है; और अगर तुम ईमान लाओ और तक़्वा इख़्तियार करो तो वह तुम्हारे अज्र तुम्हें अता करेगा — और तुम्हारे मालों से नहीं मांगेगा।

सनुतीअुकुम् फ़ी बअ्ज़िल्-अम्रि वल्लाहु यअ्लमु इस्रा-रहुम (26)

फ़कै-फ इज़ा तवफ़्फ़त्हुमुल्-मलाइ-कतु यज़्रिबू-न वुजू-हहुम् व अद्बारहुम (27)

ज़ालि-क बिअन्नहुमुत्त-बअू मा अस्ख़तल्ला-ह व करिहू रिज़्वानहू फ़-अह्ब-त अअ्मालहुम (28) ●

अम् हसिबल्लज़ी-न फ़ी कुलूबिहिम्-म-रज़ुन् अल्-लंय्युख़्रिजल्लाहु अज़्ग़ा-नहुम (29)

व लौ नशा-उ ल-अरैना-कहुम् फ़-ल-अरफ़्तहुम् बिसीमाहुम्, व ल-तअ्रिफ़न्नहुम् फ़ी लह्निल्-क़ौलि, वल्लाहु यअ्लमु अअ्मालकुम (30)

व ल-नब्लुवन्नकुम् हत्ता नअ्-लमल्-मुजाहिदी-न मिन्कुम् वस्साबिरी-न व नब्लु-व अख़्बा-रकुम (31)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि व शाक़्कुर्रसू-ल मिम्बअ्दि मा तबय्य-न लहुमुल्-हुदा लंय्यज़ुर्रुल्ला-ह शैअन्, व स-युह्बितु अअ्मालहुम् (32)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू अतीअुल्ला-ह व अतीअुर्रसू-ल व ला तुब्तिलू अअ्मालकुम (33)

इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दू अन् सबीलिल्लाहि सुम्-म मातू व हुम् कुफ़्फ़ारुन् फ़-लंय्-यग़्फ़िरल्लाहु लहुम (34)

फ़ला तहिनू व तद्अू इलस्सल्मि व अन्तुमुल्-अअ्लौ-न वल्लाहु म-अकुम् व लंय्यति-रकुम् अअ्मालकुम (35)

इन्नमल्-हयातुद्दुन्या लअिबुंव्-व लह्वुन, व इन् तुअ्मिनू व तत्तक़ू युअ्तिकुम् उजू-रकुम् व ला यस्अल्कुम् अम्वालकुम (36)

اللّٰهُ سَنُطِيْعُكُمْ فِيْ بَعْضِ الْاَمْرِ ۚ وَاللّٰهُ
يَعْلَمُ اِسْرَارَهُمْ (٢٦)
فَكَيْفَ اِذَا تَوَفَّتْهُمُ الْمَلٰٓئِكَةُ يَضْرِبُوْنَ
وُجُوْهَهُمْ وَاَدْبَارَهُمْ (٢٧)
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمُ اتَّبَعُوْا مَآ اَسْخَطَ اللّٰهَ
ع وَكَرِهُوْا رِضْوَانَهٗ فَاَحْبَطَ اَعْمَالَهُمْ (٢٨)
اَمْ حَسِبَ الَّذِيْنَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ
اَنْ لَّنْ يُّخْرِجَ اللّٰهُ اَضْغَانَهُمْ (٢٩)
وَلَوْ نَشَآءُ لَاَرَيْنٰكَهُمْ فَلَعَرَفْتَهُمْ
بِسِيْمٰهُمْ ۭ وَلَتَعْرِفَنَّهُمْ فِيْ لَحْنِ
الْقَوْلِ ۭ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اَعْمَالَكُمْ (٣٠)
وَلَنَبْلُوَنَّكُمْ حَتّٰى نَعْلَمَ الْمُجٰهِدِيْنَ مِنْكُمْ
وَالصّٰبِرِيْنَ ۙ وَنَبْلُوَا۟ اَخْبَارَكُمْ (٣١)
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ وَشَآقُّوا الرَّسُوْلَ مِنْ بَعْدِ مَا تَبَيَّنَ
لَهُمُ الْهُدٰى ۙ لَنْ يَّضُرُّوا اللّٰهَ شَيْـًٔا ۭ
وَسَيُحْبِطُ اَعْمَالَهُمْ (٣٢)
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا
الرَّسُوْلَ وَلَا تُبْطِلُوْٓا اَعْمَالَكُمْ (٣٣)
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْا عَنْ سَبِيْلِ
اللّٰهِ ثُمَّ مَاتُوْا وَهُمْ كُفَّارٌ فَلَنْ يَّغْفِرَ
اللّٰهُ لَهُمْ (٣٤)
فَلَا تَهِنُوْا وَتَدْعُوْٓا اِلَى السَّلْمِ ۖ وَاَنْتُمُ الْاَعْلَوْنَ ۖ
وَاللّٰهُ مَعَكُمْ وَلَنْ يَّتِرَكُمْ اَعْمَالَكُمْ (٣٥)
اِنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ ۭ وَاِنْ
تُؤْمِنُوْا وَتَتَّقُوْا يُؤْتِكُمْ اُجُوْرَكُمْ
وَلَا يَسْــَٔـلْكُمْ اَمْوَالَكُمْ (٣٦)

37. और अगर वह उनको तुमसे मांगे, और चिमट कर मांगे, तो तुम बुख़्ल करो, और वह तुम्हारे कीने और कजी निकाल बाहर कर देगा।

38. आगाह रहो यह तुम ही लोग हो कि तुम्हें दावत दी जाती है कि अल्लाह की राह में ख़र्च करो, फिर तुममें कुछ लोग हैं जो बुख़्ल करते हैं हालांकि जो बुख़्ल करता है वह दर हक़ीक़त अपने आप से ही बुख़्ल करता है। अल्लाह तो बेनियाज़ है; तुम ही मुहताज हो। और अगर तुम फिर जाओ तो वह तुम्हारी जगह और लोगों को ले आएगा, फिर वो तुम जैसे न होंगे।

सूरह अल–फ़त्ह मदनी

(आयतें 29, रुकूआत 4)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. यक़ीनन हमने तुम्हारे लिए एक खुली फ़त्ह नमूदार की,

2. ताकि अल्लाह तुम्हारे अगले और पिछले गुनाहों को बख़्श दे, और तुमपर अपनी नेमत की तकमील करे, और तुम्हें सीधे रास्ते पर चलाए,

3. और अल्लाह तुम्हें ज़बरदस्त नुसरत बख़्शे।

4. वही है जिसने अहले ईमान के दिलों में सकीना (इत्मीनान) नाज़िल फ़रमाया, ताकि अपने ईमान के साथ वो और ईमान का इज़ाफ़ा करें — आसमानों और ज़मीन के तमाम लश्कर अल्लाह ही के हैं; और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है,

5. ताकि वह मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को ऐसे बाग़ों में जिनके नीचे नहरें बहती होंगी दाख़िल करे कि वो उनमें हमेशा रहें, और उनसे उनकी बुराइयां दूर कर दे — यह अल्लाह के नज़दीक बड़ी कामयाबी है।

6. और मुनाफ़िक़ मर्दों और मुनाफ़िक़ औरतों, और मुश्रिक मर्दों और मुश्रिक औरतों को, जो अल्लाह के बारे में बुरा गुमान रखते हैं अज़ाब दे; उन्हीं पर बुराई की गर्दिश है। अल्लाह उनपर ग़ज़बनाक हुआ, और उनपर लानत की, और उसने उनके लिए जहन्नम तैयार कर रखा है, और वह निहायत बुरा ठिकाना है!

इंय्यस्अल्कुमूहा फ़-युह़फ़िक्कुम् तब्ख़लू व युख़्रिज अज़्ग़ा-नकुम् (37) हा-अन्तुम् हा-उला-इ तुद्अ़ौ-न लितुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि फ़मिन्कुम् मंय्यब्ख़लु व मंय्यब्ख़ल् फ़-इन्नमा यब्ख़लु अ़न्-नफ़्सिही, वल्लाहुल्-ग़निय्यु व अन्तुमुल्-फ़ु-क़रा-उ व इन् त-तवल्लौ यस्तब्दिल् क़ौमन् ग़ैरकुम् सुम्-म ला यकूनू अम्सालकुम (38) ●

48 सूरतुल्–फ़त्हि

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2555 अक्षर, 568 शब्द, 29 आयतें और 4 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इन्ना फ़-तह्ना ल-क फ़त्हम्-मुबीना (1) लि-यग़्फ़ि-र लकल्लाहु मा तक़द्द-म मिन् ज़म्बि-क व मा त-अख़्ख़-र व युतिम्-म निअ़्-म-तहू अ़लै-क व यह्दि-य-क सिरातम्-मुस्तक़ीमा (2) व यन्सु-रकल्लाहु नस्रन् अ़ज़ीज़ा (3) हुवल्लज़ी अन्ज़लस्सकी-न-त फ़ी क़ुलूबिल्-मुअ्मिनी-न लि-यज़्दादू ईमानम्-म-अ़ ईमानिहिम्, व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु अ़लीमन् हकीमा (4) लियुद्ख़िलल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा व युकफ़्फ़ि-र अ़न्हुम् सय्यिआतिहिम्, व का-न ज़ालि-क अ़िन्दल्लाहि फ़ौज़न् अ़ज़ीमा (5) व युअ़ज़्ज़िबल्-मुनाफ़िक़ी-न वल्मुनाफ़िक़ाति वल् मुश्रिकी-न वल्मुश्रिकातिज़्-ज़ान्नी-न बिल्लाहि ज़न्नस्सौइ, अ़लैहिम् दाइ-रतुस्-सौइ व ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् व ल-अ़-नहुम् व अ-अ़द्-द लहुम् जहन्न-म, व साअत् मसीरा (6)

إِنْ يَّسْـَٔلْكُمُوْهَا فَيُحْفِكُمْ تَبْخَلُوْا
وَيُخْرِجْ اَضْغَانَكُمْ ﴿٣٧﴾
هٰٓاَنْتُمْ هٰٓؤُلَآءِ تُدْعَوْنَ لِتُنْفِقُوْا فِيْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ۚ فَمِنْكُمْ مَّنْ يَّبْخَلُ ۚ وَمَنْ
يَّبْخَلْ فَاِنَّمَا يَبْخَلُ عَنْ نَّفْسِهٖ ۭ وَاللّٰهُ الْغَنِيُّ
وَاَنْتُمُ الْفُقَرَآءُ ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا يَسْتَبْدِلْ
ع قَوْمًا غَيْرَكُمْ ۙ ثُمَّ لَا يَكُوْنُوْٓا اَمْثَالَكُمْ ﴿٣٨﴾

سُوْرَةُ الْفَتْحِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢٩ رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِنَّا فَتَحْنَا لَكَ فَتْحًا مُّبِيْنًا ﴿١﴾ۙ
لِّيَغْفِرَ لَكَ اللّٰهُ مَا تَقَدَّمَ مِنْ ذَنْۢبِكَ
وَمَا تَاَخَّرَ وَيُتِمَّ نِعْمَتَهٗ عَلَيْكَ وَيَهْدِيَكَ
صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ﴿٢﴾ۙ
وَّيَنْصُرَكَ اللّٰهُ نَصْرًا عَزِيْزًا ﴿٣﴾
هُوَ الَّذِيْٓ اَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ فِيْ قُلُوْبِ
الْمُؤْمِنِيْنَ لِيَزْدَادُوْٓا اِيْمَانًا مَّعَ اِيْمَانِهِمْ ۭ
وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ وَكَانَ
اللّٰهُ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٤﴾ۙ
لِّيُدْخِلَ الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَا وَيُكَفِّرَ عَنْهُمْ سَيِّاٰتِهِمْ ۭ وَكَانَ
ذٰلِكَ عِنْدَ اللّٰهِ فَوْزًا عَظِيْمًا ﴿٥﴾ۙ
وَّيُعَذِّبَ الْمُنٰفِقِيْنَ وَالْمُنٰفِقٰتِ
وَالْمُشْرِكِيْنَ وَالْمُشْرِكٰتِ الظَّاۗنِّيْنَ
بِاللّٰهِ ظَنَّ السَّوْءِ ۭ عَلَيْهِمْ دَاۗىِٕرَةُ السَّوْءِ ۚ
وَغَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ وَلَعَنَهُمْ وَاَعَدَّ لَهُمْ
جَهَنَّمَ ۭ وَسَاۗءَتْ مَصِيْرًا ﴿٦﴾

7. आसमानों और ज़मीन के तमाम लश्कर अल्लाह ही के हैं; अल्लाह ज़बरदस्त निहायत हिकमतवाला है।

8. यक़ीनन हमने तुम्हें शहादत देने वाला और बशारत देनेवाला, और ख़बरदार करनेवाला बना कर भेजा,

9. ताकि (ऐ लोगो) तुम अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाओ और उसे मदद पहुंचाओ, और उसकी ताज़ीम (इज़्ज़त) करो, और सुबह व शाम उसकी तसबीह करते रहो।

10. (ऐ नबी) वो लोग जो तुमसे बैअत करते हैं वो तो हक़ीक़त में अल्लाह ही से बैअत करते हैं; उनके हाथों के ऊपर अल्लाह का हाथ होता है। फिर जिस किसी ने अहद तोड़ा तो वह अ़हद तोड़कर उसका वबाल अपने ही सर लेता है; मगर जिसने उस अहद को पूरा किया जो उसने अल्लाह से किया है, तो उसे वह बड़ा अजर अता फ़रमाएगा।

11. जो बदवी पीछे रह गए थे वो अब तुमसे कहेंगे कि "हमारे माल और हमारे घरवालों ने हमें मशग़ूल रखा; अब हमारे लिए बख़्शिश की दुआ कीजिए!" वो अपनी ज़बानों से वो बातें कहते हैं जो उनके दिलों में नहीं। कह दो: "कौन अल्लाह के मुक़ाबिल तुम्हारे लिए किसी चीज़ का इख़्तियार रखता है? अगर वह तुम्हें कोई नुक़सान पहुंचाना चाहे, या वह तुम्हें कोई फ़ायदा पहुंचाने का इरादा फ़रमाए, बल्कि जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है।

12. नहीं, बल्कि तुमने यह समझा कि रसूल और मोमिनीन अपने घरवालों की तरफ़ कभी लौटकर न आएंगे, और यह तुम्हारे दिलों को अच्छा लगा, तुमने बहुत बुरे गुमान किए और तुम्हीं हलाकत में पड़ने वाले लोग हुए"।

13. और जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान न लाया, तो हमने भी काफ़िरों के लिए भड़कती आग तैयार कर रखी है।

14. आसमानों और ज़मीन की बादशाही अल्लाह ही की है; वह जिसे चाहे बख़्श दे, और जिसे चाहे अज़ाब दे, और अल्लाह बड़ा बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला है।

15. जब तुम ग़नीमतों की तरफ़ चलोगे कि उनको हासिल करो, तो

व लिल्लाहि जुनूदुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा (7)

इन्ना अर्सल्ना-क शाहिदंव्-व मुबश्शिरंव्-व नज़ीरा (8)

लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही व तुअ़ज़्ज़िरूहु व तुवक़्क़िरूहु, व तुसब्बिहूहु बुक्र-तंव्-व असीला (9)

इन्नल्लज़ी-न युबायिअू-न-क इन्नमा युबायिअूनल्ला-ह, यदुल्लाहि फ़ौ-क़ ऐदीहिम् फ़-मन्-न-क-स फ़-इन्नमा यन्कुसु अ़ला नफ़्सिही व मन् औफ़ा बिमा आ़-ह-द अ़लैहुल्ला-ह फ़-सयुअ्तीहि अज्रन् अ़ज़ीमा (10)●

स-यक़ूलु ल-कल्-मुख़ल्लफ़ू-न मिनल्-अअ्राबि श-ग़लत्ना अम्वालुना व अह्लूना फ़स्तग़्फ़िर् लना यक़ूलू-न बि-अल्सि-नतिहिम् मा लै-स फ़ी क़ुलूबिहिम्, क़ुल् फ़-मंय्यम्लिकु लकुम् मिनल्लाहि शैअन् इन् अरा-द बिकुम् ज़र्रन् औ अरा-द बिकुम् नफ़्अ़न्, बल् कानल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीरा (11)

बल् ज़नन्तुम् अल्लंय्यन्क़लिबर्-रसूलु वल्-मुअ्मिनू-न इला अह्लीहिम् अ-बदंव्-व ज़ुय्यि-न ज़ालि-क फ़ी क़ुलूबिकुम् व ज़नन्तुम् ज़न्नस्सौइ व कुन्तुम् क़ौमम्-बूरा (12)

व मल्लम् युअ्मिम्-बिल्लाहि व रसूलिही फ़-इन्ना अअ्तद्ना लिल्काफ़िरी-न सअ़ीरा (13)

व लिल्लाहि मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, यग़्फ़िरु लिमंय्यशा-उ व युअ़ज़्ज़िबु मंय्यशा-उ, व कानल्लाहु ग़फ़ूरर्-रहीमा (14)

स-यक़ूलुल्-मुख़ल्लफ़ू-न इज़न्त़-लक़्तुम् इला

وَلِلّٰهِ جُنُوْدُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ⑦
اِنَّآ اَرْسَلْنٰكَ شَاهِدًا وَّمُبَشِّرًا
وَّنَذِيْرًا ⑧
لِّتُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَتُعَزِّرُوْهُ
وَتُوَقِّرُوْهُ ۭ وَتُسَبِّحُوْهُ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ⑨
اِنَّ الَّذِيْنَ يُبَايِعُوْنَكَ اِنَّمَا يُبَايِعُوْنَ
اللّٰهَ ۭ يَدُ اللّٰهِ فَوْقَ اَيْدِيْهِمْ ۚ فَمَنْ
نَّكَثَ فَاِنَّمَا يَنْكُثُ عَلٰي نَفْسِهٖ ۚ وَمَنْ
اَوْفٰى بِمَا عٰهَدَ عَلَيْهُ اللّٰهَ فَسَيُؤْتِيْهِ
ع اَجْرًا عَظِيْمًا ⑩
سَيَقُوْلُ لَكَ الْمُخَلَّفُوْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ
شَغَلَتْنَآ اَمْوَالُنَا وَاَهْلُوْنَا فَاسْتَغْفِرْ لَنَا ۚ
يَقُوْلُوْنَ بِاَلْسِنَتِهِمْ مَّا لَيْسَ فِيْ قُلُوْبِهِمْ ۭ
قُلْ فَمَنْ يَّمْلِكُ لَكُمْ مِّنَ اللّٰهِ شَـيْـــًٔا
اِنْ اَرَادَ بِكُمْ ضَرًّا اَوْ اَرَادَ بِكُمْ نَفْعًا ۭ
بَلْ كَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرًا ⑪
بَلْ ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّنْقَلِبَ الرَّسُوْلُ
وَالْمُؤْمِنُوْنَ اِلٰٓى اَهْلِيْهِمْ اَبَدًا وَّزُيِّنَ
ذٰلِكَ فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَظَنَنْتُمْ ظَنَّ
السَّوْءِ ښ وَكُنْتُمْ قَوْمًۢا بُوْرًا ⑫
وَمَنْ لَّمْ يُؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ فَاِنَّآ
اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِيْنَ سَعِيْرًا ⑬
وَلِلّٰهِ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ يَغْفِرُ
لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيُعَذِّبُ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ
وَكَانَ اللّٰهُ غَفُوْرًا رَّحِيْمًا ⑭
سَيَقُوْلُ الْمُخَلَّفُوْنَ اِذَا انْطَلَقْتُمْ اِلٰى

पीछे रहने वाले कहेंगे, "हमें भी इजाज़त दी जाए कि हम तुम्हारे साथ चलें"। वो चाहते हैं कि अल्लाह के कलाम को बदल दें। कहो, "तुम हमारे साथ हरगिज़ नहीं चल सकते; अल्लाह ने पहले ही ऐसा फ़रमा दिया है"। इसपर वो कहेंगे, "नहीं, बल्कि तुम हमसे हसद कर रहे हो"। नहीं, बल्कि वो लोग समझते थोड़े ही हैं।

16. पीछे रह जाने वाले बदवियों से कह दो, "अनक़रीब तुम्हें ऐसे लोगों की तरफ़ बुलाया जाएगा जो बड़े ज़ोर आवर हैं कि तुम उनसे लड़ो, या वो फ़रमांबरदार हो जाएं। तो अगर तुम इताअत करोगे, तो अल्लाह तुम्हें अच्छा अज्र देगा; लेकिन अगर तुम फिर गए, जैसे पहले फिर गए थे, तो वह तुम्हें दर्दनाक अज़ाब देगा"।

17. न अंधे के लिए कोई हर्ज है, और न लंगड़े के लिए कोई हर्ज है, और न बीमार के लिए कोई हर्ज है जो भी अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा, उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल फ़रमाएगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी; मगर जो मुंह फेरेगा उसे वह दर्दनाक अज़ाब देगा।

18. यक़ीनन अल्लाह मोमिनीन से ख़ुश हुआ जब वो दरख़्त के नीचे तुमसे बैअत कर रहे थे, जो कुछ उनके दिलों में था उसे उसने जान लिया, पस उनपर उसने सकीना (इत्मीनान) उतारा, और बदले में उन्हें अनक़रीब ज़ाहिर होने वाली फ़त्ह तय कर दी।

19. और बहुत सी ग़नीमतें भी जिनको वो हासिल करेंगे; अल्लाह ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है।

20. अल्लाह ने तुमसे बहुत ग़नीमतों का वादा फ़रमाया है जिन्हें तुम हासिल करोगे; यह (फ़त्ह) तो सरे दस्त उसने तुम्हारे लिए फ़ौरी तौरपर तय कर दी, और लोगों के हाथ तुमसे रोक दिए, और ताकि मोमिनीन के लिए एक निशानी हो, और वह सीधे रास्ते की तरफ़ रहनुमाई फ़रमाए।

21. नीज़ दीगर ग़नीमतों का भी वादा है जिन पर तुम अभी क़ादिर नहीं हुए हो, उन्हें अल्लाह ने घेर रखा है। अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है।

मग़ानि-म लितअ्ख़ुज़ूहा ज़रूना नत्तबिअ्कुम् युरीदू-न अंय्युबद्दिलू कलामल्लाहि, क़ुल्-लन् तत्तबिअूना कज़ालिकुम् क़ालल्लाहु मिन् क़ब्लु फ़-स-यक़ूलू-न बल् तह्सुदू-नना बल् कानू ला यफ़्क़हू-न इल्ला क़लीला (15)

क़ुल् लिल्-मुख़ल्लफ़ी-न मिनल्-अअ्राबि स-तुद्औ-न इला क़ौमिन् उली बअ्सिन् शदीदिन् तुक़ातिलूनहुम् औ युस्लिमू-न फ़-इन् तुतीअू युअ्तिकुमुल्लाहु अज्रन् ह-सनन् व इन् त-तवल्लौ कमा तवल्लैतुम् मिन् क़ब्लु युअ़ज़्ज़िब्कुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (16)

लै-स अ़लल्-अअ्मा ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-अअ्रजि ह-रजुंव्-व ला अ़लल्-मरीज़ि ह-रजुन्, व मंय्युतिअ़िल्ला-ह व रसूलहू युदख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व मंय्य-तवल्-ल युअ़ज़्ज़िब्हु अ़ज़ाबन् अलीमा ● (17)

● *ल-क़द् रज़ियल्लाहु अ़निल्-मुअ्मिनी-न इज़् युबायिअू न-क तह्तश्श-ज-रति फ़-अ़लि-म मा फ़ी क़ुलूबिहिम् फ़-अन्ज़-लस्सकी-न-त अ़लैहिम् व असाबहुम् फ़त्हन् क़रीबा* (18)

व मग़ानि-म कसी-रतंय्-यअ्ख़ुज़ूनहा, व कानल्लाहु अ़ज़ीज़न् हकीमा (19)

व-अ़-दकुमुल्लाहु मग़ानि-म कसी-रतन् तअ्ख़ुज़ूनहा फ़-अ़ज्ज-ल लकुम् हाज़िही व कफ़्-फ़ ऐदि-यन्नासि अ़न्कुम् व लितकू-न आ-यतल्-लिल्मुअ्मिनी-न व यह्दि-यकुम् सिरातम्-मुस्तक़ीमा (20)

व उख़्रा लम् तक़्दिरू अ़लैहा क़द् अहातल्लाहु बिहा, व कानल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरा (21)

مَغَانِمَ لِتَأْخُذُوْهَا ذَرُوْنَا نَتَّبِعْكُمْ ۚ
يُرِيْدُوْنَ اَنْ يُّبَدِّلُوْا كَلٰمَ اللّٰهِ ؕ قُلْ
لَّنْ تَتَّبِعُوْنَا كَذٰلِكُمْ قَالَ اللّٰهُ مِنْ قَبْلُ ۚ
فَسَيَقُوْلُوْنَ بَلْ تَحْسُدُوْنَنَا ؕ بَلْ كَانُوْا
لَا يَفْقَهُوْنَ اِلَّا قَلِيْلًا ۱۵
قُلْ لِّلْمُخَلَّفِيْنَ مِنَ الْاَعْرَابِ سَتُدْعَوْنَ
اِلٰى قَوْمٍ اُولِىْ بَاْسٍ شَدِيْدٍ تُقَاتِلُوْنَهُمْ
اَوْ يُسْلِمُوْنَ ۚ فَاِنْ تُطِيْعُوْا يُؤْتِكُمُ
اللّٰهُ اَجْرًا حَسَنًا ۚ وَاِنْ تَتَوَلَّوْا كَمَا تَوَلَّيْتُمْ
مِّنْ قَبْلُ يُعَذِّبْكُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۱۶
لَيْسَ عَلَى الْاَعْمٰى حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْاَعْرَجِ
حَرَجٌ وَّلَا عَلَى الْمَرِيْضِ حَرَجٌ ؕ وَمَنْ
يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ يُدْخِلْهُ جَنّٰتٍ
تَجْرِىْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۚ وَمَنْ
ع يَّتَوَلَّ يُعَذِّبْهُ عَذَابًا اَلِيْمًا ۱۷
لَقَدْ رَضِىَ اللّٰهُ عَنِ الْمُؤْمِنِيْنَ
اِذْ يُبَايِعُوْنَكَ تَحْتَ الشَّجَرَةِ فَعَلِمَ
مَا فِىْ قُلُوْبِهِمْ فَاَنْزَلَ السَّكِيْنَةَ
عَلَيْهِمْ وَاَثَابَهُمْ فَتْحًا قَرِيْبًا ۱۸
وَّمَغَانِمَ كَثِيْرَةً يَّاْخُذُوْنَهَا ؕ وَكَانَ
اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۱۹
وَعَدَكُمُ اللّٰهُ مَغَانِمَ كَثِيْرَةً تَاْخُذُوْنَهَا
فَعَجَّلَ لَكُمْ هٰذِهٖ وَكَفَّ اَيْدِىَ النَّاسِ
عَنْكُمْ ۚ وَلِتَكُوْنَ اٰيَةً لِّلْمُؤْمِنِيْنَ
وَيَهْدِيَكُمْ صِرَاطًا مُّسْتَقِيْمًا ۲۰
وَّاُخْرٰى لَمْ تَقْدِرُوْا عَلَيْهَا قَدْ اَحَاطَ
اللّٰهُ بِهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرًا ۲۱

22. (मक्का के) जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया वो अगर तुम से लड़ते, तो लाज़िमन पीठ फेर जाते, फिर यह भी कि न तो वो कोई हामी पाएंगे और न कोई मददगार;

23. यह अल्लाह के दस्तूर के मुताबिक़ है जो पहले से चला आया है और तुम अल्लाह के दस्तूर में हरगिज़ कोई तबदीली न पाओगे।

24. वही है जिसने उनके हाथ तुमसे, और तुम्हारे हाथ उनसे मक्का की वादी में रोक दिए, इसके बाद कि वह तुम्हें उनपर ग़लबा अता कर चुका था। तुम जो कुछ कर रहे थे अल्लाह उसे देख रहा था।

25. वही लोग तो हैं जिन्होंने कुफ़्र किया और तुम्हें मस्जिद-ए-हराम से रोक दिया और क़ुरबानी के बंधे जानवरों को भी उससे रोके रखा कि वो अपने ठिकाने पर पहुंचें। अगर यह ख़याल न होता कि बहुत से मोमिन मर्द और मोमिन औरतें जिन्हें तुम नहीं जानते (मक्का में) मौजूद हैं उन्हें तुम पामाल कर दोगे, फिर उनके सिलसिले में ला इल्मी में तुमपर इल्ज़ाम आएगा (तो जंग की इजाज़त दे दी जाती)। ताकि अल्लाह जिसे चाहे अपनी रहमत में दाख़िल कर ले, अगर वो मोमिन अलग हो गए होते तो उनमें के जिन लोगों ने कुफ़्र इख़्तियार किया उन्हें हम लाज़िमन दर्दनाक अज़ाब देते।

26. याद करो जब उन लोगों ने जिन्होंने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की अपने दिलों में पच और हमिय्यत को जगह दी, जाहिलाना हमिय्यत को, तो अल्लाह ने अपने रसूल पर और मोमिनीन पर सकीना नाज़िल फ़रमाया, और उन्हें तक़्वा की बात का पाबन्द रखा, वो इसके ज़्यादा हक़दार और उसके अहल भी थे; अल्लाह तो हर चीज़ जानता है।

27. यक़ीनन अल्लाह ने अपने रसूल को मक़सद के तहत सच्चा ख़्वाब दिखाया: "अगर अल्लाह ने चाहा तो तुम ज़रूर मस्जिद-ए-हराम में दाख़िल होगे, बेखटके अपने सर के बाल मुंडाते, और बाल तरशवाते हुए, तुम्हें कोई ख़ौफ़ न होगा"। हुआ यह कि उसने वह बात जान ली जो तुमने नहीं जानी, पस इससे पहले उसने अनक़रीब ज़ाहिर होने वाली एक फ़त्ह तुम्हारे लिए तय कर दी।

व लौ क़ात-लकुमुल्लज़ी-न क-फ़रू ल-वल्लवुल्-अद्बा-र सुम्-म ला यजिदू-न वलिय्यंव् व ला नसीरा (22)

सुन्नतल्लाहिल्लती क़द् ख़-लत् मिन् क़ब्लु व लन् तजि-द लिसुन्नतिल्लाहि तब्दीला (23)

व हुवल्लज़ी कफ़्-फ़ ऐदि-यहुम् अ़न्कुम् व ऐदि-यकुम् अ़न्हुम् बि-बत्नि मक्क-त मिम्-बअ़्दि अन् अज़्-फ़-रकुम् अ़लैहिम्, व कानल्लाहु बिमा तअ़्मलू-न बसीरा (24)

हुमुल्लज़ी-न क-फ़रू व सद्दूकुम् अ़निल्-मस्जिदिल्-हरामि वल्हद्-य मअ़्कूफ़न् अंय्यब्लु-ग़ महिल्-लहू, व लौ ला रिजालुम्-मुअ्मिनू-न व निसाउम् मुअ्मिनातुल्-लम् तअ़्लमूहुम् अन् त-तऊहुम् फ़तुसी-बकुम् मिन्हुम् म-अ़र्रतुम्-बिग़ैरि अ़िल्मिन् लियुद्ख़िलल्लाहु फ़ी रह्मतिही मंय्यशा-उ लौ तज़य्यलू ल-अ़ज़्ज़ब्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन्हुम् अ़ज़ाबन् अलीमा (25)

इज़् ज-अ़लल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-हमिय्य-त हमिय्यतल्-जाहिलिय्यति फ़-अन्ज़लल्लाहु सकी-न-तहू अ़ला रसूलिही व अ़लल्-मुअ्मिनी-न व अल्ज़-महुम् कलि-मतत्-तक़्वा व कानू अ-हक़्-क़ बिहा व अह्लहा, व कानल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीमा (26) ●

ल-क़द् स-दक़ल्लाहु रसूलहुर्रुअ्या बिल्हक़्क़ि ल-तद्ख़ुलुन्नल्-मस्जिदल्-हरा-म इन् शा-अल्लाहु आमिनी-न मुहल्लिक़ी-न रुऊ-सकुम् व मुक़स्सिरी-न ला तख़ाफ़ू-न, फ़-अ़लि-म मा लम् तअ़्लमू फ़-ज-अ़-ल मिन् दूनि ज़ालि-क फ़त्हन् क़रीबा (27)

وَلَوْ قٰتَلَكُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَوَلَّوُا الْاَدْبَارَ ثُمَّ لَا يَجِدُوْنَ وَلِيًّا وَّلَا نَصِيْرًا ۝٢٢

سُنَّةَ اللّٰهِ الَّتِيْ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلُ ۚۖ وَلَنْ تَجِدَ لِسُنَّةِ اللّٰهِ تَبْدِيْلًا ۝٢٣

وَهُوَ الَّذِيْ كَفَّ اَيْدِيَهُمْ عَنْكُمْ وَاَيْدِيَكُمْ عَنْهُمْ بِبَطْنِ مَكَّةَ مِنْۢ بَعْدِ اَنْ اَظْفَرَكُمْ عَلَيْهِمْ ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرًا ۝٢٤

هُمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَصَدُّوْكُمْ عَنِ الْمَسْجِدِ الْحَرَامِ وَالْهَدْيَ مَعْكُوْفًا اَنْ يَّبْلُغَ مَحِلَّهٗ ؕ وَلَوْلَا رِجَالٌ مُّؤْمِنُوْنَ وَنِسَآءٌ مُّؤْمِنٰتٌ لَّمْ تَعْلَمُوْهُمْ اَنْ تَطَـُٔوْهُمْ فَتُصِيْبَكُمْ مِّنْهُمْ مَّعَرَّةٌ ۢ بِغَيْرِ عِلْمٍ ۚ لِيُدْخِلَ اللّٰهُ فِيْ رَحْمَتِهٖ مَنْ يَّشَآءُ ۚ لَوْ تَزَيَّلُوْا لَعَذَّبْنَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ۝٢٥

اِذْ جَعَلَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْحَمِيَّةَ حَمِيَّةَ الْجَاهِلِيَّةِ فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلٰى رَسُوْلِهٖ وَعَلَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَاَلْزَمَهُمْ كَلِمَةَ التَّقْوٰى وَكَانُوْٓا اَحَقَّ بِهَا وَاَهْلَهَا ؕ وَكَانَ اللّٰهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمًا ۝٢٦ ع

لَقَدْ صَدَقَ اللّٰهُ رَسُوْلَهُ الرُّءْيَا بِالْحَقِّ ۚ لَتَدْخُلُنَّ الْمَسْجِدَ الْحَرَامَ اِنْ شَآءَ اللّٰهُ اٰمِنِيْنَ ۙ مُحَلِّقِيْنَ رُءُوْسَكُمْ وَمُقَصِّرِيْنَ ۙ لَا تَخَافُوْنَ ؕ فَعَلِمَ مَا لَمْ تَعْلَمُوْا فَجَعَلَ مِنْ دُوْنِ ذٰلِكَ فَتْحًا قَرِيْبًا ۝٢٧

28. वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और सच्चे दीन के साथ भेजा, ताकि उसे तमाम दीन पर ग़ालिब कर दे और गवाह की हैसियत से अल्लाह काफ़ी है।

29. अल्लाह के रसूल मुहम्मद और जो लोग उनके साथ हैं वो काफ़िरों के मुक़ाबले में भारी, आपस में नर्म दिल हैं। तुम उन्हें रुकू में, सजदे में, अल्लाह का फ़ज़्ल और ख़ुशनूदी तलब करते हुए देखोगे। उनका इमतियाज़ उनके चेहरों से, सजदों के असर से ज़ाहिर है। यही उनकी सिफ़त तौरात में और उनकी सिफ़त इन्जील में उस खेती की तरह मज़कूर है जिसने अपनी सूई निकाली, फिर उसे कुव्वत पहुंचाई, पस वह मोटी और सख़्त हुई और वह अपने तने पर सीधी खड़ी हो गई, काश्तकारों को भा रही है, ताकि उनसे काफ़िरों का जी जलाए। वो लोग जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए उनसे अल्लाह ने मग़फ़िरत और बड़े अज्र का वादा फ़रमाया है।

सूरह अल-हुजुरात मदनी

(आयतें 18, रुकुआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ऐ ईमान वालो! अल्लाह और उसके रसूल से आगे न बढ़ो; और अल्लाह का डर रखो। यक़ीनन अल्लाह सुनता, जानता है।

2. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम अपनी आवाज़ों को नबी की आवाज़ से ऊंची न करो और जिस तरह तुम आपस में एक-दूसरे से ज़ोर से बोलते हो, उनसे बुलन्द आवाज़ से बात न करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम्हारे आमाल ग़ारत हो जाएं और तुम्हें ख़बर भी न हो।

3. वो लोग जो अल्लाह के रसूल के हुज़ूर अपनी आवाज़ों को पस्त रखते हैं, वही लोग हैं जिनके दिलों को अल्लाह ने तक़वा के लिए जांचकर मुन्तख़ब कर लिया है; उनके लिए बख़्शिश और बड़ा अज्र है।

4. जो लोग तुम्हें हुजरों के बाहर से पुकारते हैं उनमें से अकसर अक़्ल

हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही, व कफ़ा बिल्लाहि शहीदा (28)

मुहम्मदुर्-रसूलुल्लाहि, वल्लज़ी-न म-अ़हू अशिद्दा-उ अ़लल्-कुफ़्फ़ारि रु-हमा-उ बैनहुम् तराहुम् रुक्क-अ़न् सुज्ज-दंय्यब्तग़ू-न फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानन् सीमाहुम् फ़ी वुजूहिहिम्-मिन् अ-सरिस्सुजूदि, ज़ालि-क म-सलुहुम् फ़ित्तौराति व म-सलुहुम् फ़िल्-इन्जीलि, क-ज़र्अिन् अख़्र-ज शत्-अहू फ़आ-ज़-रहू फ़स्तग़्-ल-ज़ फ़स्तवा अ़ला सूक़िही युअ्जिबुज्जुर्रा-अ लि-यग़ी-ज़ बिहिमुल्-कुफ़्फ़ा-र, व-अ़दल्लाहुल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिन्हुम् मग़्फ़ि-रतंव्-व अज्रन् अ़ज़ीमा (29)●

49 सूरतुल्-हुजुराति

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1573 अक्षर, 350 शब्द, 18 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुक़द्दिमू बै-न य-दयिल्लाहि व रसूलिही वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह समीअ़ुन् अ़लीम (1)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तर्फ़अ़ू अस्वातकुम् फ़ौ-क़ सौतिन्-नबिय्यि व ला तज्हरू लहू बिल्क़ौलि क-जह्रि बअ़्ज़िकुम् लि-बअ़्ज़िन् अन् तह्ब-त अअ़्मालुकुम् व अन्तुम् ला तश्अ़ुरून (2)

इन्नल्लज़ी-न यग़ुज़्ज़ू-न अस्वातहुम् अ़िन्-द रसूलिल्लाहि उलाइ-कल्लज़ीनम्-त-हनल्लाहु क़ुलू-बहुम् लित्तक़्वा, लहुम्-मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् अ़ज़ीम (3)

इन्नल्लज़ी-न युनादू-न-क मिंव्वरा-इल्-हुजुराति

هُوَ الَّذِیْٓ اَرْسَلَ رَسُوْلَهٗ بِالْهُدٰی
وَدِیْنِ الْحَقِّ لِیُظْهِرَهٗ عَلَی الدِّیْنِ
كُلِّهٖ ؕ وَكَفٰی بِاللّٰهِ شَهِیْدًا ۝٢٨
مُحَمَّدٌ رَّسُوْلُ اللّٰهِ ؕ وَالَّذِیْنَ مَعَهٗٓ
اَشِدَّآءُ عَلَی الْكُفَّارِ رُحَمَآءُ بَیْنَهُمْ
تَرٰىهُمْ رُكَّعًا سُجَّدًا یَّبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ
وَرِضْوَانًا ؗ سِیْمَاهُمْ فِیْ وُجُوْهِهِمْ مِّنْ
اَثَرِ السُّجُوْدِ ؕ ذٰلِكَ مَثَلُهُمْ فِی التَّوْرٰىةِ ۚۖۛ
وَمَثَلُهُمْ فِی الْاِنْجِیْلِ ۚ۫ كَزَرْعٍ اَخْرَجَ
شَطْـَٔهٗ فَاٰزَرَهٗ فَاسْتَغْلَظَ فَاسْتَوٰی عَلٰی
سُوْقِهٖ یُعْجِبُ الزُّرَّاعَ لِیَغِیْظَ بِهِمُ
الْكُفَّارَ ؕ وَعَدَ اللّٰهُ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا
الصّٰلِحٰتِ مِنْهُمْ مَّغْفِرَةً وَّاَجْرًا عَظِیْمًا ۝٢٩

سُوْرَةُ الْحُجُرٰتِ مَدَنِیَّةٌ، اٰیَاتُهَا ١٨، رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ۝

یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تُقَدِّمُوْا بَیْنَ
یَدَیِ اللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ
سَمِیْعٌ عَلِیْمٌ ۝١
یٰٓاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا لَا تَرْفَعُوْٓا اَصْوَاتَكُمْ
فَوْقَ صَوْتِ النَّبِیِّ وَلَا تَجْهَرُوْا لَهٗ
بِالْقَوْلِ كَجَهْرِ بَعْضِكُمْ لِبَعْضٍ اَنْ تَحْبَطَ
اَعْمَالُكُمْ وَاَنْتُمْ لَا تَشْعُرُوْنَ ۝٢
اِنَّ الَّذِیْنَ یَغُضُّوْنَ اَصْوَاتَهُمْ عِنْدَ
رَسُوْلِ اللّٰهِ اُولٰٓئِكَ الَّذِیْنَ امْتَحَنَ
اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ لِلتَّقْوٰی ؕ لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ
وَّاَجْرٌ عَظِیْمٌ ۝٣
اِنَّ الَّذِیْنَ یُنَادُوْنَكَ مِنْ وَّرَآءِ الْحُجُرٰتِ

से काम नहीं लेते।

5. अगर वो सब्र करते यहां तक कि तुम ख़ुद निकल कर उनके पास आ जाते, तो यह उनके लिए बेहतर होता; मगर अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है।

6. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अगर कोई फ़ासिक़ तुम्हारे पास कोई ख़बर लेकर आए, तो उसकी तहक़ीक़ कर लिया करो, कहीं ऐसा न हो कि तुम किसी क़ौम को जहालत से तकलीफ़ व नुक़सान पहुंचाओ, फिर अपने किए पर नादिम हो।

7-8. और जान लो कि तुम्हारे दरमियान अल्लाह का रसूल मौजूद है। बहुत से मुआमलात में अगर वो तुम्हारी बात मान ले, तो तुम मुश्किल में पड़ जाओ; मगर अल्लाह ने तुम्हारे लिए ईमान को महबूब बनाया, और उसे तुम्हारे दिलों में ख़ुबा दिया; और कुफ़्र व फ़िस्क़ और नाफ़रमानी को तुम्हारे लिए बहुत नागवार बना दिया। ऐसे ही लोग अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी नवाज़िश से सूझ-बूझ वाले हैं, और अल्लाह सब कुछ जानने वाला, हिकमत वाला है।

9. अगर मोमिनीन में से दो गिरोह बाहम लड़ पड़ें, तो उनके दरमियान सुलह करा दो; फिर अगर उनमें से एक दूसरे पर ज़्यादती करे, तो उस गिरोह से जो ज़्यादती कर रहा हो लड़ो यहां तक कि वह अल्लाह के हुक्म की तरफ़ पलट आए। फिर अगर वह पलट आए, तो उनके दरमियान अद्ल के साथ सुलह करा दो और इनसाफ़ करो। यक़ीनन अल्लाह इनसाफ़ करने वालों को पसन्द फ़रमाता है।

10. मोमिन तो भाई-भाई हैं; लिहाज़ा अपने दो भाइयों के दरमियान सुलह करा दो, और अल्लाह का डर रखो ताकि तुमपर रहम किया जाए।

11. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, न मर्दों की कोई जमाअत दूसरे मर्दों का मज़ाक़ उड़ाए, मुमकिन है कि वो उनसे बेहतर हों; और न औरतें औरतों का मज़ाक़ उड़ाएं, मुमकिन है कि वो उनसे बेहतर हों; और न अपनों पर तान करो, और न आपस में एक-दूसरे पर बुरे अलक़ाब चसपां करो। क्या ही बुरा नाम है ईमान के बाद फ़ासिक़

अक्सरुहुम् ला यअ्किलून (4)

व लौ अन्नहुम् स-बरू हत्ता तख़्रु-ज इलैहिम् लका-न ख़ैरल्-लहुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (5)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन् जा-अकुम् फ़ासिक़ुम् बि-न-बइन् फ़-तबय्यनू अन् तुसीबू क़ौमम्-बि-जहालतिन् फ़तुस्बिहू अला मा फ़-अल्तुम् नादिमीन (6)

वअ्लमू अन्-न फ़ीकुम् रसूलल्लाहि, लौ युतीअुकुम् फ़ी कसीरिम् मिनल्-अम्रि ल-अनित्तुम् व लाकिन्नल्ला-ह हब्ब-ब इलैकुमुल्-ईमा-न व ज़य्य-नहू फ़ी क़ुलूबिकुम् व कर्र-ह इलैकुमुल्-कुफ़्-र वल्फ़ुसू-क़ वल्-अिस्या-न, उलाइ-क हुमुर्-राशिदून (7)

फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व निअ्-मतन्, वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (8)

व इन् ताइ-फ़तानि मिनल्-मुअ्मिनीनक़्त-तलू फ़-अस्लिहू बैनहुमा फ़-इम् ब-ग़त् इह्दाहुमा अलल्-उख़्रा फ़क़ातिलुल्लती तब्ग़ी हत्ता तफ़ी-अ इला अम्रिल्लाहि फ़-इन् फ़ाअत् फ़-अस्लिहू बैनहुमा बिल्अद्लि व अक़्सितू, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुक़्सितीन (9)

इन्नमल्-मुअ्मिनू-न इख़्वतुन् फ़-अस्लिहू बै-न अ-ख़वैकुम् वत्तक़ुल्ला-ह लअ़ल्लकुम् तुर्हमून • (10) •

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला यस्ख़र् क़ौमुम्-मिन् क़ौमिन् असा अंय्यकूनू ख़ैरम्-मिन्हुम् व ला निसा-उम् मिन्-निसाइन् असा अंय्यकुन्-न ख़ैरम्-मिन्हुन्-न व ला तल्मिज़ू अन्फ़ु-सकुम् व ला तनाबज़ू बिल्-अल्क़ाबि, बिअ्-स लिस्मुल्-फ़ुसूक़ु बअ्दल्-

أَكْثَرُهُمْ لَا يَعْقِلُونَ ٤
وَلَوْ أَنَّهُمْ صَبَرُوا حَتّٰى تَخْرُجَ إِلَيْهِمْ
لَكَانَ خَيْرًا لَّهُمْ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ٥
يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا إِنْ جَآءَكُمْ فَاسِقٌۢ
بِنَبَإٍ فَتَبَيَّنُوْٓا أَنْ تُصِيْبُوْا قَوْمًۢا بِجَهَالَةٍ
فَتُصْبِحُوْا عَلٰى مَا فَعَلْتُمْ نٰدِمِيْنَ ٦
وَاعْلَمُوْٓا أَنَّ فِيْكُمْ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ لَوْ يُطِيْعُكُمْ
فِيْ كَثِيْرٍ مِّنَ الْأَمْرِ لَعَنِتُّمْ وَلٰكِنَّ
اللّٰهَ حَبَّبَ إِلَيْكُمُ الْإِيْمَانَ وَزَيَّنَهٗ
فِيْ قُلُوْبِكُمْ وَكَرَّهَ إِلَيْكُمُ الْكُفْرَ وَالْفُسُوْقَ
وَالْعِصْيَانَ ۚ أُولٰٓئِكَ هُمُ الرّٰشِدُوْنَ ٧
فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَنِعْمَةً ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌ
حَكِيْمٌ ٨
وَإِنْ طَآئِفَتٰنِ مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ
اقْتَتَلُوْا فَأَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا ۚ فَإِنْۢ
بَغَتْ إِحْدٰىهُمَا عَلَى الْأُخْرٰى فَقَاتِلُوا
الَّتِيْ تَبْغِيْ حَتّٰى تَفِيْٓءَ إِلٰٓى أَمْرِ اللّٰهِ ۚ
فَإِنْ فَآءَتْ فَأَصْلِحُوْا بَيْنَهُمَا بِالْعَدْلِ
وَأَقْسِطُوْا ۚ إِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ٩
إِنَّمَا الْمُؤْمِنُوْنَ إِخْوَةٌ فَأَصْلِحُوْا بَيْنَ
أَخَوَيْكُمْ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُوْنَ ١٠
يٰٓأَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا يَسْخَرْ قَوْمٌ
مِّنْ قَوْمٍ عَسٰٓى أَنْ يَّكُوْنُوْا خَيْرًا
مِّنْهُمْ وَلَا نِسَآءٌ مِّنْ نِّسَآءٍ عَسٰٓى
أَنْ يَّكُنَّ خَيْرًا مِّنْهُنَّ ۚ وَلَا تَلْمِزُوْٓا
أَنْفُسَكُمْ وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْأَلْقَابِ ۚ
بِئْسَ الِاسْمُ الْفُسُوْقُ بَعْدَ

कहलाना। और जो शख़्स बाज़ न आए तो ऐसे ही लोग ज़ालिम हैं।

12. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, बहुत से गुमानों से बचो, क्योंकि बाज़ गुमान गुनाह होते हैं। और न टोह में लगो, और न तुममें से कोई किसी की ग़ीबत करे; क्या तुममें से कोई इसको पसन्द करेगा कि वह अपने मुर्दा भाई का गोश्त खाए? वह तो तुम नागवार समझते हो! — और अल्लाह का डर रखो; यक़ीनन अल्लाह तौबा क़बूल करने वाला, निहायत रहम फ़रमाने वाला है।

13. ऐ लोगो! हमने तुम्हें एक मर्द और एक औरत से पैदा किया, और तुम्हें कुन्बों और क़बीलों की शक्ल दी, ताकि तुम एक-दूसरे को पहचानो। दर हक़ीक़त अल्लाह के नज़दीक तुममें सबसे ज़्यादा शरीफ़ वह है जो तुममें सबसे ज़्यादा मुत्तक़ी है। यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जानने वाला, बाख़बर है।

14. बदवियों ने कहा कि "हम ईमान लाए"। कह दो कि "तुम ईमान नहीं लाए; लेकिन यूं कहो, 'हमने इताअत की'; ईमान तो अभी तुम्हारे दिलों में दाख़िल ही नहीं हुआ। अगर तुम अल्लाह और उसके रसूल की फ़रमांबरदारी इख़्तियार कर लो, तो वह तुम्हारे आमाल में से तुम्हारे लिए कुछ भी कम न करेगा। यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहम वाला है"।

15. मोमिन तो बस वही लोग हैं जो अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाए, फिर उन्होंने कोई शक नहीं किया, और अपने मालों और अपनी जानों से अल्लाह की राह में जिहाद किया, वही लोग सच्चे हैं।

16. कहो: "क्या तुम अल्लाह को अपने दीन से आगाह कर रहे हो? हालांकि जो कुछ आसमानों में और जो कुछ ज़मीन में है अल्लाह सब जानता है। अल्लाह को तो हर चीज़ का इल्म है"।

17. वो तुमपर एहसान जताते हैं कि उन्होंने इस्लाम क़बूल किया। कह दो कि "तुम मुझ पर अपने इस्लाम का एहसान न रखो; बल्कि अगर तुम सच्चे हो तो अल्लाह ही तुम पर एहसान रखता है कि उसने तुम्हें ईमान की हिदायत दी।

18. यक़ीनन अल्लाह आसमानों और ज़मीन के ग़ैब को जानता है;

ईमानि व मल्-लम् यतुब् फ़-उलाइ-क हुमुज़्-ज़ालिमून (11)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुज्तनिबू कसीरम् मिनज़्ज़न्नि इन्-न बअ्ज़ज़्ज़न्नि इस्मुंव्-व ला तजस्स-सू व ला यग़्तब् बअ्ज़ुकुम् बअ्ज़न्, अ-युहिब्बु अ-हदुकुम् अंय्यअ्कु-ल लह्-म अख़ीहि मैतन् फ़-करिह्तुमूहु, वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह तव्वाबुर्रहीम (12)

या अय्युहन्नासु इन्ना ख़लक़्नाकुम् मिन् ज़-करिंव्-व उन्सा व ज-अ़ल्नाकुम् शुअूबंव्-व क़बाइ-ल लि-तआ-रफ़ू, इन्-न अक्र-मकुम् अिन्दल्लाहि अत्क़ाकुम्, इन्नल्ला-ह अ़लीमुन् ख़बीर (13)

क़ालतिल्-अअ्राबु आमन्ना, क़ुल्-लम् तुअ्मिनू व लाकिन् क़ूलू अस्लम्ना व लम्मा यद्ख़ुलिल्-ईमानु फ़ी क़ुलूबिकुम्, व इन् तुतीअुल्ला-ह व रसूलहू ला यलित्कुम् मिन् अअ्मालिकुम् शैअन्, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (14)

इन्नमल्-मुअ्मिनूनल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रसूलिही सुम्-म लम् यर्ताबू व जा-हदू बिअम्वालिहिम् व अन्फ़ुसिहिम् फ़ी सबीलिल्लाहि, उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून (15)

क़ुल् अ-तुअ़ल्लिमूनल्ला-ह बिदीनिकुम्, वल्लाहु यअ्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (16)

यमुन्नू-न अ़लै-क अन् अस्लमू, क़ुल्-ला तमुन्नू अ़लय्-य इस्लामकुम् बलिल्लाहु यमुन्नु अ़लैकुम् अन् हदाकुम् लिल्ईमानि इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (17)

इन्नल्ला-ह यअ्लमु ग़ैबस्समावाति वल्अर्ज़ि,

الْإِيمَانِ ۚ وَمَن لَّمْ يَتُبْ فَأُولَٰئِكَ
هُمُ الظَّالِمُونَ ۝١١
يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا اجْتَنِبُوا كَثِيرًا مِّنَ
الظَّنِّ إِنَّ بَعْضَ الظَّنِّ إِثْمٌ ۖ وَلَا تَجَسَّسُوا
وَلَا يَغْتَب بَّعْضُكُم بَعْضًا ۚ أَيُحِبُّ أَحَدُكُمْ
أَن يَأْكُلَ لَحْمَ أَخِيهِ مَيْتًا فَكَرِهْتُمُوهُ ۚ
وَاتَّقُوا اللَّهَ ۚ إِنَّ اللَّهَ تَوَّابٌ رَّحِيمٌ ۝١٢
يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنَّا خَلَقْنَاكُم مِّن ذَكَرٍ
وَأُنثَىٰ وَجَعَلْنَاكُمْ شُعُوبًا وَقَبَائِلَ
لِتَعَارَفُوا ۚ إِنَّ أَكْرَمَكُمْ عِندَ اللَّهِ
أَتْقَاكُمْ ۚ إِنَّ اللَّهَ عَلِيمٌ خَبِيرٌ ۝١٣
قَالَتِ الْأَعْرَابُ آمَنَّا ۖ قُل لَّمْ تُؤْمِنُوا
وَلَٰكِن قُولُوا أَسْلَمْنَا وَلَمَّا يَدْخُلِ
الْإِيمَانُ فِي قُلُوبِكُمْ ۖ وَإِن تُطِيعُوا اللَّهَ
وَرَسُولَهُ لَا يَلِتْكُم مِّنْ أَعْمَالِكُمْ
شَيْئًا ۚ إِنَّ اللَّهَ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝١٤
إِنَّمَا الْمُؤْمِنُونَ الَّذِينَ آمَنُوا بِاللَّهِ
وَرَسُولِهِ ثُمَّ لَمْ يَرْتَابُوا وَجَاهَدُوا
بِأَمْوَالِهِمْ وَأَنفُسِهِمْ فِي سَبِيلِ اللَّهِ ۚ
أُولَٰئِكَ هُمُ الصَّادِقُونَ ۝١٥
قُلْ أَتُعَلِّمُونَ اللَّهَ بِدِينِكُمْ وَاللَّهُ
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاوَاتِ وَمَا فِي الْأَرْضِ ۚ
وَاللَّهُ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ۝١٦
يَمُنُّونَ عَلَيْكَ أَنْ أَسْلَمُوا ۖ قُل لَّا تَمُنُّوا
عَلَيَّ إِسْلَامَكُم ۖ بَلِ اللَّهُ يَمُنُّ عَلَيْكُمْ
أَنْ هَدَاكُمْ لِلْإِيمَانِ إِن كُنتُمْ صَادِقِينَ ۝١٧
إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ غَيْبَ السَّمَاوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ

और अल्लाह देख रहा है जो कुछ तुम करते हो"।

सूरह क़ाफ़ मक्की

(आयतें 45, रुकूआत 3)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1-2. क़ाफ़, शाहिद (गवाह) है क़ुरआन मजीद! — बल्कि उन्हें तो इसपर तअज्जुब हुआ कि उनके पास उन्हीं में से एक ख़बरदार करनेवाला आ गया; फिर अहले कुफ़्र कहने लगे, "यह तो एक तअज्जुब की बात है!

3. क्या जब हम मर गए और मिट्टी हो गए (तो फिर हम ज़िन्दा होकर पलटेंगे)? यह पलटना तो बहुत बईद (दूर की बात) है"!

4. हम जानते हैं ज़मीन उनमें जो कुछ कमी करती है; और हमारे पास एक महफ़ूज़ रखने वाली किताब है।

5. बल्कि उन्होंने हक़ को जब वह उनके पास आया झुटला दिया, पस वो एक उलझन और तज़ाद-ए-फ़िक्र में मुबतला हैं।

6. अच्छा तो क्या उन्होंने अपने ऊपर आसमान को नहीं देखा, उसे हमने कैसा बनाया? और उसे सजाया, और उसमें कोई रख़्ना (दरार) नहीं।

7-8. और ज़मीन को हमने फैलाया, और उसमें अटल पहाड़ डाल दिए, और हमने उसमें हर क़िस्म की ख़ुशनुमा चीज़ें उगाई आंखें खोलने और याददिहानी के लिए हर उस बन्दे की ख़ातिर जो रुजू होने वाला हो।

9-11. और हमने आसमान से बाबरकत पानी उतारा। फिर उससे बाग़ और फ़सल के ग़ल्ले और बुलन्द व बाला खजूर के दरख़्त उगाए जिनके ख़ोशे तह ब तह होते हैं। बन्दों के रिज़्क़ के लिए, और हमने उसके ज़रिए से मुर्दा ज़मीन में जान डाल दी। इसी तरह निकलना भी है।

12-14. उनसे पहले क़ौमे नूह, असहाबु-र्रस, समूद, आद, फ़िरऔन, लूत के भाई, अल-ऐका वाले और क़ौमे तुब्बअ के लोग भी झुटला चुके हैं। हर एक ने रसूलों को झुटलाया, आख़िरकार मेरी वईद चसपां होकर रही।

वल्लाहु बसीरुम्-बिमा तअ्मलून (18) ●

50 सूरतु क़ाफ़

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 1525 अक्षर, 376 शब्द, 45 आयतें और 3 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

क़ाफ़्। वल्-क़ुरआनिल्-मजीद (1)

बल् अ़जिबू अन् जा-अहुम् मुन्ज़िरुम्-मिन्हुम् फ़क़ालल्-काफ़िरू-न हाज़ा शैउन् अ़जीब (2)

अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबन् ज़ालि-क रज्अुम्-बअ़ीद (3)

क़द् अ़लिम्ना मा तन्क़ुसुल्-अर्ज़ु मिन्हुम् व अ़िन्दना किताबुन् हफ़ीज़ (4)

बल् कज़्ज़बू बिल्-हक़्क़ि लम्मा जा-अहुम् फ़हुम् फ़ी अम्रिम्-मरीज (5)

अ-फ़ लम् यन्ज़ुरू इलस्समा-इ फ़ौक़हुम् कै-फ़ बनैनाहा व ज़य्यन्नाहा व मा लहा मिन् फ़ुरूज (6)

वल्अर्-ज़ मदद्नाहा व अल्क़ैना फ़ीहा रवासि-य व अम्बत्ना फ़ीहा मिन् कुल्लि ज़ौजिम्-बहीज (7)

तब्सि-रतंव्-व ज़िकरा लिकुल्लि अ़ब्दिम्-मुनीब (8)

व नज़्ज़ल्ना मिनस्समा-इ मा-अम् मुबा-रकन् फ़-अम्बत्ना बिही जन्नातिंव्-व हब्बल्-हसीद (9)

वन्नख़्-ल बासिक़ातिल्-लहा तल्अुन्-नज़ीद (10)

रिज़्क़ल्-लिल्अ़िबादि व अह्यैना बिही बल्द-तम्-मैतन्, कज़ालिकल्-ख़ुरूज (11)

कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिंव्-व अस्हाबुर्रस्सि व समूद (12)

व आ़दुंव्-व फ़िर्औनु व इख़्वानु लूत (13)

व अस्हाबुल्-ऐ-कति व क़ौमु तुब्बअ़िन्, कुल्लुन् कज़्ज़-बर्रुसु-ल फ़-हक़्-क़ वअ़ीद (14)

وَاللّٰهُ بَصِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑱

سُوْرَةُ قٓ مَكِّيَّةٌ، اٰيَاتُهَا ۴۵، رُكُوْعَاتُهَا ۳

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

منزل ٧

قٓ ۚ وَالْقُرْاٰنِ الْمَجِيْدِ ①

بَلْ عَجِبُوْٓا اَنْ جَآءَهُمْ مُّنْذِرٌ مِّنْهُمْ فَقَالَ الْكٰفِرُوْنَ هٰذَا شَيْءٌ عَجِيْبٌ ②

ءَاِذَا مِتْنَا وَكُنَّا تُرَابًا ۚ ذٰلِكَ رَجْعٌۢ بَعِيْدٌ ③

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْاَرْضُ مِنْهُمْ ۚ وَعِنْدَنَا كِتٰبٌ حَفِيْظٌ ④

بَلْ كَذَّبُوْا بِالْحَقِّ لَمَّا جَآءَهُمْ فَهُمْ فِيْٓ اَمْرٍ مَّرِيْجٍ ⑤

اَفَلَمْ يَنْظُرُوْٓا اِلَى السَّمَآءِ فَوْقَهُمْ كَيْفَ بَنَيْنٰهَا وَزَيَّنّٰهَا وَمَا لَهَا مِنْ فُرُوْجٍ ⑥

وَالْاَرْضَ مَدَدْنٰهَا وَاَلْقَيْنَا فِيْهَا رَوَاسِيَ وَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا مِنْ كُلِّ زَوْجٍۢ بَهِيْجٍ ⑦

تَبْصِرَةً وَّذِكْرٰى لِكُلِّ عَبْدٍ مُّنِيْبٍ ⑧

وَنَزَّلْنَا مِنَ السَّمَآءِ مَآءً مُّبٰرَكًا فَاَنْۢبَتْنَا بِهٖ جَنّٰتٍ وَّحَبَّ الْحَصِيْدِ ⑨

وَالنَّخْلَ بٰسِقٰتٍ لَّهَا طَلْعٌ نَّضِيْدٌ ⑩

رِّزْقًا لِّلْعِبَادِ ۙ وَاَحْيَيْنَا بِهٖ بَلْدَةً مَّيْتًا ۚ كَذٰلِكَ الْخُرُوْجُ ⑪

كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ وَّاَصْحٰبُ الرَّسِّ وَثَمُوْدُ ⑫

وَعَادٌ وَّفِرْعَوْنُ وَاِخْوَانُ لُوْطٍ ⑬

وَّاَصْحٰبُ الْاَيْكَةِ وَقَوْمُ تُبَّعٍ ۚ كُلٌّ كَذَّبَ الرُّسُلَ فَحَقَّ وَعِيْدِ ⑭

15. क्या हम पहली बार पैदा करने से आजिज़ रहे? नहीं, बल्कि वो एक नई तख़लीक़ के बारे में शक में पड़े हैं।

16. हमने इनसान को पैदा किया है; और हम जानते हैं जो वसवसे उसके अन्दर उसका नफ़्स डालता है, और हम उससे उसकी रग-ए-जां से भी ज़्यादा क़रीब हैं।

17. जब दो लिखने वाले लिख रहे होते हैं, दाएं से और बाएं से। वो लगे बैठे होते हैं।

18. कोई बात वह कहता नहीं है कि उसके पास एक निगरां तैयार रहता है।

19. और मौत की जांकनी ले आई यक़ीनी चीज़; यही वह चीज़ है जिससे तू गुरेज़ करता था!

20. और सूर फूंक दिया जाएगा; यह है दिन वईद का।

21. हर शख़्स इस हाल में आएगा कि उसके साथ एक लानेवाला और एक गवाही देनेवाला होगा।

22. "तू इस चीज़ की तरफ़ से ग़फ़लत में था; अब हमने तुझ पर से तेरा पर्दा हटा दिया, तो आज तेरी निगाह खूब तेज़ है"।

23. उसका साथी कहेगा, "यह जो मेरे पास था हाज़िर है।

24–25. "डाल दो, जहन्नम में हर एहसान फ़रामोश सरकश को, ख़ैर से रोकने वाले, हद से तजावुज़ करनेवाले, शक करने वाले को, जिसने अल्लाह के साथ किसी दूसरे को माबूद ठहराया; पस डाल दो उसे सख़्त अज़ाब में"।

27. उसका साथी कहेगा, "ऐ हमारे रब, मैंने उसे सरकश नहीं बनाया, बल्कि वह खुद ही परले दर्जे की गुमराही में था"।

28. फ़रमाएगा, "मेरे सामने मत झगड़ो। मैं तो पहले ही तुम्हें अपनी वईद (आज़ाब के वादे) से आगाह कर चुका था।

29. मेरे यहां बात नहीं बदला करती, और न मैं बन्दों पर ज़रा भी ज़ुल्म करता हूं"।

30. जिस दिन हम जहन्नम से कहेंगे, "क्या तू भर गई?" और वह कहेगी, "क्या अभी और भी कुछ है?"

अ-फ़-अयीना बिल्ख़ल्क़िल्-अव्वलि, बल् हुम् फ़ी लब्सिम्-मिन् ख़ल्क़िन् जदीद (15) ●

व ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न व नअ्लमु मा तुवस्विसु बिही नफ़्सुहू व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन् हब्लिल्-वरीद (16)

इज़् य-तलक़्क़ल्-मु-तलक़्क़ियानि अनिल्यमीनि व अनिश्शिमालि क़अ़ीद (17)

मा यल्फ़िज़ु मिन् क़ौलिन् इल्ला लदैहि रक़ीबुन् अ़तीद (18)

व जाअत् सक्-रतुल्-मौति बिल्हक़्क़ि, ज़ालि-क मा कुन्-त मिन्हु तहीद (19)

व नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि, ज़ालि-क यौमुल्-वअ़ीद (20)

व जाअत् कुल्लु नफ़्सिम् म-अ़हा सा-इक़ुंव-व शहीद (21)

ल-क़द् कुन्-त फ़ी ग़फ़्लतिम्-मिन् हाज़ा फ़-कशफ़्ना अ़न्-क ग़िता-अ-क फ़-ब-सरुकल्-यौ-म हदीद (22)

व क़ा-ल क़रीनुहू हाज़ा मा ल-दय्-य अ़तीद (23)

अल्क़िया फ़ी जहन्न-म कुल्-ल कफ़्फ़ारिन् अ़नीद (24)

मन्नाअ़िल्-लिल्ख़ैरि मुअ्तदिम्-मुरीब (25)

अल्लज़ी ज-अ़-ल मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र फ़-अल्क़ियाहु फ़िल्-अ़ज़ाबिश्-शदीद (26)

क़ा-ल क़रीनुहू रब्बना मा अत्ग़ैतुहू व लाकिन् का-न फ़ी ज़लालिम्-बअ़ीद (27)

क़ा-ल ला तख़्तसिमू ल-दय्-य व क़द् क़द्दम्तु इलैकुम् बिल्-वअ़ीद (28)

मा युबद्दलुल्-क़ौलु ल-दय्-य व मा अ-न बिज़ल्लामिल्-लिल्-अ़बीद (29)●

यौ-म नक़ूलु लि-जहन्न-म हलिम्त-लअ्ति व तक़ूलु हल् मिम्-मज़ीद (30)

أَفَعَيِيْنَا بِالْخَلْقِ الْأَوَّلِ ۭ بَلْ هُمْ فِيْ لَبْسٍ
مِّنْ خَلْقٍ جَدِيْدٍ ۝١٥
وَلَقَدْ خَلَقْنَا الْإِنْسَانَ وَنَعْلَمُ مَا تُوَسْوِسُ
بِهٖ نَفْسُهٗ ۚ وَنَحْنُ أَقْرَبُ إِلَيْهِ مِنْ
حَبْلِ الْوَرِيْدِ ۝١٦
إِذْ يَتَلَقَّى الْمُتَلَقِّيٰنِ عَنِ الْيَمِيْنِ
وَعَنِ الشِّمَالِ قَعِيْدٌ ۝١٧
مَا يَلْفِظُ مِنْ قَوْلٍ إِلَّا لَدَيْهِ رَقِيْبٌ عَتِيْدٌ ۝١٨
وَجَآءَتْ سَكْرَةُ الْمَوْتِ بِالْحَقِّ ۭ
ذٰلِكَ مَا كُنْتَ مِنْهُ تَحِيْدُ ۝١٩
وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ ۭ ذٰلِكَ يَوْمُ الْوَعِيْدِ ۝٢٠
وَجَآءَتْ كُلُّ نَفْسٍ مَّعَهَا سَآئِقٌ وَّشَهِيْدٌ ۝٢١
لَقَدْ كُنْتَ فِيْ غَفْلَةٍ مِّنْ هٰذَا فَكَشَفْنَا
عَنْكَ غِطَآءَكَ فَبَصَرُكَ الْيَوْمَ حَدِيْدٌ ۝٢٢
وَقَالَ قَرِيْنُهٗ هٰذَا مَا لَدَيَّ عَتِيْدٌ ۝٢٣
أَلْقِيَا فِيْ جَهَنَّمَ كُلَّ كَفَّارٍ عَنِيْدٍ ۝٢٤
مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ مُّرِيْبٍ ۝٢٥
الَّذِيْ جَعَلَ مَعَ اللّٰهِ إِلٰهًا اٰخَرَ فَأَلْقِيٰهُ
فِي الْعَذَابِ الشَّدِيْدِ ۝٢٦
قَالَ قَرِيْنُهٗ رَبَّنَا مَآ أَطْغَيْتُهٗ وَلٰكِنْ
كَانَ فِيْ ضَلٰلٍ بَعِيْدٍ ۝٢٧
قَالَ لَا تَخْتَصِمُوْا لَدَيَّ وَقَدْ قَدَّمْتُ
إِلَيْكُمْ بِالْوَعِيْدِ ۝٢٨
مَا يُبَدَّلُ الْقَوْلُ لَدَيَّ وَمَآ أَنَا بِظَلَّامٍ
ع لِّلْعَبِيْدِ ۝٢٩
يَوْمَ نَقُوْلُ لِجَهَنَّمَ هَلِ امْتَلَأْتِ وَتَقُوْلُ
هَلْ مِنْ مَّزِيْدٍ ۝٣٠

31. और जन्नत मुत्तक़ीन के क़रीब कर दी जाएगी, दूर न होगी।

32. "यह है वह चीज़ जिसका तुमसे वादा किया जाता था; हर रुजू करनेवाले, बड़ी निगेहदाश्त करनेवाले के लिए"।

33. जो रहमान से गाइबाना डरा, और आया रुजू होनेवाला गिरवीदा दिल लेकर:

34. "दाख़िल हो जाओ इस जन्नत में सलामती के साथ!" वह हमेशगी का दिन है।

35. उनके लिए उसमें वह सब कुछ है जो वो चाहें; और हमारे पास मज़ीद भी है।

36. हम उनसे पहले कितनी ही नसलें हलाक कर चुके हैं। वो लोग क़ुव्वत में उनसे कहीं बढ़-चढ़कर थे। फिर जाए पनाह की तलाश में उन्होंने शहरों में बड़ी काविशें (कोशिशें) कीं, क्या है कोई जाए फ़रार?

37. यक़ीनन इसमें उस शख़्स के लिए याददिहानी है जिसके पास दिल हो, या वह दिल से हाज़िर रहकर कान लगाए।

38. हमने आसमानों और ज़मीन को, और जो कुछ उनके दरमियान है छः दिनों में पैदा कर दिया, और हमें कोई तकान न छू सकी।

39–40. पस जो कुछ वो कहते हैं उसपर सब्र करो, और अपने रब की हम्द के साथ तसबीह करो, तुलू–ए–आफ़ताब से पहले और ग़ुरूब–ए–आफ़ताब से पहले, और रात के किसी वक़्त में, फिर उसकी तसबीह करो, और सजदों के बाद भी।

41–42. और कान लगाकर सुन लेना जिस दिन पुकारने वाला निहायत क़रीब की जगह से पुकारेगा। जिस दिन वो हौलनाक आवाज़ को टीक-ठीक सुन रहे होंगे, वही दिन होगा निकलने का।

43. हम ही ज़िन्दगी देते और मारते हैं, और हमारी ही तरफ़ अन्जाम कार आना है।

44. जिस दिन ज़मीन उन पर से फट जाएगी, वो तेज़ी से निकल पड़ेंगे; यह इकट्ठा कर लेना हमारे लिए निहायत आसान है।

45. हम जानते हैं जो कुछ वो कहते हैं; तुम उनपर कोई जबर करने वाले तो हो नहीं। लिहाज़ा तुम क़ुरआन के ज़रिए से उसे नसीहत करो जो हमारी तम्बीह (धमकी) से डरे।

व उज़्लि-फ़तिल् जन्नतु लिल्मुत्तक़ी-न ग़ै-र बओद (31)

हाज़ा मा तू-अदू-न लिकुल्लि अव्वाबिन् हफ़ीज़ (32)

मन् ख़शियर्रह्मा-न बिल्ग़ैबि व जा-अ बिक़ल्बिम्-मुनीब (33)

उद्ख़ुलूहा बि-सलामिन्, ज़ालि-क यौमुल्-ख़ुलूद (34)

लहुम्-मा यशाऊ-न फ़ीहा व लदैना मज़ीद (35)

व कम् अह्लक्ना क़ब्लहुम् मिन् क़र्निन् हुम् अशद्दु मिन्हुम् बत्शन् फ़-नक़्क़बू फ़िल्-बिलादि, हल् मिम्-महीस (36)

इन्-न फ़ी ज़ालि-क लज़िक्रा लिमन् का-न लहू क़ल्बुन् औ अल्क़स्सम्-अ व हु-व शहीद (37)

व ल-क़द् ख़लक़्नस्समावाति वल्-अर्-ज़ व मा बैनहुमा फ़ी सित्तति अय्यामिंव्-व मा मस्सना मिल्लुग़ूब (38)

फ़स्बिर् अ़ला मा यक़ूलू-न व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क क़ब्-ल तुलूअ़िश्शम्सि व क़ब्लल्-ग़ुरूब (39)

व मिनल्लैलि फ़-सब्बिह्हु व अद्बारस्-सुजूद (40)

वस्तमिअ् यौ-म युनादिल्-मुनादि मिम्-मकानिन् क़रीब (41)

यौ-म यस्मअूनस्-सै-ह-त बिल्हक़्क़ि, ज़ालि-क यौमुल्-ख़ुरूज (42)

इन्ना नह्नु नुह्यी व नुमीतु व इलैनल्-मसीर (43)

यौ-म त-शक़्क़-क़ुल्-अर्ज़ु अ़न्हुम् सिराअ़न्, ज़ालि-क हश्रुन् अ़लैना यसीर (44)

नह्नु अअ़्लमु बिमा यक़ूलू-न व मा अन्-त अ़लैहिम् बि-जब्बारिन् फ़-ज़क्किर् बिल्-क़ुरआनि मंय्यख़ाफ़ु वओद (45)●

وَأُزْلِفَتِ الْجَنَّةُ لِلْمُتَّقِينَ غَيْرَ بَعِيدٍ ۝٣١
هٰذَا مَا تُوعَدُونَ لِكُلِّ أَوَّابٍ حَفِيظٍ ۝٣٢
مَنْ خَشِيَ الرَّحْمٰنَ بِالْغَيْبِ وَجَآءَ بِقَلْبٍ
مُّنِيبٍ ۝٣٣
ادْخُلُوهَا بِسَلٰمٍ ذٰلِكَ يَوْمُ الْخُلُودِ ۝٣٤
لَهُمْ مَّا يَشَآءُونَ فِيهَا وَلَدَيْنَا مَزِيدٌ ۝٣٥
وَكَمْ أَهْلَكْنَا قَبْلَهُمْ مِّنْ قَرْنٍ هُمْ
أَشَدُّ مِنْهُمْ بَطْشًا فَنَقَّبُوا فِي الْبِلَادِ
هَلْ مِنْ مَّحِيصٍ ۝٣٦
إِنَّ فِي ذٰلِكَ لَذِكْرٰى لِمَنْ كَانَ لَهُ
قَلْبٌ أَوْ أَلْقَى السَّمْعَ وَهُوَ شَهِيدٌ ۝٣٧
وَلَقَدْ خَلَقْنَا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ وَمَا
بَيْنَهُمَا فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ وَّمَا مَسَّنَا
مِنْ لُّغُوبٍ ۝٣٨
فَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُولُونَ وَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ
قَبْلَ طُلُوعِ الشَّمْسِ وَقَبْلَ الْغُرُوبِ ۝٣٩
وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَأَدْبَارَ السُّجُودِ ۝٤٠
وَاسْتَمِعْ يَوْمَ يُنَادِ الْمُنَادِ مِنْ مَّكَانٍ
قَرِيبٍ ۝٤١
يَّوْمَ يَسْمَعُونَ الصَّيْحَةَ بِالْحَقِّ ذٰلِكَ
يَوْمُ الْخُرُوجِ ۝٤٢
إِنَّا نَحْنُ نُحْيٖ وَنُمِيتُ وَإِلَيْنَا الْمَصِيرُ ۝٤٣
يَوْمَ تَشَقَّقُ الْأَرْضُ عَنْهُمْ سِرَاعًا
ذٰلِكَ حَشْرٌ عَلَيْنَا يَسِيرٌ ۝٤٤
نَحْنُ أَعْلَمُ بِمَا يَقُولُونَ وَمَآ أَنْتَ
عَلَيْهِمْ بِجَبَّارٍ فَذَكِّرْ بِالْقُرْاٰنِ مَنْ
يَّخَافُ وَعِيدِ ۝٤٥ ع

सूरह अज़-ज़ारियात मक्की

(आयतें 60, रुकूआत 3)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. शाहिद (गवाह) हैं (हवाएं) जो गर्द व गुबार उड़ाती फिरती हैं।

2. फिर बोझ उठाती हैं,

3. फिर नर्मी से चलती हैं,

4. फिर मुआमले को अलग-अलग करती हैं।

5. यक़ीनन तुमसे जिस चीज़ का वादा किया जाता है वह सच्ची है।

6. और बेशक हिसाब-किताब ज़रूर वाके़ होगा!

7-8. गवाह है धारियों वाला आसमान। यक़ीनन तुम एक इख़्तिलाफ़ (मत-भिन्नता) में पड़े हो।

9. इससे कोई सरफिरा ही बरगश्ता होता है!

10. मारे जाएं अटकल दौड़ाने वाले,

11. जो ग़फ़लत में पड़े हुए हैं बेख़बर,

12. पूछते हैं, "रोज़-ए-जज़ा (बदले का दिन) कब आएगा?"

13-14. जिस दिन वो आग पर तपाए जाएंगे; "चखो मज़ा अपनी फ़ितना परदाज़ी का! यही है जिसकी तुम जल्दी मचाए हुए थे!"

15. यक़ीनन डर रखने वाले बाग़ों और चश्मों में होंगे।

16. जो कुछ उनके रब ने उन्हें दिया उसे वो ले रहे होंगे; बेशक वो इससे पहले खूबकारों में से थे।

17. रातों को थोड़ा ही सोते थे,

18. और सहर के वक़्त वही मग़फ़िरत तलब करते थे;

19. और उनके मालों में साइल (मांगने वालों) महरूम (गरीब न मांगने वालों) का हक़ था।

20-21. और ज़मीन में यक़ीन करने वालों के लिए बहुत सी निशानियां हैं; और खुद तुम्हारी अपनी ज़ात में भी; तो क्या तुम देखते नहीं;

22. और आसमान में तुम्हारा रिज़्क़ है; और वह चीज़ भी जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है।

23. पस क़सम है आसमान और ज़मीन के रब की, वह हक़ है ऐसे ही

51 सूरतुज़्-ज़ारियाति
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1559 अक्षर, 360 शब्द, 60 आयतें और 3 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वज़्ज़ारियाति ज़र्वन् (1)
फ़ल्-हामिलाति विक़्रन् (2)
फ़ल्-जारियाति युस्रन् (3)
फ़ल्-मुक़स्सिमाति अम्रन् (4)
इन्नमा तू-अ़दू-न लसादिक़ (5)
व इन्नद्दी-न ल-वाक़िअ् (6)
वस्समा-इ ज़ातिल्-हुबुकि (7)
इन्नकुम् लफ़ी क़ौलिम्-मुख़्तलिफ़ (8)
युअ्फ़कु अ़न्हु मन् उफ़िक् (9)
कुतिलल्-ख़र्रासून (10)
अल्लज़ी-न हुम् फ़ी ग़म्-रतिन् साहून (11)
यस्अलू-न अय्या-न यौमुद्दीन (12)
यौ-म हुम् अ़लन्नारि युफ़्तनून (13)
ज़ूक़ू फ़ित्न-तकुम्, हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तस्तअ्जिलून (14)
इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व अुयून (15)
आख़िज़ी-न मा आताहुम् रब्बुहुम्, इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क मुह्सिनीन (16)
कानू क़लीलम्-मिनल्लैलि मा यह्जअून (17)
व बिल्-अस्हारि हुम् यस्तग़्फ़िरून (18)
व फ़ी अम्वालिहिम् हक़्क़ुल्-लिस्सा-इलि वल्-मह्रूम (19)
व फ़िल्अर्ज़ि आयातुल्-लिल्मूक़िनीन (20)
व फ़ी अन्फ़ुसिकुम् अ-फ़ला तुब्सिरून (21)
व फ़िस्समा-इ रिज़्क़ुकुम् व मा तू-अ़दून (22)
फ़-वरब्बिस्समा-इ वल्अर्ज़ि इन्नहू ल-हक़्क़ुम्-मिस्-ल

سُوْرَةُ الذّٰرِيٰتِ مَكِّيَّةٌ ٦٧ اٰيَاتُهَا ٦٠ رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالذّٰرِيٰتِ ذَرْوًا ۙ (١)
فَالْحٰمِلٰتِ وِقْرًا ۙ (٢)
فَالْجٰرِيٰتِ يُسْرًا ۙ (٣)
فَالْمُقَسِّمٰتِ اَمْرًا ۙ (٤)
اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَصَادِقٌ ۙ (٥)
وَّاِنَّ الدِّيْنَ لَوَاقِعٌ ؕ (٦)
وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْحُبُكِ ۙ (٧)
اِنَّكُمْ لَفِيْ قَوْلٍ مُّخْتَلِفٍ ۙ (٨)
يُّؤْفَكُ عَنْهُ مَنْ اُفِكَ ؕ (٩)
قُتِلَ الْخَرّٰصُوْنَ ۙ (١٠)
الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ غَمْرَةٍ سَاهُوْنَ ۙ (١١)
يَسْـَٔلُوْنَ اَيَّانَ يَوْمُ الدِّيْنِ ؕ (١٢)
يَوْمَ هُمْ عَلَى النَّارِ يُفْتَنُوْنَ (١٣)
ذُوْقُوْا فِتْنَتَكُمْ ؕ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ
بِهٖ تَسْتَعْجِلُوْنَ (١٤)
اِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّعُيُوْنٍ ۙ (١٥)
اٰخِذِيْنَ مَاۤ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ ؕ اِنَّهُمْ كَانُوْا
قَبْلَ ذٰلِكَ مُحْسِنِيْنَ ؕ (١٦)
كَانُوْا قَلِيْلًا مِّنَ الَّيْلِ مَا يَهْجَعُوْنَ (١٧)
وَبِالْاَسْحَارِ هُمْ يَسْتَغْفِرُوْنَ (١٨)
وَفِيْۤ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ (١٩)
وَفِي الْاَرْضِ اٰيٰتٌ لِّلْمُوْقِنِيْنَ ۙ (٢٠)
وَفِيْۤ اَنْفُسِكُمْ ؕ اَفَلَا تُبْصِرُوْنَ (٢١)
وَفِي السَّمَآءِ رِزْقُكُمْ وَمَا تُوْعَدُوْنَ (٢٢)
فَوَرَبِّ السَّمَآءِ وَالْاَرْضِ اِنَّهٗ لَحَقٌّ مِّثْلَ

जैसे तुम बोलते हो।

24. क्या इबराहीम के मुअज़्ज़ज़ मेहमानों की ख़बर तुम तक पहुंची?

25. जब वो उसके पास आए तो कहा, "तुमपर सलाम है!" उसने भी कहा, "आप लोगों पर भी सलाम है! ये तो अजनबी लोग हैं"।

26-27. फिर वह नज़र बचाकर अपने घरवालों के पास गया और एक फ़रबा बछड़ा (भुना हुआ) ले आया; और उसे उनके आगे पेश किया, कहा,: "क्या आप खाते नहीं?"

28. फिर उसने दिल में उनसे डर महसूस किया। उन्होंने कहा, "डरिए नहीं"! और उन्होंने उसे एक इल्म वाले लड़के की ख़ुशख़बरी दी।

29. इसपर उसकी बीवी (हैरान होकर) आगे बढ़ी और उसने अपना मुंह पीट लिया, और कहने लगी, "एक बूढ़ी बांझ (बच्चा जनेगी)!" उन्होंने कहा, "ऐसा ही तेरे रब ने कहा; यक़ीनन वह बड़ा ही हकीम, इल्म वाला है"।

31. उसने कहा, "ऐ फ़िरिस्तादो, तुम्हें क्या मुहिम दरपेश है?"

32. उन्होंने कहा कि "हम एक मुजरिम क़ौम की तरफ़ भेजे गए हैं,

33-34. ताकि उनके ऊपर संग-ए-गिल बरसाएं जो आपके रब के यहां हद से आगे बढ़ने वालों के लिए निशानज़दा हैं"।

35. फिर वहां जो अहले ईमान थे उन्हें हमने निकाल लिया,

36. मगर हम ने वहां सिवाय एक घर के मुसलमानों का और कोई घर न पाया।

37. उसके बाद हमने वहां एक निशानी छोड़ दी उन लोगों के लिए जो दर्दनाक अज़ाब से डरते हैं।

38. और मूसा के क़िस्से में भी (निशानी है) जब हमने उसे फ़िरऔन के पास खुली दलील के साथ भेजा,

39. मगर उसने अपनी ताक़त के नशे में मुंह फेर लिया, और कहा, "जादूगर है या दीवाना!"

40. आख़िरकार हमने उसे और उसके लश्करों को पकड़ लिया, और उन्हें गहरे पानी में फेंक दिया, इस हाल में कि वह क़ाबिल-ए-मलामत था।

मा अन्नकुम् तन्तिक़ून (23) ●
हल् अता-क हदीसु ज़ैफ़ि इब्राहीमल्-मुक्रमीन ● (24)
इज़् द-ख़लू अ़लैहि फ़क़ालू सलामन्, क़ा-ल सलामुन् क़ौमुम्-मुन्करून (25)
फ़रा-ग़ इला अह्लिही फ़जा-अ बिअ़िज्लिन् समीन (26)
फ़-क़र्र-बहू इलैहिम् क़ा-ल अला तअ्कुलून (27)
फ़-औज-स मिन्हुम् ख़ी-फ़तन्, क़ालू ला तख़फ़्, व बश्श-रूहु बिग़ुलामिन् अ़लीम (28)
फ़-अक़्ब-लतिम्-र-अतुहू फ़ी सर्रतिन् फ़-सक्कत् वज्हहा व क़ालत् अ़जूज़ुन् अ़क़ीम (29)
क़ालू कज़ालिकि क़ा-ल रब्बुकि, इन्नहू हुवल् हकीमुल्-अ़लीम (30)
क़ा-ल फ़मा ख़त्बुकुम् अय्युहल्-मुर्सलून (31)
क़ालू इन्ना उर्सिल्ना इला क़ौमिम्-मुज्रिमीन (32)
लिनुर्सि-ल अ़लैहिम् हिजा-रतम्-मिन् तीन (33)
मुसव्व-मतन् अिन्-द रब्बि-क लिल्-मुस्रिफ़ीन (34)
फ़-अख़रज्ना मन् का-न फ़ीहा मिनल्-मुअ्मिनीन (35)
फ़मा वजद्ना फ़ीहा ग़ै-र बैतिम्-मिनल्-मुस्लिमीन (36)
व तरक्ना फ़ीहा आ-यतल्-लिल्लज़ी-न यख़ाफ़ूनल्-अ़ज़ाबल्-अलीम (37)
व फ़ी मूसा इज़् अर्सल्नाहु इला फ़िर्औ-न बिसुल्तानिम्-मुबीन (38)
फ़-तवल्ला बिरुक्निही व क़ा-ल साहिरुन् औ मज्नून (39)
फ़-अख़ज़्नाहु व जुनूदहू फ़-नबज़्नाहुम् फ़िल्यम्मि व हु-व मुलीम (40)

مَآ اَنَّكُمْ تَنْطِقُوْنَ ۝۲۳
هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ ضَيْفِ اِبْرٰهِيْمَ
الْمُكْرَمِيْنَ ۝۲۴
اِذْ دَخَلُوْا عَلَيْهِ فَقَالُوْا سَلٰمًا ؕ قَالَ سَلٰمٌ ۚ
قَوْمٌ مُّنْكَرُوْنَ ۝۲۵
فَرَاغَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ فَجَآءَ بِعِجْلٍ سَمِيْنٍ ۝۲۶
فَقَرَّبَهٗٓ اِلَيْهِمْ قَالَ اَلَا تَاْكُلُوْنَ ۝۲۷
فَاَوْجَسَ مِنْهُمْ خِيْفَةً ؕ قَالُوْا لَا تَخَفْ ؕ
وَبَشَّرُوْهُ بِغُلٰمٍ عَلِيْمٍ ۝۲۸
فَاَقْبَلَتِ امْرَاَتُهٗ فِيْ صَرَّةٍ فَصَكَّتْ وَجْهَهَا
وَقَالَتْ عَجُوْزٌ عَقِيْمٌ ۝۲۹
قَالُوْا كَذٰلِكِ ۙ قَالَ رَبُّكِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْحَكِيْمُ
الْعَلِيْمُ ۝۳۰
قَالَ فَمَا خَطْبُكُمْ اَيُّهَا الْمُرْسَلُوْنَ ۝۳۱
قَالُوْٓا اِنَّآ اُرْسِلْنَآ اِلٰى قَوْمٍ مُّجْرِمِيْنَ ۝۳۲
لِنُرْسِلَ عَلَيْهِمْ حِجَارَةً مِّنْ طِيْنٍ ۝۳۳
مُّسَوَّمَةً عِنْدَ رَبِّكَ لِلْمُسْرِفِيْنَ ۝۳۴
فَاَخْرَجْنَا مَنْ كَانَ فِيْهَا مِنَ
الْمُؤْمِنِيْنَ ۝۳۵
فَمَا وَجَدْنَا فِيْهَا غَيْرَ بَيْتٍ مِّنَ الْمُسْلِمِيْنَ ۝۳۶
وَتَرَكْنَا فِيْهَآ اٰيَةً لِّلَّذِيْنَ يَخَافُوْنَ
الْعَذَابَ الْاَلِيْمَ ۝۳۷
وَفِيْ مُوْسٰٓى اِذْ اَرْسَلْنٰهُ اِلٰى فِرْعَوْنَ
بِسُلْطٰنٍ مُّبِيْنٍ ۝۳۸
فَتَوَلّٰى بِرُكْنِهٖ وَقَالَ سٰحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝۳۹
فَاَخَذْنٰهُ وَجُنُوْدَهٗ فَنَبَذْنٰهُمْ فِي الْيَمِّ
وَهُوَ مُلِيْمٌ ۝۴۰

41. और आद में भी (तुम्हारे लिए निशानी है), उनपर ख़ुश्क ग़ैर नाफ़े हवा चला दी।

42. वह जिस चीज़ पर से भी गुज़री उसने उसे बोसीदा करके रख दिया।

43. और समूद में भी (तुम्हारे लिए निशानी है) जबकि उनसे कहा गया, "एक ख़ास वक़्त तक मज़े कर लो!"

44. मगर उन्होंने अपने रब के हुक्म से रूगरदानी की, पस कड़क ने उन्हें आ लिया और वो देखते रहे।

45. फिर न वो खड़े ही हो सके, और न अपना बचाव ही कर सके।

46. और इससे पहले क़ौमे नूह को भी पकड़ा; यक़ीनन वो फ़ासिक़ लोग थे।

47. आसमान को हमने अपनी क़ुदरत से बनाया, और हम बड़ी वुसअत रखने वाले हैं।

48. और ज़मीन को हमने बिछाया, पस हम क्या ही ख़ूब बिछाने वाले हैं!

49. और हमने हर चीज़ के जोड़े बनाए; ताकि तुम याददिहानी हासिल करो।

50. पस अल्लाह की तरफ़ भागो! मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिए एक खुला ख़बरदार करने वाला हूं।

51. और अल्लाह के साथ दूसरा माबूद न ठहराओ; मैं उसकी तरफ़ से तुम्हारे लिए एक खुला ख़बरदार करने वाला हूं।

52. इसी तरह उन लोगों के पास भी जो उनसे पहले गुज़रे हैं जो रसूल भी आया, तो उन्होंने बस यही कहा कि "जादूगर है या दीवाना!"

53. क्या उन्होंने एक-दूसरे को इसकी वसीयत कर रखी है? नहीं, बल्कि वो हैं ही सरकश लोग।

54. पस उनसे रुख़ फेर लो, अब तुम पर कोई मलामत नहीं।

55. और याददिहानी कराते रहो; क्योंकि याददिहानी अहले ईमान को नफ़ा पहुंचाती है।

56. मैंने तो जिन्नों और इनसानों को महज़ इसलिए पैदा किया कि वो मेरी इबादत करें।

57. मैं उनसे कोई रिज़्क़ नहीं चाहता, और न यह चाहता हूं

व फ़ी आदिन् इज़् अर्सल्ना अ़लैहिमुर्-रीहल्-अ़क़ीम (41)
मा त-ज़रु मिन् शैइन् अतत् अ़लैहि इल्ला ज-अ़लत्हु कर्रमीम (42)
व फ़ी समू-द इज़् क़ी-ल लहुम् त-मत्तअ़ू हत्ता हीन (43)
फ़-अ़तौ अ़न् अम्रि रब्बिहिम् फ़-अ-ख़ज़त्हुमुस्साअ़िक़तु व हुम् यन्ज़ुरून (44)
फ़मस्तताअ़ू मिन् क़ियामिंव्-व मा कानू मुन्तसिरीन (45)
व क़ौ-म नूहिम्-मिन् क़ब्लु, इन्नहुम् कानू क़ौमन् फ़ासिक़ीन (46)●
वस्समा-अ बनैनाहा बिऐदिंव्-व इन्ना ल-मूसिअ़ून (47)
वल्अर्-ज़ फ़रश्नाहा फ़निअ़्मल-माहिदून (48)
व मिन् कुल्लि शैइन् ख़लक़्ना ज़ौजैनि लअ़ल्लकुम् तज़क्करून (49)
फ़-फ़िर्रू इलल्लाहि, इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (50)
व ला तज्अ़लू मअ़ल्लाहि इलाहन् आ-ख़-र, इन्नी लकुम् मिन्हु नज़ीरुम्-मुबीन (51)
कज़ालि-क मा अतल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् मिर्रसूलिन् इल्ला क़ालू साहिरुन् औ मज्नून (52)
अ-तवासौ बिही बल् हुम् क़ौमुन् तागून (53)
फ़-तवल्-ल अ़न्हुम् फ़मा अन्-त बि-मलूम (54)
व ज़क्किर फ़-इन्नज़्ज़िक्रा तन्फ़अ़ुल्-मुअ़्मिनीन (55)
व मा ख़लक़्तुल्-जिन्-न वल्-इन्-स इल्ला लि-यअ़्बुदून (56)
मा उरीदु मिन्हुम् मिर्रिज़्क़िंव्-व मा उरीदु

وَفِیْ عَادٍ اِذْ اَرْسَلْنَا عَلَیْهِمُ الرِّیْحَ الْعَقِیْمَ ۝٤١
مَا تَذَرُ مِنْ شَیْءٍ اَتَتْ عَلَیْهِ اِلَّا جَعَلَتْهُ كَالرَّمِیْمِ ۝٤٢
وَفِیْ ثَمُوْدَ اِذْ قِیْلَ لَهُمْ تَمَتَّعُوْا حَتّٰی حِیْنٍ ۝٤٣
فَعَتَوْا عَنْ اَمْرِ رَبِّهِمْ فَاَخَذَتْهُمُ الصّٰعِقَةُ وَهُمْ یَنْظُرُوْنَ ۝٤٤
فَمَا اسْتَطَاعُوْا مِنْ قِیَامٍ وَّمَا كَانُوْا مُنْتَصِرِیْنَ ۝٤٥
وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا قَوْمًا فٰسِقِیْنَ ۝٤٦ ع٢
وَالسَّمَآءَ بَنَیْنٰهَا بِاَیْىدٍ وَّاِنَّا لَمُوْسِعُوْنَ ۝٤٧
وَالْاَرْضَ فَرَشْنٰهَا فَنِعْمَ الْمٰهِدُوْنَ ۝٤٨
وَمِنْ كُلِّ شَیْءٍ خَلَقْنَا زَوْجَیْنِ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ۝٤٩
فَفِرُّوْٓا اِلَی اللّٰهِ ۭ اِنِّیْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ۝٥٠
وَلَا تَجْعَلُوْا مَعَ اللّٰهِ اِلٰهًا اٰخَرَ ۭ اِنِّیْ لَكُمْ مِّنْهُ نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ۝٥١
كَذٰلِكَ مَآ اَتَی الَّذِیْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ مِّنْ رَّسُوْلٍ اِلَّا قَالُوْا سَاحِرٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ ۝٥٢
اَتَوَاصَوْا بِهٖ ۚ بَلْ هُمْ قَوْمٌ طَاغُوْنَ ۝٥٣
فَتَوَلَّ عَنْهُمْ فَمَآ اَنْتَ بِمَلُوْمٍ ۝٥٤
وَّذَكِّرْ فَاِنَّ الذِّكْرٰی تَنْفَعُ الْمُؤْمِنِیْنَ ۝٥٥
وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْاِنْسَ اِلَّا لِیَعْبُدُوْنِ ۝٥٦
مَآ اُرِیْدُ مِنْهُمْ مِّنْ رِّزْقٍ وَّمَآ اُرِیْدُ

कि वो मुझे खिलाएं।

58. यक़ीनन अल्लाह ही रोज़ी देनेवाला है, बड़ी कुव्वतवाला, ज़बरदस्त है।

59. पस जिन लोगों ने जुल्म इख़्तियार किया उनके लिए एक मुक़र्रर पैमाना है, जैसा उनके साथियों का मुक़र्रर पैमाना था, इसलिए वो मुझसे जल्दी न मचाएं।

60. आख़िर को उन लोगों के लिए जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया उनके उस दिन के सबब बड़ी ख़राबी है जिसकी उन्हें धमकी दी जा रही है।

सूरह अत्-तूर मक्की

(आयतें 49, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. गवाह है कोह-ए-तूर,

2-3. और फैले हुए झिल्ली के वर्क़ में लिखी हुई किताब,

4. और आबाद घर,

5. और ऊंची छत,

6-7. और लबरेज़ समुंदर, कि तेरे रब का अज़ाब ज़रूर वाक़े होकर रहेगा;

8. उसे टालने वाला कोई नहीं।

9. जिस दिन आसमान बुरी तरह डगमगाएगा।

10. और पहाड़ चलते-फिरते होंगे,

11. पस तबाही है उस दिन झुटलाने वालों के लिए,

12. वो लोग जो बातें बनाते हुए खेल रहे हैं,

13-14. जिस दिन वो धक्के दे देकर जहन्नम की आग की तरफ़ धकेले जाएंगे: "यही वह आग है जिसे तुम झुटलाते थे!

15. तो क्या यह जादू है, या तुम्हें सुझाई नहीं देता?

16. जाओ झुलसो उसमें! अब सब्र करो या सब्र न करो, तुम्हारे लिए बराबर है; तुम बदले में वही पा रहे हो जो तुम करते रहे थे"।

17. यक़ीनन डर रखने वाले बाग़ों और सामान-ए-ऐश में होंगे,

18. जो कुछ उन्हें उनके रब ने दिया होगा उससे लुत्फ़ उठा रहे होंगे और इस बात से कि उनके रब ने उन्हें भड़कती हुई आग से बचा लिया;

अंय्युत्अिमून (57)

इन्नल्ला-ह हुवर्रज़्ज़ाकु ज़ुल्-कुव्वतिल्-मतीन (58)

फ़-इन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू ज़नूबम्-मिस्-ल ज़नूबि-असहाबिहिम् फ़ला यस्तअ्जिलून (59)

फ़वैलुल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू मिंय्यौमिहिमुल्लज़ी यू-अदून (60)●

52 सूरतुत्-तूरि

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 1334 अक्षर, 319 शब्द, 49 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वत्तूरि (1)

व किताबिम्-मस्तूरिन् (2)

फ़ी रक़्क़िम्-मन्शूरिंव्-(3)

-वल्-बैतिल्-मअ्मूर (4)

वस्सक़्फ़िल्-मर्फ़ूअि (5)

वल्-बह्रिल्-मस्जूर (6)

इन्-न अज़ा-ब रब्बि-क लवाक़िअ् (7)

मा लहू मिन् दाफ़िअिंय्- (8)

-यौ-म तमूरुस्-समा-उ मौरंव्-(9)

-व तसीरुल्-जिबालु सैरा (10)

फ़वैलुंय्यौ-मइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (11)

अल्लज़ी-न हुम् फ़ी ख़ौज़िंय्यल्-अबून ● (12)

यौ-म युदअ्अू-न इला नारि जहन्न-म दअ्आ (13)

हाज़िहिन्नारुल्लती कुन्तुम् बिहा तुकज़्ज़िबून (14)

अ-फ़सिह्रुन् हाज़ा अम् अन्तुम् ला तुब्सिरून (15)

इस्लौहा फ़स्बिरू औ ला तस्बिरू सवाउन् अलैकुम्, इन्नमा तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ्मलून (16)

इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव् व नअीम (17)

फ़ाकिही-न बिमा आताहुम् रब्बुहुम् व वक़ाहुम् रब्बुहुम् अज़ाबल्-जहीम (18)

أَنْ يُّطْعِمُوْنِ ۝٥٧

إِنَّ اللّٰهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِيْنُ ۝٥٨

فَإِنَّ لِلَّذِيْنَ ظَلَمُوْا ذَنُوْبًا مِّثْلَ ذَنُوْبِ أَصْحٰبِهِمْ فَلَا يَسْتَعْجِلُوْنِ ۝٥٩

فَوَيْلٌ لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ يَّوْمِهِمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ۝٦٠

سُوْرَةُ الطُّوْرِ مَكِّيَّةٌ ٧٦ اٰيَاتُهَا ٤٩ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالطُّوْرِ ۝١ وَكِتٰبٍ مَّسْطُوْرٍ ۝٢

فِيْ رَقٍّ مَّنْشُوْرٍ ۝٣

وَّالْبَيْتِ الْمَعْمُوْرِ ۝٤

وَالسَّقْفِ الْمَرْفُوْعِ ۝٥

وَالْبَحْرِ الْمَسْجُوْرِ ۝٦

إِنَّ عَذَابَ رَبِّكَ لَوَاقِعٌ ۝٧

مَّا لَهٗ مِنْ دَافِعٍ ۝٨

يَّوْمَ تَمُوْرُ السَّمَآءُ مَوْرًا ۝٩

وَّتَسِيْرُ الْجِبَالُ سَيْرًا ۝١٠

فَوَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ۝١١

الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ خَوْضٍ يَّلْعَبُوْنَ ۝١٢

يَوْمَ يُدَعُّوْنَ إِلٰى نَارِ جَهَنَّمَ دَعًّا ۝١٣

هٰذِهِ النَّارُ الَّتِيْ كُنْتُمْ بِهَا تُكَذِّبُوْنَ ۝١٤

أَفَسِحْرٌ هٰذَا أَمْ أَنْتُمْ لَا تُبْصِرُوْنَ ۝١٥

اِصْلَوْهَا فَاصْبِرُوْا أَوْ لَا تَصْبِرُوْا سَوَآءٌ

عَلَيْكُمْ إِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ۝١٦

إِنَّ الْمُتَّقِيْنَ فِيْ جَنّٰتٍ وَّنَعِيْمٍ ۝١٧

فٰكِهِيْنَ بِمَآ اٰتٰهُمْ رَبُّهُمْ وَوَقٰهُمْ رَبُّهُمْ

عَذَابَ الْجَحِيْمِ ۝١٨

19. "मज़े से खाओ और पियो, उन आमाल के बदले में जो तुम करते रहे हो"।

20. क़तार में सजे तख़्तों पर टेक लगाए हुए होंगे और हम उन्हें बड़ी आंखों वाली हूरों से बियाह देंगे।

21. जो लोग ईमान लाए और उनकी औलाद ने भी किसी दर्जा-ए-ईमान के साथ उनकी पैरवी की हमने उनसे उनकी औलाद को मिला दिया, और उनके अमल में से कुछ भी कम नहीं किया; हर शख़्स जो कमाई उसने की होगी उसके इवज़ गिर्वी (रहन) है।

22. और हम उन्हें मेवा और गोश्त जो उन्हें मरग़ूब होंगे दिए चले जाएंगे।

23. वो वहां आपस में हाथों हाथ जामे शराब झपटकर ले रहे होंगे। जिसमें न कोई लग़वियत होगी और न गुनाह की मुहर्रिक कोई बात,

24. और उनकी ख़िदमत में महफ़ूज़ मोतियों के मानिन्द लड़के दौड़ते-फिरते होंगे, जो उन्हीं के लिए मख़्सूस होंगे।

25. दरयाफ़्त-ए-हाल करते हुए उनमें से बाज़ बाज़ की तरफ़ मुतवज्जेह होंगे,

26. कहेंगे, "यक़ीनन हम पहले अपने घरवालों में डरते रहे हैं।

27. आख़िर अल्लाह ने हम पर एहसान फ़रमाया, और हमें गर्म हवा के अज़ाब से बचा लिया।

28. इससे पहले हम उसे पुकारते रहे हैं; यक़ीनन वह बड़ा ही बावफ़ा, निहायत रहमवाला है"।

29. पस तुम याददिहानी करते रहो, अपने रब की इनायत से न तो तुम काहिन हो और न दीवाने।

30. या वो कहते हैं कि "वह शायर है जिसके लिए हम गर्दिश-ए-ज़माना का इंतिज़ार कर रहे हैं?"

31. कह दो, "इंतिज़ार करो! मैं भी तुम्हारे साथ इंतिज़ार में हूं"।

32. या उनकी अक़्लें यही हुक्म दे रही हैं? या वो हैं ही सरकश लोग?

33. या वो कहते हैं कि "उसने उसको ख़ुद बना लिया है"? बल्कि वो ईमान नहीं लाते।

कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (19)

मुत्तकिई-न अ़ला सुरुरिम्-मस्फ़ू-फ़तिन् व ज़व्वज्नाहुम् बिहूरिन् अ़ीन (20)

वल्लज़ी-न आमनू वत्त-बअ़त्हुम् ज़ुर्रिय्यतुहुम् बिईमानिन् अल्हक़्ना बिहिम् ज़ुर्रिय्य-तहुम् व मा अलत्नाहुम् मिन् अ़-मलिहिम् मिन् शैइन्, कुल्लुम्-रिइम् बिमा क-स-ब रहीन (21)

व अम्दद्नाहुम् बिफ़ाकि-हतिंव्-व लह्मिम्-मिम्मा यश्तहून (22)

य-तनाज़अू-न फ़ीहा कअ्सल्-ला लग्वुन् फ़ीहा व ला तअ्सीम (23)

व यतूफ़ु अ़लैहिम् ग़िल्मानुल्-लहुम् क-अन्नहुम् लुअ्लुउम्-मक्नून (24)

व अक़्ब-ल बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िंय्य-तसा-अलून (25)

क़ालू इन्ना कुन्ना क़ब्लु फ़ी अह्लिना मुश्फ़िक़ीन (26)

फ़-मन्नल्लाहु अ़लैना व वक़ाना अ़ज़ाबस्-समूम (27)

इन्ना कुन्ना मिन् क़ब्लु नद्अूहु, इन्नहू हुवल् बर्रुर्-रहीम (28) ●

फ़-ज़क्किर् फ़मा अन्-त बिनिअ्-मति रब्बि-क बिकाहिनिंव्-व ला मज्नून (29)

अम् यक़ूलू-न शाअ़िरुन् न-तरब्बसु बिही रैबल्-मनून (30)

क़ुल त-रब्बसू फ़-इन्नी म-अ़कुम् मिनल्-मु-तरब्बिसीन (31)

अम् तअ्मुरुहुम् अह्लामुहुम् बिहाज़ा अम् हुम् क़ौमुन् तागून (32)

अम् यक़ूलू-न तक़व्व-लहू बल्-ला युअ्मिनून (33)

كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓـًٔا بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ﴿١٩﴾
مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى سُرُرٍ مَّصْفُوْفَةٍ ۚ وَزَوَّجْنٰهُمْ
بِحُوْرٍ عِيْنٍ ﴿٢٠﴾
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَاتَّبَعَتْهُمْ ذُرِّيَّتُهُمْ
بِاِيْمَانٍ اَلْحَقْنَا بِهِمْ ذُرِّيَّتَهُمْ وَمَآ
اَلَتْنٰهُمْ مِّنْ عَمَلِهِمْ مِّنْ شَیْءٍ ؕ كُلُّ
امْرِئٍۢ بِمَا كَسَبَ رَهِيْنٌ ﴿٢١﴾
وَاَمْدَدْنٰهُمْ بِفَاكِهَةٍ وَّلَحْمٍ مِّمَّا
يَشْتَهُوْنَ ﴿٢٢﴾
يَتَنَازَعُوْنَ فِيْهَا كَاْسًا لَّا لَغْوٌ فِيْهَا
وَلَا تَاْثِيْمٌ ﴿٢٣﴾
وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ غِلْمَانٌ لَّهُمْ كَاَنَّهُمْ
لُؤْلُؤٌ مَّكْنُوْنٌ ﴿٢٤﴾
وَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَسَآءَلُوْنَ ﴿٢٥﴾
قَالُوْٓا اِنَّا كُنَّا قَبْلُ فِیْٓ اَهْلِنَا مُشْفِقِيْنَ ﴿٢٦﴾
فَمَنَّ اللّٰهُ عَلَيْنَا وَوَقٰىنَا عَذَابَ السَّمُوْمِ ﴿٢٧﴾
اِنَّا كُنَّا مِنْ قَبْلُ نَدْعُوْهُ ؕ اِنَّهٗ هُوَ الْبَرُّ
ع الرَّحِيْمُ ﴿٢٨﴾
فَذَكِّرْ فَمَآ اَنْتَ بِنِعْمَتِ رَبِّكَ بِكَاهِنٍ
وَّلَا مَجْنُوْنٍ ﴿٢٩﴾
اَمْ يَقُوْلُوْنَ شَاعِرٌ نَّتَرَبَّصُ بِهٖ رَيْبَ
الْمَنُوْنِ ﴿٣٠﴾
قُلْ تَرَبَّصُوْا فَاِنِّیْ مَعَكُمْ مِّنَ الْمُتَرَبِّصِيْنَ ﴿٣١﴾
اَمْ تَاْمُرُهُمْ اَحْلَامُهُمْ بِهٰذَآ اَمْ هُمْ
قَوْمٌ طَاغُوْنَ ﴿٣٢﴾
اَمْ يَقُوْلُوْنَ تَقَوَّلَهٗ ۚ بَلْ لَّا يُؤْمِنُوْنَ ﴿٣٣﴾

34. अच्छा अगर वो सच्चे हैं, तो उन्हें उस जैसा कलाम ले आना चाहिए।

35. या वो बग़ैर किसी चीज़ के पैदा हो गए? या वो ख़ुद ही ख़ालिक़ हैं?

36. या उन्होंने आसमानों और ज़मीन को पैदा किया? नहीं बल्कि वो यक़ीन नहीं रखते।

37. या उनके पास तुम्हारे रब के ख़ज़ाने हैं? या वही दारोग़ा हैं?

38. या उनके पास कोई सीढ़ी है जिस पर से वो सुन लेते हैं? फिर उनमें से सुन लेने वाला कोई खुली दलील ले आए।

39. क्या उसके लिए तो बेटियां हैं, और तुम्हारे अपने लिए बेटे?

40. या तुम उनसे किसी अज्र के तालिब हो कि वो तावान के बोझ से दबे जा रहे हैं?

41. या उनके पास ग़ैब है जिसकी बिना पर वो हुक्म लगा रहे हों?

42. या वो कोई चाल चलनी चाहते हैं? तो जिन लोगों ने कुफ़्र किया वही चाल की लपेट में आने वाले हैं।

43. या अल्लाह के सिवा उनका कोई और माबूद है? अल्लाह अज़ीम व बरतर है उससे जो शिर्क वो करते हैं।

44. अगर वो आसमान का कोई टुकड़ा गिरता हुआ देखें तो कहेंगे, "यह तो तह ब तह बादल है।"

45. पस छोड़ो उन्हें, यहां तक कि वो अपने उस दिन से दो-चार हों जिस में उनके होश जाते रहेंगे।

46. जिस दिन उनकी चाल उनके कुछ काम न आएगी, और न उन्हें कोई मदद ही पहुंचेगी।

47. और यक़ीनन जिन लोगों ने ज़ुल्म की रविश इख़्तियार की उनके लिए एक अज़ाब है, उसके सिवा, लेकिन उनमें से अकसर जानते नहीं।

48. अपने रब का फ़ैसला आने तक सब्र करो; तुम तो हमारी आंखों के सामने हो। और जब उठो तो अपने रब की हम्द करो,

फ़ल्यअ्तू बि-हदीसिम्-मिस्लिही इन् कानू सादिक़ीन (34)

अम् ख़ुलिक़ू मिन्. ग़ैरि शैइन् अम् हुमुल्-ख़ालिक़ून (35)

अम् ख़-लक़ुस्समावाति वल्अर्-ज़ बल्-ला यूक़िनून (36)

अम् अिन्दहुम् ख़ज़ा-इनु रब्बि-क अम् हुमुल्-मुसैतिरून (37)

अम् लहुम् सुल्लमुंय्यस्तमिअू-न फ़ीहि फ़ल्यअ्ति मुस्तमिअुहुम् बिसुल्तानिम्-मुबीन (38)

अम् लहुल्-बनातु व लकुमुल्-बनून (39)

अम् तस्-अलुहुम् अज्रन् फ़हुम् मिम्-मग़्रमिम्-मुस्क़लून (40)

अम् अिन्दहुमुल्-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून (41)

अम् युरीदू-न कैदन्, फ़ल्लज़ी-न क-फ़रू हुमुल्-मकीदून (42)

अम् लहुम् इलाहुन् ग़ैरुल्लाहि, सुब्हानल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून (43)

व इंय्यरौ किस्फ़म्-मिनस्समा-इ साक़ितंय्-यक़ूलू सहाबुन्-मर्कूम (44)

फ़-ज़र्हुम् हत्ता युलाक़ू यौ-महुमुल्लज़ी फ़ीहि युस्-अक़ून (45)

यौ-म ला युग़्नी अ़न्हुम् कैदुहुम् शैअंव्-व ला हुम् युन्सरून (46)

व इन्-न लिल्लज़ी-न ज़-लमू अ़ज़ाबन् दू-न ज़ालि-क व लाकिन्-न अक्स-रहुम् ला यअ्लमून (47)

वस्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क फ़-इन्न-क बि-अअ्युनिना व सब्बिह् बिहम्दि रब्बि-क ही-न तक़ूम (48)

فَلْيَأْتُوا بِحَدِيثٍ مِّثْلِهِ إِن كَانُوا
صٰدِقِينَ ﴿٣٤﴾
أَمْ خُلِقُوا مِنْ غَيْرِ شَيْءٍ أَمْ هُمُ الْخٰلِقُونَ ﴿٣٥﴾
أَمْ خَلَقُوا السَّمٰوٰتِ وَالْأَرْضَ ۚ بَل
لَّا يُوقِنُونَ ﴿٣٦﴾
أَمْ عِندَهُمْ خَزَآئِنُ رَبِّكَ أَمْ هُمُ
الْمُصَيْطِرُونَ ﴿٣٧﴾
أَمْ لَهُمْ سُلَّمٌ يَسْتَمِعُونَ فِيهِ ۚ فَلْيَأْتِ
مُسْتَمِعُهُم بِسُلْطٰنٍ مُّبِينٍ ﴿٣٨﴾
أَمْ لَهُ الْبَنٰتُ وَلَكُمُ الْبَنُونَ ﴿٣٩﴾
أَمْ تَسْئَلُهُمْ أَجْرًا فَهُم مِّن مَّغْرَمٍ
مُّثْقَلُونَ ﴿٤٠﴾
أَمْ عِندَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُونَ ﴿٤١﴾
أَمْ يُرِيدُونَ كَيْدًا ۚ فَالَّذِينَ كَفَرُوا
هُمُ الْمَكِيدُونَ ﴿٤٢﴾
أَمْ لَهُمْ إِلٰهٌ غَيْرُ اللّٰهِ ۚ سُبْحٰنَ اللّٰهِ
عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿٤٣﴾
وَإِن يَرَوْا كِسْفًا مِّنَ السَّمَآءِ سَاقِطًا
يَقُولُوا سَحَابٌ مَّرْكُومٌ ﴿٤٤﴾
فَذَرْهُمْ حَتّٰى يُلٰقُوا يَوْمَهُمُ الَّذِي
فِيهِ يُصْعَقُونَ ﴿٤٥﴾
يَوْمَ لَا يُغْنِي عَنْهُمْ كَيْدُهُمْ شَيْئًا
وَّلَا هُمْ يُنصَرُونَ ﴿٤٦﴾
وَإِنَّ لِلَّذِينَ ظَلَمُوا عَذَابًا دُونَ ذٰلِكَ
وَلٰكِنَّ أَكْثَرَهُمْ لَا يَعْلَمُونَ ﴿٤٧﴾
وَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ فَإِنَّكَ بِأَعْيُنِنَا وَسَبِّحْ
بِحَمْدِ رَبِّكَ حِينَ تَقُومُ ﴿٤٨﴾

49. और रात के कुछ वक़्त में भी उसकी तसबीह करो, और सितारों के पीठ देते वक़्त भी।

सूरह अन-नज्म मक्की

(आयतें 62, रुकूआत 3)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. शाहिद (गवाह) है तारा जब वह नीचे को आए।

2. तुम्हारा साथी न गुमराह हुआ, और न बहका,

3. और न वह अपनी ख़्वाहिश से बोलता है,

4. वह तो बस एक वही है जो की जा रही है।

5-7. उसे ज़बरदस्त क़ुव्वतों वाले ने सिखाया, मुस्तक़िल तरीक़ वाले ने। बस वह भरपूर हुआ इस हाल में कि वह बुलन्दतर उफ़ुक़ पर है।

8. फिर वह क़रीब हुआ और उतर आया,

9. अब दो कमानों की क़ाब के बक़द्र या उससे भी ज़्यादा क़रीब हो गया।

10. तब अल्लाह ने अपने बन्दे की तरफ़ वही की जो कुछ भी वही की।

11. दिल की कोई फ़रेबकारी नहीं जो कुछ कि उसने देखा;

12. अब क्या तुम उससे उस चीज़ पर झगड़ते हो जिसका वह मुशाहदा कर रहा है?

13-14. और यक़ीनन वह उसे एक मरतबा और 'सिदरतुल मुन्तहा' के पास उतरते देख चुका है।

15. उसी के पास 'जन्नतुल मावा' है।

16. जब कि छा रहा था सिदरा जो कुछ छा रहा था;

17. निगाह न तो कज हुई और न बेक़ाबू हुई।

18. यक़ीनन उसने अपने रब की बड़ी-बड़ी निशानियों का मुशाहदा किया।

19-20. भला तुमने ग़ौर किया लात और उज़्ज़ा और तीसरी एक और मनात पर?

21. क्या तुम्हारे लिए तो बेटे हैं और उसके लिए बेटियां?

22. तब तो यह बेढंगी और बहुत ग़ैर मुन्सिफ़ाना तक़सीम है।

23. वो तो बस कुछ नाम हैं जो

व मिनल्लैलि फ़सब्बिह्हु व इद्बारन्-नुजूम (49) ●

53 सूरतुन्–नज्मि

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 1450 अक्षर, 365 शब्द, 62 आयतें और 3 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वन्नज्मि इज़ा हवा (1)

मा ज़ल्-ल साहिबुकुम् व मा ग़वा (2)

व मा यन्तिक़ु अनिल्-हवा (3)

इन् हु-व इल्ला वह्युंय्यूहा (4)

अ़ल्ल-महू शदीदुल्क़ुवा (5)

ज़ू मिर्रतिन् फ़स्तवा (6)

व हु-व बिल्-उफ़ुक़िल्-अअ्ला (7)

सुम्-म दना फ़-तदल्ला (8)

फ़का-न क़ा-ब क़ौसैनि औ अद्ना (9)

फ़-औहा इला अ़ब्दिही मा औहा (10)

मा क-ज़बल्-फ़ुआदु मा रआ (11)

अ-फ़तुमारूनहू अ़ला मा यरा (12)

व ल-क़द् रआहु नज़्ल-तन् उख़्रा (13)

अ़िन्-द सिद्-रतिल्-मुन्तहा (14)

अ़िन्दहा जन्नतुल्-मअ्वा (15)

इज़् यग़्शस्-सिद्-र-त मा यग़्शा (16)

मा ज़ाग़ल्-ब-सरु व मा तग़ा (17)

ल-क़द् रआ मिन् आयाति रब्बिहिल्-कुब्रा (18)

अ-फ़-रऐतुमुल्ला-त वल्अुज़्ज़ा (19)

व मनातस्सालि-सतल्-उख़्रा (20)

अ-लकुमुज़्-ज़-करु व लहुल्-उन्सा (21)

तिल्-क इज़न् क़िस्मतुन ज़ीज़ा (22)

इन् हि-य इल्ला अस्माउन् सम्मैतुमूहा अन्तुम् व आबाउकुम् मा अन्ज़-लल्लाहु बिहा मिन्

ع وَمِنَ الَّيْلِ فَسَبِّحْهُ وَإِدْبَارَ النُّجُوْمِ ۝٤٩

سُوْرَةُ النَّجْمِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٦٢ رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالنَّجْمِ إِذَا هَوٰى ۝١

مَا ضَلَّ صَاحِبُكُمْ وَمَا غَوٰى ۝٢

وَمَا يَنْطِقُ عَنِ الْهَوٰى ۝٣

إِنْ هُوَ إِلَّا وَحْيٌ يُّوْحٰى ۝٤

عَلَّمَهٗ شَدِيْدُ الْقُوٰى ۝٥

ذُوْ مِرَّةٍ فَاسْتَوٰى ۝٦

وَهُوَ بِالْاُفُقِ الْاَعْلٰى ۝٧

ثُمَّ دَنَا فَتَدَلّٰى ۝٨

فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ۝٩

فَاَوْحٰٓى إِلٰى عَبْدِهٖ مَآ اَوْحٰى ۝١٠

مَا كَذَبَ الْفُؤَادُ مَا رَاٰى ۝١١

اَفَتُمٰرُوْنَهٗ عَلٰى مَا يَرٰى ۝١٢

وَلَقَدْ رَاٰهُ نَزْلَةً اُخْرٰى ۝١٣

عِنْدَ سِدْرَةِ الْمُنْتَهٰى ۝١٤

عِنْدَهَا جَنَّةُ الْمَاْوٰى ۝١٥

إِذْ يَغْشَى السِّدْرَةَ مَا يَغْشٰى ۝١٦

مَا زَاغَ الْبَصَرُ وَمَا طَغٰى ۝١٧

لَقَدْ رَاٰى مِنْ اٰيٰتِ رَبِّهِ الْكُبْرٰى ۝١٨

اَفَرَءَيْتُمُ اللّٰتَ وَالْعُزّٰى ۝١٩

وَمَنٰوةَ الثَّالِثَةَ الْاُخْرٰى ۝٢٠

اَلَكُمُ الذَّكَرُ وَلَهُ الْاُنْثٰى ۝٢١

تِلْكَ إِذًا قِسْمَةٌ ضِيْزٰى ۝٢٢

إِنْ هِيَ إِلَّآ اَسْمَآءٌ سَمَّيْتُمُوْهَآ اَنْتُمْ

وَاٰبَآؤُكُمْ مَّآ اَنْزَلَ اللّٰهُ بِهَا مِنْ

तुमने और तुम्हारे बाप-दादा ने रख लिए हैं, अल्लाह ने उनके लिए कोई सनद (दलील) नहीं उतारी। वो तो महज़ गुमान की पैरवी करते हैं और उसकी जो उनके नफ़्सों की चाहत है; हालांकि उनके पास उनके रब की तरफ़ से हिदायत आ चुकी है,

24. क्या इनसान वह कुछ पा लेगा जिसकी उसने तमन्ना की?

25. आख़िरत और दुनिया का मालिक तो अल्लाह ही है।

26. आसमानों में कितने ही फ़रिश्ते हैं उनकी सिफ़ारिश कुछ काम नहीं आने की, अगर काम आ सकती है तो इसके बाद ही कि अल्लाह इजाज़त दे जिसे चाहे और पसन्द फ़रमाए।

27-28. जो लोग आख़िरत पर ईमान नहीं रखते वो फ़रिश्तों को औरतों के नाम से पुकारते हैं, हालांकि इस बारे में उन्हें कुछ इल्म नहीं; वो महज़ गुमान की पैरवी करते हैं, और बेशक गुमान हक़ के मुक़ाबले में कुछ काम नहीं देता।

29. पस तुम उससे एराज़ करो जो हमारे ज़िक्र से मुंह मोड़ता है, और दुनिया की ज़िन्दगी के सिवा उसने कुछ न चाहा।

30. ऐसे लोगों के इल्म की रसाई बस यहीं तक है। यक़ीनन तुम्हारा रब ही उसे ख़ूब जानता है जो उसके रास्ते से भटक गया और वही उससे भी ख़ूब वाक़िफ़ है जो हिदायतयाब हुआ।

31. अल्लाह ही का है जो कुछ आसमानों में है और जो कुछ ज़मीन में है ताकि जिन लोगों ने बुराई की वह उन्हें उनके किए का बदला दे, और जिन लोगों ने भलाई की उनको अच्छा बदला दे,

32. वो लोग जो बड़े गुनाहों और शर्मनाक कामों से बचते हैं, यह और बात है कि कहीं किसी बुराई का ख़याल आ जाए या उसपर पांव पड़ जाए। यक़ीनन तुम्हारा रब बख़्शिश में फ़राख़ है। वह तुम्हें उस वक़्त से बख़ूबी जानता है, जबकि उसने तुम्हें ज़मीन से पैदा किया, और जबकि तुम अपनी माओं के पेटों में नाज़ायदा बच्चे थे, पस अपने नफ़्स की उमदगी व बालीदगी का दावा न करो; वह उस शख़्स को बख़ूबी जानता है जिसने तक़वा इख़्तियार किया।

33. क्या तुमने उसे देखा जिसने मुंह फेरा,

सुल्तानिन्, इंय्यत्तबिऊ-न इल्लज़्ज़न्-न व मा तह्वल्-अन्फ़ुसु व ल-क़द् जा-अहुम् मिर्रब्बि-हिमुल-हुदा (23)

अम् लिल्-इन्सानि मा तमन्ना (24)

फ़-लिल्लाहिल्-आख़िरतु वल्-ऊला (25) ●

व कम् मिम्म-लकिन् फ़िस्समवाति ला तुग़्नी शफ़ा-अतुहुम् शैअन् इल्ला मिम्बअ्दि अंय्यअ्-ज़नल्लाहु लिमंय्यशा-उ व यर्ज़ा (26)

इन्नल्लज़ी-न ला युअ्मिनू-न बिल्-आख़िरति ल-युसम्मूनल्-मलाइ-क-त तस्मि-यतल्-उन्सा (27)

व मा लहुम् बिही मिन् अ़िल्मिन्, इंय्यत्तबिऊ-न इल्लज़्ज़न्-न व इन्नज़्-ज़न्-न ला युग़्नी मिनल्-हक़्क़ि शैआ (28)

फ़-अअ्रिज़् अ़म्-मन् तवल्ला अ़न् ज़िक्रिना व लम् युरिद् इल्लल्-हयातद्दुन्या (29)

ज़ालि-क मब्लग़ुहुम् मिनल्-अ़िल्मि, इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्लमु बिमन् ज़ल्-ल अ़न् सबीलिही व हु-व अअ्लमु बि-मनिह्तदा ● (30)

व लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि लि-यज्ज़ि-यल्लज़ी-न असाऊ बिमा अ़मिलू व यज्ज़ि-यल्लज़ी-न अह्सनू बिल्हुस्ना (31)

अल्लज़ी-न यज्तनिबू-न कबाइरल्-इस्मि वल्-फ़वाहि-श इल्लल्-ल-मम्, इन्-न रब्ब-क वासिअुल्-मग़्फ़ि-रति, हु-व अअ्लमु बिकुम् इज़् अन्शा-अकुम् मिनल्-अर्ज़ि व इज़् अन्तुम् अजिन्नतुन् फ़ी बुतूनि उम्म-हातिकुम् फ़ला तुज़क्कू अन्फ़ु-सकुम्, हु-व अअ्लमु बि-मनित्तक़ा (32) ●

अ-फ़ रऐतल्लज़ी तवल्ला (33)

سُلْطٰنٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ اِلَّا الظَّنَّ وَمَا
تَهْوَى الْاَنْفُسُ ۚ وَلَقَدْ جَاۗءَهُمْ مِّنْ
رَّبِّهِمُ الْهُدٰى ﴿٢٣﴾
اَمْ لِلْاِنْسَانِ مَا تَمَنّٰى ﴿٢٤﴾
ع فَلِلّٰهِ الْاٰخِرَةُ وَالْاُوْلٰى ﴿٢٥﴾
وَكَمْ مِّنْ مَّلَكٍ فِي السَّمٰوٰتِ لَا تُغْنِيْ
شَفَاعَتُهُمْ شَيْـًٔا اِلَّا مِنْۢ بَعْدِ اَنْ يَّاْذَنَ
اللّٰهُ لِمَنْ يَّشَاۗءُ وَيَرْضٰى ﴿٢٦﴾
اِنَّ الَّذِيْنَ لَا يُؤْمِنُوْنَ بِالْاٰخِرَةِ لَيُسَمُّوْنَ
الْمَلٰۗىِٕكَةَ تَسْمِيَةَ الْاُنْثٰى ﴿٢٧﴾
وَمَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ ۭ اِنْ يَّتَّبِعُوْنَ
اِلَّا الظَّنَّ ۚ وَاِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ
الْحَقِّ شَيْـًٔا ﴿٢٨﴾
فَاَعْرِضْ عَنْ مَّنْ تَوَلّٰى ڏ عَنْ ذِكْرِنَا
وَلَمْ يُرِدْ اِلَّا الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٢٩﴾
ذٰلِكَ مَبْلَغُهُمْ مِّنَ الْعِلْمِ ۭ اِنَّ رَبَّكَ
هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ سَبِيْلِهٖ ۙ وَهُوَ
اَعْلَمُ بِمَنِ اهْتَدٰى ﴿٣٠﴾
وَلِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ ۙ
لِيَجْزِيَ الَّذِيْنَ اَسَاۗءُوْا بِمَا عَمِلُوْا وَيَجْزِيَ
الَّذِيْنَ اَحْسَنُوْا بِالْحُسْنٰى ﴿٣١﴾
اَلَّذِيْنَ يَجْتَنِبُوْنَ كَبٰۗىِٕرَ الْاِثْمِ
وَالْفَوَاحِشَ اِلَّا اللَّمَمَ ۭ اِنَّ رَبَّكَ وَاسِعُ
الْمَغْفِرَةِ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِكُمْ اِذْ اَنْشَاَكُمْ مِّنَ
الْاَرْضِ وَاِذْ اَنْتُمْ اَجِنَّةٌ فِيْ بُطُوْنِ اُمَّهٰتِكُمْ ۚ
ع فَلَا تُزَكُّوْٓا اَنْفُسَكُمْ ۭ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنِ اتَّقٰى ﴿٣٢﴾
اَفَرَءَيْتَ الَّذِيْ تَوَلّٰى ﴿٣٣﴾

34. और थोड़ा सा देकर रुक गया,

35. क्या उसके पास इल्म-ए-ग़ैब है कि वह देख रहा है?

36-37. या उसे उन बातों की ख़बर नहीं पहुंची जो मूसा के सहीफ़ों में है, और इबराहीम के, जिसने वफ़ा का हक़ अदा किया?

38. कि कोई बोझ उठानेवाला किसी दूसरे का बोझ न उठाएगा?

39. और यह कि इनसान के लिए बस वही है जो कुछ उसने सअई (कोशिश) की,

40. और यह कि उसकी सअई अनक़रीब देखी जाएगी,

41. फिर पूरी जज़ा उसे दी जाएगी,

42. और यह कि पहुंचने की मंज़िल तुम्हारे रब ही की तरफ़ है,

43. और यह कि वही है जो हंसाता और रुलाता है,

44. और यह कि वही है जो मारता और जिलाता है।

45. और यह कि वही है जिसने जोड़े के दोनों नर और मादा पैदा किए,

46. एक बूंद से जब वह टपकाई जाती है,

47. और यह कि उसी के ज़िम्मे दोबारा उठाना भी है,

48. और यह कि वही है जिसने दौलत दी और सरमायादार किया,

49. और यह कि वही है जो 'शिअरा' का रब है,

50. और यह कि उसी ने आद-ए-अव्वल को हलाक किया,

51-52. और समूद को भी, ग़र्ज़ किसी को भी बाक़ी न छोड़ा, और इससे पहले क़ौमे नूह को भी — यक़ीनन वो बड़े ज़ालिम और बड़े सरकश थे।

53. उलट जानेवाली बस्ती को भी नीचे गिराया,

54. तो ढक लिया उसे जिसने ढक लिया।

55. फिर तू अपने रब के करिश्मों में से किस-किस के बारे में शक करेगा?

56. यह पहले ख़बरदार करने वालों की तरह एक ख़बरदार करनेवाला है।

57. क़रीब आनेवाली क़रीब आ गई;

58. अल्लाह के सिवा कोई नहीं जो उसे हटा दे।

59. अब क्या तुम इस कलाम पर तअज्जुब करते हो?

व अअ्ता क़लीलंव्-व अक्दा (34)
अ-अिन्दहू अिल्मुल्-ग़ैबि फ़हु-व यरा (35)
अम् लम् युनब्बअ् बिमा फ़ी सुहुफ़ि मूसा (36)
व इब्राहीमल्लज़ी वफ़्फ़ा (37)
अल्ला तज़िरु वाज़ि-रतुंव्-विज़्-र उख़्रा (38)
व अल्लै-स लिल्-इन्सानि इल्ला मा सआ (39)
व अन्-न सअ्-यहू सौ-फ़ युरा (40)
सुम्-म युज्ज़ाहुल्-जज़ाअल्-औफ़ा (41)
व अन्-न इला रब्बिकल्-मुन्तहा (42)
व अन्नहू हु-व अज़्ह-क व अब्का (43)
व अन्नहू हु-व अमा-त व अह्या (44)
व अन्नहू ख़-लक़ज़्ज़ौजैनिज़्ज़- क-र वल्-उन्सा (45)
मिन्-नुत्फ़तिन् इज़ा तुम्ना (46)
व अन्-न अ़लैहिन्-नश-अतल्-उख़्रा (47)
व अन्नहू हु-व अग़्ना व अक़्ना (48)
व अन्नहू हु-व रब्बुश्-शिअ्रा (49)
व अन्नहू अह्ल-क आ-द-निल्ऊला (50)
व समू-द फ़मा अब्क़ा (51)
व क़ौ-म नूहिम्-मिन् क़ब्लु, इन्नहुम् कानू हुम् अज़्ल-म व अत्ग़ा (52)
वल्-मुअ्तफ़ि-क-त अह्वा (53)
फ़-ग़श्शाहा मा ग़श्शा (54)
फ़बिअय्यि आला-इ रब्बि-क त-तमारा (55)
हाज़ा नज़ीरुम मिनन्-नुज़ुरिल्-ऊला (56)
अज़ि-फ़तिल्-आज़िफ़ह् (57)
लै-स लहा मिन् दूनिल्लाहि काशिफ़ह् (58)
अ-फ़-मिन् हाज़ल्-हदीसि तअ्जबून (59)

وَاَعْطٰى قَلِيْلًا وَّاَكْدٰى ۝٣٤
اَعِنْدَهٗ عِلْمُ الْغَيْبِ فَهُوَ يَرٰى ۝٣٥
اَمْ لَمْ يُنَبَّاْ بِمَا فِيْ صُحُفِ مُوْسٰى ۝٣٦
وَاِبْرٰهِيْمَ الَّذِيْ وَفّٰٓى ۝٣٧
اَلَّا تَزِرُ وَازِرَةٌ وِّزْرَ اُخْرٰى ۝٣٨
وَاَنْ لَّيْسَ لِلْاِنْسَانِ اِلَّا مَا سَعٰى ۝٣٩
وَاَنَّ سَعْيَهٗ سَوْفَ يُرٰى ۝٤٠
ثُمَّ يُجْزٰىهُ الْجَزَآءَ الْاَوْفٰى ۝٤١
وَاَنَّ اِلٰى رَبِّكَ الْمُنْتَهٰى ۝٤٢
وَاَنَّهٗ هُوَ اَضْحَكَ وَاَبْكٰى ۝٤٣
وَاَنَّهٗ هُوَ اَمَاتَ وَاَحْيَا ۝٤٤
وَاَنَّهٗ خَلَقَ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ۝٤٥
مِنْ نُّطْفَةٍ اِذَا تُمْنٰى ۝٤٦
وَاَنَّ عَلَيْهِ النَّشْاَةَ الْاُخْرٰى ۝٤٧
وَاَنَّهٗ هُوَ اَغْنٰى وَاَقْنٰى ۝٤٨
وَاَنَّهٗ هُوَ رَبُّ الشِّعْرٰى ۝٤٩
وَاَنَّهٗٓ اَهْلَكَ عَادَا ۨ الْاُوْلٰى ۝٥٠
وَثَمُوْدَا۟ فَمَآ اَبْقٰى ۝٥١
وَقَوْمَ نُوْحٍ مِّنْ قَبْلُ ۭ اِنَّهُمْ كَانُوْا هُمْ
اَظْلَمَ وَاَطْغٰى ۝٥٢
وَالْمُؤْتَفِكَةَ اَهْوٰى ۝٥٣
فَغَشّٰىهَا مَا غَشّٰى ۝٥٤
فَبِاَيِّ اٰلَاۗءِ رَبِّكَ تَتَمَارٰى ۝٥٥
هٰذَا نَذِيْرٌ مِّنَ النُّذُرِ الْاُوْلٰى ۝٥٦
اَزِفَتِ الْاٰزِفَةُ ۝٥٧
لَيْسَ لَهَا مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ كَاشِفَةٌ ۝٥٨
اَفَمِنْ هٰذَا الْحَدِيْثِ تَعْجَبُوْنَ ۝٥٩

60. और हंसते हो और रोते नहीं?

61. जबकि तुम मुतकब्बिर व मदहोश हो,

62. पस अल्लाह को सजदा करो और बन्दगी बजा लाओ!

सूरह अल-क़मर मक्की

(आयतें 55, रुकूआत 3)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. वह घड़ी क़रीब आ लगी, और चांद फट गया।

2. मगर हाल यह है कि अगर वो कोई भी निशानी देखें तो एराज़ करेंगे और कहेंगे, "यह तो जादू है जो हमेशा से चला आ रहा है!"

3. उन्होंने झुटलाया और अपनी ख़्वाहिशात की पैरवी की; मगर हर मुआमले के लिए एक वक़्त मुक़र्रर है।

4-5. उनके पास वो ख़बरें आ चुकी हैं जिनमें काफ़ी सामाने ज़बरत हैं। यानी कामिल हिकमत (दानाई); मगर तम्बीहात (चेतावनियां) उन्हें फ़ायदा नहीं देतीं!

6. पस उनसे रुख़ फेर लो — जिस रोज़ पुकारने वाला एक सख़्त नागवार चीज़ की तरफ़ पुकारेगा,

7. वो अपनी झुकी हुई निगाहों के साथ अपनी क़ब्रों से निकल रहे होंगे, गोया वो बिखरी हुई टिड्डियां हैं,

8. दौड़ पड़ने को पुकारने वाले की तरफ़। काफ़िर कहेंगे, "यह तो एक सख़्त दिन है"।

9. उनसे पहले क़ौमे नूह ने भी झुटलाया; उन्होंने हमारे बन्दे को झूटा क़रार दिया, और कहा कि "वह दीवाना है" और वह बुरी तरह झिड़का गया।

10. आख़िरकार उसने अपने रब को पुकारा कि "मैं मग़लूब हो गया हूं; अब तू इंतिक़ाम ले!"

11. तब हमने मूसलाधार बरसते हुए पानी से आसमान के दरवाज़े खोल दिए,

12. और ज़मीन को हमने बहते चश्मों में तबदील कर दिया, और सारा पानी उस काम के लिए जो मुक़द्दर था मिल गया।

13-14. और हमने उसे एक तख़्तों और कीलों वाली पर सवार किया जो हमारी निगाहों के सामने चल रही थी — यह बदला था उस शख़्स की ख़ातिर जिसको ठुकरा दिया गया था।

व तज़्हकू-न व ला तब्कून (60)

व अन्तुम् सामिदून (61)

फ़स्जुदू लिल्लाहि वअ्बुदू • (62)•

54 सूरतुल् क़-मरि
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 1482
अक्षर, 348 शब्द, 55 आयतें और 3
रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इक़्त-र-बतिस्सा-अ़तु वन्शक़्क़ल्-क़मर् (1)

व इंय्यरौ आ-यतंय्-युअ्रिज़ू व यक़ूलू सिह्रुम्-मुस्तमिर्र (2)

व कज़्ज़बू वत्त-बअू अह्वा-अहुम् व कुल्लु अम्रिम्-मुस्तक़िर्र (3)

व ल-क़द् जा-अहुम् मिनल्-अम्बा-इ मा फ़ीहि मुज़्-दजर् (4)

हिक्मतुम् बालि-ग़तुन् फ़मा तुग़्निन्-नुज़ुर (5)

फ़-तवल्-ल अ़न्हुम् • यौ-म यद्अुद्-दाअ़ि इला शैइन्-नुकुर (6)

ख़ुश्श-अ़न् अब्सारुहुम् यख़्रुजू-न मिनल्-अज्दासि क-अन्नहुम् जरादुम्-मुन्तशिर (7)

मुह्तिअ़ी-न इलद्-दाअ़ि, यक़ूलुल्-काफ़िरू-न हाज़ा यौमुन् अ़सिर (8)

कज़्ज़बत् क़ब्लहुम् क़ौमु नूहिन् फ़-कज़्ज़बू अ़ब्-दना व क़ालू मज्नूनुंव्-वज़्दुजिर (9)

फ़-दआ़ रब्बहू अन्नी मग़्लूबुन फ़न्तसिर (10)

फ़-फ़तह्ना अब्वाबस्-समा-इ बिमाइम्-मुन्हमिर (11)

व फ़ज्जर्नल्-अर्-ज़ अ़ुयूनन् फ़ल्तक़ल्-मा उ अ़ला अम्रिन् क़द् क़ुदिर (12)

व हमल्नाहु अ़ला ज़ाति अल्वाहिंव्-व दुसुर (13)

तज्री बि-अअ्युनिना जज़ाअल्-लिमन् का-न कुफ़िर (14)

وَتَضْحَكُوْنَ وَلَا تَبْكُوْنَ ۝٦٠
وَاَنْتُمْ سٰمِدُوْنَ ۝٦١
فَاسْجُدُوْا لِلّٰهِ وَاعْبُدُوْا ۝٦٢

سُوْرَةُ الْقَمَرِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٥٥ رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِقْتَرَبَتِ السَّاعَةُ وَانْشَقَّ الْقَمَرُ ۝١
وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا
سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ ۝٢
وَكَذَّبُوْا وَاتَّبَعُوْٓا اَهْوَآءَهُمْ وَكُلُّ
اَمْرٍ مُّسْتَقِرٌّ ۝٣
وَلَقَدْ جَآءَهُمْ مِّنَ الْاَنْۢبَآءِ مَا فِيْهِ
مُزْدَجَرٌ ۝٤
حِكْمَةٌۢ بَالِغَةٌ فَمَا تُغْنِ النُّذُرُ ۝٥
فَتَوَلَّ عَنْهُمْ ۘ يَوْمَ يَدْعُ الدَّاعِ اِلٰى
شَيْءٍ نُّكُرٍ ۝٦
خُشَّعًا اَبْصَارُهُمْ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ
كَاَنَّهُمْ جَرَادٌ مُّنْتَشِرٌ ۝٧
مُّهْطِعِيْنَ اِلَى الدَّاعِ ۭ يَقُوْلُ الْكٰفِرُوْنَ
هٰذَا يَوْمٌ عَسِرٌ ۝٨
كَذَّبَتْ قَبْلَهُمْ قَوْمُ نُوْحٍ فَكَذَّبُوْا
عَبْدَنَا وَقَالُوْا مَجْنُوْنٌ وَّازْدُجِرَ ۝٩
فَدَعَا رَبَّهٗٓ اَنِّيْ مَغْلُوْبٌ فَانْتَصِرْ ۝١٠
فَفَتَحْنَآ اَبْوَابَ السَّمَآءِ بِمَآءٍ مُّنْهَمِرٍ ۝١١
وَّفَجَّرْنَا الْاَرْضَ عُيُوْنًا فَالْتَقَى الْمَآءُ
عَلٰٓى اَمْرٍ قَدْ قُدِرَ ۝١٢
وَحَمَلْنٰهُ عَلٰى ذَاتِ اَلْوَاحٍ وَّدُسُرٍ ۝١٣
تَجْرِيْ بِاَعْيُنِنَا ۚ جَزَآءً لِّمَنْ كَانَ كُفِرَ ۝١٤

15. हमने उसे एक निशानी बनाकर छोड़ दिया। फिर क्या है कोई याददिहानी हासिल करने वाला?

16. फिर कैसा रहा मेरा अज़ाब और मेरे डरावे?

17. हमने क़ुरआन को तज़कीर (नसीहत और याददिहानी) के लिए आसान कर दिया है। फिर क्या है कोई याददिहानी हासिल करनेवाला?

18. आद ने भी झुटलाया, फिर कैसा रहा मेरा अज़ाब और मेरे डरावे?

19-20. हमने एक मुसलसल नहूसत वाले दिन में तुन्द व तेज़ सर्द हवा भेजी, उसे उनपर मुसल्लत कर दिया, वह लोगों को उखाड़ फेंक रही थी, गोया वो उखड़े हुए खजूर के तने हैं।

21. फिर कैसा रहा मेरा अज़ाब और मेरे डरावे?

22. हमने क़ुरआन को नसीहत और याददिहानी के लिए मौज़ूं व साज़गार बना दिया है। फिर क्या है कोई याददिहानी हासिल करनेवाला।

23. समूद ने इनज़ार (डराने वाले) को झुटलाया।

24. और कहने लगे, "एक अकेला आदमी जो हम ही में से है क्या हम उसके पीछे चलेंगे? तब तो हक़ीक़त में हम गुमराही और दीवानगी में पड़ गए!

25. क्या हमारे दरमियान उसी पर याददिहानी नाज़िल हुई है? नहीं, बल्कि वह तो परले दर्जे का झूटा बड़ा खुदपसन्द है"।

26. कल को ही वो जान लेंगे कि कौन परले दर्जे का झूटा बड़ा खुदपसन्द है।

27. ऊंटनी को हम उनके लिए आज़माइश के तौरपर भेज रहे हैं; अब तुम देखते जाओ और सब्र से काम लो।

28. और उनको आगाह कर दो कि पानी उनके दरमियान तक़सीम किया गया है, हर एक अपने पीने की बारी पर हाज़िर होगा"।

29. आख़िरकार उन्होंने अपने रफ़ीक़ को पुकारा तो उसने ज़िम्मा लिया फिर उसने उसकी कूचें काट दीं।

30. फिर कैसा रहा मेरा अज़ाब और मेरे डरावे?

31. हमने उनपर एक धमाका छोड़ा; फिर वो बाड़ लगाने वाले की रौंदी हुई बाड़ के चूरे की तरह होकर रह गए।

32. हम ने क़ुरआन को याददिहानी के लिए मौज़ूं और साज़गार बनाया है। फिर क्या कोई है याददिहानी हासिल करने वाला?

33. लूत की क़ौम ने भी इनज़ार (डरानेवाले) की तकज़ीब की।

व लक़त्त-रक्नाहा आ-यतन् फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (15)

फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (16)

व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (17)

कज़्ज़बत आदुन् फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (18)

इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् रीहन् सर्-सरन् फ़ी यौमि नह्सिम्-मुस्तमिर्र (19)

तन्ज़िअ़ुन्ना-स क-अन्नहुम् अअ़्जाज़ु नख़्लिम्-मुन्क़अ़िर (20)

फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (21)

व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (22)●

कज़्ज़बत् समूदु बिन्नुज़ुर (23)

फ़क़ालू अ-ब-शरम् मिन्ना वाहिदन् नत्तबिअ़ुहू इन्ना इज़ल्-लफ़ी ज़लालिंव्-व सुअ़ुर (24)

अ-उल्क़ि-यज़्ज़िक्रु अ़लैहि मिम्बैनिना बल् हु-व कज़्ज़ाबुन् अशिर (25)

स-यअ़्लमू-न ग़दम्-मनिल्-कज़्ज़ाबुल्-अशिर (26)

इन्ना मुर्सिलुन्ना-क़ति फ़ित्न-तल्-लहुम् फ़र्तक़िब्हुम् वस्तबिर (27)

व नब्बिअ़्हुम् अन्नल्-मा-अ क़िस्मतुम्-बैनहुम् कुल्लु शिर्बिम्-मुह्त-ज़र (28)

फ़नादौ साहि-बहुम् फ़-तआ़ता फ़-अ़क़र (29)

फ़कै-फ़ का-न अ़ज़ाबी व नुज़ुर (30)

इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् सै-हतंव्-वाहि-दतन् फ़कानू क-हशीमिल्-मुह्तज़िर (31)

व ल-क़द् यस्सर्नल्-क़ुर्आ-न लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (32)

कज़्ज़बत् क़ौमु लूतिम्-बिन्नुज़ुर (33)

وَلَقَدْ تَّرَكْنٰهَآ اٰيَةً فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٥
فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ۝١٦
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ
مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝١٧
كَذَّبَتْ عَادٌ فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ۝١٨
اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ رِيْحًا صَرْصَرًا فِىْ
يَوْمِ نَحْسٍ مُّسْتَمِرٍّ ۝١٩
تَنْزِعُ النَّاسَ كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ مُّنْقَعِرٍ ۝٢٠
فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ۝٢١
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ
ع مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝٢٢
كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِالنُّذُرِ ۝٢٣
فَقَالُوْٓا اَبَشَرًا مِّنَّا وَاحِدًا نَّتَّبِعُهٗٓ ۙ اِنَّآ
اِذًا لَّفِىْ ضَلٰلٍ وَّسُعُرٍ ۝٢٤
ءَاُلْقِىَ الذِّكْرُ عَلَيْهِ مِنْۢ بَيْنِنَا بَلْ هُوَ
كَذَّابٌ اَشِرٌ ۝٢٥
سَيَعْلَمُوْنَ غَدًا مَّنِ الْكَذَّابُ الْاَشِرُ ۝٢٦
اِنَّا مُرْسِلُوا النَّاقَةِ فِتْنَةً لَّهُمْ فَارْتَقِبْهُمْ
وَاصْطَبِرْ ۝٢٧
وَنَبِّئْهُمْ اَنَّ الْمَآءَ قِسْمَةٌۢ بَيْنَهُمْ ۚ كُلُّ
شِرْبٍ مُّحْتَضَرٌ ۝٢٨
فَنَادَوْا صَاحِبَهُمْ فَتَعَاطٰى فَعَقَرَ ۝٢٩
فَكَيْفَ كَانَ عَذَابِىْ وَنُذُرِ ۝٣٠
اِنَّآ اَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ صَيْحَةً وَّاحِدَةً
فَكَانُوْا كَهَشِيْمِ الْمُحْتَظِرِ ۝٣١
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا الْقُرْاٰنَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ مِنْ مُّدَّكِرٍ ۝٣٢
كَذَّبَتْ قَوْمُ لُوْطٍۢ بِالنُّذُرِ ۝٣٣

34-35. हमने लूत के घरवालों के सिवा उनपर संगरेज़े बरसाने वाली तेज़ हवा भेजी; उन्हें हमने सेहर में अपनी तरफ़ से नवाज़िश कर के बचा लिया; हम इसी तरह उसे जज़ा देते हैं जो शुक्रगुज़ार हो।

36. उसने तो उन्हें हमारी पकड़ से ख़बरदार कर दिया था, मगर वो इनज़ार के बारे में झगड़ते और शक करते रहे।

37. उन्होंने उसे फुसलाकर उससे मेहमानों को तलब करना चाहा; आख़िरकार हमने उनकी आंखें मेट दीं कि "लो अब मेरे अज़ाब और इनज़ार का मज़ा चखो!"

38-39. सुबह सवेरे ही एक अटल अज़ाब उनपर आ पहुंचाः "लो अब मज़ा चखो मेरे अज़ाब और मेरे डरावे का!"

40. हमने क़ुरआन को यاददिहानी के लिए मौज़ूं व साज़गार बना दिया है। फिर क्या है कोई याददिहानी हासिल करने वाला?

41. और आले फ़िरऔन के पास तम्बीहात आईं।

42. उन्होंने हमारी तमाम ही निशानियों को झुटला दिया, आख़िरकार हमने उन्हें गिरिफ़्त में लिया जैसे एक ज़बरदस्त निहायत बा इख़्तियार पकड़ता है।

43. क्या तुम्हारे कुफ़्फ़ार कुछ उन लोगों से बेहतर हैं? या किताबों में तुम्हारे लिए कोई बरीयत (छुटकारा) लिखी हुई है?

44. या वो कहते हैं कि "हम मुक़ाबले की क़ुव्वत रखनेवाला जत्था हैं?"

45. अनक़रीब वह जत्था शिकस्त खाकर रहेगा, और वो पीठ दिखा जाएंगे।

46. नहीं, बल्कि वह घड़ी उनका वक़्त-ए-मुक़र्रर है, और वह घड़ी बड़ी आफ़त वाली और तल्ख़तर है।

47. बेशक मुजरिमीन गुमराही और दीवानगी में पड़े हुए हैं।

48. जिस रोज़ वो अपने मुंह के बल आग में घसीटे जाएंगेः "चखो मज़ा सक़र (जहन्नम) की लपट का!"

49. यक़ीनन हमने हर एक चीज़ एक अन्दाज़े के साथ पैदा की।

50. और हमारा हुक्म (और काम) तो बस एक दम की बात है जैसे आंख का झपकना।

51. और हम तुम्हारे जैसे लोगों को हलाक कर चुके हैं; फिर क्या है कोई याददिहानी हासिल करने वाला?

इन्ना अर्सल्ना अ़लैहिम् हासिबन्
इल्ला आ-ल लूतिन्, नज्जैनाहुम्
बि-स-हर (34)
निअ्-मतम्-मिन् अिन्दिना,
कज़ालि-क नज्ज़ी मन् शकर् (35)
व ल-क़द् अन्ज़-रहुम् बत्श-तना
फ़-तमारौ बिन्नुज़ुर (36)
व ल-क़द् रा-वदूहु अ़न् ज़ैफ़िही
फ़-तमस्ना अअ्यु-नहुम् फ़ज़ूक़ू
अ़ज़ाबी व नुज़ुर (37)
व ल-क़द् सब्ब-हहुम् बुक्र-तन्
अ़ज़ाबुम् मुस्तक़िर्र (38)
फ़ज़ूक़ू अ़ज़ाबी व नुज़ुर (39)
व ल-क़द् यस्सर्नल-क़ुर्आ-न
लिज़्ज़िक्रि फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर
(40)●
व ल-क़द् जा-अ आ-ल
फ़िर्औनन्-नुज़ुर (41)
कज़्ज़बू बिआयातिना कुल्लिहा
फ़-अख़ज़्नाहुम् अख़्-ज़
अ़ज़ीज़िम्-मुक़्तदिर (42)
अ-कुफ़्फ़ारुकुम् ख़ैरुम्-मिन् उलाइकुम्
अम् लकुम् बरा-अतुन् फ़िज़्ज़ुबुर
(43)
अम् यक़ूलू-न नहनु
जमीअुम्-मुन्तसिर (44)
सयुह्ज़-मुल् जम्अु व युवल्लूनद्-दुबुर
(45)
बलिस्सा-अ़तु मौअिदुहुम् वस्सा-अ़तु
अद्हा व अमर्र (46)
इन्नल्-मुज्रिमी-न फ़ी ज़लालिंव्-व
सुअुर ●(47)
यौ-म युस्हबू-न फ़िन्नारि अ़ला
वुजूहिहिम्, ज़ूक़ू मस्-स सक़र् (48)
इन्ना कुल्-ल शैइन् ख़लक़्नाहु
बि-क़-दर (49)
व मा अम्रुना इल्ला वाहि-दतुन्
क-लम्हिम्-बिल्ब-सर (50)
व ल-क़द् अह्लक्ना अश्या-अ़कुम्
फ़-हल् मिम्-मुद्दकिर (51)

إِنَّآ أَرْسَلْنَا عَلَيْهِمْ حَاصِبًا إِلَّآ ءَالَ لُوطٍ ۖ
نَّجَّيْنَٰهُم بِسَحَرٍ ۝٣٤
نِّعْمَةً مِّنْ عِندِنَا ۚ كَذَٰلِكَ نَجْزِى
مَن شَكَرَ ۝٣٥
وَلَقَدْ أَنذَرَهُم بَطْشَتَنَا فَتَمَارَوْا۟ بِٱلنُّذُرِ ۝٣٦
وَلَقَدْ رَٰوَدُوهُ عَن ضَيْفِهِۦ فَطَمَسْنَآ
أَعْيُنَهُمْ فَذُوقُوا۟ عَذَابِى وَنُذُرِ ۝٣٧
وَلَقَدْ صَبَّحَهُم بُكْرَةً عَذَابٌ مُّسْتَقِرٌّ ۝٣٨
فَذُوقُوا۟ عَذَابِى وَنُذُرِ ۝٣٩
وَلَقَدْ يَسَّرْنَا ٱلْقُرْءَانَ لِلذِّكْرِ فَهَلْ
مِن مُّدَّكِرٍ ۝٤٠
وَلَقَدْ جَآءَ ءَالَ فِرْعَوْنَ ٱلنُّذُرُ ۝٤١
كَذَّبُوا۟ بِـَٔايَٰتِنَا كُلِّهَا فَأَخَذْنَٰهُمْ أَخْذَ
عَزِيزٍ مُّقْتَدِرٍ ۝٤٢
أَكُفَّارُكُمْ خَيْرٌ مِّنْ أُو۟لَٰٓئِكُمْ أَمْ لَكُم بَرَآءَةٌ
فِى ٱلزُّبُرِ ۝٤٣
أَمْ يَقُولُونَ نَحْنُ جَمِيعٌ مُّنتَصِرٌ ۝٤٤
سَيُهْزَمُ ٱلْجَمْعُ وَيُوَلُّونَ ٱلدُّبُرَ ۝٤٥
بَلِ ٱلسَّاعَةُ مَوْعِدُهُمْ وَٱلسَّاعَةُ
أَدْهَىٰ وَأَمَرُّ ۝٤٦
إِنَّ ٱلْمُجْرِمِينَ فِى ضَلَٰلٍ وَسُعُرٍ ۝٤٧
يَوْمَ يُسْحَبُونَ فِى ٱلنَّارِ عَلَىٰ وُجُوهِهِمْ
ذُوقُوا۟ مَسَّ سَقَرَ ۝٤٨
إِنَّا كُلَّ شَىْءٍ خَلَقْنَٰهُ بِقَدَرٍ ۝٤٩
وَمَآ أَمْرُنَآ إِلَّا وَٰحِدَةٌ كَلَمْحٍۭ بِٱلْبَصَرِ ۝٥٠
وَلَقَدْ أَهْلَكْنَآ أَشْيَاعَكُمْ فَهَلْ مِن
مُّدَّكِرٍ ۝٥١

52. हर चीज़ जो उनके अमल में आई है सहीफ़ों में मौजूद है,

53. और हर छोटी और बड़ी चीज़ लिखी हुई है।

54-55. यक़ीनन डर रखने वाले बाग़ों और नहरों के दरमियान होंगे इज़्ज़त की जगह, निहायत बा इख़्तियार बादशाह के पास।

सूरह अर-रहमान मक्की

(आयतें 78, रुकूआत 3)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1-2. रहमान ने कुरआन सिखाया।

3. उसी ने इनसान को पैदा किया।

4. उसे बोलना सिखाया।

5. सूरज और चांद हिसाब के पाबन्द हैं,

6. और तारे और दरख़्त सजदा करते हैं,

7-8. आसमान को उसने बुलन्द किया, और मीज़ान क़ायम की -- कि तुम भी मीज़ान में हद से तजावुज़ न करो,

9. इनसाफ़ के साथ वज़न को क़ायम रखो, और वज़न में कमी न करो।

10. और ज़मीन को उसने मख़लूक़ के लिए बनाया,

11-12. उसमें लज़ीज़ फल हैं और ग़िलाफ़ों में लिपटे हुए फल वाले खजूर के दरख़्त हैं, और भूस वाले अनाज भी, और खुशबूदार बेल-बूटे भी।

13. आख़िर तुम (ऐ जिन्नो और इन्सानो) अपने रब की किन-किन इनायतों को झुटलाओगे?

14. उसने इनसान को ठीकरी जैसी खनखनाती हुई मिट्टी से पैदा किया,

15. और जिन्न को उसने आग के शोले से पैदा किया।

16. आख़िर तुम अपने रब की किन-किन कुदरतों को झुटलाओगे?

17. वह दो मशरिकों का रब है, और दो मग़रिबों का रब भी।

18. आख़िर तुम अपने रब की किन-किन अज़मतों को झुटलाओगे?

19. उसने दो समुंदर को छोड़ दिया जो आपस में मिल रहे होते हैं,

20. उन दोनों के दरमियान एक पर्दा हायल होता है कि जिससे वो तजावुज़ नहीं करते।

21. आख़िर तुम अपने रब के किन-किन करिशमों को झुटलाओगे?

22. उनसे मोती और मूंगा निकलता है।

व कुल्लु शैइन् फ़-अ़लूहु फ़िज़्ज़ुबुर (52)
व कुल्लु सग़ीरिंव्-व कबीरिम्-मुस्त-तर (53)
इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी जन्नातिंव्-व न-हर (54)
फ़ी मक़्अ़दि सिद्क़िन् अ़िन्-द मलीकिम्-मुक़्तदिर (55) ●

55 सूरतुर्-रह्मानि
(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1683 अक्षर, 351 शब्द, 78 आयतें और 3 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

अर्रह्मानु (1)
अ़ल्ल-मल्-क़ुर्आन (2)
ख़-लक़ल्-इन्सा-न (3)
अ़ल्ल-महुल्-बयान (4)
अश्शम्सु वल्क़-मरु बिहुस्बानिंव्- (5)
-वन्नज्मु वश्श-जरु यस्जुदान (6)
वस्समा-अ र-फ़-अ़हा व व-ज़-अ़ल्-मीज़ान (7)
अल्ला तत्ग़ौ फ़िल्मीज़ान (8)
व अक़ीमुल्-वज़्-न बिल्क़िस्ति व ला तुख़्सिरुल्-मीज़ान (9)
वल्अर्-ज़ व-ज़-अ़हा लिल्-अनाम (10)
फ़ीहा फ़ाकि-हतुंव्-वन्नख़्लु ज़ातुल् अक्माम (11)
वल्हब्बु ज़ुल्-अ़स्फ़ि वर्-रैहान (12)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (13)
ख़-लक़ल्-इन्सा-न मिन् सल्सालिन् कल्-फ़ख़्ख़ार (14)
व ख़-लक़ल्-जान्-न मिम्-मारिजिम्-मिन्-नार (15)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (16)
रब्बुल्-मश्रिक़ैनि व रब्बुल्-मग़्रिबैन (17)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (18)
म-रजल्-बह्रैनि यल्तक़ियान (19)
बैनहुमा बर्-ज़ख़ुल्-ला यब्ग़ियान (20) *फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान* (21)
यख़्रुजु मिन्हुमल्-लुअ्लुउ वल्-मर्जान (22)

وَكُلُّ شَيْءٍ فَعَلُوهُ فِي الزُّبُرِ ﴿٥٢﴾
وَكُلُّ صَغِيرٍ وَّكَبِيرٍ مُّسْتَطَرٌ ﴿٥٣﴾
إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي جَنّٰتٍ وَّنَهَرٍ ﴿٥٤﴾
ع فِي مَقْعَدِ صِدْقٍ عِنْدَ مَلِيكٍ مُّقْتَدِرٍ ﴿٥٥﴾

سُوْرَةُ الرَّحْمٰنِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٧٨ رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
اَلرَّحْمٰنُ ﴿١﴾ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ ﴿٢﴾
خَلَقَ الْاِنْسَانَ ﴿٣﴾
عَلَّمَهُ الْبَيَانَ ﴿٤﴾
اَلشَّمْسُ وَالْقَمَرُ بِحُسْبَانٍ ﴿٥﴾
وَّالنَّجْمُ وَالشَّجَرُ يَسْجُدٰنِ ﴿٦﴾
وَالسَّمَآءَ رَفَعَهَا وَوَضَعَ الْمِيْزَانَ ﴿٧﴾
اَلَّا تَطْغَوْا فِي الْمِيْزَانِ ﴿٨﴾
وَاَقِيْمُوا الْوَزْنَ بِالْقِسْطِ وَلَا تُخْسِرُوا الْمِيْزَانَ ﴿٩﴾
وَالْاَرْضَ وَضَعَهَا لِلْاَنَامِ ﴿١٠﴾
فِيْهَا فَاكِهَةٌ وَّالنَّخْلُ ذَاتُ الْاَكْمَامِ ﴿١١﴾
وَالْحَبُّ ذُو الْعَصْفِ وَالرَّيْحَانُ ﴿١٢﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٣﴾
خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ صَلْصَالٍ كَالْفَخَّارِ ﴿١٤﴾
وَخَلَقَ الْجَآنَّ مِنْ مَّارِجٍ مِّنْ نَّارٍ ﴿١٥﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٦﴾
رَبُّ الْمَشْرِقَيْنِ وَرَبُّ الْمَغْرِبَيْنِ ﴿١٧﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿١٨﴾
مَرَجَ الْبَحْرَيْنِ يَلْتَقِيٰنِ ﴿١٩﴾
بَيْنَهُمَا بَرْزَخٌ لَّا يَبْغِيٰنِ ﴿٢٠﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٢١﴾
يَخْرُجُ مِنْهُمَا اللُّؤْلُؤُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٢٢﴾

23. आख़िर तुम दोनों अपने रब के किन-किन अजाइबात को झुटलाओगे?

24. उसी के इख़्तियार में हैं समुंदर में पहाड़ों की तरह उठे हुए जहाज़।

25. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन कुदरतों को झुटलाओगे?

26. जो भी ज़मीन पर है वह फ़ना होने वाला है।

27. मगर तुम्हारे रब की जलील व करीम ज़ात बाक़ी रहने वाली है।

28. आख़िर तुम दोनों अपने रब के किन-किन कमालात को झुटलाओगे?

29. आसमानों और ज़मीन में जो भी है उसी से मांगता है; हर दिन वह एक नई शान में है।

30. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन शानों को झुटलाओगे?

31. ऐ तुम (दोनों जमाअतों) जो भारी हो! हम जल्द ही तुम्हारे लिए फ़ारिग़ हुए जाते हैं।

32. आख़िर तुन दोनों अपने रब की किन-किन इनायतों को झुटलाओगे?

33. ऐ जिन्नों और इन्सानों के गिरोह, अगर तुमसे हो सके कि आसमानों और ज़मीन की हदों को पार कर सको, तो पार कर जाओ! तुम हरगिज़ पार नहीं कर सकते बग़ैर पर्वाना-ए-राहदारी के।

34. आख़िर तुम अपने रब की किन-किन कुदरतों को झुटलाओगे?

35. तुमपर आग का शोला और धुंआ वाला अंगारा छोड़ दिया जाएगा और तुम मुक़ाबला न कर सकोगे।

36. आख़िर तुम अपने रब की किन-किन कुदरतों को झुटलाओगे?

37. फिर जब आसमान फट जाएगा, और लाल चमड़े की तरह सुर्ख़ हो जाएगा।

38. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन करिश्मों को झुटलाओगे?

39. फिर उस दिन न किसी इनसान से उसके गुनाह के बारे में पूछा जाएगा, और न किसी जिन्न ही से।

40. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन शान व अज़मतों को झुटलाओगे?

41. मुजरिम अपनी अलामतों से पहचान लिए जाएंगे, और पेशानी के बालों और टांगों से पकड़े जाएंगे।

42. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन कुदरतों को झुटलाओगे?

फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (23)

व लहुल्-जवारिल्-मुन्शआतु फ़िल्बह्रि कल्-अअ्लाम ●(24)

फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (25)●

कुल्लु मन् अ़लैहा फ़ानिंव्- (26)

-व यब्क़ा वज्हु रब्बि-क ज़ुल्-जलालि वल्-इक्राम (27)

फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (28)

यस्अलुहू मन् फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि, कुल्-ल यौमिन् हु-व फ़ी शअ्निन् (29)

फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (30)

स-नफ़्रुग़ु लकुम् अय्युहस्स-क़लान (31)

फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (32)

या मअ्-शरल्-जिन्नि वल्इन्सि इनिस्त-तअ्तुम् अन् तन्फ़ुज़ू मिन् अक़्तारिस्समावाति वल्अर्ज़ि फ़न्फ़ुज़ू, ला तन्फ़ुज़ू-न इल्ला बिसुल्तान (33)

फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (34)

युर्-सलु अ़लैकुमा शुवाज़ुम्-मिन्-नारिंव्-व नुहासुन् फ़ला तन्तसिरान (35)

फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (36)

फ़-इज़न् शक़्क़तिरसमा-उ फ़-कानत् वर्-दतन् कद्दिहान (37)

फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (38)

फ़यौमइज़िल्-ला युस्अलु अ़न् ज़म्बिही इन्सुंव्-व ला जान्न (39)

फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (40)

युअ्-रफ़ुल्-मुज्रिमू-न बिसीमाहुम् फ़युअ्-ख़ज़ु बिन्नवासी वल्-अक़्दाम (41)

फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (42)

فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٢٣
وَلَهُ الْجَوَارِ الْمُنْشَئٰتُ فِی الْبَحْرِ كَالْاَعْلَامِ ۝٢٤
ع فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٢٥
كُلُّ مَنْ عَلَيْهَا فَانٍ ۝٢٦
وَّيَبْقٰى وَجْهُ رَبِّكَ ذُو الْجَلٰلِ وَالْاِكْرَامِ ۝٢٧
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٢٨
يَسْـَٔلُهٗ مَنْ فِی السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
كُلَّ يَوْمٍ هُوَ فِیْ شَاْنٍ ۝٢٩
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٠
سَنَفْرُغُ لَكُمْ اَيُّهَ الثَّقَلٰنِ ۝٣١
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٢
يٰمَعْشَرَ الْجِنِّ وَالْاِنْسِ اِنِ اسْتَطَعْتُمْ
اَنْ تَنْفُذُوْا مِنْ اَقْطَارِ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ
فَانْفُذُوْا لَا تَنْفُذُوْنَ اِلَّا بِسُلْطٰنٍ ۝٣٣
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٤
يُرْسَلُ عَلَيْكُمَا شُوَاظٌ مِّنْ نَّارٍ
وَّنُحَاسٌ فَلَا تَنْتَصِرٰنِ ۝٣٥
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٦
فَاِذَا انْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ وَرْدَةً
كَالدِّهَانِ ۝٣٧
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٣٨
فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُسْـَٔلُ عَنْ ذَنْۢبِهٖٓ اِنْسٌ
وَّلَا جَآنٌّ ۝٣٩
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٠
يُعْرَفُ الْمُجْرِمُوْنَ بِسِيْمٰهُمْ فَيُؤْخَذُ
بِالنَّوَاصِیْ وَالْاَقْدَامِ ۝٤١
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ۝٤٢

43. यह वह जहन्नम है, जिसे मुजरिम झूट क़रार देते रहे हैं।

44. वह उसके दरमियान और खौलते हुए पानी के दरमियान गर्दिश कर रहे होंगे।

45. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन कुदरतों को झुटलाओगे?

46. मगर जो अपने रब के हुज़ूर खड़े होने का ख़ौफ़ रखता होगा, उसके लिए दो बाग़ हैं।

47. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे?

48. बहुत ज़्यादा डालियोंवाले।

49. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन इनायतों को झुटलाओगे?

50. उन दोनों (बाग़ों) में दो चश्मे रवां।

51. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे?

52. उन दोनों बाग़ों में हर लज़ीज़ फल की दो-दो क़िस्में —

53. आख़िर तुम दोनों अपने रब के किन-किन करिश्मों को झुटलाओगे?

54. वो ऐसे फ़र्शों पर टेक लगाए बैठे होंगे जिनके अस्तर दबीज़ रेशम के होंगे, और दोनों बाग़ों के फल झुके हुए नज़दीक ही होंगे।

55. आख़िर तुम दोनों अपने रब के किन-किन करिश्मों को झुटलाओगे?

56. उन (नेमतों) में निगाहें नीची रखने वालियां होंगी, जिन्हें उनसे पहले न किसी इनसान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने।

57. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे?

58. गोया वो याक़ूत और मरजान हैं।

59. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन नवाज़िशों को झुटलाओगे?

60. अच्छाई का बदला अच्छाई के सिवा और क्या हो सकता है?

61. आख़िर तुम दोनों अपने रब के किन-किन इनामात को झुटलाओगे?

62. उन दोनों के अलावा भी दो बाग़ हैं।

63. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों की तकज़ीब करोगे?

64. निहायत सब्ज़, स्याही माइल।

65. आख़िर तुम दोनों अपने रब के किन-किन करिश्मों को झुटलाओगे?

66. उन दोनों बाग़ों में दो चश्मे जोश मारते हुए।

67. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन करिश्मों को झुटलाओगे?

हाज़िही जहन्नमुल्लती युकज़्ज़िबु बिहल्-मुज्रिमून ● (43)
यतूफ़ू-न बैनहा व बै-न हमीमिन् आन (44)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (45) ●
व लि-मन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही जन्नतान (46)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (47)
ज़वाता अफ़्नान (48)
फ़बिअय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (49)
फ़ीहिमा ऐनानि तज्रियानि (50)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (51)
फ़ीहिमा मिन् कुल्लि फ़ाकि-हतिन् ज़ौजान (52)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (53)
मुत्तकिई-न अ़ला फ़ुरुशिम्-बता-इनुहा मिन् इस्तब्-रक़िन्, व जनल्-जन्नतैनि दान (54)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (55)
फ़ीहिन्-न क़ासिरातुत्तर्फ़ि लम् यत्मिस्हुन्-न इन्सुन् क़ब्लहुम् व ला जान्न (56)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (57)
क-अन्नन-हुन्नल्-याक़ूतु वल्-मर्जान (58)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (59)
हल् जज़ाउल्-इह्सानि इल्लल्-इह्सान (60)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (61)
व मिन् दूनिहिमा जन्नतान (62)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (63)
मुद्हाम्मतानि (64)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (65)
फ़ीहिमा ऐनानि नज़्ज़ा-ख़तानि (66)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (67)

هٰذِهٖ جَهَنَّمُ الَّتِيْ يُكَذِّبُ بِهَا الْمُجْرِمُوْنَ ﴿٤٣﴾
يَطُوْفُوْنَ بَيْنَهَا وَبَيْنَ حَمِيْمٍ اٰنٍ ﴿٤٤﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٥﴾
وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ ﴿٤٦﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٧﴾
ذَوَاتَآ اَفْنَانٍ ﴿٤٨﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٤٩﴾
فِيْهِمَا عَيْنٰنِ تَجْرِيٰنِ ﴿٥٠﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥١﴾
فِيْهِمَا مِنْ كُلِّ فَاكِهَةٍ زَوْجٰنِ ﴿٥٢﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٣﴾
مُتَّكِـِٕيْنَ عَلٰى فُرُشٍۢ بَطَآئِنُهَا مِنْ
اِسْتَبْرَقٍ ۭ وَجَنَى الْجَنَّتَيْنِ دَانٍ ﴿٥٤﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٥﴾
فِيْهِنَّ قٰصِرٰتُ الطَّرْفِ ۙ لَمْ يَطْمِثْهُنَّ
اِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ﴿٥٦﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٧﴾
كَاَنَّهُنَّ الْيَاقُوْتُ وَالْمَرْجَانُ ﴿٥٨﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٥٩﴾
هَلْ جَزَآءُ الْاِحْسَانِ اِلَّا الْاِحْسَانُ ﴿٦٠﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦١﴾
وَمِنْ دُوْنِهِمَا جَنَّتٰنِ ﴿٦٢﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٣﴾
مُدْهَآمَّتٰنِ ﴿٦٤﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٥﴾
فِيْهِمَا عَيْنٰنِ نَضَّاخَتٰنِ ﴿٦٦﴾
فَبِاَيِّ اٰلَآءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ﴿٦٧﴾

68. उनमें लज़ीज़ फल, और खजूर और अनार होंगे।

69. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन नेमतों को झुटलाओगे?

70. उनमें भली और हसीन औरतें होंगी।

71. आख़िर तुम दोनों अपने रब के किन-किन इनामात को झुटलाओगे?

72. हूरें ख़ेमों में रहने वाली।

73. आख़िर तुम दोनों अपने रब के किन-किन करिश्मों को झुटलाओगे?

74. जिन्हें उनसे पहले न किसी इनसान ने हाथ लगाया होगा और न किसी जिन्न ने।

75. आख़िर तुम दोनों अपने रब की किन-किन इनायात की तकज़ीब करोगे?

76. वो टेक लगाए हुए होंगे सब्ज़ रेशमी गद्दों और नफ़ीस व नादिर क़ालिनों पर।

77. आख़िर तुम दोनों अपने रब के किन-किन इनामात को झुटलाओगे

78. बड़ा ही बाबरकत है नाम तुम्हारे रब्ब-ए-जलील व करीम का।

सूरह अल-वाक़िआ मक्की

(आयतें 96, रुकूआत 3)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. जब वाक़े होने वाली वाक़े हो जाएगी।

2. उसके वुक़ूअ में कुछ झूट नहीं।

3. पस्त करने वाली होगी, बुलन्द करनेवाली भी।

4. जब ज़मीन थरथराकर लरज़ उठेगी।

5-6. और पहाड़ टूटकर रेज़ा-रेज़ा हो जाएंगे कि वो परागन्दा गुबार होकर रहेंगे,

7. और तुम तीन क़िस्म के हो जाओगे।

8. तो ख़ुशनसीब लोग, कैसे होंगे ख़ुशनसीब लोग!

9. और बदबख़्त लोग, कैसे होंगे बदबख़्त लोग!

10. और आगे बढ़ जानेवाले तो आगे बढ़ जानेवाले ही हैं।

11. वही मुक़र्रब हैं,

12. नेमत भरी जन्नतों में होंगे,

13-14. अगलों में से तो बहुत से

फ़ीहिमा फ़ाकि-हतुंव्-व नख़्लुंव्-व रुम्मान (68)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (69)
फ़ीहिन्-न ख़ैरातुन् हिसान (70)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (71)
हूरुम्-मक़्सूरातुन् फ़िल-ख़ियाम (72)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (73)
लम् यत्मिस्हुन्-न इन्सुन् क़ब्लहुम् व ला जान्न (74)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (75)
मुत्तकिई-न अ़ला रफ़रफ़िन् ख़ुज़्रिंव्-व अ़ब्क़रिय्यिन् हिसान (76)
फ़बि-अय्यि आला-इ रब्बिकुमा तुकज़्ज़िबान (77)
तबा-रकस्मु रब्बि-क ज़िल्-जलालि वल्-इक्राम (78) ●

56 सूरतुल्–वाक़ि–अ़ति
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1768 अक्षर, 384 शब्द, 96 आयतें और 3 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इज़ा व-क़-अ़तिल्-वाक़ि-अ़तु (1)
लै-स लिवक़्अ़तिहा काज़िबह् ●(2)
ख़ाफ़ि-ज़तु र्-राफ़ि-अ़ः (3)
इज़ा रुज्जतिल्-अर्ज़ु रज्जंव्- (4)
-व बुस्सतिल्-जिबालु बस्सा (5)
फ़-कानत् हबा-अम् मुम्-बस्संव- (6)
-व कुन्तुम् अज़्वाजन् सलासः (7)
फ़-अस्हाबुल्-मैमनति मा अस्हाबुल्-मै-मनः (8)
व अस्हाबुल्-मश्-अ-मति मा अस्हाबुल्-मश्-अमः (9)
वस्साबिक़ूनस्-साबिक़ून (10)
उलाइ-कल्-मुक़र्रबून (11)
फ़ी जन्नातिन्-नअ़ीम (12)
सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन (13)

فِيهِمَا فَاكِهَةٌ وَّنَخْلٌ وَّرُمَّانٌ ٦٨
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ٦٩
فِيهِنَّ خَيْرٰتٌ حِسَانٌ ٧٠
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ٧١
حُوْرٌ مَّقْصُوْرٰتٌ فِي الْخِيَامِ ٧٢
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ٧٣
لَمْ يَطْمِثْهُنَّ إِنْسٌ قَبْلَهُمْ وَلَا جَآنٌّ ٧٤
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ٧٥
مُتَّكِـِٔيْنَ عَلٰى رَفْرَفٍ خُضْرٍ وَّعَبْقَرِيٍّ حِسَانٍ ٧٦
فَبِأَيِّ آلَاءِ رَبِّكُمَا تُكَذِّبٰنِ ٧٧
تَبٰرَكَ اسْمُ رَبِّكَ ذِي الْجَلٰلِ وَالْإِكْرَامِ ٧٨

سُوْرَةُ الْوَاقِعَةِ مَكِّيَّةٌ، اٰيَاتُهَا ٩٦، رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

إِذَا وَقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ١
لَيْسَ لِوَقْعَتِهَا كَاذِبَةٌ ٢
خَافِضَةٌ رَّافِعَةٌ ٣
إِذَا رُجَّتِ الْأَرْضُ رَجًّا ٤
وَّبُسَّتِ الْجِبَالُ بَسًّا ٥
فَكَانَتْ هَبَآءً مُّنْبَثًّا ٦
وَّكُنْتُمْ أَزْوَاجًا ثَلٰثَةً ٧
فَأَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ مَا أَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ٨
وَأَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ مَا أَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ٩
وَالسّٰبِقُوْنَ السّٰبِقُوْنَ ١٠
أُولٰٓئِكَ الْمُقَرَّبُوْنَ ١١
فِي جَنّٰتِ النَّعِيْمِ ١٢
ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِيْنَ ١٣

होंगे मगर पिछलों में से कम ही।

15. मुरस्सअ (जड़ाऊ) तख़्तों पर,

16. उनपर तकिया लगाए आमने-सामने बैठे होंगे,

17-19. उनके गिर्द लड़के जो हमेशा लड़के ही रहेंगे प्याले, और आफ़ताबे, और शराब-ए-ख़ालिस का जाम लिए फिर रहे होंगे — जिससे न तो उनको दर्द सर होगा, और न वो फ़ुतूर-ए-अक़्ल में मुबतला होंगे।

20. — और लज़ीज़ फल जो वो पसन्द करें,

21. और परिन्द का गोश्त जो वो चाहें।

22-23. और कुशादा चश्म हूरें, गोया छुपाए हुए मोती हों,

24. यह सब उसकी जज़ा (बदला) के तौर पर उन्हें हासिल होगा जो कुछ वो करते रहे।

25-26. वो उसमें न कोई बेहूदा कलाम सुनेंगे, और न गुनाह की बात, सिवाए इस बात के कि "सलाम हो, सलाम हो"।

27. रहे ख़ुशनसीब लोग, तो ख़ुशनसीबों का क्या कहना!

28. वो वहां होंगे जहां बेख़ार के बेर होंगे,

29. और तह-ब-तह चढ़े केले,

30. दूर तक फैली हुई छांव,

31. बहता हुआ पानी,

32-33. बहुत से लज़ीज़ फल जिनका न सिलसिला टूटने वाला होगा, और न उनपर कोई रोक-टोक होगी,

34. बुलन्द मरतबत बीवियां होंगी।

35. यक़ीनन उन्हें हमने एक ख़ास उठान पर उठाया,

36. और हमने उन्हें कुंवारियां बनाया,

37. इश्क़ व मुहब्बत वाली दिलरुबा, उम्र में मिलती-जुलती,

38. ख़ुशनसीब लोगों के लिए।

39-40. वो अगलों में से भी ज़्यादा होंगे और पिछलों में से भी ज़्यादा होंगे।

व क़लीलुम् मिनल-आख़िरीन (14)
अला सुरुरिम्-मौज़ूनतिम्- (15)
-मुत्तकिई-न अलैहा मु-तक़ाबिलीन (16)
यतूफ़ु अलैहिम् विल्दानुम्-मु-ख़ल्लदून (17)
बिअक्वाबिंव्-व अबारी-क़ व कअ्सिम्-मिम्-मअीन (18)
ला युसद्-दअू-न अन्हा व ला युन्ज़िफ़ून (19)
व फ़ाकि-हतिम्-मिम्मा य-तख़य्यरून (20)
व लह्मि तैरिम्-मिम्मा यश्तहून (21)
व हूरुन् अीन (22)
क-अम्सालिल्-लुअ्लुइल्-मक्नून (23)
जज़ा-अम् बिमा कानू यअ्मलून (24)
ला यस्मअू-न फ़ीहा लग्वंव्-व ला तअ्सीमा (25)
इल्ला क़ीलन् सलामन् सलामा (26)
व अस्हाबुल्-यमीनि मा अस्हाबुल्-यमीन (27)
फ़ी सिद्रिम्-मख़्ज़ूदिंव्- (28)
-व तल्हिम्-मन्ज़ूदिंव्- (29)
-व ज़िल्लिम् मम्दूदिंव्- (30)
-व माइम्-मस्कूब (31)
व फ़ाकि-हतिन् कसी-रतिल्- (32)
-ला मक़्तू-अतिंव्-व ला मम्नू-अतिंव्- (33)
-व फ़ुरुशिम्-मर्फ़ूअः (34)
इन्ना अन्शअ्नाहुन्-न इन्शा-अन् (35)
फ़-जअल्नाहुन्-न अब्कारा (36)
अुरुबन् अत्राबल्- (37)
-लिअस्हाबिल्-यमीन (38) ●
सुल्लतुम्-मिनल्-अव्वलीन (39)
व सुल्लतुम्-मिनल्-आख़िरीन (40)

وَقَلِيلٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝١٤
عَلَىٰ سُرُرٍ مَّوْضُونَةٍ ۝١٥
مُّتَّكِئِينَ عَلَيْهَا مُتَقَابِلِينَ ۝١٦
يَطُوفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُونَ ۝١٧
بِأَكْوَابٍ وَأَبَارِيقَ ۙ وَكَأْسٍ مِّن مَّعِينٍ ۝١٨
لَّا يُصَدَّعُونَ عَنْهَا وَلَا يُنزِفُونَ ۝١٩
وَفَاكِهَةٍ مِّمَّا يَتَخَيَّرُونَ ۝٢٠
وَلَحْمِ طَيْرٍ مِّمَّا يَشْتَهُونَ ۝٢١
وَحُورٌ عِينٌ ۝٢٢
كَأَمْثَالِ اللُّؤْلُؤِ الْمَكْنُونِ ۝٢٣
جَزَاءً بِمَا كَانُوا يَعْمَلُونَ ۝٢٤
لَا يَسْمَعُونَ فِيهَا لَغْوًا وَلَا تَأْثِيمًا ۝٢٥
إِلَّا قِيلًا سَلَامًا سَلَامًا ۝٢٦
وَأَصْحَابُ الْيَمِينِ مَا أَصْحَابُ الْيَمِينِ ۝٢٧
فِي سِدْرٍ مَّخْضُودٍ ۝٢٨
وَطَلْحٍ مَّنضُودٍ ۝٢٩
وَظِلٍّ مَّمْدُودٍ ۝٣٠
وَمَاءٍ مَّسْكُوبٍ ۝٣١
وَفَاكِهَةٍ كَثِيرَةٍ ۝٣٢
لَّا مَقْطُوعَةٍ وَلَا مَمْنُوعَةٍ ۝٣٣
وَفُرُشٍ مَّرْفُوعَةٍ ۝٣٤
إِنَّا أَنشَأْنَاهُنَّ إِنشَاءً ۝٣٥
فَجَعَلْنَاهُنَّ أَبْكَارًا ۝٣٦
عُرُبًا أَتْرَابًا ۝٣٧
لِّأَصْحَابِ الْيَمِينِ ۝٣٨ ع
ثُلَّةٌ مِّنَ الْأَوَّلِينَ ۝٣٩
وَثُلَّةٌ مِّنَ الْآخِرِينَ ۝٤٠

41. रहे बदनसीब लोग, तो कैसे होंगे बदनसीब लोग!

42. गर्म हवा और खौलते हुए पानी में होंगे।

43-44. और काले धुंए के साए में जो न ठंडा होगा, और न नाफ़े और अच्छा लगने वाला;

45. वो इससे पहले ख़ुशहाल थे,

46. और गुनाह-ए-अज़ीम पर इसरार करते थे,

47. कहते थे, "क्या जब हम मर जाएंगे और ख़ाक और हड्डियां होकर रह जाएंगे, तो क्या हम वाक़ई उठाए जाएंगे?

48. और क्या हमारे अगले बाप-दादा भी?"

49-50. कह दोः "यक़ीनन अगले भी, और पिछले भी एक मुक़र्रर वक़्त तक जिसका दिन मालूम व मुक़र्रर है इकट्ठे कर दिए जाएंगे।

51. फिर तुम ऐ गुमराहो, झुटलाने वालो,

52. ज़क़्क़ूम के दरख़्त में से खाओगे,

53. और उसी से पेट भरोगे।

54. और उसके ऊपर से खौलता हुआ पानी पियोगे।

55. और तौन्स (बहुत शिद्दत की प्यास) लगे ऊंट की तरह पियोगे!"

56. यह बदला दिए जाने के दिन उनकी पहली ज़ियाफ़त होगी।

57. हमने तुम्हें पैदा किया; तो तुम तसदीक़ क्यों नहीं करते?

58. तो क्या तुमने ग़ौर किया जो चीज़ तुम टपकाते हो?

59. क्या तुम उसकी सूरतगरी करते हो, या हम हैं सूरतगरी करने वाले?

60-61. हमने तुम्हारे दरमियान मौत मुक़र्रर की है; और हम इससे आजिज़ व दरमान्दा नहीं हैं कि हम तुम्हारे जैसों को बदल दें, और हम तुम्हें ऐसी हालत में उठा खड़ा करें जिसको तुम जानते नहीं।

62. तो तुम पहली पैदाइश को जान चुके हो; फिर तुम्हें होश क्यों नहीं होता?

63. फिर क्या तुमने देखा जो तुम बोते हो?

व अस्हाबुश्-शिमालि मा अस्हाबुश्-शिमाल (41)
फ़ी समूमिंव्-व हमीमिंव्- (42)
-व ज़िल्लिम्-मिंय्यह्मूमिल्- (43)
-ला बारिदिंव्-व ला करीम (44)
इन्नहुम् कानू क़ब्-ल ज़ालि-क मुत्-रफ़ीन (45)
व कानू युसिर्रू-न अलल्-हिन्सिल्-अज़ीम (46)
व कानू यक़ूलू-न अ-इज़ा मित्ना व कुन्ना तुराबंव्-व अिज़ामन् अ-इन्ना ल-मब्अूसून (47)
अ-व आबाउनल्-अव्वलून (48)
क़ुल इन्नल्-अव्वली-न वल्-आख़िरीन (49)
ल-मज्मूअू-न इला मीक़ाति यौमिम्-मअ्लूम (50)
सुम्-म इन्नकुम् अय्युहज़्ज़ाल्लूनल्-मुकज़्ज़िबून (51)
ल-आकिलू-न मिन् श-जरिम्-मिन् ज़क़्क़ूम (52)
फ़मालिऊ-न मिन्हल्-बुतून (53)
फ़शारिबू-न अलैहि मिनल्-हमीम (54)
फ़शारिबू-न शुर्बल्-हीम (55)
हाज़ा नुज़ुलुहुम् यौमद्दीन (56)
नह्नु ख़लक़्नाकुम् फ़लौ ला तुसद्दिक़ून (57)
अ-फ़-रऐतुम्-मा तुम्नून (58)
अ-अन्तुम् तख़्लुक़ूनहू अम् नह्नुल्-ख़ालिक़ून (59)
नह्नु क़द्दर्ना बैनकुमुल्-मौ-त व मा नह्नु बिमस्बूक़ीन (60)
अ़ला अन्-नुबद्दि-ल अम्सा-लकुम् व नुन्शि-अकुम् फ़ी मा ला तअ्लमून (61)
व ल-क़द् अ़लिम्तुमुन्-नश्अ-तल्-ऊला फ़लौ ला तज़क्करून (62)
अ-फ़-रऐतुम्-मा तह्रुसून (63)

وَأَصْحَٰبُ ٱلشِّمَالِ مَآ أَصْحَٰبُ ٱلشِّمَالِ ۝٤١
فِى سَمُومٍ وَحَمِيمٍ ۝٤٢
وَظِلٍّ مِّن يَحْمُومٍ ۝٤٣
لَّا بَارِدٍ وَلَا كَرِيمٍ ۝٤٤
إِنَّهُمْ كَانُوا۟ قَبْلَ ذَٰلِكَ مُتْرَفِينَ ۝٤٥
وَكَانُوا۟ يُصِرُّونَ عَلَى ٱلْحِنثِ ٱلْعَظِيمِ ۝٤٦
وَكَانُوا۟ يَقُولُونَ أَئِذَا مِتْنَا وَكُنَّا
تُرَابًا وَعِظَٰمًا أَءِنَّا لَمَبْعُوثُونَ ۝٤٧
أَوَءَابَآؤُنَا ٱلْأَوَّلُونَ ۝٤٨
قُلْ إِنَّ ٱلْأَوَّلِينَ وَٱلْءَاخِرِينَ ۝٤٩
لَمَجْمُوعُونَ إِلَىٰ مِيقَٰتِ يَوْمٍ مَّعْلُومٍ ۝٥٠
ثُمَّ إِنَّكُمْ أَيُّهَا ٱلضَّآلُّونَ ٱلْمُكَذِّبُونَ ۝٥١
لَءَاكِلُونَ مِن شَجَرٍ مِّن زَقُّومٍ ۝٥٢
فَمَالِـُٔونَ مِنْهَا ٱلْبُطُونَ ۝٥٣
فَشَٰرِبُونَ عَلَيْهِ مِنَ ٱلْحَمِيمِ ۝٥٤
فَشَٰرِبُونَ شُرْبَ ٱلْهِيمِ ۝٥٥
هَٰذَا نُزُلُهُمْ يَوْمَ ٱلدِّينِ ۝٥٦
نَحْنُ خَلَقْنَٰكُمْ فَلَوْلَا تُصَدِّقُونَ ۝٥٧
أَفَرَءَيْتُم مَّا تُمْنُونَ ۝٥٨
ءَأَنتُمْ تَخْلُقُونَهُۥٓ أَمْ نَحْنُ ٱلْخَٰلِقُونَ ۝٥٩
نَحْنُ قَدَّرْنَا بَيْنَكُمُ ٱلْمَوْتَ وَمَا نَحْنُ
بِمَسْبُوقِينَ ۝٦٠
عَلَىٰٓ أَن نُّبَدِّلَ أَمْثَٰلَكُمْ وَنُنشِئَكُمْ
فِى مَا لَا تَعْلَمُونَ ۝٦١
وَلَقَدْ عَلِمْتُمُ ٱلنَّشْأَةَ ٱلْأُولَىٰ فَلَوْلَا
تَذَكَّرُونَ ۝٦٢
أَفَرَءَيْتُم مَّا تَحْرُثُونَ ۝٦٣

64. क्या उसे तुम उगाते हो, या हम उसे उगाते हैं।

65-67. अगर हम चाहें तो उसे चूरा-चूरा कर दें, फिर तुम बातें बनाते रह जाओ कि हम पर उलटी चट्टी पड़ गई; बल्कि हम महरूम होकर रह गए!

68. फिर क्या तुमने उस पानी को देखा जिसे तुम पीते हो?

69. क्या उसे बादलों से तुमने उतारा, या उतारने वाले हम हैं?

70. अगर हम चाहें तो उसे सख़्त खारी बनाकर रख दें; फिर तुम शुक्रगुज़ार क्यों नहीं होते?

71. फिर क्या तुमने उस आग को देखा जिसे तुम सुलगाते हो?

72. क्या तुमने उसके दरख़्त को पैदा किया है, या पैदा करने वाले हम हैं?

73. हमने उसे एक याददिहानी, और सेहरा के मुसाफ़िरों और ज़रूरत मन्दों के लिए फ़ायदाबख़्श बनाया।

74. पस तुम अपने अज़ीम रब के नाम की तसबीह करो।

75-77. पस-सुनो! मैं क़सम खाता हूं सितारों की मंज़िलों की — और यह बहुत बड़ी शहादत है, अगर तुम जान लो — यक़ीनन यह क़ुरआन करीम है।

78. एक महफ़ूज़ किताब में (लिखा हुआ) है।

79. उसे सिर्फ़ पाकीज़ा लोग ही हाथ लगाते हैं।

80. यह उतरा हुआ है सारे जहान के रब की तरफ़ से है।

81. फिर क्या तुम उस कलाम के साथ मुदाहनत (इन्कार, झूट) से काम लेते हो,

82. और तुम अपना रिज़्क़ इसको बना रहे हो कि झुटलाते हो।

83-87. फिर क्यों नहीं ऐसा होता, जब रूह हलक़ तक पहुंचती है और तुम उस वक़्त देख रहे होते हो — और तुम्हारी बनिसबत हम उससे ज़्यादा क़रीब होते हैं, मगर तुम देखते नहीं — फिर क्यों नहीं ऐसा होता कि अगर तुम महकूम नहीं हो तो उसे लौटा लो, अगर तुम सच्चे हो।

88. फिर अगर वह मुक़र्रबीन में से है,

अ-अन्तुम् तज़्-रअूनहू अम् नह्नुज़्-ज़ारिअून (64)

लौ नशा-उ ल-जअ़ल्नाहु हुतामन् फ़ज़ल्तुम् तफ़क्कहून (65)

इन्ना ल-मुग़्रमून (66)

बल् नह्नु महरूमून (67)

अ-फ़-रऐतुमुल् मा-अल्लज़ी तश्रबून (68)

अ-अन्तुम् अन्ज़ल्तुमूहु मिनल्-मुज़्नि अम् नह्नुल्-मुन्ज़िलून (69)

लौ नशा-उ जअ़ल्नाहु उजाजन् फ़लौ ला तश्कुरून (70)

अ-फ़-रऐतुमुन्-नारल्लती तूरून (71)

अ-अन्तुम् अन्शअ्तुम् श-ज-र-तहा अम् नह्नुल्-मुन्शिऊन (72)

नह्नु जअ़ल्नाहा तज़्कि-रतंव्-व मताअ़ल्-लिल्मुक़्वीन (73)

फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-अ़ज़ीम ● (74) ●

फ़ला उक़्सिमु बि-मवाक़िअिन्-नुजूम (75)

व इन्नहू ल-क़-समुल्-लौ तअ्लमू-न अ़ज़ीम (76)

इन्नहू ल-क़ुर्आनुन् करीम (77)

फ़ी किताबिम् मक्नून (78)

ला य-मस्सुहू इल्लल्-मुतह्हरून (79)

तन्ज़ीलुम् मिर्रब्बिल्-आ़लमीन (80)

अ-फ़बिहाज़ल्-हदीसि अन्तुम् मुद्हिनून (81)

व तज्अ़लू-न रिज़्-क़कुम् अन्नकुम् तुकज़्ज़िबून (82)

फ़लौ ला इज़ा ब-ल-ग़तिल्-हुल्क़ूम (83)

व अन्तुम् ही-न-इज़िन् तन्ज़ुरून (84)

व नह्नु अक़्रबु इलैहि मिन्कुम् व लाकिल्-ला तुब्सिरून (85)

फ़लौ-ला इन् कुन्तुम् ग़ै-र मदीनीन (86)

तर्जिअूनहा इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (87)

फ़-अम्मा इन् का-न मिनल्-मुक़र्रबीन (88)

ءَاَنْتُمْ تَزْرَعُوْنَهٗۤ اَمْ نَحْنُ الزّٰرِعُوْنَ ۝٦٤
لَوْ نَشَآءُ لَجَعَلْنٰهُ حُطَامًا فَظَلْتُمْ تَفَكَّهُوْنَ ۝٦٥
اِنَّا لَمُغْرَمُوْنَ ۝٦٦
بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ ۝٦٧
اَفَرَءَيْتُمُ الْمَآءَ الَّذِيْ تَشْرَبُوْنَ ۝٦٨
ءَاَنْتُمْ اَنْزَلْتُمُوْهُ مِنَ الْمُزْنِ اَمْ نَحْنُ
الْمُنْزِلُوْنَ ۝٦٩
لَوْ نَشَآءُ جَعَلْنٰهُ اُجَاجًا فَلَوْلَا تَشْكُرُوْنَ ۝٧٠
اَفَرَءَيْتُمُ النَّارَ الَّتِيْ تُوْرُوْنَ ۝٧١
ءَاَنْتُمْ اَنْشَاْتُمْ شَجَرَتَهَاۤ اَمْ نَحْنُ الْمُنْشِئُوْنَ ۝٧٢
نَحْنُ جَعَلْنٰهَا تَذْكِرَةً وَّمَتَاعًا لِّلْمُقْوِيْنَ ۝٧٣
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝٧٤
فَلَاۤ اُقْسِمُ بِمَوٰقِعِ النُّجُوْمِ ۝٧٥
وَاِنَّهٗ لَقَسَمٌ لَّوْ تَعْلَمُوْنَ عَظِيْمٌ ۝٧٦
اِنَّهٗ لَقُرْاٰنٌ كَرِيْمٌ ۝٧٧
فِيْ كِتٰبٍ مَّكْنُوْنٍ ۝٧٨
لَّا يَمَسُّهٗۤ اِلَّا الْمُطَهَّرُوْنَ ۝٧٩
تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ ۝٨٠
اَفَبِهٰذَا الْحَدِيْثِ اَنْتُمْ مُّدْهِنُوْنَ ۝٨١
وَتَجْعَلُوْنَ رِزْقَكُمْ اَنَّكُمْ تُكَذِّبُوْنَ ۝٨٢
فَلَوْلَاۤ اِذَا بَلَغَتِ الْحُلْقُوْمَ ۝٨٣
وَاَنْتُمْ حِيْنَئِذٍ تَنْظُرُوْنَ ۝٨٤
وَنَحْنُ اَقْرَبُ اِلَيْهِ مِنْكُمْ وَلٰكِنْ
لَّا تُبْصِرُوْنَ ۝٨٥
فَلَوْلَاۤ اِنْ كُنْتُمْ غَيْرَ مَدِيْنِيْنَ ۝٨٦
تَرْجِعُوْنَهَاۤ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ۝٨٧
فَاَمَّاۤ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُقَرَّبِيْنَ ۝٨٨

89. तो (उसके लिए) राहत, सुरूर, खुशबू है और नेमत का बाग़ है;

90-91. और अगर वह अहले सआदत में से है तो "सलाम है तुम्हें अहले सआदत!"

92. लेकिन अगर वह झुटलाने वालों, गुमराहों में से है,

93. तो पहली ज़ियाफ़त खौलता हुआ पानी होगा।

94. और भड़कती हुई आग में झोंका जाना।

95. बेशक यही यक़ीनी हक़ है।

96. पस तुम अपने अज़ीम रब के नाम की तसबीह करो।

सूरह अल-हदीद मदनी

(आयतें 29, रुकूआत 4)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अल्लाह की तसबीह करती है हर वह चीज़ जो आसमानों और ज़मीन में है; वही ज़बरदस्त, निहायत हिकमतवाला है,

2. आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है; वही ज़िन्दा करता, और मौत देता है, और उसे हर चीज़ पर कुदरत हासिल है।

3. वही अव्वल है और वही आख़िर भी, और ज़ाहिर भी और बातिन भी; और वह हर चीज़ को जानता है।

4. वही है जिसने आसमानों और ज़मीन को छः दिनों में पैदा किया फिर अर्श पर मुतमक्किन हुआ। वह जानता है जो कुछ ज़मीन में दाख़िल होता है, और जो कुछ उससे निकलता है, और जो कुछ आसमान से उतरता है, और जो कुछ उसमें चढ़ता है। और तुम जहां कहीं भी हो वह तुम्हारे साथ है; और अल्लाह देखता है जो कुछ तुम करते हो।

5. आसमानों और ज़मीन की बादशाही उसी की है, और अल्लाह ही की तरफ़ सारे मुआमलात पलटते हैं।

6. वह रात को दिन में दाख़िल करता है और दिन को रात में दाख़िल करता है, और वह सीनों तक की बात को जानता है।

7. ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर, और उसमें से ख़र्च करो जिस पर तुम्हें उसने ख़लीफ़ा (नायब) बनाया है। तो तुममें से जो लोग

फ़-रौहुंव्-व रैहानुंव्-व जन्नतु नओम (89)

व अम्मा इन् का-न मिन् अस्हाबिल्-यमीन (90)

फ़-सलामुल्-ल-क मिन् अस्हाबिल्-यमीन (91)

व अम्मा इन् का-न मिनल् मुकज़्ज़िबीनज़्-ज़ाल्लीन (92)

फ़-नुज़ुलुम्-मिन् हमीमिंव्- (93) -व तस्लि-यतु जहीम (94)

इन्-न हाज़ा लहु-व हक़्क़ुल्-यक़ीन (95)

फ़-सब्बिह् बिस्मि रब्बिकल्-अज़ीम (96) ●

57 सूरतुल्-हदीदि
(मदनी) इस सूरः में अरबी के 2599 अक्षर, 586 शब्द, 29 आयतें और 4 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम (1)

लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि युह्यी व युमीतु व हु-व अला कुल्लि शैइन् क़दीर (2)

हुवल्-अव्वलु वल्-आख़िरु वज़्ज़ाहिरु वल्-बातिनु व हु-व बिकुल्लि शैइन् अलीम (3)

हुवल्लज़ी ख़-लक़स्समावाति वल्अर्-ज़ फ़ी सित्तति अय्यामिन् सुम्मस्तवा अलल्-अर्शि, यअ्लमु मा यलिजु फ़िल्अर्ज़ि व मा यख़्रुजु मिन्हा व मा यन्ज़िलु मिनस्समा-इ व मा यअ्रुजु फ़ीहा, व हु-व म-अकुम् ऐ-नमा कुन्तुम्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर (4)

लहू मुल्कुस्समावाति वल्अर्ज़ि, व इलल्लाहि तुर्जअुल्-उमूर (5)

यूलिजुल्लै-ल फ़िन्नहारि व यूलिजुन् नहा-र फ़िल्लैलि, व हु-व अलीमुम् बिज़ातिस्-सुदूर (6)

आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही व अन्फ़िक़ू मिम्मा ज-अ-लकुम्

فَرَوْحٌ وَّرَيْحَانٌ ۙ وَّجَنَّتُ نَعِيْمٍ (٨٩)
وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ۙ (٩٠)
فَسَلٰمٌ لَّكَ مِنْ اَصْحٰبِ الْيَمِيْنِ ؕ (٩١)
وَاَمَّآ اِنْ كَانَ مِنَ الْمُكَذِّبِيْنَ الضَّآلِّيْنَ ۙ (٩٢)
فَنُزُلٌ مِّنْ حَمِيْمٍ ۙ (٩٣)
وَّتَصْلِيَةُ جَحِيْمٍ (٩٤)
اِنَّ هٰذَا لَهُوَ حَقُّ الْيَقِيْنِ ۚ (٩٥)
فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ (٩٦)

سُوْرَةُ الْحَدِيْدِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢٩ رُكُوْعَاتُهَا ٤

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ (١)
لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ يُحْيٖ
وَيُمِيْتُ ۚ وَهُوَ عَلٰى كُلِّ شَىْءٍ قَدِيْرٌ (٢)
هُوَ الْاَوَّلُ وَالْاٰخِرُ وَالظَّاهِرُ وَالْبَاطِنُ ۚ
وَهُوَ بِكُلِّ شَىْءٍ عَلِيْمٌ (٣)
هُوَ الَّذِىْ خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ
فِىْ سِتَّةِ اَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوٰى عَلَى
الْعَرْشِ ؕ يَعْلَمُ مَا يَلِجُ فِى الْاَرْضِ وَمَا
يَخْرُجُ مِنْهَا وَمَا يَنْزِلُ مِنَ السَّمَآءِ
وَمَا يَعْرُجُ فِيْهَا ؕ وَهُوَ مَعَكُمْ اَيْنَ مَا
كُنْتُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ (٤)
لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ وَاِلَى
اللّٰهِ تُرْجَعُ الْاُمُوْرُ (٥)
يُوْلِجُ الَّيْلَ فِى النَّهَارِ وَيُوْلِجُ النَّهَارَ
فِى الَّيْلِ ؕ وَهُوَ عَلِيْمٌ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ (٦)
اٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَاَنْفِقُوْا مِمَّا جَعَلَكُمْ

ईमान लाए और उन्होंने ख़र्च किया उनके लिए बड़ा अज्र है।

8. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम अल्लाह पर ईमान नही लाते? जबकि रसूल तुम्हें दावत दे रहा है कि तुम अपने रब पर ईमान लाओ और वह तुमसे मज़बूत अहद भी ले चुका है, अगर तुम मोमिन हो।

9. वही है जो अपने बन्दे पर वाज़ेह आयतें नाज़िल करता है, ताकि वह तुम्हें तारीकियों से रौशनी की तरफ़ निकाल ले आए। और हक़ीक़त यह है कि अल्लाह तुमपर बहुत ही शफ़ीक़, निहायत मेहरबान है।

10. आख़िर तुम्हें क्या हुआ है कि तुम अल्लाह की राह में ख़र्च नही करते, हालांकि आसमान ओर ज़मीन की मीरास (विरासत) अल्लाह ही के लिए है? तुम में से जिन्होंने फ़त्ह से पहले ख़र्च किया और लड़े, वो बाहम हम मरतबा नहीं हैं, वो दर्जे में उनसे बढ़कर हैं जिन्होंने बाद में ख़र्च किया और लड़े, अगरचे अल्लाह ने हर एक से बड़े अच्छे मक़ाम का वादा फ़रमाया है; अल्लाह उसकी ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते हो।

11. कौन है जो अल्लाह को क़र्ज़ दे अच्छा क़र्ज़? कि वह उसे उसके लिए कई गुना कर दे, और उसके लिए एक बाइज़्ज़त अज्र है।

12. जिस दिन तुम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को देखोगे कि उनका नूर उनके आगे-आगे दौड़ रहा है, और उनके दाएं जानिब है। "आज बशारत तुम्हारे लिए ऐसी जन्नतों की है जिनके नीचे नहरें बह रही हैं, जिनमें हमेशा रहना है, वही बड़ी कामयाबी है"।

13. जिस दिन कि कहेंगे मुनाफ़िक़ मर्द और मुनाफ़िक़ औरतें मोमिनों से, "ज़रा हमारा इंतिज़ार करो हम भी तुम्हारे नूर में से रौशन कर लें!" कहा जाएगा, "अपने पीछे लौट जाओ, फिर रौशनी तलाश करो!" इतने में उनके दरमियान दीवार हायल कर दी जाएगी, जिस में एक दरवाज़ा होगा, उनके अन्दरून का हाल यह होगा कि उसमें रहमत होगी, और उसके बाहर का यह कि उस तरफ़ से अज़ाब होगा।

14. वो उन्हें पुकार कर कहेंगे, "क्या हम तुम्हारे साथ नहीं थे"

मुस्तख़-लफ़ी-न फ़ीहि, फ़ल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् व अन्फ़क़ू लहुम् अज्रुन् कबीर (7)

व मा लकुम् ला तुअ्मिनू-न बिल्लाहि वर्रसूलु यद्‌अूकुम् लितुअ्मिनू बि-रब्बिकुम् व क़द् अ-ख़-ज़ मीसा-क़कुम् इन् कुन्तुम् मुअ्मिनीन (8)

हुवल्लज़ी युनज़्ज़िलु अला अ़ब्दिही आयातिम् बय्यिनातिल्-लियुख़्रि-जकुम् मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, व इन्नल्ला-ह बिकुम् ल-रऊफ़ुर्रहीम (9)

व मा लकुम् अल्-ला तुन्फ़िक़ू फ़ी सबीलिल्लाहि व लिल्लाहि मीरासुस्समावाति वल्‌अर्ज़ि, ला यस्तवी मिन्कुम् मन् अन्फ़-क़ मिन् क़ब्लिल्-फ़त्हि व क़ात-ल, उलाइ-क अअ्-ज़मु द-र-जतम्-मिनल्लज़ी-न अन्फ़क़ू मिम्बअ्दु व क़ातलू, व कुल्लंव्-व अ़दल्लाहुल्-हुस्ना, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर (10) ●

मन् ज़ल्लज़ी युक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन् फ़-युज़ाअि-फ़हू लहू व लहू अज्रुन् करीम (11)

यौ-म तरल्-मुअ्मिनी-न वल्मुअ्मिनाति यस्आ नूरुहुम् बै-न ऐदीहिम् व बि-ऐमानिहिम् बुश्राकुमुल्-यौ-म जन्नातुन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, ज़ालि-क हुवल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (12)

यौ-म यक़ूलुल्-मुनाफ़िक़ू-न वल्-मुनाफ़िक़ातु लिल्लज़ी-न आमनुन्ज़ुरूना नक़्तबिस् मिन्-नूरिकुम् क़ीलर्‌जिअू वरा-अकुम् फ़ल्तमिसू नूरन्, फ़ज़ुरि-ब बैनहुम् बिसूरिल्-लहू बाबुन्, बातिनुहू फ़ीहिर्रह्-मतु व ज़ाहिरुहू मिन् क़ि-बलिहिल्-अ़ज़ाबु (13)

युनादूनहुम् अलम् नकुम् म-अ़कुम्, क़ालू बला

مُسْتَخْلَفِيْنَ فِيْهِ ۭ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ
وَاَنْفَقُوْا لَهُمْ اَجْرٌ كَبِيْرٌ ۝٧
وَمَا لَكُمْ لَا تُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ ۚ وَالرَّسُوْلُ
يَدْعُوْكُمْ لِتُؤْمِنُوْا بِرَبِّكُمْ وَقَدْ اَخَذَ
مِيْثَاقَكُمْ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ ۝٨
هُوَ الَّذِيْ يُنَزِّلُ عَلٰى عَبْدِهٖٓ اٰيٰتٍۢ بَيِّنٰتٍ
لِّيُخْرِجَكُمْ مِّنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۭ
وَاِنَّ اللّٰهَ بِكُمْ لَرَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ ۝٩
وَمَا لَكُمْ اَلَّا تُنْفِقُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ
وَلِلّٰهِ مِيْرَاثُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۭ لَا يَسْتَوِيْ
مِنْكُمْ مَّنْ اَنْفَقَ مِنْ قَبْلِ الْفَتْحِ وَقٰتَلَ ۭ
اُولٰۗىِٕكَ اَعْظَمُ دَرَجَةً مِّنَ الَّذِيْنَ اَنْفَقُوْا
مِنْۢ بَعْدُ وَقٰتَلُوْا ۭ وَكُلًّا وَّعَدَ اللّٰهُ
1 ع 14 الْحُسْنٰى ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝١٠
مَنْ ذَا الَّذِيْ يُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا
فَيُضٰعِفَهٗ لَهٗ وَلَهٗٓ اَجْرٌ كَرِيْمٌ ۝١١
يَوْمَ تَرَى الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ يَسْعٰى
نُوْرُهُمْ بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ بُشْرٰىكُمُ
الْيَوْمَ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ
خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ ذٰلِكَ هُوَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝١٢
يَوْمَ يَقُوْلُ الْمُنٰفِقُوْنَ وَالْمُنٰفِقٰتُ
لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوا انْظُرُوْنَا نَقْتَبِسْ مِنْ
نُّوْرِكُمْ ۚ قِيْلَ ارْجِعُوْا وَرَاۗءَكُمْ فَالْتَمِسُوْا
نُوْرًا ۭ فَضُرِبَ بَيْنَهُمْ بِسُوْرٍ لَّهٗ بَابٌ ۭ
بَاطِنُهٗ فِيْهِ الرَّحْمَةُ وَظَاهِرُهٗ مِنْ
قِبَلِهِ الْعَذَابُ ۝١٣
يُنَادُوْنَهُمْ اَلَمْ نَكُنْ مَّعَكُمْ ۭ قَالُوْا بَلٰى

कहेंगे, "क्यों नहीं; मगर तुमने अपने आपको फ़ितने में डाला, और इंतिज़ार करते रहे, और शक में पड़े रहे, और तमन्नाओं ने तुम्हें धोके में डाले रखा, यहां तक कि अल्लाह का फ़ैसला आ गया, और फ़रेब देने वाले ने तुम्हें अल्लाह के बारे में फ़रेब में मुबतला रखा।

15. अब न आज तुमसे कोई फ़िदया लिया जाएगा, और न उन लोगों से जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया। तुम्हारा ठिकाना आग है, और वही तुम्हारी ख़बरगीरी करने वाली है और बहुत ही बुरी जगह है अंजामकार पहुंचने की!"

16. क्या उन लोगों के लिए जो ईमान लाए अभी वह वक़्त नहीं आया कि उनके दिल अल्लाह के ज़िक्र के लिए और जो हक़ उतरा है उसके लिए झुक जाएं, और वो उनकी तरह न हो जाएं जिन्हें पहले किताब दी गई थी, फिर उन पर मुद्दत लम्बी हो गई, बिलआख़िर उनके दिल सख़्त हो गए, और उनमें से अक्सर फ़ासिक़ ही हैं।

17. जान रखो कि अल्लाह ज़मीन को उसकी मौत के बाद ज़िन्दा करता है, हमने तुम्हारे लिए आयतें वाज़ेह तौरपर बयान कर दी हैं, ताकि तुम अक़्ल से काम लो।

18. यक़ीनन जो सदक़ा देनेवाले मर्द और सदक़ा देनेवाली औरतें हैं, और उन्होंने अल्लाह को क़र्ज़ दिया, उनके लिए वह कई गुना कर दिया जाएगा, और उनके लिए एक बाइज़्ज़त अज्र है।

19. और जो लोग अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए वही अपने रब के नज़दीक सिद्दीक़ और शुहदा हैं; उनके लिए उनका अज्र, और उनका नूर है। मगर जिन लोगों ने कुफ़्र किया, और हमारी आयतों की तकज़ीब की, वही भड़कती आग वाले हैं।

20. जान रखो दुनिया की ज़िन्दगी तो बस एक खेल और तमाशा है, और एक ज़ीनत और तुम्हारा आपस में एक-दूसरे पर फ़ख़्र जताना और माल और औलाद में एक-दूसरे से बढ़ा हुआ ज़ाहिर करना। बारिश की मिसाल की तरह जिसकी रोईदगी ने किसान के दिल को मोह लिया, फिर वह पक जाती है, फिर तुम उसे देखते हो कि वह ज़र्द हो गई, फिर वह रेज़ा-रेज़ा होकर रह जाती है। जबकि आख़िरत में सख़्त अज़ाब भी है, और अल्लाह की मग़फ़िरत और ख़ुशनूदी भी। दुनिया की ज़िन्दगी तो सिर्फ़ धोके का सामान-ए-लुत्फ़ है।

व लाकिन्नकुम् फ़तन्तुम् अन्फ़ु-सकुम् व तरब्बस्तुम् वर्तब्तुम् व ग़र्रत्कुमुल्-अमानिय्यु हत्ता जा-अ अम्रुल्लाहि व ग़र्रकुम् बिल्लाहिल्-ग़रूर (14)

फ़ल्यौ-म ला युअ्-ख़ज़ु मिन्कुम् फ़िद्-यतुंव्-व ला मिनल्लज़ी-न क-फ़रू, मअ्वाकुमुन्नारु, हि-य मौलाकुम्, व बिअ्सल्-मसीर (15)

अलम् यअ्नि लिल्लज़ी-न आमनू अन् तख़्शा-अ क़ुलूबुहुम् लिज़िक्रिल्लाहि व मा न-ज़-ल मिनल्-हक़्क़ि व ला यकूनू कल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब मिन् क़ब्लु फ़ता-ल अ़लैहिमुल्-अ-मदु फ़-क़सत् क़ुलूबुहुम्, व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (16)

इअ्-लमू अन्नल्ला-ह युह्यिल्-अर्-ज़ बअ्-द मौतिहा, क़द् बय्यन्ना लकुमुल्-आयाति लअ़ल्लकुम् तअ्क़िलून (17)

इन्नल्-मुस्सद्दिक़ी-न वल्-मुस्सद्दिक़ाति व अक़्रज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनंय्-युज़ा-अ़फ़ु लहुम् व लहुम् अज्रुन् करीम (18)

वल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही उलाइ-क हुमुस्-सिद्दीक़ू-न वश्शु-हदा-उ अ़िन्-द रब्बिहिम्, लहुम् अज्रुहुम् व नूरुहुम्, वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुल्-जहीम (19) ●

इअ्-लमू अन्नमल्-हयातुद्दुन्या लअ़िबुंव्-व लह्वुंव्-व ज़ी-नतुंव्-व तफ़ाख़ुरुम्-बैनकुम् व तकासुरुन् फ़िल्-अम्वालि वल्-औलादि, क-म-सलि ग़ैसिन् अअ्-जबल्-कुफ़्फ़ा-र नबातुहू सुम्-म यहीजु फ़-तराहु मुस्फ़र्रन् सुम्-म यकूनु हुतामन्, व फ़िल्-आख़िरति अ़ज़ाबुन् शदीदुंव्-व मग़्फ़ि-रतुम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानुन्, व मल्-हयातुद्-दुन्या इल्ला मताअ़ुल्-ग़ुरूर (20)

وَلٰكِنَّكُمْ فَتَنْتُمْ اَنْفُسَكُمْ وَتَرَبَّصْتُمْ
وَارْتَبْتُمْ وَغَرَّتْكُمُ الْاَمَانِيُّ حَتّٰى جَآءَ
اَمْرُ اللّٰهِ وَغَرَّكُمْ بِاللّٰهِ الْغَرُوْرُ ⑭
فَالْيَوْمَ لَا يُؤْخَذُ مِنْكُمْ فِدْيَةٌ وَّلَا مِنَ
الَّذِيْنَ كَفَرُوْا ۭ مَاْوٰىكُمُ النَّارُ ۭ هِيَ
مَوْلٰىكُمْ ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ⑮
اَلَمْ يَاْنِ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اَنْ تَخْشَعَ قُلُوْبُهُمْ
لِذِكْرِ اللّٰهِ وَمَا نَزَلَ مِنَ الْحَقِّ ۙ وَلَا
يَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ
قَبْلُ فَطَالَ عَلَيْهِمُ الْاَمَدُ فَقَسَتْ
قُلُوْبُهُمْ ۭ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ⑯
اِعْلَمُوْٓا اَنَّ اللّٰهَ يُحْيِ الْاَرْضَ بَعْدَ مَوْتِهَا ۭ
قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ لَعَلَّكُمْ تَعْقِلُوْنَ ⑰
اِنَّ الْمُصَّدِّقِيْنَ وَالْمُصَّدِّقٰتِ وَاَقْرَضُوا
اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعَفُ لَهُمْ وَلَهُمْ
اَجْرٌ كَرِيْمٌ ⑱
وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖٓ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ
الصِّدِّيْقُوْنَ ڰ وَالشُّهَدَاۗءُ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۭ
لَهُمْ اَجْرُهُمْ وَنُوْرُهُمْ ۭ وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا
ع وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ الْجَحِيْمِ ⑲
اِعْلَمُوْٓا اَنَّمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَا لَعِبٌ وَّلَهْوٌ
وَّزِيْنَةٌ وَّتَفَاخُرٌۢ بَيْنَكُمْ وَتَكَاثُرٌ
فِي الْاَمْوَالِ وَالْاَوْلَادِ ۭ كَمَثَلِ غَيْثٍ
اَعْجَبَ الْكُفَّارَ نَبَاتُهٗ ثُمَّ يَهِيْجُ فَتَرٰىهُ
مُصْفَرًّا ثُمَّ يَكُوْنُ حُطٰمًا ۭ وَفِي الْاٰخِرَةِ
عَذَابٌ شَدِيْدٌ ۙ وَّمَغْفِرَةٌ مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانٌ ۭ
وَمَا الْحَيٰوةُ الدُّنْيَآ اِلَّا مَتَاعُ الْغُرُوْرِ ⑳

21. अपने रब की मग़फ़िरत और उस जन्नत की तरफ़ बढ़ने में एक-दूसरे से बाज़ी ले जाओ जिसकी वुसअत आसमान और ज़मीन की वुसअत जैसी है, जो उन लोगों के लिए मुहय्या की गई है जो अल्लाह और उसके रसूलों पर ईमान लाए हों। यह अल्लाह का फ़ज़्ल है, जिसे चाहता है अता करता है; अल्लाह बड़े फ़ज़्ल का मालिक है।

22-23. कोई हादसा भी ज़मीन में नहीं वाक़े हुआ और न तुम्हारी जानों में मगर वह लाज़िमन एक किताब में लिखा हुआ होता है, इससे पहले कि हम उसे वुजूद में लाएं — यक़ीनन यह अल्लाह के लिए बहुत आसान ह, ताकि तुम उस चीज़ का अफ़सोस न करो जो तुमसे जाती रहे, और न उस चीज़ पर फूल जाओ जो उसने तुम्हें अता की हो; अल्लाह किसी इतरानेवाले, फ़ख़र जतानेवाले को पसन्द नहीं करता।

24. जो ख़ुद बुख़्ल करते हैं, और लोगों को भी बुख़्ल करने पर उकसाते हैं। अब जो कोई मुंह मोड़े तो अल्लाह तो बेनियाज़, ख़ूबियों वाला है।

25. यक़ीनन हमने अपने रसूलों को वाज़ेह दलीलों के साथ भेजा, और उनके साथ किताब और मीज़ान नाज़िल की ताकि लोग इनसाफ़ पर क़ायम हों। और लोहा भी उतारा जिसमें बड़ी हौलनाकी है, और लोगों के लिए कितने ही फ़ायदे हैं, और ताकि अल्लाह मुमय्यज़ करे उसे जो ग़ैब की हालत में होते हुए उसकी, और उसके रसूलों की मदद करता है। यक़ीनन अल्लाह ताक़तवर, निहायत ज़बरदस्त है।

26. हमने नूह, और इबराहीम को भेजा, और उन दोनों की नस्ल में नुबूवत और किताब रखी; फिर किसी ने तो उन में से राह-ए-हिदायत इख़्तियार की, मगर उनमें से अकसर फ़ासिक़ हैं।

27. फिर उनके पीछे उन्हीं के नक़्श-ए-क़दम पर हमने अपने दूसरे रसूलों को भेजा; और हमने उनके पीछे ईसा इब्ने मरयम को भेजा, और उसे इन्जील अता की। और जिन लोगों ने उसकी पैरवी इख़्तियार की उनके दिलों में हमने शफ़क़त और रहमत रख दी। रही रहबानियत, तो वह तो उन्होंने ख़ुद ईजाद की, हमने उसे उनपर फ़र्ज़ नहीं किया था, अगर फ़र्ज़ किया था तो महज़ ख़ुदा की ख़ुशनूदी की तलब; फिर वो उसका लिहाज़ न रख सके जो

साबिक़ू इला मग्फ़ि-रतिम्-मिर्रब्बिकुम् व जन्नतिन् अ़र्ज़ुहा क-अ़र्ज़िस्समा-इ वल्अर्ज़ि उअ़िद्दत् लिल्लज़ी-न आमनू बिल्लाहि व रुसुलिही, ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अ़ज़ीम (21)

मा असा-ब मिम्-मुसी-बतिन् फ़िल्अर्ज़ि व ला फ़ी अन्फ़ुसिकुम् इल्ला फ़ी किताबिम्-मिन् क़ब्लि अन्-नब्र-अहा, इन्-न ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (22)

लिकैला तअ्सौ अ़ला मा फ़ातकुम् व ला तफ़्रहू बिमा आताकुम्, वल्लाहु ला युहिब्बु कुल्-ल मुख़्तालिन् फ़ख़ूर (23)

अल्लज़ी-न यब्ख़लू-न व यअ्मुरूनन्ना-स बिल्बुख़्लि, व मंय्य-तवल्-ल फ़-इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद (24)

ल-क़द् अर्सल्ना रुसु-लना बिल्बय्यिनाति व अन्ज़ल्ना म-अ़हुमुल्-किता-ब वल्मीज़ा-न लि-यक़ूमन्नासु बिल्-क़िस्ति व अन्ज़ल्नल् हदी-द फ़ीहि बअ्सुन् शदीदुंव्-व मनाफ़िअ़ु लिन्नासि व लि-यअ्-लमल्लाहु मंय्यन्सुरुहू व रुसु-लहू बिल्ग़ैबि, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़ (25) ●

व ल-क़द् अर्सल्ना नूहंव्-व इब्राही-म व जअ़ल्ना फ़ी ज़ुर्रिय्यतिहि-मन्नुबुव्व-त वल्किता-ब फ़मिन्हुम् मुह्तदिन् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (26)

सुम्-म क़फ़्फ़ैना अ़ला आसारिहिम् बिरुसुलिना व क़फ़्फ़ैना बि-ईसब्नि मर्य-म व आतैनाहुल्-इन्जी-ल व जअ़ल्ना फ़ी क़ुलूबिल्लज़ीनत्-त-बअ़ूहु रअ्-फ़तंव्-व रह्म-तन्, व रह्बानिय्य-त-निब्त-दअ़ूहा मा कतब्नाहा अ़लैहिम् इल्लब्तिग़ा-अ रिज़्वानिल्लाहि फ़मा रऔहा

سَابِقُوْٓا اِلٰى مَغْفِرَةٍ مِّنْ رَّبِّكُمْ
وَجَنَّةٍ عَرْضُهَا كَعَرْضِ السَّمَآءِ
وَالْاَرْضِ ۙ اُعِدَّتْ لِلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا
بِاللّٰهِ وَرُسُلِهٖ ؕ ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ
مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ۝٢١
مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ فِي الْاَرْضِ
وَلَا فِيْٓ اَنْفُسِكُمْ اِلَّا فِيْ كِتٰبٍ مِّنْ قَبْلِ
اَنْ نَّبْرَاَهَا ؕ اِنَّ ذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٢٢
لِّكَيْلَا تَاْسَوْا عَلٰى مَا فَاتَكُمْ
وَلَا تَفْرَحُوْا بِمَآ اٰتٰىكُمْ ؕ وَاللّٰهُ لَا يُحِبُّ
كُلَّ مُخْتَالٍ فَخُوْرِ ۝٢٣
الَّذِيْنَ يَبْخَلُوْنَ وَيَاْمُرُوْنَ النَّاسَ
بِالْبُخْلِ ؕ وَمَنْ يَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ
هُوَ الْغَنِيُّ الْحَمِيْدُ ۝٢٤
لَقَدْ اَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنٰتِ وَاَنْزَلْنَا مَعَهُمُ
الْكِتٰبَ وَالْمِيْزَانَ لِيَقُوْمَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ۚ
وَاَنْزَلْنَا الْحَدِيْدَ فِيْهِ بَاْسٌ شَدِيْدٌ وَّمَنَافِعُ
لِلنَّاسِ وَلِيَعْلَمَ اللّٰهُ مَنْ يَّنْصُرُهٗ وَرُسُلَهٗ
ع بِالْغَيْبِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ۝٢٥
وَلَقَدْ اَرْسَلْنَا نُوْحًا وَّاِبْرٰهِيْمَ وَجَعَلْنَا
فِيْ ذُرِّيَّتِهِمَا النُّبُوَّةَ وَالْكِتٰبَ فَمِنْهُمْ
مُّهْتَدٍ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ۝٢٦
ثُمَّ قَفَّيْنَا عَلٰٓى اٰثَارِهِمْ بِرُسُلِنَا وَقَفَّيْنَا
بِعِيْسَى ابْنِ مَرْيَمَ وَاٰتَيْنٰهُ الْاِنْجِيْلَ ۙ
وَجَعَلْنَا فِيْ قُلُوْبِ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْهُ رَاْفَةً
وَّرَحْمَةً ؕ وَرَهْبَانِيَّةَ ۨابْتَدَعُوْهَا مَا كَتَبْنٰهَا
عَلَيْهِمْ اِلَّا ابْتِغَآءَ رِضْوَانِ اللّٰهِ فَمَا رَعَوْهَا

उसके लिहाज़ रखने का हक़ था। पस उन लोगों को जो उनमें वाक़ई ईमान लाए थे उनका अज्र हमने अता किया; मगर उनमें से अक्सर फ़ासिक़ ही हैं।

28. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह का डर रखो, और उसके रसूल पर ईमान लाओ, वह तुम्हें अपनी रहमत का दोहरा हिस्सा देगा, और तुम्हें एक रौशनी अता करेगा जिसमें तुम चलोगे, और तुम्हारी मग़फ़िरत फ़रमाएगा; अल्लाह बड़ी मग़फ़िरत फ़रमाने वाला, निहायत रहम वाला है;

29. ताकि अहले किताब यह जान लें कि वो अल्लाह के फ़ज़्ल में से किसी चीज़ पर इख़्तियार नहीं रखते, और यह कि फ़ज़्ल अल्लाह के हाथ में है; जिसको चाहता है अता करता है; अल्लाह बड़े फ़ज़्ल का मालिक है।

सूरह अल-मुजादला मदनी

(आयतें 22, रुकूआत 3)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अल्लाह ने उस औरत की बात सुन ली जो तुमसे अपने शौहर के बारे में बहस कर रही थी, और अल्लाह से शिकायत कर रही थी। अल्लाह तुम दोनों की गुफ़्तगू सुन रहा है; यक़ीनन अल्लाह सब कुछ सुनने वाला, देखने वाला है।

2. तुममें से जो लोग अपनी औरतों से ज़िहार करते हैं, उनकी माएं वो नहीं हैं; उनकी माएं तो वही हैं जिन्होंने उनको जना है, यह ज़रूर है कि वह एक नापसन्दीदा बात और वो यक़ीनन झूट कहते हैं, और हक़ीक़त यह है कि अल्लाह बड़ा दरगुज़र करने वाला, बख़्शने वाला है।

3. जो लोग अपनी औरतों से ज़िहार करते हैं, फिर जो बात उन्होंने कही थी उससे रुजू करें, तो इससे क़ब्ल कि दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएं एक गर्दन आज़ाद करनी होगी। यह वह बात है जिसकी तुम्हें नसीहत की जाती है; और अल्लाह उसकी ख़बर रखता है जो कुछ तुम करते हो।

4. मगर जिस किसी को ग़ुलाम मुयस्सर न हो, तो इससे क़ब्ल कि दोनों एक-दूसरे को हाथ लगाएं, वह पै-दर-पै दो महीने के रोज़े रखे। और जिसको इसकी भी क़ुदरत न हो, तो साठ मिसकीनों को खाना खिलाना लाज़िम है, यह इसलिए कि तुम अल्लाह और उसके रसूल पर वाक़ई ईमान रखने वाले साबित हो सको।

हक़्-क़ रिआ-यतिहा फ़आतैनल्लज़ी-न आमनू मिन्हुम् अज्रहुम् व कसीरुम्-मिन्हुम् फ़ासिक़ून (27)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह व आमिनू बि-रसूलिही युअ्तिकुम् किफ़्लैनि मिर्रहमतिही व यज्अल्-लकुम् नूरन् तम्शू-न बिही व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्रहीम (28)

लि-अल्ला यअ्ल-म अह्लुल्-किताबि अल्ला यक़्दिरू-न अला शैइम्-मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व अन्नल्-फ़ज़्-ल बि-यदिल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अज़ीम (29)●

58 सूरतुल्-मुजाद-लति (मदनी) इस सूर: में अरबी के 2103 अक्षर, 479 शब्द, 22 आयतें और 3 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

क़द समिअ़ल्लाहु क़ौलल्लती तुजादिलु-क फ़ी ज़ौजिहा व तश्तकी इलल्लाहि वल्लाहु यस्-मअु तहावु-रकुमा, इन्नल्ला-ह समीअुम्-बसीर (1)

अल्लज़ी-न युज़ाहिरू-न मिन्कुम् मिन्-निसा-इहिम् मा हुन्-न उम्महातिहिम्, इन् उम्महातुहुम् इल्लल्-लाई व-लद्-नहुम्, व इन्नहुम् ल-यक़ूलू-न मुन्करम् मिनल्-क़ौलि व ज़ूरन्, व इन्नल्ला-ह ल-अफ़ुव्वुन् ग़फ़ूर (2)

वल्लज़ी-न युज़ाहिरू-न मिन् निसा-इहिम् सुम्-म यअूदू-न लिमा क़ालू फ़-तह्रीरु र-क़-बतिम्-मिन् क़ब्लि अंय्य-तमास्सा, ज़ालिकुम् तू-अज़ू-न बिही, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर (3)

फ़-मल्लम् यजिद् फ़सियामु शह्रैनि मु-तताबिअ़ैनि मिन् क़ब्लि अंय्य-तमास्सा, फ़-मल्-लम् यस्ततिअ् फ़-इतआमु सित्ती-न मिस्कीनन्, ज़ालि-क लितुअ्मिनू बिल्लाहि व रसूलिही, व तिल्-क हुदूदुल्लाहि,

حَقَّ رِعَايَتِهَا ۚ فَاٰتَيْنَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْهُمْ
اَجْرَهُمْ ۚ وَكَثِيْرٌ مِّنْهُمْ فٰسِقُوْنَ ﴿٢٧﴾
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَاٰمِنُوْا
بِرَسُوْلِهٖ يُؤْتِكُمْ كِفْلَيْنِ مِنْ
رَّحْمَتِهٖ وَيَجْعَلْ لَّكُمْ نُوْرًا تَمْشُوْنَ بِهٖ
وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۚ وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿٢٨﴾
لِّئَلَّا يَعْلَمَ اَهْلُ الْكِتٰبِ اَلَّا يَقْدِرُوْنَ
عَلٰى شَيْءٍ مِّنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاَنَّ
الْفَضْلَ بِيَدِ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَآءُ ۚ
ع وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ﴿٢٩﴾

سُوْرَةُ الْمُجَادَلَةِ مَدَنِيَّةٌ ۚ اٰيَاتُهَا ٢٢ رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

قَدْ سَمِعَ اللّٰهُ قَوْلَ الَّتِيْ تُجَادِلُكَ
فِيْ زَوْجِهَا وَتَشْتَكِيْۤ اِلَى اللّٰهِ ۖ وَاللّٰهُ
يَسْمَعُ تَحَاوُرَكُمَا ۚ اِنَّ اللّٰهَ سَمِيْعٌ بَصِيْرٌ ﴿١﴾
اَلَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْكُمْ مِّنْ نِّسَآئِهِمْ
مَّا هُنَّ اُمَّهٰتِهِمْ ۚ اِنْ اُمَّهٰتُهُمْ اِلَّا الّٰٓـِٔيْ
وَلَدْنَهُمْ ۚ وَاِنَّهُمْ لَيَقُوْلُوْنَ مُنْكَرًا مِّنَ
الْقَوْلِ وَزُوْرًا ۚ وَاِنَّ اللّٰهَ لَعَفُوٌّ غَفُوْرٌ ﴿٢﴾
وَالَّذِيْنَ يُظٰهِرُوْنَ مِنْ نِّسَآئِهِمْ ثُمَّ
يَعُوْدُوْنَ لِمَا قَالُوْا فَتَحْرِيْرُ رَقَبَةٍ مِّنْ
قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ ذٰلِكُمْ تُوْعَظُوْنَ بِهٖ ۚ
وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ﴿٣﴾
فَمَنْ لَّمْ يَجِدْ فَصِيَامُ شَهْرَيْنِ مُتَتَابِعَيْنِ
مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّتَمَآسَّا ۚ فَمَنْ لَّمْ يَسْتَطِعْ
فَاِطْعَامُ سِتِّيْنَ مِسْكِيْنًا ۚ ذٰلِكَ لِتُؤْمِنُوْا
بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ ۚ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۚ

ये अल्लाह की मुक़र्रर करदा हदें हैं, और काफ़िरों के लिए दर्दनाक अज़ाब है।

5. जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं वो ज़लील व सर निगूं होकर रहेंगे जैसे उनसे पहले के लोग ज़लील व सर निगूं हो चुके हैं। हमने वाज़ेह आयतें नाज़िल कर दी हैं; और काफ़िरों के लिए तो ज़लील कर देनेवाला अज़ाब है,

6. जिस दिन अल्लाह उन सब को उठाकर खड़ा करेगा, और जो कुछ उन्होंने किया-धरा होगा उससे उन्हें बाख़बर कर देगा। अल्लाह ने तो उसको शुमार कर रखा है, और वो उसे भूले हुए हैं। और अल्लाह हर चीज़ पर गवाह है।

7. क्या तुमने इसपर नज़र नहीं की कि अल्लाह जानता है जो कुछ आसमानों में है, और जो कुछ ज़मीन में है? कोई भी सरगोशी तीन की नहीं होती मगर उनका चौथा अल्लाह होता है, और न पांच की होती है, मगर वह उनका छटा होता है, और इससे कम की भी कोई नहीं होती और न इससे ज़्यादा की मगर वह उनके साथ होता है, जहां कहीं भी वो हों; फिर जो कुछ भी उन्होंने किया होगा उससे वह क़ियामत के दिन उन्हें बाख़बर कर देगा। यक़ीनन अल्लाह हर चीज़ का इल्म रखता है।

8. क्या तुमने उन्हें नहीं देखा जिन्हें कानाफूसी से रोका गया था? फिर वो वही करते हैं जिससे उन्हें रोक दिया गया था, वो आपस में गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशी करते हैं। और जब वो तुम्हारे पास आते हैं, तो तुम्हें उन अलफ़ाज़ में सलाम करते हैं जिन अलफ़ाज़ में अल्लाह ने नहीं किया, और अपने जी में कहते हैं कि "जो कुछ हम कहते हैं उस पर अल्लाह हमें अज़ाब क्यों नहीं देता?" उनके लिए जहन्नम ही काफ़ी है, जिसमें वो दाख़िल होंगे, वह बहुत बुरी जगह है अन्जाम को पहुंचने की।

9. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जब तुम आपस में सरगोशी करो, तो गुनाह और ज़्यादती और रसूल की नाफ़रमानी की सरगोशी न करना, बल्कि नेकी और तक़्वा के बारे में सरगोशी करो। और अल्लाह का डर रखो जिसके पास तुम जमा होगे।

10. वह कानाफूसी तो महज़ शैतान की तरफ़ से है, ताकि वह उन लोगों को ग़म में डाले जो ईमान लाए हैं; हालांकि अल्लाह के हुक्म के बग़ैर उसे कुछ भी नुक़सान पहुंचाने पर क़ुदरत हासिल नहीं।

व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुन् अलीम (4)

इन्नल्लज़ी-न युहाद्दूनल्ला-ह व रसूलहू कुबितू कमा कुबितल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् व क़द् अन्ज़ल्ना आयातिम्-बय्यिनातिन्, व लिल्काफ़िरी-न अ़ज़ाबुम् मुहीन (5)

यौ-म यब्अ़सुहुमुल्लाहु जमीअ़न् फ़-युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू अह्साहुल्लाहु व नसूहु, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् शहीद (6) ●

अलम् त-र अन्नल्ला-ह यअ़्लमु मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि, मा यकूनु मिन्-नज्वा सला-सतिन् इल्ला हु-व राबिअुहुम् व ला ख़म्सतिन् इल्ला हु-व सादिसुहुम् व ला अद्ना मिन् ज़ालि-क व ला अक्स-र इल्ला हु-व म-अ़हुम् ऐ-न मा कानू सुम्-म युनब्बिउहुम् बिमा अ़मिलू यौमल्-क़ियामति, इन्नल्ला-ह बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (7)

अलम् त-र इलल्लज़ी-न नुहू अ़निन्-नज्वा सुम्-म यअ़ूदू-न लिमा नुहू अ़न्हु व य-तनाजौ-न बिल्इस्मि वल्-अुद्वानि व मअ़्सि-यतिर्रसूलि व इज़ा जाऊ-क हय्यौ-क बिमा लम् युहय्यि-क बिहिल्लाहु व यक़ूलू-न फ़ी अन्फ़ुसिहिम् लौ ला युअ़ज़्ज़िबुनल्लाहु बिमा नक़ूलु, हस्बुहुम् जहन्नमु यस्लौनहा फ़-बिअ्सल्-मसीर (8)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा तनाजैतुम् फ़ला त-तनाजौ बिल्इस्मि वल्अुद्वानि व मअ़्सि-यतिर्-रसूलि व तनाजौ बिल्-बिर्रि वत्तक़्वा, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी इलैहि-तुह्शरून (9)

इन्नमन्-नज्वा मिनश्-शैतानि लियह्ज़ुनल्लज़ी-न आमनू व लै-स बिज़ार्रिहिम् शैअन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल्-

وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝
اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَآدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ كُبِتُوْا
كَمَا كُبِتَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ وَقَدْ اَنْزَلْنَآ
اٰيٰتٍۭ بَيِّنٰتٍ ؕ وَلِلْكٰفِرِيْنَ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ۝
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيُنَبِّئُهُمْ
بِمَا عَمِلُوْا ؕ اَحْصٰىهُ اللّٰهُ وَنَسُوْهُ ؕ وَاللّٰهُ
ع عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ۝
اَلَمْ تَرَ اَنَّ اللّٰهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ
وَمَا فِي الْاَرْضِ ؕ مَا يَكُوْنُ مِنْ نَّجْوٰى ثَلٰثَةٍ
اِلَّا هُوَ رَابِعُهُمْ وَلَا خَمْسَةٍ اِلَّا هُوَ سَادِسُهُمْ
وَلَآ اَدْنٰى مِنْ ذٰلِكَ وَلَآ اَكْثَرَ اِلَّا هُوَ مَعَهُمْ
اَيْنَ مَا كَانُوْا ۚ ثُمَّ يُنَبِّئُهُمْ بِمَا عَمِلُوْا يَوْمَ
الْقِيٰمَةِ ؕ اِنَّ اللّٰهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نُهُوْا عَنِ النَّجْوٰى ثُمَّ
يَعُوْدُوْنَ لِمَا نُهُوْا عَنْهُ وَيَتَنٰجَوْنَ بِالْاِثْمِ
وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ الرَّسُوْلِ ۫ وَاِذَا
جَآءُوْكَ حَيَّوْكَ بِمَا لَمْ يُحَيِّكَ بِهِ اللّٰهُ ۙ
وَيَقُوْلُوْنَ فِيْۤ اَنْفُسِهِمْ لَوْلَا يُعَذِّبُنَا اللّٰهُ
بِمَا نَقُوْلُ ؕ حَسْبُهُمْ جَهَنَّمُ ۚ يَصْلَوْنَهَا ۚ
فَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا تَنَاجَيْتُمْ فَلَا
تَتَنَاجَوْا بِالْاِثْمِ وَالْعُدْوَانِ وَمَعْصِيَتِ
الرَّسُوْلِ وَتَنَاجَوْا بِالْبِرِّ وَالتَّقْوٰى ؕ
وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْۤ اِلَيْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝
اِنَّمَا النَّجْوٰى مِنَ الشَّيْطٰنِ لِيَحْزُنَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَلَيْسَ بِضَآرِّهِمْ شَيْـًٔا
اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ؕ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ

और मोमिनों को तो अल्लाह ही पर भरोसा रखना चाहिए।

11. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जब तुमसे कहा जाए कि मजलिसों में जगह कुशादा कर दो, तो कुशादगी पैदा कर दो, अल्लाह तुम्हारे लिए कुशादगी पैदा करेगा; और जब कहा जाए कि उठ जाओ, तो उठ जाया करो, जो लोग तुममें से ईमान लाए हैं और जिन्हें इल्म दिया गया है, अल्लाह दरजात के लिहाज़ से उन्हें बुलन्दी अता फ़रमाएगा। जो कुछ तुम करते हो अल्लाह उससे पूरी तरह बाख़बर है।

12. ऐ लोगो जो ईमान लाऐ हो, जब रसूल से तुम सरगोशी करना चाहो, तो अपनी सरगोशी से पहले सदक़ा करो; यह तुम्हारे लिए बेहतर है और पाकीज़ातर है। अलबत्ता अगर तुम इसकी इसतिताअत न पाओ तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शनेवाला, निहायत रहम वाला है।

13. क्या तुम इससे डर गए कि अपनी सरगोशी से पहले सदक़ात दो? तो जब तुम ने यह न किया, और अल्लाह ने तुमपर तवज्जुह फ़रमाई, तो नमाज़ क़ायम करो, ज़कात देते रहो, अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करो। तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उससे अच्छी तरह बाख़बर है।

14. क्या तुमने उन लोगों को नहीं देखा जिन्होंने उन लोगों को दोस्त बनाया जिन पर अल्लाह ग़ज़बनाक हुआ है? वो न तुममें से हैं और न उनमें से; और वो जानते-बूझते झूटी बात पर क़सम खाते हैं।

15. अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अज़ाब मुहय्या कर रखा है; यक़ीनन बुरा है जो वो कर रहे हैं।

16. उन्होंने अपनी क़समों को ढाल बना रखा है, पस वो अल्लाह के रास्ते से (लोगों को) रोकते हैं; पस उनके लिए रुसवाकुन अज़ाब है।

17. अल्लाह के मुक़ाबले में न उनके माल उनके कुछ काम आएंगे और न उनकी औलाद ही; वो आग वाले हैं उसी में वो हमेशा रहेंगे।

18. जिस दिन अल्लाह उन सबको उठाएगा, तो वो उससे भी इसी तरह क़समें खाएंगे जिस तरह तुमसे क़समें खाते हैं, और समझते हैं कि वो किसी

मुअ्मिनून (10)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा क़ी-ल लकुम् तफ़स्सहू फ़िल्-मजालिसि फ़फ़्सहू यफ़्सहिल्लाहु लकुम् व इज़ा क़ीलन्शुज़ू फ़न्शुज़ू यर्फ़अिल्लाहुल्लज़ी-न आमनू मिन्कुम् वल्लज़ी-न ऊतुल्-अिल्-म द-रजातिन्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर (11)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नाजैतुमुर्रसू-ल फ़-क़द्दिमू बै-न यदै नज्वाकुम् स-द-क़तन्, ज़ालि-क ख़ैरुल्-लकुम् व अत्हरु, फ़-इल्लम् तजिदू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम (12)

अ-अश्फ़क़्तुम् अन् तुक़द्दिमू बै-न यदै नज्वाकुम् स-द-क़ातिन्, फ़-इज् लम् तफ़्अलू व ताबल्लाहु अ़लैकुम् फ़-अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्ज़का-त व अतीअुल्ला-ह व रसूलहू, वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ्मलून (13) ●

अलम् त-र इलल्लज़ी-न तवल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम्, मा हुम्-मिन्कुम् व ला मिन्हुम् व यह्लिफ़ू-न अ़लल्-कज़िबि व हुम् यअ्लमून (14)

अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन्, इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ्मलून (15)

इत्त-ख़ज़ू ऐमा-नहुम् जुन्नतन् फ़-सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि फ़-लहुम् अ़ज़ाबुम्-मुहीन (16)

लन् तुग़्नि-य अ़न्हुम् अम्वालुहुम् व ला औलादुहुम् मिनल्लाहि शैअन्, उलाइ-क अस्हाबुन्-नारि, हुम् फ़ीहा ख़ालिदून (17)

यौ-म यब्-अ़सुहुमुल्लाहु जमीअ़न् फ़-यह्लिफ़ू-न लहू कमा यह्लिफ़ू-न लकुम् व यह्सबू-न अन्नहुम्

الْمُؤْمِنُوْنَ ⑩
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا قِيْلَ لَكُمْ تَفَسَّحُوْا
فِي الْمَجٰلِسِ فَافْسَحُوْا يَفْسَحِ اللّٰهُ لَكُمْ ۚ
وَاِذَا قِيْلَ انْشُزُوْا فَانْشُزُوْا يَرْفَعِ اللّٰهُ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ
دَرَجٰتٍ ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ⑪
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِذَا نَاجَيْتُمُ الرَّسُوْلَ
فَقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ نَجْوٰىكُمْ صَدَقَةً ۭ
ذٰلِكَ خَيْرٌ لَّكُمْ وَاَطْهَرُ ۭ فَاِنْ لَّمْ تَجِدُوْا
فَاِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑫
ءَاَشْفَقْتُمْ اَنْ تُقَدِّمُوْا بَيْنَ يَدَيْ
نَجْوٰىكُمْ صَدَقٰتٍ ۭ فَاِذْ لَمْ تَفْعَلُوْا وَتَابَ
اللّٰهُ عَلَيْكُمْ فَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۭ وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ
ع بِمَا تَعْمَلُوْنَ ⑬
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ
اللّٰهُ عَلَيْهِمْ ۭ مَا هُمْ مِّنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ ۙ
وَيَحْلِفُوْنَ عَلَى الْكَذِبِ وَهُمْ يَعْلَمُوْنَ ⑭
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۭ اِنَّهُمْ
سَاۤءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ⑮
اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ فَلَهُمْ عَذَابٌ مُّهِيْنٌ ⑯
لَنْ تُغْنِيَ عَنْهُمْ اَمْوَالُهُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُهُمْ
مِّنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا ۭ اُولٰۗىِٕكَ اَصْحٰبُ النَّارِ ۭ
هُمْ فِيْهَا خٰلِدُوْنَ ⑰
يَوْمَ يَبْعَثُهُمُ اللّٰهُ جَمِيْعًا فَيَحْلِفُوْنَ لَهٗ
كَمَا يَحْلِفُوْنَ لَكُمْ وَيَحْسَبُوْنَ اَنَّهُمْ

बुनियाद पर हैं। आगाह रहो, यक़ीनन वही झूटे हैं।

19. शैतान उनपर पूरी तरह मुसल्लत हो गया, पस उसने उनसे अल्लाह की याद को फ़रामोश करा दिया। वो शैतान की पार्टी हैं; ख़बरदार रहो शैतान की पार्टी वाले ही ख़सारे में रहने वाले हैं।

20. यक़ीनन जो लोग अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त करते हैं, वो ज़लीलतरीन अफ़राद में से हैं।

21. अल्लाह ने लिख दिया है कि "मैं और मेरे रसूल ग़ालिब होकर रहेंगे" बेशक अल्लाह ताक़तवर, निहायत ज़बरदस्त है।

22. तुम उन लोगों को जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखते हैं ऐसा कभी नहीं पाओगे कि वो उन लोगों से मुहब्बत करते हों जिन्होंने अल्लाह और उसके रसूल की मुख़ालफ़त की, ख़्वाह वो उनके अपने बाप, या उनके अपने बेटे, या उनके अपने भाई, या उनके अपने कुम्बे वाले ही हों। वही लोग हैं जिनके दिलों में अल्लाह ने ईमान लिख दिया है, और अपनी तरफ़ से एक रूह के ज़रिए से उनकी मदद की है; और उन्हें वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बहती होंगी, जहां वो मुसतक़िल रहेंगे; अल्लाह उनसे राज़ी हो गया और वो भी उससे राज़ी हुए। वही लोग अल्लाह की पार्टी हैं; आगाह रहो यक़ीनन अल्लाह की पार्टी वाले ही फ़लाह पाने वाले हैं।

सूरह अल-हश्र, मदनी

(आयतें 24, रुकूआत 3)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अल्लाह की तसबीह की हर उस चीज़ ने जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है; और वही ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है।

2. वही है जिसने अहले किताब में से उन लोगों को जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया उनके घरों से पहले हश्र के वक़्त निकाल बाहर किया। तुम्हें गुमान न था कि वो निकलेंगे, और वो समझते थे कि उनके क़िले अल्लाह से उन्हें बचा लेंगे; मगर अल्लाह (का अज़ाब) उनपर वहां से आया जिसका उन्हें गुमान भी न था, और उसने उनके दिलों में रोब डाल दिया कि वो अपने घरों को ख़ुद अपने

अ़ला शैइन्, अला इन्नहुम् हुमुल्-काज़िबून (18)

इस्तह्-व-ज़ अ़लैहिमुश्शैतानु फ़-अन्साहुम् ज़िक्रल्लाहि, उलाइ-क हिज़्बुश-शैतानि, अला इन्-न हिज़्बश्शैतानि हुमुल्-ख़ासिरून (19)

इन्नल्लज़ी-न युहाद्दूनल्ला-ह व रसूलहू उलाइ-क फ़िल्-अज़ल्लीन (20)

क-तबल्लाहु ल-अग़्लिबन्-न अ-न व रुसुली, इन्नल्ला-ह क़विय्युन् अ़ज़ीज़ (21)

ला तजिदु क़ौमंय्-युअ्मिनू-न बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि युवाद्दू-न मन् हाद्दल्ला-ह व रसूलहू व लौ कानू आबा-अहुम् औ अब्ना-अहुम् औ इख़्वा-नहुम् औ अ़शी-र-तहुम्, उलाइ-क क-त-ब फ़ी क़ुलूबिहिमुल्-ईमा-न व अय्य-दहुम् बिरूहिम्-मिन्हु, व युद्ख़िलुहुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु, उलाइ-क हिज़्बुल्लाहि, अला इन्-न हिज़्बल्लाहि हुमुल्-मुफ़्लिहून (22)●

59 सूरतुल्-हश्रि

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 2016 अक्षर, 455 शब्द, 24 आयतें और 3 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (1)

हुवल्लज़ी अख़्-रजल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि मिन् दियारिहिम् लि-अव्वलिल्-हश्रि, मा ज़नन्तुम् अंय्यख़्रुजू व ज़न्नू अन्नहुम् मानि-अ़तुहुम् हुसूनुहुम् मिनल्लाहि फ़-अताहुमुल्लाहु मिन् हैसु लम् यह्तसिबू व क़-ज़-फ़ फ़ी क़ुलूबिहिमुर्रुअ्-ब युख़्रिबू-न बुयू-तहुम् बि-ऐदीहिम् व ऐदिल्-मुअ्मिनी-न

عَلٰى شَيْءٍ ۭ اَلَآ اِنَّهُمْ هُمُ الْكٰذِبُوْنَ ⑱

اِسْتَحْوَذَ عَلَيْهِمُ الشَّيْطٰنُ فَاَنْسٰىهُمْ ذِكْرَ اللّٰهِ ۭ

اُولٰۗىِٕكَ حِزْبُ الشَّيْطٰنِ ۭ اَلَآ اِنَّ حِزْبَ

الشَّيْطٰنِ هُمُ الْخٰسِرُوْنَ ⑲

اِنَّ الَّذِيْنَ يُحَاۗدُّوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗٓ اُولٰۗىِٕكَ

فِي الْاَذَلِّيْنَ ⑳

كَتَبَ اللّٰهُ لَاَغْلِبَنَّ اَنَا وَرُسُلِيْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ

قَوِيٌّ عَزِيْزٌ ㉑

لَا تَجِدُ قَوْمًا يُّؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَالْيَوْمِ الْاٰخِرِ

يُوَاۗدُّوْنَ مَنْ حَاۗدَّ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ وَلَوْ كَانُوْٓا

اٰبَاۗءَهُمْ اَوْ اَبْنَاۗءَهُمْ اَوْ اِخْوَانَهُمْ اَوْ عَشِيْرَتَهُمْ ۭ

اُولٰۗىِٕكَ كَتَبَ فِيْ قُلُوْبِهِمُ الْاِيْمَانَ وَاَيَّدَهُمْ

بِرُوْحٍ مِّنْهُ ۭ وَيُدْخِلُهُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ

عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ اُولٰۗىِٕكَ حِزْبُ اللّٰهِ ۭ

ع اَلَآ اِنَّ حِزْبَ اللّٰهِ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ㉒

سُوْرَةُ الْحَشْرِ مَدَنِيَّةٌ، اٰيَاتُهَا ٢٤، رُكُوْعَاتُهَا ٣

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي

الْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ①

هُوَ الَّذِيْٓ اَخْرَجَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ

اَهْلِ الْكِتٰبِ مِنْ دِيَارِهِمْ لِاَوَّلِ الْحَشْرِ ۭ

مَا ظَنَنْتُمْ اَنْ يَّخْرُجُوْا وَظَنُّوْٓا اَنَّهُمْ

مَّانِعَتُهُمْ حُصُوْنُهُمْ مِّنَ اللّٰهِ فَاَتٰىهُمُ

اللّٰهُ مِنْ حَيْثُ لَمْ يَحْتَسِبُوْا ۤ وَقَذَفَ

فِيْ قُلُوْبِهِمُ الرُّعْبَ يُخْرِبُوْنَ

بُيُوْتَهُمْ بِاَيْدِيْهِمْ وَاَيْدِي الْمُؤْمِنِيْنَ ۤ

[illegible]

हाथों, और मोमिनों के हाथों भी उजाड़ने लगे, पस इबरत हासिल करो, ऐ आंखें रखने वालो!

3. अगर अल्लाह ने उनके हक़ में जिलावतनी न लिख दी होती, तो लाज़िमन वह उन्हें दुनिया ही में अज़ाब दे देता; और आख़िरत में तो उनके लिए आग का अज़ाब है ही।

4. यह इसलिए कि उन्होंने अल्लाह और उसके रसूल का मुक़ाबला करने की कोशिश की; और जो कोई अल्लाह का मुक़ाबला करता है, तो यक़ीनन अल्लाह अज़ाब में बहुत सख़्त है।

5. तुमने खजूर के जो दरख़्त काटे, या उन्हें उनकी जड़ों पर खड़ा छोड़ दिया, तो यह अल्लाह ही के हुक्म से हुआ, और ताकि वह फ़ासिक़ों को रुसवा करे।

6. और अल्लाह ने उनकी तरफ़ से जो कुछ (माल) अपने रसूल की तरफ़ पलटाया तो उसपर न तो तुमने घोड़े दौड़ाए और न ऊंट; लेकिन अल्लाह अपने रसूलों को जिस पर चाहता है तसल्लुत अता कर देता है। अल्लाह को तो हर चीज़ पर क़ुदरत है।

7. जो कुछ अल्लाह ने अपने रसूल की तरफ़ बस्तियों वालों की तरफ़ से पलटाया वह अल्लाह, और रसूल, और रिश्तेदार, और यतीमों और मुहताजों, और मुसाफ़िरों के लिए है, ताकि वह तुम्हारे मालदारों ही के दरमियान गर्दिश न करता रहे — रसूल जो कुछ तुम्हें दे उसे ले लो; और जिस चीज़ से वह तुम्हें रोक दे, उससे रुक जाओ और अल्लाह का डर रखो, यक़ीनन अल्लाह अज़ाब में बहुत सख़्त है।

8. वह ग़रीब मुहाजिरीन के लिए है, जो अपने घरों और अपने मालों से इस हालत में निकाल बाहर किए गए हैं कि वो अल्लाह के फ़ज़्ल और उसकी ख़ुशनूदी की जुस्तजू करते हैं। और अल्लाह और उसके रसूल की मदद करते हैं; वही असल रास्तबाज़ हैं।

9. और (उनके लिए) जो उनसे पहले ही से दारुल-हिजरत में ठिकाना बनाए हुए और ईमान उस्तुवार किए हुए हैं, वो उनसे मुहब्बत करते हैं जो हिजरत कर के उनके यहां आए हैं, और जो कुछ भी उन्हें दिया गया उससे कोई ख़लिश वो अपने सीनों में नहीं पाते, और वो अपनी ज़ात पर उन्हें तरजीह

फ़अ्तबिरू या उलिल्-अब्सार (2)

व लौ ला अन् क-तबल्ला:हु अ़लैहिमुल्-जला-अ ल-अ़ज़्ज़-बहुम् फ़िद्दुन्या, व लहुम् फ़िल्-आख़िरति अ़ज़ाबुन्नार (3)

ज़ालि-क बि-अन्नहुम् शाक़्क़ुल्ला-ह व रसूलहू व मंय्युशाक़्क़िल्ला-ह फ़-इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब (4)

मा क़-तअ्तुम् मिल्ली-नतिन् औ तरक्तुमूहा क़ाइ-मतन् अ़ला उसूलिहा फ़बि-इज्निल्लाहि व लियुख़्ज़ि-यल्-फ़ासिक़ीन (5)

व मा अफ़ा-अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन्हुम् फ़मा औजफ़्तुम् अ़लैहि मिन् ख़ैलिंव्-व ला रिकाबिंव्-व लाकिन्नल्ला-ह युसल्लितु रुसु-लहू अ़ला मंय्यशा-उ, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (6)

मा अफ़ा-अल्लाहु अ़ला रसूलिही मिन् अह्लिल्-क़ुरा फ़-लिल्लाहि व लिर्रसूलि व लिज़िल्-क़ुर्बा वल्यतामा वल्-मसाकीनि वब्निस्सबीलि कै ला यकू-न दू-लतम्-बैनल्-अग़्निया-इ मिन्कुम्, व मा आताकुमुर्रसूलु फ़ख़ुज़ूहु व मा नहाकुम् अ़न्हु फ़न्तहू वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह शदीदुल्-अ़िक़ाब ● (7)

लिल्फ़ु-क़राइल्-मुहाजिरीनल्लज़ी-न उख़्रिजू मिन् दियारिहिम् व अम्वालिहिम् यब्तग़ू-न फ़ज़्लम्-मिनल्लाहि व रिज़्वानंव्-व यन्सुरूनल्ला-ह व रसूलहू, उलाइ-क हुमुस्सादिक़ून (8)

वल्लज़ी-न त-बव्वउद्दा-र वल्ईमा-न मिन् क़ब्लिहिम् युहिब्बू-न मन् हाज-र इलैहिम् व ला यजिदू-न फ़ी सुदूरिहिम् हा-जतम्-मिम्मा ऊतू व युअ्सिरू-न

فَاعْتَبِرُوْا يٰۤاُولِی الْاَبْصَارِ ۝۲

وَلَوْلَآ اَنْ كَتَبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمُ الْجَلَآءَ لَعَذَّبَهُمْ فِی الدُّنْيَا ؕ وَلَهُمْ فِی الْاٰخِرَةِ عَذَابُ النَّارِ ۝۳

ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ شَآقُّوا اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ۚ وَمَنْ يُّشَآقِّ اللّٰهَ فَاِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝۴

مَا قَطَعْتُمْ مِّنْ لِّيْنَةٍ اَوْ تَرَكْتُمُوْهَا قَآئِمَةً عَلٰۤى اُصُوْلِهَا فَبِاِذْنِ اللّٰهِ وَلِيُخْزِیَ الْفٰسِقِيْنَ ۝۵

وَمَاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْهُمْ فَمَاۤ اَوْجَفْتُمْ عَلَيْهِ مِنْ خَيْلٍ وَّلَا رِكَابٍ وَّلٰكِنَّ اللّٰهَ يُسَلِّطُ رُسُلَهٗ عَلٰى مَنْ يَّشَآءُ ؕ وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝۶

مَاۤ اَفَآءَ اللّٰهُ عَلٰى رَسُوْلِهٖ مِنْ اَهْلِ الْقُرٰى فَلِلّٰهِ وَلِلرَّسُوْلِ وَلِذِی الْقُرْبٰى وَالْيَتٰمٰى وَالْمَسٰكِيْنِ وَابْنِ السَّبِيْلِ ۙ كَیْ لَا يَكُوْنَ دُوْلَةًۢ بَيْنَ الْاَغْنِيَآءِ مِنْكُمْ ؕ وَمَاۤ اٰتٰىكُمُ الرَّسُوْلُ فَخُذُوْهُ ۗ وَمَا نَهٰىكُمْ عَنْهُ فَانْتَهُوْا ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ شَدِيْدُ الْعِقَابِ ۝۷

لِلْفُقَرَآءِ الْمُهٰجِرِيْنَ الَّذِيْنَ اُخْرِجُوْا مِنْ دِيَارِهِمْ وَاَمْوَالِهِمْ يَبْتَغُوْنَ فَضْلًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِضْوَانًا وَّيَنْصُرُوْنَ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ ؕ اُولٰٓئِكَ هُمُ الصّٰدِقُوْنَ ۝۸

وَالَّذِيْنَ تَبَوَّؤُ الدَّارَ وَالْاِيْمَانَ مِنْ قَبْلِهِمْ يُحِبُّوْنَ مَنْ هَاجَرَ اِلَيْهِمْ وَلَا يَجِدُوْنَ فِیْ صُدُوْرِهِمْ حَاجَةً مِّمَّاۤ اُوْتُوْا وَيُؤْثِرُوْنَ

देते हैं, ख़्वाह वो अपनी जगह ख़ुद मुहताज हों और जो अपने नफ़्स के हिर्स व बुख़्ल से बचा लिया जाए तो ऐसे ही लोग कामयाब हैं।

10. और (उनके लिए) जो उनके बाद आए, कहते हैं, "ऐ हमारे रब, हमारी मग़फ़िरत फ़रमा और हमारे उन भाइयों की भी, जिन्होंने ईमान लाने में हमपर सबक़त की और हमारे दिलों में उन लोगों के लिए जो ईमान लाए कीना (और दुश्मनी) न रख। हमारे रब, यक़ीनन तू बड़ा शफ़ीक़, निहायत रहमवाला है"।

11. क्या तुमने उन लोगों को जिन्होंने मुनाफ़क़त की रविश इख़्तियार कर रखी है नहीं देखा कि कुफ़्र इख़्तियार करने वाले अपने भाइयों से जो अहले किताब में से हैं, कहते हैं कि "अगर तुम्हें निकाला गया, तो लाज़िमन तुम्हारे साथ हम भी निकल जाएंगे, और तुम्हारे मुआमले में कभी भी किसी की बात नहीं मानेंगे और अगर तुमसे जंग की गई, तो हम ज़रूर तुम्हारी मदद करेंगे"। मगर अल्लाह गवाही देता है कि वो बिल्कुल झूटे हैं।

12. अगर वो निकाले गए, तो ये उनके साथ नहीं निकलेंगे, और अगर उनके साथ जंग हुई, तो ये उनकी हरगिज़ मदद नहीं करेंगे, और अगर उनकी मदद की भी, तो पीठ फेर जाएंगे, फिर उन्हें कोई मदद हासिल न होगी।

13. अल्लाह के बिलमुक़ाबिल तुम्हारा डर उनके दिलों में ज़्यादा है; यह इसलिए कि वो ऐसे लोग हैं जो समझते नहीं।

14. वो इकट्ठे होकर कभी तुमसे नहीं लड़ेंगे। क़िलाबन्द बस्तियों में, या दीवारों के पीछे हों, तो और बात है। उनकी लड़ाई आपस में सख़्त है; तुम उन्हें इकट्ठा समझते हो हालांकि उनके दिल आपस में फटे हुए हैं; यह इसलिए कि वो ऐसे लोग हैं जो अक़्ल से काम नहीं लेते।

15. उनकी हालत उन्हीं लोगों जैसी है जो उनसे पहले क़रीब के ज़माने में अपने काम के वबाल का मज़ा चख चुके हैं; और उनके लिए दर्दनाक अज़ाब भी है।

16. उनकी मिसाल शैतान की सी है कि जब उसने इनसान से कहा कि "कुफ़्र कर"; फिर जब वह कुफ़्र कर बैठा, तो कहने लगा कि "मैं तुझ से बरी-उज़-ज़िम्मा हूं। मैं तो अल्लाह, सारे जहान के रब से डरता हूं"।

17. फिर उन दोनों का अन्जाम यह हुआ कि वो दोनों आग में गए, जहां वो हमेशा रहेंगे; और ज़ालिमों का यही बदला है।

अ़ला अन्फ़ुसिहिम् व लौ का-न बिहिम् ख़सा-सतुन्, व मंय्यू-क़ शुह्-ह नफ़्सिही फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (9)

वल्लज़ी-न जाऊ मिम्बअ़्दिहिम् यक़ूलू-न रब्बनग़्फ़िर् लना व लि-इख़्वानिनल्लज़ी-न स-बक़ूना बिल्-ईमानि व ला तज्अ़ल् फ़ी क़ुलूबिना ग़िल्लल्-लिल्लज़ी-न आमनू रब्बना इन्न-क रऊफ़ुर्रहीम ●(10)●

अलम् त-र इलल्लज़ी-न नाफ़क़ू यक़ूलू-न लि-इख़्वानिहिमुल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि ल-इन् उख़्रिज्तुम् ल-नख़्रुजन्-न म-अ़कुम् व ला नुतीअ़ु फ़ीकुम् अ-हदन् अ-बदंव्-व इन् क़ूतिल्तुम् ल-नन्सुरन्नकुम्, वल्लाहु यश्हदु इन्नहुम् लकाज़िबून (11)

ल-इन् उख़्रिजू ला यख़्रुजू-न म-अ़हुम् व ल-इन् क़ूतिलू ला यन्सुरूनहुम् व ल-इन्-न-सरूहुम् लयु-वल्लुन्नल्-अद्बा-र, सुम्-म ला युन्सरून (12)

ल-अन्तुम् अशद्दु रह्-बतन् फ़ी सुदूरिहिम् मिनल्लाहि, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ौमुल्-ला यफ़्क़हून (13)

ला युक़ातिलूनकुम् जमीअ़न् इल्ला फ़ी क़ुरम्-मुहस्स-नतिन् औ मिंव्वरा-इ जुदुरिन्, बअ्सुहुम् बैनहुम् शदीदुन्, तह्सबुहुम् जमीअ़ंव्-व क़ुलूबुहुम् शत्ता, ज़ालि-क बि-अन्नहुम् क़ौमुल्-ला यअ़्क़िलून (14)

क-म-सलिल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् क़रीबन् ज़ाक़ू व बा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (15)

क-म-सलिश्शैतानि इज़् क़ा-ल लिल्-इन्सानिक्फ़ुर् फ़-लम्मा क-फ़-र क़ा-ल इन्नी बरीउम्-मिन्-क इन्नी अख़ाफ़ुल्ला-ह रब्बल्-आ़लमीन (16)

फ़का-न आ़क़ि-ब-तहुमा अन्नहुमा फ़िन्नारि ख़ालिदैनि फ़ीहा, व ज़ालि-क जज़ाउज़्ज़ालिमीन (17) ●

عَلٰٓى اَنْفُسِهِمْ وَلَوْ كَانَ بِهِمْ خَصَاصَةٌ ۫ وَمَنْ
يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ (٩)
وَالَّذِيْنَ جَآءُوْ مِنْۢ بَعْدِهِمْ يَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا وَلِاِخْوَانِنَا الَّذِيْنَ سَبَقُوْنَا
بِالْاِيْمَانِ وَلَا تَجْعَلْ فِيْ قُلُوْبِنَا غِلًّا
ع لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوْا رَبَّنَآ اِنَّكَ رَءُوْفٌ رَّحِيْمٌ (١٠)
اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ نَافَقُوْا يَقُوْلُوْنَ
لِاِخْوَانِهِمُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ
لَئِنْ اُخْرِجْتُمْ لَنَخْرُجَنَّ مَعَكُمْ وَلَا نُطِيْعُ
فِيْكُمْ اَحَدًا اَبَدًا ۙ وَّاِنْ قُوْتِلْتُمْ لَنَنْصُرَنَّكُمْ ۭ
وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّهُمْ لَكٰذِبُوْنَ (١١)
لَئِنْ اُخْرِجُوْا لَا يَخْرُجُوْنَ مَعَهُمْ ۚ وَلَئِنْ
قُوْتِلُوْا لَا يَنْصُرُوْنَهُمْ ۚ وَلَئِنْ نَّصَرُوْهُمْ
لَيُوَلُّنَّ الْاَدْبَارَ ۣ ثُمَّ لَا يُنْصَرُوْنَ (١٢)
لَاَنْتُمْ اَشَدُّ رَهْبَةً فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنَ
اللّٰهِ ۭ ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَفْقَهُوْنَ (١٣)
لَا يُقَاتِلُوْنَكُمْ جَمِيْعًا اِلَّا فِيْ قُرًى مُّحَصَّنَةٍ
اَوْ مِنْ وَّرَآءِ جُدُرٍ ۭ بَاْسُهُمْ بَيْنَهُمْ شَدِيْدٌ ۭ
تَحْسَبُهُمْ جَمِيْعًا وَّقُلُوْبُهُمْ شَتّٰى ۭ ذٰلِكَ
بِاَنَّهُمْ قَوْمٌ لَّا يَعْقِلُوْنَ (١٤)
كَمَثَلِ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ قَرِيْبًا ذَاقُوْا
وَبَالَ اَمْرِهِمْ ۚ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ (١٥)
كَمَثَلِ الشَّيْطٰنِ اِذْ قَالَ لِلْاِنْسَانِ
اكْفُرْ ۚ فَلَمَّا كَفَرَ قَالَ اِنِّيْ بَرِيْٓءٌ مِّنْكَ
اِنِّيْٓ اَخَافُ اللّٰهَ رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ (١٦)
فَكَانَ عَاقِبَتَهُمَآ اَنَّهُمَا فِي النَّارِ خَالِدَيْنِ
ع فِيْهَا ۭ وَذٰلِكَ جَزٰٓؤُا الظّٰلِمِيْنَ (١٧)

18. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह का डर रखो। और हर शख़्स को देखना चाहिए कि उसने कल के लिए क्या भेजा है। और अल्लाह का डर रखो; जो कुछ भी तुम करते हो, यक़ीनन अल्लाह उससे पूरी तरह बाख़बर है।

19. और उन लोगों की तरह न हो जाना जिन्होंने अल्लाह को भुला दिया, तो उसने भी उन्हें ख़ुद फ़रामोश बना दिया। वही फ़ासिक़ हैं।

20. आग वाले और अहले जन्नत कभी यकसां नहीं। अहले जन्नत ही कामयाब हैं।

21. अगर हमने इस क़ुरआन को किसी पहाड़ पर उतार दिया होता, तो लाज़िमन तुम उसे ख़ुदा के ख़ौफ़ से दबा हुआ, और पाश-पाश होता देखते। ये मिसालें लोगों के लिए हम इसलिए पेश करते हैं कि वो ग़ौर व फ़िक्र करें।

22. वही अल्लाह है जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। ग़ायब और हाज़िर को जानता है; वह बड़ा मेहरबान, निहायत रहमवाला है।

23. वही अल्लाह है, जिसके सिवा कोई माबूद नहीं। बादशाह है, निहायत मुक़द्दस, सरापा सुख सलामती, अमन देने वाला, मोतमिद व निगेहदार, ज़बरदस्त, ज़ोर आवर और अपनी बड़ाई का एहसास व इज़हार करने वाला है, अज़ीम व बरतर है अल्लाह उससे जो शिर्क वो करते हैं।

24. वही अल्लाह है, जो ख़ाका बनाने वाला, वुजूद बख़्शने वाला, सूरतगरी करने वाला है। उसी के लिए अच्छे नाम हैं। जो चीज़ भी आसमानों और ज़मीन में है उसी की तसबीह कर रही है; और वह ज़बरदस्त, निहायत हिकमतवाला है।

सूरह अल-मुम्तहिना मदनी

(आयतें 13, रुकूआत 2)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अगर तुम मेरी राह में जिहाद के लिए और मेरी ख़ुशनूदी के लिए निकले हो, तो मेरे दुश्मनों को और अपने दुश्मनों को दोस्त न बनाओ कि तुम उनकी तरफ़ दोस्ती का पैग़ाम भेजो; जबकि तुम्हारे पास जो हक़ आया है उसका तो इनकार कर चुके हैं, रसूल को और तुम्हें इसलिए निकालते हैं कि तुम अपने रब, अल्लाह पर ईमान लाए हो। तुम राज़दाराना उनसे दोस्ती की बातें करते

या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत्तक़ुल्ला-ह वल्तन्ज़ुर् नफ़्सुम्-मा क़द्द-मत् लि-ग़दिन् वत्तक़ुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ख़बीरुम्-बिमा तअ्मलून (18)

व ला तकूनू कल्लज़ी-न नसुल्ला-ह फ़-अन्साहुम् अन्फ़ु-सहुम्, उलाइ-क हुमुल्-फ़ासिक़ून (19)

ला यस्तवी अस्हाबुन्नारि व अस्हाबुल्-जन्नति, अस्हाबुल्-जन्नति हुमुल्-फ़ाइज़ून (20)

लौ अन्ज़ल्ना हाज़ल्-क़ुर्आ-न अ़ला ज-बलिल्-ल-रऐ-तहू ख़ाशिअ़म् मु-तसद्दिअ़म् मिन् ख़श्-यतिल्लाहि, व तिल्कल्-अम्सालु नज़्रिबुहा लिन्नासि लअ़ल्लहुम् य-तफ़क्करून (21)

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहा-दति हुवर्-रह्मानुर्रहीम (22)

हुवल्लाहुल्लज़ी ला इला-ह इल्ला हु-व अल्मलिकुल्-क़ुद्दूसुस्-सलामुल्-मुअ्मिनुल्-मुहैमिनुल-अज़ीज़ुल्-जब्बारुल-मु-तकब्बिरु, सुब्हानल्लाहि अ़म्मा युश्रिकून (23)

हुवल्लाहुल् ख़ालिक़ुल् बारिउल् मुसव्विरु लहुल् अस्मा-उल्-हुस्ना, युसब्बिहु लहू मा फ़िस्समावाति वल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (24) ●

60 सूरतुल-मुम्तहि-नति
(मदनी) इस सूरः में अरबी के 1593 अक्षर, 370 शब्द, 13 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तत्तख़िज़ू अ़दुव्वी व अ़दुव्वकुम् औलिया-अ तुल्क़ू-न इलैहिम् बिल्-म-वद्दति व क़द् क-फ़रू बिमा जा-अकुम् मिनल्-हक़्क़ि युख़्रिजूनर्-रसू-ल व इय्याकुम् अन् तुअ्मिनू बिल्लाहि रब्बिकुम्, इन् कुन्तुम् ख़रज्तुम् जिहादन् फ़ी सबीली

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَلْتَنْظُرْ
نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ لِغَدٍ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ ۭ
اِنَّ اللّٰهَ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝١٨
وَلَا تَكُوْنُوْا كَالَّذِيْنَ نَسُوا اللّٰهَ فَاَنْسٰىهُمْ
اَنْفُسَهُمْ ۭ اُولٰۗىِٕكَ هُمُ الْفٰسِقُوْنَ ۝١٩
لَا يَسْتَوِيْٓ اَصْحٰبُ النَّارِ وَاَصْحٰبُ
الْجَنَّةِ ۭ اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ هُمُ الْفَاۗىِٕزُوْنَ ۝٢٠
لَوْ اَنْزَلْنَا هٰذَا الْقُرْاٰنَ عَلٰي جَبَلٍ لَّرَاَيْتَهٗ
خَاشِعًا مُّتَصَدِّعًا مِّنْ خَشْيَةِ اللّٰهِ ۭ
وَتِلْكَ الْاَمْثَالُ نَضْرِبُهَا لِلنَّاسِ
لَعَلَّهُمْ يَتَفَكَّرُوْنَ ۝٢١
هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ عٰلِمُ الْغَيْبِ
وَالشَّهَادَةِ ۚ هُوَ الرَّحْمٰنُ الرَّحِيْمُ ۝٢٢
هُوَ اللّٰهُ الَّذِيْ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۚ اَلْمَلِكُ
الْقُدُّوْسُ السَّلٰمُ الْمُؤْمِنُ الْمُهَيْمِنُ
الْعَزِيْزُ الْجَبَّارُ الْمُتَكَبِّرُ ۭ سُبْحٰنَ اللّٰهِ
عَمَّا يُشْرِكُوْنَ ۝٢٣
هُوَ اللّٰهُ الْخَالِقُ الْبَارِئُ الْمُصَوِّرُ لَهُ
الْاَسْمَاۗءُ الْحُسْنٰى ۭ يُسَبِّحُ لَهٗ مَا فِي
ع السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ۚ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝٢٤

سُوْرَةُ الْمُمْتَحِنَةِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٣ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا عَدُوِّيْ
وَعَدُوَّكُمْ اَوْلِيَاۗءَ تُلْقُوْنَ اِلَيْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ
وَقَدْ كَفَرُوْا بِمَا جَاۗءَكُمْ مِّنَ الْحَقِّ ۚ
يُخْرِجُوْنَ الرَّسُوْلَ وَاِيَّاكُمْ اَنْ تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ
رَبِّكُمْ ۭ اِنْ كُنْتُمْ خَرَجْتُمْ جِهَادًا فِيْ سَبِيْلِيْ

हो, हालांकि मैं खूब जानता हूं जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ तुम ज़ाहिर करते हो; जो कोई भी तुममें से ऐसा करे, वह राहे रास्त से भटक गया है।

2. अगर वो तुमपर काबू पा जाएं, तो तुम्हारे दुश्मन हो जाएं, और तकलीफ देने के लिए वो तुमपर दस्तदराज़ी भी करेंगे और ज़बानदराज़ी भी, वो तो चाहते हैं कि काश तुम भी कुफ़्र करनेवाले हो जाओ।

3. क़ियामत के रोज़ तुम्हारी रिश्तेदारियां हरगिज़ तुम्हें फ़ायदा न पहुंचाएंगी और न तुम्हारी औलाद ही; उस रोज़ वह (अल्लाह) तुम्हारे दरमियान जुदाई डाल देगा।‐जो कुछ भी तुम करते हो अल्लाह उसे देखता है।

4. तुम लोगों के लिए इबराहीम में, और उन लोगों में जो उसके साथ थे बेहतरीन नमूना-ए-अमल है, जबकि उन्होंने अपनी क़ौम से कह दिया कि "हम तुम से और जिन्हें अल्लाह से हटकर तुम पूजते हो उनसे बरी (बेतअल्लुक़) हैं। हमने तुम्हारा इनकार किया, और हमारे और तुम्हारे दरमियान हमेशा कि लिए अदावत और बुग्ज़ ज़ाहिर हो गई, यहां तक कि तुम अल्लाह वाहिद पर ईमान लाओ"। इबराहीम का अपने बाप से यह कहना उससे मुसतसना है कि "मैं आपके लिए मग़फ़िरत की दुआ ज़रूर करूंगा; अगरचे अल्लाह के मुक़ाबिल आपके लिए मैं किसी चीज़ पर इख़्तियार नहीं रखता"। "ऐ हमारे रब, हमने तुझ ही पर भरोसा किया; और तेरी ही तरफ़ हम रुजू हुए; और तेरी ही तरफ़ अन्जामकार लौटना है।"

5. "ऐ हमारे रब, हमें उन लोगों के लिए जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया फ़ितना न बना; और ऐ हमारे रब, हमारी मग़फ़िरत फ़रमा, यक़ीनन तू ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है"।

6. यक़ीनन तुम्हारे लिए उन लोगों के अन्दर अच्छा नमूना है उसके लिए जो अल्लाह और आख़िरत के दिन का उम्मीदवार हो। और जो कोई मुनहरिफ़ हो, तो अल्लाह बेनियाज़ अपनी ज़ात में आप महमूद है।

7. तवक़्क़ो है कि अल्लाह तुम्हारे और उनके दरमियान जिनसे तुमने दुश्मनी मोल ली है मुहब्बत डाल दे। अल्लाह बड़ी क़ुदरत रखता है, और अल्लाह बहुत मग़फ़िरत फ़रमानेवाला, निहायत रहमवाला है।

8. अल्लाह तुम्हें इससे नहीं रोकता कि तुम उन लोगों के साथ हुस्ने सुलूक

वब्तिग़ा-अ मर्ज़ाती तुसिर्रू-न इलैहिम् बिल्म-वद्दति व अ-न अअ्लमु बिमा अख़्फ़ैतुम् व मा अअ्लन्तुम्, व मंय्यफ़्अल्हु मिन्कुम् फ़-क़द् ज़ल्-ल सवा-अस्सबील (1)

इंय्यस्क़फ़ूकुम् यकूनू लकुम् अअ्दा-अंव्-व यब्सुतू इलैकुम् ऐदि-यहुम् व अल्सि-न-तहुम् बिस्सू-इ व वद्दू लौ तक्फ़ुरून (2)

लन् तन्फ़-अकुम् अर्हामुकुम् व ला औलादुकुम् यौमल्-क़ियामति यफ़्सिलु बैनकुम्, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न बसीर (3)

क़द् कानत् लकुम् उस्वतुन् ह-स-नतुन् फ़ी इब्राही-म वल्लज़ी-न म-अ़हू इज़् क़ालू लिक़ौमिहिम् इन्ना बु-रआ-उ मिन्कुम् व मिम्मा तअ्बुदू-न मिन् दूनिल्लाहि कफ़र्ना बिकुम् व बदा बैनना व बैनकुमुल्-अ़दा-वतु वल्-बग़्ज़ा-उ अ-बदन् हत्ता तुअ्मिनू बिल्लाहि वह्-दहू इल्ला क़ौ-ल इब्राही-म लि-अबीहि ल-अस्तग़्फ़िरन्-न ल-क व मा अम्लिकु ल-क मिनल्लाहि मिन् शैइन्, रब्बना अ़लै-क तवक्कल्ना व इलै-क अनब्ना व इलैकल्-मसीर (4)

रब्बना ला तज्अ़ल्ना फ़ित्-नतल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रू वग़्फ़िर् लना रब्बना इन्न-क अन्तल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (5)

ल-क़द् का-न लकुम् फ़ीहिम् उस्वतुन् ह-स-नतुल्-लिमन् का-न यरजुल्ला-ह वल्यौमल्-आख़ि-र, व मंय्य-तवल्-ल फ़-इन्नल्ला-ह हुवल् ग़निय्युल्-हमीद (6) ●

अ़सल्लाहु अंय्यज्अ़-ल बैनकुम् व बैनल्लज़ी-न आ़दैतुम् मिन्हुम् मवद्द-तन्, वल्लाहु क़दीरुन्, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्-रहीम (7)

ला यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी-न लम् युक़ातिलूकुम्

وَابْتِغَآءَ مَرْضَاتِیْ ۖ تُسِرُّوْنَ اِلَیْهِمْ بِالْمَوَدَّةِ ۖ
وَاَنَا اَعْلَمُ بِمَآ اَخْفَیْتُمْ وَمَآ اَعْلَنْتُمْ ؕ وَمَنْ یَّفْعَلْهُ
مِنْكُمْ فَقَدْ ضَلَّ سَوَآءَ السَّبِیْلِ ①
اِنْ یَّثْقَفُوْكُمْ یَكُوْنُوْا لَكُمْ اَعْدَآءً
وَّیَبْسُطُوْٓا اِلَیْكُمْ اَیْدِیَهُمْ وَاَلْسِنَتَهُمْ
بِالسُّوْٓءِ وَوَدُّوْا لَوْ تَكْفُرُوْنَ ②
لَنْ تَنْفَعَكُمْ اَرْحَامُكُمْ وَلَآ اَوْلَادُكُمْ ۛۚ یَوْمَ
الْقِیٰمَةِ ۛۚ یَفْصِلُ بَیْنَكُمْ ؕ وَاللّٰهُ بِمَا
تَعْمَلُوْنَ بَصِیْرٌ ③
قَدْ كَانَتْ لَكُمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ فِیْٓ اِبْرٰهِیْمَ
وَالَّذِیْنَ مَعَهٗ ۚ اِذْ قَالُوْا لِقَوْمِهِمْ
اِنَّا بُرَءٰٓؤُا مِنْكُمْ وَمِمَّا تَعْبُدُوْنَ مِنْ
دُوْنِ اللّٰهِ ؗ كَفَرْنَا بِكُمْ وَبَدَا بَیْنَنَا وَبَیْنَكُمُ
الْعَدَاوَةُ وَالْبَغْضَآءُ اَبَدًا حَتّٰی تُؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ
وَحْدَهٗٓ اِلَّا قَوْلَ اِبْرٰهِیْمَ لِاَبِیْهِ لَاَسْتَغْفِرَنَّ
لَكَ وَمَآ اَمْلِكُ لَكَ مِنَ اللّٰهِ مِنْ شَیْءٍ ؕ
رَبَّنَا عَلَیْكَ تَوَكَّلْنَا وَاِلَیْكَ اَنَبْنَا وَاِلَیْكَ
الْمَصِیْرُ ④
رَبَّنَا لَا تَجْعَلْنَا فِتْنَةً لِّلَّذِیْنَ كَفَرُوْا
وَاغْفِرْ لَنَا رَبَّنَا ۚ اِنَّكَ اَنْتَ الْعَزِیْزُ الْحَكِیْمُ ⑤
لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِیْهِمْ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ لِّمَنْ
كَانَ یَرْجُوا اللّٰهَ وَالْیَوْمَ الْاٰخِرَ ؕ وَمَنْ
یَّتَوَلَّ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ الْغَنِیُّ الْحَمِیْدُ ⑥
عَسَی اللّٰهُ اَنْ یَّجْعَلَ بَیْنَكُمْ وَبَیْنَ الَّذِیْنَ
عَادَیْتُمْ مِّنْهُمْ مَّوَدَّةً ؕ وَاللّٰهُ قَدِیْرٌ ؕ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِیْمٌ ⑦
لَا یَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِیْنَ لَمْ یُقَاتِلُوْكُمْ

करो, और उनके साथ इनसाफ़ का बरताव करो जिन्होंने तुमसे दीन के मुआमले में जंग नहीं की, और न तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला, यक़ीनन अल्लाह इनसाफ़ करनेवालों को पसन्द फ़रमाता है।

9. अल्लाह तो तुम्हें सिर्फ़ उन लोगों से दोस्ती करने से रोकता है जिन्होंने दीन के मुआमले में तुमसे जंग की और तुम्हें तुम्हारे अपने घरों से निकाला, और तुम्हारे निकाले जाने में मदद की, उनसे जो लोग दोस्ती करें वही ज़ालिम हैं।

10. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जब तुम्हारे पास ईमान की दावेदार औरतें हिजरत कर के आएं तो तुम उनकी तहक़ीक़ कर लिया करो। अल्लाह उनके ईमान से बख़ूबी वाक़िफ़ है। फिर अगर वो तुम्हें मोमिन मालूम हों, तो उन्हें काफ़िरों की तरफ़ वापस न करो। न तो वो औरतें उनके लिए हलाल हैं, और न वो उन औरतों के लिए हलाल हैं। और जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया हो तुम उन्हें दे दो और इसमें तुम्हारे लिए कोई गुनाह नहीं कि तुम उनसे निकाह कर लो जबकि तुम उनके महर अदा कर दो। और तुम काफ़िर औरतों को अपने निकाह में न रोके रखो और जो कुछ तुमने ख़र्च किया हो मांग लो। और उन्हें भी चाहिए कि जो कुछ उन्होंने ख़र्च किया हो मांग लें। यह अल्लाह का हुक्म है; वह तुम्हारे दरमियान फ़ैसला फ़रमाता है; अल्लाह सब कुछ जानने वाला साहिब-ए-हिकमत है।

11. और अगर तुम्हारी बीवियों (के महरों) में से कुछ तुम्हारे हाथ से निकल जाए और काफ़िरों की तरफ़ रह जाए, फिर तुम्हारी बारी आए तो जिन लोगों की बीवियां चली गई हैं उन्हें जितना उन्होंने ख़र्च किया हो दे दो। और अल्लाह का डर रखो, जिसपर तुम ईमान रखते हो।

12. ऐ नबी, जब मोमिन औरतें तुम्हारे पास आकर तुमसे इस पर बैअत करें कि वो अल्लाह के साथ किसी चीज़ को शरीक नहीं करेंगी, और न चोरी करेंगी, न ज़िना करेंगी, न अपनी औलाद को क़त्ल करेंगी, और न अपने हाथों और अपने पैरों के दरमियान कोई बुहतान घड़ लाएंगी, और न किसी नेक काम में तुम्हारी नाफ़रमानी करेंगी, तो उनसे बैअत ले लो, और उनके लिए

फ़िद्दीनि व लम् युख़्रिजूकुम् मिन् दियारिकुम् अन् तबर्रूहुम् व तुक़्सितू इलैहिम्, इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्-मुक़्सितीन (8)

इन्नमा यन्हाकुमुल्लाहु अ़निल्लज़ी-न क़ा-तलूकुम् फ़िद्दीनि व अख़्-रजूकुम् मिन् दियारिकुम् व ज़ा-हरू अ़ला इख़्राजिकुम् अन् तवल्लौहुम् व मंय्य-तवल्लहुम् फ़-उलाइ-क हुमुज़्ज़ालिमून (9)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा जा-अकुमुल् मुअ्मिनातु मुहाजिरातिन् फ़म्तहिनूहुन्-न, अल्लाहु अअ्लमु बि-ईमानिहिन्-न फ़-इन् अ़लिम्तुमूहुन्-न मुअ्मिनातिन् फ़ला तर्जिअूहुन्-न इलल्-कुफ़्फ़ारि, ला हुन्-न हिल्लुल् लहुम् व ला हुम् यहिल्लू-न लहुन्-न, व आतूहुम् मा अन्फ़क़ू, व ला जुना-ह अ़लैकुम् अन् तन्किहूहुन्-न इज़ा आतैतुमूहुन्-न उजू-रहुन्-न, व ला तुम्सिकू बिअ़िस-समिल्-कवाफ़िरि, वस्अलू मा अन्फ़क़्तुम वल्-यस्अलू मा अन्फ़क़ू, ज़ालिकुम हुक्मुल्लाहि यह्कुमु बैनकुम वल्लाहु अ़लीमुन् हकीम (10)

व इन् फ़ा-तकुम् शैउम्-मिन् अज़्वाजिकुम् इलल्-कुफ़्फ़ारि फ़-आ़क़ब्तुम् फ़-आतुल्लज़ी-न ज़-हबत् अज़्वाजुहुम् मिस्-ल मा अन्फ़क़ू, वत्तक़ुल्लाहल्लज़ी अन्तुम् बिही मुअ्मिनून (11)

या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा जा-अकल्-मुअ्मिनातु युबायिअ्-न-क अ़ला अल-ला युश्रिक्-न बिल्लाहि शैअंव्-व ला यस्रिक़्-न व ला यज़्नी-न व ला यक़्तुल्-न औला-दहुन्-न व ला यअ्तीन बिबुह्तानिंय्-यफ़्तरीनहू बै-न ऐदीहिन्-न व अर्जुलिहिन्-न व ला यअ्सी-न-क फ़ी मअ्रूफ़िन्

فِى الدِّيْنِ وَلَمْ يُخْرِجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ
اَنْ تَبَرُّوْهُمْ وَتُقْسِطُوْٓا اِلَيْهِمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ
يُحِبُّ الْمُقْسِطِيْنَ ۸
اِنَّمَا يَنْهٰىكُمُ اللّٰهُ عَنِ الَّذِيْنَ قٰتَلُوْكُمْ
فِى الدِّيْنِ وَاَخْرَجُوْكُمْ مِّنْ دِيَارِكُمْ
وَظٰهَرُوْا عَلٰٓى اِخْرَاجِكُمْ اَنْ تَوَلَّوْهُمْ ۚ
وَمَنْ يَّتَوَلَّهُمْ فَاُولٰۗىِٕكَ هُمُ الظّٰلِمُوْنَ ۹
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا جَاۗءَكُمُ
الْمُؤْمِنٰتُ مُهٰجِرٰتٍ فَامْتَحِنُوْهُنَّ ۭ
اَللّٰهُ اَعْلَمُ بِاِيْمَانِهِنَّ ۚ فَاِنْ عَلِمْتُمُوْهُنَّ
مُؤْمِنٰتٍ فَلَا تَرْجِعُوْهُنَّ اِلَى الْكُفَّارِ ۭ
لَا هُنَّ حِلٌّ لَّهُمْ وَلَا هُمْ يَحِلُّوْنَ لَهُنَّ ۭ
وَاٰتُوْهُمْ مَّآ اَنْفَقُوْا ۭ وَلَا جُنَاحَ عَلَيْكُمْ
اَنْ تَنْكِحُوْهُنَّ اِذَآ اٰتَيْتُمُوْهُنَّ
اُجُوْرَهُنَّ ۭ وَلَا تُمْسِكُوْا بِعِصَمِ الْكَوَافِرِ
وَسْـَٔـلُوْا مَآ اَنْفَقْتُمْ وَلْيَسْـَٔـلُوْا مَآ اَنْفَقُوْا ۭ
ذٰلِكُمْ حُكْمُ اللّٰهِ ۭ يَحْكُمُ بَيْنَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ
عَلِيْمٌ حَكِيْمٌ ۱۰
وَاِنْ فَاتَكُمْ شَيْءٌ مِّنْ اَزْوَاجِكُمْ
اِلَى الْكُفَّارِ فَعَاقَبْتُمْ فَاٰتُوا الَّذِيْنَ ذَهَبَتْ
اَزْوَاجُهُمْ مِّثْلَ مَآ اَنْفَقُوْا ۭ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
الَّذِيْٓ اَنْتُمْ بِهٖ مُؤْمِنُوْنَ ۱۱
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا جَاۗءَكَ الْمُؤْمِنٰتُ يُبَايِعْنَكَ
عَلٰٓى اَنْ لَّا يُشْرِكْنَ بِاللّٰهِ شَيْـــًٔا وَّلَا يَسْرِقْنَ
وَلَا يَزْنِيْنَ وَلَا يَقْتُلْنَ اَوْلَادَهُنَّ وَلَا
يَاْتِيْنَ بِبُهْتَانٍ يَّفْتَرِيْنَهٗ بَيْنَ اَيْدِيْهِنَّ
وَاَرْجُلِهِنَّ وَلَا يَعْصِيْنَكَ فِيْ مَعْرُوْفٍ

अल्लाह से दुआ-ए-मग़फ़िरत करो; यक़ीनन अल्लाह बहुत मग़फ़िरत फ़रमानेवाला, निहायत रहमवाला है।

13. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, ऐसे लोगों से दोस्ती न करो जिनपर अल्लाह का ग़ज़ब हुआ, वो आख़िरत से मायूस हो चुके हैं, जिस तरह कुफ़्फ़ार क़ब्रवालों से मायूस हुए।

सूरह अस-सफ़्फ़ मदनी

(आयतें 14, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अल्लाह की तसबीह की हर उस चीज़ ने जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है, वही ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है।

2. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम वह बात क्यों कहते हो जो करते नहीं?

3. अल्लाह के नज़दीक सख़्त नाराज़ी की बात है कि तुम वह बात कहो जो करो नहीं।

4. अल्लाह तो उन लोगों को महबूब रखता है जो उसकी राह में सफ बांधकर लड़ते हैं, गोया वो सीसा पिलाई हुई दीवार हैं।

5. और (याद करो) जब मूसा ने अपनी क़ौम से कहा था कि "ऐ मेरी क़ौम के लोगो! तुम मुझे क्यों तकलीफ़ देते हो, हालांकि तुम जानते हो कि मैं तुम्हारी तरफ़ भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूं?" फिर जब उन्होंने टेढ़ इख़्तियार कर ली तो अल्लाह ने भी उनके दिल टेढ़े कर दिए; अल्लाह फ़ासिक़ों को हिदायत नहीं देता।

6. और (याद करो) जबकि ईसा इब्ने मरयम ने कहा कि "ऐ बनी इसराईल, मैं तुम्हारी तरफ़ भेजा हुआ अल्लाह का रसूल हूं, मैं तसदीक़ करनेवाला हूं तौरात (की पेशीनगोइयों) की जो मुझ से पहले से मौजूद है, और बशारत देता हूं एक रसूल की जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद होगा"। मगर जब वह उनके पास रौशन दलीलें लेकर आया, तो उन्होंने कहा कि "यह तो सरीह जादू है"।

7. अब उससे बढ़कर ज़ालिम कौन होगा जो अल्लाह पर गढ़कर झूट घड़े इस हाल में कि उसे इस्लाम की तरफ़ बुलाया जा रहा हो? अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता।

फ़-बायिअ्हुन्-न वस्तग़्फ़िर् लहुन्नल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (12)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला त-तवल्लौ क़ौमन् ग़ज़िबल्लाहु अ़लैहिम् क़द् य-इसू मिनल्-आख़िरति कमा य-इसल्-कुफ़्फ़ारु मिन् अस्हाबिल्-क़ुबूर ● (13) ●

61 सूरतुस्–सफ़्फ़

(मदनी) इस सूरः में अरबी के 991 अक्षर, 223 शब्द, 14 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सब्ब-ह लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (1)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू लि-म तक़ूलू-न मा ला तफ़्अ़लून (2)

कबु-र मक़्तन् अ़िन्दल्लाहि अन् तक़ूलू मा ला तफ़्अ़लून (3)

इन्नल्ला-ह युहिब्बुल्लज़ी-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिही सफ़्फ़न् क-अन्नहुम् बुन्यानुम्-मर्सूस (4)

व इज़् क़ा-ल मूसा लिक़ौमिही या क़ौमि लि-म तुअ्ज़ू-ननी व क़त्-तअ्लमू-न अन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम, फ़-लम्मा ज़ाग़ू अज़ाग़ल्लाहु क़ुलूबहुम्, वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमल्-फ़ासिक़ीन (5)

व इज़् क़ा-ल अ़ीसब्नु मर्य-म या बनी इस्राई-ल इन्नी रसूलुल्लाहि इलैकुम् मुसद्दिक़ल्-लिमा बै-न यदय्-य मिनत्तौराति व मुबश्शिरम् बि-रसूलिंय्-यअ्ती मिम्बअ्दिस्मुहू अह्मदु, फ़-लम्मा जा-अहुम् बिल्बय्यिनाति क़ालू हाज़ा सिह्रुम्-मुबीन (6)

व मन् अज़्लमु मिम्-मनिफ़्तरा अ़लल्लाहिल्-कज़ि-ब व हु-व युद्आ इलल्-इस्लामि, वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्ज़ालिमीन (7)

فَبَايِعْهُنَّ وَاسْتَغْفِرْ لَهُنَّ اللّٰهَ ۚ اِنَّ اللّٰهَ
غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ۝١٢
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَوَلَّوْا قَوْمًا
غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِمْ قَدْ يَئِسُوْا مِنَ الْاٰخِرَةِ
كَمَا يَئِسَ الْكُفَّارُ مِنْ اَصْحٰبِ الْقُبُوْرِ ۝١٣

سُوْرَةُ الصَّفِّ مَدَنِيَّةٌ، اٰيَاتُهَا ١٤، رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
سَبَّحَ لِلّٰهِ مَا فِى السَّمٰوٰتِ وَمَا فِى الْاَرْضِ ۚ
وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ۝١
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ۝٢
كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا
تَفْعَلُوْنَ ۝٣
اِنَّ اللّٰهَ يُحِبُّ الَّذِيْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِهٖ
صَفًّا كَاَنَّهُمْ بُنْيَانٌ مَّرْصُوْصٌ ۝٤
وَاِذْ قَالَ مُوْسٰى لِقَوْمِهٖ يٰقَوْمِ لِمَ تُؤْذُوْنَنِىْ
وَقَدْ تَّعْلَمُوْنَ اَنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ ۖ
فَلَمَّا زَاغُوْۤا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوْبَهُمْ ۚ وَاللّٰهُ
لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٥
وَاِذْ قَالَ عِيْسَى ابْنُ مَرْيَمَ يٰبَنِىْۤ اِسْرَآءِيْلَ
اِنِّىْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ مُّصَدِّقًا لِّمَا بَيْنَ
يَدَىَّ مِنَ التَّوْرٰىةِ وَمُبَشِّرًاۢ بِرَسُوْلٍ
يَّاْتِىْ مِنْۢ بَعْدِى اسْمُهٗۤ اَحْمَدُ ۚ فَلَمَّا
جَآءَهُمْ بِالْبَيِّنٰتِ قَالُوْا هٰذَا سِحْرٌ مُّبِيْنٌ ۝٦
وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ
الْكَذِبَ وَهُوَ يُدْعٰۤى اِلَى الْاِسْلَامِ ۚ
وَاللّٰهُ لَا يَهْدِى الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ۝٧

8. वो चाहते हैं कि अल्लाह के नूर को अपने मुंह की फूंक से बुझा दें; मगर अल्लाह अपने नूर को हद-ए-कमाल को पहुंचाकर रहेगा, अगरचे काफ़िरों को नागवार ही हो।

9. वही है जिसने अपने रसूल को हिदायत और दीने हक़ के साथ भेजा, ताकि उसे तमाम के तमाम दीन पर ग़ालिब कर दे, अगरचे मुशरिकीन को नागवार ही हो।

10. ऐ लोगों जो ईमान लाए हो, क्या मैं तुम्हें एक ऐसी तिजारत बताऊं जो तुम्हें दर्दनाक अज़ाब से बचा ले?

11. तुम ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर, और जिहाद करो अल्लाह की राह में अपने मालों और अपनी जानों से, यही तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो।

12. वह तुम्हारे गुनाहों को बख़्श देगा और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, और उन बेहतरीन घरों में भी जो अदन के बाग़ों में होंगे; यही बड़ी कामयाबी है;

13. और दूसरी चीज़ भी जो तुम चाहते हो तुम्हें अता करेगा, अल्लाह की तरफ़ से नुसरत व मदद और जल्द हासिल होने वाली फ़तह, और अहले ईमान को बशारत दे दो।

14. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह के मददगार बनो; जैसा कि ईसा इब्ने मरयम ने हवारियों से कहा था कि "अल्लाह की जानिब कौन मेरे मददगार हैं?" हवारियों ने कहा कि "हम अल्लाह के मददगार हैं"। फिर बनी इसराईल में से एक गिरोह ईमान लाया, और एक गिरोह ने कुफ़्र किया। पस हमने उन लोगों की जो ईमान लाए थे उनके अपने दुश्मनों के मुक़ाबले में मदद की, पस वो ग़ालिब होकर रहे।

युरीदू-न लियुत्फ़िऊ नूरल्लाहि बि-अफ़्वाहिहिम्, वल्लाहु मुतिम्मु नूरिही व लौ करिहल्-काफ़िरून (8)

हुवल्लज़ी अर्स-ल रसूलहू बिल्हुदा व दीनिल्-हक़्क़ि लियुज़्हि-रहू अ़लद्दीनि कुल्लिही व लौ करिहल्-मुश्रिकून (9) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू हल् अदुल्लुकुम् अ़ला तिजा-रतिन् तुन्जीकुम् मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम (10)

तुअ्मिनू-न बिल्लाहि व रसूलिही व तुजाहिदू-न फ़ी सबीलिल्लाहि बि-अम्वालिकुम् व अन्फ़ुसिकुम्, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्-लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून (11)

यग़्फ़िर् लकुम् ज़ुनू-बकुम् व युद्ख़िल्कुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु व मसाकि-न तय्यि-बतन् फ़ी जन्नाति अ़द्निन्, ज़ालिकल्-फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (12)

व उख़्रा तुहिब्बूनहा नस्रुम्-मिनल्लाहि व फ़त्हुन् क़रीबुन्, व बश्शिरिल्-मुअ्मिनीन (13)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू कूनू अन्सारल्लाहि कमा क़ा-ल अ़ीसब्नु मर्य-म लिल्-हवारिय्यी-न मन् अन्सारी इलल्लाहि, क़ालल्-हवारिय्यू-न नह्नु अन्सारुल्लाहि फ़-आ-मनत् ताइ-फ़तुम् मिम्-बनी इस्राई-ल व क-फ़रत् ताइ-फ़तुन् फ़-अय्यद्नल्लज़ी-न आमनू अ़ला अ़दुव्विहिम्, फ़-अस्बहू ज़ाहिरीन (14) ●

يُرِيدُونَ لِيُطْفِـُٔوا نُورَ اللَّهِ بِأَفْوَٰهِهِمْ
وَاللَّهُ مُتِمُّ نُورِهِۦ وَلَوْ كَرِهَ الْكَٰفِرُونَ ٨
هُوَ الَّذِيٓ أَرْسَلَ رَسُولَهُۥ بِالْهُدَىٰ وَدِينِ
الْحَقِّ لِيُظْهِرَهُۥ عَلَى الدِّينِ كُلِّهِۦ
ع وَلَوْ كَرِهَ الْمُشْرِكُونَ ٩
يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا هَلْ أَدُلُّكُمْ عَلَىٰ
تِجَٰرَةٍ تُنجِيكُم مِّنْ عَذَابٍ أَلِيمٍ ١٠
تُؤْمِنُونَ بِاللَّهِ وَرَسُولِهِۦ وَتُجَٰهِدُونَ
فِي سَبِيلِ اللَّهِ بِأَمْوَٰلِكُمْ وَأَنفُسِكُمْ ذَٰلِكُمْ
خَيْرٌ لَّكُمْ إِن كُنتُمْ تَعْلَمُونَ ١١
يَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوبَكُمْ وَيُدْخِلْكُمْ جَنَّٰتٍ
تَجْرِي مِن تَحْتِهَا الْأَنْهَٰرُ وَمَسَٰكِنَ
طَيِّبَةً فِي جَنَّٰتِ عَدْنٍ ذَٰلِكَ الْفَوْزُ
الْعَظِيمُ ١٢
وَأُخْرَىٰ تُحِبُّونَهَا نَصْرٌ مِّنَ اللَّهِ
وَفَتْحٌ قَرِيبٌ وَبَشِّرِ الْمُؤْمِنِينَ ١٣
يَٰٓأَيُّهَا الَّذِينَ ءَامَنُوا كُونُوٓا أَنصَارَ
اللَّهِ كَمَا قَالَ عِيسَى ابْنُ مَرْيَمَ
لِلْحَوَارِيِّـۧنَ مَنْ أَنصَارِيٓ إِلَى اللَّهِ
قَالَ الْحَوَارِيُّونَ نَحْنُ أَنصَارُ اللَّهِ
فَـَٔامَنَت طَّآئِفَةٌ مِّنۢ بَنِيٓ إِسْرَٰٓءِيلَ
وَكَفَرَت طَّآئِفَةٌ فَأَيَّدْنَا الَّذِينَ ءَامَنُوا
ع عَلَىٰ عَدُوِّهِمْ فَأَصْبَحُوا ظَٰهِرِينَ ١٤

सूरह अल-जुमुआ मदनी

(आयतें 11, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अल्लाह की तसबीह कर रही है हर वह चीज़ जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है, जो बादशाह, निहायत मुक़द्दस, ज़बरदस्त, निहायत हिकमत वाला है।

2. वही है जिसने उम्मियों में उन्हीं में से एक रसूल भेजा जो उन्हें उसकी आयतें पढ़कर सुनाता है, उनका तज़किया करता है और उन्हें किताब व हिकमत की तालीम देता है बेशक इससे पहले तो वो खुली हुई गुमराही में पड़े हुए थे,

3. और उन दूसरे लोगों को भी (किताब व हिकमत की तालीम दे) जो अभी उनसे मिले नहीं हैं, वो उन्हीं में से होंगे। और वही ज़बरदस्त, निहायत हिकमतवाला है।

4. यह अल्लाह का फ़ज़्ल है; उसे जिसको चाहता है अता करता है, अल्लाह बड़े फ़ज़्ल का मालिक है।

5. जिन लोगों पर तौरात का बोझ डाला गया, मगर उन्होंने उसे न उठाया उनकी मिसाल उस गधे की सी है जो किताबें उठाए हुए हो, बहुत ही बुरी मिसाल है उन लोगों की जिन्होंने अल्लाह की आयतों को झुटलाया। अल्लाह ज़ालिम लोगों को हिदायत नहीं दिया करता।

6. कह दो: "ऐ लोगो जो यहूदी हुए हो, अगर तुम्हें यह गुमान है कि सारे इनसानों को छोड़कर तुम ही अल्लाह के चहीते हो तो मौत की तमन्ना करो, अगर तुम सच्चे हो"।

7. लेकिन वो कभी भी उसकी तमन्ना न करेंगे उसकी वजह से जो उनके हाथों ने आगे भेजा है; अल्लाह ज़ालिमों को बख़ूबी जानता है।

8. कह दो कि "मौत जिससे तुम भागते हो, वह तो तुमसे दो-चार होकर ही रहेगी; फिर तुम उसकी तरफ़ लौटाए जाओगे जो पोशीदा और ज़ाहिर का जानने वाला है, और वह तुम्हें उससे आगाह करेगा जो कुछ तुम करते रहे होगे"।

9. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, जब जुमा के दिन नमाज़ के लिए पुकारा

62 सूरतुल्-जुमु-अति (मदनी) इस सूरः में अरबी के 787 अक्षर, 176 शब्द, 11 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़िल्-मलिकिल्-क़ुद्दूसिल्-अज़ीज़िल-हकीम (1)

हुवल्लज़ी ब-अ-स फ़िल्-उम्मिय्यी-न रसूलम्-मिन्हुम् यत्लू अलैहिम् आयातिही व युज़क्कीहिम् व युअ़ल्लिमुहुमुल्-किता-ब वल्हिक्म-त व इन् कानू मिन् क़ब्लु लफ़ी ज़लालिम्-मुबीन (2)

व आ-ख़री-न मिन्हुम् लम्मा यल्हक़ू बिहिम्, व हुवल् अज़ीज़ुल्-हकीम (3)

ज़ालि-क फ़ज़्लुल्लाहि युअ्तीहि मंय्यशा-उ, वल्लाहु ज़ुल्-फ़ज़्लिल्-अज़ीम (4)

म-सलुल्लज़ी-न हुम्मिलुत्-तौरा-त सुम्-म लम् यह्मिलूहा क-म-सलिल्-हिमारि यह्मिलु अस्फ़ारन्, बिअ्-स म-सलुल्-क़ौमिल्लज़ी-न कज़्ज़बू बिआयातिल्लाहि, वल्लाहु ला यह्दिल्-क़ौमज़्-ज़ालिमीन (5)

क़ुल् या अय्युहल्लज़ी-न हादू इन् ज़-अम्तुम् अन्नकुम् औलिया-उ लिल्लाहि मिन् दूनिन्नासि फ़-तमन्नवुल्-मौ-त इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (6)

व ला य-तमन्नौनहू अ-बदम्-बिमा क़द्द-मत् ऐदीहिम्, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़्ज़ालिमीन (7)

क़ुल् इन्नल्-मौतल्लज़ी तफ़िर्रू-न मिन्हु फ़-इन्नहू मुलाक़ीकुम् सुम्-म तुरद्दू-न इला आ़लिमिल्-ग़ैबि वश्शहा-दति फ़युनब्बिउकुम् बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (8) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इज़ा नूदि-य लिस्सलाति

سُوْرَةُ الْجُمُعَةِ مَدَنِيَّةٌ، اٰيَاتُهَا ١١، رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَمَا فِي الْاَرْضِ
الْمَلِكِ الْقُدُّوْسِ الْعَزِيْزِ الْحَكِيْمِ ①
هُوَ الَّذِيْ بَعَثَ فِي الْاُمِّيّٖنَ رَسُوْلًا
مِّنْهُمْ يَتْلُوْا عَلَيْهِمْ اٰيٰتِهٖ وَيُزَكِّيْهِمْ
وَيُعَلِّمُهُمُ الْكِتٰبَ وَالْحِكْمَةَ ۗ وَاِنْ كَانُوْا
مِنْ قَبْلُ لَفِيْ ضَلٰلٍ مُّبِيْنٍ ②
وَّاٰخَرِيْنَ مِنْهُمْ لَمَّا يَلْحَقُوْا بِهِمْ ۭ وَهُوَ
الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ③
ذٰلِكَ فَضْلُ اللّٰهِ يُؤْتِيْهِ مَنْ يَّشَاۗءُ ۭ
وَاللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ ④
مَثَلُ الَّذِيْنَ حُمِّلُوا التَّوْرٰىةَ ثُمَّ
لَمْ يَحْمِلُوْهَا كَمَثَلِ الْحِمَارِ يَحْمِلُ
اَسْفَارًا ۭ بِئْسَ مَثَلُ الْقَوْمِ الَّذِيْنَ
كَذَّبُوْا بِاٰيٰتِ اللّٰهِ ۭ وَاللّٰهُ لَا يَهْدِي
الْقَوْمَ الظّٰلِمِيْنَ ⑤
قُلْ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ هَادُوْٓا اِنْ زَعَمْتُمْ
اَنَّكُمْ اَوْلِيَاۗءُ لِلّٰهِ مِنْ دُوْنِ النَّاسِ
فَتَمَنَّوُا الْمَوْتَ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ⑥
وَلَا يَتَمَنَّوْنَهٗٓ اَبَدًۢا بِمَا قَدَّمَتْ اَيْدِيْهِمْ ۭ
وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ بِالظّٰلِمِيْنَ ⑦
قُلْ اِنَّ الْمَوْتَ الَّذِيْ تَفِرُّوْنَ مِنْهُ
فَاِنَّهٗ مُلٰقِيْكُمْ ثُمَّ تُرَدُّوْنَ اِلٰى عٰلِمِ
الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ فَيُنَبِّئُكُمْ بِمَا كُنْتُمْ
تَعْمَلُوْنَ ⑧ ع
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِذَا نُوْدِيَ لِلصَّلٰوةِ

जाए, तो अल्लाह के ज़िक्र की तरफ़ दौड़ पड़ो और ख़रीद व फ़रोख़्त छोड़ दो, यह तुम्हारे लिए बेहतर है, अगर तुम जानो।

10. फिर जब नमाज़ पूरी हो जाए, तो ज़मीन में फैल जाओ और अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करो, और अल्लाह को बकसरत याद करते रहो, ताकि तुम कामयाब हो।

11. और जब वो तिजारत या खेल तमाशा देखते हैं, तो उसकी तरफ़ टूट पड़ते हैं और तुम्हें खड़ा छोड़ देते हैं। कह दो, "जो कुछ अल्लाह के पास है वह तमाशे और तिजारत से कहीं बेहतर है और अल्लाह बेहतरीन राज़िक़ है"।

सूरह अल-मुनाफ़िक़ून मदनी

(आयतें 11, रुकूआत 2)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. जब मुनाफ़िक़ीन तुम्हारे पास आते हैं, तो कहते हैं कि "हम गवाही देते हैं कि आप यक़ीनन अल्लाह के रसूल हैं"। अल्लाह जानता है कि तुम बेशक उसके रसूल हो, मगर अल्लाह गवाही देता है कि ये मुनाफ़िक़ीन क़तई झूटे हैं।

2. उन्होंने अपनी क़स्मों को ढाल बना रखा है, इस तरह वो अल्लाह के रास्ते से रोकते हैं यक़ीनन बुरा है जो वो कर रहे हैं।

3. यह इसलिए कि वो ईमान लाए फिर उन्होंने कुफ़्र का इरतिकाब किया; लिहाज़ा उनके दिलों पर मुहर लगा दी गई, अब वो कुछ नहीं समझते।

4. तुम उन्हें देखते हो तो उनके जिस्म तुम्हें अच्छे लगते हैं; और अगर वो बात करें, तो तुम उनकी बात सुनते रह जाओ, मगर यह ऐसा ही है गोया वो लकड़ी के कुन्दे हैं, जिन्हें लिबास पहनाकर दीवारों से टेक लगा दी गई हो। हर ज़ोर की आवाज़ को वो अपने ही ख़िलाफ़ समझते हैं। वही असली दुश्मन हैं; पस उनसे बचकर रहो। अल्लाह की मार उनपर! वो कहां औंधे हुए जा रहे हैं!

5. और जब उनसे कहा जाता है कि "आओ अल्लाह का रसूल तुम्हारे लिए मग़फ़िरत की दुआ करे", तो वो अपने सर मटकाते हैं, और तुम देखते हो कि वो मग़रूर होकर खिंचे रहते हैं।

मिंय्यौमिल्-जुमु-अति फस्औ इला ज़िक्रिल्लाहि व ज़रुल्-बै-अ, ज़ालिकुम् ख़ैरुल्-लकुम् इन् कुन्तुम् तअ्लमून (9)

फ-इज़ा क़ुज़ि-यतिस्सलातु फ़न्तशिरू फ़िल्अर्ज़ि वब्तग़ू मिन् फ़ज़्लिल्लाहि वज़्कुरुल्ला-ह कसीरल्-लअ़ल्लकुम् तुफ़्लिहून (10)

व इज़ा रऔ तिजा-रतन् औ लह्-व-निन्फ़ज़्ज़ू इलैहा व त-रकू-क क़ाइमन्, क़ुल् मा अ़िन्दल्लाहि ख़ैरुम्-मिनल्-लह्वि व मिनत्तिजा-रति, वल्लाहु ख़ैरुर्-राज़िक़ीन (11) ●

63 सूरतुल-मुनाफ़िक़ून

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 821 अक्षर, 183 शब्द, 11 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इज़ा जा-अकल्-मुनाफ़िक़ू-न क़ालू नश्हदु इन्न-क ल-रसूलुल्लाहि ● वल्लाहु यअ्लमु इन्न-क ल-रसूलुहू, वल्लाहु यश्हदु इन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न लकाज़िबून (1)

इत्त-ख़ज़ू ऐमा-नहुम् जुन्नतन् फ़-सद्दू अ़न् सबीलिल्लाहि, इन्नहुम् सा-अ मा कानू यअ्मलून (2)

ज़ालि-क बि-अन्नहुम् आमनू सुम्-म क-फ़रू फ़-तुबि-अ अ़ला क़ुलूबिहिम् फ़हुम् ला यफ़्क़हून (3)

व इज़ा रऐ-तहुम् तुअ्जिबु-क अज्सामुहुम, व इंय्यक़ूलू तस्मअ् लिक़ौलिहिम्, क-अन्नहुम् ख़ुशुबुम् मुसन्न-दतुन्, यह्सबू-न कुल-ल सै-हतिन् अ़लैहिम, हुमुल्-अ़दुव्वु फ़ह्ज़र्हुम, क़ा-त-लहुमुल्लाहु अन्ना युअ्फ़कून (4)

व इज़ा क़ी-ल लहुम् तआ़लौ यस्तग़्फ़िर् लकुम् रसूलुल्लाहि लव्वौ रुऊ-सहुम् व रऐ-तहुम् यसुद्दू-न व हुम्-मुसतक्बिरून (5)

مِنْ يَّوْمِ الْجُمُعَةِ فَاسْعَوْا اِلٰى ذِكْرِ
اللّٰهِ وَذَرُوا الْبَيْعَ ؕ ذٰلِكُمْ خَيْرٌ لَّكُمْ اِنْ
كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٩
فَاِذَا قُضِيَتِ الصَّلٰوةُ فَانْتَشِرُوْا فِى
الْاَرْضِ وَابْتَغُوْا مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ وَاذْكُرُوا
اللّٰهَ كَثِيْرًا لَّعَلَّكُمْ تُفْلِحُوْنَ ۝١٠
وَاِذَا رَاَوْا تِجَارَةً اَوْ لَهْوَا ا نْفَضُّوْا
اِلَيْهَا وَتَرَكُوْكَ قَآئِمًا ؕ قُلْ مَا عِنْدَ
اللّٰهِ خَيْرٌ مِّنَ اللَّهْوِ وَمِنَ التِّجَارَةِ ؕ
ع ١٢ وَاللّٰهُ خَيْرُ الرّٰزِقِيْنَ ۝١١

سُوْرَةُ الْمُنٰفِقُوْنَ مَدَنِيَّةٌ، اٰيَاتُهَا ١١، رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِذَا جَآءَكَ الْمُنٰفِقُوْنَ قَالُوْا نَشْهَدُ اِنَّكَ
لَرَسُوْلُ اللّٰهِ ۘ وَاللّٰهُ يَعْلَمُ اِنَّكَ لَرَسُوْلُهٗ ؕ
وَاللّٰهُ يَشْهَدُ اِنَّ الْمُنٰفِقِيْنَ لَكٰذِبُوْنَ ۝١
اِتَّخَذُوْۤا اَيْمَانَهُمْ جُنَّةً فَصَدُّوْا عَنْ
سَبِيْلِ اللّٰهِ ؕ اِنَّهُمْ سَآءَ مَا كَانُوْا يَعْمَلُوْنَ ۝٢
ذٰلِكَ بِاَنَّهُمْ اٰمَنُوْا ثُمَّ كَفَرُوْا فَطُبِعَ
عَلٰى قُلُوْبِهِمْ فَهُمْ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٣
وَاِذَا رَاَيْتَهُمْ تُعْجِبُكَ اَجْسَامُهُمْ ؕ
وَاِنْ يَّقُوْلُوْا تَسْمَعْ لِقَوْلِهِمْ ؕ كَاَنَّهُمْ
خُشُبٌ مُّسَنَّدَةٌ ؕ يَحْسَبُوْنَ كُلَّ صَيْحَةٍ
عَلَيْهِمْ ؕ هُمُ الْعَدُوُّ فَاحْذَرْهُمْ ؕ قٰتَلَهُمُ
اللّٰهُ ۚ اَنّٰى يُؤْفَكُوْنَ ۝٤
وَاِذَا قِيْلَ لَهُمْ تَعَالَوْا يَسْتَغْفِرْ لَكُمْ
رَسُوْلُ اللّٰهِ لَوَّوْا رُءُوْسَهُمْ وَرَاَيْتَهُمْ
يَصُدُّوْنَ وَهُمْ مُّسْتَكْبِرُوْنَ ۝٥

6. उनके लिए यकसां है, तुम ने उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ की हो या उनके लिए मग़फ़िरत की दुआ न की हो, अल्लाह उन्हें हरगिज़ माफ़ न करेगा। यक़ीनन अल्लाह फ़ासिक़ लोगों को हिदायत नहीं दिया करता।

7. ये वही लोग हैं जो कहते हैं कि "उन लोगों पर ख़र्च न करो जो अल्लाह के रसूल के पास जमा हैं ताकि वो मुंतशिर हो जाएं"; हालांकि आसमानों और ज़मीन के ख़ज़ाने अल्लाह ही के हैं, मगर ये मुनाफ़िक़ीन समझते नहीं।

8. वो कहते हैं कि "अगर हम मदीना लौट कर गए, तो जो ग़ालिब और ज़ोरवाला है वह ज़लीलतर को वहां से निकाल बाहर करेगा"; हालांकि इज़्ज़त और ग़लबा अल्लाह और उसके रसूल और मोमिनीन के लिए है, मगर ये मुनाफ़िक़ीन जानते नहीं।

9. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम्हारे माल तुम्हें अल्लाह की याद से ग़ाफ़िल न कर दें और न तुम्हारी औलाद ही, जो ऐसा करे तो ऐसे ही लोग ख़सारे मे रहने वाले हैं।

10. जो कुछ हमने तुम्हें दिया है उसमें से ख़र्च करो इससे पहले कि तुममें से किसी को मौत आ जाए और उस वक़्त वह कहने लगे, "ऐ मेरे रब, तूने मुझे एक वक़्त-ए-क़रीब तक क्यों न और मुहलत दी कि मैं सदक़ा करता? (मुहलत दे कि मैं सदक़ा दूंगा) और सालेहीन मैं शामिल हो जाऊंगा।

11. मगर अल्लाह किसी जान को जब उसका वक़्त-ए-मुक़र्रर आ जाता है, हरगिज़ मुहलत नहीं देता। और जो कुछ भी तुम करते हो ख़ुदा उससे बाख़बर है।

सूरह अत्-तग़ाबुन मदनी

(आयतें 18, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अल्लाह की तसबीह कर रही है हर वह चीज़ जो आसमानों में है और जो ज़मीन में है। उसी की बादशाही है और उसी के लिए तारीफ़ है, और वह हर चीज़ पर क़ादिर है।

2. वही है जिसने तुम्हें पैदा किया, फिर कोई तो तुममें से काफ़िर है, और

सवाउन् अ़लैहिम् अस्तग़्फ़र्-त लहुम् अम् लम् तस्तग़्फ़िर् लहुम्, लंय्यग़्फ़िरल्लाहु लहुम्, इन्नल्ला-ह ला यह्दिल् क़ौमल्-फ़ासिक़ीन (6)

हुमुल्लज़ी-न यक़ूलू-न ला तुन्फ़िक़ू अ़ला मन् अ़िन्-द रसूलिल्लाहि हत्ता यन्फ़ज़्ज़ू, व लिल्लाहि ख़ज़ा-इनुस्समावाति वल्अर्ज़ि व लाकिन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न ला यफ़्क़हून (7)

यक़ूलू-न ल-इर्रजअ्ना इलल्-मदीनति लयुख़्रिजन्नल्-अ-अज़्ज़ु मिनहल्-अ-ज़ल्-ल, व लिल्लाहिल्-अ़िज़्ज़तु व लि-रसूलिही व लिल्-मुअ्मिनी-न व लाकिन्नल्-मुनाफ़िक़ी-न ला यअ्लमून (8) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू ला तुल्हिकुम् अम्वालुकुम् व ला औलादुकुम् अ़न् ज़िक्रिल्लाहि व मंय्यफ़अ़ल् ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल-ख़ासिरून (9)

व अन्फ़िक़ू मिम्मा रज़क़्नाकुम् मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-य अ-ह-दकुमुल्-मौतु फ़-यक़ू-ल रब्बि ली ला अख़्ख़र्-तनी इला अ-जलिन् क़रीबिन् फ़-अस्सद्द-क़ व अकुम्-मिनस्सालिहीन (10)

व लंय्यु-अख़्ख़िरल्लाहु नफ़्सन् इज़ा जा-अ-जलुहा, वल्लाहु ख़बीरुम्-बिमा तअ्मलून (11) ●

64 सूरतुत्-तग़ाबुनि

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1122 अक्षर, 247 शब्द, 18 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

युसब्बिहु लिल्लाहि मा फ़िस्समावाति व मा फ़िल्अर्ज़ि लहुल्-मुल्कु व लहुल्-हम्दु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (1)

हुवल्लज़ी ख़-ल-क़कुम् फ़-मिन्कुम् काफ़िरुंव्-व मिन्कुम्

سَوَآءٌ عَلَيْهِمْ اَسْتَغْفَرْتَ لَهُمْ اَمْ لَمْ
تَسْتَغْفِرْ لَهُمْ ؕ لَنْ يَّغْفِرَ اللّٰهُ لَهُمْ ؕ اِنَّ
اللّٰهَ لَا يَهْدِی الْقَوْمَ الْفٰسِقِيْنَ ۝٦
هُمُ الَّذِيْنَ يَقُوْلُوْنَ لَا تُنْفِقُوْا عَلٰى
مَنْ عِنْدَ رَسُوْلِ اللّٰهِ حَتّٰى يَنْفَضُّوْا ؕ
وَلِلّٰهِ خَزَآئِنُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَلٰكِنَّ
الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَفْقَهُوْنَ ۝٧
يَقُوْلُوْنَ لَئِنْ رَّجَعْنَاۤ اِلَى الْمَدِيْنَةِ
لَيُخْرِجَنَّ الْاَعَزُّ مِنْهَا الْاَذَلَّ ؕ وَلِلّٰهِ
الْعِزَّةُ وَلِرَسُوْلِهٖ وَلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَلٰكِنَّ
ع الْمُنٰفِقِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ۝٨
يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تُلْهِكُمْ
اَمْوَالُكُمْ وَلَاۤ اَوْلَادُكُمْ عَنْ ذِكْرِ
اللّٰهِ ۚ وَمَنْ يَّفْعَلْ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْخٰسِرُوْنَ ۝٩
وَاَنْفِقُوْا مِنْ مَّا رَزَقْنٰكُمْ مِّنْ قَبْلِ
اَنْ يَّاْتِیَ اَحَدَكُمُ الْمَوْتُ فَيَقُوْلَ
رَبِّ لَوْلَاۤ اَخَّرْتَنِیْۤ اِلٰۤى اَجَلٍ قَرِيْبٍ ۙ
فَاَصَّدَّقَ وَاَكُنْ مِّنَ الصّٰلِحِيْنَ ۝١٠
وَلَنْ يُّؤَخِّرَ اللّٰهُ نَفْسًا اِذَا جَآءَ اَجَلُهَا ؕ
ع وَاللّٰهُ خَبِيْرٌۢ بِمَا تَعْمَلُوْنَ ۝١١

سُوْرَةُ التَّغَابُنِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٨ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
يُسَبِّحُ لِلّٰهِ مَا فِی السَّمٰوٰتِ وَمَا فِی
الْاَرْضِ ۚ لَهُ الْمُلْكُ وَلَهُ الْحَمْدُ ۫ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَیْءٍ قَدِيْرٌ ۝١
هُوَ الَّذِیْ خَلَقَكُمْ فَمِنْكُمْ كَافِرٌ وَّمِنْكُمْ

कोई तुममें से मोमिन; और तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उसे देख रहा है।

3. उसने आसमानों और ज़मीन को हक़ के साथ पैदा किया, और तुम्हारी सूरतगरी की तो तुम्हारी सूरतें निहायत अच्छी बनाईं; और उसी की तरफ़ अन्जामकार जाना है।

4. वह जानता है जो कुछ आसमानों और ज़मीन में है, और उसे भी जानता है जो कुछ तुम छुपाते हो और जो कुछ ज़ाहिर करते हो। अल्लाह तो सीनों तक की बात को जानता है।

5. क्या तुम्हें उन लोगों की ख़बर नहीं पहुंची जिन्होंने इससे पहले कुफ़्र किया था, फिर उन्होंने अपने काम के वबाल का मज़ा चखा, और उनके लिए एक दर्दनाक अज़ाब है?

6. यह इसलिए कि उनके पास उनके रसूल वाज़ेह दलीलें लेकर आते रहे, मगर उन्होंने कहाः "क्या एक इन्सान हमें राह दिखाएंगे?" इस तरह उन्होंने कुफ़्र किया, और मुंह फेर लिया, तब अल्लाह भी उनसे बेपरवाह हो गया। अल्लाह तो है ही बेनियाज़, अपनी ज़ात में आप महमूद।

7. जिन लोगों ने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की उन्होंने दावा किया कि वो हरगिज़ मरने के बाद उठाए न जाएंगे। कह दो, "क्यों नहीं, मेरे रब की क़सम! तुम ज़रूर उठाए जाओगे, फिर जो कुछ तुमने किया है, उससे तुम्हें आगाह कर दिया जाएगा। और यह अल्लाह के लिए निहायत आसान है"।

8. पस ईमान लाओ अल्लाह पर और उसके रसूल पर, और उस नूर पर जिसे हमने नाज़िल किया है। तुम जो कुछ भी करते हो अल्लाह उससे बाख़बर है।

9. जिस दिन जमा होने के रोज़ के लिए वह तुम्हें जमा करेगा; वही हक़ीक़त में एक-दूसरे के सामने नुक़सान के इज़हार का दिन होगा। जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार करे, उसकी बुराइयों को ख़ुदा उससे दूर कर देगा, और उसे ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, जिनमें वो हमेशा रहेंगे, यही बड़ी कामयाबी है।

10. रहे वो लोग जिन्होंने कुफ़्र किया और हमारी आयतों को झुटलाया, वही आग वाले हैं जिसमें वो हमेशा रहेंगे। अन्जामकार लौटकर पहुंचने की वह बदतरीन जगह है।

11. अल्लाह के हुक्म के बग़ैर कोई भी मुसीबत नहीं आती। जो अल्लाह पर ईमान ले आए अल्लाह उसके दिल की रहनुमाई करता है। और अल्लाह हर चीज़ को जानता है।

मुअ्मिनुन्, वल्लाहु बिमा तअ्मूल-न बसीर (2)

ख़-लक़स्-समावाति वल्अर्-ज़ बिल्हक़्क़ि व सव्व-रकुम् फ़-अह्स-न सु-व-रकुम् व इलैहिल्-मसीर (3)

यअ्लमु मा फ़िस्-समावाति वल्अर्ज़ि व यअ्लमु मा तुसिर्रू-न व मा तुअ्लिनू-न, वल्लाहु अ़लीमुम्-बिज़ातिस्सुदूर (4)

अलम् यअ्तिकुम् न-बउल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् क़ब्लु फ़-ज़ाक़ू व बा-ल अम्रिहिम् व लहुम् अ़ज़ाबुन् अलीम (5)

ज़ालि-क बि-अन्नहू कानत्-तअ्तीहिम् रुसुलुहुम् बिल्बय्यिनाति फ़क़ालू अ-ब-शरुंय्-यह्दूनना फ़-क-फ़रू व तवल्लौ वस्तग़्नल्लाहु, वल्लाहु ग़निय्युन् हमीद (6)

ज़-अमल्लज़ी-न क-फ़रू अल्लंय्युब्-असू, क़ुल् बला व रब्बी ल-तुब्अ़सुन्-न सुम्-म ल-तुनब्ब-उन्-न बिमा अ़मिल्तुम्, व ज़ालि-क अ़लल्लाहि यसीर (7)

फ़आमिनू बिल्लाहि व रसूलिही वन्नूरिल्लज़ी अन्ज़ल्ना, वल्लाहु बिमा तअ्मलू-न ख़बीर (8)

यौ-म यज्मअुकुम् लियौमिल्-जम्अि ज़ालि-क यौमुत्-तग़ाबुनि, व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि व यअ्मल् सालिहंय्-युकफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-अ़ज़ीम (9)

वल्लज़ी-न क-फ़रू व कज़्ज़बू बिआयातिना उलाइ-क अस्हाबुन्नारि ख़ालिदी-न फ़ीहा, व बिअ्सल्-मसीर●(10) ●

मा असा-ब मिम्-मुसी-बतिन् इल्ला बि-इज़्निल्लाहि, व मंय्युअ्मिम्-बिल्लाहि यह्दि क़ल्बहू, वल्लाहु बिकुल्लि शैइन् अ़लीम (11)

مُؤْمِنٌ ۚ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ بَصِيْرٌ ۝٢
خَلَقَ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضَ بِالْحَقِّ وَصَوَّرَكُمْ
فَاَحْسَنَ صُوَرَكُمْ ۚ وَاِلَيْهِ الْمَصِيْرُ ۝٣
يَعْلَمُ مَا فِي السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَيَعْلَمُ
مَا تُسِرُّوْنَ وَمَا تُعْلِنُوْنَ ۚ وَاللّٰهُ عَلِيْمٌۢ
بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ۝٤
اَلَمْ يَاْتِكُمْ نَبَؤُا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ قَبْلُ ۫
فَذَاقُوْا وَبَالَ اَمْرِهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ اَلِيْمٌ ۝٥
ذٰلِكَ بِاَنَّهٗ كَانَتْ تَّاْتِيْهِمْ رُسُلُهُمْ
بِالْبَيِّنٰتِ فَقَالُوْٓا اَبَشَرٌ يَّهْدُوْنَنَا ۫
فَكَفَرُوْا وَتَوَلَّوْا وَّاسْتَغْنَى اللّٰهُ ۭ
وَاللّٰهُ غَنِيٌّ حَمِيْدٌ ۝٦
زَعَمَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْٓا اَنْ لَّنْ يُّبْعَثُوْا ۭ
قُلْ بَلٰى وَرَبِّيْ لَتُبْعَثُنَّ ثُمَّ لَتُنَبَّؤُنَّ
بِمَا عَمِلْتُمْ ۭ وَذٰلِكَ عَلَى اللّٰهِ يَسِيْرٌ ۝٧
فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَرَسُوْلِهٖ وَالنُّوْرِ الَّذِيْٓ
اَنْزَلْنَا ۭ وَاللّٰهُ بِمَا تَعْمَلُوْنَ خَبِيْرٌ ۝٨
يَوْمَ يَجْمَعُكُمْ لِيَوْمِ الْجَمْعِ ذٰلِكَ يَوْمُ
التَّغَابُنِ ۭ وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ
صَالِحًا يُّكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّاٰتِهٖ وَيُدْخِلْهُ
جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَآ اَبَدًا ۭ ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْعَظِيْمُ ۝٩
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا وَكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَآ اُولٰۗىِٕكَ
اَصْحٰبُ النَّارِ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝١٠
مَآ اَصَابَ مِنْ مُّصِيْبَةٍ اِلَّا بِاِذْنِ اللّٰهِ ۭ
وَمَنْ يُّؤْمِنْ بِاللّٰهِ يَهْدِ قَلْبَهٗ ۭ وَاللّٰهُ
بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيْمٌ ۝١١

12. अल्लाह की इताअत करो, और रसूल की इताअत करो; लेकिन अगर तुम मुंह मोड़ते हो, तो हमारे रसूल पर तो सिर्फ़ वाज़ेह तौरपर पहुंचा देने ही की ज़िम्मेदारी है।

13. अल्लाह वह है जिसके सिवा कोई माबूद नही। लिहाज़ा अल्लाह ही पर मोमिनीन को भरोसा करना चाहिए।

14. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, तुम्हारी बीवियों और तुम्हारी औलाद में से बाज़ तुम्हारे लिए दुश्मन हैं; लिहाज़ा उनसे मुहतात रहो, और अगर तुम माफ़ कर दो और दरगुज़र कर जाओ, और बख़्श दो, तो यक़ीनन अल्लाह बख़्शने वाला, निहायत रहमवाला है।

15. तुम्हारे माल और तुम्हारी औलाद तो महज़ एक आज़माइश हैं; और अल्लाह ही है जिसके पास बड़ा अजर है।

16. लिहाज़ा जहां तक तुम्हारे बस में हो अल्लाह का डर रखो, और सुनो, और इताअत करो, और ख़र्च करो, यह तुम्हारे ही लिए बेहतर है। और जो अपने नफ़्स के बुख़्ल व हिर्स से बचा लिया गया तो ऐसे ही लोग कामयाब हैं।

17. अगर तुम अल्लाह को क़र्ज़-ए-हसन दो, तो वह उसे तुम्हारे लिए कई गुना बढ़ा देगा, और तुम्हें बख़्श देगा। अल्लाह बड़ा क़द्रदान, बड़ा बुर्दबार है,

18. ग़ायब और हाज़िर को जानता है, ज़बरदस्त, निहायत हिकमतवाला है।

सूरह अत्-तलाक़ मदनी

(आयतें 12, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ऐ नबी, जब तुम औरतों को तलाक़ दो, तो उन्हें तलाक़ उनकी इद्दत के हिसाब से दो। इद्दत को शुमार करो, और अल्लाह का डर रखो जो तुम्हारा रब है। उन्हें उनके घरों से न निकालो और न वो ख़ुद निकलें, सिवाय यह कि वो किसी खुली बेहयाई की मुरतकिब हो चुकी हों। यह अल्लाह के मुक़र्रर करदा हुदूद हैं — और जो अल्लाह के हुदूद से तजावुज़ करे तो उसने ख़ुद अपने आप पर ज़ुल्म किया — तुम नहीं जानते, शायद अल्लाह इसके बाद कोई नई सूरत पैदा कर दे।

व अतीउल्ला-ह व अतीउर्-रसू-ल फ़-इन् तवल्लैतुम् फ़-इन्नमा अ़ला रसूलिनल्-बलाग़ुल्-मुबीन (12)

अल्लाहु ला इला-ह इल्ला हु-व, व अ़लल्लाहि फ़ल्य-तवक्कलिल्-मुअ्मिनून (13)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू इन्-न मिन् अज़्वाजिकुम् व औलादिकुम् अ़दुव्वल्-लकुम् फ़ह्ज़रूहुम् व इन् तअ्फ़ू व तस्फ़हू व तग़्फ़िरू फ़-इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्रहीम (14)

इन्नमा अम्वालुकुम् व औलादुकुम् फ़ित्-नतुन्, वल्लाहु अ़िन्दहू अज्रुन् अ़ज़ीम (15)

फ़त्तक़ुल्ला-ह मस्त-तअ्तुम् वस्-मअू व अतीअू व अन्फ़िक़ू ख़ैरल्-लिअन्फ़ुसिकुम्, व मंय्यू-क़ शुह्-ह नफ़्सिही फ़-उलाइ-क हुमुल्-मुफ़्लिहून (16)

इन् तुक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनंय्-युज़ाअिफ़्हु लकुम् व यग़्फ़िर् लकुम्, वल्लाहु शकूरुन् हलीम (17)

आ़लिमुल्-ग़ैबि वश्शहा-दतिल्-अ़ज़ीज़ुल्-हकीम (18) ●

65 सूरतुत्–तलाक़ि

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1237 अक्षर, 298 शब्द, 12 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहन्नबिय्यु इज़ा तल्लक़्तुमुन्-निसा-अ फ़-तल्लिक़ूहुन्-न लिअ़िद्-दति-हिन्-न व अह्सुल्-अ़िद्-द-त वत्तक़ुल्ला-ह रब्बकुम् ला तुख़्रिजूहुन्-न मिम्-बुयूतिहिन्-न व ला यख़्रुज्-न इल्ला अंय्यअ्ती-न बिफ़ाहि-शतिम् मुबय्यि-नतिन्, व तिल्-क हुदूदुल्लाहि, व मंय्य-त-अ़द्-द हुदूदल्लाहि फ़-क़द् ज़-ल-म नफ़्सहू, ला तद्री लअ़ल्लल्ला-ह युह्दिसु बअ्-द ज़ालि-क अम्रा (1)

وَاَطِيْعُوا اللّٰهَ وَاَطِيْعُوا الرَّسُوْلَ ۚ
فَاِنْ تَوَلَّيْتُمْ فَاِنَّمَا عَلٰى رَسُوْلِنَا
الْبَلٰغُ الْمُبِيْنُ ⑫
اَللّٰهُ لَآ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ ۭ وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ
الْمُؤْمِنُوْنَ ⑬
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنَّ مِنْ اَزْوَاجِكُمْ
وَاَوْلَادِكُمْ عَدُوًّا لَّكُمْ فَاحْذَرُوْهُمْ ۚ
وَاِنْ تَعْفُوْا وَتَصْفَحُوْا وَتَغْفِرُوْا فَاِنَّ
اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑭
اِنَّمَآ اَمْوَالُكُمْ وَاَوْلَادُكُمْ فِتْنَةٌ ۭ
وَاللّٰهُ عِنْدَهٗٓ اَجْرٌ عَظِيْمٌ ⑮
فَاتَّقُوا اللّٰهَ مَا اسْتَطَعْتُمْ وَاسْمَعُوْا
وَاَطِيْعُوْا وَاَنْفِقُوْا خَيْرًا لِّاَنْفُسِكُمْ ۭ
وَمَنْ يُّوْقَ شُحَّ نَفْسِهٖ فَاُولٰۗىِٕكَ
هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ⑯
اِنْ تُقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا يُّضٰعِفْهُ
لَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ۭ وَاللّٰهُ شَكُوْرٌ حَلِيْمٌ ⑰
ع عٰلِمُ الْغَيْبِ وَالشَّهَادَةِ الْعَزِيْزُ الْحَكِيْمُ ⑱

سُوْرَةُ الطَّلَاقِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٢ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ اِذَا طَلَّقْتُمُ النِّسَاۗءَ فَطَلِّقُوْهُنَّ
لِعِدَّتِهِنَّ وَاَحْصُوا الْعِدَّةَ ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ
رَبَّكُمْ ۚ لَا تُخْرِجُوْهُنَّ مِنْ بُيُوْتِهِنَّ
وَلَا يَخْرُجْنَ اِلَّآ اَنْ يَّاْتِيْنَ بِفَاحِشَةٍ
مُّبَيِّنَةٍ ۭ وَتِلْكَ حُدُوْدُ اللّٰهِ ۭ وَمَنْ يَّتَعَدَّ
حُدُوْدَ اللّٰهِ فَقَدْ ظَلَمَ نَفْسَهٗ ۭ لَا تَدْرِيْ
لَعَلَّ اللّٰهَ يُحْدِثُ بَعْدَ ذٰلِكَ اَمْرًا ①

2. फिर जब वो अपनी मुक़र्रर मुद्दत को पहुंचें, तो या तो उन्हें दस्तूर के मुताबिक़ रोक लो, या दस्तूर के मुताबिक अलग कर दो। और अपने में से दो साहिबे अद्ल आदमियों को गवाह बना लो; और अल्लाह के लिए गवाही को क़ायम रखो। इसकी नसीहत उसे की जाती है जो अल्लाह और आख़िरत के दिन पर ईमान रखता हो। जो कोई अल्लाह का डर रखेगा, उसके लिए वह (मुश्किलात और परेशानियों से) निकलने की राह पैदा कर देगा,

3. और उसे वहां से रिज़्क़ देगा जिसका उसे गुमान भी न होगा। जो अल्लाह पर भरोसा करे, तो वह उसके लिए काफ़ी है। यक़ीनन अल्लाह अपना काम पूरा कर के रहता है। अल्लाह ने हर एक चीज़ का एक अन्दाज़ा मुक़र्रर कर रखा है।

4. और तुम्हारी औरतों में से जो हैज़ से मायूस हो चुकी हों, अगर तुम्हें शुबह हो, तो उनकी इद्दत तीन महीने है, और इसी तरह उनकी भी जिन्हें अभी हैज नहीं आया। और जो हामिला हों उनकी इद्दत बच्चा जनने तक है। जो कोई अल्लाह का डर रखेगा, उसके मुआमले में वह आसानी पैदा कर देगा,

5. यह अल्लाह का हुक्म है, जो उसने तुम्हारी तरफ़ नाज़िल फ़रमाया है। और जो कोई अल्लाह का डर रखेगा, उससे वह उसकी बुराइयों को दूर कर देगा, और उसके अज्र को बढ़ा देगा।

6. जहां तुम ख़ुद रहते हो, उन्हें उसी जगह रखो, और अपनी हैसियत के मुताबिक उनपर ख़र्च करो, और उन्हें तंग करने के लिए उनको तकलीफ न पहुंचाओ और अगर वो हामिला हों तो उनके बच्चे जनने तक उनपर ख़र्च करते रहो। फिर अगर वो तुम्हारी ख़ातिर दूध पिलाएं, तो तुम उन्हें उनके मुआवज़े दो, और आपस में दस्तूर के मुताबिक़ बाहमी मशवरे से एक क़रारदाद तय कर लो। और अगर तुम दोनों कोई ज़हमत महसूस करो, तो फिर दूसरी औरत उसकी ख़ातिर दूध पिलाएगी।

7. चाहिए कि वुसअतवाला अपनी वुसअत के मुताबिक़ ख़र्च करे और जिसे उसका रिज़्क़ नपा-तुला ही मिला हो, तो उसे चाहिए कि अल्लाह ने उसे जो कुछ भी दिया है उसी में से वह ख़र्च करे। अल्लाह किसी जान पर बस उसी के मुताबिक़ ज़िम्मेदारी का बोझ डालता है जो कुछ उसे उसने दिया है। जल्द ही अल्लाह तंगी व सख़्ती के बाद आसानी पैदा कर देगा।

8. कितनी ही बस्तियां हैं जिन्होंने अपने रब और उसके रसूलों के हुक्म के मुक़ाबले में सरकशी की; तो उनसे हमने

फ़-इज़ा बलग़्-न अ-ज-लहुन्-न फ़-अम्सिकूहुन्-न बि-मअ्रूफ़िन् औ फ़ारिक़ूहुन्-न बि-मअ्रूफ़िंव्-व अश्हिदू ज़वै अ़द्लिम्-मिन्कुम् व अक़ीमुश्शहा-द-त लिल्लाहि, ज़ालिकुम् यू-अ़ज़ु बिही मन् का-न युअ्मिनु बिल्लाहि वल्यौमिल्-आख़िरि, व मंय्यत्तक़िल्ला-ह यज्अ़ल्-लहू मख़्-रजा (2)

व यर्ज़ुक़्हु मिन् हैसु ला यह्तसिबु, व मंय्य-तवक्कल् अ़लल्लाहि फ़हु-व हस्बुहू, इन्नल्ला-ह बालिग़ु अम्रिही, क़द् ज-अ़लल्लाहु लिकुल्लि शैइन् क़द्रा (3)

वल्लाई य-इस्-न मिनल्-महीज़ि मिन्-निसाइकुम् इनिर्तब्तुम् फ़-अ़िद्दतुहुन्-न सला-सतु अश्हुरिंव्-वल्लाई लम् यहिज़्-न, व उलातुल्-अह्मालि अ-जलुहुन्-न अंय्यज़अ्-न हम्ल-हुन्-न, व मंय्यत्तक़िल्ला-ह यज्अ़ल्-लहू मिन् अम्रिही युस्रा (4)

ज़ालि-क अम्रुल्लाहि अन्ज़-लहू इलैकुम्, व मंय्यत्तक़िल्ला-ह युकफ़्फ़िर् अ़न्हु सय्यिआतिही व युअ्ज़िम् लहू अज्रा (5)

अस्किनूहुन्-न मिन् हैसु स-कन्तुम् मिंव्वुज्दिकुम् व ला तुज़ार्रूहुन्-न लि-तुज़य्यिक़ू अ़लैहिन्-न, व इन् कुन्-न उलाति हम्लिन् फ़-अन्फ़िक़ू अ़लैहिन्-न हत्ता यज़अ्-न हम्-लहुन्-न फ़-इन् अर्ज़अ्-न लकुम् फ़-आतूहुन्-न उजू-रहुन्-न वअ्तमिरू बैनकुम् बि-मअ्रूफ़िन् व इन् तआ़सर्तुम् फ़-सतुर्ज़िअ़ु लहू उख़्रा (6)

लियुन्फ़िक़् ज़ू स-अ़तिम्-मिन् स-अ़तिही, व मन् क़ुदि-र अ़लैहि रिज़्क़ुहू फ़ल्युन्फ़िक़् मिम्मा आताहुल्लाहु, ला युकल्लिफ़ुल्लाहु नफ़्सन् इल्ला मा आताहा, स-यज्-अ़लुल्लाहु बअ्-द अुसरिंय्-युसरा (7) ●

व क-अय्यिम् मिन् क़र्-यतिन् अ़तत् अ़न् अम्रि रब्बिहा व रुसुलिही फ़-हासब्नाहा हिसाबन् शदीदंव्-व

فَإِذَا بَلَغْنَ أَجَلَهُنَّ فَأَمْسِكُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ
أَوْ فَارِقُوهُنَّ بِمَعْرُوفٍ وَأَشْهِدُوا ذَوَيْ
عَدْلٍ مِّنكُمْ وَأَقِيمُوا الشَّهَادَةَ لِلَّهِ ۚ
ذَٰلِكُمْ يُوعَظُ بِهِ مَن كَانَ يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ
الْآخِرِ ۚ وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ يَجْعَل لَّهُ مَخْرَجًا ۝٢
وَيَرْزُقْهُ مِنْ حَيْثُ لَا يَحْتَسِبُ ۚ وَمَن
يَتَوَكَّلْ عَلَى اللَّهِ فَهُوَ حَسْبُهُ ۚ إِنَّ اللَّهَ بَالِغُ
أَمْرِهِ ۚ قَدْ جَعَلَ اللَّهُ لِكُلِّ شَيْءٍ قَدْرًا ۝٣
وَاللَّائِي يَئِسْنَ مِنَ الْمَحِيضِ مِن نِّسَائِكُمْ
إِنِ ارْتَبْتُمْ فَعِدَّتُهُنَّ ثَلَاثَةُ أَشْهُرٍ وَاللَّائِي
لَمْ يَحِضْنَ ۚ وَأُولَاتُ الْأَحْمَالِ أَجَلُهُنَّ
أَن يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ
يَجْعَل لَّهُ مِنْ أَمْرِهِ يُسْرًا ۝٤
ذَٰلِكَ أَمْرُ اللَّهِ أَنزَلَهُ إِلَيْكُمْ ۚ وَمَن يَتَّقِ اللَّهَ
يُكَفِّرْ عَنْهُ سَيِّئَاتِهِ وَيُعْظِمْ لَهُ أَجْرًا ۝٥
أَسْكِنُوهُنَّ مِنْ حَيْثُ سَكَنتُم مِّن وُجْدِكُمْ
وَلَا تُضَارُّوهُنَّ لِتُضَيِّقُوا عَلَيْهِنَّ ۚ وَإِن
كُنَّ أُولَاتِ حَمْلٍ فَأَنفِقُوا عَلَيْهِنَّ حَتَّىٰ
يَضَعْنَ حَمْلَهُنَّ ۚ فَإِنْ أَرْضَعْنَ لَكُمْ
فَآتُوهُنَّ أُجُورَهُنَّ ۖ وَأْتَمِرُوا بَيْنَكُم بِمَعْرُوفٍ ۖ
وَإِن تَعَاسَرْتُمْ فَسَتُرْضِعُ لَهُ أُخْرَىٰ ۝٦
لِيُنفِقْ ذُو سَعَةٍ مِّن سَعَتِهِ ۖ وَمَن قُدِرَ
عَلَيْهِ رِزْقُهُ فَلْيُنفِقْ مِمَّا آتَاهُ اللَّهُ ۚ
لَا يُكَلِّفُ اللَّهُ نَفْسًا إِلَّا مَا آتَاهَا ۚ سَيَجْعَلُ
ع اللَّهُ بَعْدَ عُسْرٍ يُسْرًا ۝٧
وَكَأَيِّن مِّن قَرْيَةٍ عَتَتْ عَنْ أَمْرِ
رَبِّهَا وَرُسُلِهِ فَحَاسَبْنَاهَا حِسَابًا شَدِيدًا

सख़्त मुहासबा किया और वहशतअंगेज़ अज़ाब उन्हें दिया।

9. पस उन्होंने अपने किए के वबाल का मज़ा चखा और उनका अन्जामकार ख़सारा ही रहा।

10. अल्लाह ने उनके लिए सख़्त अज़ाब मुहय्या कर रखा है। पस ऐ अक़्ल व ख़िरदवालो, जो ईमान लाए हो, अल्लाह का डर रखो, अल्लाह ने तुम्हारी तरफ़ ज़िक्र उतार दिया है,

11. (यानी) एक रसूल जो तुम्हें अल्लाह की वाज़ेह आयतें पढ़कर सुनाता है, ताकि वह उन लोगों को जो ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए तारीकियों से निकाल कर रौशनी की तरफ़ ले आए। जो कोई अल्लाह पर ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार करे, उसे वह ऐसे बाग़ों में दाख़िल करेगा जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी — उनमें ऐसे लोग हमेशा दायमी तौर से रहेंगे अल्लाह ने उनके लिए बेहतरीन रिज़्क़ रखा है।

12. अल्लाह ही है जिसने सात आसमान बनाए, और उन्हीं के मानिन्द ज़मीन भी, उनके दरमियान हुक्म नाज़िल होता है, ताकि तुम जान लो कि अल्लाह को हर चीज़ पर क़ुदरत हासिल है और यह कि अल्लाह बएतिबारे इल्म हर चीज़ पर मुहीत है।

सूरह अत्-तहरीम मदनी

(आयतें 12, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ऐ नबी, जिस चीज़ को अल्लाह ने तुम्हारे लिए जायज़ ठहराया है, उसे तुम अपनी बीवियों की रिज़ाजोई में क्यों हराम करते हो? अल्लाह बख़्शनेवाला, निहायत रहमवाला है।

2. अल्लाह ने तुम लोगों के लिए तुम्हारी अपनी क़समों की पाबन्दी से निकलने का तरीक़ा मुक़र्रर फ़रमा दिया है। अल्लाह तुम्हारा सरपरस्त है, और वही सब कुछ जानने वाला, बड़ी हिकमत वाला है।

3. जब नबी ने अपनी बीवियों में से किसी से राज़ में एक बात कही, फिर जब उसने उसकी ख़बर (दूसरी बीवी को) कर दी, और अल्लाह ने इसे उस (नबी) पर ज़ाहिर कर दिया, तो उसने उसे किसी हद तक जता दिया, और किसी हद तक उससे एराज़ किया; फिर जब नबी ने उसकी उसे ख़बर की, तो वह बोली, "आपको इसकी ख़बर किसने दी?" उसने कहा, "मुझे उसने ख़बर दी जो सब कुछ जाननेवाला, बाख़बर है"।

अ़ज़्ज़ब्नाहा अ़ज़ाबन्-नुक्रा (8)
फ़-ज़ाक़त् व बा-ल अम्रिहा व का-न आक़ि-बतु अम्रिहा ख़ुस्रा (9)
अ-अ़द्दल्लाहु लहुम् अ़ज़ाबन् शदीदन् फ़त्तक़ुल्ला-ह या उलिल्-अल्बाबिल्लज़ी-न आमनू क़द् अन्ज़लल्लाहु इलैकुम् ज़िक्रा (10)
रसूलंय्-यत्लू अ़लैकुम् आयातिल्लाहि मुबय्यिनातिल्-लियुख़्रिजल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति मिनज़्ज़ुलुमाति इलन्नूरि, व मंय्युअ्मिम् बिल्लाहि व यअ्मल् सालिहंय्-युद्ख़िल्हु जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, क़द् अह्-सनल्लाहु लहू रिज़्क़ा (11)
अल्लाहुल्लज़ी ख़-ल-क सब्-अ़ समावातिंव्-व मिनल्-अर्ज़ि मिस्-लहुन्-न, य-तनज़्ज़लुल्-अम्रु बैनहुन्-न लितअ्लमू अन्नल्ला-ह अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीरुंव्-व अन्नल्ला-ह क़द् अहा-त बिकुल्लि शैइन् अ़िल्मा (12) ●

66 सूरतुत्-तह्रीमि
(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 1124 अक्षर, 253 शब्द, 12 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहन्नबिय्यु लि-म तुहर्रिमु मा अ-हल्लल्लाहु ल-क तब्तग़ी मर्ज़ा-त अज़्वाजि-क, वल्लाहु ग़फ़ूरुर्-रहीम (1)
क़द् फ़-रज़ल्लाहु लकुम् तहिल्-ल-त ऐमानिकुम् वल्लाहु मौलाकुम् व हुवल् अ़लीमुल्-हकीम (2)
व इज़् असर्रन्-नबिय्यु इला बअ्ज़ि अज़्वाजिही हदीसन् फ़-लम्मा नब्ब-अत् बिही व अज़्ह-र-हुल्लाहु अ़लैहि अ़र्र-फ़ बअ्-ज़हू व अअ्-र-ज़ अ़म्-बअ्ज़िन् फ़-लम्मा नब्ब-अहा बिही क़ालत् मन् अम्ब-अ-क हाज़ा, क़ा-ल नब्ब-अनि-यल् अ़लीमुल्-ख़बीर (3)

وَعَذَّبْنٰهَا عَذَابًا نُّكْرًا ﴿٨﴾
فَذَاقَتْ وَبَالَ اَمْرِهَا وَكَانَ عَاقِبَةُ اَمْرِهَا خُسْرًا ﴿٩﴾
اَعَدَّ اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا
اللّٰهَ يٰۤاُولِى الْاَلْبَابِ ۛۚ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛۚ
قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿١٠﴾
رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ مُبَيِّنٰتٍ
لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى النُّوْرِ ۗ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ
بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ
فِيْهَاۤ اَبَدًا ۗ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿١١﴾
اَللّٰهُ الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ
الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ۗ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ بَيْنَهُنَّ
لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ
ع وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾

سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ، اٰيَاتُهَا ١٢، رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ
لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ۗ
وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿١﴾
قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ
مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿٢﴾
وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ اَزْوَاجِهٖ
حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ
عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ
فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ۗ
قَالَ نَبَّاَنِيَ الْعَلِيْمُ الْخَبِيْرُ ﴿٣﴾

4. अगर तुम दोनों अल्लाह की तरफ़ रुजू हो, तो तुम्हारे दिल तो माइल हो ही चुके हैं; लेकिन अगर तुम उसके ख़िलाफ़ एक-दूसरे की हिमायत करोगी, तो अल्लाह उसका मौला है, और जिबरील, और तमाम सालेह अहले ईमान भी; और उसके बाद फ़रिश्ते भी पुश्त पनाह हैं।

5. बहुत मुमकिन है कि अगर वह तुम्हें तलाक़ दे दे, तो उसका रब तुम्हारे बदले में, तुमसे बेहतर बीवियां उसे अता फ़रमाए, मुस्लिम, बाईमान, फ़रमांबरदार, तौबा गुज़ार, इबादत गुज़ार अल्लाह की राह में रियाज़त करने वाली, शौहर आशना (बेवा) कुंवारियां भी।

6. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अपने आपको और अपने अहल व अयाल को उस आग से बचाओ जिसका ईंधन इनसान और पत्थर होंगे, जिसपर सख़्त मिज़ाज, ज़ोरआवर, सख़्तगीर फ़रिश्ते मुक़र्रर होंगे, जो हुक्म भी वह उन्हें देगा वो उसकी तामील में ख़ुदा की नाफ़रमानी नहीं करेंगे, और वो वही करेंगे जिसका उन्हें हुक्म दिया जाएगा।

7. ऐ लोगो जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया है, आज उज़्र पेश मत करो; तुम तो बदले में बस वही पा रहे हो जो कुछ तुम करते रहे हो।

8. ऐ लोगो जो ईमान लाए हो, अल्लाह के आगे तौबा करो, मुख़्लिसाना तौबा; बहुत मुमकिन है कि तुम्हारा रब तुमसे तुम्हारी बुराइयां दूर कर दे, और तुम्हें ऐसे बाग़ों में दाख़िल करे जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी। जिस दिन अल्लाह नबी को और उनको जो ईमान लाकर उसके साथ हुए रुसवा न करेगा, उनका नूर उनके आगे-आगे दौड़ रहा होगा, और उनके दाएं तरफ होगा, वो कह रहे होंगे, "ऐ हमारे रब, हमारे लिए हमारे नूर को मुकम्मल कर दे, और हमारी मग़फ़िरत फ़रमा; यक़ीनन तू हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है"।

9. ऐ नबी, कुफ़्फ़ार और मुनाफ़िक़ीन से जिहाद करो, और उनके साथ सख़्ती से पेश आओ, उनका ठिकाना जहन्नम है, और वह अन्जामकार लौटने की निहायत बुरी जगह है।

10. अल्लाह ने उन लोगों के लिए जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया नूह की औरत और लूत की औरत की मिसाल पेश की है; वो हमारे बन्दों में से दो सालेह बन्दों के मातहत थीं; मगर

इन् ततूबा इलल्लाहि फ़-क़द् सग़त् क़ुलूबुकुमा व इन् तज़ा-हरा अ़लैहि फ़-इन्नल्ला-ह हु-व मौलाहु व जिब्रीलु व सालिहुल्-मुअ्मिनी-न वल्मलाइ-कतु बअ्-द ज़ालि-क ज़हीर (4)

अ़सा रब्बुहू इन् तल्ल-क़कुन्-न अंय्युबदिल लहू अज़्वाजन् ख़ैरम्-मिन्कुन्-न मुस्लिमातिम्-मुअ्मिनातिन् क़ानितातिन् ता-इबातिन् आ़बिदातिन् सा-इहातिन् सय्यिबातिंव्-व अब्कारा (5)

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू क़ू अन्फ़ु-सकुम् व अह्लीकुम् नारंव्-व क़ूदुहन्नासु वल्हिजा-रतु अ़लैहा मलाइ-कतुन् ग़िलाज़ुन् शिदादुल्-ला यअ्सूनल्ला-ह मा अ-म-रहुम् व यफ़अ़लू-न मा युअ्मरून (6)

या अय्युहल्लज़ी-न क-फ़रू ला तअ्तज़िरुल्-यौ-म, इन्नमा तुज्ज़ौ-न मा कुन्तुम् तअ्मलून (7) ●

या अय्युहल्लज़ी-न आमनू तूबू इलल्लाहि तौ-बतन्-नसूहन्, अ़सा रब्बुकुम् अंय्युकफ़्फ़ि-र अ़न्कुम् सय्यिआतिकुम् व युद्ख़ि-लकुम् जन्नातिन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु यौ-म ला युख़्ज़िल्लाहुन्-नबिय्-य वल्लज़ी-न आमनू म-अ़हू नूरुहुम् यस्आ़ बै-न ऐदीहिम् व बि-ऐमानिहिम् यक़ूलू-न रब्बना अत्मिम् लना नू-रना वग़्फ़िर् लना इन्न-क अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (8)

या अय्युहन्नबिय्यु जाहिदिल्-कुफ़्फ़ा-र वल्-मुनाफ़िक़ी-न वग़्लुज़् अ़लैहिम्, व मअ्वाहुम् जहन्नमु, व बिअ्सल्-मसीर (9)

ज़-रबल्लाहु म-सलल्-लिल्लज़ी-न क-फ़रुम्-र-अ-त नूहिंव्-वम्-र-अ-त लूतिन्, का-नता तह्-त अ़ब्दैनि मिन् अ़िबादिना सालिहैनि फ़-ख़ानताहुमा फ़-लम्

اِنْ تَتُوْبَآ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ
قُلُوْبُكُمَا ۚ وَاِنْ تَظٰهَرَا عَلَيْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ
هُوَ مَوْلٰىهُ وَجِبْرِيْلُ وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ ۚ
وَالْمَلٰٓئِكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِيْرٌ ﴿٤﴾
عَسٰى رَبُّهٗٓ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ يُّبْدِلَهٗٓ
اَزْوَاجًا خَيْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ
مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓئِبٰتٍ عٰبِدٰتٍ
سٰٓئِحٰتٍ ثَيِّبٰتٍ وَّاَبْكَارًا ﴿٥﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْٓا اَنْفُسَكُمْ وَاَهْلِيْكُمْ
نَارًا وَّقُوْدُهَا النَّاسُ وَالْحِجَارَةُ عَلَيْهَا
مَلٰٓئِكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا يَعْصُوْنَ اللّٰهَ
مَآ اَمَرَهُمْ وَيَفْعَلُوْنَ مَا يُؤْمَرُوْنَ ﴿٦﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْيَوْمَ ۖ
ع اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿٧﴾
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْٓا اِلَى اللّٰهِ
تَوْبَةً نَّصُوْحًا ۖ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ يُّكَفِّرَ
عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَيُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ يَوْمَ لَا يُخْزِي
اللّٰهُ النَّبِيَّ وَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ
يَسْعٰى بَيْنَ اَيْدِيْهِمْ وَبِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ
رَبَّنَآ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَاغْفِرْ لَنَا ۚ
اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿٨﴾
يٰٓاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَالْمُنٰفِقِيْنَ وَاغْلُظْ
عَلَيْهِمْ ۚ وَمَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ۚ وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿٩﴾
ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ
نُوْحٍ وَّامْرَاَتَ لُوْطٍ ۚ كَانَتَا تَحْتَ عَبْدَيْنِ
مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ

उन दोनों औरतों ने उनसे ख़ियानत की, तो वो अल्लाह के मुक़ाबले में उनके कुछ काम न आ सके; और कह दिया गया कि "दोनों दाख़िल होने वालों के साथ आग में दाख़िल हो जाओ"।

11. और उन लोगों के लिए जो ईमान लाए अल्लाह ने फ़िरऔन की औरत की मिसाल पेश की है, जबकि उसने कहा, "मेरे रब, तू मेरे लिए अपने पास जन्नत में एक घर बना, और मुझे फ़िरऔन और उसके अमल से नजात दे, और नजात दे मुझे ज़ालिम लोगों से"।

12. और इमरान की बेटी मरयम की मिसाल पेश की है जिसने अपनी इस्मत की हिफ़ाज़त की थी, फिर हमने उस ख़ातून के अन्दर अपनी रूह फूंक दी, और उसने अपने रब के कलिमात और उसकी किताबों की तसदीक़ की और वह फ़रमांबरदारों में से थी।

सूरह अल-मुल्क मक्की

(आयतें 30, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. बड़ा ही अज़ीम व बाफ़ैज़ है वह जिसके हाथ में सारी बादशाही है। और वह हर चीज़ पर क़ुदरत रखता है।

2. जिसने पैदा की मौत और ज़िन्दगी ताकि तुम्हें आज़माकर देखे कि तुममें अमल के लिहाज़ से कौन बेहतर है! वह ज़बरदस्त, बड़ा बख़्शने वाला है।

3. जिसने तह-ब-तह सात आसमान बनाए, तुम रहमान की तख़्लीक़ में कोई बेरब्ती और रख़्ना न देखोगे। फिर नज़र को लौटाओ, क्या तुम्हें कोई ख़लल नज़र आता है?

4. फिर नज़र को दोबारा लौटाओ, निगाह नाकाम थक हारकर तुम्हारी तरफ़ पलट आएगी।

5. हमने क़रीब के आसमान को चिराग़ों से आरास्ता किया, और उन्हें शैतानों के लिए अटकलबाज़ी का ज़रिया बनाया; और उनके लिए हमने दहकती आग का अज़ाब मुहय्या कर रखा है।

6. जिन लोगों ने अपने रब के साथ कुफ़्र किया उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है और वह अन्जामकार लौटने की निहायत बुरी जगह है!

7. जब वो उसमें डाले जाएंगे, तो उसकी दहाड़ने की ख़ौफ़नाक

युग़्निया अ़न्हुमा मिनल्लाहि शैअंव्-व क़ीलद्ख़ुलन्ना-र मअ़द-दाख़िलीन (10)

व ज़-रबल्लाहु म-सलल्-लिल्लज़ी-न आमनुम्-र-अ-त फ़िर्औ-न ● इज़् क़ालत् रब्बिब्नि ली अ़िन्द-क बैतन् फ़िल्-जन्नति व नज्जिनी मिन् फ़िर्औ-न व अ़-मलिही व नज्जिनी मिनल् क़ौमिज़्ज़ालिमीन (11)

व मर्य-मब्न-त अ़िम्रानल्लती अह्-सनत् फ़र्-जहा फ़-नफ़ख़्ना फ़ीहि मिर्रूहिना व सद्द-क़त् बि-कलिमाति-रब्बिहा व कुतुबिही व कानत् मिनल्-क़ानितीन (12) ●

67 सूरतुल्-मुल्कि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1359 अक्षर, 335 शब्द, 30 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तबा-रकल्लज़ी बि-यदिहिल्-मुल्कु व हु-व अ़ला कुल्लि शैइन् क़दीर (1)

लक़ल्-मौ-त वल्हया-त लि-यब्लु-वकुम् अय्युकुम् अह्सनु अ़-मलन्, व हुवल् अ़ज़ीज़ुल्-ग़फ़ूर (2)

अल्लज़ी ख़-ल-क़ सब्-अ़ समावातिन् तिबाक़न्, मा तरा फ़ी ख़ल्क़िर्रह्मानि मिन् तफ़ावुतिन्, फ़र्जिअ़िल्-ब-स-र हल् तरा मिन् फ़ुतूर (3)

सुम्मर्जिअ़िल्-ब-स-र कर्रतैनि यन्क़लिब् इलैकल्-ब-सरु ख़ासिअंव्-व हु-व हसीर (4)

व ल-क़द् ज़य्यन्नस्समाअद्-दुन्या बि-मसाबी-ह व ज-अ़ल्नाहा रुजूमल्-लिश्शयातीनि व अअ़्तद्ना लहुम् अ़ज़ाबस्सअ़ीर (5)

व लिल्लज़ी-न क-फ़रू बिरब्बिहिम् अ़ज़ाबु जहन्न-म, व बिअ्सल-मसीर (6)

इज़ा उल्क़ू फ़ीहा समिअ़ू लहा शहीक़ंव्-व हि-य

يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ شَيْـًٔا وَّقِيْلَ
ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ۝١٠
وَضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ اٰمَنُوا امْرَاَتَ
فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ
بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ وَنَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ
وَعَمَلِهٖ وَنَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ۝١١
وَمَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْٓ اَحْصَنَتْ
فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا
وَصَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَكُتُبِهٖ
ع وَكَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ۝١٢

سُوْرَةُ الْمُلْكِ مَكِّيَّةٌ، اٰيَاتُهَا ٣٠، رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

تَبٰرَكَ الَّذِيْ بِيَدِهِ الْمُلْكُ ۡ وَهُوَ
عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرُ ۝١
الَّذِيْ خَلَقَ الْمَوْتَ وَالْحَيٰوةَ لِيَبْلُوَكُمْ
اَيُّكُمْ اَحْسَنُ عَمَلًا ۭ وَهُوَ الْعَزِيْزُ الْغَفُوْرُ ۝٢
الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ طِبَاقًا ۭ مَا
تَرٰى فِيْ خَلْقِ الرَّحْمٰنِ مِنْ تَفٰوُتٍ ۭ
فَارْجِعِ الْبَصَرَ ۙ هَلْ تَرٰى مِنْ فُطُوْرٍ ۝٣
ثُمَّ ارْجِعِ الْبَصَرَ كَرَّتَيْنِ يَنْقَلِبْ اِلَيْكَ
الْبَصَرُ خَاسِئًا وَّهُوَ حَسِيْرٌ ۝٤
وَلَقَدْ زَيَّنَّا السَّمَاۗءَ الدُّنْيَا بِمَصَابِيْحَ
وَجَعَلْنٰهَا رُجُوْمًا لِّلشَّيٰطِيْنِ وَاَعْتَدْنَا لَهُمْ
عَذَابَ السَّعِيْرِ ۝٥
وَلِلَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِرَبِّهِمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ ۭ
وَبِئْسَ الْمَصِيْرُ ۝٦
اِذَآ اُلْقُوْا فِيْهَا سَمِعُوْا لَهَا شَهِيْقًا وَّهِيَ

تَفُوْرُ ۙ ٧
تَكَادُ تَمَيَّزُ مِنَ الْغَيْظِ ۖ كُلَّمَا أُلْقِيَ فِيْهَا
فَوْجٌ سَأَلَهُمْ خَزَنَتُهَا أَلَمْ يَأْتِكُمْ نَذِيْرٌ ٨
قَالُوْا بَلٰى قَدْ جَآءَنَا نَذِيْرٌ ۙ فَكَذَّبْنَا
وَقُلْنَا مَا نَزَّلَ اللّٰهُ مِنْ شَيْءٍ ۖ إِنْ أَنْتُمْ
إِلَّا فِيْ ضَلٰلٍ كَبِيْرٍ ٩
وَقَالُوْا لَوْ كُنَّا نَسْمَعُ أَوْ نَعْقِلُ مَا كُنَّا
فِيْٓ أَصْحٰبِ السَّعِيْرِ ١٠
فَاعْتَرَفُوْا بِذَنْۢبِهِمْ ۚ فَسُحْقًا لِّأَصْحٰبِ
السَّعِيْرِ ١١
إِنَّ الَّذِيْنَ يَخْشَوْنَ رَبَّهُمْ بِالْغَيْبِ
لَهُمْ مَّغْفِرَةٌ وَّأَجْرٌ كَبِيْرٌ ١٢
وَأَسِرُّوْا قَوْلَكُمْ أَوِ اجْهَرُوْا بِهٖ ۖ إِنَّهٗ
عَلِيْمٌ ۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ١٣
أَلَا يَعْلَمُ مَنْ خَلَقَ ۖ وَهُوَ اللَّطِيْفُ
ع الْخَبِيْرُ ١٤
هُوَ الَّذِيْ جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ ذَلُوْلًا
فَامْشُوْا فِيْ مَنَاكِبِهَا وَكُلُوْا مِنْ رِّزْقِهٖ ۖ
وَإِلَيْهِ النُّشُوْرُ ١٥
ءَأَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ أَنْ يَّخْسِفَ
بِكُمُ الْأَرْضَ فَإِذَا هِيَ تَمُوْرُ ١٦
أَمْ أَمِنْتُمْ مَّنْ فِي السَّمَآءِ أَنْ يُّرْسِلَ
عَلَيْكُمْ حَاصِبًا ۖ فَسَتَعْلَمُوْنَ كَيْفَ نَذِيْرِ ١٧
وَلَقَدْ كَذَّبَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ
فَكَيْفَ كَانَ نَكِيْرِ ١٨
أَوَلَمْ يَرَوْا إِلَى الطَّيْرِ فَوْقَهُمْ صٰٓفّٰتٍ
وَّيَقْبِضْنَ ۘ مَا يُمْسِكُهُنَّ إِلَّا الرَّحْمٰنُ ۚ

तफ़ूर (7)

तकादु त-मय्यज़ु मिनल्-ग़ैज़ि, कुल्लमा उल्कि-य फ़ीहा फ़ौजुन् स-अ-लहुम् ख़-ज़-नतुहा अलम् यअ्तिकुम् नज़ीर (8)

क़ालू बला क़द् जा-अना नज़ीरुन्, फ़-कज़्ज़ब्ना व क़ुल्ना मा नज़्ज़लल्लाहु मिन् शैइन् इन् अन्तुम् इल्ला फ़ी ज़लालिन् कबीर (9)

व क़ालू लौ कुन्ना नस्मअु औ नअ्क़िलु मा कुन्ना फ़ी असहाबिस्सअ़ीर (10)

फ़अ्-त-रफ़ू बिज़म्बिहिम् फ़-सुह्क़ल्-लि-असहाबिस्-सअ़ीर (11)

इन्नल्लज़ी-न यख़्शौ-न रब्बहुम् बिल्ग़ैबि लहुम् मग़्फ़ि-रतुंव्-व अज्रुन् कबीर (12)

व असिर्रू क़ौलकुम् अविज्-हरू बिही, इन्नहू अ़लीमुम् बिज़ातिस्सुदूर (13)

अला यअ्लमु मन् ख़-ल-क़,व हुवल्-लतीफ़ुल्-ख़बीर (14) ●

हुवल्लज़ी ज-अ-ल लकुमुल्-अर्-ज़ ज़लूलन् फ़म्शू फ़ी मनाकिबिहा व कुलू मिर्रिज़्क़िही, व इलैहिन्-नुशूर (15)

अ-अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अंय्यख़्सि-फ़ बिकुमुल्-अर्-ज़ फ़-इज़ा हि-य तमूर (16)

अम् अमिन्तुम् मन् फ़िस्समा-इ अंय्युर्सि-ल अ़लैकुम् हासिबन्, फ़-सतअ्लमू-न कै-फ़ नज़ीर (17)

व ल-क़द् कज़्ज़-बल्लज़ी-न मिन् क़ब्लिहिम् फ़कै-फ़ का-न नकीर (18)

अ-व लम् यरौ इलत्तैरि फ़ौक़हुम् साफ़्फ़ातिंव्-व यक़्बिज़्-न ● मा युम्सिकुहुन्-न इल्लर्रह्मानु,

आवाज़ सुनेंगे, और वह ग़ज़ब से बिफर रही होगी।

8. ऐसा लगेगा कि ग़ज़ब के मारे अभी फट पड़ने को है। हर बार जब भी कोई गिरोह उसमें डाला जाएगा, तो उसके निगरां उनसे पूछेंगे कि “क्या तुम्हारे पास कोई ख़बरदार करने वाला नहीं आया”?

9. वो कहेंगे, “क्यों नहीं, बेशक हमारे पास ख़बरदार करनेवाला आया था, मगर हमने झुटला दिया और कहा, अल्लाह ने कोई चीज़ नाज़िल नहीं की; तुम तो बस एक बड़ी गुमराही में पड़े हुए हो”।

10. और वो कहेंगे, “अगर हम सुनते होते या अक्ल से काम लेते, तो हम दहकती आग में पड़ने वालों में शामिल न होते”।

11. इस तरह वो अपने गुनाह का एतिराफ़ करेंगे। पस धुत्कार हो, दहकती आग वालों पर!

12. जो लोग ग़ैब में रहते अपने रब से डरते हैं, उनके लिए मग़फ़िरत और बड़ा अजर है।

13. तुम अपनी बात छुपाओ या उसे ज़ाहिर करो, वह तो सीनों की बातों तक को जानता है।

14. क्या वह नहीं जानेगा जिसने पैदा किया? वह तो पोशीदा बातों का जानने वाला, निहायत बाख़बर है।

15. वही तो है जिसने तुम्हारे लिए ज़मीन को सधी हुई बनाया; लिहाज़ा तुम उसके मूंढों पर चलो, और उसके रिज़्क़ में से खाओ; और उसी की तरफ़ दोबारा उठकर जाना है।

16. क्या तुम उससे बेख़ौफ़ हो जो आसमान में है कि वह तुम्हें ज़मीन में धंसा दे, फिर क्या देखोगे कि वह डांवाडोल हो रही है।

17. या तुम उससे बेख़ौफ़ हो जो आसमान में है कि वह तुमपर पथराव करने वाली हवा भेज दे, फिर तुम जान लोगे कि मेरा इनज़ार (डराना) कैसा होता है?

18. उन लोगों ने भी झुटलाया जो उनसे पहले थे; फिर कैसी रही मेरी फिटकार!

19. क्या उन्होंने अपने ऊपर परिन्दों को परा बांधे पर फैलाए और उन्हें समेटते नहीं देखा? उन्हें रहमान

के सिवा कोई और नहीं थामे रहता, यक़ीनन वह हर चीज़ पर निगाह रखता है।

20. या वह कौन है जो तुम्हारा लश्कर बनकर रहमान और तुम्हारे बीच हायल होकर तुम्हारी मदद करे? अहले कुफ़्र तो महज़ धोके में पड़े हुए हैं।

21. या वह कौन है जो तुम्हें रिज़्क़ दे अगर वह अपना रिज़्क़ रोक ले? नहीं, बल्कि वो तो सरकशी और नफ़रत ही पर अड़े हुए हैं।

22. फिर क्या जो अपने मुंह के बल औंधा चलता हो वह ज़्यादा हिदायत पर है या वह जो सीधा होकर सीधी राह पर चल रहा है?

23. कह दोः "वही है जिसने तुम्हें परवान चढ़ाया, और तुम्हारे लिए कान और आंखें और दिल बनाए; तुम शुक्र थोड़े ही अदा करते हो!"

24. कह दोः "वही है जिसने तुम्हें ज़मीन में फैलाया, और उसी की तरफ़ तुम इकट्ठे किए जा रहे हो"।

25. वो कहते हैं कि "अगर तुम सच्चे हो, तो यह वादा कब पूरा होगा?"

26. कह दोः "इल्म तो बस अल्लाह ही के पास है और मैं तो एक वाज़ेह तौर पर ख़बरदार करने वाला हूं"।

27. फिर जब वो उसे क़रीब देख लेंगे, तो उन लोगों के चेहरे बिगड़ जाएंगे जिन्होंने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की, और कहा जाएगा, "यही है वह चीज़ जिसका तुम मुतालबा कर रहे थे"।

28. कहोः "क्या तुमने यह भी देखा कि अगर अल्लाह मुझे और उन्हें भी जो मेरे साथ हैं हलाक कर दे, या वह हम पर रहम फ़रमाए, आख़िर काफ़िरों को दर्दनाक अज़ाब से कौन पनाह देगा?"

29. कह दोः "वह रहमान है। उसी पर हम ईमान लाए हैं, और उसी पर हमने भरोसा किया। पस जल्द ही जान लोगे कि खुली गुमराही में पड़ा हुआ कौन है"।

30. कहोः "क्या तुमने यह भी देखा कि अगर तुम्हारा पानी नीचे उतर जाए तो फिर कौन साफ़ रवां पानी तुम्हें लाकर देगा?"

इन्नहू बिकुल्लि शैइम्-बसीर (19)

अम्मन् हाज़ल्लज़ी हु-व जुन्दुल्-लकुम् यन्सुरुकुम् मिन् दूनिर्रह्मानि, इनिल्-काफ़िरू-न इल्ला फ़ी ग़ुरूर (20)

अम्-मन् हाज़ल्लज़ी यर्ज़ुक़ुकुम् इन् अम्-स-क रिज़्क़हू बल्-लज्जू फ़ी अुतुव्विंव्-व नुफ़ूर (21)

अ-फ़मंय्यम्शी मुकिब्बन् अ़ला वज्हिही अह्दा अम्-मंय्यम्शी सविय्यन् अ़ला सिरातिम्-मुस्तक़ीम (22)

कुल् हुवल्लज़ी अन्श-अकुम् व ज-अ़-ल लकुमुस्सम्-अ वल्अब्सा-र वल्-अफ़्इ-द-त, क़लीलम्-मा तश्कुरून (23)

कुल् हुवल्लज़ी ज़-र-अकुम् फ़िल्अर्ज़ि व इलैहि तुह्शरून (24)

व यक़ूलू-न मता हाज़ल्-वअ्दु इन् कुन्तुम् सादिक़ीन (25)

कुल् इन्नमल्-अिल्मु अिन्दल्लाहि व इन्नमा अ-न नज़ीरुम्-मुबीन (26)

फ़-लम्मा रऔहु ज़ुल्फ़-तन् सी-अत् वुजूहुल्लज़ी-न क-फ़रू व क़ी-ल हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तद्-दअून (27)

कुल् अ-रऐतुम् इन् अह्ल-कनियल्लाहु व मम्-मअि-य औ रहि-मना फ़-मंय्युजीरुल्-काफ़िरी-न मिन् अ़ज़ाबिन् अलीम (28)

कुल् हुवर्-रह्मानु आमन्ना बिही व अ़लैहि तवक्कल्ना फ़-स-तअ्लमू-न मन् हु-व फ़ी ज़लालिम्-मुबीन (29)

कुल् अ-रऐतुम् इन् अस्ब-ह मा-उकुम् ग़ौरन् फ़-मंय्यअ्तीकुम् बिमाइम्-मअ़ीन (30) ●

اِنَّهٗ بِكُلِّ شَیْءٍۭ بَصِیْرٌ ۝۱۹

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ هُوَ جُنْدٌ لَّكُمْ یَنْصُرُكُمْ مِّنْ دُوْنِ الرَّحْمٰنِ ؕ اِنِ الْكٰفِرُوْنَ اِلَّا فِیْ غُرُوْرٍ ۝۲۰

اَمَّنْ هٰذَا الَّذِیْ یَرْزُقُكُمْ اِنْ اَمْسَكَ رِزْقَهٗ ۚ بَلْ لَّجُّوْا فِیْ عُتُوٍّ وَّ نُفُوْرٍ ۝۲۱

اَفَمَنْ یَّمْشِیْ مُكِبًّا عَلٰی وَجْهِهٖۤ اَهْدٰۤی اَمَّنْ یَّمْشِیْ سَوِیًّا عَلٰی صِرَاطٍ مُّسْتَقِیْمٍ ۝۲۲

قُلْ هُوَ الَّذِیْۤ اَنْشَاَكُمْ وَ جَعَلَ لَكُمُ السَّمْعَ وَ الْاَبْصَارَ وَ الْاَفْـِٕدَةَ ؕ قَلِیْلًا مَّا تَشْكُرُوْنَ ۝۲۳

قُلْ هُوَ الَّذِیْ ذَرَاَكُمْ فِی الْاَرْضِ وَ اِلَیْهِ تُحْشَرُوْنَ ۝۲۴

وَ یَقُوْلُوْنَ مَتٰی هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِیْنَ ۝۲۵

قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۪ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِیْرٌ مُّبِیْنٌ ۝۲۶

فَلَمَّا رَاَوْهُ زُلْفَةً سِیْٓـَٔتْ وُجُوْهُ الَّذِیْنَ كَفَرُوْا وَ قِیْلَ هٰذَا الَّذِیْ كُنْتُمْ بِهٖ تَدَّعُوْنَ ۝۲۷

قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَهْلَكَنِیَ اللّٰهُ وَ مَنْ مَّعِیَ اَوْ رَحِمَنَا ۙ فَمَنْ یُّجِیْرُ الْكٰفِرِیْنَ مِنْ عَذَابٍ اَلِیْمٍ ۝۲۸

قُلْ هُوَ الرَّحْمٰنُ اٰمَنَّا بِهٖ وَ عَلَیْهِ تَوَكَّلْنَا ۚ فَسَتَعْلَمُوْنَ مَنْ هُوَ فِیْ ضَلٰلٍ مُّبِیْنٍ ۝۲۹

قُلْ اَرَءَیْتُمْ اِنْ اَصْبَحَ مَآؤُكُمْ غَوْرًا فَمَنْ یَّاْتِیْكُمْ بِمَآءٍ مَّعِیْنٍ ۝۳۰ ع

सूरह अल-क़लम मक्की

(आयतें 52, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1-2. नून। गवाह है क़लम, और वह चीज़ जो वो लिखते हैं, तुम अपने रब की इनायत से दीवाने नहीं हो।

3. यक़ीनन तुम्हारे लिए वह अजर है जिसका सिलसिला कभी ख़त्म होने का नहीं;

4. यक़ीनन तुम एक अज़ीम अख़लाक़ पर फ़ाइज़ हो।

5-6. पस जल्द ही तुम भी देख लोगे, और वो भी देख लेंगे कि फ़ितना में पड़ा हुआ तुममें से कौन है।

7. बेशक तुम्हारा रब उसे ख़ूब जानता है जो उसकी राह से भटक गया है, और वही उन्हें भी बख़ूबी जानता है जो हिदायत याफ़्ता हैं।

8. लिहाज़ा तुम झुटलाने वालों का कहना न मानना।

9. वो चाहते हैं कि तुम मुदाहनत (नर्मी) इख़्तियार करो तो वो भी मुदाहनत इख़्तियार करें।

10. तुम किसी भी ऐसे शख़्स की बात न मानना जो बहुत क़समें खाने वाला ज़लील है।

11. कचोके लगाता, चुग़लियां खाता फिरता है,

12. भलाई से रोकता है, हद से तजावुज़ करनेवाला, हक़ मारनेवाला है,

13. सख़्त दिल है, उसके बाद बद किरदार भी।

14. इस बिना पर कि वह माल और बेटोंवाला है।

15. जब उसे हमारी आयतें सुनाई जाती हैं, तो कहता है, "यह तो अगलों के अफ़साने हैं"।

16. जल्द ही हम उसकी सूंड पर दाग़ लगाएंगे।

17-18. हमने उन्हें आज़माइश में डाला है, जैसे बाग़वालों को आज़माइश में डाला था जबकि उन्होंने क़सम खाई कि वो सुबह सवेरे ज़रूर उसके फल तोड़ लेंगे और वो कोई इसतिसना नहीं कर रहे थे (इन्शाअल्लाह नहीं कह रहे थे)।

19. अभी वो सो ही रहे थे कि तुम्हारे रब की तरफ़ से एक चक्कर लगाने वाला (बला) उसपर चक्कर लगा गया।

20. और वह ऐसा हो गया जैसे कटी हुई फ़सल।

21-22. फिर सुबह होते ही उन्होंने

68 सूरतुल्-क़-लमि
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 1295 अक्षर, 306 शब्द, 52 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नून् वल्क़-लमि व मा यस्तुरून (1)
मा अन्-त बिनिअ्मति रब्बि-क बि-मज्नून (2)
व इन्-न ल-क ल-अज्रन् ग़ै-र मम्नून (3)
व इन्न-क ल-अ़ला ख़ुलुक़िन् अ़ज़ीम (4)
फ़-सतुब्सिरु व युब्सिरून (5)
बि-अय्यिकुमुल्-मफ़्तून (6)
इन्-न रब्ब-क हु-व अअ्लमु बिमन् ज़ल्-ल अ़न् सबीलिही व हु-व अअ्लमु बिल्-मुह्तदीन (7)
फ़ला तुतिअ़िल्-मुकज़्ज़िबीन (8)
वद्दू लौ तुद्हिनु फ़युद्हिनून (9)
व ला तुतिअ् कुल्-ल हल्लाफ़िम्-महीन (10)
हम्माज़िम्-मश्शाइम् बि-नमीम (11)
मन्नाअ़िल्-लिल्ख़ैरि मुअ्-तदिन् असीम (12)
अ़ुतुल्लिम् बअ्-द ज़ालि-क ज़नीम (13)
अन् का-न ज़ा मालिंव्-व बनीन (14)
इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना का-ल असातीरुल्-अव्वलीन (15)
स-नसिमुहू अ़लल्-ख़ुर्तूम (16)
इन्ना बलौनाहुम् कमा बलौना अस्हाबल्-जन्नति इज् अक़्समू ल-यस्रिमुन्नहा मुस्बिहीन (17)
व ला यस्तस्नून (18)
फ़ता-फ़ अ़लैहा ता-इफ़ुम्-मिर्रब्बि-क व हुम् ना-इमून (19)
फ़-अस्-बहत् कस्सरीम (20)
फ़-तनादौ मुस्बिहीन (21)

سُوْرَةُ الْقَلَمِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٥٢ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
نٓ وَالْقَلَمِ وَمَا يَسْطُرُوْنَ ①
مَآ اَنْتَ بِنِعْمَةِ رَبِّكَ بِمَجْنُوْنٍ ②
وَاِنَّ لَكَ لَاَجْرًا غَيْرَ مَمْنُوْنٍ ③
وَاِنَّكَ لَعَلٰى خُلُقٍ عَظِيْمٍ ④
فَسَتُبْصِرُ وَيُبْصِرُوْنَ ⑤
بِاَيِّكُمُ الْمَفْتُوْنُ ⑥
اِنَّ رَبَّكَ هُوَ اَعْلَمُ بِمَنْ ضَلَّ عَنْ
سَبِيْلِهٖ ۪ وَهُوَ اَعْلَمُ بِالْمُهْتَدِيْنَ ⑦
فَلَا تُطِعِ الْمُكَذِّبِيْنَ ⑧
وَدُّوْا لَوْ تُدْهِنُ فَيُدْهِنُوْنَ ⑨
وَلَا تُطِعْ كُلَّ حَلَّافٍ مَّهِيْنٍ ⑩
هَمَّازٍ مَّشَّآءٍۭ بِنَمِيْمٍ ⑪
مَّنَّاعٍ لِّلْخَيْرِ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ ⑫
عُتُلٍّۭ بَعْدَ ذٰلِكَ زَنِيْمٍ ⑬
اَنْ كَانَ ذَا مَالٍ وَّبَنِيْنَ ⑭
اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ ⑮
سَنَسِمُهٗ عَلَى الْخُرْطُوْمِ ⑯
اِنَّا بَلَوْنٰهُمْ كَمَا بَلَوْنَآ اَصْحٰبَ الْجَنَّةِ ۚ
اِذْ اَقْسَمُوْا لَيَصْرِمُنَّهَا مُصْبِحِيْنَ ⑰
وَلَا يَسْتَثْنُوْنَ ⑱
فَطَافَ عَلَيْهَا طَآئِفٌ مِّنْ رَّبِّكَ
وَهُمْ نَآئِمُوْنَ ⑲
فَاَصْبَحَتْ كَالصَّرِيْمِ ⑳
فَتَنَادَوْا مُصْبِحِيْنَ ㉑

एक-दूसरे को आवाज़ दी कि "अगर तुम्हें फल तोड़ना है तो अपनी खेती पर सवेरे ही पहुंचो!"

23-24. चुनांचे वो चुपके-चुपके बातें करते हुए चल पड़े कि आज वहां कोई मुहताज तुम्हारे पास दाख़िल न होने पाए।

25. और वो सुबह तेज़गामी के साथ चले गोया (मिसकीनों को) रोक देने पर उन्हें पूरी क़ुदरत हासिल है।

26. मगर जब उन्होंने उसे देखा तो कहने लगे, "यक़ीनन हम भटक गए हैं,

27. नहीं, बल्कि हम महरूम होकर रह गए"!

28. उनमें जो बेहतर था कहने लगा, "क्या मैंने तुमसे कहा नहीं था कि तुम (अल्लाह की) तसबीह क्यों नहीं करते?"

29. वो पुकार उठे, "अज़ीम व बरतर है हमारा रब, वाक़ई ज़ालिम हम ही थे"।

30. फिर वो बाहम एक-दूसरे की तरफ़ मुतवज्जेह होकर लगे एक-दूसरे को मलामत करने।

31. उन्होंने कहा, "अफ़सोस हम पर! यक़ीनन हम सरकश थे!"

32. "तवक़्क़ो है कि हमारा रब बदले में हमें इससे अच्छा दे, हम अपने रब ही की तरफ़ राग़िब हैं!"

33. अज़ाब ऐसा ही होता है और आख़िरत का अज़ाब तो यक़ीनन इससे कहीं बड़ा है, काश वो जानते।

34. यक़ीनन डर रखनेवालों के लिए उनके रब के पास नेमत भरी जन्नतें हैं।

35. फिर क्या हम फ़रमांबरदारों को मुजरिमों की तरह कर देंगे?

36. तुम्हें क्या हो गया है कैसा फ़ैसला करते हो?

37-38. या तुम्हारे पास कोई किताब है जिसमें तुम पढ़ते हो कि तुम्हारे लिए उसमें वही कुछ है जो तुम पसन्द कर लो!

39. या तुम्हारे लिए हम पर क़समें लाज़िम हैं जो क़ियामत के दिन तक बाक़ी रहनेवाली हैं कि तुम्हारे लिए वही कुछ है जो तुम ख़ुद फ़ैसला करो!

40. उनसे पूछो कि उनमें से कौन इसका ज़ामिन है!

41. या उनके ठहराए हुए कुछ शरीक हैं? फिर तो चाहिए कि वो अपने शरीकों को ले आएं, अगर वो सच्चे हैं।

अनिग़्दू अ़ला हर्सिकुम् इन् कुन्तुम् सारिमीन (22)

फ़न्त-लक़ू व हुम् य-तख़ा-फ़तून (23)

अल्-ला यद्ख़ुलन्न-हल्यौ-म अ़लैकुम्-मिस्कीन (24)

व ग़दौ अ़ला हर्दिन् क़ादिरीन (25)

फ़-लम्मा रऔहा क़ालू इन्ना ल-ज़ाल्लून (26)

बल् नह्नु महरूमून (27)

क़ा-ल औसतुहुम् अलम् अक़ुल्-लकुम् लौ ला तुसब्बिहून (28)

क़ालू सुब्हा-न रब्बिना इन्ना कुन्ना ज़ालिमीन (29)

फ़-अक़्ब-ल बअ्ज़ुहुम् अ़ला बअ्ज़िंय्-य-तला-वमून (30)

क़ालू या वैलना इन्ना कुन्ना ताग़ीन (31)

अ़सा रब्बुना अंय्युब्दि लना ख़ैरम्-मिन्हा इन्ना इला रब्बिना राग़िबून (32)

कज़ालिकल्-अ़ज़ाबु, व ल-अ़ज़ाबुल्-आख़िरति अक्बरु • लौ कानू यअ्लमून (33) •

इन्-न लिल-मुत्तक़ी-न अ़िन्-द रब्बिहिम् जन्नातिन्-नअ़ीम (34)

अ-फ़-नज्-अ़लुल्-मुस्लिमी-न कल्-मुज्रिमीन (35)

मा लकुम्, कै-फ तह्कुमून (36)

अम् लकुम् किताबुन् फ़ीहि तद्रुसून (37)

इन्-न लकुम् फ़ीहि लमा त-ख़य्यरून (38)

अम् लकुम् ऐमानुन् अ़लैना बालि-ग़तुन् इला यौमिल्-क़ियामति इन्-न लकुम् लमा तह्कुमून (39)

सल्हुम् अय्युहुम् बिज़ालि-क ज़अ़ीम (40)

अम् लहुम् शु-रका-उ फ़ल्यअ्तू बिशु-रका-इहिम् इन् कानू सादिक़ीन (41)

أَنِ اغْدُوْا عَلٰى حَرْثِكُمْ إِنْ كُنْتُمْ
صٰرِمِيْنَ (٢٢)
فَانْطَلَقُوْا وَهُمْ يَتَخَافَتُوْنَ (٢٣)
أَنْ لَّا يَدْخُلَنَّهَا الْيَوْمَ عَلَيْكُمْ
مِّسْكِيْنٌ (٢٤)
وَّغَدَوْا عَلٰى حَرْدٍ قٰدِرِيْنَ (٢٥)
فَلَمَّا رَاَوْهَا قَالُوْٓا إِنَّا لَضَآلُّوْنَ (٢٦)
بَلْ نَحْنُ مَحْرُوْمُوْنَ (٢٧)
قَالَ اَوْسَطُهُمْ اَلَمْ اَقُلْ لَّكُمْ لَوْلَا
تُسَبِّحُوْنَ (٢٨)
قَالُوْا سُبْحٰنَ رَبِّنَآ إِنَّا كُنَّا ظٰلِمِيْنَ (٢٩)
فَاَقْبَلَ بَعْضُهُمْ عَلٰى بَعْضٍ يَّتَلَاوَمُوْنَ (٣٠)
قَالُوْا يٰوَيْلَنَآ إِنَّا كُنَّا طٰغِيْنَ (٣١)
عَسٰى رَبُّنَآ اَنْ يُّبْدِلَنَا خَيْرًا مِّنْهَآ إِنَّآ
إِلٰى رَبِّنَا رٰغِبُوْنَ (٣٢)
كَذٰلِكَ الْعَذَابُ ۭ وَلَعَذَابُ الْاٰخِرَةِ
اَكْبَرُ ۘ لَوْ كَانُوْا يَعْلَمُوْنَ (٣٣)
إِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتِ النَّعِيْمِ (٣٤)
اَفَنَجْعَلُ الْمُسْلِمِيْنَ كَالْمُجْرِمِيْنَ (٣٥)
مَا لَكُمْ ۣ كَيْفَ تَحْكُمُوْنَ (٣٦)
اَمْ لَكُمْ كِتٰبٌ فِيْهِ تَدْرُسُوْنَ (٣٧)
إِنَّ لَكُمْ فِيْهِ لَمَا تَخَيَّرُوْنَ (٣٨)
اَمْ لَكُمْ اَيْمَانٌ عَلَيْنَا بَالِغَةٌ إِلٰى يَوْمِ
الْقِيٰمَةِ ۙ إِنَّ لَكُمْ لَمَا تَحْكُمُوْنَ (٣٩)
سَلْهُمْ اَيُّهُمْ بِذٰلِكَ زَعِيْمٌ (٤٠)
اَمْ لَهُمْ شُرَكَآءُ ۚ فَلْيَأْتُوْا بِشُرَكَآئِهِمْ
إِنْ كَانُوْا صٰدِقِيْنَ (٤١)

42. जिस दिन पिंडली खुल जाएगी, और वो सजदे के लिए बुलाए जाएंगे, तो वो कर न सकेंगे;

43. उनकी निगाहें झुकी हुई होंगी, ज़िल्लत उन पर छा रही होगी, उन्हें उस वक़्त सजदों के लिए बुलाया जाता था जबकि वो सही-सालिम थे।

44. पस तुम मुझे छोड़ दो और उसको जो इस कलाम को झुटलाता है हम उन्हें आहिस्ता-आहिस्ता इस तरह पकड़ेंगे कि उन्हें ख़बर भी न होगी।

45. मैं उन्हें ढील दे रहा हूं, यक़ीनन मेरी चाल निहायत मुहकम है।

46. क्या तुम उनसे कोई अजर तलब कर रहे हो कि वो चट्टी के बोझ से दबे जाते हों?

47. या उनके पास इल्म-ए-ग़ैब है तो वो लिख रहे हैं?

48. पस अपने रब के हुक्म के लिए सब्र करो, और मछली वाले की तरह न हो जाना, जबकि उस हालत में उसने पुकारा था कि वह ग़म में घुट रहा था।

49. अगर उसके रब की इनायत उसके शामिले हाल न हो जाती, तो लाज़िमन चटयल मैदान में बुरे हाल में डाल दिया जाता।

50. आख़िरकार उसके रब ने उसे बरगुज़ीदा किया और उसे सालेहीन में शामिल फ़रमाया।

51. जब वो लोग जिन्होंने कुफ़्र की रविश इख़्तियार की ज़िक्र सुनते हैं और कहते हैं कि "वह ज़रूर दीवाना है," तो ऐसा लगता है कि वो अपनी निगाहों के ज़ोर से तुम्हें फिसलाकर रहेंगे,

52. हालांकि वह सारे जहां के लिए एक यاददिहानी है।

सूरह अल-हाक़्क़ा मक्की

(आयतें 52, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1-3. हक़ होकर रहने वाली! क्या है वह हक़ होकर रहने वाली? और तुम क्या जानो कि वह हक़ होकर रहने वाली क्या है?

4. समूद और आद ने उस अज़ीम हादसे को झुटलाया,

5. तो समूद तो एक हद से बढ़ जाने वाली आफ़त के ज़रिए से हलाक किए गए;

6. और रहे आद, तो वो एक बेक़ाबू तेज़ व तुन्द हवा से हलाक कर दिए गए।

7. उसे अल्लाह ने सात रात और आठ दिन तक बीख़कनी की ग़र्ज़ से उनपर मुसल्लत रखा, पस लोगों को

यौ-म युक्शफु अन् साक़िंव्-व युद्औ-न इलस्सुजूदि फ़ला यस्ततीअून (42)

ख़ाशि-अतन् अब्सारुहुम् तर्-हक़ुहुम् ज़िल्लतुन्, व क़द् कानू युद्औ-न इलस्सुजूदि व हुम् सालिमून (43)

फ़-ज़र्नी व मंय्युकज़्ज़िबु बिहाज़ल्-हदीसि, स-नस्तद्रिजुहुम् मिन् हैसु ला यअ्लमून (44)

व उम्ली लहुम्, इन्-न कैदी मतीन (45)

अम् तस्-अलुहुम् अज्रन् फ़हुम् मिम्-मग्-रमिम् मुस्क़लून (46)

अम् अिन्दहुमुल्-ग़ैबु फ़हुम् यक्तुबून (47)

फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तकुन् क-साहिबिल्-हूति ● इज़् नादा व हु-व मक्ज़ूम (48)

लौ ला अन् तदा-र-कहू निअ्मतुम्-मिर्रब्बिही लनुबि-ज़ बिल्-अरा-इ व हु-व मज़्मूम (49)

फ़ज्तबाहु रब्बुहू फ़-ज-अ-लहू मिनस्सालिहीन (50)

व इंय्-यकादुल्लज़ी-न क-फ़रू ल-युज़्लिक़ून-क बि-अब्सारिहिम् लम्मा समिअुज़्ज़िक्-र व यक़ूलू-न इन्नहू ल-मज्नून ● (51)

व मा हु-व इल्ला ज़िक्रुल्-लिल्-आलमीन ●(52) ●

69 सूरतुल-हाक़्क़ति
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 1134 अक्षर, 260 शब्द, 52 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्-हाक़्क़तु (1) मल्-हाक़्क़ह् (2)

व मा अद्रा-क मल्-हाक़्क़ह् (3)

कज़्ज़बत् समूदु व आदुम्-बिल्-क़ारिअह् (4)

फ़-अम्मा समूदु फ़-उह्लिकू बित्ताग़ियह् (5)

व अम्मा आदुन् फ़-उह्लिकू बिरीहिन् सर्सरिन् आतियह् (6)

सख़्ख़-रहा अ़लैहिम् सब्-अ़ लयालिंव्-व समानि-य-त अय्यामिन् हुसूमन् फ़-तरल्-क़ौ-म फ़ीहा सर्अ़ा

يَوْمَ يُكْشَفُ عَنْ سَاقٍ وَّيُدْعَوْنَ
إِلَى السُّجُوْدِ فَلَا يَسْتَطِيْعُوْنَ (٤٢)
خَاشِعَةً أَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ وَقَدْ
كَانُوْا يُدْعَوْنَ إِلَى السُّجُوْدِ وَهُمْ سٰلِمُوْنَ (٤٣)
فَذَرْنِيْ وَمَنْ يُّكَذِّبُ بِهٰذَا الْحَدِيْثِ ؕ
سَنَسْتَدْرِجُهُمْ مِّنْ حَيْثُ لَا يَعْلَمُوْنَ (٤٤)
وَأُمْلِيْ لَهُمْ ؕ إِنَّ كَيْدِيْ مَتِيْنٌ (٤٥)
أَمْ تَسْـَٔلُهُمْ أَجْرًا فَهُمْ مِّنْ مَّغْرَمٍ مُّثْقَلُوْنَ (٤٦)
أَمْ عِنْدَهُمُ الْغَيْبُ فَهُمْ يَكْتُبُوْنَ (٤٧)
فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تَكُنْ كَصَاحِبِ
الْحُوْتِ ۘ إِذْ نَادٰى وَهُوَ مَكْظُوْمٌ (٤٨)
لَوْلَا أَنْ تَدٰرَكَهٗ نِعْمَةٌ مِّنْ رَّبِّهٖ لَنُبِذَ
بِالْعَرَآءِ وَهُوَ مَذْمُوْمٌ (٤٩)
فَاجْتَبٰهُ رَبُّهٗ فَجَعَلَهٗ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ (٥٠)
وَإِنْ يَّكَادُ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا لَيُزْلِقُوْنَكَ
بِأَبْصَارِهِمْ لَمَّا سَمِعُوا الذِّكْرَ وَيَقُوْلُوْنَ
إِنَّهٗ لَمَجْنُوْنٌ (٥١)
وَمَا هُوَ إِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ (٥٢)

سُوْرَةُ الْحَاقَّةِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٥٢ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَاقَّةُ (١) مَا الْحَاقَّةُ (٢)
وَمَا أَدْرٰىكَ مَا الْحَاقَّةُ (٣)
كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ وَعَادٌ بِالْقَارِعَةِ (٤)
فَأَمَّا ثَمُوْدُ فَأُهْلِكُوْا بِالطَّاغِيَةِ (٥)
وَأَمَّا عَادٌ فَأُهْلِكُوْا بِرِيْحٍ صَرْصَرٍ عَاتِيَةٍ (٦)
سَخَّرَهَا عَلَيْهِمْ سَبْعَ لَيَالٍ وَّثَمٰنِيَةَ
أَيَّامٍ ۙ حُسُوْمًا فَتَرَى الْقَوْمَ فِيْهَا صَرْعٰى ۙ

तुम देखते हो कि उसमें पछड़े पड़े हैं गोया वो खजूर के बोसीदा तने हों।

8. अब क्या तुम उनमें से किसी को बाक़ी देखते हो?

9. और फ़िरऔन ने भी और उससे पहले के लोगों ने और तलपट हो जाने वाली बस्तियों ने इस ख़ता का इरतिकाब किया,

10. उन्होंने अपने रब के रसूल की नाफ़रमानी की, तो उसने उन्हें बड़ी सख़्त गिरिफ़्त में दबोच लिया।

11. जब पानी हद से गुज़र गया, तो हमने तुम्हें कश्ती में सवार किया।

12. ताकि उसे हम तुम्हारे लिए सबक़ आमूज़ यादगार बनाएं और महफ़ूज़ रखने वाले कान उसे महफ़ूज़ रखें।

13. पस जब सूर में एक फूंक मारी जाएगी,

14. और ज़मीन और पहाड़ों को उठाकर एक ही बार में रेज़ा-रेज़ा कर दिया जाएगा,

15. तो उस दिन वाक़े होने वाली वाक़े हो जाएगी,

16. और आसमान फट जाएगा, उस दिन उसकी बन्दिश ढीली पड़ चुकी होगी,

17. और फ़रिश्ते उसके किनारों पर होंगे, और उस दिन तुम्हारे रब के अर्श को आठ (फ़रिश्ते) अपने ऊपर उठाए होंगे।

18. उस दिन तुम पेश किए जाओगे, तुम्हारी कोई बात छुपी न रहेगी।

19. फिर जिसको उसका आमाल नामा उसके अपने दाहिने हाथ में दिया गया, तो वह कहेगा, "लो पढ़ो मेरी किताब!

20. मैं तो समझता ही था कि मुझे अपने हिसाब से दो-चार होना है"।

21-22. पस वह ऐश-ए-मसर्रत व शादमानी में होगा, आली मक़ाम जन्नत में,

23. जिसके ख़ोशे झुके हुए होंगे:

24. "मज़े से खाओ और पियो उन आमाल के बदले में जो तुमने गुज़रे हुए दिनों में किए हैं"।

25. और रहा वह शख़्स जिसकी किताब (आमाल नामा) उसके अपने बाएं हाथ में दी गई, वह कहेगा, "काश, मेरी किताब मुझे न मिलती,

क-अन्नहुम् अअ्जाज़ु नख़्लिन् ख़ावियह् (7)

फ़-हल् तरा लहुम् मिम्-बाक़ियह् (8)

व जा-अ फ़िर्‌औनु व मन् क़ब्लहू वल्-मुअ्तफ़िकातु बिल्-ख़ातिअह् (9)

फ़-अ़सौ रसू-ल रब्बिहिम् फ़-अ-ख़-ज़हुम् अख़्ज़-तर्-राबियह् (10)

इन्ना लम्मा तग़ल्-मा-उ हमल्नाकुम् फ़िल्जारियह् (11)

लिनज्-अ़-लहा लकुम् तज़्कि-रतंव्-व तअ़ि-यहा उज़ुनुंव्-वाअ़ियह् (12)

फ़-इज़ा नुफ़ि-ख़ फ़िस्सूरि नफ़्ख़तुंव्-वाहि-दतुन् (13)

व हुमि-लतिल्-अर्ज़ु वल्जिबालु फ़-दुक्कता दक्क-तंव्-वाहि-दह् (14)

फ़यौमइज़िंव्-व-क़-अ़तिल्-वाक़िअह् (15)

वन्-शक़्क़तिस्-समा-उ फ़हि-य यौमइज़िंव्-वाहि-यतुंव्- (16) -वल्-म-लकु अ़ला अर्जा-इहा, व यह्मिलु अ़र्-श रब्बि-क फ़ौक़हुम् यौमइज़िन् समानियह् (17)

यौमइज़िन् तुअ्रज़ू-न ला तख़्फ़ा मिन्कुम् ख़ाफ़ियह् (18)

फ़-अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बि-यमीनिही फ़-यक़ूलु हाउ-मुक़्रऊ किताबियह् (19)

इन्नी ज़नन्तु अन्नी मुलाक़िन् हिसाबियह् (20)

फ़हु-व फ़ी ई़-शतिर्-राज़ियह् (21)

फ़ी जन्नतिन् आ़लियह् (22)

क़ुतूफ़ुहा दानियह् (23)

कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा अस्लफ़्तुम् फ़िल्-अय्यामिल्-ख़ालियह् (24)

व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बिशिमालिही फ़-यक़ूलु या लैतनी लम् ऊ-त किताबियह् (25)

كَاَنَّهُمْ اَعْجَازُ نَخْلٍ خَاوِيَةٍ ۝۷
فَهَلْ تَرٰى لَهُمْ مِّنْۢ بَاقِيَةٍ ۝۸
وَجَآءَ فِرْعَوْنُ وَمَنْ قَبْلَهٗ وَالْمُؤْتَفِكٰتُ
بِالْخَاطِئَةِ ۝۹
فَعَصَوْا رَسُوْلَ رَبِّهِمْ فَاَخَذَهُمْ اَخْذَةً رَّابِيَةً ۝۱۰
اِنَّا لَمَّا طَغَا الْمَآءُ حَمَلْنٰكُمْ فِي الْجَارِيَةِ ۝۱۱
لِنَجْعَلَهَا لَكُمْ تَذْكِرَةً وَّتَعِيَهَآ
اُذُنٌ وَّاعِيَةٌ ۝۱۲
فَاِذَا نُفِخَ فِي الصُّوْرِ نَفْخَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝۱۳
وَّحُمِلَتِ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ فَدُكَّتَا
دَكَّةً وَّاحِدَةً ۝۱۴
فَيَوْمَئِذٍ وَّقَعَتِ الْوَاقِعَةُ ۝۱۵
وَانْشَقَّتِ السَّمَآءُ فَهِيَ يَوْمَئِذٍ وَّاهِيَةٌ ۝۱۶
وَّالْمَلَكُ عَلٰٓى اَرْجَآئِهَا ۚ وَيَحْمِلُ عَرْشَ
رَبِّكَ فَوْقَهُمْ يَوْمَئِذٍ ثَمٰنِيَةٌ ۝۱۷
يَوْمَئِذٍ تُعْرَضُوْنَ لَا تَخْفٰى مِنْكُمْ
خَافِيَةٌ ۝۱۸
فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۙ
فَيَقُوْلُ هَآؤُمُ اقْرَءُوْا كِتٰبِيَهْ ۝۱۹
اِنِّيْ ظَنَنْتُ اَنِّيْ مُلٰقٍ حِسَابِيَهْ ۝۲۰
فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝۲۱
فِيْ جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝۲۲
قُطُوْفُهَا دَانِيَةٌ ۝۲۳
كُلُوْا وَاشْرَبُوْا هَنِيْٓئًا ۢ بِمَآ اَسْلَفْتُمْ
فِي الْاَيَّامِ الْخَالِيَةِ ۝۲۴
وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِشِمَالِهٖ ۙ
فَيَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ لَمْ اُوْتَ كِتٰبِيَهْ ۝۲۵

6. और मैं न जानता कि मेरा हिसाब क्या है!

27. ऐ काश, वही (मौत) काम तमाम करने वाली होती!

28. मेरा माल मेरे कुछ काम न आया,

29. मेरा इक्तिदार मुझसे जाता रहा"।

30. "पकड़ो उसे फिर उसकी गर्दन में तौक़ डाल दो,

31. फिर उसे भड़कती हुई आग में झोंक दो,

32. फिर उसे एक ऐसी ज़ंजीर में जिसकी नाप सत्तर हाथ है, पिरो दो।

33–34. वह न तो ख़ुदा-ए-अज़ीम पर ईमान रखता था; और न मिसकीन के खाना खिलाने की तरग़ीब देता था;

35–36. लिहाज़ा आज उसका यहां कोई जिगरी दोस्त नहीं, और न सिवाय ज़ख़्मों से रिसते पानी से तैयार खाने के कोई खाना है,

37. उसे ख़ताकारों के सिवा कोई नहीं खाएगा"।

38–39. पस सुनो! मैं क़सम खाता हूं उन चीज़ों की जो तुम देखते हो और उन चीज़ों की भी जो तुम नहीं देखते,

40. यक़ीनन वह एक रसूल-ए-करीम का पेश करदा क़लाम है।

41. वह किसी शायर का कलाम नहीं, तुम ईमान थोड़े ही लाते हो,

42. और न वह किसी काहिन का कलाम है, तुम होश से थोड़े ही काम लेते हो।

43. यह उतरा हुआ है सारे जहान के रब की तरफ़ से।

44–46. अगर वह हमपर मंढ़कर कुछ बातें घड़ता, तो लाज़िमन हम उसे दाएं हाथ से पकड़ लेते, फिर उस की रग-ए-दिल काट देते,

47. और तुममें से कोई एक भी उससे रोकने वाला न होता,

48. और यक़ीनन डर रखनेवालों के लिए वह एक याददिहानी है;

49. और बेशक हम जानते हैं कि तुम में से कुछ झुटलाते हैं।

50. यक़ीनन वह अहले कुफ़्र के लिए सरासर हसरत है,

51. और लाज़िमन वह यक़ीनी हक़ है।

व लम् अद्‌रि मा हिसाबियह् (26)
या लैतहा कानतिल्-क़ाज़ियह् (27)
मा अग्ना अन्नी मालियह् (28)
ह-ल-क अन्नी सुल्तानियह् (29)
ख़ुज़ूहु फ़-ग़ुल्लूहु (30)
सुम्मल्-जही-म सल्लूहु (31)
सुम्-म फ़ी सिल्‌सि-लतिन् ज़र्‌अुहा
सब्‌अू-न ज़िराअन् फ़स्‌लुकूहु (32)
इन्नहू का-न ला युअ्मिनु
बिल्लाहिल्-अज़ीम (33)
व ला यहुज़्ज़ु अ़ला तआमिल्-मिस्कीन
(34)
फ़लै-स लहुल्-यौ-म हाहुना हमीम
(35)
व ला तआमुन् इल्ला मिन् ग़िस्लीन
(36)
ला यअ्कुलुहू इल्लल्-ख़ातिऊन
(37)●
फ़ला उक़्सिमु बिमा तुब्सिरून (38)
व मा ला तुब्सिरून (39)
इन्नहू लक़ौलु रसूलिन् करीम (40)
व मा हु-व बिक़ौलि शाअिर्,
क़लीलम्-मा तुअ्मिनून (41)
व ला बिक़ौलि काहिन्, क़लीलम्-मा
तज़क्करून (42)
तन्ज़ीलुम् मिर्रब्बिल्-आलमीन (43)
व लौ तक़व्व-ल अ़लैना
बअ्ज़ल्-अक़ावील (44)
ल-अख़ज़्ना मिन्हु बिल्यमीन (45)
सुम्-म ल-क़तअ्ना मिन्हुल्-वतीन
(46)
फ़मा मिन्कुम्-मिन् अ-हदिन् अ़न्हु
हाजिज़ीन (47)
व इन्नहू ल-तज़्कि-रतुल्
लिल्-मुत्तक़ीन (48)
व इन्ना ल-नअ्लमु अन्-न मिन्कुम्
मुकज़्ज़िबीन (49)
व इन्नहू ल-हस्-रतुन्
अ़लल्-काफ़िरीन (50)
व इन्नहू ल-हक़्क़ुल्-यक़ीन (51)

وَلَمْ اَدْرِ مَا حِسَابِيَهْ (26)
يٰلَيْتَهَا كَانَتِ الْقَاضِيَةَ (27)
مَآ اَغْنٰى عَنِّيْ مَالِيَهْ (28)
هَلَكَ عَنِّيْ سُلْطٰنِيَهْ (29)
خُذُوْهُ فَغُلُّوْهُ (30)
ثُمَّ الْجَحِيْمَ صَلُّوْهُ (31)
ثُمَّ فِيْ سِلْسِلَةٍ ذَرْعُهَا سَبْعُوْنَ
ذِرَاعًا فَاسْلُكُوْهُ (32)
اِنَّهٗ كَانَ لَا يُؤْمِنُ بِاللّٰهِ الْعَظِيْمِ (33)
وَلَا يَحُضُّ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ (34)
فَلَيْسَ لَهُ الْيَوْمَ هٰهُنَا حَمِيْمٌ (35)
وَّلَا طَعَامٌ اِلَّا مِنْ غِسْلِيْنٍ (36)
لَّا يَاْكُلُهٗۤ اِلَّا الْخَاطِـُٔوْنَ (37)
فَلَآ اُقْسِمُ بِمَا تُبْصِرُوْنَ (38)
وَمَا لَا تُبْصِرُوْنَ (39)
اِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ (40)
وَّمَا هُوَ بِقَوْلِ شَاعِرٍ قَلِيْلًا مَّا تُؤْمِنُوْنَ (41)
وَلَا بِقَوْلِ كَاهِنٍ قَلِيْلًا مَّا تَذَكَّرُوْنَ (42)
تَنْزِيْلٌ مِّنْ رَّبِّ الْعٰلَمِيْنَ (43)
وَلَوْ تَقَوَّلَ عَلَيْنَا بَعْضَ الْاَقَاوِيْلِ (44)
لَاَخَذْنَا مِنْهُ بِالْيَمِيْنِ (45)
ثُمَّ لَقَطَعْنَا مِنْهُ الْوَتِيْنَ (46)
فَمَا مِنْكُمْ مِّنْ اَحَدٍ عَنْهُ حٰجِزِيْنَ (47)
وَاِنَّهٗ لَتَذْكِرَةٌ لِّلْمُتَّقِيْنَ (48)
وَاِنَّا لَنَعْلَمُ اَنَّ مِنْكُمْ مُّكَذِّبِيْنَ (49)
وَاِنَّهٗ لَحَسْرَةٌ عَلَى الْكٰفِرِيْنَ (50)
وَاِنَّهٗ لَحَقُّ الْيَقِيْنِ (51)

52. पस तुम अपने रब्ब-ए-अज़ीम के नाम की तसबीह करो।

सूरह अल-मआरिज मक्की

(आयतें 44, रुकूआत 2)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1-2. एक मांगने वाले ने अज़ाब मांगा जो नाज़िल होकर रहेगा, जो अहले कुफ़्र के लिए होगा कोई उसे हटाने वाला नहीं।

3. जो अल्लाह की तरफ़ से होगा, जो उरूज के ज़ीनों का मालिक है।

4. फ़रिश्ते और रूह उसकी तरफ़ चढ़ते हैं — एक ऐसे दिन में जिसकी मिक़दार पचास हज़ार साल है।

5. पस सब्र करो, खूबतर सब्र;

6-7. वो उसे बहुत दूर देख रहे हैं, मगर हम उसे क़रीब देख रहे हैं।

8. जिस दिन आसमान तेल की तलछट जैसा सियाह हो जाएगा।

9. और पहाड़ रंगबिरंग के ऊन जैसे हो जाएंगे।

10-14. कोई दोस्त भी किसी दोस्त को न पूछेगा, हालांकि वो उन्हें देख रहे होंगे। मुजरिम चाहेगा कि किसी तरह वो उस दिन के अज़ाब से छूटने के लिए अपने बेटों, और अपनी बीवी और अपने भाई और अपने उस कुम्बे को जो उसे पनाह देता है, और उन सभी लोगों को जो ज़मीन में हैं फ़िदया में दे डाले, फिर वह उसको नजात दिला दे।

15. हरगिज़ नहीं, वह शोला मारती हुई आग है।

16. सर तक की खाल को खींच लेने वाली,

17. वह उसे बुलाती है जिसने पीठ फेरी और मुंह मोड़ा,

18. और जमा किया और सैंत कर रखा।

19. बिलाशुबह इनसान बड़े कच्चे दिल वाला पैदा किया गया है।

20. जब उसे तकलीफ़ पहुंचती है तो घबरा जाता है,

21. और जब उसे खुशहाली हासिल होती है तो वह बुख़्ल से काम लेने लगता है।

22. मगर नमाज़ अदा करने वालों की बात और है,

फ़-सब्बिह् बिस्मि-रब्बिकल्-अज़ीम (52) ●

70 सूरतुल-मआरिजि
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 677 अक्षर, 260 शब्द, 44 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

स-अ-ल साइलुम्-बि-अ़ज़ाबिंव्-वाक़िअ़िल्- (1)
-लिल्-काफ़िरी-न लै-स लहू दाफ़िअ़ुम्-(2)
मिनल्लाहि ज़िल्-मआ़रिज (3)
तअ़्रुजुल्-मलाइ-कतु वर्रूहु इलैहि फ़ी यौमिन् का-न मिक़्दारुहू ख़म्सी-न अल्-फ़ स-नतिन् (4)
फ़स्बिर् सब्रन् जमीला (5)
इन्नहुम् यरौनहू बअ़ीदंव्-(6)
व नराहु क़रीबा (7)
यौ-म तकूनुस्समा-उ कल्मुह्लि (8)
व तकूनुल्-जिबालु कल्अ़िह्नि (9)
व ला यस्अलु हमीमुन् हमीमंय्-(10)
-युबस्सरू-नहुम्, य-वद्दुल्-मुज़्रिमु लौ यफ़्तदी मिन् अ़ज़ाबि यौमिइज़िम् बि-बनीहि (11)
व साहि-बतिही व अख़ीहि (12)
व फ़सी-लतिहिल्लती तुअ्वीहि (13)
व मन् फ़िल्अर्ज़ि जमीअ़न् सुम्-म युन्जीहि (14)
कल्ला, इन्नहा लज़ा (15)
नज़्ज़ा-अ़तल्-लिश्शवा (16)
तद्अू मन् अद्ब-र व त-वल्ला (17)
व ज-म-अ़ फ़औ़आ (18)
इन्नल्-इन्सा-न ख़ुलि-क़ हलूआ़ (19)
इज़ा मस्सहुश्शर्रु जज़ूआ़ (20)
व इज़ा मस्सहुल्-ख़ैरु मनूआ़ (21)
इल्लल्- मुसल्लीन (22)

فَسَبِّحْ بِاسْمِ رَبِّكَ الْعَظِيْمِ ۝۵۲

سُوْرَةُ الْمَعَارِجِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ۴۴ رُكُوْعَاتُهَا ۲

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

سَاَلَ سَآئِلٌۢ بِعَذَابٍ وَّاقِعٍ ۝۱
لِّلْكٰفِرِيْنَ لَيْسَ لَهٗ دَافِعٌ ۝۲
مِّنَ اللّٰهِ ذِى الْمَعَارِجِ ۝۳
تَعْرُجُ الْمَلٰٓئِكَةُ وَالرُّوْحُ اِلَيْهِ فِىْ يَوْمٍ
كَانَ مِقْدَارُهٗ خَمْسِيْنَ اَلْفَ سَنَةٍ ۝۴
فَاصْبِرْ صَبْرًا جَمِيْلًا ۝۵
اِنَّهُمْ يَرَوْنَهٗ بَعِيْدًا ۝۶
وَّ نَرٰىهُ قَرِيْبًا ۝۷
يَوْمَ تَكُوْنُ السَّمَآءُ كَالْمُهْلِ ۝۸
وَ تَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ ۝۹
وَلَا يَسْـَٔلُ حَمِيْمٌ حَمِيْمًا ۝۱۰
يُّبَصَّرُوْنَهُمْ يَوَدُّ الْمُجْرِمُ لَوْ يَفْتَدِىْ
مِنْ عَذَابِ يَوْمِئِذٍۢ بِبَنِيْهِ ۝۱۱
وَ صَاحِبَتِهٖ وَ اَخِيْهِ ۝۱۲
وَ فَصِيْلَتِهِ الَّتِىْ تُـْٔوِيْهِ ۝۱۳
وَمَنْ فِى الْاَرْضِ جَمِيْعًا ثُمَّ يُنْجِيْهِ ۝۱۴
كَلَّا اِنَّهَا لَظٰى ۝۱۵
نَزَّاعَةً لِّلشَّوٰى ۝۱۶
تَدْعُوْا مَنْ اَدْبَرَ وَتَوَلّٰى ۝۱۷
وَجَمَعَ فَاَوْعٰى ۝۱۸
اِنَّ الْاِنْسَانَ خُلِقَ هَلُوْعًا ۝۱۹
اِذَا مَسَّهُ الشَّرُّ جَزُوْعًا ۝۲۰
وَّاِذَا مَسَّهُ الْخَيْرُ مَنُوْعًا ۝۲۱
اِلَّا الْمُصَلِّيْنَ ۝۲۲

23. जो अपनी नमाज़ पर मुदावमत इख़्तियार करने वाले हैं;

24-25. और जिनके मालों में साइल (मांगनेवाले) और महरूम (न मांगनेवाले गरीब) का एक मालूम व मुतअय्यन हक़ होता है,

26. जो हिसाब-किताब वाले दिन की तसदीक़ करते हैं,

27. जो अपने रब के अज़ाब से डरते हैं।

28. बेशक उनके रब का अज़ाब ऐसी चीज़ नहीं है जिससे बेख़ौफ़ रहा जा सके।

29-30. जो अपनी बीवियों या अपनी ममलूका (लौन्डियों) के अलावा दूसरों से अपनी शर्मगाहों की हिफ़ाज़त करते हैं, पस इस बात पर उनपर कोई मलामत नहीं।

31. मगर जिसने इससे आगे बढ़कर चाहा तो ऐसे ही लोग हद से तजावुज़ करने वाले हैं।

32. जो अपने ऊपर किए गए एतिमादों और अपने अहद की पासदारी करते हैं।

33. जो अपनी गवाहियों पर क़ायम रहते हैं।

34. और जो अपनी नमाज़ की हिफ़ाज़त करते हैं।

35. वही लोग जन्नतों में इज़्ज़त के साथ रहेंगे।

36-37. फिर उन लोगों को जिन्होंने कुफ़्र इख़्तियार किया है, क्या हुआ है कि वो दाएं से और बाएं से गिरोह दर गिरोह तुम्हारी तरफ़ दौड़े आ रहे हैं?

38. क्या उनमें से हर एक यह लालच रखता है कि नेमत भरी जन्नत में दाख़िल हो?

39. हरगिज़ नहीं, हमने उन्हें उस चीज़ से पैदा किया है जिसे वो ख़ुद जानते हैं।

40-41. पस कुछ नहीं, मैं क़सम खाता हूं अतराफ़-ए-मश्रिक़ और अतराफ़-ए-मग़रिब के रब की, हम इसपर क़ादिर हैं कि उन्हें उनसे बेहतर से बदल दें, और हम पिछड़ जानेवाले नहीं।

42. लिहाज़ा उन्हें बेहूदा बातों में पड़े और खेलते हुए छोड़ दो यहां तक कि वो अपने उस दिन से दो-चार हों जिसका उनसे वादा किया जा रहा है।

43. जिस दिन वो क़ब्रों से तेज़ी के साथ निकलेंगे जैसे किसी निशान

अल्लज़ी-न हुम् अ़ला सलातिहिम् दा-इमून (23)

वल्लज़ी-न फ़ी अम्वालिहिम् हक़्क़ुम्-मअ़्लूम (24)

लिस्सा-इलि वल्-महरूम (25)

वल्लज़ी-न युसद्दिक़ू-न बियौमिद्-दीन (26)

वल्लज़ी-न हुम् मिन् अ़ज़ाबि रब्बिहिम् मुश्फ़िक़ून (27)

इन्-न अ़ज़ा-ब रब्बिहिम् ग़ैरु मअ्मून (28)

वल्लज़ी-न हुम् लिफ़ुरूजिहिम् हाफ़िज़ून (29)

इल्ला अ़ला अज़्वाजिहिम् औ मा म-लकत् ऐमानुहुम् फ़-इन्नहुम् ग़ैरु मलूमीन (30)

फ़-मनिब्तग़ा वरा-अ ज़ालि-क फ़-उलाइ-क हुमुल्-आ़दून (31)

वल्लज़ी-न हुम् लि-अमानातिहिम् व अ़ह्दिहिम् राऊ़न (32)

वल्लज़ी-न हुम् बि-शहादातिहिम् क़ा-इमून (33)

वल्लज़ी-न हुम् अ़ला सलातिहिम् युहाफ़िज़ून (34)

उलाइ-क फ़ी जन्नातिम्-मुक्रमून (35)●

फ़मालिल्लज़ी-न क-फ़रू क़ि-ब-ल-क मुह्तिओ़न (36)

अ़निल्-यमीनि व अ़निश्शिमालि अ़िज़ीन (37)

अ-यत्मअु कुल्लुम्रिइम्-मिन्हुम् अंय्युद्ख़-ल जन्न-त नओ़म (38)

कल्ला, इन्ना ख़लक़्नाहुम् मिम्मा यअ़्लमून (39)

फ़ला उक़्सिमु बिरब्बिल्-मशारिक़ि वल्-मग़ारिबि इन्ना ल-क़ादिरून (40)

अ़ला अन् नुबद्दि-ल ख़ैरम्-मिन्हुम् व मा नह्नु बिमस्बूक़ीन (41)

फ़-ज़र्हुम् यख़ूज़ू व यल्अ़बू हत्ता युलाक़ू यौमहुमुल्लज़ी यू-अ़दून (42)

यौ-म यख़्रुजू-न मिनल्-अज्दासि सिराअ़न्

الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ دَآئِمُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَالَّذِيْنَ فِيْٓ اَمْوَالِهِمْ حَقٌّ مَّعْلُوْمٌ ﴿٢٤﴾
لِّلسَّآئِلِ وَالْمَحْرُوْمِ ﴿٢٥﴾
وَالَّذِيْنَ يُصَدِّقُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ﴿٢٦﴾
وَالَّذِيْنَ هُمْ مِّنْ عَذَابِ رَبِّهِمْ مُّشْفِقُوْنَ ﴿٢٧﴾
اِنَّ عَذَابَ رَبِّهِمْ غَيْرُ مَاْمُوْنٍ ﴿٢٨﴾
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ ﴿٢٩﴾
اِلَّا عَلٰٓى اَزْوَاجِهِمْ اَوْ مَا مَلَكَتْ
اَيْمَانُهُمْ فَاِنَّهُمْ غَيْرُ مَلُوْمِيْنَ ﴿٣٠﴾
فَمَنِ ابْتَغٰى وَرَآءَ ذٰلِكَ فَاُولٰٓئِكَ هُمُ
الْعٰدُوْنَ ﴿٣١﴾
وَالَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَعَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ ﴿٣٢﴾
وَالَّذِيْنَ هُمْ بِشَهٰدٰتِهِمْ قَآئِمُوْنَ ﴿٣٣﴾
وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَاتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ ﴿٣٤﴾
ع اُولٰٓئِكَ فِيْ جَنّٰتٍ مُّكْرَمُوْنَ ﴿٣٥﴾
فَمَالِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا قِبَلَكَ مُهْطِعِيْنَ ﴿٣٦﴾
عَنِ الْيَمِيْنِ وَعَنِ الشِّمَالِ عِزِيْنَ ﴿٣٧﴾
اَيَطْمَعُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّدْخَلَ
جَنَّةَ نَعِيْمٍ ﴿٣٨﴾
كَلَّا اِنَّا خَلَقْنٰهُمْ مِّمَّا يَعْلَمُوْنَ ﴿٣٩﴾
فَلَآ اُقْسِمُ بِرَبِّ الْمَشٰرِقِ وَالْمَغٰرِبِ
اِنَّا لَقٰدِرُوْنَ ﴿٤٠﴾
عَلٰٓى اَنْ نُّبَدِّلَ خَيْرًا مِّنْهُمْ وَمَا نَحْنُ
بِمَسْبُوْقِيْنَ ﴿٤١﴾
فَذَرْهُمْ يَخُوْضُوْا وَيَلْعَبُوْا حَتّٰى
يُلٰقُوْا يَوْمَهُمُ الَّذِيْ يُوْعَدُوْنَ ﴿٤٢﴾
يَوْمَ يَخْرُجُوْنَ مِنَ الْاَجْدَاثِ سِرَاعًا

की तरफ़ दौड़े जा रहे हैं,

44. उनकी निगाहें झुकी होंगी, ज़िल्लत उनपर छा रही होगी। यह वह दिन होगा जिससे वो डराए जाते रहे हैं।

सूरह नूह मक्की

(आयतें 28, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. हमने नूह को उसकी क़ौम की तरफ़ भेजा कि "अपनी क़ौमवालों को ख़बरदार कर दो, इससे पहले कि उनपर कोई दर्दनाक अज़ाब आ जाए"।

2. उसने कहा, "ऐ मेरी क़ौम के लोगो, मैं तुम्हारे लिए एक खुला ख़बरदार करनेवाला हूं।

3. कि, 'अल्लाह की बन्दगी करो, और उसका डर रखो, और मेरी इताअत करो',

4. वह तुम्हें बख़्श कर तुम्हारे अपने गुनाहों से तुम्हें पाक कर देगा, और एक वक़्ते मुक़र्रर तक तुम्हें मुहलत देगा; यक़ीनन जब अल्लाह का वक़्ते मुक़र्रर आ जाता है, तो वह टलता नहीं, काश तुम जानते"।

5. उसने कहा, "ऐ मेरे रब, मैंने अपनी क़ौम के लोगों को रात और दिन बुलाया,

6. मगर मेरी पुकार ने उनके फ़रार ही में इज़ाफ़ा किया।

7. और जब भी मैंने उन्हें बुलाया ताकि तू उन्हें बख़्श दे तो उन्होंने अपनी उंगलियां अपने कानों में दे लीं, और अपने कपड़ों से ख़ुद को ढांक लिया, और अपनी ज़िद पर अड़ गए और बड़ा तकब्बुर किया।

8. फिर मैंने उन्हें खुल्लम-खुल्ला दावत दी;

9. फिर मैंने उनसे अलानिया भी बातें कीं, और उनसे छुपकर भी गुफ़्तगू की,

10. और मैंने कहा कि, 'अपने रब से मग़फ़िरत तलब करो; यक़ीनन वह बड़ा ही मग़फ़िरत फ़रमाने वाला है,

11. वह बादल भेजेगा तुमपर ख़ूब बरसने वाला।

12. और वह माल और बेटों से तुम्हारी मदद करेगा और तुम्हारे लिए बाग़ पैदा कर देगा और तुम्हारे लिए नहरें जारी कर देगा।

13. तुम्हें क्या हो गया है कि तुम (अपने दिलों में) अल्लाह के लिए किसी वक़ार व अज़मत की तवक़्क़ो नहीं रखते,

14. हालांकि उसने तुम्हें मुख़्तलिफ़ मराहिल से गुज़ारते हुए पैदा किया?

क-अन्नहुम् इला नुसुबिंय्-यूफ़िज़ून (43)

ख़ाशि-अतन् अब्सारुहुम् तर्-हक़ुहुम् ज़िल्लतुन्, ज़ालिकल्-यौमुल्लज़ी कानू यू-अदून (44) ●

71 सूरतु नूहिन्

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 974 अक्षर, 231 शब्द, 28 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रहीम

इन्ना अर्सल्ना नूहन् इला क़ौमिही अन् अन्ज़िर् क़ौम-क मिन् क़ब्लि अंय्यअ्ति-यहुम् अज़ाबुन् अलीम (1)

क़ा-ल या क़ौमि इन्नी लकुम् नज़ीरुम्-मुबीन (2)

अनिअ्बुदुल्ला-ह वत्तक़ूहु व अतीअून (3)

यग़्फ़िर् लकुम्-मिन् ज़ुनूबिकुम् व यु-अख़्ख़िर्कुम् इला अ-जलिम्-मुसम्मन्, इन्-न अ-जलल्लाहि इज़ा जा-अ ला यु-अख़्ख़रु लौ ● कुन्तुम् तअ्लमून (4)

क़ा-ल रब्बि इन्नी दऔतु क़ौमी लैलंव्-व नहारा (5)

फ़-लम् यज़िद्हुम् दुआई इल्ला फ़िरारा (6)

व इन्नी कुल्लमा दऔतुहुम् लि-तग़्फ़ि-र लहुम् ज-अ़लू असाबि-अहुम् फ़ी आज़ानिहिम् वस्तग़्शौ सिया-बहुम् व असर्रू वस्तक्बरुस्तिक्बारा (7)

सुम्-म इन्नी दऔतुहुम् जिहारा (8)

सुम्-म इन्नी अअ्लन्तु लहुम् व असरर्तु लहुम् इस्रारा (9)

फ़क़ुल्तुस्तग़्फ़िरू रब्बकुम्, इन्नहू का-न ग़फ़्फ़ारा (10)

युर्सिलिस्समा-अ अ़लैकुम् मिद्रारंव्-(11)

-व युम्दिद्कुम् बिअम्वालिंव्-व बनी-न व यज्अल्-लकुम् जन्नातिंव्-व यज्अल्-लकुम् अन्हारा (12)

मा लकुम् ला तर्जू-न लिल्लाहि वक़ारा (13)

व क़द् ख़-ल-क़कुम् अत्वारा (14)

كَاَنَّهُمْ اِلٰى نُصُبٍ يُّوْفِضُوْنَ ۝٤٣

خَاشِعَةً اَبْصَارُهُمْ تَرْهَقُهُمْ ذِلَّةٌ ؕ ذٰلِكَ

الْيَوْمُ الَّذِيْ كَانُوْا يُوْعَدُوْنَ ۝٤٤

سُوْرَةُ نُوْحٍ مَّكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢٨ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اِنَّاۤ اَرْسَلْنَا نُوْحًا اِلٰى قَوْمِهٖۤ اَنْ اَنْذِرْ

قَوْمَكَ مِنْ قَبْلِ اَنْ يَّاْتِيَهُمْ عَذَابٌ

اَلِيْمٌ ۝١

قَالَ يٰقَوْمِ اِنِّيْ لَكُمْ نَذِيْرٌ

مُّبِيْنٌ ۝٢

اَنِ اعْبُدُوا اللّٰهَ وَاتَّقُوْهُ وَاَطِيْعُوْنِ ۝٣

يَغْفِرْ لَكُمْ مِّنْ ذُنُوْبِكُمْ وَيُؤَخِّرْكُمْ

اِلٰۤى اَجَلٍ مُّسَمًّى ؕ اِنَّ اَجَلَ اللّٰهِ اِذَا جَآءَ

لَا يُؤَخَّرُ ۘ لَوْ كُنْتُمْ تَعْلَمُوْنَ ۝٤

قَالَ رَبِّ اِنِّيْ دَعَوْتُ قَوْمِيْ لَيْلًا وَّنَهَارًا ۝٥

فَلَمْ يَزِدْهُمْ دُعَآءِيْۤ اِلَّا فِرَارًا ۝٦

وَاِنِّيْ كُلَّمَا دَعَوْتُهُمْ لِتَغْفِرَ لَهُمْ جَعَلُوْۤا

اَصَابِعَهُمْ فِيْۤ اٰذَانِهِمْ وَاسْتَغْشَوْا ثِيَابَهُمْ

وَاَصَرُّوْا وَاسْتَكْبَرُوا اسْتِكْبَارًا ۝٧

ثُمَّ اِنِّيْ دَعَوْتُهُمْ جِهَارًا ۝٨

ثُمَّ اِنِّيْۤ اَعْلَنْتُ لَهُمْ وَاَسْرَرْتُ لَهُمْ اِسْرَارًا ۝٩

فَقُلْتُ اسْتَغْفِرُوْا رَبَّكُمْ ؕ اِنَّهٗ كَانَ غَفَّارًا ۝١٠

يُّرْسِلِ السَّمَآءَ عَلَيْكُمْ مِّدْرَارًا ۝١١

وَّيُمْدِدْكُمْ بِاَمْوَالٍ وَّبَنِيْنَ وَيَجْعَلْ

لَّكُمْ جَنّٰتٍ وَّيَجْعَلْ لَّكُمْ اَنْهٰرًا ۝١٢

مَا لَكُمْ لَا تَرْجُوْنَ لِلّٰهِ وَقَارًا ۝١٣

وَقَدْ خَلَقَكُمْ اَطْوَارًا ۝١٤

15. क्या तुमने देखा नहीं? कि अल्लाह ने किस तरह सात आसमान तह-ब-तह बनाए;

16. और चांद को उनमें नूर बनाया और सूरज को चिराग़ बनाया?

17. और अल्लाह ने तुम्हें ज़मीन से ख़ास एहतिमाम से पैदा किया,

18. फिर वह तुम्हें उसमें लौटाता है, और तुम्हें बाहर निकालेगा भी।

19. और अल्लाह ने तुम्हारे लिए ज़मीन को फ़र्श बनाया,

20. ताकि तुम उसकी खुली कुशादा राहों में चलो' !"

21. नूह ने कहा, "ऐ मेरे रब, उन्होंने मेरी नाफ़रमानी की, और उसकी पैरवी की जिसके माल और जिसकी औलाद ने उसके ख़सारे ही में इज़ाफ़ा किया,

22. और वो बहुत बड़ी चाल चले,

23. और उन्होंने कहा, 'अपने माबूदों को हरगिज़ न छोड़ो, और न 'वद्द' को छोड़ो, और न 'सुवाअ' को और न 'यग़ूस' और 'यऊक़' और 'नस्र' को।

24. उन्होंने बहुत से लोगों को गुमराह कर डाला है। (तो तू उन्हें राह न दिखा) और अब तू भी ज़ालिमों की गुमराही में इज़ाफ़ा कर!"

25. वो अपनी ख़ताओं के सबब से पानी में ग़र्क़ किए गए, फिर आग में दाख़िल कर दिए गए, फिर अपने और अल्लाह के दरमियान हायल होने वाले मददगार उन्हें दस्तियाब न हुए।

26. और नूह ने कहा, "ऐ मेरे रब, ज़मीन पर उन काफ़िरों में से कोई बसनेवाला न छोड़।

27. अगर तू उन्हें छोड़ देगा तो वो तेरे बन्दों को गुमराह कर देंगे और वो फ़ाजिरों और सख़्त काफ़िरों ही को जन्म देंगे।

28. ऐ मेरे रब, मुझे बख़्श दे और मेरे वालिदैन को भी और हर उस शख़्स को भी जो मेरे घर में मोमिन की हैसियत से दाख़िल हुआ, और आम मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को भी, और ज़ालिमों की हलाकत ही में इज़ाफ़ा कर!"

अलम् तरौ कै-फ़ ख़-लक़ल्लाहु सब्-अ समावातिन् तिबाक़ा (15)

व ज-अलल् क़-म-र फ़ीहिन्-न नूरंव्-व ज-अलश्शम्-स सिराजा (16)

वल्लाहु अम्ब-तकुम् मिनल्-अर्ज़ि नबाता (17)

सुम्-म युअ़ीदुकुम् फ़ीहा व युख़्रिजुकुम् इख़्राजा (18)

वल्लाहु ज-अ-ल लकुमुल्-अर्-ज़ बिसाता (19)

लि-तस्लुकू मिन्हा सुबुलन् फ़िजाजा (20) ●

क़ा-ल नूहुर्-रब्बि इन्नहुम् अ़सौनी वत्त-बअू मल्-लम् यज़िद्हु मालुहू व व-लदुहू इल्ला ख़सारा (21)

व म-करू मक्रन् कुब्बारा (22)

व क़ालू ला त-ज़रुन्-न आलि-ह-तकुम् व ला त-ज़रुन्-न वद्दंव्-व ला सुवाअंव्-व ला यग़ू-स व यअू-क़ व नस्रा (23)

व क़द् अज़ल्लू कसीरन्, व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला ज़लाला (24)

मिम्मा ख़तीआतिहिम् उग़्रिक़ू फ़-उद्ख़िलू नारन् फ़-लम् यजिदू लहुम् मिन् दूनिल्लाहि अन्सारा (25)

व क़ा-ल नूहुर्-रब्बि ला तज़र् अ़लल्-अर्ज़ि मिनल्-काफ़िरी-न दय्यारा (26)

इन्न-क इन् तज़र्हुम् युज़िल्लू अ़िबा-द-क व ला यलिदू इल्ला फ़ाजिरन् कफ़्फ़ारा (27)

रब्बिग़्फ़िर् ली व लिवालिदय्-य व लिमन् द-ख़-ल बैति-य मुअ्मिनंव्-व लिल्-मुअ्मिनी-न वल्-मुअ्मिनाति, व ला तज़िदिज़्ज़ालिमी-न इल्ला तबारा ●(28) ●

اَلَمْ تَرَوْا كَيْفَ خَلَقَ اللّٰهُ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ
طِبَاقًا ﴿١٥﴾
وَّجَعَلَ الْقَمَرَ فِيْهِنَّ نُوْرًا وَّجَعَلَ الشَّمْسَ
سِرَاجًا ﴿١٦﴾
وَاللّٰهُ اَنْۢبَتَكُمْ مِّنَ الْاَرْضِ نَبَاتًا ﴿١٧﴾
ثُمَّ يُعِيْدُكُمْ فِيْهَا وَيُخْرِجُكُمْ اِخْرَاجًا ﴿١٨﴾
وَاللّٰهُ جَعَلَ لَكُمُ الْاَرْضَ بِسَاطًا ﴿١٩﴾
لِّتَسْلُكُوْا مِنْهَا سُبُلًا فِجَاجًا ﴿٢٠﴾
قَالَ نُوْحٌ رَّبِّ اِنَّهُمْ عَصَوْنِيْ وَاتَّبَعُوْا
مَنْ لَّمْ يَزِدْهُ مَالُهٗ وَوَلَدُهٗۤ اِلَّا خَسَارًا ﴿٢١﴾
وَمَكَرُوْا مَكْرًا كُبَّارًا ﴿٢٢﴾
وَقَالُوْا لَا تَذَرُنَّ اٰلِهَتَكُمْ وَلَا تَذَرُنَّ
وَدًّا وَّلَا سُوَاعًا ۙ وَّلَا يَغُوْثَ وَيَعُوْقَ
وَنَسْرًا ﴿٢٣﴾
وَقَدْ اَضَلُّوْا كَثِيْرًا ۚ وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ
اِلَّا ضَلٰلًا ﴿٢٤﴾
مِمَّا خَطِيْٓـٰٔتِهِمْ اُغْرِقُوْا فَاُدْخِلُوْا نَارًا ۙ فَلَمْ
يَجِدُوْا لَهُمْ مِّنْ دُوْنِ اللّٰهِ اَنْصَارًا ﴿٢٥﴾
وَقَالَ نُوْحٌ رَّبِّ لَا تَذَرْ عَلَى الْاَرْضِ
مِنَ الْكٰفِرِيْنَ دَيَّارًا ﴿٢٦﴾
اِنَّكَ اِنْ تَذَرْهُمْ يُضِلُّوْا عِبَادَكَ وَلَا
يَلِدُوْٓا اِلَّا فَاجِرًا كَفَّارًا ﴿٢٧﴾
رَبِّ اغْفِرْ لِيْ وَلِوَالِدَيَّ وَلِمَنْ دَخَلَ
بَيْتِيَ مُؤْمِنًا وَّلِلْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ ۗ
ع وَلَا تَزِدِ الظّٰلِمِيْنَ اِلَّا تَبَارًا ﴿٢٨﴾

सूरह अल-जिन्न मक्की
(आयतें 28, रुकूआत 2)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. कह दो कि "मेरी तरफ़ वही की गई है कि जिन्नों की एक जमाअत ने सुना, फिर उन्होंने कहा कि, 'हमने एक अजीब कुरआन सुना,

2. जो भलाई और सूझ-बूझ की तरफ़ रहनुमाई करता है। लिहाज़ा हम उस पर ईमान लाए, और अब हम हरगिज़ किसी को अपने रब का शरीक नहीं ठहराएंगे।

3. और यह कि हमारे रब की शान बहुत बुलन्द है! उसने न तो अपने लिए कोई बीवी बनाई और न औलाद।

4. और यह कि हमारा बेवकूफ़ शख़्स अल्लाह के बारे में हक़ से बिल्कुल हटी हुई बातें कहता रहा है,

5. और यह कि हमने समझ रखा था कि इनसान और जिन्न हरगिज़ अल्लाह के बारे में झूट नहीं बोलेंगे।

6. और यह कि इनसानों में कितने ही मर्द ऐसे थे जो जिन्नों में से कितने ही मर्दों की पनाह मांगा करते थे, इस तरह उन्होंने उन्हें (जिन्नों को) और चढ़ा दिया।

7. और यह कि उन्होंने गुमान किया, जैसे कि तुमने गुमान किया कि अल्लाह किसी (नबी) को हरगिज़ नहीं उठाएगा।

8. और यह कि हमने आसमान को टटोला, तो उसे सख़्त पहरेदारों और शोलों से भरा हुआ पाया।

9. और यह कि हम उसमें बैठने की जगहों में सुनने के लिए बैठा करते थे, मगर अब जो कोई सुनना चाहे तो वह अपने लिए घात मे लगा एक शोला पाएगा।

10. और यह कि हम नहीं जानते कि उन लोगों के साथ जो ज़मीन में हैं बुराई का इरादा किया गया है, या उनके रब ने उनके लिए रुश्द व हिदायत का इरादा फ़रमाया है।

11. और यह कि हम में से कुछ लोग सालेह हैं और कुछ हम में से उससे फ़िरोतर हैं; हम मुख़्तलिफ़ तरीक़ों में बटे हुए हैं।

12. और यह कि हमने समझ लिया कि हम न ज़मीन में (कहीं जाकर) अल्लाह के क़ाबू से निकल सकते हैं, और न आसमान में कहीं भाग कर उसके क़ाबू से निकल सकते हैं।

13. और यह कि जब हमने हिदायत की बात सुनी, तो उसपर ईमान ले आए; अब जो कोई अपने रब पर ईमान

72 सूरतुल-जिन्नि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1126 अक्षर, 287 शब्द, 28 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुल् ऊहि-य इलय्-य अन्नहुस्-त-म-अ न-फ़रुम् मिनल्-जिन्नि फ़क़ालू इन्ना समिअ्ना क़ुर्आनन् अ़-जबा (1)

यह्दी इलर्-रुश्दि फ़-आमन्ना बिही, व लन्-नुश्रि-क बिरब्बिना अ-हदा (2)

व अन्नहू तआ़ला जद्दु रब्बिना मत्त-ख़-ज़ साहि-बतंव्-व ला व-लदा (3)

व अन्नहू का-न यक़ूलु सफ़ीहुना अ़लल्लाहि श-तता (4)

व अन्ना ज़नन्ना अल्-लन् तक़ूलल्-इन्सु वल्जिन्नु अ़लल्लाहि कज़िबा (5)

व अन्नहू का-न रिजालुम् मिनल्-इन्सि यअूज़ू-न बिरिजालिम् मिनल्-जिन्नि फ़ज़ादूहुम् र-हक़ा (6)

व अन्नहुम् ज़न्नू कमा ज़नन्तुम् अल्लंय्-यब्-अ़सल्लाहु अ-हदा (7)

व अन्ना ल-मस्नस्स-अ फ़-वजद्नाहा मुलिअत् ह-रसन् शदीदंव्-व शुहुबा (8)

व अन्ना कुन्ना नक़्अुदु मिन्हा मक़ाअि-द लिस्सम्अि, फ़-मंय्यस्तमिअ़िल्-आ-न यजिद् लहू शिहाबर्-र-सदा (9)

व अन्ना ला नद्री अ-शर्रुन् उरी-द बिमन् फ़िल्अर्ज़ि अम् अरा-द बिहिम् रब्बुहुम् र-शदा (10)

व अन्ना मिन्नस्सालिहू-न व मिन्ना दू-न ज़ालि-क कुन्ना तराइ-क़ क़ि-ददा (11)

व अन्ना ज़नन्ना अल्-लन् नुअ्जिज़ल्ला-ह फ़िल्अर्ज़ि व लन् नुअ्जि-ज़हू ह-रबा (12)

व अन्ना लम्मा समिअ्नल्-हुदा आमन्ना बिही, फ़-मंय्युअ्मिम् बिरब्बिही फ़ला यख़ाफ़ु बख़्संव्-व ला

سُوْرَةُ الْجِنِّ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢٨ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

قُلْ اُوْحِيَ اِلَيَّ اَنَّهُ اسْتَمَعَ نَفَرٌ مِّنَ الْجِنِّ
فَقَالُوْٓا اِنَّا سَمِعْنَا قُرْاٰنًا عَجَبًا ①
يَّهْدِيْٓ اِلَى الرُّشْدِ فَاٰمَنَّا بِهٖ ۭ وَلَنْ
نُّشْرِكَ بِرَبِّنَآ اَحَدًا ②
وَّاَنَّهٗ تَعٰلٰى جَدُّ رَبِّنَا مَا اتَّخَذَ صَاحِبَةً
وَّلَا وَلَدًا ③
وَّاَنَّهٗ كَانَ يَقُوْلُ سَفِيْهُنَا عَلَى اللّٰهِ شَطَطًا ④
وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ تَقُوْلَ الْاِنْسُ وَالْجِنُّ
عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا ⑤
وَّاَنَّهٗ كَانَ رِجَالٌ مِّنَ الْاِنْسِ يَعُوْذُوْنَ
بِرِجَالٍ مِّنَ الْجِنِّ فَزَادُوْهُمْ رَهَقًا ⑥
وَّاَنَّهُمْ ظَنُّوْا كَمَا ظَنَنْتُمْ اَنْ لَّنْ يَّبْعَثَ
اللّٰهُ اَحَدًا ⑦
وَّاَنَّا لَمَسْنَا السَّمَاۗءَ فَوَجَدْنٰهَا مُلِئَتْ
حَرَسًا شَدِيْدًا وَّشُهُبًا ⑧
وَّاَنَّا كُنَّا نَقْعُدُ مِنْهَا مَقَاعِدَ لِلسَّمْعِ ۭ
فَمَنْ يَّسْتَمِعِ الْاٰنَ يَجِدْ لَهٗ شِهَابًا رَّصَدًا ⑨
وَّاَنَّا لَا نَدْرِيْٓ اَشَرٌّ اُرِيْدَ بِمَنْ فِي الْاَرْضِ
اَمْ اَرَادَ بِهِمْ رَبُّهُمْ رَشَدًا ⑩
وَّاَنَّا مِنَّا الصّٰلِحُوْنَ وَمِنَّا دُوْنَ ذٰلِكَ ۭ
كُنَّا طَرَاۗىِٕقَ قِدَدًا ⑪
وَّاَنَّا ظَنَنَّآ اَنْ لَّنْ نُّعْجِزَ اللّٰهَ فِي الْاَرْضِ
وَلَنْ نُّعْجِزَهٗ هَرَبًا ⑫
وَّاَنَّا لَمَّا سَمِعْنَا الْهُدٰٓى اٰمَنَّا بِهٖ ۭ فَمَنْ
يُّؤْمِنْ بِرَبِّهٖ فَلَا يَخَافُ بَخْسًا وَّلَا

लाएगा, उसे न किसी हक़ तलफ़ी का ख़ौफ़ होगा और न ज़ुल्म व ज़्यादती का।

14. और यह कि हममें से कुछ फ़रमांबरदार हैं, और कुछ हम में से हक़ से मुनहरिफ़ हैं, तो जिन्हों ने फ़रमांबरदारी इख़्तियार की उन्होंने रुश्द व हिदायत की राह ढूंढ ली;

15. रहे वो लोग जो हक़ से मुनहरिफ़ हैं तो वो जहन्नम का ईंधन होकर रहे!"

16-17. और यह वही की गई है कि "अगर वो रास्ते पर साबित क़दमी के साथ चलते, तो हम उन्हें वाफ़िर पानी से सैराब करते, ताकि उसमें हम उन्हें आज़माएं"। और जो कोई अपने रब के ज़िक्र से मुंह मोड़ेगा, तो वह उसे सख़्त अज़ाब में डाल देगा।

18. और यह कि मस्जिदें अल्लाह के लिए हैं; लिहाज़ा अल्लाह के साथ किसी और को न पुकारो।

19. और यह कि जब अल्लाह का बन्दा उसे पुकारता हुआ खड़ा हुआ तो वो ऐसे लगते थे कि उसपर हुजूम कर देंगे।

20. कह दो, "मैं तो बस अपने रब ही को पुकारता हूं, और उसके साथ किसी को शरीक नहीं करता"।

21. कह दो कि "मैं न तो तुम्हारे लिए किसी नुक़सान का इख़्तियार रखता हूं और न किसी हिदायत का"।

22. कहो, "अल्लाह के मुक़ाबिल में मुझे कोई पनाह नहीं दे सकता, और न मैं उससे बचकर कतराने की कोई जगह पा सकता हूं।

23. सिवाय यह कि अल्लाह और उसके पैग़ामात की तबलीग़ मेरा काम है। और जो कोई अल्लाह और उसके रसूल की नाफ़रमानी करेगा, तो उसके लिए जहन्नम की आग है; जिसमें ऐसे लोग हमेशा रहेंगे"।

24. यहां तक कि जब वो उस चीज़ को देख लेंगे जिसका उनसे वादा किया जाता है, तो वो जान लेंगे कि कौन अपने मददगार के लिहाज़ से कमज़ोर और तादाद में कमतर है।

25. कह दोः "मैं नहीं जानता कि जिस चीज़ का तुमसे वादा किया जाता है वह क़रीब है या मेरा रब उसके लिए कोई लम्बी मुद्दत मुक़र्रर करता है;

26. ग़ैब का जाननेवाला वही है, और वह अपने ग़ैब पर किसी को मुत्तला नहीं करता।

27. अलबत्ता जिसे उसने रसूल की हैसियत से पसन्द कर लिया हो तो

र-हक़ा (13)

व अन्ना मिन्नल्-मुस्लिमू-न व मिन्नल्-क़ासितू-न, फ़-मन् अस्ल-म फ़-उलाइ-क त-हर्रौ र-शदा (14)

व अम्मल्-क़ासितू-न फ़कानू लि-जहन्न-म ह-तबा (15)

व अल्-लविस्तक़ामू अलत्तरी-क़ति ल-अस्क़ैनाहुम् माअन् ग़-दक़ा (16)

लिनफ़्ति-नहुम् फ़ीहि, व मंय्युअ्रिज़् अन् ज़िक्रि रब्बिही यस्लुक्हु अज़ाबन् स-अदा (17)

व अन्नल्-मसाजि-द लिल्लाहि फ़ला तद्ऊ मअल्लाहि अ-हदा (18)

व अन्नहू लम्मा क़ा-म अब्दुल्लाहि यद्ऊहु कादू यकूनू-न अलैहि लि-बदा (19) ●

क़ुल् इन्नमा अद्ऊ रब्बी व ला उश्रिकु बिही अ-हदा (20)

क़ुल् इन्नी ला अम्लिकु लकुम् ज़र्रंव्-व ला र-शदा (21)

क़ुल् इन्नी लंय्युजी-रनी मिनल्लाहि अ-हदुंव्-व लन् अजि-द मिन् दूनिही मुल्त-हदा (22)

इल्ला बलाग़म् मिनल्लाहि व रिसालातिही, व मंय्यअ्सिल्ला-ह व रसूलहू फ़-इन्-न लहू ना-र जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदा (23)

हत्ता इज़ा रऔ मा यू-अदू-न फ़-सयअ्लमू-न मन् अज़अफ़ु नासिरंव्-व अक़ल्लु अ-ददा (24)

क़ुल् इन् अद्री अ-क़रीबुम्-मा तू-अदू-न अम् यज्अलु लहू रब्बी अ-मदा (25)

आलिमुल्-ग़ैबि फ़ला युज़्हिरु अला ग़ैबिही अ-हदा (26)

इल्ला मनिर्तज़ा मिर्रसूलिन् फ़-इन्नहू यस्लुकु

رَهَقًا ﴿١٣﴾

وَّاَنَّا مِنَّا الْمُسْلِمُوْنَ وَمِنَّا الْقٰسِطُوْنَ ۭ فَمَنْ اَسْلَمَ فَاُولٰۗىِٕكَ تَحَرَّوْا رَشَدًا ﴿١٤﴾

وَاَمَّا الْقٰسِطُوْنَ فَكَانُوْا لِجَهَنَّمَ حَطَبًا ﴿١٥﴾

وَّاَنْ لَّوِ اسْتَقَامُوْا عَلَى الطَّرِيْقَةِ لَاَسْقَيْنٰهُمْ مَّاۗءً غَدَقًا ﴿١٦﴾

لِّنَفْتِنَهُمْ فِيْهِ ۭ وَمَنْ يُّعْرِضْ عَنْ ذِكْرِ رَبِّهٖ يَسْلُكْهُ عَذَابًا صَعَدًا ﴿١٧﴾

وَّاَنَّ الْمَسٰجِدَ لِلّٰهِ فَلَا تَدْعُوْا مَعَ اللّٰهِ اَحَدًا ﴿١٨﴾

وَّاَنَّهٗ لَمَّا قَامَ عَبْدُ اللّٰهِ يَدْعُوْهُ كَادُوْا يَكُوْنُوْنَ عَلَيْهِ لِبَدًا ﴿١٩﴾ ع

قُلْ اِنَّمَآ اَدْعُوْا رَبِّيْ وَلَآ اُشْرِكُ بِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٠﴾

قُلْ اِنِّىْ لَآ اَمْلِكُ لَكُمْ ضَرًّا وَّلَا رَشَدًا ﴿٢١﴾

قُلْ اِنِّىْ لَنْ يُّجِيْرَنِيْ مِنَ اللّٰهِ اَحَدٌ ڏ وَّلَنْ اَجِدَ مِنْ دُوْنِهٖ مُلْتَحَدًا ﴿٢٢﴾

اِلَّا بَلٰغًا مِّنَ اللّٰهِ وَرِسٰلٰتِهٖ ۭ وَمَنْ يَّعْصِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَاِنَّ لَهٗ نَارَ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ اَبَدًا ﴿٢٣﴾

حَتّٰٓي اِذَا رَاَوْا مَا يُوْعَدُوْنَ فَسَيَعْلَمُوْنَ مَنْ اَضْعَفُ نَاصِرًا وَّاَقَلُّ عَدَدًا ﴿٢٤﴾

قُلْ اِنْ اَدْرِيْٓ اَقَرِيْبٌ مَّا تُوْعَدُوْنَ اَمْ يَجْعَلُ لَهٗ رَبِّيْٓ اَمَدًا ﴿٢٥﴾

عٰلِمُ الْغَيْبِ فَلَا يُظْهِرُ عَلٰي غَيْبِهٖٓ اَحَدًا ﴿٢٦﴾

اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ فَاِنَّهٗ يَسْلُكُ

उसके आगे और उसके पीछे से निगरानी का एहतिमाम कर देता है;

28. ताकि वह यक़ीनी बना दे कि उन्होंने अपने रब के पैग़ामात पहुंचा दिए और जो कुछ उनके पास है उसका वह इहाता किए हुए है, और हर चीज़ उसने शुमार कर रखी है"।

सूरह अल-मुज़्ज़म्मिल मक्की

(आयतें 20, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. ऐ अपने आपको कपड़े में लपेटनेवाले,

2. रात को उठकर खड़े रहा करो — सिवाय कम रातों के,

3-4. आधी रात, या उससे कुछ थोड़ा कम कर लो, या उससे कुछ ज़्यादा बढ़ा लो और क़ुरआन को ख़ूब ठहर-ठहरकर पढ़ो।

5. यक़ीनन हम तुमपर एक भारी बात डालने को हैं;

6. बेशक रात का उठना (नफ़्स को) सख़्त रौंदता है, और गुफ़्तगू के लिहाज़ से निहायत दुरुस्त व मुनासिब है,

7. यक़ीनन दिन में तुम्हारे लिए बहुत मशग़ला (काम) रहता है।

8. और अपने रब के नाम का ज़िक्र किया करो, और सबसे कटकर उसी की तरफ़ छूट आओ।

9. वह मशरिक़ और मग़रिब का रब है, उसके सिवा कोई माबूद नहीं, लिहाज़ा उसी को अपना कारसाज़ बना लो।

10. और जो कुछ वो कहते हैं उस पर सब्र करो, और ख़ूबसूरती के साथ उन्हें छोड़ दो।

11. और तुम मुझे छोड़ दो और झुटलाने वाले ख़ुश हाल लोगों को, और उन्हें थोड़ी मुहलत दो,

12-13. यक़ीनन हमारे पास बेड़ियां हैं और भड़कती हुई आग और गुलूगीर खाना है, और दर्दनाक अज़ाब,

14. जिस दिन ज़मीन और पहाड़ लरज़ उठेंगे और पहाड़ रेत के ऐसे तूदे होकर रह जाएंगे जो बिखरे जा रहे हों।

15. यक़ीनन हमने तुम्हारी तरफ़ एक रसूल तुमपर गवाह बनाकर भेजा है जिस तरह हमने फ़िरऔन की तरफ़ एक रसूल भेजा था।

मिम्-बैनि यदैहि व मिन् ख़ल्फ़िही र-सदा (27)
लियअ्-ल-म अन् क़द् अब्लग़ू रिसालाति रब्बिहिम् व अहा-त बिमा लदैहिम् व अह्सा कुल्-ल शैइन् अ-ददा (28) ●

73 सूरतुल्-मुज़्ज़म्मिलि (मक्की) इस सूरः में अरबी के 864 अक्षर, 200 शब्द, 20 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

या अय्युहल्-मुज़्ज़म्मिलु (1)
क़ुमिल्-लै-ल इल्ला क़लीला (2)
निस्फ़हू अविन्क़ुस् मिन्हु क़लीला (3)
औ ज़िद् अ़लैहि व रत्तिलिल्-क़ुरआ-न तर्तीला (4)
इन्ना सनुल्क़ी अ़लै-क क़ौलन् सक़ीला (5)
इन्-न नाशि-अतल्लैलि हि-य अशद्दु वत्अंव्-व अक़्वमु क़ीला (6)
इन्-न ल-क फ़िन्नहारि सब्हन् तवीला (7)
वज़्कुरिस्-म रब्बि-क व त-बत्तल् इलैहि तब्तीला (8)
रब्बुल्-मश्रिक़ि वल्-मग़्रिबि ला इला-ह इल्ला हु-व फ़त्तख़िज़्हु वकीला (9)
वस्बिर अ़ला मा यक़ूलू-न वह्जुर्हुम् हज्रन् जमीला (10)
व ज़र्नी वल्-मुकज़्ज़िबी-न उलिन्नअ्मति व मह्हिल्हुम् क़लीला (11)
इन्-न लदैना अन्कालंव्-व जहीमा (12)
व तआमन् ज़ा ग़ुस्सतिंव्-व अ़ज़ाबन् अलीमा (13)
यौ-म तर्जुफ़ुल्-अर्ज़ु वल्-जिबालु व कानतिल्-जिबालु कसीबम्-महीला (14)
इन्ना अर्सल्ना इलैकुम् रसूलन् शाहिदन् अ़लैकुम् कमा अर्सल्ना इला फ़िर्औ-न रसूला (15)

مِنْۢ بَيْنِ يَدَيْهِ وَمِنْ خَلْفِهٖ رَصَدًا ﴿٢٧﴾
لِّيَعْلَمَ اَنْ قَدْ اَبْلَغُوْا رِسٰلٰتِ رَبِّهِمْ
وَاَحَاطَ بِمَا لَدَيْهِمْ وَاَحْصٰى كُلَّ
شَيْءٍ عَدَدًا ﴿٢٨﴾

سُوْرَةُ الْمُزَّمِّلِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
يٰۤاَيُّهَا الْمُزَّمِّلُ ﴿١﴾
قُمِ الَّيْلَ اِلَّا قَلِيْلًا ﴿٢﴾
نِّصْفَهٗۤ اَوِ انْقُصْ مِنْهُ قَلِيْلًا ﴿٣﴾
اَوْ زِدْ عَلَيْهِ وَرَتِّلِ الْقُرْاٰنَ تَرْتِيْلًا ﴿٤﴾
اِنَّا سَنُلْقِيْ عَلَيْكَ قَوْلًا ثَقِيْلًا ﴿٥﴾
اِنَّ نَاشِئَةَ الَّيْلِ هِيَ اَشَدُّ وَطْاً وَّاَقْوَمُ
قِيْلًا ﴿٦﴾
اِنَّ لَكَ فِي النَّهَارِ سَبْحًا طَوِيْلًا ﴿٧﴾
وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ وَتَبَتَّلْ اِلَيْهِ تَبْتِيْلًا ﴿٨﴾
رَبُّ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ لَاۤ اِلٰهَ اِلَّا هُوَ
فَاتَّخِذْهُ وَكِيْلًا ﴿٩﴾
وَاصْبِرْ عَلٰى مَا يَقُوْلُوْنَ وَاهْجُرْهُمْ
هَجْرًا جَمِيْلًا ﴿١٠﴾
وَذَرْنِيْ وَالْمُكَذِّبِيْنَ اُولِي النَّعْمَةِ وَ
مَهِّلْهُمْ قَلِيْلًا ﴿١١﴾
اِنَّ لَدَيْنَاۤ اَنْكَالًا وَّجَحِيْمًا ﴿١٢﴾
وَّطَعَامًا ذَا غُصَّةٍ وَّعَذَابًا اَلِيْمًا ﴿١٣﴾
يَوْمَ تَرْجُفُ الْاَرْضُ وَالْجِبَالُ وَكَانَتِ
الْجِبَالُ كَثِيْبًا مَّهِيْلًا ﴿١٤﴾
اِنَّاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلَيْكُمْ رَسُوْلًا ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ
كَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا ﴿١٥﴾

16. मगर फ़िरऔन ने रसूल की नाफ़रमानी की, तो हमने उसे सख़्त वबाल में पकड़ लिया।

17. अगर तुमने कुफ़्र किया तो उस दिन से कैसे बचोगे जो बच्चों को बूढ़ा कर दे?

18. आसमान उसके सबब से फट जाएगा, उसका वादा पूरा होकर रहता है।

19. यक़ीनन यह एक यاददिहानी है; अब जो चाहे अपने रब की तरफ़ रास्ता इख़्तियार कर ले।

20. यक़ीनन तुम्हारा रब जानता है कि तुम तक़रीबन दो तिहाई रात, आधी रात और एक तिहाई रात तक क़ियाम करते हो; और एक गिरोह उन लोगों में से जो तुम्हारे साथ हैं क़ियाम करता है; और अल्लाह रात और दिन की घटत-बढ़त मुतअय्यन करता है। उसे मालूम है कि तुम सब उसको निबाह न सकोगे, लिहाज़ा उसने तुम पर नज़रे इनायत फ़रमाई। अब जितना क़ुरआन आसानी से हो सके पढ़ लिया करो। उसे मालूम है कि तुममें से कुछ मरीज़ भी होंगे, और कुछ दूसरे लोग अल्लाह का फ़ज़्ल तलाश करते हुए ज़मीन में सफ़र करेंगे, और कुछ दूसरे लोग अल्लाह की राह में जंग करेंगे। लिहाज़ा जितना उसमें से आसानी से हो सके पढ़ लिया करो। और नमाज़ क़ायम करो और ज़कात देते रहो, और अल्लाह को क़र्ज़ दो अच्छा क़र्ज़। तुम जो भलाई भी अपने लिए पहले से भेज रखोगे उसे अल्लाह के यहां ज़्यादा बेहतर और अजर के लिहाज़ से बहुत बढ़कर पाओगे। और अल्लाह से मग़फ़िरत तलब करते रहो; बेशक अल्लाह बहुत मग़फ़िरत फ़रमानेवाला, निहायत रहमवाला है।

सूरह अल-मुद्दस्सिर मक्की

(आयतें 56, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1-2. ऐ ओढ़ने लपेटनेवाले, उठो, और (लोगों को) ख़बरदार करो।

3. और अपने रब ही की बड़ाई बयान कर।

4-5. अपने दामन को पाक रखो और गन्दगी से दूर रहो।

फ़-असा फ़िर्औनुर्-रसू-ल फ़-अख़ज़्नाहु अख़्ज़ंव्-वबीला (16)
फ़कै-फ़ तत्तक़ू-न इन् क-फ़र्तुम् यौमंय्यज्-अलुल्-विल्दा-न शीबा (17)
अस्समा-उ मुन्फ़तिरुम् बिही, का-न वअ्दुहू मफ़्अूला (18)
इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शाअत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला (19) ●
इन्-न रब्ब-क यअ्लमु अन्न-क तक़ूमु अद्ना मिन् सुलु-सयिल्लैलि व निस्-फ़हू व सुलु-सहू व ताइ-फ़तुम् मिनल्लज़ी-न म-अ-क, वल्लाहु युक़द्दिरुल्लै-ल वन्नहा-र, अ़लि-म अल्-लन् तुह्सूहु फ़ता-ब अ़लैकुम् फ़क़्रऊ मा त-यस्स-र मिनल्-क़ुर्आनि, अ़लि-म अन् स-यकूनु मिन्कुम् मर्ज़ा व आ-ख़रू-न यज़्रिबू-न फ़िल्अर्ज़ि यब्तग़ू-न मिन् फ़ज़्लिल्लाहि व आ-ख़रू-न युक़ातिलू-न फ़ी सबीलिल्लाहि फ़क़्रऊ मा त-यस्स-र मिन्हु व अक़ीमुस्सला-त व आतुज़्-ज़का-त व अक़्रिज़ुल्ला-ह क़र्ज़न् ह-सनन्, व मा तुक़द्दिमु लि-अन्फ़ुसिकुम् मिन् ख़ैरिन् तजिदूहु अ़िन्दल्लाहि हु-व ख़ैरंव्-व अअ्-ज़-म अज्रन्, वस्तग़्फ़िरुल्ला-ह, इन्नल्ला-ह ग़फ़ूरुर्-रहीम (20) ●

74 सूरतुल-मुद्दस्सिरि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1145 अक्षर, 256 शब्द, 56 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

या अय्युहल् मुद्दस्सिरु (1)
क़ुम् फ़-अन्ज़िर् (2)
व रब्ब-क फ़-कब्बिर (3)
व सिया-ब-क फ़-तह्हिर् (4)
वर्रुज्-ज़ फ़ह्जुर (5)

فَعَصٰى فِرْعَوْنُ الرَّسُوْلَ فَاَخَذْنٰهُ اَخْذًا
وَّبِيْلًا ⑯
فَكَيْفَ تَتَّقُوْنَ اِنْ كَفَرْتُمْ يَوْمًا
يَّجْعَلُ الْوِلْدَانَ شِيْبًا ⑰
السَّمَآءُ مُنْفَطِرٌۢ بِهٖ كَانَ وَعْدُهٗ مَفْعُوْلًا ⑱
اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ
اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ⑲
اِنَّ رَبَّكَ يَعْلَمُ اَنَّكَ تَقُوْمُ اَدْنٰى مِنْ ثُلُثَيِ
الَّيْلِ وَنِصْفَهٗ وَثُلُثَهٗ وَطَآئِفَةٌ مِّنَ
الَّذِيْنَ مَعَكَ ؕ وَاللّٰهُ يُقَدِّرُ الَّيْلَ وَ
النَّهَارَ ؕ عَلِمَ اَنْ لَّنْ تُحْصُوْهُ فَتَابَ عَلَيْكُمْ
فَاقْرَءُوْا مَا تَيَسَّرَ مِنَ الْقُرْاٰنِ ؕ عَلِمَ اَنْ
سَيَكُوْنُ مِنْكُمْ مَّرْضٰى ۙ وَاٰخَرُوْنَ يَضْرِبُوْنَ
فِى الْاَرْضِ يَبْتَغُوْنَ مِنْ فَضْلِ اللّٰهِ ۙ وَ
اٰخَرُوْنَ يُقَاتِلُوْنَ فِىْ سَبِيْلِ اللّٰهِ ۖ فَاقْرَءُوْا
مَا تَيَسَّرَ مِنْهُ ۙ وَاَقِيْمُوا الصَّلٰوةَ وَاٰتُوا الزَّكٰوةَ
وَاَقْرِضُوا اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا ؕ وَمَا تُقَدِّمُوْا
لِاَنْفُسِكُمْ مِّنْ خَيْرٍ تَجِدُوْهُ عِنْدَ اللّٰهِ
هُوَ خَيْرًا وَّاَعْظَمَ اَجْرًا ؕ وَاسْتَغْفِرُوا
اللّٰهَ ؕ اِنَّ اللّٰهَ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ⑳

سُوْرَةُ الْمُدَّثِّرِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ۵۶ رُكُوْعَاتُهَا ۲

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

يٰۤاَيُّهَا الْمُدَّثِّرُ ①
قُمْ فَاَنْذِرْ ②
وَرَبَّكَ فَكَبِّرْ ③
وَثِيَابَكَ فَطَهِّرْ ④
وَالرُّجْزَ فَاهْجُرْ ⑤

6-7. अपनी सअई (कोशिशों) को ज़्यादा समझकर मुनक़्ता न करो और अपने रब की ख़ातिर सब्र इख़्तियार करो।

8. पस जब नाक़ूर (ज़मीन) को कुरेद लिया जाएगा,

9-10. तो वह ज़माना जिस दिन ऐसा होगा बड़ा ही सख़्त दिन होगा, काफ़िरों पर आसान न होगा।

11. मुझे और उसे छोड़ दो जिसे मैंने अकेले पैदा किया,

12. और उसे दूर तक फैला हुआ माल दिया।

13. और हाज़िर रहने वाले बेटे,

14. और मैंने उसके लिए अच्छी तरह से राह हमवार की;

15. फिर वह ख़्वाहिश रखता है कि मैं उसके लिए और इज़ाफ़ा करूंगा।

16. हरगिज़ नहीं, वह हमारी आयतों का दुश्मन है;

17. अनक़रीब उसे घेर कर सख़्त चढ़ाई चढ़ाऊंगा।

18. उसने सोचा और अन्दाज़ से एक बात तय की।

19. तो हलाक हो, कैसा अन्दाज़ा किया!

20. फिर हलाक हो कैसा अन्दाज़ा किया!

21. फिर नज़र दौड़ाई,

22. फिर तेवरी चढ़ाई, और मुंह बनाया,

23. फिर पीठ फेरी और तकब्बुर किया।

24. आख़िरकार बोला, "यह तो बस एक जादू है जो पहले से चला आ रहा है;

25. यह तो महज़ इनसानी कलाम है"।

26. मैं अनक़रीब ही उसे सक़र (जहन्नम) में झोंक दूंगा;

27. और तुम्हें क्या मालूम कि सक़र (जहन्नम) क्या है?

28. वह न तरस खाएगी और न छोड़ेगी।

29. खाल को झुलस देनेवाली है,

30. उसपर उन्नीस (कारकुन) मुक़र्रर हैं।

31. और हमने उस आग पर मुक़र्रर रहने वालों को फ़रिश्ते ही बनाया है, और हमने उनकी तादाद उन लोगों के लिए जिन्होंने कुफ़्र की

व ला तम्नुन् तस्तक्सिर (6)
व लि-रब्बि-क फ़सबिर (7)
फ़-इज़ा नुक़ि-र फ़िन्नाक़ूरि (8)
फ़-ज़ालि-क यौमइज़िंय्-यौमुन् असीर (9)
अलल्-काफ़िरी-न ग़ैरु यसीर (10)
ज़र्नी व मन् ख़लक़्तु वहीदा (11)
व जअ़ल्तु लहू मालम्-मम्दूदा (12)
व बनी-न शुहूदा (13)
व मह्हत्तु लहू तम्हीदा (14)
सुम्-म यत्मअु अन् अज़ी-द (15)
कल्ला, इन्नहू का-न लिआयातिना अ़नीदा (16)
स-उर्हिक़ुहू सअूदा (17)
इन्नहू फ़क्क-र व क़द्द-र (18)
फ़क़ुति-ल कै-फ़ क़द्द-र (19)
सुम्-म क़ुति-ल कै-फ़ क़द्द-र (20)
सुम्-म न-ज़-र (21)
सुम्-म अ़-ब-स व ब-स-र (22)
सुम्-म अद्-ब-र वस्तक्-ब-र (23)
फ़क़ा-ल इन् हाज़ा इल्ला सिह्रुंय्-युअ्सर (24)
इन् हाज़ा इल्ला क़ौलुल्-ब-शर (25)
स-उस्लीहि स-क़र (26)
व मा अद्रा-क मा स-क़र (27)
ला तुब्क़ी व ला त-ज़र (28)
लव्वा-हतुल् लिल्ब-शर (29)
अ़लैहा तिस्-अ़-त अ़-शर (30)
व मा जअ़ल्ना अस्हाबन्नारि इल्ला मलाइ-कतंव्-व मा जअ़ल्ना अ़िद्द-तहुम् इल्ला फ़ित्-नतल् लिल्लज़ी-न

وَلَا تَمْنُنْ تَسْتَكْثِرُ ۶
وَلِرَبِّكَ فَاصْبِرْ ۷
فَاِذَا نُقِرَ فِي النَّاقُوْرِ ۸
فَذٰلِكَ يَوْمَئِذٍ يَّوْمٌ عَسِيْرٌ ۹
عَلَى الْكٰفِرِيْنَ غَيْرُ يَسِيْرٍ ۱۰
ذَرْنِيْ وَمَنْ خَلَقْتُ وَحِيْدًا ۱۱
وَّجَعَلْتُ لَهٗ مَالًا مَّمْدُوْدًا ۱۲
وَّبَنِيْنَ شُهُوْدًا ۱۳
وَّمَهَّدْتُّ لَهٗ تَمْهِيْدًا ۱۴
ثُمَّ يَطْمَعُ اَنْ اَزِيْدَ ۱۵
كَلَّا ۭ اِنَّهٗ كَانَ لِاٰيٰتِنَا عَنِيْدًا ۱۶
سَاُرْهِقُهٗ صَعُوْدًا ۱۷
اِنَّهٗ فَكَّرَ وَقَدَّرَ ۱۸
فَقُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۱۹
ثُمَّ قُتِلَ كَيْفَ قَدَّرَ ۲۰
ثُمَّ نَظَرَ ۲۱
ثُمَّ عَبَسَ وَبَسَرَ ۲۲
ثُمَّ اَدْبَرَ وَاسْتَكْبَرَ ۲۳
فَقَالَ اِنْ هٰذَآ اِلَّا سِحْرٌ يُّؤْثَرُ ۲۴
اِنْ هٰذَآ اِلَّا قَوْلُ الْبَشَرِ ۲۵
سَاُصْلِيْهِ سَقَرَ ۲۶
وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سَقَرُ ۲۷
لَا تُبْقِيْ وَلَا تَذَرُ ۲۸
لَوَّاحَةٌ لِّلْبَشَرِ ۲۹
عَلَيْهَا تِسْعَةَ عَشَرَ ۳۰
وَمَا جَعَلْنَآ اَصْحٰبَ النَّارِ اِلَّا مَلٰٓئِكَةً
وَّمَا جَعَلْنَا عِدَّتَهُمْ اِلَّا فِتْنَةً لِّلَّذِيْنَ

रविश इख़्तियार की, आज़माइश बनाकर रखी है, ताकि उन लोगों को जिन्हें किताब दी गई थी यक़ीन हो जाए, और वो लोग जो ईमान ले आए, वो ईमान में और आगे बढ़ जाएं, और जिन लोगों को किताब अता हुई वो और अहले ईमान किसी शक व शुबह में न पड़ें, और ताकि जिनके दिलों में रोग है वो और अहले कुफ़्र कहें कि "इस बयान से अल्लाह का क्या मन्शा है?" इस तरह अल्लाह जिसे चाहता है गुमराह कर देता है, और जिसे चाहता है हिदायत बख़्शता है; और तुम्हारे रब के लश्करों को खुद उसके सिवा कोई नहीं जानता। और वह तो इनसानों के लिए महज़ एक याददिहानी है।

32-35. हरगिज़ नहीं! गवाह है चांद और गवाह है रात जबकि वह पीठ फेर चुकी और सुबह जबकि वह खूब रौशन हो जाए, यक़ीनन वह बड़ी चीज़ों में से एक है।

36. इनसान के लिए डरावे की हैसियत से,

37. हर उस शख़्स के लिए जो तुममें से आगे बढ़ना या पीछे हटना चाहे।

38. हर एक शख़्स जो कुछ उसने कमाया उसके हाथ रहन है,

39. सिवाय दाहिने वालों के;

40-41. वो जन्नतों में होंगे, मुजरिमों के सिलसिले में पूछ-गछ कर रहे होंगे,

42. "तुम्हें सक़र (जहन्नम) में क्या चीज़ ले आई?"

43. वो कहेंगे कि "हम नमाज़ पढ़नेवालों में से न हुए,

44. और न हम मिसकीन को खाना खिलाते थे,

45. और बेहूदा नुकताचीनियां करनेवालों के साथ हम भी कट-हुज्जतियां करते थे,

46. और हम जज़ा और सज़ा के दिन को झुटलाते थे,

47. यहां तक कि हमें इस यक़ीनी चीज़ से साबिक़ा पेश आ गया"।

48. पस सिफ़ारिश करने वालों की कोई सिफ़ारिश उन्हें कुछ नफ़ा न पहुंचा सकेगी।

49. आख़िरकार उन्हें क्या हुआ है कि वो याददिहानी से एराज़ करते हैं,

50-51. गोया वो बिदके हुए जंगली गधे हैं जो शेर से भागे हैं।

क-फ़रू लि-यस्तैक़िनल्लज़ी-न
ऊतुल्-किता-ब व यज़्दादल्लज़ी-न
आमनू ईमानंव्-व ला यरताबल्लज़ी-न
ऊतुल्-किता-ब वल्-मुअ्मिनू-न व
लि-यकूलल्लज़ी-न फ़ी क़ुलूबिहिम्
म-रज़ुंव्-वल्-काफ़िरू-न माज़ा
अरादल्लाहु बिहाज़ा म-सलन्,
क-ज़ालि-क युज़िल्लुल्लाहु मंय्यशा-उ
व यह्दी मंय्यशा-उ, व मा यअ्लमु
जुनू-द रब्बि-क इल्ला हु-व, व मा
हि-य इल्ला ज़िक्रा लिल्ब-शर (31)●
कल्ला वल्क़-मरि (32)
वल्लैलि इज़् अद्-ब-र (33)
वस्सुब्हि इज़ा अस्-फ़-र (34) *इन्नहा*
ल-इह्दल्-कु-बरि (35) *नज़ीरल्*
लिल्ब-शर (36)
लिमन् शा-अ मिन्कुम्
अंय्य-तक़द्-द-म औ य-त-अख़्ख़-र
(37)
कुल्लु नफ़्सिम्-बिमा क-सबत्
रही-नतुन् (38)
इल्ला अस्हाबल्-यमीन (39)
फ़ी जन्नातिन्, य-तसा-अलून (40)
अनिल्-मुज्रिमीन (41)
मा स-ल-ककुम् फ़ी स-क़र (42)
क़ालू लम् नकु मिनल्-मुसल्लीन (43)
व लम् नकु नुत्अिमुल्-मिस्कीन (44)
व कुन्ना नख़ूज़ु म-अल्-ख़ा-इज़ीन
(45)
व कुन्ना नुकज़्ज़िबु बियौमिद्दीन (46)
हत्ता अतानल्-यक़ीन (47)
फ़मा तन्फ़अुहुम् शफ़ा-अतुश्शाफ़िअीन
(48)
फ़मा लहुम् अनित्तज़्कि-रति
मुअ्रिज़ीन (49)
क-अन्नहुम् हुमुरुम्-मुस्तन्फ़िरह्
(50)
फ़र्रत् मिन् क़स्-वरह् (51)

كَفَرُوْا لِيَسْتَيْقِنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ وَيَزْدَادَ
الَّذِيْنَ اٰمَنُوْۤا اِيْمَانًا وَّلَا يَرْتَابَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا
الْكِتٰبَ وَالْمُؤْمِنُوْنَ وَلِيَقُوْلَ الَّذِيْنَ فِيْ
قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ وَّالْكٰفِرُوْنَ مَاذَاۤ اَرَادَ اللّٰهُ بِهٰذَا
مَثَلًا كَذٰلِكَ يُضِلُّ اللّٰهُ مَنْ يَّشَآءُ
وَيَهْدِيْ مَنْ يَّشَآءُ وَمَا يَعْلَمُ جُنُوْدَ رَبِّكَ
ع اِلَّا هُوَ وَمَا هِيَ اِلَّا ذِكْرٰى لِلْبَشَرِ ۝٣١
كَلَّا وَالْقَمَرِ ۝٣٢
وَالَّيْلِ اِذْ اَدْبَرَ ۝٣٣
وَالصُّبْحِ اِذَاۤ اَسْفَرَ ۝٣٤
اِنَّهَا لَاِحْدَى الْكُبَرِ ۝٣٥
نَذِيْرًا لِّلْبَشَرِ ۝٣٦
لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّتَقَدَّمَ اَوْ يَتَاَخَّرَ ۝٣٧
كُلُّ نَفْسٍۭ بِمَا كَسَبَتْ رَهِيْنَةٌ ۝٣٨
مع اِلَّاۤ اَصْحٰبَ الْيَمِيْنِ ۝٣٩
فِيْ جَنّٰتٍ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝٤٠
عَنِ الْمُجْرِمِيْنَ ۝٤١
مَا سَلَكَكُمْ فِيْ سَقَرَ ۝٤٢
قَالُوْا لَمْ نَكُ مِنَ الْمُصَلِّيْنَ ۝٤٣
وَلَمْ نَكُ نُطْعِمُ الْمِسْكِيْنَ ۝٤٤
وَكُنَّا نَخُوْضُ مَعَ الْخَآئِضِيْنَ ۝٤٥
وَكُنَّا نُكَذِّبُ بِيَوْمِ الدِّيْنِ ۝٤٦
حَتّٰۤى اَتٰىنَا الْيَقِيْنُ ۝٤٧
فَمَا تَنْفَعُهُمْ شَفَاعَةُ الشّٰفِعِيْنَ ۝٤٨
فَمَا لَهُمْ عَنِ التَّذْكِرَةِ مُعْرِضِيْنَ ۝٤٩
كَاَنَّهُمْ حُمُرٌ مُّسْتَنْفِرَةٌ ۝٥٠
فَرَّتْ مِنْ قَسْوَرَةٍ ۝٥١

52. नहीं, बल्कि उनमें से हर शख़्स चाहता है कि उसे खुले हुए सहीफ़े दिए जाएं।

53. हरगिज़ नहीं, बल्कि वो आख़िरत से डरते नहीं।

54. वह कुछ नहीं, वह एक यादविहानी है;

55. अब जो कोई चाहे उससे यादविहानी हासिल करे।

56. और वो यादविहानी हासिल नहीं करेंगे, यह और बात है कि अल्लाह ही ऐसा चाहे। वही तक़्वा का अहल और सज़ावारे मग़्फ़िरत है।

सूरह अल-क़ियामह मक्की

(आयतें 40, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. सुनो! मैं क़सम खाता हूं क़ियामत के दिन की,

2. और सुनो! मैं क़सम खाता हूं मलामत करनेवाले नफ़्स की।

3. क्या इनसान यह समझता है कि हम हरगिज़ उसकी हड्डियों को जमा न करेंगे?

4. क्यों नहीं, हम इस पर क़ादिर होते हुए जमा करेंगे कि हम उसकी पोर-पोर को ठीक-ठाक कर सकते हैं।

5. बल्कि इनसान चाहता है कि अपने (ज़मीर के) आगे ढिठाई करता रहे,

6. पूछता है कि "आख़िर क़ियामत का दिन कब होगा?"

7. पस जब निगाह ख़ीरा हो जाएगी,

8. और चांद को गहन लग जाएगा।

9. और सूरज और चांद इकट्ठे कर दिए जाएंगे,

10. उस दिन इनसान कहेगा "कहां है गुरेज़ (कहां भागूं)?"

11. हरगिज़ नहीं; कोई जाए पनाह नहीं!

12. उस दिन तुम्हारे रब ही की तरफ़ है रहने की जगह।

13. उस दिन इनसान को बता दिया जाएगा जो कुछ उसने आगे बढ़ाया और पीछे छोड़ा।

14. नहीं, बल्कि इनसान अपने आपको अच्छी तरह जानता और समझता है,

15. अगरचे उसने कितने ही अपने उज़्र पेश किए हों।

16. तो उसे जल्द पाने के लिए उसके साथ अपनी ज़बान को हरकत न दे,

17. हमारे ज़िम्मे है उसे जमा करना, और उसका पढ़ना।

18. लिहाज़ा जब हम उसे पढ़ें, तो तू उसके पढ़ने की पैरवी कर।

बल् युरीदु कुल्लुम्रिइम्-मिन्हुम् अंय्युअ्ता सुहुफ़म् मुनश्श-रतन् (52)

कल्ला, बल्-ला यख़ाफ़ूनल्-आख़िरह् (53)

कल्ला इन्नहू तज़्कि-रतुन् (54)

फ़-मन् शा-अ ज़-करह् (55)

व मा यज़्कुरू-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, हु-व अह्लुत्तक़्वा व अह्लुल्-मग़्फ़िरह् ●(56) ●

75 सूरतुल–क़ियामति

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 682 अक्षर, 164 शब्द, 40 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ला उक़्सिमु बियौमिल्-क़ियामति (1)

व ला उक़्सिमु बिन्नफ़्सिल्-लव्वामह् (2)

अ-यह्सबुल्-इन्सानु अल्-लन् नज्म-अ़ अ़िज़ामह् (3)

बला क़ादिरी-न अ़ला अन्-नुसव्वि-य बनानह् (4)

बल् युरीदुल्-इन्सानु लियफ़्जु-र अमामह् (5)

यस्अलु अय्या-न यौमुल्-क़ियामह् (6)

फ़-इज़ा बरिक़ल्-ब-सरु (7)

व ख़-सफ़ल्-क़-मरु (8)

व जुमिअ़श्शम्सु वल्क़-मरु (9)

यक़ूलुल्-इन्सानु यौमइज़िन् ऐनल्-म-फ़र्रु (10)

कल्ला ला व-ज़र (11)

इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल्-मुस्तक़र्रु (12)

युनब्बउल्-इन्सानु यौमइज़िम् बिमा क़द्-द-म व अख़्ख़-र (13)

बलिल्-इन्सानु अ़ला नफ़्सिही बसी-रतुंव्- (14)

-व लौ अल्क़ा मआ़ज़ीरह् (15)

ला तुहर्रिक् बिही लिसान-क लितअ्-ज-ल बिह् (16)

इन्-न अ़लैना जम्-अ़हू व क़ुरआनहू (17)

फ़-इज़ा क़रअ्नाहु फ़त्तबिअ् क़ुरआनह् (18)

بَلْ يُرِيْدُ كُلُّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ اَنْ يُّؤْتٰى
صُحُفًا مُّنَشَّرَةً ۝٥٢
كَلَّا ۭ بَلْ لَّا يَخَافُوْنَ الْاٰخِرَةَ ۝٥٣
كَلَّآ اِنَّهٗ تَذْكِرَةٌ ۝٥٤
فَمَنْ شَاۗءَ ذَكَرَهٗ ۝٥٥
وَمَا يَذْكُرُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَاۗءَ اللّٰهُ ۭ
ع هُوَ اَهْلُ التَّقْوٰى وَاَهْلُ الْمَغْفِرَةِ ۝٥٦

سُوْرَةُ الْقِيٰمَةِ مَكِّيَّةٌ ٣١ اٰيَاتُهَا ٤٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝
لَآ اُقْسِمُ بِيَوْمِ الْقِيٰمَةِ ۝١
وَلَآ اُقْسِمُ بِالنَّفْسِ اللَّوَّامَةِ ۝٢
اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَلَّنْ نَّجْمَعَ عِظَامَهٗ ۝٣
بَلٰى قٰدِرِيْنَ عَلٰٓي اَنْ نُّسَوِّيَ بَنَانَهٗ ۝٤
بَلْ يُرِيْدُ الْاِنْسَانُ لِيَفْجُرَ اَمَامَهٗ ۝٥
يَسْـَٔلُ اَيَّانَ يَوْمُ الْقِيٰمَةِ ۝٦
فَاِذَا بَرِقَ الْبَصَرُ ۝٧
وَخَسَفَ الْقَمَرُ ۝٨
وَجُمِعَ الشَّمْسُ وَالْقَمَرُ ۝٩
يَقُوْلُ الْاِنْسَانُ يَوْمَىِٕذٍ اَيْنَ الْمَفَرُّ ۝١٠
كَلَّا لَا وَزَرَ ۝١١
اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَىِٕذِۨ الْمُسْتَقَرُّ ۝١٢
يُنَبَّؤُا الْاِنْسَانُ يَوْمَىِٕذٍۢ بِمَا قَدَّمَ وَاَخَّرَ ۝١٣
بَلِ الْاِنْسَانُ عَلٰي نَفْسِهٖ بَصِيْرَةٌ ۝١٤
وَّلَوْ اَلْقٰى مَعَاذِيْرَهٗ ۝١٥
لَا تُحَرِّكْ بِهٖ لِسَانَكَ لِتَعْجَلَ بِهٖ ۝١٦
اِنَّ عَلَيْنَا جَمْعَهٗ وَقُرْاٰنَهٗ ۝١٧
فَاِذَا قَرَاْنٰهُ فَاتَّبِعْ قُرْاٰنَهٗ ۝١٨

19. फिर हमारे ज़िम्मे है उसकी वज़ाहत करनी।

20. हरगिज नही, बल्कि तुम तो जल्द मिलने वाली (दुनिया) से मुहब्बत रखते हो,

21. और आख़िरत को छोड़ देते हो।

22-23. कितने ही चेहरे उस दिन तर व ताज़ा और ख़ूबसूरत शिगुफ़्ता होंगे, अपने रब की तरफ़ देख रहे होंगे;

24-25. और कितने ही चेहरे उस दिन उदास और सख़्त बद रौनक होंगे, समझ रहे होंगे कि उनके साथ कमर तोड़ देनेवाला मुआमला किया जाएगा।

26-27. हरगिज नहीं, जब (जान) हंसली तक आ पहुंचेगी और कहा जाएगा कि "कौन है झाड़-फूंक करने वाला?"

28. और वह समझ लेगा कि वह जुदाई है।

29. और पिन्डली से पिन्डली लिपट जाएगी,

30. तुम्हारे रब की तरफ़ उस दिन रवानगी होगी।

31. मगर उसने न तो सच माना, और न नमाज़ पढ़ी,

32. लेकिन झुटलाया और मुंह मोड़ा,

33. फिर अकड़ता हुआ अपने लोगों की तरफ़ चल दिया।

34. अफ़सोस है तुझ पर और अफ़सोस है।

35. फिर अफ़सोस है तुझ पर और अफ़सोस है।

36. क्या इनसान समझता है कि वह यूं ही आज़ाद छोड़ दिया जाएगा?

37. क्या वह महज़ टपकाई हुई नुत्फ़ा की एक बूंद न था?

38. फिर वह लहू का एक लोथड़ा हुआ, फिर ख़ुदा ने उसका ख़ाका बनाया और उसके नोक-पलक संवारे,

39. और उससे जोड़ा बनाया, मर्द और औरत।

40. क्या उसे इसकी कुदरत नहीं कि मुर्दों को ज़िन्दा कर दे।

सूरह अद-दह्र मक्की

(आयतें 31, रुकूआत 2)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. क्या कभी इनसान पर ज़माने का ऐसा वक़्त भी गुज़रा है कि वह कोई ऐसी चीज़ न था कि उसका ज़िक्र किया जाता।

2. हमने इनसान को एक मिले-

सुम्-म इन्-न अ़लैना बयानह् (19)
कल्ला बल् तुहिब्बूनल्-आ़जि-ल-त (20)
व त-ज़रूनल्-आख़िरह् (21)
वुजूहुंय्-यौमइज़िन् नाज़ि-रतुन् (22)
इला रब्बिहा नाज़िरह् (23)
व वुजूहुंय्-यौमइज़िम् बासि-रतुन् (24)
तज़ुन्नु अंय्युफ़्अ़-ल बिहा फ़ाकिरह् (25)
कल्ला इज़ा ब-ल-ग़तित्-तराक़ि-य (26)
व क़ी-ल मन्-राक़िंव- (27)
-व ज़न्-न अन्नहुल् फ़िराक़ (28)
वल्-तफ़्फ़तिस्-साक़ु बिस्साक़ि (29)
इला रब्बि-क यौमइज़ि-निल्-मसाक़ (30) ●
फ़ला सद्-द-क़ व.ला सल्ला (31)
व लाकिन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (32)
सुम्-म ज़-ह-ब इला अह्लिही य-तमत्ता (33)
औला ल-क फ़-औला (34)
सुम्-म औला ल-क फ़-औला (35)
अ-यह्सबुल्-इन्सानु अंय्युत्-र-क सुदा (36)
अलम् यकु नुत्फ़-तम् मिम्-मनिय्यिंय्-युम्ना (37)
सुम्-म का-न अ़-ल-क़तन् फ़-ख़-ल-क़ फ़-सव्वा (38)
फ़-ज-अ़-ल मिन्हुज्-ज़ौजैनिज्-ज़-क-र वल्-उन्सा (39)
अलै-स ज़ालि-क बिक़ादिरिन् अ़ला अंय्युह्यि-यल्-मौता (40) ●

76 सूरतुद्-दह्रि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 1099 अक्षर, 246 शब्द, 31 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हल् अता अ़लल्-इन्सानि हीनुम्-मिनद्-दह्रि लम् यकुन् शैअम्-मज़्कूरा (1)
इन्ना ख़लक़्नल्-इन्सा-न मिन् नुत्फ़तिन् अम्शाजिन्-

ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا بَيَانَهُ ﴿١٩﴾
كَلَّا بَلْ تُحِبُّونَ الْعَاجِلَةَ ﴿٢٠﴾
وَتَذَرُونَ الْاٰخِرَةَ ﴿٢١﴾
وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاضِرَةٌ ﴿٢٢﴾
اِلٰى رَبِّهَا نَاظِرَةٌ ﴿٢٣﴾
وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ بَاسِرَةٌ ﴿٢٤﴾
تَظُنُّ اَنْ يُّفْعَلَ بِهَا فَاقِرَةٌ ﴿٢٥﴾
كَلَّآ اِذَا بَلَغَتِ التَّرَاقِيَ ﴿٢٦﴾
وَقِيْلَ مَنْ ۜ رَاقٍ ﴿٢٧﴾
وَّظَنَّ اَنَّهُ الْفِرَاقُ ﴿٢٨﴾
وَالْتَفَّتِ السَّاقُ بِالسَّاقِ ﴿٢٩﴾
ع اِلٰى رَبِّكَ يَوْمَئِذِ ۨالْمَسَاقُ ﴿٣٠﴾
فَلَا صَدَّقَ وَلَا صَلّٰى ﴿٣١﴾
وَلٰكِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿٣٢﴾
ثُمَّ ذَهَبَ اِلٰٓى اَهْلِهٖ يَتَمَطّٰى ﴿٣٣﴾
اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٤﴾
ثُمَّ اَوْلٰى لَكَ فَاَوْلٰى ﴿٣٥﴾
اَيَحْسَبُ الْاِنْسَانُ اَنْ يُّتْرَكَ سُدًى ﴿٣٦﴾
اَلَمْ يَكُ نُطْفَةً مِّنْ مَّنِيٍّ يُّمْنٰى ﴿٣٧﴾
ثُمَّ كَانَ عَلَقَةً فَخَلَقَ فَسَوّٰى ﴿٣٨﴾
فَجَعَلَ مِنْهُ الزَّوْجَيْنِ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰى ﴿٣٩﴾
ع اَلَيْسَ ذٰلِكَ بِقٰدِرٍ عَلٰٓى اَنْ يُّحْيِيَ الْمَوْتٰى ﴿٤٠﴾

سُوْرَةُ الدَّهْرِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٣١ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلْ اَتٰى عَلَى الْاِنْسَانِ حِيْنٌ مِّنَ الدَّهْرِ
لَمْ يَكُنْ شَيْئًا مَّذْكُوْرًا ﴿١﴾
اِنَّا خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ مِنْ نُّطْفَةٍ اَمْشَاجٍ

जुले नुत्फ़े से पैदा किया, उसे उलटते-पलटते रहे फिर हमने उसे सुननेवाला, देखनेवाला बनाया।

3. हमने उसे रास्ता दिखाया अब या तो शुक्रगुज़ार बने या नाशुक्रा।

4. हमने कुफ़्र करने वालों के लिए जंज़ीरें, और तौक़, और दहकती हुई आग मुहय्या कर रखी है।

5. यक़ीनन वफ़ादार लोग एक जाम पिएंगे जिसमें आमेज़िश काफ़ूर की होगी,

6. क्या कहना उस चश्मे का जिसपर बैठकर अल्लाह के बन्दे पिएंगे, इस तौरपर कि उसे बहा-बहा के ले जाएं।

7. वो नज़्र पूरी करते हैं, और उस दिन से डरते हैं, जिसकी आफ़त हर तरफ़ फैली हुई होगी,

8. और वह मुहताज, और यतीम, और क़ैदी को खाना उसकी चाहत रखते हुए खिलाते हैं,

9. "हम तुम्हें महज़ अल्लाह की ख़ुशनूदी के लिए खिलाते हैं, न तुमसे कोई बदला चाहते हैं, और न शुक्रिया;

10. हमें तो अपने रब की तरफ़ से एक ऐसे दिन का ख़ौफ़ लाहिक़ है जो तेवरी पर बल डाले हुए तुर्शरू होगा"।

11. पस अल्लाह ने उन्हें उस दिन की सख़्ती से बचा लिया, और उन्हें ताज़गी व ख़ुशी अता फ़रमाई,

12. और जो सब्र उन्होंने किया उसके बदले में उन्हें जन्नत और रेशम अता किया;

13. उसमें वो तख़्तों पर टेक लगाए होंगे, न उसमें वो सख़्त धूप देखेंगे और न सख़्त ठण्ड;

14. और बाग़-ए-जन्नत के साए उनपर झुक रहे होंगे, और उसके ख़ोशे नज़दीक होंगे बिल्कुल बस में।

15–16. और उनपर चांदी के बरतनों के दौर चलेंगे, और आबख़ोरे शीशे के होंगे, शीशे भी चांदी के जिनमें ठीक अन्दाज़े कर के रखे होंगे।

नब्तलीहि फ़-जअ़ल्नाहु समीअ़म्-बसीरा (2)

इन्ना हदैनाहुस्सबी-ल इम्मा शाकिरंव्-व इम्मा कफ़ूरा (3)

इन्ना अअ्तद्ना लिल्-काफ़िरी-न सलासि-ल व अग़्लालंव्-व सअ़ीरा (4)

इन्नल्-अब्रा-र यश्रबू-न मिन् कअ्सिन् का-न मिज़ाजुहा काफ़ूरा (5)

अ़ैनंय्-यश्रबु बिहा अ़िबादुल्लाहि युफ़ज्जिरूनहा तफ़्जीरा (6)

यूफ़ू-न बिन्नज़्रि व यख़ाफ़ू-न यौमन् का-न शर्रुहू मुस्ततीरा (7)

व युत्अ़िमूनत्तआ़-म अ़ला हुब्बिही मिस्कीनंव्-व यतीमंव्-व असीरा (8)

इन्नमा नुत्अ़िमुकुम् लिवज्हिल्लाहि ला नुरीदु मिन्कुम् जज़ाअंव्-व ला शुकूरा (9)

इन्ना नख़ाफ़ु मिर्रब्बिना यौमन् अ़बूसन् क़म्-तरीरा (10)

फ़-वक़ाहुमुल्लाहु शर्-र ज़ालिकल्-यौमि व लक़्क़ाहुम् नज़्रतंव्-व सुरूरा (11)

व जज़ाहुम् बिमा स-बरू जन्नतंव्-व हरीरा (12)

मुत्तकिई-न फ़ीहा अ़लल्-अरा-इकि ला यरौ-न फ़ीहा शम्संव्-व ला ज़म्-हरीरा (13)

व दानि-यतन् अ़लैहिम् ज़िलालुहा व ज़ुल्लिलत् क़ुतूफ़ुहा तज़्लीला (14)

व युताफ़ु अ़लैहिम् बिआनि-यतिम्-मिन् फ़िज़्ज़तिंव्-व अक्वाबिन् कानत् क़वारी-र (15)

क़वारी-र मिन् फ़िज़्ज़तिन् क़द्दरूहा तक़्दीरा (16)

نَّبْتَلِيهِ فَجَعَلْنٰهُ سَمِيعًا بَصِيرًا ۝٢
إِنَّا هَدَيْنٰهُ السَّبِيلَ إِمَّا شَاكِرًا وَّإِمَّا
كَفُورًا ۝٣
إِنَّآ أَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِينَ سَلٰسِلَا۟ وَأَغْلٰلًا
وَّسَعِيرًا ۝٤
إِنَّ الْأَبْرَارَ يَشْرَبُونَ مِن كَأْسٍ كَانَ
مِزَاجُهَا كَافُورًا ۝٥
عَيْنًا يَشْرَبُ بِهَا عِبَادُ اللّٰهِ يُفَجِّرُونَهَا
تَفْجِيرًا ۝٦
يُوفُونَ بِالنَّذْرِ وَيَخَافُونَ يَوْمًا كَانَ
شَرُّهُ مُسْتَطِيرًا ۝٧
وَيُطْعِمُونَ الطَّعَامَ عَلٰى حُبِّهِ مِسْكِينًا
وَّيَتِيمًا وَّأَسِيرًا ۝٨
إِنَّمَا نُطْعِمُكُمْ لِوَجْهِ اللّٰهِ لَا نُرِيدُ مِنكُمْ
جَزَآءً وَّلَا شُكُورًا ۝٩
إِنَّا نَخَافُ مِن رَّبِّنَا يَوْمًا عَبُوسًا
قَمْطَرِيرًا ۝١٠
فَوَقٰىهُمُ اللّٰهُ شَرَّ ذٰلِكَ الْيَوْمِ وَلَقّٰىهُمْ
نَضْرَةً وَّسُرُورًا ۝١١
وَجَزٰىهُم بِمَا صَبَرُوا جَنَّةً وَّحَرِيرًا ۝١٢
مُّتَّكِـِٔينَ فِيهَا عَلَى الْأَرَآئِكِ لَا يَرَوْنَ
فِيهَا شَمْسًا وَّلَا زَمْهَرِيرًا ۝١٣
وَدَانِيَةً عَلَيْهِمْ ظِلٰلُهَا وَذُلِّلَتْ قُطُوفُهَا
تَذْلِيلًا ۝١٤
وَيُطَافُ عَلَيْهِم بِـَٔانِيَةٍ مِّن فِضَّةٍ وَّ
أَكْوَابٍ كَانَتْ قَوَارِيرَا۟ ۝١٥
قَوَارِيرَا۟ مِن فِضَّةٍ قَدَّرُوهَا تَقْدِيرًا ۝١٦

17. और वहां वो एक जाम और पिएंगे जिसमें आमेज़िश ज़ंजबील (सोंठ) की होगी,

18. क्या कहना उस चश्मे का जो उसमें होगा, जिसका नाम दिया जाता है सलसबील।

19. उनकी ख़िदमत में हमेशा नौ उमर ही रहने वाले लड़के दौड़ते फिर रहे होंगे, जब तुम उन्हें देखोगे, तो उन्हें समझोगे कि बिखरे हुए मोती हैं,

20. जब तुम वहां देखो तो तुम्हें अज़ीम नेमत और बड़ी सलतनत नज़र आए।

21. उनके ऊपर सब्ज़ बारीक रेशम और दबीज़ रेशम के कपड़े होंगे; और उन्हें चांदी के कंगन पहनाए जाएंगे और उन्हें उनका रब शराब-ए-तहूर पिलाएगा।

22. "यह है तुम्हारा बदला, और तुम्हारी सई व कोशिश क़ाबिले क़द्र है''।

23. यक़ीनन हमने तुमपर क़ुरआन निहायत एहतिमाम से उतारा है,

24. लिहाज़ा अपने रब के हुक्म व फ़ैसले के लिए सब्र करो और उनमें से किसी गुनहगार या नाशुकरे की इताअत न करना।

25. और सुबह व शाम अपने रब के नाम का ज़िक्र करो।

26. और रात के कुछ हिस्से में भी उसे सजदा करो, लम्बी-लम्बी रात तक उसकी तसबीह करते रहो।

27. ये लोग जल्द मिलने वाली चीज़ से मुहब्बत रखते हैं, और एक भारी दिन को अपने परे छोड़ रहे हैं;

28. हमने उन्हें पैदा किया और उनके जोड़-बन्द मज़बूत किए, और हम जब चाहें बिल्कुल उन्हीं के मानिन्द बदल दें।

29. यक़ीनन यह एक याददिहानी है; अब जो चाहे अपने रब की तरफ़ रास्ता इख़्तियार कर ले।

30. और तुम तो बस यही चाहते हो कि अल्लाह ही चाहे; यक़ीनन अल्लाह सब कुछ जाननेवाला, निहायत हिकमतवाला है।

31. वह जिसे चाहता है अपनी रहमत में दाख़िल फ़रमाता है। रहे ज़ुल्म ढाने वाले, तो उनके लिए उसने दर्दनाक

व युस्क़ौ-न फ़ीहा कअ्सन् का-न मिज़ाजुहा ज़न्जबीला (17)

ऐनन् फ़ीहा तुसम्मा सल्-सबीला (18)

व यतूफ़ु अ़लैहिम् विल्दानुम्-मुख़ल्लदू-न इज़ा रऐ-तहुम् हसिब्-तहुम् लुअ्लुअम्-मन्सूरा (19)

व इज़ा रऐ-त सम्-म रऐ-त नअ़ीमंव्-व मुल्कन् कबीरा (20)

आ़लि-यहुम् सियाबु सुन्दुसिन् ख़ुज़्रुंव्-व इस्तब्रकुंव्-व हुल्लू असावि-र मिन् फ़िज़्ज़तिन् व सक़ाहुम् रब्बुहुम् शराबन् तहूरा (21)

इन्-न हाज़ा का-न लकुम् जज़ा-अंव्-व का-न सअ्युकुम्-मश्कूरा (22) ●

इन्ना नह्नु नज़्ज़ल्ना अ़लैकल्-क़ुर्आ-न तन्ज़ीला (23)

फ़स्बिर् लिहुक्मि रब्बि-क व ला तुतिअ् मिन्हुम् आसिमन् औ कफ़ूरा (24)

वज़्कुरिस्-म रब्बि-क बुक्र-तंव्-व असीला (25)

व मिनल्लैलि फ़स्जुद् लहू व सब्बिह्हु लैलन् तवीला (26)

इन्-न हा-उला-इ युहिब्बूनल् आ़जि-ल-त व य-ज़रू-न वरा-अहुम् यौमन् सक़ीला (27)

नह्नु ख़लक़्नाहुम् व शदद्ना अस्-रहुम् व इज़ा शिअ्ना बद्दल्ना अम्सालहुम् तब्दीला (28)

इन्-न हाज़िही तज़्कि-रतुन् फ़-मन् शाअत्त-ख़-ज़ इला रब्बिही सबीला (29)

व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु, इन्नल्ला-ह का-न अ़लीमन् हकीमा (30)

युद्ख़िलु मंय्यशा-उ फ़ी रह्मतिही,

وَيُسْقَوْنَ فِيْهَا كَاْسًا كَانَ مِزَاجُهَا
زَنْجَبِيْلًا ﴿١٧﴾
عَيْنًا فِيْهَا تُسَمّٰى سَلْسَبِيْلًا ﴿١٨﴾
وَيَطُوْفُ عَلَيْهِمْ وِلْدَانٌ مُّخَلَّدُوْنَ اِذَا
رَاَيْتَهُمْ حَسِبْتَهُمْ لُؤْلُؤًا مَّنْثُوْرًا ﴿١٩﴾
وَاِذَا رَاَيْتَ ثَمَّ رَاَيْتَ نَعِيْمًا وَّمُلْكًا
كَبِيْرًا ﴿٢٠﴾
عٰلِيَهُمْ ثِيَابُ سُنْدُسٍ خُضْرٌ وَّاِسْتَبْرَقٌ
وَّحُلُّوْٓا اَسَاوِرَ مِنْ فِضَّةٍ ۚ وَسَقٰىهُمْ
رَبُّهُمْ شَرَابًا طَهُوْرًا ﴿٢١﴾
اِنَّ هٰذَا كَانَ لَكُمْ جَزَآءً وَّكَانَ
سَعْيُكُمْ مَّشْكُوْرًا ﴿٢٢﴾
اِنَّا نَحْنُ نَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْقُرْاٰنَ تَنْزِيْلًا ﴿٢٣﴾
فَاصْبِرْ لِحُكْمِ رَبِّكَ وَلَا تُطِعْ مِنْهُمْ
اٰثِمًا اَوْ كَفُوْرًا ﴿٢٤﴾
وَاذْكُرِ اسْمَ رَبِّكَ بُكْرَةً وَّاَصِيْلًا ﴿٢٥﴾
وَمِنَ الَّيْلِ فَاسْجُدْ لَهٗ وَسَبِّحْهُ لَيْلًا
طَوِيْلًا ﴿٢٦﴾
اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ يُحِبُّوْنَ الْعَاجِلَةَ وَيَذَرُوْنَ
وَرَآءَهُمْ يَوْمًا ثَقِيْلًا ﴿٢٧﴾
نَحْنُ خَلَقْنٰهُمْ وَشَدَدْنَآ اَسْرَهُمْ ۚ وَاِذَا
شِئْنَا بَدَّلْنَآ اَمْثَالَهُمْ تَبْدِيْلًا ﴿٢٨﴾
اِنَّ هٰذِهٖ تَذْكِرَةٌ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ
اِلٰى رَبِّهٖ سَبِيْلًا ﴿٢٩﴾
وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ ۚ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلِيْمًا حَكِيْمًا ﴿٣٠﴾
يُّدْخِلُ مَنْ يَّشَآءُ فِيْ رَحْمَتِهٖ ۚ وَ

अज़ाब मुहय्या कर रखा है।

सूरह अल-मुरसलात मक्की

(आयतें 50, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. गवाह हैं वो (हवाएं) जिनकी चोटी छोड़ दी जाती है।

2. फिर तेज़ व तुन्द हो जाती हैं,

3. और (बादलों को) उठाती फैलाती हैं,

4. फिर मुआमला करती हैं जुदा-जुदा,

5-6. फिर पेश करती हैं याददिहानी इतमाम-ए-हुज्जत के तौरपर या ख़बरदार करने को।

7. यक़ीनन जिसका तुमसे वादा किया जा रहा है वह यक़ीनन वाक़े होकर रहेगा।

8. जब सितारे बेनिशान हो जाएंगे,

9. और जब आसमान फट जाएगा,

10. और जब पहाड़ रेज़ा-रेज़ा होकर बिखर जाएंगे।

11. और जब रसूलों का हाल यह होगा कि उनका वक़्त मुक़र्रर क़र दिया गया होगा।

12. किस दिन के लिए वो टाले गए हैं?

13. फ़ैसले के रोज़ के लिए।

14. और तुम्हें क्या मालूम कि वह फ़ैसले का दिन क्या है?

15. तबाही है उस दिन झुटलाने वालों की!

16. क्या ऐसा नहीं है कि हमने अगलों को हलाक किया,

17. फिर उनके ही पीछे हम बाद वालों को लगाते रहे?

18. मुजरिमों के साथ हम ऐसा ही करते हैं।

19. तबाही है उस दिन झुटलाने वालों की!

20. क्या ऐसा नहीं है कि हमने तुम्हें हक़ीर पानी से पैदा किया,

21. फिर उसे हमने एक महफ़ूज़ क़रारगाह में रखा,

22. एक मालूम व मुतअय्यन मुद्दत तक?

23. फिर हमने अन्दाज़ा किया, तो हम क्या ही ख़ूब अन्दाज़ा करनेवाले हैं।

24. तबाही है उस दिन झुटलाने वालों की!

वज़्ज़ालिमी-न अ-अद्-द लहुम् अज़ाबन् अलीमा (31)●

77 सूरतुल्-मुरसलाति
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 846 अक्षर, 181 शब्द, 50 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वल्-मुरसलाति अुर्फ़न् (1)
फ़ल्-आसिफ़ाति अस्फ़न् (2)
वन्नाशिराति नश्रन् (3)
फ़ल्फ़ारिक़ाति फ़र्क़न् (4)
फ़ल्मुल्क़ियाति ज़िक्रन् (5)
अुज़्रन् औ नुज़्रन् (6)
इन्नमा तू-अदू-न लवाक़िअ् (7)
फ़-इज़न्नुजूमु तुमिसत् (8)
व इज़स्समा-उ फ़ुरिजत् (9)
व इज़ल्-जिबालु नुसिफ़त् (10)
व इज़र्रुसुलु उक़्क़ितत् (11)
लि-अय्यि यौमिन् उज्जिलत् (12)
लियौमिल्-फ़स्ल (13)
व मा अद्रा-क मा यौमुल्-फ़स्लि (14)
वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्- मुकज़्ज़िबीन (15)
अलम् नुह्लिकिल्-अव्वलीन (16)
सुम्-म नुत्बिअुहुमुल्-आख़िरीन (17)
कज़ालि-क नफ़्अलु बिल्-मुज्रिमीन (18)
वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्- मुकज़्ज़िबीन (19)
अलम् नख़्लुक़्कुम् मिम्-माइम्-महीन (20)
फ़-जअल्नाहु फ़ी क़रारिम्-मकीन (21)
इला क़-दरिम् मअ्लूम (22)
फ़-क़दरना फ़निअ्मल्-क़ादिरून (23)
वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (24)

ع الظّٰلِمِيْنَ اَعَدَّ لَهُمْ عَذَابًا اَلِيْمًا ﴿٣١﴾

سُوْرَةُ الْمُرْسَلٰتِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٥٠ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالْمُرْسَلٰتِ عُرْفًا ﴿١﴾
فَالْعٰصِفٰتِ عَصْفًا ﴿٢﴾
وَّالنّٰشِرٰتِ نَشْرًا ﴿٣﴾
فَالْفٰرِقٰتِ فَرْقًا ﴿٤﴾
فَالْمُلْقِيٰتِ ذِكْرًا ﴿٥﴾
عُذْرًا اَوْ نُذْرًا ﴿٦﴾
اِنَّمَا تُوْعَدُوْنَ لَوَاقِعٌ ﴿٧﴾
فَاِذَا النُّجُوْمُ طُمِسَتْ ﴿٨﴾
وَاِذَا السَّمَآءُ فُرِجَتْ ﴿٩﴾
وَاِذَا الْجِبَالُ نُسِفَتْ ﴿١٠﴾
وَاِذَا الرُّسُلُ اُقِّتَتْ ﴿١١﴾
لِاَيِّ يَوْمٍ اُجِّلَتْ ﴿١٢﴾
لِيَوْمِ الْفَصْلِ ﴿١٣﴾
وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الْفَصْلِ ﴿١٤﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٥﴾
اَلَمْ نُهْلِكِ الْاَوَّلِيْنَ ﴿١٦﴾
ثُمَّ نُتْبِعُهُمُ الْاٰخِرِيْنَ ﴿١٧﴾
كَذٰلِكَ نَفْعَلُ بِالْمُجْرِمِيْنَ ﴿١٨﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿١٩﴾
اَلَمْ نَخْلُقْكُّمْ مِّنْ مَّآءٍ مَّهِيْنٍ ﴿٢٠﴾
فَجَعَلْنٰهُ فِيْ قَرَارٍ مَّكِيْنٍ ﴿٢١﴾
اِلٰى قَدَرٍ مَّعْلُوْمٍ ﴿٢٢﴾
فَقَدَرْنَا ۖ فَنِعْمَ الْقٰدِرُوْنَ ﴿٢٣﴾
وَيْلٌ يَّوْمَئِذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ ﴿٢٤﴾

25. क्या ऐसा नहीं है कि हमने ज़मीन को समेट रखने वाली बनाया,

26. ज़िन्दों को भी और मुर्दों को भी?

27. और उसमें बुलन्द पहाड़ जमाए और तुम्हें मीठा पानी पिलाया?

28. तबाही है उस दिन झुटलाने वालों की।

29. चलो उस चीज़ की तरफ़ जिसे तुम झुटलाते रहे हो!

30. चलो तीन शाख़ों वाले साया की तरफ़।

31. जिसमें न घनी छांव है और न वह लपट से बचा सके,

32-33. वो (लपटें) महल जैसी चिंगारियां फेंकती हैं, गोया वो ज़र्द ऊंट हैं।

34. तबाही है उस दिन झुटलानेवालों की!

35. यह वह दिन है कि वो कुछ बोल न सकेंगे,

36. और न उनको इजाज़त होगी कि कोई उज़्र पेश कर सकें।

37. तबाही है उस दिन झुटलाने वालों की!

38. "यह फ़ैसला का दिन है; हमने तुम्हें भी और अगलों को भी इकट्ठा कर दिया;

39. अब अगर तुम्हारे पास कोई चाल है तो मुझ से चलो!"

40. तबाही है उस दिन झुटलाने वालों की!

41. बेशक डर रखनेवाले सायों और चश्मों में हैं,

42. और उन फलों के दरमियान जो वो चाहें,

43. "खाओ पियो रास आता जो कुछ तुम करते रहे हो उसके बदले में"।

44. यक़ीनन हम ख़ूबकारों को ऐसी ही जज़ा देते हैं।

45. तबाही है उस दिन झुटलाने वालों की!

46. "खा लो और ऐश कर लो थोड़ा सा; हक़ीक़त में तुम मुजरिम हो!"

47. तबाही है उस दिन झुटलाने वालों की।

48. जब उनसे कहा जाता है कि "झुको!" तो नहीं झुकते।

49. तबाही है उस दिन झुटलाने वालों की!

50. अब आख़िर किस कलाम पर वो इसके बाद ईमान लाएंगे?

अलम् नज्अलिल्-अर्-ज़ किफ़ाता (25)

अह्याअंव्-व अम्वाता (26)

व जअल्ना फ़ीहा रवासि-य शामिख़ातिंव्-व अस्क़ैनाकुम्-माअन् फ़ुराता (27)

वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (28)

इन्तलिक़ू इला मा कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (29)

इन्तलिक़ू इला ज़िल्लिन् ज़ी सलासि शु-अब् (30)

ला ज़लीलिंव्-व ला युग़्नी मिनल्-ल-हब् (31)

इन्नहा तर्मी बि-श-ररिन् कल्-क़स्र (32)

क-अन्नहू जिमा-लतुन् सुफ़्र (33)

वैलुंय-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (34)

हाज़ा यौमु ला यन्तिक़ून (35)

व ला युअ्-ज़नु लहुम् फ़-यअ्तज़िरून (36)

वैलुंय-यौमइज़िल्- लिल्-मुकज़्ज़िबीन (37)

हाज़ा यौमुल्-फ़स्लि जमअ्नाकुम् वल्-अव्वलीन (38)

फ़-इन् का-न लकुम् कैदुन् फ़कीदून (39)

वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्- मुकज़्ज़िबीन (40) ●

इन्नल्-मुत्तक़ी-न फ़ी ज़िलालिंव्-व अुयून (41)

व फ़वाकि-ह मिम्मा यश्तहून (42)

कुलू वश्रबू हनीअम्-बिमा कुन्तुम् तअ्मलून (43)

इन्ना कज़ालि-क नज्ज़िल्-मुह्सिनीन (44)

वैलुंय-यौमइज़िल्-लिल्- मुकज़्ज़िबीन (45)

कुलू व त-मत्तअू क़लीलन् इन्नकुम् मुज्रिमून (46)

वैलुंय-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (47)

व इज़ा क़ी-ल लहुमुर्-कअू ला यर्-कअून (48)

वैलुंय्-यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (49)

फ़ बि-अय्यि हदीसिम् बअ्-दहू-युअ्मिनून (50) ●

أَلَمْ نَجْعَلِ الْأَرْضَ كِفَاتًا ۝۲۵

أَحْيَاءً وَأَمْوَاتًا ۝۲۶

وَجَعَلْنَا فِيهَا رَوَاسِيَ شٰمِخٰتٍ وَأَسْقَيْنٰكُمْ

مَاءً فُرَاتًا ۝۲۷

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۲۸

اِنْطَلِقُوا إِلٰى مَا كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُونَ ۝۲۹

اِنْطَلِقُوا إِلٰى ظِلٍّ ذِي ثَلٰثِ شُعَبٍ ۝۳۰

لَا ظَلِيلٍ وَلَا يُغْنِي مِنَ اللَّهَبِ ۝۳۱

إِنَّهَا تَرْمِي بِشَرَرٍ كَالْقَصْرِ ۝۳۲

كَأَنَّهٗ جِمٰلَتٌ صُفْرٌ ۝۳۳

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۳۴

هٰذَا يَوْمُ لَا يَنْطِقُونَ ۝۳۵

وَلَا يُؤْذَنُ لَهُمْ فَيَعْتَذِرُونَ ۝۳۶

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۳۷

هٰذَا يَوْمُ الْفَصْلِ جَمَعْنٰكُمْ وَالْأَوَّلِينَ ۝۳۸

فَإِنْ كَانَ لَكُمْ كَيْدٌ فَكِيدُونِ ۝۳۹

ع وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۴۰

إِنَّ الْمُتَّقِينَ فِي ظِلٰلٍ وَعُيُونٍ ۝۴۱

وَفَوَاكِهَ مِمَّا يَشْتَهُونَ ۝۴۲

كُلُوا وَاشْرَبُوا هَنِيئًا بِمَا كُنْتُمْ تَعْمَلُونَ ۝۴۳

إِنَّا كَذٰلِكَ نَجْزِي الْمُحْسِنِينَ ۝۴۴

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۴۵

كُلُوا وَتَمَتَّعُوا قَلِيلًا إِنَّكُمْ مُجْرِمُونَ ۝۴۶

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۴۷

وَإِذَا قِيلَ لَهُمُ ارْكَعُوا لَا يَرْكَعُونَ ۝۴۸

وَيْلٌ يَوْمَئِذٍ لِلْمُكَذِّبِينَ ۝۴۹

ع فَبِأَيِّ حَدِيثٍ بَعْدَهٗ يُؤْمِنُونَ ۝۵۰

सूरह अन-नबा मक्की
(आयतें 40, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. किस चीज़ के बारे में वो आपस में पूछ-गछ कर रहे हैं?

2-3. उस बड़ी ख़बर के बारे में जिसमें वो इख़्तिलाफ़ करते हैं।

4. हरगिज़ नहीं, जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा!

5. फिर हरगिज़ नहीं, जल्द ही उन्हें मालूम हो जाएगा!

6. क्या ऐसा नहीं है कि हमने ज़मीन को फ़र्श बनाया,

7. और पहाड़ों को मेख़ें?

8. और तुम्हें हमने जोड़े-जोड़े पैदा किया,

9. और तुम्हारी नींद को थकन और कुलफ़त दूर करने वाली बनाया;

10. रात को पोशिश व लिबास बनाया।

11. और दिन को हमने मआश के लिए बनाया।

12. और तुम्हारे ऊपर हमने सात मुहकम आसमान तामीर कर दिए।

13. और एक गर्म व दरख़्शां चिराग़ बनाया,

14. और बरस पड़ने वाली बदलियों से हमने ज़ोर से बरसता हुआ पानी उतारा।

15-16. ताकि हम उसके ज़रिए से अनाज और सब्ज़ा निकालें, और गुन्जान बाग़ भी।

17. यक़ीनन फ़ैसले का दिन एक वक़्त-ए-मुक़र्रर है,

18. जिस दिन सूर फूंका जाएगा, तो तुम फ़ौज दर फ़ौज चले आओगे,

19. और आसमान खोल दिया जाएगा, तो दरवाज़े ही दरवाज़े हो जाएंगे,

20. और पहाड़ चलाए जाएंगे, तो वो बिल्कुल सराब होकर रह जाएंगे।

21. हक़ीक़त में जहन्नम एक घात की जगह है,

22. सरकशों का ठिकाना है,

23. हाल यह है कि वो उसमें मुद्दत पर मुद्दत गुज़ारेंगे,

24. उसमें न वो किसी ठण्डक का ज़ायका चखेंगे और न किसी मशरूब का,

25. सिवाय खौलते पानी और बहती पीप के,

78 सूरतुन्-न-बइ
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 801 अक्षर, 174 शब्द, 40 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अम्-म य-तसा-अलून (1)
अनिन्-न-बइल्-अज़ीम (2)
अल्लज़ी हुम् फ़ीहि मुख़्तलिफ़ून (3)
कल्ला स-यअ्लमून (4)
सुम्-म कल्ला स-यअ्लमून (5)
अलम् नज्अलिल्-अर्-ज़ मिहादंव्- (6)
-वल्-जिबा-ल औतादंव्- (7) -
व -ख़लक़्नाकुम् अज़्वाजंव्- (8)
व जअ़ल्ना नौमकुम् सुबातंव्- (9)
-व जअ़ल्नल्लै-ल लिबासंव्- (10)
-व जअ़ल्नन्-नहा-र मआ़शा (11)
व बनैना फ़ौ-क़कुम् सब्अ़न् शिदादंव्- (12)
- व जअ़ल्ना सिराजंव्-वह्हाजा (13)
व अन्ज़ल्ना मिनल्-मुअ्सिराति मा-अन् सज्जाजल्- (14)
-लिनुख़्रि-ज बिही हब्बंव्-व नबातंव्- (15)
-व जन्नातिन् अलफ़ाफ़ा (16)
इन्-न यौमल्-फ़स्लि का-न मीक़ातंय्- (17)
-यौ-म युन्फ़ख़ु फ़िस्सूरि फ़-तअ्तू-न अफ़्वाजा (18)
व फ़ुति-हतिस्-समा-उ फ़-कानत् अब्वाबंव्- (19)
-व सुय्यि-रतिल्-जिबालु फ़-कानत् सराबा (20)
इन्-न जहन्न-म कानत् मिर्सादल्- (21)
-लित्ताग़ी-न म-आबल्- (22)
-लाबिसी-न फ़ीहा अह्क़ाबा (23)
ला यज़ूक़ू-न फ़ीहा बर्दंव्-व ला शराबा (24)
इल्ला हमीमंव्-व ग़स्साक़न् (25)

سُوْرَةُ النَّبَاِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ۴۰ رُكُوْعَاتُهَا ۲

(الجزء الثلاثون (۳۰

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

عَمَّ يَتَسَآءَلُوْنَ ۝۱
عَنِ النَّبَاِ الْعَظِيْمِ ۝۲
الَّذِيْ هُمْ فِيْهِ مُخْتَلِفُوْنَ ۝۳
كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝۴
ثُمَّ كَلَّا سَيَعْلَمُوْنَ ۝۵
اَلَمْ نَجْعَلِ الْاَرْضَ مِهٰدًا ۝۶
وَّالْجِبَالَ اَوْتَادًا ۝۷
وَّخَلَقْنٰكُمْ اَزْوَاجًا ۝۸
وَّجَعَلْنَا نَوْمَكُمْ سُبَاتًا ۝۹
وَّجَعَلْنَا الَّيْلَ لِبَاسًا ۝۱۰
وَّجَعَلْنَا النَّهَارَ مَعَاشًا ۝۱۱
وَّبَنَيْنَا فَوْقَكُمْ سَبْعًا شِدَادًا ۝۱۲
وَّجَعَلْنَا سِرَاجًا وَّهَّاجًا ۝۱۳
وَّاَنْزَلْنَا مِنَ الْمُعْصِرٰتِ مَآءً ثَجَّاجًا ۝۱۴
لِّنُخْرِجَ بِهٖ حَبًّا وَّنَبَاتًا ۝۱۵
وَّجَنّٰتٍ اَلْفَافًا ۝۱۶
اِنَّ يَوْمَ الْفَصْلِ كَانَ مِيْقَاتًا ۝۱۷
يَّوْمَ يُنْفَخُ فِي الصُّوْرِ فَتَاْتُوْنَ اَفْوَاجًا ۝۱۸
وَّفُتِحَتِ السَّمَآءُ فَكَانَتْ اَبْوَابًا ۝۱۹
وَّسُيِّرَتِ الْجِبَالُ فَكَانَتْ سَرَابًا ۝۲۰
اِنَّ جَهَنَّمَ كَانَتْ مِرْصَادًا ۝۲۱
لِّلطّٰغِيْنَ مَاٰبًا ۝۲۲
لّٰبِثِيْنَ فِيْهَآ اَحْقَابًا ۝۲۳
لَا يَذُوْقُوْنَ فِيْهَا بَرْدًا وَّلَا شَرَابًا ۝۲۴
اِلَّا حَمِيْمًا وَّغَسَّاقًا ۝۲۵

26. बदला है ठीक-ठीक उनके अमल के मुवाफ़िक़।

27. वो हक़ीक़त में किसी हिसाब की तवक़्क़ो न रखते थे।

28. और उन्होंने हमारी आयतों को बेदरेग़ झुटलाया,

29. और हमने हर चीज़ लिखकर शुमार कर रखी है।

30. "अब चखो मज़ा कि अज़ाब के सिवा हम तुम्हें किसी और चीज़ में अफ़ज़ूनी अता करने के नहीं"।

31. यक़ीनन डर रखनवालों के लिए एक ज़बरदस्त कामयाबी है,

32. बाग़ीचे और अंगूर,

33. हमसिन लड़कियां, जिन पर जवानी का उभार आ गया होगा,

34. और छलकता जाम।

35. वो उनके दौरान न तो कोई लग़्व बात सुनेंगे, और न झूटी बात।

36. यह जज़ा होगी, बाक़ायदा दाद व दहिश होगी तुम्हारे रब की तरफ़ से।

37. वह आसमानों और ज़मीन का और जो कुछ उनके दरमियान है सब का रब है, बड़ा मेहरबान है, उसके सामने उन्हें बोलने का यारा नहीं।

38. जिस रोज़ कि रूह और फ़रिश्ते सफ़बस्ता खड़े होंगे, वो बोलेंगे नहीं, सिवाय उसके जिसे रहमान इजाज़त दे, और जो ठीक बात कहे।

39. वह दिन बरहक़ है, अब जो चाहे अपने रब की तरफ़ रुजू इख़्तियार कर ले।

40. हमने तुम्हें क़रीब आ लगे अज़ाब से ख़बरदार कर दिया है, जिस रोज़ आदमी देख लेगा जो कुछ कि उसके हाथों ने आगे भेजा होगा, और काफ़िर कहेगा, "ऐ काश! मैं मिट्टी होता!"

सूरह अन-नाज़िआत मक्की

(आयतें 46, रुकूआत 2)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. गवाह हैं वो जो ज़ोर से उखाड़ फेंकें,

2. और गवाह हैं वो जो नर्मी व आहिस्तगी के साथ चलें,

3. और गवाह हैं वो जो फ़ज़ाओं में तैरें,

4. फिर एक-दूसरे पर सबक़त करें,

जज़ाअंव्-विफ़ाक़ा (26)

इन्नहुम् कानू ला यर्जू-न हिसाबा (27)

व कज़्ज़बू बिआयातिना किज़्ज़ाबा (28)

व कुल्-ल शैइन् अह्सैनाहु किताबन् (29)

फ़ज़ूक़ू फ़-लन् नज़ी-दकुम् इल्ला अज़ाबा (30) ●

इन्-न लिल्मुत्तक़ी-न मफ़ाज़न् (31)

हदाइ-क़ व अअ्नाबंव्- (32)

-व कवाअि-ब अत्राबंव्- (33)

-व कअ्सन् दिहाक़ा (34)

ला यस्मअू-न फ़ीहा लग़्वंव्-व ला किज़्ज़ाबा (35)

जज़ाअम्-मिर्रब्बि-क अताअन् हिसाबा (36)

रब्बिस्समावाति वल्अर्ज़ि व मा बैनहुमर्रह्मानि ला यम्लिकू-न मिन्हु ख़िताबा (37)

यौ-म यक़ूमुर्रूहु वल्मलाइ-कतु सफ़्फ़ल् ला य-तकल्लमू-न इल्ला मन् अज़ि-न लहुर्रह्मानु व क़ा-ल सवाबा (38)

ज़ालिकल् यौमुल्-हक़्क़ु फ़-मन् शाअत्त-ख़-ज़ इला रब्बिहि मआबा (39)

इन्ना अन्ज़र्नाकुम् अज़ाबन् क़रीबंय्-यौ-म यन्ज़ुरुल्-मरु मा क़द्द-मत् यदाहु व यक़ूलुल्-काफ़िरु या लैतनी कुन्तु तुराबा (40) ●

79 सूरतुन्-नाज़िआति

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 791 अक्षर, 181 शब्द, 46 आयतें और 2 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रह्मानिर्रहीम

वन्नाज़िआति ग़र्क़ंव्- (1)

-वन्नाशिताति नश्तंव्- (2)

-वस्साबिहाति सब्हन् (3)

फ़स्साबिक़ाति सब्क़न् (4)

جَزَآءً وِّفَاقًا ﴿٢٦﴾

اِنَّهُمْ كَانُوْا لَا يَرْجُوْنَ حِسَابًا ﴿٢٧﴾

وَّكَذَّبُوْا بِاٰيٰتِنَا كِذَّابًا ﴿٢٨﴾

وَكُلَّ شَيْءٍ اَحْصَيْنٰهُ كِتٰبًا ﴿٢٩﴾

ع فَذُوْقُوْا فَلَنْ نَّزِيْدَكُمْ اِلَّا عَذَابًا ﴿٣٠﴾

اِنَّ لِلْمُتَّقِيْنَ مَفَازًا ﴿٣١﴾

حَدَآئِقَ وَاَعْنَابًا ﴿٣٢﴾

وَّكَوَاعِبَ اَتْرَابًا ﴿٣٣﴾

وَّكَاْسًا دِهَاقًا ﴿٣٤﴾

لَا يَسْمَعُوْنَ فِيْهَا لَغْوًا وَّلَا كِذّٰبًا ﴿٣٥﴾

جَزَآءً مِّنْ رَّبِّكَ عَطَآءً حِسَابًا ﴿٣٦﴾

رَّبِّ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ وَمَا بَيْنَهُمَا الرَّحْمٰنِ
لَا يَمْلِكُوْنَ مِنْهُ خِطَابًا ﴿٣٧﴾

يَوْمَ يَقُوْمُ الرُّوْحُ وَالْمَلٰٓئِكَةُ صَفًّا ۙۤ
لَّا يَتَكَلَّمُوْنَ اِلَّا مَنْ اَذِنَ لَهُ الرَّحْمٰنُ
وَقَالَ صَوَابًا ﴿٣٨﴾

ذٰلِكَ الْيَوْمُ الْحَقُّ ۚ فَمَنْ شَآءَ اتَّخَذَ اِلٰى
رَبِّهٖ مَاٰبًا ﴿٣٩﴾

اِنَّآ اَنْذَرْنٰكُمْ عَذَابًا قَرِيْبًا ۚۖ يَّوْمَ يَنْظُرُ
الْمَرْءُ مَا قَدَّمَتْ يَدٰهُ وَيَقُوْلُ الْكٰفِرُ
ع يٰلَيْتَنِيْ كُنْتُ تُرٰبًا ﴿٤٠﴾

سُوْرَةُ النّٰزِعٰتِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٤٦ رُكُوْعَاتُهَا ٢

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالنّٰزِعٰتِ غَرْقًا ﴿١﴾

وَّالنّٰشِطٰتِ نَشْطًا ﴿٢﴾

وَّالسّٰبِحٰتِ سَبْحًا ﴿٣﴾

فَالسّٰبِقٰتِ سَبْقًا ﴿٤﴾

5. और मुआमले की तदबीर करें।

6. जिस रोज़ हिला डालेगा हिला डालने वाला हादसा,

7. उसके पीछे पेश आएगा एक दूसरा हादसा,

8. कितने ही दिल उस दिन कांप रहे होंगे,

9. उनकी निगाहें पस्त होंगी।

10. वो कहते हैं, "क्या वाक़ई हम पहली हालत में फिर लौटेंगे?

11. क्या जब हम खोखली हड्डियां हो चुके होंगे?"

12. कहते हैं "तब तो यह लौटना बड़े ही ख़सारे का होगा!"

13-14. वह तो बस एक ही झिड़की होगी, फिर क्या देखेंगे कि वो एक हमवार मैदान में मौजूद हैं।

15-17. क्या तुम्हें मूसा की ख़बर नहीं पहुंची? जबकि उसके रब ने वादी-ए-मुक़द्दस तुवा में उसे पुकारा था कि "फ़िरऔन के पास जाओ; उसने बहुत सर उठाया है।

18. और कहो, 'क्या तू अपनी दुरुस्ती और इस्लाह चाहता है,

19. और मैं तेरे रब की तरफ़ तेरी रहनुमाई करूं कि तू डरे?"

20. फिर उसने उसे बड़ी निशानी दिखाई,

21. मगर उसने झुटला दिया और नाफ़रमानी की,

22. फिर सरगर्मी दिखाते हुए पलटा,

23-24. फिर जमा करके उसने पुकार कर कहा, "मैं तुम्हारा आली मरतबा मालिक हूं!"

25. आख़िरकार अल्लाह ने उसे आख़िरत और दुनिया के इबरतनाक अज़ाब में पकड़ लिया।

26. यक़ीनन इसमें उस शख़्स के लिए बड़ी इबरत है जो डरे।

27-28. क्या तुम्हें पैदा करना ज़्यादा सख़्त काम है या आसमान का? उसको उसने बनाया। उसकी बुलन्दी को ख़ूब ऊंचा किया, और उसे ठीक-ठाक किया,

29. और उसकी रात को तारीकी बख़्शी, और उसके नूरे नहार को बरआमद किया;

30. और ज़मीन को देखो। इसके बाद उसे फैलाया,

31. उसमें से उसका पानी और उसका चारा निकाला,

फ़ल्मुदब्बिराति अम्रा ● (5)
यौ-म तर्जुफ़ुर्राजि-फ़तु (6)
तत्बअुहर्-रादिफ़ह् (7)
क़ुलूबुंय्-यौमइज़िंव्-वाजि-फ़तुन् (8)
अब्सारुहा ख़ाशिअह् ● (9)
यक़ूलू-न अ-इन्ना ल-मर्दूदू-न फ़िल्-हाफ़िरह् (10)
अ-इज़ा कुन्ना अिज़ामन्-नख़िरह् (11)
क़ालू तिल्-क इज़न् कर्रतुन् ख़ासिरह् ● (12)
फ़-इन्नमा हि-य ज़ज्-रतुंव्-वाहि-दतुन् (13)
फ़-इज़ा हुम् बिस्साहिरह् (14)
हल् अता-क हदीसु मूसा ● (15)
इज़् नादाहु रब्बुहू बिल्वादिल्-मुक़द्दसि तुवा (16)
इज़्हब् इला फ़िर्औ-न इन्नहू तग़ा (17)
फ़क़ुल् हल्-ल-क इला अन् तज़क्का (18)
व अह्दि-य-क इला रब्बि-क फ़-तख़्शा (19)
फ़-अराहुल् आ-यतल्-कुब्रा (20)
फ़-कज़्ज़-ब व अ़सा (21)
सुम्-म अद्‌ब-र यस्आ (22)
फ़-ह-श-र, फ़नादा (23)
फ़क़ा-ल अ-न रब्बुकुमुल्-अअ्ला (24)
फ़-अ-ख़-ज़हुल्लाहु नकालल्-आख़िरति वल्-ऊला (25)
इन्-न फ़ी ज़ालि-क ल-अिब्-रतल् लिमंय्यख़्शा (26) ●
अ-अन्तुम् अशद्दु ख़ल्क़न् अमिस्समा-उ बनाहा (27) र-फ़-अ सम्कहा फ़-सव्वाहा (28)
व अग़्त-श लैलहा व अख़्र-ज ज़ुहाहा (29)
वल्अर्-ज़ बअ्-द ज़ालि-क दहाहा (30)
अख़्र-ज मिन्हा मा-अहा-व मर्आहा (31)

فَالْمُدَبِّرٰتِ اَمْرًا ۝٥
يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ ۝٦
تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ ۝٧
قُلُوْبٌ يَّوْمَئِذٍ وَّاجِفَةٌ ۝٨
اَبْصَارُهَا خَاشِعَةٌ ۝٩
يَقُوْلُوْنَ ءَاِنَّا لَمَرْدُوْدُوْنَ فِى الْحَافِرَةِ ۝١٠
ءَاِذَا كُنَّا عِظَامًا نَّخِرَةً ۝١١
قَالُوْا تِلْكَ اِذًا كَرَّةٌ خَاسِرَةٌ ۝١٢
فَاِنَّمَا هِىَ زَجْرَةٌ وَّاحِدَةٌ ۝١٣
فَاِذَا هُمْ بِالسَّاهِرَةِ ۝١٤
هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ مُوْسٰى ۝١٥
اِذْ نَادٰىهُ رَبُّهٗ بِالْوَادِ الْمُقَدَّسِ طُوًى ۝١٦
اِذْهَبْ اِلٰى فِرْعَوْنَ اِنَّهٗ طَغٰى ۝١٧
فَقُلْ هَلْ لَّكَ اِلٰٓى اَنْ تَزَكّٰى ۝١٨
وَاَهْدِيَكَ اِلٰى رَبِّكَ فَتَخْشٰى ۝١٩
فَاَرٰىهُ الْاٰيَةَ الْكُبْرٰى ۝٢٠
فَكَذَّبَ وَعَصٰى ۝٢١
ثُمَّ اَدْبَرَ يَسْعٰى ۝٢٢
فَحَشَرَ فَنَادٰى ۝٢٣
فَقَالَ اَنَا رَبُّكُمُ الْاَعْلٰى ۝٢٤
فَاَخَذَهُ اللّٰهُ نَكَالَ الْاٰخِرَةِ وَالْاُوْلٰى ۝٢٥
اِنَّ فِىْ ذٰلِكَ لَعِبْرَةً لِّمَنْ يَّخْشٰى ۝٢٦
ءَاَنْتُمْ اَشَدُّ خَلْقًا اَمِ السَّمَآءُ بَنٰىهَا ۝٢٧
رَفَعَ سَمْكَهَا فَسَوّٰىهَا ۝٢٨
وَاَغْطَشَ لَيْلَهَا وَاَخْرَجَ ضُحٰىهَا ۝٢٩
وَالْاَرْضَ بَعْدَ ذٰلِكَ دَحٰىهَا ۝٣٠
اَخْرَجَ مِنْهَا مَآءَهَا وَمَرْعٰىهَا ۝٣١

32-33. और पहाड़ों को उसमें मुहकम किया, तुम्हारे लिए और तुम्हारे मवेशियों के लिए सामान-ए-ज़िन्दगी के तौरपर।

34. फिर जब वह अज़ीम हंगामा बरपा होगा,

35. उस दिन इनसान जो कुछ भी उसने कोशिश की होगी उसे याद करेगा।

36. और भड़कती आग (जहन्नम) देखने वाले के लिए बेनक़ाब कर दी जाएगी।

37-38. तो जिसने सरकशी की और दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह दी होगी,

39. तो बेशक भड़कती आग ही उसका ठिकाना है।

40-41. और रहा वह शख़्स जिसने अपने रब के सामने खड़े होने का ख़ौफ़ किया और नफ़्स को बुरी ख़्वाहिशों से रोका, तो बिहिश्त ही उसका ठिकाना है।

42. वह तुमसे उस घड़ी के बारे में पूछते हैं कि वह कब आकर ठहरेगी?

43. उसके बयान से तुम्हें क्या सरोकार?

44. उसका मुन्तहा तो तुम्हारे रब ही की तरफ़ है।

45. तुम तो बस उस शख़्स को ख़बरदार करने वाले हो जो उससे डरे।

46. जिस रोज़ वो उसे देखेंगे तो ऐसा महसूस होगा कि वो बस एक शाम, या उसकी सुबह ही ठहरे हैं।

सूरह अ-ब-स मक्की

(आयतें 42, रुकू 1)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1-2. उसने तेवरी चढ़ाई और मुंह फेर लिया इस लिए कि उसके पास अंधा आ गया।

3. और तुझे क्या मालूम शायद वह ख़ुद को बालीदगी से बहरामन्द करता हो,

4. या वह याददिहानी हासिल करता हो, तो याद दिलाना उसके लिए नफ़ाबख़्श हो?

5-6. रहा वह शख़्स जो बेपरवाई बरतता है, उसके तू पीछे पड़ा है,

7. जबकि तुझपर कोई ज़िम्मादारी नहीं अगर वह अपने को न संवारे।

8. और रहा वह शख़्स जो ख़ुद तेरे पास दौड़ता हुआ आया,

वल्-जिबा-ल अर्साहा (32)
मताअल्-लकुम् व लि-अन्आमिकुम् (33)
फ़-इज़ा जा-अतित्-ताम्मतुल्-कुब्रा (34)
यौ-म य-तज़क्करुल्-इन्सानु मा सआ (35)
व बुर्रि-ज़तिल्-जहीमु लिमंय्यरा (36)
फ़-अम्मा मन् तग़ा (37)
व आ-सरल् हयातद्दुन्या (38)
फ़-इन्नल्-जही-म हि-यल्-मअ्वा (39)
व अम्मा मन् ख़ा-फ़ मक़ा-म रब्बिही व नहन्-नफ़्-स अनिल्-हवा (40)
फ़-इन्नल् जन्न-त हि-यल्-मअ्वा (41)
यस्अलू-न-क अनिस्सा-अति अय्या-न मुर्साहा (42)
फ़ी-म अन्-त मिन् ज़िक्राहा (43)
इला रब्बि-क मुन्तहाहा (44)
इन्नमा अन्-त मुन्ज़िरु मंय्यख़्शाहा (45)
क-अन्नहुम् यौ-म यरौनहा लम् यल्बसू इल्ला अशिय्य-तन् औ ज़ुहाहा (46) ●

80 सूरतु अ-ब-स
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 553 अक्षर, 113 शब्द, 42 आयतें और 1 रुकू है।
(नोटः इस सूरः से लेकर पारः के आख़िर तक हर सूरः एक ही रुकूअ की है)
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अ-ब-स व तवल्ला (1)
अन् जा-अहुल् अअ्मा (2)
व मा युद्री-क ल-अल्लहू यज़्ज़क्का (3)
औ यज़्ज़क्करु फ़-तन्फ़-अहुज़्ज़िक्रा (4)
अम्मा मनिस्तग़ना (5)
फ़-अन्-त लहू तसद्दा (6)
व मा अलै-क अल्ला यज़्ज़क्का (7)
व अम्मा मन् जा-अ-क यस्आ (8)

وَالْجِبَالَ اَرْسٰىهَا ﴿٣٢﴾
مَتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ﴿٣٣﴾
فَاِذَا جَآءَتِ الطَّآمَّةُ الْكُبْرٰى ﴿٣٤﴾
يَوْمَ يَتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ مَا سَعٰى ﴿٣٥﴾
وَبُرِّزَتِ الْجَحِيْمُ لِمَنْ يَّرٰى ﴿٣٦﴾
فَاَمَّا مَنْ طَغٰى ﴿٣٧﴾
وَاٰثَرَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا ﴿٣٨﴾
فَاِنَّ الْجَحِيْمَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٣٩﴾
وَاَمَّا مَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ وَنَهَى
النَّفْسَ عَنِ الْهَوٰى ﴿٤٠﴾
فَاِنَّ الْجَنَّةَ هِيَ الْمَاْوٰى ﴿٤١﴾
يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنِ السَّاعَةِ اَيَّانَ مُرْسٰىهَا ﴿٤٢﴾
فِيْمَ اَنْتَ مِنْ ذِكْرٰىهَا ﴿٤٣﴾
اِلٰى رَبِّكَ مُنْتَهٰىهَا ﴿٤٤﴾
اِنَّمَآ اَنْتَ مُنْذِرُ مَنْ يَّخْشٰىهَا ﴿٤٥﴾
كَاَنَّهُمْ يَوْمَ يَرَوْنَهَا لَمْ يَلْبَثُوْٓا اِلَّا
عَشِيَّةً اَوْ ضُحٰىهَا ﴿٤٦﴾

سُوْرَةُ عَبَسَ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٤٢ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
عَبَسَ وَتَوَلّٰٓى ﴿١﴾
اَنْ جَآءَهُ الْاَعْمٰى ﴿٢﴾
وَمَا يُدْرِيْكَ لَعَلَّهٗ يَزَّكّٰٓى ﴿٣﴾
اَوْ يَذَّكَّرُ فَتَنْفَعَهُ الذِّكْرٰى ﴿٤﴾
اَمَّا مَنِ اسْتَغْنٰى ﴿٥﴾
فَاَنْتَ لَهٗ تَصَدّٰى ﴿٦﴾
وَمَا عَلَيْكَ اَلَّا يَزَّكّٰى ﴿٧﴾
وَاَمَّا مَنْ جَآءَكَ يَسْعٰى ﴿٨﴾

9. और वह डरता भी है,	*व हु-व यख़्शा* (9)	وَهُوَ يَخْشٰى ۝٩
10. तो तू उससे तग़ाफ़ुल बरतता है।	*फ़-अन्-त अन्हु त-लह्हा* (10)	فَاَنْتَ عَنْهُ تَلَهّٰى ۝١٠
11. हरगिज़ नहीं, वो (आयतें) तो अहम नसीहत हैं,	*कल्ला इन्नहा तज़्कि-रतुन्* (11)	كَلَّآ اِنَّهَا تَذْكِرَةٌ ۝١١
12. तो जो चाहे उसको ज़ेहन नशीन कर ले,	*फ़-मन् शा-अ ज़-करह् ●* (12)	فَمَنْ شَآءَ ذَكَرَهٗ ۝١٢
13–16. क़ाबिल-ए-अदब, बुलन्द, पाकीज़ा औराक़ में मौजूद है, जो मुअज़्ज़ज़, वफ़ा शिआर कातिबों के हाथों में रहा करते हैं।	*फ़ी सुहुफ़िम्-मुकर्र-मतिम्-* (13)	فِيْ صُحُفٍ مُّكَرَّمَةٍ ۝١٣
	-मर्फ़ू-अतिम् मुतह्ह-रतिम् (14)	مَّرْفُوْعَةٍ مُّطَهَّرَةٍۢ ۝١٤
	बिऐदी स-फ़-रतिन् (15)	بِاَيْدِيْ سَفَرَةٍ ۝١٥
	किरामिम् ब-र-रह् (16)	كِرَامٍۢ بَرَرَةٍ ۝١٦
17. हलाक हो इनसान। कैसा नाशुकरा है?	*क़ुतिलल्-इन्सानु मा अक्-फ़रह्* (17)	قُتِلَ الْاِنْسَانُ مَآ اَكْفَرَهٗ ۝١٧
18. किस चीज़ से उसने उसको पैदा किया?	*मिन् अय्यि शैइन् ख़-लक़ह्* (18)	مِنْ اَيِّ شَيْءٍ خَلَقَهٗ ۝١٨
19. ज़रा सी बूंद से उसको पैदा किया, तो उसके लिए एक अन्दाज़ा ठहराया,	*मिन् नुत्फ़तिन्, ख़-ल-क़हू फ़-क़द्द-रहू* (19)	مِنْ نُّطْفَةٍ ؕ خَلَقَهٗ فَقَدَّرَهٗ ۝١٩
20. फिर रास्ते को देखो, उसने उसे आसान कर दिया,	*सुम्मस्सबी-ल यस्स-रहू* (20)	ثُمَّ السَّبِيْلَ يَسَّرَهٗ ۝٢٠
21. फिर उसे मौत दी, और क़ब्र में उसे रखवाया,	*सुम्-म अमातहू फ़-अक़्ब-रहू* (21)	ثُمَّ اَمَاتَهٗ فَاَقْبَرَهٗ ۝٢١
22. फिर जब चाहेगा उसे उठा खड़ा करेगा।	*सुम्-म इज़ा शा-अ अन्श-रह्* (22)	ثُمَّ اِذَا شَآءَ اَنْشَرَهٗ ۝٢٢
23. हरगिज़ नहीं, उसने उसे पूरा न किया जो हुक्म ख़ुदा ने उसे दिया।	*कल्ला लम्मा यक़्ज़ि मा अ-मरह्* (23)	كَلَّا لَمَّا يَقْضِ مَآ اَمَرَهٗ ۝٢٣
24. पस इनसान को चाहिए कि अपनी ग़िज़ा (ख़ुराक) पर निगाह करे।	*फ़ल्यन्ज़ुरिल्-इन्सानु इला तआमिही* (24)	فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ اِلٰى طَعَامِهٖٓ ۝٢٤
25. यह कि हमने ख़ूब पानी बरसाया लुन्धाया,	*अन्ना स-बब्नल्-मा-अ सब्बा* (25)	اَنَّا صَبَبْنَا الْمَآءَ صَبًّا ۝٢٥
26. फिर ज़मीन को ख़ास अन्दाज़ से फाड़ा,	*सुम्-म शक़क़्नल्-अर्-ज़ शक़्क़ा* (26)	ثُمَّ شَقَقْنَا الْاَرْضَ شَقًّا ۝٢٦
27. फिर हमने उसमें उगाए गल्ले,	*फ़-अम्बत्ना फ़ीहा हब्बंव्- (27)*	فَاَنْۢبَتْنَا فِيْهَا حَبًّا ۝٢٧
28. और अंगूर, और तरकारी,	*-व अि-नबंव्-व क़ज़्बंव्-* (28)	وَّعِنَبًا وَّقَضْبًا ۝٢٨
29. और ज़ैतून, और खजूर,	*-व ज़ैतूनंव्-व नख़्लंव्-* (29)	وَّزَيْتُوْنًا وَّنَخْلًا ۝٢٩
30. और घने बाग़,	*-व हदाइ-क़ ग़ुल्बंव्-* (30)	وَّحَدَآئِقَ غُلْبًا ۝٣٠
31. और मेवे, और सबज़ा,	*व फ़ाकि-हतंव्-व अब्बम्-* (31)	وَّفَاكِهَةً وَّاَبًّا ۝٣١
32. तुम्हारे लिए और तुम्हारे चौपायों के लिए सामाने ज़िन्दगी के तौरपर।	*-मताअल्-लकुम् व लि-अन्आमिकुम्* (32)	مَّتَاعًا لَّكُمْ وَلِاَنْعَامِكُمْ ۝٣٢
33. आख़िरकार जब वह बहरा कर देनेवाली सख़्त आवाज़ आएगी,	*फ़-इज़ा जा-अतिस्साख़्ख़ह्* (33)	فَاِذَا جَآءَتِ الصَّآخَّةُ ۝٣٣
34. जिस रोज़ आदमी भागेगा अपने भाई से,	*यौ-म यफ़िर्रुल्-मरउ मिन् अख़ीहि* (34)	يَوْمَ يَفِرُّ الْمَرْءُ مِنْ اَخِيْهِ ۝٣٤
35. अपनी मां, और अपने बाप से,	*व उम्मिही व अबीहि* (35)	وَاُمِّهٖ وَاَبِيْهِ ۝٣٥

36. और अपनी बीवी से, और अपने बेटों से।

37. उनमें से हर शख़्स को उस दिन ऐसी पड़ी होगी कि जो उसे दूसरों से बेपरवा कर देगी।

38. कितने ही चेहरे उस दिन रौशन होंगे,

39. हंसते शादां;

40. और कितने ही चेहरे होंगे जिनपर उस रोज़ ख़ाक पड़ी होगी,

41. उन पर कलौंस छा रही होगी।

42. वही होंगे काफ़िर, फ़ाजिर लोग।

सूरह अत-तक्वीर मक्की

(आयतें 29, रुकू 1)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. जब सूरज की बिसात लपेट दी जाएगी,

2. जब तारे मैले हो जाएंगे,

3. जब पहाड़ चलने लगेंगे,

4. जब दस माह की गाभिन ऊंटनियां छुट्टी फिरेंगी,

5. जब जंगली जानवर इकट्ठे हो जाएंगे,

6. जब दरिया उबल पड़ेंगे,

7. जब नुफूस क़िस्म-क़िस्म कर दिए जाएंगे,

8. और जब ज़िन्दा दर गोर की गई लड़की से पूछा जाएगा,

9. कि, वह किस गुनाह पर क़त्ल की गई;

10. और जब सहीफ़े फैला दिए जाएंगे,

11. और जब आसमान की खाल खींची जाएगी,

12. जब दोज़ख़ को दहकाया जाएगा,

13–14. और जब जन्नत क़रीब ले आई जाएगी, तो हर शख़्स जान लेगा कि उसने क्या हाज़िर किया है।

15. पस सुनो! मैं क़सम खाता हूं पीछे हटने वालों,

16. चलनेवालों, छुपने-दुबकनेवालों की,

17. गवाह है रात जब वह जाने लगे,

18. और गवाह है सुबह जब वह सांस ले,

व साहि-बतिही व बनीह् (36)
लि-कुल्लिम्-रिइम् मिन्हुम् यौमइज़िन् शअ्नुंय्-युग़्नीह् (37)
वुजूहुंय्-यौमइज़िम् मुस्फ़ि-रतुन् (38)
ज़ाहि-कतुम् मुस्तब्शि-रतुन् (39)
व वुजूहुंय्-यौमइज़िन् अ़लैहा ग़-ब-रतुन् (40) तर्-हक़ुहा क़-तरह् (41) उलाइ-क हुमुल् क-फ़-रतुल् फ़-जरह् (42) ●

81 सूरतुत्–तक्वीरि
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 436 अक्षर, 104 शब्द और 29 आयतें हैं।
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इज़श्शम्सु कुव्विरत् (1)
व इज़न्नुजूमुन्-क-दरत् (2)
व इज़ल्-जिबालु सुय्यिरत् (3)
व इज़ल्-अ़िशारु अ़ुत्तिलत् (4)
व इज़ल्-वुहूशु हुशिरत् (5)
व इज़ल्-बिहारु सुज्जिरत् (6)
व इज़न्नुफ़ूसु ज़ुव्विजत् (7)
व इज़ल्-मौऊ-दतु सुअ़िलत् (8)
बिअय्यि ज़म्बिन् क़ुतिलत् (9)
व इज़स्सुहुफ़ु नुशिरत् (10)
व इज़स्समा-उ कुशितत् (11)
व इज़ल्-जहीमु सुअ़्अ़िरत् (12)
व इज़ल्-जन्नतु उज़्लिफ़त् (13)
अ़लिमत् नफ़्सुम्-मा अह्-ज़रत् (14)
फ़ला उक़्सिमु बिल्ख़ुन्नसिल्- (15)
-जवारिल्-कुन्नस (16)
वल्-लैलि इज़ा अ़स्-अ़-स (17)
वस्सुब्हि इज़ा त-नफ़्फ़-स (18)

وَصَاحِبَتِهٖ وَبَنِيْهِ ۝٣٦
لِكُلِّ امْرِئٍ مِّنْهُمْ يَوْمَئِذٍ شَاْنٌ يُّغْنِيْهِ ۝٣٧
وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ مُّسْفِرَةٌ ۝٣٨
ضَاحِكَةٌ مُّسْتَبْشِرَةٌ ۝٣٩
وَوُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ عَلَيْهَا غَبَرَةٌ ۝٤٠
تَرْهَقُهَا قَتَرَةٌ ۝٤١
ع اُولٰٓئِكَ هُمُ الْكَفَرَةُ الْفَجَرَةُ ۝٤٢

سُوْرَةُ التَّكْوِيْرِ مَكِّيَّةٌ ٧ اٰيَاتُهَا ٢٩ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
اِذَا الشَّمْسُ كُوِّرَتْ ۝١
وَاِذَا النُّجُوْمُ انْكَدَرَتْ ۝٢
وَاِذَا الْجِبَالُ سُيِّرَتْ ۝٣
وَاِذَا الْعِشَارُ عُطِّلَتْ ۝٤
وَاِذَا الْوُحُوْشُ حُشِرَتْ ۝٥
وَاِذَا الْبِحَارُ سُجِّرَتْ ۝٦
وَاِذَا النُّفُوْسُ زُوِّجَتْ ۝٧
وَاِذَا الْمَوْءٗدَةُ سُئِلَتْ ۝٨
بِاَيِّ ذَنْۢبٍ قُتِلَتْ ۝٩
وَاِذَا الصُّحُفُ نُشِرَتْ ۝١٠
وَاِذَا السَّمَآءُ كُشِطَتْ ۝١١
وَاِذَا الْجَحِيْمُ سُعِّرَتْ ۝١٢
وَاِذَا الْجَنَّةُ اُزْلِفَتْ ۝١٣
عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّآ اَحْضَرَتْ ۝١٤
فَلَآ اُقْسِمُ بِالْخُنَّسِ ۝١٥
الْجَوَارِ الْكُنَّسِ ۝١٦
وَالَّيْلِ اِذَا عَسْعَسَ ۝١٧
وَالصُّبْحِ اِذَا تَنَفَّسَ ۝١٨

19. यक़ीनन वह एक मुअज़्ज़ज़ पयामबर का लाया हुआ कलाम है।

20. जो क़ुव्वत वाला, अर्श वाले के यहां बारुसूख़ है,

21. उसका हुक्म माना जाता है, वहां वह अमीन भी है।

22. तुम्हारा रफ़ीक़ दीवाना नहीं है।

23. उसने तो (कमाल के) नुमायां उफ़ुक़ पर होकर उस (फ़रिश्ते) को देखा है;

24. और वह ग़ैब (राज़) के मुआमले में बख़ील नहीं,

25. और यह किसी शैतान मरदूद का हल्क़ा किया हुआ कलाम नहीं।

26. फिर तुम किधर जा रहे हो?

27. वह तो सारे जहां के लिए एक याददिहानी है,

28. उसके लिए जो तुममें से रास्तरौ होना चाहे;

29. और तुम तो बस यह चाहते हो कि अल्लाह रब्बुल-आलमीन चाहे।

सूरह अल-इनफ़ितार मक्की

(आयतें 19, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. जबकि आसमान में शिगाफ़ पड़ जाएगा,

2. जबकि सितारे बिखर जाएंगे,

3. और जब समुंदर बह पड़ेंगे,

4. और जबकि क़ब्रें उखेड़ दी जाएंगी,

5. तब हर शख़्स जान लेगा, जो उसने मुक़द्दम किया और पीछे डाला।

6. ऐ इनसान! तुझे अपने रब्ब-ए-करीम के बारे में किस चीज़ ने धोके में डाल रखा है?

7. जिसने तेरा ख़ाका बनाया फिर नक-सिक से तुझे दुरुस्त किया और तुझे मौज़ूनियत बख़्शी।

8. जिस शक्ल में चाहा उसने तुझे जोड़कर तैयार किया।

9. हरगिज़ नहीं, बल्कि तुम जज़ा व सज़ा को झुटलाते हो;

10. हालांकि तुमपर निगरां मुक़र्रर हैं,

11. मुअज़्ज़ज़ कातिबीन,

12. वो जान रहे होते हैं जो कुछ भी तुम करते हो।

13. बेशक वफ़ा शिआर लोग ऐश व निशात में होंगे।

इन्नहू ल-क़ौलु रसूलिन् करीम (19)
ज़ी कुव्वतिन् अ़िन्-द ज़िल्-अ़र्शि मकीन (20)
मुताअ़िन् सम्-म अमीन (21)
व मा साहिबुकुम् बिमज्नून (22)
व ल-क़द् रआहु बिल्-उफ़ुक़िल्-मुबीन (23)
व मा हु-व अ़लल्-ग़ैबि बि-ज़नीन (24)
व मा हु-व बिक़ौलि शैतानिर्-रजीम (25)
फ़ऐ-न तज़्हबून (26)
इन् हु-व इल्ला ज़िक्रुल् लिल्-आ़लमीन (27) *लिमन् शा-अ मिन्कुम् अंय्यस्तक़ीम* (28)
व मा तशाऊ-न इल्ला अंय्यशा-अल्लाहु रब्बुल्-आ़लमीन (29) ●

82 सूरतुल-इन्फ़ितारि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 334 अक्षर, 80 शब्द और 19 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इज़स्समा-उन्-फ़-तरत् (1)
व इज़ल्-कवाकिबुन् त-सरत् (2)
व इज़ल्-बिहारु फ़ुज्जिरत् (3)
व इज़ल्-क़ुबूरु बुअ़्सिरत् (4)
अ़लिमत् नफ़्सुम्-मा क़द्द-मत् व अख़्ख़-रत् (5)
या अय्युहल्-इन्सानु मा ग़र्-र-क बिरब्बिकल्-करीम (6)
अल्लज़ी ख़-ल-क़-क फ़-सव्वा-क फ़-अ़-द-लक् (7)
फ़ी अय्यि सू-रतिम् मा शा-अ रक्क-बक् (8)
कल्ला बल् तुकज़्ज़िबू-न बिद्दीनि (9)
व इन्-न अ़लैकुम् लहाफ़िज़ीन (10)
किरामन् कातिबीन (11)
यअ़्लमू-न मा तफ़्अ़लून (12)
इन्नल्-अब्रा-र लफ़ी नअ़ीम (13)

إِنَّهٗ لَقَوْلُ رَسُوْلٍ كَرِيْمٍ ﴿١٩﴾
ذِيْ قُوَّةٍ عِنْدَ ذِي الْعَرْشِ مَكِيْنٍ ﴿٢٠﴾
مُّطَاعٍ ثَمَّ اَمِيْنٍ ﴿٢١﴾
وَمَا صَاحِبُكُمْ بِمَجْنُوْنٍ ﴿٢٢﴾
وَلَقَدْ رَاٰهُ بِالْاُفُقِ الْمُبِيْنِ ﴿٢٣﴾
وَمَا هُوَ عَلَى الْغَيْبِ بِضَنِيْنٍ ﴿٢٤﴾
وَمَا هُوَ بِقَوْلِ شَيْطٰنٍ رَّجِيْمٍ ﴿٢٥﴾
فَاَيْنَ تَذْهَبُوْنَ ﴿٢٦﴾
اِنْ هُوَ اِلَّا ذِكْرٌ لِّلْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٧﴾
لِمَنْ شَآءَ مِنْكُمْ اَنْ يَّسْتَقِيْمَ ﴿٢٨﴾
وَمَا تَشَآءُوْنَ اِلَّآ اَنْ يَّشَآءَ اللّٰهُ رَبُّ
ع الْعٰلَمِيْنَ ﴿٢٩﴾

سُوْرَةُ الْاِنْفِطَارِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٩ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
اِذَا السَّمَآءُ انْفَطَرَتْ ﴿١﴾
وَاِذَا الْكَوَاكِبُ انْتَثَرَتْ ﴿٢﴾
وَاِذَا الْبِحَارُ فُجِّرَتْ ﴿٣﴾
وَاِذَا الْقُبُوْرُ بُعْثِرَتْ ﴿٤﴾
عَلِمَتْ نَفْسٌ مَّا قَدَّمَتْ وَاَخَّرَتْ ﴿٥﴾
يٰٓاَيُّهَا الْاِنْسَانُ مَا غَرَّكَ بِرَبِّكَ الْكَرِيْمِ ﴿٦﴾
الَّذِيْ خَلَقَكَ فَسَوّٰىكَ فَعَدَلَكَ ﴿٧﴾
فِيْٓ اَيِّ صُوْرَةٍ مَّا شَآءَ رَكَّبَكَ ﴿٨﴾
كَلَّا بَلْ تُكَذِّبُوْنَ بِالدِّيْنِ ﴿٩﴾
وَاِنَّ عَلَيْكُمْ لَحٰفِظِيْنَ ﴿١٠﴾
كِرَامًا كَاتِبِيْنَ ﴿١١﴾
يَعْلَمُوْنَ مَا تَفْعَلُوْنَ ﴿١٢﴾
اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿١٣﴾

14. और यक़ीनन नाबकार भड़कती हुई आग में होंगे,

15. जिसमें वो जज़ा के दिन दाख़िल होंगे,

16. और उससे वो ओझल होने के नहीं।

17. और तुम्हें क्या मालूम कि जज़ा का दिन क्या है?

18. फिर तुम्हें क्या मालूम कि जज़ा का दिन क्या है?

19. जिस दिन कोई शख़्स किसी शख़्स के लिए किसी चीज़ का मुख़्तार न होगा; मुआमला उस दिन अल्लाह ही के हाथ में होगा।

सूरह अत-ततफ़्फ़ीन मक्की

(आयतें 36, रुकू 1)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. तबाही है घटाने वालों के लिए,

2. जो नापकर जब लोगों पर नज़र जमाए हुए लेते हैं तो पूरा लेते हैं,

3. मगर जब उन्हें नाप कर या तौल कर देते हैं, तो घाटा देते हैं।

4. क्या वो समझते नहीं कि उन्हें (ज़िन्दा होकर) उठना है,

5. एक भारी दिन के लिए,

6. जिस दिन लोग सारे जहां के रब के हुज़ूर खड़े होंगे।

7. हरगिज़ नहीं, यक़ीनन फ़ाजिरों की किताब सिज्जीन में है,

8. तो तुम्हें क्या मालूम कि सिज्जीन क्या है?

9. मुहरशुदा किताब।

10. तबाही है उस दिन झुटलाने वालों की,

11. जो रोज़-ए-जज़ा को झुटला रहे हैं;

12. और उसे तो बस हर एक हद से तजावुज़ करने वाला, हक़ तलफ़ी करने वाला ही झुटलाता है।

13. जब हमारी आयतें उसे सुनाई जाती हैं, तो कहता है कि "यह तो अगलों के फ़साने हैं!"

14. हरगिज़ नहीं, बल्कि जो कुछ वो कमाते रहे हैं उनके दिलों पर उसका ज़ंग चढ़ गया है।

15. हरगिज़ नहीं, यक़ीनन वो उस रोज़ अपने रब से ओट में होंगे,

16. फिर वो भड़कती आग में जा पड़ेंगे।

व इन्नल् फ़ुज्जा-र लफ़ी जहीम (14)
यस्लौनहा यौमद्दीन (15)
व मा हुम् अन्हा बिग़ा-इबीन (16)
व मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (17)
सुम्-म मा अद्रा-क मा यौमुद्दीन (18)
यौ-म ला तम्लिकु नफ़्सुल्-लिनफ़्सिन् शैआ, वल्अम्रु यौमइज़िल्-लिल्लाह् ● (19) ●

83 सूरतुल्-ततफ़ीफ़ी-न (मक्की) इस सूरः में अरबी के 758 अक्षर, 172 शब्द, 36 आयतें और 1 रुकू हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वैलुल्-लिल्-मुतफ़्फ़िफ़ीन (1)
अल्लज़ी-न इज़क्तालू अलन्नासि यस्तौफ़ून (2)
व इज़ा कालूहुम् अव्-व-ज़नूहुम् युख़्सिरून (3)
अला यज़ुन्नु उलाइ-क अन्नहुम् मब्अूसून (4)
लियौमिन् अज़ीम (5)
यौ-म यक़ूमुन्नासु लिरब्बिल्-आलमीन (6)
कल्ला इन्-न किताबल्-फ़ुज्जारि लफ़ी सिज्जीन (7)
व मा अद्रा-क मा सिज्जीन (8)
किताबुम्-मर्क़ूम (9)
वैलुंय्यौमइज़िल्-लिल्-मुकज़्ज़िबीन (10)
अल्लज़ी-न युकज़्ज़िबू-न बियौमिद्दीन (11)
व मा युकज़्ज़िबु बिही इल्ला कुल्लु मुअ्-तदिन् असीम (12)
इज़ा तुत्ला अ़लैहि आयातुना क़ा-ल असातीरुल्-अव्वलीन (13)
कल्ला बल्-रा-न अ़ला क़ुलूबिहिम्-मा कानू यक्सिबून (14)
कल्ला इन्नहुम् अर्रब्बिहिम् यौमइज़िल्-लमह्जूबून (15)
सुम्-म इन्नहुम् लसालुल्-जहीम (16)

وَّاِنَّ الْفُجَّارَ لَفِيْ جَحِيْمٍ (١٤)
يَّصْلَوْنَهَا يَوْمَ الدِّيْنِ (١٥)
وَمَا هُمْ عَنْهَا بِغَآئِبِيْنَ (١٦)
وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ (١٧)
ثُمَّ مَآ اَدْرٰىكَ مَا يَوْمُ الدِّيْنِ (١٨)
يَوْمَ لَا تَمْلِكُ نَفْسٌ لِّنَفْسٍ شَيْـًٔا ۭ وَالْاَمْرُ
يَوْمَىٕذٍ لِّلّٰهِ (١٩)

سُوْرَةُ الْمُطَفِّفِيْنَ مَكِّيَّةٌ ٨٣ اٰيَاتُهَا ٣٦ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ
وَيْلٌ لِّلْمُطَفِّفِيْنَ (١)
الَّذِيْنَ اِذَا اكْتَالُوْا عَلَى النَّاسِ يَسْتَوْفُوْنَ (٢)
وَاِذَا كَالُوْهُمْ اَوْ وَّزَنُوْهُمْ يُخْسِرُوْنَ (٣)
اَلَا يَظُنُّ اُولٰٓىِٕكَ اَنَّهُمْ مَّبْعُوْثُوْنَ (٤)
لِيَوْمٍ عَظِيْمٍ (٥)
يَّوْمَ يَقُوْمُ النَّاسُ لِرَبِّ الْعٰلَمِيْنَ (٦)
كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْفُجَّارِ لَفِيْ سِجِّيْنٍ (٧)
وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا سِجِّيْنٌ (٨)
كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ (٩)
وَيْلٌ يَّوْمَىٕذٍ لِّلْمُكَذِّبِيْنَ (١٠)
الَّذِيْنَ يُكَذِّبُوْنَ بِيَوْمِ الدِّيْنِ (١١)
وَمَا يُكَذِّبُ بِهٖٓ اِلَّا كُلُّ مُعْتَدٍ اَثِيْمٍ (١٢)
اِذَا تُتْلٰى عَلَيْهِ اٰيٰتُنَا قَالَ اَسَاطِيْرُ
الْاَوَّلِيْنَ (١٣)
كَلَّا بَلْ ۜ رَانَ عَلٰى قُلُوْبِهِمْ مَّا كَانُوْا
يَكْسِبُوْنَ (١٤)
كَلَّآ اِنَّهُمْ عَنْ رَّبِّهِمْ يَوْمَىٕذٍ لَّمَحْجُوْبُوْنَ (١٥)
ثُمَّ اِنَّهُمْ لَصَالُوا الْجَحِيْمِ (١٦)

17. फिर कहा जाएगा कि "यह वही है जिसे तुम झुटलाते थे"।

18. हरगिज़ नहीं, बेशक वफ़ा शिआर लोगों की किताब इल्लीयीन (बुलन्द पाया लोगों) में है;

19. और इल्लीयीन को तुम क्या जानो,

20. मुहरशुदा किताब।

21. जिसे देखने को मुक़र्रबीन हाज़िर होंगे,

22. बेशक वफ़ा शिआर लोग ऐश व निशात में होंगे,

23. ऊंची मसनदों पर से नज़ारे कर रहे होंगे,

24. उनके चेहरों से नेमतों की ताज़गी व आबदारी तुमपर अयां हो रही होगी,

25. सर बमुहर ख़ालिस शराब उन्हें पिलाई जाएगी।

26. उसकी मुहर मुश्क की होगी — बढ़-चढ़कर शौक़ करने वालों को इसी का शौक़ करना चाहिए।

27. उसमें तसनीम की आमेज़िश होगी,

28. हाल यह है कि वह एक चश्मा है जिसपर बैठकर मुक़र्रब लोग पिएंगे।

29. जो मुजरिम रहे हैं वो उन लोगों पर जो ईमान लाए हंसते थे,

30. और जब उनके पास से गुज़रते आपस में आंखों से इशारे किया करते थे,

31. और जब अपने लोगों की तरफ़ पलटते तो मज़े लेते हुए पलटे थे,

32. और जब उन्हें देखते तो कहते, "ये तो भटके हुए हैं!"

33. हालोंकि वो उनपर कुछ निगरां बनाकर नहीं भेजे गए थे।

34. पस आज वो लोग जो ईमान लाए कुफ़्फ़ार पर हंस रहे हैं,

35. ऊंची मसनदों पर से नज़ारे कर रहे हैं।

36. क्या मिल गया ना, कुफ़्फ़ार को उसका बदला जो कुछ कि वो करते रहे?

सूरह अल-इनशिक़ाक़ मक्की

(आयतें 25, रुकू 1)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. जब आसमान फट जाएगा,

2. और वह अपने रब की सुनेगा, और उसे यही चाहिए भी;

3. जब ज़मीन फैला दी जाएगी,

सुम्-म युक़ालु हाज़ल्लज़ी कुन्तुम् बिही तुकज़्ज़िबून (17)

कल्ला इन्-न किताबल्-अब्रारि लफ़ी अिल्लिय्यीन (18)

व मा अद्रा-क मा अिल्लिय्यून (19)

किताबुम्-मर्क़ूम (20)

यश्-हदुहुल्-मुक़र्रबून (21)

इन्नल्-अब्रा-र लफ़ी नअीम (22)

अ़लल् अरा-इकि यन्ज़ुरून (23)

तअ्रिफ़ु फ़ी वुजूहिहिम् नज़्-रतन्-नअीम (24)

युस्क़ौ-न मिर्रहीक़िम्-मख़्तूम (25)

ख़ितामुहू मिस्क, व फ़ी ज़ालि-क फ़ल्य-तनाफ़सिल्-मु-तनाफ़िसून (26)

व मिज़ाजुहू मिन् तस्नीम (27)

अ़ैनंय्-यश्रबु बिहल्-मुक़र्रबून (28)

इन्नल्लज़ी-न अज्रमू कानू मिनल्लज़ी-न आमनू यज़्-हकून (29)

व इज़ा मर्रू बिहिम् य-तग़ा-मज़ून (30)

व इज़न्-क़-लबू इला अह्लिहिमुन्क़-लबू फ़किहीन (31)

व इज़ा रऔहुम् क़ालू इन्-न हा-उला-इ लज़ाल्लून (32)

व मा उर्सिलू अ़लैहिम् हाफ़िज़ीन (33)

फ़ल्यौमल्लज़ी-न आमनू मिनल्-कुफ़्फ़ारि यज़्हकून (34)

अ़लल्-अरा-इकि यन्ज़ुरून (35)

हल् सुव्विबल्-कुफ़्फ़ारु मा कानू यफ़्अ़लून (36) ●

84 सूरतुल्--इन्शिक़ाक़ि
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 448 अक्षर, 108 शब्द और 25 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इज़स्समाउन्-शक़्क़त् (1)

व अज़िनत् लिरब्बिहा व हुक़्क़त् (2)

व इज़ल्-अर्ज़ु मुद्दत् (3)

ثُمَّ يُقَالُ هٰذَا الَّذِيْ كُنْتُمْ بِهٖ تُكَذِّبُوْنَ ﴿١٧﴾

كَلَّآ اِنَّ كِتٰبَ الْاَبْرَارِ لَفِيْ عِلِّيِّيْنَ ﴿١٨﴾

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا عِلِّيُّوْنَ ﴿١٩﴾

كِتٰبٌ مَّرْقُوْمٌ ﴿٢٠﴾

يَّشْهَدُهُ الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢١﴾

اِنَّ الْاَبْرَارَ لَفِيْ نَعِيْمٍ ﴿٢٢﴾

عَلَى الْاَرَآئِكِ يَنْظُرُوْنَ ﴿٢٣﴾

تَعْرِفُ فِيْ وُجُوْهِهِمْ نَضْرَةَ النَّعِيْمِ ﴿٢٤﴾

يُسْقَوْنَ مِنْ رَّحِيْقٍ مَّخْتُوْمٍ ﴿٢٥﴾

خِتٰمُهٗ مِسْكٌ ۗ وَفِيْ ذٰلِكَ فَلْيَتَنَافَسِ

الْمُتَنَافِسُوْنَ ﴿٢٦﴾

وَمِزَاجُهٗ مِنْ تَسْنِيْمٍ ﴿٢٧﴾

عَيْنًا يَّشْرَبُ بِهَا الْمُقَرَّبُوْنَ ﴿٢٨﴾

اِنَّ الَّذِيْنَ اَجْرَمُوْا كَانُوْا مِنَ الَّذِيْنَ

اٰمَنُوْا يَضْحَكُوْنَ ﴿٢٩﴾

وَاِذَا مَرُّوْا بِهِمْ يَتَغَامَزُوْنَ ﴿٣٠﴾

وَاِذَا انْقَلَبُوْٓا اِلٰٓى اَهْلِهِمُ انْقَلَبُوْا فَكِهِيْنَ ﴿٣١﴾

وَاِذَا رَاَوْهُمْ قَالُوْٓا اِنَّ هٰٓؤُلَآءِ لَضَآلُّوْنَ ﴿٣٢﴾

وَمَآ اُرْسِلُوْا عَلَيْهِمْ حٰفِظِيْنَ ﴿٣٣﴾

فَالْيَوْمَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنَ الْكُفَّارِ يَضْحَكُوْنَ ﴿٣٤﴾

عَلَى الْاَرَآئِكِ ۙ يَنْظُرُوْنَ ﴿٣٥﴾

ع هَلْ ثُوِّبَ الْكُفَّارُ مَا كَانُوْا يَفْعَلُوْنَ ﴿٣٦﴾

سُوْرَةُ الْاِنْشِقَاقِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢٥ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اِذَا السَّمَآءُ انْشَقَّتْ ﴿١﴾

وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ﴿٢﴾

وَاِذَا الْاَرْضُ مُدَّتْ ﴿٣﴾

4. और जो कुछ उसके अन्दर है उसे बाहर डालकर खाली हो जाएगी,

5. और वह अपने रब की सुनेगी, और उसे यही चाहिए भी।

6. ऐ इनसान! तू कशां-कशां अपने रब ही की तरफ़ जा रहा है, और बिलआख़िर उससे मिलने वाला है।

7. फिर जिस किसी को उसका आमालनामा उसके दाहिने हाथ में दिया गया,

8. तो उससे आसान सरसरी हिसाब लिया जाएगा,

9. और वह अपने लोगों की तरफ़ खुश-खुश पलटेगा।

10. रहा वह शख़्स जिसका आमालनामा दिया गया जो उसके पसे-पुश्त डाल रखा गया था,

11. तो वह हलाकत (मौत) को पुकारेगा,

12. और दहकती आग में जा पड़ेगा।

13. वह अपने लोगों में मगन था;

14. उसने यह समझ रखा था कि उसे कभी पलटना नहीं है।

15. क्यों नहीं; यक़ीनन उसका रब तो उसे देख रहा था।

16. पस सुनो! मैं क़सम खाता हूं शफ़क़ की,

17. और रात की और उसके इकट्ठा कर लेने के अमल की,

18. और चांद की जबकि वह कामिल हो जाता है,

19. यक़ीनन तुम्हें तबक़ पर तबक़ चढ़ना है।

20. फिर उन्हें क्या हो गया है कि ईमान नहीं लाते,

21. और जब उन्हें क़ुरआन पढ़कर सुनाया जाता है तो सजदे में नहीं गिर पड़ते।

22. नहीं, बल्कि जिनकी रविश कुफ़्र की है वो झुठलाते हैं,

23. हालांकि जो कुछ वो अपने अन्दर जमा कर रहे हैं अल्लाह उसे खूब जानता है।

24. लिहाज़ा उन्हें दर्दनाक अज़ाब की बशारत दे दो,

25. अलबत्ता जो लोग ईमान लाए और नेक आमाल इख़्तियार किए, उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला अजर है।

व अल्क़त् मा फ़ीहा व त-ख़ल्लत् (4)

व अज़िनत् लिरब्बिहा व हुक़्क़त् (5)

या अय्युहल्-इन्सानु इन्न-क कादिहुन् इला रब्बि-क कद्हन् फ़मुलाक़ीहि (6)

फ़-अम्मा मन् ऊति-य किताबहू बि-यमीनिही (7)

फ़सौ-फ़ युहा-सबु हिसाबंय्-यसीरा (8)

व यन्क़लिबु इला अह्लिही मसरूरा (9)

व अम्मा मन् ऊति-य किताबहू वरा-अ ज़ह्रिही (10)

फ़सौ-फ़ यद्अू सुबूरा (11)

व यस्ला सअ़ीरा (12)

इन्नहू का-न फ़ी अह्लिही मसरूरा (13)

इन्नहू ज़न्-न अल्लंय्यहू-र (14)

बला इन्-न रब्बहू का-न बिही बसीरा (15)

फ़ला उक़्सिमु बिश्श-फ़क़ि (16)

वल्लैलि व मा व-स-क़ (17)

वल्क़-मरि इज़त्त-स-क़ (18)

ल-तर्कबुन्-न त-बक़न् अ़न् त-बक़ (19)

फ़मा लहुम् ला युअ्मिनून (20)

व इज़ा क़ुरि-अ अ़लैहिमुल्-क़ुर्आनु ला यस्जुदून ● (21)

बलिल्लज़ी-न क-फ़रू युकज़्ज़िबून (22)

वल्लाहु अअ्लमु बिमा यूअून (23)

फ़-बश्शिर्हुम् बि-अ़ज़ाबिन् अलीम (24)

इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (25) ●

وَاَلْقَتْ مَا فِيْهَا وَتَخَلَّتْ ۝٤
وَاَذِنَتْ لِرَبِّهَا وَحُقَّتْ ۝٥
يٰۤاَيُّهَا الْاِنْسَانُ اِنَّكَ كَادِحٌ اِلٰى رَبِّكَ
كَدْحًا فَمُلٰقِيْهِ ۝٦
فَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ بِيَمِيْنِهٖ ۝٧
فَسَوْفَ يُحَاسَبُ حِسَابًا يَّسِيْرًا ۝٨
وَّيَنْقَلِبُ اِلٰۤى اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝٩
وَاَمَّا مَنْ اُوْتِيَ كِتٰبَهٗ وَرَآءَ ظَهْرِهٖ ۝١٠
فَسَوْفَ يَدْعُوْا ثُبُوْرًا ۝١١
وَّيَصْلٰى سَعِيْرًا ۝١٢
اِنَّهٗ كَانَ فِيْۤ اَهْلِهٖ مَسْرُوْرًا ۝١٣
اِنَّهٗ ظَنَّ اَنْ لَّنْ يَّحُوْرَ ۝١٤
بَلٰۤى ۚ اِنَّ رَبَّهٗ كَانَ بِهٖ بَصِيْرًا ۝١٥
فَلَاۤ اُقْسِمُ بِالشَّفَقِ ۝١٦
وَالَّيْلِ وَمَا وَسَقَ ۝١٧
وَالْقَمَرِ اِذَا اتَّسَقَ ۝١٨
لَتَرْكَبُنَّ طَبَقًا عَنْ طَبَقٍ ۝١٩
فَمَا لَهُمْ لَا يُؤْمِنُوْنَ ۝٢٠
وَاِذَا قُرِئَ عَلَيْهِمُ الْقُرْاٰنُ لَا يَسْجُدُوْنَ ۝٢١
بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا يُكَذِّبُوْنَ ۝٢٢
وَاللّٰهُ اَعْلَمُ بِمَا يُوْعُوْنَ ۝٢٣
فَبَشِّرْهُمْ بِعَذَابٍ اَلِيْمٍ ۝٢٤
اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ۝٢٥

सूरह अल-बुरूज मक्की

(आयतें 22, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. गवाह है बुर्जों वाला आसमान,

2. और वह दिन जिसका वादा किया गया है।

3. और देखनेवाला और जो देखा गया।

4. हलाक हों खाईवाले,

5. ईंधन भरी आगवाले,

6. जबकि वो वहां बैठे होंगे।

7. और वो जो कुछ अहले ईमान के साथ करते रहे उसे देखेंगे।

8. उन्होंने उनसे सिर्फ़ इसपर इंतिक़ाम लिया और दुश्मनी की कि वो निहायत ज़बरदस्त लायक़-ए-सताइश खुदा पर ईमान रखते थे,

9. वह जो आसमानों और ज़मीन की सलतनत का मालिक है, और हर चीज़ अल्लाह के सामने है।

10. जिन लोगों ने मोमिन मर्दों और मोमिन औरतों को सताया और आज़माइश में डाला, फिर तौबा न की, तो उनके लिए जहन्नम का अज़ाब है। और उनके लिए अज़ाब है जलने का।

11. यक़ीनन जो लोग ईमान लाए, और उन्होंने नेक आमाल इख्तियार किए उनके लिए बाग़ हैं जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, यह है बड़ी कामयाबी।

12. हक़ीक़त में तुम्हारे रब की पकड़ बड़ी ही सख़्त है।

13. वही आग़ाज़ करता है, और वही दोहराता है।

14. वह बड़ा बख़्शनेवाला, बहुत मुहब्बत करनेवाला है,

15. अर्श का मालिक है, बड़ी शानवाला,

16. जो चाहे उसे कर डालने वाला।

17. क्या तुम्हें उन लश्करों की भी ख़बर पहुंची है,

18. फ़िरऔन और समूद की?

19. नहीं, बल्कि जिन लोगों ने कुफ़्र इख्तियार किया है वो झुटलाने में लगे हुए हैं,

85 सूरतुल्-बुरूजि
(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 475 अक्षर, 109 शब्द और 22 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वस्समा-इ ज़ातिल्-बुरूजि (1)
वल्यौमिल्-मौअूदि (2)
व शाहिदिंव्-व मश्हूद (3)
क़ुति-ल अस्हाबुल् उख़्दूदि- (4)
-न्नारि ज़ातिल-वक़ूदि (5)
इज़् हुम् अ़लैहा क़ुअूद (6)
व हुम् अ़ला मा यफ़्अ़लू-न
बिल्-मुअ्मिनी-न शुहूद (7)
व मा न-क़मू मिन्हुम् इल्ला
अंय्युअ्मिनू बिल्लाहिल्
अ़ज़ीज़िल्-हमीद (8)
अल्लज़ी लहू मुल्कुस्समावाति
वल्अर्ज़ि, वल्लाहु अ़ला कुल्लि शैइन्
शहीद (9)
इन्नल्लज़ी-न फ़-तनुल्-मुअ्मिनी-न
वल्-मुअ्मिनाति सुम्-म लम् यतूबू
फ़-लहुम् अ़ज़ाबु जहन्न-म व लहुम्
अ़ज़ाबुल्-हरीक़ (10)
इन्नल्लज़ी-न आमनू व
अ़मिलुस्सालिहाति लहुम् जन्नातुन्
तज्री मिन् तह़्तिहल्-अन्हारु,
ज़ालिकल् फ़ौज़ुल्-कबीर (11)
इन्-न बत्-श रब्बि-क ल-शदीद
(12)
इन्नहू हु-व युब्दिउ व युअ़ीद (13)
व हुवल्-ग़फ़ूरुल्-वदूद (14)
ज़ुल्-अ़र्शिल्-मजीद (15)
फ़अ़्आ़लुल्-लिमा युरीद (16)
हल् अता-क हदीसुल्-जुनूद (17)
फ़िर्औ़-न व समूद (18)
बलिल्लज़ी-न क-फ़रू फ़ी तक्ज़ीबिंव-
(19)

سُوْرَةُ الْبُرُوْجِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢٢ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الْبُرُوْجِ ①
وَالْيَوْمِ الْمَوْعُوْدِ ②
وَشَاهِدٍ وَّمَشْهُوْدٍ ③
قُتِلَ اَصْحٰبُ الْاُخْدُوْدِ ④
النَّارِ ذَاتِ الْوَقُوْدِ ⑤
اِذْ هُمْ عَلَيْهَا قُعُوْدٌ ⑥
وَّهُمْ عَلٰى مَا يَفْعَلُوْنَ بِالْمُؤْمِنِيْنَ شُهُوْدٌ ⑦
وَمَا نَقَمُوْا مِنْهُمْ اِلَّآ اَنْ يُّؤْمِنُوْا بِاللّٰهِ
الْعَزِيْزِ الْحَمِيْدِ ⑧
الَّذِيْ لَهٗ مُلْكُ السَّمٰوٰتِ وَالْاَرْضِ ؕ
وَاللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ شَهِيْدٌ ⑨
اِنَّ الَّذِيْنَ فَتَنُوا الْمُؤْمِنِيْنَ وَالْمُؤْمِنٰتِ
ثُمَّ لَمْ يَتُوْبُوْا فَلَهُمْ عَذَابُ جَهَنَّمَ وَلَهُمْ
عَذَابُ الْحَرِيْقِ ⑩
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ
لَهُمْ جَنّٰتٌ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۬ؕ
ذٰلِكَ الْفَوْزُ الْكَبِيْرُ ⑪
اِنَّ بَطْشَ رَبِّكَ لَشَدِيْدٌ ⑫
اِنَّهٗ هُوَ يُبْدِئُ وَيُعِيْدُ ⑬
وَهُوَ الْغَفُوْرُ الْوَدُوْدُ ⑭
ذُو الْعَرْشِ الْمَجِيْدُ ⑮
فَعَّالٌ لِّمَا يُرِيْدُ ⑯
هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْجُنُوْدِ ⑰
فِرْعَوْنَ وَثَمُوْدَ ⑱
بَلِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا فِيْ تَكْذِيْبٍ ⑲

20. हालांकि अल्लाह उन्हें उनके आगे-पीछे से घेरे हुए है।

21. नहीं, बल्कि वह बुलन्द पाया कुरआन है,

22. लौह-ए-महफ़ूज़ में सबत है।

सूरह अत्-तारिक मक्की

(आयतें 17, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. गवाह है आसमान और रात में नमूदार होनेवाला!

2. और तुम क्या जानो कि रात में नमूदार होनेवाला क्या है?

3. चमकता हुआ तारा!

4. हर एक नफ़्स पर निगेहबान मुक़र्रर है।

5. पस इनसान को चाहिए कि देखे कि वह किस चीज़ से पैदा किया गया है;

6. एक उछलते पानी से पैदा किया गया है।

7. जो पीठ और पसलियों के दरमियान से निकलता है।

8. यक़ीनन वह उसके लौटाने पर क़ादिर है।

9. जिस रोज़ छुपी चीज़ें जांची जाएंगी,

10. तो उस वक़्त उसके पास न अपनी कोई कुव्वत होगी और न कोई मददगार।

11. गवाह है बारिश वाला आसमान,

12. और फटनेवाली ज़मीन,

13. वह दो-टूक बात है,

14. वह कोई हंसी मज़ाक़ नहीं है।

15. वो एक चाल चल रहे हैं,

16. और मैं भी एक चाल चल रहा हूं।

17. पस मुहलत दे दो उन काफ़िरों को; मुहलत दे दो उन्हें कुछ दिन।

सूरह अल-आला मक्की

(आयतें 19, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. तसबीह करो अपने बरतर रब के नाम की,

2. जिसने पैदा किया, फिर ठीक-ठाक किया,

3. जिसने मुक़द्दर किया और हिदायत बख़्शी,

-वल्लाहु मिंव्वरा-इहिम्-मुहीत (20)

बल् हु-व कुरआनुम् मजीद (21)

फ़ी लौहिम्-मह्फ़ूज़ (22) ●

86 सूरतुत्-तारिकि
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 254 अक्षर, 61 शब्द और 17 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वस्समा-इ वत्तारिकि (1)

व मा अद्रा-क मत्तारिकु (2)

अन्नज्मुस्-साकिब (3)

इन् कुल्लु नफ़्सिल्-लम्मा अलैहा हाफ़िज़ (4)

फ़ल्यन्ज़ुरिल्-इन्सानु मिम्-म ख़ुलिक (5)

ख़ुलि-क मिम्माइन् दाफ़िकिंय्- (6)

-यख़रुजु मिम्-बैनिस्सुल्बि वत्तरा-इब (7)

इन्नहू अला रज्अिही लकादिर (8)

यौ-म तुब्लस्सरा-इरु (9)

फ़मा लहू मिन् कुव्वतिंव्-व ला नासिर (10)

वस्समा-इ ज़ातिर्-रज्अ़ (11)

वल्अर्ज़ि ज़ातिस्सद्अ़ (12)

इन्नहू ल-कौलुन् फ़स्लुंव्- (13)

-व मा हु-व बिल्-हज़्लि (14)

इन्नहुम् यकीदू-न कैदंव्- (15)

-व अकीदु कैदा (16)

फ़-महहिलिल्-काफ़िरी-न अम्हिल्हुम् रुवैदा (17) ●

87 सूरतुल्-अअ्ला
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 299 अक्षर, 72 शब्द और 19 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

सब्बिहिस्-म रब्बिकल्-अअ्ला (1)

अल्लज़ी ख़-ल-क फ़-सव्वा (2)

वल्लज़ी कद्द-र फ़-हदा (3)

وَّاللّٰهُ مِنْ وَّرَآئِهِمْ مُّحِيْطٌ ۝٢٠

بَلْ هُوَ قُرْاٰنٌ مَّجِيْدٌ ۝٢١

فِيْ لَوْحٍ مَّحْفُوْظٍ ۝٢٢ ع

سُوْرَةُ الطَّارِقِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٧ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالسَّمَآءِ وَالطَّارِقِ ۝١

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الطَّارِقُ ۝٢

النَّجْمُ الثَّاقِبُ ۝٣

اِنْ كُلُّ نَفْسٍ لَّمَّا عَلَيْهَا حَافِظٌ ۝٤

فَلْيَنْظُرِ الْاِنْسَانُ مِمَّ خُلِقَ ۝٥

خُلِقَ مِنْ مَّآءٍ دَافِقٍ ۝٦

يَّخْرُجُ مِنْۢ بَيْنِ الصُّلْبِ وَالتَّرَآئِبِ ۝٧

اِنَّهٗ عَلٰى رَجْعِهٖ لَقَادِرٌ ۝٨

يَوْمَ تُبْلَى السَّرَآئِرُ ۝٩

فَمَا لَهٗ مِنْ قُوَّةٍ وَّلَا نَاصِرٍ ۝١٠

وَالسَّمَآءِ ذَاتِ الرَّجْعِ ۝١١

وَالْاَرْضِ ذَاتِ الصَّدْعِ ۝١٢

اِنَّهٗ لَقَوْلٌ فَصْلٌ ۝١٣

وَّمَا هُوَ بِالْهَزْلِ ۝١٤

اِنَّهُمْ يَكِيْدُوْنَ كَيْدًا ۝١٥

وَّاَكِيْدُ كَيْدًا ۝١٦

فَمَهِّلِ الْكٰفِرِيْنَ اَمْهِلْهُمْ رُوَيْدًا ۝١٧ ع

سُوْرَةُ الْاَعْلٰى مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٩ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

سَبِّحِ اسْمَ رَبِّكَ الْاَعْلَى ۝١

الَّذِيْ خَلَقَ فَسَوّٰى ۝٢

وَالَّذِيْ قَدَّرَ فَهَدٰى ۝٣

4. जिसने सबज़ा उगाया,

5. फिर उसे बहुत ही घना सरसब्ज़ व शादाब किया।

6. हम तुम्हें पढ़ा देंगे, फिर तुम भूलोगे नहीं।

7. बात यह है कि अल्लाह की मशीयत ही नाफ़िज़ है; यक़ीनन वह जानता है अलानिया को भी और उसे भी जो छुपा रहे।

8. वह जो आसान व मुलायम है उसका हम तुम्हें सहज तरीक़े से अहल बना देंगे।

9. लिहाज़ा तुम याददिहानी करो, अगर याददिहानी कुछ नफ़ा पहुंचाए,

10. याददिहानी हासिल करेगा जो डरेगा।

11. और उससे इज्तिनाब करेगा वह इंतिहाई बदबख़्त,

12. जो बड़ी आग में पड़ेगा,

13. फिर वह उसमें न मरेगा न जिएगा।

14. कामयाब हो गया जिसने खुद को बालीदगी व उमदगी से बहरामन्द किया।

15. और अपने रब का नाम याद किया, पस नमाज़ पढ़ी।

16. नहीं, बल्कि तुम तो दुनिया की ज़िन्दगी को तरजीह देते हो;

17. हालांकि आख़िरत बेहतर, और बाक़ी रहनेवाली है।

18. यही कुछ पहले सहीफ़ों में भी है,

19. इबराहीम और मूसा के सहीफ़ों में।

सूरह अल-ग़ाशियह मक्की

(आयतें 26, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. क्या तुम्हें उस छा जाने वाली की ख़बर पहुंची है?

2. कितने ही चेहरे उस दिन गिरे हुए होंगे,

3. मेहनत व मुशक़्क़त में पड़े, थके-हारे,

4. दहकती आग में दाख़िल होंगे,

5. खौलते हुए चश्मे से पिएंगे,

6. उनके लिए सिवाय 'ज़रीअ' (कांटों वाले झाड़) के कोई खाना न होगा।

7. जो न मोटा करे और न भूख मिटाए।

8. कितने ही चेहरे उस दिन खुशमंज़र व मुलायम होंगे,

वल्लज़ी अख़्-र-जल्-मर्‌आ (4)

फ़-ज-अ-लहू ग़ुसाअन् अह़्वा (5)

सनुक़्रिउ-क फ़ला तन्सा (6)

इल्ला मा शा-अल्लाहु, इन्नहू यअ्‌लमुल्-जह्-र व मा यख़्फ़ा (7)

व नुयस्सिरु-क लिल्युस्रा (8)

फ़ज़क्किर् इन् न-फ़-अतिज़्-ज़िक्रा (9)

स-यज़्ज़क्करु मंय्यख़्शा (10)

व य-तजन्नबुहल्-अश्क़- (11)

-ल्लज़ी यस्लन्-नारल्-कुब्रा (12)

सुम्-म ला यमूतु फ़ीहा व ला यह़्या (13)

क़द् अफ़्ल-ह मन् तज़क्का (14)

व ज़-करस्-म रब्बिही फ़-सल्ला (15)

बल् तुअ्‌सिरूनल्-हयातद्-दुन्या (16)

वल्-आख़िरतु ख़ैरुंव्-व अब्क़ा (17)

इन्-न हाज़ा लफ़िस्-सुहुफ़िल्-ऊला (18)

सुहुफ़ि इब्राही-म व मूसा (19) ●

88 सूरतुल्-ग़ाशि-यति
(मक्की) इस सूरः में अरबी के 384
अक्षर, 93 शब्द और 26 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

हल् अता-क हदीसुल्-ग़ाशयह् (1)

वुजूहुंय्-यौमइज़िन् ख़ाशिअह् (2)

आमि-लतुन् नासि-बतुन् (3)

तस्ला नारन् हामि-यतन् (4)

तुस्क़ा मिन् ऐनिन् आनियह् (5)

लै-स लहुम् तआमुन् इल्ला मिन् ज़रीअ़िल्- (6)

-ला युस्मिनु व ला युग़्नी मिन् जूअ् (7)

वुजूहुंय्-यौमइज़िन् नाअि-मतुल्- (8)

وَالَّذِيْٓ اَخْرَجَ الْمَرْعٰى (٤)

فَجَعَلَهٗ غُثَآءً اَحْوٰى (٥)

سَنُقْرِئُكَ فَلَا تَنْسٰٓى (٦)

اِلَّا مَا شَآءَ اللّٰهُ ۭ اِنَّهٗ يَعْلَمُ الْجَهْرَ وَمَا يَخْفٰى (٧)

وَنُيَسِّرُكَ لِلْيُسْرٰى (٨)

فَذَكِّرْ اِنْ نَّفَعَتِ الذِّكْرٰى (٩)

سَيَذَّكَّرُ مَنْ يَّخْشٰى (١٠)

وَيَتَجَنَّبُهَا الْاَشْقَى (١١)

الَّذِيْ يَصْلَى النَّارَ الْكُبْرٰى (١٢)

ثُمَّ لَا يَمُوْتُ فِيْهَا وَلَا يَحْيٰى (١٣)

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ تَزَكّٰى (١٤)

وَذَكَرَ اسْمَ رَبِّهٖ فَصَلّٰى (١٥)

بَلْ تُؤْثِرُوْنَ الْحَيٰوةَ الدُّنْيَا (١٦)

وَالْاٰخِرَةُ خَيْرٌ وَّاَبْقٰى (١٧)

اِنَّ هٰذَا لَفِي الصُّحُفِ الْاُوْلٰى (١٨)

ع صُحُفِ اِبْرٰهِيْمَ وَمُوْسٰى (١٩)

سُوْرَةُ الْغَاشِيَةِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢٦ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

هَلْ اَتٰىكَ حَدِيْثُ الْغَاشِيَةِ (١)

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ خَاشِعَةٌ (٢)

عَامِلَةٌ نَّاصِبَةٌ (٣)

تَصْلٰى نَارًا حَامِيَةً (٤)

تُسْقٰى مِنْ عَيْنٍ اٰنِيَةٍ (٥)

لَيْسَ لَهُمْ طَعَامٌ اِلَّا مِنْ ضَرِيْعٍ (٦)

لَّا يُسْمِنُ وَلَا يُغْنِيْ مِنْ جُوْعٍ (٧)

وُجُوْهٌ يَّوْمَئِذٍ نَّاعِمَةٌ (٨)

9. अपनी दौड़-धूप पर खुश होंगे,

10. आली मकाम जन्नत में,

11. जिसमें कोई लग्व बात न सुनेंगे,

12. उसमें चश्मा रवां होगा,

13. उसमें ऊंचे-ऊंचे तख़्त होंगे;

14. आबख़ोरे क़रीने से रखे होंगे,

15. गाव तकिए तरतीब से लगे होंगे,

16. और हर तरफ़ क़ालीन बिछे होंगे।

17. तो क्या वो ऊंट की तरफ़ नहीं देखते कि कैसा बनाया गया,

18. और आसमान की तरफ़ कि कैसा ऊंचा किया गया,

19. और पहाड़ों की तरफ़ कि कैसे नसब किए गए;

20. और ज़मीन की तरफ़ कि कैसे बिछाई गई;

21. अच्छा तो याददिहानी कर दो! तुम तो बस एक याददिहानी करने वाले हो;

22. तुम उनपर कोई दारोग़ा नहीं।

23. लेकिन वह जिसने मुंह फेरा, और कुफ़्र इख़्तियार किया,

24. तो अल्लाह उसे बड़ा अज़ाब देगा।

25. यक़ीनन हमारी ही तरफ़ उनकी वापसी है;

26. फिर हमारे ही ज़िम्मे है उनसे हिसाब लेना।

सूरह अल-फ़ज्र मक्की

(आयतें 30, रुकू 1)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. शाहिद (गवाह) है फ़ज्र,

2. गवाह हैं दस रातें,

3. गवाह हैं जुफ़्त और ताक़,

4. गवाह है रात जब वह चले,

5. क्या इसमें अज़ीम शहादत है, साहिब-ए-अक़्ल के लिए?

6. क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे रब ने आद के साथ क्या किया?

7. सुतूनोंवाले इरम के साथ,

-लिसअ्यिहा राज़ि-यतुन् (9)
फ़ी जन्नतिन् आ़लियह् (10)
ला तस्मअु फ़ीहा लाग़ियह् (11)
फ़ीहा अ़ैनुन् जारियह् ●(12)
फ़ीहा सुरुरुम्-मर्फ़ू-अतुंव्- (13)
-व अक्वाबुम्-मौज़ू-अ़तुंव्- (14)
-व नमारिकु मस्फ़ू-फ़तुंव्- (15)
-व ज़राबिय्यु मब्सूसह् (16)
अ-फ़ला यन्ज़ुरू-न इलल्-इबिलि कै-फ ख़ुलिक़त् (17)
व इलस्समा-इ कै-फ रुफ़िअ़त् (18)
व इलल्-जिबालि कै-फ नुसिबत् (19)
व इलल्-अर्ज़ि कै-फ सुतिहत् (20)
फ़ज़क्किर्, इन्नमा अन्-त मुज़क्किर (21)
लस्-त अ़लैहिम् बि-मुसैतिरिन् (22)
इल्ला मन् तवल्ला व क-फ़र (23)
फ़्युअ़ज़्ज़िबुहुल्लाहुल्-अ़ज़ाबल्-अक्बर (24)
इन्-न इलैना इया-बहुम् (25)
सुम्-म इन्-न अ़लैना हिसा-बहुम्● (26) ●

89 सूरतुल्-फ़ज्रि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 585 अक्षर, 137 शब्द और 30 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वल्-फ़ज्रि (1)
व लयालिन् अ़शिंरव्- (2)
-वश्शफ़्इ़ वल्वत्रि (3)
वल्लैलि इज़ा यस्रि (4)
हल् फ़ी ज़ालि-क क़-समुल्लिज़ी हिज्र् (5)
अलम् त-र कै-फ फ़-अ़-ल रब्बु-क बिआ़द (6)
इर-म-ज़ातिल्-इ़मादि- (7)

لِّسَعْيِهَا رَاضِيَةٌ ۝٩
فِي جَنَّةٍ عَالِيَةٍ ۝١٠
لَّا تَسْمَعُ فِيهَا لَاغِيَةً ۝١١
فِيهَا عَيْنٌ جَارِيَةٌ ۝١٢
فِيهَا سُرُرٌ مَّرْفُوعَةٌ ۝١٣
وَأَكْوَابٌ مَّوْضُوعَةٌ ۝١٤
وَنَمَارِقُ مَصْفُوفَةٌ ۝١٥
وَزَرَابِيُّ مَبْثُوثَةٌ ۝١٦
أَفَلَا يَنظُرُونَ إِلَى الْإِبِلِ كَيْفَ خُلِقَتْ ۝١٧
وَإِلَى السَّمَاءِ كَيْفَ رُفِعَتْ ۝١٨
وَإِلَى الْجِبَالِ كَيْفَ نُصِبَتْ ۝١٩
وَإِلَى الْأَرْضِ كَيْفَ سُطِحَتْ ۝٢٠
فَذَكِّرْ إِنَّمَا أَنتَ مُذَكِّرٌ ۝٢١
لَّسْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ ۝٢٢
إِلَّا مَن تَوَلَّىٰ وَكَفَرَ ۝٢٣
فَيُعَذِّبُهُ اللَّهُ الْعَذَابَ الْأَكْبَرَ ۝٢٤
إِنَّ إِلَيْنَا إِيَابَهُمْ ۝٢٥
ثُمَّ إِنَّ عَلَيْنَا حِسَابَهُم ۝٢٦

سُورَةُ الْفَجْرِ مَكِّيَّةٌ ٨٩ آيَاتُهَا ٣٠ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ ○

وَالْفَجْرِ ۝١
وَلَيَالٍ عَشْرٍ ۝٢
وَالشَّفْعِ وَالْوَتْرِ ۝٣
وَاللَّيْلِ إِذَا يَسْرِ ۝٤
هَلْ فِي ذَٰلِكَ قَسَمٌ لِّذِي حِجْرٍ ۝٥
أَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِعَادٍ ۝٦
إِرَمَ ذَاتِ الْعِمَادِ ۝٧

8. वो ऐसे थे जिनकी तरह बस्तियों में पैदा नहीं किया गया,

9. और समूद के साथ, जिन्होंने वादी में चट्टानें तराशी थीं,

10. और मेख़ों वाले फ़िरऔन के साथ,

11. वो लोग कि जिन्होंने मुल्कों में सरकशी की,

12. और उनमें बहुत फ़साद मचाया।

13. आख़िरकार तुम्हारे रब ने उन पर अज़ाब का कोड़ा बरसा दिया,

14. यक़ीनन तुम्हारा रब घात में रहता है।

15. मगर इनसान का हाल यह है कि जब उसका रब उसकी इस तौर से आज़माइश करता है कि उसे इज़्ज़त देता और उसको नेमत बख़्शता है, तो कहता है कि "मेरे रब ने मुझे इज़्ज़त दी है"।

16. मगर जब कभी वह उसकी आज़माइश इस तौर से करता है कि उसका रिज़्क़ उसपर तंग कर देता है, तो वह कहता है कि "मेरे रब ने मुझे ज़लील कर दिया"।

17. हरगिज़ नहीं; बल्कि तुम यतीम की इकराम (इज़्ज़त) नहीं करते,

18. और न मिसकीन के खिलाने पर एक-दूसरे को उभारते हो,

19. और सारी मीरास समेट-समेट कर खा जाते हो,

20. और माल से बेहद मुहब्बत रखते हो।

21. हरगिज़ नहीं, जब ज़मीन कूट-कूटकर चूर-चूर कर दी जाएगी,

22. और तुम्हारा रब आएगा और फ़रिश्ते भी सफ़ दर सफ़,

23. और जहन्नम को उस रोज़ लाया जाएगा, उस दिन इनसान को होश होगा; और कहां है उसके लिए होश में आने का सही मौक़ा?

24. वह कहेगा, "ऐ काश, मैंने अपनी ज़िन्दगी के लिए पेशगी कुछ कर रखा होता!"

25. फिर उस दिन जो अज़ाब उसका होगा न वह अज़ाब कोई दे सकता है,

26. और न उसकी जकड़बन्द की तरह कोई बांध सकता है।

27-28. "ऐ नफ़्स-ए-मुतमइन, लौट चल अपने रब की तरफ़, इस तरह कि तू उससे राज़ी है औ वह तुझ से राज़ी है।

29. पस मेरे बन्दों में दाख़िल हो जा!

30. और दाख़िल हो जा मेरी जन्नत में!"

-ल्लती लम् युख़्लक् मिस्लुहा फ़िल्-बिलाद (8)

व समूदल्लज़ी-न जाबुस्सख़्-र बिल्वादि (9)

व फ़िर्औ-न ज़िल्-औताद (10)

अल्लज़ी-न तग़ौ फ़िल्-बिलाद (11)

फ़-अक्सरू फ़ीहल्-फ़साद (12)

फ़-सब्-ब अ़लैहिम् रब्बु-क सौ-त अ़ज़ाब (13)

इन्-न रब्ब-क लबिल्-मिर्साद (14)

फ़-अम्मल्-इन्सानु इज़ा मब्तलाहु रब्बुहू फ़-अक्र-महू व नअ़्अ़-महू फ़-यक़ूलु रब्बी अक्र-मन् (15)

व अम्मा इज़ा मब्तलाहु फ़-क़-द-र अ़लैहि रिज़्क़हू फ़-यक़ूलु रब्बी -अहानन् (16)

कल्ला बल्-ला तुक्रिमूनल्-यती-म (17)

व ला तहाज़्ज़ू-न अ़ला तआ़मिल्-मिस्कीन (18)

व तअ्कुलूनत्तुरा-स अक्लल् लम्मंव्- (19)

-व तुहिब्बूनल्-मा-ल हुब्बन् जम्मा (20)

कल्ला इज़ा दुक्कतिल्-अर्ज़ु दक्कन् दक्कंव्- (21)

-व जा-अ रब्बु-क वल्म-लकु सफ़्फ़न् सफ़्फ़ा (22)

व जी-अ यौमइज़िम्-बि-जहन्न-म यौमइज़िंय्य-तज़क्करुल्-इन्सानु व अन्ना लहुज़्ज़िक्रा (23)

यक़ूलु या लैतनी क़द्दम्तु लि-हयाती (24)

फ़यौमइज़िल्-ला युअ़ज़्ज़िबु अ़ज़ाबहू अ-हदुंव्- (25)

-व ला यूसिक़ु व साक़हू अ-हद (26)

या अय्यतुहन्-नफ़्सुल्-मुत्मइन्नतु- (27)

-रजिअ़ी इला रब्बिकि राज़ि-यतम् मर्ज़िय्यह् (28)

फ़द्ख़ुली फ़ी अ़िबादी (29)

वद्ख़ुली जन्नती (30) ●

الَّتِيْ لَمْ يُخْلَقْ مِثْلُهَا فِي الْبِلَادِ ۝٨

وَثَمُوْدَ الَّذِيْنَ جَابُوا الصَّخْرَ بِالْوَادِ ۝٩

وَفِرْعَوْنَ ذِي الْاَوْتَادِ ۝١٠

الَّذِيْنَ طَغَوْا فِي الْبِلَادِ ۝١١

فَاَكْثَرُوْا فِيْهَا الْفَسَادَ ۝١٢

فَصَبَّ عَلَيْهِمْ رَبُّكَ سَوْطَ عَذَابٍ ۝١٣

اِنَّ رَبَّكَ لَبِالْمِرْصَادِ ۝١٤

فَاَمَّا الْاِنْسَانُ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ رَبُّهٗ فَاَكْرَمَهٗ
وَنَعَّمَهٗ ۙ فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَكْرَمَنِ ۝١٥

وَاَمَّآ اِذَا مَا ابْتَلٰىهُ فَقَدَرَ عَلَيْهِ رِزْقَهٗ ۙ
فَيَقُوْلُ رَبِّيْٓ اَهَانَنِ ۝١٦

كَلَّا بَلْ لَّا تُكْرِمُوْنَ الْيَتِيْمَ ۝١٧

وَلَا تَحٰٓضُّوْنَ عَلٰى طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝١٨

وَتَاْكُلُوْنَ التُّرَاثَ اَكْلًا لَّمًّا ۝١٩

وَّتُحِبُّوْنَ الْمَالَ حُبًّا جَمًّا ۝٢٠

كَلَّآ اِذَا دُكَّتِ الْاَرْضُ دَكًّا دَكًّا ۝٢١

وَّجَآءَ رَبُّكَ وَالْمَلَكُ صَفًّا صَفًّا ۝٢٢

وَجِايْٓءَ يَوْمَئِذٍۢ بِجَهَنَّمَ ۙ يَوْمَئِذٍ
يَّتَذَكَّرُ الْاِنْسَانُ وَاَنّٰى لَهُ الذِّكْرٰى ۝٢٣

يَقُوْلُ يٰلَيْتَنِيْ قَدَّمْتُ لِحَيَاتِيْ ۝٢٤

فَيَوْمَئِذٍ لَّا يُعَذِّبُ عَذَابَهٗٓ اَحَدٌ ۝٢٥

وَّلَا يُوْثِقُ وَثَاقَهٗٓ اَحَدٌ ۝٢٦

يٰٓاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ۝٢٧

ارْجِعِيْٓ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ۝٢٨

فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ۝٢٩

ع وَادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ۝٣٠

सूरह अल-बलद मक्की

(आयतें 20, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. सुनो! मैं क़सम खाता हूं इस शहर की,

2. तुम इसी शहर में मुक़ीम हो;

3. और वालिद और उसकी औलाद की,

4. यक़ीनन हमने इन्सान को ठीक और दुरुस्त बनाया।

5. क्या वह समझता है कि उस पर किसी का बस न चलेगा?

6. कहता है कि "मैंने ढेरों माल उड़ा दिया"।

7. क्या वह समझता है कि किसी ने उसे देखा नहीं?

8. क्या हमने उसे नहीं दीं दो आंखें?

9. और एक ज़बान, और दो होंट,

10. और क्या (ऐसा नहीं है कि) हमने दिखाई उसे दो बुलन्दियां?

11. मगर वह तो हुमक कर घाटी में से गुज़रा ही नहीं, (और न उसने नजात की राह पाई)

12. और तुम्हें क्या मालूम कि वह घाटी क्या है?

13. किसी गर्दन का छुड़ाना,

14. या भूक के दिन खाना खिलाना,

15. किसी नज़दीकीवाले यतीम को,

16. या गर्द आलूदा मिसकीन को;

17. फिर यह कि इस सब के साथ वह उन लोगों में से हो जो ईमान लाए और जिन्होंने एक-दूसरे को सब्र की ताकीद व तलक़ीन की, और एक-दूसरे को रहम की ताकीद व तलक़ीन की।

18. वही लोग हैं खुशबख़्त।

19. रहे वो लोग जिन्होंने हमारी आयतों का इनकार किया, वो बदबख़्त लोग हैं;

20. उनपर सब तरफ़ से घिरी हुई आग होगी।

90 सूरतुल्-ब-लदि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 347 अक्षर, 82 शब्द और 20 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

ला उक़्सिमु बिहाज़ल्-ब-लदि (1)
व अन्-त हिल्लुम् बिहाज़ल्-ब-लदि (2)
व वालिदिंव्-व मा व-लद् (3)
ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न फ़ी क-बद् (4)
अ-यह्सबु अल्लंय्यक़्दि-र अ़लैहि अ-हद् ● (5)
यक़ूलु अह्लक्तु मालल्-लु-बदा (6)
अ-यह्सबु अल्लम् य-रहू अ-हद् (7)
अलम् नज्अ़ल्-लहू अ़ैनैनि (8)
व लिसानंव्-व श-फ़तैनि (9)
व हदैनाहुन्-नज्दैन (10)
फ़-लक़्त-ह-मल् अ़-क़-ब-त (11)
व मा अद्रा-क मल्अ़-क़-बह् (12)
फ़क्कु र-क़-बतिन् (13)
औ इत्आमुन् फ़ी यौमिन् ज़ी मस्-ग़-बतिंय्- (14)
-यतीमन् ज़ा मक़्र-बतिन् (15)
औ मिस्कीनन् ज़ा मत्-र-बह् (16)
सुम्-म का-न मिनल्लज़ी-न आमनू व तवासौ बिस्सब्रि व तवासौ बिल्-मर्-ह-मह् (17)
उलाइ-क अस्हाबुल् मै-म-नह् (18)
वल्लज़ी-न क-फ़रू बिआयातिना हुम् अस्हाबुल् मश-अ-मह् (19)
अ़लैहिम् नारुम् मुअ्-स-दह् (20)●

سُوْرَةُ الْبَلَدِ مَكِّيَّةٌ ٩٠ اٰيَاتُهَا ٢٠ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
لَآ اُقْسِمُ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝١
وَاَنْتَ حِلٌّۢ بِهٰذَا الْبَلَدِ ۝٢
وَوَالِدٍ وَّمَا وَلَدَ ۝٣
لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْ كَبَدٍ ۝٤
اَيَحْسَبُ اَنْ لَّنْ يَّقْدِرَ عَلَيْهِ اَحَدٌ ۝٥
يَقُوْلُ اَهْلَكْتُ مَالًا لُّبَدًا ۝٦
اَيَحْسَبُ اَنْ لَّمْ يَرَهٗٓ اَحَدٌ ۝٧
اَلَمْ نَجْعَلْ لَّهٗ عَيْنَيْنِ ۝٨
وَلِسَانًا وَّشَفَتَيْنِ ۝٩
وَهَدَيْنٰهُ النَّجْدَيْنِ ۝١٠
فَلَا اقْتَحَمَ الْعَقَبَةَ ۝١١
وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْعَقَبَةُ ۝١٢
فَكُّ رَقَبَةٍ ۝١٣
اَوْ اِطْعٰمٌ فِيْ يَوْمٍ ذِيْ مَسْغَبَةٍ ۝١٤
يَّتِيْمًا ذَا مَقْرَبَةٍ ۝١٥
اَوْ مِسْكِيْنًا ذَا مَتْرَبَةٍ ۝١٦
ثُمَّ كَانَ مِنَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَتَوَاصَوْا
بِالصَّبْرِ وَتَوَاصَوْا بِالْمَرْحَمَةِ ۝١٧
اُولٰٓئِكَ اَصْحٰبُ الْمَيْمَنَةِ ۝١٨
وَالَّذِيْنَ كَفَرُوْا بِاٰيٰتِنَا هُمْ اَصْحٰبُ الْمَشْئَمَةِ ۝١٩
عَلَيْهِمْ نَارٌ مُّؤْصَدَةٌ ۝٢٠

सूरह अश-शम्स मक्की

(आयतें 15, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. गवाह है सूरज और उसका चढ़ना,

2. और चांद जबकि वह उसके पीछे आए,

3. और दिन जबकि वह उसे रौशन कर दे,

4. और रात जबकि वह उसे ढांक ले।

5. और आसमान और जैसा कुछ उसे छाया गया,

6. और ज़मीन और जैसा कुछ उसे बिछाया,

7. और नफ़्स और जैसा कुछ उसे संवारा,

8. पस उसकी बदी और उसकी परहेज़गारी उसपर इलहाम कर दी,

९. कामयाब हो गया जिसने उसे पाक किया,

10. और नाकाम हुआ जिसने उसे दबा दिया।

11. समूद ने अपनी सरकशी से झुटलाया,

12. जब उनका सबसे बड़ा बदबख़्त उठ खड़ा हुआ,

13. तो अल्लाह के रसूल ने उनसे कहा कि "ख़बरदार अल्लाह की ऊंटनी और उसके पिलाने (की बारी) से!"

14. मगर उन्होंने उसे झुटलाया, और उस ऊंटनी की कूंचें काट डालीं, अंजामकार उनके रब ने उनके गुनाह के सबब उनपर आफ़त तोड़ी, और उन्हें बराबर कर दिया।

15. और उसे उसके अंजाम का कोई अंदेशा नहीं।

सूरह अल-लैल मक्की

(आयतें 21, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. गवाह है रात जब कि वह छा जाए,

2. और दिन जबकि वह रौशन हो,

3. और नर और मादा का पैदा करना,

4. कि तुम्हारी दौड़-धूप मुख़्तलिफ़ क़िस्म की है।

5. तो जिस किसी ने दिया और डर रखा,

6. और भली चीज़ की तसदीक़ की,

91 सूरतुश-शमसि

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 254 अक्षर, 56 शब्द और 15 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वश्शम्सि व ज़ुहाहा (1)
वल्क़-मरि इज़ा तलाहा (2)
वन्नहारि इज़ा जल्लाहा (3)
वल्लैलि इज़ा यग़्शाहा (4)
वस्समा-इ व मा बनाहा (5)
वल्अर्ज़ि व मा तहाहा (6)
व नफ़्सिंव्-व मा सव्वाहा (7)
फ़-अल्ह-महा फ़ुजूरहा व तक़्वाहा (8)
क़द् अफ़्ल-ह मन् ज़क्काहा (9)
व क़द् ख़ा-ब मन् दस्साहा (10)
कज़्ज़बत् समूदु बितग़्वाहा (11)
इज़िम् ब-अ-स अश्क़ाहा (12)
फ़क़ा-ल लहुम् रसूलुल्लाहि ना-क़तल्लाहि व सुक़्याहा (13)
फ़-कज़्ज़बूहु फ़-अ-क़रूहा फ़-दम्-द-म अलैहिम् रब्बुहुम् बिज़म्बिहिम् फ़-सव्वाहा (14)
व ला यख़ाफ़ु अुक़्बाहा (15) ●

92 सूरतुल-लैलि

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 314 अक्षर, 71 शब्द और 21 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वल्लैलि इज़ा यग़्शा (1)
वन्नहारि इज़ा त-जल्ला (2)
व मा ख़-लक़ज़्ज़-क-र वल्उन्सा (3)
इन्-न सअ्-यकुम् लशत्ता (4)
फ़-अम्मा मन् अअ्ता वत्तक़ा (5)
व सद्द-क़ बिल्हुस्ना (6)

سُوْرَةُ الشَّمْسِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٥ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالشَّمْسِ وَضُحٰهَا ۝١
وَالْقَمَرِ اِذَا تَلٰهَا ۝٢
وَالنَّهَارِ اِذَا جَلّٰهَا ۝٣
وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰهَا ۝٤
وَالسَّمَآءِ وَمَا بَنٰهَا ۝٥
وَالْاَرْضِ وَمَا طَحٰهَا ۝٦
وَنَفْسٍ وَّمَا سَوّٰهَا ۝٧
فَاَلْهَمَهَا فُجُوْرَهَا وَتَقْوٰهَا ۝٨
قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰهَا ۝٩
وَقَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰهَا ۝١٠
كَذَّبَتْ ثَمُوْدُ بِطَغْوٰهَا ۝١١
اِذِ انْۢبَعَثَ اَشْقٰهَا ۝١٢
فَقَالَ لَهُمْ رَسُوْلُ اللّٰهِ نَاقَةَ اللّٰهِ وَسُقْيٰهَا ۝١٣
فَكَذَّبُوْهُ فَعَقَرُوْهَا فَدَمْدَمَ عَلَيْهِمْ رَبُّهُمْ بِذَنْۢبِهِمْ فَسَوّٰهَا ۝١٤
وَلَا يَخَافُ عُقْبٰهَا ۝١٥ ع

سُوْرَةُ الَّيْلِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٢١ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى ۝١
وَالنَّهَارِ اِذَا تَجَلّٰى ۝٢
وَمَا خَلَقَ الذَّكَرَ وَالْاُنْثٰٓى ۝٣
اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى ۝٤
فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى ۝٥
وَصَدَّقَ بِالْحُسْنٰى ۝٦

7. तो उसे हम आसान रास्ते के लिए सुहूलत देंगे।

8. रहा वह शख़्स जिसने बुख़्ल किया और बेनियाज़ी बरती,

9. और भली चीज़ को झुटला दिया,

10. तो हम उसे सख़्त रास्ते के लिए सुहूलत देंगे।

11. और उसका माल उसके कुछ काम न आएगा जब वह (सर के बल) खड्ड में गिरेगा।

12. बेशक हमारे ज़िम्मे है रास्ता बताना,

13. और हक़ीक़त में हमारे ही इख़्तियार में है, आख़िरत भी और दुनिया भी।

14. पस मैंने तुम्हें दहकती आग से ख़बरदार कर दिया,

15. उसमें बस वही इंतिहाई बदबख़्त पड़ेगा,

16. जिसने झुटलाया, और मुंह फेरा।

17. और उससे बच जाएगा वह निहायत परहेज़गार शख़्स,

18. जो अपना माल देकर पाकी हासिल करता है,

19. और जिसकी किसी पर कोई इनायत बदला चुकाने की ग़र्ज़ से नहीं,

20. बल्कि सिर्फ़ अपने बरतर रब की ख़ुशनूदी चाहने के लिए।

21. और वह अनक़रीब ख़ुश हो जाएगा।

सूरह अज़्-ज़ुहा मक्की

(आयतें 11, रुकू 1)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. गवाह है चढ़ता दिन,

2. और रात जबकि उसका सन्नाटा छा जाए,

3. तुम्हारे रबने तुम्हें छोड़ा नहीं और न वह (तुमसे) बेज़ार हुआ,

4. और यक़ीनन बाद का दौर तुम्हारे लिए पहले से बेहतर है।

5. और अनक़रीब तुम्हारा रब तुम्हें अता करेगा कि तुम ख़ुश हो जाओगे।

6. क्या यह वाक़िआ नहीं कि उसने तुम्हें यतीम पाया, तो ठिकाना दिया?

7. और तुम्हें बेराह पाया, तो रहनुमाई फ़रमाई।

8. और तुम्हें नादार पाया तो ग़नी कर दिया।

9. लिहाज़ा जो यतीम हो, उसे मत दबाना,

10. और जो साइल (मांगनेवाले) हो उसे मत झिड़कना;

फ़-सनुयस्सिरुहू लिल्युस्रा (7)

व अम्मा मम्-बख़ि-ल वस्तग़्ना (8)

व कज़्ज़-ब बिल्हुस्ना (9)

फ़-सनुयस्सिरुहू लिल्-अुस्रा (10)

व मा युग़्नी अ़न्हु मालुहू इज़ा त-रद्दा (11)

इन्-न अ़लैना लल्हुदा (12)

व इन्-न लना लल्-आख़िर-त वल्ऊला (13)

फ़-अन्ज़र्तुकुम् नारन् त-लज़्ज़ा (14)

ला यस्लाहा इल्लल् अश्क़- (15)

-ल्लज़ी कज़्ज़-ब व त-वल्ला (16)

व स-युजन्नबुहल् अत्क़- (17)

-ल्लज़ी युअ्ती मा-लहू य-तज़क्का (18)

व मा लि-अ-हदिन् अ़िन्दहू मिन्-निअ्-मतिन् तुज्ज़ा (19)

इल्लब्तिग़ा-अ वज्हि रब्बिहिल्-अअ्-ला (20)

व लसौ-फ़ यर्ज़ा (21) ●

93 सूरतुज़्-ज़ुहा

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 166 अक्षर, 40 शब्द और 11 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वज़्ज़ुहा (1)

वल्लैलि इज़ा सजा (2)

मा वद्द-अ़-क रब्बु-क व मा क़ला (3)

व लल्-आख़िरतु ख़ैरुल्-ल-क मिनल्-ऊला (4)

व लसौ-फ़ युअ्ती-क रब्बु-क फ़-तर्ज़ा (5)

अलम् यजिद्-क यतीमन् फ़-आवा (6)

व व-ज-द-क ज़ाल्लन् फ़-हदा (7)

व व-ज-द-क आ़-इलन् फ़-अग़्ना (8)

फ़-अम्मल्-यती-म फ़ला तक़्हर् (9)

व अम्मस्-सा-इ-ल फ़ला तन्हर् (10)

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْيُسْرٰى ﴿٧﴾

وَاَمَّا مَنْۢ بَخِلَ وَاسْتَغْنٰى ﴿٨﴾

وَكَذَّبَ بِالْحُسْنٰى ﴿٩﴾

فَسَنُيَسِّرُهٗ لِلْعُسْرٰى ﴿١٠﴾

وَمَا يُغْنِيْ عَنْهُ مَالُهٗۤ اِذَا تَرَدّٰى ﴿١١﴾

اِنَّ عَلَيْنَا لَلْهُدٰى ﴿١٢﴾

وَاِنَّ لَنَا لَلْاٰخِرَةَ وَالْاُوْلٰى ﴿١٣﴾

فَاَنْذَرْتُكُمْ نَارًا تَلَظّٰى ﴿١٤﴾

لَا يَصْلٰىهَاۤ اِلَّا الْاَشْقَى ﴿١٥﴾

الَّذِيْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰى ﴿١٦﴾

وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى ﴿١٧﴾

الَّذِيْ يُؤْتِيْ مَالَهٗ يَتَزَكّٰى ﴿١٨﴾

وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰۤى ﴿١٩﴾

اِلَّا ابْتِغَآءَ وَجْهِ رَبِّهِ الْاَعْلٰى ﴿٢٠﴾

ع وَلَسَوْفَ يَرْضٰى ﴿٢١﴾

سُوْرَةُ الضُّحٰى مَكِّيَّةٌ ١١ اٰيَاتُهَا ١ رُكُوْعُهَا

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

وَالضُّحٰى ﴿١﴾

وَالَّيْلِ اِذَا سَجٰى ﴿٢﴾

مَا وَدَّعَكَ رَبُّكَ وَمَا قَلٰى ﴿٣﴾

وَلَلْاٰخِرَةُ خَيْرٌ لَّكَ مِنَ الْاُوْلٰى ﴿٤﴾

وَلَسَوْفَ يُعْطِيْكَ رَبُّكَ فَتَرْضٰى ﴿٥﴾

اَلَمْ يَجِدْكَ يَتِيْمًا فَاٰوٰى ﴿٦﴾

وَوَجَدَكَ ضَآلًّا فَهَدٰى ﴿٧﴾

وَوَجَدَكَ عَآئِلًا فَاَغْنٰى ﴿٨﴾

فَاَمَّا الْيَتِيْمَ فَلَا تَقْهَرْ ﴿٩﴾

وَاَمَّا السَّآئِلَ فَلَا تَنْهَرْ ﴿١٠﴾

11. और जो तुम्हारे रब की इनायत हो उसे बयान करते रहो।

सूरह अल-इनशिराह मक्की

(आयतें 8, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. क्या यह वाक़िया नहीं कि हमने तुम्हारा सीना तुम्हारे लिए खोल दिया?

2. और तुमपर से तुम्हारा वह बोझ उतार दिया,

3. जो तुम्हारी कमर तोड़ दे रहा था।

4. और तुम्हारी ख़ातिर तुम्हारा ज़िक्र बुलन्द किया।

5. पस यक़ीनन सख़्ती के साथ आसानी है।

6. बेशक सख़्ती व दुश्वारी के साथ आसानी है।

7. लिहाज़ा जब फ़ारिग़ हो तो मेहनत में लग जाओ,

8. और बस अपने रब से लौ लगाओ।

(सूरह अत-तीन मक्की)

(आयतें 8, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. गवाह हैं इन्जीर और ज़ैतून,

2. और तूर सीनीन,

3. और यह पुरअमन सरज़मीन!

4. बेशक हमने इनसान को बेहतरीन साख़्त पर पैदा किया,

5. फिर हमने उसे पस्ततरीन दर्जा में डाल दिया (जबकि वह खुद गिरने वाला बना),

6. सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए, और नेक आमाल इख़्तियार किए कि उनके लिए कभी न ख़त्म होने वाला अजर है।

7. अब इसके बाद क्या चीज़ तुझे जज़ा के दिन के झुटलाने पर आमादा कर रही है?

8. क्या अल्लाह सब हाकिमों से बड़ा हाकिम नहीं?

सूरह अल-अलक़ मक्की

(आयतें 19, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. पढ़ो अपने रब के नाम से जिसने पैदा किया,

2. पैदा किया इनसान को चिपकने वाली चीज़ से।

3. पढ़ो, हाल यह है कि तुम्हारा रब बड़ा ही करीम है,

व अम्मा बिनिअ्-मति रब्बि-क फ़-हद्दिस् (11) ●

94 सूरतुल-इन्शिराहि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 103 अक्षर, 27 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलम् नश्रह् ल-क सद्र-क (1)

व व-ज़अ्ना अ़न्-क विज़्र-क- (2)

-ल्लज़ी अन्क़-ज़ ज़ह्-र-क (3)

व र-फ़अ्ना ल-क ज़िक्रक् (4)

फ़-इन्-न मअ़ल्-अुस्रि युस्रन् (5)

इन्-न मअ़ल्-अुस्रि युस्रा (6)

फ़-इज़ा फ़रग़्-त फ़न्सब् (7)

व इला रब्बि-क फ़र्ग़ब् (8) ●

95 सूरतुत्-तीनि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 165 अक्षर, 34 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वत्तीनि वज़्ज़ैतूनि (1)

व तूरि सीनी-न (2)

व हाज़ल् ब-लदिल्-अमीन (3)

ल-क़द् ख़लक़्नल्-इन्सा-न फ़ी अह्सनि तक़्वीम (4)

सुम्-म र-दद्नाहु अस्फ़-ल साफ़िलीन (5)

इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति फ़-लहुम् अज्रुन् ग़ैरु मम्नून (6)

फ़मा युकज़्ज़िबु-क बअ़्दु बिद्दीन (7)

अलैसल्लाहु बि-अह्कमिल्-हाकिमीन (8) ●

96 सूरतुल अ़-लक़ि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 290 अक्षर, 72 शब्द और 19 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इक़्रअ् बिस्मि रब्बिकल्लज़ी ख़-लक़ (1)

ख़-लक़ल्-इन्सा-न मिन् अ़-लक़ (2)

इक़्रअ् व रब्बुकल् अक्रमु- (3)

ع ١٨ وَاَمَّا بِنِعْمَةِ رَبِّكَ فَحَدِّثْ ١١

سُوْرَةُ الْاِنْشِرَاحِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٨ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلَمْ نَشْرَحْ لَكَ صَدْرَكَ ١

وَوَضَعْنَا عَنْكَ وِزْرَكَ ٢

الَّذِيْٓ اَنْقَضَ ظَهْرَكَ ٣

وَرَفَعْنَا لَكَ ذِكْرَكَ ٤

فَاِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ٥

اِنَّ مَعَ الْعُسْرِ يُسْرًا ٦

فَاِذَا فَرَغْتَ فَانْصَبْ ٧

ع ١٩ وَاِلٰى رَبِّكَ فَارْغَبْ ٨

سُوْرَةُ التِّيْنِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٨ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالتِّيْنِ وَالزَّيْتُوْنِ ١

وَطُوْرِ سِيْنِيْنَ ٢

وَهٰذَا الْبَلَدِ الْاَمِيْنِ ٣

لَقَدْ خَلَقْنَا الْاِنْسَانَ فِيْٓ اَحْسَنِ تَقْوِيْمٍ ٤

ثُمَّ رَدَدْنٰهُ اَسْفَلَ سٰفِلِيْنَ ٥

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

فَلَهُمْ اَجْرٌ غَيْرُ مَمْنُوْنٍ ٦

فَمَا يُكَذِّبُكَ بَعْدُ بِالدِّيْنِ ٧

ع ٢٠ اَلَيْسَ اللّٰهُ بِاَحْكَمِ الْحٰكِمِيْنَ ٨

سُوْرَةُ الْعَلَقِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١٩ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِقْرَاْ بِاسْمِ رَبِّكَ الَّذِيْ خَلَقَ ١

خَلَقَ الْاِنْسَانَ مِنْ عَلَقٍ ٢

اِقْرَاْ وَرَبُّكَ الْاَكْرَمُ ٣

4. जिसने क़लम के ज़रिए से तालीम दी,

5. इनसान को वह इल्म अता किया, जिसे वह न जानता था।

6. हरगिज़ नहीं; इनसान सरकशी करता है,

7. इस लिए कि वह अपने आपको बेनियाज़ देखता है।

8. यक़ीनन तुम्हारे रब ही की तरफ़ पलटना है।

9-10. क्या तुमने देखा उस शख़्स को जो एक बन्दे को रोकता है जब वह नमाज़ पढ़ता है?

11. तुम्हारा क्या ख़याल है, अगर वह हिदायत पर हो?

12. या तक़्वा का हुक्म दे!

13. तुम्हारा क्या ख़याल है, अगर उस (रोकने वाले ने) झुठलाया और मुंह मोड़ा?

14. क्या उसने नहीं जाना कि अल्लाह देख रहा है?

15. हरगिज़ नहीं; अगर वह बाज़ न आया, तो हम चोटी पकड़ कर घसीटेंगे,

16. झूटी, ख़ताकार चोटी।

17. अब बुला ले वह अपनी मजलिस को।

18. हम भी बुलाए लेते हैं सरहंगों (सिपाहियों) को।

19. हरगिज़ नहीं; उसकी बात न मानो, और सजदे करते और क़रीब होते रहो।

सूरह अल-क़द्र मक्की

(आयतें 5, रुकू 1)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. हमने उसे शब-ए-क़द्र में नाज़िल किया;

2. और तुम्हें क्या मालूम कि शब-ए-क़द्र क्या है?

3. शब-ए-क़द्र बेहतर है हज़ार महीनों से;

4. उसमें फ़रिश्ते और रूह हर मामले के मुतअल्लिक़ अपने रब का हुक्म लेकर उतरते हैं।

5. वह (रात) सरासर अमन व सलामती है, तुलू-ए-फ़ज्र तक है।

-ल्लज़ी अल्ल-म बिल्क़-लमि (4)
अल्ल-मल्-इन्सा-न मा लम् यअ्लम् (5)
कल्ला इन्नल्-इन्सा-न ल-यत्ग़ा (6)
अर्-रआहुस्तग़्ना (7)
इन्-न इला रब्बिकर्-रुज्आ (8)
अ-रऐतल्लज़ी यन्हा (9)
अ़ब्दन् इज़ा सल्ला (10)
अ-रऐ-त इन् का-न अ़लल्-हुदा (11)
औ अ-म-र बित्तक़्वा (12)
अ-रऐ-त इन् कज़्ज़-ब व त-वल्ला (13)
अलम् यअ्लम् बिअन्नल्ला-ह यरा (14)
कल्ला ल-इल्लम् यन्तहि ल-नस्फ़-अ़म् बिन्नासि-यति (15)
नासि-यतिन् काज़ि-बतिन् ख़ाति-अह् (16)
फ़ल्यद्अु नादि-यहू (17)
स-नद्अुज़्-ज़बानियह् (18)
कल्ला, ला तुतिअ्हु वस्जुद् वक़्तरिब् ● (19) ●

97 सूरतुल-क़दरि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 115 अक्षर, 30 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इन्ना अन्ज़ल्नाहु फ़ी लैलतिल्-क़द्रि (1)
व मा अद्रा-क मा लैलतुल-क़द्र (2)
लैलतुल्-क़द्रि ख़ैरुम-मिन् अल्फ़ि शह्र् (3)
त-नज़्ज़लुल्-मलाइ-कतु वर्रूहु फ़ीहा बि-इज़्नि रब्बिहिम् मिन् कुल्लि अम्रिन् (4)
सलामुन्, हि-य हत्ता मत्-लअ़िल्-फ़ज्र ● (5) ●

الَّذِیْ عَلَّمَ بِالْقَلَمِ ۝٤
عَلَّمَ الْاِنْسَانَ مَا لَمْ یَعْلَمْ ۝٥
كَلَّاۤ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَیَطْغٰۤی ۝٦
اَنْ رَّاٰهُ اسْتَغْنٰی ۝٧
اِنَّ اِلٰی رَبِّكَ الرُّجْعٰی ۝٨
اَرَءَیْتَ الَّذِیْ یَنْهٰی ۝٩
عَبْدًا اِذَا صَلّٰی ۝١٠
اَرَءَیْتَ اِنْ كَانَ عَلَی الْهُدٰۤی ۝١١
اَوْ اَمَرَ بِالتَّقْوٰی ۝١٢
اَرَءَیْتَ اِنْ كَذَّبَ وَتَوَلّٰی ۝١٣
اَلَمْ یَعْلَمْ بِاَنَّ اللّٰهَ یَرٰی ۝١٤
كَلَّا لَىِٕنْ لَّمْ یَنْتَهِ لَنَسْفَعًۢا بِالنَّاصِیَةِ ۝١٥
نَاصِیَةٍ كَاذِبَةٍ خَاطِئَةٍ ۝١٦
فَلْیَدْعُ نَادِیَهٗ ۝١٧
سَنَدْعُ الزَّبَانِیَةَ ۝١٨
كَلَّا ؕ لَا تُطِعْهُ وَاسْجُدْ وَاقْتَرِبْ ۝١٩

سُوْرَةُ الْقَدْرِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٥ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ
اِنَّاۤ اَنْزَلْنٰهُ فِیْ لَیْلَةِ الْقَدْرِ ۝١
وَمَاۤ اَدْرٰىكَ مَا لَیْلَةُ الْقَدْرِ ۝٢
لَیْلَةُ الْقَدْرِ خَیْرٌ مِّنْ اَلْفِ شَهْرٍ ۝٣
تَنَزَّلُ الْمَلٰٓىِٕكَةُ وَالرُّوْحُ فِیْهَا بِاِذْنِ
رَبِّهِمْ ۚ مِنْ كُلِّ اَمْرٍ ۝٤
سَلٰمٌ ۛ هِیَ حَتّٰی مَطْلَعِ الْفَجْرِ ۝٥

सूरह अल-बय्यिनह मदनी

(आयतें 8, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अहले किताब और मुश्रिकीन में से जिन लोगों ने कुफ्र किया वो कुफ्र से अलग होनेवाले नहीं, यहां तक कि उनके पास दलील-ए-रौशन आ जाए,

2. अल्लाह की तरफ़ से एक फ़िरिस्तादा पाकीज़ा औराक़ को पढ़ता हुआ,

3. जिसमें ठीक और दुरुस्त अहकाम दर्ज हैं।

4. हलांकि जिन्हें किताब दी गई, वो तफ़रिक़े में इसके बाद ही पड़े कि उनके पास वाज़ेह दलील आ चुकी थी।

5. और हुक्म भी उन्हें बस यही हुआ था कि वो अल्लाह की बन्दगी करें, नियाज़मन्दी को उसके लिए ख़ालिस करके, बिल्कुल यकसू होकर, और नमाज़ की पाबन्दी करें, और ज़कात दें, और यही रास्त रौ मिल्लत का दीन है।

6. यक़ीनन अहले किताब और मुश्रिकों में से जिन लोगों ने कुफ्र किया वो जहन्नम की आग में पड़ेंगे, उसमें मुस्तकिल तौर से रहने के लिए, वही बदतरीन ख़लाइक़ हैं।

7. मगर वो लोग जो ईमान लाए, और नेक आमाल इख़्तियार किए, वही बेहतरीन ख़लाइक़ हैं;

8. उनकी जज़ा उनके अपने रब के पास अदन के बाग़ हैं; जिनके नीचे नहरें बह रही होंगी, उसमें वो हमेशा-हमेशा रहेंगे। खुदा उनसे राज़ी, और वो उससे राज़ी; यह कुछ उसके लिए है जो अपने रब से डरे।

सूरह अज़-ज़िलज़ाल मदनी

(आयतें 8, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. जब ज़मीन इस तरह हिला डाली जाएगी जिस तरह उसका हिलाया जाना मुक़द्दर है,

2. और ज़मीन अपने बोझ बाहर निकाल देगी,

3. और इनसान कहेगा कि "इसे क्या हो गया है?"

4. उस दिन वह अपनी दासतान सुनाएगी,

98 सूरतुल्-बय्यि-नति
(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 413
अक्षर, 95 शब्द और 8 आयतें हैं।
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

लम् यकुनिल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि वल्मुश्रिकी-न मुन्फ़क्की-न हत्ता तअ्ति-यहुमुल्-बय्यिनह् (1)
रसूलुम्-मिनल्लाहि यत्लू सुहुफ़म् मुतह्ह-रतुन् (2)
फ़ीहा कुतुबुन् क़य्यिमह् (3)
व मा त-फ़र्रक़ल्लज़ी-न ऊतुल्-किता-ब इल्ला मिम्-बअ्दि मा जाअत्हुमुल्-बय्यिनह् (4)
व मा उमिरू इल्ला लियअ्बुदुल्ला-ह मुख़्लिसी-न लहुद्दी-न हु-नफ़ा-अ व युक़ीमुस्सला-त व युअ्तुज़्ज़का-त व ज़ालि-क दीनुल्-क़य्यिमह् (5)
इन्नल्लज़ी-न क-फ़रू मिन् अह्लिल्-किताबि वल्मुश्रिकी-न फ़ी नारि जहन्न-म ख़ालिदी-न फ़ीहा, उलाइ-क हुम् शर्रुल्-बरिय्यह् (6)
इन्नल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्सालिहाति उलाइ-क हुम् ख़ैरुल्-बरिय्यह् (7)
जज़ाउहुम् अ़िन्-द रब्बिहिम् जन्नातु अ़द्निन् तज्री मिन् तह्तिहल्-अन्हारु ख़ालिदी-न फ़ीहा अ-बदन्, रज़ियल्लाहु अ़न्हुम् व रज़ू अ़न्हु, ज़ालि-क लिमन् ख़शि-य रब्बह् (8) ●

99 सूरतुल्-ज़िल्ज़ालि
(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 158
अक्षर, 37 शब्द और 8 आयतें हैं।
बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इज़ा ज़ुल्ज़ि-लतिल्-अर्ज़ु ज़िल्ज़ालहा (1)
व अख़्र-जतिल्-अर्ज़ु अस्क़ालहा (2)
व क़ालल्-इन्सानु मा लहा (3)
यौमइज़िन् तुहद्दिसु अख़्बारहा (4)

سُوْرَةُ الْبَيِّنَةِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٨ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

لَمْ يَكُنِ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ
الْكِتٰبِ وَالْمُشْرِكِيْنَ مُنْفَكِّيْنَ حَتّٰى
تَاْتِيَهُمُ الْبَيِّنَةُ ①
رَسُوْلٌ مِّنَ اللّٰهِ يَتْلُوْا صُحُفًا مُّطَهَّرَةً ②
فِيْهَا كُتُبٌ قَيِّمَةٌ ③
وَمَا تَفَرَّقَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ اِلَّا
مِنْۢ بَعْدِ مَا جَآءَتْهُمُ الْبَيِّنَةُ ④
وَمَآ اُمِرُوْٓا اِلَّا لِيَعْبُدُوا اللّٰهَ مُخْلِصِيْنَ
لَهُ الدِّيْنَ ۙ حُنَفَآءَ وَيُقِيْمُوا الصَّلٰوةَ
وَيُؤْتُوا الزَّكٰوةَ وَذٰلِكَ دِيْنُ الْقَيِّمَةِ ⑤
اِنَّ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ وَ
الْمُشْرِكِيْنَ فِيْ نَارِ جَهَنَّمَ خٰلِدِيْنَ فِيْهَا ۭ
اُولٰۗىِٕكَ هُمْ شَرُّ الْبَرِيَّةِ ⑥
اِنَّ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ ۙ
اُولٰۗىِٕكَ هُمْ خَيْرُ الْبَرِيَّةِ ⑦
جَزَاۗؤُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ جَنّٰتُ عَدْنٍ
تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَآ
اَبَدًا ۭ رَضِيَ اللّٰهُ عَنْهُمْ وَرَضُوْا عَنْهُ ۭ
ذٰلِكَ لِمَنْ خَشِيَ رَبَّهٗ ⑧ ع

سُوْرَةُ الزِّلْزَالِ مَدَنِيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٨ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اِذَا زُلْزِلَتِ الْاَرْضُ زِلْزَالَهَا ①
وَاَخْرَجَتِ الْاَرْضُ اَثْقَالَهَا ②
وَقَالَ الْاِنْسَانُ مَا لَهَا ③
يَوْمَىِٕذٍ تُحَدِّثُ اَخْبَارَهَا ④

5. क्योंकि इसके लिए तुम्हारे रब का यही इशारा होगा।

6. उस दिन लोग अलग-अलग निकलेंगे ताकि उन्हें उनके आमाल दिखाए जाएं,

7. पस जो कोई ज़र्रा बराबर नेकी करेगा वह उसे देख लेगा,

8. और जो कोई ज़र्रा बराबर भी बदी करेगा वह भी उसे देख लेगा।

सूरह अल-आदियात मक्की

(आयतें 11, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. गवाह हैं जो हांपते-फुंकार मारते हुए दौड़ते हैं,

2. फिर ठोकरों से चिंगारियां निकालते हैं,

3. फिर सुबह सवेरे धावा मारते होते हैं।

4. उसमें उठाया उन्होंने गर्द व गुबार,

5. पस इसी हाल में वो गोल में जा घुसे,

6. बिलाशुबह इनसान अपने रब का बड़ा नाशुकरा है,

7. और यक़ीनन वह खुद इस पर गवाह है,

8. और यक़ीनन वह माल की मुहब्बत में बुरी तरह मुबतला है।

9. तो क्या वह जानता नहीं जब उगलवा लिया जाएगा जो कुछ क़ब्रों में है,

10. और साफ़ नुमायां कर दिया जाएगा जो कुछ सीनों में है।

11. यक़ीनन उनका रब उस दिन उनसे खूब बाख़बर होगा।

सूरह अल-क़ारिअह मक्की

(आयतें 11, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. वह खड़खड़ाने वाली!

2. क्या है वह खड़खड़ाने वाली?

3. और तुम्हें क्या मालूम कि क्या है वह खड़खड़ाने वाली?

4. जिस दिन लोग बिखरे हुए परवानों के मानिन्द हो जाएंगे,

5. और पहाड़ धुनके हुए रंगबिरंग के ऊन जैसे हो जाएंगे।

बि-अन्-न रब्ब-क औहा लहा (5)

यौमइज़िंय्-यस्दुरुन्नासु अश्तातल्-लियुरौ अअ्मालहुम् (6)

फ-मंय्यअ्मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् ख़ैरंय्-यरह् (7)

व मंय्-यअ्मल् मिस्क़ा-ल ज़र्रतिन् शर्रंय्-यरह् (8) ●

100 सूरतुल-आदियाति

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 170 अक्षर, 40 शब्द और 11 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वल्-आदियाति ज़ब्हन् (1)

फ़ल्मूरियाति क़द्हन् (2)

फ़ल्-मुग़ीराति सुब्हन् (3)

फ़-असर्-न बिही नक़्अन् (4)

फ़-वसत्-न बिही जम्अन् (5)

इन्नल्-इन्सा-न लिरब्बिही ल-कनूद (6)

व इन्नहू अ़ला ज़ालि-क ल-शहीद (7)

व इन्नहू लिहुब्बिल्-ख़ैरि ल-शदीद (8)

अ-फला यअ्लमु इज़ा बुअ्सि-र मा फ़िल्क़ुबूरि (9)

व हुस्सि-ल मा फ़िस्सुदूरि (10)

इन्-न रब्बहुम् बिहिम् यौमइज़िल् ल-ख़बीर (11) ●

101 सूरतुल-क़ारि-अ़ति

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 160 अक्षर, 35 शब्द और 11 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्क़ारि-अ़तु (1)

मल्क़ारि-अ़तु (2)

व मा अद्रा-क मल्क़ारिअ़ह् (3)

यौ-म यकूनुन्नासु कल्फ़राशिल्-मब्सूसि (4)

व तकूनुल्-जिबालु कल्-अ़िह्निल्-मन्फ़ूश (5)

بِاَنَّ رَبَّكَ اَوْحٰى لَهَا ۝

يَوْمَئِذٍ يَّصْدُرُ النَّاسُ اَشْتَاتًا ۙ

لِّيُرَوْا اَعْمَالَهُمْ ۝

فَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ خَيْرًا

يَّرَهٗ ۝

ع وَمَنْ يَّعْمَلْ مِثْقَالَ ذَرَّةٍ شَرًّا يَّرَهٗ ۝

سُوْرَةُ الْعٰدِيٰتِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١١ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

وَالْعٰدِيٰتِ ضَبْحًا ۝

فَالْمُوْرِيٰتِ قَدْحًا ۝

فَالْمُغِيْرٰتِ صُبْحًا ۝

فَاَثَرْنَ بِهٖ نَقْعًا ۝

فَوَسَطْنَ بِهٖ جَمْعًا ۝

اِنَّ الْاِنْسَانَ لِرَبِّهٖ لَكَنُوْدٌ ۝

وَاِنَّهٗ عَلٰى ذٰلِكَ لَشَهِيْدٌ ۝

وَاِنَّهٗ لِحُبِّ الْخَيْرِ لَشَدِيْدٌ ۝

اَفَلَا يَعْلَمُ اِذَا بُعْثِرَ مَا فِى

الْقُبُوْرِ ۝

وَحُصِّلَ مَا فِى الصُّدُوْرِ ۝

ع اِنَّ رَبَّهُمْ بِهِمْ يَوْمَئِذٍ لَّخَبِيْرٌ ۝

سُوْرَةُ الْقَارِعَةِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ١١ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۝

اَلْقَارِعَةُ ۝

مَا الْقَارِعَةُ ۝

وَمَا اَدْرٰىكَ مَا الْقَارِعَةُ ۝

يَوْمَ يَكُوْنُ النَّاسُ كَالْفَرَاشِ الْمَبْثُوْثِ ۝

وَتَكُوْنُ الْجِبَالُ كَالْعِهْنِ الْمَنْفُوْشِ ۝

6. फिर जिस किसी के औज़ान (आमाल-ए-नेक) भारी होंगे,

7. वह तो पसन्दीदा ज़िन्दगी में रहेगा,

8. और रहा वह शख़्स जिसके औज़ान हलके होंगे,

9. वह खड्डे के पेट में होगा।

10. और तुम्हें क्या मालूम कि वह क्या है?

11. निहायत दहकती आग।

सूरह अत-तकासुर मक्की

(आयतें 8, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. तुम्हें एक-दूसरे के मुक़ाबले में कसरत के इज़हार और तफ़ाख़ुर ने ग़फ़लत में डाल रखा है,

2. यहां तक कि तुमने क़ब्रिस्तानों के मुंह देख लिए।

3. हरगिज़ नहीं, तुम जल्द ही जान लोगे।

4. फिर, हरगिज़ नहीं; जल्द ही तुम्हें मालूम हो जाएगा।

5. हरगिज़ नहीं; काश तुम यक़ीनी इल्म की हैसियत से जान लो।

6. ज़रूर तुम भड़कती आग से दो-चार होगे।

7. फिर सुनो, उसे ज़रूर देखोगे इस हाल में कि वह असल यक़ीन होगी।

8. फिर लाज़िमन तुमसे उस दिन ऐश व नेमत के बारे में पुरसिश होनी है।

सूरह अल-अस्र मक्की

(आयतें 3, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. गवाह है ज़माना,

2. कि दरहक़ीक़त इनसान घाटे में है,

3. सिवाय उन लोगों के जो ईमान लाए, और नेक आमाल इख़्तियार किए, और एक-दूसरे को हक़ की ताकीद व तलक़ीन की, और एक-दूसरे को सब्र की ताकीद व तलक़ीन की।

सूरह अल-हुमज़ा मक्की

(आयतें 9, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. तबाही है हर इशारा बाज़, ऐबजू के लिए,

2. जो माल जमा करता और उसे गिनता रहा।

3. समझता है कि उसके माल ने उसे ज़िन्दा-ए-जावेद कर दिया।

4. हरगिज़ नहीं; वह चूर-चूर कर देने वाली में फेंक दिया जाएगा;

फ़-अम्मा मन् सक़ुलत् मवाज़ीनुहू (6)

फ़हु-व फ़ी अ़ी-शतिर्-राज़ियह् (7)

व अम्मा मन् ख़फ़्फ़त् मवाज़ीनुहू (8)

फ़-उम्मुहू हावियह् (9)

व मा अद्रा-क मा हियह् (10)

नारुन् हामियह् (11) ●

102 सूरतुत्-तकासुरि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 123 अक्षर, 28 शब्द और 8 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अल्हाकुमुत्-तकासुरु (1)

हत्ता ज़ुर्तुमुल्-मक़ाबिर (2)

कल्ला सौ-फ़ तअ्लमून (3)

सुम्-म कल्ला सौ-फ़ तअ्लमून (4)

कल्ला लौ तअ्लमू-न अ़िल्मल्-यक़ीन (5)

ल-त-र-वुन्नल्-जहीम (6)

सुम्-म ल-त-र-वुन्नहा अ़ैनल्-यक़ीन (7)

सुम्-म लतुस्-अलुन्-न यौमइज़िन् अ़निन्-नअ़ीम (8) ●

103 सूरतुल्-अस्रि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 74 अक्षर, 14 शब्द और 3 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वल्-अ़स्रि (1) इन्नल्-इन्सा-न लफ़ी ख़ुस्र (2)

इल्लल्लज़ी-न आमनू व अ़मिलुस्-सालिहाति व तवासौ बिल्हक़्क़ि व तवासौ बिस्सब्र (3) ●

104 सूरतुल् हु-म-ज़ति

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 135 अक्षर, 33 शब्द और 9 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

वैलुल्-लिकुल्लि हु-म-ज़तिल् लु-मज़ह् (1)

अल्लज़ी ज-म-अ़ मालंव्-व अ़द्-द-दहू (2)

यह्सबु अन्-न मालहू अख़्ल-दह् (3) कल्ला लयुम्ब-ज़न्-न फ़िल्-हु-त-मति (4)

فَاَمَّا مَنْ ثَقُلَتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٦

فَهُوَ فِيْ عِيْشَةٍ رَّاضِيَةٍ ۝٧

وَاَمَّا مَنْ خَفَّتْ مَوَازِيْنُهٗ ۝٨

فَاُمُّهٗ هَاوِيَةٌ ۝٩

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَاهِيَهْ ۝١٠

ع نَارٌ حَامِيَةٌ ۝١١

سُوْرَةُ التَّكَاثُرِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٨ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

اَلْهٰىكُمُ التَّكَاثُرُ ۝١

حَتّٰى زُرْتُمُ الْمَقَابِرَ ۝٢

كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٣

ثُمَّ كَلَّا سَوْفَ تَعْلَمُوْنَ ۝٤

كَلَّا لَوْ تَعْلَمُوْنَ عِلْمَ الْيَقِيْنِ ۝٥

لَتَرَوُنَّ الْجَحِيْمَ ۝٦

ثُمَّ لَتَرَوُنَّهَا عَيْنَ الْيَقِيْنِ ۝٧

ع ثُمَّ لَتُسْـَٔلُنَّ يَوْمَئِذٍ عَنِ النَّعِيْمِ ۝٨

سُوْرَةُ الْعَصْرِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٣ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَالْعَصْرِ ۝١ اِنَّ الْاِنْسَانَ لَفِيْ خُسْرٍ ۝٢

اِلَّا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ

ع وَتَوَاصَوْا بِالْحَقِّ ۙ وَتَوَاصَوْا بِالصَّبْرِ ۝٣

سُوْرَةُ الْهُمَزَةِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٩ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○

وَيْلٌ لِّكُلِّ هُمَزَةٍ لُّمَزَةِ ۝١

الَّذِيْ جَمَعَ مَالًا وَّعَدَّدَهٗ ۝٢

يَحْسَبُ اَنَّ مَالَهٗٓ اَخْلَدَهٗ ۝٣

كَلَّا لَيُنْۢبَذَنَّ فِي الْحُطَمَةِ ۝٤

5. और तुम्हें क्या मालूम कि वह चूर-चूर कर देनेवाली क्या है?

6. वह अल्लाह की सुलगती आग है,

7. जो झांक लेती है दिलों को,

8. वह उनपर ढांककर बन्द कर दी गई होगी,

9. लम्बे-लम्बे सुतूनों में।

सूरह अल-फ़ील मक्की

(आयतें 5, रुकू 1)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. क्या तुमने देखा नहीं कि तुम्हारे रब ने हाथी वालों के साथ क्या बरताव किया?

2. क्या उसने उनकी चाल को अकारत नहीं कर दिया?

3. और उनपर झुंड के झुंड परिन्दे भेजे,

4. जो उन पर कंकरीले पत्थर मार रहे थे,

5. आख़िरकार उन्हें ऐसा कर दिया जैसे खाने का भूसा हो।

सूरह अल-क़ुरैश मक्की

(आयतें 4, रुकू 1)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. किस क़द्र है वाबस्ता रखना क़ुरैश को;

2. वाबस्ता रखना उन्हें जाड़े और गर्मी के सफ़र से।

3. लिहाज़ा उन्हें चाहिए कि वो इस घर के रब की इबादत करें,

4. जिसने खिलाकर भूक से बचाया, और अमन बख़्श कर डर से बचाया।

सूरह अल-माऊन मक्की

(आयतें 7, रुकू 1)

ख़ुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. क्या तुमने उसे देखा जो दीन को झूट बताता है?

2. वही तो है जो यतीम को धक्के देता है,

3. और मिसकीन के खिलाने पर नहीं उकसाता।

4. पस तबाही है उन नमाज़ियों के लिए,

5. जो अपनी नमाज़ से बेख़बर हैं,

6. जो रियाकारी करते हैं,

व मा अद्रा-क मल्हु-त-मह् (5)

नारुल्लाहिल् मू-क़-दतु- (6)

-ल्लती तत्तलिअु अ़लल्-अफ़्इदह् (7)

इन्नहा अ़लैहिम् मुअ्-स-दतुन् (8)

फ़ी अ़-मदिम्-मुमद्-द-दह् (9) ●

105 सूरतुल्-फ़ीलि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 94 अक्षर, 24 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अलम् त-र कै-फ फ़-अ़-ल रब्बु-क बि-अस्हाबिल्-फ़ील (1) *अलम् यज्अल् कै-दहुम् फ़ी तज़्लीलिंव-* (2) *-व अर्स-ल अ़लैहिम् तैरन् अबाबील* (3) *तर्मीहिम् बिहिजा-रतिम्-मिन् सिज्जील* (4) *फ़-ज-अ़-लहुम् क-अ़स्फ़िम् मअ्कूल* (5)●

106 सूरतु क़ुरैशिन्

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 79 अक्षर, 17 शब्द और 4 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

लि-ईलाफ़ि क़ुरैशिन् (1) *ईलाफ़िहिम् रिह्-ल-तश्शिता-इ वस्सैफ़* (2) *फ़ल्-यअ्बुदू रब्-ब हाज़ल्-बैति-* (3) *-ल्लज़ी अत्-अ़-म-हुम् मिन् जूअिंव्-व आ-म-नहुम् मिन् ख़ौफ़* (4)●

107 सूरतुल्-माऊनि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 115 अक्षर, 25 शब्द और 7 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

अ-रऐतल्लज़ी युकज़्ज़िबु बिद्दीन (1) *फ़ज़ालिकल्लज़ी यदुअ्अुल्-यतीम* (2) *व ला यहुज़्ज़ु अ़ला तआ़मिल्-मिस्कीन* (3) *फ़वैलुल् लिल्-मुसल्लीन* (4) *अल्लज़ी-न हुम अ़न् सलातिहिम् साहून* (5) *अल्लज़ी-न हुम् युराऊ-न* (6)

وَمَآ اَدْرٰىكَ مَا الْحُطَمَةُ ۝٥
نَارُ اللّٰهِ الْمُوْقَدَةُ ۝٦
الَّتِیْ تَطَّلِعُ عَلَی الْاَفْـِٕدَةِ ۝٧
اِنَّهَا عَلَيْهِمْ مُّؤْصَدَةٌ ۝٨
ع فِیْ عَمَدٍ مُّمَدَّدَةٍ ۝٩

سُوْرَةُ الْفِيْلِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٥ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
اَلَمْ تَرَ كَيْفَ فَعَلَ رَبُّكَ بِاَصْحٰبِ الْفِيْلِ ۝١
اَلَمْ يَجْعَلْ كَيْدَهُمْ فِیْ تَضْلِيْلٍ ۝٢
وَّ اَرْسَلَ عَلَيْهِمْ طَيْرًا اَبَابِيْلَ ۝٣
تَرْمِيْهِمْ بِحِجَارَةٍ مِّنْ سِجِّيْلٍ ۝٤
ع فَجَعَلَهُمْ كَعَصْفٍ مَّاْكُوْلٍ ۝٥

سُوْرَةُ قُرَيْشٍ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٤ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
لِاِيْلٰفِ قُرَيْشٍ ۝١
اٖلٰفِهِمْ رِحْلَةَ الشِّتَآءِ وَالصَّيْفِ ۝٢
فَلْيَعْبُدُوْا رَبَّ هٰذَا الْبَيْتِ ۝٣
الَّذِیْٓ اَطْعَمَهُمْ مِّنْ جُوْعٍ ۙ وَّ اٰمَنَهُمْ
ع مِّنْ خَوْفٍ ۝٤

سُوْرَةُ الْمَاعُوْنِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٧ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ○
اَرَءَيْتَ الَّذِیْ يُكَذِّبُ بِالدِّيْنِ ۝١
فَذٰلِكَ الَّذِیْ يَدُعُّ الْيَتِيْمَ ۝٢
وَلَا يَحُضُّ عَلٰی طَعَامِ الْمِسْكِيْنِ ۝٣
فَوَيْلٌ لِّلْمُصَلِّيْنَ ۝٤
الَّذِيْنَ هُمْ عَنْ صَلَاتِهِمْ سَاهُوْنَ ۝٥
الَّذِيْنَ هُمْ يُرَآءُوْنَ ۝٦

7. और मामूली-मामूली चीज़ देने से बचते हैं।

सूरह अल-कौसर मक्की

(आयतें 3, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. यक़ीनन हमने तुम्हें कौसर अता किया;

2. पस तुम अपने रब ही के लिए नमाज़ पढ़ो और (उसी के लिए) क़ुरबानी करो।

3. यक़ीनन तुम्हारा दुश्मन ही मुनक़तअ (बेनाम व निशान) है।

सूरह अल-काफ़िरून मक्की

(आयतें 6, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. कह दो, "ऐ काफ़िरो,

2. मैं उनकी इबादत नहीं करूंगा जिनकी इबादत तुम करते हो,

3. और न तुम उसकी इबादत करने वाले हो जिसकी इबादत मैं करता हूं,

4. और न मैं उनकी इबादत करने वाला हूं जिनकी इबादत तुमने की है,

5. और न तुम उस की इबादत करने वाले हो जिस की इबादत मैं करता हूं।

6. तुम्हारे लिए तुम्हारा दीन, और मेरे लिए मेरा दीन है!"

सूरह अन-नस्र मदनी

(आयतें 3, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. जब अल्लाह की मदद आ जाए, और फ़तह हासिल हो,

2. और तुम लोगों को देखो कि वो अल्लाह के दीन में फ़ौज दर फ़ौज दाख़िल हो रहे हैं,

3. तो अपने रब की हम्द करो, और उससे मग़फ़िरत मांगो; बेशक वह बड़ा ही तौबा क़बूल करने वाला है!

सूरह अल-लहब मक्की

(आयतें 5, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. अबू लहब के दोनों हाथ टूट गए, और वह खुद हलाक हो गया,

2. न उसका माल उसके काम आया और न वह कुछ जो उसने कमाया!

3. वह जल्द ही शोला ज़न आग में पड़ेगा,

4. और उसकी औरत भी ईंधन ढोती हुई,

व यम्-नऊनल्-माऊन (7) ●

108 सूरतुल्–कौसरि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 37 अक्षर, 10 शब्द और 3 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इन्ना अअ़्तैनाकल्–कौ–सर् (1)
फ़–सल्लि लिरब्बि–क वन्हर् (2)
इन्–न शानि–अ–क हुवल्–अब्तर् (3) ●

109 सूरतुल्–काफ़िरून

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 99 अक्षर, 26 शब्द और 6 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुल् या अय्युहल्–काफ़िरून (1)
ला अअ़्बुदु मा तअ़्बुदून (2)
व ला अन्तुम् आ़बिदू–न मा अअ़्बुद (3)
व ला अ–न आ़बिदुम्–मा अ़बत्तुम् (4)
व ला अन्तुम् आ़बिदू–न मा अअ़्बुद (5)
लकुम् दीनुकुम् व लि–य दीन (6) ●

110 सूरतुल्–नस्रि

(मदनी) इस सूरः में अ़रबी के 81 अक्षर, 19 शब्द और 3 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

इज़ा जा–अ नस्रुल्लाहि वल्–फ़त्हु (1)
व रऐतन्ना–स यद्ख़ुलू–न फ़ी दीनिल्लाहि अफ़्वाजा (2)
फ़–सब्बिह् बिहम्दि रब्बि–क वस्तग़्फ़िरहु, इन्नहू का–न तव्वाबा (3) ●

111 सूरतुल्–ल–हबि

(मक्की) इस सूरः में अ़रबी के 81 अक्षर, 24 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

तब्बत् यदा अबी ल–हबिंव्–व तब्ब (1)
मा अग़्ना अ़न्हु मालुहू व मा क–सब् (2)
स–यस्ला नारन् ज़ा–त ल–हबिंव् (3)
–वम्–र–अतुहू हम्मा–लतल् ह–तब (4)

وَيَمْنَعُونَ الْمَاعُونَ ۝٧

سُورَةُ الْكَوْثَرِ مَكِّيَّةٌ آيَاتُهَا ٣ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِنَّا أَعْطَيْنَاكَ الْكَوْثَرَ ۝١
فَصَلِّ لِرَبِّكَ وَانْحَرْ ۝٢
إِنَّ شَانِئَكَ هُوَ الْأَبْتَرُ ۝٣

سُورَةُ الْكَافِرُونَ مَكِّيَّةٌ آيَاتُهَا ٦ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
قُلْ يَا أَيُّهَا الْكَافِرُونَ ۝١
لَا أَعْبُدُ مَا تَعْبُدُونَ ۝٢
وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝٣
وَلَا أَنَا عَابِدٌ مَا عَبَدْتُمْ ۝٤
وَلَا أَنْتُمْ عَابِدُونَ مَا أَعْبُدُ ۝٥
لَكُمْ دِينُكُمْ وَلِيَ دِينِ ۝٦

سُورَةُ النَّصْرِ مَدَنِيَّةٌ آيَاتُهَا ٣ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
إِذَا جَاءَ نَصْرُ اللَّهِ وَالْفَتْحُ ۝١
وَرَأَيْتَ النَّاسَ يَدْخُلُونَ فِي دِينِ اللَّهِ أَفْوَاجًا ۝٢
فَسَبِّحْ بِحَمْدِ رَبِّكَ وَاسْتَغْفِرْهُ ۚ إِنَّهُ كَانَ تَوَّابًا ۝٣

سُورَةُ اللَّهَبِ مَكِّيَّةٌ آيَاتُهَا ٥ رُكُوعُهَا ١

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَٰنِ الرَّحِيمِ
تَبَّتْ يَدَا أَبِي لَهَبٍ وَتَبَّ ۝١
مَا أَغْنَىٰ عَنْهُ مَالُهُ وَمَا كَسَبَ ۝٢
سَيَصْلَىٰ نَارًا ذَاتَ لَهَبٍ ۝٣
وَامْرَأَتُهُ حَمَّالَةَ الْحَطَبِ ۝٤

5. उसकी गर्दन में खजूर के रेशे की बटी हुई रस्सी पड़ी होगी।

सूरह अल-इख़्लास मक्की
(आयतें 4, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. कहोः "वह अल्लाह एक है,
2. अल्लाह बेनियाज़ है, सब का मरजा व मलजा,
3. न वह किसी का बाप है और न किसी का बेटा,
4. और न कोई उसका हमसर है"।

सूरह अल-फ़लक़ मक्की
(आयतें 5, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. कहोः "मैं पनाह लेता हूं नमूदार करनेवाले रब की,
2. जो कुछ भी उसने पैदा किया है उसके शर (बुराई) से,
3. और तारीकी के शर से जबकि वह घुस आए,
4. और गिरहों में फूंक मारने वाली जमाअतों के शर से,
5. और हसद करने वालों के शर से जब वह हसद करे"।

सूरह अन-नास मक्की
(आयतें 6, रुकू 1)

खुदा-ए-रहमान व रहीम के नाम से

1. कहोः "मैं पनाह लेता हूं इनसानों के रब की,
2. इनसानों के बादशाह की,
3. इनसानों के माबूद की,
4. वसवसा डालने वाले ख़न्नास (पीछे हट जानेवाले) के शर से,
5. जो इनसानों के सीनों (दिलों) में वसवसा डालता है,
6. जो जिन्नों में से भी होता है और इनसानों में से भी"।

फ़ी जीदिहा हब्लुम् मिम्-म-सद् (5) ●

112 सूरतुल्-इख़्लासि

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 49 अक्षर, 17 शब्द और 4 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुल् हुवल्लाहु अ-हद (1)
अल्लाहुस्-समद् (2)
लम् यलिद् व लम् यूलद् (3)
व लम् यकुल्-लहू कुफ़ुवन् अ-हद (4) ●

113 सूरतुल्-फ़-लक़ि

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 73 अक्षर, 23 शब्द और 5 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

कुल् अऊज़ु बिरब्बिल् फ़-लक़ि (1)
मिन् शर्रि मा ख़-ल-क़ (2)
व मिन् शर्रि ग़ासिक़िन् इज़ा व-क़ब् (3)
व मिन् शर्रिन्-नफ़्फ़ासाति फ़िल्-उ-क़द् (4)
व मिन् शर्रि हासिदिन् इज़ा ह-सद् (5) ●

114 सूरतुन्-नासि

(मक्की) इस सूरः में अरबी के 81 अक्षर, 20 शब्द और 6 आयतें हैं।

बिस्मिल्लाहिर्रउमानिर्रहीम

कुल् अऊज़ु बिरब्बिन्नासि (1)
मलिकिन्नासि (2)
इलाहिन्नासि (3)
मिन् शर्रिल् वस्वासिल्-ख़न्नास (4)
अल्लज़ी युवस्विसु फ़ी सुदूरिन्नासि (5)
मिनल्-जिन्नति वन्नास (6) ●

ع فِيْ جِيْدِهَا حَبْلٌ مِّنْ مَّسَدٍ ۝٥

سُوْرَةُ الْاِخْلَاصِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٤ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ هُوَ اللّٰهُ اَحَدٌ ۝١
اَللّٰهُ الصَّمَدُ ۝٢
لَمْ يَلِدْ ۙ وَلَمْ يُوْلَدْ ۝٣
ع وَلَمْ يَكُنْ لَّهٗ كُفُوًا اَحَدٌ ۝٤

سُوْرَةُ الْفَلَقِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٥ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ الْفَلَقِ ۝١
مِنْ شَرِّ مَا خَلَقَ ۝٢
وَمِنْ شَرِّ غَاسِقٍ اِذَا وَقَبَ ۝٣
وَمِنْ شَرِّ النَّفّٰثٰتِ فِي الْعُقَدِ ۝٤
ع وَمِنْ شَرِّ حَاسِدٍ اِذَا حَسَدَ ۝٥

سُوْرَةُ النَّاسِ مَكِّيَّةٌ اٰيَاتُهَا ٦ رُكُوْعُهَا ١

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

قُلْ اَعُوْذُ بِرَبِّ النَّاسِ ۝١
مَلِكِ النَّاسِ ۝٢
اِلٰهِ النَّاسِ ۝٣
مِنْ شَرِّ الْوَسْوَاسِ ۙ الْخَنَّاسِ ۝٤
الَّذِيْ يُوَسْوِسُ فِيْ صُدُوْرِ النَّاسِ ۝٥
ع مِنَ الْجِنَّةِ وَالنَّاسِ ۝٦

دعائے ختم القرآن

اَللّٰهُمَّ اٰنِسْ وَحْشَتِيْ فِيْ قَبْرِيْ اَللّٰهُمَّ ارْحَمْنِيْ بِالْقُرْاٰنِ الْعَظِيْمِ وَاجْعَلْهُ لِيْ اِمَامًا وَّنُوْرًا وَّ
هُدًى وَّرَحْمَةً اَللّٰهُمَّ ذَكِّرْنِيْ مِنْهُ مَا نَسِيْتُ وَعَلِّمْنِيْ مِنْهُ مَا جَهِلْتُ وَارْزُقْنِيْ تِلَاوَتَهٗ اٰنَآءَ
الَّيْلِ وَاٰنَآءَ النَّهَارِ وَاجْعَلْهُ لِيْ حُجَّةً يَّا رَبَّ الْعٰلَمِيْنَ ○

दुआ–ए–ख़त्मे क़ुरआन

अल्लाहुम्–म आनिस् वह्शती फ़ी क़ब्री। अल्लाहुम्मर्‌हम्नी बिल्–क़ुरआनिल्–अ़ज़ीमि वज्अ़ल्हु ली इमामंव्–व नूरंव्–व हुदंव्–व रह्म–तन्। अल्लाहुम्–म ज़क्किर्‌नी मिन्हु मा नसीतु व अ़ल्लिम्‌नी मिन्हु मा जहिल्तु वर्‌ज़ुक़्नी तिला–व–तहू आनाअल्लैलि व आनाअन्नहारि। वज्अ़ल्हु ली हुज्जतंय्–या रब्बल्–आ़लमीन।

क़ुरआन-समाप्ति की दुआ

हे अल्लाह! मेरी क़ब्र की घबराहट को लगाव से बदल दे। हे अल्लाह! मुझ पर महान क़ुरआन के द्वारा दया कर और उसे मेरा नायक, प्रकाश, मार्ग-दर्शन एवं दयालुता बना। हे अल्लाह! उसमें से जो मैं भूल गया हूं मुझे याद दिला। जो नहीं जानता मुझे सिखा। और रात और दिन की घड़ियों में मुझे उसके पढ़ने का सौभाग्य प्रदान कर। हे सारे संसार के पालनकर्ता स्वामी! उसे मेरे लिए दलील बना।